हरियाणा ग्रन्थ अकादमी

तृतीय संस्करण के विषय में

गत तीन-चार दशकों से हरियाणा के विभिन्न पक्षों पर पुस्तकों का प्रकाशन हो रहा है। राज्य की बोलियों में साहित्य की अनेक विधाओं पर पुस्तकें रची जा रही हैं। कृषि के यंत्रीकरण, नयी तकनीक तथा कम्प्यूटर शिक्षा के प्रवेश से नयी शब्दावली को अपने तरीके से अपनाया जा रहा है। विश्वविद्यालय स्तर पर हरियाणवी को पाठ्क्रम में सम्मिलित किया गया है। वर्तमान संस्करण में इस साहित्य के सर्वेक्षण के आधार पर लगभग 5000 नए शब्दों को कोश क्रम में स्थान दिया गया है। पहले कोश मुख्यत: बांगरू बोली केन्द्रित था। इसके वर्तमान रूप में मेवाती, अहीरवाटी और सीमावर्ती शब्दावली भी जोड़ी गई है। पुराने नाप-तोल, सिक्के आदि की शब्दावली को सुरक्षित रखने के लिए इसे परिशिष्ट भाग में स्थान दिया गया है।

आशा है कि पाठक वर्तमान संस्करण को और अधिक उपयोगी पाएंगे।

हरियाणवी-हिन्दी कोश

(तृतीय परिवर्द्धित संस्करण)

हरियाणवी-हिन्दी कोश

(तृतीय परिवर्द्धित संस्करण)

डॉ० जय नारायण कौशिक

पूर्व निदेशक

हरियाणा साहित्य अकादमी

हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला

आई.पी.-16, सैक्टर-14, पंचकूला, हरियाणा-134113

Haryanvi Hindi Dictionary by Dr. Jai Narain Kaushik

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थ-निर्माण योजना के अन्तर्गत हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला के तत्वावधान में रचित एवं प्रकाशित।

प्रकाशक : **हरियाणा ग्रन्थ अकादमी**
पंचकूला (हरियाणा)
फोन : 0172-2566521
फेक्स : 0172-2566521
E-mail : hrgranthakd@gmail.com

प्रथम संस्करण : 1985
द्वितीय संस्करण : 2004
तृतीय संस्करण : 2015
मुद्रित प्रतियाँ : 700
मूल्य : रु. 320/- (तीन सौ बीस रुपए मात्र)

मुद्रक : **साहित्य संस्थान, गाजियाबाद-201102**

वैकुंठधामवासी श्रद्धेय पूज्य पिताश्री

पं. रामस्वरूप मिश्र

जहाँगीरपुर, झज्जर, हरियाणा, भारत

(1888-1974 ई.)

की पुण्य स्मृति में

प्रथम संस्करण के विषय में

हरियाणा साहित्य अकादमी ने हरियाणा में साहित्यिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से जहाँ एक ओर हिन्दी, उर्दू और पंजाबी भाषाओं में हरियाणवी साहित्यकारों की कविताओं, कहानियों, निबन्धों और एकांकियों के लगभग डेढ़ दर्जन संकलन प्रकाशित किए हैं वहाँ दूसरी ओर हरियाणा की संस्कृति के विभिन्न पक्षों को उजागर करने के उद्देश्य से भी अकादमी द्वारा आधा दर्जन मानक ग्रंथ प्रकाशित किए जा चुके हैं। इस श्रृंखला की एक कड़ी के रूप में 'हरियाणवी-हिन्दी कोश' भी प्रकाशित किया जा रहा है।

हरियाणवी कोशकारिता के क्षेत्र में यद्यपि ई. जोसेफ की 'जाटू ग्लॉसरी', भाषा विभाग, हरियाणा द्वारा प्रकाशित 'हरियाणवी शब्दावली' आदि के रूप में कुछ फुटकर प्रयत्न हुए हैं तथापि प्रस्तुत कोश ही इस क्षेत्र में वास्तविक रूप में प्रथम महत्वपूर्ण प्रयत्न है।

यह कोश हरियाणवी शब्दों का संग्रह मात्र ही नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से सहस्त्रों वर्षों में संचित हरियाणवी सांस्कृतिक धरोहर प्रकाशमान हो उठी है। विद्वान् लेखक डॉ. जयनारायण कौशिक ने कोश की विस्तृत भूमिका में हरियाणवी उप-भाषा के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला है। कोश के परिशिष्ट भाग में हरियाणवी मुहावरे तथा हरियाणवी उप-भाषा के नमूने शामिल किए जाने से कोश की उपयोगिता में वृद्धि हुई है।

हरियाणवी कोशकारिता में रुचि रखने वाले विद्वानों के लिए तो यह संदर्भ ग्रंथ उपयोगी है ही, हरियाणा में हिन्दी शिक्षण के क्षेत्र में भी इससे लाभ उठाया जा सकता है!

आशा है सहृदय पाठकों द्वारा अकादमी के प्रस्तुत प्रकाशन का स्वागत किया जाएगा।

(रूप नारायण शर्मा)
निदेशक
हरियाणा साहित्य अकादमी

(जगदीश नेहरा)
शिक्षा मंत्री, हरियाणा सरकार
एवं अध्यक्ष
हरियाणा साहित्य अकादमी

द्वितीय संस्करण के विषय में

हरियाणवी-हिन्दी कोश के प्रथम संस्करण की लोकप्रियता एवं अत्यधिक मांग के दृष्टिगत कोश का दूसरा संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है कोश का सर्वत्र स्वागत होगा।
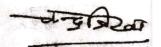
(डॉ. चन्द्र त्रिखा)
निदेशक
हरियाणा साहित्य अकादमी
पंचकूला

तृतीय संस्करण के विषय में

हरियाणवी-हिन्दी कोश का तृतीय संवर्द्धित संस्करण पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष हो रहा है। इक्कीसवीं शती के तेज़ी से बदलते हुए बहुआयामी वैश्विक परिवेश में, बोलियों के विलुप्त होते हुए स्वरूप और इनकी सत्ता को संरक्षित रखने का कोश एक महत्त्वपूर्ण और सरलतम साधन है। यह तो भाषायी कालपात्र है।

मुझे प्रसन्नता है कि वर्तमान कोश के प्रथम संस्करण से जहाँ हरियाणवी बोली का दो दशक तक संरक्षण रखने में मेरा विनम्र योगदान रहा है, वहाँ देश-विदेश में अनेक भाषाविदों और शोध विद्यार्थियों ने इसका भरपूर लाभ उठाया है। हरियाणवी बोलने वालों के संख्या-बल को देखते हुए अमरीका तक ने इसके व्यापारिक महत्त्व को समझा है और वहाँ इसके पठन-पाठन की व्यवस्था हो रही है।

इसी शती के आरंभ से हरियाणवी को हरियाणा के विश्वविद्यालयों में स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में सम्मिलित किए जाने के कारण इस कोश का महत्त्व और उपयोगिता अधिक बढ़ गई है। कुछ वर्षों से यह कोश उपलब्ध न होने के कारण इसके पुनः प्रकाशन की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी।

वर्तमान संस्करण में लगभग 5000 नए शब्द जोड़ दिए गए हैं। इनमें अधिकांश वे शब्द हैं जो गत 25-30 वर्षों में छपी हरियाणवी बोली की पुस्तकों से लिए गए हैं। इस कार्य में डॉ. श्याम सखा श्याम, श्री राजकिशन नैन, श्री रामफल चहल, डॉ. महासिंह पूनिया, डॉ. पूर्णचंद शर्मा, श्री एम. पी. भारद्वाज तथा डॉ. विष्णुदत्त भारद्वाज का मुख्य सहयोग रहा है।

इन नए शब्दों को कोशक्रम में संजोने का कठिन काम श्रीमती विमला कौशिक ने संपन्न किया। मैं कोश की भूमिका में भी यह श्रेय उनको दे चुका हूँ कि वे कोश की सह-संपादक होने की अधिकारी हैं। पौत्र वरेण्य ने शब्दों की नए सिरे से गणना में योगदान किया है।

इन नये शब्दों के अतिरिक्त मेवाती शब्दावली के मुँह बोलते शब्द भी सम्मिलित कर दिए गए हैं (दे. परिशिष्ठ-3)। यद्यपि मेवाती बोली के अधिकांश शब्द केन्द्रीय हरियाणवी (बाँगरू) से कुछ ध्वनिभेद के साथ ही उच्चरित होते हैं फिर भी व्याकरणिक कोटि से सर्वनाम, विशेषण, वचन परिवर्तन आदि के रूप कुछ भिन्न हैं और परिणामतः अर्थ समझने में कुछ कठिनाई होती है। इस क्षेत्र में मिश्रित मेवाती संस्कृति के कारण महाभारत आदि के प्रमुख पात्रों के नाम उच्चारण की दृष्टि से काफी भिन्न हो गए हैं। आशा है वर्तमान मेवाती शब्दावली शब्दार्थ स्पष्टता की दृष्टि से सहायक होगी।

आजादी के बाद नाप-तोल के पैमानों में मूल-चूल परिवर्तन हुआ है। पुराने मापों की शब्दावली को सुरक्षित रखने के लिए परिशिष्ट-4 में उन्हें जोड़ दिया गया है।

मैं स्वयं अनुभव करता हूँ कि अभी कोश में अनेक नए शब्द सम्मिलित किए जाने की विपुल संभावना है। आशा है यह कमी अगले संस्करणों में पूरी की जा सकेगी।

(डॉ.) जय नारायण कौशिक

सी-605, सरस्वती विहार

दिल्ली-110034 (भारत)

4 नवम्बर, 2015

81वां जन्म दिवस

दो शब्द

हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, हिन्दी के विकास के अतिरिक्त पंजाबी, उर्दू, संस्कृत साहित्य से संबंधित पुस्तकों का प्रकाशन करती है। अकादमी ने हिन्दी माध्यम से उच्च शिक्षा की योजना के कार्यान्वयन के लिए विज्ञान, कृषि, आयुर्विज्ञान, इंजीनियरी आदि विषयों से संबंधित उच्च स्तर की पुस्तकों का प्रकाशन भी किया है।

अकादमी हरियाणा की संस्कृति, कला तथा हरियाणवी भाषा-बोलियों के विकास को प्रोत्साहन दे रही है। अकादमी ने हरियाणा के साधु-संत, स्वांगी तथा साहित्यकारों की अनेक ग्रंथावलियों का प्रकाशन किया है। अकादमी साहित्य की विभिन्न विधाओं की पुस्तकों को पुरस्कृत करती है तथा प्रकाशन सहायता अनुदान देती है।

यह अकादमी हरियाणवी भाषा के संरक्षण के प्रति जागरूक है। अकादमी के पूर्व निदेशक रहे डॉ. जय नारायण कौशिक हरियाणवी के विशेषज्ञ हैं। इन्होंने प्रसिद्ध वेद मंत्रों (धरा के गीत) तथा महात्मा बुद्ध के धम्मपद (बुद्धवाणी) का हरियाणवी में पद्यानुवाद किया है। जिनका प्रकाशन इसी अकादमी ने किया है। "यात्रा के पड़ाव" पुस्तक में इन्होंने भर्तृहरि के शतकों का हरियाणवी में पद्यानुवाद किया है।

डॉ. कौशिक की कोश कला में विशेषज्ञता है। इन्होंने वैदिक हरियाणवी कोश तथा हरियाणवी प्रत्यय कोश की भी रचना की है। ये हरियाणा एन्साइक्लोपीडिया के सलाहकार भी रहे हैं।

डॉ. कौशिक द्वारा रचित हरियाणवी-हिन्दी कोश का प्रकाशन इस अकादमी ने सन् 1985 में किया था। इसका परिवर्द्धित संस्करण प्रस्तुत करते हुए हमें प्रसन्नता है।

मुक्ता

निदेशक

डॉ. मुक्ता

हरियाणा ग्रन्थ अकादमी

संकेत सूची

अं.	अंग्रेजी
अ.	अरबी
अव्य.	अव्यय
आदे. रू.	आदेशात्मक रूप
उ.	उदाहरण
उप.	उपसर्ग
कौ.	कौरवी
एक व.	एक वचन
क्रि.	क्रिया
क्रि. अ.	क्रिया अकर्मक
क्रि. वि.	क्रिया विशेषण
क्रि. स.	क्रिया सकर्मक
ज. सा.	जन साहित्य पत्रिका
तु.	तुर्की
तुल.	तुलनीय
दे.	देखिए
दे[1].	देखिए शब्द क्रम एक
पं.	पंडित
पुं.	संज्ञा पुल्लिग
पृ.	पृष्ठ
प्रत्य.	प्रत्यय
प्रा.	प्राकृत

प्रे. रू.	प्रेरणार्थक रूप
फ़ा.	फ़ारसी
बहु. वच.	बहुवचन
बा.	बागड़ी
भू. का.	भूतकालिक रूप
मा. रा.	मांगे राम
मु.	मुहावरा
ळ/ल़	मूर्धन्य ल
ल. चं.	लखमी चंद
लोको.	लोकोक्ति
लो. गी.	लोकगीत
वि.	विशेषण
स्त्री.	स्त्रीलिंग
सर्व.	सर्वनाम
सं.	संस्कृत
सा. स्मा.	साहित्य स्मारिका
ह.प्र.लो.	हरियाणा प्रदेश लोक साहित्य
हिं.	हिंदी भाषा
-	योजक चिह्न,
~	लहरिया चिह्न
~ ~	दो लहरिया के चिह्न
?	अर्थ में अस्पष्टता
>	शब्द का प्राचीन रूप

भूमिका

कोश-ग्रंथों की लेखन परंपरा वैदिक काल से ही निरन्तर चली आ रही है। सभी कोशों के रूप में विभिन्नता के दर्शन होते हैं। इन विभिन्नताओं का कारण कोशकारों के उद्देश्यों की भिन्नता है।

कोश के प्रमुख उद्देश्य

हरियाणवी उपभाषा का यह कोश कुछ विशिष्ट उद्देश्यों को ध्यान में रख कर तैयार किया गया है। भाषा परिवर्तनशील है। यह परिवर्तन इतना सहज और स्वाभाविक है कि इसका अनुभव भाषा के पारखी ही कर सकते हैं। जिस प्रकार मनुष्य दर्पण में नित्य अपना मुखड़ा देखता है और यह अनुभव नहीं कर पाता कि कब बचपन बीता, कब यौवन ढला और कब वह नर-कंकाल बन गया, इसी प्रकार भाषा के विकास या ह्रास की गति है। मनुष्य के विकास को उसके समकालीन व्यक्ति अनुभव करते हैं क्योंकि लंबे समय तक वे उसके साथ रहते हैं लेकिन भाषा के परिवर्तन को अनुभव करने वाले शताब्दियों तक दीर्घजीवी व्यक्ति कहाँ से आएँ? इस कार्य को भाषा के जागरूक विद्यार्थी गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से सम्पन्न करते आए हैं।

हरियाणवी का लिखित तथा प्रकाशित साहित्य विपुल मात्रा में उपलब्ध न होने के कारण यह आवश्यक है कि इसके लोक साहित्य की शब्दावली का संग्रह किया जाए। यदि यह कार्य अब भी नहीं किया गया तो कुछ ही शताब्दियों के बाद इस भाषा का रूप सर्वथा परिवर्तित हो जाएगा।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद और 1956 ई. के राज्य-पुनर्गठन के समय हरियाणा क्षेत्र को हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र घोषित किया गया। दस वर्ष बाद, 1 नवंबर 1966 को, हरियाणा क्षेत्र को पंजाबी भाषा-भाषी क्षेत्र पंजाब से पृथक् करने का आधार भी इस क्षेत्र की भाषा-भिन्नता ही थी। हिन्दी राष्ट्र की भाषा है। इसे अपनाना राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना है किन्तु इसके साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि प्रांतीय भाषा की विशिष्टता भी बनी रहे। इसके लिए आवश्यक है कि इसकी शब्दावली का संग्रह किया जाए। इस शब्दावली को क्षेत्र की अमूल्य धरोहर समझा जाए।

कोश शब्दों का संग्रह मात्र नहीं होता। शब्दों के माध्यम से क्षेत्र विशेष की संस्कृति, सभ्यता, लोकाचार, परंपराएँ और अगणित सामाजिक तथा आर्थिक आयाम उद्घाटित होते हैं। इन शब्दों के माध्यम से हरियाणा क्षेत्र के इस प्रकार के प्रकट, लुप्त तथा सुप्त स्रोतों को भासित करने का प्रयत्न किया गया है। मेरी अपनी बृहत्

योजना हरियाणवी संस्कृति संदर्भ-कोश की थी किन्तु अपनी सीमाओं और लोक सहयोग के अभाव में इस कोश के माध्यम से उसकी आंशिक पूर्ति करने का प्रयत्न हो पाया है। यह कोश उस बृहत् कार्य की भूमिका का कार्य कर सकता है।

हरियाणवी का इसकी सभी उप-बोलियों को समेटने वाला कोई प्रामाणिक व्याकरण भी उपलब्ध नहीं है। यत्र-तत्र इस विषय पर कुछ सामग्री अवश्य उपलब्ध है। इस भावी कार्य के लिए भी यह कोश संदर्भ-सामग्री के रूप में काम आ सकता है।

हरियाणवी में हुए ध्वनि परिवर्तन की दिशाओं में भी कोई महत्त्वपूर्ण कार्य उपलब्ध नहीं है। इस कोश की सहायता से इस काम को आगे बढ़ाया जा सकता है।

हरियाणवी के वाक्य गठन की अपनी शैली है। शब्दों के प्रयोग के माध्यम से इस प्रकार के वाक्य उदाहरणस्वरूप दिए गए हैं जिनसे इस कार्य पर भी आगे शोध हो सके।

हरियाणा की अपनी लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे हैं जिनमें इस भूमि की सुवास है। यत्र-तत्र इन्हें भी देने का प्रयास किया गया है।

कोश के माध्यम से हरियाणवी के वैदिक, संस्कृत तथा हिन्दी शब्दों के पर्यायों को दर्शाया गया है। कोश-शब्दावली के माध्यम से क्षुधा (खुद्ध्या), तृषा (तिस), स्थेयस (थ्यावस), क्षोभ (छोह) आदि शब्दों को समझने में विद्यार्थियों को सुविधा रहेगी। वे क्षुधा का अर्थ भले ही भूल जाएँ क्योंकि उन्होंने इसे भोगा नहीं है किन्तु 'खुद्ध्या' को उन्होंने भोगा है। इस कार्य के माध्यम से हिन्दी तथा संस्कृत शब्दों को सहज रूप से सीखने में सुगमता रहेगी।

हरियाणा की भाषा के अपने रूपक तथा उपमाएँ हैं। इन्हें शब्दों के प्रयोग के माध्यम से अंकित किया गया है।

अब तक जितने भी हिन्दी कोश उपलब्ध हैं उनके लेखे-जोखे का अधिकतर काम बनारस के आस-पास के विद्वानों ने किया है। उनकी शब्दावली क्षेत्र विशेष की शब्दावली बन कर रह गई है। परिणामस्वरूप, जिसे आज हिन्दी कहा जाता है वह सर्वग्राह्य लोक-भाषा नहीं बन पा रही। इसका एक कारण यह भी है कि जिन-जिन प्रदेशों ने अपने आप को हिन्दी भाषा-भाषी घोषित किया है वहाँ कि ग्रामीण बोलियों की शब्दावली उपेक्षित रही है। परिणामस्वरूप लगभग अर्धशताब्दी बीतते-बीतते भी हिन्दी, हिन्दी-प्रदेशों की भाषा भी नहीं बन पा रही है। प्रस्तुत कार्य के माध्यम से इस अभाव की आंशिक पूर्ति हो सकती है। हरियाणवी के अनेक शब्दों को मानक हिन्दी कोशों में सम्मान का स्थान देना होगा।

हरियाणवी की उपर्युक्त सभी विशेषताओं का वर्णन आगे इसकी भाषा-विशिष्टताओं के संदर्भ में सोदाहरण किया जाएगा।

वर्तमान कार्य

मैं सन् 1969-74 के समय कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से प्रो. उदय शंकर के निर्देशन में हरियाणा की पाठ्य-पुस्तकों की शब्दावली पर शोध-कार्य कर रहा था। शोध-कार्य के समय मुझे ज्ञात हुआ कि क्षुधा, क्षोभ, तृषा, पिपासा, नवनीत, ईर्ष्या आदि शब्दों को बहुत कम प्रतिशत विद्यार्थी समझते हैं। मेरा विचार था कि यदि इन शब्दों का अर्थ विद्यार्थियों की मातृबोली के माध्यम से खुद्ध्या, छोह, तिस, पिस, नूणी, ईरखा बताया गया होता तो वे इन शब्दों का अर्थ शत-प्रतिशत ग्रहण कर लेते। लेकिन इस कार्य को कौन करे? मैंने मन ही मन इस चुनौती को स्वीकार करने का निश्चय किया और शोध-कार्य के बीच में ही इस कार्य का श्रीगणेश कर दिया।

हरियाणवी मेरी अपनी मातृबोली है। सोलह वर्ष की अवस्था तक मुझे अपने गाँव (जहाँगीरपुर, तहसील झज्झर, जिला रोहतक, हरियाणा) में रहकर शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। अत: मैं इस उपभाषा के साथ एकरसता का अनुभव करता हूँ। इसी कारण सन् 1977-78 तक लगभग 25,000 हरियाणवी शब्दों का संग्रह तैयार हो गया।

हरियाणवी लोकोक्तियों और मुहावरों की एक संक्षिप्त सूची परिशिष्ट में दी गई है। इन लोकोक्तियों और मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग देना अनावश्यक रूप से कोश का कलेवर मात्र बढ़ाना ही होता। लोकोक्ति और मुहावरों के अवलोकन से ज्ञात होगा कि हिन्दी के लोकोक्ति और मुहावरों का मूल स्रोत हरियाणवी ही है।

हरियाणवी-गद्य की बानगी के रूप में परिशिष्ट में दो कहानियाँ भी दी गई हैं ताकि विद्वानों को इसके शब्दों के अतिरिक्त क्रिया, काल, वचन, वाक्य-गठन आदि की प्रकृति का आभास हो सके।

हरियाणवी शब्द की व्याख्या

भूगोलवेत्ता इस तथ्य को स्वीकारते हैं कि गांगेय और दक्षिण के भू-भाग से पहले सिंध और यमुना के भू-भागों का निर्माण हो चुका था। उन दिनों नदी मातृका संस्कृति थी। सिंध द्वारा निर्मित भू-भाग को यदि सिंधु प्रदेश की संज्ञा दी गई तो यमुना द्वारा निर्मित भू-भाग को यामुनेय प्रदेश या यमुना-प्रदेश नाम से अभिहित किया जा सकता है और इस क्षेत्र की संस्कृति को यामुनेय संस्कृति।

सिंधु, हड़प्पा, मोहनजोदड़ो की संस्कृति अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण काल-कवलित हो गईं। यामुनेय संस्कृति अक्षुण्ण रही। इस सांस्कृतिक इकाई की मुख्य विशेषताएँ हैं–निरामिष भोजन, सात्त्विक जीवन, आस्तिकता, निष्काम कर्म, उदारता, शरणागत वत्सलता, स्पष्टवादिता, निर्भीकता, कठोर परिश्रम आदि।

खाण्डव वन और यमुना तट के ओर-छोरों तक विकसित इस संस्कृति को आर्य संस्कृति का नाम दिया गया। जिस समय आराध्य देवों के नाम पर क्षेत्रों के नामकरण की प्रवृत्ति का जन्म हुआ तो इस क्षेत्र का नाम हरयाना या हरयाणा पड़ा।

हर या शिव हरियाणे के आराध्य देव हैं। जहाँ अब भी गाँव-गाँव में शिवालय (सिवाल्ला) हैं। पूजा-पद्धति में शिव की पूजा जल मात्र से हो जाती है। वे ओढर दानी भी हैं।

हरयाणा शब्द की व्युत्पत्ति 'हर' और 'यान' के योग से बनी जान पड़ती है। हर का अर्थ है देवाधिदेव आदि देव, महादेव शिव। 'यान' के संस्कृत में कई अर्थ हैं। एक अर्थ है जाना, सवारी करना। यहाँ नंदी या नादिया पर हर का अटन सामान्य बात थी। नंदी या वृषभ को यहाँ अब भी राजा के समान सम्मान दिया जाता है। हर-पार्वती के अटन के किस्से साधारण आदमी की जबान पर आज भी हैं। हर के यान (नंदी) के खुरों से यह भूमि पावन होती रही है। इस दृष्टि से हरयाणा नाम सटीक बैठता है।

यहाँ के वासी हर के 'यान' अर्थात् अनुयायी, आश्रित, परिजन, सेवक, पुत्र-कलत्र हैं। अतः इस क्षेत्र का नाम हरयाना या हरयाणा सार्थक है।

धार्मिक दृष्टि से यान शब्द उस धर्म का पर्यायवाची भी है जो जहाज के समान इस भवसागर से पार लगा दे। वज्रयान, महायान, हीनयान आदि शब्द अभी भी इस अर्थ में प्रचलित हैं। इस दृष्टि से हर + यान शब्द से हरयाणा शब्द की व्युत्पत्ति तर्कसंगत है।

यदि यान शब्द का अर्थ अभियान से लें तो भी हर के मानस पुत्रों या अनुयायियों ने धुर कन्याकुमारी तक शिव-धर्म के प्रचार का अभियान यहीं से आरंभ किया होगा। शिव की नगरी काशी में प्रचारकों ने यहीं से जाकर शंखनाद किया होगा। इस दृष्टि से भी हरयान, हरयाण, हरयाणा शब्द की संगति है।

'हरयानः' शब्द का अर्थ है हर को मानने वाला देश। 'हरयानः' का बहु-वचनांत रूप 'हरयानाः या हरियाणाः' होने के कारण इसमें वे सभी क्षेत्र आ जाते हैं जहाँ का उपास्य देव 'हर' रहा है। इस प्रकार हरयाणा एक स्थान विशेष का ही नहीं संपूर्ण भारत का पर्याय रहा होगा।

कुछ लोग हरि (श्रीकृष्ण) के यान या गमन से इस क्षेत्र का नाम हरियाणा कहते हैं। लेकिन हरि के रथ के रमण से पूर्व तो यहाँ हर अपने यान पर शंखनाद कर चुके थे। श्रीकृष्ण से पूर्व 'निष्काम कर्म' का प्रचार स्वयं शिव के मुख से यहाँ हो चुका था। श्रीकृष्ण ने तो 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' की पुनः पुष्टि-मात्र की है। यदि हरि शब्द से भी कुछ विद्वान् हरियाणा शब्द की व्युत्पत्ति करते हैं तो किसी को क्या आपत्ति हो सकती है क्योंकि बहुदेववाद के होते हुए भी एकेश्वर-वादी हर और हरि में भेद नहीं बरतते।

अब हरियाणवी शब्द की व्युत्पत्तिपरक चर्चा भी कर ली जाए। 'हरयाणेषु वास्तव्यः' हरयाणावासी ही कालांतर में हरयाणवी कहलाए। इसी प्रकार हरियाणावासियों की भाषा हरियाणवी हुई। यदि वैदिक काल की भाषा को ग्रंथ विशेष के नाम पर

वैदिक भाषा न कह कर क्षेत्र या लोक भाषा के नाम से अभिहित करें तो उसका नाम भी हरयाणवी भाषा ही रहा होगा। लेखक ने इस स्थापना की ओर अपनी पुस्तक वैदिक-हरियाणवी कोश के माध्यम से विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया है। जो शब्द वेद में उपलब्ध हैं उनमें से कितने ही शब्द हरियाणे का सामान्य व्यक्ति दैनिक बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त करता है। ऐसे शब्दों की संक्षिप्त सूची आगे हरियाणवी भाषा के काल विवेचन के अन्तर्गत वैदिक भाषा और हरियाणवी के खंड में दी गई है।

गत सौ वर्षों में विद्वानों ने इस क्षेत्र की भाषा के लिए बाँगरू, देसी, देसड़ी, जाटू, खड़ी बोली, ऊँची बोली, देहलवी, हरियाणी, हरियानी, हरयानवी, हरियाणवी आदि नाम दिए हैं। इन नामों में से कुछ का संबंध भूमि की विशेषता, भाषा की प्रकृति, जाति की बहुलता से है तो किसी का क्षेत्र की व्यापकता से। मैं व्यक्तिगत रूप से हरयाणवी नाम उचित समझता हूँ लेकिन सरकारी प्रचार-प्रसार 'हरियाणवी' नाम को प्रोत्साहित कर रहा है। हमें एकरूपता की दृष्टि से हरियाणवी शब्द पर भी आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

हरियाणवी का क्षेत्र

यदि दिल्ली को हरियाणवी का केन्द्र-बिन्दु मानकर चलें तो मोटे रूप से इस क्षेत्र में वे स्थान आते हैं जो यमुना नदी से निकलने वाली पूर्वी तथा पश्चिमी नहरों से सिंचित हैं। यमुना नदी ताजेवाला से पहली बार मैदानी भाग पर अवतरित होती है। वर्तमान हरियाणा राज्य मोटे रूप में वहीं से आरंभ होता है। इधर पश्चिमी यमुना नहर वर्तमान हरियाणे के करनाल, हिसार, भिवानी, रोहतक, महेन्द्रगढ़, गुड़गाँव आदि क्षेत्रों को सींचती है। इस क्षेत्र में हरियाणवी की बाँगरू, अहीरी, बागड़ी, मेवाती, पहाड़ी, अंबालवी आदि उप-बोलियाँ बोली जाती हैं।

दूसरी ओर पूर्वी यमुना नहर द्वारा सिंचित भू-भाग में हरियाणवी की कौरवी उप-बोली बोली जाती है। कौरवी केंद्रीय हरियाणवी की विस्तृत भू-भाग में बोली जाने वाली ही एक बोली है। 'कौरवी बोली का शब्दकोश' (अप्रकाशित, भूमिका प्रकाशित) की भूमिका में इसके लेखक डॉ. हरद्वारी लाल शर्मा लिखते हैं कि कौरवी की दो उप-शाखाएँ हैं मेरठी और हरियाणवी, एक यमुना के इस पार और दूसरी उस पार (कुरु भारती, बोली अंक 1982 ई.)।

कौरवी का क्षेत्र निश्चित करते हुए डॉ. शर्मा लिखते हैं कि कौरवी (मेरठी) का कुछ क्षेत्र तो निश्चित है जैसे मेरठ जनपद, गाजियाबाद के कुछ भाग, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, देहरादून का मैदानी हिस्सा, बिजनौर और मुरादाबाद का वह क्षेत्र जो बिजनौर से मिलता-जुलता है। डॉ. शर्मा के अनुसार यह भू-भाग वैदिक युग में उत्तर-वेदी के नाम से जाना जाता था।

लेखक को 'कौरवी बोली के शब्दकोश' की पांडुलिपि देखने का अवसर डॉ. शर्मा के निवास-स्थान मेरठ में मिला। इस पांडुलिपि के प्रकाशन पर सर्व-विदित हो जाएगा कि इसके 85-90 प्रतिशत शब्द हरियाणवी के ही हैं।

उपर्युक्त चर्चा भावी शोधकर्ताओं के लिए हरियाणवी का क्षेत्र निश्चित करने में सहायक होगी। संक्षेप में उत्तर में वहाँ तक हरियाणवी भाषा है जहाँ से शुद्ध पंजाबी तथा पहाड़ी भाषा आरंभ होती है और दक्षिण-पश्चिम में इसका विस्तार वहाँ तक है जहाँ से शुद्ध बागड़ी आरंभ होती है। पूर्वी पार्श्व में इसका विस्तार वहाँ तक है जहाँ से शुद्ध ब्रज भाषा आरंभ नहीं हो जाती।

नीचे प्रसिद्ध ज्ञात भाषाओं से इसके कुछ सादृश्य नमूने दिए गए हैं–

वैदिक भाषा और हरियाणवी

(क) तुल्य शब्द

वैदिक		**हरियाणवी**
आरणी	>	आरणी/आरणा
आल	>	आल (कच्चा प्याज)
आस	>	आस (पहली बार उगे मूँछ के बाल)
कार	>	कार (घुड़दौड़)
खर	>	खर (गधा)
खारी	>	खारी (चारा मापने का टोकरा)
गौ	>	गौ
जनी	>	जनी, जणी (स्त्रियों का समूह)
जार	>	जार (अवैध प्रेमी)
नाड़ी	>	नाड़ी (रथ-चक्र)
वाण	>	बाण
रेणु	>	रेणु
बाह	>	वाह (बैल की भार-वहन शक्ति)
समर	>	समर

(ख) तद्भव या सादृश्य शब्द

वैदिक		**हरियाणवी**
अगार	>	अगड़ (बगड़ का पूर्ववर्ती)
अजगर	>	ईजगर
अतिष्कद्वरी	>	स्याह्री (अति कुलटा)
अनड्वाह	>	नारड़ा

वैदिक		**हरियाणवी**
अनृत	>	अनरथ
अभ्र	>	अबर
अर्गल	>	अरली
अश्ववार	>	सरवा (सरोल, नरकट)
अष्ट्रा	>	साँट्टा
आखर	>	खोर, खुरली
आमिक्षा	>	छाः, छाछ
आयुत	>	अताया (घृत)
इक्षु	>	ईंख, ईख
ईर्ष्या	>	ईरखा
उत्तम्भन	>	उलालवा (टेक)
उद्चमस	>	चिड़स, चरसा
उद्धि	>	ऊँटड़ा (वाहन का)
उपानस	>	पीन्नस (एक वाहन)
ऋतु	>	रुत
करीर	>	कैर
करीष	>	करसी
कर्कन्धु	>	काकड़ा (बेर)
कस्तम्भी	>	कक्खी (गाड़ी की टेक)
किंशुक	>	केस्सू, टेसू (पलाश)
किलास	>	कलासिया (काला-चितकबरा बैल)
कीलाल	>	राला, लाटा
कुरीर	>	खुहेरा, खुरेरा
कृकलास	>	किरलकाँट (गिरगिट)
खदिर	>	खैर (कैर जाति का एक वृक्ष)
गर	>	गरल
गर्तारूह	>	गडवाला (वाहक)
गवीनी	>	गोहरण (गाय के मूत्राशय के पार्श्व)
गांग्य	>	गंगे, हर गंगे (गंगा तटीय पंडा)
गृध्रा	>	गिरज, गिद्ध
गोष्ठ	>	गितवाड़

वैदिक		हरियाणवी
ग्रामिन्	>	गामोल्ली
ग्रीवा	>	घीट्टी (गर्दन)
घर्म	>	घाम, घमौरी
चषाल	>	सुहाल (बड़ी सुहाली)
छाग	>	छाग्गल, मशक
जत्रु	>	जात्थर (बोझ उठाने की क्षमता)
जनी	>	जणी (स्त्रियों का समूह)
झष	>	झख
तर्कु	>	ताक्कू
ताबुव	>	तबीज (ताबीज़)
तार्घ्य	>	तप्पड़
तुष	>	तुस
तोक	>	टाब्बर (बाल-बच्चे)
तोत्र	>	ट्योंट (सोटा)
दर्भ	>	डाभ
दर्वि	>	डोहरी
दाव	>	दा (अग्नि)
दित्यौही	>	देई (देवी गाय जिसका दूध जमाया नहीं जाता केवल पीने के काम आता है)
दिधिषु	>	दुहेज्जू (दूसरे विवाह का इच्छुक)
दीव	>	दा, दाव (अक्ष क्रीड़ा)
दुर्वराह	>	बराह (जंगली सूअर)
दृवा	>	ढभोली (दर्भ)
द्रु	>	डोऊ, लकड़ी का चम्मच
धुर	>	धुरी (जूए की)
धेना	>	धीणू (दुधारू गाय)
धाँवर	>	झीम्मर, धीवर
नकुल	>	न्योल (नेवला)
ननादृ	>	नणदी (ननद)
निपाद	>	पाट्टे (निचली भूमि)

वैदिक		हरियाणवी
निवान्या	>	निवाणी, न्याणी (वह गाय जिसका बच्चा मरने पर खलबच्चा दिखा कर दूध निकाला जाए)
नीड	>	नाड (गाड़ी आदि वाहन में गाड़ीवान के बैठने का स्थान)
नृति	>	रथोंढी, बीजोंढी (बीज रखने की थैली)
पटूर	>	पट्ट (जाँघ)
पड्वीश	>	पड़ोस (पशु के पैरों को बाँधने का रस्सा)
पयस्या	>	छा, सीत, छाछ
परिचर्मण्य	>	चमोट्ठा (चाम की बेड़)
परुस्	>	पुरस (साड़े तीन हाथ का नाप)
पर्ष	>	पैर (खलियान)
पलद	>	पलीत्ता (गाड़ी में डाला जाने वाला घास-फूस आदि का बिछौना)
पल्पूलन	>	नूणी (रेह)
पातल्य	>	पछेल्ला (रथ का भाग)
पाशिन्	>	पास्सी (शिकारी)
पीयूष	>	खीस (प्रजनन के बाद निकाला गया पहली बार का दूध)
पीलु	>	पील (जाल के पौधों का फल)
पुंजलि	>	पूँज्जा (सन आदि का तंतु)
पुरीष	>	फूहड़ा
पूर्ववह	>	बींडिया (सबसे आगे जोता जाने वाला बैल)
प्रउग	>	ऊँटड़ा, उँटना (बैलगाड़ी का वह अगला भाग जो भूमि पर टिक जाता है)
प्र-फर्वी	>	फाहफोट्टण (बनावटी व्यवहार वाली स्त्री)
प्राकार	>	परकोट्टा (चहारदीवारी)
प्रातरास	>	बास्सीवारा (प्रातःकाल का अल्पाहार)
फाण्ट	>	पिंड (फेंट कर निकाला हुआ मक्खन का पिंड)
बद	>	बिध (फोड़ा, पशु के खुर के बीच में निकलने वाला फोड़ा)

वैदिक		**हरियाणवी**
बर्हिस्	>	बर्हि (घास-फूस आदि की रस्सी)
बल्बूथ	>	बलबूत्ता (सौ दास देने वाला)
भसद्	>	भोस्सी (स्त्री का गुप्तांग)
मना	>	मणा (एक मन भार का बट्टा)
मलिम्लु	>	मल्ला-मल्ली (धींगा-मस्ती)
महिष	>	म्हैंस (भैंस)
मिह्	>	मींह (मेंह)
मुंज	>	मूँज
यज्ञ	>	जग (यज्ञ)
यवागू	>	राबड़ी (जौ की लप्सी)
यौवन	>	जोब्बन
रज्जू	>	नेज्जू (पानी निकालने की रस्सी)
रोहितक	>	रीठड़ा (रीठा)
लवण	>	लामणी (लामनी)
लांगल	>	हळ
वंधुर	>	पंजारा (वह स्थान जहाँ बैठकर गाड़ीवान वाहन हाँकता है)
वकल	>	बक्कल (वृक्ष की छाल)
वर्त्र	>	बात्ता (घास-फूस का बंधन)
वर्ध्र	>	बाद्धी (चर्म-रज्जू)
वब्रि	>	बबरी (भारी शरीर)
वाजिन	>	जाम्मण (जामन)
वात्रा	>	ब्याँतड़ (नव-प्रसूता गौ)
वितस्ति	>	बित्ता, बीत्ता (एक नाप विशेष)
वृषभ	>	बहड़ा, बैल (नई आयु का)
शण	>	सण (सनई)
शम्या	>	सिलम, सेल (जूए आदि की कील)
श्याण्डक	>	साँड्डा (साँडा)
शल्मलि	>	सिम्बल (सेमर)
शल्य	>	सेल, सकेल (जुए की कीली)
शश	>	सुस्सा (शशक)

वैदिक		हरियाणवी
शालि	>	सेल्ला (सेला चावल)
शिंशपा	>	सीस्सम (शीशम)
शिक्य	>	छींक्का (छिक्का)
शीपाल	>	सिवाल (सेवाल)
शेषस्	>	चेह्‌बड़ा (छौना)
श्वश्रू	>	सास्सू (सास)
सरस्वती	>	सुरस्ती (सरस्वती)
सीता	>	सीत्ता (हल की फाल)
सूत-वशा	>	बहलाँ (गर्भिणी न होने वाली गाय)
सेलग	>	छैल्लड़ (साँड)
स्थूणा	>	थूणा, थूण (स्तंभ)
स्यूम गृभ	>	चबड़ैल (लगाम चबाने वाला पशु)
स्वसृ	>	जीज्जी (जीजी, बहन)
हर्म्य	>	हेल्ली (हवेली)

विस्तार-भय से यहाँ कुछ ही ऐसे शब्द दिए गए हैं। जिनसे हरियाणवी की वैदिक भाषा से समकालीनता का पता चलता है।

संस्कृत तथा हरियाणवी

वैदिक संस्कृत या वैदिकी के संदर्भ के साथ-साथ यदि लौकिक संस्कृत के साथ हरियाणवी की तुलना करें तो हमें ज्ञात होता है कि सैकड़ों शब्द तो ऐसे हैं जो हरियाणवी में संस्कृत के तुल्य ही हैं और सहस्त्रों शब्द तद्‌भव या सादृश्य दिखाई पड़ते हैं।

विद्वानों के अनुसार संस्कृत का चरम गौरव काल मोटे रूप में 1500 ई. पू. से 500 ई. पू. रहा है। यदि वर्तमान हरियाणवी शब्दावली की संस्कृत-शब्दावली से तुलना करें तो स्पष्ट ज्ञात होता है कि हरियाणवी संस्कृत के समानान्तर अपनी सत्ता बनाए हुए थी। आज जैसे उत्तर भारत के अधिकांश राज्यों को हिन्दी भाषा-भाषी कहा जाता है लेकिन उनमें ब्रज, भोजपुरी, राजस्थानी भी सशक्त हैं इसी प्रकार संस्कृत के साथ-साथ हरियाणवी भाषा की स्थिति रही होगी। यदि संस्कृत साहित्य की भाषा थी तो हरियाणवी लोक भाषा रही होगी।

अपने मंतव्य को स्पष्ट करने के लिए यहाँ संस्कृत तथा हरियाणवी के शब्दों की संक्षिप्त तुलनात्मक शब्द-सूची दी जा रही है। इस सूची के शब्दों के विश्लेषण से ज्ञात हो जाएगा कि यहाँ कितने ही शब्द ऐसे हैं जो हरियाणवी और संस्कृत में हैं किन्तु हिन्दी कोशों में अप्राप्य हैं। इन समस्त शब्दों को भारतीय हिन्दी कोशों में समेटने की आवश्यकता है।

(क) तुल्य शब्द

संस्कृत		हरियाणवी	संस्कृत		हरियाणवी
अंबर	>	अंबर	जग	>	जग
करद	>	करद	दया	>	दया
कुरंड	>	कुरंड	बर्हि	>	बर्हि
कोट	>	कोट	मण	>	मण
गाध	>	गाध	रंक	>	रंक
चारण	>	चारण	रण	>	रण
चित	>	चित	रस	>	रस
चिता	>	चिता	राज	>	राज
चीर	>	चीर	रीढ	>	रीढ
चूड़ा	>	चूड़ा	रूप	>	रूप
छेद	>	छेद	सार	>	सार

(ख) तद्‌भव या सादृश्य शब्द

संस्कृत		हरियाणवी	संस्कृत		हरियाणवी
अक्षवाट	>	अखाड़ा	इतः	>	इत
अक्षी	>	आँखुवा	ईण्ड	>	ईढी
अग्रतः	>	अगेत्ता	ईदृशः	>	इसा
अग्रिम	>	आग्गम	उपशाला	>	उसारा
अत्र	>	अड़ै	उल्लुंठन	>	उळळणा
अदृष्ट	>	अदीठ	ऐणी	>	ऐंणी
अवसर	>	ओसरा	कंख	>	खंख
आर्द्र	>	आल्ला	कच्चोलक	>	कचोला़
आश्चर्य	>	अचरज	कटि	>	कड़
कटिशूल	>	कटसूल	ज्वर	>	जुर
करील	>	कैर	बलीवर्द	>	बलध
कर्बुर	>	कबरा	बहुकरी	>	भोकरी (बुहारी)
कल्यावर्त	>	कलेवा	डाकिनी	>	डंकणी
काक	>	काग	तृषा	>	तिस
कास	>	काँस	दद्रू	>	ददोड़ा
कुत्र	>	कित	दर्भमंच	>	डामचा
कुल्हरिका	>	कुल्लाँह	दहन	>	दहम

संस्कृत		हरियाणवी	संस्कृत		हरियाणवी
कुष्मांड	>	कोहळा	दादुर	>	टरड़ू
कृसर	>	खीचड़ी	दीर्घ	>	डिरघ
केदार	>	क्यार	दृढांग	>	धींग/धींगड़ा
केसरी	>	केहरी	देहली	>	देहल़ी
कोष्ठागार	>	कुट्ठ्यार	धर्मार्थ	>	धरमाद्दा
क्रोड	>	कोल़ी	धूम्राधार	>	ढुंगार
क्षारक	>	खरोल्ला	धेनु	>	धीणु
क्षुधा	>	खुद्ध्या	धौरेय	>	धाड़ी
क्षेप	>	खेप	नवनीत	>	नूणी
खंड	>	खण	निरंध	>	निरंद
खेट	>	खेड़ा	निश्चिंत	>	नचीत
गेंडुक	>	गींड	पंक्ति	>	पंगत
गोधूलिक	>	गोद्धू	पट्टिका	>	पटिया
गोफण	>	गोपिया	पलिघ	>	पल़वा
घटमंच	>	घड़ोंच्ची	पादप	>	पौड़
घर्म	>	घाम	पादपाश	>	पड़ोस
घूक	>	घूग्घू	पिंड	>	पींड
चंगेरिक	>	चंगेरी	पुरतः	>	पुरकै
चक्री	>	चकली	पूलक	>	पूल़ी
चाटकेरः	>	चिड़कला	पैंण	>	पैंणी
चातुर्मास्य	>	चमास्सा	पोंड्रक	>	पोंड्डा
चिंचा	>	चीआँ	प्रक्षालन	>	पखाल़णा
चिकिल	>	चोभल़ी, चहली	प्रताड़न	>	पिदणा
चूड़ा	>	चूँड्डा	प्रतोलिका	>	पोल़ी
चूर्ण	>	चून	प्रवाह	>	बाहला
छागल	>	छाग्गल़	प्रसर	>	पस्सो
जट्	>	जेट्टा	फलाहार	>	फल़िहार
जरठ	>	झरड़	रेणु	>	रैणी
जीवा	>	जेवड़ा	लट्वा	>	लटूर
			लत्तक	>	लत्ता
बेल्लक	>	बेलवा	लप्सिका	>	लाप्सी

संस्कृत		हरियाणवी	संस्कृत		हरियाणवी
भुशुंड	>	भसंड	वज्र	>	बज्जर
भूर्जन	>	भूँजणा	वनयष्टि	>	बणसटी
भ्रष्ट	>	बेहू	वयन	>	बणत
भ्रूण	>	भूँडरू	वराह	>	भरेड़ा
मंच	>	माँच्ची	वल्कल	>	बक्कल
मंजरी	>	मँजीरी	वहन	>	वाह
मंडप	>	माँढा	वाणिज्य	>	बणज
मंडल	>	माँडल़	वार्षिक श्राद्ध	>	बरसोद्धी
मढ	>	मंढ	विपादिका	>	बिवाड़
मणिकसूत्र	>	मनकसूत्तर	विभूति	>	भभूत
मनुष्य	>	माणस	विवाहिता	>	ब्याहता
मल्ल	>	महाल	विषम	>	बिखम
महाद्वार	>	महैंदवार	विस्मरण	>	बिसरणा
महिषी	>	म्हैंस/भैंस	वीरुध	>	बिड़ंग
मातृज	>	माईजाया	वैश्वानर	>	बंसधर
मान्यता	>	मानता	व्याघ्र	>	भघेरा
मिश्रित	>	मिस्सी/मेस्सी	शकट	>	छकड़ा
मिष	>	मिस	शण	>	सण
मुकुट	>	मोड़	शर	>	छड़
मुकुल	>	मुरड़	शल	>	सकेल
मुद्गर	>	मोग्गर	शलाका	>	सल़ी
मुद्रा	>	मुँद्रा	शाख	>	साँख
युक्ति	>	जुगती	शिक्या	>	छींक्का
योग्य	>	जोग	श्मशाणी	>	मसाणी
यौवन	>	जोब्बन	संक्रांति	>	सकरांत
रंधन	>	रंधणा	सत्त्व	>	सत
रंभन	>	राँभणा	सरपत्र	>	सर
रय	>	रई	सर्वत्र	>	सरबत्तर
रवण	>	रोणा	स्थाणु	>	ठाल्लू
राट्	>	लाट	स्थेयस	>	थ्यावस
राशि	>	रास	ह्रद	>	दह

प्राकृत तथा हरियाणवी

प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं के विकास-क्रम पर विचार करते हुए विद्वानों का विचार है कि प्राकृत भाषाओं का प्रथम स्तर 2000 ई. पू. से ही आरंभ हो गया था। वैदिक भाषा के साथ-साथ जन-जीवन की जो स्वाभाविक (प्रकृत) कथ्य भाषा थी वह भी प्रादेशिक भिन्नता लिए हुए थी। प्राकृत का यह रूप आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की उत्पत्ति तक चलता रहा। इनका काल मोटे रूप से 900 ई. तक माना जाता है।

प्रथम काल की प्राकृत-भाषा में विभक्ति-बहुलता पाई जाती है तथा 900 ई. तक की प्राकृतों में विभक्ति के बोधक स्वतंत्र शब्दों का व्यवहार होने के प्रभाव मिलते हैं। यदि इस दृष्टि से हरियाणवी के शब्द-गठन का अध्ययन करें तो हमें ज्ञात होता है कि आज भी इसमें विभक्ति प्रयोग की प्रवृत्ति कुछ-कुछ प्राकृत के समान ही है।

हरियाणवी में अनेक उसी प्रकार के परिवर्तन मिलते हैं जिस प्रकार वैदिक भाषा से प्राकृत में उपलब्ध हैं। यथा–

1. ऋ का उ	ऋतु–रुत, वृक्ष–रूँख, पृच्छ–बूझ।
2. द का ड	दर्भ–डाभ, दर्वि–डोहरी, दंड–डंड।
3. ध का ह	गोधूम–गीहूँ, वधू–बहू।
4. संयुक्त स्वरों में स्वरागम	ध्वज–धजा, श्लोक–सिलोक।

धातुओं की तुलना करने पर भी हमें प्राकृत और हरियाणवी में कुछ-कुछ समानता मिल जाएगी, जैसे–

प्राकृत	हरियाणवी	हिन्दी
1. कड्ढइ	काड्ढै सै	निकालता है।
2. कढइ	काढै सै	उबालता है।
3. खिज्जइ	खिज्जै सै	खिन्न होता है।
4. जुज्झइई	जूज्झै सै	जूझता है।
5. जोअइ	जोवै सै	(दीया) जलाता है।
6. झंखइ	झींक्खै सै	झींकता है।
7. तावइ	तावै सै	(घी) गर्म करता है।

हरियाणवी की तुलना प्राकृत की विभिन्न शैलियों से करने पर यह शौरसेनी-प्राकृत के अधिक निकट ठहरती है। कोश में दी गई हरियाणवी शब्दावली से प्राकृत-शब्दावली का तुलनात्मक अध्ययन करके विद्वान् इनकी समानता के अन्य सूत्र निकाल सकते हैं। आगे संक्षेप में प्राकृत और हरियाणवी की एक संक्षिप्त तुलनात्मक शब्द-सूची बानगी के रूप में दी जा रही है।

प्राकृत		हरियाणवी	प्राकृत		हरियाणवी
अक्खाडय	>	खाड़ा (अखाड़ा)	घाअ	>	घा (घाव)
अट्ट-पट्ट	>	अंड-बंड	छिण्णाली	>	छिणाल़
अड्ड	>	अड़ंगा	टट्ठार	>	ठठेरा
उजड़	>	ऊज्जड़ (उजाड़)	ढोइय	>	ढोणा
कढिअ	>	कड्ढी	ढोल्ल	>	ढोल
कावड़	>	काँवड़ (काँवर)	बुडुण	>	डूबणा
कवण	>	कौण	भमुहा	>	भौं
कोत्थल	>	कोथल़ा	भिडण	>	भिड़णा
कोल्हुअ	>	कोल्हू	राडि	>	राड़ (रार)
खग्ग	>	खड़ग	सुंतो	>	सेत्ती
खोद	>	खोद	हक्क	>	हाँकणा
गाँठ	>	गाँठ			

अपभ्रंश तथा हरियाणवी

अपभ्रंश भाषा का काल मोटे तौर पर 500 ई. से 1000 ई. तक आँका जाता है। कुछ विद्वान् इस काल को बाद तक भी मानते हैं। अपभ्रंश को प्राकृत और आधुनिक भारतीय भाषाओं के बीच की कड़ी माना जाता है।

जिस प्रकार प्राकृत भाषाएँ स्थान भेद के कारण कथ्य भाषा के रूप में भिन्न-भिन्न प्रकार की थीं उसी प्रकार की स्थिति अपभ्रंश की कही जा सकती है। हरियाणवी की स्थिति भी कुछ इसी प्रकार की है। शूरसेन प्रदेश (मथुरा) से सटी होने के कारण इसका संबंध शौरसेनी अपभ्रंश से जोड़ा जाता है। इसी शौरसेनी से ब्रज, हिन्दी, उर्दू का संबंध भी कहा जाता है। दूसरी ओर नागर अपभ्रंश से राजस्थानी, मेवाड़ी, जयपुरी का और टाक्की अपभ्रंश से पूर्वी पंजाबी का संबंध जोड़ा जाता है।

हरियाणवी शब्दावली की प्रवृत्ति का अध्ययन करने से हमें ज्ञात होगा कि यह अपने अंदर ब्रज, राजस्थानी और पंजाबी के प्रभाव को भी समेटे हुए है। परिणामत: इसका संबंध शौरसेनी, नागर तथा टाक्की अपभ्रंश से तो है ही साथ-साथ लहण्डी और ब्राचड़ से भी है। अभी इस क्षेत्र में काफी अनुसंधान की आवश्यकता है। हरियाणवी शब्दावली का यह वृहदाकार कोश सामने आने पर इस दिशा में शोध का कार्य सुगमता से संभव हो सकेगा।

निष्कर्षत: हरियाणवी की सत्ता अपभ्रंश काल के समानान्तर भी रही है। इसकी ध्वनि-व्यवस्था, शब्द-भंडार तथा वाक्य-रचना आदि से ऐसा ज्ञात होता है कि हरियाणवी अभी भी कुछ अंश तक अपने अपभ्रंश के युग से ही गुजर रही है।

इस विषय पर आगे हरियाणवी की भाषागत विशेषताओं पर चर्चा करते समय प्रकाश डाला जाएगा।

हिंदी और हरियाणवी

हिंदी भारत की राजभाषा है। भारत के मध्य तथा उत्तरी अंचल में यह राजस्थान से बिहार तक बोली जाती है। इस भाषा का विकास मेरठ के आस-पास की बोलियों से माना जाता है। वास्तव में साक्ष्य के अभाव में विद्वान् ऐसा मानते रहे हैं। दिल्ली से पूर्व में यमुनापार की बजाय यदि पश्चिम की ओर भी विद्वान् दृष्टिपात करें तो स्पष्ट हो जाएगा कि हरियाणवी में, जिसे पश्चिमी हिन्दी का नाम दिया जाता है, वे सभी भाषायी तत्त्व विद्यमान हैं जिनसे हिन्दी का विकास हुआ है।

वर्तमान कोश के संदर्भ में विद्वान् हिन्दी की शब्दावली, ध्वनि-व्यवस्था, व्याकरणिक आयामों की तुलना हरियाणवी से कर सकते हैं। यदि हिन्दी मुहावरा तथा लोकोक्ति कोशों पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होगा कि इनमें ग्रामीण अनुभवों का ही भाषायी शहरीकरण है। शहरी प्रभाव के कारण हरियाणवी के ण, ळ क्रमशः न तथा ल उच्चरित होने लगे। हिन्दी में 'आ' की ध्वनि का उच्चारण उच्च स्वराघात के साथ होने के कारण हिन्दी हरियाणवी की द्वित्व की प्रवृत्ति से छुटकारा पा चुकी है। हरियाणवी में इसका उच्चारण अधिकतर मध्यम या निम्न बलाघात के साथ होता है। इसीलिए आता, खाता आदि को आत्ता, खात्ता आदि उच्चरित किया जाता है। संक्षेप में हिन्दी भाषा हरियाणवी का शहरी संस्करण है।

आधुनिक हरियाणवी

लिखित साहित्य के साक्ष्य के अभाव में हरियाणवी के आधुनिक रूप के विकास की तिथि निश्चित करना इस समय कठिन कार्य है। पीछे की गई चर्चा में स्पष्ट किया जा चुका है कि हरियाणवी की कुछ शब्दावली उतनी ही पुरानी है जितनी वैदिक तथा संस्कृत भाषा की। पर इस क्षेत्र में शिक्षा के केन्द्र के अभाव के कारण यह गुत्थी और भी पेचीदा हो गई है। सन् 1947 ई. में भारत विभाजन से पूर्व यहाँ की शिक्षा का केंद्र लाहौर था। उस काल में भी इस क्षेत्र की भाषा की उपेक्षा ही रही। सन् 1957 ई. में पंजाब विश्वविद्यालय की स्थापना चंडीगढ़ में होने के बाद भी इस क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं हो पाया। यद्यपि दिल्ली विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1922 ई. में हो चुकी थी किन्तु हरियाणवी पर इस केन्द्र से कुछ ही कार्य हिन्दी विभाग से हुआ है। यहाँ भिवानी, बेरी, झंडेवालान (दिल्ली) आदि शिक्षा केन्द्रों में संस्कृत शिक्षण पर ही बल रहा है। सन् 1956 ई. में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की स्थापना होने के बाद हरियाणवी भाषा अध्ययन के कार्य में कुछ प्रगति हुई है। इसी बीच डॉ० जे० डी० सिंह का 'ए डिस्क्रिपटिव ग्रामर आफ़ बाँगरू', डॉ० शंकर लाल का 'हरियाना प्रदेश का लोक साहित्य', डॉ० शिव कुमार खण्डेलवाल का 'बाँगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन', डॉ०

नानक चंद का 'हरियाणवी भाषा का उद्गम तथा विकास, भाषा विभाग पटियाला के सप्तसिंधु का भाषा विशेषांक, भाषा विभाग हरियाणा की हरियाणवी शब्दावली', डॉ० जय नारायण कौशिक का 'हिंदी हरियाणवी उच्चारण भेद', 'हरियाणवी प्रत्यय-कोश' तथा 'वैदिक-हरियाणवी शब्द कोश', श्री के० सी० शर्मा का 'लखमी चंद' तथा डॉ० सोमदत्त बंसल का 'मानक हिंदी और बाँगरू का व्यतिरेकी विश्लेषण' आदि महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं। ये सभी कार्य उपयोगी होते हुए भी इसके आधुनिक स्वरूप के तिथिक्रम को स्पष्ट करने में पूर्ण सक्षम नहीं हैं।

प्रचुर लिखित साहित्य के अभाव में यह कार्य उपलब्ध शब्दावली के माध्यम से आंशिक रूप से किया जा सकता है। हरियाणवी की जो वर्तमान शब्दावली हमें उपलब्ध है उसमें वैदिक, संस्कृत, प्राकृत, अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी, तुर्की आदि की शब्दावली का मिश्रण है। इस शब्दावली में अधिकांश शब्द देशज या देश्य हैं। देश्य शब्द साधारणत: उन शब्दों को कह दिया जाता है जिनकी व्युत्पत्ति हम संस्कृत भाषा से सिद्ध नहीं कर पाते। वास्तव में ये अज्ञात व्युत्पत्ति वाले शब्द जो देशी, देश्य या देशज नाम से अभिहित किए जाते हैं, ठेठ मध्यदेश की 'देसी', 'देसड़ी' या 'देस्सी' भाषा के अपने शब्द हैं जिनकी व्युत्पत्ति हम अपनी भाषा-विज्ञान की सीमित सीमाओं के कारण सिद्ध नहीं कर पाते।

इस कोश में जो शब्दावली दी गई है वह मोटे रूप से बीसवीं शताब्दी के दूसरे और तीसरे चरण (1925-1975 ई०) में बोली जाने वाली शब्दावली है। सन् 1947 ई० के भारत विभाजन के बाद इस शब्दावली में कुछ महत्त्वपूर्ण भाषिक प्रवृत्तियाँ दृष्टिगत हो रही हैं। हरियाणवी शब्दावली में उर्दू, अरबी, फ़ारसी के शब्दों का प्रयोग उत्तरोत्तर कम हो रहा है। नई पीढ़ी की शिक्षा का माध्यम हिंदी होने के कारण इस प्रभाव को स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है। दूसरे, पाकिस्तान से हरियाणा में आकर बसने वाले विस्थापितों के कारण पंजाबी भाषा के अनेक शब्दों का हरियाणवीकरण करके उन्हें अपनाया जा रहा है। तीसरे, मशीनीकृत कृषि-पद्धति अपनाने के कारण अंग्रेज़ी के अनेक शब्द साधारण ग्रामवासी के प्रयोग के शब्द बनते जा रहे हैं। चौथे, हिंदी-संस्कृत के प्रभाव के कारण अनेक लोग हरियाणवी बोलने में अपनी हेठी समझने लगे हैं और 'देसी' शब्दों का उच्चारण शहरीकृत रूप में करने लगे हैं। विशेषकर 'ळ' और 'ण' का उच्चारण 'ल' और 'न' होता जा रहा है। वर्णों में द्वित्व का प्रभाव कम हो रहा है। इ, उ की मात्राओं में दीर्घीकरण का प्रभाव कम हो रहा है। वाक्य-गठन पर हिंदी वाक्य रचना का प्रभाव बढ़ रहा है।

हरियाणवी की उप-बोलियाँ

इस कोश में बाँगरू को ही हरियाणवी नाम दिया गया है। रोहतक के चारों ओर तथा इधर धुर दिल्ली तक बोली जाने वाली यह भाषा हरियाणे की केंद्र भाषा

है। हरियाणा के सीमावर्ती क्षेत्रों में राजस्थानी, ब्रज, पहाड़ी, पंजाबी आदि बोलियों के छींटे कहीं-कहीं उड़ते बादल की बौछार की तरह छिटके हुए अवश्य मिलते हैं लेकिन वे सूखी धरती पर यत्र-तत्र बिखरे छीटों की तरह स्पष्ट पहचाने जा सकते हैं। अहीरी, मेवाती, बागड़ी, कौरवी के परनाले बरसाती नालों के समान कहीं-कहीं अपनी सत्ता को स्पष्ट दर्शाते दीख पड़ते हैं लेकिन घूम-फिर कर वे अपने उद्गम-स्रोत हरियाणवी में ही पुनः विलीन हो जाते हैं। नीचे हरियाणवी की इन्हीं उप-बोलियों के विषय में सामान्य जानकारी दी जा रही है। छोटे क्षेत्रों में इस प्रकार की भाषा-भिन्नता का एक प्रमुख कारण इस क्षेत्र का छोटे-छोटे राजा-रजवाड़ों, नवाबों आदि की रियासतों के रूप में विभाजन भी रहा है।

मेवाती

मेवाती हरियाणवी की एक उप-बोली है। मोटे रूप से हरियाणा का लगभग एक हजार वर्ग मील का क्षेत्र मेवाती बोली का है।

मेवात मुख्यतः मुसलमान जाटों का क्षेत्र है। हरियाणा में इन्हें 'मूले़ जाट' (मुसलमान जाट) कहते हैं। मुगल शासन-काल में इस क्षेत्र के लोगों का सामूहिक धर्म-परिवर्तन किया गया था। मेवों के बहुत से रीति-रिवाज़ हिन्दुओं के समान हैं। इनकी बोली केन्द्रीय हरियाणवी के समान ही है। इसकी शब्दावली की विशेषता उर्दू के शब्दों का अधिक प्रयोग है। राजस्थानी के शब्दों का भी इसमें मिश्रण है। यह क्षेत्र एक ओर ब्रज से सटा है तथा दूसरी ओर जटात से। परिणामतः इसमें ब्रज और जाटू बोली का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। इस बोली को 'बीघोत्ती' भी कहते हैं। अलवरी, नाहेड़ा, काठेरी और राठी इसकी उप-बोलियाँ हैं।

मेवाती का हरियाणे में पड़ने वाला क्षेत्र तहसील गुड़गाँव, रेवाड़ी, बावल, पाटौधी, नूँह, फिरोजपुर झिरका और झज्झर के कुछ-कुछ भाग हैं। इस बोली के भाषा-भाषी अनुमानतः 5 लाख लोग हैं।

यदि मेवाती की भाषागत विशेषताओं का विश्लेषण करें तो हम यहाँ भी हरियाणे की केन्द्र-भाषा की तरह 'ण' और 'ळ' की ध्वनियों का प्राधान्य पाते हैं। खाणा, पीणा, नाला़, खाल़ आदि शब्दों में इन ध्वनियों को सामान्य रूप में देखा जा सकता है। इस क्षेत्र में महाप्राण अघोष वर्णों का उच्चारण विशेषतः होता है। यथा—थी—ही, भी—बी, अभी—अबी आदि। कहीं-कहीं ह का उच्चारण अल्प-प्राण के समान ही है। जैसे—ही—ई (यहीं थी—याँ ई)।

केंद्रीय हरियाणवी के समान संज्ञाओं का बहुवचन बनाते समय आँ लगाने की प्रवृत्ति भी इसमें है। जैसे—छोहरा—छोह्राँ, रात—रात्ताँ आदि।

नीचे मेवाती के कारकों के कुछ विशेष प्रयोग भी उदाहरणार्थ द्रष्टव्य हैं—

कर्त्ता—ने हमाँ नैं, जनैं नैं।

कर्म–कूँ, तें	घर कूं, या तें।
करण–सूँ	इन सूँ, सिर सूँ।
संप्रदान–लू	खाणा लेण लू।
अपादान–सु	कब सु।
संबंध–को, का, के, की	या को, या की।
अधिकरण–मैं, पै	गाल़ भर मैं, वा पै।
संबोधन–वाड़ी!	वाड़ी! मेला कूं जावै है।

मेवाती में सर्वनाम के रूप प्रायः ब्रज के समान हैं। कहीं पर 'अपना' के लिए 'आपणू', 'मैं' का बहुवचन 'हमाँ', 'यह' के लिए 'वा' या 'वाऊ' आदि का प्रयोग भी मिलता है। आकारान्त का ओकारान्त करने की भी यहाँ प्रवृत्ति है। यथा–म्हारा–म्हारो, थोड़ा–थोड़ो। हरियाणवी की केंद्र भाषा के समान ग्यारह से अठारह तक की संख्याएँ 'ह' अंत नहीं हैं।

मेवाती में सामान्यतः भूतकाल में क्रिया का अंत 'ओ' तथा 'यो' से होता है। यथा–गयो थो, हुयो थो। ओकारान्त का यह प्रभाव अहीरवाटी में भी है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि मेवाती की प्रवृत्ति कहीं-कहीं स्वतंत्र होते हुए भी केंद्रीय हरियाणवी में ही समा जाती है।

ब्रज

ब्रज अपने आप में स्वतंत्र बोली है। इसका समृद्ध रूप एक विस्तृत भूखंड में व्याप्त है। इसका धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व भी है। ब्रज से सटे हरियाणे के क्षेत्र में इस बोली का उन्मुक्त प्रयोग होता है किन्तु यह क्षेत्र अत्यंत सीमित है। यह प्रभाव गुड़गाँव तहसील के पलवल क्षेत्र में मुख्य रूप से है। यहाँ ड़, ल़ को र में परिवर्तित कर देते हैं। यथा–कीड़ी–कीरी, काल़ा–कारा। इस क्षेत्र में आकारान्त शब्दों को ओकारान्त करने की प्रवृत्ति भी है। जैसे–गया–गयो, खाया-खायो आदि। इस क्षेत्र में णान्त क्रियाओं के स्थान पर नान्त क्रियाओं को ओकारान्त करने की प्रवृत्ति है। यथा–खाणा–खानो, पीणा–पीनो आदि। ब्रज की भाषागत विशेषताओं का विवरण देना यहाँ अनावश्यक ही रहेगा।

अहीरवाटी, हीरवट्टी, अहीरी या हीरी

अहीरवाटी, हीरवाट्टी, अहीरवाल या अहीराणी, अहीरी या हीरी का संबंध मुख्यतया अहीर जाति से जोड़ा जाता है। यह बोली अहीरबहुल जनसंख्या वाले गाँवों में बोली जाती है। इसका क्षेत्र मुख्यतः कोसली, महेंद्रगढ़, नारनोल, बहरोड़, मुँडावर, बावल, रिवाड़ी तथा पाटोधी हैं। यह गुड़गाँव जिले से सटे दिल्ली के गाँवों में भी बोली जाती है। असल में जहाँ-जहाँ यह बोली बोली जाती है वहाँ के क्षेत्र को ही

अहीरवाटी (अहीर लोगों का वास-स्थान) कहते हैं। वैसे रेवाड़ी की अहीरवाटी केंद्र-बोली मानी जाती है।

यदि भाषागत विशेषता के आधार पर इसका विश्लेषण करें तो इसकी शब्दावली, वाक्य रचना आदि का स्वरूप केंद्रीय हरियाणवी के समान ही है। किन्तु इसकी अपनी भी कुछ भाषागत विशिष्टताएँ हैं। यथा–

(1) अहीरवाटी में आकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं का कर्तृ रूप ओकारान्त हो जाता है।

(2) विकारी एक वचन का रूप आकारांत होता है।

(3) विशेषण तथा संबंध के विभक्ति रूप भी ओकारान्त हो जाते हैं।

(4) व्यंजनांत पुल्लिग संज्ञाओं का अधिकरण रूप ईकारान्त हो जाता है। जैसे–घर में–घरी।

(5) व्यक्तिवाचक सर्वनाम 'मैं' का रूप मानैं, मूनैं मिलता है।

(6) भूतकाल पुल्लिग में 'था' के स्थान पर 'थो' रूप मिलता है।

वास्तव में अहीरवाटी में अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण मेवाती, राजस्थानी, बागड़ी, शेखावटी, बाँगरू आदि बोलियों का सम्मिश्रण है। किन्तु इसका झुकाव केंद्रीय हरियाणवी की ओर ही है।

बागड़ी

हरियाणे का एक विस्तृत भू-भाग राजस्थान से सटा हुआ है। सिरसा, हिसार, भिवानी, महेंद्रगढ़, गुड़गाँव तथा फरीदाबाद जिलों का कुछ भू-भाग राजस्थान की सीमाओं को स्पर्श करता है। कुछ भू-भाग रेतीले टीलों और छोटी-छोटी पहाड़ियों के कारण राजस्थान की मिट्टी के निकट बैठता है। सीमावर्ती क्षेत्रों में विवाह-शादी और सामान्य सामाजिक संपर्क साधारण-सी बात है। ऐसी स्थिति में एक-दूसरे की भाषा पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। इसीलिए इस क्षेत्र की हरियाणवी पर राजस्थानी का प्रभाव भी है। वास्तव में इसे राजस्थानी का प्रभाव न कहकर बागड़ी का प्रभाव कहना अधिक उपयुक्त है क्योंकि स्वयं राजस्थान की अपनी कई उप-भाषाएँ हैं।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से यदि बागड़ी की तुलना हरियाणवी से करें तो हमें ज्ञात होता है कि दोनों में ळ, ण, स, श के स्थान पर स तथा ऋ के स्थान पर रि का उच्चारण सामान्य बात है। इसी प्रकार दोनों ही भाषाओं में अनेक शब्दों के उदासीन आदि स्वर का लोप हो जाता है। यथा–अहीर–हीर, उतारणा–तारणा, उठाणा–ठाणा आदि।

बहुवचन बनाते समय भी दोनों में व्यंजन शब्दों में आँ प्रत्यय का योग होता है। जैसे–बुळध–बुळधाँ, खेत–खेत्ताँ, बात–बात्ताँ आदि।

बागड़ी, शेखावटी, अहीरवाटी और मेवाती में आकारान्त के स्थान पर ओकारान्त का प्रयोग होता है। केन्द्रीय हरियाणवी में यह प्रवृत्ति नहीं है।

मेवाती को छोड़कर हरियाणे की अधिकांश बोलियों में 'है' के स्थान पर 'सै' क्रिया का ही प्रयोग होता है।

सीमावर्ती स्थानों पर क्रिया विशेषण के प्रयोग में भिन्नता है। जैसे–ईब, इब, इब्बै को अबै और अभै; आड़ै, उड़ै, इत, उत को अठी, अठै, इठै, उठै, उठी और उठैं तथा जित, जड़ै, कित, कड़ै आदि को जठी, जठै, कठी और कठै आदि उच्चरित किया जाता है। राजस्थान से हरियाणे में विवाहित स्त्रियाँ अपने क्रिया-विशेषणों का जब प्रयोग करती हैं तो पहले-पहल कुछ अटपटा-सा लगता है और इन शब्दों को लेकर कुछ हास्य-विनोद चलता है लेकिन फिर ये शब्द भी वधू के समान अपने से लगने लगते हैं।

यदि बागड़ी के सर्वनामों की तुलना केंद्रीय हरियाणवी से करें तो वहाँ भी काफी समता मिलती है। यथा– थम–थम, थारा–थारा, म्हारा–म्हारा आदि का प्रयोग दोनों ओर ही मिलता है।

संक्षेप में बागड़ी का मुख्य रूप केंद्रीय हरियाणवी में समा जाता है।

अंबालवी

अंबाला, जगाधरी, कुरुक्षेत्र, थानेसर आदि के क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली को अंबाला जिले के नाम से अंबालवी या अंबालवी नाम दिया जाता है। यह अंबाला तथा पटियाला जिलों में घग्घर नदी के पूर्व तथा जिला कुरुक्षेत्र के आस-पास बोली जाती है। यह बोली मुख्यतः चार बोलियों से प्रभावित होती है–पश्चिम में पंजाबी, उत्तर में पहाड़ी, पूर्व में कौरवी तथा दक्षिण में बांगरू या केंद्रीय हरियाणवी से। इस बोली की शब्दावली सामान्यतः केन्द्रीय हरियाणवी ही है लेकिन शब्दों के उच्चारण में कुछ-कुछ भेद आ जाता है।

अंबालवी के उच्चारण की कुछ विशेषताओं का वर्णन यहाँ दिया जाता है–

(1) एकाक्षरी शब्दों में जब बलाघात की मात्रा मध्यम से दुर्बल हो जाती है तो उनमें आने वाले अघोष, महाप्राण स्पर्श अपनी महाप्राणता खो बैठते हैं। जैसे–'थ् आ'–'त आ' (था), 'स् आ थ'–'स आ त' (साथ), 'ह् आ थ'–'ह आ त' (हाथ)।

(2) दुर्बल बलाघात के आने पर मूलतः तानयुक्त शब्दों की तान लुप्त हो जाती है।

(3) इस बोली में बलाघात की मात्रा के परिवर्तन के कारण कुछ ध्वनियों का लोप हो जाता है। इस स्थिति में अधिकांशतः 'अ' ध्वनि का लोप होता है। जैसे–'अमरूद > मरूद, अनार > नार।

कौरवी

कुरु प्रदेश के हस्तिनापुर अंचल के निकटवर्ती क्षेत्र मेरठ, मुजफ्फरनगर और सहारनपुर के पश्चिमी भाग की बोली को कौरवी कहा जाता है। इस बोली का फैलाव यमुनापार के इस क्षेत्र के गाँवों ओखला, पटपड़गंज, खिड़की आदि से शुरू होकर यमुना के उस पार मीलों तक है। इसकी सीमाओं की चर्चा हम पहले कर चुके हैं।

इस बोली में केन्द्रीय हरियाणवी के समान ण्, म्ह्, द्ह, र्ह तथा व्यंजनों में द्वित्वीकरण की प्रवृत्ति मिलती है। दोनों में सर्वनामों के रूप भी समान हैं। स्थानवाचक क्रिया विशेषण ईंघै, ऊँघै, कींघै आदि भी समान रूप से मिलते हैं। आदि ह्रस्व स्वर की प्रवृत्ति प्राय: लुप्त होने की है–

अकेला > केला, उतार > तार, उजाड़ > जाड़, उठाणा > ठाणा।

इन समानताओं के होते हुए वर्तमानकालिक सहायक क्रिया में स्पष्ट अन्तर है। केन्द्रीय हरियाणवी में यह क्रिया 'सै' है किन्तु कौरवी में शहरी क्षेत्रों के समान 'सै' के स्थान पर अधिकांशत: 'है' का प्रयोग होता है।

इसी प्रकार णान्त क्रियाओं का स्थान कौरवी के शहरी क्षेत्रों में नान्त क्रियाएँ ले लेती हैं। यथा–खाणा-पीणा के स्थान पर खाना-पीना का प्रयोग होने लगता है।

कौरवी में महाप्राण से कोमल की ओर जाने की प्रवृत्ति है। जैसे–रहा > रा, था > ता, है > अ।

कौरवी में बहुवचन के रूप 'आँ' से न बनाकर 'न' तथा 'ओं' के योग से बनाए जाते हैं। यथा–बालकाँ–बालकन, बुलधाँ–बुलधन। लोगाँ–लोगन आदि। बहुवचन की यह प्रवृत्ति ब्रज के प्रभाव के कारण है।

कौरवी की शब्दावली केन्द्रीय हरियाणवी के समान ही है। हाँ, शब्दावली में कहीं-कहीं संस्कृतनिष्ठता का प्रभाव कुछ-कुछ अधिक अवश्य है। इसका संकेत भी पहले किया जा चुका है।

पहाड़ी

अविभाजित पंजाब एक विस्तृत राजनीतिक इकाई थी। वर्तमान हिमाचल का कुछ अंश पंजाब का ही अंग था। भाषा के आधार पर पंजाब का 1966 में पुन: विभाजन होने से पूर्व तक हरियाणा शिमले जैसे क्षेत्र को हिन्दी-भाषा-भाषी अपना ही क्षेत्र मानता था। शिक्षा का केन्द्र तथा सरकारी दफ्तरों के कारण हरियाणे के जन-समुदाय का पहाड़ी क्षेत्रों में यातायात दैनिक जीवन का अंग था। परिणामत: इस क्षेत्र की पहाड़ी बोलियों का उद्भव शौरसेनी से ही मानते हैं। हरियाणवी का भी शौरसेनी से निकट का सम्बन्ध है।

हजारों वर्ष पहले मैदानी क्षेत्रों से अनेक परिवार पहाड़ी क्षेत्रों में जा बसे थे। वे अपने साथ अपनी बोली का प्रभाव भी वहाँ फैलाने लगे थे। यदि अंबालवी की

तुलना शिमले की पहाड़ी बोलियों से की जाए तो बात स्वत: सिद्ध हो जाएगी। चंडीगढ़ क्षेत्र से भी ऊपर कालका आदि के निकट की बोलियों का विश्लेषण करें तो हमें स्पष्ट भासित हो जाएगा कि यहाँ की बोलियाँ किस सीमा तक केन्द्रीय हरियाणवी से प्रभावित हैं।

हम यदि भारत को गाँव में बसा मानते हैं तो हमें कहना होगा कि भारत बोलियों और उप बोलियों का देश है। भारत की आत्मा इन्हीं बोलियों में जीवित है। हरियाणे में उपर्युक्त बोलियों के अतिरिक्त अन्य उप बोलियां भी हैं। पुवाधी, पछाही, राठी, पंजाबी आदि अन्य बोलियों पर विस्तार से कहना यहाँ उपयुक्त भी नहीं है।

उपर्युक्त चर्चा के आधार पर हरियाणवी की प्रमुख विशेषताएँ नीचे दी जा रही हैं।

हरियाणवी की विशेषताएँ

कोश में दिए गए शब्दों के अर्थ को भली प्रकार समझने के लिए यह आवश्यक है कि हरियाणवी की भाषागत विशेषताओं पर कुछ विचार कर लिया जाए। यहाँ इसकी कुछ इन्हीं विशेषताओं पर संक्षेप में विचार किया जा रहा है।

ध्वनि

हरियाणवी की तुलना यदि हिन्दी ध्वनियों से करें तों हमें ज्ञात होता है कि इस भाषा में स्वर तथा व्यंजन सम्बन्धी कई भेद-उपभेद मिलते हैं।

(क) स्वर

अ—अ की ध्वनि कहीं आ (अगला > आगला, ककड़ी > काकड़ी, लड्डू > लाड्डू) कहीं इ (अब > इब, अलावा > इलावा) कहीं ई (अब > ईब, अजगर > ईजगर तथा कहीं उ (अफारा > उफारा, अवकाश > उकास) में बदल गई है।

कहीं इसका लोप (अंगूठा > गूँट्ठा, अमावस > मावस, अहीर > हीर) तो कहीं इसका आगम (लग्न > लगन, विघ्न > बिघन, तप्त > तपत) हुआ है।

आ—आ की ध्वनि कहीं अ (आवाज > अवाज, आसमान > असमान) कहीं ऊ (गाढ़ी > गूड्ढी) कहीं ए (नाप > नेप) तथा कहीं ओ (लड़का > लड़को, तड़का > तड़को, गया > गयो) में परिवर्तित हुई है। ओकार का प्रभाव विशेषत: अहीरवाटी और बागड़ी उप-बोली में मिलता है।

इ—इ का उच्चारण कहीं आ (गिधला > गाधला़, मिट्टी > माट्टी) कहीं ई (चिकना > चीकणा, बिजली > बीजल़ी, पिंजरा > पींजरा, पति > पती, हानि > हाणी) कहीं उ (हिचकी > हुचकी) कहीं ए (नियम > नेम, विवश > बेवस) तथा कहीं ऐ (इतवार > ऐंतवार) में बदला है।

शब्द के आदि, मध्य और अन्त में 'इ' ध्वनि का लोप भी हुआ है। यथा–इकट्ठी > कट्ठी, घिसना > घसणा, कलियुग > कल़जुग, जाति > जात, संक्रान्ति > संकरांत। हरियाणवी में इस ध्वनि के आगम के उदाहरण भी मिलते हैं। यथा–खजूर > खिजूर, जब > जिब, जवान > जिवान आदि।

शब्द के अन्त में तो 'इ' का उच्चारण दीर्घ ई के समान ही है।

ई–ई की ध्वनि कहीं आ (गीदड़ > गादड़, पीछे > पाच्छै) कहीं इ (ईमान > इमान, ईश्वर > इसवर, ईसाई > इसाई) कहीं ऊ (सीध > सूध) तथा कहीं ऐ (खींचना > खैंचणा) में बदल गई है।

उ–उ की ध्वनि का उच्चारण अ (उसूल > असूल) इ (सुलगाना > सिलगाणा) ऊ (कठपुतली > कठपूतली, चुंगी > चूंगी) आदि में बदला है। कहीं इस ध्वनि का लोप (उठाना > ठाणा, उतारना > तारणा, शुरु > सरू, जामुन > जामण, धातु > धात) तो कहीं आगम (गवाही > गुवाही, जवाब > जुबाब, सपना > सुपना) भी हुआ है।

ऊ–ऊ की ध्वनि का ह्रस्व (ऊँचाई > उँचाई, ऊकना > उकणा, गूदा > गुद्दा) तथा ओ (दूज > दोज, भूचाल > भोंचाल़) रूप भी हुआ है। कहीं-कहीं इसके लोप (गुरुकुल > गुरकल) के उदाहरण भी मिलते हैं।

ऋ–ऋ की ध्वनि का उच्चारण इ (शृंगार > सिंगार) इर (कृष्ण > किरसन) री (मातृ > मातरी) तथा उ (ऋतु > रुत, वृक्ष > रूँख, पृच्छ > बूझ) में परिवर्तित हुआ है।

ए–ए की ध्वनि 'आ' (केंचली > काँचल़ी, धकेलना > धकाणा) इ (देहात > दिहात, सेठानी > सिठाणी) ई (ढेंकली > ढीकल़ी, रेंगना > रींगणा) ऐ (गेरूआ > गैरूवा, तेरे > तेरै, परे > परै) तथा ओ (लेटना > लोटणा) आदि में परिवर्तित हुई है।

ऐ–ऐ की ध्वनि इ (ऐसा > इसा, जैसा > जिसा, तैरणा > तिरणा) तथा ए (थैली > थेल्ला) में बदली है। कहीं-कहीं इसके लोप (तैयार > त्यार, हैरानी > हरान्नी) के उदाहरण भी मिलते हैं।

ओ–ओ के ऊ (गोंद > गूँद, झोंपड़ी > झूँपड़ी, क्यों > क्यूँ) में परिवर्तित होने के उदाहरण मिलते हैं।

औ–औ की ध्वनि का हरियाणे में सर्वथा लोप ही है। इसका उच्चारण ओ (सौ > सो, जौ > जो, नौ > नो) के समान ही होता है। दूसरी ओर इस ध्वनि के उ (औलाद > उलाद, लौटाना > लुटाणा) ऊ (औंधा > ऊँद्धा) आदि रूप भी मिलते हैं।

(ख) अयोगवाह

अनुस्वार, अनुनासिक तथा विसर्ग की गणना अयोगवाह में की जाती है। हरियाणवी में इन ध्वनियों की भी अपनी विशिष्टताएँ हैं। यथा–

अनुस्वार

हरियाणवी में कहीं अनुस्वार की ध्वनि का आगम (पचास > पंचास (संस्कृत-पंचाशत), (पाताल > पंताल़) कहीं लोप (तुरंत > तुरत) कहीं ण (नपुंसक > नपुणसक) तो कहीं अनुनासिक (अंग्रेज़ > अँग्रेज, अंगीठी > अँगीठी) हुआ है।

अनुनासिक

अनुनासिकता की ध्वनि का आगम (ईख > ईंख, भूचाल > भूँचाल, ऊखल > ऊँक्खल़, तू > तूँ) होने के उदाहरण भी हरियाणवी में मिलते हैं। हिन्दी के समान पंचम वर्णों के साथ अनुनासिकता का आधिक्य भी मिलता है। (नाक > नाँक, नाच > नाँच, आम > आँम, मौका > मोंक्का)।

विसर्ग

हरियाणवी में अर्ध ह (ह्) एक विशेष प्रकार की ध्वनि है। यह ध्वनि शब्दों के बीच में बोली जाती है। इसका उच्चारण विसर्ग (:) के समान है। जैसे–खेल > खे:ल, फाली > फा:ल़ी लिफाफा > लि:फाप्फा, सील > सी:ल आदि।

(ग) व्यंजन

क–क की ध्वनि कहीं ख (कुदाला > खुदाल़ा, सींक > सींख) तो कहीं ग (भक्त > भगत, शोक > सोग) में बदली है। कहीं क् का आगम (भूखा > भूक्खा, रेखा > रेक्खा) तो कहीं क का लोप (चिपकाना > चेपणा, डाकखाना > डाखान्ना)। क को द्वित्व (चक्र > चक्कर, चाकू > चक्कू) होने के भी अनेक उदाहरण मिलते हैं। हरियाणवी में क़ की ध्वनि का अलग से कोई भेद नहीं है।

क्ष–क्ष की ध्वनि कहीं ख (प्रक्षालन > पखाळणा), कहीं क्ख (लक्षण > लक्खण) तो कहीं छ (दक्षिणा > दिछणा) में बदल गई है।

ख–ख की ध्वनि कहीं क (इख्लास > इकलास, खुफिया > कुफिया, मसखरा > मसकरा) में परिवर्तित हुई है। ख़ का उच्चारण ख के समान ही है।

ग–ग की ध्वनि क (दिमाग > दिमाक), ख (गड्ढा > खड्डा), घ (गमला > घमला), ज (भागना > भाजणा, भीगना > भीजणा), म (मूँगफली > मूँमफली) आदि में परिवर्तित हुई है। ग आगम (घूँघट > घूँग्घट) तथा द्वित्व (आगा > आग्गा, मंगल़ > मंग्गल) के भी अनेक उदाहरण मिलते हैं। ग़ तथा ग ध्वनि में कोई भेद नहीं बरता जाता।

घ–घ की ध्वनि का उच्चारण लगभग स्थिर है।

च—च की ध्वनि क (बेचना > बेकणा) तथा छ (पिचहत्तर > पिछत्तर, पहिचान > पिछाण) में बदली है। इस ध्वनि के आगम (ओछा > ओच्छा), लोप (मगरमच्छ > मगरमछ) तथा द्वित्व (ऊँचा > ऊँच्चा, चाचा > चाच्चा, नीचा > नींच्चा) के उदाहरण भी मिलते हैं।

छ—छ की ध्वनि का उच्चारण लगभग स्थिर है।

ज—ज की ध्वनि झ (जम्फर > झम्पर, जोहड़ > झोड़) में बदली है। दूसरी ओर इसके आगम (साझा > साज्झा) तथा द्वित्व (जीजी > जीज्जी, तेज़ी > तेज्जी) के उदाहरण भी मिलते हैं। ज़ तथा ज ध्वनि में भेद नहीं है।

ज्ञ—ज्ञ की ध्वनि ग (यज्ञ > यग), य (ज्ञान > ग्यान) तथा ज (यज्ञ > यज) में बदली है।

झ—झ का उच्चारण स्थिर दीख पड़ता है।

ट—ट की ध्वनि ठ (टूटी > ठूट्ठी) तथा ड (छुटवाना > छुडवाणा) में बदली है। इस ध्वनि के आगम (आठों > आट्ठूँ, छठी > छट्ठी) तथा द्वित्व (काँटा > काँट्टा, रोटी > रोट्टी) के भी अनेक उदाहरण मिलते हैं।

ठ—ठ को कभी-कभी ट (झूठ > झूट) भी उच्चरित किया जाता है।

ड—ड को ढ (कड़ाही > कढाई) तथा द (चंडीगढ़ > चंदीगढ) होने के उदाहरण मिलते हैं।

ण—ण हरियाणवी की प्रिय ध्वनि है। विरल स्थितियों में यह ध्वनि न (लक्ष्मण > लिछमन, घृणा > घिन्ना) में परिवर्तित हुई है।

त—त ध्वनि च (मितलाना > मिचलाणा) तथा थ (कंत > कंथ, तुम > थम) में बदली है। कहीं-कहीं इसका आगम (चौथा > चोत्था, थोथा > थोत्था, माथा > मात्था) भी हुआ है।

त्र—त्र की ध्वनि तर (मंत्र > मंतर, यात्रा > यातरा) में बदली है। त्र के त् का द्वित्व (पत्र > पत्तर, मित्र > मित्तर) भी हुआ है।

थ—थ का उच्चारण लगभग स्थिर है।

द—द की ध्वनि ड (दंड > डंड, दाढ़ी > डाड्ढी) तथा त (तदबीर > ततबीर, शहद > सहत) में बदली है। कहीं इसका आगम (आँधी > आँद्धी, आधा > आद्धा), कहीं लोप (मज़दूर > मजूर, सिद्ध > सिध) तथा कहीं द्वित्व (खादर > खाद्दर, दादा > दाद्दा) भी हुआ है।

ध—ध की ध्वनि लगभग स्थिर है। कहीं-कहीं यह झ् (संध्या > संझ्या) में बदली है।

न—न का परिवर्तन ड (गन्ना > गंडा), ण (गाना > गाणा, जानना > जाणणा, गिनती > गिणती, इतना > इतणा), ल (नंबरदार > लंबरदार, नीलगर > लीलगर,

(नोट > लोट) आदि में हुआ है। कहीं-कहीं इसका द्वित्व (चीनी > चीन्नी, दानी > दान्नी) भी हुआ है।

प—प की ध्वनि फ (तड़पना > तड़फणा) में बदली है तो कहीं इसका द्वित्व (कापी > काप्पी, पापी > पाप्पी) हुआ है।

फ—फ की ध्वनि प (तकलीफ़ > तकलीप, फाड़ना > पाड़णा) में बदली है। फ़ और फ की ध्वनि में कोई भेद नहीं किया जाता।

ब—ब की ध्वनि प (बताशा > पतास्सा) तथा भ (गुब्बारा > गुभारा) में बदली है। इस ध्वनि का लोप (कुटुंब > कुटुम), आगम (गाभा > गाब्भा, गोभी > गोब्भी) तथा द्वित्व (गुलाबी > गुलाब्बी, धोबी > धोब्बी) भी हुआ है।

भ—भ की ध्वनि लगभग स्थिर है।

म—म की ध्वनि कहीं ग (रोम > रूँग) में बदली है तो, कहीं इसका आगम (आरपार > आरम्पार, बारबार > बारम्बार) हुआ है तो कहीं द्वित्व (गुलामी > गुलाम्मी, सलामी > सलाम्मी)।

य—य की ध्वनि ऐ (भय > भै), ज (यमुना > जमना, संयोग, संजोग, कार्य > कारज), व (दीया > दीवा) आदि में बदली है। कहीं-कहीं इसकी श्रुति या आगम (छावनी > छ्यावणी, जान > ज्यान, चार > च्यार शाम > स्याम, खारा > खार्‌या) मिलता है। अनेक शब्दों में इसका लोप (इलायची > इलाची, कोयला > कोल्ला, पंचायत > पंचात, वैद्य > बैद) भी हुआ है।

र—र को ड़ (उर्दू > उड़दू, ओर > ओड़, कुर्ता > कुड़ता), ल (दरिद्र > दलिद्दर) आदि के अतिरिक्त इसका लोप (कार्तिक > कातिक, गोत्र > गोत) हुआ है।

ल—ल के स्थान पर ळ ध्वनि अनेक स्थानों पर सुनने को मिलती है। यह मूर्धन्य ल़ शब्द के मध्य (गलना > गल़णा, बालक > बाल़क, होली > होल़ी) तथा अंत (गोल > गोल़, चावल > चावल़) दोनों ही स्थितियों में मिलता है। कहीं-कहीं ल को ड़ (निकालना > लिकाड़णा), म (सिलवाना > सिमवाणा, सिलाई > सिमाई) तथा व (धुलाना > धुवाणा) हुआ है। कहीं इसका लोप (धुलाई > धुआई) तो कहीं द्वित्व (आलू > आल्लू), ढीला > ढील्ला, लाला > लाल्ला) हुआ है।

व—व की ध्वनि उ (वज़ीर > उजीर, वरदी > उरदी), ब (वार > बार, वेद > बेद, पूर्व > पूरब), भ (वेश > भेस), म (गुणवान > गुणमान, कटवाँ > कटमा, नींव > नीम) तथा य (स्वामी > स्याम्मी) में बदली है। कहीं इसका आगम (आना > आवणा, पीना > पीवणा, बोना > बोवणा) हुआ है तो कहीं लोप (ध्वजा > धज़ा, झुकाव > झुका, पाँव > पाँ)।

श—ग्रामीण क्षेत्र में श की ध्वनि स के समान (शंकर > संकर, शेर > सेर, देश > देस, शीश > सीस) बोली जाती है।

ष—ष की ध्वनि भी 'स' ही बोली जाती है। यथा—कष्ट > कस्ट, दोष > दोस, भाषा > भासा आदि। कहीं यह ध्वनि ख (ईर्ष्या > ईरखा, वर्षा > बरखा) तो कहीं ह (पौष > पोह) में बदली है।

स—स हरियाणे की प्रिय ध्वनि है। श, ष का उच्चारण स के समान ही होता है। कहीं यह ध्वनि घ (चूसना > चूँघणा) में भी बदली है। कहीं-कहीं इसका द्वित्व (आँसू > आँस्सू, हँसी > हाँस्सी) हो जाता है तो कहीं लोप (इकत्तीस > इकती, उन्नीस > उन्नी, तेतालीस > तिताळी)।

ह—ह की ध्वनि कहीं आ (सतरह > सतरा, अठारह > अठारा) में बदल जाती है। कहीं इसका आगम (खुलना > खुहलणा, रईस > रहीस) हुआ है तो कहीं लोप (परवाह > परवा, सनसनाहट > सनसनाट)।

हरियाणवी में कुछ शब्दों के बाद विसर्ग या अर्ध ह (ह्) के समान ध्वनि भी सुनी जाती है जिसका संकेत पहले अयोगवाह के वर्णन के समय दिया जा चुका है।

ऊपर हरियाणवी की ध्वनि संबंधी कुछ विशेषताओं का वर्णन किया गया है। इसका विस्तारपूर्वक वर्णन मैंने अपनी पुस्तक 'हिन्दी-हरियाणवी उच्चारण भेद' में किया है। नीचे उपर्युक्त विवेचन का निष्कर्ष दिया जा रहा है।

निष्कर्ष

1. हरियाणवी में स्वर-भक्ति का आधिक्य है।
2. हरियाणवी में ह्रस्व इ और उ को दीर्घ करने की प्रवृत्ति है विशेषतः शब्द के अंत की स्थिति में।
3. अनेक स्थानों पर ए का उच्चारण ऐ के समान है, जैसे—में का मैं।
4. उदासीन आदि स्वर का अधिकांशतः लोप हो जाता है।
5. कुछ क्षेत्रों में आकारांत शब्दों को ओकारांत कर दिया जाता है।
6. औ के स्थान पर ओ की ध्वनि उच्चरित होती है।
7. अनेक स्थानों पर 'ड़' के स्थान पर भी 'ड' उच्चरित होता है।
8. यहाँ 'ढ़' की ध्वनि का अभाव है, इसका उच्चारण 'ढ' है।
9. 'ण' हरियाणवी की प्रिय ध्वनि है। कहीं-कहीं निरंतर दो 'ण' भी उच्चरित होते हैं।
10. कुछ शब्दों में 'य' की श्रुति मिलती है।
11. मूर्धन्य 'ल' (ळ) का उन्मुक्त प्रयोग होता है।
12. 'श' तथा 'ष' की ध्वनि का सर्वथा बहिष्कार है। इनके स्थान पर 'स' की ध्वनि उच्चरित होती है।

13. 'है' के स्थान पर 'सै' क्रिया का बहुल प्रयोग होता है।

14. न्ह, म्ह, लह, ल्ह, र्ह ध्वनियों का उन्मुक्त प्रयोग होता है।

15. हरियाणवी द्वित्व प्रधान भाषा है।

16. क़, ख़, ग़, ज़, फ़ की आगत ध्वनियों का हरियाणवीकरण हो गया है। इनका उच्चारण क्रमशः क, ख, ग, ज तथा फ है।

17. बहुवचन बनाते समय 'आँ' या 'याँ' प्रत्यय शब्द के अंत में जोड़े जाते हैं।

18. कुछ क्षेत्रों में बहुवचन का रूप एकवचन के समान है। जैसे–बालक गया–1. बालक गया, 2. बालक गए।

19. हरियाणवी मात्र वर्तमान हरियाणा प्रदेश की ही भाषा नहीं है।

20. हरियाणवी का शहरीकरण हो रहा है।

हरियाणवी प्रत्यय

प्रत्ययों की दृष्टि से यदि हरियाणवी का अध्ययन करें तो इसमें अनेक विविधताएँ मिलेंगी। नीचे कुछ विशिष्ट हरियाणवी प्रत्ययों का विवरण दिया जा रहा है–

अड़–अड़ प्रत्यय का प्रयोग ऊनता (रूई > रूअड़), महत्ता (पगड़ी > पग्गड़), अनादरवाचक (गैल > गैल्लड़), प्रेम द्योतन (बहू > बहुअड़), विशेषण या गुण वाचक (घाम > घाम्मड़) आदि के रूप में किया जाता है।

आँ–आँ का प्रयोग प्रमाण द्योतन (गट्टा > गट्टयाँ, खवा > खव्याँ), की तरह, इसी तरह (ढाल > ढालाँ), विशेषण (गीहूँ > गिहुँआँ), बहुवचन (बहू > बहुआँ, भाण > भाणाँ) आदि के योग में होता है।

आँत्तू–आँत्तू का प्रयोग संभावना द्योतन (आणा > आँत्तू, ब्याणा > ब्याँत्तू) के योग में होता है।

आ–इस प्रत्यय का प्रयोग कर्तावाचक (जोतणा > जोत्ता), समुदाय वाचक, दसघर > दसघरा, बीस > बीस्सा), स्थानवाचक (बंगाल > बंगाल्ला), कर्मवाचक-संज्ञा (उतार > उतारा, झार > झारा), भाववाचक संज्ञा (उछालणा > उछाल़ा, मरोड़णा > मरोड़ा), गुरुता द्योतन (हँसली > हँसला) तथा विविध अन्य रूपों (उजाड़ > उजाड़ा, जयकार > जयकारा) में होता है।

आक–इस प्रत्यय का प्रयोग क्रिया से संज्ञा बनाने (कूदणा > कुदाक), मात्रा द्योतन (इतणा > इतणाक, जितणा > जितणाक) आदि के रूप में होता है।

आड़–इस प्रत्यय का प्रयोग आलय (सुसरा > सुसराड़), महत्ता द्योतन (तागड़ी > तगाड़), वाला, वाली (भादवा > भदवाड़) आदि के रूप में किया जाता है।

आण–इसका प्रयोग स्त्रीवाचक (भेड्ढ्या > भिढाण), भाववाचक संज्ञा (उठाणा > उठाण) तथा अन्य विविध (रोणा > रुआण, सुहाणा > सुहाण) रूप में किया जाता है।

आणा–इस प्रत्यय का योग स्थानवाचक (समधी > समधाणा, हरि > हरियाणा), कर्मवाच्य क्रिया (काख > कक्ख्याणा, गूचणा > गुच्याणा), सकर्मक क्रिया (रीत्ता > रिताणा), गुण या भाव द्योतन (काँस्सी > कस्स्याणा, पीत्तल > पितळाणा) के रूप में किया जाता है।

आल़–इस प्रत्यय का योग वाला (लेणा > लिवाळ), विशेषण (कड़वा > कड़वाळ), महत्ता द्योतन (सुहाळी > सुहाळ) आदि के रूप में किया जाता है।

ऊ–इस प्रत्यय का योग कर्तृवाचक (जाट > जाट्टू), लघुता द्योतन (काटड़ा > काटडू) तथा विविध (घर > घरू) आदि रूप में किया जाता है।

ऐत–इसका योग कर्तृवाचक संज्ञा (आल्हा > अल्हैत, लाट्ठी > लठैत), क्रिया का कर्ता (भिड़णा > भिड़ैत, लड़णा > लड़ैत) आदि के रूप में होता है।

ओ–इस प्रत्यय का योग संबंध कारक की विभक्ति (पहाड़ > पहाड़ो, पार > पारो, बिरज > बिरजो), विशेषण (ओड्ढी > ओड्ढो, दाँत > दाँत्तो), ऊनता द्योतन (गींड > गींड्डो), अनादर, प्रेम, व्यंग्य (बन्नी > बन्नो, लाड > लाड्डो) आदि के रूप में होता है।

ओल़ी–इस प्रत्यय का प्रयोग संज्ञा से संज्ञा (डाभ > डभोल़ी) बनाने, फलद्योतक संज्ञा (कीक्कर > किकरोल़ी, नीम > निंबोल़ी) बनाने आदि के समय किया जाता है।

ओहड़ा–इस प्रत्यय का प्रयोग संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाने (जेठ > जेठोहड़ा), विशेषण से संज्ञा बनाने (बास्सी > बासोहड़ा) तथा क्रिया से संज्ञा बनाने (फेटणा > फेटोहड़ा) आदि के लिए किया जाता है।

क्यो–इस प्रत्यय का योग संबंधवाचक बहुवचन संबोधन चिह्न के रूप में किया जाता है। यथा–झंडू > झंडू क्यो, बाह्मण > बाह्मण क्यो।

घै–इस प्रत्यय का योग दिशा संकेत के रूप में किया जाता है। यथा–ईंह (इस) > ईंहघै (इस ओर), ऊँह (उस) ऊँहघै (उस ओर)।

ज–इस प्रत्यय का योग संबंध द्योतन के लिए किया जाता है। यथा–कोण (कौन) > कौणज (किसका), साढ (आषाढ़) > साढज (आषाढ़ माह का)।

टा–इस प्रत्यय का प्रयोग संज्ञा से संज्ञा बनाने (सिर > सिरटा, रूँग > रूँगटा) तथा ऊनता द्योतन (आख > आखटा, कैर > कैरटा) के लिए किया जाता है।

ठी–यह ग्राम नामांत प्रत्यय–मांडोठी, नीलोठी, सीलोठी–है।

ड़–इस प्रत्यय का योग संज्ञावाचक (खाग > खागड़, लाग > लागड़), विशेषण (छैल > छैलड़, ब्याँत > ब्याँतड़), महिमा द्योतन (गांठ > गट्ठड़), क्रिया विशेषण (भाजण > भाजड़), संबंध कारक (माट्टी > मटीड़), ध्वनि द्योतन (मै > मैड़, सै > सैड़) आदि के रूप में होता है।

ण–इसका योग स्त्रीवाचक प्रत्यय (कुम्हार > कुम्हारण, लेड्डा > लेड्डण), वाला प्रत्यय (जात > जात्तण, विरोध > विरोधण) तथा संबंध (जोट > जोट्टण) आदि के लिये किया जाता है।

णा–यह ग्राम नामांत प्रत्यय–कबलाणा, बधाणा, सिलाणा–है।

तड़–इस प्रत्यय का योग संभावना (होंणा > होंतड़) प्रकट करने के लिए किया जाता है।

तू–इस प्रत्यय का योग संभावना प्रकट करने के लिए होता है। यथा–जाणा > जात्तू, ब्याणा > ब्याँतू आदि।

धी–यह ग्राम नामांत प्रत्यय–माड़ोधी, पाटोधी–है।

बै–इसका योग बलाघात (ईब > ईब्बै), बार या दफ़ा (कई > कई बै) आदि रूप में किया जाता है।

या–इस प्रत्यय का योग संज्ञावाचक (आढत > आढतया, गावड़ी > गावड़्या), वाला (दो ला > दुलाया), भूतकालिक क्रिया (कहणा > कह्या), हुए (चीतणा > चीत्या, माँडणा > माँड्या), लघुता द्योतन (कुहाडी > कुहाड़िया), विशेषण (सवा > सवाया) आदि के लिए होता है।

रा–यह प्रत्यय श्वसुर का घिसा रूप है। यथा–तायस > तायसरा, दादस > दादसरा, फूफस > फूफसरा।

ला–इस प्रत्यय का प्रयोग विशेषण वाचक (छोत > छोतला, जात > जातला, पंगु > पांगला़), वाला (उरै > उरला, थारा > थारला, नाथ > नाथला), भाववाचक (छोह > छोहला, साच्चा > साचला), तुलना आदि (ओर > ओरला, रींछ > रींछला), क्रम द्योतन (अखीर > अखीरला), महत्ता द्योतन (घंटा > घंटाला़), ऊनता द्योतन काग > कागला, छज्जा > छजला), संबंध कारक (साज्झा > साझला) आदि के लिए किया जाता है।

वा–इस प्रत्यय का योग संज्ञावाचक (आग्गै > अगवा, खात > खतवा), वाला (चराणा > चरावा, राहणा > राहवा), स्थान-संबंध बोधन (डाबर > डबरवा, बाँगर > बँगरवा), विशेषण (गहण > गहणवा, चलाणा > चलावा), ऊनता द्योतन (खाळ > खाळवा, जेळी > जेळवा), तिरस्कार द्योतन (चमार > चमरवा), वायु के संक्षिप्त रूप (पच्छिम > पछवा), भाववाचक संज्ञा (बैंडणा > बैंडवा) आदि के लिए किया जाता है।

वी–इस प्रत्यय का प्रयोग स्थान-संबंध द्योतन (अंबाला > अंबालवी, हरयाणा > हरयाणवी) आदि के रूप में किया जाता है।

स–इस प्रत्यय का प्रयोग सास के संक्षिप्त रूप ताई > तायस, नान्नी > नानस, फूफी > फूफस) तथा विशेषण (काल़ा > काल़स) आदि के लिए किया जाता है।

हेड़ा/हेड़ी–यह प्रत्यय ग्राम नामांत प्रत्यय के रूप में प्रयुक्त होता है। यथा–काँगण हेड़ी, टाँडा हेड़ा, नानक हेड़ी, कापस हेड़ा आदि।

ऊपर संक्षेप में कुछ हरियाणवी प्रत्ययों को बानगी के रूप में दर्शाया गया है। प्रत्ययों का विस्तारपूर्वक वर्णन लेखक ने अपनी पुस्तक 'हरयाणवी प्रत्यय कोश' में किया है। इन प्रत्ययों को हिन्दी भाषा में अपनाने की संभावनाओं का पता लगाना चाहिए।

शब्दावली

हरियाणवी की शब्दावली में वैदिक, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश से लेकर आधुनिक भारतीय भाषाओं विदेशी भाषाओं तक के अनेक शब्द सम्मिलित हैं। यह कहना कठिन है कि हरियाणवी से अन्य भाषाओं ने ये शब्द लिए या हरियाणवी ने इन्हें अंगीकार किया। शब्द ब्रह्म के गत बारह वर्ष के उपासनाकल में मुझे तो यही अनुभूति हुई है कि देश के जिस भू-भाग को मध्य देश कहा गया है वह हरियाणा क्षेत्र ही था। यहाँ की भाषा का नाम मध्यदेशी भाषा रहा है। उच्चारण-सुविधा के लिए मध्य-देशी नाम ही देशी, देसी या देस्सी हो गया है। कालान्तर में यही नाम स्थानीय-भाषा नाम से अभिहित हुआ। यहाँ के लोगों को, पहनावे को, खान-पान को, रहन-सहन के ढंग को देसी या देस्सी कहा जाता है। भारत-विभाजन के बाद पश्चिमी-पंजाब से आने वाले बंधुओं ने यहाँ के लोगों से भेद बरतने के लिए इसी देसी या हिन्दुस्तानी शब्द को पुनः प्रयोग करना शुरू किया।

वास्तव में हरियाणवी शब्दावली को किसी वर्ग-विशेष की शब्दावली में बाँटना कठिन काम है। आधुनिक दृष्टि से यही कहना उपयुक्त है कि जिन शब्दों का प्रयोग हरियाणे में होता है वे हरियाणवी हैं क्योंकि वे शब्द हरियाणवी व्याकरण से अनुशासित होते हैं। नीचे इस प्रकार के कुछ शब्दों की तुलनात्मक सूची दी गई है–

वैदिक-हरियाणवी–वैदिक भाषा के हरियाणवी के तुल्य तथा तद्भव या सादृश्य शब्दों की संक्षिप्त सूची हरियाणवी भाषा के काल की चर्चा करते समय पहले ही दी जा चुकी है।

संस्कृत-हरियाणवी–संस्कृत भाषा के हरियाणवी के तुल्य तथा तद्भव या सादृश्य शब्दों की संक्षिप्त सूची भी पीछे हरियाणवी भाषा के काल की चर्चा करते समय दे चुके हैं।

प्राकृत-हरियाणवी–हरियाणवी में प्राकृत भाषा के भी अनेक शब्दों का प्रयोग होता है। इन शब्दों की संक्षिप्त सूची भी पीछे हरियाणवी भाषा के काल की चर्चा करते समय दी जा चुकी है।

उपर्युक्त भाषाओं के अतिरिक्त हरियाणवी में अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंग्रेजी, पुर्तगाली आदि के शब्द भी मिलते हैं। नीचे इस शब्दावली पर भी संक्षिप्त चर्चा करना उपयुक्त होगा।

अरबी-हरियाणवी–आज जिस प्रकार भाषा को राजनीति के सीमित घेरों में बाँधा जाता है उस प्रकार की कट्टरता पहले नहीं रही होगी। इसी प्रकार देश की सीमाएँ इतनी बदली हैं कि हम उसका अनुमान लगाते हुए भी संकोच करते हैं। ईरान के लोग अपने को आर्य कहते हैं। किसी समय भारत की सीमा ईरान, अरब, अफ़गानिस्तान, पाकिस्तान तक थी। आने वाली पीढ़ियों को जब कभी भारत तथा पाकिस्तान की शब्दावली की तुलना करने का अवसर मिलेगा तो वे इधर या उधर कि सीमाओं की भाषा की एकता के बारे में अनेक अटकलें लगाएँगे, बिना यह जाने कि सैकड़ों वर्षों तक ये लोग एक परिवार के सदस्यों की तरह रहे हैं।

हरियाणवी में अरबी शब्दावली की उपस्थिति कुछ इसी प्रकार की है। इधर के लोगों का उधर और उधर के लोगों का इधर आना-जाना सैकड़ों वर्ष पुराना रहा है। यही कारण है कि अरबी भाषा जो आज से दो हजार वर्ष से कुछ इसी या कुछ भिन्न रूप में रही होगी और जिसमें कुरान लिखा गया था हरियाणवी भाषा से भी संबद्ध है। हरियाणवी में जो अरबी भाषा की शब्दावली मिलती है वह दो प्रकार की है। कुछ शब्द तो ऐसे हैं जो हरियाणवी और अरबी में समान रूप से हैं और कुछ में उच्चारण भेद और कहीं-कहीं अर्थ-भेद भी हो गया है। नीचे इसी प्रकार के कुछ शब्द दिए गए हैं। जिस समय हरियाणवी में इनका प्रयोग होता है तो ये हरियाणवी के व्याकरण और ध्वनि-नियमों से शासित होते हैं।

(क) तुल्य शब्द

अरबी		हरियाणवी	अरबी		हरियाणवी
अकीदा	>	अक़ीदा	कलमी	>	कलमी
अदल	>	अदल (-पिछाण)	कसाई	>	कसाई
अब्री	>	अब्री	कारूरा	>	कारूरा
अमली	>	अमली	कुल्ला	>	कुल्ला
अलबत:	>	अलबत	ख़ता	>	खता
अहदी	>	अहदी	खिलकत	>	खिलकत
इकलास	>	इकलास	ग़र्क	>	गर्क
ऐन	>	ऐन	ग़ारत	>	गारत

क़द्र	>	कद्र	तक़रार	>	तकरार
कफ़न	>	कफन	तबला	>	तबला
तबलची	>	तबलची	मज़ाल	>	मजाल
तुख़्म	>	तुख्म	मनहूस	>	मनहूस
दग़दग़ी	>	दगदगी	रास	>	रास
फ़तूर	>	फतूर	रिज़क	>	रिजक
फ़रार	>	फरार	रुह	>	रुह
फ़रीक़	>	फरीक	साफ:	>	साफ्फा
फ़िराक़	>	फिराक	हद	>	हद
बिसात	>	बिसात	हया	>	हया
मक़सद	>	मकसद			

(क) तद्भव या सादृश्य शब्द

अरबी		**हरियाणवी**	**अरबी**		**हरियाणवी**
अब्र:	>	अबरा	तदबीर	>	ततबीर
अलगौजा	>	अल्गोज्जा	ताश	>	तास्सा
अलफ़	>	अल्फी	तुष	>	तुस
अरबी		**हरियाणवी**	**अरबी**		**हरियाणवी**
अल्लाह	>	अल्ला	तोप	>	तोब
आदम	>	आद्दम	तोहमत	>	तोहमद
ईमान	>	इमान	बाबत	>	बाब्बद
उसूल	>	असूल	बुर्ज	>	बुरज
ओहदा	>	होद्दा	मंबा	>	बंबा
औक़ात	>	उकात	मदरसा	>	मँदरसा
औसान	>	उसाण	मस्जिद	>	मँहजत
ऐबी	>	ऐब्बी	मग्ज़	>	मगज
कंदील	>	कंडील	मज़दूर	>	मजूर
क़तई	>	कती	मशाल	>	मसाल
क़दीमी	>	कदीम्मी	माल	>	माल
क़बूलना	>	कबूलणा	रईस	>	रहीस
कल्मह	>	कलमाँ	वज़ीर	>	उजीर
क़ाज़ी	>	काज्जी	वरदी	>	उड़दी
क़ौल	>	कोल	शरक	>	सरड़क

खस्सी	>	खसिया	शुरू	>	सरू
तक़ाजा	>	तगाज्जा	साअत	>	स्यात
			हुज़ूर	>	हजूर

उपर्युक्त शब्दावली पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि इसमें धर्म, संस्कृति, भोजन, परिवार, शासन तथा अन्य सामान्य जन-जीवन से सम्बन्धित शब्द आपस में एकरस हो गए हैं। अब फ़ारसी और हरियाणवी पर इसी दृष्टि से विचार कर लें।

फ़ारसी तथा हरियाणवी—फ़ारसी ईरान की भाषा फ़ार्स पर आधारित मानी जाती है। इस भाषा का काल ईसा से अढ़ाई हजार वर्ष से भी पूर्व का माना जाता है। इस भाषा का अवेस्ता से भी सम्बन्ध है। हरियाणवी में इस भाषा के शब्द इस प्रकार से रचपच गए हैं कि विद्वान् ही इनको सामान्य शब्दावली से अलग कर सकते हैं। सामान्य नागरिक इन्हें हर प्रकार से अपना समझता है। ये शब्द अब हरियाणवी व्याकरण से शासित हैं। नीचे इस प्रकार के कुछ शब्दों की सूची दी जा रही है।

(क) तुल्य शब्द

फ़ारसी		**हरियाणवी**	**फ़ारसी**		**हरियाणवी**
अजार	>	अजार	दीद:	>	दीदा
आबरू	>	आबरू	देग	>	देग
कंगूर:	>	कंगूरा	निहाल	>	निहाल
कलफ़	>	कलफ	पजाव:	>	पजावा
काक:	>	काका	पासंग	>	पासंग
कारिंदा	>	कारिंदा	पीर	>	पीर
ख़ैरसल्ला	>	खैरसल्ला	पीरी	>	पीरी
ख़ोर	>	खोर	बदगोई	>	बदगोई
गप	>	गप	बबर	>	बबर
चिल्ल:	>	चिल्ला	बिरादरी	>	बिरादरी
चुग़ल	>	चुगल	बियाबान	>	बियाबान
चोगान	>	चोगान	मुरब्बा	>	मुरब्बा
जंग	>	जंग	रंज	>	रंज
ज़बर	>	जबर	रग	>	रग
ज़रद	>	जरद	रजक	>	रजक

ज़हूरा	>	जहूरा	रूबरु	>	रूबरू
तंबा	>	तंबा	रो	>	रो (वर्षा)
तर	>	तर	लंगर	>	लंगर
तलाक़	>	तलाक	लाम	>	लाम
ताव	>	ताव	लार	>	लार
तुक्का	>	तुक्का	साज़िंदा	>	साजिंदा
दंगल	>	दंगल	साह	>	साह
दारु	>	दारू	सितम	>	सितम
दिक़	>	दिक	हुक़्क़ा	>	हुक्का
दिलावर	>	दिलावर	होल	>	होल

(ख) तद्भव शब्द

फ़ारसी		**हरियाणवी**	**फ़ारसी**		**हरियाणवी**
आजमाइश	>	अजमास	तंबान	>	तमोट्टी
अफ़सोस	>	अफसोस	तअवीज	>	तबीज
आबख़ोरा	>	बखोरा	तहमत	>	तहमद
क़तरा	>	कतली	दरगाह	>	दरगा
कमबख़्त	>	कमबखत	दरवेश	>	दुरबेस
कमान	>	कमाण	दह	>	दहाम
कमीन	>	कमीण	दानः	>	दाणा
कालेव	>	काल्ली	दोज़ख	>	दोख
कम असल	>	कुमस्सल	नदीदः	>	नदीद्दा
कूजा	>	कूज्जा	नौसादर	>	निसाद्दर
कोहान	>	कोहाण	पेचक	>	पेच्चक
ख़स्तः	>	खसता	बरामदा	>	बरामडा, बरांड्डा
खुफ़िया	>	कुफिया	बारानी	>	बरान्नी
गल्ताँ	>	गलतान	बेशक	>	बेस्सक
गश	>	गस	मेहर	>	म्हेर
गुंबद	>	गुमटी	शीरीनी	>	सीरणी
जामिन	>	जाम्मन	सूरत	>	सुरत
जिह	>	जेह	सूरमः	>	सूरमाँ

तुर्की-हरियाणवी–तातारी या तुर्की अरबी और फ़ारसी का मिश्रित रूप है। इसकी 35 के करीब बोलियाँ हैं। हरियाणवी से इसका सक्रिय सम्बन्ध बाबर के आक्रमण के समय हुआ क्योंकि पानीपत की पहली लड़ाई हरियाणे में ही लड़ी गई थी। हरियाणवी में तुर्की भाषा के तुल्य तथा सादृश्य शब्द मिलते हैं।

(क) तुल्य शब्द

तुर्की		हरियाणवी	तुर्की		हरियाणवी
कलग़ी	>	कलगी	ज़ाज़म	>	जाजम
कूच	>	कूच	बुलाक़	>	बुलाक
चोगा	>	चोगा			

(ख) तद्भव या सादृश्य शब्द

तुर्की		हरियाणवी	तुर्की		हरियाणवी
उर्दू	>	उड़दू	कार्तूस	>	कारतूस
कमची	>	कामची	तमगा	>	तगमाँ
कलाबतून	>	कलाबत्तू	तर्कु	>	ताक्कू
कुरता	>	कुड़ता	तोप	>	तोब
चाकू	>	चक्कू	बेगम	>	बेग्गम
काब	>	काबुआ	बिलाती	>	बिलाती
काबू	>	काब्बू			

अंग्रेजी-हरियाणवी–अंग्रेज़ों का सम्पर्क भारत के साथ होने पर हरियाणवी भी अंग्रेज़ी के निकट आई। यहाँ के युवक सेना के माध्यम से अपने साथ अनेक शब्द लाए। साथ-साथ कोर्ट-कचहरी के कारण अंग्रेज़ी के अनेक शब्दों का हरियाणवीकरण हुआ। मशीनी प्रयोग के बढ़ावे के साथ-साथ भी अनेक शब्द हरियाणवी ने पचा लिए। नीचे इसी प्रकार के शब्दों के कुछ नमूने दिए जा रहे हैं।

(क) तुल्य शब्द

अंग्रेज़ी		हरियाणवी	अंग्रेज़ी		हरियाणवी
कोट	>	कोट	बॉटल	>	बोतल
चिमनी	>	चिमनी	ब्रिगेडियर	>	ब्रिगेडियर
टिकट	>	टिकट	मिनिस्टर	>	मिनिस्टर
ट्रंक	>	ट्रंक	मिलिटरी	>	मिलिटरी
ट्रक	>	ट्रक	मिस्कोट	>	मिस्कोट
डबल	>	डबल	मील	>	मील
ड्यूटी	>	ड्यूटी	मुफलर	>	मुफलर
फिट	>	फिट	रूल	>	रूल

फ़ेंसी	>	फैंसी	रेल	>	रेल
फ्री	>	फ्री	लारी	>	लारी
बंडल	>	बंडल	समन	>	सम्मन
बाइस्कोप	>	बाइस्कोप	सूट	>	सूट
बूट	>	बूट	हैट	>	हैट
बेरिक	>	बेरिक	हैडमास्टर	>	हैडमास्टर
बैंक	>	बैंक			

(ख) तद्भव या सादृश्य शब्द

अंग्रेज़ी		हरियाणवी	अंग्रेज़ी		हरियाणवी
अटैंशन	>	टंच	टिन	>	टीन
आर्डर	>	ओड्डर	डिग्री	>	डिगरी
ओपियम	>	अफीम	ड्राइवर	>	डरेवर
कंपाउन्डर	>	कंपोड्डर	ड्रामा	>	डराम्मा
कनिस्टर	>	कनस्तर	थरमस	>	थरमोंस
कलैक्टर	>	कलट्टर	थियेटर	>	थेट्टर
कलैक्टोरेट	>	कलटरी	नेकटाई	>	नकटाई
कांग्रेस	>	काँगरिस	नोट	>	लोट
कार्ड	>	कारड	पिस्टल	>	पिस्तोल
कैरिज	>	किराँची	पेंटलून	>	पतलून
कॉलिज	>	कोलिज	पेंशन	>	पिलसण
गवर्नमैंट	>	गोरमिंट	पेन्सिल	>	पिनसल
गार्डर	>	गाट्टर	फाइन	>	फैन
गार्ड	>	गारद	फ़ार्म	>	फारम
गिनी	>	गिन्नी	फोटो	>	फोट्टू
गियर	>	गरारी	फ्री	>	बरी
गिल्ड	>	गिलट	बांब	>	बंब
चालान	>	चलाण	बार्डर	>	बोड्डर
जंपर	>	झंफर	बूचर	>	बूचड़
जज	>	झज	बँगलो	>	बंगला
टंबलर	>	तामलोट	मैडम	>	मैम
टाइम	>	टेम	रबर	>	रबड़
टंडम	>	टिमटिम	रायफ़ल	>	रफल

रिक्रूट	>	रंगरूट	वोट	>	बोट
रिपोर्ट	>	रपोट	सिग्रेट	>	सिगरट
रेडियो	>	रेडवा	सीमेंट	>	सिमेट
लाइन	>	लैन	सेंटरी	>	संतरी
लार्ड	>	लाट (साहब)	सैल्यूट	>	सलूट
लेंटर्न	>	लालटैन	सैशन जज	>	सिसन झज
लैंप	>	लंप	स्वेटर	>	सूट्टर

यदि हरियाणवी शब्दावली का विश्लेषण गहराई से किया जाए तो इसमें पुर्तगाली, स्पैनिश, जर्मन, पश्तो आदि अनेक भाषाओं के शब्द भी मिल जाएँगे। यहाँ हमारा अभिप्राय तो केवल यह दर्शाने का है कि हरियाणवी में शब्दों को पचाने की कितनी शक्ति है। वही भाषा प्राणवान् कही जा सकती है जिसमें जीवनी शक्ति हो और हरियाणवी के पास वह शक्ति है।

हरियाणवी का कला-पक्ष

हरियाणवी के कला-पक्ष को उभारने के क्षेत्र में अभी बहुत ही कम कार्य हुआ है। यदि हरियाणवी लोक-साहित्य का विश्लेषण किया जाए तो उसमें राग-रागिनियों की काफ़ी विविधता है। हरियाणवी के स्वाँगों में अनेक छंदों का प्रयोग किया गया है। चमोल्ला, कड़का (संभवतः कड़वक), दोहा, मुकताल आदि का प्रयोग सामान्य सी बात है। स्वाँग में गाई जाने वाली रागिनियों में अनेक प्रकार की बहर देखी जा सकती है। इन सभी का अपना एक आकर्षण है।

हरियाणवी उपमाओं और रूपकों में सटीकता, मनोरंजकता, व्यंग्य और भरपूर हास्य है। ये उपमाएँ बिल्कुल घरेलू मसाले से लट-पट हैं। इनमें न कोई बनावट है और न छैनी-टाँकी का काम, बिल्कुल अनगढ़ किन्तु प्राकृतिक सौंध से सुवासित। यहाँ बानगी के रूप में कुछ नमूने देखिए–

आँख

मोटी आँखों के लिए प्रयुक्त उपमाएँ–

कटार (इमली का फल)-सी आँख,
कटोरा-सी आँख,
डली-सी आँख,
बिल्ली-सी आँख,
हिरणी-सी आँख।

छोटी आँखों के लिए प्रयुक्त उपमाएँ–

बटण-सी आँख,
बिवाई-सी आँख।

कान

ऊँट-से कान (छोटे कान),
छाज-से कान (बड़े कान),
सुस्सा-से कान (शशक के समान उठे हुए कान)।

चाल

ऊँट-सी चाल (बेढंगी चाल),
मोरणी-सी चाल (सुंदर चाल),
हात्थी-सी चाल (झूमकर चलना),
हिरणी-सी चाल (मस्त चाल)।

टाँग

ऊँट-सी टाँग (लंबी और बेढंगी टाँग),
जेली-सी टाँग (लंबी और पतली टाँग),
पलदार-सी टाँग (लंबे और चौड़े पैर),
लबढीक-सी टाँग (लंबी टाँगें)।

नाक

कीड़ी-सी नाक (सूँघने में सक्षम),
गुलगुला-सी नाक (मोटी और चपटी नाक),
सुआ-सी नाक (लंबी और तीखी नाक)।

पेट

झाकरा-सा पेट (बड़ा, भारी और गोल पेट),
टींडसी-सा पेट (छोटा और गोल पेट)।

मुँह

कुतिया-सा मुँह (पतला और लंबोतरा मुँह),
कुल्हियाँ-सा मुँह (छोटा और गोल मुँह),
बटवा-सा मुँह (सुंदर मुँह),
बरोल्ला-सा मुँह (मोटा और भद्दा मुँह),
बोक-सा मुँह (बकरे के समान मोटा मुँह)।

मूँछ

कटार-सी मूँछ (कटार-सी ऐंठन वाली मूँछें),
किसारी-सी मूँछ (लंबी और छीदी मूँछें),
गुच्छा-सी मूँछ (सघन मूँछें)।

सिर

कल्लर-सा सिर (बाल-रहित सिर),
ढीम-सा सिर (भारी और गोल सिर),
लोड्ढा-सा सिर (लंबा और पतला सिर)।

सामान्य आकार-संबंधी उपमाएँ

करक-सी (कृशकाय)।
काटड़ा-सा (मोटा-ताजा)।
कातरा-सी (कृशकाय)।
घोड़ा-सी (चंचल)।
चिरमठी-सा (छोटा लेकिन तेज स्वभाव का)।
चीकला-सा (छोटा और कोमल)।
चीच्चड़-सा (छोटा लेकिन तेज)।
बित्ती-सा (छोटा लेकिन पैने स्वभाव का)।
भिरड़-सा (काला और तेज स्वभाव का)।
भूँड-सा (काला)।
मूँस्सल-सा (लंबा और सामान्य मोटा)।
मोद्धू-सा (मोटा और छोटा)।
सींख-सी (कृशकाय)।
सींगरा-सी (कृशकाय)।

कोश-निर्माण में अपनाई गई पद्धति

इस कोश के लिए शब्द-संकलन का कार्य 1973 ई० में आरंभ किया गया था। उस समय लेखक के सामने हरियाणवी कोश का कोई आदर्श नहीं था। इसी बीच एशियाटिक सोसायटी का सन् 1910 में प्रकाशित जोरनल एंड प्रोसीडिंग्ज आफ़ दी एशियाटिक सोसायटी आफ़ बंगाल के छठे खंड का छठा अंक लेखक को दिल्ली विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में मिला जिसमें श्री ई० जोसेफ ने खरखोदा (रोहतक) के एक पटवारी से शब्दावली एकत्रित कराकर 'जाटू ग्लोसरी' के नाम से प्रकाशित करवाई थी। यह कार्य इसलिए स्तुत्य है कि इसमें लगभग 2,000 शब्दों के अर्थ और कुछ मुहावरों के अतिरिक्त हरियाणवी का भाषागत विश्लेषण बहुत ही रोचक ढंग से किया गया है।

ग्लोसरी को आधे कोश की संज्ञा दी जाती है। कोश में शब्दों के चुनाव की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया होती है। यही समस्या वैज्ञानिक विधि से हरियाणवी के शब्दों को एकत्रित करने की थी। शब्द की इकाई के बारे में विद्वानों के अनेक मत भेद

हैं। कोई शब्द उसे मानते हैं जो एक ही शिरोरेखा में लिखा जाए। शब्द के विभिन्न खंडों को एक शिरोरेखा में सटाएँ या विलगाएँ इस विषय पर भी विद्वान् एकमत नहीं हैं। कुछ विद्वान् कोश में मूल शब्द की ही प्रविष्टि करने के हक़ में हैं। वे उससे व्युत्पन्न शब्दों को छोड़ देते हैं या एक ही शब्द के पेटे में उन्हें रखते हैं, स्वतंत्र शब्द की संज्ञा नहीं देते। फिर भाषा की विभिन्न शैलियाँ हैं। यदि कोई उर्दूदाँ होगा तो अरबी-फ़ारसी के शब्दों को भी कोश में दर्ज करेगा और यदि कोई संस्कृत के प्रति लगाव रखेगा तो वैदिक शब्दों तक का समाहार कोश में करके आनन्दित होगा। इसके अतिरिक्त शब्द-चयन के भी कई स्तर हैं जिनका संबंध पाठक की आवश्यकताओं, समाज के विभिन्न स्तरों और लेखक की अपने जीवन की पृष्ठ-भूमि से भी है। उपयोगितावादी आधारभूत शब्दावली के चयन से ही संतुष्ट हो जाएगा। साथ ही साथ एक ही भाषा में कई अंचल हैं। इनमें से किसे पकड़ें और किसे त्यागें। कई बार आंचलिक भेद के कारण एक ही शब्द के कई उच्चारण हैं। इनमें से किसको मानक समझ कर चुना जाए। शब्द-चयन का आधार किन ग्रंथों को माना जाए? ये समस्याएँ तो मानक कोशों के लेखकों की हैं। उच्चरित भाषा के कोश निर्माता के समक्ष तो ये समस्याएँ सौगुणा अधिक जटिलताएँ उत्पन्न कर देती हैं। हरियाणवी कोश के निर्माण के समय लेखक के सामने ये सभी समस्याएँ थीं। सबसे बड़ी समस्या तो तब आई जब एक विद्वान् ने कहा कि हरियाणवी का कोश निर्माण असंभव है। व्यक्ति तो क्या संस्थाएँ भी इस कार्य को आरंभ कराकर संपन्न नहीं कर पाईं। अस्तु।

शब्द-संग्रह के लिए अकारादि क्रम का एक रजिस्टर बनाया गया। इसमें भोजन, वस्त्र, मकान, स्वास्थ्य, मनोरंजन, खेत-खलियान, आभूषण, विभिन्न, कलाओं, विवाह-शादी आदि के विभिन्न पहलुओं के शब्द लिखे गए। मित्रों की सहायता से यात्रा के समय यात्रियों की शब्दावली एकत्रित कराई गई। किन्तु यह सभी कुछ काफ़ी नहीं था। इसलिए हरियाणवी के प्रकाशित साहित्य की भी खोज की गई। भाषा विभाग हरियाणा द्वारा प्रकाशित, सप्तसिंधु का भाषा अंक, साहित्य-स्मारिकाएँ तथा अन्य साहित्य का गहन विश्लेषण कर शब्द एकत्रित किए। इसी बीच डॉ० बुद्ध प्रकाश, श्री के० सी० यादव, पं० राजाराम शास्त्री, डॉ० शंकर लाल यादव, डॉ० भीम सिंह मलिक, डॉ० रणजीत सिंह, श्री देवी शंकर प्रभाकर, श्री राजेन्द्र वत्स, डॉ० चंद्र प्रकाश त्यागी, डॉ० प्रेमचंद पतंजलि, डॉ० नानक चंद, डॉ० जे० डी० सिंह, आचार्य भगवान देव, श्री के० सी० शर्मा, श्री ओ० पी० भारद्वाज तथा अन्य विद्वानों द्वारा रचित हरियाणा-संबंधित साहित्य का शब्दों की दृष्टि से विश्लेषण किया गया। किन्तु इससे भी लेखक की संतुष्टि नहीं हो पाई। इस अभाव की पूर्ति के लिए फुटपाथ पर बिकने वाली साँगियों और भजनियों की छोटी-छोटी कम से कम 100 पुस्तकों के शब्दों का विश्लेषण किया गया। सर्वश्री

पं० लखमी चंद, पं० माँगेराम, श्री नत्थू राम, श्री दयाचंद, चंदर भाट, श्री धनपत, रामानंद आजाद, रघुनाथ सिंह, अल्ला बक्श तथा अन्य गायकों की पुस्तकों से शब्द लिए गए।

श्रुत शब्दावली के लिए कई वर्षों तक आकाशवाणी दिल्ली केन्द्र से प्रसारित देहाती कार्यक्रम तथा दूरदर्शन से प्रसारित हरियाणा संबंधी कार्यक्रमों से भी शब्द एकत्रित किए गए। किन्तु लेखक को यह सब भी यथेष्ट नहीं लगा।

इसी बीच लेखक ने अपनी बड़ी बहिन फीमों देवी से अपनी धर्मपत्नी श्रीमती विमला कौशिक के सहयोग से हरियाणे के सैकड़ों लोकगीत एकत्रित करवा कर उनसे शब्दों का चयन करवाया। मेरे वयोवृद्ध पिता पं० रामस्वरूप मिश्र की कृपा और आशीर्वाद के बिना तो यह कोश नीरस शब्द-संग्रह मात्र ही रह जाता। वे गौर वर्ण तथा बड़े विनोदी स्वभाव के थे। वे अपनी उक्तियों से बड़ी-बड़ी सभाओं को रिझाने वाले पंडित थे। इस कोश में सहस्त्रों उक्तियाँ, परंपराएँ, रीति-रिवाज, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, कहावतें, ज्योतिष-संबंधी ज्ञान, हरियाणवी हास्य-विनोद आदि का समावेश उन्हीं की कृपा से संभव हो पाया है। उनका सन् 1974 में वसंत पंचमी के दिन बैकुंठधाम गमन हो गया और न जाने हरियाणा संबंधी कितना ज्ञान उनके साथ ही चला गया। अब यह कार्य उन्हीं की पुण्य स्मृति में समर्पित है।

शब्द-संग्रह का यह कार्य लगभग चार वर्ष चलता रहा। इसी बीच इन शब्दों के कार्ड बनाने आरंभ किए गए। इस विशाल कार्य में कई लाख कार्ड बन गए।

कई लाख कार्डों को अकारादि क्रम में लगाना और उनसे फालतू के कार्ड निकालना बहुत ही कठिन कार्य था। यदि परिवार के सभी सदस्यों, विशेषकर पुत्री भारती और आरती तथा पुत्र सगुण, मित्रों तथा शिष्यों की सहायता नहीं मिलती तो यह कार्य असंभव था। बिना गर्मी-सर्दी की चिन्ता किए रात-दिन दो वर्ष इसी साधना में बीत गए।

शब्द एकत्रित हो गए, उन्हें अकारादि क्रम से भी लगा दिया गया। अब समस्या उनको परिभाषित करने की थी। छ्योर, बिटोड़ा, गंडस्या, बूँगा, कोल्हड़ी आदि सैकड़ों ऐसे शब्द हैं जिनकी परिभाषाएँ कहीं उपलब्ध नहीं हैं। यह मौलिक कार्य मेरे लिए चुनौती भरा था। कहीं शब्द-व्याप्ति का भय और कहीं शब्द-लाघव का। इन शब्दों के किन गुणों को छोड़ें और किन्हें सम्मिलित करें। शब्दों की व्याख्या के काम में यदि डॉ० भोलानाथ तिवारी जी से मार्गदर्शन न मिला होता तो काम बीच में ही लड़खड़ा जाता। उन्होंने जिस प्रकार मेरे निवास स्थान पर सपरिवार स्वयं पधारकर मेरा मार्गदर्शन किया और साहस बढ़ाया वह चिरस्मरणीय घटना है।

कोश टाइप हो जाने के बाद और हरियाणा साहित्य अकादमी के पास कोश की पाण्डुलिपि पहुँचने पर विद्वानों ने इसमें सुधार के लिए कई महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए जिन्हें यथासम्भव इसमें सम्मिलित किया गया। इनमें से एक महत्त्वपूर्ण सुझाव

इस संस्करण में सम्भव नहीं हो पाया। वह सुझाव था कि हरियाणा की जितनी भी बोलियाँ हैं उन सभी के शब्द इसमें सम्मिलित किए जाएँ और उन शब्दों के सामने उन बोलियों का संकेत दिया जाए। लेखक के लिए यह सम्भव नहीं था कि वह यह बता सके कि अमुक शब्द केवल अमुक बोली का है। न ही लेखक के सामने ऐसा साहित्य था जिसके आधार पर वह शब्दों को बोली के आधार पर चिह्नित कर सकता। उदाहरण के लिए 'छोहरा गया' को कोई 'छोहरो गयो' कहे तो 'छोहरो' शब्द अलग शब्द नहीं है। यह आकारांत को ओकारांत करने की एक प्रवृत्ति मात्र है। यहाँ कोश में हरियाणा की केन्द्रीय शब्दावली को समेटने का यथासम्भव प्रयत्न किया गया है। फिर भी जो शब्द क्षेत्र विशेष में ही प्रयुक्त होते हैं उनके सामने अही०, कौ०, बा०, मेवा०, आदि अंकित कर दिया गया है। दूसरे, यह हरियाणवी भाषा का कोश है, हरियाणा राज्य सीमा कोश नहीं है। समिति के सुझाव के अनुसार भाषा विभाग हरियाणा द्वारा प्रकाशित हरियाणवी शब्दावली के कुछ शब्दों को कोश में स्थान अवश्य दिया गया है।

कोश की शैली

कोश के लिए एकत्रित शब्दों को एक विशेष शैली में प्रस्तुत किया गया है जिससे पाठकों को सुविधा हो। यथा–

शब्द–शब्दों को अंकार आदि क्रम से दिया गया है। ङ्, ञ्, ण्, न्, म् को अनुस्वार से लिखा गया है अत: इन वर्णों से युक्त शब्दों का क्रम अंकार क्रमानुसार पहले आ जाता है। इन शब्दों को इस परंपरा के अनुसार देखें। जैसे–गंडा (गण्डा), पंच (पञ्च) आदि।

कुछ शब्दों के एक से अधिक उच्चारण भी हैं। ऐसी स्थिति में दोनों ही स्थानों पर उनकी प्रविष्टियाँ की गई हैं। यदि उच्चारण-भेद अंकरादि क्रम में उसी शब्द के ठीक आगे आता है तो उसकी प्रविष्टि अलग नहीं है, उसे तिरछी पाई से अलग करके दिखाया है। यथा–ओसध और ओखध भिन्न स्थान पर दिए गए हैं लेकिन ओसर/ओस्सर को एक ही स्थान पर लिखा गया है।

यदि एक ही ध्वनि और वर्तनी वालें शब्दों (समरूप शब्द) की व्युत्पत्ति सर्वथा भिन्न है तो उन्हें यथासंभव अलग-अलग शब्द माना गया है और उनका 1, 2, 3 आदि क्रम भी दे दिया गया है। यथा–

भरत[1] (पुं०) गड्ढे आदि को भरने या पाटने का भाव।

भरत[2] (पुं०) काँसा नामक धातु।

भरत[3] (पुं०) चरत (शत्रुघ्न) का भाई।

इसी प्रकार बोहनी[1], बोहनी[2] आदि शब्द भी हैं। अंक देने का लाभ यह है कि देखिए (दे०) के लिए अंकित विशेष शब्द को ही देखा जाएगा दूसरे अंक वाले समरूप शब्द को नहीं।

अनेकार्थी शब्दों को सामान्यत: स्वतंत्र प्रविष्टि का दर्जा नहीं दिया गया है।

स्वतंत्र दो खंडों से निर्मित शब्दों को यथासंभव एक शब्द मानकर योजक-चिह्न से लिखा गया है। यथा—बोहनी-बट्टा, भीत्तरली-भारली आदि। इन संयुक्त शब्दों के अलग-अलग खंड में स्वतंत्र अर्थ हैं लेकिन संयुक्तावस्था से अर्थ में भिन्नता है।

अधिकांशतः शब्द का पुल्लिग रूप ही लिया गया है लेकिन यदि स्त्रीलिंग रूप में काफ़ी भिन्नता है, व्याकरणिक रूप में कुछ रंजकता है, या उस शब्द की अपनी महत्त्वपूर्ण सत्ता है तो उसे भी स्वतंत्र प्रविष्टि माना गया है। यथा—साँप-साँप्पण, भेड्ढ्या-भिडाण।

यथासंभव मूल शब्दों को ही लिया गया है लेकिन यदि व्युत्पन्न शब्द अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है तो उसे भी स्वतंत्र शब्द के रूप में लिया गया है। यथा—मारणा तथा मारणिया अलग-अलग प्रविष्टियाँ हैं।

क्रिया का वर्तमान कालिक रूप लिया गया है लेकिन उपयोग के महत्त्व के अनुसार उसका प्रेरणार्थक तथा आदेशात्मक रूप भी दिया गया है। कुछ स्थितियों में संज्ञा का रूपांतर क्रिया के समान हो जाता है। यथा—**ढूँढ** (पुं०) ध्वंसित भवन (क्रि० स०) ढूँढणा क्रिया का आदेशात्मक रूप। ऐसी स्थिति में इस शब्द की प्रविष्टि दो स्थानों पर न करके शब्द के पेटे में इसका संकेत दे दिया गया है।

यदि किसी शब्द का दूसरा खंड प्रमुख है तो उसका दूसरा भाग पहले लिख दिया गया है। जैसे—बंगाल्ली बोस की जगह बोस-बंगाल्ली (सुभाष चंद्र बोस), इसको इसी क्रम में देखा जाना चाहिए।

विशिष्ट अर्थ वाले पद-बंध भी लिए गए हैं। जैसे—मका (मैंने कहा)।

कहीं-कहीं महत्त्व की दृष्टि से आवृत्ति मूलक शब्दों को स्वतंत्र प्रविष्टि के रूप में लिया गया है।

भाषा की प्रकृति को समझाने की दृष्टि से कहीं प्रत्यय और उपसर्ग भी दे दिए गए हैं।

व्याकरणिक संकेत

शब्दों के बाद प्रविष्टि का व्याकरणिक रूप भी दिया गया है। संज्ञा शब्दों के आगे संज्ञा न लिख कर उन्हें पुल्लिंग (पुं०) तथा स्त्रीलिंग (स्त्री०) से दर्शाया गया है। हरियाणवी में कुछ शब्दों में हिन्दी से लिंग भेद भी है। हिन्दी में हुलाँस पुल्लिग है लेकिन हरियाणवी में स्त्रीलिंग।

सर्वनाम के सामने सर्व० लिखा गया है।

विशेषण शब्दों के सामने वि० लिखा गया है। विशेषण के आगे भेद-उपभेद नहीं दिए गए हैं क्योंकि इस प्रकार का वर्गीकरण कोश का विषय कम और व्याकरण का अधिक है।

क्रिया के सकर्मक (क्रि० स०) तथा अकर्मक (क्रि० अ०) दोनों रूपों को दर्शाया गया है। आवश्यकता अनुसार क्रिया का भूतकालिक रूप (भू० का०

रूप), आदेशात्मक रूप (आदे० रूप) भी अर्थ में अंकित किया गया है। इसी प्रकार क्रिया विशेषण को (क्रि० वि०) दिखाया गया है।

अव्यय शब्दों के सामने (अव्य०) लिख दिया गया है किन्तु इसके भेद नहीं दिए गए हैं।

बहुत महत्त्व के उपसर्ग (उप०) तथा अन्त्य प्रत्यय (प्रत्य०) भी लिए हैं और उनका संकेत भी कर दिया गया है।

अर्थ–शब्द के व्याकरणिक स्वरूप के बाद उसके अर्थ दिए गए हैं। अर्थ स्पष्ट करते समय कुछ प्रमुख बातों का ध्यान रखा गया है। शब्द का बहुत-प्रचलित अर्थ पहले दिया गया है हालाँकि बहु-प्रचलित अर्थ में बराबर मतभेद की संभावना बनी रहती है। शब्द के एकाधिक अर्थ होने की स्थिति में उन अर्थों को क्रम-संख्या से प्रदर्शित किया है। कम प्रयुक्त अर्थ सबसे अंत में दिया है।

शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए पर्याय, व्याख्या, परिभाषा, तुलनीय, विलोम आदि पद्धतियों को अपनाया है। अनावश्यक विस्तार से बचने के लिए कहीं हरियाणवी शब्द का मानक हिन्दी वर्तनी रूप ही दे दिया गया है क्योंकि वर्तमान कोश का प्रमुख उद्देश्य हरियाणवी शब्दों का संग्रह करना था न कि सामान्य हिन्दी शब्दों की व्याख्या। कई स्थानों पर शब्द विशेष के हरियाणा में सामान्य प्रचलित अर्थ को प्राथमिकता दी गई है, उस शब्द के हिन्दी कोशों में दिए गए अन्य अर्थों को अनावश्यक रूप से समेटने का प्रयत्न नहीं किया है। यह कार्य अगले संस्करणों में किया जा सकता है।

शब्द के अर्थ को अधिक स्पष्ट करने के लिए कहीं-कहीं वाक्य-प्रयोग भी दिए हैं। ऐसी स्थिति में अर्थ के सामने लंबा डैश (–) लगाया है। कहीं यथा, जैसे, आदि भी लिख दिया है। यदि एक से अधिक प्रयोग दिए हैं तो वहाँ क्रम-संख्या लिख दी गई है।

स्थान, नाम, कथा आदि में जहाँ परिचय की आवश्यकता थी वहाँ विस्तृत परिचय भी दिया है और उस सामग्री को कोष्ठकों [()] के बीच में दर्शाया है। स्थान और नामवाची उन संज्ञाओं को विशेष रूप से लिया गया है जिनका हरियाणे के सांस्कृतिक, सामाजिक आदि पहलुओं से गहरा संबंध रहा है।

शब्दों के अर्थों ने जहाँ अभिधा के अतिरिक्त लक्षणा तथा व्यंजना का रूप धारण कर लिया है वे भी आवश्यकतानुसार दिए गए हैं।

जिन शब्दों के अर्थों में स्वयं लेखक को भी भ्रम था उनके सामने प्रश्नवाचक चिह्न (?) लगा दिया गया है।

जहाँ एक ही शब्द के एकाधिक उच्चारण हैं वहाँ प्रविष्टियाँ तो सभी शब्दों की हैं किन्तु अर्थ बहु-प्रचलित उच्चारण के सामने ही दिया है और देखिए (दे०) का संकेत दे दिया है। इस प्रकार के संकेत उन मानक हिन्दी शब्दों के साथ सर्वाधिक हैं जहाँ उनके तुल्य शब्द ग्रामीण भाषा में उपलब्ध हैं।

शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए कहीं चित्रों की भी आवश्यकता होती है। गूँण, डेवा, चुलाया आदि शब्दों की संकल्पना चित्रों से ही स्पष्ट हो सकती है। किन्हीं कारणों से चित्र बनने पर भी कोश में नहीं दिए जा सके। यह अभाव संभवत: अगले संस्करणों में दूर हो पाए।

अन्यान्य संदर्भ

एक ही शब्द के लिए प्रचलित एकाधिक शब्दों की व्याख्या हर स्थान पर न देकर प्रतिनिर्देशों का प्रयोग किया गया है और वहाँ देखिए (दे०) कह कर बहु प्रचलित शब्द के सामने अर्थ दिया गया है। इसी प्रकार मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्दों के सामने तुलनीय (तुल०) का संकेत दिया गया है। कुछ स्थितियों में देखिए (दे०) का प्रयोग अतिरिक्त जानकारी के लिए भी किया गया है। यदि एक शब्द का उच्चारण दो या दो से अधिक प्रकार से है वहाँ भी कम प्रयुक्त उच्चारण के सामने (दे०) लिख कर उसका अर्थ अन्यत्र दिया गया है और उस बहु-प्रचलित शब्द का वहाँ संकेत दे दिया गया है। इस प्रकार के संकेत परिनिष्ठित हिन्दी शब्दों के हरियाणवी पर्यायों के लिए भी अधिकतर दिए गए हैं।

गौण प्रविष्टियाँ

मुख्य प्रविष्टियों के अतिरिक्त शब्द के पेटे में गौण प्रविष्टियाँ भी दी गई हैं। ऐसा करते समय कुछ बातों का विशेष ध्यान रखा गया है। जैसे–

यदि मूल शब्द के अंतिम अक्षर में परिवर्तन से उसका कोई व्युत्पन्न शब्द बनता है तो पेटे वाले शब्द के शेष भाग से पहले योजक या लहरिये का चिह्न (~) लगा कर कोष्ठक में उस अंश को लिखा गया है। यथा–

कीड़ा ~ (-ड़्याँ) की कूँड = कीड़्याँ की कूँड।

गंडास्या ~ (-स्याँ) का बखत = गंडास्याँ का बखत।

यदि मूल प्रविष्टि के आगे कोई शब्द, वाक्य-खंड, मुहावरा आदि जोड़ा है तो उससे पहले भी पेटे में लहरिये का चिह्न लगा दिया है। यथा–

चिंडाल ~ बाल = चिंडाल बाल।

गैरुआ ~ पहरणा = गैरुआ पहरणा।

यदि मूल प्रविष्टि तथा गौण प्रविष्टि के बाद भी कोई अन्य गौण प्रविष्टि जोड़ने की आवश्यकता पड़ी है तो वहाँ दो लहरियों (~ ~) का प्रयोग किया गया है। यथा–

गली ~ गितवाड़ा ~ ~ तरसणा = गली-गितवाड़ा तरसणा।

यदि मूल प्रविष्टि से पहले किसी शब्द को जोड़ा गया है तो उसके बाद लहरिये का चिह्न लगाया गया है। यथा–

घी **मुँह मार** ~ = मुँह मार घी।

गिरास **गऊ** ~ = गऊ गिरास।

मानक वर्तनी–शब्द के अर्थ या गौण प्रविष्टियों के अन्त में ग्रामीण शब्दों की मानक हिन्दी वर्तनी भी दी गई है। कहीं तो सामान्य शब्द की मानक हिन्दी

वर्तनी मात्र दी है और अर्थ देना आवश्यक इसलिए नहीं समझा है कि वह हिन्दी का सामान्य शब्द है। जैसे पिरोणा-पिरोना। यहाँ 'पिरोना' का अर्थ या प्रक्रिया नहीं समझाई गई है। कुछ स्थानों पर उस ग्रामीण शब्द की मानक वर्तनी को अर्थ के पेटे में ही ले लिया है। जैसे पिस्तो–पश्तो। यहाँ पश्तो को अलग से नहीं दिया है। अनेक स्थानों पर प्रविष्टियों की मानक वर्तनी शब्दों के बाद स्वतन्त्र रूप से दी है और उसके सम्मुख हिन्दी (हि०) कोष्ठक में लिख दिया है। जैसे पींघल़णा–पिघलना (हि०। इस मानक वर्तनी को सावधानी से देखने की आवश्यकता है। यह मानक वर्तनी अनेक स्थानों पर सामान्यतः हिन्दी का मानक रूप ही है। जैसे पिह्रोत-पुरोहित। कुछ स्थितियों में जहाँ वह शब्द हिन्दी कोशों में नहीं है वहाँ हिन्दी वर्तनी से अभिप्राय है कि यदि इनको हिन्दी कोश में स्थान दिया जाए तो इसका अमुक हिन्दी मानक रूप होगा। जैसे बिलोवणी–बिलोनी।

ऐसी भी अनेक प्रविष्टियाँ हैं जहाँ एक ही प्रविष्टि में मानक हिन्दी में एक से अधिक वर्तनी दी जानी चाहिएँ क्योंकि वह शब्द का संज्ञा और क्रिया रूप दोनों है। जैसे–'छाँटणा' यहाँ इसकी दोनों वर्तनी भिन्न-भिन्न ही हैं–छलना, छाँटना (हि०)। सभी स्थानों पर उनकी भिन्न वर्तनी देना सम्भव नहीं हो सका है अतः सुविज्ञ पाठक हिन्दी वर्तनी के मानक रूप को देखने में स्वयं सावधानी बरतें।

कुछ कोशकार शब्दों के उच्चारण संकेत, योजक चिह्न, खड़ी पाई आदि चिह्नों की सहायता से बलाघात, अक्षर-विभाजन आदि को दर्शाते हैं। बोली कोशों में भी इसकी आवश्यकता है। इस कार्य के लिए स्पेक्टोग्राफ़ पैटर्न प्लेबैक, स्पीच-स्टेचर आदि यन्त्रों की सहायता लेनी पड़ती है। मैं अपनी सीमाओं में रहकर प्रथम संस्करण में हरियाणवी शब्दों को अंकारादिक्रम देना ही महत्त्वपूर्ण कार्य समझता था। मैंने यहाँ आगामी महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए कच्ची सामग्री मात्र ही जुटाई है। मेरे अनुमान अनुसार अभी इस कोश का मात्र दशांश कार्य ही संपन्न हो पाया है।

धन्यवाद ज्ञापन

पितृ-तर्पण स्वरूप मैं अपने माता-पिता का हृदय से स्मरण करता हूँ जिनकी गोदी में इन शब्दों को तोतली बोली में बोलना सीखा। इनके अतिरिक्त उन बाल-सखाओं का जिनके बीच खेल-कूदकर, लड़-झगड़ कर न जाने कितनी-कितनी बार इस शब्दावली का प्रयोग किया होगा।

इस कार्य में मेरे सहयोगी बन्धुओं श्री विश्वनाथ शर्मा, डॉ० जे० एन० वर्मा, डॉ० महावीर प्रसाद कौशिक, स्व० तेजपाल वर्मा का परोक्ष या अपरोक्ष रूप में सहयोग रहा है, उनका स्मरण हो आना भी स्वाभाविक ही है। सभी मित्रों का नाम से धन्यवाद ज्ञापन मेरे लिए असम्भव है।

इस कार्य को वर्तमान रूप में प्रस्तुत करने के लिए जिन-जिन विद्वानों के ग्रन्थों की सहायता ली है उनका नाम लेकर धन्यवाद ज्ञापन करना अत्यन्त कठिन है।

यह कार्य तो उन्हीं के उद्देश्यों को एक क़दम आगे बढ़ाने का विनम्र प्रयत्न मात्र है।

डॉ० भोलानाथ तिवारी इस कार्य में आद्योपांत मंत्रद्रष्टा का कार्य करते रहे। उनका द्वार मेरी शंकाओं के निवारण के लिए हर समय बारह वर्षों तक खुला रहा। मुझे स्वयं आश्चर्य होता था कि लेखन में व्यस्त होते हुए भी वे जिज्ञासुओं के प्रति कितने सरल और उदार हृदयी हैं। वे सदा अंडे की तरह इसको सेते रहे और इस प्रतीक्षा में रहे कि कब यह मूर्त रूप बनकर सामने आए। उनके आशीर्वाद के बिना इस सारस्वत यज्ञ की कल्पना भी नहीं हो सकती थी।

संस्कृत के वयोवृद्ध विद्वान् पं० स्थाणुदत्त शर्मा शास्त्री जी तो इस कार्य के अवलोकन में इतने एकरस हो गए कि जहाँ भी कोई नया शब्द सुनते मेरे पास डाक से भेज देते। उनके द्वारा भेजे शब्द-रत्न कोश में यत्र-तत्र जगमगा कर इसकी शोभा बढ़ा रहे हैं। जीवन के चौथेपन में होते हुए भी कोश की समस्त सामग्री का दो बार परीक्षण करना उन्हीं के बस की बात थी। अकादमी को कोश-सामग्री के अवलोकन तथा मार्ग-दर्शन के लिए उनसा अधिकारी विद्वान् और मिल भी कौन सकता था। मैं उनके मार्ग-दर्शन और परिश्रम के सामने नतमस्तक हूँ।

मेरी धर्मपत्नी श्रीमती विमला कौशिक इस कोश की सह-सम्पादिका होने की पूर्ण अधिकारिणी है क्योंकि कोश के अंकारादि क्रम से, शब्दों की व्याख्या, टाइप का संशोधन और प्रेस कापी तैयार करने तक उनके हिन्दी-संस्कृत ज्ञान का मुझे पूरा लाभ मिला है।

मैं मीनाक्षी प्रकाशन के प्रबन्धक श्री चंद्रप्रकाश का धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ जिन्होंने कोश की जटिल पांडुलिपि को सुचारु रूप से मुद्रण में हर प्रकार का सहयोग दिया।

संस्था का भार व्यक्ति ने अपने ऊपर लेने का उत्तरदायित्व लिया इस कारण कोश में अनेक कमियाँ रह जाना स्वाभाविक ही है। किसी भी भाषा के प्रथम कोश में कई प्रकार की त्रुटियाँ रह ही जाती हैं। विद्वान् इन त्रुटियों को ठीक करके पढ़ लें। कार्य के परिमार्जन के लिए विद्वानों के सुझाव सदा आमन्त्रित हैं।

मुझे आशा है कि यह कोश स्थानीय और भारतीय स्तर पर भावी शोध-प्रबन्धों के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा और इस शताब्दी के अन्त तक कोश के संशोधित और परिवर्धित संस्करण पाठकों के सामने आएँगे।

26 जनवरी 1985 ई०
(वसंत पंचमी वि० सं० 2041)

डॉ० जय नारायण कौशिक
संचालक
संस्कृति चेतना मण्डल
सी-605, सरस्वती विहार
दिल्ली-110034

अ

अ देवनागरी वर्णमाला का पहला अक्षर जिसका उच्चारण स्थान कण्ठ है। हरियाणवी में इसका उच्चारण कुछ भिन्न है, इसके उच्चारण में कण्ठ कुछ कम खुलता है और वायु भी कम निकलती है।

अँ (अव्य.) 1 समर्थन द्योतक ध्वनि–यो काम न्यूँ कर ले। अँ, 2. प्रश्नवाचक ध्वनि–यो काम कर लिया। अँ? 3. संबोधन द्योतक ध्वनि–अँ! के कर रह्या सै, 4. कथाकार या वक्ता द्वारा प्रयुक्त हुँकारा–एक था राज्जा। अँ। वो न्यू बोल्या। अँ। (अँ के अर्थों का उपर्युक्त भेद अनुतान के कारण है); **~अँ करणा** किसी बात को न समझ सकना या बार-बार पूछना; **~बैं-खैं करणा** व्यर्थ की बात करना।

अंकुस (पुं.) हाथी को वश में करने या हाँकने का भाला विशेष; **~लाणा** 1. तंग करना, 2. वश में रखना। **अंकुश** (हि.)

अंग (पुं.) 1. शरीर, शरीर का हिस्सा, 2. खंड।

अंगड़-बंगड़ (वि.) 1. टेढ़ी-मेढ़ी, 2. टूटी-फूटी, 3. अनर्गल (बात)।

अँगड़ाई (स्त्री.) 1. आलस्य के कारण शरीर का टूटना या तनना, 2. जम्हाई के साथ शरीर का तनाव; **~तोड़णा/ लेणा** 1. निठल्ला बैठना, 2. कामुक संकेत देना।

अंगणा (पु.) आँगन।

अँगध (पुं.) 1. वानर-राज बालि का पुत्र, 2. भारी आदमी; **~का पाँ** 1. अटल बात, 2. कठिन काम। **अंगद** (हि.)

अँगरखा (पुं.) नीचे कोट के समान एक पहनावा विशेष।

अँगरेज (पुं.) 1. इंग्लैंड का निवासी, 2. किसी भी देश का लाल वर्ण का निवासी, 3. लाल या गोरे रंग का व्यक्ति, 4. बड़ा हाकिम–के तूँ न्यारा ए अँगरेज सै, 5. फिरंगी या लुटेरा, 6. अंगरेज़-सा रहन-सहन रखने वाला व्यक्ति। **अंग्रेज़** (हि.)

अँगरेज़णी (स्त्री०) 1. अंग्रेज़ की पत्नी, मेम, 2 लाल या गोरे रंग की स्त्री। **अंग्रेज़नी** (हि०)

अंगरेज्जी (स्त्री०) 1 इंग्लैंड के लोगों की भाषा, 2 वह भाषा जो समझ में नहीं आए; **~काटणा/ छाँटणा/हाँकणा** समझ में न आने वाली भाषा बोलना; **फैस्सन कारणा** अंग्रेज़ों जैसे पहनावा पहनना; ~ **बाल कटवाणा / छटवाणा/ रखवाणा**–सिर के बाल अंग्रेज़ी ढंग से कटवाना। **अंग्रेज़ी** (हि०)

अंगलिन (स्त्री.) दे. आँगळी।

अँगाकड़ा (पुं०) अंगारे पर सेंकी गई जौ, चने आदि की मोटी रोटी, (दे० टीकड़ा); **~थापणा** 1. सख्त आटे को हथेली की दाब से परात आदि पर बढ़ा कर अँगाकड़ा बनाना, 2. मोटी रोटी बनाना; **~भूभल में दाबणा** 1. जल्दी में होना, 2. बेगार काटना।

अँगाकड़ी (स्त्री.) 'अँगाकड़े का लघुता द्योतक रूप, (दे अँगाकड़ा)

अँगार (पुं०) धुएँ से रहित अग्नि, जलता कोयला, ~**उगलणा** 1. क्रोध में होना, 2. खरी खोटी सुनाना; ~**बरसणा** अधिक गरमी पड़ना; ~**होणा** 1. नेत्र लाल होना, 2. अंगारे के समान धधकना, अत्यंत क्रोधित होना। **अंगार** (हि.)

अंगारी (स्त्री.) धुएँ रहित छोटा अंगारा; ~**करणा** 1. आग जलाना, 2. मृत्यु के अनंतर का एक कृत्य करना; ~**धरणा** 1. हुक्का भरना, 2. विनाश करना; ~**माँगणा** चूल्हा जलाने के लिए किसी से आग माँगना; ~**सी टूटणा/लागणा** कड़वे वचन सुनकर क्रोध आना; ~**होणा** जल भुन जाना।**अंगारी** (हि.)

अँगिया (स्त्री.) दे० आँग्गी।

अंगीट्ठा (पुं.) बड़ी अँगीठी।

अँगीट्ठी (स्त्री.) मिट्टी का उठाऊ (पोर्टेबल) चूल्हा, **अँगीठी** (हि.)

अंगीठ (पुं.) दे. अदीठ।

अंगुलताना (स्त्री.) अंगुली की अंगूठी विशेष।

अँगूट्ठा (पुं.) हाथ या पैर की सबसे मोटी अँगुली, (दे. गूँट्ठा) **अँगूठा** (हि.)

अँगूट्ठी (स्त्री.) अँगुली में पहना जाने वाला एक आभूषण, दे. गूँट्ठी। **अँगूठी** (हि.)

अँगूर (पुं.) अंगूर का फल। **अंगूर** (हि.)

अँगूरी (वि.) अंगूर के रंग का, (पुं.) हल्का हरा रंग। **अंगूरी** (हि.)

अंगेजणा (क्रि.) स्वीकारना। उदा.–यो दुख ईसवर नैं भेज्या, नहीं जात्ता अंगेज्या। (लचं)

अँगोच्छा (पुं.) 1. शरीर पोंछने का उप-वस्त्र, 2. रसोईघर में काम आने वाला उपवस्त्र; ~**फेंकणा** तीर्थयात्रा के बाद (विशेषत: तीर्थराज पुष्कर में) अंगोछे को प्रवाहित करना। **अँगोछा** (हि०)

अँघाई (स्त्री.) अहमन्यता, मस्ती; ~**लागणा** 1. मस्ती में आना, 2. प्रमादवश सामर्थ्य से अधिक कार्य का बीड़ा उठाना।

अँघाणा (क्रि. अ.) यौवन, धन आदि की मस्ती में रहना। **अँघाना** (हि.)

अँघाया (वि.) मस्त।

अंचरा (पुं.) दे. घूँघट। आँचल।

अँजन (पु.) इंजन।

अंजनहारी (स्त्री.) 1. अंजन नामिका, एक घास, 2. भिरड़ से मिलता- जुलता एक उड़ने वाला कीट, तुल. कुम्हारी, 3. आँख की छोटी फुंसी।

अंजनी (स्त्री.) हनुमान की माता।

अंजर-पंजर (पुं.) 1. ढाँचा, 2. हड्डी-पसली।

अंजल (पुं.) अन्न-जल।

अंजीनियर (पुं.) दे० इंजीनियर।

अँटणा (क्रि. अ.) 1. धूल आदि से लथपथ होना, 2. धूल जमना, 3. गड्ढे आदि का पटना, 4. आच्छादित होना, ढका जाना। **अँटना** (हि.)

अंट-पिल्ला (पुं.) गोलियों से खेला जाने वाला एक खेल।

अंटा (पुं.) 1. बड़ी गोली, 2. खेल का पाँसा, 3. लिंग का अग्र भाग, 4. भाँग का गोला; ~**आणा** 1. बाजी चढ़ना, 2. आपत्ति पड़ना; ~**खेलणा** कंकड़ या कौड़ी का खेल विशेष खेलना; ~**चढाणा** 1. अँगुली पर अँगुली चढ़ाना, 2. सौगंध दिलाना, 3. हराना, बाजी चढ़ाना, 4. भंग का गोला खा लेना; **भाँग का** ~भाँग की गोली; ~**रड़कणा** बाजी न उतरने पर कष्ट अनुभव करना।

अंटाचित (वि.) पीठ के बल (गिरने का भाव)।

अंटी (स्त्री.) 1. अंगुलियों के बीच का स्थान, 2. धोती की लपेट या गाँठ, 3. टाँग पर टाँग चढ़ाने की क्रिया, 4. कुश्ती का एक दाँव, 5. सूत की लच्छी, 6. पकड़, काबू; **~करणा** व्यक्तिगत पैसा जोड़ना, गाँठ करना; **~चढाणा** 1. तर्जनी पर मध्यमा अंगुली चढ़ाना, 2. अस्पृश्यता, शपथ आदि दोष से बचने के लिए अँगुली की एक विशेष मुद्रा बनाना; **~मारणा** 1. टाँग में टाँग अड़ा कर गिराना, 2. पलाथी मारना; **~लाणा** 1. अंटी में रखना 2. धोती के एक हिस्से को दूसरे से मिलाकर कमर पर लपेटना; **~होणा** छिपाया हुआ रुपया-पैसा यथेष्ट मात्रा में होना।

अंटोक (वि.) 1. बिना रोकटोक का, 2. बिना बोले; **~जाणा** जादू-टोने के मंतव्य से मौन होकर कार्य-सिद्धि के लिए जाना। **अंटोक** (हि.)

अंडज (पुं.) 1. अंडे से उत्पन्न जीव, 2. चार योनियों में से एक योनि।

अंड बंड (पुं.) व्यर्थ की बात।

अंडा (पुं.) 1. जीव-जंतु का अंडा, 2. अंडाकार वस्तु।

अंडी (स्त्री.) दे० अरंड्डी।

अंत (पुं.) 1. समाप्ति, 2. किनारा। 3. अनंत, बाजू का आभूषण या धागा।

अंतकाल (पुं.) 1. मृत्यु, 2. अंत समय।

अंतड़ी (स्त्री.) दे. आँत।

अंतर (पुं.) 1. दूरी, 2. भेद।

अंतिम (वि.) आख़िरी।

अंत:पुर (पुं.) दे. रणबास।

अंदर (क्रि. वि.) दे. भीतर।

अंदाजन (क्रि. वि.) लगभग।

अँदेस्सा (पुं.) 1. अंदेशा, 2. आशंका।

अँध (वि.) दे. आँद्धा।

अँधकार (पुं.) अंधकार, अँधेरा।

अँधकूप (पुं.) अंधकूप, (दे. आँद्धा कूआ)।

अँध-खोपड़ी (वि.) मूर्ख।

अंधड़ (पुं.) आँधी-तूफ़ान।

अंध परंपरा (स्त्री.) बिना समझे-बूझे पुरानी चाल का अनुकरण।

अंधा (वि.) दे. आँद्धा।

अँधाधूँध (वि.) अंधाधुंध, बिना विचारे। **~मचाणा** मनमानी करना। **~माचणा** अराजकता की स्थिति होना।

अँधियारा (पुं.) दे. अँधेरा।

अँधियारी (स्त्री.) अंधेरी।

अँधेर (पुं.) 1. गड़बड़, 2. कृष्ण पक्ष, 3. आँधी, 4. अंधेरे का समय; **~ऊठणा** आँधी आना; **~करणा** गड़बड़ मचाना। **~मचाणा** मनमानी करना। **~लागणा** कृष्ण पक्ष शुरू होना। **~होणा** न्याय नहीं मिलना।

अँधेर खात्ता (पुं.) अव्यवस्था की स्थिति, अराजकता। **अँधेर खाता** (हि.)

अँधेर घुप (पुं.) गहरा अंधकार।

अँधेर मुँह (क्रि. वि.) 1. बहुत तड़के, 2. खाली पेट।

अँधेरा (पुं.) प्रकाश का अभाव, अंधकार।

अँधेरिया (पुं) 1. अंधकार, 2. अंधड़।

अँधेरी (स्त्री.) 1. आँधी, 2. बेहोशी, 3. रात, 4. बैलों की आँख का परदा, 5. गड़बड़ी, 6. कृष्ण पक्ष की रात; **~आणा** 1. चक्कर या बेहोशी आना, 2. आँधी आना, 3. अन्याय की घड़ी आना।

अंबर (पुं.) आसमान; **~की चील गाड्डी** वायुमान; **~में छेक करणा** 1. असाधारण काम करना, 2. निन्दित कार्य करना; **~में थेगळी लाणा** असंभव काम करना।

अंबर-डंबर (पुं.) सूर्यास्त के समय की लाली।

अंबर बेल (स्त्री.) दे. अमरबेल।

अंबरीस (पुं.) अयोध्या का एक राजा। **अंबरीष** (हि.)

अंबा (स्त्री.) 1. दुर्गा, 2. माता, 3. काशी के राजा इन्द्रद्युम्न की एक पुत्री जिन्हें भीष्म पितामह अपने भाई विचित्रवीर्य के लिए हरण करके लाए थे।

अंबार (पुं.) ढेर; (स्त्री.) ढेरी; तुल. हाण.

अंबारी[1] (स्त्री.) 1. हाथी की पीठ का हौदा, 2. छज्जा।

अंबारी[2] (स्त्री.) अलमारी।

अंबालिका (स्त्री.) काशी नरेश की छोटी पुत्री जिसका विवाह भीष्म पितामह ने अपने भाई विचित्रवीर्य से कराया।

अँबिया (स्त्री.) कच्ची आमी।

अंस (पुं.) भाग। **अंश** (हि.)

अँह (सर्व.) इस।

अँहकार/अँहकारा (पुं.) हृदय उमड़ने का भाव; **~आणा/ऊष्णा** किसी प्रिय वस्तु का बार-बार स्मरण होना, दिल भर आना।

अँहैं (अव्य.) नहीं, नकारात्मक ध्वनि।

अँहृढा (वि.) 1. विपरीत आचरण करने वाला, 2. जटिल, 3. कुबुद्धि।

अँहृढी (स्त्री.) 1. विपरीत आचरण करने वाली स्त्री, 2. हठीली।

अः (अव्य.) उपेक्षा, तिरस्कार द्योतक ध्वनि।

अ (उप.) 1. गाना आरंभ करने से पहले उच्चरित स्वर, 2. कुछ शब्दों से पहले जब यह उपसर्ग लग जाता है तब यह 'अन' या 'अण' भी हो जाता है, जैसे—अणसरत, अणमीत्ता; **~बै करणा** व्यर्थ की बात करना।

अक (प्र.) सा, थोड़ाक—थोड़ा सा, घणाक—घणा सा; (अव्य.) 1. 'कि' संयोजक शब्द—यो कर लिया अक ना, 2. क्या—अक यो काम कर लिया?, 3. एक अतिरिक्त संयोजक जिसका कोई अर्थ नहीं निकलता; **~जी** गाना आरंभ करने से पूर्व प्रयुक्त शब्द; **~थू** .1 किसी वस्तु की निंदा करने का भाव, 2. कड़वी वस्तु को थूकना; **~रै** अरे।

अकछत (वि.) अक्षत।

अकटक (वि.) 1. निर्विघ्न, 2. शत्रु रहित।

अकड़ (स्त्री.) 1. सख़्ती, 2. तनाव, 3. जिद्द, 4. मरोड़; **~पाकड़णा** जिद्द पकड़ना; **~फूँ करणा** रौब दिखाना।

अकड़णा (क्रि. अ.) 1. सामना करना, 2. ठिठुरना, 3. तनना, 4. ऐंठना। **अकड़ना** (हि.)

अकड़-बा (पुं.) एक वायु रोग जिससे शरीर अकड़ जाता है।

अकड़ बाज (वि.) 1. अभिमानी, 2. अड़ियल।

अकड़बाजी (स्त्री.) शेखी।

अकड़ा[1] (पुं.) 1. एक प्रकार का कीड़ा जो ओस चाटता है और पशुओं में कई प्रकार के रोग फैलाता है, 2. पौधे का एक रोग जिसमें पत्तियाँ अकड़ जाती हैं।

अकड़ा[2] (पुं.) ऐंठन। **अकड़ाव** (हि.)

अकड़ाव (पु.) दे. अकड़ा[2]।

अकड़ैल (वि.) अकड़बाज।

अकधक (स्त्री.) 1. आशंका, 2. बेचैनी।

अक ना (अव्य.) कि नहीं। उदा. वो आया अक ना।

अक बक (स्त्री.) व्यर्थ की बात, अंड बंड।

अकबकाणा (क्रि. अ.) घबराना।

अकबर (पुं.) अकबर बादशाह।

अकबरी (स्त्री.) बादशाही; (वि.) अकबर संबंधी।

अकर मकर (स्त्री.) बहानेबाजी। दे. मक्कर।

अकरमाँ (वि.) कुछ काम न करने वाला। **अकर्मण्य** (हि.)

अकरमीं (वि.) पापी, दुष्कर्मी, (दे. अकरमाँ)।

अकरा (पुं.) दे. आकरा।

अकराळ (वि.) दे. कराल

अकरी (स्त्री.) दे. ओरणा।

अकरूर (पुं.) अक्रूर, श्रीकृष्ण के चाचा।

अकल (स्त्री.) दे. अक्कल।

अकलखुरा (वि.) दे. अक्कल खोरा।

अकवाई (स्त्री.) मोची द्वारा कील आदि ठोकने की तिपाई या स्टेंड।

अकस (पुं.) दे. अक्स।

अकसर (क्रि.वि.) प्रायः। **अक्सर** (हि.)

अकाज (पुं.) बिगाड़; (क्रि. वि.) बिना काम।

अकादसी (स्त्री.) 1. दे. ग्यास, 2. दे. ग्यारस।

अकारथ (वि.) निष्फल।

अकाल (पुं.) दे. काळ[2]।

अकास (पुं.) 1. आसमान, 2. बहुत ऊँचा स्थान; **~बींधणा** असंभव या कठिन काम करना। **आकाश** (हि.)

अकास्सीबिरती (स्त्री.) ऐसी आमदनी जो बँधी न हो (प्रायः दान-दक्षिणा की स्थिति में); **~आला** ब्राह्मण या साधु। **आकाशवृत्ति** (हि.)

अकीद्दा (पुं.) विश्वास; **~करणा** विश्वास करना; **~होणा** विश्वास होना। **अक़ीदा** (हि.)

अकुलाना (क्रि. अ.) दे. उकलाणा।

अकूत (वि.) अनुमान से परे।

अकेलड़ा (वि.) दे. एकला।

अकेला (वि.) दे. एकला।

अकोत्तर सौ (वि.) एक ऊपर सौ, एक सौ एक; (पुं.) कौरव।

अक्कल (स्त्री.) 1. बुद्धि, 2. सूझ बूझ; **~का कसूर** बुद्धि का दोष; **~का मार्‌या** मूर्ख; **~की पुड़िया** 1. बुद्धिमान (व्यंग्य अर्थ में), 2. मूर्ख; **~कै पाच्छै लट्‌ठ ले कै पड़णा** 1. मूर्खता करना, 2. नासमझी का काम करना; **~देणा** शिक्षा देना, समझाना; **~भिड़ाणा** सोच विचार करना; **~मारणा** 1. मूर्ख बनाना, 2. दिमाग़ी कसरत करना। **अक्ल** (हि.)

अक्कलखोरा (वि.) बेवकूफ़, (दे. इकल-खोरा)। **अक़्लखोर** (हि.)

अक्खड़ (वि.) 1. जिद्दी, 2. स्पष्ट वक्ता, 3. झगड़ालू।

अक्खन[1] (पुं.) काना (व्यंग्य में)।

अक्खन[2] (पुं.) हीर नायिका का निकाह शुदा पति। (वि.) काना (व्यंग्य में)।

अक्ल (स्त्री.) दे. अक्कल।

अक्षक्रीड़ा (स्त्री.) दे. अस्टा[2]।

अक्षर (पुं.) दे. अक्सर।

अक्स (पुं.) 1. छाया, 2. प्रतिबिंब, 3. प्रभाव; **~पड़णा** 1. किसी का प्रभाव पड़ना, 2. छाया पड़ना।

अक्सत (पुं.) 1. चावल, 2. तुच्छ भेंट। **अक्षत** (हि.)

अक्सतचावल (पुं.) 1. धान, 2. पूजा के चावल, 3. तुच्छ भेंट।

अक्सर (पुं.) 1. शब्द, 2. हरफ़ 3. विद्या; **~नाँ आणा** अनपढ़ रहना, निरक्षर रहना। **अक्षर** (हि.)

अक्सीर (स्त्री.) 1. अचूक औषधि, 2. रसायन; (वि.) अत्यन्त गुणकारी।

अखंड (वि.) 1. साबुत, 2 निर्विघ्न।

अखता (पुं.) दे. इकता।

अखन कुँआरी (स्त्री.) अक्षत योनि कन्या।

अख़बार (पुं.) समाचार पत्र।

अखरणा (क्रि. अ.) बुरा लगना।

अखरोट (पुं.) एक मेवा।

अखसोहणी (स्त्री.) पैदल, घोड़े, हाथी, और रथ की सेना, चतुरंगिणी सेना। **अक्षौहिणी** (हि.)

अखाड़ा (पुं.) 1. अक्षवाट, कुश्ती लड़ने या स्वाँग करने का स्थान, 2. साधु महन्तों का निवास स्थान; **~जमाणा/ लाणा** 1. स्वाँग आदि का आयोजन करना, 2. भीड़ जोड़ना, 3. साधुओं की जमायत द्वारा घूनी लगाना, (दे. खाड़ा)।

अखाड़िया (पुं.) 1. अखाड़े का पहलवान, 2. प्रसिद्ध कुश्ती लड़ने वाला, 3. प्रसिद्ध साँगी।

अखीर (पुं.) 1. अंत, 2. मृत्यु। **आख़िर** (हि.)

अखीरला (वि.) आख़िरी, अंतिम।

अख्त्यार (पुं.) 1. अधिकार क्षेत्र, 2. स्वत्व, प्रभुत्व। **इख़्तियार** (हि.)

अगजग (पुं.) 1. चल-अचल, 2. संसार।

अगड़ (पुं.) 1. आँगन, 2. एक आभूषण, 3. अंगरु चंदन।

अगड़ पड़ोस (पुं.) 1. पास-पड़ोस, 2. घर के आसपास का स्थान।

अगड़बंब (पुं.) शिव पार्वती के विवाह से संबंधित एक गीत।

अगड़ बगड़ (पुं.) पास-पड़ोस; (क्रि. वि.) 1. आसपास, 2. आगे पीछे।

अगड़म बगड़म (पुं.) बेमेल वस्तुएँ।

अगणित (वि.) असंख्य।

अगत (पुं.) 1. आने वाला समय, 2. बुढ़ापा, 3. अगले जन्म का समय; **~बणाणा/सुधारणा** 1. अगला जन्म सुधारना, 2. भावी जीवन सुधारना।

अगन (स्त्री.) दे० अगनी।

अगन कुंड (पुं.) 1. हवन कुंड, 2. चिता। **अग्नि कुंड** (हि.)

अगनबोट (पुं.) इंजन से चलने वाली नाव। **अग्न बोट** (हि.)

अगनी (स्त्री.) 1. आग, 2. क्रोध; **~देणा** चिता में आग लगाना। **अग्नि** (हि.)

अगनी परीच्छा (स्त्री.) 1. कठोर परीक्षा, 2. शुद्धि जाँच। **अग्नि परीक्षा** (हि.)

अगनी बाण (पुं.) भस्म करने वाला बाण विशेष। **अग्नि बाण** (हि.)

अगनी सुद्धी (स्त्री.) किसी बरतन आदि के अपवित्र होने पर उसे आग में तपाकर की गई शुद्धि। **अग्नि शुद्धि** (हि.)

अगम निगम (पुं.) धर्मशास्त्र।

अगर (पुं.) अगर की लकड़ी; (अव्य.) यदि, जो, (दे. जै[2])।

अगरचे (अव्य.) यद्यपि।

अगरबत्ती (स्त्री.) सुगंध के निमित्त जलाई जाने वाली मसाले युक्त पतली लकड़ी।

अगरोहा (पुं.) दिल्ली से लगभग 113 मील की दूरी पर तथा हिसार से 11 मील की दूरी पर स्थित एक गाँव जनसाधारण के अनुसार प्राचीन काल में यह राजा अग्रसेन की राजधानी थी यह अग्रवाल बनियों के निकास का स्थान माना जाता है। **अग्रोहा** (हि.)

अगल-बगल (क्रि. वि.) आस पास।

अगला (वि.) दे. आगला।

अगलेट्टा (वि.) दे. आगला।

अगलेनी (स्त्री.) दे. अगवाड़ा।

अगवा (पुं.) 1. नेता, 2. मुखिया।
अगुआ (हि.)

अगवाई (स्त्री.) अगवानी, बारात आदि की अगवानी। **अगुआई** (हि.)

अगवाड़ा (पुं.) घर के आगे का हिस्सा या खुला स्थान, 'पिछवाडे' का विलोम।

अगवानी (स्त्री.) बारात को आगे बढ़कर लेने की रीति।

अगस्त (पुं.) 1. अगस्त्य ऋषि, 2. एक तारा, 3. अँग्रेज़ी मास का नाम।

अगहन (पुं.) दे. मँगसिर।

अगहनी (स्त्री.) वह फसल जो अगहन मास में तैयार हो।

अगाऊ (वि.) आगे का; (क्रि. वि.) समय के पहले, पेशगी।

अगाड़ी[1] (क्रि. वि.) 1. कुछ आगे, 2. सामने, 3. 'पछाड़ी' का विलोम।

अगाड़ी[2] (पुं.) घोड़े के अगले पैरों में बँधने वाली एक रस्सी।

अगीत (पुं.) 1. आगे का भाग, 2. 'पछीत' का विलोम; (क्रि. वि.) आगे की ओर; **~पछीत** आगे पीछे का भाग, आगे और पीछे की ओर।

अगेत्ता (वि.) समय से पूर्व का।
अगेता (हि.)

अगेत्ती (वि.) 1. समय से पूर्व बोई गई (फसल), 2. 'पछेती' का विलोम।
अगेती (हि.)

अमोल (वि.) बहुमूल्य।

अगोळा (पूं.) ईख के ऊपर का पत्तियों वाला भाग, (दे० गोला[1])।

अग्गम (वि.) 1. आगे की, 2. अगाऊ; **~बुद्धि** भविष्य की सोचने वाला।
अग्रिम (हि.)

अग्गरवाल (पुं.) महाराज अग्रसेन के वंशज जिनके गर्ग, गोयल, गोन, मित्तल, जित्तल, सिंगल, बाँसला, एरन, कनसल, कुषफल, तिंगल, मंगल, बिंदल, धारण, मुद्गल, तायल, नांगल तथा कुचलस 18 गोत्र हैं। **अग्रवाल** (हि.)

अग्नि शुद्धि (स्त्री.) 1. आग में तपा कर किसी वस्तु को शुद्ध करने की क्रिया, 2. अग्नि परीक्षा, 3. कठोर परीक्षा।

अग्नि संस्कार (पुं.) दाह संस्कार।

अग्निहोत्र (पुं.) वेदमंत्रों से अग्नि में आहुति देने की क्रिया।

अग्निहोत्री (पुं.) 1. एक ब्राह्मण गोत्र, 2. अग्निहोत्र करने वाला।

अग्रज (पुं.) 1. पूर्वज, 2. बड़ा भाई।

अग्रवाल (पुं.) दे. अग्गरवाल।

अघाणा (क्रि.अ.) अघाना, (दे. छिकणा); (पुं.) एक गूजर गोत।

अघासुर (पुं.) कंस का सेनापति जिसे कृष्ण ने मारा था।

अघोर (वि.) बहुत भयंकर।

अघोर पंथ (पुं.) अघोरियों का एक मत या सम्प्रदाय।

अघोरी (पुं.) 1. भक्ष्य-अभक्ष्य का ध्यान न रखने वाला, 2. स्नान न करने वाला व्यक्ति, 3. अघोर मत का अनुयायी।

अचंभा (पुं.) आश्चर्य, आश्चर्यजनक बात।

अचकण (स्त्री.) एक प्रकार का लंबा कलीदार कोट। **अचकन** (हि.)

अचकण-मचकण (पुं.) पैरों के आभूषण विशेष–तेरे पाह्याँ में अचकण-मचकण गुरभान साँज्झी (लो.गी.)।

अचपली (वि.) चंचल।

अचरज (अव्य.) आश्चर्य, अचंभा।

अचल (वि.) अटल।

अचानक (क्रि. वि.) दे. चाणचक।

अचार (पुं.) आम, नीबू आदि का खट्टा अचार।

अचूक (वि.) 1. जो न चूके, 2. ठीक, पक्का।

अचेत (वि.) 1. बेख़बर, 2. बेहोश।

अचेतन (वि.) संज्ञा शून्य।

अच्छा (वि.) दे. आच्छ्या।

अच्छाई (स्त्री.) उत्तम या अच्छा होने का भाव।

अछत (पुं.) अक्षत, धान।

अछूत (वि.) अस्पृश्य; (पुं.) अस्पृश्य जाति का व्यक्ति।

अछूत्ता (वि.) 1. नया, कोरा, ताजा, 2. अस्पृश्य। **अछूता** (हि.)

अज (पुं.) 1. दशरथ के पिता, 2. बकरा; (क्रि. वि.) अब, अभी तक।

अजगर (पुं) दे. ईजगर।

अजड़ (वि.) 1. न खुलने वाला, 2. मजबूत, 3. भली प्रकार से जड़ा या बंद किया हुआ–मनैं भेड़े अजड़ किवाड़, साँक्कल़ मारी भीत्तरली (लो. गी.)।

अजड़-किवाड़ (पुं.) 1. मजबूत दरवाजा, 2. मजबूती से बंद किया हुआ दरवाजा।

अजड़ चंदन (पुं.) अगरु।

अजधा (पुं.) भारी और लंबा साँप। **अजदहा** (हि.)

अजनबी (वि.) अनजान।

अजब (वि.) विलक्षण।

अजमाण (स्त्री.) 1. एक मसाला, 2. इस मसाले का पौधा। **अजवायन** (हि.)

अजमाणा (क्रि. स.) 1. परखना, 2. परीक्षा करना। **आजमाना** (हि.)

अजमास (स्त्री.) परीक्षा, आजमाने का भाव। **आजमाइश** (हि.)

अजर (वि.) 1. जो कभी बूढ़ा न हो, 2. जो हजम न हो।

अजर अमर (वि.) अमर, जो न कभी बूढ़ा हो और न मरे।

अजवायन (स्त्री.) दे. अजमाण।

अजा (स्त्री.) दे. अझा।

अजान (वि.) 1. अनजान, 2. अबोध।

अजामिल (पुं.) एक पापी ब्राह्मण जो मरते समय अपने पुत्र नारायण का नाम लेने से सद्गति को प्राप्त हुआ था।

अजायबघर (पुं.) संग्रहालय।

अजार (पुं.) प्रभाव; **~नाँ आणा** 1. टस से मस न होना, 2. प्रभाव न पड़ना, पूर्व अवस्था में रहना। **आजार** (हि.)

अजित (वि.) जो जीता न गया हो।

अजी (अव्य.) पति या बड़ों के लिये प्रयुक्त सम्मानार्थ संबोधन।

अजीज (वि.) प्रिय।

अजीब (वि.) विचित्र।

अजीरण (पुं.) 1. कब्जी, 2. बदहजमी; (वि.) नया, जो जीर्ण न हो। **अजीर्ण** (हि.)

अजुध्या (स्त्री.) अवधपुरी, राजा राम की नगरी। **अयोध्या** (हि.)

अजूबा (वि.) अनोखा।

अजेय (वि.) जिसे कोई न जीत सके।

अजोत्ता (पुं.) चैत्र पूर्णिमा (इस दिन बैल नहीं नाथे जाते)।

अजात (वि.) बिना जाना हुआ; (क्रि. वि.) अनजान में।

अज्ञातवास (पुं.) छिपकर रहना।

अज्ञान (पुं.) बोध का अभाव; (वि.) मूर्ख।

अज्ञानी (वि.) मूर्ख।

अझा (स्त्री.) बकरी। **अजा** (हि.)

अट (स्त्री.) 1. गप, 2. शर्त; **~मारणा** 1. गप्प मारना, 2. शर्त लगाना।

अटक (स्त्री.) 1. रुकावट, 2. बाधा।

अटकणा (क्रि. अ.) 1. रुकना, 2. झगड़ा करना, 3. फँसना, 4. लटकना; (क्रि. स.) 1. रोकना, 2. बाधा डालना। **अटकना** (हि.)

अटकल (स्त्री.) 1. अनुमान, 2. कल्पना, 3. उपाय। **अटकल** (हि.)

अटकल पच्चू (स्त्री.) बे सिर पैर का अनुमान।

अटका (पुं.) 1. रुकावट, 2. चटखनी, 3. अर्गला; **~भेड़ना/लाणा** कुंडी, चटखनी आदि लगाना। **अटकाव** (हि.)

अटकाऊ (वि.) 1. बाधा डालने वाला, 2. लटकाने योग्य, 3. काम चलाऊ।

अटकाणा (क्रि. स.) 1. लटकाना, 2. रोकना, 3. किसी वस्तु को अन्य वस्तु में लगाना, 4. अड़ाना। **अटकाना** (हि.)

अटकाव (पुं.) दे. अटका।

अटखेड़ा (पुं.) हीर-राँझा के स्वाँग में वर्णित एक स्थान।

अटखेल (स्त्री.) दे. अटखेली

अटखेली (स्त्री.) विनोद, क्रीड़ा। **अठखेली** (हि.)

अटपटा (वि.) 1. बेतुका, 2. स्वाद रहित, 3. निराला।

अटरम सटरम (पुं.) बेमेल वस्तुएँ।

अटल (वि.) 1. जो न टले, स्थिर 2. अवश्यंभावी।

अटारा (पुं.) चौबारा, घर के ऊपर का कमरा।

अटारी (स्त्री.) अट्टालिका, घर के ऊपर का कमरा।

अटूट (पुं.) मज़बूत, दृढ़।

अटेरण (पुं.) (कुकड़ी के) सूत को लपेटने के लिए काम आने वाला लकड़ी का यंत्र। **अटेरन** (हि.)

अटेरणा (क्रि. स.) अट्टी बनाने के लिए सूत को अटेरन पर उतारना; (पुं.) दे. अटेरण। **अटेरना** (हि.)

अटोक (वि.) दे. अंटोक।

अट्टा बट्टा (पुं.) 1. लाभ-हानि, 2. लेन-देन; (अट्टे बट्टे) **~में जाणा** 1. हानि होना, 2. मुफ़्त में जाना, 3. नष्ट होना।

अट्टा सट्टा (पुं.) 1. लेन-देन, 2. वस्तु विनिमय, (दे. आँट्टा साँट्टा)।

अट्ठा (पुं.) 1. आठ का अंक, 2. आठ का पहाड़ा, 3. आठ का समूह।

अठंतर (वि.) सत्तर और आठ। **अठहत्तर** (हि.)

अठताली (वि.) अड़तालीस की संख्या। **अड़तालीस** (हि.)

अठन्नी (स्त्री.) पुराने आठ आने का सिक्का जो अब 50 पैसे के मूल्य का है।

अठपहरा (वि.) आठों पहर या दिन रात चलने वाला (कार्य)।

अठ मास्सा (वि.) आठवें महीने में उत्पन्न (बालक)। **अठमाँसा** (हि.)

अठ मास्सी (स्त्री.) आठ माशे का सुनहरी सिक्का, गिन्नी; (वि.) 1. आठवें महीने में उत्पन्न (लड़की), 2. आठ महीने में घटित होने वाली।
अठमासी (हि.)

अठवाड़ा (पुं.) 1. होली के आठ दिन बाद का समय, 2. आठ दिन का समय; **~पूजणा** होली के आठवें दिन देवी माता को पूजना, (दे. बास्योहड़ा)।

अठवारा (पुं.) आठ दिन का समय।

अठवारी (स्त्री.) 1. उपज का आठवाँ भाग, 2. आठ दिन का काल; (वि.) आठवें भाग का हकदार।

अठवालिया (पुं.) भूमि की उपज के आठवें भाग का भागीदार (इसका आठवाँ भाग खेत में मज़दूरी, रखवाली आदि के कारण बनता है)।

अठाई (वि.) अठाईस की संख्या।
अठाईस (हि.)

अठाणमें (वि) अठानवें की संख्या। **अठानवें** (हि.)

अठारा (वि.) अठारह की संख्या।
अठारह (हि.)

अठै (क्रि. वि.) यहाँ।

अठोत्तरी माला (स्त्री.) एक सौ आठ मनकों की माला। **अष्ठोत्तरी** (हि.)

अड़ंग-बड़ंग (पुं.) 1. व्यर्थ की वस्तु, 2. कूड़ा-करकट।

अड़ंगा (पुं.) 1. कूड़ा करवट, 2. बाधा; **~खड्या करणा** 1. रुकावट उत्पन्न करना, 2. काम में बाधा डालना।

अड़ंगी (स्त्री.) पेड़ों की पत्ती तोड़ने के लिए काम में लाई जाने वाली लंबी लकड़ी जिसमें लोहे की अर्धचंद्राकार छड़ लगी होती है; **~लाणा/ मारणा** 1. टाँग में टाँग अड़ा कर गिराना, 2. बाधा डालना।

अडंबर (पुं.) ऊपरी दिखावा। **आडंबर** (हि.)

अड़ (स्त्री.) 1. जिद, हट, 2. रुकावट; **पकड़णा/ लाणा** हठ करना।

अड़क[1] (स्त्री.) दे. अड़ाँस।

अड़क[2] (पुं.) 1. हरियाणा का प्राचीन नाम (कुरु जांगल), 2. उद्‌भिज।

अड़कै (क्रि. वि.) 1. सटकर, 2. निकट से–डाह्ली नें कती अड़कै काट दे; (वि.) अधिक–अड़कै बावला सै।

अड़गड़ा (पुं.) दे. अळगोड्डा।

अड़गड़ाट (पुं.) दौड़ने आदि से उत्पन्न शोर; **~ऊठणा** बहुत शोर होना।
अड़गड़ाहट (हि.)

अड़गीर (वि.) 1. अड़ियल, 2. जिद्दी।

अड़णा (क्रि. वि.) 1. किसी बात के लिए आग्रह करना, 2. रुकावट उत्पन्न करना, 3. भिड़ना, 4. पहेली बूझना।
अड़ना (हि.)

अड़बंध (पुं.) 1. कटिबंध, 2. धोती का फेंटा या लपेटा जो कमर पर बाँधा जाता है; **~की धोत्ती** फेंटा लगाकर बाँधी गई धोती।

अड़ब (वि.) हठी, अड़ियल।

अड़सठ तीरथ (पुं.) 1. गंगा, पुष्कर आदि प्रसिद्ध तीर्थ, 2. सिद्ध पुरुष, 3. शरीर

के विभिन्न अंगों में स्थित काल्पनिक तीर्थ। **अड़सठ तीर्थ** (हि.)

अड़सन पड़सन (स्त्री.) दे. अड़ंगा।

अड़ाँस (स्त्री.) रुकावट, बाधा। **अड़ास** (हि.)

अड़ा (पुं.) 1. दे. गितवाड़ा, 2. दे. घेर, 3. दे. अडाँस।

अड़ाणा (क्रि. स.) 1. रुकावट उत्पन्न करना, 2. अपनी बात आगे रखना, 3. अटकाना, 4. कहानी बूझना। **अड़ाना** (हि.)

अड़ाणी (स्त्री.) दे. छाता।

अड़ा बड़ा (पुं.) बालकों का एक खेल जिसमें वे अपना साथी चुनने या खिलाड़ी निकालने के लिए 'अड़ा बड़ा, नीम का डला, टीकड़ पाक्या रोज्जा टला' आदि जकड़ी बोलते हैं।

अडिग (वि.) दृढ़, न डिगने वाला।

अड़ियल (वि.) 1. जिद्दी, 2. चलते-चलते रुक जाने वाला (पशु); **~टट्टू** जिद्दी आदमी।

अड़ी (स्त्री.) जरूरत का समय।

अड़ी भीड़ (स्त्री.) 1. कष्ट का समय, 2. ज़रूरत का समय।

अड़ूंबी (स्त्री.) ऊढा (नव विवाहिता) की अनुचरी, नाइन या वह स्त्री जो विवाह के बाद वधू के साथ अंगरक्षिका या सहायिका के रूप में जाती है (अब यह प्रथा विरल हो गई है)।

अड़ूस्सा (पुं.) 1. धोती की अंटी या आँट जिसमें रुपये पैसे भी रख लिए जाते हैं, 2. एक औषधि, बाँस्सा; **अड़ूस्से में लाणा** पैसे आदि को अंटी में रखना।

अडैडै (स्त्री.) भैंस को रोकने के लिए या पास बुलाने के लिए प्रयुक्त ध्वनि।

अड़ै (अव्य.) 1. यहाँ, 2. इधर; **~ए** यहीं पर; **~नैं** इधर को-अड़ै नैं होले; **~सी** लगभग यहाँ, यहाँ पर।

अड़ोस पड़ोस 1. प्रतिवेश, आस पास का स्थान, 2. पास पड़ोस।

अड़ोस्सी पड़ोस्सी (पुं.) 1. पास पड़ोस का निवासी, 2. परिचित जन। **अड़ोसी पड़ोसी** (हि.)

अड्डा (पुं.) 1. वाहन ठहराने का स्थल, 2. करघा, कपड़ा आदि बुनने का लकड़ी आदि का यंत्र, 3. जंगली पशुओं के ठहरने का स्थान, 4. लोहार, कुम्हार आदि का कर्म स्थल, 5 टिकने की जगह, (दे. पड़ा)।

अड्डयाणा (क्रि. स.) 1. हथियाना, 2. काबू में करना, 3. बलात् कब्ज़ा करना।

अढकार (स्त्री.) डकार; **~नाँ लेणा** संपत्ति आदि ज़ब्त कर लेना और पता भी नहीं लगने देना। **डकार** (हि.)

अढकारना (क्रि. स.) 1. डकार लेना, 2. धन आदि हड़पना। **डकारना** (हि.)

अढाया (पुं.) पड़त की भूमि, गोचर भूमि।

अण[1] (स्त्री.) प्रण, प्रतिज्ञा; **~खींचणा/लेणा** प्रतिज्ञा लेना, प्रण करना; (उप.) बिना-अणचाह्याँ, अणसरती।

अण[2] (स्त्री.) अणि।

अणख (स्त्री.) गर्व, स्वाभिमान।

अणखला (वि.) गर्वीला।

अणगोड्डी (स्त्री.) 1. सन्तानहीन स्त्री, 2. स्त्री के लिए प्रयुक्त एक अपशब्द, निगोड़ी।

अणगोड्डया (पुं.) 1. जिसने गोद में पुत्र नहीं खिलाया हो, पुत्रहीन, 2. पुरुषों के लिए प्रयुक्त एक अपशब्द, 3. अनादर सूचक शब्द। **निगोड़ा** (हि.)

अणचर्चा (अव्य.) बिना चर्चा के।

अणजण (स्त्री.) एक घास।

अणजाण (पुं.) दे. अनजान।

अणत (पुं.) भुजा का आभूषण विशेष। दे. अनंत सूत्र।

अणद (वि.) 1. अनंत, 2. अपार;–सुख की घड़ी म्हारै अणद बधावा (लो. गी.)।

अणदी (स्त्री.) लोहे की चक्री (जो हल की फाल के पास लगाई जाती है) **~घड़ाणा** चक्रीनुमा यंत्र बनवाना–हे मेरी नणदी तेरी तोड़ घड़ा ल्यूँ अणदी (भाभी उपहास में अपनी ननद से कहती है कि क्यों न मैं तेरे शरीर की अणदी बनवा लूँ)।

अणदेख (क्रि. वि.) बिना देखे; (स्त्री.) 1. उपेक्षा, नासमझी; **~करणा** उपेक्षा करना।

अणदोस्सी (वि.) निर्दोष।

अण पिछाण (वि.) अनजान, अजनबी। **अनपहचान** (हि.)

अणफही (स्त्री.) 1. कठिनाई का समय, 2. आवश्यकता का समय, 3. लाचारी।

अण बस (वि.) बेकाबू, विवश।

अणबसी (स्त्री.) विवशता, बेबसी।

अण बिंधा (वि.) बिना बिंधा या बिना छिद्र का जैसे –अण बिंधा कान या नाक।

अण बूझ (क्रि. वि.) 1. बिना पूछे–अणबूझ जाइए, 2. बिना समझे, 3. भोलेपन में–अणबूझ में छोरे नैं कर दिया; **~साह्या** भडलिया नवमी, आखा तीज, होली, देवोत्थानी एकादशी के दिन होने वाला विवाह।

अणबोल (क्रि. वि.) बिना बोले–अणबोल चुराहे पै सराईं दे आ; (वि.) 1. चुप, 2. अचेत, 3. मौन; **~होणा** बोलने की शक्ति क्षीण होना। **अनबोल** (हि.)

अणब्याही (वि.) जिसका विवाह नहीं हुआ हो, कुँआरी।

अण भामता (वि.) जो रुचिकर न हो। **अनभाता** (हि.)

अणभोला (वि.) नासमझ। बनावटी भोला।

अणमीत्ता (वि.) 1. अमित, जिसकी मात्रा अधिक हो, 2. अगणित।

अणमेल (वि.) बेमेल।

अणसरत (स्त्री.) लाचारी–अणसरत में तेरै धोरै आया।

अणसुई (स्त्री.) जो गाभिन न हो।

अणसूच्चा (वि.) 1. अपवित्र 2. उच्छिष्ट।

अणसोच (वि.) निश्चिंत।

अणहोई (वि.) 1. जो पहले कभी न हुई हो, 2. जिसके होने की संभावना न हो, 3. असंभव, 4. अनोखी। **अनहोनी** (हि.)

अणहोणी (वि.) दे. अणहोई।

अणहोत (पुं.) 1. आपत्ति काल, 2. दरिद्रता या हीनता की अवस्था, 3. अभाव।

अणाणो (क्रि. स.) परेशान करना। (मेवा.)

अणी (स्त्री.) 1. किसी वस्तु का पतला सिरा, 2. पतली डंडी, 3. कील। **अणि** (हि.)

अणु (पुं.) छोटे से छोटा कण।

अतः (क्रि. वि.) इस वास्ते।

अत (वि.) अधिक; (स्त्री.) अंतिम सीमा **अति** (हि.)

अतणा (क्रि. अ.) मुकाबला करना। **अतना** (हि.)

अतर (पुं.) फूलों का सुगन्धित सार।

अतर फुलेल (पुं.) **इत्र फुलेल** (हि.)

अतरला दिन (पुं.) आने वाला या बीता हुआ चौथा दिन।

अतरसों (क्रि. वि.) दे. अतरला दिन।

अतरी (पुं.) 1. एक ब्राह्मण गोत्र, 2. अत्रि ऋृषि। **अत्रि** (हि.)

अतल (पुं.) सात पातालों में से एक।

अतलस[1] (पुं.) दे. तायल।

अतलस[2] (पुं.) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

अतलस मसरू (स्त्री.) सुंदर वस्त्र।

अति (वि.) अधिक, (दे. अत)।

अतिथि (पुं.) मेहमान।

अतिरिक्त (वि.) 1. सिवाय, 2. बचा हुआ।

अतिवाद (पुं.) 1. कठोर वचन, 2 शेखी।

अतिवृष्टि (स्त्री.) अत्यधिक वर्षा।

अतिशयोक्ति (स्त्री.) बढ़ा चढ़ाकर की गई बात।

अतिसार (पुं.) एक रोग जिसमें खाया हुआ पदार्थ पतले दस्त के रूप में निकल जाता है।

अती (स्त्री.) दे. अत।

अतीत (वि.) गत, बीता हुआ।

अतुल (वि.) 1. असीम, 2. जिसका तोल या अन्दाज़ न हो सके।

अतृप्त (वि.) 1. जो तृप्त न हो, 2. भूखा।

अतोल (वि.) 1. जिसका तोल नहीं किया गया हो, 2. जो तोला न जा सके; (पुं.) आकाश।

अत्तार (पुं.) इत्र बेचने वाला।

अत्यंत (वि.) बहुत अधिक।

अत्याचार (पुं.) अन्याय।

अत्याचारी (वि.) अन्यायी।

अथ (अव्य.) एक मांगलिक शब्द जिससे ग्रंथ आरंभ किया जाता है।

अथक (वि.) जो न थके; (क्रि. वि.) बिना थके।

अथर्ववेद (पुं.) दे. अथुर वेद.

अथवा (अव्य.) या।

अथुर बेद (पुं.) चार वेदों में से एक वेद। **अथर्ववेद** (हि.)

अदत (वि.) दे. ऊन्ना।

अदद (पुं.) 1. संख्या, 2. संख्या का चिह्न।

अदना (वि.) तुच्छ, क्षुद्र।

अदब (पुं.) शिष्टाचार।

अद बद कै (क्रि. वि.) 1. आवश्यक रूप से, 2. शर्त लगाकर, 3. अन्ततः, 4. हिर फिर कर।

अदरक (स्त्री.) अदरक की जड़ या पौधा जो मसाले में भी काम आता है।

अदल (वि.) 1. दे. अदल पिछाण, 2. दे. न्या।

अदल पिछाण (वि.) जिसे तुरंत पहचाना जा सके। **अदल पहचान** (हि.)

अदल बदल (पुं.) उलट पुलट।

अदा (वि.) बेबाक; (स्त्री.) 1. हाव-भाव, 2. ढंग।

अदालत (स्त्री.) न्यायालय।

अदावत (स्त्री.) दुश्मनी।

अदिति (स्त्री.) कश्यप की पत्नी जो देवताओं की माता है।

अदितिवन (पुं.) दे. अमीन।

अदिन (पुं.) दे. कुदिन।

अदीठ (पुं.) वह फुंसी जो शरीर के अंदर होने के कारण दिखाई न दे, अंदरूनी फोड़ा।

अदृश्य (वि.) लुप्त।

अदोस (वि.) दोष रहित, निर्दोष।
अदोष (हि.)

अद्धा (पुं.) 1. आधी धोती, 2. आधी बोतल, 3. बौना, 4. छोटी रेलगाड़ी; (वि.) आधा।

अद्‌भुत (वि.) अनोखा।

अद्वितीय (वि.) विलक्षण।

अद्वैत (पुं.) ब्रह्म।

अधंबर (पुं.) दे. अधबिचाळा।

अधः पतन (पुं.) अवनति, गिरावट।

अध (वि.) आधा। **आधा** (हि.)

अध कचरा (वि.) 1. अधूरा, 2. अकुशल।

अधकार (पुं.) अधिकार।

अध कुट्‌या (वि.) आधा या कम कुटा हुआ।

अध खिला (वि.) आधा खिला हुआ (फूल)।

अध छण्या (वि.) कम छना हुआ।

अध जमी (वि.) कम जमी हुई, जैसे–अध जमी दही।

अधड़ंग (पुं.) एक रोग, **अधरंग** (हि.)

अधन्ना (पुं.) वर्तमान तीन (नए) पैसे के मूल्य का, दो पुराने पैसे का एक सिक्का, एक आने का आधा भाग, एक पुराना सिक्का।

अधपी (स्त्री.) आधा पाव का बट्‌टा।
अधपई (वि.)

अध बिचाऴा (क्रि. वि.) 1. मध्य में, 2. बीच रास्ते में, 3. अधर में।

अध बिलोई (वि.) आधी बिलोई हुई (दही)।

अधम[1] (क्रि. वि.) बीच में, अधर में।

अधम[2] (वि.) पापी।

अधम बिचाळा (क्रि. वि.) 1. ठीक बीच में, 2. बीच मार्ग में।

अध मर्‌या (वि.) 1. अध मरा, 2. हताश।

अधमौत (स्त्री.) अकाल मृत्यु।

अधर (क्रि. वि.) 1. बीच में, 2. ऊपर–इसने अधर ठाले, 3. बे सहारे–बिचारा कती अधर खड़्या था; (पुं.) आकाश; **~ठाणा** 1. आकाश सिर पर उठाना, 2. ऊपर उठाना।

अधर दीद्दा (वि.) जिसका मन काम में न लगे।

अधर पधर (क्रि. वि.) बिना सहारे के–छोहरा आज अधर पधर खड़्या हो गया।

अधरम (पुं.) 1. धर्म के विरुद्ध काम, 2. बुरा काम, पाप कर्म, **अधर्म** (हि.)

अधाया (वि.) अतृप्त।

अध सेरा (पुं.) आधे सेर का बट्‌टा।

अधिक (वि.) ज्यादा।

अधिक मास (पुं.) दे. मल़ मास।

अधिकांश (पुं.) अधिक भाग; (वि.) बहुत; (क्रि. वि.) प्रायः।

अधिकार (पुं.) 1. स्वामित्व, 2. हक़, 3. प्राप्ति।

अधिकारी (पुं.) 1. स्वामी, 2. हक़दार, 3. अफ़सर।

अधिराज (पुं.) 1. स्वामी, 2. राजा।

अधीन (वि.) 1. आश्रित, 2. आज्ञाकारी, 3. लाचार।

अधीर (वि.) 1. बेचैन, 2. असंतोषी।

अधीश (पुं.) 1. स्वामी, 2. राजा।

अधूत (पुं.) 1. साधु, संन्यासी, योगी, 2. पाखंडी। **अवधूत** (हि.)

अधूरा (वि.) अपूर्ण।

अधेड़ (वि.) ढलती जवानी का।

अधेल्ला (पुं.) 1. आधा पैसा, 2. छोटे मूल्य का सिक्का–रे गऊ मात्ता रोवै खड़ी तबेल्ले में, अरै मत बेचै पापी एक अधेल्ले में (लो.गी.)। **अधेला** (हि.)

अधेल्ली (स्त्री.) 1. 'अधेले' का लघुता द्योतक रूप, 2. अठन्नी। **अधेली** (हि०)

अधोवस्त्र (पुं.) नीचे के अंगों में पहनने का कपड़ा, धोती आदि।

अधौन (पुं.) आधे मन का (20 सेर) का बट्टा।

अध्यक्ष (पुं.) सभापति।

अध्ययन (पुं.) पढ़ाई।

अध्यात्म (पुं.) आत्मा या परमात्मा से संबंधित ज्ञान।

अध्यापक (पुं.) शिक्षक।

अध्यापन (पुं.) पढ़ाने का कार्य।

अध्याय (पुं.) ग्रन्थ-विभाग।

अनंग (पुं.) कामदेव।

अनंत (वि.) असीम; (पुं.) 1. विष्णु, 2. बाहू का एक गहना, सूत का गंडा जिसे भादों शुदी चतुर्दशी के दिन बाहू में पहनते हैं।

अनंत चौदस (स्त्री.) भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी। **अनंत चतुर्दशी** (हि.)

अन[1] (पुं.) अनाज। **अन्न** (हि.)

अन[2] (उप.) बिना, रहित; यथा–अनकह्या।

अन कह्या (वि.) 1. जिसे नहीं कहा गया हो, 2. अकथ्य।

अनकूट (पुं.) खिचड़ी आदि का मिश्रित पकवान जो गोवर्धन (कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा) के दिन बनाया जाता है। **अन्नकूट** (हि.)

अनखदखाजा (वि.) अखाद्य।

अनगढ़ (वि.) बिना गढ़ा हुआ।

अन चाह्या (वि.) जिसे पाने की इच्छा नहीं की गई हो। **अनचाहा** (हि.)

अन जल दाणा (पुं.) 1. जीविका, 2. भोजन।

अन जल पाणी (पुं.) 1. दाना पानी, खान-पान, 2. जीवन, 3. भाग्य; **~ऊठणा** मृत्यु होना; **~छोड़णा** 1. निराहार रहना, 2. मृत्यु के निकट भोजन आदि को त्यागना।

अनजान (वि.) 1. अपरिचित, 2. नासमझ।

अन ढक्या (वि.) जिसे नहीं ढका गया हो।

अन तोल्या (वि.) जिसे नहीं तोला गया हो; **~बोझ** 1. आकाश, 2. छत।

अनन्नास (पुं.) एक फल।

अनन्य (वि.) एकनिष्ठ।

अनपढ़ (वि.) अपढ़, निरक्षर।

अनपैद (वि.) दुर्लभ।

अनबन (स्त्री.) खटपट, विरोध।

अनभामता (वि.) 1. जो खाने में अच्छा नहीं लगे, 2. अरुचिकर। **अनभाता** (हि.)

अनमन (वि.) उदास।

अनमेल (वि.) बेमेल।

अनमोल (वि.) अमूल्य।

अनमोल्ली (वि.) अनमोल।

अनरथ (पुं.) 1. पाप, 2. अन्याय–इसा अनरथ हमने ना देख्या था। **अनर्थ** (हि.)

अनरीत (स्त्री.) अनीति।

अनवट (पुं.) पैरों में पहनने का एक छल्ला।

अनशन (पुं.) उपवास।

अनसमझ (वि.) नासमझ।
अनहट (स्त्री.) दे. अनवट।
अनाज (पुं.) दे. नाज।
अनाड़ी (वि.) 1. अकुशल, 2. मूर्ख।
अनाड़ू (पुं.) पशु की गर्दन या स्कंध; **~होणा** जूए आदि के कारण बैल की गर्दन पर विकार उत्पन्न होना, कँधिया जाना।
अनाथ (वि.) यतीम।
अनाथालय (पुं.) अनाथाश्रम।
अनादर (पुं.) निरादर।
अनादि (वि.) जिसका आरंभ न हो।
अनाप शनाप (पुं.) अंड बंड।
अनार (पुं.) एक फल।
अनासुरती (क्रि. वि.) बिना ध्यान लगाए।
अनीत (स्त्री.) 1. अन्याय, 2. पाप। **अनीति** (हि.)
अनुकूल (वि.) पक्ष में रहने वाला।
अनुमान (पुं.) दे. उनमान।
अनुसार (वि.) अनुकूल।
अनुहार (वि.) दे. उणिहार।
अनूठा (वि.) अनोखा।
अनूप (वि.) सुन्दर।
अनृत (पुं.) झूठ।
अनेरा (पुं.) वह अनुपयोगी पशु जिसे रस्सा मुक्त कर दिया हो। दे. जेवड़ा खोलणा।
अनेरिया (वि.) दे. अनेरा।
अनोखा (वि.) निराला।
अन्न (पुं.) दे. अन[1] ।
अन्नड़ (वि.) अनाड़ी।
अन्नदाता (पुं.) 1. अन्न दान करने वाला, 2. स्वामी, मालिक।
अन्नपूर्णा (स्त्री.) 1. अन्न की अधिष्ठात्री देवी, 2. दुर्गा का एक रूप।
अन्नप्राशन (पुं.) बच्चों को पहले पहल अन्न खिलाने का एक संस्कार।
अन्नैं (सर्व.) 1. इसने, 2. इनको।
अन्यथा (वि.) 1. उल्टा 2. झूठ।
अन्याई (पुं.) 1. अत्याचारी, 2. पापी, 3. अनुचित न्याय करने वाला। **अन्यायी** (हि.) **अन्याय** (हि.)
अन्याण (स्त्री.) अन्यायी महिला।
अन्याव (पुं.) बे इंसाफ़ी, अंधेर।
अपंग (वि.) 1. अंगहीन, 2. अशक्त।
अप अपणा (सर्व.) अपना अपना। उदा. अप अपणै घर जाओ।
अपघाट (स्त्री.) 1. धोखा, 2. गहरी चोट। **अपघात** (हि.)
अपच (स्त्री.) अजीर्ण।
अपजस (पुं.) कलंक, लांछन। **अपयश** (हि.)
अपड़णा (क्रि. स.) 1. थामना, 2. हथियाना, 3. ताड़ना, भाँपना; (क्रि. अ.) 1. चिपकना, 2. खींचातानी करना। **पकड़ना** (हि.)
अपढ (वि.) 1. मूर्ख, 2. निरक्षर। **अनपढ़** (हि.)
अपढाल़ (स्त्री.) दे. कुढाल़।
अपणा (सर्व.) स्वयं का। **अपना** (हि.)
अपणी (सर्व.) स्वयं की; **~आई** 1. आपत्ति काल, 2. मृत्यु का समय। **अपनी** (हि.)
अपणै (सर्व.) हमारे; **~धोरै** अपने पास, हमारे पास। **अपने** (हि.)
अपनाणा (क्रि. स.) 1. अपना बनाना, 2. अपने अधिकार में करना। **अपनाना** (हि.)
अपनापन (पुं.) आत्मीयता।

अपमान (पुं.) बेइज्जती, अनादर।

अपर (अव्य.) परंतु, किन्तु—अपर बात न्यूँ सै।

अपरबल (वि.) निरंकुश।

अपराध (पुं.) 1. दोष, 2. भूल।

अपराधी (वि.) दोषी।

अपलक (क्रि. वि.) बिना पलक झपकाए।

अपवित्र (वि.) अशुद्ध, जो पवित्र न हो।

अपशकुन (पुं.) बुरा शकुन।

अपशब्द (पुं.) गाली।

अपसोच (पुं.) 1. अनुताप, पछतावा, 2. दु:ख। **अफ़सोस** (हि.)

अपस्मार (पुं.) मिरगी।

अपहरण (पुं.) हरण करने की क्रिया।

अपात्र (वि.) 1. कुपात्र, 2. अयोग्य।

अपान (पुं.) 1. एक वायु, 2. दूषित वायु।

अपार (वि.) जिसका पार न हो।

अपाहिज (वि.) विकलांग।

अपील (स्त्री.) विचारार्थ प्रार्थना।

अपूर्ण (वि.) अधूरा

अप्सरा (स्त्री.) 1. परी, 2. सुन्दर स्त्री।

अफलातून (पुं.) 1. चतुर व्यक्ति (व्यंग अर्थ में), 2. यूनान का एक संत, प्लैटो; ~**बणणा** समझदारी जतलाना।

अफलातून्नी (स्त्री.) समझदारी। **अफलातूनी** (हि.)

अफसर (पुं.) अफ़सर, बड़ा अधिकारी।

अफ़सोस (पुं.) दे. अपसोच।

अफारा (पुं.) उदर का एक रोग जिसमें पेट फूल जाता है, (दे. उफारा)।

अफ़ीम (स्त्री.) दे. फ़ीम।

अब (क्रि. वि.) दे. इब।

अबछल (वि.) अविचल।

अबर (पुं.) बादल; ~**छ्याणा/होणा** आकाश में बादल आना। **अभ्र** (हि.)

अबरक (पुं.) एक धातु विशेष।

अबरा (पुं.) रजाई आदि का खोल।

अबरी (स्त्री.) जिल्दसाजी का कागज़।

अबला (स्त्री.) महिला।

अबाबील (स्त्री.) एक पक्षी।

अबीर (पुं.) गुलाल।

अबूझ (वि.) दे. अणबूझ।

अबे (अव्य.) 1. अरे, 2. अपमानजनक संबोधन।

अबेर (स्त्री.) देरी।

अबेर सबेर (स्त्री.) 1. देर सवेर, आगे पीछे, 2. समय की पाबंदी के बिना।

अबोध (वि.) 1. नादान, 2. मूर्ख।

अबोल (वि.) दे. अणबोल़।

अब्बा[1] (पुं.) पिता।

अब्बा[2] (स्त्री.) कुट्टी के बाद पुन: होने वाली दोस्ती। दे. कुट्टी।

अभक्ष्य (वि.) दे. अभख।

अभख (वि.) न खाने योग्य। **अभक्ष्य** (हि.)

अभद्र (वि.) बेहूदा।

अभमन्नू (पुं.) चक्रव्यूह तोड़ने वाला, अर्जुन का पुत्र (कुरुक्षेत्र के निकट 'अमीन' नामक गाँव इन्हीं के नाम पर बताया जाता है।) **अभिमन्यु** (हि)

अभय (वि.) निर्भय।

अभयदान (पुं.) भय से बचाने का वचन देना।

अभाव (पुं.) कमी।

अभिनंदन (पुं.) स्वागत।

अभिन्न (वि.) जो भिन्न न हो।

अभिप्राय (पुं.) आशय।

अभिभावक (वि.) देख-रेख करने वाला।

अभिमन्यु (पुं.) दे. अभमन्नू।

अभिमान (पुं.) गर्व, घमंड।

अभिमानी (वि.) घमंडी।

अभियान (पुं.) चढ़ाई, धावा।

अभियुक्त (वि.) मुलज़िम।

अभियोग (पुं.) मुक़दमा।

अभिलाषा (स्त्री.) इच्छा, कामना, चाह।

अभिलाषी (वि.) इच्छा करने वाला।

अभिवादन (पुं.) वंदना।

अभिव्यक्ति (स्त्री.) व्यक्त करने की क्रिया।

अभिशाप (पुं.) शाप।

अभिषेक (पुं.) राजतिलक होने की क्रिया।

अभी (क्रि. वि.) दे. इब्बै।

अभूतपूर्व (वि.) जो पहले न हुआ हो।

अभेद (पुं.) अभिन्नता।

अभ्यस्त (वि.) जिसका अभ्यास किया गया हो, 2. कुशल।

अभ्यागत (पुं.) अतिथि।

अभ्यास (पुं.) आदत, बान।

अभ्र (पुं.) दे. अबर।

अभ्रक (पुं.) दे. अबरक।

अमंगल (पुं.) अशुभ।

अम.अल.ए. (पुं.) एम.एल.ए., विधायक।

अमचूर (पुं.) सूखे हुए कच्चे आम का चूरा।

अमन (पुं.) शान्ति।

अमर (वि.) जो न मरे; (पुं.) देवता,

अमरपद (पुं.) मुक्ति।

अमरपुरी (पुं.) देवताओं का नगर, स्वर्ग।

अमरबेल (स्त्री.) 1. एक पीली लता जो पेड़ों पर लटकती है और जिसमें जड़ और पत्तियाँ नहीं होतीं, 2. संतति-परंपरा।
अंबर बेलि (हि.)

अमरस (पुं.) आम का रस।

अमराई (स्त्री.) आम का बौर।

अमरित (पुं.) 1. वह पेय जिसे पीकर अमर हो जाते हैं, 2. बहुत मीठा पदार्थ; (वि.) अमृत-सा मीठा।
अमृत (हि.)

अमरूद (पुं.) 1. एक फल, 2. इस फल का पौधा।

अमल[1] (पुं.) नशा।

अमल[2] (पुं.) प्रयोग।

अमला (पुं.) सरकारी सहयोगी कर्मचारी।

अमली (पुं.) नशेबाज़।

अमानी (स्त्री.) दे. ध्याड़ी।

अमावस (स्त्री.) दे. मावस।

अमिट (वि.) जो न मिटे।

अमित (वि.) बेहद, असीम।

अमी (पुं.) दे. इमरत।

अमीन (पुं.) ज़मीन की कुर्की आदि कराने वाला एक अधिकारी।

अमीर (वि.) धनी।

अमीरस (पुं.) अमृत रस। उदा.–लखमीचंद गुरु शिक्षा बिन नहीं अमीरस घुल़ता।

अमीरी (स्त्री.) दौलतमन्दी।

अमुक (सर्व.) फलाँ।

अमूल्य (वि.) अनमोल।

अमृत (पुं.) दे. अमरित।

अमृतधारा (स्त्री.) एक प्रसिद्ध औषधि।

अमृतबान (पुं.) चीनी मिट्टी का एक बर्तन।

अमोघ (वि.) अचूक।

अमोल (वि.) बहुमूल्य।

अमोलक (वि.) दे. अमोल।

अमोह (वि.) बड़ी (1) उदा. ले ली फौज अमोह।

अम्माँ (स्त्री.) माँ।

अम्ल (पुं.) 1. खटाई, 2. तेज़ाब।

अम्हौरी (स्त्री.) घमौरी, (दे. घाम)।

अयन (पुं.) राशि चक्र का आधा।

अयाल (पुं.) सटा।

अयोग (पुं.) बुरा योग।

अरंड (पुं.) 1. एरंड का पौधा, 2. इस पौधे का बीज। **एरंड** (हि.)

अरंड्डी (स्त्री.) 1. एरंड के बीज, 2. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। **एरंडी** (हि.)

अरंतुक (पुं.) पिपली (कुरुक्षेत्र) के निकट स्थित एक यक्ष। तुल. रंतुक।

अर[1] (अव्य.) 1. तथा, और–घीस्सा अर धाप्पो न्यूँ बोल्ले, 2. संबोधन सूचक शब्द–अर! न्यूँ कर, 3 अरे–अर, के तै मानज्या ना पिटज्याघा, 4. यदि–अर वो ना आया तै मन्नैं जाणा पड़ैगा; **~ज** यदि, और जो; **~बिर** अरी सहेली–अर बिर बात न्यूँ सै।

अर[2] (स्त्री.) अरा–पहिये की अर पाट गी।

अरक (पुं.) रस।

अरगला (स्त्री.) दे. अरली।

अरघ (पुं.) धार्मिक कृत्य के समय चाँद, सूर्य या तारे को अर्पित जल; **~देणा** चाँद, सूर्य या तारे को जल देना। **अर्घ** (हि.)

अरछो (अव्य.) 1. दे. ही ओ, 2. दे. उरही।

अरज (स्त्री.) प्रार्थना; (पुं.) चौड़ाई। **अर्ज़** (हि.)

अरजन (पुं.) 1. बाणधारी अर्जुन, 2. गूगा पीर का भाई। **अर्जुन** (हि.)

अरजन सरजन (पुं.) अरजन और सरजन (ये गूगा पीर के मौसेरे भाई कहे जाते हैं, जिन्होंने गूगा पीर को मारने का षड्यंत्र रचा था किंतु गूगा पीर ने इन्हें मार दिया। एक धारणा के अनुसार इनके वध का कारण गूगा पीर की पत्नी बाछल से छेड़छाड़ था)।

अरजी (स्त्री.) प्रार्थना पत्र। **अर्जी** (हि.)

अरड़[1] (वि.) 1. मूर्ख, 2. पका हुआ, 3. कठोर; (स्त्री.) भैंस के रंभाने या रेंकने की ध्वनि।

अरड़[2] (पुं.) दे. अरड़ा।

अरड़ बरड़ (पुं.) इंग्लैंड के बादशाहों की एक उपाधि। **एडवर्ड** (हि.)

अरड़ा (पुं.) कटी हुई पूलियों को इकट्ठा करके गोल या चौकोर आदि आकार में लगाया गया ढेर, (दे. छ्योर); **~पाड़णा** पूलियों के ढेर को अलग-अलग करना; **~लाणा** पूलियों का ढेर क्रम से लगाना।

अरड़ाट्टा (पुं.) 1. अरड़-अरड़ की ध्वनि, 2. जोर जोर से रोने की ध्वनि; **~ठाणा** 1. भैंस का जोर जोर से रेंकना, 2. किसी वस्तु को भयंकर ध्वनि के साथ तोड़ना। **अरराटा** (हि.)

अरड़ाणा (क्रि. अ.) 1. भैंस का रेंकना, 2. जोर-जोर से रोना, 3. शोर मचाना। **अरराना** (हि.)

अरणा (पुं.) दे. आरणा।

अरणे (पुं.) पहिये की छड़ें। **अराएँ** (हि.)

अरथ (पुं.) एक शाही वाहन। **रथ** (हि.)

अरथ मँझोल्ली (स्त्री.) रथ, (1. दे. बहल, 2. दे. मँझोल्ली)।

अरथी (स्त्री.) सीढ़ी के आकार का ढाँचा जिस पर मुर्दे को रखकर श्मशान ले जाते हैं।

अरदली (पुं.) वह चपड़ासी जो दरवाजे पर रहता है।

अरदास (स्त्री.) निवेदन के साथ भेंट।

अरधशरीरी (स्त्री.) अर्धांगिनी।

अरपणा (क्रि. स.) 1. भेंट करना, 2. देवता को भेंट चढ़ाना, 3. सौंपना। **अरपना** (हि.)

अरब[1] (पुं.) सौ करोड़।

अरब[2] (पुं.) 1. एक देश, 2. इस देश का घोड़ा।

अरबारी (पुं.) दे. रहबारी।

अरबिस्तान (पुं.) अरब देश।

अररै (अव्य.) आश्चर्य द्योतक ध्वनि। **अरे** (हि.)

अरल (स्त्री.) बड़ी अर्गला।

अरली (स्त्री.) लोहे या लकड़ी की मोटी और लंबी छड़ जो दरवाजे के अंदर की ओर होती है, इसका भाग दीवार के अंदर होता है किन्तु दरवाजा बन्द करते समय इसे खींचकर दरवाजे के पीछे लगा दिया जाता है; **~भेड़णा/मूँदणा/लाणा** अर्गला लगाना या बंद करना। **अर्गला** (हि.)

अरवी (स्त्री.) एक तरकारी विशेष, घुइयाँ।

अरस (पुं.) 1. सब आसमानों से ऊपर का स्थान, 2. स्वर्ग–के कोए हूर अरस तैं उतरी।

अरसा (क्रि.वि.) समय।

अरहट (पुं.) दे. रहँट।

अरहर (स्त्री.) दे. **हरड़**[1]।

अराई (स्त्री.) दे. कामड़ी।

अराज (वि.) बिना राजा का; (पुं.) अराजकता।

अरारोट (पुं.) एक पौधा जिसके कंद का आटा खाने आदि के भी काम आता है।

अरी (अव्य.) स्त्रियों के लिए एक संबोधन।

अरुंधती (स्त्री.) वसिष्ठ मुनि की पत्नी।

अरुण (पुं.) सूर्य; (वि.) लाल।

अरूप (वि.) रूप रहित।

अरे (अव्य.) दे. अरै।

अरै (अव्य.) 1. संबोधन सूचक शब्द, 2. आश्चर्य सूचक शब्द। **अरे** (हि.)

अरौ (स्त्री.) दे. कामची।

अर्घ्य (पुं.) दे. अरघ।

अर्जुन (पुं.) दे. अरजन।

अर्थ (पुं.) 1. शब्द का अभिप्राय, 2. मतलब।

अर्श (पुं.) स्वर्ग।

अर्जुल्ला (स्त्री.) भूमि। उदा. अर्जुल्ला पाटी जब लीला (घोड़ा) सुधाँ समाया।

अलंकार (पुं.) आभूषण।

अलंग (स्त्री.) दे. चरणी, तुल. परमा।

अल़ (पुं.) फसल को लगने वाला एक रोग।

अलकत (स्त्री.) खलखत का विलोम। दे. खलखत।

अलकापुरी (स्त्री.) कुबेर की नगरी।

अलख (वि.) 1. ईश्वर का एक विशेषण, 2. न दीखने वाला; **~जगाणा** 1. भगवान का स्मरण करना या कराना, 2. घर-घर घूमना, 3. भीख माँगना; **~जागणा** अलक्ष्य भगवान प्रकट होना। **अलक्ष्य** (हि.)

अलख जोत (स्त्री.) हृदय में प्रकाशित होने वाली ईश्वर-ज्योति। **अलक्ष्य ज्योति** (हि.)

अलख धारी (पुं.) 1. गोरख पंथी साधु जो 'अलख' 'अलख' कह कर भीख माँगते हैं, 2. जोगी।

अलख नाम्मी (पुं.) दे. अलखधारी। **अलखनामी** (हि.)

अलख निरंजन (पुं.) 1. गोरख पंथी साधुओं द्वारा भीख माँगते समय उच्चरित शब्द, 2. भगवान का एक नाम।

अलखस (वि.) 1. असली 2. खास।

अलखेड़ा (पुं.) दे. अलसेहड़ा।

अलग (वि.) पृथक्।

अलगरज (वि.) बेपरवाह।

अळगोज्जा (पुं.) एक प्रकार की बाँसुरी। **अलगोजा** (हि.)

अळगोड्डा (पुं.) भागने वाले पशु (हर्रा) को रोकने के लिए प्रयुक्त गले की रस्सी जिसे घुटने के साथ बाँध दिया जाता है; **~लाणा** पशु के गले की रस्सी को घुटने के साथ बाँधना (ताकि वह भाग न सके)।

अळझ (स्त्री.) 1. रुकावट, 2. समस्या, बाधा। **उलझन** (हि.)

अळझ पळझ (पुं.) उलझने की क्रिया; (वि.) बुरी तरह फँसा हुआ।

अळझाऊ (वि.) 1. उलझाने वाला, अवरोध उत्पन्न करने वाला, 2. फाँसने वाला।

अळझेड़ा (पुं.) 1. कठिनाई, 2. बाधा, 3. झगड़ा, 4. खेत की बाड़ आदि की रुकावट, 5. 'सुलझेड़ा' का विलोम।

अळझेड़िया/अलझेड़ी (वि.) 1. झगड़ा मोल लेने वाला, 2. नासमझ।

अलडाणा (क्रि. अ.) दे. अरड़ाणा।

अळपणा (क्रि. स.) दे. गुलपणा।

अळफ़ी (स्त्री.) फ़क़ीरों द्वारा धारण किया जाने वाला बिना बाँह का लंबा-सा कुर्ता।

अलबत (अव्य.) 1. निस्संदेह, 2. अव्वल तो–अलबत मैं तै आवै नाँ। **अल्बत्ता** (हि.)

अलबत्ता (अव्य.) दे. अलबत।

अळबाद्धी (वि.) शरारती, उपद्रवी।

अळबाध (स्त्री.) शरारत।

अळबेध्धा (वि.) 1. मोहित, 2. पागल, 3. निराला, 4. छैला। **अलबेला** (हि.)

अळभेड्डा (पुं.) 1. आवृत्त करने का भाव, 2. लपेटने की क्रिया, 3. लपेट, 4. जकड़न, 5. रस्सी का बट।

अलमस्त (वि.) 1. बेफ़िक्र, 2. लापरवाह।

अलमारी/अलबारी (स्त्री.) 1. दीवार में लकड़ी या पत्थर आदि लगाकर सामान रखने के लिए बनाया गया ख़ानेदार स्थान, 2. लकड़ी या लोहे से बनाया गया ख़ानेदार संदूक जो ऊपर की बजाय सामने से खुलता है।

अलल (पुं.) जवान बछेरा।

अललटप्पू (वि.) अटकल पच्चू।

अललपंख (पुं.) (?) उदा.–अललपंख के ओट करे तैं तेज सूरज का घटे नहीं (लचं)।

अलवरी (स्त्री.) मेवाती की उप बोली।

अलवाड़ी (वि.) चंचला।

अलवान (पुं.) वस्त्र।

अलसंड (पुं.) एक पौधा।

अलसाणा (क्रि. अ.) आलस्य अनुभव करना। **अलसाना** (हि.)

अल़सी (स्त्री.) 1. एक पौधा जिसके बीजों का तेल निकाला जाता है। 2. इस पौधे का बीज। **अलसी** (हि.)

अल़सेट (पुं.) व्यर्थ का कूड़ा करकट; (स्त्री.) 1. अड़चन, 2. विघ्न, 3. देरी।

अल़सेटिया (वि.) 1. झगड़ालू, 2. अड़चन डालने वाला।

अल़सेहड़ा/अल़सेढा (पुं.) तिनके-काँटे आदि का ढेर, 2. बाधा, रुकावट, झंझट।

अल़सेहड़िया/अल़सेहड़ी (वि.) 1. झगड़ालू, 2. बाधा उत्पन्न करने वाला।

अल़ाई (स्त्री.) 1. घमौरी, गर्मी के कारण शरीर पर निकलने वाली बहुत छोटी फुंसियाँ, (दे. घाम ऊप्पड़णा), झाँई।

अलाचारी (स्त्री.) लाचारी।

अलान (स्त्री.) दीवार, बिटोड़ा या छ्योर को गिरने से बचाने के लिए उनके साथ लगाई गई बल्ली।

अलानिया (क्रि. वि.) खुले आम।

अलापना (पु.) 1. गाने में तान लगाना, 2. गाना।

अला बला (स्त्री.) 1. आपत्ति, 2. भूत-प्रेत, 3 उल्टा सीधा भोजन, 4. लड़ाई-झगड़ा। **बला अतिबला** (हि.)

अलामत (स्त्री.) चिह्न, पहचान।

अलाव (पुं.) दे. भूजड़ी।

अलावा (क्रि. वि.) दे. इलावा।

अलिहा (स्त्री.) 1. बंजर भूमि, 2. कठिनाई से साफ किया जाने वाला अन्न।

अल़ी जल़ी (वि.) 1. जली कटी, 2. चुभने वाली (बात); **~कहणा** 1. व्यंग्य कसना, 2. चिढ़ाना, 3. खरी-खोटी सुनाना, 4. अपमान करना।

अलीफ़ (पुं.) उर्दू वर्णमाला का पहला अक्षर; **~भी नाँ आणा** 1. अनपढ़ रहना, 2. मूर्ख रहना। **अलिफ़** (हि.)

अलीबकस (पुं.) (1854-1899) रेवाड़ी क्षेत्र का एक स्वाँगी।

अली बक्श (पुं.) मेवाती (मुंडावर निवासी) के लोकनाट्यकार कवि (समय-सन् 1850 के आस-पास)

अलूणा (वि.) 1. बिना नमक का, कम नमक का, 2. फीका, **अलोना** (हि.)

अलूणी (वि.) बिना नमक की, फीकी। **अलूनी** (हि.)

अलूणी सलूणी (वि.) 1. स्वाद रहित, 2. रूखी-सूखी। **अलोनी सलोनी** (हि.)

अलेख (पुं.) अलिखित लेख।

अलेट (वि.) दे. अलेल।

अलेल (वि.) 1. किलोल करने वाली, 2. अछूती।

अलेल बछेरी (स्त्री.) जिस घोड़ी पर किसी ने सवारी न की हो।

अलोना (वि.) दे. अलूणा।

अलोप (वि.) अदृश्य।

अल्ल (पुं.) उपगोत्र, वंश, शाखा।

अल्लम-सल्लम (वि.) 1. मिला जुला (भोजन), 2. अनाप शनाप (भोजन), 3. सालन, (दे. आग माट्टी)।

अल्ला पल्ला (पुं.) ओढ़नी आदि का किनारा।

अल्ला (पुं.) ईश्वर, खुदा। **अल्लाह** (हि.)

अल्ल्हड़ (वि.) 1. गँवार, 2. मनमौजी, 3. मस्त, 4. बेपरवाह, 5. अव्यावहारिक। **अल्हड़** (हि.)

अल्ल्हे (अव्य.) पश्चात्ताप द्योतक शब्द-- अल्ल्हे भइ, दूध खिंडग्या।

अल्ल्हैत (पुं.) आल्हा गाने वाला।

अवगुण (पुं.) दे. ओग्गण।
अवटाणा (क्रि. स.) दूध आदि को उबालना। **औटाना** (हि.)
अवतार (पुं.) दे. ओतार।
अवतारी (वि.) 1. अवतार लेने वाला, 2. उपद्रवी।
अवध (पुं.) दे. अजुध्या।
अवधी (स्त्री.) 1. सीमा, 2. अन्तिम काल, 3. अवधी भाषा। **अवधि** (हि.)
अवरोध (पुं.) रुकावट।
अवसर (पुं.) दे. ओसर।
अवस्था (स्त्री.) 1. हालत, 2. आयु।
अवहेलना (स्त्री.) अवज्ञा।
अवा (पुं.) दे. आवा।
अवाई (स्त्री.) 1. आना, आगमन, 2. गहरी जुताई।
अवाज (स्त्री.) 1. ध्वनि, 2. बोली, 3. पुकार। **आवाज़** (हि.)
अवार (स्त्री.) अबेर, देरी; **~हुयाँ सी** 1. देरी से, 2. सूर्य छिपने के बाद–बटेऊ अवार हुयाँ पोह्च्चा।
अविकारी (वि.) विकार रहित।
अविगत (वि.) जो जाना न जा सके।
अविद्या (स्त्री.) अज्ञान।
अविनाशी (वि.) 1. जिसका नाश न हो, 2. अक्षय।
अशरफ़ी (स्त्री.) दे. असरफ़ी।
अशरीरी (वि.) बिना शरीर का।
अशांति (स्त्री.) शांति का अभाव।
अशुद्ध (वि.) दे. असुध।
अशुभ (पुं.) जो शुभ न हो।
अशोक वाटिका (स्त्री.) अशोक वृक्ष की रावण की प्रसिद्ध बगीची।
अश्रु (पुं.) आँसू।
अश्वत्थामा (पुं.) द्रोणाचार्य के पुत्र।
अश्वपति (पुं.) सती सावित्री के पिता।
अश्वमेध (पुं.) एक प्रकार का यज्ञ।
अश्विनी (स्त्री.) एक नक्षत्र।
अश्विनी कुमार (पुं.) देवताओं के वैद्य।
अष्टधातु (स्त्री.) आठ धातुओं का सम्मिश्रण।
अष्टमी (स्त्री.) दे. आठैंह्।
अष्टाध्यायी (स्त्री.) कुरुक्षेत्र में रचित पाणिनी की प्रसिद्ध व्याकरण रचना।
असंख (वि.) जिनकी गिनती न हो सके। **असंख्य** (हि.)
असंगत (वि.) बेमेल।
असत (वि.) 1. मिथ्या, 2. अस्तित्व रहित।
असनाई (स्त्री.) रिश्तेदारी।
असनान (पुं.) 1. नहाना, 2. गंगा आदि तीर्थ में स्नान। **स्नान** (हि.)
असनाव (स्त्री.) दे. असनाई।
असफल (वि.) नाकामयाब।
असमंजस (पुं.) अनिश्चय।
असमर्थ (वि.) सामर्थ्यहीन।
असमान (वि.) जो समान न हो।
असमानी (वि.) आसमानी।
असर (पुं.) प्रभाव।
असरफी (स्त्री.) सोने का सिक्का विशेष। **अशर्फ़ी** (हि.)
असल (वि.) 1. असली, 2. खरा, 3. बिना मिलावट का; (पुं.) मूलधन; **~का जाम** अपने ही पिता की संतान।
असलियत (स्त्री.) वास्तविकता।
असली (वि.) 1. खरा, 2. शुद्ध।
असवार (पुं.) अश्वारोही। **सवार** (हि.)

असाड्ढी (स्त्री.) आषाढ़ में बोई जाने वाली फसल। **आसाढ़ी** (हि.)

असाध (वि.) 1. जिसका इलाज न हो सके, 2. जिसका उपाय न निकल सके। **असाध्य** (हि.)

असाम्मी (स्त्री.) 1. ग्राहक, 2. देनदार। **असामी** (हि.)

असीम (वि.) सीमा रहित।

असीस (स्त्री.) आशीर्वाद। **आशिष** (हि.)

असुध (वि.) 1. अपवित्र, 2. खोटा, मिलावटी। **अशुद्ध** (हि.)

असूल (पुं.) सिद्धांत। **उसूल** (हि.)

अस्कूल (पुं.) 1. विद्यालय जहाँ अंग्रेज़ी शिक्षा दी जाती हो, 2. विद्यालय। **स्कूल** (हि.)

अस्टमीं (स्त्री.) दे. आठैंह।

अस्टा[1] (वि.) 1. जटिल, 2. कठिन।

अस्टा[2] (पुं.) रेखाएँ खींचकर पासों से खेला जाने वाला एक खेल विशेष।

अस्टाम (पुं.) स्टैंड, घोड़े-तांगे आदि वाहन खड़े करने का मुख्य स्थान।

अस्टी (वि.) 1. अस्पष्ट, 2. जटिल–घणी अस्टी बात बूझ ली।

अस्त (वि.) 1. छिपा हुआ, 2. नष्ट; (पुं.) लोप।

अस्तर (पुं.) दे. अबरा।

अस्तल (पुं.) 1. कनफाड़े साधुओं के रहने का स्थान, 2. साधुओं के रहने का स्थान।

अस्तलिया (पुं.) अस्थल बोहर (रोहतक के निकट) का मोड्डा या साधु।

अस्थल (पुं.) दे. अस्तल।

अस्थान (पुं.) स्थान, जगह।

अस्ना (स्त्री.) दे. असनाई।

अस्थि (स्त्री.) हड्डी।

अस्थिर (वि.) जो स्थिर न हो।

अस्पताल (पुं.) दे. हस्पताल।

अहंकार (पुं.) घमंड।

अहः (अव्य.) आश्चर्य या खेदसूचक शब्द।

अह (अव्य.) दे. आहः।

अहड़ा (वि.) 1. झगड़ालू, 2. कठिन, 3. जो काबू में नहीं आ सके–घणा अहड़ा बुलह्द सै, 4. जिसके स्वभाव या चरित्र को शीघ्र न समझा जा सके; **~कहणा/बोलणा** कटु वचन बोलना।

अहड़ी (स्त्री.) 1. विचित्र व्यवहार वाली स्त्री, 2. जटिल समस्या, 3. अनुचित वाणी–घणी अहड़ी कह दी।

अहद (पुं.) प्रतिज्ञा।

अहदी (वि.) दे. अहधी.

अहधण (स्त्री.) आलसी स्त्री.

अहधी (वि.) आलसी।

अहनक (पुं.) चश्मा। **ऐनक** (हि.)

अहमता (स्त्री.) अहंकार। उदा.–अहमता ममता जूए की दो डांडी। (लचं.)।

अहमदबक्श (पुं.) (1850-) थानेसर का एक स्वाँगी जिसने लोकभाषा में रामायण रची।

अहरण (स्त्री.) 1. लुहार का एक औजार जिस पर रखकर वह लोहा पीटता है, 2. लुहार की वह भट्ठी जिसमें वह लोहा तपाता है। **अहरन** (हि.)

अहरवाल (पुं.) दे. अग्गरवाल।

अहरा (वि.) टेढ़ा

अहरा पहरा (वि.) टेढ़ा-मेढ़ा, तुल. आँक्का-बाँक्का।

अहरावण (पुं.) पाताल का रावण। **अहिरावण** (हि.)

अहलावत (पुं.) जाटों का एक अल्ल या गोत।

अहवाल (पुं.) हवाल। हाल-चाल।

अहा (अव्य.) प्रसन्नता सूचक शब्द।

अहाता (पुं.) चहारदीवारी।

अहार (स्त्री.) दे. चरणी।

अहिंसा (स्त्री.) किसी जीव को न मारने या न सताने का भाव।

अहीर (पुं.) दे. हीर।

अहीर वाट्टी (स्त्री.) दे. हीरवाट्टी।

अहेड़ी (पुं.) दे. हेड़ी।

अहै (क्रि. वि.) यहाँ, तुल. इत।

अहोई (स्त्री.) दे. होई।

आ

आ हिंदी वर्णमाला का दूसरा स्वर, इसका उच्चारण स्थान कंठ है।

आँ (अव्य.) 1. हाँ, स्वीकृति द्योतक ध्वनि, 2. प्रश्न सूचक ध्वनि; **~आँ करणा** किसी बात को बार- बार कहलवाना या पूछना; **~री** अरी; **~हो** स्त्रियों द्वारा पतिपक्ष के पुरुषों के संबोधन के लिए प्रयुक्त शब्द।

आँक (पुं.) 1. अक्षर, 2. लकीर; **~पढणा/ सीखणा** पढ़ाई-लिखाई सीखना।

आँकड़ा (पुं.) 1. लम्बी लकड़ी पर लगी घुमावदार पैनी कील जो वृक्षों के पत्ते या फल तोड़ने के काम आती है, (दे. अड़ंगी), 2. अंक या गिनती, 3. बेतुका गीत या जकड़ी, 4. गीत के बोल।

आँकणा (क्रि.स.) कूतना। **आँकना** (हि.)

आँकली (स्त्री.) साँड या आँकल के समान सुडौल और बलशाली गाय।

आँकस (पुं.) दबाव (मेवा.)।

आँक्कल (पुं.) 1. साँड, 2. राजा; (वि.) शक्तिशाली; **~छोडणा** 1. त्रिशूल या शंख आकारनुमा लोहे की पत्ती या सलाख को तपा कर किसी बछड़े को पुट्ठों के पास दाग़ कर साँड घोषित करना, 2. पूर्ण रूप से स्वतंत्र करना।

आँक्का बाँक्का (वि.) टेढ़ा-मेढ़ा, तुल. अहरा पहरा।

आँक्कुर (पुं.) कोंपल। **अंकुर** (हि.)

आँक्खे (पुं.) 1. भाग्य लिखने वाली देवी (बेहमाता) द्वारा शिशु-जन्म के छठे दिन शिशु के भाग्य के विषय में लिखे गए अक्षर या खींची गई भाग्य रेखाएँ, 2. लंबी छत में शहतीरियाँ रख देने के बाद बने हुए वे भाग जिनमें छोटी कड़ियाँ रखी जाती हैं; **~घालणा** भाग्य की देवी द्वारा बच्चे का भाग्य लिखा जाना।

आँख[1] (पुं.) दे. आँखर।

आँख[2] (स्त्री.) नेत्र; **~उघड़णा** 1. नींद खुलना, 2. होश में आना, 3. असलियत सामने आना; **~चढण** नशे या नींद के कारण आँख तनना; **~फूटणा** आगे पीछे की न सोचना, बुद्धि भ्रष्ट होना; **~मीचणा** 1. सोना, 2. अनदेखी करना 3. मरना; **~सेकणा** 1. आँख मारना; 2. रूप देखना; **~होणा** 1. परख होना, 2. अक्ल ठिकाने आना।

आँख मिंचाई (स्त्री.) बच्चों का एक खेल। **आँख मिचौनी** (हि.)

आँखर (पुं.) 1. वर्ण, लिपि-चिह्न, 2. पढ़ाई-लिखाई। **अक्षर** (हि.)

आँखळी (स्त्री.) दे. आखळी।

आँखुवा (पं.) 1. बीज से निकला हुआ अंकुर, 2. पेड़ की नई कोंपल, 3. नई कोंपल निकलने का स्थान। **अंकुर** (हि.)

आँग (स्त्री.) भूस्वामी द्वारा अपनी खुली भूमि, बीहड़, बनीं, थली आदि पर पशु चराने के उपलक्ष्य में लिया जाने वाला लगान। दे. बीत।

आँगळ/आँग्गळ (पुं.) 1 अंगुली का तीसरा भाग, 2. आठ जौ की लंबाई का एक नाप, 3. अंगुल की चौड़ाई से मापा जाने वाला प्रमाण--मेरे बारा आँगल की जूत्ती ठीक आवैंघी। **अंगुल** (हि.)

आँगळी (स्त्री.) हाथ या पैर की अंगुली; **~ऊठणा** जगत हँसाई होना; **~चढ़ाणा** सौगंध से बचने के लिए अंटी चढ़ाना; **~ठाणा** 1. आपत्ति उठाना, 2. निंदा करना, 3. चुनौती देना; **~दिखाणा** डराना; **~देणा/ तोड़णा** किसी काम में बाधा डालना; **~मारणा** स्पर्श से संकेत करना। **अंगुली** (हि.)

आंगीरस (पुं.) 1. एक ऋषि, 2. एक ब्राह्मण गोत्र। **आंगिरस** (हि.)

आंगो (सर्व.) इनको (बाग.)।

आँग्गण (पुं.) आँगन।

आँग्गी (स्त्री.) आँगी, चोली।

आँच (स्त्री.) 1. आग, 2. क्रोध; **~आणा** 1. असर होना, 2. भय होना; **~ठाणा** सौगंध खाना; **~दिखाणा** 1. आग लगाना, 2. थोड़ा गरम करना; **~पै पाँ धरणा** 1. पाप कमाना, 2. आपत्ति मोल लेना; **~बणाणा** हुक्का आदि भरने के लिए अंगारी तैयार करना; **~बरसणा** बहुत गरमी होना या पड़ना; **~बरसाणा** बहुत गुस्से में बोलना; **~बुझाणा** 1. लड़ाई शांत कराना, 2. इंद्रियों को तृप्त करना; **~माँगणा** चूल्हा जलाने के लिए आग माँगकर लाना; **~में आँच लाणा** लड़ाई को भड़काना; **~में साज्झा नाँ होणा** 1. आपस में अनबन होना, 2. निकट के व्यक्ति को भी दूर का समझना; **~सेकणा** आग के सामने तपना; **~होणा** 1. अग्नि का धुएँ रहित होना, 2. गुस्से में आना, 3. किसी वस्तु का अधिक गरम होना।

आँच बसंधर (स्त्री.) अग्नि, आग।

आँच्चल (पुं.) 1. पल्ला, वस्त्र 2. छोर। **आँचल** (हि.)

आँजल (पुं.) दे. आँदळा।

आँजू (पुं.) आँसू।

आँट (स्त्री.) 1. रुकावट, 2. अंटी, 3. दाँव, 4. वश, 5. गाँठ, 6. बाजी, 7. बल, पलेटा, मरोड़ी; **~आणा** 1. रुकावट होना, 2. बाजी चढ़ना; **~उतरणा** 1. बल उतरना, 2. अभीप्सा पूर्ण होना; **~उतारणा** सौगंध वापस लेना; **~करणा** अलग से पैसा जोड़ना; **~का यार** अवसरवादी मित्र; **~खोल्हणा** किसी बंद रिवाज़ को पुनः शुरू करना; **~गठणा/गहणा** मज़बूत गाँठ लगना; **~चढ़ाणा** प्रतिज्ञा करना या करवाना; **~जड़ना** 1. गाँठ मारना, 2. बाधा उत्पन्न करना; **~तारणा** 1 बाजी उतारना, 2. उलाहना उतारना, 3. शपथ निवारण करना; **~दार धोत्ती** पुरुषों द्वारा बाँधी गई धोती जिसमें नाभि के नीचे दो गाँठें मारी जाती हैं; **~पड़णा** 1. रुकावट

होना, 2 खिचड़ी में छोटी गाँठें पड़ना; **~फहणा** 1. बाधा उत्पन्न होना, 2. काम रुकना; **~बाँधणा/ मारणा** 1. गाँठ लगाना, 2. प्रतिज्ञा करना; **~में आणा** 1 वश में आना, 2. पैसा मिलना; **~लागणा** 1. गाँठ लगना, 2. बाधा उत्पन्न होना; **~लाणा** 1. ज़िद करना, 2. देरी करना, 3. बाधा उत्पन्न करना, 4. गाँठ मारना; **~होणा** 1. रुकावट आना, 2. सौगंध, प्रतिज्ञा या अपशकुन के कारण किसी काम को न करना।

आँटण (पुं.) जूते की रगड़ से पैर के किसी भाग में उभर आने वाली माँस-ग्रन्थि, (दे. आट्टण)।

आँटणा (क्रि. स.) 1. ढाँपना, 2. आटना, गड्ढे आदि को भरना, 3. धूल-मिट्टी गिराना, 4. मिटाना। **आँटना** (हि.)

आँट साँट (स्त्री.) साँठ-गाँठ।

आँट्टा (पं.) लपेटने की क्रिया; **~देणा** 1. रस्सी आदि पर बल चढ़ाना, 2. लपेटना।

आँट्टा साँट्टा (पुं.) 1. लेन-देन, 2. विनिमय; **~का ब्याह** अपने संबंध से लड़की देकर बदले में किसी अन्य से किया हुआ विवाह।

आँट्टी (स्त्री.) दे. आट्टी।

आँट्टै (अव्य.) बहाने।

आँठणा (क्रि. स.) 1 रस्सी आदि पर बल चढ़ाना, 2. अपने पक्ष में करना। **ऐंठना** (हि.)

आँड (पुं.) अंडकोश, फोता; **~उतरणा** 1. अंडकोश बढ़ना, 2. फोता छोटा या बड़ा होना; **~फोड़णा** नर-पशु को खसिया या बधिया करना।

आँड्डी (पुं.) 1 विचित्र व्यवहार का व्यक्ति, 2. दुस्साहसी, 3. बदमाश 4. बड़े फोतों वाला; **~तपणा** अपने दुर्व्यवहार के कारण प्रसिद्ध होना; **~बणणा/ होणा** उग्र व्यवहार प्रदर्शित करना।

आँड्डू[1] (वि.) मूर्ख।

आँड्डू[2] (पुं.) वह बैल जो पूरी तरह बधिया न हुआ हो। दे. खड्डू।

आँत (स्त्री.) अंतड़ी; **~कुळमळाणा** भूख के मारे परेशान होना।

आँतरा (पुं.) 1. हल जोतते समय खूड के बीच में छूटी हुई बिना जुती भूमि, 2. टेक के अतिरिक्त गीत का शेष भाग। **अंतरा** (हि.)

आँतिल (पुं.) एक जाट अल्ल या गोत।

आँदळ (पुं.) दे. आँदळा।

आँदळा (पुं.) 1. दो पस्सो या दोनों हथेली मिलाकर बनाया गया हाथ का दोना, 2. दो पस्सो (पसार) भर; **~बणाणा** पानी पीने या वस्तु को ग्रहण करने के लिए दोनों हाथों की हथेली को मिलाकर दोनेनुमा आकार बनाना; **~भरणा** 1. आँदला बनाकर कोई वस्तु उठाना, 2. अंजलि भरना। **अंजलि** (हि.)

आँदा (क्रि.) आता हुआ (सीमित क्षेत्रीय प्रयोग)।

आंदोलन (पुं.) 1. हलचल, 2. राजनीतिक कार्यवाही या चाल।

आँद्धा (पुं.) अंधा व्यक्ति, नेत्रहीन; (वि.) मूर्ख। **अंधा** (हि.)

आँद्धा किवाड़ (पुं.) चौखट में दो किवाड़ों के स्थान पर एक बड़े किवाड़ या पल्ले का दरवाज़ा।

आँद्धा कूआ (पुं.) 1. गहरा और अंधकार-पूर्ण कुँआ, 2. सूखा कुँआ। **अंधकूप** (हि.)

आँद्धा घाम (पुं.) वर्षा के समय निकली हुई धूप, धूपछाँव।

आँद्धा धूँध (वि.) 1. बिल्कुल अंधा, 2. मूर्ख।

आँद्धा सीस्सा (पुं.) धुँधला शीशा।

आँद्धा सीस्सी (स्त्री.) एक रोग जिसमें दिन के समय सिर के आधे हिस्से में दर्द रहता है। **अंधाशीशी** (हि.)

आंद्धी[1] (स्त्री.) अंधी स्त्री। **अंधी** (हि.)

आंद्धी[2] (स्त्री.) धूल मिश्रित तेज वायु जिससे अँधेरा हो जाता है; **~के आम** मुफ्त की चीज; **~मींह रलाऊ आणा** आँधी और मेंह एक ही बार में आना। **आँधी** (हि.)

आँधी (स्त्री.) दे. आँद्धी[2]।

आंब (पुं.) 1. आम का फल, 2. इस फल का पौधा। **आम** (हि.)

आंबी (स्त्री.) 1. छोटे-छोटे आम, 2. कच्चा आम। **अँबिया** (हि.)

आँय बाँय (पुं.) अनाप शनाप; (क्रि. वि.) 1. आस पास, 2. आगे-पीछे।

आँव (पुं.) चिकना सफ़ेद लसदार मल।

आँवणा (क्रि. अ.) आना; (पुं.) आगमन। **आना** (हि.)

आँवळा (पुं.) आँवला। **आँवला** (हि.)

आँवा (पुं.) वह गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बर्तन पकाता है।

आंशिक (वि.) अंश संबंधी।

आँस (स्त्री.) नई-नई निकली दाढ़ी-मूँछ; **~आणा/जामणा/फूटणा** नई-नई दाढ़ी-मूँछ निकलना।

आँसू (पुं.) दे. आँस्सू।

आँसू गैस (स्त्री.) एक प्रकार की गैस जिससे आँखों में आँसू आने लगते हैं।

आँस्सू (पुं.) आँसू; **~काढणा/टपकाणा/ढळकाणा/बहाणा** रोना, आँसू निकालना। **आँसू** (हि.)

आँह (अव्य.) संबोधन के रूप में प्रयुक्त ध्वनि, (दे. आँ)।

आँ हाँ (अव्य.) अस्वीकार सूचक शब्द।

आँहड़ू (वि.) 1. वह नर पशु जो पूर्णरूप से बधिया नहीं हो पाया हो। 2. बलशाली (बैल)। दे. खड्डू।

आः (अव्य.) 1. बैल को जोतते समय उच्चरित संबोधन। 2. कष्ट या वेदना सूचक शब्द।

आ[1] (क्रि. अ.) आओ, 'आणा' क्रिया का आदेशात्मक रूप; (सर्व.) यह (स्त्री)।

आ[2] (सर्व.) वह। दे. वा।

आई (स्त्री.) 1. मौत। उदा. बुगला तै अपणी आई मर्‌या तूँ क्यूँ मरी बटेर, 2. अवाई, आगमन।

आईना (पुं.) दर्पण।

आई पंथ (पुं.) नाथ संप्रदाय की एक शाखा जो गोरख टीले से हरियाणा में आई।

आई बाई (स्त्री.) होश हवास; **~भूलणा** घबराना।

आक (पुं.) अर्क, आक का पौधा।

आकड़[1] (वि.) ऊँचा नीचा (खेत)।

आकड़[2] (स्त्री.) 1. दे. अकड़।

आकबाक (पुं.) दे. आई बाई।

आकरा (पुं.) अकरा, ख़रा आदमी—तू किमें घणा आकरा सै; (वि.) 1. विशुद्ध, 2. महँगा।

आक़ा (पुं.) मालिक।

आकार (पुं.) आकृति।

आकाश (पुं.) दे. अकास।

आकाश गंगा (स्त्री.) दे. भूत्ताँ की राही।

आकाश बेल्ल (स्त्री.) दे. अमर बेल।

आकाश मंडल (पुं.) दे. अकास।

आकाशवाणी (स्त्री.) 1. वह शब्द जो आकाश से देवता लोग बोलते हैं, 2. आकाश से हुई भविष्यवाणी 3. रेडियो।

आकुल (वि.) दु:खी।

आकृति (स्त्री.) बनावट।

आक्कड़ (स्त्री.) ऐंठ। **अकड़** (हि.)

आक्यल (स्त्री.) दे. अक्कल।

आक्रमण (पुं.) हमला।

आक्रोश (पुं.) 1. क्रोध, 2. बुरा-भला कहना।

आक्षेप (पुं.) दोष लगाने का भाव।

आख (पुं.) दे. आक।

आखटा (पुं.) आक का छोटा पौधा।

आखड़णा (क्रि. अ.) पशु का दूध देते समय कूदना।

आखर (पुं.) 1. पढ़ाई लिखाई, 2. वर्ण-माला, 3. विद्या। **अक्षर** (हि.)

आखरी (वि.) आख़िरी।

आखळी (स्त्री.) छोटा गड्ढ़ा; **~मारणा** 1. ऊँचे-नीचे स्थान को समतल करना, 2. छोटे-छोटे गड्ढों को भरना।

आखा-तीज/आक्खा-तीज (स्त्री.) बैशाख शुक्ल तृतीया (त्रेतायुग का आरंभ इस दिन से हुआ मानते हैं। इसी दिन से एक महीने के लिए धर्मार्थ प्याऊ बैठाई जाती है। मंदिरों में परशुराम जयंती इसी दिन मनाई जाती है)। **अक्षय तृतीया** (हि.)

आखिर (वि.) अंतिम; (क्रि. वि.) अंत में।

आखिरकार (क्रि. वि.) 1. अंत में, 2. फलस्वरूप।

आखिरी (वि.) अंतिम।

आखेट (पुं.) शिकार।

आख्यान (पुं.) वृत्तान्त।

आगंतुक (वि.) आया हुआ (मेहमान)।

आग (स्त्री.) अग्नि, (दे. आँच); **~लागणा** 1. आग लगना, 2. वस्तु का अलभ्य होना या भाव बढ़ना, 3. लूट खसोट मचना, 4. लालायित होना, 5. लड़ाई भड़कना।

आगड़ा (पुं.) दे. आँकड़ा।

आगत (पुं.) 1. आने वाला समय, 2. अगला जन्म; **~बणाणा/सँभाळणा** आने वाले समय को आशामय बनाना।

आगम[1] (पुं.) 1. वेद, 2. आगमन; (वि.) आगामी।

आगम[2] (पुं.) 1. दे. खाळवा, 2. दे. नाळा[1 2]।

आगमन (पुं.) आना।

आगम बिद्या (स्त्री.) भविष्य जानने की विद्या।

आग माट्टी (स्त्री.) अखाद्य पदार्थ।

आगरला (वि.) अगला।

आगरली (वि.) अगली; (स्त्री.) लड़की के ससुराल की महिलाएँ।

आगरी (पुं.) 1. नमक बनाने वाला, 2. एक जाति.

आगरेय (पुं.) एक जनपद,

आगला (वि.) 1. आने वाला (समय), 2. पहला, प्रथम, 3, अगुआ। **अगला** (हि.)

आगली (वि.), (स्त्री.) दे. आगरली।

आगा खोड़ी (स्त्री.) भविष्य।

आगार (पुं.) खजाना

आगाह (वि.) सचेत, सावधान।

आगे (क्रि. वि.) दे. आग्गै.

आग्गड़-दूग्गड़ (वि.) टेढ़ी मेढ़ी (लकड़ी), 2. ऊँची-नीची (भूमि)।

आग्गा (पुं.) 1. सामना, 2. आगे का भाग, 3. छाती, 4. आने वाला समय, भविष्य; **~आणा** किए हुए कर्म सामने आना; **~करणा** सामना करना; **~घेरणा** 1. निरुत्तर करना, 2. घेराव करना, 3. बाधा डालना; **~छोड़णा** रास्ता देना; **~देखणा** 1. चलता होना, 2. भविष्य के विषय में सोचना; **~(–गै) दौड़ पाच्छै चोड़** आगे सीखने से पहले पिछला भूल जाना;**~पाच्छा देखणा** अच्छे-बुरे का विचार करना; **~पाच्छा रोई** 1. महिलाओं के लिए प्रयुक्त एक अपशब्द, 2. वह स्त्री जिसके पिता पक्ष (पाच्छा) और पति पक्ष (आग्गा) के वंश के सभी मर चुके हों; **~लेणा** 1 जिम्मेवारी लेना, 2. पहल करना, 3. घेरना; **~सँभाळणा** 1. बिगड़े काम को सँभालना, 2. भविष्य या अगला जन्म सुधारना। **आगा** (हि.)

आग्गै (क्रि.वि.) आगे।

आग्रह (पुं.) अनुरोध, हठ।

आग्रहायण (पुं.) अगहन, मार्गशीर्ष।

आघात (पुं.) चोट।

आचमन (पुं.) पूजा के समय दाहिने हाथ में जल लेकर पीने की विधि।

आचमनी (स्त्री.) 1. आचमन करने का पात्र, 2. संध्या-तर्पण आदि के समय लिया जाने वाला जल।

आचरण (पुं.) 1. व्यवहार, 2. चाल-चलन।

आचार (पुं.) 1. व्यवहार, 2. चरित्र।

आचार-बिचार (पुं.) रहन-सहन का ढंग।

आचारी (वि.) आचारवान।

आचार्य (पुं.) 1. पुरोहित, 2. अध्यापक, धर्मगुरु।

आच्छा (वि.) दे. आच्छ्या।

आच्छी (वि.) 1. भली, 2. स्वादिष्ट, 3. सुंदर; **~करणी आग्गै आणा** 1. अच्छे कार्यों का फल मिलना, 2. फलना-फूलना; **~कहणा** 1. भले की कहना, 2. शुभ सामाचार देना; **~ढाळ/ढाळाँ** 1. ठीक तरीके से, 2. प्रसन्नतापूर्वक। **अच्छी** (हि.)

आच्छी बीच्छी (वि.) सब प्रकार से ठीक या प्रसन्न।

आच्छी भूँड्डी (वि.) 1. खरी-खोटी, 2. भली-बुरी।

आच्छ्या (वि.) 1. भला, 2. बड़ा या श्रेष्ठ; (पुं) स्वीकार बोधक शब्द, 2. विस्मयादि बोधक शब्द। **अच्छा** (हि.)

आछन्न (वि.) ढका हुआ।

आज (क्रि. वि.) वर्तमान दिन।

आजकल (क्रि. वि.) इन दिनों, इस समय।

आजन्म (क्रि. वि.) जीवन भर।

आजमाइश (स्त्री.) दे. अजमास।

आजमाना (क्रि. स.) दे. अजमाणा।

आजरदा (वि.) पराश्रित।

आजाद (वि.) स्वतंत्र।

आजादी (स्त्री.) स्वतंत्रता।

आजानु (वि.) घुटनों तक लंबा।

आजीवन (क्रि. वि.) जीवन भर।

आजीविका (स्त्री.) रोजी।

आज्जै (अव्य.) आज ही।

आज्ञा (स्त्री.) आदेश।

आज्ञाकारी (वि.) आज्ञा मानने वाला।

आझण (वि.) पंगु। उदा.–पिया मनै करग्या दुख की आझण, कद पायाँ में टूम लगें बाज्जण। (लचं)

आझी[1] (वि.) पंगु।

आझी[2] (वि.) दे. आजरदा।

आटरणा (पुं.) 1. दे. घूँसला। 2. आलणा।

आटना (क्रि. स.) दे. आँटणा।

आटा (पुं.) दे. आट्टा।

आटें (स्त्री.) दे. आठैंह।

आटोपाट (स्त्री.) फूट।

आट्टण (पुं.) 1. अंगुली, हथेली आदि पर पड़ी कठोर गाँठें जो कस्सी आदि या अन्य हाथ का काम करते समय पड़ जाती हैं, 2. पैदल चलने या सख्त जूती पहनने से पैर के नीचे या अंगुली आदि के पास बना कठोर भाग या गाँठ; **~ऊठणा/पड़णा/ होणा** कठोर कार्य करने से हाथ-पैर आदि पर खाल का सख्त होना या उसमें गाँठें पड़ना।

आट्टा (पुं.) दे. चून। **आटा** (हि.)

आट्टी (स्त्री.) 1. सूत की अट्टी या गोला, 2. अटेरन पर उतारा हुआ सूत। **अट्टी** (हि.)

आट्टे बाट्टे (पुं.) बच्चों को प्रसन्न करने के लिए उनकी हथेली पर हथेली मार कर खिलाया जाने वाला खेल (इसमें एक जकड़ी बोली जाती है, जैसे--'आट्टे बाट्टे, दही चटाखे। कूड़े की बहू नैं जाए काळे काट्टै। एक गा थी। वा न्याणा तुड़ागी, खूँट्टा पड़ागी। इत चोथ कर्‌या, इत मूत्या। याह पाई, याह पाई कहकर बच्चे की बगल में गुदगुदी करते हैं)।

आट्टै (अव्य.) बहाने उदा० ऐंही आट्टे तुम मिल जाओ।

आठ (वि.) आठ की संख्या; **~आठ आँस्सू काढणा** जोर-जोर से रोना।

आठैह् (स्त्री.) अष्टमी तिथि। **अष्टमी** (हि.)

आडंबर (पुं.) दे. अडंबर।

आड़ (स्त्री.) 1. रुकावट, 2. खेत के बीच में हल की मोटी लकीर (खूड), 3. ओट, 4. टेक, 5. सहारा, 6. बहाना; **~की पड़छाड़, दाद्दा की सुसराड़** दूर की रिश्तेदारी; **~देणा** 1. खेत जोतने या बोने के बाद बीच-बीच में कुछ दूरी पर एक मोटा खूड निकालना (इस आड़ में मुख्य फसल से अलग बीज डाला जाता है, जैसे गेहूँ में सरसों के बीज की आड़ दी जाती है), 2. शरण में रखना, 3. उलझन उत्पन्न करना, 4. निरुत्तर करना; **~लाणा** 1. आड़ देना या लगाना, 2. ज़िद करना, 3. रुकावट डालना, 4. सहारा देना, 5. पहेली बूझना; **~लेणा** 1. किसी वस्तु की ओट में छिपना, 2. बहाना करना, 3. शरण में जाना।

आड़णा (क्रि. स.) 1. खेत में आड़ लगाना, 2. बाधा उत्पन्न करना, 3. पहेली बूझना। **आड़ना** (हि.)

आड़ा (पुं.) 1. जिद, 2. शर्त, 3. बाधा; (वि.) टेढ़ा।

आड़ी (अव्य) अगाड़ी। उदा.-दान पुण्य कद आ ज्याँ आड़ी। (लचं) दे. आड्डै।

आड़ू (पुं.) एक फल; (वि.) मूर्ख।

आड़ै (अव्य.) दे. अड़ै।

आड्डा (वि.) 1. तिरछा, 2. लंबायमान; **~(-डे) पाट का आदमी** किसी की न मानने वाला, अड़ियल; **~ढह पड़णा** 1. गिरना, 2. अनुनय विनय करना; **~बखत** बुरा समय, कठिनाई का समय; **~बोलणा** 1. उल्टा-सीधा बोलना, 2.

अकड़ कर बोलना; **~मारणा** 1. औंधा रखना, 2. टेढ़ा रखना। **आड़ा** (हि.)

आड्डै (क्रि. वि.) 1. दाँव पर, 2. वश में; **~आणा** 1. मार्ग रोकना, 2. बाधा उत्पन्न करना; **~चढणा** 1. दाँव पर आना, 2. काबू में आना।

आड्डै राम्मैं (क्रि. वि.) बिना अवसर के–आड्डै राम्मैं हलुवा घोट लिया, त्युहार नैं बणामती।

आढ़त (स्त्री.) दलाली।

आढतिया (पुं.) आढ़ती, दलाल.

आण[1] (स्त्री.) 1. सौगंध, शपथ, 2. लिहाज़, 3. अकड़, 4. ज़िद; **~करणा/खींचणा** 1. लिहाज करना, 2. प्रतिज्ञा करना। **आन** (हि.)

आण[2] (स्त्री.) आगमन, अगवाई, आना– तेरी आण हो तै आ ज्याइए।

आणक (पुं.) दे. आन्ना।

आण काण (स्त्री.) शर्म, लिहाज।

आण जाण (स्त्री.) आगमन, आना- जाना; **~जोग्गी होणा** 1. युवती होना, 2. द्विरागमन (गौना) के योग्य होना।

आणस (वि.)(?) उदा.–आणस की बूरा तैं क्यूँ जगह बणै छाणस की।

आणा (क्रि. अ.) आगमन होना; **~ना जाणा** 1. कुछ भी न आना, 2. मूर्ख रहना। **आना** (हि.)

आणी जाणी (वि.) नाशवान; (स्त्री.) लाभ–इस मैंह् के आणी जाणी सै; **~होणा** 1. वधु का विवाह के बाद एक दो बार पति के घर आना-जाना शुरू होना, 2. विस्मृत होना।

आतंक (पुं.) 1. भय, आशंका, 2. रौब।

आततायी (पुं.) अत्याचारी।

आतमा (स्त्री.) आत्मा; **~सीळी होणा** संतुष्टि मिलना, मन प्रसन्न होना। **आत्मा** (हि.)

आतशक (पुं.) फिरंग रोग।

आतशबाजी (स्त्री.) बारूद के बने खिलौने।

आतशी शीशा (पुं.) वह शीशा जिस पर एक ओर सूर्य की किरण पड़ने पर दूसरी ओर केंद्रित होकर आग उत्पन्न करती है।

आतुर (वि.) व्याकुल।

आत्थर (पुं.) 1. सहायक, 2. बैठक।

आत्म (वि.) आत्मा संबंधी।

आत्म गौरव (पुं.) आत्म सम्मान।

आत्मघात (पुं.) आत्महत्या।

आत्मज (पुं.) पुत्र।

आत्म ज्ञानी (पुं.) आत्मा और परमात्मा के संबंध का ज्ञाता।

आत्म त्याग (पुं.) स्वार्थ त्याग।

आत्म प्रशंसा (स्त्री.) अपनी प्रशंसा।

आत्म बल (पुं.) आत्मा का बल।

आत्म हत्या (स्त्री.) दे. खुदकुशी।

आत्मा (स्त्री.) दे. आतमा।

आत्यर (वि.) आतुर।

आथ (अव्य.) है, यथा–समझ्या तै आथ ना (समझा तो है नहीं)।

आथ ना साथ (अव्य.) किसी कोटि का न होना–किम्में आथ न साथ (कुछ भी नहीं है)।

आथमणा (पुं.) 1. पश्चिम दिशा, वह दिशा जहाँ सूर्य अस्त होता है, 2. 'ऊग्गमणा' का विलोम।

आथमा (पुं.) दे. आथमणा।

आथर (पुं.) दे. पाल।

आथरी (स्त्री.) जिस बर्तन पर घड़ा घड़ा जाता है।

आद (वि.) पहला, प्रथम; (पुं.) आरंभ।
आदि (हि.)

आद गोड़ (पुं.) गौड़ ब्राह्मण की एक वर्ग।
आदिगौण (हि.)

आदत (स्त्री.) 1. स्वभाव, 2. बान, अभ्यास।

आद पुरख (पुं.) आदि पुरुष, परमेश्वर।

आदम (पुं.) मनुष्य।

आदमक़द (वि.) आदमी की ऊँचाई के बराबर का।

आदमदेह (स्त्री.) मनुष्य योनि या शरीर।

आदमी (पुं.) दे. माणस।

आदर (पुं.) सम्मान।

आदरणीय (वि.) आदर योग्य।

आदरभाव (पुं.) दे. आद्दर भा।

आदर्श (पुं.) नमूना।

आदान प्रदान (पुं.) लेन-देन।

आदाब (पुं.) 1. नमस्कार, 2. नियम।

आदि (वि.) प्रथम।

आदिनाथ (पुं.) महादेव।

आदिनाथ (पुं.) ऋषभ देव।

आदिपुरुष (पुं.) परमेश्वर।

आदी (वि.) अभ्यस्त।

आदेश (पुं.) 1. आज्ञा, 2. प्रणाम।

आद्दर भा (पुं.) सम्मान का भाव।
आदर भाव (हि.)

आद्धा (वि.) 1. आधा भाग या खंड, 2. दुर्बल, 3. विकलांग; **~तीत्तर आद्धा बटेर** बेमेल स्वरूप या बनावट।
आधा (हि.)

आद्धा परधा (वि.) 1. आधा-अधूरा, 2. बचा खुचा।

आद्धा बाँटूटा (पुं.) 1. दो भागों में बाँटने की क्रिया, 2. भूमि की उपज का आधा बँटवारा लेने की प्रथा।

आद्धी (वि.) संपूर्ण का आधा भाग या खंड। **आधी** (हि.)

आद्धी कूद्धी/परधी (वि.) 1. लगभग आधी, 2. बची हुई।

आद्धी सूद्धी (वि.) लगभग आधी।

आध (वि.) आधा भाग, आधी।
अर्ध (हि.)

आध पा (वि.) आधा पाव का तौल।

आध पाध (वि.) दे. आद्धी परधी।

आध पै (क्रि. वि.) आधा-आधा लेने या देने की शर्त पर।

आधम आध (वि.) आधा-आधा, ठीक आधा।

आधम परधम (वि.) आधा भाग, आधा-अधूरा।

आधम सूध (वि.) 1. शुद्ध आधा भाग, 2. लगभग आधा।

आधा (वि.) दे. आद्धा।

आधार (पुं.) सहारा।

आधा शीशी (स्त्री.) दे. आँद्धा सीस्सी।

आधि (स्त्री.) मानसिक चिंता।

आधी ढल्याँ (क्रि.वि.) आधी रात ढल जाने पर।

आधूँ सूध (वि.) दे. आधम सूध।

आनंद (पुं.) हर्ष।

आन (वि.) अन्य। उदा. घर का जोग्गी जोगड़ा आन देस का सिद्ध; (स्त्री.) 1. मर्यादा, 2. सौगंध, 3. इज़्ज़त।

आना[1] (क्रि. अ.) दे. आणा।

आना[2] (पुं.) दे. आन्ना।

आनाकानी (स्त्री.) टालमटोल।

आन्ना (पुं.) रुपये का सोलहवाँ भाग (वर्तमान छः नए पैसे के मूल्य का कंगूरेदार गोल सिक्का); **~ना होणा**

खाली हाथ होना, निर्धन होना। **आना** (हि.)

आप (सर्व.) स्वयं।

आपकणा (क्रि. अ.) दे. धापणा।

आपगा (स्त्री.) हिरण्यवती नदी जो शिमला से अंबाला, हिसार, राजस्थान तक बहती थी।

आपड़णा (क्रि. स.) पकड़ना।

आपणा (सर्व.) स्वयं का। **अपना** (हि.)

आपणी (सर्व.) स्वयं की; **~आपणी पड़णा** 1. आपा-धापी मचना। 2. केवल अपने विषय में ही सोचना, केवल अपना काम साधना। **अपनी** (हि.)

आपत्काल (पुं.) संकट का समय।

आपत्ति (स्त्री.) 1. विपत्ति, 2. एतराज़।

आपद् धर्म (पुं.) वे नियम जिनका विधान केवल आपात्काल के लिए हो।

आपरेशन (पुं.) शल्य चिकित्सा।

आपस (अव्य.) परस्पर।

आपसी (वि.) आपस का, पारस्परिक।

आपाँ (सर्व.) हम।

आपा (पुं.) दे. आप्पा।

आपाधापी (स्त्री.) 1. अपनी-अपनी चिंता, 2. खींचा तानी।

आप्पा (सर्व.) 'आप' का बहुवचन; (पुं.) 1. आप, 2. अपनापन, 3. अभिमान, 4. शरीर, 5. मन; **~आणा** 1. अपनेपन का भाव जाग्रत होना, 2. अभिमान होना; **~जाणा** 1. प्यार कम होना, 2. सुध-बुध खोना, 3. अभिमान मर्दित होना; **~डाटणा** 1. स्वयं को समझाना, 2. मन मारना; **~तजणा** 1. मरना, 2. आत्महत्या करना, 3. मोह छोड़ना, 4. अभिमान छोड़ना; **~(-पै) तैं भार होणा** 1. मर्यादा छोड़ना, 2. क्रोध में आना, 3. सामर्थ्य से अधिक ख़र्च करना; **~समझाणा** मन को समझाना, स्वयं को सांत्वना देना। **आपा** (हि.)

आप्पै (सर्व.) 1. अपने आप, 2. आप ही, स्वयं ही।

आप्पै आप (सर्व.) अपने आप, स्वयं ही।

आप्पो-आप (सर्व.) दे. आप्पै आप।

आफत (स्त्री.) आफ़त, आपत्ति।

आब (स्त्री.) 1. आभा, चमक, 2. लज्जा; **~खोणा** 1. सम्मानहीन होना, 2. निर्लज्ज बनना, 3. शोभाहीन कर देना।

आबकारी (स्त्री.) मादक वस्तुओं पर कर लगाने वाला महकमा।

आब दाणा (पुं.) 1. भोजन, 2. अन्न-जल, 3. जीवन काल। **आबदाना** (हि.)

आबदार (वि.) इज्जतदार।

आबनूस (पुं.) एक जंगली पेड़।

आबरण (पुं.) 1. वस्त्र, 2. ढक्कन। **आवरण** (हि.)

आबरो (हि.) इज़्ज़त; **~तारणा** बेइज़्ज़ती करना; **~राखणा** मान मर्यादा रखना। **आबरू** (हि.)

आबाद (वि.) बसा हुआ।

आबादी (स्त्री.) जनसंख्या।

आब्भा (स्त्री.) चमक। **आभा** (हि.)

आभरण (पुं.) आभूषण।

आभा (स्त्री.) दे. आब्भा।

आभारी (वि.) उपकृत।

आभास (पुं.) संकेत।

आभूषण (पुं.) दे. आभरण।

आम (पुं.) दे. आंब।

आमदनी (स्त्री.) आय।

आमना सामना (पुं.) 1. मुक़ाबला, 2. भेंट।

आमने सामने (क्रि. वि.) दे. आम्हाँ साहमीं।

आमरण (क्रि. वि.) मृत्यु-पर्यन्त।

आमरी (पुं.) दे. उमरा।

आमा हल्दी (स्त्री.) एक प्रकार की हल्दी।

आमी (स्त्री.) दे. आंबी।

आम्मण[1] (पुं.) गाड़ी के पहिये के थुंबे का वह भाग जो पहिये को घिसने से बचाता है।

आम्मण[2] (पुं.) मादा पशु की वह अवस्था जिसमें वह नर पशु से संभोग करने को उन्मादित या लालायित होती है; **~आणा/करणा/काढणा** भैंस या मादा पशु का नर पशु के साथ मैथुन करने की इच्छा से लालायित होकर जोर-जोर से रँभाना या रेंकना तथा अपने थनों को मोटे आकार का कर लेना; **~तोड़णा** 1. मैथुन के पश्चात् मादा पशु का शांत स्थिति में आना तथा थनों को साधारण स्थिति में लाना, 2. नर पशु न मिलने के कारण मादा पशु को उन्मादित स्थिति से शांत स्थिति में आना (आमन तोड़ने के लिए भैंस को अधिक समय तक जल में छोड़ दिया जाता है)।

आम्मा जाम्मा (पुं.) दे. ठोड़ ठिकाणा।

आम्मैं जाम्मैं (क्रि. वि.) इधर-उधर।

आम्हाँ साहमीं (क्रि. वि.) सम्मुख, अभिमुख। **आमने सामने** (हि.)

आय (स्त्री.) आमदनी।

आया (स्त्री.) धाय।

आया गया (पुं.) 1. साधारण आदमी, 2. मेहमान (अनिच्छित), 3. मेहमान; **~करणा** 1. भूलना, 2. नष्ट करना; **~होणा** 1. भुलाया जाना, 2. चंपत होना, 3. समाप्त होना, 4. भूल पड़ना।

आयु (स्त्री.) उम्र।

आयुध (पुं.) शस्त्र।

आयुर्वेद (पुं.) चिकित्साशास्त्र विशेष।

आयोजन (पुं.) प्रबंध।

आरंपार (क्रि. वि.) दे. आर पार।

आरंभ (पुं.) शुरू।

आर[1] (पुं.) दूध की धार–भैंस तले आर बी ना रही।

आर[2] (पुं.) 1. चर्मकार की सूई, 2. 'सार' का विलोम, कच्चा लोहा; (स्त्री.) 1. लोहे की पैनी कील जो साँटे या पैन्ने (पैणी) में लगी होती है, 2. पहिए की अरा, 3. ज़िद, प्रण; (क्रि. वि.) 1. इस पार, इधर, 2. 'पार' का विलोम; **~का ना पार का** 1. कहीं का नहीं रहना, 2. दुविधा की स्थिति; **~लाणा** 1. आर चुभाना, 2. बहुत तंग करना, 3. हठात् काम करवाना।

आर[3] (स्त्री.) दे. चरणी।

आरज़ू (स्त्री.) 1. विनती, 2. मिन्नत।

आर झार (स्त्री.) 1. झुटपुटा, प्रातःकाल, 2. आवा जाही का काल; **~होणा** प्रातः की चहल-पहल शुरू होना।

आर टेहेरे (स्त्री.) सेवा सुश्रूषा।

आरण (पुं.) दे. अहरण।

आरणा (पुं.) 1. गाय-भैंस आदि का सूखा गोबर जो [अरण्य (जंगल) में पड़ा रहता है], 2. उपला; **~नैं जाणा 'आरणे'** इकट्ठे करने के लिए खेतों या वन में जाना; **~होणा** पूरी तरह सूख जाना।

आरण्यक (पुं.) धार्मिक ग्रंथ जिनके अधिकांश भाग की रचना हरियाणा में हुई।

आरता (पुं.) 1. आरती, 2. सम्मान, 3. एक गीत जो बन्ना या बन्नी की आरती उतारते समय गाया जाता है; **~करणा/तारणा** 1. थाली में दीपक रखकर आरती करना, 2. विवाह के समय सलहज या बड़ी साली द्वारा द्वार पर वर की आरती करना [यह रस्म बारोठा या बारोठी के समय (संध्या समय) होती है, 3. नक़्शा ढीला करना (व्यंग्य में); **~गाणा** बन्ना या बन्नी के स्नान के समय आरते का गीत गाना जो कुछ इस प्रकार है–तेरे हाथ लोटा, गोद बेटा, कर हे सुहागण आरता; **~चढाणा** स्नान से पूर्व बन्ना या बन्नी को हल्दी आदि मलने की रस्म करना; **~तारणा** 1. आरती उतारना या करना, 2. विवाह के दिनों में स्नान के बाद बहन द्वारा वर का आरता किया जाना, 3. पूजा करना (व्यंग्य में),

आरती (स्त्री.) पूजा का एक अंग जिसमें देवता विशेष की स्तुति गाई जाती है।

आर पार (क्रि. वि.) 1. एक किनारे से दूसरे किनारे तक, 2. आद्योपांत।

आरसी (स्त्री.) वह अँगूठी जिसे स्त्रियाँ दाहिने हाथ के अँगूठे में पहनती हैं और जिसमें छोटा-सा आइना जड़ा होता है।

आरा (पुं.) 1. लकड़ी चीरने का लोहे का दाँतेदार यंत्र जिसके दोनों ओर हथेली या मूँठ होती है और दोनों सिरों से दो आदमी इसे खींचते हैं, 2. आरा मशीन, तुल. करोंत; **~(–रै) चढाणा** विपत्ति में डालना; **~(–रै) में सिर फाहणा** जान बूझ कर कठिनाई में पड़ना, 2. आपत्ति मोल लेना।

आराम (पुं.) विश्राम।

आरिया¹ (पुं.) 1. ककड़ी जाति का एक फल।

आरिया² (पुं.) आर्य समाजी। **आर्य** (हि.)

आरिया समाज (पुं.) वैदिक धर्म के अनुसार हिन्दू धर्म में सुधार लाने के लिए स्वामी दयानन्द द्वारा सन् 1875 में स्थापित एक संस्था। **आर्य समाज** (हि.)

आरी (स्त्री.) लकड़ी काटने के काम आने वाला बढ़ई का शस्त्र, छोटा आरा।

आरेज (स्त्री.) एक मेवाती खाद्य।

आरूँपार (क्रि. वि.) दे. आर पार।

आरोप (पुं.) दोषारोपण।

आरोहण (पुं.) सवार होना।

आर्द्रा (पुं.) एक नक्षत्र।

आर्य (पुं.) दे. आरिया²।

आर्य समाज (पुं.) दे. आरिया समाज।

आल (स्त्री.) नमी, आर्द्रता।

आल¹ (स्त्री.) प्याज की पौध।

आळ² (स्त्री.) 1. शरारत, 2. छेड़छाड़, 3. कुश्ती का अभ्यास, 4. खिलवाड़, मज़ाक, 5. संतान, 6. जिद; **~करणा** 1. शरारत करना, 2. दो पशुओं द्वारा आपस में उछल-कूद करने की क्रिया, 3. कुश्ती का अभ्यास करना, 4. खिलवाड़ करना; **~गाल का** 1. जिसके पिता का नाम अज्ञात हो, अवैध संतान, 2. आस-पास का रहने वाला; **~लागणा** 1. बुरी आदत में फँसना, 2. ज़िद करना; **~लाणा** 1. किसी धंधे में व्यस्त करना, 2. माँग को पूरा करवाने

के लिए बच्चे को उकसाना–तनैं क्यूँ ये बाळक आळ ला दिये।

आळकस (पुं.) अलसाने का भाव। **आलस्य** (हि.)

आळकसी (वि.) आलस्य करने वाला। **आलसी** (हि.)

आळ जंजाळ (पुं.) 1. उलझन, 2. असंबद्ध स्वप्न, 3. बेमेल वस्तुएँ।

आलणा[1] (पुं.) दे. घूँसळा।

आलणा[2] (पुं.) दही मिला आटा।

आलथी पालथी (स्त्री.) दाईं जंघा पर बाईं और बाईं पर दाहिनी एड़ी रखकर बैठने का ढंग या आसन।

आलपताल (पुं.) बेतुकी बातें। उदा.– अवसर चूके डूमणी गावै आलपताल।

आळस (पुं.) दे. आळकस।

आळसी (वि.) दे. आळकसी।

आला (वि.) श्रेष्ठ, उम्दा; (पुं.) औज़ार।

आला[1] (पुं.) दीवार की छोटी झाँकी विशेष, 2. दीवार में लगी छोटी अलमारी जिसमें अधिकतर दरवाजा नहीं लगा होता, 3. दीवार में बना वह स्थान जहाँ दीपक आदि रखा जाता है, 4. ताक; **~दिवाळा ढूँढ़णा** सब चीजें छान मारना, सारा घर तलाश करना। **आला** (हि.)

आळा[2] (प्रत्य.) संबंध सूचक प्रत्यय जैसे–घर आला (गृह स्वामि, पति)। **वाला** (हि.)

आला ताला (पुं.) खुदा।

आलाप (पुं.) तान।

आलिंगन (पुं.) भुजाओं में सिमेट कर छाती पर लगाना।

आलिम-फाजिल (वि.) विद्वान, (स्त्री.) उर्दू-फारसी भाषा की उपाधियाँ।

आळिया (वि.) शरारती।

आळी[1] (स्त्री.) छोटा आला।

आळी[2] (प्रत्य.) वाली। **वाली** (हि.)

आलीशान (वि.) शानदार।

आलू (पुं.) दे. आल्लू।

आलूचा (पुं.) 1. एक फल विशेष, 2. इस फल का पेड़।

आलू बुखारा (पुं.) 1. एक फल विशेष, 2. इस फल का पेड़।

आल्लण (पुं.) साग में मिलाया जाने वाला आटा या बेसन आदि। **आलन** (हि.)

आल्लण साल्लण (पुं.) साग-सब्जी। **आलन सालन** (हि.)

आल्ला (वि.) गीला, आर्द्र।

आल्ला सील्हा (वि.) कम गीला, गीला-सूखा।

आल्ला सूक्खा (वि.) 1. जैसा-तैसा (भोजन), 2. कम गीला।

आल्ली (वि.) गीली।

आल्लू (पुं.) 1. एक कंद जिसकी सब्जी बनती है, 2. आलू की सब्जी। **आलू** (हि.)

आल्हणा (पुं.) दे. घूँसळा।

आल्हा (पुं.) 1. एक गाथा, 2. एक लंबा गान, 3. आल्हा-गाथा का एक पात्र, 4. एक छंद; (वि.) व्यर्थ; **~गाणा** वर्षा ऋतु में आल्हा की गाथा को मटके, बीन या बाँसुरी के साथ गाना।

आल्हा ऊद्धल (पुं.) आल्हा और ऊदल जिनके नाम पर एक लंबी गाथा गाई जाती है, इस गाथा में हरियाणवी का स्थानीय पुट भी है। **आल्हा ऊदल** (हि.)

आवटणा (क्रि.वि.) उबलना, खौलना। **औटना** (हि.)

आवटी (स्त्री.) 1. गुड़ में उबाल कर गाय भैंस के लिए तैयार की गई तरल औषधि, 2. अधिक मीठा मिला पेय।

आवड़णा (क्रि. अ.) सूझना।

आवणा (क्रि. अ.) 1. आगमन होना, 2. आने का भाव; **~जाणा** 1. आवागमन, 2. आवाजाही; **~(-णी) जाणी** 1. नाशवान, 2. आनी-जानी. **आना** (हि.)

आवभगत (स्त्री.) आदर सत्कार।

आवरण (पुं.) 1. ढक्कन, 2. पर्दा।

आवश्यक (वि.) ज़रूरी।

आवा (पुं.) वह स्थान या गड्ढा जहाँ कुम्हार मिट्टी के बर्तन पकाता है। **आबाँ** (हि.)

आवागोण (पुं.) बार-बार जन्म लेना और मरना। **आवागमन** (हि.)

आवाज (स्त्री.) दे. अवाज।

आवा जाई (स्त्री.) 1. बोल-चाल, 2. मेल-मिलाप, 3. विवाह आदि के समय एक दूसरे के घर में आने-जाने के संबंध, 4. आना-जाना, 5. भोर के समय लोगों का चलना फिरना शुरू होगा; **~होना** मेल मिलाप होना। **आवाजाही** (हि.)

आवाजाही (स्त्री.) दे. आवाजाई।

आवारा (वि.) 1. निकम्मा, 2. बदमाश, 3. बदचलन।

आवेश (पुं.) 1. जोश, 2. दौरा, भूत-प्रेत के प्रभाव से उत्पन्न विकार।

आशंका (स्त्री.) 1. डर, 2. शक, 3, अनिष्ट की संभावना।

आशनाई (स्त्री.) दे. असनाई।

आशा (स्त्री.) दे. आस।

आशिक (पुं.) प्रेमी।

आशिष (स्त्री.) आशीर्वाद।

आशीर्वाद (पुं.) दे. आशिष।

आश्चर्य (पुं.) हैरानी (दे. अचरज)।

आश्रम (पुं.) दे. आसरम।

आश्रय (पुं.) दे. आसरा।

आश्वासन (पुं.) तसल्ली, सांत्वना।

आश्विन (पुं.) दे. आसोज।

आषाढ़ (पुं.) दे. साढ।

आषाढ़ी (स्त्री.) दे. साड्ढी।

आसंग (स्त्री.) 1. हिम्मत, 2. साहस, 3. सामर्थ्य।

आस (स्त्री.) 1. आशा, 2. संतान होने की आशा, 3. लालसा, 4. भरोसा, 5. सहारा; **~उलाद आळा** संतान वाला; **~करणा** 1. आशा करना, 2. सहारा तकना; **~तकणा** आशा करना; **~लाणा** आशा करना; **~होणा** गर्भवती होना।

आसन (पुं.) दे. आस्सण।

आस पास (क्रि. वि.) दे. ओरै धोरै।

आसमान (पुं.) आकाश।

आसमानी (वि.) दे. आसमान्नी।

आसरम (पुं.) साधु संतों के रहने का स्थान। **आश्रम** (हि.)

आसरा (पुं.) 1. आश्रय, सहारा, 2. ठहरने का स्थान। **आश्रय** (हि.)

आसरित (वि.) आश्रित, तुल. मुँहमल।

आसव (पुं.) अर्क आदि निकालकर तैयार की गई औषधि।

आसान (वि.) सरल।

आसार (पुं.) लक्षण, चिह्न।

आसीगढ दुर्ग (पुं.) एक धारणा के अनुसार वर्तमान हाँसी शहर।

आसोज (पुं.) आश्विन, चंद्र वर्ष का सातवाँ महीना।

आस्तक (वि.) 1. मूर्ति पूजा में विश्वास करने वाला, 2. ईश्वर को मानने वाला, 3. श्रद्धालू। **आस्तिक** (हि.)

आस्तिक (वि.) दे. आस्तक।

आस्तीन (स्त्री.) बाँह; पहनने के कपड़े का वह भाग जो बाँह को ढकता है।

आस्था (स्त्री.) श्रद्धा।

आस्सण (पुं.) 1. मूँज, कुश आदि की छोटी चटाई, 2. बैठने की एक विधी, 3. सिंहासन, 4. जाँघिया और पायजामे आदि में लगी बीच की एक पट्टी, 5. योग का आसन; **~जमाणा** 1. पूजा आदि के लिए बैठना, 2. सम्मान अर्जित करना, 3. जम कर बैठना; **~देणा** सम्मान करना; **~पाट्टी लेणा/मारणा** क्रोध प्रकट करने या बात मनवाने के लिए घर के किसी कोने में मलिन वस्त्र आदि पहन कर लेट रहना; **~हलणा** सिंहासन डोलना। **आसन** (हि.)

आस्सी (स्त्री.) दे. हाँसी।

आह (अव्य.) पीड़ा द्योतक शब्द; **~पड़णा** 1. हाय पड़ना, 2. शाप पड़ना।

आहट (स्त्री.) पाँव की चाँप या आवाज़।

आहमाँ-साहमी (अव्य) आमने सामने।

आहः (स्त्री.) पशु को अनुकूल अवस्था में लाने के लिए उच्चरित ध्वनि।

आहा (अव्य.) आश्चर्य और हर्ष सूचक ध्वनि।

आहार (पुं.) भोजन।

आहिया (पुं.) गेहूँ बोने की क्रिया; **~धरणा** गेहूँ बोने के बाद अतिरिक्त खूड निकालना, (दे. आड़ देणा)।

अहिस्ता (क्रि. वि.) धीरे-धीरे, (दे. होळै[2])।

आहूति (स्त्री.) 1. मंत्र पढ़कर अग्नि में सामग्री डालने की क्रिया, 2. बलि।

आहूत्याँ पाहूत्याँ (क्रि. वि.) पाँयत की ओर।

आहूळा (क्रि. वि.) व्यर्थ, योंही।

आहूलैंहूढा (वि.) शरारती।

इ

इ नागरी वर्णमाला के स्वरों में तीसरा वर्ण जिसका उच्चारण स्थान तालु है।

इंगला पिंगला (स्त्री.) हठयोग के अनुसार दो नाड़ी जिनकी साधना से सिद्धि मिलती है। **इंगला-पिंगला** (हि.)

इंगलिश (स्त्री.) दे. अँग्रेज्जी।

इंगलिस्तान (पुं.) अंग्रेज़ों का देश।

इंच (पुं.) तीन जौ की लंबाई का एक नाप विशेष (जिसे अब सेंटीमीटर में परिवर्तित कर दिया गया है)।

इंछ (स्त्री.) सूदखोर द्वारा कर्जदार से प्राप्त की गई राशि।

इंछा (स्त्री.) दे. इच्छा।

इंजन (पुं.) दे. अंजन।

इंजीनियर (पुं.) यंत्र-निर्माण करने की कला का विशेषज्ञ।

इंटौरा (पुं.) दे. खोरा।

इंडुआ (पुं.) दे. ईंढवा।

इंडोळी पिंडोळी (स्त्री.) दे. कीर काँट्टो।

इंतकाल (पुं.) मृत्यु।

इंतज़ाम (पुं.) प्रबन्ध।

इंतज़ार (पुं.) प्रतीक्षा।

इंदर (पुं.) 1. इन्द्र, 2. वर्षा का देवता।

इंदर परस्त (पुं.) इंद्रप्रस्थ (भंड राक्षस को मारने के लिए इंद्र ने यहाँ पराशक्ति की उपासना की थी अत: इंद्रप्रस्थ नाम पड़ा)। दे. दिल्ली।

इंदर लोक (पुं.) 1. इंद्र लोक, 2. परियों का अखाड़ा, 3. स्वर्ग लोक।

इंदरी (पुं.) जननेंद्रिय (पुरुष की)।

इंद्र (पुं.) दे. इंदर।

इंद्र जाल (पुं.) जादूगरी, बाजीगरी।

इंद्र धनुष (पुं.) दे. धनस।

इंद्रलोक (पुं.) दे. इंदर लोक।

इंद्राणी (स्त्री.) इंद्र की पत्नी।

इंद्रासन (पुं.) इंद्र का आसन (जो कठोर तपस्या से हिलाया जा सकता है), 2. राज सिंहासन।

इंद्री (स्त्री.) दे. इंदरी।

इंसाफ़ (पुं.) न्याय।

इंस्पैक्टर (पुं.) निरीक्षक।

इकंत (पुं.) 1. एकांत, 2. निर्जन स्थल।

इक (वि.) एक; **~बै** एक बार।

इकट्ठा (वि.) दे. कट्ठा।

इकड़िया (वि.) 1. वह घर जिसकी छत कड़ियों की हो और बीच में शहतीर का प्रयोग नहीं किया गया हो, 2. 'दुकड़िया' का विलोम; **~छ्यावा** बिना खंभे का कमरा; **~साळ** इस प्रकार की बैठक या कमरा।

इकता (पुं.) गाँव के पशुओं में मरने की बीमारी फैलने पर किया जाने वाला एक धार्मिक कृत्य (इकते के दिन गाँव में बाहर का आदमी प्रवेश नहीं कर सकता। किसी के घर तवा नहीं चढ़ता। दूध नहीं बिलोया जाता। रात्रि के समय एक बड़े पात्र में आग रखकर उसमें गुग्गुल आदि की हवन-सामग्री डालकर एक टोली घर-घर धूप देती है ताकि हर घर के कीटाणु नष्ट हो सकें। यह टोली अनबोल रहती है तथा रात्रि के समय गाँव की सीमा पार उस अग्नि को भूमि में गाड़ देती है। लोगों का विश्वास है कि ऐसा करने से पशु-रोग तुरंत समाप्त हो जाता है)।

इकतारा (पुं.) एक तार का सितार।

इकन्नी (स्त्री.) एक आने का सिक्का।

इकपीठिया (पुं.) जिस परिवार या वंश में एक ही पुत्र उत्पन्न होता हो।

इकलखोरा (वि.) 1. अकेला खाने वाला, 2. अकेला-अकेला ही आनंद लेने वाला।

इकलास (पुं.) 1. एकता, 2. मित्रता। **इखलास** (हि.)

इकलौता (पुं) एकमात्र पुत्र; (वि.) एकमात्र, अकेला।

इकसठ (वि.) साठ और एक।

इकसार (वि.) 1. समान, 2. समतल।

इकहत्तर (वि.) सत्तर और एक।

इकहरा (वि.) दे. इकहर्याँ।

इकहर्याँ (वि.) 1. एक तह का, 2. एकहरा, 3. 'दोहरा' का विलोम; **~गात** छरहरा शरीर। **इकहरा** (हि.)

इकोत्तर सो (वि.) एक सौ एक; (पुं.) कौरव।

इक्का (पुं.) 1. घोड़ागाड़ी (इसकी सजावट ताँगे से कम होती है), 2. एक बूटी वाला ताश का पत्ता), 3. गठजोड़, (1. दे. इकलास, 2. दे. एक्का)।

इक्का दुक्का (वि.) 1. कोई-कोई, 2. विरला, 3. एक आध।

इक्की (वि.) बीस और एक; **~बीस का फरक होणा** 1. बीमारी में सुधार होना, 2. पूर्ण रूप से समान न होना, तुलना में थोड़ा अंतर होना।

इक्कीस (हि.)

इक्कीस (वि.) दे. इक्की।

इक्यावन (वि.) पचास और एक।

इक्यासी (वि.) अस्सी और एक।

इखलास (पुं.) दे. इकलास।

इखाड़ बाड्ढे (अव्य.) सिलसिलेवार।

इख्तियार (पुं.) दे. अख़्तार।

इच्छा (स्त्री.) कामना, लालसा।

इछरादे (स्त्री.) भक्त पूरणमल की माता।

इज़ाज़त (स्त्री.) अनुमति।

इजाजम (पुं.) इजाजतनामा।

इज़्ज़त (स्त्री.) सम्मान, मान, आदर।

इटड़ी[1] (स्त्री.) वह उपकरण जिससे ताने के सूत के चार भाग होते हैं।

इटड़ी[2] (स्त्री.) कच्चे सूत को विभाजित करने वाला छोटा औजार।

इटला (स्त्री.) 1. चिटली उँगली के साथ वाली उँगली।

इठलाना (कि. अ.) इतराना।

इडर (पुं.) ऊँट का घुटना, दे. गोड्डा।

इत (अव्य) 1. यहाँ, 2. 'उत' का विलोम; **~ओड़** इधर; **~नैं** इधर को (सीमित प्रयोग); **~सिक/सी** 1. इधर ही, 2. यहीं कहीं।

इतकल (क्रि. वि.) यहाँ पर, यहाँ से।

इतणा (वि.) 1. अधिक, 2. इस सीमा तक, 3. इस मात्रा में; **~(–णे) मै** 1. इसी बीच, 2. इस संख्या, मात्रा या विस्तार में; **~सा** 1. कम मात्रा **में**– इतणा सा तै दूध था पर आदमी थे घणे, 2. स्वल्प; **~सारा** बहुत अधिक– इतणा सारा काम पड्या **सै**।

इतना (हि.)

इतणी (वि.) इस मात्रा में; **~ए** 1. इतनी ही, 2. केवल इतनी। **इतनी** (हि.)

इतना (वि.) दे. इतणा।

इतबार (पुं.) विश्वास। **एतबार** (हि.)

इतराणा (क्रि. अ.) 1. इठलाना, शेखी बघारना, 2. घमंड करना।

इतराना (क्रि. अ.) दे. इतराणा।

इतवार (पुं.) दे. ऐंतवार।

इतिहास (पुं) 1. लंबी गाथा, 2. बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओं का क्रमिक विवरण।

इतिहासिक (वि.) ऐतिहासिक, इतिहास संबंधी।

इती (अव्य.) 1. यहाँ, यहाँ ही, यहाँ पर (सीमित प्रयोग)।

इत्तफाक (पुं.) 1. संयोग, अवसर, 2. सहमति।

इत्तै (अव्य.) 1. यहाँ ही, 2. निकट ही; **~ए** यहीं पर; **~नैं/सी** यहीं कहीं।

इत्र (पुं.) दे. अतर फुलेल।

इद्दा बिद्दा (क्रि. वि.) 1. अदबदाकर, 2. अवश्य–इद्दा बिद्दा खाण के बखत रोवैग, 3. संयोगवश।

इधर (क्रि. वि.) दे. ईंग्घै।

इन (सर्व.) 'इस' का बहुवचन रूप; **~कै** 1. इनके पास, 2. इनके; **~तैं** 1. इनसे, 2. इनको, इन्हें।

इनकार (पुं.) अस्वीकार।

इनसान (पुं.) मनुष्य।

इनाम (पुं.) पुरस्कार।

इने गिणे (वि.) थोड़े से।

इन्नैं (सर्व.) 'यह' शब्द का कर्ता कारक बहुवचन का रूप। **इन्होंने** (हि.)

इन्ह (सर्व.) 'इस' का बहुवचन रूप। **इन** (हि.)

इब (क्रि. वि.) इस बार, तुल. ईब; **~कै** अब की बार–इबकै तै बहुअड़ खेत्ती का काम; जाए घड़ाइये अपणे बापै कै (लो. गी.); **~तोड़ी** अब तक (सीमित प्रयोग); **~बी** अभी भी; **~लग** अभी तक। **अब** (हि.)

इबादत (स्त्री.) पूजा।

इबारत (स्त्री.) 1. लेख, 2. लिखावट।

इब्बै (क्रि. वि.) 1. तुरंत, 2. इसी समय, अभी-अभी, **अभी** (हि.)

इ भी (अव्य.) अभी। दे. ईब।

इमरत (पुं.) 1. वह पेय जिसे पीकर अमर होना माना गया है, 2. प्राण, 3. बहुत मीठी चीज; **~चाखणा** 1. अमृत पीना, 2. अमर होना। **अमृत** (हि.)

इमरती (स्त्री.) एक मिठाई।

इमली (स्त्री.) 1. एक खटाई, 2. इसका पेड़, 3. इस पेड़ की फली जो खट्टी होती है; **~के पत्ते पै डंड पेलणा** अपना रास्ता पकड़ना।

इमान (पुं.) विश्वास; **~ठाणा** सौगंध खाना। **ईमान** (हि.)

इमान-धरम (पुं.) ईमान धर्म। **ईमान-धर्म** (हि.)

इमाम (पुं.) मुसलमानों का पंडा; **~बाड़ा** ताज़िया रखने का भवन।

इमामजस्ता (पुं.) इमामदस्ता, लोहे या पीतल की छोटी ओखली और मुसली।

इमामदस्ता (पुं.) दे. इमामजस्ता।

इमारत (स्त्री.) भवन।

इम्तहान (पुं.) परीक्षा।

इम्मन (वि.) 1. निश्चित, 2. निवृत्त, 3. निठल्ला।

इरला (वि.) दे. उरला।

इरादा (पुं.) 1. इच्छा, 2. संकल्प।

इर्द गिर्द (क्रि. वि.) दे. ओरै धोरै।

इलज़ाम (पुं.) दे. तोंहमद।

इलम (पुं.) 1. विद्या, 2. जानकारी।

इलहान (पुं.) अप्राप्य वस्तु के लिए किया गया व्यर्थ का परिश्रम या उद्यम।

इलाका (पुं.) क्षेत्र।

इलाची (स्त्री.) एक मसाला। **इलायची** (हि.)

इलाची दाणा (पुं.) 1. एक वस्त्र जिस पर इलायची दाने जैसी बुंदियाँ होती हैं, 2. इलायची का दाना।

इलाज (पुं.) 1. चिकित्सा, 2. युक्ति।

इलायची (स्त्री.) दे. इलाची।

इलावा (क्रि. वि.) अलावा, अतिरिक्त, सिवाय।

इलाही (पुं.) ईश्वर।

इल्म (पुं.) दे. इलम।

इशारा (पुं.) संकेत।

इश्क (पुं.) मुहब्बत, प्रेम।

इश्तहार (पुं.) 1. विज्ञापन, 2. दीवारों आदि पर सूचना के लिए चिपकाया जाने वाला बड़ा पर्चा।

इषुकार (पुं.) दे. हिसार।

इष्ट (पुं.) दे. इस्ट।

इस (सर्व.) इस; **~ढाळ/तरियाँ** इस तरह; **~मारी** 1. इस तरह, 2. इसलिए, 3. इस कारण से।

इसपात (पुं.) पक्का लोहा।

इसलाम (पुं.) मुसलमानी मत।

इसवर (पुं.) भगवान, परमात्मा; **~की लील्ला** 1. भगवान की माया, 2. भगवान की इच्छा। **ईश्वर** (हि.)

इसा (वि.) 1. इसके समान–इसे का इसा आदमी था, 2. ज्यों का त्यों। **ऐसा** (हि.)

इसाई (पुं.) 1. ईसा का अनुयायी, 2. ईसाई धर्म। **ईसाई** (हि.)

इसा उसा (वि.) 1. तुच्छ, 2. इस या उस प्रकार का। **ऐसा-वैसा** (हि.)

इसाण[1] (पुं.) पूर्व और उत्तर दिशा के बीच का कोना। **ईशान** (हि.)

इसाण[2] (स्त्री.) ईसाई महिला।

इसाण कूण (स्त्री.) ईशान दिशा या कूट।

इसियाँ (सर्व.) 1. इनकी, 2. ऐसी, 3. 'इसी' का तिर्यक् रूप।

इसी (वि.) इस प्रकार की। **ऐसी** (हि.)

इसी तिसी (स्त्री.) 1. ऐसी की तैसी, 2. निरादर का भाव; **~करणा/फेरणा** 1. अत्यंत उपेक्षा करना, 2. भट्ठा बैठाना।

इसे (वि.) 1. ऐसा–इसे का इसा था, 2. इस तरह के। **ऐसे** (हि.)

इसे उसे (वि.) 1. इस प्रकार के, 2. तुच्छ, हीन, हेय। **ऐसे-वैसे** (हि.)

इस्ट (पुं.) पूजित देवता। **इष्ट** (हि.)

इस्टाट (वि.) इंजन वाली गाड़ी का चालू होना। **स्टार्ट** (हि.)

इस्तीफ़ (पुं.) त्यागपत्र।

इस्तेमाल (पुं.) 1. प्रयोग, 2. भूमि की चकबन्दी।

इस्त्री[1] (स्त्री.) कपड़े प्रेस करने का लोहा।

इस्त्री[2] (स्त्री.) 1. पत्नी, 2. महिला। **स्त्री** (हि.)

इस्यो (सर्व.) ऐसा।

इस्सै (सर्व.) 1. इस, 2. इस ही, इसी; **~कै** इसी के; **~तैं** 1. इसी से, 2. इसी को; **~नैं** 1. इसी ने, 2. इसी को।

इह (अव्य.) 1. उपेक्षा सूचक शब्द, 2. पीड़ा द्योतक शब्द।

ई

ई हिंदी वर्णमाला का चौथा स्वर जिसका उच्चारण स्थान तालु है।

ईं (सर्व.) इस; (स्त्री.) चीख निकलने की ध्वनि; **~नैं** इसने; **~हैं तराँ** इसी प्रकार, ऐसे ही–ईं हैं तराँ का था।

ईंख (पुं.) गन्ना; **~छोलणा** रस निकालने से पूर्व दराँती आदि से ईख की पत्तियों को गन्ने से हटाना; **~पेलणा** गन्ने को कोल्हू में पेरना। **ईख** (हि.)

ईंग्घै/ईंघा (क्रि. वि.) इस ओर, इधर।

ईंँच (स्त्री.) दे. ऐंच।

ईंट (स्त्री.) 1. ईंट, 2. ताश का एक रंग; **~तैं ईंट बजाणा** नष्ट करना, सर्वनाश करना; **~सेंकणा** भीतरी चोट को सेंकने के लिए ईंट को आग में तपा, गोमूत्र या पानी में डुबो और कपड़े में लपेट कर दर्द के स्थान पर रखना।

ईंट भाट्ठा (पुं.) 1. अधिक पकी ईंट, 2. व्यर्थ का पदार्थ।

ईंडली (स्त्री.) दे. ईंढी।

ईंढी/ईंढई (स्त्री.) बोझे को सिर पर संतुलित बनाए रखने के लिए कपड़े आदि का

वलय; **~फलवाँ आली/झालर आली** वह ईंडरी जिसके नीचे मोती मनके आदि झालर के रूप में गूँथ दिए गए हों। **ईंडरी** (हि.)

ईंढवा (पुं.) बड़ी ईंडरी; **~(– वे) का चूँड्डा** (पुं.) दे. चूँड्डा ऊँच्चा।

ईंद्धण (पुं.) ईंधन, तुल. बालण। **ईंधन** (हि.)

ईंधन (पुं.) दे. ईंद्धण।

ईंह (सर्व.) इस; **~ओड़** इधर, इस ओर; **~कै** 1. इसके, 2. इसके पास; **~नैं** इसने; **~सा** ऐसा, इस जैसा।

ई (निपात) ही (स्त्री.) पीड़ा द्योतक ध्वनि; (सर्व.) इस।

ई (सर्व.) यह।

ईजगर (पुं.) अजगर, भारी साँप।

ईज़ाद (स्त्री.) आविष्कार, खोज।

ईद (स्त्री.) एक मुसलमानी त्योहार।

ईन ऊन (क्रि. वि.) इधर-उधर।

ईन्नैं (सर्व.) इसने।

ईब (क्रि. वि.) दे. इब।

ईमान (पुं.) दे. इमान।

ईमानदार (वि.) विश्वास-पात्र।

ईरखा (स्त्री.) 1. डाह, 2. होड़। **ईर्ष्या** (हि.)

ईरान (पुं.) फ़ारस देश।

ईर्ष्या (स्त्री.) दे. ईरखा।

ईश (पुं.) 1. ईश्वर, 2. स्वामी।

ईश्वर (पुं.) दे. इसवर।

ईसवी (स्त्री.) ईसवी सन्।

ईसाई (वि.) ईसा धर्म का अनुयायी।

ई ही (अव्य.) यह।

उ

उ हिंदी वर्णमाला का पाँचवा स्वर जिसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

उँ (अव्य.) 1. प्रश्न, क्रोध, रुदन, स्वीकारोक्ति, अवज्ञा आदि प्रकट करने के लिए प्रयुक्त ध्वनि, 2. वैसे–ऊँ तै घर चोक्खा सै; (क्रि. वि.) उधर; **~उँ करणा** 1. रोने का अभिनय करना, 2. किसी प्रश्न को बार-बार पूछना।

उँ-एँ (अव्य.) 1. व्यर्थ में–उँएँ गड़ंग ठोक दिया (व्यर्थ में अफ़वाह फैला दी), 2. वैसे ही–वो काम भी उँएँ कर लिए; **~कै** 1. उस ओर से, 2. उधर से; **~तै** वैसे तो; **~नैं** उधर ही को।

उंगल (स्त्री.) दे. आँगळ।

उँगली (स्त्री.) दे. आँगळी।

उँचाई (स्त्री.) 1. ऊँचेपन का भाव, 2. चढ़ान, 3. उठान। **ऊँचाई** (हि.)

उँचाण (पुं.) 1. चढ़ाव, 2. ऊँचाई, 3. भूमि का उभरा हुआ भाग; तुल. टेकड़ा।

उँडेलना (क्रि. स.) 1. दे. लुढाना, 2. दे. खिंढाणा।

उँह (सर्व.) उस–उँह धोरै जा (उसके पास जा); (क्रि. वि.) उधर–उँह सी गया होगा; **~कै** 1. उसके, 2. उसके पास; **~नैं** उसने; **~सा** वैसा; **~सी** उधर को।

उँह हूँ (अव्य.) नहीं, नकारात्मक ध्वनि।

उई (अव्य.) तिरस्कार, पराजय, शोक आदि बोधक ध्वनि।

उऋण (वि.) 1. ऋणमुक्त, 2. कर्त्तव्य मुक्त।

उकड़ू (पुं.) दे. ऊकड़ू।

उकणा (क्रि. अ.) 1. निशाना चूकना, 2. समाप्त होना, 3. किसी की पारी समाप्त होना। **ऊकना** (हि.)

उकता (वि.) 1. कम (तोल), 2. 'धुकता' का विलोम; (क्रि. वि.) बिना तोले (बेचना)।

उकताणा (क्रि. अ.) तंग आना, ऊबना। **उकताना** (हि.)

उकताना (क्रि. अ.) दे. उकताणा।

उकमाणा (क्रि. अ.) 1. उन्मादित होना (पशु का), मादा पशु का नर पशु के साथ मैथुन करने की इच्छा से अपने थनों को फुलाना, 2. थनों को बार-बार खींचने या पपोलने से पशु द्वारा थनों में दूध उतारना, (दे. पावसणा)।

उकलाई (स्त्री.) दे. उबकाई।

उकलाणा (क्रि. अ.) 1. जी मितलाना, 2. घबराना। **अकुलाना** (हि.)

उकलाना (क्रि. अ.) दे. उकलाणा।

उकवाणा (क्रि. स.) निशाना चुकवाना। **उकवाना** (हि.)

उकसणा (क्रि. अ.) 1. ऊपर उठना, 2. चने आदि की फसल का जड़ की बीमारी के कारण सूखना, 3. उत्सुक होकर ऊपर उठ-उठकर देखना। **उकसना** (हि.)

उकसना (क्रि. अ.) दे. उकसणा।

उकसाना (क्रि. स.) दे. उकासणा।

उकाई (स्त्री.) दे. उबकाई।

उकाणा[1] (क्रि. स.) 1. निशाना बचाना, 2. चुकाना। **उकाना** (हि.)

उकाणा[2] (क्रि.) दे. ओजणा[2]।

उकात (स्त्री.) 1. इज़्ज़त, मान, 2. हिम्मत, 3. हैसियत। **औक़ात** (हि.)

उकाब (स्त्री.) 1. सूझ-बूझ, 2. हौसला।

उकास (पुं.) खाली समय, फुर्सत। **अवकाश** (हि.)

उकासणा (क्रि. स.) 1. उभारना, कुछ ऊपर करना, 2. भड़काना, 3. प्रोत्साहित करना, 3. हिम्मत बढ़ाना, 5. भारी गठरी या सामान को कुछ क्षण के लिए सिर से उठाना। **उकासना** (हि.)

उकौना (पुं.) दे. ओजणा[2]।

उकास्सा (पुं.) गेहूँ, चने आदि की एक बीमारी जिसमें पौधा सूख जाता है।

उखड़णा (क्रि. अ.) दे. ऊक्खड़णा।

उखड़ना (क्रि. अ.) दे. ऊक्खड़णा।

उखड़वाणा (क्रि. स.) निकलवाना--जाड़ उखड़वा ली। **उखड़वाना** (हि.)

उखड़वाना (क्रि. स.) दे. उखड़वाणा।

उखरणा (क्रि. अ.) दे. ऊक्खरणा।

उखराणा (क्रि. अ.) दे. ऊक्खरणा।

उखळी (स्त्री.) दे. ऊँक्खळ।

उखाड़ (पुं.) 1. उखाड़ने की क्रिया, 2. कुश्ती का एक पेंच; (क्रि. स.) उखाड़ना क्रिया का आदे. रूप।

उखाड़णा (क्रि. स.) उखाड़ना।

उखाड़-पछाड़ (स्त्री.) 1. उठा-पटक, 2. भगदड़, 3. छिन्न-भिन्न होने या करने की क्रिया, 4. कुश्ती का एक दाँव।

उखाड़ू (वि.) बने काम को बिगाड़ने वाला।

उगजणा (क्रि. अ.) दे. ऊग्गजणा।

उगजवाणा (क्रि. स.) उगजवाना।

उगना (क्रि. अ.) 1 दे. जामणा, 2 दे. लीकड़णा।

उगरना (क्रि. अ.) दे. ओग्गरणा।

उगलणा (क्रि. स.) 1 पेट की सारी बात कह देना, 2. बढ़ा चढ़ा कर कहना, 3. थूकना, 4. उल्टी करना; (क्रि. अ.)

फसल का बीमारी के कारण सूखना। **उगलना** (हि.)

उगलदा (वि.) अधिक गर्म।

उगलना (क्रि. स.) दे. उगलणा।

उगलवाणा (क्रि. स.) 1. दबाव से किसी छिपी बात को कहलवाना, 2. उल्टी करवाना। **उगलवाना** (हि.)

उगलवाना (क्रि. स.) दे. उगलवाणा।

उगाड़ (पुं.) दे. घेर।

उगाणा (क्रि. स.) 1. जमाना, 2. अंकुरित करना, 3. बोना, 4. प्रकट करना।

उगाळ (स्त्री.) दे. उगाळी।

उगाळी (स्त्री.) जुगाली।

उगाहना (क्रि. स.) दे. उघाणा।

उगाही (स्त्री.) दे. उघाई।

उघड़णा (क्रि. अ.) 1. पर्दा या ढक्कन आदि हटना, 2. खड़िया, चंदन या गीले लेख आदि का सूख कर अधिक स्पष्ट दीखने लगना, 3. पोल खुलना, 4. असली रूप सामने आना, 5. नंगा होना, 6. भाग्य पलटना, 7. पिछला किया आगे आना। **उघड़ना** (हि.)

उघड़ना (क्रि. अ.) दे. उघड़णा।

उघड़ता (क्रि. वि.) कुछ खुला हुआ–सरसूँ का साग उघड़ता नहीं बणाया तै तलक (कड़ुआ) बणैगा।

उघड़वाणा (क्रि. स.) 1. बीती बात के बारे में जानकारी प्राप्त करना–उसने अपणी पीड्‌ढी पंडे तैं उघड़वाई, 2. पर्दा हटवाना, 3. पोल खुलवाना, 4. चित्र को उजलवाना; **~पाटड़ा** विवाह की तिथि निश्चित करवाना; **~साहा** विवाह की तिथि निश्चित करवाना। **उघड़वाना** (हि.)

उघाई (स्त्री.) 1. ज़मीन आदि का लगान, कर, 2. उगाहने की क्रिया; (क्रि.स.) 'उघाणा' क्रिया का भूतकाल का, एकवचन का रूप। **उगाही** (हि.)

उघाई पताई (स्त्री.) 1. उगाही, 2. उगाही बँटाई।

उघाड़णा (क्रि. स.) 1. पर्दा हटाना, 2. पोल खोलना, 3. लेख, चित्र आदि को उजालना। **उघाड़ना** (हि.)

उघाड़ना (क्रि. स.) दे. उघाड़णा।

उघाड़ा (वि.) 1. नग्न, बिना पर्दे के, 2. बिना ढका हुआ, 3. लज्जाहीन, मर्यादा रहित; **~ढक्या** 1. बिना सावधानी के रखा हुआ, 2. अधढका।

उघाड़ी (वि.) नग्न। **~बात**-बिना लाग लपेट का कथन। निर्लज्ज उक्ति।

उघाणा (क्रि. स.) 1. अन्न, वस्त्र, रुपया-पैसा आदि वसूल करना, 2. ज़मीन की उगाही इकट्‌ठी करना। **उगाहना** (हि.)

उचंग (स्त्री.) 1. मस्ती, 2. उमंग, 3. शरारत, 4. पशु की प्रसन्नतासूचक उछल-कूद; **~ऊठणा** 1. शरारत सूझना, 2. उछल-कूद करने की इच्छा होना, 3. कामुकता का भाव प्रकट करना।

उचकणा (क्रि. अ.) उत्सुकतावश गर्दन ऊँची करके देखना। **उचकना** (हि.)

उचकना (क्रि. अ.) दे. उचकणा।

उचक्का (पुं.) छुटपुट चोरी करने वाला।

उचटणा (क्रि. अ.) 1. मन नहीं लगना, उचाट होना, 2. उछलना, 3. निशाना चूकना। **उचटना** (हि.)

उचटना (क्रि. अ.) दे. उचटणा।

उचटाणा (क्रि. स.) 1. उचटाना, चटकाना, 2. चटखाना।

उचटाना (क्रि. स.) दे. उचटाणा।

उचाट (स्त्री.) 1. मन न लगने की स्थिति, 2. बेचैनी।

उचाटी (स्त्री.) दे. उचाट्टी।

उचाट्टी (स्त्री.) 1. बेचैनी, 2. बार-बार प्यास लगने का भाव। **उचाटी** (हि.)

उचारणा (क्रि. स.) 1. उच्चारण करना, 2. वर्णन करना या कहना–फेरे हो लिये ईब अपणी साक्खा उच्चारो। **उच्चारना** (हि.)

उच्चार (पुं.) 'उचारणे' की क्रिया।

उच्छल (स्त्री.) दे. ऊच्छल।

उछळ-कूद (स्त्री.) 1. उछलने-कूदने की क्रिया, 2. अठखेली।

उछळणा (क्रि. अ.) 1. वेग से ऊपर उठना और गिरना, 2. अचानक भाव चढ़ना, 3. पित्त आदि का एकदम निकल पड़ना, 4. स्वयं का प्रदर्शन करना, 5. कूद-फाँद करना, 6. फसल के पौधों का निकलना, 7. फाँदना, 8. उलझ पड़ना। **उछलना** (हि.)

उछाड़ (स्त्री.) 1. उछाल, 2. उछल-कूद, 3. अस्तर, गद्दे, रजाई आदि का खोल; **~पछाड़** 1. मार-काट, 2. भगदड़।

उछाळ (स्त्री.) 1 पानी की तरंगों के ऊपर उठने की क्रिया, 2. छलाँग, 3. उछाला, झाल। **उछाल** (हि.)

उछाळणा (क्रि. स.) 1. ऊपर की ओर फेंकना, 2. किसी बात को जान बूझ कर फैलाना। **उछालना** (हि.)

उछाळा (पुं.) 1. उछालने की क्रिया, 2. महँगा होने का भाव; **~मारणा** 1. ऊँची झाल उठना, 2. बहुत ऊँचे उछालना; **~लेणा** 1. उछलना, 2. भाव चढ़ना। **उछाळा** (हि.)

उछाला (पुं.) दे. उछाला।

उछीड़ (स्त्री.) 1. कम भीड़, 2. भीड़ का विलोम।

उजड़णा (क्रि. अ.) 1. गाँव आदि का ध्वस्त होना, 2. पशुओं द्वारा खेती को अधिक हानि पहुँचाना, 3. कुल नष्ट होना, 4. चोरी में अधिक माल निकल जाना।

उजड़ना (क्रि. अ.) दे. उजड़णा।

उजड़वाणा (क्रि. स.) उजड़वाना।

उजबक (वि.) उजड्ड, मूर्ख।

उजमण (पुं.) निश्चित संख्या में व्रत पूरे होने पर किया जाने वाला धार्मिक कृत्य। **उद्यापन** (हि.)

उजमणा (क्रि. स.) उद्यापन करना।

उजर (पुं.) आपत्ति। **उज्र** (हि.)

उजळवाणा (क्रि. स.) 1. आभूषणों को उजलवाना, 2. चमकवाना। **उजलवाना** (हि.)

उजळा (वि.) दे. ऊजला।

उजवाणा (क्रि. स.) उँडेलवाना, 'उँडेलने' का कार्य अन्य से करवाना।

उजागर (वि.) दे. उजाग्गर।

उजाग्गर (वि.) 1. स्पष्ट, 2. प्रकाशित। **उजागर** (हि.)

उजाड़ (पुं.) हानि–झोट्टे नैं खेत्ताँ मैं घणा उजाड़ कर दिया; (स्त्री.) 1. उजड़ा हुआ स्थान–चोर बारा दूणी उजाड़ में पहौंचगे, 2. गहन जंगल; **बारा दूणी~** भयंकर जंगल।

उजाड़णा (क्रि. स.) 1. लुटाना, 2. खेती में सब्जी आदि कम होने पर पशुओं को चरने के लिए छोड़ना, 3. नष्ट करना। **उजाड़ना** (हि.)

उजाड़ना (क्रि. स.) दे. उजाड़णा।

उजाड़ा (पुं.) वह दंड जो किसी व्यक्ति को अन्य के पशुओं द्वारा की गई हानि की क्षतिपूर्ति के रूप में दिलाया जाए।

उजाळळणा (क्रि. स.) 1. कम दिखने वाली या अस्पष्ट वस्तु पर पुनः रंग आदि फेरना, 2. आभूषणों को तेज़ाब आदि से चमकाना, 3. चमकाना, निखारना, 4. उद्धार करना। **उजालना** (हि.)

उजालना (क्रि. स.) दे. उजाळणा।

उजाला (पं.) 1. प्रकाश, 2. प्रसन्नता। **उजाला** (हि.)

उजाळा (पुं.) दे. उजाळा।

उजास (स्त्री.) चमक।

उजियारा (पुं.) दे. उजाळा।

उजीर (पुं.) मंत्री. **वज़ीर** (हि.)

उजेणा/उजेवणा (क्रि. स.) उँडेलना, एक पात्र से दूसरे पात्र में डालना।

उज्जड़ (वि.) दे. ऊज्जड़।

उज्जड़ खेड़ा (पुं.) दे. ऊज्जड़ खेड़ा।

उज्जड़ डेरा (पुं.) दे. ऊज्जड़ खेड़ा।

उज्जड़ बटूर (पुं.) मूर्ख।

उझळणा (क्रि. अ.) पात्र आदि में किसी वस्तु का न समाना और बाहर की ओर गिरना या बहना। **उझरना** (हि.)

उझलना (क्रि. अ.) दे. उझळणा।

उटकणा (क्रि. अ.) लिंग का स्तंभित होना; (वि.) जो शीघ्र स्तंभित हो।

उटणा (कि. अ.) सहन होंना।

उट्ठाबैट्ठी (स्त्री.) 1. मेल-मिलाप, 2. आवा जाही, 3. प्रजनन से पूर्व पशु की उठने-बैठने की क्रिया। **उठ बैठ** (हि.)

उठत (स्त्री.) एक गायन शैली।

उठना (क्रि. अ.) दे. ऊठणा।

उठवाना (क्रि. स.) दे. ठवाणा।

उठाईगीर (पुं.) आँख बचा कर चीज़ें उठाने वाला, चोर।

उठाऊ (वि.) वह वस्तु जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर रखी जा सके, जैसे– उठाऊ चक्की, उठाऊ चूल्हा।

उठाण (पुं.) 1. वृद्धि, बढ़ने का ढंग, 2. शारीरिक विकास, 3. 'ढलाण' का विलोम। **उठान** (हि.)

उठाणा (क्रि. स.) दे. ठाणा।

उठान (स्त्री.) दे. उठाण।

उठाना (क्रि. स.) दे. उठाणा।

उठावणा (क्रि. स.) दे. ठाणा।

उठावणी (स्त्री.) मृतक की एक रस्म।

उठीड़ा (पुं.) उठने का भाव–हे, दे उठीड़ा कात्तक मास।

उठै (क्रि. वि.) वहाँ (सीमित प्रयोग– दुजाणा-बेरी के क्षेत्र में), 1. दे. उत्तै, 2. दे. उत।

उड़ंछू (क्रि. वि.) 1. उड़ता हुआ, 2. रहस्यमय रूप से लुप्त। **उड़न छू** (हि.)

उड़ंत (क्रि. वि.) उड़ता हुआ।

उड़णा (क्रि. अ.) 1. हवा में उड़ना, 2. फीका पड़ना, 3. तेज़ दौड़ना, 4. फहराना, हिलना, 5. छितरना, 6. बात फैलना; **~(– ती) सी बात** 1. अफ़वाह, 2. वह बात जिसकी जानकारी किसी-किसी को हो। **उड़ना** (हि.)

उड़द (स्त्री.) 1. उड़द की दाल, उरद, 2. इस दाल का पौधा; **~पै सफेदी** 1. कम प्रभाव, 1. नगण्य मात्र।

उड़दी[1] (स्त्री.) 1. उड़द की दाल, 2. उड़द की मंगोड़ी; (वि.) उड़द की बनी हुई।

उड़दी[2] (स्त्री.) पोशाक, किसी संस्था द्वारा निर्धारित पोशाक। **वरदी** (हि.)

उड़दू (स्त्री.) उर्दू भाषा जिसकी लिपि दाएँ से बाएँ लिखी जाती है।

उड़न खटोला (पुं.) दे. उड़न खटोल्ला।

उड़न खटोल्ला (पुं.) 1. आकाश में उड़ने वाला खटोला, 2. काल्पनिक वायुयान। **उड़न खटोला** (हि.)

उड़न छू (वि.) दे. उड़ंछू।

उड़ली-दुलड़ी (स्त्री.) एक प्रकार के आभूषण।

उडवाणा (क्रि. स.) उड़वाना, उड़ाने का काम अन्य से करवाना।

उडाऊ (वि.) बिना सोचे-समझे खर्च करने वाला, फ़िज़ूलख़र्च।

उडाक्कू (वि.) तेज़ दौड़ने वाला; (पुं.) भगोड़ा। **उड़ाकू** (हि.)

उडाण (पुं.) बैलगाड़ी के ऊपरी भाग में लगे दो मोटे लंबे लट्ठे; (स्त्री.) 1. उड़ने की क्रिया, 2. कल्पना शक्ति। **उड़ान** (हि.)

उडाणा (क्रि. स.) 1. हवा में फैलाना, उड़ने के लिए प्रवृत्त करना, 2. अफ़वाह फैलाना, 3. चुराना, 4. मिटाना, 5. झूठा दोष लगाना, 6. बात टालना, 7 अपहरण करना, 8. फहराना, लहराना, 9. खर्च करना। **उड़ाना** (हि.)

उड़ान (स्त्री.) दे. उड़ाण।

उड़ाना (क्रि. स.) दे. उड़ाणा।

उडामणा/उडावणा (क्रि. स.) दे. उडाणा।

उडार (पुं.) बैलगाड़ी के ऊपरी ढाँचे में आगे-पीछे लगने वाली लकड़ी विशेष; (वि.) उड़ने के योग्य।

उडारी (स्त्री.) पक्षियों की उड़ान, शावकों की उड़ान; **~भरणा/लेणा** 1. शावकों द्वारा पहली बार उड़ान भरना, 2. बहुत ऊँचे उड़ना, 3. बड़ी कल्पना करना, हवाई महल बनाना, 4. चंपत होना।

उड़िया (पुं.) उड़ीसा प्रदेश का वासी– उड़िया माँग्गै खीचड़ी, बंगाल्ली माँग्गै भात जी। साधु माँग्गै दरस, महा परसाद जी।। (स्त्री.) उड़ीसा प्रदेश की भाषा; (वि.) उड़ीसा प्रदेश से संबंधित।

उड़ै (अव्य.) वहाँ, (दे. ऊड़ै); **~ए** वहाँ ही; **~कै** 1. वहाँ से, 2. वहाँ होकर; **~तै** वहाँ से; **~नैं** उधर, उधर को; **~सी** वहीं कहीं।

उण (उप.) न्यून, कम–उणसठ (एक कम साठ), उन्नीस (एक कम बीस), (दे. उन)।

उणमण (पुं.) आकाश में बादल होने की स्थिति; **~छ्याणा/होणा** आकाश में बादल छाना।

उणसट (वि.) उनसठ की संख्या। **उनसठ** (हि.)

उणहत्तर/उणहेंत्तर (वि.) उनहत्तर की संख्या। **उनहत्तर** (हि.)

उणासी (वि.) उनासी की संख्या। **उनासी** (हि.)

उणास्सा (पुं.) परिवार।

उणिहार (वि.) तुल्य। **अनुहार** (हि.)

उणेनचा (वि.) उनचास की संख्या। **उनचास** (हि.)

उत (क्रि. वि.) 1. वहाँ, 2. उस ओर; **~ओड़** उस ओर, उधर।

उतणा (वि.) उस आकार, मात्रा आदि का। **उतना** (हि.)

उतणी (वि.) उस मात्रा या आकार आदि की। **उतनी** (हि.)

उतना (वि.) दे. उतणा।

उतपात्ती (पुं.) उत्पात करने वाला। **उत्पाती** (हि.)

उतरण (स्त्री.) उतरे हुए पुराने कपड़े। **उतरन** (हि.)

उतरणा (क्रि. अ.) 1. नीचे आना, 2. मन से हटना, भूल जाना, 3. शरीर की हड्डी का अपने स्थान से हटना, 4. आगमन होना (बड़े या सम्मानित व्यक्ति का), 5. रंग आदि का उड़ना, (दे. ऊत्तरणा)। **उतरना** (हि.)

उतरन (स्त्री.) दे. उतरण।

उतरना (क्रि. अ.) दे. उतरणा।

उतरवाणा (क्रि. स.) उतारने में सहायता करना।

उतरवाना (क्रि. स.) दे. उतरवाणा।

उतरा[1] (पुं.) 1. ढलान, 2. 'चढा' का विलोम, 3. उतरा हुआ वस्त्र, पुराना वस्त्र। **उतरान** (हि.)

उतरा[2] (वि.) दे. उतराही।

उतराई (स्त्री.) 1. ढलान, 2. वह रस्म जो दुल्हन के पहली बार आने पर द्वार पर की जाती है; **~चढ़ाई** 1. ऊँचा- नीचा स्थान, 2. उतरने-चढ़ने की क्रिया।

उतराऊ (वि.) कपड़े या घड़े आदि का पुराना होने के कारण त्याज्य होने का भाव, उतारने या हटाने योग्य।

उतरा चढ़ा (अव्य.) उतराई-चढ़ाई। (पुं.) तर्क वितर्क का भाव। पक्ष-विपक्ष का भाव। उदा.-सौ सौ उतरा चढ़ा दिए कोए हिरदे बात धरी ना। (लचं.)

उतरादा (वि.) दे. उतराहा।

उतराही (स्त्री.) उत्तर दिशा से आने वाली वायु; (क्रि. वि.) उत्तर दिशा की ओर।

उतारणा (क्रि. स.) 1. पार लगाना, 2. मुक्ति देना, 3. अंदर डालना, 4. हटाना, अलग करना, 5. भवसागर पार कराना। **उतारना** (हि.)

उतारना (क्रि. स.) दे. उतारणा।

उतारा (पुं.) जादू-टोना को उतारने के लिए चौराहे आदि पर रखी गई सामग्री।

उतावला (वि.) ज़ल्दबाज़।

उतावली (स्त्री.) ज़ल्दबाज़ी, शीघ्रता।

उत्कल (पुं.) ब्राह्मणों का एक वर्ग, पाँच गौड़ों में से एक वर्ग।

उत्तम (वि.) श्रेष्ठ-उत्तम खेत्ती बाण। मध्यम बाण।।

उत्तर (पुं.) 1. जवाब, 2. उत्तर दिशा।

उत्तानपाद (पुं.) ध्रुव भक्त के पिता।

उत्तै (क्रि. वि.) 1. वहीं, 2. वहीं पर।

उत्पत्ति (स्त्री.) 1. आरंभ, 2. जन्म, पैदाइश, 3. सृष्टि।

उत्पन्न (वि.) पैदा की हुई, निपजी हुई।

उत्पात (पुं.) उपद्रव।

उत्पात्ती (वि.) उपद्रवी, (दे. उपाद्धी)।

उत्पादन (पुं.) पैदावार, (दे. निपज)।

उत्सव (पुं.) त्योहार।

उत्साह (पुं.) हौसला, हिम्मत।

उत्सुक (वि.) उत्कंठित।

उथलणा (क्रि. स.) 1. पलटना, 2. गहरा हल चला कर नीचे की मिट्टी को ऊपर करना, 3. रजाई का नीचे का पाट ऊपर करना आदि, 4. कुश्ती में किसी को चित्त करना, 5. पटकी लगाना; (क्रि. अ.) स्वतः उलट जाना, पलटना। **उथलना** (हि.)

उथलना (क्रि. स.) दे. उथलणा।

उथल-पुथल (स्त्री.) 1. ऊपर-नीचे होने या करने की क्रिया, 2. घबराहट, उलट-पुलट; **~आणा/होणा** 1. भयंकर अराजकता होना, 2. विनाश होना।

उथला पुथली (स्त्री.) चीज़ों को उलट-पुलट करने का भाव।

उदंबर (पुं.) दे. अनेरा।

उदड़कणा (क्रि.) काँपना, उदा.-शीश काट के धर देना मेरा डर में गात उदड़कै सै।

उदय (पुं.) निकलना (विशेषत: सूर्य आदि का)।

उदयाचल (पुं.) पर्वत जहाँ से सूर्य निकलता है।

उदर (पुं.) पेट।

उदलणा (क्रि. स.) किसी वस्तु को तलाशने के लिए चीज़ों को उलट-पुलट करना। **उदलना** (हि.)

उदला उदली (स्त्री.) दे. उथला पुथली।

उदला सुथली (स्त्री.) दे. उथला पुथली।

उदार (वि.) विशाल हृदय वाला।

उदालक (पुं.) उद्दालक ऋषि।

उदासी (वि.) खिन्न।

उदासी (स्त्री.) दे. उदास्सी।

उदासीन (पुं.) एक साधु संप्रदाय।

उदास्सी (स्त्री.) उदास होने का भाव; (पुं.) 1. उदासी सम्प्रदाय से संबंधित, 3. बैरागी। **उदासी** (हि.)

उदाहरण (पं.) मिसाल।

उदुंबर (पुं.) दे. गूल्लर।

उदेश (पुं.) यथायोग्य सेवा, साधुओं को दिया जाने वाला प्रणाम (यथा-उदेश या आदेश बाबा जी) दे. आदेश।

उद्गम (पुं.) निकास स्थान।

उद्घाटन (पुं.) किसी नए काम को आरंभ करने की रस्म।

उद्दंड (वि.) अक्खड़।

उद्दालक (पुं.) उद्दालक नाम के ऋषि, (इनका आश्रम स्याण ग्राम, जिला महेंद्रगढ़ से एक मील की दूरी पर जंगल में मानते हैं)। **उद्दालक** (हि.)

उद्देश्य (पुं.) आशय, मतलब।

उद्धल (पुं.) आल्हा-ऊदल काव्य की लोक कथा का एक पात्र, (दे. ऊधल)। **ऊदल** (हि.)

उद्धव (पुं.) श्री कृष्ण के मित्र।

उद्धार (पुं.) मुक्ति।

उद्यम (पुं.) 1. परिश्रम, प्रयत्न, 2. रोज़गार।

उद्यमी (वि.) परिश्रमी।

उद्यान (पुं.) बाग, बगीचा।

उद्यापन (पुं.) दे. उजमण।

उद्योग (पुं.) 1. प्रयत्न, 2. कारख़ाना, 3. काम-धंधा।

उधड़णा (क्रि. अ.) 1. सिलाई खुलना, खुलना, 2. आवरण हटना, 3. रहस्य उद्घाटन होना। **उधड़ना** (हि.)

उधड़ना (क्रि. अ.) दे. उधड़णा।

उधम (स्त्री.) दे. ऊध।

उधमस (पुं.) 1. ऊधम, 2. शोर, 3. विनाश, 4. लड़ाई; **~करणा/तारणा /मचाणा** 1. शोर मचाना, 2. विनाश करना, 3. लड़ाई करना, 4. हुल्लड़ बाजी करना।

उधर (क्रि. वि.) दे. ऊँधै।

उधळणा (क्रि.) दे. ऊद्धळणा।

उधाणा (क्रि. स.) 1. लुटाना, 2. औंधा करना।

उधार (पुं.) ऋण।

उधेड़ (स्त्री.) 1. उधेड़ने की क्रिया, 2. चिंतन, उधेड़बुन–भई किस उधेड़ में पड़ग्या?; (क्रि. स.) 'उधेड़णा' क्रिया का आदे. रूप।

उधेड़णा (क्रि. स.) 1. सिलाई खोलना, 2. तेज़ पिटाई करना, 3. खलिहान में पड़े गेहूँ आदि के ढेर को गाहने के लिए फैलाना, 4. बीती बातों का रहस्य खोलना। **उधेड़ना** (हि.)

उधेड़ना (क्रि. स.) दे. उधेड़णा।

उधेड़बुण (स्त्री.) सोच विचार, असमंजस। **उधेड़बुन** (हि.)

उधेड़बुन (स्त्री.) दे. उधेड़बुण।

उन[1] (सर्व.) 'वह' सर्वनाम का बहुवचन।

उन[2] (उप.) कम, (दे. 'उण')।

उनमन (पुं.) दे. उणमण।

उनमान (पुं.) 1. अंदाज़ा, 2. सामर्थ्य, 3. हिस्सा; **~सिर** 1. अंदाज़े से, 2. हिस्से के अनुसार। **अनुमान** (हि.)

उनसठ (वि.) दे. उणसट।

उनहत्तर (वि.) दे. उणहत्तर।

उनहार (वि.) दे. उणिहार।

उनींदा (वि.) ऊँघता हुआ।

उन्नति (स्त्री.) तरक्की।

उन्नी (वि.) उन्नीस की संख्या; **~बीस का फरक** साधारण अंतर। **उन्नीस** (हि.)

उन्नैं (सर्व.) 'वह' सर्वनाम का कर्ता और कर्म कारक का एकवचन का रूप, उसने।

उन्नैंह (सर्व.) उन्हें।

उन्मन (वि.) खिन्न।

उन्माद (पुं.) 1. चित्त-विभ्रम, 2. नशा।

उन्मादक (वि.) नशा करने वाली (वस्तु)।

उन्ह (सर्व.) उन।

उपंग (वि.) अपंग।

उपकार (पुं.) भलाई।

उपकारी (वि.) भलाई करने वाला।

उपचार (पुं.) इलाज़।

उपज (स्त्री.) दे. निपज।

उपजणी (वि.) उर्वरा (भूमि)।

उपजाना (क्रि. अ.) दे. निपजाणा।

उपड़णा (क्रि. अ.) 1. आघात का निशान पड़ना–बुळध कै न्यूँ के न्यूँ साँट्टे उपड़ र्‌हे सैं, 2. पित्त आदि निकलना, 3. अंकित होना, 4 गीली मिट्‌टी पर किसी वस्तु के निशान उभरना, 5. पपड़ी उखड़ना, 6. फुंसी का एक अंग या स्थान से दूसरी जगह फैलना, (दे. ऊप्पड़णा)। **उपड़ना** (हि.)

उपदेश (पुं.) दे. उपदेस।

उपदेशक (पुं.) उपदेश करने वाला।

उपदेस (पुं.) 1. सीख, 2. आदेश। **उपदेश** (हि.)

उपद्दर (पुं.) लड़ाई-झगड़ा। **उपद्रव** (हि.)

उपद्रव (पुं.) दे. उपद्दर।

उपद्रवी (वि.) 1. नटखट, 2. ऊधमी।

उपनयन (पुं.) दे. जनेऊ।

उपनाम (पुं.) प्रचलित या पुकारने का नाम।

उपनिषद् (पुं.) हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थ जिनके अधिकांश भाग की रचना हरियाणा में हुई।

उपमा (स्त्री.) तुलना।

उपयुक्त (वि.) उचित, ठीक।

उपयोग (पुं.) इस्तेमाल, प्रयोग।

उपयोगी (वि.) लाभदायक।

उपरम (पुं.) त्याग, उपराम। उदा.–सम दम उपरम सात धाम, कुछ संयम, यज्ञ भी करता हो। (लचं.)

उपराळा (पुं.) भरण पोषण।

उपराह्न (वि.) वह बंजर भूमि जिसका पानी ढलान की तरफ बह जाए। ऊपर, टीले वाला (खेत)।

उपरोतिया (पुं.) खाती या बढ़ई की एक उपजाति या गोत।

उपला (पुं.) दे. गोस्सा।

उपवन (पुं.) छोटा वन।

उपवास (पुं.) दे. बरत।

उपस्थित (वि.) हाज़िर।

उपहार (पुं.) भेंट।

उपा (पुं.) 1. प्रबंध, व्यवस्था, 2. इलाज़, 3. यत्न 4. जादू-टोना; **~करणा/बाँधणा** कठिनाई से बचने के लिए अग्रिम व्यवस्था करना। **उपाय** (हि.)

उपाओ (पुं.) दे. उपा.।

उपाड़ (पुं.) उपड़ने का भाव।

उपाद्धी (वि.) उत्पात करने वाला, (दे. उपाध)। **उपाधी** (हि.)

उपाध (स्त्री.) 1. उत्पात, 2. शरारत, 3. झगड़ा, 4. प्रमाणपत्र; **~करणा/तारणा** ऊधम मचाना, उत्पात करना; **~लागणा** 1. शरारत सूझना, 2. उत्पात करने की सोचना। **उपाधि** (हि.)

उपाधण (वि.) 1. नित्य नई शरारत करने वाली, 2. झगड़ालू (महिला)।

उपाधि (स्त्री.) दे. उपाध।

उपाध्याय (पुं.) दे. पाद्धा।

उपाय (पुं.) दे. उपा।

उपासक (वि.) उपासना करने वाला।

उपासना (स्त्री.) पूजा-पाठ।

उफ़ (अव्य.) पीड़ा, विषाद आदि प्रकट करने वाला शब्द।

उफणणा (क्रि. अ.) 1. उबलना, फेन बाहर गिरना, 2. आपे से बाहर होना, 3. क्रोधित होना। **उफनना** (हि.)

उफरणा (क्रि.अ.) अफारे से पेट का फूलना, अफारा आना।

अफराना (हि.)

उफाण (पुं.) 1. उबाल, 2. उबाल के समय ऊपर आए हुए झाग; **~दूध सा** अचानक होने वाली घटना–के बेरा किस बखत बाळक हो ज्या यो तै दूध का सा उफाण सै। **उफान** (हि.)

उफाणणा (क्रि. स.) 1. उबाला देना, 2. क्रोधित करना। **ऊफानना** (हि.)

उफान (पु.) दे. उफाण।

उफारा (पुं.) 1. अफारा, वायु से पेट का फूलना, 2. उन्माद; **~आणा/चढणा/होणा** 1. कोई अखाद्य पदार्थ खाने या पेट के आंतरिक रोग से पेट का फूलना, 2. उन्माद या अभिमान होना। **अफरा** (हि.)

उबकाई (स्त्री.) 1. उल्टी, कै, 2. जी मितलाने का भाव।

उबटण (पुं.) शादी-विवाह के अवसर पर वर-वधू के शरीर पर मलने के लिए आटे, तेल, हल्दी का बनाया लेप, (दे. बटणा[2])। **उबटन** (हि.)

उबटन (पुं.) दे. उबटण।

उबरणा (क्रि. अ.) 1. बाकी बचना, 2. उद्धार होना, 3. छूट मिलना। **उबरना** (हि.)

उबरना (क्रि. अ.) दे. उबरणा।

उबर्‌या उबर्‌याया (वि.) 1. बचा-खुचा, 2. बासी-कूसी।

उबळणा (क्रि. अ.) 1. खौलना, 2. क्रोधित होना, 3. ईर्ष्या-द्वेष से भरना। **उबलना** (हि.)

उबळवाणा (क्रि. स.) किसी भी तरल पदार्थ को किसी अन्य से उफान या उबाल दिलवाना। **उबलवाना** (हि.)

उबाद (स्त्री.) 1. कुकर्म, 2. शरारत, 3. झगड़ा, तुल. अळबाध, (दे. उपाध)। **उपाधि** (हि.)

उबाधन (वि.) दे. उपाधण।

उबाधिया (वि.) 1. शरारती, 2. झगड़ालू, (दे. उपाद्धी)।

उबारणा (क्रि.स.) बचाना। **उबारना** (हि.)

उबाळ (पुं.) 1. उफान, 2. क्रोध। **उबाल** (हि.)

उबाल (पुं.) दे. उबाळ।

उबाळणा (क्रि. स.) 1. औटाना, 2. पकाना, राँधना। **उबालना** (हि.)

उबालना (कि. स.) दे. उबाळणा।

उबाळा (पुं.) 1. उबालने की क्रिया, 2. क्रोध; **~देणा** उबालना। **उबाल** (हि.)

उबासी (स्त्री.) दे. जम्हाई।

उबेर (पुं.) दे. चरणी। तुल. उबेरा।

उभय घड़ी (स्त्री.) दो घड़ी।

उभरणा (क्रि. अ.) 1. उकसना, ऊपर उठना, 2. शरीर में शक्ति आना, शरीर विकसित होना, 3. फुंसी-फोड़े या चोट का बढ़ना, 4. शत्रु द्वारा सिर उठाना। **उभरना** (हि.)

उभरना (क्रि. अ.) दे. उभरणा।

उभरमाँ (वि.) 1. उभरा हुआ, कुछ ऊपर उठा हुआ–भरमाँ गात उभरमाँ छात्ती, 2. तुलना में कुछ श्रेष्ठ। **उभरवाँ** (हि.)

उभराणा (क्रि.) दे. उभारणा।

उभाणा (वि.) 1. जिसके पैर में जूती न हो, नंगे पैर–अक्कल बिना ऊँट उभाणा, 2. जिसके सिर पर पगड़ी न हो–धन सिंह उभाणे पाँ अर उभाणे सिर भाज लिया।

उभार (पुं.) उठाव।

उभारणा (क्रि. स.) 1. उकासना, 2. उजालना, 3. भड़काना, 4. प्रकाश में लाना, 5. प्रसिद्धि दिलाना।

उमंग (स्त्री.) आनंद। उल्लास। 1. दे. झोल[1] 2. दे. तरंग।

उमगणा (क्रि. अ.) 1. बहुत प्रसन्न होना, 2. लालायित होना। **उमगना** (हि.)

उमड़णा (क्रि. अ.) 1. अधिक प्यार प्रदर्शित करना–के घणा हेज उमड़ा री सै, 2. फैलना, जैसे–भीड़ आदि का उमड़ना, 3. जोश में आना। **उमड़ना** (हि.)

उमड़ना (क्रि. अ.) दे. उमड़णा।

उमर (स्त्री.) 1. आयु, जीवन-काल, 2. अवस्था; **~पाणा** दीर्घायु होना। **उम्र** (हि.)

उमर बेल (स्त्री.) अमर बेल, सदा हरी रहने वाली एक बेल विशेष; **~बधणा** दीर्घायु होना।

उमरा (स्त्री.) वह भूमि जिसमें सिंचाई के बिना रबी की फसल पैदा होती है; (वि.) दीर्घायु का; (पुं.) दरबार में सम्मानित व्यक्ति।

उमस (स्त्री.) 1. वायु न चलने या बादल घुटने के कारण उत्पन्न गरमी, 2. घुटन।

उमसणा (क्रि. अ.) उमस होना, (दे. उमस)।

उमा (स्त्री.) दे. पारबती।

उमान (स्त्री.) दे. चरणी।

उमासणा (क्रि.) विवाह आदि का दिन निश्चित करना। दे. साहा साधणा।

उमाह (पुं.) 1. उत्साह, 2. प्रेम; **~ऊठणा /पाटणा** अधिक प्रेम जाग्रत होना।

उमाहणा (क्रि. अ.) 1. उमगाना, 2. अपने बछड़े को देख कर चाटने या दूध पिलाने के लिए आतुर होकर गाय का रँभाना।

उमेद (स्त्री.) उम्मीद, अभिलाषा, आशा।

उम्मीदवार (वि.) 1. आशा रखने वाला, 2. पदाभिलाषी।

उम्र (स्त्री.) दे. उमर।

उरणा (क्रि.) दे. उफारा आणा।

उरणाणा (क्रि. अ.) बीजते समय ओरणे के निचले छिद्र में मिट्टी भर जाना, (दे. ओरणा)।

उरणिया (पुं.) भेड़ का नर बच्चा। दे. बोक।

उरध (क्रि. वि.) ऊपर, ऊपर की ओर। **ऊर्ध्व** (हि.)

उरध लोक (पुं.) स्वर्ग। **ऊर्ध्व लोक** (हि.)

उरबसी (स्त्री.) 1. एक अप्सरा, 2. बहुत सुंदर स्त्री। **उर्वशी** (हि.)

उरला (वि.) 1. इधर का, 2. 'परला' का विलोम; **~परला** इस ओर, उस पार का–गंगाजी के उरले-परले पार।

उरळू (पुं.) मोटी-गोल आँखों का पक्षी जिसे दिन में दिखाई नहीं देता; **~बोलणा** 1. स्थान का निर्जन होना या उजड़ना, 2. अपशकुन की आशंका होना, 3. सर्वनाश होना। **उल्लू** (हि.)

उरही (स्त्री.) भैंसा (झौट्टा) या भैंस को बुलाने के लिए उच्चरित शब्द या ध्वनि, 2. चिढ़ाने के लिए उच्चरित शब्द; (पुं.) 1. मूर्ख व्यक्ति, 2. भैंसा।

उरा (क्रि. वि.) 1. इधर, 2. इधर आओ; **~कै** इधर से।

उरै (क्रि. वि.) दे. उरा।

उरै-परै (अव्य.) आस-पास, इधर-उधर, यहीं-कहीं।

उर्दू (स्त्री.) दे. उड़दू।

उर्वशी (स्त्री.) दे. उरबसी।

उर्स (पुं.) 1. एक मुसलमानी त्योहार, 2. मुसलमान साधु की निर्वाण तिथि।

उल (स्त्री.) छोटा चूल्हा।

उळक-ढुळक (वि.) बेतरतीब।

उळगा (वि.) कम भारी, हल्का; (पुं.) 1. अवकाश, फ़ुर्सत, 2 फसल का एक रोग जिसमें पौधे सूख जाते हैं; **~करणा** 1. ज़िम्मेदारी कम करना, 2. भार कम करना, 3. अनुशासन ढीला करना; **~होणा** 1 हल्का अनुभव करना, 2 अवकाश मिलना।

उळगास (स्त्री.) 1. अवकाश, फ़ालतू समय, 2. हल्का अनुभव करने की स्थिति या भाव।

उळछणा (वि.) 1. उल्टे लक्षणों वाला, 2. कुमार्गी। **कुलछना** (हि.)

उळझणा (क्रि. अ.) 1. फँसना, 2. जाल में फँसना, 3. बाल, रस्सी आदि का उलझना, 4. लड़ाई-झगड़ा करना, 5. लपेट में आना, 6. किसी काम में पूरी तरह संलग्न होना, 7. कठिनाई में पड़ना, 8. अटकना, 9. आसक्त होना। **उलझना** (हि.)

उलझन (स्त्री.) 1. बाधा, 2. समस्या, 3. परेशानी।

उलझना (क्रि. अ.) दे. उळझणा।

उलट (वि.) 1. विपरीत, 2. आशा के विपरीत, 3. औंधा, 4. 'पलट' का विलोम; (स्त्री.) वापसी; (क्रि. स.) 'उलटणा' क्रिया का आदे. रूप; **~कहणा** 1 जवाब देना, 2. विरोध करना, 3. गाली देना।

उळटणा (क्रि. अ.) 1. पीछे मुड़ना, 2. विरुद्ध होना, 3. बेहोश होना, 4. मुकरना; (क्रि. स.) 1. पलटना, 2. पटकना। **उलटना** (हि.)

उलट-पलट (स्त्री.) 1. अस्तव्यस्त, 2. गड़बड़, 3. अदल-बदल।

उलट पाह्याँ (क्रि. वि.) तुरंत (लौटना), उलट पैर।

उलट फेर (स्त्री.) 1. गड़बड़, 2. हेरफेर, 3. हाथ की सफाई।

उलट बास्सी (स्त्री.) घुमा-फिरा कर कही गई बात, गूढ़ोक्ति–पाप्पी पाप्पी तिर गए, धरमी तिर्या न कोए। ऐसा हिये बिचार कै, पाप करो सब कोए।। (यहाँ 'पापी' इंद्रियों का दमन करने वाले और 'धरमी' भोग भोगने वालों के लिए प्रयुक्त हुआ है)।

उलटमाळा (स्त्री.) हानि करने की कामना।

उलट सुलट (स्त्री.) 1. उलटा-सुलटा, 2. हेर फेर, 3. समझौता या निपटारा–तूँ हे उलट सुलट लिए, मेरे बस की नाँह सै।

उलटा (पुं.) 1. विपरीत आचरण करने वाला, 2. विलोम; (क्रि. स.) 'उलटणा' क्रिया का भू. का. एक व. पुं. रूप।

उलदणा (क्रि.) 1. उलटना, 2. उतारना।

उलळणा (क्रि. अ.) पीछे अधिक भार होने के कारण गाड़ी का पीछे की ओर उलटना या झुकना।

उलसंड (पुं.) श्वास नलिका में किसी पदार्थ के फँसने से उत्पन्न खाँसी।

उलहार (स्त्री.) उल्लास।

उलाँकणा (क्रि. स.) 1. लाँघना, 2. पैर के नीचे से गुजारना (लोगों की धारणा के अनुसार यदि छोटे बच्चे को उलाँघ दिया जाए तो वह कम बढ़ता है और एक बार फिर वापिस लाँघने से वह सुलाँघा जाता है), 3. छलाँगना, 4. कहना न मानना, 5. बात को बीच में काटना, 6. रास्ता काटना; (क्रि.स.) घोड़ी, गधी आदि पर पहले-पहल चढ़ना; **~सुलाकणा** 1. आगे-पीछे कूदना, 2. उलाँघे हुए को पुनः विपरीत दिशा से लाँघना, 3. अस्थिर अवस्था में होना। **उलाँघना** (हि.)

उलाँड (पुं.) दंगा, शरारत।

उलाँडणा (कि. स.) दे. उलाँकणा।

उला (पुं.) चूल्हे के पीछे का स्थान।

उलाई (पुं.) टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता। दे. ओळ।

उलाक्खा (वि.) 1. नेत्रहीन, 2. जिसको कम दिखाई दे, 3. 'सुलाक्खा' का विलोम, 4. विपरीत आचरण वाला; **~सुलाक्खा** विकलांग, अंधा-काना।

उलाद (स्त्री.) 1. संतान, बाल-बच्चे, संतति, 2. वंश परंपरा; **~कुलाद होणा** कुल कलंकी संतान होना।
औलाद (हि.)

उलादी (वि.) औलाद वाला।

उळाई (स्त्री.) दे. ओळ।

उलामा (पुं.) दे. उलाहणा।

उलाळवा (पुं.) 1. गाड़ी को खाली करते समय पीछे की ओर लगाया जाने वाला मोटा स्थाणु, 2. 'टेक' का विलोम (क्योंकि 'टेक' गाड़ी के अगले भाग में लगाई जाती है), सहायक; **~लाणा** सहायता करना; **~हटाणा** सहायता देना बंद करना।

उलाळू (स्त्री.) 1. पीछे की ओर अधिक भार होने के कारण गाड़ी का पीछे की ओर झुकाव, 2. 'दबाऊ' का विलोम; **~दबाऊ** चलते समय गाड़ी के भार का झुकाव कभी आगे तथा कभी पीछे होना, 3. अस्थिर चित्त।

उलाहणा (पुं.) 1. उपालंभ, गिला, 2. किसी की भूल या अपराध को उसके सम्मुख रखना, 3. अन्य के माध्यम से अपनी शिकायत पहुँचाने का भाव; **~मोल लेणा** ऐसा कार्य करना जिसके कारण व्यर्थ में उलाहना मिले। **उलाहना** (हि.)

उलीछणा (क्रि.) उलीचना।

उलाहना (पुं.) दे. उलाहणा।

उल्टी (स्त्री.) वमन; (क्रि. स.) 'उलटणा' क्रिया का भूत का. एक व. स्त्री. रूप। **उलटी** (हि.)

उल्लंघन (पुं.) 1. बात को न मानना, टालना, 2. लाँघना।

उल्लू (पुं.) दे. उरलू।

उल्लेख (पुं.) वर्णन।

उस (सर्व.) विभक्तियों के साथ प्रयुक्त 'वह' शब्द का रूप, जैसे–उसको; **~तरियाँ** 1. उस तरह, 2. वैसे तो।

उसणणा (क्रि. अ.) गुँधना, माँडा जाना, (दे. ओसणणा)।

उस दे (स्त्री.) 1. उषा देवी, 2. एक पात्र।

उसा (वि.) 1. वैसा, 2. बुरा–घणा उसा माणस सै।

उसाण[1] (पुं.) चैन की साँस।

उसाण[2] (पुं.) 1. होश, 2. समस्या को प्रत्युत्पन्न मति से सुलझाने का भाव; **~आणा** 1. सुध-बुध से काम लेना, 2. समस्या को सुलझाने के लिए सूझ-बूझ उत्पन्न होना। **औसान** (हि.)

उसाणा (क्रि. स.) खलिहान में मले हुए और कूटे हुए अन्न को जेली या छाज में भर कर दाने और भूसे को हवा में उड़ाकर अलग-अलग करना, बरसाना, (दे. उसारणा)। **ओसाना** (हि.)

उसारणा (क्रि. स.) 1. फावड़े, जेली, लकड़ी आदि से किसी वस्तु को ऊपर उठाना या उछालना, 2. खलिहान में पड़ी फसल से अन्न निकालने के लिए जेली आदि से हवा में उड़ाना। **उसारना** (हि.)

उसारना (क्रि. स.) दे. उसारणा।

उसारा (पुं.) 1. छप्पर, 2. छप्पर का घर, 3. वह घर जिसकी छत छप्पर की हो। **ओसारा** (हि.)

उसास (पुं.) 1. लंबा साँस, 2. चिंत, (दे. साँस्सै)।

उसूल (पुं.) दे. असूल।

उस्टंड (वि.) सामर्थ्य से बाहर का काम। **~लागणा** सामर्थ्य से बाहर का काम सिर पर लेना।

उस्टंडी (वि.) दे. उस्टंड।

उस्तरा (पुं.) उस्तुरा, बाल बनाने का औज़ार, नाई का छुरा।

उस्ताद (पुं.) 1. शिक्षक, 2. मर्मज्ञ; (वि.) 1. चालाक, धूर्त, 2. होशियार, 3. माहिर।

उस्तादनी (स्त्री.) 1. गुरुआनी, 2. अध्यापिका।

उस्तादी (स्त्री.) 1. शिष्यत्व, 2. आचार्यत्व।

उह (अव्य.) पीड़ा द्योतक ध्वनि।

उस्तानी (स्त्री.) उस्ताद की पत्नी।

ऊ

ऊ हिंदी वर्णमाला का छठा स्वर-वर्ण जिसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

ऊँ (अव्य.) 1. प्रश्न, अवज्ञा या क्रोध प्रकट करने के लिए प्रयुक्त शब्द, 2. वैसे–ऊँ तै मैं गया था; (क्रि. वि.) उधर–ऊँ नैं गया होगा; (सर्व) उस–ऊँ नैं करणा होगा; **~एँ** 1 यों ही, वैसे ही, 2. व्यर्थ में, 3. मुफ्त में; **~नैं** 1. उधर को, 2. उसने; **~सी** 1. उधर को, 2. कुछ दूरी पर।

ऊँक्खळ (पुं.) काठ या पत्थर का गहरा बर्तन जिसमें अन्न आदि कूटा जाता है; **~में सिर देणा** कठिनाई मोल लेना। **ऊखल** (हि.)

ऊँखल (पुं.) दे. ऊँक्खळ।

ऊँगणा (क्रि. स.) 1. बैलगाड़ी की धुरी में पटसन, घी, तेल आदि लगाना, ग्रीसिंग, ओवरहालिंग, 2. पटकी देना, 3. रगड़ना, मर्दित करना। **औंगना** (हि.)

ऊँगस्तान (स्त्री.) दे. गूँट्ठी।

ऊँग्गा (पु.) एक काँटेदार झाड़ी जिसके काँटे उल्टे होते हैं, (दे. दिन में तारा)।

ऊँग्घू (वि.) दे. उनींदा।

ऊँघ (स्त्री.) 1. ऊँघने की क्रिया, 2. नींद की झपकी।

ऊँघणा (क्रि. अ.) 1. अलसाना, 2. अर्धनिंद्रा की अवस्था में होना। **ऊँघना** (हि.)

ऊँघना (क्रि. अ.) दे. ऊँघणा।

ऊँघै (क्रि. वि.) उधर, उस ओर।

ऊँच-नीच (स्त्री.) 1. अच्छा-बुरा, 2. छोटा-बड़ा, 3. लाभ-हानि।

ऊँचा (वि.) दे. ऊँच्चा।

ऊँचाई (स्त्री.) दे. उँचाई।

ऊँच्चा (वि.) 1. बड़ा, 2. लंबा, 3. जिसका लटकाव कम हो–ऊँच्चा कुड़ता; **~चोप्पा** लंबे और बाहर निकले हुए दाँत; **~बोल** 1. ताना, व्यंग्य, 2. कठोर वचन, 3. गर्वोक्ति, 4. तेज़ आवाज़, कर्कश आवाज; **~सुणणा** कम सुनाई देना; **~होणा** 1. बड़े पद पर पहुँचना, 2. उकसना, 3. उचकना। **ऊँचा** (हि.)

ऊँच्ची (वि.) 1. ऊँचाई का भाव, 2. बड़ी; **~बात** 1. बड़ी बात, 2. गर्वोक्ति। **ऊँची** (हि.)

ऊँच्ची बोल्ली (स्त्री.) 1. क़र्कश वाणी, 2. हरियाणवी भाषा।

ऊँछणा (क्रि. स.) 1. दाने चुनना, 2. काटना। **ऊँछना** (हि.)

ऊँजळा (वि.) दे. ऊजळा।

ऊँट (पुं.) रेतीले क्षेत्र का लद्दू पशु जिसकी टाँगें और गर्दन लंबी होती हैं; **~किस बिध बैट्ठै** न जाने भाग्य किस ओर पलटा खाए; **~बाहणा** ऊँट को हल, रहँट आदि में जोतना; **~सा** लंबा, लंबे क़द का।

ऊँटकटाला (पुं.) जादू टोने में प्रयुक्त एक वनस्पति।

ऊँटगुडाण (पुं.) धरातल ढालू भूमि।

ऊँटड़ा (पुं.) 1. ऊँट का बच्चा, बोतड़ा, 2. बैलगाड़ी आदि के अगले भाग में जुए के नीचे वाली टेढ़ी-सी लकड़ी जो जुए को भूमि पर टिकने से बचाती है।

ऊँट मटील्ला (पुं.) 1. सर्वनाश, 2. एक वस्त्र विशेष।

ऊँटवान (पुं.) दे. ऊँट वाळ[2]।

ऊँटवाळ[1] (पुं.) एक जाट गोत।

ऊँट वाल[2] (पुं.) ऊँटवान, ऊँटवाला, रहबारी।

ऊँडा (वि.) अगाध। दे. डूँघा।

ऊँड्ढी (स्त्री.) छोटे-गोल सींगों वाली अच्छी नस्ल की भैंस, तुल. रूँह्ढी।

ऊँणा कूँणा (पुं.) छिपने का स्थान, इधर या उधर का कोना; **~ढूँढणा** 1. काम से बचने के लिए छिपना, 2. मुँह छिपाते फिरना।

ऊँणी (स्त्री.) कमी, अपूर्णता का भाव– ऊँणी री माँ ऊँणी, तनैं रात पिरूँद्धी पूणी (हे माँ! तेरा काम अपूर्ण रहेगा क्योंकि तूने रात होने पर कातना आरंभ किया है)।

ऊँद्धा (वि.) 1. जिसका मुँह नीचे की ओर हो, उलटा, 2. पेट के बल लेटा हुआ, तुल. मूँद्धा; **~(– धै) घड़ै पाणी भरणा** विचित्र कार्य कर दिखाना। **औंधा** (हि.)

ऊँह (सर्व.) उस–ऊँहनैं कर्‌या; (स्त्री.) 1. उपेक्षा द्योतक ध्वनि, 2. पीड़ा व्यक्त करने की ध्वनि; **~ढाळ** उस प्रकार से–ऊँहढाळ यो काम हो ज्यागा; **~हूँ** नकारात्मक शब्द, नहीं।

ऊँहटा (वि.) उलटा, विपरीत; **~बोलणा** 1. उलटा बोलना, 2. सामने बोलना।

ऊ (सर्व.) वह (सीमित प्रयोग)।

ऊक (स्त्री.) 1. ग़लती, 2. चूक।

ऊक चूक (स्त्री.) भूल।

ऊकड़ू (पुं.) घुटनों के बल बैठने की क्रिया। **उकड़ू** (हि.)

ऊकणा (क्रि. अ.) 1. चूकना, 2. वार खाली जाना, 3. सामग्री आदि समाप्त होना। **ऊकना** (हि.)

ऊकना (क्रि. अ.) दे. ऊकणा।

ऊकसणा (क्रि.) दे. उकसणा।

ऊक्खड़णा (क्रि. अ.) 1. गड़ी हुई वस्तु का अपने स्थान से हटना, 2. तितर-बितर होना, 3. अलग होना, 4. बिगड़ना, 5. धाक कम होना। **उखड़ना** (हि.)

ऊक्खरणा (क्रि. अ.) 1. खीर या खिचड़ी आदि का अधिक ताप के कारण अंदर से कुछ जल कर लाल होना और परिणामस्वरूप एक गंध विशेष उत्पन्न होना, 2. उखड़ा हुआ अनुभव करना, जम न पाना।

ऊक्खळ (पुं.) दे. ऊँक्खळ।

ऊक्खाँ (स्त्री.) 1. ऊषा, 2. अनिरुद्ध की पत्नी।

ऊख (पुं.) दे. ईंख।

ऊखल (पुं.) दे. ऊक्खळ।

ऊग (स्त्री.) दे. उगाही।

ऊगजणा (क्रि. अ.) 1. अधिक खट्टा होने या बासी होने के कारण दही, आटे आदि का अपनी सतह से ऊपर उभरना तथा उसमें से वायु के बुलबुलों का निकलना, 2. खमीर उठना, 3. उफनना। **उगजना** (हि.)

ऊग्गमणा (पुं.) 1. पूर्व दिशा, वह दिशा जहाँ से सूर्य निकलता है, 2. 'आथमणा' का विलोम; (क्रि. अ.) सूर्योदय होना, उदित होना।

ऊघड़णा (क्रि. अ.) 1. अधिक प्रकाशित होना, 2. पाप-पुण्य सामने आना, 3. भंडा फूटना, 4. वस्त्र हटना। **उघड़ना** (हि.)

ऊचटणा (क्रि. अ.) मन न लगना, (दे. उचटणा)। **उचटना** (हि.)

ऊच्छळ (स्त्री.) 1. पहल, 2. किसी व्यक्ति, खिलाड़ी या प्रतिद्वंद्वी को पहला अवसर देने का भाव, तुल. ऊठ; **~मिलणा** काम करने का सर्वप्रथम अवसर मिलना।

ऊजला (पुं.) 1. उज्ज्वल, 2. प्रकाशित, 3. श्रेष्ठ, 4. सफेद रंग का। **उजला**(हि.)

ऊज्जड़ (वि.) 1. वह स्थान जहाँ बस्ती न हो, निर्जन, 2. जंगल। **उजाड़** (हि.)

ऊज्जड़ खेड़ा (पुं.) 1. वह उभरी हुई कंकरीली भूमि जहाँ किसी समय कोई गाँव था, 2. शापित स्थान, 3. ऊँचा टीला जहाँ कंकर-पत्थर आदि मिलते हों।

ऊज्झळणा (क्रि. अ.) उगरना, किसी पात्र, स्थान, गड्ढे आदि में आवश्यक मात्रा से अधिक द्रव पदार्थ भरने के बाद बाहर निकलना या बहना–इस बार इतणा मींह बरस्या अक झोड़, कूए भी उज्झळगे। **उझलना** (हि.)

ऊठ (स्त्री.) 1. पहल–इस बार तेरी ऊठ सै कोए भी चीज ठाले, 2. किसी के पास उठने-बैठने का संबंध, मेल-जोल; (क्रि. अ.) 'ऊठणा' क्रिया का आदे. रूप।

ऊठणा (क्रि. अ.) 1. खड़ा होना, 2. जागना, 3. ऊँचा होना, 4. मुकाबला करना, 5. बीमारी से छुटकारा मिलना, 6. किसी फुंसी फोड़े का ऊपर आना, 7. मृत्यु को प्राप्त होना, 8 कमी होना, 9. खर्च होना–तेरा के ऊठैगा जै तूँ मेरा काम कर दे। **उठना** (हि.)

ऊठ-बैठ (स्त्री.) 1. मेल-जोल, 2. मित्रता, 3. उठना और बैठना, 4. आवाजाही, (दे. उट्ठा-बैट्ठी)।

ऊड़ै (अव्य.) 1. वहाँ, वहीं पर, 2. 'आड़ै' का विलोम, तुल. उठै, (दे. उड़ै),।

ऊत (वि.) 1 शरारती, 2. बदमाश, 3. मक्कार, 4. जिसके पुत्र नहीं हो निस्संतान, 5. कुपुत्र, अपुत्र; **~जाणा** 1. वंश समाप्त होना, 2. बिना पुत्र के मरना, 3. एक गाली।

ऊतड़ी (वि.) जिसके पीहर में कोई न हो। दे. ऊतणी।

ऊतणी (वि.) वह जो पुत्र को जन्म नहीं दे सके; (स्त्री.) 1. बाँझ, 2. महिलाओं के लिए प्रयुक्त एक अपशब्द; **~राँड** 1. बिना पुत्र जन्मे विधवा होना, 2. महिलाओं के लिए प्रयुक्त एक अपशब्द।

ऊत नपूत (पुं.) जिसके पुत्र नहीं हो।

ऊत नपूत्ती (स्त्री.) 1. वह महिला जिसने पुत्र को जन्म नहीं दिया हो, 2. महिलाओं के लिए प्रयुक्त एक अपशब्द।

ऊतपणा (पुं.) शरारत।

ऊतिया (वि.) शरारती; (पुं.) 1. निष्पुत्र, 2. पुरुषों को दी जाने वाली एक गाली।

ऊतर (पुं.) उत्तर।

ऊत राण्ड (पुं.) एक गाली।

ऊत्तरणा (क्रि. अ.) 1. नीचे आना, 2. भ्रष्ट होने के कारण पात्र का अनुपयोगी

होना, 3. अवतार लेना, (दे. उतरणा)। **उतरना** (हि.)

ऊत्ता (पुं.) 1. वह पुरुष जिसके पुत्र नहीं है, 2. एक गाली; **~नपूत्ता** पुत्रहीन, निस्संतान।

ऊदी अँगिया (स्त्री.) छोटी आँगी।

ऊद्धल (पुं.) उदयसिंह का संक्षिप्त नाम, आल्हा का छोटा भाई, मोहब्बे के चंदेल राजा परमाल के मुख्य वीर सामंतों में से एक; (वि.) वीर। **ऊदल** (हि.)

ऊद्धळणा (क्रि. अ.) दे. ऊधळणा।

ऊध (स्त्री.) 1. उधम, 2. शरारत, 3. अँघाई; **~करणा/मचाणा** उधम करना; **~ना सूध** 1. अता-पता न मिलने का भाव, 2. होश-हवास खोने का भाव; **~लागणा** 1. उत्पात करने की सोचना, 2. उधमी बनना।

ऊधम (पुं.) शरारत, उठा पटक। **उधम** (हि.)

ऊधळणा (क्रि. अ.) महिला का पर-पुरुष के साथ सहमति से भाग निकलना।

ऊधळी (स्त्री.) 1. ऐसी महिला जिसने पति को छोड़कर अन्य घर बसा लिया हो, 2. चरित्रहीन औरत; **~का** चरित्रहीन महिला का पुत्र।

ऊध सूध (स्त्री.) सुध-बुध, होश-हवास, सुधि।

ऊनी (वि.) दे. ऊन्नी।

ऊन्ना (वि.) 1. वह (पशु) जिसके (पूरे) दाँत नहीं उगे हों, 2. न्यून, तुलना में कम।

ऊन्नी (वि.) ऊन का बना (वस्त्र)।

ऊपर (क्रि. वि.) दे. ऊप्पर।

ऊपरी (वि.) 1. ऊपर का, 2. बनावटी, 3. नक़ली, 4. फालतू।

ऊपला (पुं.) 1. दे. थेपड़ी, 2. दे. गोस्सा, 3. दे. आरणा।

ऊप्पड़णा (क्रि. अ.) 1. शरीर की चमड़ी पर दानेदार फुंसी आदि निकलना, 2. गीला कपड़ा पहनने से त्वचा पर दाग़ पड़ना, 3. चोट के कारण चमड़ी पर उठाव आना, 4. ज़मीन पर पतली सी पपड़ी उठना, 5. उभरना, (दे. उपड़णा)। **उपड़ना** (हि.)

ऊप्पर (क्रि. वि.) ऊपर; **~तळी के वे** बच्चे जिनकी उम्र में अधिक अंतर न हो; **~आळा** 1. ऊपर वाला, 2. ईश्वर।

ऊब (स्त्री.) 1. चित्त का उचटना, 2. विकर्षण, 3. उकताहट।

ऊबड़ खाभड़ (वि.) 1. जो समतल न हो, 2. कठिन या दुर्गम।

ऊबणा (क्रि.) उदय होना, उगना।

ऊबणा (क्रि. अ.) उकताना।

ऊबरणा (क्रि. अ.) 1. शेष बचना, 2. बच निकलना। **उबरना** (हि.)

ऊबरम सूबरम (वि.) 1. प्रयोग के बाद बचा हुआ, 2. काफ़ी मात्रा में।

ऊब्बा (पुं.) खड़ा हुआ।

ऊब्भरणा (क्रि. अ.) 1. विकसित होना, 2. शत्रु द्वारा सिर उठाना, (दे. उभरणा)। **उभड़ना** (हि.)

ऊल (स्त्री.) मिट्टी के चूल्हे के पिछले भाग में पतीली आदि रखने के लिए बनाया गया स्थान।

ऊल चूल्हा (पुं.) ऐसा चूल्हा जिसके पीछे ऊल हो, (दे. ऊल)।

ऊल-जुलूल : व्यर्थ की बात।

ऊलट चाल (स्त्री.) दे. कुचाल।

ऊलाणा (पुं.) दे. उलाहणा।

ऊषा (स्त्री.) दे. ऊक्खाँ।

ऊसर (वि.) दे. ऊस्सर।

ऊस्सर (वि.) जहाँ घास भी नहीं उग सके, (दे. काल्लर[1])। **ऊसर** (हि.)

ऊह (स्त्री.) कष्ट बोधक ध्वनि, ओह। (सर्व.) वह।

ऋ

ऋ नागरी वर्णमाला का सातवाँ स्वर जिसका उच्चारण 'रि' के समान किया जाता है।

ऋक्ष (पुं.) दे. रींछ।

ऋग्वेद (पुं.) दे. रिगबेद।

ऋग्वेदी (वि.) ऋग्वेद का जानने या पढ़ने वाला।

ऋण (पुं.) कर्ज़, उधार।

ऋणी (वि.) कर्ज़दार, देनदार, 2. उपकार मानने वाला।

ऋतु (स्त्री.) दे. रुत।

ऋतुराज (पुं.) वसन्त।

ऋद्धि-सिद्धि (स्त्री.) 1. गणेश जी की दासियाँ, 2. समृद्धि और सफलता।

ऋषि (पुं.) 1. तपस्वी, 2. मंत्र द्रष्टा।

ए

ए हिंदी वर्णमाला का आठवाँ स्वर, जिसका उच्चारण स्थान कंठ-तालव्य है।

एँ (अव्य.) दे. अँ।

एँकड़ा (पुं.) एक की संख्या। उदा. एँकड़े पै बिंदी दो गिणे गिणाए पूरे सौ।

एँकना (क्रि.) चमत्कृत करना।

एँच (स्त्री.) ऐंचन, खिंचाव, (दे. काण)।

एँचा (वि.) 1. वह व्यक्ति जिसकी एक आँख कुछ टेढ़ी हो, भेंगा, 2. टेढ़ा, 3. ऐंचापन।

एँच्चा-भैंच्चा (वि.) 1. बाँका-बावला, 2. तुच्छ, 3. बदसूरत।

एँड्डी (वि.) 1. विपरीत आचरण वाला, 2. साहसी, 3. शठ, 4. अति हठी; 5. टेढ़ी-मेढ़ी।

एँड्डी-बैंड्डी (वि.) 1. टेढ़ी-मेढ़ी, 2. बाँकी बावली, 3. बहकी-बहकी (बात)।

ए (अव्य.) 1. स्त्रियों को संबोधित करने के लिए प्रयुक्त शब्द, 2. ही—1. योह ए था जिसने मार्‌या था, 2. उसमैं ए थी (उस में ही थी); **~जी** पति के लिए प्रयुक्त संबोधन; **~री** अरी; **~वा** स्त्री के लिए प्रयुक्त संबोधन, अरी।

एक[1] (अव्य.) परसर्ग जो मोटे रुप से अनुमान का द्योतक है। उदा.—पचासेक, सौ एक, लगभग पचास, लगभग एक सौ। दे. एक।

एक[2] (वि.) 1. एक की संख्या, 2. एक समान—दोन्नूँ भाई कतई एक सैं; (पुं.) एकता; **~कम** गिनती की एक प्रथा जिसमें दहाई से एक कम करके बोला जाता है, न्यून—एक कम बीस, एक कम पचास, एक कम सौ आदि; **~करणा** 1. मेल-मिलाप कराना, 2. काम बिगाड़ना—आज तै तनैं सब काम

एक कर दिया, न्यूँ करण की थोड़े ए कही थी; **~खण** 1. मकान की पहली मंज़िल, 2. पहला पड़ाव; **~खणी छ्यावा** वह भवन जिसमें एक ही मंज़िल हो; **~जी** 1 प्रगाढ़ मित्रता, 2. अभिन्न; **~टक** 1. बिना पलक झपके, अपलक, 2. ध्यान लगा कर देखना; **~ताड़े के** समान, टक्कर के; **~तिल** 1. बहुत कम, 2. कम समय–एक तिल भी नींद ना आई; **~तैं एक** एक से बढ़कर एक; **~तै** 1. एक तो, 2. पहले तो–एक तै इतणी हाण लाई अर ईब दीद्दे काड्ढै **सै; ~नाँ एक** कोई ना कोई; **~पाकड़म, पाळा लिकड़म** कबड्डी का एक खेल जिसमें नियम के अनुसार एक ही खिलाड़ी पकड़ता है और पकड़े जाने वाले खिलाड़ी को पाला पार करना होता है; **~पेट के** 1. एक ही उदर से उत्पन्न, सहोदर, 2. भाई चारा; **~बरकी** एक तोल जिसके अनुसार अनाज के बदले उसके तोल के समान फल, सब्जी आदि वस्तु दी जाती है, नक़द रुपया-पैसा नहीं लिया जाता; **~बरगी** एक ही वर्ग या श्रेणी की, समान, तुल्य; **~बरियाँ** एक बार, एक समय; **~बात** मिली भगत; **~बै** 1. एक बार, 2. एक समय में–एक बै एक जंगल में एक गादड़ रह्या करता; **~साथ** 1. इकट्ठे, 2. अचानक, यकायक।

एक खड़/एखड़ (वि.) वह पशु (गाय) जो एक समय दूध दे। दे. दोखड़।

एकड़ बाड्ढे (क्रि.वि.) सिलसिलेवार। उदा. –इन पेड्डाँ नै एकड़ बाड्ढै काट दो। (इन वृक्षों को सिलसिलेवार काट दो)।

एकड़वास्सी (क्रि. वि.) 1. एक कोने में, एक ओर, 2. एकांत में; **~करणा** 1. किसी वस्तु को उठा कर एक ओर रखना, 2. एक तरफ़ करना–बटेऊ नैं तै एकड़वास्सी बठा दे, अर तूँ उरै नैं आज्या; **~होणा** 1. बचकर एक ओर होना, 2. दूर किसी कोने में होना या बैठना, 3. दूर एकांत में निवास करना–तूँ रहण लागग्या एकड़वास्सी, हमनैं क्याँह नैं मिल्लै।

एक बुळधा गाड़ी (स्त्री.) जिस गाड़ी में एक बैल जुते।

एक बै (अव्य.) एक बार।

एकम/एक्कम (वि.) एक की गिनती (तोलते समय एक कहना अशुभ माना जाता है अत: 'एकम' या 'रामा' शब्द का प्रयोग किया जाता है और फिर दो-तीन आदि गिनते हैं); (स्त्री.) प्रतिपदा।

एकम एक (वि.) बिल्कुल समान; (पुं.) मलियामेट, धराशायी।

एकम कार (पुं.) वर्षा या जल प्लावन के कारण खेत की क्यारियों का भेद समाप्त होकर दूर तक एक ही खेत नज़र आने का भाव।

एक रळ (वि.) दे. एकम एक।

एकलपा (वि.) दे. एकला।

एकला (वि.) अकेला; **~पड़णा** 1. सहयोग से वंचित होना, 2. किसी का भी समर्थन नहीं मिलना। **अकेला** (हि.)

एकला-दोकला (वि.) 1. अकेला-दुकेला, 2. कोई-कोई, विरल।

एक-सा (वि.) समान, यकसाँ।

एक-स्यात (क्रि. वि.) 1. शीघ्र–एक स्यात में आइए, 2. एक घड़ी का समय–काम

थोड़ी हाण का था एक-स्यात लगा दी।

एक-हाण (क्रि. वि.) 1. एक दिन, 2. विलंब–थोड़े से काम में एक-हाण लगा दी।

एकान्नी (क्रि. वि.) 1. एक कोने में, 2. एक ओर, 3. भीड़ से दूर, तुल. एकड़वास्सी; **~होणा** 1. किसी के लिए मार्ग छोड़ना, 2. एक गुट में मिलना, 3. मरना।

एकूँ (वि.) एक की गिनती।

एकूँ एकाँ (पुं.) गिनती बोलते समय एक के अनुकरण पर उच्चरित शब्द।

एकोतर सो (वि.) दे. कोत्तर सो।

एक्का (पुं.) 1. एकता, 2. मेल-मिलाप; **~करणा/होणा** समझौता होना।

एक्काकार (वि.) एक समान, एक आकार का। **एकाकार** (हि.)

एक्कै (वि.) एक ही।

एचनी भेंचनी (स्त्री.) छोटी-छोटी लड़कियाँ।

एड (स्त्री.) 1. लात, 2. ठोकर; **~मारणा** एड़ी से ठुकराना। **एड़ी** (हि.)

एड़ा (पुं.) 1. ज़िद, 2. रुकावट, बाधा।

एड़ा सेड़ा (अव्य.) इधर उधर।

एड़ी (स्त्री.) दे. एड्डी।

एड्डल (वि.) मोटी एड़ियों वाला।

एड्डी (स्त्री.) एड़ी। **एड़ी** (हि.)

एड्डी चक (पुं.) 1. एड़ी उठा कर चलने वाला व्यक्ति, 2. पानी का एक जंतु जो एड़ी पर डंक मारता है।

ए तो (अव्य.) यह तो।

एरन (पुं.) अग्रवाल बनियों का एक गोत्र, दे. अग्गरवाल।

एहसान (पुं.) कृपा, उपकार।

ऐ

ऐ हिंदी वर्णमाला का नवाँ स्वर-वर्ण जिसका उच्चारण स्थान कंठ और तालु है। इसका उच्चारण अइ, अई भी है।

ऐंट्टू (वि.) 1. अकड़बाज़, 2. घमंड़ी, 3. ज़िद्दी।

ऐंठ (स्त्री.) 1. अकड़, 2. घमंड, 3. विरोध , 4. रस्सी आदि में बल चढ़ने या ऐंठन आदि आने का भाव; **~में आणा** अकड़ दिखाना; **~में रहणा** घमंड में रहना।

ऐंठणा (क्रि. अ.) 1. बल खाना, 2. तनना, अकड़ना, 3. घमंड दिखाना, 4. टेढ़ी बातें करना; (क्रि. स.) 1. बल देना, मरोड़ना, 2. झाँसा देना।

ऐंठन (स्त्री.) दे. ऐंठ।

ऐंठना (क्रि. स.) दे. ऐंठणा।

ऐंड (वि.) 1. निकम्मा, 2. विकलांग, 3. अनुपयोगी; **~करणा** अनुपयोगी करना; **~होणा** 1. किसी काम के योग्य न रहना, 2. अशक्य होना।

ऐंड बैंड (वि.) टेढ़ा-मेढ़ा, तिरछा; (पुं.) व्यर्थ का प्रलाप; **~बकणा** 1. बिना सोचे-समझे कहना। 2. गाली देना।

ऐंडरो (पुं.) नाज़ायज संतान (मेवा.), तुल. गैलड़।

ऐंणी (स्त्री.) 1. नोक, 2. किसी वस्तु का नुकीला सिरा, 3. बैलों को हाँकने का कोड़ा। **अनी** (हि.)

ऐंतली भैंतली (वि.) 1. निरादरी, 2. बदसूरत।

ऐंतवार (पुं.) रविवार। **इतवार** (हि.)

ऐंह (सर्व.) इस।

ऐं ही (अव्य.) यह ही।

ऐ (क्रि. अ.) है।

ऐड़ा (वि.) दे. ऐहड़ा।

ऐतिहासिक (क्रि. स.) दे. इतिहासक।

ऐन (वि.) 1. सदृश्य, तुल्य, 2. असली, 3. ठीक, सही।

ऐनक (स्त्री.) दे. अहनक।

ऐन मैन (वि.) 1. असली, 2. मिलता-जुलता, एकसा।

ऐब (पुं.) 1. खोट, बुरी आदत, अवगुण, 2. कलंक।

ऐब्बण (वि.) ऐब वाली।

ऐब्बी (वि.) 1. अवगुणी, 2. व्यसनी। **ऐबी** (हि.)

ऐयाश (वि.) 1. ऐश पसन्द, 2. विलासी।

ऐयाशी (स्त्री.) ऐश, भोग विलास।

ऐरण (पुं.) अग्रवाल वैश्यों का गोत्र, इनका संबंध उरु (और्व) मुनि, यजुर्वेद, माध्यंदिनी शाखा और कात्यायन सूत्र से है, इनका प्रवर मांकील है, 2. कानों का एक आभूषण (ईयर रिंग)।

ऐरा (पुं.) डर, दे. ऐड़ा।

ऐरा पैरा (वि.) दे. अहरा पहरा।

ऐल फैल (पुं.) छल-कपट पूर्ण व्यवहार, तुल. फहफोट्टा।

ऐश (स्त्री.) दे. ऐस।

ऐस (स्त्री.) भोग विलास। **ऐश** (हि.)

ऐसा (वि.) दे. इसा।

ऐसे (क्रि. वि.) इस तरह से, इस ढंग से, (दे. इसे)।

ऐहड़ा (वि.) 1. कठिन, क्लिष्ट–यो सवाल घणा ऐहड़ा सै, 2. अति हठी, ज़िद्दी।

ऐहड़ी (वि.) दे. ऐहड़ा।

ऐहड़े तेहड़े (पुं.) जोड़-तोड़ के कार्य, 2. व्यर्थ के। काम। तुल. पाड़ तिवाड़ा।

ऐहधण (स्त्री.) हठी स्त्री, ज़िद्दी स्त्री, विपरीत आचरण करने वाली महिला।

ऐहरा पहरा (वि.) टेढ़ा-मेढ़ा।

ओ

ओ हिंदी वर्णमाला का दसवाँ स्वर जिसका उच्चारण स्थान कंठोष्ठ है।

ओं (अव्य.) 1. यों, ऐसे, इस तरह या उस तरह से–यो काम भी ओं ए कर ले, 2. वैसे–ओं तै घर ठीक सै पर छोह्री कै भाई कोन्या, 3. कष्ट सूचक ध्वनि, 4. उधर–ओं नै गया होगा; **~एँ** वैसे ही, बिना सोचे समझे; **~का ओं** 1. वैसे का वैसा, 2. मिलता- जुलता; **~सी** उधर को, उस ओर, उधर निकट ही।

ओइँयाँ (स्त्री.) अढ़कार लेते समय कंठ से उच्चरित ध्वनि; (पुं.) ओंम।

ओंकार (पुं.) 1. प्रणव, भगवान, 2. ब्रह्मा, 3. 'ओउम्' ध्वनि।

ओंकारा (पुं.) 1. बार-बार 'ओं'-'ओं' करने की क्रिया।

ओंगणा (क्रि. स.) दे. ऊँगणा।

ओंठ (पुं.) दे. होठ।

ओंम (पुं.) 1. ओम, परब्रह्म वाचक शब्द, 2. ब्रह्मा के मुख से निकला प्रथम शब्द, 3. एक जाप।

ओंहढा (वि.) 1. विपरीत आचरण वाला, 2. जिससे किसी भले काम की आशा नहीं हो, 3. हठी, 4. काम में बाधा डालने वाला; (क्रि. वि.) 1. निकट, 2.

'डूँग्घा' का विलोम–वा चीज ओंहढे धरी मिल ज्यागी, (दे. ऐहड़ा)।

ओ[1] (अव्य.) 1. अरे–ओ रै छोहरे, थोड़ा सुणिये, 2. पश्चात्ताप सूचक ध्वनि।

ओ[2] (सर्व.) वह; **~हे** वही–ओहे आदमी मन्नैं फेर मिलग्या।

ओ ओ (अव्य.) अरे अरे। दे. हेओ।

ओक (स्त्री.) अंजली, पानी पीने के लिए एक हाथ या दोनों हाथों की हथेली को मिला कर बनाई गई मुद्रा; **~बणाणा** अंजली-मुद्रा बनाना, ढाक आदि के पत्ते को मोड़ कर पानी भरने योग्य बनाना; **~लाणा** छोटे बच्चे को पानी पिलाने के लिए अंजली लगाना।

ओकणो (क्रि. स.) पेट भरना, तृप्त होना (मेवा.)।

ओकम ओक (क्रि. वि.) ओक या अंजली द्वारा (जल पीने की क्रिया)।

ओकमणा (क्रि. अ.) 1. ब्याने से कुछ दिन पूर्व पशु के थन तथा अयन (ओहड़ी) उभरना, 2. मैथुन की इच्छा के समय मादा पशु के थनों में कुछ उभार या फैलाव आना, 3. थनों में दूध उतरना, 4. प्यार प्रदर्शित करना, 5. ममता के कारण शिशु की याद में माता के स्तन में खुजली उत्पन्न होना या दूध टपकना।

ओकाई (स्त्री.) दे. उबकाई।

ओक्खा (वि.) दुष्कर। कठिन। उदा.–मरघट का कर दिए बिना सुत फूकणा ओक्खा सै। (लचं.)

ओखध (स्त्री.) दवाई। **औषधि** (हि.)

ओखळी (स्त्री.) छोटा ऊखल।

ओग (पुं.) दे. ओघ।

ओगण (पुं.) दुर्गुण, बुराई; **~काढ़णा/घरणा** 1. निंदा करना, 2. दोष निकालना। **अवगुण** (हि.)

ओगळणा (क्रि. अ.) 1. किसी रोग के कारण पौधे का सूखना, 2. उल्टी करना, 3. भेद खोलना, 4. बुरी-भली कहना; (क्रि. स.) सख्त जूते को मोगरे से चौड़ा करना।

ओगळा (वि.) 1. अतिरिक्त, फालतू, 2. हल्का, तुल. मोकळा; **~बखत** फालतू समय, फुर्सत का समय, अवकाश का समय।

ओग्गरणा (क्रि. अ.) 1. पोरे के नीचे मिट्टी भर जाने के कारण बीज का भूमि पर नहीं गिरना, 2. अँटना, 3. नाली आदि का प्रवाह रुकना, 4. अधिक पेट भर जाना, छिक जाना।

ओघ (पुं.) हल का वह भाग जहाँ 'हळस' लगती है।

ओघट (वि.) विकट, कठिन, दुर्गम; **~घाट पाणी भरणा** अत्यंत कठिन कार्य करना, असाधारण कार्य करना। **अवघट** (हि.)

ओघड़ (पुं.) 1. नाथ पंथियों का एक संप्रदाय, 2. नाथ पंथी साधु, 3. कान फड़वाने से पूर्व नाथ साधुओं का रूप (दर्शनी साधु इन्हें हीन कोटि का मानते हैं); (वि.) खाद्य-अखाद्य का ध्यान न रखने वाला। **औघड़** (हि.)

ओघड़ दान्नी (पुं.) 1. शिव, 2. अत्यंत दानशील देवता। **औघड़दानी** (हि.)

ओघड़नाथ (पुं.) अबोहर (रोहतक) की तीन गद्दियों में से एक (इसके स्वामी असवर्ण होते हैं)।

ओघवती (स्त्री.) प्रकट होने पर सरस्वती नदी को दिया गया नाम।

ओच्छा (वि.) 1. छोटा, 2. कम, 3. तुच्छ, हीन, 4. अनुदार, 5. ऊँचा, नाप से कम–ओच्छा कुड़ता, 6. छोटे परिवार का, कुलहीन; **~बोल** हीनी बात, हेय वचन। **ओछा** (हि.)

ओच्छापण (पुं.) 1. नीचता, 2. कमी। **ओछापन** (हि.)

ओच्छी (वि.) 1. हीन स्वभाव की, 2. छोटी, 3. घटिया; **~गोड्डी** छोटे घुटने–ओच्छी गोड्डी-बैंगण खुरा, ले आ कंथा-कदे ना बुरा (छोटे घुटने और बैंगनी खुर का बैल अच्छा रहता है); **~बुद्धि** 1. तुच्छ या हीन बुद्धि, 2. अदूरदर्शिता। **ओछी** (हि.)

ओछ (स्त्री.) 1. कमी, 2. छोटापन, 3. किसी वस्तु का वांछित लंबाई से कम रहने का भाव, 4. कलंक, लांछन; **~काढणा** 1. नुकताचीनी करना, 2. छिद्रान्वेषण करना, 3. छोटे कपड़े में अन्य कपड़ा जोड़कर इच्छित लंबाई करना; **~होणा** 1. कपड़े आदि का सिकुड़ कर छोटा होना, 2. बड़प्पन संबंधी कमी होना, 3. एक अंग का दूसरे अंग से छोटा हो जाना, 4. कमी पड़ना।

ओछा (वि.) दे. ओच्छा।

ओछापन (पुं.) दे. ओच्छापण।

ओज (पुं.) 1. तेज, 2. शक्ति, 3. वीर्य।

ओजणा[1] (क्रि. स.) 1. उँडेलना, तरल पदार्थ का एक पात्र से दूसरे पात्र में डालना, 2. भक्षण करना (व्यंग्य में), 3. जल्दी से पी जाना।

ओजणा[2] (पुं.) दोहद इच्छा; **~करणा** स्त्री द्वारा अपनी दोहद इच्छा पूर्ण करने के लिए इच्छित भोजन माँगना; **~(–णे) लागणा** 1. किसी चीज़ की बार-बार याद आना, 2. गर्भवती स्त्री को इच्छित वस्तु के खाने की तीव्र इच्छा जाग्रत होना, 3. लालायित होना।

ओझल (वि.) अदृश्य; (पुं.) ओट, आड़।

ओझा (पुं.) ब्राह्मणों की एक उपजाति, 2. भूत-प्रेत झाड़ने वाला, (दे. स्याणा)।

ओझा गौड़ (पुं.) खाती या बढ़ई जाति का एक गोत या उपजाति।

ओट[1] (स्त्री.) 1. रोक, आड़, 2. शरण, 3. पकड़ने या लपकने की क्रिया–मैं गींड्डो फैंक्कूँगा तूँ ओट सकै तै ओट, 4 गाड़ी को ढलान की ओर फिसलने से रोकने के लिए पहिये के आगे या पीछे रखी गई रुकावट, 5. सहारा।

ओट[2] (क्रि. स.) 'ओटणा' क्रिया का आज्ञार्थक रूप, जिम्मेवारी लेना–इस क़ाम नैं तूँ ओट।

ओटड़ा (पुं) छोटी दीवार; **~छ्याणा** कोठड़ी बनाना।

ओटणा (क्रि. स.) 1. ओटना, 2. लपकना, 3. धक्के को सहन करना, 4. भले-बुरे को स्वीकार करना, 5. किसी अन्य की ज़िम्मेदारी (विशेषकर विवाह) अपने ऊपर लेना, 6. धैर्यपूर्वक आपत्ति सहना, 7. ऊपर से गिरती हुई चीज़ को बीच में लपकना– सिबजी ने गंगाजी ओट्टी, 8. कपास से बिनौला अलग करना; (क्रि. अ.) उबलना।

ओटणी (स्त्री.) बेलनी, चरखी।

ओटना (क्रि. स.) दे. ओटणा।

ओटा (पुं.) दे. ओट[1]।

ओठै (अव्य.) दे. उड़ै।

ओड़[1] (पुं.) 1. अंत, 2. किनारा; **~आणा** 1. अंत आना, 2. मृत्यु का समय आना।

ओड़[2] (पुं.) एक जनजाति जो मिट्टी के मोर, पपैया आदि खिलौने बेचती है।

ओड़[3] (क्रि. वि.) ओर, तरफ़–बेरा ना कित ओड़ कै लिकड़ ग्या; (स्त्री.) तरफ़दारी–घीस्सा भीम्में की ओड़ हो लिया मैं रहग्या एकला।

ओड़[4] (अव्य.) हुआ या हुई, यथा–खड़ा ओड़ (खड़ा हुआ) कद ताहीं रहैघा।

ओड़[5] (स्त्री.) वह औज़ार जिस पर 'पाण' को बाँधकर खिंचाई की जाती है।

ओड (वि.) मात्रा, नाप और समय आदि का अनुमान–मेरा भाई ओड बड्डा; **~जोड करणा** पाल-पोस कर बड़ा करना; **~बड्डी** 1. फलने-फूलने या श्री वृद्धि का आशीर्वाद, 2. इतनी बड़ी-तूँ ओड बड्डी हो र्ही कुछ ख्याल कर; **~बै** 1. इतनी देरी से, 2. इस समय।

ओड़ी (क्रि. वि.) ओर (सीमित प्रयोग)– कित ओड़ी गया।

ओड़ीसी (पुं.) उड़िया प्रदेश–ओड़ीसी जगन्नाथ पुरी में ठाकर भले बिराजे जी, वै तै सोहदरा के बीर समंदर तीर बिराजे जी।

ओड़ै (क्रि. वि.) 1. दे. उड़ै, 2. दे. उठै।

ओड्डर (पुं.) 1. आदेश, 2. सैनिक आदेश। **आर्डर** (हि.)

ओड्डा (पुं.) बहाना, मिष; **~करणा/ पाकड़णा/भरणा/मारणा** बहाना बनाना।

ओड्ढा (वि.) भैंगी आँख वाला, जिसकी आँख कुछ तिरछी हो, भैंगा।

ओड्ढाणा (क्रि. वि.) 1. आधा दिन बीतने पर, 2. देरी से. 3. इस समय– ओड्ढाणे तेरा आवण का बखत सै के?

ओढ (पुं.) सुघड़।

ओढकणा (क्रि. स.) दे. ढाळणा।

ओढका (पुं.) दे. चोहड्डा।

ओढणा (पुं.) सिर पर धारण किया जाने वाला चीर; (क्रि. स.) 1. शरीर को वस्त्र से ढाँपना, 2. किसी अन्य का भार अपने ऊपर लेना, उत्तरदायित्व लेना; **~ओढणा** पति की मृत्यु के बाद देवर, जेठ या परिवार के अन्य निकट संबंधी को पति रूप में स्वीकार करना (इस प्रथा के अनुसार विधवा का होने वाला पति अपने हाथ से ओढ़ना उढ़ा देता है और समाज इनकी भावी संतान को वैध स्वीकार करता है। यह प्रथा कुछ जातियों में प्रचलित है); **~पहरणा** 1. सजधज कर रहना, 2. खुशहाली से रहना।

ओढणी (स्त्री.) चीर, सिर पर ओढ़ने का वस्त्र विशेष। **ओढ़नी** (हि.)

ओढना (क्रि. स.) दे. ओढणा।

ओढ़नी (स्त्री.) दे. ओढणी।

ओणा-पोणा (क्रि. वि.) 1. आधे-तिहाई दाम पर, 2. महँगा-सस्ता; **~करणा** कम दाम पर बेचना। **औना-पौना** (हि.)

ओत (स्त्री.) किफ़ायत, बचत।

ओतार (पुं.) ईश्वर का किसी रूप में भूमि पर जन्म धारण करने का भाव। **अवतार** (हि.)

ओद (पुं.) दे. सीमसद्धा।

ओदम ओदा (पुं.) गींडखुली का एक खेल।

ओदसा (स्त्री.) इंद्र के अखाड़े की परी।

ओद्दी (स्त्री.) नामचा। रेकार्ड। उ.–रक्षक नाम लिखा जागा थारा सुरपुर की ओद्दी में (लचं.)।

ओपरा (पुं.) 1. परिवार के बाहर का सदस्य, 2. परदेशी, 3. भूत-प्रेत; (वि.) 1. अनजान, 2. जिसके परिवार के बारे में जानकारी नहीं हो, अज्ञात कुल, 3. बाहर का, 4. पराया, अन्य का; **~आणा/होणा** भूत-आत्मा का प्रवेश होना; **~काढणा** जंत्र, तंत्र, मंत्र आदि विद्या से प्रेत या भूत-आत्मा से छुटकारा दिलाना; **~घालणा** भूत-प्रेत का प्रवेश कराना; **~पराया** 1. भूत-प्रेत, 2. अनजान व्यक्ति; (वि.) दूसरे का, अन्य से संबंधित।

ओपरी (स्त्री.) 1. वह वस्तु जिसके स्वामी का पता नहीं हो, 2. पराई वस्तु, 3. माँगी हुई वस्तु, 4. भूतनी, प्रेतनी; **~पराई** 1. बाहर की, 2. पराई।

ओबरा (पुं.) 1. घर के अंदर का कोठरा जिसमें अधिकतर अंधेरा रहता है, घर का सामान रखने का सुरक्षित स्थान, 2. छोटा घर।

ओबरी (स्त्री.) कोठरी, कोठड़ी।

ओम् (पुं.) दे. ओंम।

ओय (अव्य.) 1. अबे–ओय, उरै आ, 2. अपमान-सूचक शब्द, 3. अरे, संबोधन -सूचक शब्द, 4. प्रसन्नता-द्योतक शब्द-ओय होए! जच ग्या भई आज तै, 5. कष्ट-द्योतक शब्द।

ओर (वि.) पराया, अन्य–हम तै तन्नें ओर ला राक्खे साँ (हमें तो आप पराया समझते हैं); (अव्य.) 1. स्वीकृति-सूचक शब्द–यो काम कर लिया?, ओर (हाँ कर लिया है), 2. और; (पुं.) किनारा–तेरा ए ओर नाँह पाँमता; ~के 1. और क्या, और नहीं तो क्या?, 2. अन्य के, अन्य किसी के; **~सा** अन्य कोई–इसा तन्नैं ओर सा देक्ख्या होगा, मैं बळ में नाँह आऊँ। **और** (हि.)

ओर-छ्योर (पुं.) किनारा।

ओरणा (पुं.) बाँस या लोहे का कीप-नुमा खोखला डंडा जो खेत को बीजते समय हल की मूठ के पास बाँध दिया जाता है और हाली मुट्ठी भर-भर कर इसमें बीज डालता रहता है; **~आणा/उरणाणा** बीजते समय ओरणे के निचले छिद्र में मिट्टी भर जाना और भूमि का वह भाग बीज से वंचित रह जाना।

ओरनाळ (स्त्री.) 1. वह नली जो शिशु को उदर में माँ के पेट के साथ जोड़ती है और जन्म के बाद बालक की नाभि से काट दी जाती है, 2. वह खोखली नलिका जिसमें घी, तेल, आवटी आदि डालकर पशु के मुँह में उँडेलते हैं; **~गडणा** 1. जन्मजात अधिकार जमाना या समझना, 2. उस स्थान पर अपना अधिकार रखना जहाँ जन्म के समय उदरनाल को काट कर दबा दिया गया हो (गाँव में ओरनाल को घर के किसी कोने में दबा दिया जाता है); **~गाडणा** 1. शिशु जन्म के बाद उदरनाल को काट कर घर के किसी भाग में दबाना, 2. जन्मजात हक जताना; **~देणा/ओजणा** खोखली नली में पेय पदार्थ डाल कर पशु को पिलाना। **उदरनाल** (हि.)

ओरला (वि.) अन्य-सा, पराया, दूसरा दूर का–हमने तै तूँ ओरला समझै सै।

ओरवा (पुं.) 1. नुकीली वस्तु, आर, 2. हेज, प्यार, स्नेह, तुल. हेरवा; **~लागणा** याद सताना, याद में बेचैन होना; **~लाणा** काम करने के लिए बाध्य करना।

ओरसा (पुं.) 1. उदरशूल, पसली चलने का रोग, 2. उदर का वह रोग जिसमें बच्चे का पेट या कलेजा सख्त हो जाता है (यह रोग अधिकांशतः माँ द्वारा वायु उत्पन्न करने वाला भोजन खाने से दूध पीते शिशुओं को होता है); **~ठाणा/दाबणा** शिशु के उदर पर घी या थूक मल कर पेट को दबाना जिससे पेट नर्म हो जाए; **~देखणा** शिशु के उदर को दबा कर इस बीमारी की जाँच करना।

ओरा मोरा (अव्य.) छुप छुप कर। उदा. –चोरी, जारी ठग्गी-बदमास्सी ये हूँ सैं ओरे मोरे।

ओरिया (पुं.) 1. नुकीली वस्तु, 2. घनीभूत इच्छा या लालसा, 3. छोटा 'ओरणा', (दे. ओरणा); **~लाणा** इच्छापूर्ति के लिए बार-बार अनुरोध करना।

ओरी[1] (स्त्री.) उपले का टुकड़ा या चूरा–आग पै थोड़ी ओरी लाइये कदे बुझ नाँ जा।

ओरी[2] (स्त्री.) बिजाई करते समय मजदूरों को दी जाने वाली मजदूरी। दे. लाग।

ओरी[3] (स्त्री.) पेट की खराबी से शरीर पर उठने वाले लाल दाने।

ओरै-धोरै (क्रि. वि.) 1. आस-पास, 2. इस या उस ओर, (दे. ओळ्याँ/ कोळ्याँ); **~होणा** अनुमान के निकट पहुँचना, लक्ष्य के निकट पहुँचना।

ओळ (स्त्री.) 1. ओल, रुकावट, 2. लंबा मार्ग, 3. बेगार या धरोहर के रूप में किसी वस्तु या व्यक्ति का उस समय तक रहना जब तक उसका ऋण आदि नहीं चुक जाता, 4. 'सोळ' का विलोम; **~तारणा** कर्ज़ उतारना; **~पड़णा** 1. लंबा रास्ता होना, 2. बाधा उत्पन्न होना; **~पाकड़णा** कुमार्ग पर चलना; **~सोळ** 1. हेरफेर, 2. दूरी का भाव।

ओळणा (पुं.) घूँघट, (दे. ओल्हणा)।

ओळणी (स्त्री.) ताना देने वाली स्त्री।

ओळमा (पुं.) फुंसी आदि होने के कारण जोड़ के स्थान पर हुई सूजन या अकड़न।

ओळ-सोळ (स्त्री.) 1. हेर-फेर, 2. दूरी।

ओळा[1] (पुं.) बादल से गिरने वाले हिम के टुकड़े। **ओला** (हि.)

ओळा[2] (वि.) 1. बायाँ, 2. उल्टा–तू तैं ओळा काम करैघा; (क्रि. वि.) दाएँ-बाएँ; **~बोलणा** 1. विरोध करना, 2. उलटी बात कहना, 3. प्रतिरोध करना; **~सोळा** उलटा-सीधा।

ओळा (पुं.) दे. ओळा[1], दे. ओळा[2]।

ओळाल्वा (पुं.) दे. उळाळवा।

ओळिया (वि.) 1. ओले या बाएँ हाथ से काम करने वाला, 2. विपरीत आचरण वाला।

ओळी (वि.) 1. उलटी, 2. विपरीत आचरण वाली, 3. बाएँ हाथ से काम करने वाली (महिला)। **ओली** (हि.)

ओळ्याँ कोळ्याँ (क्रि. वि.) 1. इधर-उधर, 2. इस ओर-उस ओर; **~करणा** 1. तितर-बितर करना, 2. ठिकाने लगाना, 3. नष्ट करना; **~लागणा** 1. इधर-उधर घूमते फिरना, 2. बिना उद्देश्य समय व्यतीत करना। **ओले कोले**(हि.)

ओल्हणा (पुं.) 1. ओलना, पर्दा, 2. ओट,

3. वधू द्वारा बड़ों से बातचीत न करने का भाव, (दे. ओल्हा); **~काढणा** 1. घूँघट निकालना, 2. पर्दा करना।

ओल्हा (पुं.) 1. परदा, 2. घूँघट, 3. रोक, 3. रुकावट, 5. मिष; **~करणा** घूँघट करना या निकालना; **~पाकड़णा** मिष भरना, बहाना करना।

ओस (स्त्री.) रात के समय घास-पत्तों पर पड़ने या बनने वाले जल बिंन्दु; **~चाटणा** व्यर्थ की बात में समय बिताना; **~(–साँ) घड़े भरणा** असंभव काम करने में समय नष्ट करना।

ओसक (स्त्री.) तकलीफ़।

ओसण/ओस्सण (पुं.) पलोथन; (क्रि. स.) 'ओसणणा' क्रिया का आज्ञार्थक रूप।

ओसणणा (क्रि. स.) 1. आटा गूँधना, 2. रगड़ना, 3. मथना।

ओसध (स्त्री.) औषधि, दवाई।

ओसर/ओस्सर[1] (पुं.) अवसर, मौक़ा।

ओसर[2] (अव्य.) वर्षा की संभावना।

ओसरणा (क्रि. अ.) गंदी वायु का पेट से निकलना, अपान वायु निकलना; **~बा** पाद निकलना।

ओसरम ओसरा (क्रि. वि.) बारी-बारी से, अपने-अपने अवसर पर।

ओसरा[1] (पुं.) 1. बारी, काम करने की बारी या क्रम, 2. ज़िम्मेदारी, 3. अवसर; **~आणा** 1. गन्ने आदि पेलते समय क्रमशः काम की बारी आना, 2. अवसर मिलना; **~काढणा** कार्य करने का क्रमिक क्रम निर्धारित करना; **~बारी** 1. क्रम के अनुसार, 2. अवसर आने पर, जैसे–ओसर्या बारी काम करना;

ओसरा[2] (पुं.) दे. उसारा।

ओसरिया (वि.) 1. जिसकी कोल्हू चलाने, खेत में पानी देने आदि की बारी हो, 2. अवसर के क्रम के अनुसार काम करने वाला, 3. सहायक, मददगार।

ओसवाली (स्त्री.) आँगी का एक भेद।

ओसाई (स्त्री.) दे. बरसाई।

ओसा-कोसा (वि.) अनुचित, घटिया, ऐसा-वैसा।

ओसाण (पुं.) दे. उसाण।

ओसाना (क्रि. स.) दे. बरसाणा[1]।

ओहंग-सोहंग (अव्य.) साँय-साँय।

ओह (अव्य.) आश्चर्य, दुःख, प्रसन्नता आदि बोधक ध्वनि; (सर्व.) वह।

ओहड़ी (स्त्री.) गाय, भैंस आदि का आयन; **~काढणा** ब्याने से पूर्व पशु के अयन का मोटा होना; **~पाटणा** 1. थन में बहुत दूध आना, 2. अधिक स्नेह प्रदर्शित करना।

ओहळना (पुं.) दे. तान्ना। उदा.–सास बहू कै ओहल़्ने, ऊजड़ हो जा बास।

ओहे (सर्व.) वही।

ओहो (अव्य.) आश्चर्य या आनंद सूचक शब्द।

औ

औ हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वर-वर्ण जिसका उच्चारण स्थान कंठ और ओष्ठ है। हरियाणवी में 'ओ' और 'औ' की ध्वनियों के बीच का अंतर बहुत स्पष्ट नहीं है। अधिकांशतः 'औ' के स्थान पर 'ओ' का प्रयोग ही किया जाता है।

औं औं जय श्रीकृष्ण (पुं.) अहीरों द्वारा किया जाने वाला अभिवादन।

औंकण सौकण (स्त्री.) सौतन। सौत। दे. सोक[2]।

औंहटा (वि.) 1. उलटा–बड्डयाँ की साहमीं औंहटा ना बोल्या करैं, विपरीत, उलट, 2. वापस; **~बोल** 1. विपरीत वचन, 2. चुभने वाली बात।

औंहटा सौंहटा (वि.) 1. प्रतिरोध पूर्वक बोलने का भाव, 2. उलटा-सीधा; **~मींह** उलटी-सीधी बौछारों की वर्षा, तेज़ वर्षा।

औक़ात (स्त्री.) दे. उकात।

औखध (स्त्री.) काजल। दे. ओसध।

औज़ार (पुं.) कारीगर के उपकरण।

औटणा (क्रि. अ.) दे. आवटणा।

औडबर (अव्य.) दे. ओड बै।

औड़ा (पुं.) दे. ओहड़ी।

औन (सर्व.) दे. ऊँह नैं।

औरत (स्त्री.) 1. स्त्री, महिला, 2. पत्नी; (वि.) 1. कायर, 2. भीरु।

औलाद (स्त्री.) दे. उलाद।

औळे (क्रि. वि.) दूर–1. आँख औळे, 2. पहाड़ औळे।

औसक (पुं.) रोग, बीमारी।

क

क हिंदी वर्णमाला का पहला व्यंजन वर्ण जिसका उच्चारण स्थान कंठ है। हरियाणवी में इसके उच्चारण में कंठ कम खुलता है और कंठ से कम हवा निकलती है।

कंक (पुं.) अज्ञातवास काल में युधिष्ठिर का नाम। दे. युधिस्टर।

कंकड़ (पुं.) दे. काँक्कर।

कंकट मूँजी (स्त्री.) अत्यंत कंजूस स्वभाव की महिला।

कंकड़ी (स्त्री.) एक रोग।

कँकरीला (वि.) कंकर वाला।

कंकाळ (वि.) कमजोर, दुर्बल, जिसकी हड्डी-हड्डी दिखाई दे; (पुं.)1. भूत, 2. हड्डियों का ढाँचा।

कंकाल (हि.)

कंकाळी (स्त्री.) 1. कुल्टा, 2. इधर-उधर घूमने फिरने वाली स्त्री, 3. एक नीची जाति। **कंकाली** (हि.)

कंगन (पुं.) 1. दे. काँगण, 2. दे. काँगणा।

कंगला (वि.) 1. भुखमरा, 2. निर्धन।

कंगाल (वि.) दे. कंगला।

कंगाळणा (क्रि. स.) दे. खँगाळणा।

कंगाल्ली (स्त्री.) निर्धनता।

कंगाली (हि.)

कंगूरा (पुं.) छज्जे के नीचे का किनारा।

कंघा (पुं.) सिर के बाल सँवारने का दाँतेदार-यंत्र विशेष।

कंघी (स्त्री.) दे. काँघी।

कंच (पुं.) काँच, शीशा।

कंचन[1] (पुं.) सोना।

कंचन[2] (स्त्री.) हिरनी उदा. सब सखी सहेली बनठन निकली, कंचन जैसी डार।

कंचनदार (वि.) सुनहरी।

कंचनी (स्त्री.) 1. वेश्या, 2. पापिन, 3. महिलाओं के लिए प्रयुक्त एक अपशब्द।

कंचा (स्त्री.) काँच की गोली; **~गोळी** काँच की गोलियों का खेल।

कँचेरा (पुं.) काँच का काम करने वाला।

कंजर (पुं.) दे. काँज्जर।

कंजर सिंगी (स्त्री.) दे. सींगी।

कंजूस (वि.) कृपण।

कंटक (पुं.) 1. शत्रु, 2. विघ्न, बखेड़ा।

कंटक देश (पुं.) हरियाणा प्रदेश।

कँटीला (वि.) 1. काँटेदार, 2. तीखे नैन-नक्श वाला, 3. पैनी धार वाला।

कंटू (स्त्री.) 1. छोटी कंकर, 2. एक खेल जो कंकरों से खेला जाता है; **~खेलणा** 1. कंकरों से खेलना, 2. जूआ खेलना; **~चढाणा** 'कंटू' खेल की बाजी चढ़ाना; **~रड़कणा** हारी बाजी के कारण कष्ट अनुभव करना।

कंठ (पुं.) 1. गला, 2. स्वर, ध्वनि, आवाज।

कंठा (पुं.) 1. फुंसीनुमा एक रोग जो अधिकांशत: अँगूठे या अंगुली में निकलता है (एक धारणा के अनुसार इंद्रधनुष की ओर अंगुली करने से यह रोग होता है), 2. कुरते का वह भाग जो गले पर रहता है, 3. गले का एक आभूषण।

कंठारा (पुं.) तट, किनारा, तुल. काँट्ठा; **~(-रै) बैठणा** 1. तटस्थ रहना, 2. कार्य से मुक्त होना, 3. उस पार जाना।

कंठी (स्त्री.) 1. सोने के मणिकों की बनी

हुई कंठमाला, 2. खोखली तुली या भूसे से बनी बारीक मणिकों की माला, 3. कंठ के नीचे की ओर फैलने वाला एक रोग जो नासूर के समान होता है, 4. चेचक का एक प्रकार, 5. पक्षियों के गले के चारों ओर का रंगीन डोरा, 6. व्रत हेतु धारण किया गया आभूषण; **~घड़वाणा** सोने की कंठी बनवाना; **~बाँधणा** 1. प्रतिज्ञा करना, 2. शिष्य बनना।

कंठी-मात्ता (स्त्री.) चेचक के रोग का एक प्रकार।

कंठूला (पुं.) दे. कठला।

कंडवारा[1] (पुं.) विवाह के बाद त्योहारों पर बाँटा जाने वाला प्रसाद।, सगे संबंधियों को विवाह के बाद दी जाने वाली मिठाई।

कंडवारा[5] (पुं.) मिट्टी का पात्र जिसमें नैवेद्य ले जाया जाता है।

कंडाई[1] (स्त्री.) दे. कटहळी।

कंडाई[2] (स्त्री.) एक कँटीली बेल। दे. सत्यानासी।

कंडी (पुं.) दे. कंठी।

कंडील (पुं.) कंदील। **कंदील** (हि.)

कंडेरा (स्त्री.) एक पिछड़ा वर्ग जाति।

कंडेली (वि.) जगमगाती हुई। दे. झिलमिलाणा।

कंढला (पुं.) कौड़ियों की माला, (दे.) कठला।

कंत (पुं.) 1. पति, 2. परदेशी। **कंथ** (हि.)

कंथ (पुं.) दे. कंत।

कंथा[1] (पुं.) दे. कंत।

कंथा[2] (पुं.) साधु का चोगा।

कंद[1] (पुं.) खाने योग्य गाँठदार जड़।

कंद[2] (पुं.) दे. कँध।

कंदूरी (वि.) लाल रंग का, 'कँध' के रंग का–दोन्नूँ हाथ कंदूरी बरगे।

कँध (पुं.) लाल रंग का एक वस्त्र।

कंधा (पुं.) दे. काँद्धा।

कंधार (पुं.) अफ़गानिस्तान का एक नगर।

कंधारी (पुं.) घोड़े की एक जाति।

कंधेला (पुं.) बलिष्ठ गर्दन या स्कंध वाला बैल।

कँपकँपी (स्त्री.) दे. कपकपी।

कंपन (स्त्री.) काँपना, कँपकँपी।

कंपोड्डर (पुं.) कंपाउँडर।

कंबल (पुं.) दे. कांबळ।

कंबली (स्त्री.) छोटा कंबल। दे. काँबल़।

कँवर (पुं.) 1. राजकुमार, 2. पति; (वि.) 1. छैला, 2. निराला, 3. सुंदर।
कुँवर (हि.)

कँवर कलेवा (पुं.) वह अल्पाहार जो फेरे पड़ने से अगले दिन प्रातःकाल दूल्हे के कुछ साथियों के साथ ससुराल में उसे दिया जाता है (इसमें घी, बूरा या अन्य मिठाइयाँ होती हैं, इस समय दुल्हन की सहेलियाँ दूल्हे को घेर लेती हैं तथा गाली भरे मधुर गीत तथा कटूक्तियाँ कहती हैं)।

कँवार कोठड़ा (पुं.) जहाँ केवल कुँवारे रहते हों।

कंस (पुं.) श्रीकृष्ण का मामा; (वि.) दुष्ट।

कँसला (पुं.) अग्रवाल वैश्यों का गोत्र, (इनका संबंध कौशिक मुनि, यजुर्वेद, माध्यंदिनी शाखा और कात्यायन सूत्र से है तथा प्रवर मांकील है)।

कँसुवा (पुं.) गन्ने में लगने वाला एक कीड़ा।

कँह (सर्व.) किस–कँह का छोह्रा **सै**?; **~को** किसका (सीमित प्रयोग)।

क (प्रत्य.) 1. सर्वनाम के साथ जुड़ने वाला परिमाण वाचक प्रत्यय, जैसे–कितणाक, 2. हीनतावाची उपसर्ग, जैसे–कपूत, 3. लघुता द्योतक प्रत्यय।

कइयाँ (सर्व.) 'कई' का बहुवचन रूप। उदा.–या बात कइयाँ तैं सुणी।

कई (विं.) 1. कुछ, 2. अनेक–तड़के तैं साँझ ताहीं तेरे से कई आवैं सैं।

ककड़ी (स्त्री.) दे. काकड़ी।

ककरेला (वि.) दे. काँकर आळी।

ककरोंदा (पुं.) 1. कंकरोंदे का पौधा, 2. इस पौधे की सब्जी जो करेले से कुछ छोटे आकार की होती है।

ककरोळी (स्त्री.) दे. किकरोळी।

ककैया (स्त्री.) 4" × 2.5" नाप की पजावे की ईंट।

कक्कड़ (पुं.) 1. मुसलमान, 2. क्षत्रियों की एक उपजाति, 3. चांडाल।

कक्का (पुं.) 1. 'क' वर्ण, 2. वर्णमाला का पहला वर्ण; **~ना आणा** क ख ग आदि तक न आना, निरक्षर रहना।

कक्ख्याणा (क्रि. स.) 1. बगल में दबा कर पटकी लगाना, 2. बगल में दबा कर चुरा ले जाना, 3. कब्जें में करना।

कगला (पुं.) दे. कागला।

कच (पुं.) फोड़ा, 2. धँसते या चुभते समय उत्पन्न ध्वनि।

कच-कच (स्त्री.) 1. अधिक शोर, 2. झक-झक।

कचकचा (वि.) आधा कच्चा, जिसके पकने में कसर हो।

कचकचाणा (क्रि. स.) 1. दाँतों को कटकटाना, 2. क्रोध प्रकट करना। **कचकचाना** (हि.)

कचकची (स्त्री.) 1. दाँत कटकटाने का भाव, 2. दाँत पीसकर क्रोध प्रकट करने का भाव; **~भींचणा** दाँतों को दबाना या कटकटाना।

कचकड़ (पुं.) कीचड़; **~काटणा** कीचड़ में घूमना; **~तारणा** 1. कीचड़-सा मचाना, 2. उधम करना।

कचकोळ (स्त्री.) ऐसी रोटी जो ऊपर से जली और बीच से कच्ची हो।

कचकोळा (पुं.) मुंडा हुआ सिर। दे. कोल कत्तर।

कचनार (पुं.) 1. सुंदर फूल विशेष का पौधा, 2. इस पौधे का फूल।

कचर-कचर (स्त्री.) 1. 'कचर'-'कचर' कर ध्वनि, 2. व्यर्थ का शोर; (क्रि. वि.) इस तरीके से खाना जिससे 'कचर'-'कचर' की ध्वनि आए।

कचबरड़ा (पुं.) फूहड़पने का कार्य।

कचबहसी (वि.) वहमी।

कचरणा (क्रि. स.) 1. आधा खाकर उगल देना, 2. छोटे-छोटे टुकड़े करके डालना, 3. रौंदना, 4. काम को बेतरतीबी से करना, 5. किसी बात को बार-बार दोहराना। **कचरना** (हि.)

कचरना (क्रि. स.) दे. कचरणा।

कचरा (पुं.) 1. खरबूजे की जाति का एक फल, 2. कूड़ा-करकट, 3. रुई ओटते समय निकलने वाली गंदगी; **~(-रे) सा खिलणा** पक कर स्वत: फूटना, खिलना या चटखना।

कचरा काँटा (पुं.) सुनार की हारी की राख।

कचरी (स्त्री.) कचरे की जाति का फल जो बहुत छोटी होती है और बिना बोए बाजरे आदि के खेत में उग आती है

(यह स्वाद में मीठी और खट्ठी होती है, इसे साग-सब्जी में ताजा या सूखी अवस्था में डाला जाता है, लोगों की ध ारणा के अनुसार इसके सेवन से अन्य स्थान का पानी नहीं लगता और प्रदेश में भी उदर रोग से मुक्त रहा जा सकता है); **~फूट** एक प्रकार की लंबी कचरी; **~सी बेचणा** बहुत शोर करना।

कचरोड़ा (वि.) मूर्ख।

कच लहू (पुं.) मवाद। दे. राध।

कचलोही (स्त्री.) 1. दे. राध, 2. दे. कचलहू।

कचहड़ी (स्त्री.) न्यायालय।

कचहरी (स्त्री.) दे. कचहड़ी। **कचहरी** (हि.)

कचहरे (वि.) हरे और कच्चे पौधे, फल आदि।

कचाँध (स्त्री.) 1. तेल आदि के जलने की गंध, 2. कच्चेपन की महक; **~ऊठणा** कच्चे तेल की दुर्गंध व्याप्त होना। **कचायँध** (हि.)

कचाई (स्त्री.) 1. कच्चापन, 2. कमी, 3. अनुभव हीनता।

कचिया (वि.) 1. कोमल, मुलायम– कचिया धोत्ती पहर कैं सुसराड़ गया, 2. कच्चा, 3. कम आयु का।

कचूम (पुं.) 1. बाल तोड़ फोड़ा, 2. ऐसी फुंसी जिसमें नासूर नहीं बना हो।

कचूमर (पुं.) दे. कचूम्मर।

कचूम्मर (पुं.) बुरी तरह कुचली हुई वस्तु; **~काढणा** 1. बुरी तरह से पीटना, 2. खूब रगड़ना, 3. तार-तार करना, 4. नष्ट करना। **कचूमर (हि.)**

कचेर (पुं.) दे. मणियार।

कचेहरा (पुं.) सुनार

कचोट (स्त्री.) 1. कुढ़न, 2. मन की उद्विग्नता।

कचोटणा (क्रि. स.) 1. शरीर को नोचना, 2. सिर के बालों को खींचना, 3. मन ही मन कुढ़ना। **कचोटना** (हि.)

कचोट्टी (स्त्री.) बेचैनी; **~लागणा** बेचैनी अनुभव करना।

कचोद (पुं.) कटु उक्ति, बुरा वचन; **~कहणा/बोलणा/मारणा** बुरा वचन कहना।

कचोरी (स्त्री.) एक प्रकार की पूरी, पीठी डालकर बनाई गई पूरी।

कचोळा (पुं.) 1. कटोरा, 2. गहरा और चौड़ा प्याला।

कच्चा (वि.) दे. काच्चा।

कच्चा गज (पुं.) दे. काच्चा गज।

कच्चा चिट्ठा (पुं.) दे. काच्चा चिट्ठा।

कच्चा बीग्घा (पुं.) मानक बीघा से कम नाम की भूमि। **कच्चा बीघा** (हि.)

कच्चा सेर (पुं.) मानक सेर से परिमाण में कुछ कम तोल का बाट।

कच्छ (पुं.) कछुआ।

कच्छप (पुं.) कच्छप अवतार।

कच्छा (पुं.) पायजामे के आकार का जंघा तक पहना जाने वाला नाड़ेदार कटिवस्त्र, जाँघिया।

कच्छी (स्त्री.) छोटा जाँघिया।

कछड़ा (पुं.) घघरी का घुटनों तक लपेटा लगाकर दिया गया रूप; **~मारणा** दुल्हैंढ़ी खेलते समय या अन्य भारी काम करते समय औरतों द्वारा अपनी घघरी को घुटनों तक समेटना।

कछनी (स्त्री.) दे. कच्छी।

कछरिया (स्त्री.) पहलवान की कच्छी।

कछवा (पुं.) कच्छप। **कछुआ** (हि.)

कछुआ (पुं.) दे. कछवा।

कज (पुं.) 1. कमी, 2. लंगड़ापन, 3. वस्त्र या शरीर के किसी अंग में होने वाली कमी।

कजरोट्टी (स्त्री.) काजल बनाने के लिए दिए के ऊपर रखा जाने वाला मिट्टी का पात्र या लोहे की पल्टी आदि। **कजलौटी** (हि.)

कजली (स्त्री.) कालिमा।

कजलीबन (पुं.) 1. गुरु गोरखनाथ के निकास से संबंधित एक स्थान या गाँव।

कजा (स्त्री.) मौत।

कजिया (पुं.) 1. छोटा काम, 2. सामान्य धंधा।

कज्जाक (वि.) 1. निर्दयी, 2. चालाक।

कटक (पुं.) 1. भीड़, 2. समूह, 3. सेना, 4. दर्शक; **~कट्ठा होणा/जुड़णा** 1. भीड़ इकट्ठी होना, 2. तमाशा देखने वालों की भीड़ लगना।

कटकटा (वि.) 1. तेज, 2. काट खाने वाला (कुत्ता)।

कटकटाणा (क्रि. अ.) 1. ठंड के कारण दाँतों का आपस में बज कर कटकट की ध्वनि उत्पन्न होना, 2. स्वप्न में दाँतों का बजना, 3. ललचाना; (क्रि. स.) दाँत पीस कर क्रोध प्रकट करना। **कटकटाना** (हि.)

कटकटाना (क्रि. अ.) दे. कटकटाणा।

कटकड़ (पुं.) बार-बार चक्कर लगाने की किया; **~तारणा** स्वार्थपूर्ति या कार्यपूर्ति के लिए बार-बार चक्कर लगाना।

कटखड़ (पुं.) लकड़ी का बना खाँचा जो कुएँ के ऊपर डाल दिया जाता है ताकि पानी खींचने वाला कुएँ में न फिसले।

कटखणा (वि.) काट खाने वाला (कुत्ता), तुल. पड़खणा।

कटखने (पुं.) नवसिखियों के अभ्यास के लिए काठ की तख्ती पर पेंसिल से लिखे वर्ण, तुल. पूरणे; **~काढणा** नवसिखियों के लिए पेंसिल से वर्ण लिखना जिन पर वे बाद में स्याही से लिख सकें।

कटखाणा (वि.) काट खाने वाला (कुत्ता)।

कटखाणी (वि.) 1. काट खाने वाली (कुतिया), 2. झगड़ालू (महिला)।

कटखाया (वि.) दे. कटखाणा।

कटड़वा (पुं.) दे. काटड़ा।

कटड़ा (पुं.) दे. काटड़ा।

कटणा (क्रि. अ.) 1. अलग होना, 2. जलना, ईर्ष्या करना, 3. समय बिताना, 4. लड़ाई में कट मरना, 5. कम होना, 6. कतराना; **~मरणा** 1. आपस में कट मरना, 2. झगड़ा करना। **कटना** (हि.)

कटती (स्त्री.) 1. चुगली, 2. निंदा, बुराई, 3. मर्म, भेद, रहस्य; **~करणा/ कहणा** 1. भेद खोलना, 2. निंदा करना, 3. चुगली खाना।

कटना (क्रि. अ.) दे. कटणा।

कटफावड़ी (स्त्री.) एक जादुई कुदाल या फाल जो गुरु स्मरण से मनोवांछित स्थान पर पहुंचा देती है।

कटफोड़ा (पुं.) दे. खात्ती चिड़ा।

कटमाँ (वि.) 1. जो जोड़ देकर बनाया हो, जोड़ वाला, 2. कहीं-कहीं से कटा हुआ, बीच-बीच से कटा या टूटा हुआ; **~गिणती** कहीं-कहीं से या बीच-बीच से पूछे गए पहाड़े। **कटवाँ** (हि.)

कटर-कटर (स्त्री.) 1. 'कटर'-'कटर' की ध्वनि, 2. कुतरने की ध्वनि, 3. दिल की बेचैनी की अवस्था; **~करणा** 1. दिल धड़कना, 2. घबराना; **~काळजा करणा** 1. घबराना, कलेजा घबराना, 2. पश्चात्ताप करना।

कटरा (पुं.) दे. काटड़ा।

कटल (पुं.) दे. काटड़ा।

कटवाँ (वि.) दे. कटमाँ।

कटसूल (पुं.) 1. कमर का दर्द, 2. बच्चा उत्पन्न होने से पूर्व स्त्री की कमर में उठने वाली पीड़ा। **कटिशूल** (हि.)

कटहळी (स्त्री.) लगभग दो हाथ ऊँचा काँटेदार जंगली पौधा जिस पर पीले रंग के सुंदर फूल खिलते हैं और डोडी या डोंडी पकने पर उनसे सरसों जैसे आकार के काले बीज निकलते हैं जिसे अग्नि में डालने से चटर-चटर की ध्वनि निकलती है (इस पौधे को चटर-मटर भी कहते हैं), (1. दे. चटर-मटर, 2. दे. सत्यानास्सी); **पसरमाँ~**जमीन पर बेल के आकार में फैलने वाली काँटेदार झाड़ी जिसमें नीले फूल खिलते हैं, फूल के बीच में चावल जैसे अंकुर होते हैं जिन्हें चावल कहते हैं, इनके खाने से खाँसी दूर होती है, पक कर इनमें डोडी (ढींढरे) लगती हैं जिनके धुएँ से दाढ़ के कीड़े मर जाते हैं।

कटा (पुं.) 1. किसी स्थान से बहाव के कारण मिट्‌टी कटने का भाव, 2. गड्‌ढा, 3. घाव; **~पड़णा/होणा** खेत या नहर आदि में पानी के बहाव के कारण गड्‌ढा बनना। **कटाव**(हि.)

कटाई (स्त्री.) 1. काटने का काम, 2. फसल काटने का काम, 3. फसल काटने की मजदूरी; **~आणा/पड़णा** फसल पक कर कटाई योग्य होना, फसल की कटाई आरंभ होना।

कटाकट (स्त्री.) 'कटाकट' की ध्वनि; (क्रि. वि.) धड़ा-धड़ **~बाजणा** लाठियों से लड़ना।

कटार[1] (स्त्री.) 1. दोनों ओर धार वाला लगभग एक हाथ लंबा हथियार विशेष, 2. इमली का फल या फली; **इमली~**इमली का फल; **~खाणा** आत्म-हत्या करना; **~बरगी आँख** लंबी और मोटी आँख।

कटार[2] (वि.) बाँझ मादा। दे. कटार।

कटारा (पुं.) 1. मोर का अर्धविकसित पंख (चंदा) जो छोर से पूर्ण चंद्राकार नहीं होता तथा लंबाई और आकार में कटार जैसा होता है, 2. कटारी, 3. इमली की फली।

कटारिया (पुं.) एक जाट गोत या अल्ल।

कटारी (स्त्री.) 1. छोटी कटार, 2. इमली की फली; **~खाणा** आत्म-हत्या करना।

कटारी फेरे (पुं.) दूल्हे की अनुपस्थिति में 'कटार' के चारों ओर घुमाकर दुल्हन का विवाह संपन्न करने की विधि।

कटाव (पुं.) दे. कटा।

कटिबंध (पुं.) 1. कमरबंद, 2. मेखला।

कटिया (स्त्री.) भैंस का मादा बच्चा; **~तारणा** 1. किसी के पास बार-बार चक्कर काटना, 2. पशुओं के बार-बार आने से भूमि का कटना, 3. तंग करना।

कटीड़ (स्त्री.) जमीन पर रेंगती टिड्डियों का झुंड।

कटेहड़ा (पुं.) लकड़ी का ढाँचा या छोटा बाड़ा।

कटैया (पुं.) फसल काटने वाला मजदूर; (वि.) फसल काटने में कुशल।

कटोरदान (पुं.) पीतल का एक बड़ा बर्तन जिसमें भोजन सुरक्षित रखते हैं।

कटोरा (पुं.) चौड़े मुँह और पेंदी का एक पात्र।

कटोरी[1] (स्त्री.) छोटा कटोरा।

कटोरी/कचोळी (स्त्री.) विशेष माप की वह कटोरी जिसके नीचे छेद होता है और जो समय मापने के लिए जल पात्र में छोड़ दी जाती है। जल घड़ी।

कटौती (स्त्री.) किसी रकम को देते समय उससे कुछ बँधा हक या धर्मार्थ द्रव्य निकाल लेना।

कट्टर (वि.) 1. पक्का, 2. हठी, 3. दुराग्रही, 4. अपने ही मत को मानने और मनवाने के लिए कटिबद्ध; **~पंथी** केवल अपने ही पंथ में आस्था रखने वाला।

कट्टा[1] (वि.) 1. पटसन आदि से बनी छोटी बोरी, 2. दे. काटड़ा।

कट्टा (पुं.) 1. दे. तमंचा, 2. दे. कट्टा।

कट्टो (स्त्री.); गिलहरी, तुल. काँट्टो।

कट्ठा (वि.) एकत्र; **~होणा** 1. सिकुड़ना, 2. ढेर लगना। **इकट्ठा** (हि.)

कठड़ी (स्त्री.) काठ का बर्तन जो अचार आदि डालने के काम आता है।

कठपुतळी (स्त्री.) दे. कठपूतळी।

कठपूतली (स्त्री.) कपड़े आदि से बनी गुड़िया जो दूसरे के इशारे पर काम करती है; (वि.) 1. दूसरे के इशारे पर नाचने वाला, 2. पराधीन।

कठपुतली (हि.)

कठमुल्ला (पुं.) बनावटी मुल्ला; (वि.) दुराग्रही।

कठला (पुं.) कंठ का एक आभूषण विशेष।

कठारा (पुं.) तालाब, जोहड़ आदि का किनारा, तट, तुल. कंठारा; **~पाकड़णा** 1. पार होना, 2. गंतव्य पर पहुँचना।

कठिन (वि.) 1. सख्त, 2. मुश्किल।

कठोत्ती (स्त्री.) काष्ठ की परात।

कठौती (हि.)

कठोर (वि.) 1. कड़ा, 2. निर्दय।

कड़ (स्त्री.) कटि, कमर; **~टूटणा** 1. शरीर में शक्ति न रहना, 2. हिम्मत हारना, 3. भारी धक्का लगना; **~ठोकणा** शाबाशी देना; **~तोड़णा** 1. हिम्मत हराना, 2. परास्त करना; **~समान्नी** कमर तक की ऊँचाई का प्रमाण।

कड़क (स्त्री.) 1. बादल की गरज की ध्वनि; 2. बिजली से उत्पन्न ध्वनि, 3. सूखी वस्तु के टूटने से उत्पन्न ध्वनि, 4. कर्कश ध्वनि; (वि.) 1. कठोर, 2. अधिक सिकी हुई या अधिक सूखी।

कड़कड़[1] (स्त्री.) 'कड़कड़' की ध्वनि; **~बड़बड़** बड़बड़ाने का भाव।

कड़कड़ा (वि.) 1. करारा, 2. अधिक सिका हुआ (पापड़, टीकड़ा आदि), 3. तेज स्वभाव का।

कड़कड़ा[2] (पुं.) दे. आरणा।

कड़कड़ाट (पुं.) 1. 'कड़'-'कड़' की आवाज, 2. बिजली की गर्जन।

कड़कड़ाहट (हि.)

कड़कड़ाणा (क्रि. अ.) 1. बादल या बिजली से ध्वनि उत्पन्न होना, 2. क्रोधित होकर बोलना, 3. सूखे पत्तों की आपसी रगड़ से कड़कड़ की ध्वनि आना।

कड़कड़ाना (हि.)

कड़कड़ात्ता (वि.) कड़कड़ाता हुआ, अधिक

तेज–दोफाहरी में कड़कड़ाता घाम पड़ै था।

कड़कड़ाना (क्रि. अ.) दे. कड़कड़ाणा।

कड़कड़ाहट (स्त्री.) दे. कड़कड़ाट।

कड़कड़ी (स्त्री.) दे. कचकची।

कड़का[1] (पुं.) 1. हास्यपूर्ण उक्ति, 2. 'कड़वक' छंद।

कड़का[2] (पु.) दे. कटखड़, 2. कड़का।

कड़ग (वि.) अधिक ऊँचा, ऊँचे कद का, (दे. डिरघ)।

कड़गता (पुं.) चद्दर या ओढ़नी का कमर के चारों ओर लगाया गया फेंटा; **~कसणा/खींचणा** किसी काम को करने की ठानना, कटिबद्ध होना; **~मारणा** चद्दर को कमर के चारों ओर कसकर लपेटना ताकि काम चुस्ती से हो सके।

कड़छा (पुं.) बड़ा चमचा।

कड़छाळ (स्त्री.) हिरन आदि की ऊंची कूद। दे. छलांग।

कड़त (पुं.) उपलों का चूरा।

कड़तू (वि.) कृशकाय।

कड़ब (स्त्री.) ज्वार की वह फसल जो केवल चराने के लिए बोई जाती है, चरी; **~सार** ज्वार के समान (ऊँची)।

कड़वा (वि.) 1. कड़ुआ, 2. बुरा लगने वाला, 3. कर्णकटु; **~(–वी) ढाल** 1.बुरी नज़र से, 2. बुरी तरह से; **~त्योर लखाणा** 1. क्रोध, ईर्ष्या, डाह, शत्रुता आदि की मुद्रा से देखना, 2. आँखें फाड़कर या टेढ़ी करके देखना, 3. एक पशु का दूसरे पशु की ओर क्रोधपूर्ण दृष्टि से देखना; **~बोल** अप्रिय वचन, तुल. कचोद। **कड़ुआ** (हि.)

कड़वाट (वि.) दे. कड़वास।
कड़वाहट (हि.)

कड़वा नीम (पुं.) वह नीम जो बहुत ऊँचा बढ़ता है और जिससे रस (नीम झारा) टपकता है; **~तैं भी बड्डा** चिरायु होने के लिए दिया जाने वाला आशीर्वाद।

कड़वाळ (वि.) (अपने स्वामी को) क्रोध भरी नज़र से देखने वाला (पशु) (यह प्रवृत्ति भैंस में प्रमुख रूप से मिलती है)।

कड़वास (स्त्री.) 1. कड़ुआपन का भाव, 2. मानसिक द्वेष, घृणा।
कड़वाहट (हि.)

कड़वी (स्त्री.) दे. कड़ब।

कड़ा[1] (पुं.) 1. हाथ या पाँव में पहनने का चूड़ा, 2. दरवाज़े, छत, दीवार आदि में लगाया गया बड़ा छल्ला; (वि.) दे. करड़ा।

कड़ा[2] (पुं.) 1. एक छंद 2. एक तर्ज। दे. कट्टा। दे. कड़ा[1]।

कड़ाक (स्त्री.) 1. सूखी वस्तु के टूटने से उत्पन्न ध्वनि, 2. चटखने की ध्वनि।

कड़ाका (पुं.) दे. कड़ाक्का।

कड़ाक्का (पुं.) 1. 'कड़ाक' की ध्वनि, 2. तेज़ गति–कड़ाक्के तैं आइये जाइये, 3. तेज़, तीव्र–आज तैं कड़ाक्कै का जाड्डा पड़ै सै।

कड़ियल (वि.) 1. कठोर या कटु स्वभाव वाला, 2. हट्टा कट्टा। दे. कड़वाळ।

कड़ी[1] (स्त्री.) 1. छत में लगने वाली शहतीरी या लकड़ी जिसके ऊपर सिल्ली या करंजे रखकर छत डाली जाती है, 2. पैर में पहना जाने वाला वलयाकार चाँदी का आभूषण (यह छैलकड़े के नीचे पहना जाता है); (वि.) **दे. करड़ी।**

कड़ी[2] (स्त्री.) शृंखला। दे. कड़ी[1]।

कड़ी-छैलकड़े (पुं.) कड़ी और छैलकड़े, पैर में पहने जाने वाले वलयाकार मोटे आभूषण (अधिकांश महिलाएँ पैर में इन्हीं दो आभूषणों को धारण करती हैं)।

कड़ू (स्त्री.) एक बेल जिसके रस से पशुओं के खुर का रोग दूर होता है।

कड़ूल्ला (पुं.) कंगन (इसे कहीं-कहीं पुरुष भी पहनते हैं)।

कड़ै (क्रि. वि.) कहाँ; **~सी** कहाँ पर, किस स्थान पर—कीड़ी का घर कड़ै सी, आग्गै पाच्छै बूड्ढे नीम तळै सी।

कड्ढी (स्त्री.) एक सालन जो बेसन को छाछ में मिला कर, इसका खट्टा घोल बनाकर और फिर आग पर उबालकर बनाया जाता है, इसे पूर्ण विधि से पकाने के लिए 101 उफान दिए जाते हैं; **~बिगाड़** बनती बात को बिगाड़ने वाला; **~सा उफाण** क्षणिक जोश। **कढ़ी** (हि.)

कढणा (क्रि. अ.) 1. अधिक औटने के कारण दूध का गाढ़ा होना, 2. निकलना, 3. स्त्री का घर से भाग जाना, 4. उभरना, 5. खिंचना, 6. ऊपर उठ आना, 7. चित्रित होना, 8. प्रश्न का हल निकलना; **~काँट्टा सा** 1. शत्रु का मार्ग से हट जाना, 2. चैन पड़ना, 3. पीड़ा मिटना। **कढ़ना** (हि.)

कढ़ना (क्रि. अ.) दे. कढणा।

कढ़वाणा (क्रि. स.) 1. निकलवाना, 2. निर्वासित करवाना, 3. दूध को अधिक उबलवाना। **कढ़वाना** (हि.)

कढ़ा (पुं.) 1. लोहे की बड़ी कड़ाही, 2. देवी की कड़ाही करने का भाव। **कड़ाह** (हि.)

कढ़ाई (स्त्री.) धातु का कड़ों वाला पात्र जिसमें हलुआ आदि बनाया जाता है; **~करणा** 1. हलुआ बनाना, 2. पकवान बनाना, 3. धर्मार्थ भोजन कराना; **~चढ़ना** विवाह से दो-तीन दिन पहले पकवान बनाने के लिए भट्ठी पर काम चालू होना; **~चढाणा** देवी की पूजा अर्चना के लिए निश्चित मात्रा में हलुआ बनाना; **देब्बी की~** नवरात्रों के दिनों में अष्टमी या नवमी के दिन दुर्गा पर प्रसाद चढ़ाने के लिए बना हलुआ; **~बोळणा** इच्छा पूर्ति के लिए दान पुण्य का प्रण लेना; **~सिळाणा** विवाह आदि का कार्य संपन्न होने पर अंत में कड़ाई में हलुआ बनाना और इसे प्रसाद स्वरूप बाँटना। **कड़ाही** (हि.)

कढ़ाई (स्त्री.) कशीदाकारी।

कढ़ाण (पुं.) गूजर जाति का एक गोत।

कढ़ावणी (स्त्री.) क्वथन भाजनी, दूध उबालने के लिए काम आने वाला मिट्टी का पात्र जिसके पेंदे पर कुछ मिट्टी लेप दी जाती है ताकि दूध तली में न लगे; **~बिलोवणी** दूध उबालने और दही बिलोने के पात्र; **~~करणा** प्रातःकाल गर्म पानी से 'कढ़ावणी' और 'बिलोवणी' को भली प्रकार धोना और धूप लगाना।

कढिया (पुं.) हठ करने का भाव; **~तारणा** अधिक हठ करना।

कढ़ी (स्त्री.) दे. कड्ढी।

कढ़ेल्लड़ (पुं.) ऐसा पुत्र जो अपनी माँ के साथ पहले पिता से आया हो, गोलक (वै. सं.) तुल. गैलड़।

कढोणी (स्त्री.) दे. कढावणी। दे. कढौणी।

कढौणी (स्त्री.) दे. कढावणी।

कण (पुं.) 1. छोटा अंश, कनी, 2. अन्न का दाना।

कणकी (स्त्री.) चावल आदि के छोटे टुकड़े।

कणता (स्त्री.) दे. कणताई।

कणताई (स्त्री.) 'कणताणे' का भाव, (दे. कणताणा)।

कणताणा (क्रि. अ.) 1. शरीर का टूटना, अलसाना या भारी होना, 2. किसी कार्य को संकोच से करना या टालना। **कनकनाना** (हि.)

कणसुआ (पुं.) गन्ने का एक रोग।

कणा (स्त्री.) (शक्ति?) उदा.–नाजों की कणा घटा दी।

कणी (स्त्री.) 1. बहुत नुकीली कील, 2. किसी वस्तु का छोटा अंश, (दे. कण)।

कतई (अव्य.) दे. कती।

कतणी (स्त्री.) दे. कातणी।

कतरण (स्त्री.) कतरन, तुल. धरक। **कतरन** (हि.)

कतरणा (क्रि. स.) 1. कैंची आदि से काटना, 2. कुतरना। **कतरना** (हि.)

कतरणी (स्त्री.) कैंची।

कतरन (स्त्री.) दे. कतरण।

कतरना (क्रि. स.) दे. कतरणा।

कतरनी (स्त्री.) दे. कतरणी।

कतर ब्यौत (स्त्री.) 1. काट-छाँट, 2. उधेड़-बुन, सोच-विचार, 3. योजना बनाने का भाव।

कतराना (क्रि. अ.) सशंकित होकर किसी काम को न करना, भयवश कार्य से विलग होना।

कतरी (स्त्री.) बूंद।

कतल (पुं.) वध, हत्या। **कत्ल** (हि.)

कतली[1] (स्त्री.) मिठाई, बरफ, मटके आदि का छोटा टुकड़ा।

कतली[2] (पुं.) 1. कातिल, 2. दे. कतली[1]।

कतवाणा (क्रि. स.) कातने का काम अन्य से लेना। **कतवाना** (हि.)

कतवाना (क्रि. स.) दे. कतवाणा।

कताई (स्त्री.) 1. कातने का काम, 2. कातने की मज़दूरी; **~बणाई** 1. कातने और बुनने का काम, 2. उधेड़-बुन, सोच-विचार।

कताणी (स्त्री.) दुर्गा। **कात्यायिनी** (हि.)

कताना (क्रि. स.) दे. कतवाणा।

कतार (स्त्री.) पंक्ति।

कतिया (पुं.) धातु काटने की कैंची।

कती (अव्य.) बिल्कुल **~ए** बिल्कुल ही। **कतई** (हि.)

कतूरिया (पुं.) कुत्ते का पिल्ला। दे. पिलूरा।

कत्तल (स्त्री.) 1. मटके या ईंट-पत्थर आदि का छोटा टुकड़ा, 2. जमे हुए घी का छोटा टुकड़ा, 3. मिठाई का टुकड़ा; **~तारणा** 1. मारना-पीटना, 2. जमी हुई वस्तु से छोटे टुकड़े काटना, 3. पानी पर कत्तल तैराना।

कत्तई (अव्य.) दे. कती।

कत्ती (अव्य.) दे. कती।

कत्थई (वि.) कत्थे के रंग का।

कत्था (पुं.) खैर की लकड़ी को उबालकर निकाला हुआ गाढ़ा और सुखाया अर्क, (दे. खैर[1])।

कथ (पुं.) कथन। (स्त्री.) कथा। उदा. –लखमीचंद कथ गाता।

कथणा (क्रि. स.) 1. कहना, 2. भविष्य वाणी करना।

कथणी (स्त्री.) 1. भविष्यवाणी, 2. बात, 3. सीख भरी बात; **~पार उतरणी** भविष्यवाणी पूरी होना। **कथनी** (हि.)

कथनी (स्त्री.) दे. कथणी।

कथा (स्त्री.) 1. कहानी, किस्सा, बात, 2. समाचार, 3. झगड़ा; **~छेड़णा** 1. किसी की निंदा शुरू करना, 2. कोई पुराना किस्सा या झगड़े का वृत्तांत शुरू करना, 3. लंबी बात कहना; **~बँचवाणा** कार्य सिद्धि हेतु सत्य नारायण आदि की कथा करवाना; **~सुणणा** 1. राम-कहानी सुनना, 2. सारी बात सुनना।

कदंब (पुं.) दे. कदम[1]।

कद[1] (क्रि. वि.) किस समय; **~सी** किस समय–कद सी आया? **कब** (हि.)

कद[2] (पुं.) ऊँचाई। **क़द** (हि.)

कदम[1] (पुं.) कदंब का वृक्ष।

कदम[2] (पुं.) डग, (दे. डँघ)।

कदर (स्त्री.) मान, बड़ाई, सम्मान। **कद्र** (हि.)

कदात (अव्य.) दे. कदे-कदात।

कदावट (पुं.) दुश्मनी। दे. कड़वास।

कदिया (अव्य.) दे. कदे।

कदी (क्रि. वि.) कभी–कदी-कदी म्हारी भी सुण ले। **कभी** (हि.)

कदीमी (वि.) दे. कदीम्मी।

कदीम्मी (वि.) 1. पुराना, 2. पैतृक। **क़दीमी** (हि.)

कदे (क्रि. वि.) दे. कद्दे।

कदे कदाऊ (क्रि. वि.) कभी-कभी।

कददू (पुं.) 'कोहड़ा' जाति की सब्जी।

कद्दूकस (पुं.) दे. घीयाकस।

कद्दे (क्रि. वि.) 1. कभी, 2. किसी समय भी–कद्दे घुळ लिए तेरी छुट्टी; **~कदात्** कभी-कभी, कदाचित्; **~बी** कभी भी, किसी भी समय।

कद्य (अव्य.) दे. कद्दे।

कन (सर्व.) किन।

कनकट (वि.) 1. जिसका कान कटा हो, बूचा, 2. कान काटने वाला; (पुं.) कनफाड़ा साधु।

कनकटा (वि.) दे. कनकट।

कनकू (वि.) लंबे कान वाला।

कनको (वि.) लंबे कान वाली।

कनखड़ (वि.) जिसके कान सदा चौकन्नै रहते हैं, चौकन्ना।

कनखियाँ (स्त्री.) 1. तिरछी आँख करके देखने का भाव, 2. इशारे की मुद्रा में देखने का भाव।

कनखी (वि.) दे. कनखियाँ।

कनग (पुं.) कण्व ऋषि।

कनटोप (पुं.) चद्दर की तह करके बनाया गया टोपा, कानों तक आने वाला टोप।

कनपटी (स्त्री.) कान और आँख के बीच का स्थान (इस स्थान पर डंडा लगने से पशु जल्दी वश में आ जाता है); **~सेकणा** थप्पड़ मारना।

कनपड़ी (पुं.) दे. कनफाड़ा।

कनफटा (वि.) फटे कान वाला, (दे. कनफाड़ा)।

कनफाड़ा (पुं.) नाथ संप्रदाय का वह साधु जो कान फड़ाकर मुद्रा पहनता है; (वि.) जिसका एक या दोनों कान फटे हों।

कनफेड़ (स्त्री.) कानों के नीचे होने वाली सूजन (जन-विश्वास के अनुसार कुम्हार के चाक की मिट्टी का लेप सूजन पर करने से यह एक सप्ताह में ठीक हो जाती है); **~झड़वाणा** कनफेड़ के

उपचारस्वरूप किसी ऐसे व्यक्ति से नीम की टहनी, मोर के पंख या झाड़ू आदि से झाड़ा लगवाना जिसके झाड़े से रोग से मुक्ति मिलती हो; **~लीकड़णा** कनफेड़ रोग होना।

कन बिंधा (पुं.) 1. वह व्यक्ति जिसने अपने कान बिंधवाए हुए हों (पहले पुरुष भी कान बिंधवाते थे) 2. कनफाड़ा साधु।

कनवा (पुं.) कन्हैया, कृष्ण।

कनसल (पुं.) अग्रवाल बनियों का एक गोत्र।

कनसलाई (स्त्री.) दे. कानसिळाई।

कनस्तर (पुं.) टीन का चौकोर बर्तन जिसमें घी, तेल आदि रखा जाता है।

कनहैया (पुं.) 1. कृष्ण, 2. एक घास विशेष।

कनागत (पुं.) 1. श्राद्ध, पितृपक्ष (कन्या राशि में आने के कारण इस पक्ष को कनागत कहते हैं, एक अन्य विश्वास के अनुसार इन दिनों पितृमंडल भूमंडल से निकटतम दूरी पर होता है), आश्विन पूर्णिमा से अमावस्या तक का 16 दिन का समय, 2. वह धार्मिक कृत्य जो पितरों की तृप्ति के लिए किया जाता है (तर्पण, पिंडदान तथा ब्रह्मभोज इसके मुख्य अंग हैं); **~आणा/ लागणा** श्राद्ध पक्ष आरंभ होना; **~करणा/मनाणा** श्राद्ध कर्म संपन्न करना।

कनियर (स्त्री.) दे. कनेर।

कनेर (स्त्री.) एक पेड़ जिसमें लाल, पीले या श्वेत फूल लगते हैं।

कनैं (क्रि. वि.) की ओर–वो तेरै कनैं गया, (दे. कान्नी[1])।

कनैल (स्त्री.) दे. सिलम।

कनोड़ा (वि.) दे. कानोंढा।

कन्नी[1] (स्त्री.) कानी, किनारा।

कन्नी[2] (स्त्री.) दे. करणी।

कन्नीदार (वि.) कानीदार, किनारी वाली, (दे. कान्नी[2])।

कन्नें (अव्य.) किनको।

कन्या (स्त्री.) 1. बालिका, अविवाहित लड़की, 2. पुत्री, 3. एक राशि।

कन्याकुमारी (स्त्री.) 1. भारत का धुर दक्षिण का एक तटीय क्षेत्र, 2. पार्वती।

कन्यादान (पुं.) 1. कन्या के विवाह के समय सगे-संबंधियों द्वारा दिया जाने वाला दान, 2. कन्या को विवाह में वर को सौंपने का भाव; **~घालणा** विवाह के अवसर पर कन्या के निमित्त दान के रूप में नक़द रुपया, उपहार आदि देना।

कन्यावाणी (स्त्री.) कन्या संक्रांति की वर्षा जो साढी फसल के अनुकूल होती है।

कन्हाई (स्त्री.) कान दे कर सुनना।

कन्हार (स्त्री.) (?) 1. उदा. हुई कन्हार पसीना सूक्या।

कपकपी (स्त्री.) काँपने की क्रिया। **कँपकँपी** (हि.)

कपट (पुं.) 1. छल, छिपाव, धोखा, 2. पाप; **~कमाणा** 1. कपट करना, 2. पाप कमाना।

कपटण (वि.) कपट करने वाली।

कपटी (वि.) छल करने वाला, 2. पाप कमाने वाला।

कपड़छाण (स्त्री.) कपड़े से छानने की क्रिया। **कपड़छान** (हि.)

कपड़छान (पुं.) दे. कपड़छाण।

कपड़बाँस (स्त्री.) कपड़ा जलने से उठने वाली गंध; **~आणा/ऊठणा** कपड़ा जलने के कारण गंध आना।

कपड़ा (पुं.) वस्त्र, (दे. लत्ता)।

कपत्ता (पुं.) दे. कपूत्ता।

कपला (स्त्री.)1: मटमैले रंग की गाय, सफेद और काले चितकों वाली गाय, 2. सीधी-साधी गाय। **कपिला** (हि.)

कपला गा (स्त्री.) कपिला गाय। **कपिला गाय** (हि.)

कपसूरत (वि.) रूपवान। **खूबसूरत** (हि.)

कपाळ (पुं.) 1. खोपड़ी, 2. नर-मुंड; **~किरिया** कपाल क्रिया, मुर्दे के कुछ जल जाने के बाद पुत्र द्वारा लंबा बाँस लेकर कपाल भेदन की क्रिया; **~पाटणा** 1. ब्रह्मरंध्र फटना, दशम द्वार से प्राण निकलना, 2. चोट के कारण कपाली टूटना। **कपाल** (हि.)

कपाल (पुं.) दे. कपाळ।

कपाळी (स्त्री.) 1. सिर की खोपड़ी, 2. खोपड़ी में संचरित प्राण वायु; (पुं.) कापालिक साधु; **~खेंचणा/चढाणा** योग साधना द्वारा प्राण वायु को इस प्रकार ऊपर चढ़ाना कि शरीर मृतक के समान हो जाए। **कपाली** (हि.)

कपास (स्त्री.) 1. रूई का पौधा, 2. रूई।

कपि (पुं.) बंदर।

कपिल मुनि (पुं.) सांख्य दर्शन के रचयिता (जिला जींद का कलायत नाम का स्थल इनका आश्रम माना जाता है)।

कपिल यक्ष (पुं.) चार यक्षों में ऐ एक जो हरियाणा में रामरा पिंडारा के निकट है।

कपिला (स्त्री.) दे. कपला।

कपिलायत (पुं.) दे. कलायत।

कपूत (पुं.) 1. बुरा पुत्र, नालायक पुत्र, 2. दुराचारी पुत्र।

कपूत्ता (पुं.) पुरुष जाति के लिए प्रयुक्त एक अपशब्द; (वि.) पुत्रहीन।

कपूत्ती (स्त्री.) 1. दुराचारिणी, 2. पुत्र हीन स्त्री, 3. महिला को दी जाने वाली एक गाली।

कपूर (पुं.) एक ज्वलनशील श्वेत तथा सुगंधित द्रव्य।

कफ़ (पुं.) दे. खखार।

कफन (पुं.) वह कपड़ा जिसमें मुर्दा लपेटा जाता है; **~सिर पै बाँधणा हर** कुर्बानी के लिए तैयार रहना।

कफनी (पुं.) दे. कफन।

कफनी सेल्ली (स्त्री.) कफन के समान बिना सिली पोशाक जिसे कुछ साधु धारण करते हैं।

कब[1] (क्रि. वि.) 1. दे. किब. 2. दे. कद[1]।

कब[2] (पुं.) कवि।

कबड्डी (स्त्री.) दे. कबोड्डी।

कबताइ (स्त्री.) दे. कविताई।

कबताई (स्त्री.) 1. कविता की रचना 2. स्वाँग की रागिनी। **कविताई** (हि.)

कबरी (वि.) जिसके शरीर पर दाग या चितके हों। **चितकबरी** (हि.)

कबाड़ (पुं.) कचरा, काम न आने वाली व्यर्थ की वस्तु।

कबाड़ा[1] (पुं.) कचरा, काम न आने वाली व्यर्थ की वस्तु।

कबाड़ा[2] (पुं) 1. व्यर्थ की बात, 2. झगड़ा, 3. टूटी-फूटी चीज़, कबाड़; **~खड्या करणा** झगड़ा पैदा करना, मुसीबत पैदा करना।

कबाड़िया (पुं.) 1. ढकोसला करने वाला, 2. धोखेबाज़ व्यक्ति, 3. व्यर्थ में झगड़ा उत्पन्न करने वाला, 4. कबाड़ी की दुकान करने वाला।

कबाड़ी (पुं.) दे. कबाड़िया।

कबाध (स्त्री.) 1. कुबुद्धि वश किया गया बुरा काम, 2. बुरा काम, 3. शरारत; **~लागणा** शरारत सूझना।

कबाब (पुं.) सींखों पर भुना हुआ मांस।

कबीर (पुं.) एक संत।

कबीर पंथी (पुं.) कबीर पंथ को मानने वाले (इस पंथ को मानने वाले अधिकांश हरिजन बंधु या अनुसूचित जाति के लोग हैं)।

कबीला (पुं.) दे. कबील्ला।

कबील्ला (पुं.) 1. समान गोत्र के लोगों का समूह, 2. जनजाति का कुनबा, 3. परिवार के सदस्य।

कबीस्सर (पुं.) 1. भाट, 2. गंगा के पंडे जो 'हर गंगे' का गान गाते हुए गंगा के नाम पर दान माँगते हैं।

कबूतर (पुं.) दे. कबूत्तर।

कबूतर खाना (पुं.) पालतू कबूतर रखने का दड़बा।

कबूत्तर (पुं.) कपोत, एक पक्षी। **कबूतर** (हि.)

कबूलणा (क्रि. स.) 1. कबूल करना, स्वीकार करना, 2. अपनाना। **कबूलना** (हि.)

कबूलना (क्रि. स.) दे. कबूलणा।

कबूल्या (वि.) आशीर्वाद से प्राप्त (संतान); (क्रि. स.) कबूल किया, स्वीकार किया; **~बोल्या** 1. मनौती से प्राप्त (संतान), 2. बोला और कबूला हुआ।

कबूल्ली (स्त्री.) एक उपकरण विशेष; (वि.) स्वीकार की हुई।

कबेरा (पुं.) कवि।

कबोड्डी (स्त्री.) 1. कबड्डी का खेल (इसमें दो पाले होते हैं और एक पाले का खिलाड़ी 'कबड्डी- 'कबड्डी' कहता हुआ दूसरे पाले में जाता है और किसी को छूकर बिना साँस तोड़े अपने पाले में लौटता है, इस खेल में लगभग 6 से 20 तक खिलाड़ी खेलते हैं), 2. वह शब्द जिसे खिलाड़ी कबड्डी का खेल खेलते समय एक साँस में उच्चरित करता है; **~घालणा** 1. एक पाले के खिलाड़ी का दूसरे पाले में 'कबड्डी'- 'कबड्डी' कहते जाना, 2. कुश्ती के लिए चुनौती देते हुए पहलवान का अखाड़े में चक्कर लगाना; **~माँगणा** खेल आरंभ करने से पूर्व पाले का विकल्प दूसरे को देकर स्वयं पहले कबड्डी डालने को कहना। **कबड्डी** (हि.)

कब्ज़ (स्त्री.) दे. कब्ज़ी।

कब्ज़ा[1] (पुं.) 1. मूठ, दस्ता, 2. किवाड़ आदि में जड़े जाने वाले दो चौखूंटे टुकड़े, 3. अधिकार।

कब्जा[2] (पुं.) ब्लाउज। दे. कब्जा[1]।

कब्ज़ी (स्त्री.) कोष्ठ बद्धता।

कब्र (स्त्री.) मुर्दा गाड़ने का गड्ढा।

कब्रिस्तान (पुं.) वह स्थान जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हैं।

कभी (क्रि. वि.) दे. कदी।

कमंडल (पुं.) संन्यासियों द्वारा धारण किया जाने वाला एक पात्र।

कमंद (स्त्री.) मोटी रस्सी।

कम (वि.) दे. कमती।

कमकूत (वि.) गंदा। उदा.–पाणी पीवै ना कमकूत (लचं)।

कमची (स्त्री.) दे. कामची।

कमचोर (वि.) काम से जी चुराने वाला।

कमज़ात (वि.) छोटी या हीन जाति का; (स्त्री.) एक गाली।

कमजोर (वि.) दुर्बल।

कमजोरी (स्त्री.) दुर्बलता।

कमठाणा (पुं.) 1. कारीगर का कर्म-स्थल, 2. पशु का वह स्थान जहाँ उसे रहने की आदत पड़ गई हो, 3. मन पसंदीदा स्थान; **~लाणा** 1. काम करने या तपस्या करने के लिए किसी स्थान को अपनाना, 2. निवास के लिए स्थान बनाना।

कमती (वि.) कम, थोड़ा; **~बत्ती** कम-अधिक, कमोबेश।

कमतूत (वि.) कमजोर।

कमद (स्त्री.) रस्सी।

कमबखत (वि.) 1. अभागा, 2. दुष्ट। **कमबख़्त** (हि.)

कमबखती (स्त्री.) बुरा समय/कुसमय।

कमबख़्त (वि.) दे. कमबखत।

कमर (स्त्री.) दे. कड़।

कमरख (स्त्री.) 1. एक खट्टा फल, 2. इस फल का पेड़।

कमर बंध (पुं.) 1. कमर में लपेटा जाने वाला एक कपड़ा, 2. नाड़ा।

कमरा (पुं.) मर्दों के उठने-बैठने की बैठक।

कमरी (स्त्री.) रूई-भरा छोटा कोट।

कमल (पुं.) कमल का फूल।

कमसूहरी (वि.) दे. बेसूहरी।

कमलापति (पुं.) विष्णु।

कमली (स्त्री.) छोटा कंबल।

कमाई (स्त्री.) 1. कमाया हुआ धन, 2. आमदनी, 3. धंधा, रोज़गार।

कमाऊ (वि.) 1. रोज़ी कमाने वाला, 2. परिश्रमी, 3. कमाने योग्य आयु का व्यक्ति, 4. जो रोज़ी-रोटी के लिए किसी के अधीन न हो; (पुं.) 1. पति, 2. पुत्र, तुल. कमेरा; **~खाऊ** 1. कमा कर खाने वाला, 2. कमाई को खर्च करने वाला; **~पूत** 1. युवा-पुत्र, 2. कमाने वाला पुत्र, 3. परिश्रमी पुत्र।

कमाण (स्त्री.) धनुष; **~ताणणा** धनुष खींचना। **कमान** (हि.)

कमाणा (क्रि. स.) 1. धन कमाना, 2. पेट पालना, 3. सफाई करना या कूड़ा-कर्कट बुहारना–जजमान, थारी चूहड़ी कमावण गई, लामणी किस तराँह जा, 4. अर्जित करना, 5. पशु की चमड़ी उधेड़ना; **~खाणा** परिश्रम करके खाना; **~धमाणा** कमाई करना। **कमाना** (हि.)

कमाणियाँ (वि.) कमाने वाला, (दे. कमेरा)।

कमाणी (स्त्री.) कमान के आकार की लकड़ी या लोहे की वस्तु जो गाड़ी आदि वाहनों में होती है–धुरा कमाणी टूट गए भाई ल्हीक बिचाळै ठेला रहग्या, दमयंती गई न्हाण ताल पै नल निरभाग अकेल्ला रह ग्या (ल. चं.)। **कमानी** (हि.)

कमान (स्त्री.) दे. कमाण।

कमाना (क्रि. स.) दे. कमाणा।

कमानी (स्त्री.) दे. कमाणी।

कमाल (पुं.) आश्चर्य का काम।

कमी (स्त्री.) 1. अवगुण–मेरे में तनैं के कमी देक्खी, 2. न्यूनता।

कमीज़ (स्त्री.) दे. कुड़ता।

कमीण (वि.) 1. ओछा, 2. नीच स्वभाव का, 3. शूद्र जाति का; (पुं.) परिवार के अधीन छोटी जाति के लोग जो खेती बाड़ी के काम में हाथ बँटवाते हैं–चार कमीण म्हारै सैं, तीन अपणे दे दे तै आज लामणी पूरी हो ज्या। **कमीन** (हि.)

कमीण कांदू 1. नीची जाति के लोग, 2. पिछड़े लोग।

कमीणा (वि.) 1. दुष्ट स्वभाव का, 2. ओछा व्यवहार करने वाला। **कमीना** (हि.)

कमीन (वि.) दे. कमीण।

कमीना (वि.) दे. कमीणा।

कमेड़ा (पुं.) कमज़ोरी के कारण बच्चों को आने वाली बेहोशी; **~आणा/ पड़णा** बच्चे को कमेड़े की बीमारी के कारण बेहोशी आना।

कमेड़ी (स्त्री.) दाँत पर जमने वाला मैल (हाथ-पैर का काँटा निकालने के बाद इसे घाव पर लगाते हैं ताकि खाल नहीं पके)।

कमेर (स्त्री.) 1. कमाई, 2. परिश्रम, 3. उपयोगी काम–के कमेर कर रह्या सै?, 4. कमाई का साधन–कमेर मिल्लै तै काम करूँ; **~करणा** आजीविका कमाना; **~खाणा** 1. पराश्रित रहना, 2. ऋणी होना; **~मिलणा** रोज़गार मिलना।

कमेरा (वि.) 1. काम करने वाला, 2. परिश्रमी; (पुं.) 1. पुत्र, 2. पति, 3. नौकर, तुल. कमाऊ।

कमोई (स्त्री.) 1. छोटे मुँह वाली मिट्टी की मटकी जो अहोई, देव उत्थानी एकादशी, पूजा आदि के अवसर पर काम आती है, 2. मिट्टी का छोटा मटका जो पानी गरम करने के काम आता है; **~मिणसणा** कमोई को मिठाई आदि से भर कर दक्षिणा सहित देना।

कम्मर कुरसी (स्त्री.) आरामकुर्सी।

करंक (पुं.) हड्डियों का ढेर; (वि.) क्षीण।

करंजा (पुं.) लगभग तीन-चार अंगुल चौड़ा और दस-बारह अंगुल लंबा घड़ा हुआ चपटा समतल डंडा जो दो कड़ियों के बीच में रखा जाता है और जिस पर फूस मिट्टी आदि डाल कर छत बना दी जाती है; **~सी** पतली और लंबी (महिला)।

करंड (वि.) दुबला।

करंता (पुं.) 1. काम करने वाला, कर्ता, 2. ईश्वर; (वि.) करता हुआ (काम)।

कर (पुं.) हाथ।

करक[1] (पुं.) 1. किसी वस्तु का बहुत छोटा टुकड़ा या अंश, 2. रोटी का छोटा टुकड़ा, 3. मृतक पशु; (वि.) दुर्बल; (स्त्री.) पीड़ा; **~सा** दुर्बल, क्षीण काय।

करक[2] (स्त्री.) दूध न पिला पाने के कारण छाती में होने वाली पीड़ा।

करकणा (पुं.) दे. रड़कणा।

करकरा (वि.) 1. करारा, 2. आँच पर सेंकने या तलने के कारण पापड़ आदि के अधिक सिकने की अवस्था, 3. किरकिरा, 4. 'कर-कर' की ध्वनि करने वाला।

करकराट (स्त्री.) 1. आटे, दाल आदि में मिट्टी मिलने के कारण अनुभव होने वाली किरकिराहट, 2. पीड़ा (विशेषकर आँख में मिट्टी पड़ने के कारण), 3.

बेचैनी–तेरै के करकराट ऊठ र्‌ही सै? **किरकिराहट** (हि.)

करकराहट (स्त्री.) दे. करकराट।

करघा (पुं.) कपड़ा बुनने का अड्डा।

करजदार (पुं.) 1. ऋणी, 2. अहसानमंद; (वि.) 1. दब्बू, 2. भीरू। **कर्ज़दार** (हि.)

करजा (पुं.) 1. ऋण, 2. अहसान; **~कढवाणा** कर्ज़ लेना। **कर्ज़ा** (हि.)

करड़ (वि.) 1. सख़्त, 2. कठोरता, 3. सूखापन, 4. करड़पन या कठोरता का भाव; (स्त्री.) हठ, ज़िद; **~पाक्कड़णा** 1. मिट्टी का कठोर होना, 2. ज़िद पर उतारू होना, 3. शत्रु या विपक्षी का बलवान होना, 4. झगड़ने पर उतारू होना, 5. किसी वस्तु का अपने स्थान पर जम जाना।

करड़ कसूम (वि.) (?) –कान्हा छोड्डो ना करड़ कसूम छोड्डो न सून्ने कापड़े जी, (लो. गी.)।

करड़ा (वि.) 1.कठोर, 2. तेज़, द्रुत गति से–करड़ा भाज कै आइये, 3. तीव्र, घनी–करड़ी भूख लाग र्‌ही सै; **~(–ड़ी) ढाल या त्यौर लखाणा** क्रोध भरी नज़र से देखना; **~होणा** 1. साहस से काम लेना, 2. हिम्मत बाँध ना, 3. कठोर होना; **~सोणा** गहरी नींद सोना।

करड़ाई (स्त्री.) 1. आपत्ति, दुर्दिन, 2. सख़्ती, 3. किसी वस्तु की सूख कर कठोर होने की क्रिया; **~आणा** 1. बुरे दिन आना, 2. किसी चीज़ का सूख कर कठोर होना; **~करणा** कठोरता का व्यवहार करना, कठोर अनुशासन बरतना; **~का फेरा** बुरे दिनों का दौर; **~चढणा** बुरे दिन आना; **~पाकड़णा** ज़िद पर उतारू होना; **~होणा** दे. करड़ाई चढणा। **कड़ाई** (हि.)

करड़ाणा (क्रि. अ.) 1. कड़ा या कठोर होना, 2. अकड़ना।

करड़ी (वि.) कड़ी, कठोर।

करणपुरा (पुं.) गूगापीर का समाधि स्थल।

करणहार (पुं.) 1. करने वाला, 2. ईश्वर। **करनहार** (हि.)

करणा (क्रि. स.) 1. कार्य संपन्न करना, 2. किसी अन्य को पत्नी या पति के रूप में रखना। **करना** (हि.)

करणी[1] (स्त्री.) 1. कर्म, भाग्य, 2. किसी जन्म में किया हुआ अच्छा या बुरा काम; **~आग्गै आणा** किए हुए का फल मिलना; **~का फळ** किए हुए का परिणाम; **~पार उतरणी** जैसा करोगे वैसा भरोगे; **~में भंग पड़णा** सत्कर्म में बाधा उत्पन्न होना। **करनी** (हि.)

करणी[2] (स्त्री.) दीवार पर गारा आदि लगाने का चिनाईगीर का एक औज़ार। **करनी** (हि.)

करतब (पुं.) 1. काम, कार्य, 2. आश्चर्य-जनक कार्य, 3. कौशल, 4. जादू, करामात; **~दिखाणा** कौशल प्रदर्शित करना।

करतार (पुं.) ईश्वर।

करताल (पुं.) दे. खड़ताळ।

करतूत (स्त्री.) 1. काम, 2. कला, गुण, 3. दुष्कर्म (व्यंग्य में)।

करद (स्त्री.) तलवार–कड़वा बोल करद सा लाग्गै।

करदा (पुं.)(?) उदा. बात का देणा चाहिए करदा, थारै में कोना इतणी सरधा। (लचं)।

करना (क्रि. स.) दे. करणा।

करनी (स्त्री.) 1. दे. करणी[1], 2. दे. करणी[2]।

करनैल (पुं.) सेना का एक उच्च अधिकारी, कर्नल।

करम (पुं.) 1. भाग्य, 2. कार्य; **~का खारा जळणा** विधवा होना; **~का मणिहार मरणा** विधवा होना; **~का मार्‌या** कर्म या दुर्भाग्य का सताया हुआ। **कर्म** (हि.)

करम कांड्डी (पुं.) भाग्यहीन व्यक्ति।

करम छज्जू (पुं.) भाग्यहीन व्यक्ति।

करम ठोक (पुं.) भाग्यहीन व्यक्ति।

करमी (वि.) 1. सदा काम में लगा रहने वाला, कार्यशील, 2. अच्छे भाग्य वाला, 3. कर्म-कांडी।

कररा (वि.) 1. दानेदार (गुड़ या शक्कर), रवेदार, 2. कड़ा, सख़्त।

कररे (क्रि.) कर रहे हो। उदा.–कर रे सो ढील।

करलाट (स्त्री.) 1. रोना-पीटना, 2. पेट की अंतड़ियों से 'करळ'-'करळ' की ध्वनि होने की क्रिया; **~करणा** अतिशय दुःख के कारण रोना-पीटना; **~माचणा** भयंकर रोने-पीटने की आवाज़ आना या होना। **कुरलाहट** (हि.)

करळाणा (क्रि. अ.) 1. रोना, विलापना, 2. पक्षियों द्वारा क्रंदन किया जाना, 3. पेट में 'करळ'-'करळ' की आवाज़ होना। **कुरलाना** (हि.)

करवट (स्त्री.) दे. करौंठ।

करवा (पुं.) धातु, मिट्टी या चीनी आदि का टोंटीदार लोटा; **काच्चा**~पूजा में काम आने वाला बिना पका करवा।

करवा चौथ (स्त्री.) कार्तिक कृष्ण चतुर्थी का दिन (इस दिन स्त्रियाँ गौरी का व्रत रखती हैं); **~मिणसणा** करक चतुर्थी के व्रत के दिन स्त्रियों द्वारा मिट्टी या चीनी के करवे किसी खाद्य वस्तु से भरकर दक्षिणा सहित बड़ी महिलाओं को दान में देना। **करक चतुर्थी** (हि.)

करवाणा (क्रि. स.) करवाना, 'करणा' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप।

करवाळा (पुं.) ढेंकली से पानी निकालने के लिए प्रयुक्त चौड़े मुँह का घड़ेनुमा मिट्टी का पात्र, (दे. ढींकळी)।

करसी (स्त्री.) 1. उपले का छोटा टुकड़ा– हारी में करसी ला दे, 2. भाग, हिस्सा, खंड; **~करणा** किसी वस्तु के अनेक खंड करना।

करसोळा (पुं.) दे. कसोल्ला।

करहाट (स्त्री.) घनीभूत पीड़ा के कारण कराहने से उत्पन्न ध्वनि। **कराहट** (हि.)

कराँत (स्त्री.) कारव कवाई।

करा (पुं.) लेन-देन का विवाह, स्त्री का मूल्य चुका कर किया जाने वाला विवाह (यह विवाह कहीं-कहीं कुछ जातियों में अभी भी प्रचलित है), 1. तुल. करेवा, 2. तुल. करेप्पा; **~करणा** इस विधि से विवाह करना।

कराड़ा (पुं.) दे. कुहाड़ी।

कराना (क्रि. स.) दे. करवाणा।

कराप्पा (पुं.) 1. विधुर या विधवा होने पर किसी अन्य के साथ विवाह संबंध स्थापित करने की प्रथा (कुछ) परिस्थितियों में पुरुष स्त्री पक्ष के परिवार को कुछ धन भी भेंट करता है), 2. पर-पुरुष के साथ भाग कर विवाह संबंध स्थापित करना, (दे. करा)।

करामात (स्त्री.) 1. चमत्कार, करिश्मा, 2. करतूत (व्यंग्य में)।

करामात्ती (पुं.) 1. विचित्र या असाधारण कार्य करके दिखाने वाला व्यक्ति, चमत्कारी, 2. सिद्ध पुरुष।

करामाती (हि.)

करार (पुं.) वायदा, कौल।

करारा (वि.) 1. छूने में कठोर, 2. आँच पर सेंका हुआ, 3. तेज़-तर्राट, 4. चौकन्ना; **~बोल** चुभने वाला वचन, कर्कश वाणी; **~लोट** नया नोट।

कराल (स्त्री.) ऊँची ध्वनि।

कराळ (वि.) 1. डरावनी आकृति का, तुल. बिकराळ, 2. कम गहराई तक जुती (भूमि); **~हळ** वह हल जो कम गहरी जुताई करता हो।

कराळा (स्त्री.) झड़बेरी।

कराह[1] (स्त्री.) कराहने का भाव, पीड़ा-द्योतक ध्वनि।

कराह[2] (पुं.) ऊँट।

कराहणा (क्रि. अ.) पीड़ा सूचक ध्वनि निकालना, (दे. कूल्हणा)।

कराहना (हि.)

कराहना (क्रि. अ.) दे. कराहणा।

करियो (पुं.) ऊँट।

करिश्मा (पुं.) चमत्कार, अद्‌भुत काम।

करी (क्रि. स.) 'करणा' क्रिया का भूतकालिक रूप–याह बात तनैं क्यूकर करी; (पुं.) किया हुआ कार्य–1. करी कराई पै पाणी फेर दिया, 2. करी ओड़ ने भी भूल ग्या।

करी धरी (स्त्री.) अवैध पत्नी जिसके साथ विधिवत पद्धति से विवाह न किया गया हो।

करीना (पुं.) ढंग, तरीका।

करीब (क्रि. वि.) निकट, (दे. नीड़ै)।

करीम (पुं.) ईश्वर।

करीर (पुं.) दे. कैर।

करील (पुं.) दे. कैर।

करीली (स्त्री.) कटारी।

करुए (पुं.) ऊँट।

करुणा (स्त्री.) दया।

करुणानिधान (पुं.) 1. दया के सागर, 2. भगवान्।

करेप्पा (पुं.) दे. कराप्पा, तुल. करेवा।

करेब्बी (स्त्री.) धातु की तश्तरी।

करेर (स्त्री.) 1. डाकर भूमि, (दे. डाक्कर), 2. उपजाऊ भूमि।

करेळणा (क्रि. स.) 1. तिनके आदि से आग या मिट्टी को कुरेदना, 2. राशि या ढेर को खोदकर देखना।

कुरेदना (हि.)

करेला (पुं.) दे. करेल्ला।

करेळी (स्त्री.) 1. आग के ऊपर से राख हटाने की क्रिया, 2. खुजली; **~देणा/लाणा** 1. अधबुझी आग से राख हटाना, 2. नीचे की आग उलट कर ऊपर करना।

करेलीदार (क.) चोंचदार (झुमके)।

करेल्ला (पुं.) एक कटु तरकारी; **~सा** 1. बहुत कड़ुआ, 2. बुरे स्वभाव का।

करेला (हि.)

करेवा[1] (पुं.) दे. कराप्पा।

करेवा[2] (पुं.) किराया।

करोंत (पुं.) लकड़ी चीरने का आरा।

करौंत (हि.)

करोड़ (वि.) दे. किरोड़।

करोड़पति (पुं.) दे. किरोड़पति।

करोदणा (क्रि. स.) 1. खुरचना, 2. किसी बात के बारे में जान-बूझ कर अनेक प्रश्न पूछना ताकि दूसरे को खीझ उत्पन्न हो, 3. चिढ़ाना, 4. घाव को खुजलाना या खुरचना। **कुरेदना** (हि.)

करौंठ (स्त्री.) 1. करवट, 2. दिशा, ओर– 1. डाक्कू किस करौंठ भाजग्या? 2. तेरे खेत कौणसी करौंठ सैं?।

करौंत (पुं.) दे. करोंत।

करौंत्ती (पुं.) मगरमच्छ। दे. करोंत।

करौंदा (पुं.) 1. एक कँटीला झाड़ जिस पर बेर जैसे खट्टे फल लगते हैं, 2. इस झाड़ी का फल।

कर्कश (वि.) 1. कठोर, 2. क्रूर, (दे. कड़वा बोल)।

कर्ज़ (पुं.) दे. करजा।

कर्ता (पुं.) 1. भगवान, 2. करने वाला।

कर्तार (पुं.) दे. करतार।

कर्त्तव्य (पुं.) 1. दे. फरज, 2. दे. करतब।

कर्म (पुं.) दे. करम।

कर्मकांड (पुं.) धार्मिक कृत्य।

कर्मकांडी (वि.) दे. करमकांड्डी।

कर्मचारी (पुं.) 1. कार्यकर्ता, 2. सरकारी नौकर।

कर्मठ (वि.) परिश्रमी।

कर्महीन (वि.) हत भाग्य।

कर्‌या (क्रि. स.) 'करणा' क्रिया का भूतकालिक रूप–यो काम किसने कर्‌या सै?; (वि.) किया हुआ–कर्‌या काम बिगड़ ग्या।

कर्हेलो (पुं.) ऊँट (मेवा.)।

कलंक (पुं.) 1. दोष, 2. चरित्र संबंधी लांछन, 3. बदनामी, 4. ऐब।

कलंकणी (वि.) कलंकिनी।

कलकांडा (पुं.) अनुकूल हालात।

कलंकी (वि.) 1. चरित्रहीन, 2. बदनाम, 3. ऐबदार, 4. लांछित।

कलंगी (स्त्री.) 1. कलगी, चिड़िया का सुंदर पंख जो विवाह के समय बाँधी जाने वाली पगड़ी पर लगाते हैं, 2. चोटी, शिखा।

कल (क्रि. वि.) दे. काल्ह,

कलई (स्त्री.) 1. राँगे का पतला लेप जो बर्तन पर चढ़ाया जाता है, 2. राँगा, 3. बाहरी चमक, 4. दीवारों पर पोता जाने वाला चूना, सफेदी, 5. पोलपट्टी।

कलकल (स्त्री.) कोलाहल, 2. झगड़ा, वादविवाद।

कलकांडा (पुं.) अनुकूल हालाता।

कलगी (स्त्री.) 1. पक्षियों के सिर की शिखा, 2. मुकुट पर लगाया जाने वाला एक आभूषण, 3. पौधे की सबसे ऊँची टहनी।

कळजीब्भी (वि.) 1. काली जिह्वा वाली, 2. जिसका विश्वास नहीं किया जा सके, 3. अशुभ वचन बोलने वाली।

कळजुग (पुं.) कलियुग, द्वापर के बाद आने वाला युग; (वि.) दुश्चरित्र, कुमार्गी।

कलटरी (स्त्री.) जहाँ कलैक्टर का दफ्तर हो। **कलैक्टोरेट** (हि.)

कलट्टर (पुं.) 1. बड़ा साहब, 2. अंग्रेज़, 3. कलैक्टर। **कलैक्टर** (हि.)

कलप[1] (पुं.) काल का एक भाग जिसमें 4,32,00,00,000 वर्ष माने जाते हैं–लख चुरास्सी खतम हुया ना कोट कलप जुग चार गए, नाक में दम आ गया करें क्या मरते-मरते हार गए, (ल.चं.)। **कल्प** (हि.)

कलप[2] (स्त्री.) 1. पतली लेई जिसे कपड़ों

में माँडी देने के लिए लगाया जाता है, (दे. माँड्डी), 2. तड़पन।

कळपणा (क्रि. अ.) 1. बुरी तरह तड़फना, 2. बिलखना या रोना, विलाप करना। **कलपना** (हि.)

कलप थाळी (स्त्री.) मन-वांछित भोजन देने वाली जादुई थाली।

कलपना (क्रि. अ.) दे. कळपणा।

कलपाणा (क्रि. स.) 1. सताना, दुःखी करना, 2. रुलाना। **कलपाना** (हि.)

कलपाना (क्रि. स.) दे. कळपाणा।

कळपूँच्छी (वि.) वह (भैंस) जिसकी पूँछ काले रंग की हो (ऐसी भैंस अशुभ मानी जाती है)।

कळपूँछिया (पुं.) हिरन (वि.) जिस की पूँछ काली हो।

कलफ़ (पुं.) दे. कलप[2]।

कलबल[1] (पुं.) शोर; (स्त्री.) तिल-मिलाहट; **~मचाणा** शोर करना।

कलबल[2] (अव्य.) कलरव, अस्पष्ट।

कलबूत (पुं.) दे. कालबूत।

कलम (स्त्री.) 1. लेखनी, 2. वह टहनी जो एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर पैबंद के लिए काटी जाती है, 3. वे बाल जो हजामत के समय कनपटियों के पास छोड़ दिए जाते हैं, 4. ब्रुश (रंग भरने का), 5. शोरे, नौसादर आदि का जमा हुआ छोटा-लंबा टुकड़ा, 6. शीशा काटने का एक औज़ार; **~करणा** 1. काटना-छाँटना, 2. नष्ट करना; **~कसाई** वह जो लेखनी द्वारा लोगों को हानि पहुँचाए।

कलमदान (पुं.) दवात और कलम रखने का डिब्बा।

कलमा (पुं.) मुसलमान धर्म का मुख्य मंत्र; **~पढणा** 1. मुसलमान धर्म स्वीकार करना, 2. अंत्येष्टि करना।

कलमी (वि.) 1. वह (वृक्ष) जो कलम लगाने से उत्पन्न हुआ हो, 2. ऐसे पौधे का फल।

कळमूँही (वि.) 1. चरित्रहीन (स्त्री), 2. अशुभ बात कहने वाली।

कलश (पुं.) दे. कळसा।

कळसा (पुं.) 1. पूजा का पात्र, 2. बड़ा घड़ा, 3. देवी की स्तुति में गाए जाने वाले गीत विशेष। **कलश** (हि.)

कलसाणा (क्रि.) तरसाना।

कळह (पुं.) दे. कळेस।

कळहारी (वि.) दे. कळिहारी।

कला (स्त्री.) अंश, भाग, 2. चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग, 3. समय का एक भाग, 4. राशि का तीसरा अंश, 5. किसी कार्य को भली-भाँति करने का कौशल, हुनर, 6. चौसठ कलाओं में से एक, 7. ऐश्वर्य, विभूति, 8. नट का कौशल, 9. हस्त-कौशल, 10. रूप।

कलाइया (पुं.) भड़भूँजे का झरना।

कलाई (स्त्री.) दे. पोंहचा।

कलाकार (पुं.) हुनरमन्द।

कलाजंग (स्त्री.) कुश्ती का एक दाँव। दे. कला जाँगळी।

कलाजंगळी (स्त्री.) 1. संयोग से कोई घटना घटित होने का भाव, 2. लड़खड़ाने का भाव; **~लागणा** टाँग में टाँग फँसना।

कलाणा (क्रि.) 1. कुम्लाहना, 2. दे. बरसाणा।

कलाबत्तू (पुं.) 1. बाज़ीगर का एक खिलौना जिसे वह कुछ का कुछ बना देता है, 2. एक मिठाई; (वि.) मूर्ख।

कलाबाज़ (वि.) चमत्कार दिखाने वाला।

कलाबाज्जी (स्त्री.) 1. शरीर को चक्राकार घुमाने की क्रिया, 2. हाथ की सफ़ाई या जादूगरी। **कलाबाज़ी** (हि.)

कलाम (पुं.) 1. बातचीत, 2. वायदा।

कलायत (पुं.) कपिल मुनि की तपोभूमि (जहाँ उन्होंने देवहूति को ज्ञान दिया।)

कलाळ (पुं.) शराब बेचने वाला।

कलावंत (पुं.) 1. कलावान, 2. निपुण।

कळावा (पुं.) 1. लाल-पीला कच्चा सूत जो शुभ अवसर पर हाथ या कलश आदि पर बाँधा जाता है, 2. सुनार का एक उपकरण विशेष।

कलास (पुं.) कैलाश पर्वत। **कैलाश** (हि.)

कळासणा (क्रि. स.) खलिहान में फ़सल को गाहने (मसलने) के बाद उसे जेली से उकास कर बरसाना।

कळासिया (पुं.) 1. कैलाश पर्वत से संबंधित, 2. नादिया, 3. शिव जी; **~बुलध** 1. नीले रंग का बैल, 2. ऐसा बैल जो पूर्ण रूप से निर्बीज नहीं हुआ हो।

कलिकाल (पुं.) दे. कळजुग।

कलियुग (पुं.) दे. कळजुग।

कळिहारी (वि.) कलह करने वाली; (स्त्री.), झगड़ालू महिला।

कली (स्त्री.) 1. छोटा हुक्का जिसका आधार धातु का होता है, 2. कलई, (दे. कलई), 3. घघरी का तिरछा टुकड़ा, 4. गीत का अंश, 5. बिना खिला फूल, कलिका; **~धरणा/भरणा** कली में आग रखना; **~पीणा** कली में आग रख कर उसे गुड़गुड़ाना या पीना।

कलीगर (पुं.) बर्तनों पर कलई करने वाला।

कलीेल्ला (पुं.) भैंस आदि की ऐन (ओहड़ी) में चिपकने वाला मोटा चीचड़; **~तोड़णा** पशु के शरीर से कलीले को हटाना।

कळीहाया (वि.) कलहप्रिय, कलह करने वाला, झगड़ालू।

कळीहारा (वि.) दे. कळीहाया।

कलु (पुं.) कलियुग।

कलूरिया (पुं.) दे. पिलूरा।

कलेजा (पुं.) जिगर, (दे. काळजा)।

कळेवा (पुं.) 1. प्रातःकाल का अल्पाहार, 2. वह हल्का भोजन जो यात्री अपने साथ बाँध कर ले जाता है, 3. ग्रास जैसे—काळ-कळेवा; **~करणा** 1. प्रातःकाल बासी रोटी व राबड़ी खाना, प्रातरास लेना, 2. निगल जाना, ग्रास बनाना; **~(–वे) का बखत** प्रातरास का समय, तुल. कल्लेवार। **कलेवा** (हि.)

कलेवार (स्त्री.) दे. कल्लेवार।

कलेस (पुं.) 1. झगड़ा, 2. आपत्ति, 3. कष्ट; **~काटणा** कष्ट निवारण करना; **~निमेड़णा** कष्ट से निवृत्ति दिलाना। **क्लेश** (हि.)

कलैंठा (पुं.) सुनार का एक औज़ार जो चूड़ी काटने के काम आता है।

कलोल (पुं.) आमोद-प्रमोद।

कलौनी (स्त्री.) काली मिट्टी।

कल्प (पुं.) दे. कलप[1]।

कल्पना (स्त्री.) 1. मनघढ़ंत बात, 2. मानसिक चित्र, 3. अनुमान।

कल्प वृक्ष (पुं.) देव लोक का एक वृक्ष।

कल्याण (पुं.) 1. शुभ, भला, 2. सुख-समृद्धि।

कल्लर (पुं.) दे. काल्लर।

कल्ला[1] (पुं.) अकेला।

कल्ला[2] (पुं.) अंकुर; **~फूटणा** अंकुर आना।

कल्लेवार (पुं.) 1. प्रातः का समय, 2. प्रातः के अल्पाहार का समय, कलेवे का समय; **~सी** लगभग कलेवे का समय; **~होणा** 1. कलेवे का समय होना, 2. दिन चढ़ना।

कवच (पुं.) जिरहबख़्तर।

कवताई (स्त्री.) दे. कबताई।

कवाई (स्त्री.) 1. बगल या कुक्षि में होने वाली फुंसी, 2. वर्षा ऋतु में उगने वाली एक घास, 3. लोहे का पैर; **~फूलणा** 1. बगल में फुंसी होना, 2. घास पर फूल आना।

कवारपत (पुं.) कुँआरा पुत्र (ब्राह्मण का); **~के बाह्मण जिमाणा** विवाह के समय अन्य लोगों को भोजन कराने से पूर्व ब्राह्मण के कुँआरे पुत्रों को भोजन खिलाना।

कवारा (वि.) कुँआरा, अविवाहित।

कवि (पुं.) 1. कविता रचने वाला, 2. गाने वाला।

कविता (स्त्री.) काव्य।

कविताई (स्त्री.) दे. कबताई।

कविसर (पुं.) 1. श्रेष्ठ कवि। 2. एक जाति विशेष, दे. कविस्सर।

कव्वी (स्त्री.) मादा कौआ। दे. काग्गण।

कशिश (स्त्री.) आकर्षण शक्ति।

कशीदा (पुं.) दे. कसीद्दा।

कश्मीरी (पुं.) उत्तर में स्थित भारत का एक प्रदेश जो ऊनी कार्य और प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है।

कश्मीरा (वि.) कश्मीर प्रदेश से संबंधित; (पुं.) कश्मीर प्रदेश का निवासी।

कश्यप (पुं.) 1. एक ऋषि, 2. एक ब्राह्मण गोत्र।

कष्ट (पुं.) दे. कस्ट।

कस[1] (पुं.) 1. सार, तत्त्व, 2. अर्क, 3. घीयाकस से कसी गई वस्तु।

कस[2] (पुं.) 1. ज़ोर, बल, 2. सन या पटसन की मज़बूत रस्सी जिससे चमड़े के चरस को लोहे के वृत्ताकार माँडल के साथ बाँधा जाता है; (क्रि. स.) 'कसणा' क्रिया का आदे. रूप।

कस[3] (स्त्री.) कसौटी।

कसक (स्त्री.) 1. टीस, पीड़ा, 2. मीठा दर्द, 3. पुराना द्वेष; **~काढणा/मेटणा /लिकाड़णा** 1. शत्रुता का बदला लेना, पीड़ा दूर करना।

कसकणा (क्रि. अ.) टीसना।

कसकसा (वि.) कसैला।

कसणा (क्रि. स.) 1. डोरी आदि से मज़बूती से बाँधना, 2. धमकाना, फटकारना, 3. परखना, 4. कठोर अनुशासन में रखना। **कसना** (हि.)

कसना (क्रि. स.) दे. कसणा।

कसबा (पुं.) गाँव से बड़ी और शहर से छोटी बस्ती।

कसम (स्त्री.) दे. सूँह।

कसमसा (वि.) कसैला, (दे. कसकसा)।

कसर (स्त्री.) 1. कमी, न्यूनता, 2. हानि, 3. दोष, त्रुटि; **~काढणा/लिकाड़णा** 1. पिछली कमी पूरी करना, 2. पिछली शत्रुता निकालना, बदला लेना।

कसरत (स्त्री.) 1. व्यायाम, 2. पहलवानी।

कसर-मसर (स्त्री.) 1. कमी, 2. थोड़ी-बहुत कमी।

कसवाणा (क्रि. स.) कसने का काम अन्य से करवाना।

कसाई (वि.) पशुओं को मारने-पीटने वाला, 2. पापी, निर्दयी; (पुं.) 1. बूचड़, 2. मुसलमानों की एक जाति; (स्त्री.) 1. खिंचाई, 2. पिटाई; (क्रि. स.) 'कसणा' क्रिया का भू. का., एक व., प्रे. रूप।

कसाईवाड़ा (पुं.) 1. वह स्थान जहाँ पशु काटे जाते हों, 2. कसाइयों की बस्ती।

कसान (पुं.) दे. किसाण।

कसाना (क्रि. स.) दे. कसवाना; (पुं.) एक गूजर गोत।

कसाब (पुं.) दे. कसाई।

कसार (पुं.) आटा भूनकर गुड़ या शक्कर मिलाकर तैयार किया गया उपहारस्वरूप देने योग्य खाद्य पदार्थ जो पँजीरी के समान शुष्क या भुरभुरा होता है (लड़की तथा बहुओं को भेजते समय तीन-चार सेर कसार बना कर बाँध दिया जाता है ताकि पास-पड़ोस में बाँटा जा सके, इसमें घी-बूरा मिलाकर खाया जाता है); **~करणा/बणाणा/भूनणा** कसार तैयार करना; **~बाँटणा** बहू के आगमन की खुशी में कसार बाँटना।

कसाला (पुं.) दे. कसाल्ला।

कसाल्ला (पुं.) 1. कष्ट, 2. परिश्रम; **~करणा** परिश्रम की रोटी खाना। **कसाला** (हि.)

कसावट (स्त्री.) 1. कसने का भाव, 2. प्रताड़ना–आज उसकी कसावट तै चोक्खी कर दी।

कसीद्दा (पुं.) 1. कपड़े पर सुई और धागे से निकाले हुए बेल-बूटे, 2. कारीगरी; **~काढणा** 1. कारीगरी दिखाना, 2. बेल-बूटे का काम करना। **कशीदा** (हि.)

कसीले वस्त्र (पुं.) वल्कल वस्त्र।

कसूँबी (पुं.) काषाय वस्त्र।

कसूत्ता (वि.) 1. कठिन, 2. हठी, 3. मजबूत।

कसूत्ती (वि.) तेज़, कठोर–इसी कसूत्ती मार लाग्गी सै अक बचणा मुस्किल दीक्खै सै; (क्रि. वि.) कस कर, पूरे बल के साथ–लाट्ठी खूब कसूत्ती मारी।

कसूम (वि.) कठोर (हृदय)।

कसूर (पुं.) अपराध।

कसेरणा (क्रि. स.) बुहारना, झाड़ू देना, समेटना। **सकेरना** (हि.)

कसेरा (पुं.) काँसे के बर्तन बनाने वाला।

कसो (पुं.) एक जाट गोत।

कसोभळा (वि.) दे. कसोहणा।

कसोरा (पुं.) मिट्टी का प्याला जो मुख्यत: भोज के अवसर पर पानी पीने के काम लाया जाता है, (दे. बरवा), तुल. सकोरा।

कसोला (पुं.) दे. कसोल्ला।

कसोल्ला (पुं.) लंबी लाठी के साथ लगा लोहे का छोटा फावड़ा जो खेती निराने के काम आता है।

कसोहणा (वि.) 1. बुरी आकृति (लम्बे दाँत, मोटी नाक, खड़े बाल, काला रंग आदि) का, 2. बुरे समय में उत्पन्न, 3. बुरी दिशा अर्थात् जिसमें दिक् शूल हो।

कसौण (पुं.) अपशकुन, 'सोण' या शकुन का विलोम; **~काढणा** 1. बुरी भविष्यवाणी करना, 2. बुरा या कटु वचन कहना; **~होणा** 1. अपशकुन होना, 2. वर्जित वस्तु का मार्ग में आना, 3. असमय में किसी पक्षी का बोलना, जैसे–दिन में गीदड़ बोलना, रात्रि में कौआ बोलना।

कसौणा (पुं.) एक गूजर गोत।

कस्ट (पुं.) 1. दुःख, 2. आपत्ति; ~**कसाल्ला** 1. दुःख, 2. परिश्रम। **कष्ट** (हि.)

कस्तूरी (स्त्री.) एक सुगन्धित द्रव्य जो मृग की नाभि से निकलता है।

कस्तूरी मृग (पुं.) वह मृग जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है।

कस्मीरा (पुं.) एक प्रकार का वस्त्र।

कस्याणा (क्रि. अ.) कषाय होना, किसी पदार्थ में खट्टेपन या कॉंसेपन का स्वाद आना।

कस्सी (स्त्री.) लोहे का फावड़ा जो मिट्टी आदि खोदने के काम आता है, तुल. फाहली।

कहक्कड़ (वि.) 1. मुँह पर स्पष्ट बात कहने वाला, स्पष्ट वक्ता, 2. बिना-सोचे-समझे बात कहने वाला, 3. कहानी किस्से सुनाने वाला।

कहण (पुं.) 1. कहना, 2. कहावत, कहने में–कहण में तै न्यूँ आवै सै अक रात-बिरात में एकला ना जाया करैं, 3. आदेश–मेरा कहण मानता तै इतणा ना दुख पात्ता; ~**नैं** नाम मात्र को, कहने मात्र को; ~**मानणा** कहना मानना, आज्ञा का पालन करना; ~**सुणण** 1. कहना-सुनना, 2. कहा-सुनी। **कथन** (हि.)

कहणा (क्रि. स.) 1. बताना, 2. आदेश देना; (पुं.) आदेश; ~**बजाणा** आज्ञा पालन करना; ~**सुणणा** 1. कहना-सुनना, बुरा-भला कहना, 2. सीख देना। **कहना** (हि.)

कहणी (स्त्री.) 1. सलाह, 2. कहना, 3. कहावत; ~**अणकहणी** 1. कहनी-अनकहनी, कहने न कहने योग्य, 2. भली-बुरी। **कथनी** (हि.)

कहत (स्त्री.) कहावत; (पुं.) अकाल, दुर्भिक्ष।

कहना (क्रि. स.) दे. कहणा।

कहबत (स्त्री.) 1. कहावत, 2. कथन, 3. निंदा।

कहर (पुं.) विपत्ति।

कहरण (वि.) कहर ढाहने वाली।

कहरवा (पुं.) गायन-वादन की एक तान विशेष।

कहरी (वि.) इकहरी।

कहर्याँ (वि.) 1. एक पाट का, एक परत का, 2. 'दोहर्याँ' का विलोम; ~**गात** छरहरा शरीर; ~**धोत्ती बाँधणा** एक पाट की इकहरी धोती बाँधना। **इकहरा** (हि.)

कहलाना (क्रि. स.) दे. कुहाणा।

कहाँ (क्रि. वि.) दे. कित।

कहा (पुं.) दे. कहण; (सर्व.) क्या।

कहाणी (स्त्री.) 1. कथा, 2. मनगढंत बात, 3. गाथा; ~**कहणा** 1. सोम, मंगल, होई, करवा चौथ आदि त्योहारों की कथा सुनाना, 2. सुख-दुःख की बात कहना, 3. अपनी बात का बखान करना, 4. बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना, 5. कहानी सुनाना; ~**का फळ बूझणा** पहेली बूझना; ~**घड़णा** मन गढ़ंत बात कहना; ~**चलाणा** 1. किसी के विरुद्ध प्रचार करना, 2. गाथा बनना; **राम~1** राम कहानी, अपनी कहानी, 2. लंबी गाथा; ~**लाणा** चुगली करना; ~**सुणणा** 1. व्रत के दिन तत्संबंधी कथा सुनना, 2. किसी की कष्ट कहानी सुनना; ~**होणा** 1.

बात पुरानी पड़ना, 2. कल्पना मात्र में रह जाना। **कहानी** (हि.)

कहाणैं (अव्य.) कथनानुसार, जैसे–कहाणैं उसकै (उसके कहने के अनुसार)।

कहानी (स्त्री.) दे. कहाणी।

कहार (पुं.) 1. पानी ढोने वाला व्यक्ति, 2. पानी ढोने वाली एक जाति, 3. डोली उठाने वाला।

कहावत (स्त्री.) दे. कहबत।

कहा-सुनी (पुं.) दे. कह्या-सुण्या।

कहीं (क्रि. वि.) दे. कित्तै।

कही (स्त्री.) कथनी, कथन, कही गई बात–तेरी कही तै ना मान्नूँ; (क्रि. स.) 'कहणा' क्रिया का भू. का., एक व., स्त्री. लिं. रूप।

कह्या (पुं.) 1. कहना, कथन, 2. आदेश–बड्डयाँ का कह्या मान लेत्ता तै क्यूँ दुख ठाँमता; (क्रि. स.) 'कहणा' क्रिया का भूतकालिक रूप; **~सुण्या** 1. कहा-सुना हुआ, 2. मन-मुटाव की बात–इसा के कह्या-सुण्या अक उसनै आड़ै आवणा ए छोड़ दिया, 3. क्रोधपूर्ण बात–कह्या-सुण्या माँफ करिये, 4. भूल-चूक। **कहा** (हि.)

काँ[1] (स्त्री.) 1. 'काँव'-'काँव' की ध्वनि, 2. कौए की आवाज़, 3. व्यर्थ का शोर; (पुं.) कौआ; **~काँ करणा** व्यर्थ का शोर करना।

काँ[2] (स्त्री.) 1. बाजी, हार की बाजी, 2. जबरदस्ती सौंपा हुआ काम; **~आणा** 1. बाजी हारना, 2. हारना, 3. काम करने की ज़िम्मेदारी आ पड़ना; **~उतरणा** 1. बाज़ी उतरना, 2. थोपी हुई ज़िम्मेदारी पूर्ण होना, 3. उऋण होना, 4. कार्य मुक्त होना; **~चढणा** बाज़ी आना, (दे. काँ-डंका)।

काँइयाँ (वि.) 1. चालाक, 2. धूर्त।

काँईं (अव्य.) क्या।

काँकर (स्त्री.) दे. काँक्कर।

काँकरी (स्त्री.) 1. कंकर, कंकर का छोटा टुकड़ा, 2. ठेकरी और तंबाकू के नीचे चिलम में रखी जाने वाली कंकर, 3. कंकरीली भूमि। **कंकरी** (हि.)

काँक्कर (स्त्री.) पत्थर आदि का टुकड़ा; **~आळी** 1. कंकरीली भूमि, 2. वह भू-भाग जहाँ खेतों में कंकर ही कंकर हों, 3. बाधा। **कंकड़** (हि.)

काँगण (पुं.) कलाई का एक आभूषण। **कंगन** (हि.)

काँगण-जूआ (पुं.) कंगन-जुए का खेल (कंगना खोलते समय दूल्हे की भाभी सात बार छल्ले को वर-वधू के सामने फेंकती है, यह एक प्रकार का जुआ है, कहा जाता है कि इसमें जिसकी जीत होती है वही जीवन भर दूसरे पर हावी रहता है)।

काँगणा[1] (पुं.) 1. हाथ का एक आभूषण, 2. विवाह के समय वर और वधू के हाथ और पैर में बाँधा जाने वाला नाला (मौली), (पैर का 'काँगणा' अधिकतर बालों को गूँथ कर बनाया जाता हैं और इसमें नमक-राई तथा कौड़ी बाँध दी जाती हैं ताकि नज़र नहीं लगे, हाथ का 'काँगड़ा' कच्चे सूत की लड़ी का होता है, इसमें भी लोहे का छल्ला आदि बाँध देते हैं), 3. 'काँगड़ा' खोलते समय गाया जाने वाला गीत; **~खिलाणा** वर-वधू को कंगना खिलाना (वर-वधू के घर लौटने पर वे एक-दूसरे के हाथ का कंगना खोलते हैं और

दूल्हे की भाभी एक परात में पानी भर कर कंगने का छल्ला पानी में डालती है, वर-वधू दोनों ही छल्ले को जीतने की कोशिश करते हैं, यह प्रक्रिया सात बार दोहराई जाती है, महिलाएँ इस बीच गीत गाती रहती हैं); **~बाँधणा** 1. विवाह के लिए तैयार होना, 2. विवाह से पाँच या सात दिन पूर्व विशेष प्रक्रिया के अनुसार हाथ-पैर में कंगना बाँधना। **कंगना** (हि.)

काँगणा[2] (पुं.) जंजीरदार गोटेवाला ओढना।

काँगणी (स्त्री.) हल्का कंगन। **काँगनी** (हि.)

काँगनी (स्त्री.) दे. काँगणी।

काँगरा (पुं.) दे. कँगूरा।

काँगरिस (स्त्री.) गांधी-नेहरू आदि की राजनीतिक पार्टी जिसने कुर्बानी देकर देश को अंग्रेजों से आजाद कराया, एक राजनीतिक दल या पार्टी। **काँग्रेस** (हि.)

काँगरिसी (पुं.) 1. काँग्रेस पार्टी से सम्बन्धित व्यक्ति, 2. गांधी-टोपी और खद्दरधारी व्यक्ति। **काँग्रेसी** (हि.)

काँग्गड़ (पुं.) बंजर भूमि।

काँघी (स्त्री.) केश सँवारने का दाँतेदार यंत्र जो पशुओं के सींग, लकड़ी आदि का बनता है; **~चोट्टी करणा** बनाव शृंगार करना। **कंघी** (हि.)

काँच[1] (स्त्री.) गुदेंद्रिय के भीतर का भाग; **~लिकड़णा** 1. कमजोरी या आंतरिक बीमारी के कारण मल विसर्जन के समय काँच का बाहर आना, 2. दिवालिया होना, 3. हार मानना।

काँच[2] (पुं) शीशा; (वि.) भंगुर, विनाशवान।

काँचळी (स्त्री.) साँप के ऊपर की खाल; **~में आणा** केंचुली के कारण साँप की आँखों पर झिल्ली आना और उसका सुस्त पड़ जाना। **केंचुली** (हि.)

काँच्ची (स्त्री.) कतरनी; **~चलाणा** 1. ठगना, 2. जेब काटना; **~मारणा** 1. हानि पहुँचाना, 2. माप से कम कपड़ा देना। **कैंची** (हि.)

काँजरी (स्त्री.) कंजर जाति की स्त्री। **कंजरी** (हि.)

काँजी (स्त्री.) दे. काँज्जी।

काँज्जर (पुं.) एक ख़ानाबदोश अनुसूचित जाति जो अपने डेरे गाँव से बाहर डालती है, इनकी स्त्रियाँ मिट्टी के मोर, पपैये, बैलगाड़ी, हुक्का आदि खिलौने बेचती हैं (स्वतंत्रता के बाद इस जाति में स्थायित्व आया है); **~के डेरे में टूक्काँ का न्या** नीची जाति के लोग छोटी-छोटी बातों पर झगड़ते हैं। **कंजर/कंजड़** (हि.)

काँज्जी (स्त्री.) गाजर को मसाले के पानी में डालकर बनाया गया अचार (काँजी अधिकतर काली गाजर की डलती है)। **काँजी** (हि.)

काटमाँ (वि.) कुछ-कुछ कटा हुआ, विधि से कटा हुआ; **~बाह** खूड़ में से खूड़ निकालकर बाहने की क्रिया, (दे. कटमाँ)। **कटवाँ** (हि.)

काँटा (पुं.) दे. काँट्टा।

काँटो (स्त्री.) रहट की बालटियों को उलटी दिशा में आने से रोकने के लिए प्रयुक्त एक यंत्र, काँटा या खटका। दे. काँट्टो।

काँट्टा (पुं.) 1. कंटक, झाड़ी का काँटा, 2. कान का आभूषण, 3. राह का रोड़ा, शत्रु, 4. आँकड़ेदार कीलों का

गुच्छा जो कुएँ में गिरी बाल्टी, डोल आदि को निकालने के काम लाया जाता है, 5. बड़ा तराजू, 6. दाना, 7. कील की तरह उठी हुई छोटी-छोटी फुंसी; **~काढणा** 1. काँटा निकालना, 2. काम निकालना, 3. शत्रु पर विजय प्राप्त करना, 4. शत्रु से बदला लेना; **~तोल** पूरा तोल; **~लड़णा** 1. कुएँ में पड़ी बाल्टी का काँटे में फँसना, 2. काम बनना, सफलता मिलना; **~लिकड़णा** 1. बाधा दूर होना, 2. काम बनना, 3. कष्ट निवारण होना। **काँटा** (हि.)

काँट्टी (स्त्री.) 1. छोटी तराजू, 2. काँटेदार झाड़ी, 3. एक आभूषण।

काँट्टो (स्त्री.) गिलहरी, तुल. कट्टो।

काँट्ठा (पुं.) पानी का किनारा, तट; **~(-ठै) लागणा** 1. सफलता मिलना, 2. पार होना।

काँठा[2] (पुं.) तुल. कुंडाली, काठ की पराँत।

काँ डंका (पुं.) बच्चों का एक खेल जो टाँग के नीचे से डंडा फेंककर खेला जाता है।

कांड (पुं.) 1. झगड़ा, 2. किस्सा, 3. कथा का खंड विशेष; **~रोपणा** झगड़ा खड़ा करना।

काँडा (पुं.) दे. काँट्टा।

काँड्डा[1] (पुं.) 1. अनुमान–यो बुलध किस काँड्डे में मोल लिया? 2. ढंग, औचित्यपूर्ण–बात तै काँड्डे की कही थी पर ना मान्या।

काँड्डा[2] (पुं.) दे. काँट्टा।

काँड्डी (स्त्री.) मोटा तूड़ा, मोटा भुस।

काँण (स्त्री.) 1. लज्जा, शर्म–बहू नैं चाहिए के सास्सू-सुसरे की काँण करै, 2. टेढ़ापन–खाट में काँण पड़गी न्यूँएँ तै आड्डी होगी, 3. मनाही; **~आणा** आयताकार (चारपाई, वस्त्र आदि) वस्तुओं का समान कोण नहीं रहना; **~करणा** 1. लज्जा करना, 2. संकेत मानना–नारिया नाथ की काँण करै सै; **~काढणा** कपड़े आदि का टेढ़ापन निकालना; **~चढणा** 1. ऋण चढ़ना, 2. लज्जा आना; **~होणा** 1. चारपाई, कपड़े आदि के कोनों का ठीक मिलान न होना, 2. वर्जित होना–म्हारै यो त्युहार मनावण की काँण सै।

काँत (स्त्री.) हल में फाल के साथ लगाया जाने वाला लोहे की पत्तियों से बना त्रिभुजाकार यंत्र।

कांति (स्त्री.) 1. चमक, 2. शोभा, आभा, 3. नूर।

काँद (पुं.) (छेद?) उदा. मेरा गेरा गात काँदकै।

काँदी (स्त्री.) हिस्सा, भाग। उदा.–मिलगी जो साझे की काँदी थी। (लचं)

काँद्धा (पुं.) 1. स्कंध, 2. सहारा–भाइयाँ का भाई काँद्धा हो सै, 3. बैल की गर्दन; **~देणा** अर्थी उठाना; **~लाणा** सहारा देना। **कंधा** (हि.)

काँध (स्त्री.) 1. बैल या पशु की गर्दन जिस पर जुआ रखा जाता है, 2. अनाज और भूसे की मिश्रित ढेरी, 3. दीवार; **~आणा** अधिक बोझा खींचने या रोग के कारण पशु की गर्दन के ऊपर के भाग का फूलना या पकना।

काँधरा (पुं.) दे. कोंहदरा।

काँधला (वि.) शक्तिशाली स्कंध वाला (बैल)।

काँपणा (क्रि. अ.) 1. ठंड आदि से सिहरना, 2. डर से थर्राना, 3. पत्ते आदि का दोलायमान होना। **काँपना** (हि.)

काँबळ (पुं.) कंबल; **गल का~** गाय का गल कंबल या चद्दर। **कंबल** (हि.)

काँवड़ (स्त्री.) 1. बहँगी, 2. जल का वह छोटा मटका विशेष जो तीर्थयात्री तीर्थस्थल से भर कर लाता है; **खड़ी~** 1. तीर्थ स्थल से पवित्र जल का कलश बहँगी में रखकर पदयात्रा करते हुए बिना कहीं बैठे लेकर आने की क्रिया, 2. कठिन कार्य; **बैट्ठी~** तीर्थस्थल से पवित्र जल का कलश काँवड़ में रख अन्य स्थान पर ले जाने का भाव (इस अवस्था में तीर्थयात्री इस पात्र को भूमि पर भी रख सकता है); **~बोलणा** मनोकामना पूर्ति के लिए तीर्थ स्थल का पवित्र जल बहँगी में रख निवास स्थान तक पद यात्रा सहित लाने का वचन लेना। **काँवर** (हि.)

काँवड़िया (पुं.) 1. बहँगी उठाने वाला, 2. झीमर, धींवर, पानी भरने वाला व्यक्ति, 3. तीर्थयात्री जो काँवर उठाए हुए हो, 4. एक जाति। **काँवरिया** (हि.)

काँस[1] (स्त्री.) जल में उगने वाली एक लंबी घास।

काँस[2] (पुं.) घरेलू वाक्‌युद्ध।

काँसा (पुं.) दे. काँस्सा।

काँसिल (पुं.) दे कँसला।

काँस्सा (पुं.) एक धातु। **काँसा** (हि.)

काँस्सी[1] (स्त्री.) दे काँस्सा।

काँस्सी[2] (स्त्री.) श्री काशी जी, संस्कृत विद्या का अत्यंत प्राचीन केंद्र, पवित्र धार्मिक तीर्थस्थान, मंदिरों की नगरी, सप्त पुरियों में से एक; **~पड्ढण जाणा** 1. संस्कृत अध्ययन के लिए श्री काशी जी जाना, 2. यज्ञोपवीत धारण के समय संपन्न एक प्रथा जिसके अनुसार यज्ञोपवीत धारण करने वाला बालक, ब्रह्मचारी के वेश में झोली पसार कर बहनों तथा अन्य संबंधियों से भिक्षा माँगता है तथा संस्कृत अध्ययन के लिए काशी की ओर दौड़ता है, ब्रह्मचारी के माता-पिता इस भय से कि कहीं ज्ञान प्राप्त कर यह संन्यासी न बन जाए, उसके पीछे दौड़ते हैं, उसकी बहनें भी स्थानीय पंडित से पाठशाला में पढ़ने को कहती हैं और उसे लौटा लाती हैं; **~में करौंत लेणा** 1. काशी करवट लेना, मोक्ष प्राप्ति के लिए काशी जाकर करौंत से कटना, 2. कठिन से कठिन काम करने का भार लेना। **काशी** (हि.)

काँह्घी (स्त्री.) दे. काँघी।

का (प्रत्य.) संबंध कारक का चिह्न (अहीरवाटी, मेवाती, मारवाड़ी आदि बोलियों में इसका उच्चारण 'को' है), **~ए** का ही–भैराम का ए घर सै; **~मार्‌या** के लिए, के कारण–वो प्यार का मार्‌या इँग्घा उँग्घा नैं हाँड्डै था; (सर्व.) **क्या** (मेवा.)।

काईं (अव्य.) क्या। कौन-सी।

काई (स्त्री.) पानी या सीलन के कारण जमने वाली हरे रंग की परत; (वि.) काई के रंग की; (सर्व.) कोई (मेवा.); **~पर की लाट्ठी** क्षणिक द्वेष –भाइयाँ की लड़ाई काई पर की लाट्ठी हो सै; **~सी पाटणा** 1. भीड़ का तितर-बितर होना, 2. छिन्न-भिन्न होना।

काकड़ा[1] (पुं.) 1. झड़बेरी या बड़बेरी का गुठली वाला एक फल, बेर–काळ काकड़ा अर समय पीह्ल (अधिक बेर लगना अकाल का और अधिक पीलू लगना सुभिक्ष का लक्षण माना जाता है), 2. ओला, हिमोपल–इतणे मोट्टे काकड़े पड़े अक सारी खेत्ती छाण मारी, 3. कंकर, 4. टैंट, 5. बिनौला।

काकड़ा[2] (पुं.) 1. दे. बिंदोळा, 2. दे. काकड़ा[1]।

काकड़ी (स्त्री.) कर्कटी। **ककड़ी** (हि.)

काक भुशुंडी (पुं.) एक रामभक्त कौआ।

काका (पुं.) दे. काक्का।

काकी (स्त्री.) दे. काक्की।

काकोळ (पुं.) अधिक काले रंग का कौआ।

काक्कर (स्त्री.) दे. काँक्कर।

काक्का (पुं.) 1. पिता का छोटा भाई, चाचा, 2. पिता (सीमित प्रयोग); **~कहणा** 1. बड़ा मानना, 2. हार मानना; **~काक्की** सगे संबंधी **~कै हाथ कुहाड़ी आच्छी लागणा** दूसरे द्वारा किया गया कठिन काम भी सुगम लगना। **काका** (हि.)

काक्की (स्त्री.) चाची। **काकी** (हि.)

काख (स्त्री.) कुक्षि, बगल; कवाई काख का एक रोग **~बजाणा** समय नष्ट करना।

काग (पुं.) 1. कौआ, 2. तालु पर नीचे की ओर लटकने वाला कौआ; (वि.) चालाक; **~उडाणी** 1. दासी, 2. अभागिन; **~(-ग्गा) बास्सा होणा** वंश नष्ट होना; **~बोलणा** 1.अपशकुन होना, 2. अतिथि के आने का संकेत मिलना, 3. स्थान का उजड़ना।

कागज़ (पुं.) दे. कागद।

कागज़ी (वि.) 1. कागज़ का बना हुआ, 2. लिखित, 3. नाजुक, 4. बादाम की एक किस्म।

कागण (स्त्री.) दे. कव्वी।

कागत (पुं.) दे. कागद।

कागद (पुं.) कागज़।

कागला (पुं.) दे. काग।

कागली (स्त्री.) फोड़े-फुंसी पर चिपकाई जाने वाली धरक। 2. कब्वी।

काग्गा (पुं.) दे. काग।

काग्गा रोट्टी (स्त्री.) एक प्रकार का पौध । जिस पर लगे फल को बच्चे कौओं की रोटी कहते हैं।

काचर (स्त्री.) दे. कचरी।

काचुओ (पुं.) कछुआ (मेवा.)।

काच्चा (वि.) 1. जो पका न हो, अधपका, 2. जो आँच पर नहीं पकाया गया हो, 3. कमजोर, 4. कोमल, 5. अप्रमाणिक; **~करणा** 1. कच्ची सिलाई करना, 2. किसी बात को झुठलाना, 3. लज्जित करना, 4. झुठलाना, 5. साहस तोड़ना; **~कुणबा** छोटे-छोटे बच्चे; ~ **~छोडणा** छोटे बच्चों को छोड़ कर मरना; **~गज** 1. अप्रमाणित लंबाई का गज, 2. मानक गज से पौना या आधा, 3. ढाई हाथ लंबा नाप; **~चिट्ठा** 1. गुप्त भेद, 2. किसी की बुराई का वृत्तांत; ~ **~खोलणा** बुराई संबंधी सभी बातें कह सुनाना; **~जी** घबराने की स्थिति; ~ **~करणा** 1. जी घबराना, 2. बुरी घटना की आशंका से घबराना, 3. आँखों में आँसू भरना; **~झाग** फल-फूल आदि की बहुत कच्ची अवस्था; **~पाक्क्या** 1. अधपका,

2. भला-बुरा (भोजन); **~(-च्चे) दिन** गर्भवती स्त्री के चौथे-पाँचवें महीने के दिन; **~माल** 1. कमजोर वस्तु, 2. वह माल जो पूरी तरह तैयार नहीं हो; **~हाथ** 1. वह हाथ जो किसी काम को करने के लिए पूर्ण रूप से अभ्यस्त न हो, 2. बच्चे का हाथ। **कच्चा** (हि.)

काच्चा पील्ला (पुं.) मिट्टी का अधपका पात्र। दे. पील्ला।

काच्ची (वि.) 1. अधपकी, 2. जो पकी न हो; **~उमर** बाल्यावस्था; **~घाणी** अध पकी घानी; **~नींद** अधपकी नींद; **~बात** 1. हल्की बात, 2. निराधार बात; **~बुद्धि** अपरिपक्व बुद्धि; **~रसोई** 1. दाल, चावल आदि का भोजन, 2. पानी से पकाया गया अन्न, भोजन जो घी में नहीं तला गया हो। **कच्ची** (हि.)

काच्छे-काछ (अव्य.) कच्छा पहने हुए। उदा.–बच्चा काच्छे-काछ तयार खड़ा था।

काज[1] (पुं.) 1. कार्य, काम, 2. किसी वयोवृद्ध या सम्मानित व्यक्ति के स्वर्गवास पर समस्त गाँव, आसपास के कुछ गाँव अथवा किन्हीं जाति विशेष के लोगों को दिया जाने वाला मृत्यु भोज (आमंत्रित गाँव के लोग या पंचायत, काज करने वाले व्यक्ति को सम्मानार्थ पगड़ी बाँधते हैं); **~करणा** 1. मृत्यु भोज देना, 2. कार्य सिद्धि करना; **~सारणा** कार्य पूर्ण करना।

काज[2] (पुं.) बटन का घर।

काजल (पुं.) दे. काज्जल।

क़ाज़ी (पुं.) दे. काज्जी।

काजू (पुं.) दे. काज्जू।

काज्जल (स्त्री.) 1. स्याही, 2. आँखों का अंजन, 3. कलंक; **~लागणा** कलंक लगना; **~सारणा** स्याही डालना। **काजल** (हि.)

काज्जी (पुं.) न्याय करने वाला (मुसलमान)। **क़ाज़ी** (हि.)

काज्जू (पुं.) एक सूखा मेवा; **~भाज्जू** 1. कमजोर, 2. दिखावटी। **काजू** (हि.)

काट[1] (स्त्री.) 1. काटने का ढंग या भाव, 2. चुगली–तूँ जघाँ-जघाँ मेरी काट करता हाँड्डै सै, 3. तर्क, उत्तर–भाइयाँ की सूँ थारी बात्ताँ की म्हारै धोरै काट नहीं सै, 4. लाग, प्रभावित करने वाला कारक–सोड्डे के पाणी की लत्त्याँ में आच्छी काट लाग्गै सै, 5. विरोध, 6. घाव; (क्रि. स.) 'काटणा' क्रिया का आदे. रूप; **~करणा** 1. विरोध या चुगली करना, 2. किसी वस्तु को प्रभावकारी ढंग से साफ़ करने के लिए इमली, सोडा, तेजाब आदि डालना।

काट[2] (पुं.) 1. लकड़ी, 2. वृक्ष–या कोण से काट की लाकड़ी सै?; **~की हाँड्डी** झूठी बात, कच्ची बात; **~मारणा** 1. सुन्न होना, 2. अचेत होना, 3. शक्तिहीन होना। **काष्ठ** (हि.)

काटड़[1] (पुं.) 1. दे. बंजर, 2. दे.काल्लर।

काटड़[2] (वि.) दे. मरखणा।

काटड़ा (पुं.) भैंस का नर बच्चा; **~अर कसाई का माल खाज्या** असंभव बात; **~छोड़णा** कटड़े को दाग़ लगा कर भैंसा घोषित करना; **~(-ड़े) ताहीं के बाहणा** हर काम करके छोड़ना; **~सा** 1. मोटा ताज़ा, 2. कटड़े जैसा। **कटड़ा** (हि.)

काटड़ू (पुं.) भैंस का छोटा बच्चा, 'काटड़ा' का अल्प; **~गेरणा/ फैंकणा** भैंस का गर्भपात होना।

काटणा (क्रि. स.) 1. पीटना–आज तै सुरजन म्हारी चरी काटता पकड़ा ग्या, हमने वो नीच्चै गेर कै खूब काट्या, 2. अलग-थलग करना, 3. चुभना, काटना–नई जूत्ती काट्या ए करैं, 4. वध करना, 5. समय बिताना, 6. मिटाना, 7. बनाना, निर्माण करना–इस खेत में कै चार क्यारी काट दे, 8. विषैले जंतु द्वारा डंक मारना–के तू गुरैहड़े (गुहेरा) नैं काट लिया, 9. चुभना या खुजली होना–देही पै घाम ऊप्पड़ आया इसा काट्टै सै अक चिमक लाग र्‌ही सै। **काटना** (हि.)

काटना (क्रि. स.) दे. काटणा।

काट बजार (पु.) वेश्यावृत्ति का अड्डा

काट मंडी (स्त्री.) लकड़ी का बाज़ार या मंडी।

काट्टा (पुं.) दे. काटड़ा।

काट्टी (स्त्री.) दे. कटिया; (क्रि. स.) काटी, 'काटणा' क्रिया का भू. का., स्त्री. रूप।

काट्टो (स्त्री.) दे. काँट्टो।

काट्ठी (स्त्री.) 1. लद्दू पशु के पीठ की गद्दी, 2. शरीर का गठन–वो तै छोट्टी काट्ठी का अर बहू उसतैं बड्डी लाग्गै सै, 3. कुर्सी, 4. मकान का आधारभूत तल–घर ऊँच्ची काट्ठी पै बणामते तै क्यूँ डूबता; **~कसणा** काम के लिए कटिबद्ध होना। **काठी** (हि.)

काठ (पुं.) काष्ठ, लकड़ी, (दे. काट[2])।

काठक (पुं.) यजुर्वेद का एक ब्राह्मण ग्रंथ जिसकी रचना हरियाणे में हुई।

काठ की घोड़ी (स्त्री.) अरथी।

काठी (स्त्री.) चावल की सख्त खिचड़ी। दे. काट्ठी।

काठेड़ (स्त्री.) मेवाती की एक खाप या क्षेत्र।

काठेरी (स्त्री.) मेवाती की एक उप बोली।

काढणा (क्रि. स.) 1. निकालना, 2. कढाई या कशीदाकारी करना, 3. दूध को बहुत औटाना, 4. अंदर गड़ी वस्तु बाहर निकालना, जैसे–काँट्टा काढणा, 5. चित्रित करना–भींत पै होई काढ दे। **काढ़ना** (हि.)

काढ़ना (क्रि. स.) दे. काढणा।

काण (स्त्री.) दे. काँण

काणा (वि.) 1. जिसे एक आँख से न दीखे, 2. वह फल या सब्जी जिसमें कीड़ा लगा हो, गला-सड़ा फल, 3. टेढ़ा; (पुं.) 1. खेल के चार पाँसों में से एक ही पाँसा सीधा होने का भाव, 2. एक रोग जिसमें फोते छोटे-बड़े हो जाते हैं, 3. नस पर नस चढ़ने का एक रोग, 4. डाँडी की रस्सी, 5. डाँडी (तराजू की), 6. कौआ; **~घूँघट** आधा घूँघट; **~पड़णा** 1. अपशकुन होना, 2. हानि होना, 3. खेल का पाँसा काना पड़ना। **काना** (हि.)

काणा खोड़ा (पुं.) आश्विन मास (नवरात्रे) में दीवार पर गोबर आदि से चित्रित साँझी का लनिहार (इसे साँझी चीतने के कुछ दिन बाद गोबर-मिट्टी के सितारे आदि से चित्रित किया जाता है, कन्या-पक्ष का होने के कारण वर-पक्ष की महिलाएँ इसे अनेक ताने भरे गीत सुनाती हैं और इसे काना तथा खोड़ा (गंजा) कहती हैं, दशहरे वाले दिन

यह साँझी को लेकर चलता है, स्त्रियाँ इसे साँझी के साथ निकट के जोहड़ में एक हँडिया में प्रवाहित करती हैं जैसे कि बंगाली बंधु दुर्गा का विसर्जन करते हैं, संभवत: काना खोड़ा समुद्र पार या जलतट निवासी पात्र है); (वि.) 1. कुटिल, 2. काना और गंजा।

काणी (वि.) 1. वह (स्त्री) जिसे एक आँख से दिखाई दे, 2. तिरछी–याह् खाट बी काणी होगी, 3 वह (सब्जी) जिसमें कीड़ा पड़ गया हो; (स्त्री.) कानी कोड़ी; **~आँगली** चिटली या कनिष्ठा अंगुली; **~का** बहुत सस्ता (कानी कौड़ी का); **~ताखड़ी** कम तोलने वाला तराजू; **~की आँख में कुणक** बाधा पर बाधा। **कानी** (हि.)

कात (स्त्री.) दे. काँत।

कातणा (क्रि. स.) कताई करना, चर्खा चलाना, सूत कातना; **नान्हा~** 1. बारीक कातना, 2. गहराई से छानबीन करना, 3. आलोचना करना; **मोट्टा~** 1. जैसा-तैसा कातना, 2. काम को लापरवाही से करना; **~सो बणणा** किए का फल मिलना। **कातना** (हि.)

कातणी (स्त्री.) पूनी या छुटपुट सामान रखने के लिए तिनके या लकड़ी के सींखचे आदि से बनाया गया पात्र; (वि.) कातने में कुशल, 1. तुल. बोहनी, 2. तुल. सिंडोरी। **कातनी** (हि.)

कातना (क्रि. स.) दे. कातणा।

कातरा (पुं.) एक लंबे रूएँदार कीड़ा जो कई रंग का होता है तथा फसल का रस चूसता है; (वि.) 1. दुर्बल, 2. भैंगा; **~सा** कृशकाय।

कातूक कचरा (पुं.) कार्तिक में पका कचरा।

कात्तर[1] (वि.) 1. डरपोक, 2. व्याकुल। **कातर** (हि.)

कात्तर[2] (स्त्री.) कतरन, काँट-छाँट से बची कपड़े की कतरन।

कात्तिक (पुं.) कार्तिक का महीना, विक्रमी संवत् का आठवाँ महीना; **~न्हाणा** 1. कार्तिक मास में सूर्योदय से पहले स्नान करना (स्नानोपरांत स्त्रियाँ पथवारी माता की स्तुति में भक्तिपूर्ण गीत गाती हैं), 2. गंगा स्नान करना; **~आळी** प्लेग की बीमारी जो (सन् 1918 ई. में) कार्तिक महीने में हुई थी और जिसमें अनेक लोग मृत्यु को प्राप्त हुए थे; **~~में मर गे** वे पुरुष जो कार्तिक की बीमारी में दिवंगत हुए–मेरे मारणियाँ तै कात्तिक आळी में मर गे। **कार्तिक** (हि.)

कात्यक (पुं.) दे. कात्तिक।

कादंबरी (स्त्री.) बाणभट्ट की प्रसिद्ध कृति जिसकी रचना हरियाणे में हुई।

कादा (पुं.) कीचड़।

कादू (स्त्री.) एक पिछड़े वर्ग की जाति। दे. कमीण काँदू।

कादे. (पुं.) कायदे, नियम।

काद्दयाण (पुं.) 1. एक जाट गोत, 2. इस गोत की खाप जिसमें दूबलधन माजरा आदि 12 गाँव लगते हैं।

काद्या (पुं.) 1. उर्दू सीखने की प्रथम पुस्तक, 2. नियम, क़ायदा; **~(-ये) सिर** नियमानुसार, रीति या नियम के अनुसार। **क़ायदा** (हि.)

कान (पुं) कर्ण; **~का काच्चा** अविश्वासी; **~काटणा** 1. मात देना, बढ़ कर होना,

2. मूर्ख बनाना; **~खड़े करणा** 1. सावधानी से सुनना, 2. चौकन्ना होना; **~गोचरी** गोपनीय संदेश; **~ठाणा** 1. बात को ध्यान से सुनना, 2. चौकन्ना होना, 3. बात ताड़ लेना, 4. सामना करना; **~तोड़णा** 1. सुस्त होना, 2. पशु में बीमारी के लक्षण दृष्टिगत होना; **~पड़ाणा** 1. साधु बनना, 2. हार मानना, 3. दंड स्वीकार करना; **~पाकड़णा** 1. सौगंध खाना, 2. अपमान करना; **~फड़कणा** बात भाँपना; **~फड़फड़ाणा** (कुत्ते का) अपशकुन होना; **~बिंधाणा** 1. कर्ण-छेदन करवाना, 2. हानि उठाना; **~भरणा** 1. चुगली करना, 2. किसी के विरुद्ध उकसाना; **~मरोड़णा** 1. कान ऐंठना, 2. सौगंध लेना; **~होणा** 1. बुद्धिमान होना, 2. सचेत होना।

कान कुळासा (पुं.) ध्यान देकर सुनना।

कान-कोळा (पुं.) किसी के बारे में कानों कान पता लगाना।

कानखजूरा (पुं.) अनेक पैरों वाला एक लंबा विषैला कीड़ा।

कान सिळाई (स्त्री.) कानखजूरे से छोटे आकार का अनेक पैरों वाला एक कीड़ा जो वर्षा के दिनों में दिखाई देता है, तुल. गिजाई। **कान सलाई** (हि.)

काना (वि.) दे. काणा।

कानाफूसी (स्त्री.) 1. कान में धीरे से कही गई बात, 2. गुप्त चर्चा।

काना बाती (स्त्री.) दे. कान्ना बात्ती।

कानी (वि.) दे. काणी।

कानीया (पुं.) गोरखनाथ कालीन एक सिद्ध साधु।

कानून (पुं.) 1. सरकारी नियम, 2. नियम; **~छाँटणा** 1. नुक़्ताचीनी करना, आलोचना करना, 2. बुद्धिमत्ता प्रदर्शित करना।

कानूनगो (पुं.) पटवारी से ऊँचे पद का मालगुजारी अधिकारी।

कानें (पुं.) दे. कान्हा।

कानोंढा (वि.) 1. खरीदा हुआ (दास), 2. दूसरे के आश्रय पर पलने वाला, 3. ज़रूरतमंद, तुल. आजरदा; **~करणा** पराश्रित करना; **~होणा** 1. पराश्रित होना, 2. लज्जित होना।

कान्ना[1] (पुं.) 1. बर्तन आदि का किनारा, 2. भाग, हिस्सा, 3. लंबी घास से मिलने वाला एक कठोर डंठल जिससे कलम भी बनाई जाती है, दे. नेज्जा; **~कान्ना** कानों कान; **~झड़णा** पात्र आदि का किनारा टूटना।

कान्ना[2] (पुं.) 1. मित्र, सखा, 2. श्री कृष्ण, (दे. कान्हाँ)

कान्ना बात्ती (स्त्री.) 1. कान में कही गई बात, कानाफूसी, 2. बच्चों का एक खेल; **~करणा** कानाफूसी करना; **~कुर** 1. किसी बात को गोपनीय विधी से कहना, 2. बच्चों के कान में कुछ कहकर उन्हें हँसाना।

कान्नी[1] (अव्य.) की ओर–मेरे कान्नी आइये जिब देक्खूँगा, तुल. कान्हीं।

कान्नी[2] (स्त्री.) 1. धोती की किनारी, 2. बचने या किनारा करने का भाव; **~काट** सफेद किनारे वाली–बटेऊ कान्नी काट कचियाधोत्ती बाँध रह्या था; **~काटणा** 1. किनाराकशी करना; 2. बचकर निकलना; **~दार धोत्ती** किनारे वाली धोती, कन्नीदार धोती। **कन्नी** (हि.)

कान्यकुब्ज (पुं.) ब्राह्मणों का एक वर्ग, पंच गौड़ों में से एक वर्ग।

कान्हाँ (पुं.) कृष्ण।

कान्हीं (अव्य.) 1. ओर, की ओर–तेरे कान्हीं मेरे कई रपैये आवैं से, 2. म्हारे कान्हीं भी कदे कदाऊ आ जाया कर, तुल. कान्नी[1]

कान्हूड़ा (पुं.) दे. कान्हा।

कान्ही (अव्य.) दे. कान्नी[3]।

कान्ह्याँ (अव्य.) की ओर, तुल. कान्हीं।

कापड़ा (पुं.) वस्त्र; **मुर्दे पर का~** 1. मृगछाला, 2. कफन।

कपड़ा (हि.)

कापण (पुं.) मिट्टी का ढक्कन।

कापा (स्त्री.) 1. दे. कातर, 2. सोने का छोटा टुकड़ा।

कापणी (स्त्री.) छोटा ढक्कन।

कापिष्ठल (पुं.) यजुर्वेद का एक ब्राह्मण ग्रंथ जिसकी रचना हरियाणे में हुई।

कापी (स्त्री.) दे. काप्पी।

काप्पी (स्त्री.) नोटबुक, अभ्यास पुस्तिका। **कापी** (हि.)

काफ़िला (पुं.) यात्रियों का दल।

काफ़ी (वि.) पर्याप्त (दे. भतेरा)।

काबरी[1] (स्त्री.) 1. दे. काब्बर, 2. दे. गोरली।

काबरी[2] (स्त्री.) चिड़िया से बड़ा भूरे रंग का पक्षी। तुल. तिलियार। दे. काब्बर।

काबला (पुं.) एक प्रकार की पेचदार कील।

काबा (पुं.) मुसलमानों का एक तीर्थ स्थान।

काबली (पुं.) काबुल देश का निवासी; (वि.) 1. मूर्ख–अरै जा नैं काबली, 2. काबुल का; **~कीक्कर** देशी कीकर से भिन्न एक कीकर जिसकी किकरोली छोटी होती है; **~चणा** एक प्रकार का चना जो कुछ सफेद होता है; **~नीम** एक प्रकार का नीम जिसकी निंबोली देशी नीम से मोटी होती है।

काबुआ (पुं.) चौड़ा और गहरा प्याला।

काबुल (पुं.) अफ़गानिस्तान का एक शहर।

काबुली (वि.) दे. काबली।

काब्बर (स्त्री.) एक प्रकार की चिड़िया जो कबूतर से कुछ छोटी होती है और दीवारों में घर बनाकर रहना अधिक पसंद करती है, (दे. गोरली)।

काब्बू (पुं.) वश। **क़ाबू** (हि.)

काम (पुं.) 1. कार्य, 2. रोज़गार, 3. मतलब, 4. कामदेव; **~आणा** 1. सहायक सिद्ध होना, 2. लड़ते-लड़ते मरना, शहीद होना, 3. व्यवसाय संबंधी निपुणता प्राप्त होना; **~की झाल ऊठणा** कामदेव द्वारा सताया जाना; **~मैं काम होणा** काम करते-करते बीच में अन्य ज़िम्मेदारी आ पड़ना; **~चलाऊ** 1. कुछ समय तक ही काम आने योग्य, 2. काजू-भाजू, कम टिकाऊ।

कामकाज (पुं.) 1. काम-धंधा, 2. व्यापार।

कामकाजी (वि.) बहुधंधी।

कामगार (पुं.) मज़दूर।

कामचा (पुं.) पतली लचीली टहनी जिसकी टोकरी आदि भी बनती है, तुल. कामड़ा।

कामची (स्त्री.) कमची, पतली लचीली डंडी जो टोकरी आदि बनाने के काम आती है, 1. तुल. कामड़ा, 2. तुल. संटी; **~खेलणा** वधू के घर आने पर देवी धाम (धई-धाम) की पूजा के बाद संपन्न एक प्रथा (इस समय वर-वधू के हाथ में कमची दी जाती है और दोनों को एक-दूसरे के पैरों पर प्रहार करने को कहा जाता है, इससे वधू के स्वभाव की मनोवैज्ञानिक परीक्षा ली जाती है, इस अवसर पर देवर-भाभी

भी कमची खेलते हैं, इस प्रथा का अब ह्रास हो रहा है।

कामचोर (वि.) दे. कामचोर।

कामड़ा (पुं.) बाँस या अन्य किसी लकड़ी का लंबा-लचीला टुकड़ा।

कामण[1] **(पुं.)** रेशम (?) उदा.–झूल घली कामण की।

कामण[2] (स्त्री.) दे. कामनी।

कामदेव (पुं.) कामवासना की प्रेरणा देने वाला देवता।

कामधाम (पुं.) काम-काज, धंधा।

कामधेनु (स्त्री.) देवताओं की एक गाय; (वि.) सुशील (गाय)।

कामन (स्त्री.) कामिनी।

कामनी (स्त्री.) स्त्री, सुंदर स्त्री। **कामिनी** (हि.)

कामबाण (पुं.) कामदेव का बाण।

कामरान देस (पुं.) कामरूप देश।

कामरूप (पुं.) जादू-टोने का प्रदेश।

कामली (स्त्री.) छोटा कंबल।

काम्मल (वि.) 1. अच्छा, 2. सुंदर, 3. होशियार–तूँ किमैं घणा काम्मल सै? **कामिल** (हि.)

काम्मीं (वि.) 1. कर्मशील, काम-धन्धे में रत, 2. कामुक।

काम्यक (पुं.) 1. हरियाणा का एक तीर्थ, 2. एक वन।

काय (स्त्री.) आठ प्रकार का शरीर–1. पृथ्वी काय, 2. अप काय (जलकाय), 3. तेपु काय (तेजम्), 4. बाऊ काय (वायु काया), 5. वनस्पति काय (जिसे श्राद्ध में तर्पण के समय जल दिया जाता है। 6. बे काय (दो इंद्रियों की), 7. ते काय (तीन इंद्रिय काय), 8. पंच इंद्रिय काय। दे. काया।

कायत (पुं.) हिन्दुओं की एक जाति जो पढ़ने-लिखने और राजकाज के काम में चतुर मानी जाती है। **कायस्थ** (हि.)

क़ायदा (पुं.) काद्या।

कायर (वि.) डरपोक।

काया (स्त्री.) शरीर; **~पलट** 1. पुनर्जन्म, 2. किसी वस्तु में आधारभूत परिवर्तन होने की स्थिति, 3. एक प्रकार का उपचार।

कार[1] (स्त्री.) 1. काम, रोज़गार–किम्मै कार धंधा लागग्या अक ना, 2. रेखा, सीमा, परिधि; **~का** काम आने योग्य, काम का; **~खींचणा/लाणा** 1. रेखा खींचकर प्रतिज्ञा करना, 2 सीमाबद्ध करना;–लिछमन नैं सीता कै चार्यूँ ओड़ानैं तीर तैं कार खींच दी अक इसतैं भार मत ना जाइये।

कार[2] (स्त्री.) छोटी मोटर गाड़ी।

कारज (पुं.) 1. धर्म-पुण्य आदि का शुभ काम, 2. मृत्यु भोज; **~करणा** 1. धर्म-पुण्य निमित्त भोजन खिलाना, 2. मृत्यु भोज देना; **~साधणा** 1. कार्य सिद्ध करना, 2. समय पर काम आना।

कारड़ (पुं.) 1. पोस्टकार्ड, 2. राशन कार्ड आदि। **कार्ड** (हि.)

कारतूस (पुं.) बंदूक आदि की गोली।

कार पशु (पुं.) दे. मनचरा।

कारिंदा (पुं.) 1. कर्मचारी, 2. मज़दूर, 3. कारीगर।

कारिस्तान्नी (स्त्री.) 1. चालबाज़ी, 2. किया हुआ कार्य (उपालंभ में प्रयुक्त)। **कारस्तानी** (हि.)

कारीगर (पुं.) शिल्पी; (वि.) हुनर-मंद, निपुण।

कारीगरी (स्त्री.) 1. निपुणता, 2. सुंदर काम, 3. कला।

कारूरा (पुं.) मूत्र।

कारोबार (पुं.) काम-धंधा।

कार्तिक (पुं.) दे. कात्तिक।

कार्तिकेय (पुं.) शिव के पुत्र जिनका वाहन मयूर है (पेहवा [कुरुक्षेत्र] में इनका प्रसिद्ध मंदिर है)।

कार्य (पुं.) दे. कारज।

कार्यक्रम (पुं.) 1. काम करने की क्रमिक रूपरेखा, प्रोग्राम, 2. काम करने का ढंग।

कार्यसिद्धि (स्त्री.) कार्य की सफलता-पूर्वक समाप्ति।

कार्यालय (पुं.) दफ्तर।

कार्रवाई (स्त्री.) कार्य करने का ढंग।

काळ[1] (पुं.) 1. समय, 2. मृत्यु, अंत– रावण का काळ आया तै उसनैं सीत्ता हड़ी, 3. यमराज; **~कोठड़ी** कैद, जेल; **~मुट्ठी में लेणा** मृत्यु को वश में करना। **काल** (हि.) **अकाल** (हि.)

काळ[2] (पुं.) 1. दुर्भिक्ष, 2. कमी।

काळ[3] (पुं.) दुर्भिक्ष। (हरियाणा के मुख्य अकाल विक्रम सम्मत अनुसार (1810), चालीसा (1840), साठा (1860) सतराह (1917), पचीसा (1925) चौंतीसा (1934), छपना (1956))।

कालका (स्त्री.) 1. काली देवी, दुर्गा, 2. काली स्त्री; (वि.) भयंकर रूप वाली, कुरूप। **कालिका** (हि.)

काल कोठरी (स्त्री.) जेल, क़ैद।

कालकोत्तर (पुं.) उस्तरे से मुँडा हुआ सिर; **~कढवाणा** सिर मुँडवाना।

काळख (स्त्री.) 1. कलंक, 2. धुएँ से उत्पन्न कालिख, तुल. काळस; **~पोतणा/लाणा** 1. कलंकित करना, 2. मुँह काला करना। **कालिख** (हि.)

काळजा (पुं.) हृदय; **~(-जे) की कोर** 1. अत्यंत प्रिय वस्तु, 2. संतान; **~(-जे) पै साँप लोटणा** 1. सुन्न रह जाना, 2. भारी से भारी क्षति होना; **~पाकड़्या जाणा** दिल में डर बैठना; **~पाटणा/बैठणा** कलेजा फटना, दिल की गति रुकना; **~(-जै) लाणा** 1. दिल से लगाना, छाती से लगाना, 2. छिपाना; **~सीळा होणा** 1. मन को तसल्ली मिलना, 2. मनोकामना पूर्ण होना; **~सेलणा** ताना मारना। **कलेजा** (हि.)

कालपाश (पुं.) यमपाश।

काळ पुरस (पुं.) 1. अकाल पुरुष, 2. ईश्वर।

कालबूत (पुं.) 1. मुसलमानों की एक उपजाति, 2. कालबुत, लकड़ी का साँचा जिसमें ईंट आदि ढाली जाती हैं।

कालर (पुं.) कमीज आदि की पट्टी जो गले के चारों ओर रहती है, (दे. काल्लर [1-2])।

काळस (स्त्री.) दे. कालख।

काळा (वि.) 1. काले रंग का, 2. कपटी; **~कलूट्टा** बहुत काला और गंदा; **~(-ळे) चणे चाबणा** कठिन परिश्रम करना; **~किसट** बहुत काला; **~चोर** 1. भयंकर चोर, 2. बुरा व्यक्ति, 3. अनजान; **~स्याह** बहुत काला। **काला** (हि.)

काला (वि.) दे. काळा।

काला नमक (पुं.) दे. काळा नूण।

काळा नूण (पुं.) काला नमक।

काळा पाणी (पुं.) 1. देश निकाला, 2. भयंकर दंड, 3. बहुत दूर का स्थान, 4. सज़ा, 5. काले पानी का देश, अंदमान निकोबार; **~काटणा** कहीं दूर उमर क़ैद काटना; **~मिलणा /होणा** उमर क़ैद की सज़ा मिलना। **काला पानी** (हि.)

काला पानी (पुं.) दे. काळा पाणी।

काळा माणसिया (पुं.) आँख की पुतली।

कालिका (स्त्री.) दे. काळका।

कालिख (स्त्री.) 1. दे. काळा, 2. दे. काळस।

काळिया (पुं) वह भंगी जिसके यहाँ हरिश्चंद्र ने शमशान घाट में नौकरी की थी; (वि.) काले रंग का, काला।

काळिया भूत (पुं.) काला भूत, बच्चों को डराने के लिए प्रयुक्त शब्द; (वि.) अधिक काला (व्यक्ति)।

काळी (वि.) काली; (दे. काळका); **~कोस्साँ** बहुत दूर का स्थान; **~खाँस्सी** कुक्कर खाँसी, कुत्ता खाँसी, **~गा** 1. निस्सहाय (व्यक्ति), 2. शरणागत– हाय रै, मैं तेरी काली गा सूँ, मनैं ईबकै बकस दे, फेर कद्दे इसा काम नाँह् करूँ; **~दह** वृदावन का वह कुंड या जगह जहाँ कृष्ण ने कालिया नाग को नाथा था।

कालीन (पुं.) ऊन का बिछावन।

काळी मिर्च (स्त्री.) काले छिलके वाली गोल मिर्च।

काल्लर[1] (पुं) रेह वाली भूमि, तुल. काँगड़; **~काढणा** 1. किसी स्थान को साफ करना, 2. सिर मूँडना। **कल्लर (हि.)**

काल्लर[2] (पुं.) कोट या कमीज का कॉलर। **कॉलर** (हि.)

काल्ली (स्त्री.) 1. परेशानी, 2. उद्विग्नता; **~ठाणा** कष्ट सहन करना; **~मानणा** 1. बुरा मानना, 2. उद्विग्न होगा।

काल्ह (क्रि. वि.) बीता हुआ या आने वाला दिन; **~का** 1. हाल ही का, 2. अनुभव हीन, 3. कम आयु का; **~तड़के का** मृत्यु के सन्निकट; **~परसूँ करणा** टालना, टालते रहना। **कल** (हि.)

काव (पुं.) कवि। तुल. कव।

कावड़ (स्त्री.) दे. काँवड़।

कावड़िया (पुं.) दे. काँवड़िया।

काशीफल (पुं.) दे. कोळहा।

काश्त (स्त्री.) खेती।

काश्तकार (पुं.) खेतिहर।

कास[1] (पुं) 1. एक घास, 2. (दे. अकास)।

कास[2] (स्त्री.) दे. बीत। तुल. चराई।

काही (वि.) कास या काई के रंग का (वस्त्र); (स्त्री.) दे. काई।

किंह (अव्य.) किस–के बेरा किंह बिध ऊँट बैट्ठै; (सर्व.) किस–किंह के घराँ गया था?

किकरोळी (स्त्री.) कीकर पर लगने वाली फलियाँ।

किच-किच (स्त्री.) व्यर्थ का शोर।

किचकिचाना (क्रि. स.) दाँत पीसना; (क्रि. अ.) चक-चक करना।

किचकिची (स्त्री.) दे. कचकची।

किचर-पिचर (स्त्री.) 1. शोर, 2. 'किच'- 'किच' की ध्वनि।

किटकिटाना (क्रि. अ.) दे. किच- किचाना।

किणक (स्त्री.) 1. चावल या गेहूँ के दाने का छोटा भाग, 2. छोटा तिनका, 3. छोटी कंकर। **किनकी** (हि.)

किणकी (स्त्री.) 1. अन्न का छोटा अंश, 2. छोटे आकार का चावल, टूटा हुआ चावल। **किनकी** (हि.)

किणछणा (क्रि. अ.) 1. मल विसर्जन के समय साँस नीचे की ओर दबाना, 2. क्रोधित अवस्था में दाँत भींच कर कुछ-कुछ कहना, 3. भयभीत होना, 4. हार मानना; (वि.) डरपोक।

कित (क्रि. वि.) 1. कहाँ, 2. किस ओर, किधर; **~के** कहाँ के–कित के सो भई न्यूँ तै बता द्यो?; **~सी/सीक** कहाँ पर–थारा घर कितसीक सै?

कितकारी (स्त्री.) पशु को हाँकने के लिए की जाने वाली 'कित'-'कित' की ध्वनि।

कितणा (वि.) कितना, कितनी मात्रा का; (क्रि. वि.) कहाँ तक।

कितणाक (वि.) कितना, कितना सारा–खीर ताँही कितणाक दूध चाह्वैगा?; (क्रि. वि.) कहाँ तक।

कितना (वि.) दे. कितणा।

किताब (स्त्री.) पुस्तक।

कितै (क्रि. वि.) कहीं, किसी भी (अनिश्चित) स्थान पर।

कितोड़ (अव्य.) दे. कींधै।

किदारनाथ (पुं.) केदारनाथ, एक तीर्थ-स्थान।

किन (सर्व.) 'किस' का बहुवचन।

किनारा (पुं.) तट, (दे. कान्ना[1])

किनारी (स्त्री.) कपड़े के किनारे पर लगाया जाने वाला सुनहरी पतला गोटा, (दे. कान्नी[2])

किन्नर (पुं.) एक देव योनि।

किन्नैं (सर्व.) किस ने, किन्होंने–यो भाण्डा किन्नैं फोड़ू या?

किब (क्रि.वि.) किस समय। **कब** (हि.)

किबै (अव्य.) दे. क़िब।

किमी (अव्य.) दे. किमैं।

किमैं (अव्य.) कुछ, कुछ-कुछ, जैसे– किमैं इसा दीक्खै सै।

किम्मैं (अव्य.) कुछ भी–तूँ तै चाहे किम्मैं कहले सुणणी पडैगी।

किरक (स्त्री.) 1. आँख की किरकिरी, 2. छोटा तिनका।

किरकरा (वि.) कंकरदार, जिसमें रेत आदि मिल गया हो। **किरकिरा** (हि.)

किरकल (स्त्री.) किरकिरी।

किरकिरा (वि.) दे. किर करा।

किरकिरी (वि.) किरकिराहट वाली; (स्त्री.) 1. अपमान, 2. धूलि का कण।

किरचणा (क्रि. अ.) 1. छोटे-छोटे टुकड़े होकर गिरना, 2. दस्त लगना।

किरण (स्त्री.) 1. सूर्य की किरण, 2. साड़ी आदि के छोर पर लगाई जाने वाली गोटे की झालर विशेष।

किरणा[1] (क्रि. अ.) 1. किसी वस्तु का शनैः-शनैः कट-कट कर गिरना, 2. रेह या नूनी मिट्टी के कारण दीवार से मिट्टी का शनैः-शनैः गिरते रहना, 3. ह्रास होना।

किरणा[2] (क्रि.) बिलौनी, घीलड़ी आदि पवित्र मिट्टी के पात्र का खंडित होना। दे. 1. बिसमणा 2. दे. किरणा[1]।

किरत (पुं.) कृत, कार्य।

किरती (स्त्री.) कृत्तिका नक्षत्र।

किरपण (वि.) कंजूस। **कृपण** (हि.)

किरपा (स्त्री.) 1. दया, 2. क्षमा, 3. कृपा।

किरया (स्त्री.) 1. काम, 2. मृत्यु के बाद किया जाने वाला एक धार्मिक कृत्य। **क्रिया** (हि.)

किरया-करम (पुं.) अंतिम क्रिया। **क्रिया-कर्म** (हि.)

किरळकाँट (पुं.) गिरगिट। **कृकलास** (हि.)

किरळिया (पुं.) दे. किरळकाँट।

किरसन (पुं.) जिन्होंने महाभारत के युद्ध में कुरुक्षेत्र के स्थान पर अर्जुन को गीता का उपदेश दिया। **श्री कृष्ण** (हि.)।

किराँची (स्त्री.) ऊँट गाड़ी जो चारों ओर से ढकी रहती है तथा सवारी अथवा भूसा आदि ढोने के काम आती है।

किरा (वि.) पका और चटखा हुआ। उदा. –किरा कातकी कचरा बहुत मीठा सै।

किराड़ (पुं.) 1. व्यापारी, 2. कंजूस व्यापारी, कंजूस करोड़पति, 3. बनिया।

किराड़ी (पुं.) निष्ठुर व्यापारी, अधिक सूद लेने वाला, सूदखोर।

किराना (पुं.) दाल, नमक आदि मिश्रित सामान; (क्रि. स.) दे. भोरणा।

किराया (पुं.) दे. भाड़ा।

किराएदार (पुं.) किराए के मकान पर रहने वाला।

किरोड़ (वि.) करोड़ की संख्या।

किरोड़पति (पुं.) अमित धन का स्वामी।

किलकणा (क्रि. अ.) किलकारी भरना। **किलकना** (हि.)

किलकना (क्रि. अ.) दे. किलकणा।

किलकार (स्त्री.) 1. पुकारने की ध्वनि, 2. हर्ष या कष्ट के समय निकलने वाली पुकार। **किलकारी** (हि.)

किलकारणा (क्रि. स.) किलकारी मारना।

किलकारी (स्त्री.) 1. पुकारने की ध्वनि, 2. किलकारी मारने की ध्वनि; **~मारणा** 1. चीख निकालना, 2. सहायता के लिए बुलाने का संकेत करना, 3. हर्ष या कष्ट प्रकट करना।

किलकिला (स्त्री.) दे. किलकारी।

किलकी (स्त्री.) चीख; **~पड़णा** 1. हल्ला बोलने के लिए संकेत होना, 2. हर्षनाद गूँजना, 3. बहुत शोर मचना, 4. चीख पुकार करके दौड़ना; **~भरणा** चीख कर पुकारना; **~मारणा** 1. सहायता के लिए चीखना, 2. बालक का प्रसन्न होकर खेलना या चीखना।

किलफ (स्त्री.) क्लिप।

किलबिल (स्त्री.) शोर; **~खान्ना** वह घर जहाँ अनेक छोटे बच्चे हों।

क़िला (पुं.) 1. दुर्ग, 2. बड़ा और मज़बूत मकान; (वि.) दुर्जेय।

क़िलाबंदी (स्त्री.) व्यूह रचना।

किलायत (पुं.) कपिलायत, 'कपिलायत' शब्द का विकृत रूप, तिला जींद में स्थित वह स्थान जहाँ सांख्य दर्शन के रचयिता कपिल मुनि का आश्रम माना जाता है।

किलोल (पुं.) 1. काम क्रीड़ा, 2. हँसी, हास्य-विनोद। **कल्लोल** (हि.)

किल्याणी (स्त्री.) अंतड़ी; **~सूखणा** 1. आँत सूखना, 2. दुर्बल होना।

किल्ल (स्त्री.) दे. किलकारी।

किल्लत (स्त्री.) 1. तंगी, 2. कमी।

किल्लारी (स्त्री.) दे. किलकारी।

किल्ली (स्त्री.) दे. कील्ली।

किवड़िया (स्त्री.) 1. खिड़की का दरवाज़ा, 2. छोटे किवाड़, 3. खिड़की।

किवाठ (पुं.) ड्रम रगड़ने का ब्रश।

किवाड़ (पुं.) दरवाज़ा, कपाट; **आँद्धा~** दो के स्थान पर केवल एक ही पल्ले

या तख्ते का बड़ा दरवाज़ा या कपाट; **~मारणा/मूँदणा/लाणा** दरवाजा बंद करना।

किवाड़ी (स्त्री.) 1. छोटा दरवाज़ा, 2. खिड़की।

किशमिश (स्त्री.) सूखा हुआ छोटा अंगूर।

किशमिशी (वि.) किशमिश के रंग का; (पुं.) एक रंग विशेष।

किशोर (पुं.) ग्यारह से पन्द्रह वर्ष की आयु का बालक।

किश्ती (स्त्री.) नौका।

किष्किंधा (स्त्री.) बाली की नगरी।

किस (सर्व.) 'कौन' या 'क्या' का विभक्ति रहित रूप।

किसट (वि.) काला, अधिक काला।

किसा (वि.) 1. किस प्रकार का, 2. जैसा, समान; **~क** कैसा, किस प्रकार का। **कैसा** (हि.)

किसाण (पुं.) 1. कृषक, 2. मज़दूर को रोज़गार देने वाला, मज़दूरों को आश्रय देने वाला, 3. कामगारों के लिए सम्मानित व्यक्ति। **किसान** (हि.)

किसाणी (स्त्री.) 1. किसान की पत्नी, 2. कामगारों के लिए सम्मानित स्त्री, 3. कृषि-कर्म, 4. उपज का अंश जो दानस्वरूप निकाला जाए।

किसान (पुं.) दे. किसाण।

किसानी (स्त्री.) किसान का कार्य, खेती।

किसारा (पुं.) घाटा।

किसारी (स्त्री.) झींगुर।

किसियाँ (सर्व.) 1. किस, किन, 2. 'किस' का बहुवचन।

किसी (वि.) किस तरह की। **कैसी** (हि.)

किसे (वि.) 1. किस प्रकार के, 2. जैसे—तेरे किसे घणे देक्खे। **कैसे** (हि.)

किसै (सर्व.) 1. किसी, 2. किसी को, 3. किसी के लिए।

किस्म (स्त्री.) 1. प्रकार, 2. भाँति।

किस्मत (स्त्री.) भाग्य।

किस्यो (वि.) कैसा (दे. किसा)।

किस्सा (पुं.) 1. कहानी, 2. झगड़ा—अरै के किस्सा होग्या?

किस्सा राजा रसालू (पुं.) अहीरवाटी की एक कृति।

कीं-कीं (स्त्री.) शोर, व्यर्थ का शोर।

कींधै (क्रि. वि.) किधर, किस ओर, किस लाँघ।

कींह् (सर्व.) किस—योह रोग कींह नै काट्या।

की (प्रत्य.) संबंध कारक का चिह्न, संबंध बोधक प्रत्यय।

कीकर (स्त्री.) दे. कीक्कर।

कीक्कर (स्त्री.) 60-70 फुट ऊँचा वृक्ष जिस पर किकरोली तथा गदानुमा पीले फूल लगते हैं और जिसके लंबे काँटे होते हैं (इसकी छाल चमड़ा रंगने तथा लकड़ी भवन-निर्माण के काम आती है, इसकी फली से चीयाँ निकलते हैं); **~फूल्ली भादवै फल लाग्या बैसाख** कीकर में भादों महीने में फूल आते हैं परन्तु फल बहुत देर से लगते हैं। **कीकर** (हि.)

कीक्कर फूल्ली (स्त्री.) एक प्रकार का वस्त्र जिस पर कीकर के फूल छपे होते हैं।

कीचक (पुं.) राजा विराट का साला जिसका वध भीम ने किया था।

कीचड़ (पुं.) पंक, (दे. खाँच्चा)।

कीट-पतंग (पुं.) कीड़े-मकोड़े।

कीड़नाळ (पुं.) 1. चींटियों की लंबी पंक्ति, 2. चींटियों का बिल—चून कीड़नाळ पै

गेर दे; **~जिमाणा** कष्ट निवारण के लिए शनिवार और अमावस्या के दिन चींटियों के बिल पर सूखा आटा, दलिया आदि डालना; **~लीकड़णा** चींटियों का अचानक भूमि से निकल पड़ना; **~सा फैलणा** अधिक परिवार बढ़ना।

कीड़ा (पुं.) 1. कीट, 2. साँप; **~(-ड़्याँ) की कूँड** घोर नरक, रौरव; **~काँट्टा** साँप आदि कीड़े; **~मकोड़ा** 1. कीट-पतंग, 2. साँप आदि कीड़े।

कीड़ी (स्त्री.) चींटी; **~चलाणा** बच्चों के शरीर पर गुदगुदी करना; **~चालणा** शरीर पर हल्की-हल्की खुजली चलना या होना; **~ब्याणा** व्यापार फैलना, काम बढ़ना; **~मकोड़ी का आग्गै आणा** किया हुआ पुण्य फलित होना।

कीड़ुओ (पुं.) दे. किरळकाँट।

कीणा (पुं.) 1. मिला-जुला अन्न, 2. वह अन्न जो मालिन को सब्जी आदि के बदले प्रायः दिया जाता है।

कीत्तै (क्रि. वि.) कहीं भी–कीत्तै जा ले, भाग आग्गै चाल्लैगा।

कीमत (स्त्री.) मूल्य, भाव।

कीमती (वि.) बहुमूल्य, (दे. मँहगा)।

कीर काँट्टो (स्त्री.) 1. गिलहरी, 2. बच्चों का एक खेल जिसमें वे एक-दूसरे से छिपकर किसी भी स्थान पर चिकनी मिट्टी आदि से छोटी-छोटी रेखाएँ खींचते हैं।

कीरतन (पुं.) भगवान के यश संबंधी भजन। **कीर्तन** (हि.)

कीरतनिया (पुं.) 1. असम में किया जाने वाला स्वाँग-नृत्य जो हरियाणवी साँग से मिलता-जुलता है, 2. कीर्तन मंडली; (दे. साँग)।

कीरती (स्त्री.) यश। **कीर्ति** (हि.)

कीर्ति (स्त्री.) दे. कीरती।

कील[1] (स्त्री.) 1. लोहे की खूँटी, 2. लोहे की कील, 3. मुँहासे की जड़।

कील[2] (स्त्री.) खीस, भैंस आदि पशु के ब्याने के बाद निकाला गया पहली बार का दूध जो छेलड़ेदार तथा गाढ़ा होता है, (दे. छेलड़ा)।

कीलड़ा (पुं.) कीला, चक्की के दो पाटों को मिलाने वाला लकड़ी का खूँटा–चक्की चलै तै चलण दे, पीसण दे सब नाज, जो हैं हर के लाड़ले, रहैं कीलड़े लाग।

कीलणा (क्रि. स.) 1. कील गाड़ना, 2. उस स्थान पर कील गाड़ना जहाँ मुर्दा लिटाया गया हो (ताकि उसका भूत-प्रेत नहीं सताए), 3. जंत्र-मंत्र द्वारा विकास रोकना।

कीला (पुं.) दे. कील्ला[3]।

कीलिया (पुं.) कुँआ जोतते समय कीली निकालने का काम करने वाला व्यक्ति, (दे. कील्ली)।

कीली (स्त्री.) दे. कील्ली।

कील्ला[1] (पुं.) खेत नापने का एक वर्गमान।

कील्ला[2] (पुं.) 1. मोटा खूँटा, 2. चक्की के दो पाटों के ठीक बीच में लगा लकड़ी का खूँटा, 3. जाड़ के पास का दाँत। **कीला** (हि.)

कील्ला-मान्नी (स्त्री.) चक्की के कीले के ऊपर लगी लकड़ी की किश्तीनुमा गिट्टी जिसके बीच में कीले का ऊपरी भाग फँसा होता है, (यह चक्की के ऊपरी पाट में लगी होती है)।

कील्ली (स्त्री.) 1. छोटी खूँटी, 2. घुंडीदार लकड़ी की लगभग एक बालिश्त लंबी

खूँटी जो कुएँ की लाव और बैलों के जुए के बीच लगी रहती है और जिसके निकालने से लाव जुए से अलग हो जाती है [लाव पर बैठने वाला कीलिया पैड़छे (कुएँ की पैड़ी या पौदर) में पहुँचकर चरसे को कुएँ से बाहर निकलने का ध्वनि-संकेत (बारा) पाकर इसे खींच लेता है]; **~काढणा** 1. कीली निकालना, 2. दी हुई सहायता वापिस लेना। **कीली** (हि.)

कील्ली बारा (पुं.) चरसे के, कुएँ से बाहर निकलने पर 'कीली' हाँकने वाले व्यक्ति को दिया जाने वाला ध्वनि-संकेत, यथा–'राम सुमरियो', 'बारा तै आग्या हो राम' आदि; **~रचाणा** बच्चों द्वारा कुआँ जोतने का अभिनय करना या खेल किया जाना।

कील्लो (पुं.) तोल जो एक सेर से लगभग छः तोला भारी होता है, एक हजार ग्राम का बाट। **किलोग्राम** (हि.)

कुंअर (पुं.) दे. कुँमर।

कुँआ (पुं.) दे. कूआ।

कुँआर (पुं.) दे. आसोज।

कुँआरा (वि.) दे. कवारा।

कुँई (स्त्री.) दे. कूई।

कुंची (स्त्री.) ऊँट की काठी।

कुंज[1] (स्त्री.) क्रौंच पक्षी।

कुंज[2] (पुं.) छोटे पौधे और लताओं से युक्त स्थान।

कुंजड़ा (पुं.) दे. कूंजड़ा।

कुंजर (पुं.) हाथी।

कुंजी (स्त्री.) दे. ताळी।

कुंड (पुं.) दे. कूंड।

कुंडल (पुं.) चाम से मढ़ा एक बाजा। दे. कुंडळ।

कुंडळ (पुं.) 1. गोल दायरा, 2. वर्षा से पहले या बाद में चंदा या सूरज के चारों ओर व्याप्त मंडलाकर आकृति, 3. कान का आभूषण, 4. बच्चों का एक खेल जिसमें वे मंडलाकर बैठते हैं, 5. साँप द्वारा सिमट कर बैठने की अवस्था या आकृति, 6. चरसे के ऊपर लगी लोहे की माँडल या मंडारा।
कुंडल (हि.)

कुंडलिनी (स्त्री.) दे. कूँडळी।

कुंडली (स्त्री.) 1. जन्म कुंडली, 2. छोटा दायरा, साँप के बैठने की मुद्रा (दे. कूँडली) **कुंडली** (हि.)

कुंडवारा[1] (पुं.) दे. कंडवारा।

कुंडवारा[2] (पुं.) दीवाली आदि के बर्तन। तुल. सलेंडा। दे. कंडवारा।

कुंडा (पुं.) दे. कुंदा।

कुंडाली (स्त्री.) मिट्टी की पराँत।

कुंडी[1] (स्त्री.) किवाड़ में लगने वाली साँकल; **~भेड़णा/मारणा/लाणा** साँकल बंद करना।

कुंडी[2] (स्त्री.) दे. कूँड्डी सोट्टा।

कुंती (स्त्री.) युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन की माता, पांडु की पत्नी।

कुंद[1] (वि.) उदास।

कुंद[2] (पु.) सफेद फूल का एक पौधा।

कुंदन (पुं.) स्वर्ण; (वि.) स्वर्णिम आभा से युक्त।

कुंदनपुर (पुं.) राजा नल की राजधानी कुंडिनपुर, विदर्भ क्षेत्र।

कुंदी (स्त्री.) दे. कुंडी।

कुंदा (पुं.) कुंडा, साँकल।

कुंभ (पुं.) एक पर्व जो प्रति बारहवें वर्ष विशेष ग्रहों के योग में आता है।

कुंमर (पुं.) 1. राजा का पुत्र, 2. छैला, 3. लड़का, 4. दामाद। **कुँवर** (हि.)

कुंमारपात (पुं.) दे. कँवारपात।

कुँह-कुँह (स्त्री.) कराहने की आवाज़।

कु (उप.) न्यूनता, तिरस्कार, बुराई आदि द्योतक उपसर्ग।

कुकड़म कुकड़ा (पुं.) बच्चों द्वारा खेला जाने वाला एक खेल (जिसमें वे अपने हाथ की दोनों मुट्ठियाँ बंद करके किसी बच्चे के सिर पर रख देते हैं और गाते हैं–'कुकड़म-कुकड़ा कितना बोझ', जिस बच्चे के सिर पर हाथ होता है वह कहता है–'एक पळी तारले सो मण बोझ')।

कुकड़ी (स्त्री.) दे. कूकड़ी।

कुकड़ू (पुं.) मुर्ग़ा; (स्त्री.) मुर्ग़े द्वारा उच्चरित ध्वनि।

कुकड़ू-कूँ (स्त्री.) मुर्ग़े की बाँग।

कुकरम (पुं.) दुष्कर्म, बुरे कर्म; **~रोपणा** दुष्कर्म करना। **कुकर्म** (हि.)

कुकरम खेड़ी (वि.) बुरा काम करने वाला।

कुकरमीं (वि.) कुकर्मी, बुरा काम करने वाला।

कुकर्म (पुं.) दे. कुकरम।

कुकर्मी (वि.) दे. कुकरमीं।

कुकाणा (क्रि. अ.) 1. मोर, कोयल आदि का बोलना, 2. मोर का आपत्ति के समय बोलना, 3. रुदन करना, 4. चीखना, चिल्लाना। **कूकना** (हि.)

कुक्कुर खाँसी (स्त्री.) कुत्ता खाँसी।

कुक्षि (स्त्री.) दे. कूक्खी।

कुघड़ी (स्त्री.) कुसमय।

कुचक्री (पुं.) षड्यंत्रकारी।

कुचलस (पुं.) अग्रवाल वैश्यों का गोत्र (इनका संबंध कुत्स मुनि, सामवेद, कौथमी शाखा और गोभिल सूत्र से है, इनका प्रवार मांकील है)।

कुचला (पुं.) विष।

कुचाल (स्त्री.) दे. कुचाळ।

कुचाळ (स्त्री.) बुरी चाल, कपट; (वि.) कपटी।

कुचाली दे. कुचाळी।

कुचाळी (वि.) चरित्रहीन।

कुछ (वि.) जरा सा, थोड़ा सा; (सर्व.) कोई।

कुजड़ी (स्त्री.) छोटी टोकनी। दे. कूज्जा।

कुजस (पुं.) कुयश।

कुजात (स्त्री.) नीच जाति; (वि.) अन्य जाति का; (पुं.) नीच आदमी, अजात। **कुजाति** (हि.)

कुजाति (वि.) दे. कुजात।

कुजोग (पुं.) 1. बुरा अवसर–इसे कुजोग में ब्याह हुया अक सब कुछ ऊटमटील्ला हो ग्या, 2. बेमेल जोड़ा। **कुयोग** (हि.)

कुट (स्त्री.) 1. भंग होने या टूटने की ध्वनि, 2. बच्चों द्वारा दोस्ती भंग करने के लिए प्रयुक्त शब्द–मेरी-तेरी यारी, कुट (दे. कुट्टी)।

कुटणा (क्रि. अ.) 1. पिटना, पीटा जाना, 2. पिसना या पीसा जाना।

कुटणी (स्त्री.) 1. दे. बेसमाँ, 2. दे. रंडी।

कुटम (पुं.) परिवार। **कुटुंब** (हि.)

कुटर-कुटर (स्त्री.) 1. चने आदि चबाने से उत्पन्न ध्वनि, 2. दिल के धड़कने की ध्वनि, 2. दिल के धड़कने की ध्वनि, 3. पेट से उत्पन्न ध्वनि; **~बोलता करणा** दिल घबराना।

कुटवाणा (क्रि. स.) 1. पिटवाना, 2. कुट्टी कटवाना, 3. छितवाना, 4. कूटने का काम अन्य से करवाना। **कुटवाना** (हि.)

कुटवाना (क्रि. स.) दे. कुटवाणा।

कुटाई (स्त्री.) 1. पिटाई–आज तै उसकी खूब कुटाई करी, 2. कूटने का काम, 3. कूटने की मज़दूरी–थारे पैर का बाजरा मुगरा दिया ईव मेरी कुटाई थंभाओ।

कुटाळी (स्त्री.) चाँदी पिघलाने की प्याली।

कुटिया (स्त्री.) 1. छोटी कुटी, 2. झोंपड़ी।

कुटिल (वि.) दग़ाबाज़; (पुं.) खल, दुष्ट।

कुटी (स्त्री.) 1. घास-फूँस से बना छोटा घर, झोंपड़ी, 2. साधु-संत की झोंपड़ी।

कुटुंब (पुं.) दे. कुटम।

कुटुंबी (पुं.) 1. परिवार वाला, गृहस्थी, 2. संबंधी–घणा कुटुंबी घणा सुखी, घणा कुटुंबी घणा दुःखी।

कुटेब (पुं.) बुरी आदत। **कुटेव** (हि.)

कुटेम (पुं.) बुरा समय।

कुट्टी (स्त्री.) बालकों की आपसी दोस्ती तोड़ने की एक विधि जिसमें वे ठोड़ी के नीचे हाथ रखकर दाँत बजाते हैं, उँगली का नाखून दाँत से काटते हैं या मित्रता भंग होने की घोषणा मात्र करते हैं; **~करणा** 1. बोलचाल बंद करना, 2. मित्रता भंग करना;**~जोड़ना** यारी जोड़ना, फिर से मित्र बनाना (यह मित्रता सीधे हाथ का अँगूठा मुँह में रखने तथा छोटी अंगुली को मित्र की छोटी अंगुली से मिलाकर जुड़ती है, दूसरा मित्र भी ऐसे ही करता है और कहते हैं 'तेरी मेरी यारी पक्की', बाएँ हाथ से जुड़ी कुट्टी कच्ची समझी जाती है)।

कुठला (पुं.) 1. अनाज रखने का बड़ा कोठा, 2. बोरी या पल्ली आदि को जोड़ कर तथा उस पर मिट्टी आदि का लेप करके अनाज रखने के लिए बनाया गया गोलाकार स्थान, ठेक्का, 3. सोने-चाँदी के आभूषण रखने का गोपनीय स्थान; **~खोलणा** मुक्त हस्त से दान पुण्य देना; **~सौंपणा** ख़ज़ाने या धन-दौलत का मोह छोड़ना।

कुठार (पुं.) 1. विवाह-शादी के अवसर पर मिठाई रखने के लिए बनाया गया विशेष स्थान, 2. भंडार–कुठार में स्याणा आदमी बठाओ, 3. (दे. कुठारा); **~खाल्ली होणा** मिठाई का भंडार समाप्त होना; **~भरणा** संपन्न होना, किसी वस्तु की कमी नहीं रहना।

कुठारा (पुं.) कुल्हाड़ी।

कुठारी (पुं.) वह व्यक्ति जो कुठार में रहकर मिठाई बाँटने वालों को टोकरी भर-भर कर देता रहता है (किसी विशिष्ट व्यक्ति को यह भार दिया जाता है और बाद में उसे विधिवत् दक्षिणा भी मिलती है)।

कुठोड़ (पुं.) बुरा स्थान, अपवित्र स्थान।

कुठ्यार (पुं.) दे. कुठार।

कुठ्यारी (पुं.) दे. कुठारी।

कुड़क (वि.) कुर्क, ज़ब्त, सरकार की आज्ञा से संपत्ति आदि का ज़ब्त होना; (स्त्री.) 1. करारी चीज़ को तोड़ने से उत्पन्न ध्वनि, 2. पक्षी द्वारा अंडे देना बंद करने की अवस्था; (क्रि. स.) 'कुड़कणा' क्रिया का आदे. रूप।

कुड़कणा (क्रि. स.) किसी सूखी वस्तु को चबाना; (क्रि अ.) 1. किसी वस्तु का चटख कर टूटना, 2. दरार पड़ना।

कुड़की (स्त्री.) कुर्की, कर्ज़दार या अपराधी की सम्पत्ति का ज़ब्त किया जाना।

कुड़कुड़ाणा (क्रि. अ.) 1. मुर्ग़ी का 'कुड़-कुड़' करना, 2. बड़बड़ाना।

कुड़कुड़ाना (क्रि. अ.) दे. कुड़कुड़ाणा।

कुड़णा (क्रि. अ.) 1. मन ही मन पछतावा करना, ढाह करना, जलना, 2. पौधों की पत्तियों का रोग के कारण मुड़ जाना, 3. पकी फसल को समय पर न काटने के कारण दानों का अपने आप छिटकना। **कुढ़ना** (हि.)

कुड़ता (पुं.) बिना कालर का कमीज; **~टोप्पी** नवजात शिशु को उपहार स्वरूप दिया जाने वाला छोटा कुरता और टोपी आदि अन्य वस्त्र; **~~आणा** शिशु के जन्म पर बुआ आदि द्वारा उपहार के वस्त्र लाना। **कुरता** (हि.)

कुड़ती (स्त्री.) महिलाओं का कुर्ता।

कुड़बुड़ाना (क्रि. अ.) बड़बड़ाना।

कुड़व (पुं.) दे. आँदला।

कुड़ी (स्त्री.) दे. कुरड़ी।

कुडौल (वि.) बेढंगा; (स्त्री.) दुर्दशा.

कुड्ढी (स्त्री.) 1. ढेरी, 2. गंदगी की ढेरी, 3. कुल या परिवार–म्हारी कुड्ढी का गिंदोड़ा न्यारा-न्यारा द्यो (हमारे परिवार की मिठाई अलग-अलग दो); **~ऊठणा** वंश समाप्त होना, दे. कुड्ढी; **~करणा** ढेरी लगाना या मारना; **~गेरणा** घर का कूड़ा किसी स्थान विशेष पर डालना; **~ठाणा** वंश में कोई पुरुष नहीं बच रहना; **~मारणा** ढेरी बनाना।

कुढंग (वि.) बुरा ढंग।

कुढंगा (वि.) 1. बेढंगा, 2. अशिष्ट।

कुढन (स्त्री.) ईर्ष्या।

कुढ़ना (क्रि. अ.) दे. कुड़णा।

कुढब (पुं.) 1. बुरा तरीका, 2. ग़लत बात।

कुढाळ (स्त्री.) 1. बुरी चाल, 2. ग़लत तरीका–तूं तै घणी कुढाळ बोल्लै सै

कुढाळा (वि.) 1. बुरे आचरण वाला, 2. बुरा–कुढाळा बखत आग्या; **~बोलणा** 1. अपशब्द कहना, 2. सीधे मुँह बात न करना।

कुढाळी (वि.) 1. मार्गभ्रष्ट महिला 2. कुपथ चाल।

कुण (सर्व.) कौन, तुल. कूँण[2]; **~कुण** कौन-कौन; **~सा** कौन सा।

कुणक (पुं.) 1. छोटा तिनका, 2. किरकिरी।

कुणकुणाणा (क्रि. अ.) बड़बड़ाना। **कुनकुनाना** (हि.)

कुणबा (पुं.) परिवार; **~घाणी 1** समस्त परिवार नष्ट होने की क्रिया, 2. दण्डस्वरूप सारे परिवार को मरवाने का भाव; **~ ~करवाणा** परिवार के सदस्यों को गन्ने की तरह कोल्हू में पिरवाना। **कुनबा** (हि.)

कुणसा (सर्व.) कौन-सा।

कुणबात्ती (पुं.) कुटुंबी।

कुतका (पुं.) मोटा डंडा।

कुतरना (क्रि. सं.) दे. कतरणा।

कुतरु (पुं.) दे. कूतरा।

कुतवाणा (क्रि. स.) कुतवाना, कूतने का काम अन्य से करवाना (दे. कूतणा)।

कुतिया (स्त्री.) कुत्ते की मादा, कुत्ती।

कुत्ता (पुं.) श्वान; (वि.) 1. निरादृत, 2. नीच व्यक्ति; **~(–त्ते) ताण गाड्डी चालणा** व्यर्थ के भ्रम में रहना; **~(–त्ते) बोलणा** 1. अपशकुन होना; **~ (–त्ते) रोणा** 1. अपशकुन होना, 2. किसी स्थान का निर्जन होना; **~मोत**

मरणा 1. बुरी मौत पाना, 2. भुगत कर मरना।

कुत्ती (स्त्री.) दे कुतिया।

कुदकड़ी (स्त्री.) 1. छोटी दौड़, 2. कूद-कूद कर दौड़ने का भाव, 3. छोटे बच्चे की दौड़, 4. पशु की दुड़की चाल; **~भरणा/मारणा** दौड़ना, उछल-उछल कर दौड़ना।

कुदक्कड़ (वि.) कूदने वाला, उछल-कूद मचाने वाला।

कुदरत (स्त्री.) 1. प्रकृति, 2. स्वभाव, 3. विधाता।

कुदरती (वि.) 1. प्राकृतिक, 2. स्वाभाविक, 3. दैवी।

कुदवाणा (क्रि. स.) 1. कूदने का काम अन्य से करवाना, 2. बिदकाना, 3. बलदियाना, 4. मादा पशु का गाभिन करवाना। **कुदवाना** (हि.)

कुदाक (वि.) 1. वह (पशु) जो दूध देते समय कूद जाए, 2. उछल-कूद मचाने वाला।

कुदाणा (क्रि. स.) 1. कूदने के लिए प्रेरित करना, 2. भड़काना, बिदकाना, 3. मादा पशु को गाभिन करवाना **कुदाना** (हि.)

कुदान (पुं.) वह दान जिसे लेना बुरा समझा जाता है; (स्त्री.) कूदने की क्रिया।

कुदाना (क्रि. स.) दे. कुदाणा।

कुदाळ (स्त्री.) दे. कुदाळी।

कुदाळी (स्त्री.) मिट्टी खोदने का छोटा फावड़ा या फाली। **कुदाली** (हि.)

कुदिन (पुं.) बुरे दिन, आपत्ति-काल।

कुदेस (पुं.) 1. वह भूमि जहाँ विधर्मी रहते हों, 2. वह स्थान जहाँ वैद्य, महाजन तथा जल का अभाव हो।
कुदेश (हि.)

कुधीर (वि.) डरपोक।

कुनबा (पुं.) दे. कुणबा।

कुनीत (स्त्री.) 1. बुरी नीयत, 2. कुनीति।

कुनीतला (वि.) बुरी नीयत वाला।

कुनैन (स्त्री.) शीतज्वर की गोली विशेष।

कुन्ही (वि.) वह (भैंस) जिसके सींग घुमावदार और छोटे हों।

कुन्या (पुं.) बुरा न्याय, अन्याय।
कुन्याय (हि.)

कुन्यायी (वि.) 1. बुरे आचरण वाला, 2. अन्यायी।

कुपढ़ (वि.) 1. बुरी विद्या पढ़ा हुआ, 2. अनपढ़, अपढ़।

कुपत्ता (वि.) 1. बुरे कार्य करने वाला, 2. अधर्मी, 3. अयोग्य; (पुं.) बुरा पुत्र।

कुपात्तर (वि.) 1. अयोग्य, 2. पिता के नाम को लज्जित करने वाला (पुत्र), 3. जो दान प्राप्त करने का अधिकारी नहीं हो, अपात्र। **कुपात्र** (हि.)

कुपात्र (वि.) दे. कुपात्तर।

कुपैड़ (पुं.) दे. कुबध।

कुप्पा (पुं.) दे. कूप्पा।

कुफिया (वि.) छिपा हुआ, गुप्त।

कुफिया-पुलस (स्त्री.) गुप्तचर पुलिस, भेदिया, जासूस। **खुफ़िया पुलिस** (हि.)

कुबखत (पुं.) 1. बुरा समय, 2. असमय। दे. कुटेम।

कुबच्चन (वि.) कुवचन। दे. कुबाच।

कुबड़ा (पुं.) दे. कूबड़ा।

कुबड़ी (स्त्री.) दे. कूब्बाँ।

कुबध (स्त्री.) 1. बुरा कार्य, 2. बिना सोचे-विचारे काम करने की क्रिया, 3. शरारत; **~करणा/कमाणा** 1. बुरा कार्य करना, 2. शरारत करना।

कुबाक (पुं.) खोटा वचन।
कुवाक्य (हि.)

कुबाड़ा (पुं.) 1. बुरा काम, 2. वर्जित कार्य; **~कमाणा/करणा/रोपणा** बुरा काम करना।

कुबाण (स्त्री.) बुरी आदत, कुटेब।
कुबान (हि.)

कुबाध (स्त्री.) दे कुबध।

कुबाधण (स्त्री.) कुबुद्धिपूर्ण व्यवहार करने वाली महिला।

कुबाधिया (पुं.) 1. कुबुद्धिपूर्ण व्यवहार करने वाला, 2. शरारती।

कुबार (स्त्री.) 1. विलम्ब, देर, 2. असमय– 1. बटेऊ कुबार हुयाँ आया, 2. चाल्लण में कुबार करदी, सीळे-सीळे में चालते; (पुं.) वह वार जिसमें दिशाशूल हो।

कुबुद्धि (वि.) दुर्बुद्धि।

कुबेर[1] (स्त्री.) विलंब, देर, तुल. कुबार।

कुबेर[2] (पुं.) धन का देवता; (वि.) धनी।

कुबोल (वि.) 1. दे. कुबच्चन, 2. दे. बोल।

कुब्जा (स्त्री.) 1. श्रीकृष्ण से प्यार करने वाली कंस की दासी, 2. मंथरा।

कुब्योंत (पुं.) 1. कपड़े को ठीक-ठाक नहीं नापने का भाव, 2. **'ब्योंत'** का विलोम, 3. बुरे दिन, बुरा समय; **~चालणा** 1. ग़लत मार्ग अपनाना, 2. अवसर के अनूकूल व्यवहार नहीं करना।

कुभोग (पुं.) वर्जित भोजन।

कुमकुम (पुं.) 1. केसर, 2. सिंदूर।

कुमत (स्त्री.) दुर्बुद्धि; **~कमाणा/करणा** बुरा कार्य करना; **~लागणा** बुरे दिन आना। **कुमति** (हि.)

कुमर (पुं.) दे. कुँमर।

कुमलाणा (क्रि. अ.) 1. मुरझाना, 2. कांतिहीन होना, 3. चेहरे पर थकान का भाव आना; (वि.) वह जो शीघ्र कुम्हला जाए। **कुम्हलाना** (हि.)

कुमस्सल (पुं.) नाजायज़ संतान, जारज; (वि.) 1. कुलहीन, अकुलीन, 2. नीच, 3. नक़ली, बनावटी; **~का बीज** नीच का पुत्र, नीच जन्मा।

कुमाई (स्त्री.) 1. कमाया हुआ धन, 2. साधित की हुई, पुष्ट--छोहरे की देही खूब कुमाई ओड़ सै। **कमाई** (हि.)

कुमाणा (क्रि. स.) अर्जन करना, (दे. कमाणा)। **कमाना** (हि.)

कुमार (पुं.) 1. पुत्र, 2. युवराज।

कुमारी (स्त्री.) 1. कन्या, 2. अविवाहित लड़की के साथ जोड़ा जाने वाला सम्मानबोधक शब्द।

कुमार्ग (पुं.) 1. बुरा मार्ग, 2. अधर्म।

कुमार्गी (वि.) 1. वाम आचरण वाला, 2. अधर्म पर चलने वाला।

कुमेल (वि.) बेमेल, अनमेल।

कुमैत (पुं.) लाल रंग का घोड़ा।

कुम्हार (पुं.) मिट्टी के बर्तन बनाने वाला, प्रजापति (मथूरिया, गोळा और परोडिया इसकी तीन उपजातियाँ हैं)।

कुम्हारण (स्त्री.) कुम्हार की पत्नी; **~का छोः गधी पै** किसी कमज़ोर पर क्रोध उतारना।

कुम्हार धणे (पुं.) वह स्थान जहाँ से कुम्हार बर्तनों के लिए चिकनी मिट्टी लाता है।

कुम्हारी (स्त्री.) 1. कुम्हार की पत्नी, 2. ततैये के समान एक कीट जो गीली मिट्टी उठा-उठाकर दीवार आदि पर अपना घर बनाता है।

कुरंग (पुं.) मृग; (वि.) बुरे रंग का।

कुरंगी (स्त्री.) कुरंग के रंग की जूतियाँ।

कुरंड (पुं.) 1. एक पौधा जिसके बीज चोट पर बाँधे जाते हैं, 2. दे. खुरंड।

कुर (स्त्री.) कान में की जाने वाली कुर की ध्वनि; **~करणा** 1. बच्चे के कान में फूंक मारना, 2. धीरे से कान में बात कहना, 3. आस-पास के लोगों को संकेत से बात समझाना; **~कुर बात्ती** दे. कान्ना बात्ती।

कुरकुरा (वि.) 1. ख़स्ता और करारा, 2. भुरभुरा, खस्ता।

कुरकुराट (पुं.) 1. 'कुर-कुर' की ध्वनि, 2. बड़बड़ाने की क्रिया, 3. कामुकता का भाव; **~ऊठणा** 1. मन चंचल होना, 2. कामुकता का भाव जागना।

कुरकुरी (स्त्री.) पशु को होने वाली खुजली (जिसके कारण वह उछल-कूद करता फिरता है); **~ऊठणा** 1. मचलना, 2. कूदना।

कुरचणा (क्रि. स.) दे. खुरचणा।
खुरचना (हि.)

कुरड़ (पुं.) 1. ढेर, 2. गंदगी का ढेर; **~बधणा** 1. बच्चों का एक खेल जिसमें वे एक-दूसरे के ऊपर बैठ या लेट जाते हैं, 2. गंदगी बढ़ाना-थोड़ा खा अंग लगा, घणा खा कुरड़ बधा (कम खाया शरीर में लगता है और अधिक खाया व्यर्थ जाता है)।

कुरड़ी (स्त्री.) 1. वह स्थान जहाँ घर का कूड़ा-करकट डाला जाता है, 2. गंदा स्थान-गधा तै कुरड़ी पै रंज्जै सै, 3. वह स्थान जहाँ कूड़े-करकट से खाद तैयार किया जाता है, 4. चरित्रहीन स्त्री।

कुरता (पुं.) दे. कुड़ता।

कुरबुक (पुं.) जूड़े का एक आभूषण।

कुरम (पुं.) एक प्रकार का चमड़ा जो कोमल होता है।

कुरला (पुं.) दे. कुरळा।

कुरळा (पुं.) 1. भोजन के बाद पानी से दाँत साफ करने की क्रिया, 2. पानी की उतनी मात्रा जो एक बार मुँह में आए; **~करणा** 1. प्रातः उठकर आँख मुँह धोना, 2. गरारे करना, 3. भोजन के बाद 'चलू' करना; **~भरणा** मुँह में पानी लेना; **~फैंकणा** उलटी होना।
कुल्ला (हि.)

कुरळाट (पुं.) रोने या विलापने की ध्वनि, चीत्कार; **~ऊठणा** रोने के कारण हृदय विदारक दृश्य उत्पन्न होना।
करलाहट (हि.)

कुरसी (स्त्री.) 1. कमर और हाथ को आराम से रखकर बैठने के लिए बनी गद्दी वाली चार पैर की चौकी, 2. वह चबूतरा जिस पर भवन बनाया जाता है, 3. बंशावली; **~देणा** 1. सम्मान देना, 2. मकान को उभरे हुए स्थल पर बनाना।

कुरसी नाम्माँ (पुं.) वंश परंपरा का खाता।

कुरा (पुं.) दे. कुराह।

कुरान (पुं.) मुसलमानों का धार्मिक ग्रंथ।

कुराळी (स्त्री.) भिंडी के डंठल को भिगो कर तैयार किया गया घोल (जो गन्ने के रस की गंदगी दूर करने के लिए चाशनी में डाला जाता है)।

कुराह (पुं.) कुमार्ग, ग़लत रास्ता।

कुरी[1] (स्त्री.) घास विशेष।

कुरी[2] (स्त्री.) वर्षा की एक खरपतवार।

कुरीति (स्त्री.) 1. बुरी रीति, 2. कुचाल, 3. अधर्म का मार्ग।

कुरु (पुं.) दे. कोरू।

कुरुक्षेत्र (पुं.) दे. कुलछेत्तर।

कुरुखेत (पुं.) कुरुक्षेत्र।

कुरु-जांगल (पुं.) 1. हरियाणा भूमि, 2. प्राचीन काल का एक प्रदेश।

कुरु वन (पुं.) हरियाणा प्रदेश का वह भू-भाग जो कौरवों ने पांडवों को दिया था, इसी भाग में पांडवों ने अपनी राजधानी इंद्रप्रस्थ बसाई थी (ह. प्र. लो. पृ. 52)।

कुरूँ कुल्ला (स्त्री.) एक दयालु देवी।

कुरूप (वि.) 1. बुरा रूप, 2. बदसूरत, 3. बदशक्ल।

कुरेदणा (क्रि. स.) 1. खुरचना, 2. किसी बात को बार-बार कहना या याद दिलाना। **कुरेदना** (हि.)

कुरेदणी (स्त्री.) दाँत खुरचनी।

कुरेदना (क्रि. स.) दे. कुरेदणा।

कुरेदवाणा (क्रि. स.) 1. बात उगलवाना, 2. कुरेदने का काम अन्य से करवाना। **कुरेदवाना** (हि.)

कुरेळणा (क्रि. स.) दे. करेळणा।

कुर्की (स्त्री.) दे. कुड़की।

कुर्मी (स्त्री.) एक जाति विशेष।

कुलंग (वि.) लंबा तगड़ा (व्यक्ति); **~का कुलंग** लंबा तगड़ा, बलिष्ठ; **~बधणा** 1. अधिक लंबा क़द होना, 2. युवा होना।

कुल[1] (पुं.) दे. कुळी।

कुल[2] (वि.) सारा।

कुलकुलाणा (क्रि. अ.) 1. भूख के कारण अंतड़ियों का कुलबुलाना, 2. लालायित होना, आकुल होना—मेरे हाथ कुलकुळावैं सै, तू पिट कै रह घा।

कुलकुलाना (क्रि. अ.) दे. कुळकुळाणा

कुळकुळी (स्त्री.) बेचैनी, (दे. उचंग)।

कुलक्खण (पुं.) 1. बुरे लक्षण, 2. बदचलनी। **कुलक्षण** (हि.)

कुलक्खणा (वि.) 1. बुरे लक्षण वाला, 2. विपरीत आचरण वाला। **कुलक्षणा** (हि.)

कुलक्षण (पुं.) दे. कुलक्खण।

कुलखंडी (स्त्री.) वंशावली।

कुलखणी (स्त्री.) दे. कुलछणी।

कुलची (स्त्री.) एक वृक्ष।

कुलछ (वि.) दे. कुलछणी।

कुलछणी (स्त्री.) विपरीत आचरण वाली, कुलटा। **कुलक्षणी** (हि.)

कुलछत्तर—दीवाली के अवसर पर तेल डालकर जलाई जाने वाली साँप की छतरी।

कुलछेत्तर (पुं.) महाभारत कालीन प्राचीन तीर्थ जो दिल्ली से लगभग 100 मील दूर उत्तर-पश्चिम में है (यहीं पर महाभारत का युद्ध हुआ था, यहाँ सूर्य कुंड है तथा कुंभ और सूर्य ग्रहण के अवसर पर भारी मेला लगता है जिसमें सर्वत्र भारत से तीर्थयात्री स्नान करने आते हैं, इस क्षेत्र में मुर्दों के फूल नहीं चुगे जाते क्योंकि जन धारणा के अनुसार यहाँ मरने वाला व्यक्ति सीधा स्वर्ग जाता है और मोक्ष का भागी बनता है, इसके चारों ओर महाभारत कालीन अनेक भग्नावशेष हैं, अब यहाँ एक

विश्व-विद्यालय भी है)। **कुरुक्षेत्र**(हि.)

कुलदेव (पुं.) दे. कुलदेवता।

कुलदेवता (पुं.) कुल का देवता, वह देवता जिसकी पूजा कुल में परंपरा से होती आई हो, जैसे–खाटू का श्याम बाबा एक कुलदेवता है।

कुलधरम (पुं.) धर्म की कुछ विशेष बातें जो कुल के लोग निश्चित रूप से मानते हैं। **कुलधर्म** (हि.)

कुलफ़ा (पुं.) चौड़े पत्तों का एक हरा साग।

कुलफ़ा (स्त्री.) विशेष प्रकार से जमाया गया दूध का पदार्थ।

कुळबधू (स्त्री.) कुल की लज्जा रखने वाली वधू, सुशील स्त्री।

कुळबुळा (वि.) चुलबुला।

कुळबुळाणा (क्रि. अ.) 1. कीड़ों का रेंगना, 2. बेचैनी से हिलना-डुलना, 3. चंचल होना। **कुलबुलाना** (हि.)

कुलबुलाना (क्रि. अ.) 1. दे. कुळबुळाणा।

कुलवंत (वि.) कुलीन, अच्छे आचरण वाला।

कुलवधू (स्त्री.) दे. कुळबधू।

कुलाक्खा (पुं.) 1. अंधा, 2. एक आँख वाला व्यक्ति, 3. उल्टे हाथ से काम करने वाला, 4. 'सुलाँक्खा' का विलोम, 5. विपरीत आचरण करने वाला।

कुली (पुं.) बोझा ढोने वाला, तुल. पल्लेदार।

कुळी (स्त्री.) 1. कुल, वंश, 2. वंशावली; **~बखाणणा** 1. अपने वंश-गौरव का वर्णन करना, वंश-परंपरा बखानना, 2. पीढ़ी वर्णन करना।

कुलीन (वि.) 1. अच्छे घराने का, 2. पवित्र।

कुलीन-ब्राह्मण (पुं.) नाई। **कुलीन ब्राह्मण** (हि.)

कुलो (स्त्री.) छोटी नदी या तालाब।

कुल्या–कृत्रिम नदी। पंचकुल्या–पंचकूला।

कुल्लाँह (स्त्री.) मिट्टी से बनाया गया बहुत छोटी लुटिया के आकार का पात्र जो अधिकतर पूजा के काम आता है; **~में गुड़ फोड़णा** 1. गुप्त काम करना, 2. न छिपने वाले कार्य को गुप्त रखना। **कुल्हिया** (हि.)

कुल्ला[1] (पुं.) 1. साफे का वह भाग जो झंडे की तरह लपेटों से ऊपर खड़ा रहता है, 2. नोकदार टोप जिस पर साफा बाँधा जाता है, 3. लालटेन की बत्ती पर लगने वाला टोप; **~(–ल्ले) का साफा** वह साफा जो कुल्ले पर बाँधा जाता है।

कुल्ला[2] (पुं.) दे. कुरळा।

कुल्ला[3] (स्त्री.) कलाबाज़ी।

कुल्ला-बात्ती (स्त्री.) सिर नीचे करके उलट जाने की क्रिया; **~खाणा** सिर नीचे करके उलट जाना। **कलाबाज़ी** (हि.)

कुल्लेदार (वि.) कुल्ले वाला, चोटी वाला (साफा)

कुल्हड़ (पुं.) मिट्टी का बना चौड़े मुँह का लोटा; **~सा मुँह** चौड़ा मुँह, बड़ा मुँह।

कुल्हाड़ा (पुं.) दे. कुहाड़ा।

कुल्हियाँ (स्त्री.) मिट्टी की छोटी लुटिया, तुल. कुल्लाँह।

कुश (स्त्री.) दे. कुस।

कुशल (वि.) चतुर, निपुण।

कुशा (स्त्री.) दे. कुस।

कुश्ता (पुं.) रासायनिक क्रिया से धातुओं को फूँककर बनाई गई राख।

कुश्ती (स्त्री.) दे. घुळाई।

कुष्ठि (पुं.) दे. कुस्टी।

कुसंग (पुं.) बुरी संगति।

कुसंगति (स्त्री.) बुरी संगति।

कुस (स्त्री.) 1. हल की फाल, 2. कुशा, एक पवित्र घास। **कुश** (हि.)

कुसल्या (स्त्री.) श्री राम की माता। **कौशल्या** (हि.)

कुसवाणा (क्रि. स.) कोसने के लिए प्रेरित करना।

कुसामद (स्त्री.) ख़ुशामद।

कुसेज (वि.) सेज का विलोम।

कुस्टी (पुं.) 1. कोढ़ी, 2. कोढ़ का रोग। **कुष्ठि** (हि.)

कुस्फल (पुं.) अग्रवाल वैश्यों का गोत्र (इनका संबंध काश्यप मुनि, सामवेद, कौथमी शाखा और गोभिल सूत्र से है, इनका प्रवर मांकील है)। **कुषफल** (हि.)

कुहणी (स्त्री.) बाँह के बीच का जोड़। **कुहनी** (हि.)

कुहनी (स्त्री.) दे. कुहणी।

कुहाड़ा (पुं.) लकड़ी काटने का हथियार विशेष। **कुल्हाड़ा** (हि.)

कुहाड़िया (पुं.) छोटा कुल्हाड़ा।

कुहाड़ी (स्त्री.) कुल्हाड़ी, छोटा कुल्हाड़ा।

कुहाण (स्त्री.) 1. देरी, 2. असमय–तन्नैं तै घणी कुहाण कर दी, सिखर दोप्फाहरी तै अड़ै ए हो ली, तुल. कुबेर[1]।

कुहाणा (क्रि. स.) 1. कहलवाना, 2. आलोचना का अवसर देना।

कुहीं (क्रि. वि.) कब, कभी।

कुही (स्त्री.) एक पक्षी।

कुहू (स्त्री.) कोयल की आवाज़।

कुहूक (स्त्री.) 1. कसक, टीस, 2. कोयल की कूक, 3. मोर की कूक।

कुहेर (वि.) पराया; (स्त्री.) देरी।

कुह्याँ (क्रि. वि.) कब।

कूँ (अव्य.) 1. पीड़ा द्योतक ध्वनि, 2. को, से (सीमित प्रयोग), 3. की ओर, तक।

कूँकरा (पुं.) दे. कोंधरा।

कूँगरी (स्त्री.) प्रौढ़ा।

कूँगी (स्त्री.) गेहूँ की एक बीमारी।

कूँग्गर (पुं.) 1. युवक, 2. साहसी युवक वीर।

कूँच[1] (स्त्री.) 1. कोख, 2. गोद, कूल्हे की हड्डी और बगल के नीचे पसली के पास का कोमल स्थान। **कुक्षि** (हि.)

कूँच[2] (स्त्री.) एक फली जिसके शरीर में लगते ही खुजली होने लगती है। **कौंच** (हि.)

कूँच[3] (पुं.) 1. प्रस्थान, 2. पलायन। **कूच** (हि.)

कूँचला (पुं.) दे. जूणा।

कूँची (स्त्री.) दे. कूँच्ची[2]।

कूँच्ची[1] (स्त्री.) गोद; **~भरणा** आलिंगन करना, कोली भरना।

कूँच्ची[2] (स्त्री.) 1. सफ़ेदी आदि करने की मूँज से बनी झाड़ू, 2. ब्रुश; **~मारणा/फेरणा** 1. सफेदी करना, 2. ब्रुश फेरना, 3. बना काम बिगाड़ना, **कूँची** (हि.)

कूँज (स्त्री.) दे. कुंज।

कूँजड़ा (पुं.) 1. सब्जी बेचने वाली जाति, 2. सब्जी बेचने वाला, 3. गेहूँ की पूलियों का ढेर। **कुँजड़ा** (हि.)

कूँट (स्त्री.) 1. दिशा–उत्तर कूँट में धरू भगत का बास्सा सै?, 2. अंतिम

छोर–कती ए कूँट मैं पहोंचग्या, 3. किनारा, तुल. कूँण[1]। **कोण** (हि.)

कूँड (स्त्री.) 1. पराँत के आकार का दही जमाने का पात्र, कूँडी, 2. लंबा और गहरा गोलाकार पात्र, 3. पक्षपात–सभा बिगाड़ी कूँड, 4. अनाज मापने का बड़ा भांड, 5. कूंड, हौज (जिसमें तरल पदार्थ डाला जाता है)

कूँडळ (पुं.) दे. कुंडल।

कूँडळी (स्त्री.) 1. जन्म पत्रिका, 2. साँप के वृत्ताकार रूप में बैठने की मुद्रा, 3. छोटा दायरा, 4. कुंडलिनी; **~खैंचणा** साधु द्वारा साँस ऊपर चढ़ाना; **~मारणा** कुंडलाकार बैठना। **कुंडली** (हि.)

कूँडा (पुं.) दे. कूँड्डा[1 2 3]।

कूँड्डा[1] (पुं.) 1. विनाश, 2. हानि।

कूँड्डा[2] (पुं.) अर्गला।

कूँड्डा[3] (पुं.) बड़ी कूँडी (दे. कूँड्डी)।

कूँड्डी (स्त्री.) पत्थर, मिट्टी आदि की प्याली। **कूँडी** (हि.)

कूँड्डी-सोट्टा (पुं.) 1. चटनी आदि रगड़ने के पात्र, 2. जादू की थाली और डंडा। **कूँडी और सोटा** (हि.)

कूँण[1] (स्त्री.) 1. दो दीवारों का मिलन बिन्दु, 2. कोना, 3. दिशा, तुल. कूँट; **~में देणा/लाणा** परास्त करना, हराना। **कोण** (हि.)

कूँण[2] (सर्व.) कौन।

कूँदणा (पुं.) क्रम से लगाया गया पूलियों का ढेर।

कूँधणा[1] (क्रि. स.) रौंदना, भूमि को रौंदना (बहुधा पशु द्वारा)।

कूँधणा[2] (क्रि. अ.) बिजली का चमकना। **कौंधना** (हि.)

कूँहणी (स्त्री.) दे. कोहणी।

कूँही (क्रि. वि.) कब।

कूआँ (पुं.) दे. कूआ।

कूआ (पुं.) कूप; **~खोदणा** 1. स्वयं के लिए कठिनाई पैदा करना, 2. भविष्य बिगाड़ना, 3. षड्यंत्र रचना; **~छोड़णा** कूआँ जोतते समय बीच में विश्राम करना, तुल. छोड़; **~जोड़णा/ बाहणा** कूआँ जोतना (किसान अमावस्या के दिन कूआँ नहीं जोतते); **~धोकणा/ पूजणा** पुत्र जन्म के उपलक्ष में जच्चा द्वारा कूआँ पूजना (इस अवसर पर जच्चा के सिर पर लोटा या छोटा कलश रखकर गीत गाते हुए कूएँ पर ले जाया जाता है); **~ए (–ए) में जान झोकणा** कूएँ में गिर कर आत्महत्या करना; **~साझला** कई लोगों द्वारा मिलकर बनाया या चलाया गया कूआँ (साझले कूएँ में किसी के बैल तथा किसी के आदमी मिलकर सम्मिलित काम करते हैं)। **कूआँ** (हि.)

कूई (स्त्री.) दे. कूई।

कूई (स्त्री.) छोटा कूआँ।

कूक (स्त्री.) 1. कोयल या मोर की आवाज़, 2. सुरीली ध्वनि।

कूकड़ा (पुं.) मुर्ग़ा, कुक्कुट।

कूकड़ा मंजारी चउपई (पुं.) (अगर चंद नाहटा के अनुसार) हरियाणे के लोहाटू ग्राम निवासी द्वारा लिखित काव्य (इस ग्रंथ की रचना सोलहवीं शती के आसपास हुई थी, इस ग्रंथ की भाषा राजस्थानी से प्रभावित हरियाणवी है, इसकी हस्तलिखित प्रति पूना स्थित भंडारकर ऑरियंटल रिसर्च इंस्टीच्यूट में है)।

कूकड़ी[1] (स्त्री.) 1. मकई का भुट्टा, 2. सूत की कुकड़ी या लच्छी; **~पढणा** सूत पूर कर जादू-टोना करना; **~पूरणा** तांत्रिक कृत्य करना। **कुकड़ी** (हि.)

कूकड़ी[2] (स्त्री.) 1. मुर्गी, 2. दे. कूकड़ी[1]।

कूकणा (क्रि. अ.) 1. कोयल आदि का बोलना, 2. मीठी आवाज़ से बोलना, 3. चर्खे आदि से 'कूक' की ध्वनि निकलना। **कूकना** (हि.)

कूकना (क्रि. अ.) दे. कूकणा।

कूकर[1] (पुं.) दे. कूकरा।

कूकर[2] (पुं.) दे. कुतरु।

कूकरा (पुं.) कुत्ता–जै सिर भीजै काकड़ा (मकर), नाज कूकरा खायँ।

कूकरा-टीकड़ी (स्त्री.) वह छोटी रोटी (टिकिया) जो भोजन बनाते समय कुत्ते के लिए बनाई जाती है।

कूकल[1] (स्त्री.) बेचैनी, (दे. उचंग)।

कूकळ[2] (स्त्री.) उत्साह। उदा. पड़ोसण ने भारी बूकळ, मरै बी ऊट्ठी कूकळ।

कूका (पुं.) खाती या बढ़ई का एक गोत या उपजाति।

कूक्खी (स्त्री.) 1. पेट, गर्भ, 2. भगा; **~राखणा** 1. दूध का सम्मान रखना, 2. युद्ध में अपना कौशल दिखाना; **~लजाणा** दूध लजाना। **कुक्षि** (हि.)

कूख (स्त्री.) दे. कूक्खी।

कूच (स्त्री.) 1. दे. कूँच[1], 2. दे. कूँच[2], 3. दे. कूँच[3]।

कूजना (क्रि.अ.) पक्षियों द्वारा कोमल और मधुर शब्द निकालना।

कूजा (पुं.) दे. कूज्जा।

कूज्जा (पुं.) 1. मिश्री की अर्ध-गोलाकार डली, 2. मिट्टी का छोटा पात्र विशेष। **कूजा** (हि.)

कूट (पुं.) अस्पष्ट या अटपटी उक्ति, वह उक्ति जिसका अर्थ जल्दी स्पष्ट न हो–अझा (बकरी) सहेली (भेड़) ताहि रिपु (भुरट) ता जननी (भूमि) भरतार (इन्द्र) ताके सुत (अर्जुन) के मीत (श्रीकृष्ण) को भज ले बारम्बार; (क्रि. स.) 'कूटणा' क्रिया का आदे. । **दृष्टकूट** (हि.)

कूटणा (क्रि. स.) 1. किसी वस्तु को कूट कर बारीक करना, 2. पिटाई करना। **कूटना** (हि.)

कूटना (क्रि. स.) दे. कूटणा।

कूटनीति (स्त्री.) राजाओं द्वारा अपनाई जाने वाली छिपी नीति।

कूड़ा (पुं.) गंदगी, कचरा।

कूड़ाखाना (पुं.) कूड़ेदान (दे. राखोंह्डा)।

कूड़ी (पुं.) दे. कुरड़ी।

कूड्ढा (पुं.) 1. ढेरी, 2. वंश; **~करणा/मारणा** ढेर लगाना; **~ठाणा** वंश नष्ट करना; **~होणा** नष्ट होना।

कूड्ढी (स्त्री.) 1. ढेरी, 2. कुल, वंश; **बाँटणा** विशेष उत्सव (विवाह, पुत्र-जन्म) पर हर परिवार को रुपया, मिठाई आदि बाँटना।

कूण (स्त्री.) दे. कूँण[1]

कूणा (पुं.) 1. किनारा, 2. कोने का स्थान, 3. एकांत स्थान। **कोना** (हि.)

कूतड़ा (पुं.) दे. कुतरु।

कूतणा (क्रि. स.) 1. अनुमान लगाना, बिना गिने, नापे या तोले संख्या, मूल्य या परिमाण आदि का अनुमान लगाना, 2. भविष्यवाणी करना। **कूतना** (हि.)

कूतना (क्रि. स.) कूतणा।

कूतरा (वि.) भैंगा; (पुं.) कुत्ता।

कूती (स्त्री.) दे. कुतिया।

कूदणा (क्रि. अ.) 1. उछलना, 2. लाँघना, 3. गाय, भैंस आदि का दूध से नटना या सूखना, 4. अनचाहे आ टपकना, 5. उछलकर प्रसन्नता व्यक्त करना; (क्रि. स.) लाँघना। **कूदना** (हि.)

कूदना (क्रि. अ.) दे. कूदणा।

कूप[1] (पुं.) दे. कूआ।

कूप[2] (पुं.) दे. बूँग्गा।

कूप्पळ (स्त्री.) कोंपल; **~आणा/जामणा/फूटणा** कोंपल निकलना। **कोंपल** (हि.)

कूप्पा (पुं.) 1. भूसा (तूड़ा) आदि रखने के लिए बाँस या तिनकों से बनाया गया शंकुआकार ऊँचा घेरा जिसमें भूसा सुरक्षित रहता है, तुल. बूँग्गा, 2. तेल रखने का पात्र, 3. अधिक प्रसन्न होने की क्रिया, 4. हवा आदि से फूली हुई अवस्था। **कुप्पा** (हि.)

कूप्पी (स्त्री.) तेल रखने का पात्र। **कुप्पी** (हि.)

कूब (पुं.) 1. पीठ पर उभरा हुआ अस्थिपिंड, 2. ऊँट की पीठ का कोहान।

कूबड़ा (वि.) 1. जिसकी पीठ पर कूब हो, 2. टेढ़े मुँह वाला; (पुं.) वह व्यक्ति जिसकी पीठ पर कूब हो। **कुबड़ा** (हि.)

कूबड़ी (स्त्री.) दे. कूब्बाँ।

कूब्बाँ (स्त्री.) 1. कुबड़ी, 2. मंथरा।

कूब्बा (वि.) दे. कूबड़ा।

कूर-कूर (स्त्री.) कुत्ते को बुलाने के लिए प्रयुक्त ध्वनि।

कूलणा (क्रि. अ.) चसकना, चभकना।

कूल्ला (पुं.) कूल्हा;**~डिगणा** कूल्हे की हड्डी डिगना या अपने स्थान से हटना; **~(~ल्लै) धर कै मारणा** पटकी लगाना। **कूल्हा** (हि.)

कूल्हणा (क्रि. अ.) कराहना, पीड़ा के कारण कराहना–ससुर साहब भी चादर ताँही जाण-जाण कूल्हैं (ल. चं.)

कूह (स्त्री.) दे. कोक।

कूहणी (स्त्री.) दे. कोहणी।

कृपण (वि.) दे. किरपण।

कृपा (स्त्री.) दे. किरपा।

कृपाण (पुं.) कटार।

कृपापात्र (पुं.) दया का पात्र।

कृपालु (वि.) कृपा या दया करने वाला।

कृषक (पुं.) किसान।

कृषि (स्त्री.) खेती।

कृष्ण (पुं.) दे. किरसन।

कृष्णपक्ष (पुं.) अँधेर पक्ष।

कृष्णाष्टमी (स्त्री.) दे. जनमास्टमी।

केंचुली (स्त्री.) दे. काँचळी।

केंद्र (पुं.) धुरी, दे. अधबिचाळा।

के (सर्व.) क्या, प्रश्न वाचक शब्द–झबदू! के ले लिया?; (अव्य.) 1. आश्चर्य-बोधक ध्वनि–के! उनका छोह्रा लड़ाई में मरग्या? 2. या, अथवा–के तै खाले; के सोज्या? **क्या** (हि.)

केकयी (स्त्री.) दे. केक्की।

केक्की (स्त्री.) कैकेयी, भरत की माता।

केतकी (स्त्री.) एक प्रकार का फूल।

केतु (पुं.) 1. राहु राक्षस का धड़, 2. पुच्छल तारा, 3. नौ ग्रहों में से एक ग्रह, 4. दुष्ट ग्रह।

केदारनाथ (पुं.) दे. किदारनाथ।

केन्नै (सर्व.) दे. किन्नै।

केरा (पुं.) बालक के जन्म के बाद प्रथम बृहस्पतिवार या रविवार के दिन किया जाने वाला संस्कार (जिसके अनुसार

पास-पड़ोस की महिलाएँ कटोरा भर अन्न बालक पर वारती हैं, इकट्ठा हुआ अन्न भंगन को दे दिया जाता है); **~घालणा** केरे के निमित्त अन्न डालना।

केरो (पुं.) दे. कोरव।

केलकी (स्त्री.) दे. कींकर।

केला (पुं.) दे. केळा।

केळा (पुं.) 1. केले का फल, 2. केले के फल का वृक्ष। **केला** (हि.)

केवट (पुं.) नाविक; (वि.) पार लगाने वाला।

केवटणा (क्रि.स.) सहन करना।

केवड़ा (पुं.) 1. एक सुगंधित पुष्प, 2. इस पुष्प से निकाला सुगंधित जल।

केश (पुं.) दे. केस।

केशधारी (स.) वह सिख जिसने केश धारण किए हों। दे. सहजधारी।

केस (पुं.) सिर के बाल। **केश** (हि.)

केसर (स्त्री.) दे. केस्सर।

केसरिया (वि.) दे. केस्सरिया।

केसरी (पुं.) सिंह; (वि.) केसर के रंग का।

केसू (पुं.) दे. केस्सू।

केस्सर (स्त्री.) 1. केसर, 2. नाक का एक आभूषण। **केसर** (हि.)

केस्सरिया (वि.) केसरी रंग का; **~चीर** केसरी रंग का ओढ़ना या पगड़ी; **~चीर ओढणा** 1. बलिदान के लिए तैयार होना, 2. केसरी रंग का चीर ओढ़ना; **~बाणा** 1. बलिदानी वेश, 2. साधुओं के केसरी वस्त्र।

केसरिया (हि.)

केस्सू (पुं.) ढाक, पलाश का पौधा या फूल (इसका फूल लाल रंग का होता है और इसे उबालने पर पीला रंग प्राप्त होता है, यह ग्रीष्म ऋतु में फूलता है)। दे. टेस्सू। **किंशुक** (हि.)

केहरी (पुं.) शेर। **केसरी** (हि.)

कैंचवा (पुं.) 1. पेट में पड़ने वाला एक लंबा कीड़ा, 2. वर्षा का एक कीड़ा।

कैंची (स्त्री.) दे. काँच्ची।

कैंड्डा (पुं.) 1. नापने के लिए बनाया गया लकड़ी आदि का नाप, 2. अनुमान, तुल. काँड्डा; **~बैठणा** 1. अनुमान ठीक बैठना, 2. काम बनना; **~(-ड्डे) सिर की बात** उचित बात, व्यावहारिक बात।

कैंदू (पुं.) सघन छायादार वृक्ष जिस पर ग्रीष्म ऋतु में नींबू के आकार के पीले फल (ढींढरे) लगते हैं और जिनसे काले बीज निकलते हैं।

कैंस (स्त्री.) ईर्ष्या।

कै[1] (वि.) कितना–झाब्बर, तेरा छोहरा कै जमता पढग्या?; (प्रत्य.) 1 को, के, कर्म और संप्रदान विभक्ति चिह्न–सिंघा ने थाणेदार कै भी दो जड़ दिये, 2 कर, क्रिया के साथ जुड़ने वाला प्रत्यय–खाकै सोज्या अर मार कै भाजज्या; (अव्य.) 1. से–फेर कै कहिये तेरा मुँह ना तोड़ दयूँ तै, 2. या, अथवा–कै तै फोज में भरती हो ज्या कै घराँ बैठ; **~एक** कितने–चाल्ले मैं कै एक आदमी आए?

कै[2] (स्त्री.) वमन, उल्टी।

कैक (अव्य.) कितने। उदा. बीते सावन कैक।

कैड़ (अव्य.) की ओर–1. मैंतै तेरे कैड़ आवण नैं था, 2. तेरे कैड़ मेरे बीस रपैये लिकड़ैं सैं।

कैड़ा (वि.) दे. करड़ा।

कैड़ाई (स्त्री.) दे. करड़ाई।

कैड़ी (स्त्री.) दे. करड़ी।

कैथल (पुं.) हरियाणे का एक शहर (कपिस्थल या कपिष्ठल)।

क़ैद (स्त्री.) 1. कारावास, 2. बंधन।

कैदी (पुं.) दे. कैद्दी।

कैद्दी (पुं.) 1. बंदी, 2. दास। **क़ैदी** (हि.)

कैन्या (अव्य.) दे. कान्नी[1]।

कैम (स्त्री.) पतले लंबे तने का एक पौधा।

कैर (पुं.) बिना पत्तों की सघन और ऊँची झाड़ी (जिसमें गरमी के दिनों में टींट (टेंट) और पीच्चू (लाल रंग का फल जो टेंट के पकने के कारण बनता है) लगते हैं, इस पर लाल रंग का सुंदर बौर आता है, इसके टेंट का अचार डालते हैं जो उदर रोग में लाभप्रद होता है)। **करील** (हि.)

कैरट्टा (पुं.) करील का छोटा पौधा, (दे. कैर)

कैरड़ी (स्त्री.) छोटा कैर, करील या करीर।

कैरा (पुं.) 1. भूरा रंग (विशेषतः आँख की पुतली का), 2. वह बैल जिसके रुएँ के नीचे कुछ लालिमा नज़र आए; (वि.) कैरी आँखों वाला–कैरे मिस्सर के घर में कुई सै।

कैरियल (पुं.) साइकिल के पीछे बैठने या भार रखने का फट्टा।

कैरी (स्त्री.) कच्चा आम, आमी।

कैरो (पुं.) कौरव, कुरु वंशी।

कैल (स्त्री.) 1. कोयल, 2. एक वृक्ष।

कैलाश (पुं.) हिमालय की वह चोटी जहाँ शिव का निवास माना जाता है।

कैलास्सी (पुं.) कैलाश निवासी शिव; **~बुळध** 1. नादिया, 2. शिव का वाहन। **कैलाशी** (हि.)

कैळी (स्त्री.) तंगी।

कैसा (वि.) दे किसा।

कैसे (क्रि. वि.) दे. किसे।

कोंच (पुं.) 1. दे. कूँच[1], 2. दे. कूँच[2]।

कोंपल (स्त्री.) दे. कूप्पळ।

कोंह्दरा (पुं.) एक खरपतवार जो ख़रीफ़ की फसल में उगता है और साग के रूप में भी खाया जाता है।

को (प्रत्य.) कर्म और संप्रदान विभक्ति चिह्न (हरियाणवी में 'को' के स्थान पर 'कै' का प्रयोग ही अधिकांशतः होता है–गंठे चोर ने थाणेदार कै चार थप्पड़ जड़ दिए।

कोइया (पुं.) आँख के दोनों ओर के प्रांत; **~खिणवाणा** आँख के किनारे गुदवाना; **~फिरणा** आँख की पुतली का उचित कोण पर नहीं रहना, भैंगा होना। **कोया** (हि.)

कोई (सर्व.) दे. कोए।

कोए (सर्व.) कोई भी–तेरी बला तै कोए हो, तूँ के देख कै दे सै; (वि.) कुछ–कोए दिन जा सै आड्डै तूँ भी चड्ढैगा; **~सा** कोई भी, इच्छा अनुसार–कोएसा भी गंड्डा माँग ले, दोन्नूँ मीट्ठे सैं। **कोई** (हि.)

कोक (स्त्री.) 1. योनि, 2. उदर। **कोख** (हि.)

कोकटणा (क्रि.) दे. कुकाणा।

कोकरू (पु.) कर्ण छिद्र।

कोकली (स्त्री.) छोटा झालरा। दे. हमेल।

कोकशास्त्र (पुं.) दे. कोकसासतर।

कोक-सासतर (पुं.) कामसूत्र। **कोकशास्त्र** (हि.)

कोको (स्त्री.) दे. कोक्को।

कोक्का (पुं.) नाक का एक आभूषण जिसे बाईं ओर पहना जाता है। **कोका** (हि.)

कोक्को (स्त्री.) 1. एक भयंकर और डरावनी महिला जिसका नाम लेकर छोटे बच्चों को डराया जाता है (एक धारणा के अनुसार यह बालकों को पीड़ा देकर मारती थी और उनका भक्षण करती थी, इसका निवास संभवत: अफ़गानिस्तान था, कुछ लोग इसे हव्वे की पत्नी मानते हैं)। 2. एक काल्पनिक पक्षी। **कोको** (हि.)

कोख (स्त्री.) दे. कोक।

कोचरी (स्त्री.) दे. कोतरी।

कोट (पुं.) 1. क़िला, 2. वह गाँव जो किले के समान सुरक्षित रूप से बसा हो, 3. अंग्रेजी ढंग का एक पहनावा, 4. ताश का एक खेल; **~करणा** कोट के खेल की बाज़ी देना; **~तोड़णा** 1. क़िला तोड़ना, 2. ताश के खेल में कोट की बाजी न होने देना या उतार देना।

कोटड़ा (पुं.) 1. छोटा क़िला, 2. छोटा कोठा, 3. सरकारी कर्मचारियों के लिए बना जंगल का विश्राम-स्थल।

कोट-पीस-बावनी (स्त्री.) ताश का एक खेल।

कोटर (पुं.) दे. खरखोड्ढर।

कोट्ठी (स्त्री.) 1. बड़ा भवन, शानदार बंगला जिसमें बगीचा आदि भी हो, 2. कूएँ की मुँडेर–मन्नै तै अपणा बास्सण कोट्ठी पै धराए था अक अनपूत्ती नै पाणी की छींट मारकै बेहू कर दिया, 3. कूएँ की गोलाकार दीवार जिसके कारण दाएँ-बाएँ की मिट्टी पानी में नहीं गिरती, 4. अन्न सुरक्षित रखने का स्थान, 5. संपन्नता बोधक हस्तरेखा; **~कुठला** 1. धन- दौलत, 2. अनाज रखने का स्थान; **~गाळणा** भूमि के ऊपर बनी कूएँ की गोलाकार भित्ति को नीचे की मिट्टी निकालकर भूमि में धँसाना। **कोठी** (हि.)

कोठ (पुं.) दे. कोठड़ा।

कोठड़ा (पुं.) 1. छोटा कोठा, 2. कुटिया, 3. सड़क के किनारे बनाई गई सरकारी कोठी जहाँ पर कर वसूल किया जाता था। **कोठरा** (हि.)

कोठड़ी (स्त्री.) 1. छोटी कुटिया, कोठरी, 2. शरीर, काया; **काळ~** 1. अँधेरी कोठरी, 2. बिना हवादार कोठरी, 3. क़ैदखाना। **कोठरी** (हि.)

कोठरी (स्त्री.) दे. कोठड़ी।

कोठा (पुं.) 1. घर के अंदर का कमरा, 2. अन्न आदि सुरक्षित रखने का स्थान, 3. वेश्यावृत्ति का अड्डा।

कोठार (पु.) दे कुठार।

कोठारी (पुं.) दे. कुठारी।

कोठी (स्त्री.) दे कोट्ठी।

कोड (वि.) कितना–तूँ कोड बड्डा होग्या ईब ताँही रेल नाह् देक्खी; (क्रि.वि.) कब–तू कोड बै आया था? (तू किस समय आया था?); (पुं.) 1. कूब, 2. मोटी कौड़ी; **~जोड़ करणा** पाल-पोस कर बड़ा करना; **~बखत होणा** विलंब होना; **~बड्डा** 1. कितना बड़ा, 2. कितना अधिक–कोड बड्डा सूरज लीक्कड़ रह्या तूँ ईब ताहीं पीस्सण ना ऊट्ठी; **~बर** किस समय, विलंब से–देख कोड बर आया सै जीम्मणवार भी खतम हो ली; **~बै** दे. कोड बर।

कोड़ (स्त्री.) रिश्वत, उत्कोच; **~खाणा/लेणा** रिश्वत लेना; **~मारणा** रिश्वत

के कारण आँखें लज्जित होना।

कोड़ा (पुं.) साँटा, चाबुक।

कोड़िया (पुं.) कौड़ी जैसे चितकों वाला साँप; (वि.) जो कौड़ियों से बना हो।

कोड़ी (स्त्री.) दे. कोड्डी[2-3]।

कोड्डा[1] (वि.) 1. टेढ़ा, झुका हुआ–यो नीम भी कोड्डा होग्या, 2. झुकने की क्रिया–बुड्ढा करकै कोड्डा पड़ ग्या, 3. औंधा–झाकरी ने कोड्डी मार दे; **~करणा/मारणा** 1. टेढ़ा करना, 2. औंधा रखना; **~पड़णा** 1. लेटना, 2. क्षमा माँगना; **~होणा** 1. झुकना, 2. हार मानना, 3. याचना करना।

कोड्डा[2] (पुं.) मोटी कौड़ी; **~सी आँख** मोटी आँखें। **कौड़ा** (हि.)

कोड्डी[1] (वि.) टेढ़ी, झुकी हुई।

कोड्डी[2] (स्त्री.) 1. एक जल-जंतु की खोपड़ी, कौड़ी, बच्चों के खेल के काम आने वाली कौड़ी, 2. एक तोल विशेष, 3. आँख का डेला, 4. दमड़ी का चौथाई मूल्य; **~ का** 1 सस्ते भाव का, 2. तुच्छ; **काणी~** 1. फूटी कौड़ी, 2. स्वल्प धन; **~चुकाणा** ऋण-मुक्त होना; **फूट्टी~** व्यर्थ की वस्तु; **~सी आँख** छोटी आँख। **कपर्दिका** (हि.)

कोड्डी[3] (स्त्री.) बीस वस्तुओं का समूह। **कोड़ी** (हि.)

कोड्ढण (स्त्री.) कुष्ठ रोगी महिला। **कोढ़िन** (हि.)

कोड्ढाणा (क्रि. वि.) दे. कोढाणा।

कोड्ढी (पुं.) कोढ़ के रोग से पीड़ित, कुष्ठ रोगी; (वि.) 1. पापी, 2. गंदा, जो बहुत दिनों तक स्नान नहीं करता हो। **कोढ़ी** (हि.)

कोढ (पुं.) एक चर्म रोग, कुष्ठ रोग; **~चूणा** चर्म से कोढ़ की मवाद टपकना। **कुष्ठ** (हि.)

कोढाणा (क्रि. वि.) 1. विलंब से, देरी से, 2. असमय, कुसमय, 3. किस समय–कोड्ढाणे आऊँ?; **~करणा/लाणा** देरी करना।

कोढ़ी (पुं.) दे. कोड्ढी।

कोण (सर्व.) तुल. कूँण[2]। **कौन** (हि.)

कोणज (सर्व.) किसके जाए (पुत्र) ने, किसने–कोणज ब्याह रचाइयाँ (लो. गी.)

कोतक (पुं.) 1. मुसीबत–भैंस के बाँद्धी, जान नै कौतक होग्या, 2. तमाशा, 3. फ़साद; **~तारणा/मचाणा** 1. रुदन करना, 2. आफ़त मचाना, 3. हुल्लड़ करना; **~होणा** मुसीबत होना। **कौतुक** (हि.)

कोतकी (वि.) 1. तमाशाई, 2. तमाशा खड़ा कर देने वाला, झगड़ालू। **कौतुकी** (हि.)

कोतग (पुं.) दे. कोतक।

कोतणा (क्रि. स.) दे. कूतणा।

कोतमीर (स्त्री.) एक सब्जी।

कोतरा (वि.) भैंगा, तुल. ओड्ढा।

कोतरी (स्त्री.) उल्लू की जाति का एक पक्षी (इसका किसी के घर पर बोलना अशुभ माना जाता है); (वि.) भैंगी आँख वाली; **~सी आँख** मोटी और गोल आँख।

कोतवाळ (पुं.) कोतवाली का प्रधान कर्मचारी। **कोतवाल** (हि.)

कोतवाळी (स्त्री.) 1. वह स्थान जहाँ पुलिस के कोतवाल का कार्यालय हो, 2. अस्थायी बंदीगृह। **कोतवाली** (हि.)

कोतल (वि.) मोटा ताज़ा।

कोत्तर-सै/सो (वि.) सौ से एक ऊपर, एक सौ एक; (पुं.) कौरव।

कोत्था (वि.) किस क्रम पर--तेरा कोत्था लंबर सै?

कोत्थी (वि.) कौन सी--तेरा छोह्रा कोत्थी में पड्ढै सै?

कोत्स (पुं.) ब्राह्मणों का एक गोत्र। **कौत्स** (हि.)

कोथ[1] (स्त्री.) 1. कौन सी तिथि--दाद्दा आज कोथ होली?, 2. कौन सा वास्ता, कौन सा संबंध-- 1. इसने साब्बण कोथ (इसका साबुन से क्या वास्ता), 2. गधे नें ग्यास कोथ।

कोथ[2] (स्त्री.) हिसार स्थित नाम पंथियों की गद्दी।

कोथला (पु.) दे. कोथळा।

कोथळा (पुं.) 1. बड़ा थैला, 2. ढीला-ढाला वस्त्र।

कोथली (स्त्री.) दे. कोथळी।

कोथळी (स्त्री.) 1. छोटी थैली, 2. तंबाकू आदि रखने की थैली, 3. तीज-त्योहार पर स्त्रियों के लिए उनके पीहर से भेजा गया चावल, गुड़, सुहाली या नक़दी आदि उपहार; **लाड~दे.** लाड कोथळी।

कोदौ (पुं.) सावाँ जाति का एक मोटा अन्न।

कोना (पुं.) किनारा, (दे. कूँण[1])।

कोनी (अव्य.) नहीं।

कोन्या (अव्य.) 1. कोई नहीं, नहीं--यो काम ईब ताँही कोन्या कर्‌या, 2. कतई नहीं--कितणी ए कह ले यो मैं कोन्या करूँ।

कोपभवन (पुं.) वह स्थान जहाँ रानी आदि रूठ कर जा पड़े।

कोपल (स्त्री.) दे. कूप्पळ।

कोमल (वि.) मृदु, (दे. मलूक)।

कोयल (स्त्री.) दे. कोल[1]।

कोयला (पुं.) दे. कोल्ला।

कोया (पुं.) दे. कोइया।

कोर (स्त्री.) 1. उपले का टुकड़ा--आग में थोड़ी कोर लादे, नाँ तै बुझज्यागी, 2. किनारा, सिरा; **काळजे की~** बहुत प्यारी वस्तु; **~दाबणा** गरम राख में उपले को दबाना।

कोर कसर (स्त्री.) कमी, न्यूनता।

कोरड़ (पुं.) वह खेत जिसमें मूंग, मोठ, उड़द बोया गया हो। तुल. मसीणा।

कोरड़ा (पुं.) 1. लंबे कपड़े को बट देकर बनाया हुआ मोटे रस्से जैसा लचीला दंड, 2. वह डंडा जिसे राजा अपने हाथ में धारण करता है, 3. राजदंड; **राज~**राज दंड।

कोरबा (पुं.) 1. गेहूँ के खेत में दिया जाने वाला पहला पानी, 2. सुभिक्ष और दुर्भिक्ष के बीच की स्थिति।

कोरमार (पुं.) गाड़ी के पहिये पर चढ़ाया जाने वाला घेरा।

कोरा (वि.) 1. नया, जो बरता नहीं गया हो--कोरा बास्सण सै इसके पाणी मै मेंहकार होगी, तुल. नया नटंग, 2. निरा, शुद्ध जवाब, स्पष्ट नकारने का भाव--छोह्री ने इसा कोरा जवाब दिया अक सब देखते ए रहगे, 3. खाली, रहित, 3. मूर्ख, अपढ़, जड़।

कोरी[1] (स्त्री.) खेल की बाजी; (वि.) 1. नई, 2. रहित, विहीन; **~करणा/चढ़ाणा** बाजी या खेल के समय विरोधी पर अंक (20) चढ़ाना।

कोरी[2] (पुं.) 1. दे. धुनिया, 2. दे. धाणक।

कोरू (पुं.) कौरव, धृतराष्ट्र के सौ पुत्र।

कोरू-पाँड्डू (पुं.) कौरव और पांडव (ये संख्या में 105 थे)।

कोल[1] (स्त्री.) मधुर बोली बोलने वाला काला पक्षी। **कोयल** (हि.)

कोल[2] (पुं.) 1. वचन, 2. कथन, 3. प्रतिज्ञा–गरभबास में कोल भरे थे तूँ उन्नें भूलग्या। **क़ौल** (हि.)

कोल कत्तर (पुं.) 1. उस्तरे से मुँडवाया गया सिर, 2. कल्लर भूमि; **~कढवाणा/करवाणा** उस्तरे से सिर मुँडवाना।

कोलकी (स्त्री.) छोटी तथा अंधेरी कोठरी जो अधिकतर ज़ीने आदि के नीचे बचे स्थान पर बना दी जाती है।

कोलड़ा (पुं.) कपड़े में बल चढ़ाकर बनाया गया साँटा या डँडा, (दे. कोरड़ा); **~खेलणा** 1. दुल्हेंढी खेलना, 2. कोलड़ा लेकर खेला जाने वाला एक खेल।

कोलड़ा जमाल साही (पुं.) बालकों का एक खेल जिसे वे वृत्ताकार बैठ कर खेलते हैं और वस्त्र या कोलड़ा किसी की पीठ-पीछे डाल देते हैं।

कोळा (पुं.) 1. दीवार का किनारा, 2. द्वार के दोनों ओर का भित्ति-भाग, 3. दो दीवारों का मिलन-स्थल, 4. छोटी और नीची दीवार–भाई यां कोळा सा काढ लिया था अक डाँग्गर-ढोर भीत्तर ना आवैं;**~काढणा/खींचणा** छोटी दीवार चिनना; **~(–ल्याँ) लागणा** 1. छिपना, 2. सहारा लेना; **~(–ले) लाट्ठी धरणा** मेहमान का पहुँचना; **~सा ढहणा** धराशायी होना; **~सींचणा** विघ्न शमन के लिए दीवार पर लुटिया-भर पानी डालना।

कोलिज (पुं.) महाविद्यालय। **कॉलेज** (हि.)

कोळिया (पुं.) 1. बगलगीर, 2. कुश्ती करने वाले समवयस्क मित्र, 3. पक्का मित्र, 4. छोटी और नीची दीवार।

कोली (स्त्री.) 1. कपड़ा बुनने वाली एक जाति, कोरी 2. (दे. कोळी)।

कोळी (स्त्री.) 1. आलिंगन, 2. बगल, 3. कुश्ती; **~करणा** कुश्ती लड़ना; **~पड़णा** 1. आमना-सामना होना, 2. हाथापाई होना; **~भरणा** 1. प्रेमावेश में लिपट जाना, आलिंगन करना, आलिंगनबद्ध होना, 2. सँभाल कर रखना, 3. धन-दौलत इकट्ठी करना; **~मारणा** कुश्ती जीतना; **~(–याँ) मिलणा** आलिंगनबद्ध होकर मिलना; **~में आणा/होणा** 1. वश में होना, वश में आना, 2. टोली या प्रभाव-क्षेत्र में आना; **~मैं तै लीकड़णा** बेबस होना, क़ाबू से बाहर होना, स्वतंत्र होना। **कोली** (हि.)

कोल्ला (पुं.) कोयला; (वि.) 1. काला, 2. झुलसा हुआ; **~होणा** 1. जल-भुन जाना, 2. नष्ट होना, राख होना। **कोयला** (हि.)

कोल्ली[1] (स्त्री.) बीच से कुछ पतली और दोनों ओर से कुछ शंकु आकार की लकड़ी की डमरूनुमा गिट्टी।

कोल्ली[2] (स्त्री.) एक हरिजन या अनुसूचित जाति, कोरी, कपड़ा बुनने वाली जाति।

कोल्हड़ी (स्त्री.) पत्थर का गोलाकार पाटा; **~चलाणा/फेरणा/मारणा** खलियान या खेत में कोल्हड़ी घुमाना;**~सा** मोटा ताज़ा आदमी।

कोळ्हा (स्त्री.) कुम्हड़ा, सीताफल (इसकी सब्जी बनती है, बीज कृमि नाशक और नाकू बिच्छू के विष को दूर करने वाला तथा क्षय और मिरगी नाशक होता है)। **कूष्मांड** (हि.)

कोल्हू (पुं.) 1. गन्ने का रस तथा तेल आदि निकालने का यंत्र, 2. वह स्थान जहाँ कोल्हू चलता है; **~का बुळध** सीमित बुद्धि वाला; **~चालणा/ जुड़णा** कोल्हू पेरना आरंभ होना; **~छूटणा** अमावस्या या वर्षा आदि के कारण कोल्हू चलना बंद होना;**~में पेळणा** 1. एक दंड जिसके अनुसार अपराधी को गन्ने के समान पेर दिया जाता था, 2. भयंकर दंड देना, 3. कठोर परिश्रम करवाना।

कोश (पुं.) 1. शब्दकोश, 2. खज़ाना।

कोस (पुं.) 1. दूरी का नाप जो प्राचीन काल में 4000 या 8000 हाथ का माना जाता था, 2. आजकल दो मील या 7040 हाथ की दूरी, 3. एक अन्य प्रमाण के अनुसार छः जौ = एक अंगुली, 24 अंगुली = एक दंड, 1000 दंड = एक कोस, चार कोस = एक योजन, 4 इतनी दूरी कि गाय रँभाने की ध्वनि सुने; **काळी**~बहुत दूरी का स्थान, बहुत दूर।

कोसणा (क्रि. स.) बद्दुआ देना। **कोसना** (हि.)

कोसना (क्रि. स.) दे. कोसणा।

कोसिक (पुं.) 1. गौड़ ब्राह्मणों का एक गोत्र जिसका संबंध विश्वामित्र ऋषि, यजुर्वेद, माध्यंदिनी शाखा, त्रि प्रवर से है (यह गोत्र कोशिक से भिन्न है), 2. चार ब्राह्मण गोत्रों में से एक, 3. विश्वामित्र ऋषि। **कौशिक** (हि.)

कोसिस (पुं.) कोशिश गोत्र, ब्राह्मणों का एक गोत्र जो कौशिक से भिन्न है; (स्त्री.) कोशिश, प्रयत्न।

कोहड़ा[1] (पुं.) कुहरा।

कोहड़ा[2] (पुं.) दे. कोळ्हा।

कोहणी (स्त्री.) कुहनी; **~सेकणा** 1. कुहनी मारना, 2. कुहनी मार कर इशारे से संकेत करना।

कोहत्तर सै (वि.) दे. कोत्तर सै।

कोहनी (स्त्री.) दे. कोहणी।

कोहनूर (पुं.) एक प्रसिद्ध हीरा।

कोहर (पुं.) दे. बगर।

कोहाण (पुं.) ऊँट की पीठ का कूबड़। **कोहान** (हि.)

कोहान (स्त्री.) कानोढ (महेन्द्रगढ़) के निकट बहने वाली बरसाती नदी।

कौआ (पुं.) दे. काग।

कौड़ी (स्त्री.) दे. कोड्डी[2 3]

कौतुक (पुं.) दे. कोतक।

कौतुकी (वि.) दे. कोतकी।

कौथ (स्त्री.) दे. कोथ[1]।

कौथा (वि.) दे. कोत्था।

कौन (सर्व.) दे. कूँण[2] ।

क़ौम (स्त्री.) 1. जाति, वर्ण, 2. देश।

क़ौमी (वि.) 1. जातीय, 2. देश का।

कौमी नाटक (पुं.) स्वाँग। दे. स्वाँग।

कौर (पुं.) ग्रास, निवाला।

कौरव (पुं.) दे. कोरू।

कौरवपति (पुं.) दुर्योधन।

कौरी/कौली (स्त्री.) एक अनुसूचित जाति।

क़ौल (पुं.) दे. कोल[2]।

कौशल्या (स्त्री.) दे. कुसल्या।

कौशिक (पुं.) दे. कोसिक।

कौशिकी (स्त्री.) शिवालिक से निकल करनाल की ओर बहने वाली बरसाती नदी।

कौस्तुभ (पुं.) एक प्रसिद्ध मणि।

क्यमैं (अव्य.) दे. किमैं।

क्याँ (प्रत्य.) संबंध सूचक प्रत्यय–म्हारे घरक्याँ तैं कह दिए अक मैं बारसुध (विलंब से) आऊँगा (हमारे घर वालों से कहना...); (क्रि. वि.) किस लिए–क्याँ की मारी ना आया? (किस कारण से नहीं आया?); (अव्य.) क्यों–तूँ यो काम क्याँ नैं करण लाग्या (तू यह काम क्यों करने लगा); (स्त्री.) 'क्याँ' की ध्वनि; **~क्याँ करणा** शोर मचाना।

क्याँह (प्रत्य.) दे. क्याँ।

क्याणवैं (वि.) एक अधिक नब्बे। **इकानवे** (हि.)

क्यार (पुं.) बड़ी क्यारी, खेत।

क्यारी (स्त्री.) 1. पानी आदि देने की सुविध ा के लिए खेत में बनाए गए छोटे-छोटे भाग, 2. बड़े खेत के छोटे-छोटे टुकड़े; **~काटणा** 1. बड़े खेत को छोटे-छोटे हिस्सों में बाँटना, 2. टेढ़ी-मेढ़ी चाल चलना, 3. बच निकलना, वंचिका देना, 4. खेत रौंदना; **~खिलणा** 1. विकसित होना, 2. प्रसन्न होना, 3. खेत में फूल आदि खिलना, 4. सुंदर लगना; **~जामणा** फसल अंकुरित होना; **~बळाणा** खेत में पानी देना।

क्यावन (वि.) एक अधिक पचास। **इक्यावन** (हि.)

क्यास्सी (वि.) अस्सी और एक। **इक्यासी** (हि.)

क्यूँ (अव्य.) किस कारण से। **क्यों** (हि.)

क्यूँक (अव्य.) क्योंकि। **क्योंकि** (हि.)

क्यूँक्कर (क्रि. वि.) किस तरह। **क्योंकर** (हि.)

क्यों (क्रि. वि.) दे. क्यूँ।

क्यो (प्रत्य.) 'के' संबंध सूचक प्रत्यय का बहुवचन रूप–अरै रैंगड़े क्यो! के हाट रोप राख्या सै?

क्रांति (स्त्री.) एक दशा से दूसरी दशा में भारी परिवर्तन, उलट-फेर।

क्रिया (स्त्री.) दे. किरिया।

क्रीड़ा (स्त्री.) दे. किलोल।

क्रूर (वि.) बेरहम।

क्रोध (पुं.) दे. छोह।

क्रोधी (वि.) दे. छोहला।

क्रौंच (पुं.) एक जलचर पक्षी।

क्लर्क (पुं.) लिपिक।

क्लेश (पुं.) दे. कळेस।

क्वारा (पुं.) अविवाहित।

क्षण (स्त्री.) दे. छण।

क्षत्रिय (पुं.) दे. छतरी[1]।

क्षमा (स्त्री.) दे. छमा।

क्षीरसागर (पुं.) वह सागर जिसमें विष्णु भगवान का निवास है।

क्षेत्र (पुं.) 1. स्थान, 2. समतल भूमि, 3. खेत।

क्षेत्रफल (पुं.) रकबा।

क्षौर (स्त्री.) हजामत।

ख

ख हिन्दी वर्णमाला का व्यंजनों के अंतर्गत दूसरा अक्षर जिसका उच्चारण स्थान कंठ है, हरियाणवी में इसका उच्चारण करते समय अनुपातत: कुछ कम कंठ खुलता है और इसका उच्चारण 'ख अ' या खै है।

खंख (पुं.) 1. आकाश मंडल में बहुत ऊँचाई पर फैली हुई धूल, 2. खाली–रपैये चोराँ ने झाड़ लिए रह गया बिचारा खंख का खंख; **~चढणा/ छ्याणा** वायुमंडल का धूल से आच्छादित होना। **कंक** (हि.)

खँख्या (स्त्री.) आशंका, डर।

खंग (स्त्री.) 1. तलवार, 2. शुष्क वायु।

खँगळवाणा (क्रि. स.) खँगालने का काम अन्य से करवाना। **खंगलवाना** (हि.)

खँगाळणा (क्रि. स.) दे. खखाळणा।

खंगालना (क्रि. स.) दे. खखाळणा।

खंघर (पुं.) 1. अधिक पक्की ईंट, 2. झुलसी हुई वस्तु; **~होणा** 1. चिंता के कारण अंदर ही अंदर कुढ़ कर दुबला होना, 2. बुरी तरह झुलसना।

खंघारणा (क्रि.) दे. खखारणा।

खंचकड़ (पुं.) दे. खाँच्चा।

खंजन (पुं.) एक पक्षी।

खंजर (पुं.) कटार।

खंजरी (स्त्री.) 1. डफली की तरह का एक बाजा, 2. छोटा ख़ंजर।

खंड (पुं.) भाग, हिस्सा।

खंडका (पुं.) दे. खंडवा।

खंडन (पुं) किसी बात को अयथार्थ ठहराना।

खँडवा (पुं.) 1. पगड़ी, 2. हरियाणवी साफ़ा।

खंडित (वि.) टूटा-फूटा।

खंडेलवाल (पुं.) खंडिला गाँव से निर्गत वैश्य जाति।

खंढर (पुं.) खंडहर, (दे. ढूँढ)।

खँदाणा (क्रि. स.) 1. भेजना, 2. जबरदस्ती टालना, 3. संदेश देकर भेजना।

खँधाणा (क्रि. स.) दे. खँदाणा।

खंपी (स्त्री.) आलिंगनबद्ध होने की क्रिया।

खंभ[1] (पुं.) दे. खंभा।

खंभ[2] (स्त्री.) साँथल; **~ठोकणा** चुनौती देना। दे. खंभ[1]।

खंभा (पुं.) दे. थाँब।

खख (वि.) खाली, रिक्त।

खखरवाणा (क्रि. स.) खखारने के लिए प्रेरित करना, (दे. खखारणा)। **खखरवाना** (हि.)

खखार (पुं.) बलग़ाम, गाढ़ा थूक; (क्रि. अ.) 'खखारणा' क्रिया का आदे. रूप।

खखारणा (क्रि. अ.) 1. कफ़ या थूक को गले से बाहर निकालने के लिए शब्द सहित वायु निकालना, खाँसना, 2. घर में घुसते समय बड़ों द्वारा जानबूझ कर खाँसना ताकि बहुएँ सावधान होकर सिर पर कपड़ा ले लें। **खखारना** (हि.)

खखारना (क्रि. अ.) दे. खखारणा।

खखाळणा (क्रि. स.) 1. कपड़ों को पानी में पखार कर निकालना, 2. शरीर पर जल्दी से पानी डालकर (बिना मैल उतारे) स्नान करना, 3. प्रक्षालन करना, धोना, हिला-हिलाकर पानी से धोना। **खंगालना** (हि.)

खगणा (क्रि. अ.) 1. अड़ जाना, जिद्द करना, 2. व्यर्थ में तर्क-वितर्क करना–

मेरे तैं क्यूँ खग्गै सै, चाल परे नैं, 3. जान-बूझ कर किसी के पास से खस कर निकलना। **खगना** (हि.)

खगवाणा (क्रि. स.) खगने या अड़ने के लिए प्रेरित करना, (दे. खगणा)।

खग्गी (स्त्री.) 1. खगने का भाव, 2. कंधे की सहायता देने की क्रिया; **~भरणा/ मारणा** 1. जुए में जुते दो बैलों में से एक (शक्तिशाली) द्वारा दूसरे को इस प्रकार धकेलना कि दूसरे पर अधिक भार पड़ने लगे, 2. कंधे से धकेलना।

खग्रास (पुं.) पूर्ण चंद्र या सूर्य ग्रहण, सर्वग्रास।

खचाक (क्रि. वि.) 'खच' की ध्वनि के साथ।

खचाखच (क्रि. वि.) ठसाठस।

खचेड़ू (वि.) 1. मंद बुद्धि, 2. जिसे जन्म के समय छाज में रखकर खींचा जाए।

खच्चर (पुं.) दे. खिच्चर।

खच्चर-खच्चर (स्त्री.) 'खचर'-'खचर' की ध्वनि।

खजानची (पुं.) कोषाध्यक्ष।

खजाना (पुं.) दे. खजान्ना।

खजान्ना (पुं.) 1. नक़दी, 2. कोष। **ख़ज़ाना** (हि.)

खजान्नी (स्त्री.) भरपूर ख़ज़ाना।

खजूर (स्त्री.) दे. खिजूर।

खजूरे (पुं.) खजूर का फल।

खट[1] (स्त्री.) 'खट' की ध्वनि; (क्रि.वि.) 1. क्षण भर का समय, 2. क्षण भर में।

खट[2] (वि.) छः। **षट्** (हि.)

खटक (स्त्री.) 1. चिंता, 2. लगन, धुन, 3. जादुई प्रभाव, फेट; **~मारणा** चिंता सताना; **~लागणा** 1. बात चुभना, 2. लगन लगना, 3. किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए लालायित होना।

खटकड़ (पुं.) 1. पनघट के कुएँ की मुंडेर पर डाला गया लकड़ी का जाल, 2. जूए के नीचे की लकड़ी।

खटकड़ा (पुं.) गुजारा।

खटकणा (क्रि. अ.) 1. चुभना, 2. बुरा लगना, 3. आँखों में चुभना, 4. अनिष्ट की संभावना होना, 5. रुकावट उत्पन्न करना या होना, 6. मनमुटाव होना। **खटकना** (हि.)

खटकना (क्रि. अ.) दे. खटकणा।

खटकवाणा (क्रि. स.) खटखटाने के लिए प्रेरित करना। **खटकवाना** (हि.)

खटका (पुं.) 1. डर, भय, आशंका, 2. चिंता, 3. किवाड़ की चटखनी, 4. खेत का डरावा, 5. बाग या खेत से चिड़िया उड़ाने का लंबा तथा थोथा बाँस जिसके हिलाने से खटखट की ध्वनि उत्पन्न होती है, 6. बूचड़ख़ाना; (क्रि. स.) 'खटकाणा' क्रिया का आदे. रूप; **~भेड़णा** कुंदा लगाना या बंद करना; **~मेटणा** चिंता दूर करना; **~लागणा** चिंता होना, आशंका होना; **~होणा** भय या आशंका होना।

खटकाणा (क्रि. स.) 1. खटखटाना, 2. याद दिलाना, 3. शंका उत्पन्न करना, 4. परखना। **खटकाना** (हि.)

खटखटाणा (क्रि. स.) 1. खट-खट की ध्वनि उत्पन्न करना, 2. दरवाजे पर दस्तक देना।

खटखड़ा (पुं.) गुजारा।

खटखा (स्त्री.) कठोर भू भाग।

खटणा (क्रि. अ.) 1. निर्वाह होना, आपस में बनना- जै मेरी ना मान्नी तै म्हारा

आपस में खटणा मुसकल सै, 2. बचत होना, 3. कमाई होना, कमाना। **खटना** (हि.)

खटतळ (वि.) अधिक स्पष्टवादी, कटु स्पष्टवादी।

खटना (क्रि. अ.) दे. खटणा।

खटपट (स्त्री.) 1. अनबन, कहा-सुनी, झगड़ा, 2. 'खटपट' की ध्वनि।

खटपटिया (वि.) झगड़ालू; (स्त्री.) खड़ाऊँ।

खटपौड़ी (स्त्री.) दे. खड़ाम।

खटमल (पुं.) कलीले के आकार का खाट का एक कीड़ा।

खटमिट्ठा (वि.) खट्टे और मीठे स्वाद का।

खटर-खटर (स्त्री.) 1. खर्राटे की ध्वनि, 2. 'खटर-खटर' का शब्द।

खट रस (पुं.) छः प्रकार के रस या स्वाद। **षट् रस** (हि.)

खटराग (पुं.) छः प्रकार के राग।

खट सास्तर (पुं.) छः शास्त्र, हिन्दुओं के छः दर्शन।

खट सास्तरी (पुं.) छः शास्त्रों में निपुण।

खटा (स्त्री.) 1. गुज़ारा, 2. बचत; **~खाणा** आपस में बनना या प्रेम बना रहना।

खटाई (स्त्री.) 1. खट्टापन, 2. खट्टी चीज़, 3. अमचूर, एक मसाला।

खटाक (वि.) खट की ध्वनि।

खटाणा (पुं.) एक गूजर गोत।

खटापटी (स्त्री.) 1. लड़ाई-झगड़ा, 2. कहा-सुनी।

खटास (स्त्री.) खट्टापन।

खटिक (पुं.) दे. खटीक।

खटिया (स्त्री.) खटोला, छोटी खाट।

खटीक (पुं.) एक अनुसूचित जाति जिसका मुख्य धंधा सूत, मूँज, लोहे की जाली आदि बुनना है।

खटैब (पुं.) दे. कुटैब।

खटोलना (पुं.) दे. खटोल्ला।

खटोल्ला (पुं.) छोटी खाट; **उडण~** 1. उड़ने वाला खटोला, 2. वायुयान। **खटोला** (हि.)

खटोल्ली (स्त्री.) 1. छोटी खाट, 2. टूटी खाट।

खट्टा (वि.) दे. खाट्टा।

खट्टू (पुं.) राजस्थान में रीगस के पास एक गाँव जहाँ श्यामजी का एक बड़ा मंदिर है और फाल्गुन शुक्ल द्वादशी के दिन वार्षिक मेला लगता है, हरियाणा के अनेक लोगों का यह कुल देवता है।

खट्टयाणा (क्रि.) लाभ मिलना।

खट्ट्याह्या (वि.) वह वस्तु जिसमें खट्टेपन का स्वाद उत्पन्न हो गया हो, खट्टा हुआ हुआ।

खट्याणा (क्रि. अ.) 1. आपस में बनना, खटना, 2. निबाह होना, 3. किसी वस्तु में खट्टापन आना–सीत घणी खट्यागी (छाछ अधिक खट्टी हो गई)।

खड़ंजा (पुं.) खड़ी ईंटों की चिनाई का फर्श। आँगन या ईंटों का फर्श।

खड़[1] (स्त्री.) 1. काल, 2. काल खंड–या गा तै एक खड़ दूध दे सै (यह गाय एक समय दूध देती है), 3. पारी, जनेत की चार खड़–(बार) रोटियाँ का निभाह ईब होणा मुसकल सै (वि.) षट्, छः।

खड़[2] (वि.) 1. खर, मूर्ख, 2. अक्खड़।

खड़क[1] (स्त्री.) तलवार। **खड्ग** (हि.)

खड़क[2] (स्त्री.) दे. खटक।

खड़कणा (क्रि. अ.) दे. खुड़कणा।

खड़कना (क्रि. अ.) दे. खुड़कणा।

खड़का (पुं.) खड़ग।

खड़खड़ाणा (क्रि. स.) 1. खटखटाना, 2. सचेत करना; (क्रि. अ.) 'खड़- खड़' की ध्वनि होना। **खड़खड़ाना** (हि.)

खड़खड़ाना (क्रि. स.) दे. खड़खड़ाणा।

खड़ग (स्त्री.) तलवार।

खड़तळ (वि.) रूखे स्वभाव का।

खड़तवा (पुं.) खरपतवार।

खड़दू (पुं.) 1. झंझट, 2. बाधा, 3. झगड़ा, 4. उठा- पटक; **~करणा/काटणा/तारणा/मचाणा** 1. हठ करना, 2. झंझट उत्पन्न करना।

खड़पा (पुं.) औचित्य से अधिक पशु।

खड़बथुआ (पुं.) 1. खरपतवार, 2. रबी की फसल में उगने वाली घास।

खड़भड़ी (स्त्री.) खलबली।

खड़यंतर (पुं.) षड्यंत्र। **षड्यंत्र** (हि.)

खड़ा (वि.) 1. ऊपर को उठा हुआ। 2. टिका हुआ, 3. उपस्थित, 4. बिना पका, कच्चा, 5. अधपका, 6. स्थिर (दे. खड़्या)।

खड़ाऊँ (स्त्री.) दे. खड़ाम।

खड़ाम (स्त्री.) पादुका; **उडण~**उड़ने वाली खड़ाऊँ जिसे पहन कर नारद जी सभी लोकों में विचरण करते थे। **खड़ाऊँ** (हि.)

खड़िया (स्त्री.) एक प्रकार की सफ़ेद मिट्टी; **~माट्टी** खड़िया-मिट्टी।

खड़ी (वि.) अधपकी, जैसे–खड़ी खिचड़ी; (क्रि. वि.) खड़ी अवस्था में; **~खड़ी** तुरंत, अविलंब, खड़े-खड़े; **~खड़्याँ** 1. शीघ्र, 2. खड़े-खड़े।

खड़ी चोट (क्रि. वि.) अविलम्ब, अभी-अभी।

खड़ी बुहारी (स्त्री.) बेगार का कार्य।

खड़ी बोली (स्त्री.) दे. खड़ी बोल्ली।

खड़ी बोल्ली (स्त्री.) 1. कर्कश या अक्खड़ बोली, 2. हरियाणवी बोली, 3. बाँगरू बोली। **खड़ी बोली** (हि.)

खड्गासन (पुं.) जैन मूर्तियों की खड़ी मुद्रा।

खड्डू (पुं.) 1. शक्तिशाली बैल, 2. वह बैल जो पूरी तरह बधिया नहीं हुआ हो, 3. जिस बैल की आँखों के चारों ओर गहरी काली झाई हो, 4. हर पशु से उलझने वाला बैल; (वि.) शक्तिशाली।

खड्ढा (पुं.) गड्ढा। **खड्डा** (हि.)

खड्ढी (स्त्री.) 1. वह स्थान जहाँ जुलाहा कपड़ा बुनता है, 2. वह यंत्र जिस पर कपड़ा बुना जाता है; **सूर~**दे. सूर खड्ढी। **खड्डी** (हि.)

खड़्या (वि.) 1. खड़ा हुआ, 2. जो सोया नहीं हो– खड़्या होले ओड्ढाणे ताँही क्यूँ खाट में मुँह बायाँ पड़्या सै, 3. उठा हुआ, उभरा हुआ, 4. कुछ कच्चा, अधपका, जैसे– खड़्या चावळ, 5. ठहरा हुआ, स्थिर–भींत कै धोरै फेर कै पाणी खड़्या रहग्या तै कतई ए धसक ज्यागी, 6. जो उखाड़ा या काटा नहीं गया हो, जैसे–खड़्या बाजरा; **~खड़्या** 1. खड़े-खड़े, 2. उलट पैर, 3. शीघ्र। **खड़ा** (हि.)

खण[1] (स्त्री.) 1. मंज़िल–म्हरौली की लाठ के पाँच खण सैं, 2. 'खन'-'खन' की ध्वनि।

खण[2] (वि.) षट्, छः, जैसे–खणमुख (कार्तिकेय)।

खणक (वि.) झंकार। **खनक** (हि.)

खणकणा (क्रि.अ.) खनखनाना; (वि.) खनकने वाला; (पुं.) खिलौना। **खनकना** (हि.)

खणकवाणा (क्रि. स.) (सिक्के की) परल करवाना। **खनकवाना** (हि.)

खणखणाणा (क्रि. स.) झनझनाना– बहोड़िया ने छात्ती का हार, कड़ की तागड़ी, हाथ का छन अर पाह्याँ की नेवरी न्यूँ खणखणाई जणूँ बीजळी पाटगी। **खनखनाना** (हि.)

खत[1] (पुं.) 1. पत्र, चिट्ठी, 2. लेख, 3. कलम का डंक, 4. सूत (चिनाईगीर द्वारा प्रयोग में लाया जाने वाला धागा)। **ख़त** (हि.)

खत[2] (पुं.) कान तक बढ़े बाल या बने बाल। दे. कलम।

खतकशी (स्त्री.) चित्रादि बनाने से पहले आवश्यक रेखाएँ खींचना।

खतना (पुं.) सुन्नत, मुसलमानी।

खतम (वि.) 1. समाप्त, 2. विनष्ट। **ख़त्म** (हि.)

खतरा (पुं.) 1. भय, 2. आशंका।

खतवा (स्त्री.) खाद में उत्पन्न छोटे कीड़े-मकोड़े।

खता (स्त्री.) 1. अपराध, 2. धोखा, 3. ग़लती।

खतावार (पुं.) अपराधी।

खतोड़ (स्त्री.) वह स्थान जहाँ खाती लकड़ी का काम करता है।

खत्ता (पुं.) 1. कूड़ा-करकट, 2. अन्न एकत्रित करने का स्थान।

खत्ती (स्त्री.) घर में अन्न रखने का स्थान।

ख़त्म (वि.) दे. खतम।

खदकणा (क्रि. अ.) 1. खिचड़ी-दलिये आदि का गाढ़ा होकर 'खद-खद' की ध्वनि के साथ बुलबुले फूटकर पकना, 2. उबलना।

खदका (पुं.) उबाल, खदकने की क्रिया।

खदखदाणा (क्रि. अ.) 'खद-खद' की ध्वनि के साथ उबलना या पकना; (क्रि. स.) 1. पकाना, 2. उबालना। **खदखदाना** (हि.)

खदड़ (स्त्री.) पतली चिकनी गारा। दे. तगार।

खदड़का (पुं.) 1. उबाल, 2. खदकने की क्रिया।

खदबदाना (क्रि. अ.) दे. खदखदाणा।

खदरवा (वि.) खादर या नीची भूमि का (निवासी)।

खदरा (पुं.) 1. खादर की भूमि, 2. नदी के साथ की नीची भूमि, 3. नीचे गड्ढों की भूमि जहाँ वर्षा के बाद लंबे भू-भाग में पानी खड़ा रहता है, 4. दिल्ली से उत्तर की ओर यमुना नदी के आस-पास के गाँव।

खदान (पुं.) वह स्थान जहाँ से मिट्टी आदि खोद कर निकाली जाती है।

खदान्ना (पुं.) 1. दहाना, पानी का बड़ा नाला, 2. कोष, 3. वह स्थान जहाँ से मिट्टी आदि खोद कर निकाली जाए। **खदाना** (हि.)

खदील्ली (वि.) खाद वाली (भूमि)।

खद्दी (स्त्री.) दे. खुणस।

खधवा (स्त्री.) दे. खतवा।

खनक (स्त्री.) दे. खणक।

खनकना (क्रि. अ.) दे. खणकणा।

खनकाणा (क्रि. स.) 1. 'खन-खन' की ध्वनि निकालना, 2. सिक्के को खनका कर परखना, 3. खरे-खोटे की जाँच पड़ताल करना।

खनखनाना (क्रि. स.) दे. खणखणाणा।

खपची (स्त्री.) दे. खपच्ची।

खपच्ची (स्त्री.) बाँस की पतली तीली।

खपणा (क्रि. अ.) 1. काम में आना, प्रयोग में आकर समाप्त होना, 2. कटना, मरना–लड़ाई में भोत लाल खपगे, 3. जूझना। **खपना** (हि.)

खपत (स्त्री.) 1. उपयोग, 2. इस्तेमाल होने या खपने का भाव।

खपती (वि.) वहमी, झक्खी।

खपना (क्रि. अ.) दे. खपणा।

खपरा (पुं.) अनाज नष्ट करने वाला एक छोटा कीड़ा।

खपरी (स्त्री.) चूड़ी बनाने वाले का अंगीठा।

खपरैल (पुं.) पटरी की आकृति का पकी मिट्टी का टुकड़ा जो मकान की छत छाने के काम आता है।

खपसूरत (वि.) दे. कपसूरत।

खपाना (क्रि. स.) 1. प्रयोग कर लेना, 2. समाना, 3. नष्ट भ्रष्ट करना।

खप्पर (पुं.) 1. नाथ पंथी साधुओं द्वारा धारण किया जाने वाला भिक्षा–पात्र, 2. खोपड़ी, कपाल–महाभारत की लड़ाई में के दीक्ख्या सुदरसन चक्कर के था दिरोपदी का खप्पर।

खप्पर-भरणी (स्त्री.) 1. खप्पर धारण करने वाली दुर्गा, 2. द्रौपदी, 3. विनाशिनी महिला। **खप्पर भरनी** (हि.)

ख़फ़ा (वि.) 1. नाराज, 2. रुष्ट।

ख़बर (स्त्री.) 1. समाचार, 2. सूचना, 3. संदेशा, 4. सुधि, 5. खोज, पता; **~लेणा** 1. सुध–बुध लेना, 2. टोह लेना, 3. पिटाई करना, 4. प्रताड़ना करना।

खबरदार (वि.) सजग, होशियार; (पुं.) सचेत करने का भाव।

खबीस (वि.) पापी।

खब्तान (वि.) दे. खपती।

खब्ती (वि.) दे. ख़पती।

खब्बू (वि.) उलटे हाथ से काम करने वाला।

खभड़का (पुं.) बछड़े द्वारा दूध चूँघते समय गाय के थन में मुँह से बार–बार दिया जाने वाला धक्का।

खभात (स्त्री.) दे. ख़ुभात।

खम (स्त्री.) जंघा, जाँघ; **~ठोकणा** ताल ठोंकना।

खमणा (क्रि. अ.) 1. अधिक गीलेपन के कारण हरी–सफ़ेद रंग की काई आना, 2. गरमी के कारण आटे का खट्टा होकर उगजना, 3. ख़मीर बनना या उठना; (क्रि. स.) खाम लगाना, टाँका लगाना। **खमना** (हि.)

खमशबू (पुं.) शराब पीने का प्याला।

खमा (स्त्री.) क्षमा, दे. छमा।

ख़मीर (पुं.) गूँदे हुए आटे आदि का सड़ाव जो जलेबी आदि बनाने के काम आता है।

खमीरा (पुं.) दे. ख़मीर; (वि.) ख़मीर उठी हुई (वस्तु)।

खर (पुं.) गधा।

खरक[1] (पुं.) 1. चौपायों को रखने के लिए लकड़ियाँ गाड़ कर बनाया गया घेर, 2. बाड़ा, 3. बाँसों की फट्टियों का किवाड़।

खरक[2] (पुं.) बाड़ की चार दीवारी।

खरखोड्ढर (पुं.) दे. खोड्ढर।

खरच (पुं.) 1. आय, 2. खपत। **खर्च** (हि.)

खरचणा (क्रि. स.) 1. व्यय करना, 2. ख़त्म करना; (वि.) ख़र्चीले स्वभाव का। **खरचना** (हि.)

खरचना (क्रि. स.) दे. खरचणा।

खरड़ (पुं.) पुराने लोगड़ से कात कर बनाया गया मोटा कपड़ा जो वस्तुओं को वर्षा आदि से बचाने या विशेष अवसरों पर बिछाने के काम आता है, (दे. दोलड़ा)।

खरड़णा (क्रि. स.) भेड़, बकरी आदि को गाभिन करना।

खरड़ पूजणा (क्रि.) विवाह, लग्न, सगाई आदि के अवसर पर उपस्थित सभी सम्मानित व्यक्तियों को रुपया भेंट कर सम्मान देना।

खरड़वाणा (क्रि. स.) भेड़, बकरी आदि को गाभिन करवाना।

खरण-खरण (स्त्री.) 1. चक्की पीसते समय उत्पन्न ध्वनि, 2. साँप द्वारा उत्पन्न ध्वनि, 3. 'खरन-खरन' की ध्वनि।

खरणाट्टा (पु.) 1. चाँदी के रुपये को परखते समय उत्पन्न ध्वनि, 2. 'खरन-खरन' की ध्वनि।

खर-दूषण (पुं.) खर और दूषण नामक राक्षस जो रावण के भाई थे।

खरधरा (वि.) खुरदरा, जो समतल और चिकना न हो। **खुरदरा** (हि.)

खरब (वि.) सौ अरब की संख्या।

खरबूजा (पुं.) दे. खरबूज्जा।

खरबूज्जा (पुं.) ककड़ी की जाति का एक प्रसिद्ध गोलाकार फल जो गरमी में पकता है। **खरबूजा** (हि.)

खरभोजन (पुं.) निकृष्ट खाना।

खरराट्टा (पुं.) सोते समय नाक या गले से उत्पन्न 'खर-खर' की ध्वनि। **खर्राटा** (हि.)

खरल (स्त्री.) दे. खरळ।

खरळ (स्त्री.) 1. पत्थर, ईंट आदि की खुरली, नाँद, 2. पत्थर की कूँडी, 3. मटके आदि से अन्न आदि नीचे गिरते समय उत्पन्न ध्वनि। **खरल** (हि.)

खरसा (स्त्री.) गरमी के दिन, ग्रीष्म ऋतु।

खरा (वि.) दे. खर्‍या।

खराद (पुं.) एक औज़ार जिस पर चढ़ाकर लकड़ी, धातु आदि का तल तराशा जाता है।

खरादणा (क्रि. स.) खराद पर चढ़ाकर किसी वस्तु को चिकना और सुंदर बनाना।

खराळ (पुं.) बहाव, हल्का बहाव।

खरासट (स्त्री.) दे. खुणस।

खरी (वि.) 1. निर्दोष, 2. स्पष्ट, 3. शुद्ध।

खरी-खोट्टी (स्त्री.) 1. भली-बुरी बात।

ख़रीद (स्त्री.) 1. मोल लेने की क्रिया, 2. क्रय करना।

खरीदणा (क्रि. स.) मोल लेना, क्रय करना।

खरीदना (क्रि. स.) दे. खरीदणा।

खरैह्ड़ा (वि.) दे. खुरेह्ड़ा।

खरोंच (स्त्री.) छिलने का चिह्न।

खरोंचणा (क्रि. स.) खरोंचना, खुरचना, छीलना।

खरोंट (स्त्री.) दे. खरोंच।

खरोंद (स्त्री.) बैल के माथे की घंटियाँ।

खरोल्ला (पुं.) शहतूत आदि की तीलियों से बना बड़े आकार का टोकरा, (दे. खारी[1]); ~**(–ल्लै) चढणा** बान बैठना (विवाह से लगभग एक सप्ताह पूर्व लड़की और लड़के को खरोले पर बैठा कर उबटन मला जाता है और प्रतिदिन स्नान कराया जाता है। **खरोला** (हि.)

खर्च (पुं.) दे. खरच।

खर्‌या (वि.) 1. शुद्ध, 2. पवित्र, 3. बिना मिलावट का, 4. बेलाग, 5. नक़्द, 6. सच्चा; **~आदमी/माणस** 1. स्पष्ट वक्ता, सच्चा व्यक्ति, 2. पक्षपात रहित व्यक्ति; **~जवाब देणा** 1. स्पष्ट इंकार करना, 2. साफ-साफ कहना; **~रपैया** 1. चाँदी का रुपया जिसमें गिलट या राँगे की मिलावट न हो, 2. वह रुपया जिसे परखते समय 'टरन'-'टरन' या 'झरन'-'झरन' की ध्वनि निकले, 3. वह रुपया जो खोटा न हो। **खरा** (हि.)

खल (वि.) दुष्ट।

खळ (स्त्री.) सरसों, तिरा आदि को कोल्हू में पेरते समय बचने वाला फोक जिसे दुधारू पशुओं को खिलाते हैं; **~भेणा** खल को भिगोना ताकि वह गलने के बाद चारे में भली प्रकार मिल सके। **खली** (हि.)

खलकाई (स्त्री.) दुष्टता।

खलख (स्त्री.) दे. लाग।

खलखत (स्त्री.) भीड़, अव्यवस्थित भीड़; **~कट्‌ठी होणा/जुड़णा** 1. भीड़ जुड़ना, 2. तमाशा बनना। **ख़लकत** (हि.)

खळ खळ खोट्‌टा (पुं.) 1. छोटे बच्चों को कराया जाने वाला स्नान, 2. जल्दी जल्दी में किया जाने वाला स्नान; **~माँम्मा मोट्‌टा** बच्चों को स्नान के समय प्रसन्न रखने के लिए कही जाने वाली जकड़ी जिसे अधिकतर उनके सिर पर पानी डालते समय कहा जाता है।

खल बच्चा (पुं.) भैंस आदि का बच्चा मर जाने के बाद उसकी खाल में भूसा भरकर बनाया गया बच्चा (घ्राण शक्ति के कारण वह इसमें अपने जीवित बच्चे का भ्रम करती है और उसे चाटते-चाटते दूध दे देती है)।

खलबल (स्त्री.) 1. खलबली, 2. शोर।

खलबली (स्त्री.) 1. हलचल, 2. व्याकुलता।

खलल (स्त्री.) दे. खल्हल।

खला (पुं.) दे. काल्लर।

खळासी (स्त्री.) नहर पर काम करने वाला एक छोटा कर्मचारी।

खळी[1] (स्त्री.) 1. छ्योरी के आस-पास पड़ी बाल, 2. खली (दे. खळ)।

खळी[2] (स्त्री.) दे. खल।

खळी[3] (पुं.) दे. पैर[2]। (क्रि.) खड़ी।

ख़लीफ़ा (पुं.) 1. मुसलमानों का एक धार्मिक नेता, 2. बड़ा बूढ़ा व्यक्ति।

खल्हल (स्त्री.) बाधा। **खलल** (हि.)

खल्हड़े (पुं.) वह स्थान जहाँ कच्चा चमड़ा धोया जाता है।

खवा (पुं.) 1. स्कंध, कंधा, 2. 'खाणा' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप; **~(–वे) पर कै देखणा/ लखाणा** 1. जवानी की अकड़ आना, 2. उपेक्षा की दृष्टि से देखना; **~मारणा** 1. कंधा मारकर संकेत करना, 2. झगड़े के लिए उकसाना, 3. सट कर निकलना; **~(–वे) समान्नी** 1. लगभग तीन हाथ का नाप, 2. लगभग कंधे तक लंबाई का।

खवाऊ (वि.) 1. भोजन खिलाने वाला, 2. अपने धन को लुटाने वाला; **~प्याऊ** 1. खिलाने-पिलाने वाला, 2. अपने धन को लुटाने वाला, 3. मस्त।

खवाणा[1] (क्रि. स.) गुम करवाना–मेरी गींड्‌डो इसने खवा दी।

खवाणा[2] (क्रि. स.) 1. खिलाना-पिलाना, 2. पालन-पोषण करना। **खिलाना** (हि.)

खवार (वि.) दुखी।

खवाळ (वि.) 1. खिलाने-पिलाने का इच्छुक, 2. खाने-पीने का इच्छुक।

खस (पुं.) एक प्रसिद्ध घास की सुगंधित जड़।

खसकणा (क्रि. अ.) 1. फिसलना, 2. खिसक कर निकलना। **खिसकना** (हि.)

खसकवाणा (क्रि. स.) खिसकवाना।

खसकाणा (क्रि.स.)1. चुराना, 2. खींचना, 3. टहलाना। **खिसकाना** (हि.)

खसखस (स्त्री.) पोस्त का दाना।

खसणा (क्रि. अ.) 1. खुजली मिटाने के लिए दीवार या पेड़ आदि के साथ शरीर रगड़ना, 2. झगड़े के लिए उलझना, 3. इस प्रकार सट कर निकलना कि अन्य के शरीर से रगड़ खाए; (वि.) झगड़ालू। **खसना** (हि.)

खसत (वि.) 1. कमज़ोर, 2. भुरभुरा, मुलायम; **~होणा** ज़्यादा गलना या उबलना–चावल कती खसत होगे। **ख़स्ता** (हि.)

खसना (क्रि. अ.) दे. खसणा।

खसबोई (स्त्री.) सुगंध। **खुशबू** (हि.)

खसर-पसर (स्त्री.) 1. फुसफुसाने का भाव, 2. इतने धीरे बात करना कि अन्य की समझ में न आ पाए, 3. चुगली।

खसरा[1] (पुं.) मोती झारा; **~ठभकणा** खसरा निकलते- निकलते रुक जाना।

खसरा[2] (पुं.) पटवारी का एक काग़ज़ जिसमें खेतों का विवरण होता है।

खसिया (वि.) 1. बधिया (पशु), 2. नपुंसक। **खस्सी** (हि.)

खसोट (स्त्री.) 1. लूट, 2. खुजली लगने का भाव।

खसोटणा (क्रि. स.) 1. ज़बरदस्ती छीनना, 2. बुरी तरह खुजली करना, 3. ढेरी से एक वस्तु खींच लेना। **खसोटना** (हि.)

खसोटना (क्रि. स.) दे. खसोटणा।

खस्सी (वि.) दे. खसिया।

खस्स्याणा (क्रि. वि.) लज्जित होना। **खिसियाना** (हि.)

खहियाँ (क्रि. वि.) 1. कंधे तक, खवे तक, खवे के पास, 2. बहुत निकट; **~चढणा** ऊपर चढ़ना, बहुत निकट आकर खड़ा होना; **~भरणा** 1. आलिंगन करना, 2. धकेलना।

खही (स्त्री.) कंधे की दाब; **~भरणा** जुए में जुते बैलों का टेढ़ा-मेढ़ा होकर एक-दूसरे पर वजन डालना।

खाँग (पुं.) दे. खंख।

खाँच (स्त्री.) जोड़, संधि।

खाँचा (पुं.) दे. खाँच्चा[1]।

खाँच्चा[1] (पुं.) कीचड़, कीच; **~तारणा/ मचाणा** कीचड़ करना।

खाँच्चा[2] (पुं.) 1. बड़े छेदों का टोकरा जो लंबी खपच्ची जोड़कर बनाया जाता है और मज़दूरों द्वारा मिट्टी ढोने के काम आता है, 2. साँचा, (दे. माँच्ची)।

खाँड (स्त्री.) शक्कर या गुड़ से तैयार कम सफेद रंग की बूरा, बूरा; **~कटोरा** विवाह के समय संपन्न एक प्रथा जिसके अनुसार कटोरे में घी और खाँड भर कर समधन समधी को भेंट करती है (इसमें रुपये भी होते हैं); **~कसार** खाँड और कसार जो विशेष अवसरों

पर बाँटा जाता है; **~पुड़ा** मिठाई आदि का वह पुड़ा जिसे वर का बहनोई कन्या पक्ष के यहाँ माँडे (मंडप) पर बाँधता है।

खाँडू बण (पुं.) एक प्रसिद्ध वन जिसे अर्जुन ने जला कर नष्ट किया था (इसी स्थान पर इंद्रप्रस्थ नगर बसाया गया था, यह आधुनिक दिल्ली के निकट था)। **खांडव वन** (हि.)

खाँड्डा (पुं.) 1. कैर (करील) की लकड़ी का लगभग दो-ढाई हाथ लंबा डंडा जिसे दुल्हेंडी खेलते समय महिलाएँ पुरुषों को पीटने के काम लाती हैं, बच्चे इसमें गोबर की ढाल फँसा कर होली पर फेंकते हैं, ग्वाले करील की लकड़ी की छाल उतार कर उसे गेरू से रंग कर सजा लेते हैं, 2. तलवार, खड्ग, **~खेलणा** दुल्हेंडी खेलना; **~बाजणा** लड़ाई होना।

खाँसणा (क्रि. अ.) 1. खाँसने की क्रिया करना, 2. खाँस कर संकेत देना। **खाँसना** (हि.)

खाँसना (क्रि. अ.) दे. खाँसणा।

खाँसी (स्त्री.) दे. खाँस्सी।

खाँसी खेर (स्त्री.) दे. खेर खाँसी।

खाँस्सी (स्त्री.) खाँसी। **खाँसी** (हि.)

खाँह्धड़ (पुं.) मोटा कपड़ा, फटा पुराना और मोटा कपड़ा—भंभो माई के ओढैगी कै पहरैगी, गूदड़ ओढूँगी, खाँह्धड़ पहरूँगी, (लो. गी.)।

खाऊँ-पाड़ूँ (स्त्री.) 1. तीव्र क्षुधा, 2. भयभीत करने की स्थिति।

खाऊ (वि.) अधिक खाने वाला, पेटू; **~उड़ाऊ** खर्चीला; **~पीऊ** 1. खाने और उड़ाने वाला, 2. खाने-पीने वाला।

ख़ाक (स्त्री.) 1. धूल-मिट्टी, 2. तुच्छ वस्तु।

ख़ाका (पु.) चित्र आदि का बाहरी ढाँचा।

खाक्खी (वि.) ख़ाकी रंग का। **ख़ाकी** (हि.)

खाखळ (स्त्री.) दे. खंख।

खाग (वि.) शक्तिशाली; (पुं.) साँड, (दे. खागड़); **~का खाग** बड़ा, युवक, शक्तिशाली।

खागड़ (पुं.) साँड, वृषभ, आँकल, बिजार; (वि.) 1. शक्तिशाली, बलवान, 2. हर किसी से भिड़ने वाला।

खागड़ी (स्त्री.) 1. युवती, 2. शक्तिशाली गाय।

खाज (स्त्री.) खुजली, एक रोग जिसमें पहले नितंबों पर और फिर अंगुलियों के बीच में फुंसियाँ हो जाती हैं—पाँ पाँ पाँगळी, पहल्याँ चूतड़ पाच्छै आँगळी; **~मेटणा** 1 कष्ट दूर करना, 2. आवश्यकता पूर्ति करना।

खाजण (स्त्री.) बैल गाड़ी का एक यंत्र।

खाजा (पुं.) दे. खाज्जा।

खाज्जल (वि.) जिसे खुजली का रोग हो।

खाज्जा (पुं.) 1. खाने योग्य अच्छी वस्तुएँ, 2. मिठाई विशेष। **खाजा** (हि.)

खाट (स्त्री.) चारपाई; **~खड़ी करणा** 1. मृतक की चारपाई ऊपर की ओर अदवायन करके खड़ी करना, 2. मौत के घाट उतारना, 3. अपशकुन करना; **~पाकड़णा/लेणा** बहुत बीमार होना।

खाटली (स्त्री.) दे. खाट।

खाट्टा (वि.) 1. खट्टा, 2. कच्चे आम या इमली के स्वाद का; (पुं.) कढ़ी, राबड़ी आदि बनाने से पहले बनाया

गया छाछ-आटे का घोल; **~ऊठणा** छाछ, आटे आदि के घोल का खट्टा होकर उगजना, ख़मीर बनना; **~घोळणा** राबड़ी, कढ़ी आदि के लिए कच्चे आटे को छाछ और नमक में मिलाकर धूप में रखना ताकि वह खट्टा होकर उगज सके (ख़मीरा उठ सके); **~जी होणा/ मन होणा** 1. मन भरना, 2. उबकाई आना।

खाट्टी (वि.) तिक्त। **खट्टी** (हि.)

खाट्टू (पुं.) दे. खट्टू।

खाट्टो (पुं.) 1. खट्टे पत्तों का साग, 2. दे. खाट्टा।

खाड़ बखाड़ (स्त्री.) उखाड़ पछाड़।

खाड़ा (पुं.) 1. कुश्ती लड़ने या कसरत करने के लिए बनाया गया स्थान, 2. साधुओं की मंडली का निवास-स्थान, 3. दल, सभा, 4. झगड़ा; **~करणा** 1. झगड़ा करना, 2. ज़िद्द करना; **~खोदणा** 1. कुकृत्य करना–तड़कै ए तड़कै के खाड़ा खोद दिया, राम का नाम लेह् नैं, 2. अखाड़ा खोदना, 3. कठिनाई उत्पन्न करना; **~तारणा** 1. ज़िद्द पूरी करने के लिए रोना, 2. किसी स्थान को रोंद कर मिट्टी-मिट्टी करना; **~रुपणा** 1. लड़ाई के लिए तैयारी होना, 2. भीड़ इकट्ठी होना, 3. दंगल रुपना; **~रोपणा** 1. झगड़ा मोल लेना, 2. कोई विचित्र आयोजन करना; **~लड़णा** 1. कुश्ती करना, 2. लड़ाई लड़ना, 3. सामना करना; **~होणा** 1. झंझट उत्पन्न होना, 2. दुविधा उत्पन्न होना–भारत मात्ता तेरे फिकर में मेरी ज्यान नै खाड़ा होग्या, किसै का दे दिया काळा पाणी किसै का देस निकाड़ा होग्या, (लो. गी.) **अखाड़ा** (हि.)

खाड़ी (स्त्री.) भूमि का वह बड़ा भाग जो तीन ओर से समुद्र के पानी से घिरा हो।

खाण (पुं.) खाना, भोजन; **~नै आणा** 1. काटने दौड़ना, 2. क्रोधित होना। **खान** (हि.)

खाण-पाण (पुं.) 1. खान-पान, 2. मेल-मिलाप।

खाणा (पुं.) 1. भोजन, 2. भोजन करने की क्रिया, 3. दंशित करने की क्रिया; (क्रि. स.) 1. भोजन करना, 2. भक्षण करना, 3 काटना; **~जीमणा** भोजन करना; **~पीणा एक होणा** 1. कोई भेद न रहना, 2. जाति-भेद समाप्त होना; **~पीणा मिलणा** 1. खानपान समान होना, रीति-रिवाज़ मिलना, 2. प्यार बढ़ना। **खाना** (हि.)

खात (पुं.) 1 कूड़ा-करकट, 2. उर्वरक।

खातमा (पुं.) 1. समाप्ति, अंत, 2. मृत्यु।

खाता (पुं.) दे. खात्ता।

ख़ातिर (स्त्री.) दे. खात्तर[1]।

ख़ातिरदारी (स्त्री.) आवभगत।

खाती (पुं.) दे. खात्ती।

खातोड़ (स्त्री.) दे. खतोड़।

खात्तण (स्त्री.) बढ़ई की स्त्री। **खातिन** (हि.)

खात्तर[1] (स्त्री.) 1. आदर, 2. सेवा; **~करणा** सेवा करना, सम्मान देना। **ख़ातिर** (हि.)

खात्तर[2] (अव्य) लिए, वास्ते–भरतरी राणी तैं बोल्या अक तेरी खात्तर अमर फळ ल्याया सूँ। **ख़ातिर** (हि.)

खात्ता (पुं.) 1. वह बही जिसमें आय-व्यय तथा कर्ज़ आदि लिखा जाता है, 2. हिसाब-किताब, लेन-देन; **~खोल्हणा** दुकान से उधार लेना शुरू करना;

~**चुकणा** पुण्य कर्म का फल समाप्त होना; ~**चुकाणा** ऋण का भुगतान करना। **खाता**(हि.)

खात्ती (पुं.) 1. बढ़ई, 2. एक जाति जो लकड़ी का सामान बनाने आदि का काम करती है (इनके मुख्य गोत हैं–कूका, माहुर, टाँक, उपरोतिया, बामन, बरही या मथूरिया, ओझा-गौड़, चमार, बढ़ई), (दे. जाँगड़ा)। **खाती** (हि.)

खात्तोड़ (स्त्री.) दे. खतोड़।

खात्यर (स्त्री.) दे. खात्तर।

खाद (स्त्री.) दे. खात।

खादी (स्त्री.) दे. डोबटी।

खाद्दर (पुं.) दे. खदरा।

ख़ान (पुं.) मुसलमान, पठान।

खान (स्त्री.) दे. खदान्ना।

खानगा (पुं.) मुसलमानों को दफनाने का स्थान।

खानदान (पुं.) वंश, कुल।

ख़ानदानी (वि.) 1. पैतृक, 2. ऊँचे कुल का।

खानपान (पुं.) दे. खाणपाण।

ख़ाना (पुं.) दे. खाणा।

ख़ाना (पुं.) दे. खान्ना।

ख़ानापूरी (स्त्री.) 1. औपचारिकतावश किसी कार्य को आधे मन से जैसे-तैसे पूरा करना, 2. सारणी आदि के रिक्त स्थान भरने का कार्य।

ख़ानाबदोश (वि.) 1. थोड़े-थोड़े समय में एक निवास से दूसरा निवास बदलने वाला, 2. अस्थायी निवास वाला।

खान्ना (पुं.) 1. किसी वस्तु को रखने का घर, 2. हिस्सा, 3. कोष्ठक; ~**खराब जाणा** ग़लत रास्ते पर चलना; ~**माफ करणा** क्षमादान देना। **ख़ाना** (हि.)

खाप (स्त्री.) 1. खेत या भूमि का छोटा भू-भाग–पहल्याँ टेकड़े आळी खाप में बाड्ढा लाले (पहले टेकड़े वाली खेती के भाग को काटना शुरू करो), 2. एक ही गोत का जनसमुदाय जो कई गाँवों में बसा हो–गुळियाँ की खाप के चोबीस गाम लाग्गैं से इनमें एक-दूसरे गाम की छोहरी नहीं ब्याही जात्ती, 3. क्षेत्रीय भाई-चारा।

खापट (वि.) चालाक।

खापणा (क्रि. स.) समझना, प्रभुत्व मानना–काम लीकड़्याँ पाच्छे तैं तन्नैं मैं खापणा ए बंद कर दिया।

खापरा (पुं.) 1. खेत का कुछ भाग, 2. एक प्रकार की घास जो ख़रीफ की फसल में उगती है।

खापरी (स्त्री.) खेत की छोटी टुकड़ी; ~**धरणा** खेत को छोटे हिस्सों में बाँट कर कटाई शुरू करना; ~**बाँटणा** खेत को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटना।

खाभळा (वि.) 1. उलटे हाथ से काम करने वाला, 2. हकला कर बोलने वाला, (पुं.) 1. नाला, कम गहरा नाला, 2. गड्ढा।

खाम (पुं.) गीली मिट्टी, आटे या राँगे से कनस्तर आदि के तंग मुँह पर लगाया गया जोड़।

खामखा (क्रि. वि.) व्यर्थ, व्यर्थ में। **ख़्वाहमख़्वाह** (हि.)

खामी (स्त्री.) 1. त्रुटि, दोष, 2. कमी।

खामोश (वि.) मौन, चुप।

खामोशी (स्त्री.) चुप्पी।

खार[1] (पुं.) 1. चने के पौधे पर जमी हरे रंग की धूलि जो स्वाद में तिक्त होती है, 2. रेह, 3. राख, 4. धूल। **क्षार** (हि.)

खार² (पुं.) 1. डाह, जलन, 2. काँटा।

खार³ (पुं.) शाप।

खारकी (स्त्री.) वह पशु जिसने पहली बार बच्चे को जन्म दिया हो (ऐसे पशु का दूध पौष्टिक माना जाता है)।

खारा¹ (पुं) 1. धारीदार मोटा कपड़ा जिसकी घघरी सिलाई जाती है, 2. ऐसे कपड़े से सिली घघरी।

खारा² (वि.) दे खार्‍या।

ख़ारिज (वि.) 1. निष्क्रमण किया हुआ, 2. रद्द किया हुआ।

खारिया (पुं.) बड़ी खारी जिससे अनाज आदि का भार भी देखते हैं।

ख़ारिस (स्त्री.) दे. खाज।

खारी¹ (स्त्री.) शहतूत आदि की तीलियों से बनाई गई छोटी टोकरी (विवाह के अवसर पर लड़की को इस पर बैठा कर स्नान कराते हैं); **~तारणा** 1. लड़की को विवाह के समय (फेरे पड़ने के बाद) मामा द्वारा गोद में उठाकर घर के अंदर ले जाने की प्रथा, 2. लड़की का विवाह करना; **~बैठाणा** विवाह से लगभग पाँच-सात दिन पूर्व तेल-बान आदि के लिए लड़की को खारी पर बैठा कर स्नान करवाना।

खारी² (वि.) दे, खार्‍या।

खारी³ (पुं.) एक गूजर गोत।

खारी⁴ (स्त्री.) ख्वारी। लज्जा। अपमान। उदा.-हाँ जी बिना नौकरी खारी, ना जाता बखत निभाया (लचं)।

खारुआ (पुं.) हाथ-पैर अधिक समय पानी में रहने के कारण अंगुलियों के बीच पैदा होने वाला एक रोग।

खार्‍या (वि.) 1. खारा, नमक के स्वाद जैसा, 2. अरुचिकर; **~लागणा** किसी से घृणा होना। **खारी** (हि.)

खाल¹ (स्त्री.) 1. चर्म, चमड़ा, 2. चरसा, 3. धोंकनी, 4. मशक; **~उधेड़णा** 1. बहुत पीटना, 3. चमड़ा कमाना; **~में आणा** समझ में आना।

खाल² (स्त्री.) खाली स्थान, खोखला स्थान।

खाल³ (पुं.) एक गूजर गोत।

खाळ⁴ (पुं.) 1. खोद कर या बाँध लगा कर बनाया गया पानी का नाला, 2. नीची भूमि जहाँ वर्षा के समय स्वतः पानी बहता है; **~आँटणा** अधर्म का कार्य करना; **~खोदणा** कठिनाई मोल लेना। **खाल** (हि.)

खालड़ा (पुं.) 1. चरसा, 2. खाल।

खाळणा (पुं.) सुनार का एक औज़ार।

खाळवा (पुं.) छोटा नाला।

खालसा (पुं.) सिक्खों की एक विशेष मंडली।

खाला (स्त्री.) मौसी।

खाला (पुं.) दे खाळ।

खालिक (पुं.) स्वामी, खुदा।

खाळिया (पुं.) 'खाल' की सुरक्षा के लिए काम करने वाला आदमी जो एक क्यारी के भरने पर दूसरी क्यारी में पानी खोलता है।

खालिस (वि.) शुद्ध, जिसमें मिलावट न हो।

खाली (वि.) दे. खाल्ली।

खाळी (स्त्री.) छोटी नाली; **~मारणा** भूमि को समतल करना।

खाल्ली (वि.) 1. ठाली, 2. रिक्त, 3. केवल, सिर्फ; **~करणा** रीता करना; **~पेट** भूखा, निराहार मुँह; **~राम्मैं** ठाली बैठे हुए। **खाली** (हि.)

खास[1] (वि.) 1. विशेष, 2. निजी, 3. ठेठ, विशुद्ध।

खास[2] (स्त्री.) गधे की कमर पर बोरे के नीचे रीढ़ पर रखी जाने वाली कपड़े की गद्दी।

खासा (वि.) 1. अच्छा, भला, 2. नीरोग, 3. मध्यम श्रेणी का, 4. भरपूर; (दे. चोक्खा)।

खासियत (स्त्री.) विशेषता।

खाही (स्त्री.) 1. खेत की सुरक्षा के लिए चारों ओर खोदी गई खंदक, 2. बाँध; **~खोदणा** बाधा उत्पन्न करना; **~बांध णा** सुरक्षा का प्रबंध करना; **~भरणा** क्षतिपूर्ति करना।

खाह्‌भळा (वि.) दे. खाभळा।

खिंचणा (क्रि. अ.) 1. खिंचना, 2. सिकुड़ना, 3. तनना, 4. आकर्षित होना, मोहित होना, 5. भट्‌ठी की सहायता से तत्त्व निकलना, 6. चित्रित होना, 7. प्रताड़ित होना। **खिंचना** (हि.)

खिंचना (क्रि. अ.) दे. खिंचणा।

खिंचवाणा (क्रि. स.) 1. खींचने का काम दूसरे से करवाना, 2. प्रताड़ना करवाना, 3. शराब या अर्क आदि निकलवाना, 4. सख़्त करवाना, 5. खोया निकलवाना। **खिंचवाना** (हि.)

खिंचवाना (क्रि. स.) दे. खिंचवाणा।

खिंचा (पुं.) 1. खिंचने का भाव, 2. तनाव, 3. मतभेद। **खिंचाव** (हि.)

खिंचाई (स्त्री.) 1. खींचने की क्रिया, 2. खींचने की मज़दूरी, 3. प्रताड़ना।

खिंचाणा (क्रि. स.) दे. खिंचवाणा।

खिंचाव (पुं.) दे. खिंचा।

खिंडणा (क्रि. अ.) बिखरना, वस्तु का बिखरना। **खिंडना** (हि.)

खिंडमिंड (स्त्री.) बिखराव, अस्त-व्यस्त; **~करणा** बिखेरना, छिन्न-भिन्न करना; **~होणा** अस्त-व्यस्त होना, दूर तक फैलना, तितर-बितर होना।

खिंडवाणा (क्रि. स.) बिखेरवाना, 'खिंडणा' क्रिया को प्रे. रू.। **खिंडवाना** (हि.)

खिंढाणा (क्रि. स.) बिखेरना, बिखराना, छितराना। **खिंडाना** (हि.)

खिंढावा (वि.) फिजूल खर्च करने वाला। **खोवा~** फिजूलखर्ची।

खिंदाणा (क्रि.) दे. खँदाणा।

खिचड़ी (स्त्री.) दे. खीचड़ी।

खिच्चर (पुं.) गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न संतति। **खच्चर** (हि.)

खिज (स्त्री.) 1. चिढ़, 2. झुँझलाहट; (दे. खीज)। **खीज** (हि.)

खिजणा (क्रि. अ.) चिढ़ना।

खिजाणा (क्रि. स.) 1. चिढ़ाना, 2. दुःखी करना। **खिजाना** (हि.)

खिजाना (क्रि. स.) दे. खिजाणा।

खिजूर (वि.) 1. खजूर का वृक्ष, 2. इस पेड़ का फल। **खजूर** (हि.)

खिजोकड़ा (वि.) खीझने वाला।

खिझाना (क्रि. स.) दे. खिजाणा।

खिड़क (पृं.) किवाड़, कपाट, दरवाज़ा, एक पट का दरवाज़ा।

खिड़की (स्त्री.) 1. छोटा दरवाज़ा, 2. झरोखा, 3. अलमारी।

खिड़ना (क्रि.) 1. बिखरना, 2. खिलना।

खिणणा (क्रि. स.) 1. गोदना, हाथ, पैर, छाती, मुख आदि किसी अंग पर नाम, चित्र, पहचान आदि गोदना, (दे. गोदणा[1]), 2. लिखना, सुंदर लेख लिखना, 3. चित्र बनाना, 4. बुरी तरह छेदना। **खिनना** (हि.)

खिणवाणा (क्रि. स.) गुदवाना।
खिनवाना (हि.)

खिणाई (स्त्री.) 1. खिनने की मज़दूरी, 2. खिनने या गोदने का कार्य।
खिनाई (हि.)

ख़िताब (पुं.) पदवी।

ख़िदमत (स्त्री.) सेवा, (दे. टल्लैह)।

खिदवाणा (क्रि. स.) खिदवाना, खेदने या भेजने का काम अन्य से करवाना, (दे. खेदणा)।

खिन्नो (स्त्री.) कपड़े से मढ़ी हुई छोटी और सुंदर गेंद।

खिमा (स्त्री.) दे. छमा।

खिरखिराणा (क्रि. अ.) बंदर द्वारा 'खिर' 'खिर' की ध्वनि या आवाज उत्पन्न करना।

खिल (पुं.) 1. कुश्ती में चित करने का भाव, चित, 2. 'पट' का विलोम।

खिलकत (स्त्री.) दे. खलखत।

खिलकिटियाँ (स्त्री.) 1. हास्य-विनोद, 2. हँसी-मजाक।

खिलखिलाना (क्रि. अ.) 1. अट्टहास करना, 2. उन्मुक्त हँसी-हँसना।

खिलणा (क्रि. अ.) 1. फूटना, 2. कई भागों में छितर जाना–टुळक्या ओड़ खरबूज्जा अपने आप खिलग्या, 3. जचना, फबना–वो कोए भी लत्ता पहर ले सब खिल्लैं सैं, 4. प्रकाशित होना–दाद्दा का चंदन सूखताएँ खिल्लैगा, 5. खिलखिलाकर हँसना, 6. प्रसन्न होना–छोहरे का रुतबा बड्ढण की बात सुण कै बोलता खिलग्या (मन प्रसन्न हो गया), 7. बिखर जाना, छितर जाना, 8. कली से फूल होना, 9. खील होना, भुनकर खिलना; (वि.) खिलने के गुण वाला। **खिलना** (हि.)

खिलना (क्रि. अ.) दे. खिलणा।

खिलमाँ (वि.) 1. खिला हुआ–आज तैं खिलमाँ चावळ बणादे मंडमार काम्मल कोन्याह् लागते, 2. विकसित हुए, 3. बिखरे हुए, 4. दूर-दूर तक फैले हुए।
खिलवाँ (हि.)

खिल मुनि (पुं.) बालखिल्य मुनि।

खिलवाँ (वि.) दे. खिलमाँ।

खिलवाड़ (पुं.) 1. मज़ाक, उपहास, 2. खेल, क्रीड़ा, 3. मन-बहलाव।

खिलवाणा (क्रि. स.) 1. भोजन करवाना, 2. छोटे बच्चे को स्वयं न खिला कर दूसरे के द्वारा खेल में लगाना, खिलाना।
खिलवाना (हि.)

खिलवाना (क्रि. स.) दे. खिलवाणा।

खिलाड़ी (वि.) 1. खेलने वाला, 2. दक्ष, चतुर, 3. चुस्त; (पुं.) 1. खिलाड़ी, खेल खेलने में चतुर, 2. जादूगर; (स्त्री.) उछल-कूद, कौतुकपूर्ण खेल; **~करणा** आमोद प्रमोद करना–चाँदणी रात में कुत्ते खूब खिलाड़ी करैं सैं।

खिलाणा (क्रि. स.) 1. भोजन खिलाना, 2. रिश्वत देना, 3. खेल खिलाना।
खिलाना (हि.)

खिलात (पुं.) बादशाह की ओर से सम्मानार्थ दिया जाने वाला वस्त्रों का जोड़ा जिसमें सात कपड़े, मोतियों की माला, रत्नजड़ित पगड़ी तथा तलवार होती है (जो आदिलशाह ने हेमू को भेंट की)।

खिलाफ़ (वि.) विरुद्ध।

खिलारी (वि.); (पुं.); (स्त्री.); (दे. खिलाड़ी)।

खिलासी (स्त्री.) बड़ा नाला।

खिलोह्णा (पुं.) बालकों के खेलने की कोई वस्तु; **~सा** सुंदर।
खिलौना (हि.)

खिलौना (पुं.) दे. खिलोह्णा।

खिल्लात (पुं.) दे. खिलात।

खिल्ली (स्त्री.) उपहास, हँसी।

खिवाई (स्त्री.) सहनशीलता, क्षमा या धैर्य–तेरे में इतणी खिवाई ना सै अक किसै की सुण तै ले।

खिवाळ (वि.) सहनशील–मैं इतणा खिवाळ नाँह सूँ अक तेरी सह ल्यूँ।

खिसकणा (क्रि. अ.) 1. सरकना, 2. चुपके से निकल जाना।
खिसकना (हि.)

खिसकना (क्रि. अ.) दे. खिसकणा।

खिसकाणा (क्रि. स.) दे खसकाणा।

खिसणा (क्रि. अ.) 1. सट कर निकलना, 2. उलझना।
खसना (हि.)

खिसियाना (क्रि. अ.) दे. खिस्स्याणा।

खिस्सा (पुं.) 1. कहानी, कथा, 2. झगड़ा, तकरार। **किस्सा** (हि.)

खिस्स्याणा (क्रि. अ.) 1. लज्जित होना, 2. दाँत निकालना।
खिसियाना (हि.)

खिह्लवाणा (क्रि. स.) खेल खिलवाना, 'खिह्लाणा' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप।

खिह्लाणा (क्रि. स.) 1. खेल खिलाना, 2. बच्चों को खिलाना, 3. वंचिका देना।

खींचणा (क्रि. स.) दे. खेंचणा।

खींचतान (स्त्री.) दे. खींचमताणी।

खींचना (क्रि. स.) दे. खेंचणा।

खींचमताणी (स्त्री.) 1. दो गुटों का किसी वस्तु को हथियाने के लिए होने वाला झगड़ा, 2. कशमकश, 3. तनावपूर्ण स्थिति। **खींचतान** (हि.)

खींप (पुं.) हरा घास या झाड़ी जिसका रस्सा बनता है।

खीखी (स्त्री.) 1. बंदर द्वारा उत्पन्न ध्वनि, 2. हँसी; **~करणा** 1. व्यर्थ में हँसना, 2. खिसियाना।

खीच (स्त्री.) उलझन, झंझट; **~ब्याणा** 1. उलझन उत्पन्न होना, 2. न सुलझने वाली समस्या उत्पन्न होना।

खीचड़ी (स्त्री.) 1. बाजरा भिगोकर तथा बाद में उसे कूटकर और उसकी 'राळी' (छिलका) उतारकर पानी में पकाया गया लेह खाद्य पदार्थ जिसे जाड़े भर रात के समय घी–दूध या छाछ से तथा प्रातः 'बासी' रूप में खाते हैं, 2. दाल–चावल आदि की खिचड़ी, 3. कई बेमेल वस्तुओं की मिलावट, 4. खिचड़ी का सामान; **~घी होणा** 1. एक मत होना, 2. एक रस होना; **~चढावण का बखत** लगभग सायं चार बजे का समय; **ढाई चावळ की~** सबसे अलग होकर काम करने का भाव; **~राँधणा** खिचड़ी पकाना; **सीत ~** छाछ-खिचड़ी का भोजन।
खिचड़ी (हि.)

खीज (स्त्री.) 1. चिढ़, 2. ज़िद; **~कढाणा** 1. चिढ़ाना, 2. नाम धरना; **~काढणा** चिढ़ाने के लिए कोई शब्द, वाक्य या संकेत आदि निश्चित करना।
खीझ (हि.)

खीझ (स्त्री.) 1. दे. खीज, 2. दे. खिज।

खीझना (क्रि. अ.) दे. चिड़णा।

खीमखाप (पुं.) एक प्रकार का वस्त्र।

खीर (स्त्री.) दूध में पकाया हुआ चावल; **~खवाणा** 1. खीर खिलाकर अपना करना, 2. जान पहचान दृढ़ करना; **~बाँटणा** प्रसन्नता व्यक्त करना।

खीरा (पुं.) ककड़ी की जाति का एक फल।

खील (स्त्री.) भूना हुआ धान या अन्य कोई अन्न; ~ ~ **होणा** 1. टुकड़े- टुकड़े होना, 2. बिखरना; ~ **भुनवाणा** अन्न के दाने भाड़ में भुनवाना; ~ **सी खिलणा** 1. चमक उठना, खिल उठना, 2. टुकड़े-टुकड़े होना, 3. दूर-दूर बिखरना; **~सी भूणणा** गोली से मार डालना।

खील-भूगड़ा (पुं.) 1. एक वस्त्र जिस पर खील के चिह्न छपे होते हैं, 2. खील तथा भूगड़े।

खीस (पुं.) बच्चा देने के बाद गाय या भैंस का पहली बार निकाला गया दूध जो बहुत गाढ़ा होता है (गरम करने पर यह कुछ-कुछ खिचड़ी के समान गिलगिला हो जाता है, इसे आसपास के घरों में बाँट दिया जाता है, खीस को रतौंध, मिरगी, आदि रोगों के लिए ओषधि माना जाता है); **~देणा** उपहार देना (व्यंग्य में)–अड़ै के तू खीस देण आया था; **~लिकाड़णा** 1. महत्त्वपूर्ण कार्य करना 2. कठिन काम करना।

खीस्सा (पुं.) गोझ, गोज्झा, बराबर में लटकने वाली पाकेट।

खुंठणा (क्रि. अ.) 1. कुंठित होना, धार कुंठित होना –खुरपा, कसोल्ला, कुस सब खुँठगे, आज साँझ सी भरतु लुहार कै चँटवा ले, 2. काम रुकना– जेळी बिना मैं तै खुँटग्या, खेही क्यूकर लेज्याँ, 3. रुकना, आवश्यक काम के लिए रुकना–राह में आमता- आमता सीस्सू ने खूंट दिया न्यूँ बोल्या भरोट्टा ठवा दे।

खुंडणा[1] (क्रि. अ.) दे. खुँठणा।

खुंडणा[2] (क्रि.) दे. खूँठणा।

खुआणा (क्रि. स.) 1. भोजन खिलाना, 2. पालन-पोषण करना; **~प्याणा** 1. खिलाना-पिलाना, 2. खुशामद करना, 3. पालना-पोसना, 4. हृष्ट-पुष्ट करना। **खिलाना** (हि.)

खुखरणा (क्रि. अ.) बीझना, थोथा होना।

खुखळाणा (क्रि. स.) किसी वस्तु को खोखला करवाना।

खुखराणा (क्रि. स.) 1. किसी वस्तु (बाँस आदि) को बीच से पोली या खोखली कर देना, खोखला करना, 2. जड़ काटना–मूस्सयाँ ने गीहूँ, चणे कती खुखरा दिए, तुल. थुथराणा; (क्रि.अ.) बीझना, थोथा होना।

खुजलाना (क्रि. स.) दे. खुज्याणा।

खुजलाहट (स्त्री.) 1. दे. खुज्या, 2. दे. खाज

खुजली (स्त्री.) 1. दे. खाज, 2. दे. खुज्या।

खुजाणा (क्रि. स.) दे. खुज्याणा।

खुजाना (क्रि. स.) दे. खुज्याणा।

खुजानी (स्त्री.) खांड की बनी गोल टिकिया।

खुज्या (स्त्री.) खुजली; (क्रि.स.) 'खुज्याणा' क्रिया का आदेशात्मक रूप; **~ऊठणा** 1. किसी काम को करने की इच्छा होना, 2. टीस उठना; **~करणा** फुंसी-फोड़े आदि को खुजलाना, खुजलाना; **~चालणा** खुजली होना; **~मेटणा** 1. कार्य-सिद्धि करना, 2. टीस मेटना; **~होणा** 1. खुजली रोग से पीड़ित होना, 2. टीस उठना।

खुज्याणा (क्रि. स.) खुजलाना। **खुजाना** (हि.)

खुटक (पुं.) एक पक्षी।

खुटकणा (क्रि. स.) किसी वस्तु पर चोट मारकर तोड़ना।

खुट-खुट (स्त्री.) 1. 'खुट' 'खुट' की ध्वनि, 2. घोड़े के चलने से उत्पन्न ध्वनि।

खुट्ठा (वि.) दे. खूँट्ठा।

खुड़क (स्त्री.) 1. 'खड़' 'खड़' की ध्वनि, 2. खटका, डर, आशंका; **~लेणा** चोरी करने से पहले चोर द्वारा चारों ओर की आशंका का पता लगाना।

खुड़कणा (क्रि. अ.) 1. 'खट' 'खट' की ध्वनि होना, 2. सचेत होना; (वि.) 'खट' 'खट' की ध्वनि उत्पन्न करने वाला।

खुड़का (पुं.) 1. 'खट' 'खट' का शब्द, 2. शोर, ध्वनि, टकराने या पीटने की आवाज़, 3. खटका, आशंका।

खुड़काणा (क्रि. स.) 1. खटखटाना, 2. किसी वस्तु को खटखटा कर शोर मचाना, 3. सावधान करना, 4. याद दिलाना। **खड़काना** (हि.)

खुणस (स्त्री.) 1. खिन्न होने का भाव, क्रोध, 2. शत्रुता; **~करणा** 1. शत्रुता करना, 2. क्रोध करना; **~काढणा** शत्रुता निकालना। **खुनस** (हि.)

खुणसवाणा (क्रि. स.) क्रोधित करना।

खुणसाणा (क्रि. अ.) क्रोधित होना, खिन्न होना; (वि.) क्रोधी।

खुणसी (वि.) खिन्नमना, क्रोधी।

खुणस्याऊ (वि.) क्रोधी स्वभाव का।

खुद (अव्य.) स्वयं।

खुदकुशी (स्त्री.) आत्महत्या।

खुदगर्ज़ (वि.) स्वार्थी।

खुदणा (क्रि. अ.) खुदना, खोदा जाना।

खुदना (क्रि. अ.) दे. खुदणा।

खुद मुखत्यार (वि.) 1. स्वतंत्र, 2. स्वछंद, 3. स्वाश्रित, 4. मनमानी करने वाला। **खुद मुख़्तार** (हि.)

खुदरा (पुं.) 1. फुटकर चीज़, 2. फुटकर, रेजगारी।

खुदवाई (स्त्री.) दे. खुदाई।

खुदवाना (क्रि. स.) दे. खुदाणा।

खुदा (पुं.) ईश्वर। तुल. रब।

खुदाई (स्त्री.) 1. खोदने की प्रक्रिया, 2. खोदने की मज़दूरी। **खुदवाई** (हि.)

खुदाई (स्त्री.) 1. ईश्वरत्व, 2. दुनिया।

खुदाणा (क्रि. स.) 1. खुदवाना, 2. अंकित करवाना, 3. पत्थर आदि में कोई चीज़ खुदवाना, 4. गुदवाना।

खुदाळ (पुं.) खेत नलाने या मिट्टी खोदने का यंत्र जिसमें लंबी लाठी के साथ लोहे का फाल लगा होता है। **कुदाल** (हि.)

खुदाळा (पुं.) दे. खुदाळ।

खुदाळी (स्त्री.) मिट्टी खोदने की छोटी कस्सी। **कुदाली** (हि.)

खुद्दा (स्त्री.) दे. शीरा।

खुद्ध्या (स्त्री.) तेज भूख; **~लागणा** भूख लगना; **~मेटणा** भूख शांत करना। **क्षुधा** (हि.)

खुनसाना (क्रि. अ.) दे. खुणसाणा।

खुफ़िया (वि.) दे. कुफ़िया।

खुफ़िया पुलिस (स्त्री.) दे. कुफ़िया पुलस।

खुभक (स्त्री.) 1. चोट, बाहरी चोट, 2. टीस, 3. चुभन, 4. लकड़ी आदि का खुरदरा अंश।

खुभकणा (क्रि.) चभकणा, टीसना।

खुभणा (क्रि. अ.) 1. चुभना, 2. गड़ना।

खुभना (क्रि. अ.) दे. खुभणा।

खुभाणा (क्रि. स.) दे. गुभाणा।

खुभाना (क्रि. स.) दे. गुभाणा।

खुभात (स्त्री.) 1. परिश्रम, 2. चापलूसी।

खुभातण (वि.) परिश्रमी (महिला)।

खुभात्ती (वि.) परिश्रमी।

ख़ुमार (पुं.) 1. नशा, 2. अभिमान।

ख़ुमारी (स्त्री.) 1. मस्ती, 2. नशा, 3. सिर चकराने का भाव।

खुरंड (पुं.) सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी।

खुर (पुं.) 1. पशु के फटे खुर, 2. खुर के चिह्न।

खुरकाणा (क्रि.) तुल. धमकाणा।

खुरचण (स्त्री.) 1. दूध, खिचड़ी, दलिया आदि की पात्र के निचले भाग में जमी पपड़ी जो खुरचकर निकाली जाती है, 2. बचा-खुचा भाग, 3. जूठन, 4. एक मिठाई जो दूध से बनाई जाती है, 5. खुरचन खुरचने का पात्र (सीपी)। **खुरचन** (हि.)

खुरचणा (पुं.) खुरचन खुरचने की लोहे की सीपी; (क्रि. स.) 1. 'खुरचन' को खुरचना, 2. कुरेदना, खरोंचना; (वि.) तेज़ किनारों वाला (खुरचना)।

खुरचन (स्त्री.) दे. खुरचण।

खुरचना (क्रि. स.) दे. खुरचणा।

खुरचनी (स्त्री.) छोटा खुरचना, (दे. खुरचणा)।

खुरचवाणा (क्रि. स.) 1. खुरचवाना, 2. कुरेदवाना, खरोंचवाना।

खुरजी (स्त्री.) बड़ा थैला, झोला–मनैं भर कै धर लिया खुरजी में खाणा (लो. गी.)।

खुरधरा (वि.) जो समतल न हो। **खुरदरा** (हि.)

खुरपा (पुं.) घास खोदने के काम आने वाला लोहे का हत्थेदार यंत्र; **~पाड़ गुड़** छोटी-छोटी चक्की या पेड़ी का गुड़ जो खुरपे से काटकर तई से अलग किया जाता है।

खुरपी (स्त्री.) छोटा खुरपा।

खुरमा (पुं.) दे. सक्करपारा।

खुराँट (वि.) 1. बूढ़ा, 2. चालाक, 3. अनुभवी, 4. धूर्त। **खुर्राट** (हि.)

खुरा (पुं.) खुर वाला। दे. खुर।

खुराक (स्त्री.) 1. आहार, 2. ओषधि आदि की प्रमाणित मात्रा।

खुराड़ा (वि.) खुरदरा, (दे. खुरेह्ड़ा)।

खुराड़ी (वि.) बिन बिछोने की।

खुरिया (पुं) नवजात पशु के खुरी; **~चूटणा** पशु के बच्चे के जन्म के बाद उसके खुरों के नीचे की ओर जमे अतिरिक्त मैल को नाखूनों से चूँट कर गिराना ताकि उसके पैर ठीक तरह भूमि पर जम सकें; **~होणा** खुरी का रोग होना। **खुरी** (हि.)

खुरी (स्त्री.) 1. खुर, 2. खुर का चिह्न; **बिजन~** (दे. बिजन खुरी)।

खुरेरा (पु.) दे. खुहेरा।

खुरेहटी (स्त्री.) दे. चहली।

खुरेह्ड़ा (वि.) बिना बिछौने के; ~(–ड़ै) **पड़णा** चारपाई पर बिना वस्त्र बिछाए सो रहना।

खुलखुलिया (स्त्री.) कम खाँसी। काली खाँसी का विलोम।

खुलणा (क्रि. अ.) 1. आवरण, अवरोधक आदि का हटना, 2. बंदिश हटना–सिमट खुलगी ईब रास्सण मैं ना रही, 3. लज्जा हटना, संकोच न रहना, 4. रहस्य प्रकट होना, 5. नई संस्था, दुकान आदि का शुरू होना, 6. संस्था, आदि का नित्यकर्म आरंभ होना, 7. आकाश से बादल छँटना, 8. मन की बात कहना; **रामजी का~**बादल छंट कर वर्षा समाप्त होना। **खुलना** (हि.)

खुलना (क्रि. अ.) दे. खुलणा।

खुलवाणा (क्रि. स.) 1. बाँधने या जोड़ने वाली वस्तु को अलग करवाना, 2. कई भागों में बँटवाना–किम्मैं भी चीज़ लेले लोट खुलवाणा पड़ै से, 3. खोजने का काम अन्य से करवाना, 4. जेवर को तुड़वा कर फिर से गढ़ाना, 5. भेद निकलवाना।
खुलवाना (हिं.)

खुलवाना (क्रि. स.) दे. खुलवाणा।

खुलह्या (वि.) 1. बंधन रहित, 2. जो छिपा न हो; (क्रि. वि.) 1. बिना रोक-टोक के, 2. पर्याप्त मात्रा में– खुलह्या घी खा; (क्रि. अ.) 'खुलणा' क्रिया का भूतकालिक रूप। **खुला** (हि.)

खुला (वि.) दे. खुलह्या।

खुलासा (पुं.), सारांश; (वि.) स्पष्ट, साफ़-साफ़।

खुळिया (स्त्री.) दे. खुळी।

खुळी (स्त्री.) हाकी की तरह एक किनारे से कुछ अर्द्ध-वृत्ताकर मुड़ी खेलने की लकड़ी; **~खेलणा** कपड़ों की गेंद बनाकर 'खुळी' से खेलना; **गींड~** (दे. गींड-खुळी)।

खुल्लम (स्त्री.) 1. छूट, 2. पहल; **~करणा** 1. स्वछंद करना, 2. खुली चुनौती देना।

खुल्लम खुल्ल्हा (क्रि. वि.) 1. बेरोकटोक, 2. प्रकट रूप से, 3. साफ़-साफ़, 4. आमने-सामने; **~कहणा** डंके की चोट पर कहना; **~होणा** बिना डर या आशंका के सामने आना।

खुल्ल्या (वि.) दे. खुलह्या।

खुल्हाणा (क्रि. स.) दे. खुलवाणा।

खुवाणा (क्रि. स.) दे. खुआणा।

ख़ुश (वि.) प्रसन्नचित्त, (दे. राज्जी)।

ख़ुशकिस्मत (वि.) सौभाग्यशाली।

ख़ुशखबरी (स्त्री.) शुभ सूचना।

ख़ुशदिल (वि.) प्रसन्नचित्त।

ख़ुशबू (स्त्री.) सुगंधी, (दे. खसबोई)।

ख़ुशबूदार (वि.) सुगंधित।

ख़ुशमिजाज (वि.) प्रसन्न रहने वाला।

ख़ुशहाल (वि.) संपन्न।

ख़ुशहाली (स्त्री.) संपन्नता।

ख़ुशामद (वि.) दे. खुसामद।

ख़ुशामदी (वि.) दे. खुसामदी।

ख़ुशी (स्त्री.) प्रसन्नता, आनन्द।

ख़ुष्क (वि.) दे. खुसक।

ख़ुष्की (स्त्री.) दे. खुसकी।

खुसक (वि.) 1. सूखा, . जो तर न हो, 3. रूखे स्वभाव का। **ख़ुश्क** (हि.)

खुसकी (स्त्री.) 1. रूखापन, 2. नमी का अभाव। **ख़ुश्की** (हि.)

खुसटवाणा (क्रि. स.) 1. छिनवाना, 2. खिसकाने में सहायता करना।
खुसटवाना (हि.)

खुसणा (क्रि. अ.) 1. छिनना, 2. हाथ से निकलना, 3. अस्त-व्यस्त होना– उसके सारे बाळ खुस्से पड़े सैं। **खुसना** (हि.)

खुसना (पुं.) तंग मोहरी का पायजामा, तुल. सुत्थन।

खुसनी (स्त्री.) दे खुसना।

खुसामद (स्त्री.) 1. सेवा-सुश्रूषा–छोहर्याँ नैं बुढ़ाप्पै मैं बाप की चोक्खी खुसामद करी, 2. चापलूसी–इतणी खुसामद करे तैं राज्जा घोड़ी दे दे। **ख़ुशामद** (हि.)

खुसामदी (वि.) 1. सेवा करने वाला, टहल करने वाला, 2. चापलूस।
खुशामदी (हि.)

खुसामदी टट्टू (पुं.) चापलूस व्यक्ति।

खुसर पुसर (स्त्री.) कानाफूसी।

खुस्सन (पुं.) 1. दे. खुसना, 2. दे. सुथना।

खुहेरा (पुं.) पशु के शरीर की सफाई आदि करने के काम आने वाला लोह आदि का ब्रुश विशेष; **~करणा/ फेरणा** पशु के शरीर की सफ़ाई करने के लिए खुहेरा फेरना।

खुहद्धा (स्त्री.) लकड़ी द्वारा मारी गई ठोंक; **~लाणा** 1. कोई काम करने के लिए बाध्य करना, 2. लकड़ी के छोर से चोट करना; **~मारणा** लकड़ी के छोर (ठोड़) से ठोंक लगाना।

खुहलणा (क्रि. अ.) दे. खुलणा।

खूँखार (वि.) 1. हिंसक, 2. खून पीने वाला, 3. क्रूर, निर्दयी, 4. भयंकर, डरावना।

खूँगड़ (पुं.) दे. कूँग्गर।

खूँगा[1] (स्त्री.) धौंस।

खूँगा[2] (स्त्री.) मुसीबत।

खूँघणा (क्रि. स.) 1. तंग करना, 2. झकझोरना।

खूँट (पुं.) 1. किनारा, अंत, 2. दिशा, कोना–और कित्तै जाइये दक्खण खूँट मतना जाइये, 3. सूखा हुआ वृक्ष, 4. लक्कड़, 5. वह वृक्ष जिसकी टहनी-पत्ते काट लिए गए हों, 6. फसल काट लेने पर खेत में खड़े सूखे डंठल।

खूँटणा (क्रि. स.) दे. खूँठणा।

खूँटना (क्रि. स.) दे. खूँठणा।

खूँटा (पुं.) दे. खूँट्टा।

खूँटी (स्त्री.) दे. खूँट्टी।

खूँट्टा (पुं.) 1. पशु बाँधने का खूँटा, 2. पशु बाँधने का स्थान विशेष, 3. कर्म-स्थल, 4. जड़, 5. पक्ष, दल–तूँ कूणसे खूँट्टे का आदमी सै?; **~(-टै) खाणा** 1. पशु का खूँटे पर बँधे रहना, 2. पशु का अलाभकर होना; **~खाल्ली होणा** 1. पशु का मरना, 2. स्थान खाली होना; **~गाडणा** 1. विचित्र काम करना, 2. अपना स्थान मज़बूत करना, 3. जड़ मज़बूत करना, 4. पशु बाँधने के लिए भूमि में लकड़ी आदि गाड़ना; **~ठोक** 1. वह पशु जो अपना सिर हर समय खूँटे सें टकराता रहता है, 2. निर्भाग; **~थाण** खूँटे का स्थान जहाँ पशु को बाँधा जाता है; **नया~** पशु का नया खूँटा जहाँ उसका मन नहीं लगता (ऐसी स्थिति में गाय-भैंस कम दूध देती है); **~पड़वाणा** 1. स्थानच्युत कराना, 2. पशु द्वारा अपना खूँटा उखाड़ना **~पाटणा** 1. सभा विसर्जित होना, 2. किसी का कर्म-स्थल (कमठाणा) छुटना, 3. अन्न-जल समाप्त होना, 4. हल्का पड़ना, सम्मान कम होना; **~पुजणा** 1. योग्यता या प्रसिद्धि के कारण बहुत सम्मान मिलना, 2. घर बैठे सम्मान मिलना; **~(-टे) पै आणा** 1. बात मानना, 2. बराए रास्ते आना; **~(-टे) पै कूदणा** 1. किसी के भरोसे साहस दिखाना, 2. अन्य के भरोसे दुस्साहस करना; **~(-टै) बँधणा** 1. एक ही स्थान पर सीमित होना, 2. निष्कर्म होना, हाथ-पैर टूटने के कारण हिलडुल न सकना; **~बणाणा** 1. खूँटा गढ़ना, 2. अपना स्थान बनाना, सिफ़ारिश निकालना; **~भार्या** 1. खाता-पीता परिवार, 2. पहुँच वाला व्यक्ति; **~(-ट्टै) रँजणा** नए खूँटे पर पशु का मन

लगना;~(-टै) **रहणा** 1. अपने खूँटे पर बँधा रहना, 2. अपने स्थान पर स्थिर रहना। **खूँटा** (हि.)

खूँट्टी (स्त्री.) 1. दीवार में गढ़ी हुई लकड़ी, 2. मेख के आकार की लकड़ी, 3. मुख्य दाँतों के बराबर वाले नुकीले दाँत, 4. अंकुर; ~ **टाँगणा** 1. किसी के प्रयास को विफल करना, 2. निहत्था करना, 3. किसी वस्तु को सँभाल कर रखना; **~लीकड़णा** 1. बराबर वाले नए दाँत उगना, 2. बीज अंकुरित होना। **खूँटी** (हि.)

खूँट्ठा (वि.) कुंठित, भोंटा, जिसकी धार तीक्ष्ण न हो; **~पड़णा** 1. भोंटा होना, 2. नाकारा होना। **खूँटा** (हि.)

खूँठणा (क्रि. स.) 1. रोकना, 2. काम बंद करवाना, काम न करने देना, 3. प्रतिबंध लगाना। **खूटना** (हि.)

खूंड्डा (वि.) दे. खूँट्ठा।

खूँधणा (क्रि. स.) 1. रौंदना, 2. सींग या सिर से ज़मीन आदि को रौंदना, सींग, सिर या पैर से मिट्टी उछालना, 3. क्रोध या उन्माद की मुद्रा में पशु द्वारा उथल-पुथल मचाना। **खूँखना** (हि.)

खूँसणी (स्त्री.) दे. खुसनी।

खूँहड्डा (वि.) 1. वह (पशु) जिसका एक सींग टूट गया हो, 2. भोंटा, कुंठित, 3. लड़ाकू।

खूटचलणी (वि.) बदचलन।

खूड (पुं.) 1. हल जोतकर निकाली गई गहरी लकीर, 2. खेती, 3. खेत नापने का एक निश्चित प्रमाण; **~काढणा/खींचणा/लिकाड़णा** हल से खूड जोतना या निकालना; **~खूड** 1. बैलों को खूड में लाने के लिए हाली द्वारा उच्चरित शब्द, 2. चप्पा-चप्पा भूमि; **~~हँढाणा** 1. बहुत तंग करना, 2. फिराना, घुमाना; **~~हाँढणा** मारा-मारा फिरना, परेशान होना; **~बेचणा** खेत बेचना; **~बोणा** खेती बोना; **~(-डाँ) में रलाणा** 1. नष्ट करना, 2. बीजना; **~होणा** घर का खेत होना।

खूडणा (क्रि. स.) 1. जुताई करना, खूड निकालना, 2. सीधी जुताई के बाद कहीं-कहीं टेढ़ा खूड निकालना, 3. खेती के बीच-बीच गहरे खूड निकालना, 4. भूमि को चिह्नित करना।

खूडवारा (वि.) खूडभर (वर्षा का) प्रमाण, लगभग चार-छः अंगुल (वर्षा)।

खूणा (क्रि. अ.) 1. गुम होना, 2. भूल से किसी वस्तु को कहीं छोड़ देना।

खूद[1] (स्त्री.) 1. लगभग एक हाथ ऊँची हरी-भरी फसल, 2. बची-खुची व्यर्थ की चीज़।

खूद (स्त्री.) उछलकूद? दे. खूद।

खूद्दा (पुं.) 1. फोक, 2. गन्ना पेरने के बाद उसके बचे शेष भाग के छोटे-छोटे टुकड़े, तुल. खोही।

खून (पुं.) 1. लहू, 2. हत्या; **आँख्याँ मै~** प्रतिशोध लेने की इच्छा; **~उबळणा** क्रोधित होना; **~करणा** हत्या करना; **~का तिसाया** खून का प्यासा; **~खराब्बा** मारकाट; **~पसीन्ना** कठोर परिश्रम; **~पीणा** सताना, बहुत तंग करना; **~सवार होणा** किसी को मार डालने के लिए उतारू होना; **~होणा** 1. हत्या या क़त्ल होना, 2. जोश होना।

खूनमखून (वि.) लहूलुहान, खून से लथपथ।

खूनी (वि.) दे. खून्नी।

खून्नी (पुं.) क़ातिल; (वि.) 1. क्रूर, 2. लाल रंग का; ~**रंग** गहरा लाल रंग, खून जैसा रंग। **खूनी** (हि.)

ख़ूब (वि.) बहुत, ज़्यादा, अधिक;

खूबड़ (पुं.) एक गूजर गोत।

ख़ूबसूरत (वि.) दे. कपसूरत।

ख़ूबी (पुं.) ख़ासियत, विशेषता।

खूसट (पुं.) 1. शुष्क हृदयी, 2. बूढ़ा; (वि.) 1. अशक्त, 2. निर्भाग।

खूस्सट (पुं.) दे. खूसट।

खेंचणा (क्रि. स.) 1. घसीटना, 2. पकड़ कर बाहर निकालना, 3. तानना, 4. किसी ओर ले जाना, 5. सोखना, चूसना, 6. तत्त्व या अर्क़ निकालना, 7. अंदर की तरफ़ साँस लेना। **खींचना** (हि.)

खेऊ (वि.) सहनशील, तुल. खिवाळ।

खेटक (पुं.) खेड़ा, छोटा गाँव।

खेड (स्त्री.) व्यर्थ का चक्कर, घुमाई।

खेडणा (क्रि. स.) खेदना, भगाना।

खेड़ा (पुं.) 1. वह ऊँची कंकरीली भूमि जहाँ कभी कोई गाँव बसा हुआ था, 2. ऊजड़ भूमि या भाग, 3. उजड़े हुए गाँव के ढेर पर बसा हुआ गाँव, 4. छोटा गाँव, किसी मुख्य गाँव के साथ बसा छोटा गाँव; ~**ऊज्जड़** (दे. ऊज्जड़ खेड़ा); ~**होणा** 1. गाँव का गाँव ध्वस्त होना, 2. वंश समाप्त होना; ~**पूजणा** खेड़े के देवताओं को पूजना; ~**बधणा** गाँव की जन-संख्या बढ़ना, बस्ती का विस्तार होना; ~**बसणा** 1. नया गाँव बसना, 2. वंश वृद्धि होना।

खेड़ी (स्त्री.) 1. छोटा गाँव, 2. किसी गाँव के भग्नावशेष पर बसा छोटा गाँव, 3. किसी मुख्य गाँव की तलहटी में बसा छोटा गाँव; **खोवा**~ (दे. खोवा खेड़ी)।

खेड्डे (पुं.) 1. किसी बहुत बड़े-बूढ़े की मृत्यु पर उसके समधाने वालों का उपहास-बहुल नृत्य, 2. खोटे काम, बुरे काम, वर्जित कार्य; ~**आग्गै आणा** दुष्कर्म का फल भोगना; ~**करणा/ खोदणा** बुरे काम करना।

खेढणा (क्रि. स.) दे. खेदणा।

खेणा[1] (क्रि. स.) 1. बर्दाश्त करना, चुपचाप सुनना, सहन करना, 2. बोझा बहन करना, बोझ बर्दाश्त करना, 3. बलात् दबाव मान लेना, 4. नाव चलाना। **खेना** (हि.)

खेणा[2] (क्रि.) बिजली की चमक।

खेत (पुं.) 1. वह भूमि जिसमें खेती की जाती है, 2. निर्जन या पड़त की भूमि, 3. युद्ध-भूमि, 4. देश या प्रदेश, 5. लंबा चौड़ा क्षेत्र या भूभाग–गंगाजी के खेत मैं म्हारा बस्या देस हरियाणा सै, 6. फ़सल; ~**के खेत** विस्तृत भू-भाग; ~**मारणा** मोर्चा जीतना; ~**रहणा** शहीद होना। **क्षेत्र** (हि.)

खेत करड़का (पुं.) कठोर भूमि का खेत, भान का विलोम।

खेत-क्यार (पुं.) खेती-क्यारी।

खेतड़ (वि.) खेत में रहने का आदी।

खेत-डरावा (पुं.) 1. पशु-पक्षी को डराने के लिए लकड़ी पर कपड़ा, काली हंडिया आदि रखकर बनाई गई डरावनी आकृति, 2. छलावा, 3. बनावटी वस्तु।

खेतिहर (पुं.) किसान।

खेती (स्त्री.) दे. खेत्ती।

खेत्ती (स्त्री.) 1. फ़सल, 2. खेत में फ़सल बोने का कार्य। **खेती** (हि.)

खेत्ती-बाड़ी (स्त्री.) खेती का काम, कृषि कर्म। **खेतीबाड़ी** (हि.)

खेदणा (क्रि. स.) 1. पशु आदि को भगाना, खदेड़ना, 2. घर से निकालना, 3. टरकाना, टहलाना। **खेदना** (हि.)

खेद्दा (पुं.) खेत का रखवाला।

खेना (क्रि. स.) दे. खेणा।

खेप (स्त्री.) 1. ढेरी–खेप की खेप रोट्टी खा कै ऊप्पर तैं सीत पीग्या, 2. उतनी वस्तु जो एक बार ले जाई जाए, 3. लदान, 4. खाद की ढेरी।

खेब (पुं.) सूखी झाड़ियों के ढेर। दे. खेह्ही।

खेम (स्त्री.) क्षेम।

खेलंता.(क्रि.) खेलता हुआ।

खेल (पुं.) दे. खेल्ह।

खेल (पुं.) स्वाँग।. दे. 1. स्वाँग, 2. दे. खेळ।

खेळ (स्त्री.) पशुओं के पानी पीने के लिए कुएँ के साथ बनाया गया जल का स्थान (गरमी की ऋतु में इसको भरना या भरवाना पुण्य कार्य माना जाता है)।

खेळ-खोट्टे (पुं.) 'खेळ' भरने के लिए ईंट-पत्थर-चूने आदि से बनाया गया कोष्ठ या कोठा जो 10 से 20 हाथ लंबा, चौड़ा तथा गहरा होता है, इसके तीन ओर 'खेळ' होती है ('खेळ' में पानी के निकास के लिए एक मोरी होती है जिसे आवश्यकतानुसार खोला और बंद किया जाता है); **~करवाणा /भरवाणा/ लिकड़- वाणा** गरमी के दिनों में जोहड़ आदि में पानी सूखने के कारण गाँव के पशुओं की सुविधा के लिए पुण्यस्वरूप पानी भरवाना (पानी भरवाने के लिए कई बार दो तीन घर रुपया इकट्ठा कर लेते हैं, कभी-कभी किसान स्वयं अपने बैल जोत कर भी इन्हें भर लेता है, धर्मार्थ पानी भरने की घोषणा गाँव में डोंडी पिटवा कर (रेळ फिरवा कर) दी जाती है)।

खेलणा (क्रि. स.) दे. खेह्लणा। **खेलना** (हि.)

खेलणी-मेलणी (मात्ता) (स्त्री.) एक प्रकार की चेचक या खसरा जो अधिक कष्टप्रद नहीं होता और रुग्ण-अवस्था में भी बालक खेलता रहता है।

खेलना (क्रि. स.) दे. खेह्लणा।

खेवक (पुं.) नाव खेने वाला, केवट; (वि.) सहनशील।

खेव (स्त्री.) कमी।

खेवट (पुं.) दे. खेवक।

खेवा (वि.) 1. किसी बात या आपत्ति को सहन करने वाला, सहनशील, 2. दब्बू, 3. अहसानमंद; (पुं.) नाविक।

खेस[1] (पुं.) मोटी चद्दर विशेष।

खेस[2] (पुं.) बाल, सिर के बाल। **केश** (हि.)

खेसी (स्त्री.) केशों का एक आभूषण।

खेह (स्त्री.) राख–होली की खेह धर ल्यो कितै टूणे- टुणमण मैं काम आज्या।

खेही (स्त्री.) दे. खेह्ही।

खेह्र (पुं.) दे. खेह्र-खाँस्सी।

खेह्र-खाँस्सी (पुं.) जुकाम-खाँसी आदि।

खेह्ल (पुं.) 1. क्रीड़ा, 2. हल्का कार्य, 3. अद्भुत लीला; **~करणा** 1. काम को गंभीरता से न करना, 2. बेगार काटना; **~खेह्ल में** 1. हँसी-मज़ाक में, 2. सुगमता पूर्वक; **~खेह्लणा** 1. चालाकी करना, वंचिका देना, छद्म कार्य करना,

धोखा देना, 2. अलौकिक कार्य करना; **~मचाणा** 1. बहुत शोर करना, 2. काम को गंभीरता से नहीं करना, 3. प्रसन्नता का वातावरण उपस्थित करना; **~होणा** मज़ाक होना। **खेल** (हि.)

खेह्लणा (पुं.) खिलौना; **~सा** खिलौने जैसा सुंदर; (क्रि. स.) 1. क्रीड़ा करना, 2. धोखा देना। **खेलना** (हि.)

खेह्ही (स्त्री.) 1. बहुत-सी सूखी झाड़ियों (झरबेरी) को इकट्ठा करके बनाई गई भारी ढेरी, 2. झोली, 3. आलिंगन; **~भरणा** 1. काबू में करना, कब्ज़ा करना, 2. पाशबद्ध करना।

खैं (स्त्री.) 1. 'खैं' की ध्वनि, 2. गोली, तीर, गेंद आदि या अन्य किसी वस्तु के तेजी से गुजरते समय उत्पन्न ध्वनि; **~दे नैं** 1. बहुत तीव्र गति से, 2. 'खैं' 'खैं' की ध्वनि के साथ।

खैंच (स्त्री.) 1. अनबन, 2. तनाव, 3. किसी वस्तु के सिकुड़ने का भाव; (क्रि. स.) 'खैंचणा' क्रिया का आदे. रूप; **~ताण** 1. खींचतान, 2. अनबन।

खैंडका (पुं.) दे. खंडवा।

खैड़[1] (पुं.) साँडों की लड़ाई।

खैड़[2] (स्त्री.) टकराव/लड़ाई झगड़ा।

खैर[1] (पुं.) एक पेड़ जिससे कत्था तैयार किया जाता है।

खैर[2] (स्त्री.) कुशल, भलाई–अपणी खैर चाह्वै सै तै अड़ै तैं रात्तूँरात लीकड़ज्या; **~मणाणा** कुशल-क्षेम की कामना करना। **ख़ैर** (हि.)

खैर[3] (अव्य.) अस्तु–खैर! हुया सो हुया। **ख़ैर** (हि.)

खैरसल्ला (स्त्री.) राज़ीखुशी।

खैरा (वि.) 1. कत्थई रंग का, 2. भूरे रंग की आँख वाला, 3. सफ़ेद तथा नीले रंग की आँखों का (बैल), (दे. कैरा)।

ख़ैरात (स्त्री.) 1. दान, पुण्य, 2. दान-पुण्य में मिली वस्तु। 3. फोकट का माल।

ख़ैरियत (स्त्री.) 1. कुशलक्षेम, 2. कल्याण, भलाई।

खों-खों (स्त्री.) 1. खाँसते समय उत्पन्न ध्वनि, 2. बंदर की आवाज़।

खोंडी (स्त्री.) दे. खूँट्टी।

खोल (स्त्री.) स्पष्ट सौदा; (क्रि. स.) 'खोलणा' क्रिया का आदे. रूप; **~करणा** 1. स्पष्ट बात कहना, 2. लेन-देन की बात निश्चित करना, भाव निश्चित करना; **~होणा** विवाह-शादी का लेन-देन निश्चित होना।

खो (पुं.) 1. विनाश, 2. मृत्यु, 3. कुसमय; **~का बखत** विनाश काल।

खोई (स्त्री.) दे. खोही, (वि.) खोई हुई–खोई चीज़ पराई; (क्रि. अ.) 'खोणा' क्रिया का, भूतकालिक स्त्रीलिंग, एक व. का रूप।

खोऊ (वि.) घर की चीज़ें बरबाद करने या लुटाने वाला।

खोखरा कोट (पुं.) रोहतक के पास एक खंडहर-गाँव जहाँ यौधेयों के सिक्के बनाने के ठप्पे प्राप्त हुए हैं।

खोखला (वि.) दे. खोखळा।

खोखळा (वि.) पोला। **खोखला** (हि.)

खोखा (पुं.) लकड़ी आदि का बनाया गया अस्थायी कमरा।

खोचम-खोच्चा (वि.) 1. गुथमुथ, 2. हाथापाई की स्थिति, 3. आलिंगन-बद्ध।

खोज (पुं.) 1. चिह्न, 2. अवशेष–खोज के किसै का किसै तैं मिट्ट्या सै; (स्त्री.) तलाश; ~**मिटाणा** नामोनिशाँ मिटाना, नापैद करना, समूल उच्छेद करना।

खोजणा (क्रि. स.) तलाश करना, ढूँढ़ना। **खोजना** (हि.)

खोजना (क्रि. स.) दे. खोजणा।

खोजा[1] (वि.) दे. खोज्जा।

खोजा[2] (पुं.) 1. दे. ख्वाजा, 2. दे. खोज्जा।

खोजी (वि.) खोजने या ढूँढ़ने वाला।

खोज्जा (वि.) 1. भूमि सूँघकर मीठे पानी का स्थान बताने वाला, 2. खोजने या ढूँढ़ने वाला; (पुं.) 1. हिजड़ा, 2. एक जाति। **खोजा** (हि.)

खोट (पुं.) 1. दोष, बुराई, ग़लती, 2. मिलावट, सोने-चाँदी में अन्य धातु की मिलावट, 3. कमी, गिरावट, चारित्रिक दोष, 4. हानि; (क्रि. स.) '**खोटणा**' क्रिया का आदे. रूप; ~**आणा** बुरी आदत पड़ना; ~**करणा** 1. बुरा काम करना, 2. हानि पहुँचाना; ~**काढणा** 1. दोष निकालना, नाम धरना, 2. धातु को तपा कर शुद्ध करना, 3. बुराई दूर करना; ~**मढणा** कलंक लगाना; ~**होणा** 1. दोष होना, 2. मिलावट होना, 3. कमी रहना।

खोटणा (क्रि. स.) अन्न आदि को साफ़ करना, सँवारना।

खोटा (वि.) दे. खोट्टा।

खोटापन (पुं.) दे. खोट।

खोटुआ (पुं.) 1. खाती या बढ़ई द्वारा किया जाने वाला लकड़ी का छुट-पुट टूट-फूट का काम–खाती देख्याँ खोटुआ नाई देख्याँ बाळ (खाती को देखकर घर के छुट-पुट काम करवाने की और नाई को देखकर बाल कटवाने की इच्छा होती है), 2. दोष छिद्र; ~**कढवाणा/मरवाणा** खाती से लकड़ी का छुट-पुट काम करवाना।

खोट्टा (वि.) 1. बुरा, 2. नकली (सिक्का आदि)–खोट्टा पईसा अर खोट्टा बेट्टा भीड़ पड़ी मैं काम आवैं सैं; ~**करणा** बुरा बताना, अपराधी ठहराना; ~**खर्‌या** अच्छा-बुरा, जैसा-तैसा; ~(-**टै**) **खोदणा** बुरे काम करना; ~**पड़णा** 1. झूठा सिद्ध होना, 2. अधिक काम के कारण अंगों में निश्चेष्टता आना। **खोटा** (हि.)

खोट्टी (वि.) 1. बुरी, अशुभ, 2. मिलावटी, 3. बुरे आचरण वाली; ~**कहणा** अशुभ वचन कहना; ~**खरी सुणाणा** फटकारना, भली-बुरी सुनाना; ~**होणा** दुर्घटना होना, बुरा होना। **खोटी** (हि.)

खोड़[1] (स्त्री.) कमी। **खोट** (हि.)

खोड़[2] (स्त्री.) 1. रेखा, 2. मूसली– ऊक्खल मैं मुँह दे तै खोड़ तैं ना डर्‌या करैं, 3. रिश्वत, 4. खोल, 5. चोला, शरीर–माणस की खोड़ मैं आ कै अगत सुधार ले; ~**खींचणा** लकीर खींच कर प्रतिज्ञा करना।

खोड़ा (वि.) 1. गंजा, 2. लंगड़ा, 3. अपंग; (पुं.) (दे. काणा-खोड़ा)।

खोड़ा-खोड़ी (पुं.) दे. खोड़िया।

खोड़िया (पुं.) लड़के के विवाह के समय संपन्न एक प्रथा, बारात दुल्हन के घर चली जाने पर वर पक्ष की स्त्रियों द्वारा रात भर किए गए अनेक प्रकार के

स्वाँग और नाच; **~रचणा** अश्लील गान-नृत्य आदि करना।

खोड्ढर (पुं.) पुराने वृक्ष का खोखला भाग, तुल. खरखोड्ढर। **कोटर** (हि.)

खोणा (क्रि. स.) 1. गँवाना, गुम करना, 2. नष्ट करना, मारना–मेरी ना मान्नीं तै दीन-दुनीं तैं खो द्यूँगा; (क्रि.अ.) गुम होना, किसी वस्तु का भूल से कहीं छूट जाना। **खोना** (हि.)

खोद (स्त्री.) 1. लकड़ी के एक छोर से मारी गई ठोंक, 2. खुदाई, 3. छानबीन; (क्रि. स.) 'खोदणा' क्रिया का आदे. रूप; **~खोद के बात बूझणा** गहरी छानबीन करना; **~लाणा** 1. तंग करना, 2. सेंध लगाना।

खोदणा (पुं.) भूमि खोदने का यंत्र; (क्रि. स.) 1. खोदना, खुदाई का काम करना, 2. उभारना, 3. खोद कर निकालना, 4. बार-बार याद दिलाना, 5. घाव हरा करना। **खोदना** (हि.)

खोदना (क्रि. स.) दे. खोदणा।

खोद्दी (स्त्री.) नलाई, निराई–खात, खोद्दी, पाणी, खेत्ती की ज्यान सैं; (क्रि. स.) 'खोदणा' क्रिया का भूत का., एकवचन, स्त्रीलिंग रूप; **~लाणा** 1. नलाई करना, 2. खुदाई का काम आरंभ करना, 3. तंग करना।

खोना (क्रि. स.) दे. खोणा।

खोपड़ा (पुं.) 1. कपाल, 2. सिर, 3. बुद्धि, 4. गोला, खोपरा; **~खाणा** दिमाग़ चाटना।

खोपड़ी (वि.) 1. विचित्र (व्यक्ति), 2. कुशाग्र बुद्धि –सै तै खोपड़ी ए (है तो कुशाग्र बुद्धि का); (स्त्री.) 1. खोपड़ी की हड्डी, 2. बिना धड़ का सिर।

खोप्पर (वि.) 1. कुशाग्र बुद्धि वाला, 2. साहसी, 3. दुस्साहसी।

खोप्पर-टन (वि.) 1. अत्यधिक साहसी, 2. दुस्साहसी।

खोबरा (पुं.) एक जाट गोत।

खोभ (स्त्री.) 1. चोट, 2. उलझने से कपड़े आदि में उत्पन्न फटन, 3. चोट के कारण हुई आँख की लाली, 4. लकड़ी आदि का उभरा हुआ या खुरदरा अंश।

खोभणा (क्रि. स.) 1. गाड़ना, 2. चुभाना, धँसाना, 3. कम गहरा गाड़ना।

खोया (पुं.) दे. खोहवा।

खोर (स्त्री.) 1. खुरली, नाँद, 2. भगा; **~मैं देणा/ लाणा** पछाड़ना, हराना।

खोरड़ा (पुं.) 1. मोटे कपड़े की बनी घघरी, 2. मोटे वस्त्र की ओढ़नी, 3. मोटा अन्न; **~खाणा** चना, मूँग, मकई, बाजरा आदि खाना।

खोरणा (पुं.) दे. खुहेरा; (क्रि. स.) 1. खुजलाना, 2. घाव का खुरंड उतारना, 3. खुरचना, 4. हल्की निराई करना। **खोरना** (हि.)

खोरा (पुं.) 1. एड़ी साफ करने या शरीर का मैल उतारने के लिए मिट्टी पकाकर बनाया गया पान के पत्ते के आकार का कुंदेदार पात्र, 2. पीली ईंट का टुकड़ा जिसे तवा साफ करने के काम लाया जाता है; **मैल~** (दे. मैल खोरा)।

खोरी (स्त्री.) 1. हल्की या कम गहरी जुताई, 2. खुजली; (वि.) ख़ार खाने

वाला, द्वेषी; **~लाणा** 1. हल्की जुताई करना, 2. खुजलाना।

खोल (पुं.) दे. खोळ।

खोळ (पुं.) 1. ऊपर से चढ़ाया गया ढक्कन, 2. गिलाफ़, अबरा, 3. केंचुली, 4. म्यान, 5. शरीर, 6. ढीला वस्त्र।

खोलड़ा (पुं.) दे. खोळ।

खोलणा (क्रि. स.) 1. छिपाने या रोकने वाली वस्तु को हटाना, 2. बंधन हटाना या ढीला करना, 3. गुप्त या गूढ़ बात को प्रकट करना।

खोळा (वि.) 1. वह पशु जो दूध देना बंद कर दे। दे. नाटणा 2. दे. क्षेत्र. उदा. गंगा जी के खोळे में तनै मुरदे. दीखें हाऊ (लचं)।

खोळिया (पुं.) 1. छोटा खोल, 2. छोटी रजाई।

खोली (स्त्री.) दे. खोळ।

खोल्ली (स्त्री.) बूढ़ी भैंस।

खोवा[1] (वि.) नष्ट करने वाला; (पुं.) खोया, घनीभूत दूध; **~खेड़ी** विनाश करने वाला।

खोवा[2] (पुं.) जवार बाजरे में लगने वाला एक कीट।

खोवा खिंढावा (वि.) दे. खोवा खेड़ी।

खोवा फूल (पुं.) खवे का एक आभूषण।

खोसड़ा (पुं.) टूटी हुई जूती, तुल. लीत्तर; **~उछाळणा** किसी विवादास्पद वस्तु का खोसड़े को ऊपर उछाल कर खिल-पट माँग पर निर्णय करना, टॉस करना, (दे. लीत्तर)।

खोसणा (क्रि. स.) 1. छीनना, झपटना, 2. तिनका-तिनका निकालना, 3. खिसकाना– आज गाड्डी मैंह् कै पाँच गंड्डे खोस्से, 4. खुजलाना, खोरना।

खोसणी (स्त्री.) 1. खुजली, 2. प्राप्त करने की प्रबल इच्छा। उदा. पती के ना की सती बीर नै लगी खोसणी दीखै। (लचं)।

खोह (स्त्री.) 1. गुफा, 2. बिल, 3. कोटर।

खोहभड़ा (पुं.) 1. तिनका, 2. डंठल, 3. ठूँठ, 4. काँटा, 5. फाँस; **चालणा/लागणा** फाँस या ठूँठ आदि चुभना।

खोहवा (पुं.) खोया, मावा; **~काढणा** खोया निकालना। **खोया** (हि.)

खोहिया (पुं.) कोल्हू की आग में खोही झोंकने वाला। 1. दे. झोंक्का, 2. दे. मूठिया।

खोही (स्त्री.) गन्ना पेरने के बाद बचा फोक जिसे गुड़ पकाने के लिए जलाने के काम लिया जाता है।

खौलना (क्रि. अ.) दे. आवटणा।

खौवा (पुं.) दे. खवा।

ख़्याल[1] (पुं.) 1. ध्यान, 2. विचार; **~करणा** 1. याद रखना, 2. महसूस करना, 3. ध्यान रखना।

ख्याल[2] (पुं.) दे साँग।

ख्यावस (स्त्री.) दे. थ्यावस।

ख्यास (स्त्री.) 1. सावधानी, 2. स्मृति; **~करणा** 1. सावधानी बरतना, 2. याद करना, 3. ध्यान करना।

ख्याल (पुं.) 1. स्वाँग का एक छंद, 2. एक तर्ज विशेष 3. ऐतिहासिक एवं परंपरागत कथा। दे. सांग।

ख़्वाजा (पुं.) 1. मुसलमान फ़कीर, 2. रनिवास का नपुंसक भृत्य।

ख़्वाब (पुं.) 1. स्वप्न, 2. नींद।

ख़्वाहिश (स्त्री.) इच्छा, अभिलाषा।

ग

ग व्यंजन में कवर्ग का तीसरा वर्ण जिसका उच्चारण स्थान कंठ है, हरियाणवी में इसके उच्चारण में कंठ अनुपातत: कम खुलता है और कम वायु निकलती है।

गंग[1] (स्त्री.) नाभि, (दे. सूँड्डी)।

गंग[2] (स्त्री.) दे. गंगा।

गंगा (स्त्री.) पवित्र गंगा नदी जिसमें (विशेषत: कार्तिक पूर्णिमा के दिन) स्नान करना शुभ माना जाता है; **गढ़** ~ गढ़ गंगा का वह स्थान जहाँ अस्थि विसर्जन किया जाता है; **~का खेत** हरियाणा।

गंगाजल (पुं.) गंगा जी का पवित्र जल जिसे अनेक धार्मिक कृत्यों में काम में लाया जाता है।

गंगाजली (स्त्री.) शपथ आदि लेने के लिए हथेली पर रखा गया गंगाजल।

गंगाजी (स्त्री.) श्री गंगा जी, गंगा नदी; **~की सूँह ठाणा** 1. गंगा की सौगंध खाना, पवित्र सौगंध खाना, 2. अपने को निर्दोष बताना; **~नुहाणा** 1. कठिन कार्य को संपन्न करने में सहायता करना, 2. पुण्य का भागी बनना, 3. कृतकृत्य करना; **~न्हाणा** 1. पुत्री के विवाह से निवृत्त होना, 2. कार्य सकुशल संपन्न होना; **~बहणा** पुण्य का द्वार खुलना; **~मैं जो बोणा** 1. निस्सहाय की सहायता करना, 2. पुण्य का काम करना, 3. अगत सुधारना।

गंगाळ (स्त्री.) दे. कूँड।

गंगासागर (पुं.) 1. वह तीर्थ-स्थल जहाँ गंगा समुद्र में गिरती है, 2. धातु की टोंटीदार झारी विशेष।

गंगुआ तेल्ली (पुं.) 1. निर्धन व्यक्ति, 2. साधारण आदमी।

गंग्वर (पुं.) वीर।

गंज (पुं.) सिर के बाल उड़ने का रोग।

गंज्जा (वि.) जिसके सिर के बाल कहीं-कहीं से उड़ गए हों; (पुं.) गंजापन। **गंजा** (हि.)

गँठणा (क्रि.) जूती का गाँठा जाना। (स्त्री.) बनना। आपस में घनिष्ठ मित्रता होना। उदा.–दोनुवाँ की खूब गट्ठै सै। दे. गाँठणा।

गंठवाळ (पुं.) जाटों का एक गोत।

गंठा (पुं.) 1. प्याज, पका प्याज, 2. मोटी ग्रंथि; **~सा** मोटा और छोटे कद का व्यक्ति, ठिगना।

गंठी (स्त्री.) 1. छोटा प्याज, 2. ग्रंथि।

गंठू (पुं.) 1. गाँठ, गले की माँसपेशी, टाउंसल, 2. आटा, खिचड़ी, दलिया आदि की गाँठें जो पकते समय पड़ जाती हैं, 3. लिंग का अग्रभाग; **~दबाणा** गल-ग्रंथियों को अँगूठे पर गर्म राख लगाकर दबाना; **~पड़णा/ फूलणा/ सूजणा/होणा** टाउंसल बढ़ना; **~फोड़णा** 1. चमचा, डोऊ, रई आदि घुमाकर खिचड़ी, दलिया, हलुवे आदि की कच्ची गाँठें तोड़ना, 2. गल-ग्रंथियों को फोड़ना या दबाकर मवाद निकालना।

गंड (पुं.) एक जाट गोत।

गंडल (पुं.) श्वान।

गंडळ (स्त्री.) दे. डाक्कळ।

गंडवा (वि.) 1. भीरू, कायर, 2. गुदा मैथुन कराने वाला, 3. पुरुषों के लिए प्रयुक्त एक अपशब्द।

गंडस्या (स्त्री.) लगभग 60 अंश के कोण पर जुड़ी ढाई हाथ लंबी दो लकड़ियाँ जिन पर हल रखकर ले जाया जाता है।

गंडा[1] (पुं.) 1. गन्ना, ईख, 2. ज्वार आदि का तना, 3. शारीरिक, मानसिक आदि रोगों को दूर भगाने के लिए किसी सिद्धहस्त व्यक्ति से बनवाया गया सूत, पीपल के पत्ते, धातु आदि का जंत्र, 4. चार-चार करके गिनने की एक पद्धति, 5. मोर के पंखों से बनाई गई पशुओं की माला, 6. पक्षी के गले का डोरा, 7. नाला, डोरा; **~करवाणा/बँधवाणा** 1. कष्ट निवारण के लिए किसी सिद्ध-हस्त से गंडा बनवाना, 2. भूत-प्रेत आदि के रोगों से बचने के लिए तावीज बनवाना; **~खोलणा** 1. अनंत चतुर्दशी का धागा खोलना, 2. तावीज की अवधि पूरी होने पर उसे उतारना; **~गूथणा** दिवाली के दिनों में पशुओं को सजाने के लिए मोर के चंदों में रंग-बिरंगे कपड़े गूँथकर माला बनाना; **पंच**~ईख पेरने का उद्‌घाटन करने से कुछ दिन पूर्व खेत से बानगी के रूप में उखाड़े जाने वाले पाँच गन्ने; **~पाड़ना** खेत से गन्ना उखाड़ना; **~बाँधना** 1. प्रतिज्ञा करना, 2. तावीज धारण करना, 3. पवित्र प्रतिज्ञा करना; **~लाणा** ईख पेरते समय कोल्हू में गन्ना लगाना।

गंडा[2] (पुं.) ईख। यह कई प्रकार का होता है– लालड़ी, काला जौला, पोंडा, हरा बाँस, हाथी चिंघाड़, सरकंड़ा, सरबती।

गंडा-डोरी (पुं.) तावीज, जंत्र।

गंडास (पुं.) 1. लंबी लाठी के साथ जुड़ा गंडासा, 2. फरसा, 3. सुंदर स्त्री।

गंडासा (पुं.) दे. गंडास्सा।

गंडास्सा (पुं.) गंडासा, कुट्टी आदि काटने का बीटेदार गंडासा; **~(-स्याँ) का बखत** बहुत तड़के का समय, वह समय जब गाँव के गंडासे चलने शुरू होते हैं; **पेच का** ~ बड़े चक्र वाला मशीन का गंडासा जिसमें दो फरसे लगे होते हैं, एक आदमी पीछे से चारा (गैरा) धकेलता है तथा एक या दो व्यक्ति बीटा (हथेली) पकड़ कर चक्र घुमाते हैं (अब यह बिजली से भी चलाया जाने लगा है); **~फेरणा** मशीन या पेच का गंडासा चलाना; **बीट्टे का**~ कुट्टी (सान्नी) काटने का हाथ का गंडासा।

गंडास्सी (स्त्री.) झाड़ी काटने का अस्त्र जिसमें लगभग दो हाथ लंबी लकड़ी के नीचे कुछ तिरछी, लोहे की फाल लगी होती है। **गंडासी** (हि.)

गंडीरी (स्त्री.) गंडेरी, गन्ने के छोटे-छोटे टुकड़े।

गंडेरी (स्त्री.) दे. गंडीरी।

गंढोळक (पुं.) दे. गोद्‌धू।

गंदगी (स्त्री.) 1. मैलापन, मलिनता, 2. कूड़ा-करकट।

गंदा (वि.) 1. मलिन, 2. अशुद्ध, अपवित्र, 3. घिनौना; (पुं.) (दे. गंदगी)।

गंदुम (पुं.) दे. गीहूँ।

गंदुमी (वि.) दे. गीहुआँ।

गंध (स्त्री.) 1. महक, 2. सुगंध, 3. दुर्गंध, 4. लेशमात्र, 5. भनक, शक।

गंधक (स्त्री.) पीले रंग का एक खनिज पदार्थ।

गंधरब (पुं.) 1. यक्ष, 2. गाने-बजाने वाली एक जाति। **गंधर्व** (हि.)

गंधरब-ब्याह (पुं.) गंधर्व विवाह, वह विवाह जो वर और वधू अपनी मन-मरजी से कर लेते हैं।

गंधर्व (पुं.) दे. गंधरब।

गंधर्व-विवाह (पुं.) दे. गंधरब ब्याह।

गंधलक (पुं.) दे. गोद्धू।

गंधारी (स्त्री.) धृतराष्ट्र की पत्नी।

गंधी (पुं.) 1. इत्र आदि बेचने वाला, 2. गँधिया कीड़ा 3. एक घास।

गंधीला (वि.) दे. गंधील्ला।

गंधील्ला (वि.) 1. गंदा रहने वाला, 2. बदबूदार।

गंधील्ली (वि.) 1. गंदी रहने वाली, 2. एक गाली।

गंभीर (वि.) 1. गहरा, 2. भयंकर, जटिल, 3. घोर, भारी।

गँवई (वि.) 1. गाँव से संबंधित, 2. गँवारू।

गँवाना (क्रि. स.) 1. बिताना। 2. खोना।

गँवार (वि.) दे. गँवारू।

गँवारू (वि.) 1. देहाती, ग्रामीण, 2. मूर्ख।

गऊ (स्त्री.) गाय; (वि.) भोले स्वभाव का; **~का जाया** 1. बछड़ा, 2. बैल, 2. सज्जन व्यक्ति; **~की सूँह** गाय की सौगंध, पवित्र सौगंध।

गऊ-दान (पुं.) विवाह या मृत्यु आदि के समय किया जाने वाला गऊ का दान जो अब नक़दी देकर भी किया जाता है।

गगन (पुं.) आकाश; **~उडारी** आकाश में उड़ने की क्रिया।

गग्गड़ (पुं.) दे. घग्गड़।

गच/गच्च (स्त्री.) 1. पक्का, चूने से बनाया हुआ, 2. कोमल स्थान में किसी वस्तु के धँसने से उत्पन्न ध्वनि; (वि.) मोटा, शक्तिशाली; **~दणेसी/देसी** 'गच' की ध्वनि के साथ।

गछन्ना (स्त्री.) मैले कपड़ों की गाँठ।

गज (पुं.) 1. लंबाई नापने का एक नाप जो ढाई हाथ लंबा होता है, 2. दूल्हे द्वारा धारण किया जाने वाला लोहे का बेंत, 3. लोहे की छड़ी; **~करणा** सीधा करना, अकड़ निकालना, पीटना; **~का घूँघट** लंबा घूँघट।

गजनी (स्त्री.) हथनी।

गजब (पुं.) 1. विचित्र बात, 2. अंधेर, अन्याय, 3. विपत्ति, आपत्ति; **~का गोळा** अनौखा सौंदर्य। **ग़ज़ब** (हि.)

गजबण (वि.) विचित्र काम करने वाली, गजब ढाने वाली, अनोखी।

गजबी (वि.) 1. विपत्ति ढाने वाला, 2. अनोखा। **ग़ज़बी** (हि.)

गजर-गजर (स्त्री.) दूध निकालते या बिलोते समय उत्पन्न ध्वनि।

गजरा (पुं.) 1. गाजर के पत्तों का चारा, 2. फूलों का हार, 3. कलाई का एक गहना, 4. आग की धूनी; **~जलाणा** मकर संक्रांति के दिन बहुत तड़के घर के बाहर सार्वजनिक स्थान पर उपलों का ढेर जलाना; **~लाणा** तापने के लिए उपलों का ढेर लगाना; **~सेकणा** आग तापना, मकर संक्रांति के दिन प्रातः स्नान करके आग तापना।

गजराई (पुं.) श्रेष्ठ हाथी। ऐरावत।

गजल (स्त्री.) फारसी और उर्दू का एक छंद। **ग़ज़ल** (हि.)

गज्जयाणा (क्रि. स.) 1. झागों से भरना, 2. 'गजर' 'गजर' की ध्वनि से पशु की धार निकालना।

गज्झक (स्त्री.) तिल-गुड़ आदि से बनी एक मिठाई। **गजक** (हि.)

गटकण (वि.) सब कुछ गटक जाने वाली।

गटकणा (क्रि. स.) 1. निगलना, खाना, 2. हड़पना, दबाना।

गटकना (क्रि. स.) दे. गटकणा।

गटका (पुं.) रस, आनंद, चसका; **~पड़णा/होणा** चसका पड़ना–तन्नै तै बात्ताँ का गटका पड़ग्या; **~लेणा** आनंद लेना, मज़ा लूटना।

गटकू (वि.) 1. सब कुछ खा-पी जाने वाला (व्यक्ति), 2. बातों में रस लेने वाला।

गटको (वि.) दे. गटकणा।

गट-गट (स्त्री.) घूँट भरते समय गले से उत्पन्न ध्वनि; **~चढाणा/पीणा** जल्दी-जल्दी घूँट भरना।

गटजोड़ा (पुं.) 1. दंपती, 2. वर-वधू, 3. पति-पत्नी के उपवस्त्र आदि को गाँठ से बाँधने का भाव; **~करणा** विवाह के समय दुल्हा-दुल्हन की चद्दर के पटके की गाँठ बाँधना; **~(-डे) की जात** एक धार्मिक कृत्य जो वर-वधू के विवाह के बाद किसी स्थानीय या कुलदेवी-देवता आदि के सम्मुख संपन्न होता है (इस समय वर-वधू ग्रंथि-बंधन के साथ देवी-देवता के सम्मुख नतमस्तक होकर धनधान्य, पुत्र आदि की कामना करते हैं); **~~देणा** ग्रंथि-बंधन के साथ स्त्री-पुरुष का कुल-देवी या देवता के सम्मुख नतमस्तक होना; **~धोकण** देवी-देवता के द्वारे जाकर आशीर्वाद-प्राप्ति के लिए वर-वधू का नतमस्तक होना।

गटजोड़िया (पुं.) 1. एक साथ उत्पन्न बच्चे, यमज, 2. समान आयु के दो बच्चे, 3. साथी, 4. एक रस्सी से बँधे दो पशु, 5. युग्म, युगल, 6. पति-पत्नी का जोड़ा; (वि.) 1. समान, 2. मिलते-जुलते, 3. एक साथ उत्पन्न; **~साँप** नर-मादा साँप जो सदा इकट्ठे रहते हैं, (दे. जोड़ला)।

गटणा (क्रि.) दे. गटकणा।

गटूरणा (क्रि. स.) 1. ध्यान से देखना, 2. आँख फाड़-फाड़ कर देखना, 3. क्रोधभरी दृष्टि से देखना, 4. आश्चर्यचकित दृष्टि से देखना,

गट्टा (पुं.) 1. पैर का टखना, 2. हुक्के की पैंदी से ऊपर का भाग; (वि.) ठिगना; **~तारणा** टखने की हड्डी तोड़ना; **~फेरणा** पाँच-सात लोगों द्वारा हुक्का पीते समय उनमें से सबसे छोटे द्वारा हुक्के की नाल बारी-बारी सबकी ओर घुमाना; **~बाँधणा** टखनों के आपस में टकराव से बचने के लिए उन पर नीले रंग का धागा बाँधना [टखनों को मामा (कंस) भानजा (कृष्ण) कहा जाता है जो द्वेषवश टकरा जाते है]; **~भिड़णा** कमजोरी या अन्य कारणें से टखनों का आपस में टकराना; **~(-ट्याँ) मारणा** चोर या पशु को वश में करने के लिए टखनों पर लाठी का प्रहार करना; **~(-ट्याँ) लहू उतरणा** अधिक समय तक खड़ा रहने के कारण टखनों पर सूजन आना।

गट्टू (वि.) नाटे कद का।

गट्ट्याँ (क्रि. वि.) गट्टो तक, टखनों तक; **~गट्ट्याँ** टखनों तक; **~समान्नी** टखनों तक का नाप– गट्ट्याँ समान्नी पाणी बरस्या।

गट्ठड़ (पुं.) बड़ी गठरी या पोटली; **~बाँधणा** 1. सामान समेटना, 2. सामान

को बेतरतीब इकट्ठा करके गठरी बाँधना; **~मारणा** ढेर इकट्ठा करना। **गट्ठर** (हि.)

गट्ठर (पुं.) दे. गट्ठड़।

गट्ठा (पुं.) दे. गट्ठड़।

गठजोड़ा (पुं.) दे. गटजोड़ा।

गठड़ी (स्त्री.) 1. पोटली, 2. जमा की गई पूँजी; **~करणा** 1. रुपया पैसा जोड़ना, 2. छुपाकर रुपया पैसा जोड़ना; **~खोलणा** 1. पैसा लुटाना, 2. जमा किया धन प्रदर्शित करना; **~होणा** धन एकत्रित होना। **गठरी** (हि.)

गठणा (क्रि. अ.) 1. चमड़े आदि का गाँठा जाना, 2. बनना, प्यार होना–नेहरू अर गांधी की खूब गट्ठ्या करती, 3. कार्य सिद्ध होना, काम बनना–तेरा मतलब गठग्या ईब तूँ जा। **गठना** (हि.)

गठरी (स्त्री.) दे. गठड़ी।

गठवाणा (क्रि. स.) 1. चमड़े की टूटी वस्तु पुनः सिलवाना, 2. मित्रता कराना, मेल-जोल कराना। **गठवाना** (हि.)

गठवाना (क्रि. स.) दे. गठवाणा।

गठाई (स्त्री.) 1. गाँठने का कार्य, 2. गाँठने की मज़दूरी।

गठाणा (क्रि. स.) दे. गठवाणा।

गठिया (पुं.) एक रोग जिसमें जोड़ों में सूजन आ जाती है।

गठिया-बा (पुं.) दे. गठिया।

गठीला (वि.) दे. गठील्ला।

गठील्ला (वि.) 1. गाँठदार, गाँठ वाला, 2. सुगठित शरीर वाला, 3. पेचीदा। **गठीला** (हि.)

गड़ंग (पुं.) 1. गर्व की बात, गर्वोक्ति, 2. बड़ाई, झूठी बड़ाई; **~ठोकणा/पेलणा** 1. बहुत बड़ा झूठ बोलना, 2. गर्व की बात कहना।

गड़ंगण (वि.) 1. बड़ाईखोर (महिला), 2. बहुत बड़ा झूठ बोलने वाली।

गड़ंगी (वि.) 1. सदा गर्व की या अपनी बड़ाई की बात कहने वाला, 2. झूठा, 3. बड़ाईखोर।

गड़गड़ाट (पुं.) 'गड़गड़' की ध्वनि; **~ऊठणा** 1. तेज़ी से भाग निकलना, 2. दौड़ते समय 'गड़गड़' की ध्वनि होना; **~ठाणा** पछाड़ना, भगाना; **~होणा** 1. बादल गरजना, 2. बिजली की चमक के समय 'गड़-गड़' की ध्वनि उत्पन्न होना। **गड़गड़ाहट** (हि.)

गड़गड़ाणा (क्रि. अ.) 1. गरजना, 2. क्रोधित होना, 3. गिड़गिड़ाना, अनुनय-विनय करना; (क्रि. स.) 1. हुक्का बजाना, जल्दी में हुक्के की दो घूँट भरना, 2. गुड़गुड़ाना। **गड़गड़ाना** (हि.)

गड़गड़ाना (क्रि. अ.) दे. गड़गड़ाणा।

गड़गड़ाहट (स्त्री.) दे. गड़गड़ाट।

गड़गत्ता (पुं.) दे. अड़बंध।

गड़गम (स्त्री.) 1. मटका रखने का स्थान, 2. मटका रखने की तिपाई आदि, 3. लकड़ी से बना चौकोर आकृति का स्टैंड जिस पर बिलोनी को रखकर दूध बिलोया जाता है, (दे. गिड़गम)।

गड़गोई[1] (स्त्री.) वह स्थान जहाँ गुड़ पकाया जाता है।

गड़गोई[2] (स्त्री.) दे. छान।

गडणा (क्रि. अ.) 1. घँसना, चुभना, 2. खड़ा होना, जमना, 3. पीड़ा पहुँचना, 4. ठेस पहुँचना, 5. किसी वस्तु पर आँख लगना, 6. गाड़ा जाना, 7. दफ़न

होना; (वि.) गाड़े जाने योग्य (एक गाली)। **गड़ना** (हि.)

गड़ना (क्रि. अ.) दे. गडणा।

गड़पणा (क्रि. स.) दे. गुळपणा।

गड़बड़ (स्त्री.) ग़लती, 2. भूल, 3. अव्यवस्था। **गड़बड़ी** (हि.)

गड़बड़झाला (पुं.) 1. गोलमाल, 2. उपद्रव, दंगा।

गड़बड़ा (पुं.) शरद पूर्णिमा को बच्चों द्वारा मनाया जाने वाला पर्व जिस में वे मिट्टी के 'गड़बड़ों' की पूजा कर भिक्षा माँगते हैं।

गड़बड़ाना (क्रि. अ.) 1. गड़बड़ी होना, 2. अव्यवस्थित होना, 3. बिगड़ना; (क्रि. स.) 1. गड़बड़ी में डालना, 2. बिगाड़ना।

गड़बड़ी (स्त्री.) दे. गड़बड़।

गडरणी (स्त्री.) 1. गडरिया की पत्नी, 2. गड़रिया जाति की महिला।

गड़राणा (क्रि.) गर्वित होना (?) उदा. –एक तरफ था बेग वचन का उस पै गड़रावै था।

गडरिया (पुं.) 1. भेड़-बकरी चराने वाला, 2. एक अनुसूचित जाति।

गड़वा (पुं.) 1. मिट्टी का टोंटीदार कलश, 2. कलश, लोटा; **~पूजणा** पुत्र-जन्म के बाद जच्चा द्वारा मिट्टी या धातु का छोटा कलश सिर पर रखकर कूआँ पूजने जाना।

गडवाणा (क्रि. स.) गड़वाना, 'गडणा' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप।

गड़वाल (पुं.) फालतू समय में गाड़ियाँ खड़ी करने का स्थान, 2. बैलगाड़ियों के पड़ाव का स्थान।

गडवाळा (पुं.) 1. गाड़ी हाँकने वाला, गाड़ीवान, वाहक, सारथी, 2. श्रीकृष्ण (सारथी)।

गडवाळिया (पुं.) गाड़ीवान, (दे. गडवाळा)।

गड़वी (स्त्री.) 1. छोटी लुटिया, 2. टोंटीदार लुटिया।

गड़हूँभ (पुं.) ऐसा फोड़ा जिसका मुँह बहुत छोटा किन्तु शरीर के अन्दर व्याप्ति अधिक हो, तुल. कचूम; **~पाकणा** ऐसी फूंसी का पकना या होना।

गड़हूंभा (पुं.) बेल पर लगने वाला अनार के समान के कड़ुआ फल जो अनेक औषधियों में काम आता है।

गडियारा (पुं.) दे. गोंड्डा।

गड़ी (स्त्री.) छोटी लुटिया, गोल पेंदे की लुटिया।

गड़ीक (पुं.) गाड़ियों का समूह।

गडील (पुं.) कुशल गाड़ीवान। दे. गडवाळा।

गड़ुआ (पुं.) दे. गड़वा।

गड़ूलणा (पुं.) तीन पहियों का छोटा गडरा जिसे पकड़ कर बच्चा चलना सीखता है।

गड़ूस (पुं.) मुसलमान, तुल. गाड़ा।

गडेरा (पुं.) गडरिया।

गडेरिया[1] (पुं.) दे. गडरिया।

गडेरिया[2] (पुं.) ऊन का बुनकर।

गडोणा (क्रि. स.) 1. धँसाना, 2. चुभाना। **गाड़ना** (हि.)

गड़ोना (क्रि. स.) दे. गडोणा।

गड्डण जोग्गी (स्त्री.) एक गाली जो अधिकतर लड़कियों को दी जाती है।

गड्ड-मड्ढ (स्त्री.) बेमेल चीजों की मिलावट; (वि.) मिला-जुला।

गड्ढा (पुं.) दे. गढ़ा।

गड्ढी (स्त्री.) दे. गढी।

गढ (पुं.) 1. गढ़ गंगा, गढ़ मुक्तेश्वर, 2. क़िला, 3. मोर्चा;**~जीतणा/मारणा** असाधारण सफलता प्राप्त करना।

गढ गंगा (पुं.) गंगा के किनारे गढ़- मुक्तेश्वर तीर्थ (जहाँ स्नान करना पुण्य-कर्म माना गया है), गढ़-मुक्तेश्वर का वह स्थान जहाँ अस्थि-विसर्जन किया जाता है (ब्रजघाट)। **गढ़गंगा** (हि.)

गढ़ना (क्रि. स.) दे. घड़ना।

गढ मारु (पुं.) कहानी किस्सों में वर्णित एक स्थान, मरवण का गढ़, (दे. मरवण)।

गढ़वाली (पुं.) 1. गढ़वाल का वासी, 2. गढ़वाल की बोली।

गढ़ा (पुं.) गड्ढा।

गढ़ाना (क्रि. स.) दे. घड़ाणा।

गढी (स्त्री.) 1. ऊँचे स्थान पर बसा छोटा गाँव, 2. वह गाँव जहाँ पहले कभी छोटा क़िला था (अंग्रेज़ों ने गाँव की गढियों को समाप्त करवाया), 3. छोटा क़िला, 4. छोटा गाँव, 5. गाँव का एक खंड।

गण (पुं.) 1. **स्वभाव**–किसै-किसै माणस का गण इसा हौ सै अक घर मैं किस्सै ने बी सुख की साँस ना लेण दे, तुल. मिथन, 2. दूत, सेवक, 3. जाति, 4. जत्था, झुंड, 5. नक्षत्र-गण;**~मिलणा** 1. एक मत होना, 2. एक दूसरे के प्रति सहनशीलता का व्यवहार करना, 3. जन्म-नक्षत्र विवाह के अनुकूल ठहरना।

गणतंत्र (पुं.) प्रजातन्त्र।

गणदेवता (पुं.) 1. गणेश जी, 2. समूहचारी देवता।

गणना (स्त्री.) गिनती।

गणनायक (पुं.) गणेश।

गणपत (पुं.) 1. गणेश, 2. शिव। **गणपति** (हि.)

गणपति (पुं.) दे. गणपत।

गणराज्य (पुं.) जनता के प्रतिनिधियों द्वारा चलाया जाने वाला राज्य।

गणिका (स्त्री.) वेश्या।

गणित (पुं.) 1. हिसाब, 2. गणितशास्त्र।

गणेश (पुं.) दे गणेस।

गणेस (पुं.) 1. पार्वती पुत्र गणेश, शुभ कार्यों में प्रथम पूज्य देवता, 2. पीली मिट्टी या कंकर के चारों ओर कच्चा धागा लपेट कर सर्वप्रथम पूजा के लिए बनाई गई प्रतिमा; **गोब्बर**~गोबर गणेश, मूर्ख; **~चौथ** गणेश चतुर्थी, भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी (इस दिन चंद्र-दर्शन दोषपूर्ण माना जाता है क्योंकि चंद्रमा सूर्य की मृत्यु किरण द्वारा प्रकाशित होता है), तुल. डंडा चोथ। **गणेश** (हि.)

गत (स्त्री.) दशा, हालत;**~करणा/ बणाणा** दुर्गति करना;**~भूलणा** सुध-बुध भूलना; **~होणा** मोक्ष मिलना। **गति** (हि.)

गतवाड़ (पुं.) दे. गितवाड़।

गति (स्त्री.) दे. गत।

गत्ता (पुं.) काग़ज़ के पत्तों की दफ्ती।

गद (स्त्री.) दे. गध।

गदगदा (वि.) 1. कोमल, रुई के समान कोमल, 2. गद्देदार। **गुदगुदा** (हि.)

गदड़-बिला (पुं.) जंगली बिलाव।

गदबड़ (स्त्री.) एक बरसाती शाक, पुनर्जवा की एक जाति।

गदर (पुं.) 1. मार-काट, 2. लूट-खसोट, 3. विद्रोह, 4. खलबली, 5. ईसवी सन् 1857; **~मचाणा** 1. लूट-खसोट करना, 2. नियमों का बेरोकटोक उल्लंघन करना; **~मचाणा** 1. राजा के विरुद्ध विद्रोह खड़ा होना, 2. लूट-खसोट मचना, 3. क़ायदे क़ानून ताक पर रखे रहना, 4. भगदड़ मचना।

गदराणा (क्रि. अ.) 1. जवानी में अंगों का भरना, 2. गाजर-मूली आदि सब्जी का फूलना। **गदराना** (हि.)

गदराना (क्रि. अ.) दे. गदराणा।

गदाम (पुं.) गद्देदार वस्तु, तुल. गद्दम।

गदाळा (पुं.) गदाला, लंबी कुश।

गदेला (पुं.) दे. गदेल्ला।

गदेल्ला (पुं.) 1. रूई का बिछौना, 2. गुदगुदा या नरम बिछौना। **गदेला** (हि.)

गद्दम (स्त्री.) गुदगुदा स्थान या बिछौना।

गद्दर (वि.) दे. गाद्दर।

गद्दा (पुं.) 1. गदेला, 2. बाँकापन या टेढ़ापन–कुस में गद्दा पड़ग्या, 3. रगड़, घर्षण, 4. चारे की पूली।

गद्दी (स्त्री.) 1. राजगद्दी, 2. वह स्थान जहाँ बैठकर व्यापारी व्यापार करता है, 3. गुदगुदा आसन, 4. साधु या मठ आदि की परंपरा में चलने वाली गद्दी, 5. काठी, 6. राज; **~पलटणा** राज बदलना; **~बैठणा** 1. सिंहासनारूढ़ होना, 2. राज बदलना;, **~हालणा** सिंहासन डाँवा डोल होना।

गद्य (पुं.) छंद रहित रचना।

गध (स्त्री.) धमाके की आवाज; **~दे सी/दे नैं/ दणे सी** धड़ाम से।

गधका (पुं.) 1. धक्का, 2. दिल के धड़कने की ध्वनि, 3. डर, खटका।

गधलाणा (क्रि. अ.) 1. आँख में लाली-सी होना, 2. पानी गिधला होना, 3. आकाश में धूलि छाना। **गिधलाना** (हि.)

गधा (पुं.) एक लद्दू पशु; (वि.) मूर्ख; **~(~धे) आळे तीन दिन** बचपन की चंचलता, सौंदर्य तथा कोमलता; **~कुरड़ी पै रंज्जै** व्यक्ति अपने गुण, स्वभाव तथा प्रकृति के अनुसार ही अपना स्थान चुनता है; **~(-धे) ताहीं बाहणा** छोटा-बड़ा हर रोज़गार कर छोड़ना।

गधागध (स्त्री.) 'गध-गध' की ध्वनि।

गधा-मूसळी (स्त्री.) 1. मार-पिटाई, 2. ऊधम-मस्ती।

गधा लोट (स्त्री.) वह स्थान जहाँ गधा अपनी थकान उतारने के लिए लोटपोट होता है (एक धारणा के अनुसार गधालोट से गुज़रने से पैरों में भड़कन हो जाती है अत: इस स्थान पर थूक कर बच निकलना चाहिए); **~मैं आणा** गधा लोट में आने के कारण पैरों में भड़कन लगना।

गधेळिया (स्त्री.) गधे बाँधने का स्थान।

गनगौर (स्त्री.) चैत्र पूर्णिमा का दिन (इस दिन स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती हैं, यह प्रथा हरियाणा के राजस्थान से सटे क्षेत्र में प्रचलित है)।

गन्ना (पुं.) ईख। दे. गंडा[1]।

गप (पुं.) झूठी बात, मन बहलाने के लिए कही बात; (स्त्री.) भोजन करते समय मुँह से उत्पन्न ध्वनि; **ठोकणा/ पेलणा/मारणा** मनोरंजन के लिए बे सिर-पैर की बात कहना।

गपकणा (क्रि. स.) झटपट खा जाना, चट कर जाना। **गपकना** (हि.)

गपकना (क्रि. स.) दे. गपकणा।

गपगप (स्त्री.) भोजन करते समय उत्पन्न ध्वनि, (क्रि. वि.) रुचिपूर्वक; **~खाणा** उतावला होकर भोजन करना, रुचि के साथ भोजन करना।

गपड़का (पुं.) 1. खीर आदि तरल भोजन को हाथ से खाते समय उत्पन्न ध्वनि, 2. एक अंजलि भर प्रमाण; **~भरणा/मारणा** हथेली और पोरवों पर खीर, खिचड़ी, राबड़ी आदि तरल भोजन को रखकर मुँह में ले जाना।

गपा-गप (स्त्री.) 1. जल्दी-जल्दी भोजन करने का भाव, 2. चाव से भोजन करने का भाव, 3. 'गप-गप' की ध्वनि।

गपोड़ (पुं.) 1. बड़ा झूठ, 2. मनोविनोद या अहम् तृप्ति के लिए कही गई बात, 3. गप हाँकने वाला व्यक्ति।

गपोड़न (स्त्री.) गप हाँकने वाली स्त्री।

गपोड़-संक (पुं.) गप हाँकने वाला, गपोड़ी।

गपोड़ा (पुं.) कपोल-कल्पना; (वि.) दे. गपोड़िया; **~चलाणा/ठोकणा/मारणा/हाँकणा** गप हाँकना। **गप** (हि.)

गपोड़िया (वि.) गप हाँकनेवाला, छोटी बात को बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करने वाला।

गपोड़ी (वि.) दे. गपोड़िया।

गप्पी (वि.) दे. गपोड़िया।

गप्फा (पुं.) 1. बड़ा ग्रास, 2. लाभ, फ़ायदा; **~मारणा** 1. अच्छा भोजन मिलना या खाना, 2. अधिक लाभ कमा लेना; **~लागणा** 1. काम बनना, 2. लाभ होना।

गफ (वि.) मोटा, घना, सघन, सघन बनावट का; **~लत्ता** मोटा और सघन वस्त्र; **~होणा** 1. मोटा वस्त्र पहनकर सरदी से सुरक्षित होना, 2. धुलने के बाद कपड़े का मोटा होना।

गफ़लत (स्त्री.) 1. बेपरवाही, 2. बेख़बरी, 3. भूल, चूक, 4. भ्रम।

गबन (पुं.) ख़यानत।

गबरू (वि.) दे. गाभरू।

गबरून (स्त्री.) एक विशेष प्रकार का वस्त्र, गबरडीन।

गभणा (क्रि. अ.) दे. गुभणा।

गभरुआ (वि.) दे. गाभरू।

गभरू (वि.) दे. गाभरू।

गभाक (स्त्री.) 'गभ' की ध्वनि जो जल भरते समय उत्पन्न होती है।

गभास (पुं.) गर्भाशय; **~लिकड़णा** रोग के कारण गर्भाशय का बाहर लटकना।

गम (पुं.) दुःख, शोक; (स्त्री.) कुएँ में किसी भारी वस्तु के गिरने से उत्पन्न ध्वनि।

गमाँर (वि.) मूर्ख। **गवाँर** (हि.)

गमा (पुं.) दे. दगड़ा।

गमाणा (क्रि. स.) 1. गुम करना, 2. व्यर्थ में नष्ट करना। **गँवाना** (हि.)

गमीणा (पुं.) 1. गोपनीय संदेश जो नाई, ब्राह्मण या संदेशवाहक द्वारा भेजा जाता है, 2. किसी के द्वारा लाया गया या भेजा गया संदेश, संदेश; **~आणा** 1. संदेश मिलना, 2. बुलावा आना; **~करणा** संदेश ले जाने का कार्य करना; **~साधणा** 1. संदेश पहुँचाना, 2. कार्य सिद्धि करना या करवाना।

गया (पुं.) 1. बिहार में एक तीर्थ-स्थान जहाँ पितरों का पिंडदान करवाते हैं, 2. 'गया' में होने वाला पिंडदान; (क्रि. अ.) **'जाणा'** क्रिया का भूत- कालिक

रूप; **~बीत्या** 1. अत्यंत दीन-हीन अवस्था का, 2. पुराने समय का।

गया साल (पुं.) गत वर्ष।

गरंड (पुं.) 1. आटा पीसने की हाथ की चक्की का मिट्टी से बना वह गोल गहरा भाग जिसमें अन्न आदि पिस-पिस कर इकट्ठा होता रहता है, 2. चूना पीसने के लिए बनाई गई चक्की का वह भाग जिसमें चूना पीसा जाता है; **~छाँटणा** गरंड में एकत्रित आटे को कपड़े के छाँटने की सहायता से अन्य पात्र में निकालना; **~पोतणा/लीपणा/समारणा** स्वच्छता या मज़बूती के लिए गरंड को पीली मिट्टी से पोतना।

गर (अव्य.) अगर, यदि; (स्त्री.) 'गर'-'गर' की ध्वनि।

गरक (वि.) 1. घँसा हुआ, 2. ध्वंसित, 3. नष्ट, 4. डूबा हुआ; **~करणा** 1. नष्ट-भ्रष्ट करना, 2. डुबोना; **~होणा** 1. मकान आदि का भूमि में धँस जाना, 2. नष्ट-भ्रष्ट होना, 3. पतित होना।

गरकणा (क्रि. अ.) 1. गीलेपन या खोखलेपन के कारण भूमि में धँसना, 2. नष्ट होना। **गरकना** (हि.)

गरकी (स्त्री.) 1. अधिक पानी के कारण उत्पन्न गीलापन या खोखलापन, तरावट, 2. अधिक घी या तेल पी लेने के कारण उत्पन्न घृणा या घिन्न; **~आणा/होणा** 1. फ़सल का पानी में डूबने के कारण झुलस जाना, 2. भूमि का नीचे धँसना, 3. भूमि के नीचे का जलस्तर ऊपर आना; **~करणा** अधिक तरावट करना।

गरखी[1] (स्त्री.) जैकिट।

गरखी[2] (पुं.) पुरुषों का एक अधोवस्त्र।

गरग (पुं.) 1. गर्ग, अग्रवाल वैश्यों का गोत्र (इनका संबंध गर्ग मुनि, यजुर्वेद की माध्यंदिनी शाखा तथा कात्यायन सूत्र से है और प्रवर मांकील है), 2. ब्राह्मणों का एक गोत्र, 3. गर्ग मुनि।

गरगस (पुं.) दे. गरग।

गरगाप (पुं.) दे. गळगप।

गरज[1] (स्त्री.) 1. बादल के टकराव से उत्पन्न ध्वनि, 2. शेर की दहाड़, 3. क्रोध या चुनौती भरी ध्वनि।

गरज[2] (स्त्री.) 1. मतलब, आवश्यकता, 2. चाह, इच्छा।

गरजणा (क्रि. अ.) गरजना।

गरजना (क्रि. स.) दे. गरजणा।

गरड़ (पुं.) 1. गुरुड़ पुराण जो प्रायः अकाल मृत्यु होने की अवस्था में मृतक की मोक्ष-प्राप्त के लिए पढ़वाया जाता है, 2. गरुड़, नीलकंड पक्षी; (स्त्री.) गड़गड़ाहट; (वि.) पूरी तरह पकी हुई (फसल आदि); **~पढणा/ बाँचणा** मृतक की आत्मा की शांति के लिए गरुड़ पुराण की कथा सुनाना। **गरुड़** (हि.)

गरड़गरड़ (स्त्री.) 1. गर्जन की ध्वनि, 2. 'गरड़' 'गरड़' की ध्वनि, चक्की चलने से उत्पन्न ध्वनि।

गरड़स (पुं.) दे. नरड़ा।

गरड़ी (वि.) कई रंग की गाय।

गरणाणा (क्रि. अ.) 1. गूँजना, 2. साँप द्वारा ध्वनि निकालना, 3. चक्की का गूँजना , 4. मस्ती में आना।

गरदन (स्त्री.) दे. घीट्टी।

गरदान (स्त्री.) शब्दों का रूप साधन।

गरदानणा (क्रि. स.) 1. समझना, महत्त्व जानना, 2. आज्ञा-पालन करना—तूँ

मनै क्यूँ गरदान्नैघा ईब तेरा काम लीकड़ लिया।

गरब (पुं.) अभिमान, घमंड। **गर्व** (हि.)

गरबीला (वि.) घमंडी, अभिमानी।

गरभ (पुं.) पेट; **~ठहरणा/होणा** गर्भवती होना; **~बास** गर्भवास, वह समय जिसमें बच्चा गर्भावस्था में रहता है। **गर्भ** (हि.)

गरभाणा (क्रि.) घमंड करना। दे. गरभाना।

गरभाना (क्रि. अ.) गाभिन होना।

गरम (वि.) गर्म, उष्ण, तपता हुआ।

गरमवाणा (क्रि. स.) गरम करवाना।

गरमागरम (वि.) 1. बिल्कुल गर्म, 2. ताज़ा-गरम।

गरमागरमी (स्त्री.) कहा-सुनी।

गरमाट (स्त्री.) गरमी। **गरमाहट** (हि.)

गरमाणा (क्रि. अ.) 1. गरम होना, 2. क्रोधित होना, 3. कामुक होना, मस्ताना।

गरमाना (क्रि. अ.) दे. गरमाणा।

गरमास (स्त्री.) दे. गरमाट।

गरमाहट (स्त्री.) दे. गरमाट।

गरमी (स्त्री.) 1. उष्णता, ताप, 2. तेजी, प्रचंडता, 3. आवेश, क्रोध, 4. जोश, 5. गरमी की ऋतु, 6. आतशक।

गरमूँड्डा (पुं.) गरदन के पीछे का भाग, गरदन; **~(-डै) ठोकणा/देणा/मारणा** गरदन पर प्रहार करना।

गरराणा (क्रि. अ.) 1. सामना करना, 2. 'गुर्र' की ध्वनि निकालना। **गुर्राना** (हि.)

गरल (पुं.) दे. गरळ।

गरळ (पुं.) गरल, साँप का विष; (स्त्री.) अन्न आदि के बिखरते समय उत्पन्न ध्वनि; **~गेरणा** 1. विष वमन करना (जनधारणा के अनुसार शनिवार के दिन साँप द्वारा अपना अतिरिक्त विष वमन करना; **~मारणा** 1. विष की उल्टी करना, 2. औषधि द्वारा विष शांत करना।

गरळका (पुं.) एक दम ज्यादा सामग्री उँड़ेल देना।

गरळाट (पुं.) 1. 'गरळ'-'गरळ' की ध्वनि, चक्की से उत्पन्न ध्वनि, 2. साँप द्वारा उत्पन्न ध्वनि; **~ऊठणा** 'गरळ' 'गरळ' की भयंकर ध्वनि उत्पन्न होना।

गरळाट्टा (पुं.) दे. गरळाट।

गरवाणा (क्रि.) गर्वित होना।

गरारा[1] (पुं.) कुल्ला।

गरारा[2] (पुं.) महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला पायजामेनुमा ढीला अधोवस्त्र।

गराहा (पुं.) ग्राह, मगरमच्छ।

गराही (स्त्री.) ग्रास, रोटी का छोटा टुकड़ा, इतना भोजन जो एक बार मुँह में डाला जाए।

गरियाणा (क्रि.) गाली देना।

गरी[1] (प्रत्य.) कार्य की पूर्णता-द्योतक एक प्रत्यय, यथा कर गरी-कर डाली।

गरी[2] (पुं.) मटमैला पत्थर जिससे चक्की का पाट बनता है।

गरीब (वि.) 1. निर्धन, 2. भला, शरीफ़।

गरीब-गुरबा (पुं.) निर्धन लोग।

गरीबणी (स्त्री.) गरीब महिला।

गरीबदास (पुं.) हरियाणे का एक संत जिनकी 'गरीबदास-बाणी' प्रसिद्ध है।

गरीब पंथ (पुं.) गरीबदास द्वारा चलाया गया एक संप्रदाय।

गरीब पंथी (पुं.) गरीबदास के अनुयायी।

गरीबी (स्त्री.) 1. निर्धनता, 2. दीनता।

गरीब्बण (स्त्री.) दे. गरीबणी।

गरु (पुं.) 1. अध्यापक, 2. कुल पुरोहित। **गुरु** (हि.)

गरुड़ (पुं.) 1. नील कंठ, पक्षीराज, 2. एक महाबली देवता और योद्धा जिसने कार्तिकेय को मोर-चिह्न भेंट किया था, (दे. गरड़)।

गर्ग (पुं.) दे. गरग।

गर्द (स्त्री.) धूल।

गर्दन (स्त्री.) दे. गुद्दी।

गर्भ (पुं.) दे. गरभ।

गर्भपात (पुं.) समय से पूर्व बच्चे का पेट से स्खलन होना।

गर्भवती (स्त्री.) गर्भिणी।

गर्भाधान (पुं.) 1. गर्भ धारण, 2. भ्रूण के गर्भ में रहते किया जाने वाला एक संस्कार।

गर्रगर (स्त्री.) घघर नदी।

गर्रा (पुं.) बड़ा छोर। दे. छोर।

गर्व (पुं.) अभिमान, (दे. गरब)।

गळ (पुं.) 1. गला, कंठ, 2. कंठ-स्वर, सुर; **~का झाड़** व्यर्थ की कठिनाई; **~काटणा** 1. अन्य का भाग या हक़ हड़पना, 2.अत्याचार करना, 3. हत्या करना; **~घलणा** 1. गले पड़ना, पीछे पड़ना, 2. हठ करना; **~लागणा** 1. गले मिलना, 2. गले पड़ना। **गला** (हि.)

गलकंबल (पुं.) साँड, गाय आदि के गले के नीचे लटकने वाला चर्म।

गळकणा (क्रि.) निगल कर खाना, बिना चबाए निगलना।

गळगप (पुं.) 1. डूबने की क्रिया, 2. निगलने की क्रिया; **~करणा** हड़पना, हज़म करना; **~होणा** 1. डूबना, 2. ओझल होना।

गळघोट[1] (पुं.) एक बीमारी जिसमें पशु या मनुष्य का कंठ अवरुद्ध हो जाता है।

गळघोट[2] (स्त्री.) फाँसी।

गळजोट (स्त्री.) एक रस्सी से दो या अधिक पशुओं की गर्दन बाँधने की क्रिया; (वि.) 1. समवयस्क, 2. सहकर्मी।

गळजोटिया (वि.) दे. गळजोट।

गळणा (क्रि. अ.) 1. सब्जी आदि का बनना या पकना, 2. फल आदि सड़ना, 3. ठोस वस्तु का तरल होना, 4. रोग के कारण शरीर का कोई अंग सड़ना, नरम पड़ना, कट कर गिरना आदि, 5. नष्ट होना, 6. पिघलना (नमक, खाँड आदि का), 7. पुराना या बकाया हिसाब-किताब समाप्त होना यथा ब्याज गलणा—ब्याज समाप्त होना, 8. बहुत जीर्ण होना, 9. भूमि के ऊपर बनी कुएँ की कोठी का भूमि में शनैः-शनैः धँसना। **गलना** (हि.)

ग़लत (वि.) दे. गल्त।

ग़लतफ़हमी (स्त्री.) भ्रम।

गलतान (वि.) 1. नशे में चूर, 2. बेहोश, 4. मदमस्त।

ग़लती (स्त्री.) 1. भूल, चूक, 2. धोखा,

गलना (क्रि. अ.) दे. गळणा।

गळपटिया (पुं.) 1. मोरपंख या स्त्री के बालों से पशु के लिए गूँथी गई माला, 2. गले का पट्टा।

गलबहियाँ (स्त्री.) गले में बाहें डालना।

गलबा (पुं.) सामूहिक युद्ध।

गळवाणा (क्रि. स.) गलवाना, 'गलणा' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप।

गलवाना (क्रि. स.) दे. गळवाणा।

गळसरी (स्त्री.) गले का आभूषण जिसमें सोने के मोटे मणके होते हैं।

गला (पुं.) दे. गळा।

गळा (पुं.) 1. ग्रीवा, 2. अन्न का वह भाग जो चक्की में एक बारी में डाला जाता है, एक आँदला या अंजलि भर अन्न, 3. चक्की का गला, 4. कंठ-स्वर, (1 दे. घेट्टी), (2. दे. नाड़); (क्रि. स.) 'गळणा' क्रिया का भू. का. एक व. पुं. रूप; (वि.) गला हुआ; **~आणा** चक्की के मुँह में डाले गए अन्न का निचले पाट में न जाना; **~काढणा** चक्की में एक बार डाले गए अन्न को पीसना, पिसाई करना; **~घालणा** 1. चक्की के मुँह में अन्न डालना, 2. पीसना; **~छाँटणा** 1. चक्की के बीच की कीली के चारों ओर जमे अधपिसे या बिना पिसे अन्न को निकालना ताकि बारीक आटा पिस सके, 2.कमीज़ का गला बनाना। **गला** (हि.)

गळाई (स्त्री.) 1. पिघलाने का काम, 2. कूएँ की कोठी को नीचे धँसाने का काम, 3. गलाने की मज़दूरी, 4. गलने का भाव; **~करणा** कूएँ की कोठी के बीच की मिट्टी को खोदकर उसे नीचे धँसाना।

गळाणा (क्रि. स.) 1. पिघलाना (नमक, खाँड, धातु आदि का), 2. घसकाना, नीचे धसकाना, 3. समाप्त करना, हिसाब समाप्त करना या बेबाक करना, 4. सड़ाना, सब्जी आदि का आग पर पकाना। **गलाना** (हि.)

गलाणी (स्त्री.) दे. गिल्लाणी।

गळाम्माँ (पुं.) पशु के गरदन की रस्सी, (1 दे. मोहरी), (2. दे. जतणी); **~काढणा** 1. बूढ़ा होने पर बैल के गले और नाक की रस्सी निकाल कर स्वछंद छोड़ देना, 3. आज़ाद करना; **~घालणा** 1. परतंत्र करना, 2. क़ाबू में करना, 3. प्रतिबंध लगाना।

गळाम्मी। (स्त्री.) दे. गळाम्माँ।

गळियारा (पुं.) 1. गली, मार्ग–गळियारा बुहार आई हे के भाती आवैंघे (हे सखी! मैंने भातई आने की प्रसन्नता में गाँव की गली साफ़ कर दी है), 2. गाँव के चारों ओर का मार्ग; **~(-रे) का** वर्णसंकर, तुल. गळी गितवाड़े का; **~झाड़णा/बुहारणा** पलक पाँवडे बिछाना; **~(-रै) रळणा** 1. निरादर होना, 2. गली-गली भटकना। **गलियारा** (हि.)

गली (स्त्री.) दे. गळी।

गळी (स्त्री.) घरों के बीच का तंग मार्ग; **~गळी हाँडणा** 1. घर-घर भीख माँगना, 2. व्यर्थ में समय व्यतीत करना; **~गितवाड़ा** गाँव के बाहर का भाग; **~~(-ड़े) का** वर्णसंकर संतान; **~~तरसणा** बहुत दिन पीहर न जा पाने के कारण वहाँ की याद सताना। **गली** (हि.)

ग़लीचा (पुं.) दे. गलीच्चा।

गलीच्चा (पुं.) कालीन। **गलीचा** (हि.)

ग़लीज़ (वि.) गंदा रहने वाला।

गलूप्फा (पुं.) कपोल, गाल; **~लेणा** चुंबन करना।

गलूर (पुं.) 1. गाल, कपोल, 2. गंडीरी, गनीरी।

गलूरे (पुं.) गाल, कपोल।

गळेट (स्त्री.) 1. हल जोतने के बाद खेत में बच रहे मोटे ढेले, 2. हल जोतते समय दोनों खूडों के बीच में बची बे जुती भूमि, 3. जुताई के समय हल की

फाल पर चढ़ने वाली मिट्टी; **~मारणा** 1. खेत जोतने के बाद मोटे ढेलों को तोड़ना, 2. हल की फाल पर जमने वाली मिट्टी को पैर की ठोकर से हटाते रहना; **~लागणा** बुवाई के समय हल की फाल तथा ओरणे या पोरे में मिट्टी भरने के कारण बीज का भूमि तक नहीं पहुँचना, तुल. उरणाणा।

गलेफ (पुं.) 1. रजाई का अबरा, लिहाफ़, 2. रजाई।

गल्त (वि.) 1. अशुद्ध, 2. असत्य।

गल्ला (पुं.) 1. अन्न, 2. छोटी तिजोरी।

गल्लाह (पुं.) दही का चकता; **~जमणा/बैठणा** दही अच्छी तरह जमना।

गल्लोह (वि.) मोटे गालों वाली (स्त्री)।

गल्हा (पुं.) दे. गल्लाह।

गवंतरी (स्त्री.) देवताओं की गाय।

गवरजा (स्त्री.) पार्वती। **गिरिजा** (हि.)

गवाड़ा (पुं.) गाय-भैंस बाँधने का स्थान।

गवाढ़्य (पुं.) 1. वह स्थान जहाँ अच्छी गऊएँ मिलती हैं, 2. 'हरियाणे' का एक नाम।

गवाना (क्रि. स.) दे. गमाणा।

गवार (पुं.) 1. एक अन्न जिसे उबालकर पशुओं को खिलाया जाता है (इसकी फलियों की भुजिया, रायता आदि बनता है), 2. इस अन्न का पौधा; **~राफड़णा** गवार पकाने के बाद उसे मथना।

गवारणी (स्त्री.) गवारिया जाति की स्त्री, (दे. गवारिया)।

गवारा[1] (पुं.) बैलों का वह चारा जो घर से टोकरे में रखकर खेत पर ले जाया जाता है।

गवारा[2] (वि.) 1. अनुकूल, 2. अंगीकार करने योग्य।

गवारिया (पुं.) 1. एक जाति जो माला, डोरे, हींग, रंग आदि बेचती है और इस जाति की स्त्रियाँ कंघी, सूई, तगड़ी, डोरी, चूरन आदि बेचती हैं, पटुआ जाति, 2. इस जाति का व्यक्ति।

गवाह (पुं.) दे. घवा।

गवाही (पुं.) दे. घवाई।

गश (पुं.) दे. गस।

गश्त (स्त्री.) 1. पहरे के लिए घूमना, 2. घुमाई-फिराई।

गस (स्त्री.) मूर्छा, बेहोशी। **गश** (हि.)

गसील्ला (वि.) 1. क्रोधी, 2. प्रतिकार की भावना रखने वाला।

गसैल (वि.) क्रोधी। **गुस्सैल** (हि.)

गस्सम-गस्सा (स्त्री.) विवाह के समय संपन्न एक रस्म जिसमें दोनों समधी अपने-अपने हाथ से एक-दूसरे के मुँह में घी-खाँड डालते हैं।

गस्सा (पुं.) मुँह में डाला जाने वाला अन्न का भाग, निवाला, कौर। **ग्रास** (हि.)

गहगड़ (पुं.) 1. लंबी गाथा, 2. अनावश्यक वार्ता।

गह-गह (स्त्री.) उमंग; **~होणा** चारों ओर प्रसन्नता ही प्रसन्नता दिखाई देना—बाणियाँ नै छोहरी का ब्याज के कर्‌या चारूँ ओड़ गह-गह हो रही थी। **गहमागहमी** (हि.)

गहगहाणा (क्रि. अ.) 1. धूम मचाना, 2. खेत लहराना। **गहगहाना** (हि.)

गहगहाना (क्रि. अ.) दे. गहगहाणा।

गहण (पुं.) 1. चंद्र, सूर्य का ग्रहण, 2. दोष, 3. दुःख, कष्ट, 4. म्लान अवस्था; **राणी~** रानी गहन, बहुत रोने-धोने का भाव, विलाप करने का

भाव; **~लागणा** 1. ग्रहण आरंभ होना, 2. शरीर दुर्बल होना, शरीर पर कष्ट के लक्षण प्रकट होना; **~होणा** 1. दारुण दुःख के कारण घर में रोना-धोना मचना, 2. अनिष्ट होना। **ग्रहण** (हि.)

गहणवा (पुं.) वह बालक जो सूर्य या चंद्र ग्रहण के समय उदर में हो और माता द्वारा ग्रहण देखने या आचार विरुद्ध काम करने के कारण जिसके शरीर पर ग्रहण के कुछ लक्षण परिलक्षित हों यथा–शरीर पर कोई लाल, काला सफ़ेद दाग़, आँख का टेढ़ापन या शरीर के किसी अन्य अंग में कुछ विकार। **गहनवा** (हि.)

गहणा[1] (पुं.) सोने-चाँदी आदि का आभूषण। **गहना** (हि.)

गहणा[2] (पुं.) चेचक या माता शांत करने के निमित्त रखा गया अन्न, दाल, गुड़ आदि; **~धरणा** चेचक की शांति के निमित्त अन्न, दाल, गुड़ आदि दान के लिए रखना; **~लाणा** चेचक ठीक होने पर गुलगुले, पूड़े आदि बाँटना या दान-पुण्य करना।

गहणा[3] (क्रि. अ.) 1. ग्रहण के समय सूर्य तथा चंद्रमा का ग्रसित होना, 2. गाँठ का बंधन इतना तेज होना कि खुल न सके–काँगणा इसा गहग्या अक कांगण-जूए बखत बखत काटणा पड़्या; (क्रि. स.) पकड़ना।

गहणा[4] (वि.) रहन, गिरवी रखने का भाव।

गहणिआँ (पुं.) ग्रहण के समय दान ग्रहण करने वाला व्यक्ति।

गहन (वि.) 1. गंभीर, गहरा, अथाह, 2. दुर्गम, 3. घना; (पुं.) दे. गहण।

गहना (पुं.) दे. गहणा[1 3]

गहमाँगहमीं (स्त्री.) प्रफुल्लता, आनंद, उल्लास, उन्माद का वातारण; **~लागणा** प्रसन्नता का वातावरण होना।

गहर (पुं.) 1. गड्ढा, 2. दुर्गम या विषम स्थान। **गह्वर** (हि.)

गहरा (वि.) दे. डूँग्धा; (पुं.) दे. गहरे।

गहराई (स्त्री.) गहरापन।

गहरे (पुं.) तृप्ति का भाव, इच्छानुसार पर्याप्त मात्रा में वस्तु मिलने की स्थिति।

गहलौत/गहलावत (पुं.) 1. एक जाट गोत, 2. एक भंगी गोत, 3. एक राजपूत गोत।

गहाई (स्त्री.) 1. अन्न निकालने के लिए कटी हुई फ़सल पर गाहटे में पशु, कोल्हड़ी आदि घुमाने का कार्य, 2. फ़सल गाहने की मज़दूरी, (दे. गाहटा); **~करणा** 1. गाहने या ओहाने का काम करना, 2. पैरों से रौंदना; **~लागणा** फ़सल कट जाने के बाद गहाई या ओहाई का काम आरंभ होना।

गहेंड (पुं.) 1. दे. रेवड़, 2. दे. लेंहढा।

गाँ (स्त्री.) गाय।

गाँजा (पुं.) दे. गाँज्झा।

गाँज्झा (पुं.) भाँग की जाति का एक पौधा जिसे तंबाकू की तरह पीते हैं; **~सुलफा** गाँजा और सुलफ़ा; **~~चढाणा** गाँजा और सुलफ़ा मिला कर पीना, नशा करना। **गाँजा** (हि.)

गाँठ (स्त्री.) 1. रस्सी, कपड़े आदि का फंदा या बंधना, 2. फुंसी, फोड़े आदि की ग्रंथि, 3. सामान, चारे आदि की बड़ी पोटली, 4. अटकाव– अरै ब्याह मैं के गाँठ पड़गी? 5. रुपया-पैसा, अलग से जोड़ा हुआ रुपया-पैसा,

6. बंधन, दबाव, काबू, अधिकार–ईब कै नैं तै वो मेरी गाँठ मैं आ रहया सै चाहे कुछ भी काम कढवा ल्यूँ, 7. अंटी, आँट, 8. बाँस, ईख आदि में जोड़ के निकट उभरा हुआ जोड़ या आँख, 9. गन्ने की पोरी, 10. नाप, तोल, भार आदि का एक प्रमाण, 11. दलिया, खिचड़ी आदि पकते समय बनी कच्चे अन्न की डली; **~आणा** बाधा उत्पन्न होना; **~करणा** अलग से रुपया-पैसा जोड़ना, **~काटणा** 1. जेब काटना, 2. छल-कपट पूर्ण व्यवहार करना; **~का पूरा** जिद्दी; **~की धोत्ती** इस प्रकार से बाँधी गई धोती जिसका अधिकांश भाग बाएँ हाथ को और कुछ भाग लाँग के लिए कटि के दाएँ हाथ को रहता है तथा नाभि के नीचे दोनों भागों की गोल गाँठ मजबूती से लगा दी जाती है, 2. धोती का अद्धा या केवल आधा भाग जो नाभि के दोनों और आधा-आधा बाँटकर गाँठ लगाकर बाँधा जाता है (इसमें दो लाँग होती हैं, इस धोती को यवन-पद्धति की धोती माना गया हैं); **~खोल्हणा** 1. मुक्त हाथ से खर्च करना, 2. दान करना, 3. भेद खोलना; **~गहणा** गाँठ इस मज़बूती से बाँधना कि खुल नहीं सके; **~गाँठ मैं छळ होणा** शरीर के अंग-अंग में कपट होना–समझ ना सकते जगत् के मन को गाँठ-गाँठ मैं छळ होग्या, बेईमान्ने मैं मगन रहैं सैं अग्यान रूप्पी मळ हो गया (ल.च.); **~तैं देणा** अपने पल्ले से खर्च करना, हानि होना; **~दार धोत्ती** (दे. गाँठ की धोत्ती); **~देणा/बाँधणा** 1. प्रतिज्ञा करना, 2. ओढ़नी या अन्य वस्त्र के कोने में गाँठ लगाना ताकि उसके स्पर्श या चोट से कोई बात बार-बार स्मरण रहे; **~पड़णा** 1. खिचड़ी, दलिया आदि में पकते समय डली बनना, 2. मन में अंतर पड़ना या भेदभाव उत्पन्न होना; **~मैं लाणा** 1. अंटी में रखना, 2. मन ही मन किसी बात को स्मरण रखना, 3. रुपया-पैसा हड़पना, 4. वश में रखना; **~राखणा** 1. अपना पैसा छिपाकर रखना, 2. बात छिपाना; **~होणा** 1. रुपया-पैसा जुड़ना; 2. मन मुटाव होना।

गाँठगोभी (स्त्री.) गोभी की एक जाति, गाँठदार गोभी।

गाँठड़ी (स्त्री.) 1. गठरी, 2. बोझा, 3. धन-दौलत। **गठड़ी** (हि.)

गाँठणा (क्रि. स.) 1. चमड़े की वस्तु की मरम्मत करना, चमड़े की सिलाई करना, 2. अनुकूल करना, अपने विचार का करना, 3. वश में करना, वशीभूत करना, 4. अपना काम निकालना, मतलब सिद्ध करना–इसा आदमी तूँहए देख्या अक अपणा मतलब गाँठ कै चालता बण्या, 5. निश्चय करना–मन्नैं याह बात आज तैं गाँठली अक रोज पितराँ नैं पाणी दिया करूँगा, 6. गाँठ लगाना। **गाँठना** (हि.)

गाँठना (क्रि. स.) दे. गाँठणा।

गाँड (स्त्री.) गुदा, मलद्वार।

गाँडर (पुं.) मोर का लटकता हुआ चंदा या पंख; **~काढणा/लटकाणा/लिकाड़णा** चंदे के पक जाने पर मोर द्वारा चंदे को अपने तन से कुछ बाहर खींचना ताकि वह गिर जाए; **~गेरणा** मोर द्वारा पके हुए चंदे को अपने शरीर से पृथक् करना, चंदे काटना।

गाँडला (स्त्री.) नया अंकुर। कोंपल।

गाँडळी (स्त्री.) मोर के चंदों की माला; **~गूँथणा** गाँडली बनाना, मोर के चंदों की माला बनाना।

गांडीव (पुं.) अर्जुन के धनुष का नाम।

गाँडो (पुं.) दे. गंडा।

गाँड्डळ (पुं.) दे डाक्कळ।

गाँड्डा (पुं.) 1. दे. गंडा, 2. दे. गळपटिया।

गाँड्डू (वि.) 1. डरपोक, भीरु, 2. अनादर या तिरस्कार करने के लिए प्रयुक्त शब्द, 3. गुदा-मैथुन कराने वाला, तुल. गँडवा।

गाँद्दर (पुं.) एक प्रकार की घास।

गाँद्दी (पुं.) महात्मा गांधी, मोहनदास कर्मचंद गांधी।

गाँद्धी महात्मा (पुं.) महात्मा गाँधी जिसने अंग्रेजों से देश को आजाद कराया, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, (दे. गाँद्धी)।

गांधारी (स्त्री.) दे. गंधारी।

गाँम (पुं.) ग्राम, छोटी बस्ती; **~गड़ा गाँम** भर की साझे की कड़ाही; **~चढणा** 1. बहुत से लोगों द्वारा किसी पर आक्रमण किया जाना, 2. एक गाँव का दूसरे गाँव पर आक्रमण करना; **~जिमाणा** 1. बहुत से लोगों को भोजन देना, 2. गाँव के सभी लोगों को भोजन देना; **~जुड़णा** बहुत से लोग इकट्ठे होना, भीड़ जुड़ना; **~बस्स्या ना मोड्डे फिरगे** कार्य संपन्न होने से पूर्व बाधा उत्पन्न होना। **गाँव** (हि.)

गाँमगोट (पुं.) गाँव।

गाँमराम (पुं.) 1. गाँव को भगवान का रूप समझने का भाव, 2. सामूहिक गवाही के लिए प्रयुक्त संबोधन; **~जुड़णा** बहुत लोग एकत्रित होना; **~जोड़णा** शोर मचाकर भीड़ इकट्ठी करना; **~पाटणा** भीड़ बिछुड़ना या हटना।

गाँव (पुं.) दे गाँम।

गा (स्त्री.) गाय, गऊ, तुल. गावड़ी; (वि.) भोली-भाली, सीधी-सादी; (क्रि. स.) 'गाणा' क्रिया का आदे. रूप; **~का भैंस तळै करणा** 1. इधर की आमदनी उधर और उधर की आमदनी इधर खर्च करना; **देई~** वह गाय जिसका दूध बिलोया नहीं जाता केवल पीया जाता है।

गाई (स्त्री.) दे. गा।

गाउ (पुं.) दे. गाय।

गाक (पुं.) दे. घाक।

गागटी (स्त्री.) आलू की तरह का एक शाक।

गागरा (पुं.) 1. एक भंगी गोत, 2. गागर, गगरी, तांबे का टोंटीदार लोटा या पात्र।

गाच्ची (स्त्री.) दे. मुलतानी माट्टी।

गाजणा (क्रि.अ.) 1. गर्जना, कड़कना, 2. चिंघाड़ना।

गाजर (स्त्री.) दे. गाज्जर।

गाज्जर (स्त्री.) एक सब्जी; **~मूळी** 1. सरल कार्य, 2. सामान्य से सामान्य व्यक्ति; **~~ समझणा** 1. कमजोर समझना, सही शक्ति न आँक सकना, 2. अनादर का भाव रखना, 3. किसी वस्तु का मूल्य या महत्त्व नहीं समझना। **गाजर** (हि.)

गाज्जा बाज्जा (पुं.) 1. गाने बजाने का साज-सामान, 2. शोर-शराबा, 3. गाने बजाने का हर्ष उल्लास, 4. विवाह के समय बजने वाले बाजे; **~ल्याणा** विवाह के समय बाजा, साँग आदि लाना। **गाजा-बाजा** (हि.)

गाट (पुं.) गार्ड।

गाट्टर (पुं.) लोहे के भारी-मजबूत शहतीर। **गार्डर** (हि.)

गाडणा (क्रि. स.) 1. दबाना, गड्ढा खोदकर मिट्टी में दबाना, 2. पटकी लगाना, उठाकर पटकना--के तै मानज्या नाँ तनैं इसा गाड्डूँगा अक सदा ताँही नाँ भूल्लैघा, 3. घोंपना, धँसाना; **~(-डण) जोग्गा** 1. गाड़ने योग्य, 2. मरने योग्य, 3. बच्चों को दी जाने वाली गाली (क्योंकि हिन्दू 10-12 वर्ष तक के बच्चे को भूमि में गाड़ देते हैं) **गाड़ना** (हि.)

गाड़ना (क्रि. स.) दे. गाडणा।

गाडर (स्त्री.) भेड़।

गाड़ा (पुं.) मुसलमान, यवन, कलबूत या कालबूत।

गाड़ी (स्त्री.) दे. गाड्डी।

गाड़ीवान (पुं.) दे. गडवाळा।

गाड़े-लुहार (पुं.) दे. भूभळिया।

गाड्डा (पुं.) 1. गाड़िया लोहार (भूभळिया) की गाड़ी (जिसे वह वाहन तथा निवास के लिए काम में लाता है), 2. छोटी बैलगाड़ी जिसमें अधिकांशत: भैंसे को जोतते हैं, 3. गडूलना, (दे. गडूळणा); **~अपणे राह, गाड्डी अपणे राह** 1. किसी के काम से कोई सरोकार नहीं रहना, 2. दो भाइयों का आपस में अलग होना, 3. लड़ाई-झगड़ा समाप्त होना, 4. अपना-अपना मार्ग पकड़ना।

गाड्डी (स्त्री.) 1. दो पहियों वाला वाहन जो कई आकार का होता है और सामान ढोने, यात्रा करने आदि काम में आता है [यह साधारण रूप से दो बैलों द्वारा और आवश्यकतानुसार तीन बैलों द्वारा खींची जाती है, वर्षा से बचाव के लिए उडार आदि लगाकर इसे झोंपड़ीनुमा बनाया जा सकता है, अनजुती अवस्था में इसे आगे-पीछे गिरने से बचाने के लिए आगे की ओर दो बाँस की लकड़ियों की ढोक तथा पीछे की ओर मोटे पाए के आकार का 'उळाळवा' लगा दिया जाता है, भारी होने की अवस्था में इसके नीचे लकड़ी की घड़ौंची (स्टैंड) लगाकर इसके पहियों तथा धुरी में घी, तेल आदि स्निग्ध पदार्थ लगाकर इसे ऊँग लेते हैं (ओवर हॉल कर लेते हैं), इसके चालक को 'गडवाळा' कहते हैं जो पंजारे पर बैठकर गाड़ी हाँकता है], 2. रेलगाड़ी, 3. बस, मोटर; (क्रि. स.) 'गाडणा' क्रिया का भू. का. रूप; **~अटकणा** 1. काम रुकना, 2. अन्य की सहायता की आवश्यकता पड़ना, 3. बाधा उत्पन्न होना; **~उळाळू होणा** गाड़ी का अधिक भार पीछे की ओर होना; **~ऊँगणा** गाड़ी की धुरी में स्निग्ध पदार्थ लगाना, ओवर हॉलिंग करना; **~छोडणा** 1. गाड़ी में जुते बैलों को विश्राम देना, 2. अमावस्या को गाड़ी न जोतना; **~जोड़णा** गाड़ी जोतना; **~ठाल राखणा** गाड़ी नहीं जोतना या उसे ठाली रखना; **~ढोणा** गाड़ी में सामान ढोना; **~दबाऊ होणा** गाड़ी का भार आगे की ओर बैलों पर होना; **~पंजारे बैठणा** 1. अवसर मिलना; 2. पंजारे पर बैठकर गाड़ी चलाना; **~फँसणा** 1. काम अटकना, बाधा उत्पन्न होना, 2. मुसीबत आ पड़ना; **~बाहणा** 1. गाड़ी चलाना, 2. गाड़ी चलाकर जीविका कमाना; **~भर** विपुल मात्रा में; **~भरणा** बहुत धनधान्य उत्पन्न होना; **~भाड़ै करणा** गाड़ी किराए पर लेना; **~लीकड़णा** 1. कठिनाई से उबरना, 2. काम बनना, 3. नैया पार होना, 4.

गाड़ी छुटना; **~ल्हीक काटणा** 1. गाड़ी का निश्चित मार्ग पर नहीं चलना, 2. विपरीत मार्ग अपनाना; **~ल्हीक पै चालणा** परंपरा निबाहना; **~ल्हीक बिचालै रहणा** काम बीच में अटक जाना; **साज्झे की~** साझे की गाड़ी, किसी की भी जिम्मेदारी न होने का भाव; **~सी ऊँगणा** 1. सहज में पटकी लगा देना, पटकना, 2. अंग-अंग करना; **~हाँकणा** 1. गाड़ी जोतना या चलाना, 2. कार्य आरंभ करना, 3. यात्रा आरंभ करना। **गाड़ी** (हि.)

गाड्ढा[1] (पुं.) ओषधि आदि की आवटी। **काढ़ा** (हि.)

गाड्ढा[2] (पुं.) मोटा कपड़ा; (वि.) जो बहुत तरल नहीं हो, गाढ़ा; **~(-ढे) का लत्ता** एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा; **~(-ढी) कमाई** परिश्रम की कमाई; **~बखत** कठिन समय, परीक्षा या परख का समय।

गाढ़ा (वि.) दे. गाड्ढा[2]।

गाण (पुं.) दे. गाणा।

गाणा (पुं.) गीत; (क्रि. स.) 1. किसी बात को अनेक बार कहना, बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना, 2. गीत गाने की क्रिया; **~गाणा** बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करना, बड़ाई करना। **गाना** (हि.)

गात (पुं.) 1. शरीर, 2. मन; **~मैं राखणा** बात को मन में रखना; **~मैं लागणा** बात लगना या चुभना; **~मैं लाणा** 1. प्यार करना, आलिंगन करना, 2. पचाना; **~सँभाळणा** मन वश में रखना; **~समाई करणा** वरदाश्त करना, मन को बार-बार सँभालना या समझाना।

गाती (स्त्री.) दे. गात्ती।

गात्ता[1] (पुं.) कूएँ की मुँडेर या पैड़छे का लक्कड़ जिस पर चरसा टिकता है।

गात्ता[2] (पुं.) (खूँटा?)। उदा.–भगे जणू बैल तुड़ा कै गात्ता (लचं)।

गात्ती (स्त्री.) 1. चद्दर, 2. ओढ़ना, 3. चद्दर को पीठ तथा छाती पर कस कर लपेटने का एक ढंग, 4. पल्ला, 5. घूँघट; **~कसणा** कटिबद्ध होना; **~काढणा** स्त्री द्वारा ओढ़ने या ओढ़नी के एक पल्ले को छाती के सामने लाकर उसके कोने को घघरी (घाघरी) के डबोटे (कटिबंध) में दबाना ताकि वह चुस्ती से काम कर सके; **~खोल्हणा** हिम्मत हारना, ढीला पड़ना; **~तारणा** इज्जत लूटना; **~पल्ले में रहणा** घूँघट-गाती में रहना, लज्जा-भाव से रहना; **~मारणा** चद्दर या ओढने को विशेष प्रकार से लपेटना, गाती काढ़ना। **गाती** (हि.)

गात्था (स्त्री.) लंबी कथा। **गाथा** (हि.)

गाथा (स्त्री.) दे. गात्था।

गाद (स्त्री.) दे. गाध।

गादड़ी (स्त्री.) मादा गीदड़।

गादरा (वि.) दे. गदराणा।

गादी (पुं.) गाधि ऋषि।

गाद्दड़ (पुं.) 1. लोमड़ी की जाति का एक वन्य प्राणी, 2. एक घास जिसके खाने से अफ़ारा आ जाता है; (वि.) डरपोक, भीरु, कायर, बुज़दिल; **~का गाम कान्नी भाजणा** 1. अपनी मौत स्वयं बुलाना, 2. आपत्ति मोल लेना; **~की तावळ तैं बेर ना पाकणा** 1. हर काम समय आने पर ही संपन्न होता है, 2. इच्छामात्र से कार्य सिद्ध नहीं होता; **~गादड़ी का ब्याह** अनोखा

कार्य; **~भभकी** बनावटी डर; **~सा** मोटा ताज़ा। **गीदड़** (हि.)

गाद्दड़ सूँड्डी (स्त्री.) एक घास जो खरीफ़ की फसल के समय अधिक उगती है, इस पर मोटी डोडी के आकार के फूल लगते हैं।

गाद्दर (वि.) गदराया हुआ, पुष्ट।

गाध (स्त्री.) 1. गिधलापन, 2. मिट्टी-कीचड़ युक्त पानी, 3. कीचड़।

गाधळा (वि.) 1. मिट्टी-कीचड़ से युक्त, 2. 'निथरा' का विलोम। **गिधला** (हि.)

गाधळी (वि.) गिधलाई हुई; **~आँख** लाल या दुखती आँख।

गान (पुं.) दे. गाणा।

गाना (क्रि. स.) दे. गाणा।

गाबरु (पुं.) दे. गाभरु।

गाब्भण (वि.) 1. वह पशु जिसके उदर में बच्चा हो, 2. भारी, 3. निस्सहाय अवस्था का। **गाभिन** (हि.)

गाब्भा (पुं.) 1. कोंपल या पत्तों से बाहर निकलने से पूर्व बाली (जवार, बाजरे आदि की) की अवस्था, 2. फटे-पुराने वस्त्र, 3. पुरानी रूई; **~आणा/पड़णा/लिकड़णा** पौधों में बाली निकलना आरंभ होना; **~भरणा** 1. खून को रोकने के लिए कपड़ा जलाकर घाव में भरना, 2. पौधों में कल्ला आदि निकलना, 3. गाभे से भरना। **गाभा** (हि.)

गाभरू (पुं.) 1. उभरती जवानी का युवक, 2. पहलवान, 3. पति। **गबरू** (हि.)

गाभा (पुं.) दे. गाब्भा।

गाभिन (वि.) दे. गाब्भण।

गाभ्भण (वि.) दे. गाब्भण।

गाम (पुं.) दे. गाँम।

गामड़ा (पुं.) छोटा गाँव, 'गाँम' का ऊनताद्योतक शब्द।

गामड़ी (स्त्री.) छोटा गाँव।

गामोल्ली (वि.) 1. अपने ही गाँव का (व्यक्ति), 2. पड़ोस के गाँव का (व्यक्ति), 3. गाँव का, ग्रामीण।

गाय (स्त्री.) दे. गा।

गायतरी (स्त्री.) गायत्री मंत्र। **गायत्री** (हि.)

गायत्री (स्त्री.) दे. गायतरी।

गायब (वि.) लुप्त।

गार (पुं.) कीचड़, गीली मिट्टी; (स्त्री.) गुफ़ा, **~करणा/मचाणा** 1. पानी बिखेर कर कीचड़ करना, 2. चिनाई के लिए तगार बनाना।

गारड़[1] (पुं.) 1. गरुड़ पुराण, 2. लंबी कथा या गाथा, 3. सपेरा; **~गाणा** 1. लंबी कथा कहना, 2. व्यर्थ की बात कहते जाना, 3. निन्दा करना, चुगली करना; **~पढणा** 1. मृतक की आत्मा की शांति के लिए गरुड़ पुराण की कथा पढ़ना, 2. साँप का विष दूर करने के लिए 'गारुड़ू' द्वारा मंत्र बोलना।

गारड़[2] (पुं.) दे. गारद।

गारड़ू (पुं.) 1. वह व्यक्ति जो साँप के काट खाए का उपचार मंत्र बोलकर करता है, साँप काटे का उपचार करने वाला व्यक्ति, 2. एक जाति, 3. इस जाति का व्यक्ति।

गारत (वि.) नष्ट, बरबाद।

गारद (पुं.) 1. पहरा, चौकी, 2. पहरेदार, 3. सिपाही। **गार्ड** (हि.)

गारा (स्त्री.) दे. गार्‍या।

गार्‌या (स्त्री.) कीचड़, मिट्‌टी। **गारा** (हि.)

गाल (पुं.) दे. गलूरे।

गाळ[1] (स्त्री.) 1. अपशब्द, कलंक या अपमान-सूचक शब्द, 2. शेष या क्रोध के समय कही हुई अश्लील बात, 3. शपथ–अड़ै कै लीकड़णा तम ईब तैं गाळ समझ लो; **~खाणा** अपमानजनक बात सुनना; **~लागणा** गाली का भोक्ता बनना। **गाली** (हि.)

गाळणा (क्रि. स.) 1. सोने-चाँदी आदि धातुओं को पिघलाना, 2. चीनी आदि की चाशनी बनाना, 3. कुएँ की कोठी को भूमि में धँसाना। **गलाना** (हि.)

गालना (क्रि. स.) दे. गाळणा।

गाला (पुं.) दे. गाळा।

गाळा (पुं.) 1. विनाश, 2. अनिष्ट, 3. अहित; **~करणा** मार डालना।

गालिम (पुं.) (गलीचा?) उदा.–लखमीचंद छंद धरणा, चाहिए गालिम सा भरणा।

गाली (स्त्री.) दे. गाळ[1]।

गाळी (स्त्री.) दे. गाळ[1]।

गावड़णी (स्त्री.) 1. गावड़िया की पत्नी, 2. गोभक्त महिला।

गावड़िया (पुं.) 1. गऊभक्त, गोपालक, वह व्यक्ति जो बहुत गाएँ रखता हो, 2. एक जाति।

गावड़ी (स्त्री.) गाय, गऊ; **राम की~** 1. एक हरे रंग का लंबे पैरों वाला टिड्‌डा, 2. क्षम्य व्यक्ति।

गावणिया (पुं.) गानेवाला, गवैया; (वि.) झूठी बड़ाई करने वाला।

गावा (वि.) गाय का (घी, दूध आदि); **~घी गाय का घी।**

गास (स्त्री.) 1. बाजरे की खिचड़ी, 2. ग्रास, रोटी का टुकड़ा, 3. भोजन–गास तै दे पर बास ना दीज्जै–आगंतुक को भोजन दो निवास नहीं।

गाह (पुं.) मगरमच्छ; (क्रि. स.) 'गाहणा' क्रिया का आदे. रूप; **~देणा** घर के बार-बार चक्कर काटना; **~मारणा** बड़ा काम करना, मोर्चा जीतना। **ग्राह** (हि.)

गाहक (पुं.) ग्राहक, (दे. घाक)।

गाहटा (पुं.) वह स्थान जहाँ अन्न निकालने के लिए फ़सल को इकट्‌ठा किया जाता है, खलियान; **~जोड़णा** कटी फ़सल को एक स्थान पर डाल कर पशुओं के खुरों, कोल्हड़ी, काँटों की फळसी आदि से पद-दलित कराना; **~हाँकणा** गाहटे में जुते पशुओं को चक्राकार हाँकना।

गाहणा (क्रि. स.) 1. खलियान में पड़ी फ़सल को पद-दलित करवाना, 2. थकान उतरवाने के लिए छोटे बच्चे द्वारा शरीर को पैरों से रौंदना, 3. बार-बार चक्कर लगाना, 4. मज़बूत गाँठ मारना। **गाहना** (हि.)

गाहना (क्रि. स.) दे. गाहणा।

गाहा (स्त्री.) 1. गाथा 2. रहस्यमय कथा 3. पहेली। उदा. तीन उघाड़ी, सब ढकी, कर ले नार विचार। इस गाहा नैं खोल कै जिब जाइये पणिहार। (उत्तर-छत की कड़ियाँ)।

गाह्‌रड़ (पुं.) दे. गारड़[1]।

गिंडळी (स्त्री.) दे. गींडळी।

गिंडार (पुं.) सफ़ेद रंग का लगभग दो-तीन अंगुल लंबा मोटा कीड़ा; **~की कूँड में पड़णा** रौरव नरक में जाना।

गिंडो (स्त्री.) दे. गींड्डो।

गिंडोया (पुं.) 1. केंचुआ, लगभग एक बालिश्त लंबा सुतली-सा पतला एक कीड़ा जो अधिकतर वर्षा ऋतु में दिखाई पड़ता है, 2. नाली का एक कीड़ा।

गिंदौड़ा (पुं.) 1. मोटी रोटी या 'टीकड़े' के आकार में ढला हुआ निश्चित तोल का खाँड, बूरा, चीनी आदि का पिंड; **~पाकणा** रूप, गुण, बुद्धि, आर्थिक संपन्नता आदि का विचित्र मेल होना; **~बाँटणा** पुत्र-उत्पत्ति या विवाह के अवसर पर प्रसन्नता, दानशीलता, उदारता, बड़प्पन आदि जताने के लिए खाँड का गिंदौड़ा बाँटना (गिंदौड़ा सामर्थ्य के अनुसार एक या दो सेर आदि का होता है)।

गिजाई (स्त्री.) दे. कान-सिळाई।

गिट (स्त्री.) बालिश्त, तुल. बिलहाँध।

गिटपिट (स्त्री.) 1. निरर्थक भाषा, 2. टूटी-फूटी अंग्रेज़ी; **~करणा** अंग्रेज़ी में बात करना, टूटी-फूटी अंग्रेज़ी बोलना।

गिट्टक (स्त्री.) लकड़ी का बहुत छोटा तथा कुछ मोटा टुकड़ा।

गिट्टळ (वि.) शूद्र जाति का।

गिट्टा[1] (पुं.) 1. कंकड, गिट्टे के खेल का कंकड़, 2. कंकड़ का एक खेल; (वि.) छोटे कद का।

गिट्टा[2] (पुं.) दे. गट्टा।

गिट्टी (स्त्री.) 1. छोटी कंकड़, 2. लकड़ी का छोटा टुकड़ा; (वि.) छोटे कद की।

गिडंग (पुं.) दे. गड़ंग।

गिडऔ/गिलचो (पुं.) केंवचा (मेवा.)।

गिड़गिड़ाणा (क्रि. स.) अत्यंत दीनता से प्रार्थना करना। **गिड़गिड़ाना** (हि.)

गिड़णा (क्रि.) दे. गुरड़णा।

गिडमेळा (पुं.) चक्कर, चक्कर आने का भाव।

गिड़ोई (स्त्री.) वह स्थान जहाँ गुड़ पकाया जाता है, कोल्हू चलने का स्थान।

गिणणा (क्रि. स.) 1. गिनती करना, हिसाब लगाना, 2. महत्त्व देना–तूँह् मनैं गिणै तै गा पर ईब्बै बखत ना पड़्या सै। **गिनना** (हि.)

गिणती (स्त्री.) 1. संख्या, 2. महत्त्व–माँम्माँ-नाँन्नाँ की भात के बखत गिणती हो सै, 3. हाज़िरी, उपस्थिति की जाँच; **~होणा** महत्त्व सिद्ध होना। **गिनती** (हि.)

गिणवाणा (क्रि. स.) दे. गिणाणा।

गिणाणा (क्रि. स.) 1. गिनती का काम अन्य से कराना, 2. अपने महत्त्व की स्थापना कराना, अपना महत्त्व सिद्ध कराना। **गिनाना** (हि.)

गितणी (स्त्री.) 1. गीत गाने वाली मंडली, 2. गीत गाने वाली महिला।

गितराड़ी (स्त्री.) झगड़ालू महिला।

गितवाड़ (पुं.) वह स्थान जो बस्ती से कुछ बाहर काँटों की बाड़ या कच्ची दीवार से घेर कर बना लिया हो तथा उपले थापने, कुरड़ी डालने, चारा रखने या दिन के समय गाय, बैल आदि बाँधने के काम लाया जाता हो।

गितवाड़ा (पुं.) दे. गितवाड़।

गिद्ध (पुं.) दे. गिध।

गिध (स्त्री.) एक पक्षी; (वि.) तेज़ या पैनी दृष्टि वाला; **~सा** 1. मोटा-ताज़ा, 2. क्रूर। **गिद्ध** (हि.)

गिनती (स्त्री.) दे. गिणती।

गिनना (क्रि. स.) दे. गिणणा।

गिनवाना (क्रि. स.) दे. गिणाणा।

गिनाना (क्रि. स.) दे. गिणाणा।

गिन्नी (स्त्री.) सोने का सिक्का विशेष, मोहर; **~कमाणा** बहुत आमदनी होना; **~चुकाणा** 1. दान देना, 2. कठिन समय में आर्थिक सहायता करना; **~बाँटणा** 1. दान-पुण्य के रूप में साधु-संतों को गिन्नी का दान देना, 2. विवाह के समय प्रति बाराती गिन्नी देना।

गियाळ (स्त्री.) दे. ग्यास।

गिरंथ (पुं.) धार्मिक पुस्तक। **ग्रंथ** (हि.)

गिरंथी (पुं.) गुरूद्वारे का पुजारी, सिख संप्रदाय का धर्म गुरु।

गिरकाणा (क्रि. स.) 1. इतराना, इठलाना, 2. फूलना, घमंड करना; (वि.) इठलाने वाला, घमंडी, अभिमानी। **गिरकाना** (हि.)

गिरकाणी (स्त्री.) घमंडी, इठलाने वाली (महिला)–हम तै रिस्ता ना लेत्ते तेरी रूपकला गिरकाणी का, ब्याह छोहरी नैं और कितै के देस भर्‌या सै पाणी का (ल. चं.)। **गिरकानी** (हि.)

गिरगिट (पुं.) दे. किरळकाँट।

गिरगोळी (स्त्री.) दे. गिरोळी।

गिरज (स्त्री.) एक गिद्ध पक्षी जिसकी गर्दन का कुछ भाग लाल होता है। **गिद्धराज** (हि.)

गिरजा (स्त्री.) दे. पारबती।

गिरड़-गाँठ[1] (वि.) मोटा-ताज़ा।

गिरड़ गाँठ[2] (स्त्री.) दे. गोळ गाँठ।

गिरड़णा (क्रि. अ.) 1. लुढ़कना, फिसलना, 2. घुटनों के बल चलना, 3. अनुत्तीर्ण होना, 4. पतित या चरित्र-हीन होना, 5. बेहोश होना, 6. मरना।

गिरड़ा (स्त्री.) चूना पीसने की चक्की।

गिरड़ाणा (क्रि. स.) 1. लुढ़काना, फिसलाना, 2. हराना, 3. मारना।

गिरड़ी[1] (स्त्री.) 1. दीपावली, छोटी दीपावली, 2. तुल. कोल्हड़ी; (क्रि. स.) 'गिरड़णा' क्रिया का भू. का. स्त्रीलिंग रूप।

गिरड़ी[2] (स्त्री.) 1. दे. कोहलड़ी 2. दे. गिरड़ी।

गिरणाफोरी (स्त्री.) बार-बार घूमने के कारण आने वाला चक्कर; **~खाणा** तेज़ चक्कर आना या धड़ाम से गिर पड़ना।

गिरणी (स्त्री.) सिर चकराने का भाव।

गिरदावर (पुं.) दे. गिलदावर।

गिरना (क्रि. अ.) दे. पड़णा।

गिरफ्तार (वि.) जो पकड़ा, क़ैद किया या बाँधा गया हो।

गिरवाना (क्रि. स.) गिराने का काम अन्य से करवाना।

गिरवी (वि.) दे. गहणा[4]।

गिरह[1] (स्त्री.) 1. नक्षत्र, 2. बुरा समय, आपत्ति काल; **~आणा/चढणा** बुरा समय आना; **~ऊत्तरणा** कष्ट दूर होना, भय दूर होना; **~टळणा** बुरा समय बीत जाना, आपत्ति टलना; **~पूजणा** कष्ट निवारण के लिए दान- पुण्य करना। **ग्रह** (हि.)

गिरह[2] (स्त्री.) तीन अंगुल लंबाई का नाप, गज का सोलहवाँ भाग।

गिराम (पुं.) 1. किलो का हजारवाँ भाग, 2. एक ग्राम भार का नया तोल विशेष। **ग्राम** (हि.)

गिराम-सेवक (पुं.) कृषि के नए ढंग अपनाने, ग्राम निवासियों का रहन-सहन सुधारने आदि के लिए नियुक्त एक कर्मचारी। **ग्राम सेवक** (हि.)

गिरारी (स्त्री.) चूड़ी, रगड़ से बनाई गईं घुमावदार गहरी रेखाएँ; **~काढणा** घिसी चूड़ी को फिर से बनाना, गराड़ी निकालना; **~मरणा** चूड़ी या गराड़ी का घिस जाना। **गराड़ी** (हि.)

गिरावट (स्त्री.) 1. गिरने की क्रिया, भाव या ढंग, 2. पतन, मूल्यहीनता।

गिरास (पुं.) 1. अन्न का टुकड़ा, 2. कौर; **~काढणा** भोजन से पूर्व जीव-जंतु के लिए ग्रास निकालना, बलिग्रास निकालना; **गऊ~** 1. गाय के लिए बनाई गई रोटी, 2. श्राद्ध के समय गाय के लिए निकाला गया भोजन का अंश। **ग्रास** (हि.)

गिराह (पुं.) मगरमच्छ। **ग्राह** (हि.)

गिराही (स्त्री.) ग्रास, कौर।

गिरी (स्त्री.) 1. गुठली के अंदर से निकलने वाला गूदा जैसे बादाम, अखरोट, गोले आदि की गिरी, 2. लिंग का अग्र-भाग या मनिया; (क्रि. अ.) '**गिरणा**' क्रिया का स्त्रीलिंग भू. का. रूप; **~पड़ी** दीन-हीन अवस्था, दयनीय स्थिति; **~~का राम हिमाँती** आपत्ति काल में भगवान सहायक।

गिरोळिया भूँड (पुं.) काले रंग का भौंरे जैसा कीड़ा जो शौच पर बैठकर छोटी गोली बनाकर उठा ले जाता है।

गिरोळी (स्त्री.) मिट्टी आदि की छोटी गोली। **गोली** (हि.)

गिलगिल (वि.) 1. मोटा और ढीला-ढाला (व्यक्ति), 2. गुदगुदा; (पुं.) खट्टा जाति का एक फल। **गलगल** (हि.)

गिलगिला (वि.) 1. पिलपिला, 2. कोमल, गुदगुदा, 2. लसलसा।

गिलट[1] (स्त्री.) चाँदी जैसी एक सफ़ेद धातु जिससे रुपया, अठन्नी आदि का सिक्का बनाया जाता है।

गिलट[2] (स्त्री.) खून से लथपथ मांस का छोटा पिंड, मांस-ग्रंथि। **ग्रंथि** (हि.)

गिलटी (स्त्री.) मांसपिंड। **ग्रंथि** (हि.)

गिलदावर (पुं.) भूमि की जाँच-पड़ताल करने वाला पटवारी से ऊपर पद का अधिकारी। **गिरदावर** (हि.)

गिलधारी (पुं.) श्री कृष्ण जिसने गिरि को धारण किया। **गिरिधारी** (हि.)

गिलहरी (स्त्री.) दे. काँट्टो।

गिला (पुं.) उलाहना।

गिलाण (स्त्री.) घृणा। **ग्लानि** (हि.)

गिलाणी (स्त्री.) दे. गिलाण।

गिलाफ (पुं.) 1. अबरा, लिहाफ़, 2. रजाई।

गिलास (पुं.) पानी पीने का लंबोतरा पात्र।

गिलो (स्त्री.) एक लता जिसका तना कटु होता है और ओषधि के काम आता है। **गिलोय बेल** (हि.)

गिलौरी (स्त्री.) त्रिकोण आकार पान।

गिल्दर (पुं.) ऊँट की जिह्वा के नीचे का मांस-पिंड जिसे वह क्रोध या मादकता की अवस्था में फुला कर मुँह के एक ओर लटका देता है।

गिल्दरी (वि.) वह ऊँट जो गिल्दर निकालता हो, (दे. गिल्दर)।

गिल्ला (पुं.) गिला।

गिल्लाण (स्त्री.) दे. गिलाण।

गिल्लाणी (स्त्री.) घृणा, (दे. घिन्न्या)। **ग्लानि** (हि.)

गिल्ली (स्त्री.) दे. बित्ती।

गिल्लो (स्त्री.) दे. काँट्टो।

गींड (पुं.) 1. गोलमोल आकार में गूँथ कर तथा ऊपर से कुछ सी कर बनाई गई 10-12 अंगुल ऊँची कपड़े की भारी गेंद, 2. भारी और गोलमोल वस्तु; **~बाँधणा** 1. गोलमोल लपेटना, 2. हराना; **~मींढणा** कपड़े की मोटी गेंद बनाना।

गींड खुळी (स्त्री.) हॉकी के आकार में मुड़ी लगभग ढाई-तीन हाथ लंबी मोटी लाठी (खुळी) और गेंद; **~का खेल** कपड़े की मोटी गेंद तथा लाठी (खुळी) से सरदी या फाल्गुन मास में खेला जाने वाला खेल जिसमें अधिक हुल्ली (गोळ) करने वाला दल जीतता है।

गींडली (स्त्री.) दे. गींडळी-मींडळी।

गींडळी-मींडळी (स्त्री.) मंडलाकार रूप में साँप के बैठने की मुद्रा, गेंडुरी।

गींडवा (पुं.) तकिया; **~बाँधणा** मुश्क बाँधना। **गेंदवा** (हि.)

गींड्डळ-मींड्डळ (वि.) कुछ गोलाकार रूप में बेतरतीब से लपेटा हुआ।

गींड्डो (स्त्री.) छोटी गेंद; **~मींढणा** कपड़े की गेंद बनाना या मढ़ना; **~सी मींढणा** बुरी तरह पिटाई करना।

गीऊँ (पुं.) दे. गीहूँ।

गीगला (पुं.) दे. गेगला।

गीज्जर (पुं.) 1. वीर्य, शुक्र, 2. मनुष्य का बीज।

गीड़ (वि.) दे. ढीढ।

गीढ (पुं.) ढक्कन।

गीत (पुं.) 1. स्त्रियों द्वारा सामूहिक रूप में उच्च स्वर में गाया जाने वाला किसी भी भावपूर्ण विषय का गान, 2. गान, रागिनी, 3. धार्मिक भजन; **~गाणा** 1. बार-बार चर्चा करना, 2. बढ़ा-चढ़ा कर कहना, प्रशंसा करना; **~घड़णा** (दे. गीत बणाणा); **~छेड़णा** 1. कथा प्रारंभ करना, 2. लंबी कहानी या किस्सा सुनाना, 3. सामूहिक गीत गाना; **~ठाणा** गीत आरम्भ करना; **~बणाणा** 1. गीत लिखना, 2. कहानी बनाना, मनगढ़ंत बात कहना, 3. बार-बार कहना।

गीतड़ा (पुं.) गीत।

गीता (स्त्री.) दे. गीत्ता।

गीत्ता (स्त्री.) 1. श्रीमद्‍भगवद्‍गीता, कुरुक्षेत्र के निकट पेहवा मार्ग पर ज्योतिसर के स्थान पर महाभारत युद्ध के समय, लगभग पाँच हजार वर्ष से कुछ अधिक समय पूर्व योगिराज श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को धर्म-युद्ध के लिए प्रेरित करने के लिए दिया गया उपदेश जो अब लिपिबद्ध रूप में उपलब्ध है, 2. कथा, 3. उपदेश; **~पढणा** 1. गीता का पाठ करना, 2. ज्ञान की बात जानना, धर्म-कर्म की बात जानना, 3. संसार से विरक्त होना; **~बाँचणा** 1. गीता का पाठ करना, 2. मरणासन्न व्यक्ति के सिरहाने प्राण-मुक्ति के लिए गीता का पाठ करना। **गीता** (हि.)

गीत्ती (स्त्री.) गाथा, कथा; **~गाणा** बढ़ा-चढ़ कर कहना, बात को बार-बार कहना। **गीति** (हि.)

गीदड़ (पुं.) दे. गाद्दड़।

गीला (वि.) दे. आल्ला।

गीध (स्त्री.) होली के दिनों में लड़कियों द्वारा गीत गा कर खेला जाने वाला एक खेल।

गीहुआँ (वि.) गेहूँ के रंग का, बादामी।

गीहूँ (पुं.) एक प्रसिद्ध अन्न जो रबी की फ़सल में गंगा-स्नान के आस-पास बोया जाता है (इसके आटे की रोटी, पूरी-कचौरी आदि बनाते हैं, मांगलिक अवसरों पर इसे उबालकर तथा मीठा मिलाकर 'बाकळी' के रूप में बाँटा जाता है)। **गेहूँ** (हि.)

गीहूँ दाणा (पुं.) वह कपड़ा जिस पर गेहूँ के आकार के दाने छपे होते हैं।

गुंजन (पुं.) दे. गूँज।

गुंजफा (पुं.) एक खेल।

गुंजा (स्त्री.) दे. चिरमठी।

गुंजाइश (स्त्री.) दे. गुंज्यास।

गुंजार (स्त्री.) गूँजने की ध्वनि।

गुंज्यास (स्त्री.) 1. समाई, सहनशीलता, 2. फुरसत, अवकाश, 3. समाने भर का स्थान। **गुंजाइश** (हि.)

गुंठा (पुं.) दे. गूँट्ठा।

गुंठन (पुं.) ओढनी।

गुंडा (वि.) बदचलन, बदमाश।

गुंडा-गरदी (स्त्री.) बदमाशी।

गुंडापण (पुं.) बदमाशी। **गुंडापन** (हि.)

गुंतर (पुं.) नाराजगी में न बोलना।

गुँथना (क्रि. अ.) दे गुथणा।

गुँधणा (क्रि. अ.) गूँधा जाना, साना जाना।

गुंबज (पुं.) गोल और ऊँची छत।

गुआरणी (स्त्री.) दे. गवारणी

गुचलकी (स्त्री.) दे. कै।

गुच्ची (स्त्री.) 1. वह छोटा तथा लंबा गड्ढा जहाँ से गिल्ली (बित्ती) को डंडे से आगे की ओर फेंकते हैं (गूँचते हैं), 2. योनि, भगा; **~सा** छोटे कद वाला।

गुच्छा (पुं.) 1. झुंड, यथा—माँखियाँ का गुच्छा, 2. पुंज; **~(-छे) का गुच्छा** झुंड रूप में।

गुच्याणा (क्रि. स.) 1. गिल्ली डंडे के खेल में किसी को झकाना, थकाना या हराना, 2. चोरी से उठा ले जाना।

गुजर (स्त्री.) दे. गुजारा।

गुजरणा (क्रि. अ.) 1. जाना, 2. मृत्यु होना। **गुजरना** (हि.)

गुजरना (क्रि. अ.) दे. गुजरणा।

गुजराती (वि.) दे. गुजरात्ती।

गुजरात्ती (वि.) 1. गुजरात का निवासी, 2. गुजरात से संबंधित; **~पंखा** गुजरात का बना पंखा जिसका वर्णन गीतों में मिलता है। **गुजराती** (हि.)

गुजरिया (स्त्री.) दे. गूजरी।

गुजरी (स्त्री.) दे. गूजरी।

गुजारा (पुं.) गुज़र, निर्वाह।

गुट[1] (पुं.) 1. हाथ की मुट्ठी बंद करके बनाया गया मुक्का, तुल. 1. डुक, 2. डुक्का; **~ठोकणा/ मारणा** मुक्का मारना।

गुट[2] (पुं.) टोली, समान विचार वालों की टोली।

गुटकणा (क्रि. स.) 1. सटकना, 2. पीना, गटगट की ध्वनि के साथ तरल पदार्थ गले से नीचे उतारना, 3. चुपचाप सुनते रहना, 4. सहन करना, 5. बातों का रस लेना; (वि.) खाने-पीने में आनंद लेने वाला।

गुटकना (क्रि. स.) दे. गुटकणा।

गुटकळा (पुं.) घूँट।

गुटका (पुं.) 1. ईंट का आधा या छोटा भाग, 2. बड़ी पुस्तक का छोटा आकार, छोटे आकार की पुस्तक; (वि.) 1. छोटे क़द का, छोटा, 2. आधा।

गुटकाणा (क्रि. स.) चोरी-छिपे उठाना।

गुटळा (पुं.) चकला।

गुट्ठा (वि.) छोटे क़द का (व्यक्ति); (पुं.) मुक्का।

गुट्ठळ (पुं.) गुठली, मोटी गुठली।

गुट्याणा (क्रि. स.) 1. गुट या मुक्कों से पिटाई करना, 2. किसी वस्तु को चोरी-छिपे उठा ले जाना।

गुठड़ा (पुं.) दे. गूँट्ठा।

गुठळी (स्त्री.) 1. फल के बीच की गिरी, 2. एक किनारे पर छिद्र की हुई आम की गुठली जिससे नाई सिर की फियास या रूसी निकालता है, 3. मांस- ग्रंथि। **गुठली** (हि.)

गुठाळी (स्त्री.) सोना-चाँदी गलाने का बर्तन।

गुड़ (पुं.) गन्ने के रस को पका कर भेली, भेला या पेड़ी के रूप में जमा कर बनाया गया मीठा पदार्थ; (स्त्री.) गुड़-गुड़ की ध्वनि; **~करणा** काम बिगाड़ना; **~गोब्बर करणा** 1. मज़ा किरकिरा करना, 2. काम बिगाड़ना; **~डळियाँ, घी आँगळियाँ** गुड़ का बड़ा भंडार छोटी-छोटी डली खाने से और घी एक-एक अंगुली भर खाने पर भी समाप्त हो जाता है; **~सी बात** मीठी बात।

गुड़गामियाँ (पुं.) गुड़गाँवें का निवासी।

गुड़गाम्माँ (पुं.) हरियाणे का एक ज़िला (जनश्रुति के अनुसार इस ग्राम को कौरव-पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य ने बसाया था)। **गुड़गाँव, गुरुग्राम** (हि.)

गुड़गाम्में आळी (स्त्री.) गुड़गाँवें की मातृका या देवी जिसके नाम पर भारी मेला लगता है (भक्त यहाँ चैत्र मास में बच्चों का मुंडन कराते हैं और गठजोड़े की जात आदि देते हैं)।

गुड़गुड़ (स्त्री.) 1. हुक्का पीते समय उत्पन्न ध्वनि, 2. भूख आदि के कारण पेट में उत्पन्न ध्वनि।

गुड़गुड़ाणा (क्रि. स.) 1. हुक्का पीना, 2. हुक्के से गुड़-गुड़ की ध्वनि निकालना, 3. गुड़गुड़ा कर हुक्के के पानी की जाँच करना, 4. परखना। **गुड़गुड़ाना** (हि.)

गुड़गुड़ाना (क्रि. स.) दे. गुड़गुड़ाणा।

गुड़गुड़ी (स्त्री.) 1. हुकटी, छोटा हुक्का, 2. डुगडुगी।

गुड़गोई (स्त्री.) दे. गिड़गोई।

गुड़धाणी (स्त्री.) 1. भुने गेहूँ और गुड़ के लड्डू, 2. गुड़ और धानी। **गुड़धानी** (हि.)

गुड़धानी (स्त्री.) दे. गुड़धाणी।

गुड़भत्ता (पुं.) गाजर या भात को गुड़ में पकाकर बनाया गया पदार्थ।

गुडयाणी (स्त्री.) 1. गुड़ से बना पतला हलवा। 2. पत्रकार बाल मुकुंद का जन्म स्थान।

गुडहल (पुं.) एक फूल विशेष।

गुड़ाई (स्त्री.) 1. गोड़ाई, खेती को गोड़ने का काम, 2. गोड़ाई करने की मज़दूरी।

गुड़ाकेश (पुं.) अर्जुन।

गुड़िया (स्त्री.) दे. गुढियाँ।

गुडुंबा (पुं.) भूनी हुई कच्ची अमिया का नमक मिला पन्ना।

गुड्डा (पुं.) 1. कपड़े का बना पुतला, खिलौना विशेष, 2. आक की डोडी से निकला रुएँ समेत बीज जो हवा में उड़ता है, 3. बड़ी पतंग।

गुड्डी[1] (स्त्री.) 1. पतंग, 2. (दे. गुढियाँ)।

गुड्डी² (स्त्री.) 1. दे. चकली 2. दे. घिरणी।

गुढळियाँ (क्रि. वि.) घुटनों के बल।

गुढियाँ (स्त्री.) खिलौना विशेष; **~का खेल** आसान काम; **~~करणा** गंभीरता से काम न करना; **~सी** सुंदर। **गुड़िया** (हि.)

गुढी (स्त्री.) मन की ग्रंथि, कुंठा।

गुण (पुं.) 1. हित, 2. लाभ, 3. सहायता, परोपकार, 4. स्वभाव, 5. कला या विद्या; **~करणा** लाभ पहुँचाना–आमळे का खाया, अर बूढ़े का कह्या भोत गुण करै सै; **~की कहणा** हित की कहना; **~मानणा** अहसान मानना; **~गाणा** प्रशंसा करना।

गुणकारी (वि.) गुण करने वाली।

गुणगुणा (पुं.) नाक का मैल; (वि.) 1. वह व्यक्ति जो नाक में बोलता हो, 2. हल्का गर्म (पानी)। **गुनगुना** (हि.)

गुणगुणाणा (क्रि. स.) 1. बोलते समय नासिक्य ध्वनि उत्पन्न करना, 2. गीत गुनगुनाना, 3. बड़बड़ाना। **गुनगुनाना** (हि.)

गुणग्राहक (पुं.) कदरदान, गुणों का आदर करने वाला।

गुणणा (क्रि. स.) चिंतन को व्यवहार में लाना; (क्रि. स.) 1. समझदार होना, 2. लाभ पहुँचना। **गुनना** (हि.)

गुणमंता (वि.) दे. गुणवंता।

गुणमान (वि.) गुणी। **गुणवान** (हि.)

गुणवंत (वि.) गुणी, गुण वाला।

गुणवंता (वि.) गुणवान–जै गुणवंता घर रहै, तीन चीज की हाण, गुण भूल्लै, विद्या घटै और घटावै काण।

गुणवान (वि.) दे. गुणमान।

गुणा (पुं.) गणित की एक क्रिया, जरब।

गुणियाँ (पुं.) 1. दो पत्तियों से जुड़कर 90 अंश के कोण पर बना यंत्र, 2. दीवार की सीध नापने के लिए प्रयुक्त यंत्र; (वि.) गुणी। **गोनिया** (हि.)

गुणी (वि.) गुणवान, गुणवाला।

गुणे (पुं.) मीठा मिली सख़्त आटे की तली हुई छिद्रदार गोल मिठाई विशेष।

गुत्थमगुत्था (स्त्री.) 1. एक-दूसरे को बुरी तरह से जकड़कर या पकड़कर लड़ने का भाव, 2. गुथ जाने की स्थिति।

गुत्थी (स्त्री.) 1. उलझन, 2. गाँठ।

गुथ¹ (स्त्री.) स्त्री की चोटी; (पुं.) मोटा चोटा।

गुथ² (स्त्री.) गुद्दी, गर्दन; (क्रि. स.) 'गुथणा' क्रिया का आदे. रूप।

गुथणा (क्रि. अ.) 1. ज़बरदस्ती लिपट जाना, 2. हाथापाई करना, 3. गूँथा जाना; (वि.) वह जो शीघ्र गुँथे। **गुँथना** (हि.)

गुथना (क्रि. अ.) दे. गुथणा।

गुथमाँ (वि.) 1. गुँथा हुआ, 2. सुगठित–गुथमाँ गात, 3. भली प्रकार से कस कर लपेटा हुआ, 4. भली प्रकार से लथपथ–डाक्कळ (सरसों) अर बथुए का साग गुथमाँ बणा राक्ख्या था। **गुथवाँ** (हि.)

गुथवाँ (वि.) दे. गुथमाँ।

गुथवाणा (क्रि. स.) गूँथने का काम अन्य से करवाना। **गुथवाना** (हि.)

गुथवाना (क्रि. स.) दे. गुथवाणा।

गुदगुदा (वि.) 1. गद्देदार, 2. कोमल, 3. मांसल, 4. जिसके स्पर्श से गुदगुदी अनुभव हो।

गुदगुदाणा (क्रि. स.) 1. गुदगुदी करना, 2. उत्तेजित करना, 3. पूर्व परीक्षा करना। **गुदगुदाना** (हि.)

गुदगुदाना (क्रि. स.) दे. गुदगुदाणा।

गुदगुदी (स्त्री.) 1. फुरफुरी, गुदगुदाने से उत्पन्न फुरफुरी, 2. सुखद अनुभूति; **~ऊठणा** 1. शरीर के किसी कोमल अंग पर अचानक स्पर्श से हँसी उत्पन्न होना, 2. कामुक ठीस उठना; **~करणा** बगल में (विशेषकर बालक की) या पसलियों के आस-पास अंगुली लगाकर गुदगुदाना या हँसाना; **~चालणा** खुजली होना।

गुदड़ी (स्त्री.) दे. गूदड़ी।

गुदवाणा (क्रि. स.) दे. खिणवाणा। **गुदवाना** (हि.)

गुदाना (क्रि. स.) दे. गुदवाणा।

गुदाम (पुं.) भांडार, भंडार। **गोदाम** (हि.)

गुद्दा (पुं.) फल, सब्जी आदि के बीच का कोमल अंश। **गूदा** (हि.)

गुद्दी (स्त्री.) गर्दन, ग्रीवा; **~ठाणा** अकड़ दिखाना, अकड़ना; **~दाबणा** 1. गर्दन दबाना, गला घोंटना, 2. क़ाबू में रखना या करना।

गुनगुना (वि.) दे. गुणगुणा।

गुनगुनाना (क्रि. स.) दे. गुणगुणाणा।

गुनदान्नी (स्त्री.) गोंद या लेही रखने का पात्र। **गोंददानी** (हि.)

गुनना (क्रि. स.) दे. गुणणा।

गुनहगार (वि.) 1. पापी, 2. दोषी, अपराधी।

गुनाह (पुं.) 1. पाप, 2. अपराध।

गुप (पुं.) दे. घुप्प।

गुपकणा (क्रि. स.) 1. निगलना, 2. लपकना, 3. हड़पना। **गपकना** (हि.)

गुपचुप (क्रि. वि.) 1. चुपचाप, शांत, 2. धीमे-धीमे; (स्त्री.) 1. षड्यंत्र, 2. लुकाव, छिपाव, 3. छिपने या लुप्त होने का भाव; **~करणा** 1. धीरे-धीरे बातचीत करना, 2. षड्यंत्र रचना, 3. छिपाना, लुप्त करना; **~होणा** 1. पानी में डूबना, 2. दृष्टि से दूर होना।

गुपत (वि.) 1. छिपी हुई, जिसका भेद न लगे, जिसका भेद कुछ ही लोगों को हो, 2. विलुप्त, अदृश्य; **~करणा** 1. हड़पना, 2. छिपाना, 3. भगा ले जाना। **गुप्त** (हि.)

गुपत दान (पुं.) गुप्त रीति से या छिपा कर दिया गया दान। **गुप्तदान** (हि.)

गुपत मार (स्त्री.) 1. भीतर की चोट, वह चोट जो दिखाई न दे, 2. सदमा, आंतरिक कष्ट। **गुप्त मार** (हि.)

गुपती (स्त्री.) वह छड़ी जिसमें पतली बर्छी छिपी हो; (वि.) छिपाया हुआ, गुप्त। **गुप्ती** (हि.)

गुपती ताळा (पुं.) वह ताला जिसके खोलने में कोई विशेष भेद हो, चोर ताला।

गुपाल (पुं.) 1. श्री कृष्ण, 2. गो-पालक। **गोपाल** (हि.)

गुप्त (वि.) दे. गुपत।

गुप्त दान (पुं.) दे. गुपत दान।

गुप्त, बाल मुकुन्द (पुं.) हरियाणे का एक साहित्यकार (1865-1907)।

गुप्ती (स्त्री.) दे. गुपती।

गुफा (स्त्री.) खोह, कंदरा।

गुबार (पुं.) 1. मन की पीड़ा, 2. धूल।

गुब्बारा (पुं.) दे. गुभारा।

गुभची (स्त्री.) 1. पानी में डुबकी लगाने का भाव, डुबकी, 2. गोता; **~खाणा** 1. पानी में डूबना, 2. गोता लगाना,

3. डूबने से पूर्व ऊपर-नीचे होना; **~देणा** पानी में डुबोना; **~मारणा** गोता लगाना, कुछ समय के लिए पानी में छिपना।

गुभणा (क्रि. स.) 1. चुभना, 2. घँसना, शरीर के किसी अंग में काँटे या नुकीली वस्तु का धँसना, 3. बात चुभना; (वि.) वह जो शीघ्र चुभ जाए। **गुभना** (हि.)

गुभाणा (क्रि. स.) चुभाना, गड़ाना, घोंपना, धँसाना।

गुभारणा (क्रि.) दे. घूबणा।

गुभारा (पुं.) फुलाने के काम आने वाली रबर की एक थैली। **गुब्बारा** (हि.)

गुम (पुं.) 1. गुप्त, छिपा हुआ, 2. लुप्त; **~चोट लागणा** 1. ग़म होना, 2. ऐसी चोट लगना जिसका बाहर से पता नहीं लग सके।

गुमटी (स्त्री.) 1. कूएँ, धर्मशाला, मंदिर आदि पर बना छोटा गुंबज, 2. मढ़ी, 3. एक प्रकार की ओढ़नी।

गुमडैल (वि.) जिसके शरीर पर बहुत फुंसी हों।

गुमनाम (वि.) अज्ञात।

गुमर (पुं.) घमंड। दे. गुमान।

गुमराई (स्त्री.) घमंड।

गुमसुम (वि.) 1. चुपचाप, 2. गूँगा, (दे. घूँहन्ना); **~होणा** 1. बेहोश होना, 2. अवाक् होना, 3. किसी से बातचीत नहीं करना।

गुमान (पुं.) 1. अभिमान, 2. अकड़, 3. इच्छा, मर्ज़ी, 4. अरमान; **~काढणा** 1. अभिमान निकालना, 2. इच्छा पूर्ति करना; **~राखणा/होणा** अभिमान करना; **~लिकाड़णा** 1. मनमर्ज़ी करना, इच्छा के अनुसार आचरण करना, 2. मान-मर्दित करना; **~लीक्कड़णा** नक्शा ढीला होना।

गुमानण (वि.) गुमान या अभिमान करने वाली, स्वाभिमानिनी; **~मात्ता** चेचक, उन्मादित या अचेत करने वाली (चेचक माता)।

गुमानणा (क्रि. अ.) 1. अभिमान करना, 2. अभिमानी होना, 3. सम्मान देना।

गुमानी (वि.) दे. गुमान्नी।

गुमान्नी (वि.) अभिमानी, गर्वीला। **गुमानी** (हि.)

गुमान्नी दास (पुं.) हरियाणे के एक प्रसिद्ध भक्त कवि जिनकी 'बारहखड़ी' और अन्य वाणियाँ प्रसिद्ध हैं।

गुम्मा (स्त्री.) 9" × 5" आकार की पँजावे की ईंट। दे. ककैया।

गुर[1] (पुं.) 1. युक्ति, तरीक़ा, ढंग, 2. सरल उपाय, 3. प्रश्न हल करने का छोटा तथा सरल निश्चित विधान, 4. इलाज या उपाय–मूरख का गुर सोट्टा (मूर्ख प्रताड़ना से ही ठीक व्यवहार करता है)।

गुर[2] (पुं.) 1. अध्यापक, 2. स्वामी, 3. किसी हुनर या रोज़गार को सिखाने वाला। **गुरु** (हि.)

गुरकल (पुं.) 1. वह स्थान जहाँ पाधा, पंडित या गुरु विद्यार्थियों को संस्कृत विद्या का दान या ज्ञान देता है, 2. गुरु का आश्रम जहाँ विद्यार्थी निवास करके विद्या ग्रहण करते हैं, 3. आर्य समाज द्वारा संचालित पाठशाला। **गुरुकुल** (हि.)

गुरगा (पुं.) 1. चापलूस, 2. चुगलखोर, 3. चेला, 4. नौकर, टहलुआ, 5. जासूस।

गुरगाबी (स्त्री.) दे. गुरगाब्बी।

गुरगाब्बी (स्त्री.) हल्की जूती जिसमें चोटिया नहीं लगाया जाता, पंजाबी जूती। **गुरगाबी** (हि.)

गुरड़णा (क्रि. अ.) दे. गिरड़णा।

गुरड़ाणा (क्रि. स.) दे. गिरड़ाणा।

गुरदवारा (पुं.) सिक्ख धर्म के मानने वालों का पूजा-स्थान या मंदिर। **गुरुद्वारा** (हि.)

गुरदा (पुं.) 1. शरीर का एक अंग विशेष, 2. साहस, हिम्मत।

गुर दिछणा (स्त्री.) गुरु को दी जाने वाली दक्षिणा, दीक्षा के समय दी जाने वाली दक्षिणा विशेष। **गुरुदक्षिणा** (हि.)

गुरपणा (क्रि.) दे. गुरबणा।

गुरबणा (क्रि. स.) 1. खुरपे से ज़मीन खोद कर तथा हाथ से बीज बिखेर कर खेत बोना, 2. हल्की निलाई या निराई करना। **गुरबना** (हि.)

गुरबत (स्त्री.) गरीबी, निर्धनता।

गुरभण (स्त्री.) पिटाई; **~भरणा** पिटाई करना।

गुरभाई (पुं.) एक ही गुरु से पढ़े हुए, एक ही गुरु परंपरा के। **गुरुभ्राता** (हि.)

गुरभान (स्त्री.) 1. साँझी के लिए प्रयुक्त विशेषण (संभवतः स्त्रियाँ साँझी को गुरु बहन मानकर पूजती हैं), 2. गुरु बहन।

गुरमुंडे (पुं.) एक मीठा भोज्य पदार्थ।

गुरराणा (क्रि. स.) दे. गरराणा।

गुरसल (स्त्री.) फ़ाखता जैसा एक पक्षी, काबरी (जो अपना घोंसला दीवारों के छिद्रों में बनाती है), (दे. गोरली)।

गुराड़ा (पुं.) दे. घुहेरा।

गुरु (पुं.) दे. गुर[2]।

गुरुआई (स्त्री.) 1. गुरुपन का भाव, 2. पंडिताई–म्हारे ताऊ की गुहाँड के सात गाम्माँ मैं गुरुआई थी।

गुरुआणी (स्त्री.) दे. गुरुयाणी।

गुरुआनी (स्त्री.) दे. गुरुयाणी।

गुरुजन (पुं.) माता, पिता, आचार्य आदि बड़े लोग।

गुरुदक्षिणा (स्त्री.) दे. गुरुदिछणा।

गुरुद्वारा (पुं.) दे. गुरदवारा।

गुरु पूरणमास्सी (स्त्री.) गुरुपूर्णिमा, आषाढ़ी पूर्णिमा, व्यास पूर्णिमा (इसे मन्वंतर का आदि दिन मानते हैं, संन्यासी इसी दिन से चातुर्मास्य व्रत आरंभ करते हैं, इस दिन पवन परीक्षा की जाती है)। **गुरु पूर्णिमा** (हि.)

गुरुभाई (पुं.) दे. गुरभाई।

गुरुमुखी (स्त्री.) पंजाबी भाषा की लिपि।

गुरुयाणी (स्त्री.) 1. गुरु की पत्नी, 2. पंडितानी, 3. मिसरानी, 4. कुल-गुरु की पत्नी।

गुरुवार (पुं.) बृहस्पतिवार।

गुरू (पुं.) दे. गुर[1]।

गुल (पुं.) 1. तंबाकू का जला हुआ अंश, 2. जलता हुआ कोयला, 3. पुष्प, 4. दीपक की बत्ती का ऊपरी काला अंश, 5. झूठ; **~अर हुक्के का पाणी देणा** घोर अपमान करना; **~ऊठणा** नीलगर की भट्टी में रंग का ठीक-ठीक पकना; **~खिलणा** 1. विचित्र घटना घटित होना, 2. बखेड़ा खड़ा होना; **~छोडणा** झूठ बोलना, झूठी बात का प्रचार करना; **~होणा** 1. दीपक बुझना, 2. मुरझाना, 3. अंधकार छाना, 4. किसी बात का झूठापन सिद्ध होना।

गुलकंद (पुं.) गुलाब की पंखुड़ियों से तैयार मीठा लेह्य पदार्थ।

गुळगप्प (पुं.) दे. गळगप।

गुलगुला (पुं.) मीठा पकौड़ा; **~सा** मोटा और बेढ़ंगे आकार का; **~~नाक** मोटी और चपटी नाक।

गुलगुली (स्त्री.) दे. गुदगुदी।

गुलचा (पुं.) दे. मुक्का।

गुलछररे (पुं.) कर्त्तव्य से हटकर स्वछंद वृत्ति से किया जाने वाला भोग-विलास या खानपान; **~उडाणा** 1. मनमाना व्यवहार करना, 2. मनमाना भोजन करते फिरना, 3. कमाई को उड़ाना या लुटाना। **गुलछर्रे** (हि.)

गुळझट (स्त्री.) 1. सिकुड़न, सलवट, 2. उलझन की गाँठ, 3. शरीर की झुर्री।

गुलतानी (स्त्री.) गोंददानी। गोंद। दे. गूंद।

गुलदस्ता (पुं.) फूलों को जोड़कर बनाया गया गुच्छा।

गुलदाणा (पुं.) 1. नुक़्ती दाना, 2. एक वस्त्र विशेष।

गुळपणा (क्रि. स.) 1. ऊपर से गिरती हुई वस्तु को बीच में लपकना या पकड़ना, 2. निगलना, 3. हड़पना, हज़म करना।

गुलबंद (पुं.) गले में लपेटने या सिर ढाँपने का ऊनी उप-वस्त्र, (दे. गुलूबंद)। **गुलूबंद** (हि.)

गुलमेख (स्त्री.) पताशा कील।

गुळाई (स्त्री.) गोलपन। **गोलाई** (हि.)

गुलाब (पुं.) 1. सुंदर और खुशबूदार फूल विशेष का झाड़ीनुमा पौधा, 2. एक फूल विशेष, 3. गुलाब जल।

गुलाब जामुन (स्त्री.) दे. गुलाब जाम्मण।

गुलाब जाम्मण (स्त्री.) एक मिठाई विशेष **गुलाब जामुन** (हि.)

गुलाब्बी (वि.) गुलाब के रंग का; **~चणा** हल्के लाल रंग का चना। **गुलाबी** (हि.)

गुलाम (पुं.) 1. दास, सेवक, नौकर, 2. ख़रीदा हुआ व्यक्ति, 3. ताश का एक पत्ता जिसे 'गोला' भी कहते हैं।

गुलामी (स्त्री.) दे. गुलाम्मी।

गुलाम्मी (स्त्री.) दासता। **गुलामी** (हि.)

गुलाल (पुं.) अबीर, लाल रंग का चूरा विशेष (जो प्राय: फाग खेलने में काम आता है)।

गुळिया (पुं.) 1. एक जाट अल्ल या गोत (इस अल्ल का प्रयोग ब्राह्मण तथा वैश्य से इतर जाति के लोग भी अपने नाम के साथ करते हैं) 2. 'गुळिया' गोत के 24 गाँवों की खाप जिसमें बादली (गुलिया) जहाँगीरपुर, शेखूपुर, लाडपुर, मुनीमपुर, सूहराह कलोई, खुँगाई आदि गाँव हैं (इन गाँवों के लोगों में लड़के-लड़कियों के आपसी विवाह नहीं होते), एक किंवदंती के अनुसार दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी के आस-पास यवन आक्रमण के समय बादली गाँव के कुछ प्रमुख लोगों को वर्तमान ठाकुर-द्वारे के तालाब के पास बड़ी गोल (पैंदीदार, वृत्ताकार दो-तीन हाथ ऊँचा मृद्-भांड) से यवनों ने मदिरापान करा दिया, नशा उतरने पर उन्हें भूल का पता लगा तथा प्रायश्चित-स्वरूप अपने यज्ञोपवीत उतार कर उसी गोल में डाल दिए, गोल में जनेऊ डालने के कारण ये लोग **'गोळिया'** या 'गुळिया' कहलाए; **~खाप** **'गुळिया'** गोत के 24 गाँव।

गुळिया हरबीर सिंह (पुं.) ज़िला रोहतक निवासी एक योद्धा जिसने युद्ध के समय तैमूर की छाती में भाला घोंपा था।

गुलीन (पुं.) गोल छल्लेदार गोटे का ओढना।

गुलीबंद (पुं.) दे. गुलूबंद।

गुलूबंद (पुं.) 1. गले का एक उप-वस्त्र जो सर्दी से बचाव के लिए प्रयोग में लाया जाता है, 2. गले का एक आभूषण (इसमें पट्टी पर छोटे सुनहरी दाने जड़े होते हैं)।

गुलेल (स्त्री.) पक्षियों को उड़ाने या मारने के लिए प्रयुक्त एक शस्त्र विशेष।

गुलेलची (पुं.) 1. गुलेल चलाने वाला, 2. निशानेबाज़; (वि.) निर्दयी।

गुल्लक (स्त्री.) 1. रुपये-पैसे डालने का पात्र विशेष, 2. बच्चों का ख़जाना, 3. रुपया-पैसा रखने का गुप्त स्थान, गल्ला; **~करणा** छिपाकर रुपया-पैसा जोड़ना, नक़दी जोड़ना।

गुल्ला (पुं.) 1. गुलेल या गोपिये में रखकर फेंका जाने वाला मिट्टी का कच्चा गोला या कंकर आदि, 2. लकड़ी की मोटी डाट।

गुल्ली (स्त्री.) दे. बित्ती। **गिल्ली** (हि.)

गुल्ली-डंडा (पुं.) दे. बित्ती-डंडा।

गुवाड़ा (पुं.) 1. गाय-बैल आदि पशुओं को बाँधने का स्थान, 2. उपले थापने का स्थान, 1. तुल. गितवाड़ा, 2. तुल. घेर[1]।

गुवार (पुं.) दे. गवार।

गुवारिया (पुं.) दे. गवारिया।

गुवाह (पुं.) गवाही देने वाला, साक्षी देने वाला। **गवाह** (हि.)

गुवाही (स्त्री.) साक्षी; **~करणा** गवाही देने के लिए तैयार करना; **~तोड़णा** गवाह पर दबाव डालकर गवाही देने से मना करवाना; **~मारणा** गवाही देने नहीं जाना। **गवाही** (हि.)

गुसरैंहढी (स्त्री.) मिट्टी के चूल्हे के पास उपले आदि रखने का स्थान।

गुसाईं (पुं.) 1. स्वामी, मालिक, 2. पति, तुल. धणी।

गुसैल (वि.) प्रतिशोध की भावना रखने वाला। **गुस्सैल** (हि.)

गुस्लख़ाना (पुं.) स्नानागार।

गुस्सा (पुं.) दे. छोह।

गुस्सैल (वि.) दे. गुसैल।

गुह (पुं.) टट्टी, मल, मैला, तुल. भिस्टा; **~करणा** 1. मल विसर्जन करना, तुल. हगणा, 2. मैला करना, गंदा करना, 3. बच्चे का पालन-पोषण करना; **~मूत करणा** बच्चे की हर प्रकार से सेवा करना, पाल-पोस कर बड़ा करना; **~(-हाँ) मैंह के चावळ** 1. अपवित्र स्थान की वस्तु, 2. कटहली के फूल में लगे पीले चावल; **~सुँघाणा** भूत-प्रेत को भगाने या मिरगी के मरीज़ को होश में लाने के लिए टट्टी सुँघाना।

गुहला (वि.) 1. गंदा, गलीज़, 2. टट्टी के हाथ नहीं धोने वाला।

गुहाँजनी (स्त्री.) दे. गूँझणी।

गुहाँड (पुं.) 1. निकटवर्ती गाँव, 2. खाप, जनपद, 3. भीड़; **~कट्ठा करणा** 1. किसी महत्त्वपूर्ण निर्णय के लिए आस-पास के गाँव या खाप के लोगों को आमंत्रित करना, 2. आस-पास के गाँव की पंचायत को बुलाना, 3. भीड़ इकट्ठी करना, शोर मचाकर भीड़

जोड़ना; **~जिमाणा** आस-पास के गाँव के लोगों को भोजन खिलाना; **~जुड़णा** 1. आस-पास के गाँव के लोगों का इकट्ठा होना, 2. भीड़ एकत्रित होना; **~टूट पड़णा** 1. आस- पास के या एक गाँव के लोगों का किसी पर हल्ला बोल देना, 2. लूट मचाना, 3. किसी की सहायता के लिए बहुत लोगों का इकट्ठा होना, 4. भीड़ उमड़ पड़ना।

गुहाँड्डी (पुं.) निकटवर्ती गाँव का निवासी।

गुहा (पुं.) दे. गुवाह।

गुहाई (स्त्री.) दे. गुवाही।

गुहामणि (स्त्री.) दे. गूँझणी।

गुहार (स्त्री.) शोर।

गुहेरा (पुं.) साँडे या गिरगिट जैसा एक जीव जिसकी दो जिह्वा होती हैं और गर्दन पर बाल नहीं होते (यह इतना विषैला माना गया है कि इसके काटते ही मनुष्य अंधा होकर मर जाता है, साथ में इतना भीरु भी है कि छोटी कंकर लगते ही मर जाता है, एक धारणा के अनुसार यह काटते ही अपने पेशाब में लोट-पोट होता है यदि मनुष्य काटे स्थान पर तुरंत पेशाब करें तो वह नहीं मरता, एक धारणा के अनुसार गोह की पहली संतान गुहेरा बनती है); **~सा लड़णा** आपत्ति टूट पड़ना, सदमा पहुँचना, असह्य बात सुनना।

गुहेरिया (पुं.) छोटा साँप जिसके शरीर पर चितके होते हैं, एक साँप विशेष; **~साँप** (दे. गुहेरिया)।

गुह्भची (स्त्री.) दे. गुभची।

गुह्रेड़ी (पुं.) दे. गुहेरा।

गूँ (पुं.) दे. गूह।

गूँगा (वि.) दे. गूँग्गा।

गूँग्गा (वि.) मूक। **गूँगा** (हि.)

गूँचणा (क्रि. स.) गुच्ची में रख कर गुल्ली फेंकना, (दे. गुच्ची); (क्रि. अ.) भाग निकलना।

गूँज (स्त्री.) प्रतिध्वनि; **~माँचणा** वाहवाही होना, प्रसिद्धि होना।

गूँजणा (क्रि. अ.) प्रतिध्वनित होना; (वि.) वह जो गूँजे। **गूँजना** (हि.)

गूँजना (क्रि. अ.) दे. गूँजणा।

गूँझणी (स्त्री.) पलक के नीचे होने वाली फुंसी, अंजनी। **गुहाँजनी** (हि.)

गूँट्ठा (पुं.) हाथ-पैर की मोटी अंगुली; **~आणा** मुसीबत आना; **~करणा/टेकणा/लाणा** 1. अँगूठे का चिह्न अंकित करना, 2. स्वीकृति देना; **~करवाणा** साक्षी स्वरूप अँगूठे का चिह्न लगवाना; **~दसखत करणा** 1. अँगूठा लगाना, हस्ताक्षर करना, 2. गवाही देना; **~दिखाणा** 1. चिढ़ाना, 2. अपमानित करना, 3. आपत्ति काल में सहायता न करना; **~देणा** 1. गला घोंटना, 2. मुसीबत खड़ी करना; **~पाकड़णा** 1. अनुनय- विनय करना, 2. चरण छूना; **~बाँधणा** वायु विकार यथा नाभि डिगना, वायु सूल (बासूल), हिचकी, वमन आदि को दूर करने के लिए अँगूठों में धागा बाँधना; **~मरोड़णा** अनुनय-विनय करना, प्रार्थना करना; **~सा** 1. छोटे क़द का, बौना, 2. अंगुष्ठ प्रमाण का। **अँगूठा** (हि.)

गूँट्ठा टेक (वि.) अनपढ़, जो अपने हस्ताक्षर न कर सके।

गूँट्ठी (स्त्री.) छल्ला जो अंगुली में पहना जाता है; **~खेलहणा** दे. काँगण-जूआ; **~देणा** 1. जिम्मेदारी सौंपना, 2. अपना

अधिकार अन्य को देना; **~लेणा/ सँभाळणा** 1. जिम्मेदारी लेना, 2. महत्त्वपूर्ण पद सँभालना; **~सौंपणा** अपनी जिम्मेदारी अन्य को सँभलवाना। **अँगूठी** (हि.)

गूँड (पुं.) झुंड।

गूँडळी (स्त्री.) दे. गींडळी।

गूँण (स्त्री.) 1. चरसे के कूएँ का वह ढालू भाग जहाँ कीलिया (कूएँ के बैल हाँकने वाला) बैलों को खड़ा करके बारिया के आदेशानुसार लाव को जूए से अलग करता है, कूएँ के पास का ढालू गड्ढा जहाँ से बैल पुनः ऊपर मैड़छे (वह ऊँचा स्थान जहाँ से बैल चरसा खींचना शुरू करते हैं) की ओर मुड़ जाते हैं, 2. गड्ढा, 3. कोना; **~में देणा/लाणा** 1. पछाड़ना, 2. गड्डे में फेंकना, 3. हराना।

गूँणी (स्त्री.) दे. गूँण।

गूँथना (क्रि. स.) दे. गूथणा।

गूँद[1] (पुं.) 1. पेड़ों पर लगने वाला एक चिपचिपा पदार्थ, 2. गोंद मिली पंजीरी जो जच्चा को खिलाते हैं; **~करणा** जच्चा के लिए गोंद मिली पंजीरी बनाना; **~बेलवा बाँटणा** पुत्र जन्म की प्रसन्नता में कटोरे भर कर गोंद बाँटना। **गोंद** (हि.)

गूँद[2] (स्त्री.) बूँद (मेवा.)।

गूँदणा (क्रि. स.) दे. ओसणणा।

गूँधणी (स्त्री.) गूझणी।

गूँह (पुं.) दे. गूह।

गू (पुं.) दे. गुह।

गूओ (स्त्री.) दे. गोह।

गूगळी (वि.) व्यर्थ की, अनुपयुक्त, जैसे– गूगळी गा।

गूग्गा पीर (पुं.) एक सिद्ध पीर जिसे हिंदू-मुसलमान समान भाव से पूजते हैं (हरियाणा और राजस्थान में इसके कई स्मृति स्थान हैं, ये गुरु गोरखनाथ के शिष्य माने जाते हैं, इन्होंने सिद्धि के द्वारा श्रावण कृष्ण नवमी के दिन भूमि समाधि ली थी, अर्जन-सर्जन इनके दो भाई कहे जाते हैं, श्री आर. सी. टेम्पल के अनुसार गूगा ने 1000 ई. में गजनी के आक्रमण के समय उसे रोका था; **~की छड़ी** मोर के पंखों से तैयार झाड़ूनुमा छड़ी जिसे भक्त कंधे पर धारण कर गाँव-गाँव घुमाते हैं; **~की मैड़ी** 1. गूगा की मढ़ी, 2. हिसार में वह स्थान जहाँ गूगा का मेला लगता है; **गुरु** ~गूगापीर; **~नोम्मी** श्रावण कृष्ण नवमी, इस दिन गूगा की पूजा होती है, भूमि पर नीले रंग से गूगा का चित्र चित्रित किया जाता है, इसे नीले घोड़े पर दिखाया जाता है, आस-पास साँप के चित्र चित्रित किए जाते हैं।) **गूगा पीर** (हि.)

गूजर (पुं.) दे. गूज्जर।

गूजरी (स्त्री.) गूजर महिला, गूजर जाति की स्त्री।

गूज्जर (पुं.) हरियाणे की एक जाति जिसका मुख्य धंधा पशु पालन और कृषि है (इनका जाट, अहीर आदि जातियों के साथ हुक्के पानी का संबंध है, ये अपना संबंध श्रीराम के पुत्र लव से बताते हैं, कुछ लोग अपना संबंध राजपूत पिता से जोड़ते हैं, कनगहम इनका संबंध यूची, कुशान, कस्पीरोया, तोंगारी, कुई-स्वांग, कोरसोन, कोरसिया, कोरानो आदि से जोड़ते हैं, यह जाति

दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्रों के अतिरिक्त रूहेलखंड, सहारनपुर, गढ़, गुजरात आदि क्षेत्रों में भी है, दिल्ली के आसपास इनके मुख्य गोत हैं–चमाईन, खटाणा, खारी, बड़सोई, छोक्कर, खाल, मावी, राठी, भाट्टी, कसौणी, बलसर, डेड्डे, पीलवान, अधाना, रामायण, नागरी, छोटखान्ना, बड़खान्ना, कसाना, रोस्सा, खूबड़, मुंडन, कढाण, तोहर, गोरसी, कणाणा आदि (एस. जी.)।

गूजर (हि.)

गूडरी (स्त्री.) 1. कूएँ की चक्री की वे खड़ी लकड़ियाँ जिनमें चाक (चक्र) घूमता है, 2. पैर (खलियान) खूँघने या गाहने की कोल्हड़ी की मूसली।

गूड्डी (स्त्री.) चर्खे के अगले दो छोटे स्तंभ।

गूड्ढी (स्त्री.) सख़्त, जो बहुत तरल न हो। **गाढ़ी** (हि.)

गूणा (स्त्री.) गवार की सूखी फली।

गूथणा (क्रि. स.) 1. दे. मेळणा, 2. दे. ओसणणा। **गूंथना** (हि.)

गूदड़ (पु.) दे. गूद्दड़।

गूदड़ा (पु.) 1. चिथड़े आदि सी कर बनाया गया मोटा बिछौना, 2. पुराना वस्त्र, फटा पुराना वस्त्र, 3. मोटे सूत का बना वस्त्र, (दे. गूद्दड़); **~सा** मोटा वस्त्र।

गूदड़िया (वि.) 1. गूदड़ के वस्त्र धारण करने वाला, गूदड़ ओढ़ने-बिछाने वाला, 2. ग़लीज़, गंदे वस्त्र धारण करने वाला; **~मरकोल** मोटे वस्त्र पहनने वाले को ठंड नहीं सताती।

गूदड़ी (स्त्री.) 1. छोटा गूदड़, 2. नाथ-पंथी साधुओं द्वारा धारण किया जाने वाला एक वस्त्र विशेष; **~का लाल** गरीब क़िन्तु बुद्धिमान। **गुदड़ी** (हि.)

गूदड़ी राजहंस (पुं.) कंथा।

गूदा (पुं.) दे. गूद्दा।

गूद्दड़ (पुं.) गूदड़, (दे. गूदड़ा); **~मैं गिंदौड़ा** 1. अप्रशंसित किन्तु महत्त्वपूर्ण वस्तु, 2. गूदड़ी का लाल। **गूदड़** (हि.)

गूद्दा (पुं.) फल, पौधे आदि का वह भाग जिसमें रस होता है। **गूदा** (हि.)

गून (पुं.) 1. दे. लदा 2. दे. लदान।

गूना[1] (पुं.) गवार का सूखा डंठल।

गूना[2] (पुं.) दे. फरड़ा।

गूमड़ा (पुं.) 1. ऐसी फुंसी जिसका अधिकांश फैलाव त्वचा के नीचे हो, कच्ची मवाद से भरी बड़ी फुंसी, फोड़ा, तुल. कचूम, 2. गुम चोट लगने पर होने वाला स्थानीय उभार, (दे. गूल्हा)।

गूमड़ी (स्त्री.) छोटी फुंसी।

गूलर (पुं.) दे. गूल्लर।

गूल्लर (पुं.) 1. उदुंबर, गूलर का वृक्ष, 2. गूलर वृक्ष का फल। **गूलर** (हि.)

गूल्ली (स्त्री.) 1. मकई का कच्चा भुट्टा, 2. लकड़ी की छोटी गिट्टी (दे. गिल्ली); **~चालणा** मकई के पौधे पर भुट्टा लगना आरंभ होना।

गूल्हा (पुं.) चोट लगने के कारण खून न निकलने की स्थिति में बनने वाला शरीर के अंदर का फोड़ा, मांस-पिंड। **~ऊठणा/पड़णा/होणा** चोट लगने के कारण खाल नीली होना या मांस की गाँठ बँधना या पड़ना।

गूह (पुं.) दे. गुह।

गूहला (वि.) गलीज़।

गूहली (स्त्री.) 1. वह जोहड़ी जिसमें गांव का गंदा पानी एकत्र होता हो, 2. गलीज महिला। दे.फूहड़।

गूहल्ला (पुं.) दे. गूल्हा।

गूही (स्त्री.) दे. गूहली।

गृहस्थ (पुं.) 1. घरबारी, 2. गृहस्थाश्रम का पालन करने वाला, 3. गृहस्थाश्रम, 4. दुनियादारी।

गृहस्थाश्रम (पुं.) चार आश्रमों में से दूसरा (पच्चीस से पचास वर्ष की आयु तक का वैवाहिक जीवन काल गृहस्थाश्रम माना गया है)।

गृहस्थी (पुं.) गृहस्थ धर्म का पालन करने वाला; (स्त्री.) 1. कुटुम्ब, 2. घर का सामान।

गेंडळी (स्त्री.) दे. गींडळी।

गेंडुआ (पुं.) दे. गींडवा।

गेंत (स्त्री.) गेंती, कंकरीली भूमि खोदने का औज़ार।

गेंद (स्त्री.) दे. गींड्डो।

गेंदा (पुं.) 1. एक फूल विशेष, 2. इस फूल का पौधा।

गेगला (पुं.) गेहूँ, चने आदि में मिला अनावश्यक काला बीज।

गेड़की (वि.) जो अनुकूल स्वभाव की न हो।

गेड़ा (पुं.) 1. चक्कर, दो निश्चित स्थानों के बीच घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया, 2. बारी, पारी–कोल्हू का ईब का गेड़ा मेरा, आगला तेरा; **~आणा** बारी या पारी का आना, कोल्हू पेरने की बारी आना; **~मारणा/लाणा** 1. चक्कर लगाना, 2. मिलने-जुलने आना।

गेड्ढी (स्त्री.) घुरी के चारों ओर लटकाया जाने वाला वस्त्र का वलय।

गेत/गेती (स्त्री.) दे. अगेत्ती।

गेरगेळा (पुं.) दे. गेगला।

गेरणा (क्रि. स.) 1. डालना, पटकना, 2. देना–मंगते कै थोड़ी खीचड़ी-रोट्टी-गेर दे, 3. कुश्ती में हराना, 4. हाथ से छोड़ना या गिराना, 5. सुनाना, कहना, बताना–याह् बात उसके कान्नाँ मैं बी गेर दे अक वोह ईब राह गोंड्डे सर चाल्लै (चाल-ढाल सुधारे), 6. मिलाना, रलाना। **गिराना** (हि.)

गेरना (क्रि. स.) दे. गेरणा।

गेरुआ (वि.) दे. गेरुआ।

गेहूँ (पुं.) दे. गीहूँ।

गैड़ (पुं.) अंतिम काल या समय।

गैंडा (पुं.) घोड़े के आकार जैसा एक विशालकाय जलचर।

गैंत्ती (स्त्री.) दे. गेंत।

गैधळ (स्त्री.) 1. दे. गाध, 2. दे. तगार।

गैन (वि.) गलत, अशुद्ध (उर्दू में 'ग़लत' शब्द का प्रथम वर्ण गैन)।

गैब (वि.) 1. सुस्त, मंद गति से चलने वाला (पशु), 2. कमज़ोर, मंदबुद्धि; **~लिकड़णा** 1. बैल का 'चालणा' (द्रुत गति से चलने वाला) न निकलना, 2. मंदबुद्धि रह जाना।

गैब्बी (वि.) दे. गैब।

गैया (स्त्री.) दे. गा।

गैर (अव्य.) पराया, अन्य; **~लाणा** अन्य समझना, पराया मानना; **~होणा** 1. शत्रु पक्ष का होना, 2. पराया होना।

गैर जात (स्त्री.) 1. अपने से भिन्न जाति का, 2. पिछड़ी जाति का।

गैर बखत (क्रि.वि.) 1. कुसमय, असमय, 2. विलंब से। **ग़ैर वक्त** (हि.)

ग़ैर हाज़िर (वि.) अनुपस्थित।

ग़ैर हाज़िरी (स्त्री.) अनुपस्थिति।

गैरा (पुं.) 1. कुट्टी या फसल काटते समय एक बारी में हाथ में पकड़े जाने वाली फसल की टहनियाँ, 2. अँगूठे और तर्जनी के बीच में समाने वाली किसी वस्तु का प्रमाण; **~भरणा** 1. कुट्टी या फसल काटने के लिए एक बारी में कुछ पौधों को हाथ में पकड़ना, 2. ज़बरदस्ती हथियाना, 3. अधिक कमाने की पड़ना; **~लाणा** 1. कुट्टी के गंडासे में चारे की टहनियाँ ठूँसना, 2. सहायता करना।

गैरुआ (वि.) 1. गेरु के रंग जैसा, 2. भगवाँ; **~पहरणा** संन्यास ग्रहण करना, गेरुए वस्त्र धारण करके साधु बनना। **गेरुआ** (हि.)

गैरू (पुं.) गैरिका, लाल चिकनी मिट्टी विशेष (इसके रंग से दीवारों पर लेखन तथा चित्रकारी का काम लिया जाता है, पित्त की बीमारी के समय इसे शरीर पर मला जाता है तथा आटे में मिलाकर पराँठे के रूप में खाया जाता है)। **गेरू** (हि.)

गैल (अव्य.) 1. साथ–रोमती राक्खी, तै गैल ए चालूँगी, 2. संलग्न, 3. करण कारक का चिह्न–मळाई गैल (साथ) टूक खाले, 4. पीछे–इतनी गैल क्याँह नें (क्यों) रहगी, के पाह्या कै मैंधी लाग रही सै, 5. अनुकरण–तूं भी सारी बात्ताँ मैं मेरी गैल करै सै; **~करणा** 1. पीछा करना, 2. पीछे पड़ना, 3. साथ भेजना, 4. ज़िद्द करना, ईर्ष्या करना, 5. सताना; **~का** 1. पीछे का, 2. पहले पिता से उत्पन्न, गैलड़ जारज; **~पड़णा** 1. ज़बरदस्ती पीछे पड़ जाना, सताना 2. गले पड़ना, 3. बहुत पीछे रह जाना; **~लागणा** 1. साथ लगना, पीछे लगना, 2. पिछलग्गू होना, 3. अनुयायी होना, 4. चोर उचक्के का पीछे लगना, 5. विवाह के बिना किसी की पत्नी बनना; **~लाणा** 1. चोर उचक्कों को किसी के पीछे लगाना, 2. बिना विधिवत् विवाह के किसी के साथ पत्नी के रूप में भेजना, 3. एक लड़की को विधिवत् विवाह में देना तथा दूसरी (लंगड़ी, गूँगी, बहरी, अंधी आदि) को साथ ही पत्नी के रूप में भेज देना; **~सी** पिछले दिनों; **~होणा** 1. पीछे लगना, अनुयायी बनना, 2. साथ चलना।

गैलड़ (पुं.) 1. जारज, उपपति से उत्पन्न संतान, वर्णसंकर संतान, 2. एक गाली।

गैलड़ा (वि.) पिछला।

गैल्याँ (अव्य.) दे. गैल।

गैल्लम गैल (पुं.) साथ-साथ। पीछे-पीछे चलने का भाव।

गैहणा (क्रि.) गिरवी रखना। दे. रहण।[2]

गोंग्लू (स्त्री.) शलग़म (कौर.)

गोंड (पुं.) दे. टोई।

गोंड्डा (पुं.) 1. खेतों के बीचों-बीच बना गहरा मार्ग जिसके दोनों ओर खाई या पेड़ आदि होते हैं, 2. चौड़ा-कच्चा मार्ग; **~करणा** मार्ग बनाना; **~खोदणा** वर्षा के पानी की निकासी का बड़ा मार्ग बनाना, खेतों के बीचों बीच आने-जाने का मार्ग बनाना; **राह~** 1. मार्ग, राह-रास्ता, 2. उपाय।

गोंद (पुं.) दे. गूँद[1]।

गोंदणी (वि.) गोंद देने वाला वृक्ष।

गो (स्त्री.) गऊ, गाय, तुल. गा;**~पूँछ गंगाजी ले ज्याणा** गोहत्या के प्रायश्चित स्वरूप गाय की पूँछ को कमर में बाँध कर

नंगे पाँव भीख माँगते हुए और अपने को 'गो-हत्यारा' कहते-कहते गंगा स्नान के लिए जाना।

गोआँस (पुं.) दे. गितवाड़।

गोंइठाँ (पुं.) 1. दे. आरणा। 2. दे. गोस्सा।

गोई (स्त्री.) 1. बैलों की जोड़ी, 2. (दे. गुडयाणी)।

गोईमोई (स्त्री.) दे. घिरणी।

गोकरण (पुं.) 1. गऊ जैसे लंबे कानों वाला, 2. एक पौराणिक पात्र जिसके गाय के कान और मनुष्य का शरीर था; **~तळा** रोहतक शहर का एक प्रसिद्ध तालाब जिसका संबंध गोकर्ण से मानते हैं। **गोकर्ण** (हि.)

गोकरी (स्त्री.) दे. गोंड्डी।

गोकुल (पुं.) दे. गोक्कल।

गोक्कल (पुं.) नंद बाबा का गाँव जहाँ श्रीकृष्ण को जन्म के बाद ले जाया गया था। **गोकुल** (हि.)

गोक्कल गढ (पुं.) गोकुल ग्राम, (दे. गोक्कल)।

गोखरू (पुं.) मुर्की के नीचे लटकने वाला पुरुषों का एक सोने का आभूषण (दे. मुरकी)।

गोखास (पुं.) एक आभूषण।

गोगा (पुं.) दे. गूग्गा पीर।

गोचणी (स्त्री.) 1. गेहूँ और चने की मिली-जुली खेती, 2. गेहूँ और चने का मिश्रित अन्न। **गोचनी** (हि.)

गोचनी (स्त्री.) दे. गोचणी।

गोचराध (स्त्री.) गोचर भूमि। दे. चरणी।

गोचरी (पुं.) 1. गोपनीय विधि, 2. सँभलवाने या सौंपने का भाव; (वि.) निश्‍चिंत–तूँ तै बालकाँ तैं गोचरी हुई बैट्‌ठी सै; **~करणा** सँभलवाना, सौंपना–तेरी चीज़ तेरे गोचरी कर दी सै, ईब तू जाणै तेरा काम जाणै; **~होणा** निश्‍चिंत होना–छोहरी नैं ब्याह कै गोचरी होगे।

गोजरड़ा (पुं.) विभिन्न अन्नों का मिश्रण, (दे. सतनाज्जा)।

गोजरा (पुं.) दे. बेज्झड़।

गोज्जी (स्त्री.) कच्चा दूध मिश्रित छाछ, वह छाछ जिसमें भैंस का दूध निकालते समय 15-20 धार दूध की मार दी गई हों; **~कढवाणा/बणाणा** खट्‌टी छाछ में भैंस के दूध की धार मारना ताकि वह खट्‌टी-मीठी हो जाए; **~लेणा** अच्छे भोजन की प्रतीक्षा करना–भाज (भाग) अड़ै तैं (यहाँ से) के तू गोज्जी लेण आया सै?

गोज्झा (पुं.) 1. जेब, बड़ी जेब, 2. गुलझट, कपड़ा सीते समय पड़ी सलवट; **~घालणा** 1. पुरानी धोती का बीच का फटा भाग निकाल कर फिर से सीना, 2. घघरी (घाघरी) के कुछ भाग को इस प्रकार सीना कि वह जेब के आकार की बन जाए ताकि यात्रा के समय उसमें रुपया, आभूषण आदि छिपाया जा सके।

गोझ (स्त्री.) जेब।

गोट[1] (स्त्री.) मगज़ी, घघरी, धोती आदि के नीचे किनारों पर लगाई जाने वाली पट्‌टी; **~उधेड़णा** पिटाई करना; **~लाणा** सहायता करना।

गोट[2] (स्त्री.) 1. खेल की कंकर या गोटी, 2. पाँसा; **~चालणा** 1. खेल का मोहरा चलाना, 2. चालाकी खेलना; **~मारणा** दाँव जीतना। **गोटी** (हि.)

गोटळ (स्त्री.) 1. दुल्हन, वधू, छोटी वधू, 2. दूसरी पत्नी—साळी काळी तेरी गोटळ गोरी बने, (लो. गी.)।

गोटी (स्त्री.) दे. गोट्टी।

गोट्टा (पुं.) 1. दे. घोट्टा[2], 2. दे. गोट[2]।

गोट्टी (स्त्री.) खेल का पाँसा।
गोटी (हि.)

गोठ[1] (स्त्री.) 1. गठरी, 2. 'ओरणे' (कीप के आकार का पोला बाँस जिसे हल के साथ बाँध कर बीज बोने के काम लाया जाता है) के ऊपर का मंडलाकार भाग, 3. गाँव, जैसे—गाँम-गोठ।

गोठ[2] (पुं.) गोशाला।

गोठ[3] (स्त्री.) दे. गात्ती।

गोड़ (पुं.) ब्राह्मणों का एक वर्ग जिसमें गौड़, सारस्वत, कान्यकुब्ज, उत्कल तथा मैथिल सम्मिलित हैं, ब्राह्मणों की एक जाति (इनका निकास [जनमेजय शासन काल में] गौड़ प्रांत, बंगाल से हुआ माना जाता है।) **गौड़** (हि.)

गोड़ (पुं.) दे. गोड्डा।

गोडणा (क्रि. स.) 1. घुटनों की मार मारना, भूमि पर डाल कर पिटाई करना, 2. पीसकर महीन करना, 3. हल्की खुदाई करना। **गोड़ना** (हि.)

गोड़ना (क्रि. स.) दे. गोडणा।

गोड़ा (वि.) 1. व्यर्थ के दिखावे में विश्वास रखने वाला, 2. अभिमानी, 3. रौबीला, 4. गौरवशाली, गरिमा युक्त।

गोड़ाई (स्त्री.) दे. गुडाई।

गोडानी (पुं.) दे. अळगोड्डा।

गोड़िया[1] (पुं.) 1. पाटा, छोटा पाटा, 2. ब्राह्मणों का एक अल्ल।

गोडिया[2] (स्त्री.) दे. खुळिया।

गोड़ी (स्त्री.) 1. मिट्टी को भुरभुरी और उलट-पुलट करने वाला खेती का औजार, पाटा, (दे. कोल्हड़ी), 2. गोड़िया; **~फेरणा/मारणा/लाणा** 1. पाटा मारना, मेजना, 2. खेत समतल करना, 3. मलियामेट करना, नष्ट करना, मिट्टी में मिलाना।

गोड्डा (पुं.) पैर का मध्य भाग जिस पर पाली की हड्डी होती है; **~उतरणा** घुटने की हड्डी का अपने स्थान से हटना; **~(–डे) टेकणा** 1. थकान अनुभव करना, हारना, थकना, 2. हार मान लेना, 3. बुढ़ापे का आगमन अनुभव करना; **~(–ड्याँ) ताहीं जी लीकड़णा** 1. अधमरा होना, 2. शक्तिहीन होना; **~(–ड्याँ) मैं सिर देणा** 1. सिसक-सिसक कर रोना, 2. लज्जा के कारण मुँह छिपाना; **~(–डे) समान्नी** घुटनों तक का प्रमाण, घुटने तक आने वाला (पानी, फ़सल आदि); **~सेकणा** 1. घुटने से पीटना, 2. हुक्का पीना। **घुटना** (हि.)

गोड्डा पाई (पुं.) दे. अळगोड्डा।

गोड्डी (स्त्री.) पशु का घुटना; **ओच्छी~** छोटी गोड़ियों की भैंस (जो उत्तम मानी जाती है); **~गाळणा** 1. घुटने टेकना, पशु का चलते-चलते बैठ जाना, (दे. बसकणा), 2. अधिक भोजन खाने पर उतारू होना; **~टेकणा** 1. बैल का जुए के नीचे चलते-चलते बैठ जाना, बसकना, बैठना, 2. थकान अनुभव करना, 3. हार मानना; **~बाँधणा** हर्रा पशु के गले की रस्सी को घुटने के साथ बाँधना ताकि वह अधिक उत्पात नहीं कर सके और क़ाबू में रहे; **~लाणा** प्रतिबन्ध लगाना, (दे. गोड्डी बाँधणा)।

गोण (पुं.) प्रस्थान, जाना। **गमन** (हि.)

गोणणा (क्रि. स.) ध्यान से सुनना, (दे. गोळणा)।

गोणा[1] (क्रि. स.) 1. गोना, ठोकना, अन्दर डालना, 2. छिपाना, लुप्त करना।

गोणा[2] (पुं.) 1. दे. मुकलावा, 2. दे. चाल्ला। **गौना** (हि.)

गोणिया (पुं.) वे मेहमान जो नव-वधु को द्विरागमन के लिए लेने आए हों; (वि.) गोने या डालने वाला; **~बहू** दे. मुकलावली।

गोत[1] (पुं.) 1. कुल, वंश, ख़ानदान, 2. अल्ल, 3. एक ऋषि की संतान, 4. एक ऋषि के अनुयायी; **~ऊँच्चा करणा** कुल का सम्मान बढ़ाना; **~देणा** 1. कुल को अपमानित करने का काम करना, 2. अपने कृत्य से ख़ानदान का परिचय देना; **~नात** 1. गोती-नाती, 2. कुल-परिचय; **~बखाणणा** 1. गोत्र वर्णन करना, कुल के बारे में जानकारी देना, 2. विवाह के समय पंडित द्वारा वर और वधु-पक्ष के कुल, शाखा आदि का वर्णन करना, 3. अपने कुल की बड़ाई करना, 4. कुल की निंदा करना (व्यंग्य में); **~बूझणा** 1. सगाई की बात चलाना, 2. गोत की जानकारी लेना; **~लेणा** अपमान करना, हीन स्थिति में डालना। **गोत्र** (हि.)

गोत[2] (पुं.) गुप्त होने या छिपने की स्थिति; **~देणा/ मारणा/लाणा** 1. बहुत दिनों में मिलना, 2. बहुत दिन छिपे रहना।

गोता (पुं.) दे. गोत्ता।

गोताख़ोर (पुं.) जल में गोता या डुबकी लगाने में निपुण।

गोतिया (पुं.) अपने गोत का व्यक्ति, भाई-बंद-गोतिया भाई, बाक्की सब अस्नाई।

गोती (वि.) दे. गोत्ती।

गोत्तण (वि.) अपने गोत की (महिला), बहन के तुल्य।

गोत्तम (पुं.) 1. एक ऋषि जिसने चंद्रमा को लांछित किया था, 2. एक ब्राह्मण गोत; **~नार** अहिल्या जो शापवश पत्थर की हो गई थी और रामचंद्र जी के पद-स्पर्श से मुक्ति को प्राप्त हुई थी। **गौतम** (हि.)

गोत्ता (पुं.) डुबकी, कुछ क्षण पानी में छिपे रहने का भाव। **गोता** (हि.)

गोत्ती (पुं.) 1. अपने गोत का व्यक्ति, 2. एक ऋषि की संतान; **~नात्ती** सगे-संबंधी; **~भाई** गोत का भाई-चारा, गोत का बंधुत्व, सगोत्रीत्व। **सगोत्रीय** (हि.)

गोत्र (पुं.) दे. गोत[1]।

गोथणा (पुं.) जूए का एक भाग।

गोथळी (स्त्री.) दे. कोथली।

गोद (स्त्री.) 1. क्रोड, गोदी, 2. विवाह की एक रस्म; (क्रि. स.) 'गोदणा' क्रिया का आदे. रूप, (दे. कूँच[1]); **~का** गोद का अधिकारी, छोटा बालक; **~भरणा** विवाह से पूर्व की एक रस्म जिसमें वर-पक्ष वाले लड़की की गोद गोला, मिसरी आदि से भरते हैं; **~लेणा** दत्तक बनाना; **~सूनी होणा** छोटे बच्चे की मृत्यु होना।

गोदणा[1] (क्रि. स.) सूई को नील के पानी या रंग में डुबा कर शरीर के किसी हिस्से पर चिह्न बनाना, तुल. खिणणा; (पुं.) 1. गोदने का कार्य, 2. खिना हुआ चित्र। **गोदना** (हि.)

गोदणा² (क्रि. स.) उठा कर पटकना, दाँव लगाकर पटकी देना।

गोदनवाल (पुं.) 1. एक जाति, 2. शरीर के अंगों पर नाम, फूल आदि चिह्न खिनने वाला। दे. खिणणा। तुल. ललिहार।

गोदना (क्रि. स.) दे. गोदणा¹।

गोदा (पुं.) टहना।

गोदान (पुं.) गौ का दान।

गोदाम (पुं.) दे. गुदाम।

गोदारा (पुं.) एक जाट गोत।

गोदावरी (स्त्री.) दक्षिण भारत की एक पवित्र नदी।

गोदी (स्त्री.) दे. गोद्दी।

गोद्दा (पुं.) डुबकी, गोता; **~खाणा** किसी वस्तु का भूमि पर बार-बार टकरा कर ऊपर-नीचे होना–गींड्डो कै टोर लागत्याँहे उसनैं कई गौद्दे खाए। **गोदा** (हि.)

गोद्दी (स्त्री.) 1. क्रोड, 2. जहाज़ ठहरने का स्थान; **~ठाणा** प्रसन्न होकर वाहवाही देना; **~भरणा/लाणा** 1. बहुत-सा सामान कब्ज़े में करना; 2. सामान समेटना, 3. आलिंगन करना। **गोदी** (हि.)

गोद्धू¹ (वि.) संध्या का वह समय जब घर की ओर लौटती हुई गौओं के खुरों के कारण आकाश तक धूलि उड़ती है, **~फेरे** गोधूलि के समय लिए जाने वाले फेरे या भाँवर; **~लगन** गोधूलिक लग्न, फेरे या भाँवर पड़ने का गोधूलिक लग्न या समय (शुद्ध साहा नहीं बनने पर यही समय निर्दोष मान लिया जाता है)। **गोधूलिक** (हि.)

गोद्धू² (वि.) मोटा भारी बालक।

गोधणे (पुं.) जुए में लगे खूँटे के आकार के डंडे जो जुए को बैलों के कंधे से उतरने नहीं देते।

गोधन (पुं.) गौ रूपी संपत्ति।

गोन (पुं.) अग्रवाल बनियों का एक गोत्र।

गोनर्द (पुं.) गौओं की नाद का प्रदेश, हरियाणा प्रदेश।

गोना (क्रि. स.) दे. गोणा¹।

गोप (पुं.) दस गाँवों का अधिकारी।

गोपणा (पुं.) गलपाश।

गोपना (पुं.) ग्वाला, गोप।

गोपनी (स्त्री.) ग्वालिन, गोपी।

गोपाल (पुं.) दे. गुपाल।

गोपाष्टमी (स्त्री.) कार्तिक शुक्ल अष्टमी।

गोपिया (पुं.) दो लंबी रस्सियों के बीच बँधा चार-छः अंगुल चौड़ा और लगभग इतना ही लंबा कपड़ा जिसमें कंकर या गुल्ले रखकर पक्षियों को उड़ाया जाता है। **गोफिया** (हि.)

गोपी (स्त्री.) दे. गोपनी।

गोपीचंद भरथरी (पुं.) एक राजा जो पत्नी द्वारा छले जाने के कारण गोरख पंथी साधु बना (इन्होंने तजारा [अलवर] में कुम्हार के घर तपस्या की थी) इनके विषय में कहावत है– अलवर तजारा, गोपीचंद भरथरी तपे बरस बारा। बाप का हेत, माँ का कुहेत, आद्धे का सोन्ना, आद्धे का रेत।। **गोपीचंद भर्तृहरि** (हि.)

गोपीनाथ (पुं.) श्रीकृष्ण, गोपियों के स्वामी।

गोपुच्छ (स्त्री.) गाय की पूँछ।

गोफया (पुं.) पुरुषों द्वारा धारण किया जाने वाला छोटा हार।

गोफिया (पुं.) दे. गोपिया।

गोबर (पुं.) दे. गोब्बर।

गोबरगणेश (वि.) मूर्ख।

गोबरधन (पुं.) 1. कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा का दिन (इस दिन गो-वंश की पूजा होती है और गऊओं को सजाया जाता है), 2. मनुष्य के आकार की गोबर से बनी गोवर्धन की प्रतिमा जो कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन भूमि में लंबवत् स्थापित की जाती है (सायंकाल इसकी पूजा की जाती है और परिक्रमा देते समय बच्चे कहते हैं–गिरिवर की परिक्रमा दे, मानसी गंगा गिरिवर दे, द्वितीया तिथि को इसे पधार देते हैं और इसके गोबर के बने उपलों को बिटोड़े (उपलों का ऊँचा ढेर) के ऊपर स्थापित करते हैं), 3. पवित्र पर्वत जिसे श्रीकृष्ण ने अंगुली पर धारण किया था; **~घालणा** गाय के गोबर से मनुष्य के आकार की गोवर्धन की प्रतिमा भूमि पर स्थापित करना; **~पधारणा** गोबर से बनी गोवर्धन की प्रतिमा का विसर्जन करना; **~पूजणा** कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन गोबर से बनी गोवर्धन की प्रतिमा की खील-बताशों से पूजा करना, इसकी परिक्रमा करना तथा इस पर बछड़ा कुदाना। **गोवर्धन** (हि.)

गोब्बर (पुं.) गौ, भैंस आदि का मल (इसमें मिट्टी मिलाकर कच्चे घर में लिपाई की जाती है, गाय के गोबर को पवित्र माना गया है और यह पंचगव्य में काम आता है, कहावत– हग्या (गोबर) बिटाळा (गाय का थन जिसे बछड़ा मुँह में डालकर झूठा करता है) कै कर्‌या (शहद, मक्खी की उल्टी) मरघट पर की राख (होलिका दहन की राख) मुर्दे पर का कापड़ा (मृगछाल) इननैं घर मैं राख, तुल. चोथ[1]; **~करणा** 1. किसी वस्तु को गंदा करना, 2. काम बिगाड़ना; **~खाणा** 1. भ्रष्ट काम करना, 2. अखाद्य वस्तु खाना, 3. मूर्ख; **~बिटोळणा** 1. गोबर बिटोरना, 2. व्यर्थ में जीवन बिताना।)
गोबर (हि.)

गोब्बर धन (पुं.) दे. गोबरधन।

गोब्भी (स्त्री.) 1. गोभी की सब्ज़ी, 2. रबी की फ़सल में उत्पन्न होने वाली एक घास। **गोभी** (हि.)

गोभ (स्त्री.) अंकुर, कच्चा पत्ता, नवांकुरित पत्ता।

गोभणा (क्रि. स.) अंदर धँसाना।
घोंपना (हि.)

गोभिल (पुं) 1. सामवेदी गृह्यसूत्र के रचयिता एक ऋषि, 2. एक ब्राह्मण गोत्र।

गोभी (स्त्री.) दे. गोब्भी।

गोमखी (स्त्री.) माला जपने का गोमुखाकार आवेष्टन। **गोमुखी** (हि.)

गोमती (स्त्री.) एक पवित्र नदी।

गोमुख (पुं.) 1. गौ का मुख, 2. नरसिंहा नाम का बाजा।

गोमुखी (स्त्री.) दे. गोमखी।

गोयल (पुं.) अग्रवाल वैश्यों का गोत्र (इनका संबंध गोभिल मुनि, यजुर्वेद, माध्यंदिनी शाखा तथा गोभिल सूत्र से है, इनका प्रवर मांकील है)।

गोर (पुं.) गौर। ध्यान। उदा. माता कर बेटे की गोर, बदलै क्यूँ तोत्ते बरगा त्योर। (लचं)

गोरख (पुं.) एक नाथपंथी साधु जिनके अनेक संप्रदाय हैं (सँपेरा जाति अपने को इसी से संबंधित मानती है, ये टिड्डियों के जन्मदाता माने गए हैं), मछेंदर (मत्स्येंद्र) के गुरु।

गोरख-धंधा (पुं.) 1. न सुलझने वाली समस्या, 2. गृहस्थी का चक्कर।

गोरख-नात्थी (पुं.) गोरखनाथ को अपना गुरु मानने वाले।

गोरख-पंथी (पुं.) गोरख-पंथ को मानने वाले।

गोरखा (पुं.) नेपाल की एक जाति जो अधिकतर सेना में भर्ती होती है; (वि.) नाटे क़द का।

गोरड़ी (स्त्री.) 1. पत्नी, 2. स्त्री, 3. दूसरी वार की विवाहिता पत्नी।

गोरड़ो (पुं.) बैल, गाय की खाल।

गोरधन (पुं.) दे. गोबरधन।

गोरमिंट (स्त्री.) सरकार। **गवर्नमेंट** (हि.)

गोरला (पुं.) बच्चों की सुरक्षा के लिए गाया जाने वाला एक गीत। तुल. भाइया।

गोरली (स्त्री.) एक जंगली पक्षी, तुल. काबरी। **गोरैया** (हि.)

गोरवा (पुं.) 1. गाँव की बस्ती के बाहर का भाग, 2. ग्राम-सीमा, 3. वह स्थान जहाँ गाँव के पशु प्रातः इकट्ठे किए जाते हैं; **~पूजणा** 1. ग्राम-सीमा का पूजन करना, 2. ग्राम-सीमा पर बारात का स्वागत करना; **~लेणा** ग्राम में पहुँचते ही बारात का स्वागत करना।

गोरस (पुं.) 1. दूध, 2. दही।

गोरसी (पुं.) एक गूजर गोत।

गोरा[1] (पुं.) 1. गाँव की बस्ती से बाहर के खेत, बस्ती के बाहर का स्थान जहाँ गाँव के पशु आदि खड़े होते हैं, 2. गाँव का 'सिमाणा' या गाँव की सीमा।

गोरा[2] (वि.) गोरे रंग का, सफ़ेद चमड़ी वाला; (पुं.) 1. अंग्रेज़, 2. लाल चमड़ी का व्यक्ति, 3. पति; **~बुळध** लाल रंग का बैल।

गोरिया (पुं.) 1. दे. गोरवा, 2. दे. गोरा[1]।

गोरी (स्त्री.) 1. पत्नी, 2. पार्वती; (वि.) रूपवती, गोरे रंग की; **~धण** पत्नी, स्वामिनी, गृह-स्वामिनी। **गौरी** (हि.)

गोरू (पुं.) सींग वाले पशु।

गोल (वि.) दे. गोळ[1]।

गोळ[1] (वि.) गोलाकार; (पुं.) ग़ौर, ध्यान; **~करणा** 1. अनसुनी करना, 2. ग़ौर से सुनना; **~होणा** 1. भाग जाना, 2. काम से टलना। **गोल** (हि.)

गोळ[2] (स्त्री.) 1. गोल और लंबोतरा मृद्-भांड, लगभग समान आकार के पेंदे और मुँह वाला तथा बीच से गोल और लंबोतरा मटका जिसमें डेढ़-दो मन अन्न समा सकता है, 2. (विवाह आदि के अवसर पर) पानी रखने का बड़ा मटका, 3. अन्न मापने का एक माप [ये विभिन्न आकार की होती हैं जैसे--धोणा (धोन-बीस सेर), मणा (मन-एक मन) आदि]; **~गाडणा** अन्न को भंडारित करने के लिए घर के किसी भाग में पाँच-सात 'गोळों' को मिट्टी में दबाना; **~पूजणा** जल-मृद-भांड को पूजने की एक प्रथा जो विवाह के समय संपन्न होती है।

गोळ[3] (स्त्री.) 1. गाँव की सीमा, 2. सीमावर्ती खेत; **~चरणा** खेती चरना।

गोळ[4] (पुं.) जवार की पूलियों का छोर। दे. छोर।

गोळ[5] (पुं.) खेल की बाज़ी, जिसमें एक ओर के खिलाड़ी गेंद को दूसरी ओर निश्चित स्थान से गुजार दें, तुल. हुल्ली करणा। **गोल** (हि.)

गोळगप्पा (पुं.) एक प्रकार की महीन और करारी घी में तली फुल्की।

गोळ गाँठ (स्त्री.) गाँठ पर लगी गाँठ, ऐसी गाँठ जो सुगमता से नहीं खुल सके; **~मरणा/लाणा** गोल गाँठ लगाना, गाँठ लगाना।

गोलचा (पुं.) एक चिकने पत्तों वाला वृक्ष।

गोळची (पुं.) खेल में गोल सीमा पर खड़ा खिलाड़ी।

गोलड़ी (स्त्री.) दे. राही।

गोळणा (क्रि. स.) 1. ध्यान देना, 2. महत्त्व समझना, 3. कहना मानना।

गोळमाळ (पुं.) 1. गड़बड़, अव्यवस्था, 2. गबन।

गोलमोल (पुं.) घोटाला, गोलमाल; (वि.) गोल-मटोल।

गोला (पुं.) दे. गोळा[1]।

गोळा[1] (पुं.) 1. नारियल की गिरी, 2. ईख के ऊपर के पत्ते, ईख के ऊपर की एक-दो कच्ची गंडेरी, (दे. अगोळा), 3. बारूद का गोला, 4. शरीर, शरीर का गठन—पहलवान का गोळा जोरदार सै भाई, 5. साँड के टाडने (बोलने) से उत्पन्न ध्वनि— लील्ले आँक्कल की टाड का गोळा इसा सै चाहे एक कोस तैं सुण ले, 6. लोहे का गोला, 7. वायु का गोला—पेट मैं घणा कसूत्ता गोळा ऊठ्या, 8. जंगली कबूतर; **~(-ळे) का दरध** पेट का वायु-रोग, वात-रोग से उत्पन्न पेट-दर्द; **~गेरणा** आफ़त ढाना; **~फैंकणा** 1. बमबारी करना, 2. साँड का रँभाना या टाडना; **~बणाणा** गोलाकार लपेटना; **~मारणा** 1. झूठी बात चलाना, 2. गोला फैंकना या डालना। **गोला** (हि.)

गोळा[2] (पुं.) कुम्हारों की एक उपजाति।

गोळा[3] (पुं.) अवैध संतान। दे. गळी गितवाड़े का।

गोलाई (स्त्री.) दे. गुळाई।

गोळा-कूज्जा (पुं.) गोला और चीनी से बना कूजा जिनका प्रयोग शुभ अवसर के समय किया जाता है। **गोला-कूजा** (हि.)

गोली (स्त्री.) दे. गोळी।

गोळी (स्त्री.) 1. मिट्टी, शीशे आदि का छोटा गोलाकार पिंड, 2. बंदूक की गोली, 3. ओषधि की टिकिया, 4. चीनी की गोलाकार मिठाई; **~खाणा** 1. घायल होना, 2. शहीद होना; **~मारणा** 1. घायल करना, 2. मृत्यु के घाट उतारना, 3. काम को उपेक्षा के भाव से छोड़ देना—अरै मार गोळी काम कै तूँ मेरे साथ चाल, **~सीळी करणा** गोली शरीर में समा लेना। **गोली** (हि.)

गोल्ला (पुं.) 1. ताश का एक पत्ता जो दहले से अधिक और बेगम से कम महत्त्व का होता है, गुलाम, 2. जंगली कबूतर, 3. दास। **गोला** (हि.)

गोल्ली (स्त्री.) दासी।

गोवाड़ (पुं.) दे. गवाड़ा।

गोविंद (पुं.) श्रीकृष्ण।

गोशाला (स्त्री.) दे. गोसाल्ला।

गोश्त (पुं.) मांस।

गोसाईं (पुं.) दे. गुसाईं।

गोसाल्ला (स्त्री.) वह स्थान जहाँ अनाथ गायों की देखभाल की जाए। **गोशाला** (हि.)

गोस्टी (स्त्री.) छोटा उपला।

गोस्वामी (पुं.) दे. गुसाईं।

गोस्सा (पुं.) गोबर का मोटा उपला; **~देणा** मृतक की चित्ता के लिए उपले ले जाना।

गोह (स्त्री.) छिपकली की जाति का एक जंगली जंतु जिसकी खाल से जूती बनाई जाती है; **चिपटण**~एक गोह जिसकी कमर में रस्सी बाँधकर दीवार पर चिपका दिया जाता है और युद्ध या चोरी के समय दीवार फाँदने में इसकी सहायता ली जाती है; ~**मारणा** मोर्चा जीतना, बड़ा काम कर लेना।

गोहचण (वि.) 1. मैली-कुचैली रहने वाली, 2. खाद्य-अखाद्य का ध्यान न बरतने वाली।

गोहची (वि.) 1. गलीज़, गंदा रहने वाला, 2. भक्ष्य-अभक्ष्य का ध्यान नहीं रखने वाला।

गोहर (पुं.) खेत के बीच का कच्चा मार्ग। दे. डोळा[2]।

गोहरण (पुं.) पशु की गुदा।

गोहरी (स्त्री.) खेतों के बीच का कच्चा रास्ता।

गोहलड़ा (पुं.) वह स्थान जहाँ पशुओं का गोबर इकट्ठा किया जाता है।

गोहलिया[1] (पुं.) 1. जंगली पक्षी, 2. कबूतर, 3. दे. गोपिया; ~**उड़ाणा** पक्षियों से खेत की रखवाली करना।

गोहलिया[2] (पुं.) 1. जंगली कबूतर 2. दे. काबरी।

गोहाँड (पुं.) दे. गुहाँड।

गोहा[1] (पुं.) दे. ढँढोरा।

गोहा[2] (पुं.) दे. गोस्सा।

गोहल्ला (पुं.) जंगली कबूतर।

गौ (स्त्री.) गाय, (दे. गो)।

गौखुर-झील (स्त्री.) नदी द्वारा स्थान बदल लेने के कारण बनी झील।

गौड़ (पुं.) 1. ब्राह्मणों का एक वर्ग जिसमें सारस्वत, कान्यकुब्ज, उत्कल, मैथिल और गौड़ सम्मिलित हैं, 2. ब्राह्मणों की एक जाति, 3. गौड़ प्रान्त का निवासी।

गौड़िया (वि.) गौड़ प्रान्त का, गौड़ प्रान्त से संबंधित।

गौड़ी (स्त्री.) दे. गावड़ी।

गौण (वि.) जो प्रधान या मुख्य न हो।

गौतम (पु.) दे. गोतम।

गौन[1] (वि.) अग्रवाल वैश्यों का गोत्र (इनका संबंध गौतम मुनि, यजुर्वेद, माध्यंदिनी शाखा और कात्यायन सूत्र से है, इनका प्रवर मांकील है)।

गौन[2] (स्त्री.) दे. गूण।

गौना (पुं.) दे. गोणा[2]।

गौड़ी (स्त्री.) दे. गावड़ी।

गौराँ (स्त्री.) 1. पार्वती, 2. गोरे रंग की महिला। **गौरा** (हि.)

गौरी (स्त्री.) दे. गौराँ।

गौरी-शंकर (पुं.) शिव-पार्वती।

गौवत्स द्वादशी (स्त्री.) कार्तिक कृष्ण द्वादशी। इस दिन गौवंश सेवा का संकल्प लिया जाता है।

ग्या (क्रि. अ.) 'जाणा' क्रिया का भूत का. एक वचन रूप, गया–के कर ग्या? के खा ग्या?

ग्याड़ (पुं.) दे. गितवाड़।

ग्यान (पुं.) 1. हाल-चाल–अरै ईब तेरे बाब्बू का के ग्यान सै ताप उतर्याक नाँ?; 2. ज्ञान–बात तै ग्यान की कहै सै उमर का छोट्टा सै तै के सै; ~**बरसणा** 1. ज्ञान की वर्षा होना, 2. उपदेश की बात कहना; ~**लेणा** 1. बात को ध्यान से सुनना, 2. गुरु मंत्र लेना; ~**होणा** 1. समझदारी आना, 2. आध्यात्मिक जानकारी होना। **ज्ञान** (हि.)

ग्याभण (वि.) गर्भवती (पशु)। **गर्भिणी** (हि.)

ग्यारमाँ (पुं.) 1. मृतक की ग्यारहवें दिन होने वाली रस्म; (वि.) ग्यारहवें क्रम पर। **ग्यारहवाँ** (हि.)

ग्यारमीं (स्त्री.) वह रस्म जो स्त्री या पुरुष की मृत्यु के बाद ग्यारहवें दिन की जाती है; (वि.) ग्यारहवाँ क्रम। **ग्यारहवीं** (हि.)

ग्यारस (स्त्री.) दे. ग्यास।

ग्यारसिया (वि.) एकादशी से संबंधित।

ग्यारह (वि.) दे. ग्यारा।

ग्यारा (वि.) ग्यारह की संख्या।

ग्याळ (पुं.) शूद्र जाति का व्यक्ति।

ग्यास (स्त्री.) एकादशी तिथि।

ग्रंथ (पुं.) दे. गिरंथ।

ग्रंथ साहब (पुं.) 1. गरीब दास के पुत्र ब्रह्मचारी जैतराम की वाणी का संग्रह, 2. सिख-संप्रदाय का पवित्र ग्रंथ, गुरुग्रंथ साहिब।

ग्रंथि (स्त्री.) दे. गिरंथी।

ग्रंथिक (पुं.) अज्ञातवास में नकुल का नाम, दे. नकुल।

ग्रसना (क्रि. स.) 1. सताना, 2. हड़पना, 3. निगल जाना।

ग्रस्त (वि.) 1. ग्रहण लगा हुआ, 2. पकड़ा हुआ।

ग्रस्तोदय (पुं.) चन्द्रमा या सूर्य का उस अवस्था में उदय होना जबकि उन पर ग्रहण लगा हो।

ग्रह (पुं.) दे. गिरह[1]।

ग्रहण (पुं.) दे. गहण।

ग्राम (पुं.) दे. गाँम।

ग्राम देवता (पुं.) गाँव में पूजा जाने वाला देवता, (दे. भैंयाँ)।

ग्रामीण (वि.) गाँव का (निवासी)।

ग्रास (पुं.) दे. गिरास।

ग्राह (पुं.) दे. गिराह।

ग्राहक (पुं.) दे. घाक।

ग्रीष्म (पुं.) दे. गरमीं।

ग्लानि (स्त्री.) दे. गिल्लाणी।

ग्वाँड (पुं.) चार सौ गायों का समूह।

ग्वार (पुं.) दे. गवार।

ग्वार पट्ठा (पुं.) घीकुँआर, एक पौधा जिसके पत्ते मोटे, नुकीले, काँटेदार तथा कड़वे होते हैं।

ग्वार पाठा (पुं.) दे. ग्वार पट्ठा।

ग्वारफळी (स्त्री.) ग्वार के पौधे की फली।

ग्वाल (पुं.) दे. पाळी[2]।

ग्वालई (स्त्री.) दे. बीत।

ग्वाला (पुं.) दे. पाळी[2]।

ग्वालिन (स्त्री.) 1. ग्वाले की स्त्री, 2. गोपी।

घ

घ हिन्दी वर्णमाला के व्यंजनों में से कवर्ग का चौथा व्यंजन जिसका उच्चारण स्थान जिह्वामूल या कंठ है, हरियाणवी में इसके उच्चारण में कंठ कम खुलता है और वायु भी कम निकलती है।

घँ (स्त्री.) 1. धायँ-धायँ की ध्वनि, 2. तीव्र गति से प्रवाह के समय घर्षण के कारण उत्पन्न ध्वनि–बंदूक की गोली कान धोरे कै घँ दणे सी गई।

घँ-घँ (स्त्री.) कान भिन्नाने की ध्वनि।

घंघा (पुं.) एक जाट गोत।

घँघेळची (वि.) सदा नशे में या नींद में रहने वाला।

घँघेळा (पुं.) 1. निद्रा की पूर्व अवस्था, 2. चक्कर आने की अवस्था, 3. नशा, 4. अर्द्धमूर्च्छा, 5. चेचक के कारण उत्पन्न मानसिक सुप्तता, 6. साँप के काटने के कारण उत्पन्न तंद्रा; **~आणा/चढणा/होणा** 1. आँख लगना, पलक झपकना, 2. चक्कर आना, 3. नशा चढ़ना; **~ऊत्तरणा** 1. नींद का नशा उतरना, 2. नशा उतरना। **घँघेला** (हि.)

घंटा (पुं.) 1. ढाई घड़ी का समय, 2. मंदिर में लटकने वाली धातु की बड़ी घंटी, 3. धातु का चक्राकार मोटा पात्र जो हथौड़े आदि से बजाया जाता है, 4. पशु के गले की बड़ी घंटी, 5. घड़ी, समय का भान कराने का यंत्र, **~चढाणा** मंदिर में धर्मार्थ घंटा दान करना; **~बाजणा** पूजा, विद्यालय, कचहरी आदि के समय की घोषणा का संकेत होना; **~हलाणा** हाथ के संकेत से किसी बात को नकारना, मुकरना।

घंटाघर (पुं.) ऊँची मीनार पर सार्वजनिक उपयोग के लिए लगी बड़ी घड़ी।

घंटाळा (पुं.) 1. पशु के गले में लटकने वाली धातु की बड़ी घंटी, 2. बड़ा घंटा।

घंटी (स्त्री.) 1. पशु के गले में बांधी जाने वाली घंटी, 2. विद्यालय या सरकारी कार्यालयों में बजने वाली घंटी, 3. साइकिल की घंटी, 4. लुटिया।

घंड (वि.) बदमाश, बेशर्म

घऊआ (पुं.) 1. एक उपकरण जिससे सुनार आभूषण मोड़ने आदि का काम लेता है, 2. क्रोध।

घग्गड़ (पुं.) 1. लंबी कथा, 2. व्यर्थ की बात, 3. चुगली; **~गाणा/छेड़णा** आप बीती या इधर-उधर की बात करते रहना।

घग्गर (स्त्री.) हरियाणे की एक बरसाती नदी जिसका प्राचीन नाम दृषद्वती था, यह शिवालक के गिरिपदीय क्षेत्र से निकलती है।

घघरिया (स्त्री.) दे. घाघरी।

घघरिया पलटण (स्त्री.) हरियाणे के जवानों की (विशेषकर जाटों की) एक सैनिक पलटन जिसने अंग्रेज़ी शासन में अपने युद्ध-कौशल से विश्व में ख्याति पाई।

घघी (स्त्री.) बाजरे में लगने वाला कीड़ा।

घच्च[1] (स्त्री.) कोमल वस्तु में कठोर वस्तु के धँसने से उत्पन्न ध्वनि; **~दणे/दणे सी** घच्च की ध्वनि के साथ।

घच्च[2] (वि.) मोटा-ताज़ा, बलिष्ठ; **~होणा** गर्दन फूलना, मोटा-ताज़ा होना।

घच्चर-मच्चर (स्त्री.) बैलगाड़ी या मशीन के पुर्जों के हिलने से उत्पन्न ध्वनि।

घट[1] (पुं.) 1. शरीर-घट-घट में ईसवर का बास सै, 2. अंतर्मन, 3. घड़ा; **~के पर्दे खुल्हणा** ज्ञान प्राप्त होना, ज्ञान ग्रहण करने की अवस्था में पहुँचना, अज्ञान का पर्दा हटना; **~घट बास्सी** हर शरीर में वास करने वाला, ईश्वर; **~पाणा** मनुष्य का चोला या शरीर मिलना, आत्मा को शरीर की प्राप्ति होना।

घट[2] (स्त्री.) कमी, 'घाट' का लघुता सूचक शब्द, (दे. घाट[3])।

घटणा (क्रि. अ.) 1. कम होना, 2. ह्रास होना, 3. तोल या नाप में कम पड़ना, 4. घबराना-छोहरे की झोड़ में डूब्बण

की सुण कै डीग्घा का दिल घट्टण लाग ग्या। **घटना** (हि.)

घटती (वि.) तोल में कम–बदरी बणिया घटती चीज तोल्लै सै।

घटना (क्रि. अ.) दे. घटणा; (स्त्री.) वारदात, हादसा।

घटा (स्त्री.) 1. गहरे काले बादल, उमड़ते बादल, 2. समूह, झुंड, 3. गणित की एक क्रिया, व्यवकलन; (क्रि. स.) 'घटाणा' क्रिया का आदे. रूप; **~ऊठणा** घने बादलों का छाना; **~टोप** 1. सघन बादल, 2. अँधेरा।

घटाणा (क्रि. स.) 1. कम करना, 2. व्यवकलन की क्रिया करना। **घटाना** (हि.)

घटाना (क्रि. स.) दे. घटाणा।

घटिया (वि.) 1. ख़राब, 2. सस्ता, 3. तुच्छ, हीन–तेरे सा घटिया आदमी दीन–दुनी मैं कोन्या।

घटूरणा (क्रि. स.) दे. गटूरणा।

घटोतकच (पुं.) हिडिंबा से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र। **घटोत्कच** (हि.)

घटोतरी (स्त्री.) कमी, कटौती; **~बढोतरी** कमी-ज़्यादती, न्यूनाधिक अवस्था।

घट्टा[1] (पुं.) 1. छेद, 2. दीमार आदि का छेद, 3. चोट लगने के कारण सिर आदि में हुआ छिद्र–अनपूत्ती नैं ईंट मार कै सिर में घट्टा खोल दिया, 4. नहर की मोरी, मोरी, 5. हानि, व्यापार में हुई भारी हानि; **~खोल्हणा /खोहृलणा** 1. सिर फोड़ना, 2. भारी हानि पहुँचाना।

घट्टा[2] (पुं.) 1. दे. आँटण 2. दे. घट्टा[1]।

घट्टी (स्त्री.) 1. छोटा मार्ग, तंग मार्ग, 2. दीवार को तोड़ कर बनाया गया तंग मार्ग।

घट्टू (पुं.) बड़ा छिद्र, छिद्र।

घड़ंत/घढंती (स्त्री.) पिटाई।

घड़ (पुं.) कच्चा केला।

घड़णा (क्रि. स.) 1. बनाना, निर्माण करना–सुनार के नैं टूम तै चोक्खी घड़दी, 2. पीटना, पिटाई करना, 3. ठोक-पीट कर ठीक करना। **गढ़ना** (हि.)

घड़त (वि.) 1. गढ़ा हुआ, 2. 'ढाला हुआ' का विलोम; (स्त्री.) 1. पिटाई, 2. बनावट; **~का बास्सण** वह बर्तन जो ढालने की अपेक्षा हथौड़े से पीट कर बनाया गया हो।

घड़ना (क्रि. स.) दे. घड़णा।

घड़वा (पुं.) दे. घड़िया।

घड़वाणा (क्रि. स.) 'घड़णा' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप, (दे. घड़ाणा)।

घड़ा (पुं.) 1. रस आदि मापने का पात्र, विशेष माप, 2. मटका, तुल. बास्सण; **~आणा** कोल्हू में रस निकालने की बारी आना।

घड़ाई (स्त्री.) 1. गढ़वाने या गढ़ाने का मूल्य, 2. पिटाई।

घड़ाणा (क्रि. स.) किसी वस्तु को बनवाना–ब्याह मैं बहू की टूम-छल्ली आच्छे सून्नैं (सोना) की घड़ाणा कदे मन डिगज्या। **गड़वाना** (हि.)

घड़ाना (क्रि. स.) दे. घड़ाणा।

घड़ावळ (पुं.) 1. घंटा, 2. मृतक का श्मशान ले जाते समय बजाया जाने वाला घंटा, 3. चक्राकार घंटी; **~बाजणा** मृत्यु समय निकट आना। **घड़ियाल** (हि.)

घड़िया (स्त्री.) 1. छोटा घड़ा, 2. ताल देने के लिए प्रयुक्त छोटा घड़ा।

घड़ियाल (पुं.) 1. मगरमच्छ की जाति का एक जल-जन्तु, 2. शुभ सूचना के लिए बजाया जाने वाला घंटा।

घड़ी (स्त्री.) 1. काल का एक परिमाण–च्यार घड़ी ला दी घड़ी भर का काम था, साठ पल का समय, पहर का तीसरा या दिन का 30वाँ भाग, 24 मिनट का समय, 2 काल द्योतक यंत्र, 3. अच्छा समय, उपयुक्त समय; **~आणा** 1. कार्य होने का समय आना, 2. मृत्यु काल आना, 3. आपत्ति काल आना; **~गिणणा/ देखणा** उत्सुकता से समय की प्रतीक्षा करना; **~घड़ी** 1. हर क्षण, 2. बार-बार; **~टाळणा** आपत्तिकाल में धैर्य से काम लेना, जैसे-तैसे समय बिताना; **~में घड़ावळ बाजणा** हर समय मृत्यु की घड़ी रहना–राम नैं हर बखत हाज्जर-नाज्जर मान्नों घड़ी में घड़ावळ बाजिए सै; **~लाणा** अधिक समय लगाना; **~सराहणा** शुभ घड़ी की प्रतीक्षा करना, आने वाले समय में निर्विघ्न कार्य संपन्न होने की प्रार्थना करना–अरै लाँड्डे के छोहरे के ब्याह का दिन धर दिया, हाँ भाई, घड़ी सराहिए; **~स्यात का** 1. कुछ समय का, 2. मृत्यु के निकट।

घड़ीसाज (पुं.) घड़ी की मरम्मत करने वाला।

घड़ूकणा (क्रि.) बादल का गर्जना।

घड़ोंच (पुं.) बड़ी घड़ोंची, (दे. घड़ोंच्ची)।

घड़ोंच्ची (स्त्री.) 1. बैलगाड़ी को ऊँगने (ओवरहालिंग) के लिए उसके नीचे लगाने के काम आने वाला स्टैंड या जैक (यह बहुत भारी और मजबूत होता है, इसका उपयोग स्वाँग का मंच आदि बनाने के लिए भी किया जाता है), 2. पानी का मटका रखने की तिपाई या तिवाई, (दे. गड़गम)।

घडोंजा (पुं.) दे. खड़ंजा।

घड़ोई (स्त्री.) घड़ा टेकने का स्थान। दे. गड़गम।

घण[1] (पुं.) बादल, (दे. नोघण)

घण[2] (पुं.) लोहे का भारी हथौड़ा; **~सार लागणा** तलवार लगना, घायल होना।

घणखरे (वि.) पर्याप्त, यथेष्ठ–घणखरे आदमी हाथ तैं पैइसा छोड़ कै कती राज्जी ना, के छात्ती धर कै लेज्याँघे।

घण चक्कर (वि.) दे. घमचक्कर।

घणा (वि.) 1. अधिक–काम घणा करणा पड़ै खाण नैं कम मिल्लै तै क्यूक्कर काम चाल्लैगा, 2. सघन, गहरा, गुंफित–घणी सणी (सनी) बोई गई, 3. 'छीद्दे' का विलोम, (दे. बत्ती[1])।
घना (हि.)

घणी (वि.) संख्या में अधिक–घणी सारी बीरबान्नी (स्त्रियाँ) गीत गामती आवैं थी; **~कसूत्ती** अधिक कष्टदायक; **~हाण** अधिक समय, विलंब–रोटियाँ नैं घणी हाण कर दी, के कोए आग्या था? **घनी** (हि.)

घणेरी (वि.) अधिक, अधिक मात्रा में–खेत्ती तै घणेरी होज्यागी पर करजा बी तै पूराए तारणा सै।

घणोई (पुं.) एक जाट गोत।

घन (पुं.) दे. घण[1–2]।

घनघोर (पुं.) 1. भीषण ध्वनि, 2. बादल की गरज; (वि.) भीषण, घना।

घनश्याम (पुं.) श्रीकृष्ण।

घना (वि.) दे. घणा।

घपताड़ा (पुं.) 1. लूट-खसोट, 2. हानि, 3. विध्वंस– आँक्कल नैं खेत मैं रात नैं घणा घपताड़ा घाल दिया; **~घालणा** बहुत हानि पहुँचाना।

घपला (पुं.) 1. गोल-माल, 2.गड़बड़ी।

घबणा (क्रि) दे. गुभणा।

घबराट (स्त्री.) बेचैनी। **घबराहट** (हि.)

घबराणा (क्रि. अ.) 1. बेचैन होना, 2. डरना, 3. भौंचक्का होना, 4. मन न लगना। **घबराना** (हि.)

घबराना (क्रि. अ.) दे. घबराणा।

घबराहट (स्त्री.) दे. घबराट।

घमघेळी (स्त्री.) घेरा डालना।

घनचक्कर (वि.) 1. व्यर्थ घूमने वाला, 2. मूर्ख। **घनचक्कर** (हि.)

घमचोळ (स्त्री.) 1. गड़बड़ी, अस्त-व्यस्त स्थिति, 2. भोजन को बुरी तरह मथने की क्रिया।

घमड़का (पुं.) 1. नाचने की क्रिया, 2. दूध बिलोने की क्रिया।

घमला (पुं.) फूल आदि सजाने या बोने का पात्र विशेष। **गमला** (हि.)

घमस्याण (पुं.) भयंकर युद्ध; **~घालणा** बहुत हानि पहुँचाना। **घमासान** (हि.)

घमाक्का (पुं.) 'घम' की ध्वनि। **घमाका** (हि.)

घमासान (पुं.) दे. घमस्याण।

घमोई (स्त्री.) एक प्रकार की घास।

घमोड़णा (क्रि. स.) 1. बिलोना, मथना, खिचड़ी, दलिया आदि को मथने के लिए चमचे या डोऊ से चलाना, 2. घुमाना, चक्कर लगवाना।

घमोड़ा (पुं.) 1. नाच, 2. मथने या बिलोने की क्रिया; **~मारणा/लाणा** 1. नाचना, 2. चक्कर लगाना, 3. मथना।

घमोड़ी (स्त्री.) मथने की क्रिया।

घमौरी (स्त्री.) गरमी के दिनों में शरीर पर निकलने वाली छोटी-छोटी फुंसियाँ, (दे. घाम)।

घम्मड़-घम्मड़ (स्त्री) दूध बिलोते समय बिलोनी से उत्पन्न ध्वनि; **~दूध बिलोणा** मस्ती से दूध बिलोना– घम्मड-घम्मड़ दूध बिलोवै गूजरी का बेट्टा रोवै, रोवै सै तै रोवण दे, मन्नै दूध विलोवण दे (लोरी)।

घर (पुं.) 1. मनुष्य का निवास स्थान, 2. बिल बनाकर रहने वाले पशु-पक्षी का निवास स्थान जैसे–गाद्दड़ का घर (घुर), तोते का घर आदि, 3. जन्म-भूमि, 4. कुल, वंश, 5. ख़ाना, वस्तुओं को रखने का स्थान, (दे. खान्ना), 6. मूल कारण, जैसे– सराब झगड़े की घर सै; **~आळा** 1. पति, 2. स्वामी; **~आळी** 1. पत्नी, 2. स्वामिनी; **~करणा** 1. नया घर बसाना, 2. स्त्री का अन्य के घर में पत्नी रूप में चले जाना, 3. कोई बात मन को पसंद आ जाना, 4. बिल बनाना; **~का** 1. निजी, अपना– घर का घी-दूध सै?, 2. परिवार का, 3. बहुत निकट का–तूँह् तै घर का आदमी सै तेरे तैं के ल्हको (छिपाव); **~की खाँड किरकिरी** सहज प्राप्त वस्तु का निरादर; **~घाट का नाँ रहणा** 1. किसी काम का न रहना, 2. उजड़ना; **~घालणा** 1. हानि पहुँचाना, 2. चरित्र विरुद्ध आचरण करना; **~फोड़ना** 1. संचित कमाई

खाना, 2. घर में फूट डालना; ~**बरताऊ** घर के प्रयोग मात्र के लिए; ~**बास्सा** गृहस्थ जीवन; ~**सारू** 1. घर बरताऊ, 2. 'जगसारू' का विलोम।

घरगा (अव्य.) संबोधन के लिए प्रयुक्त शब्द, अरे, अहो।

घरगी (अव्य.) अरी, स्त्री के लिए प्रयुक्त संबोधन।

घरघूल्ला (पुं.) 1. घरौंदा, 2. गुड़िया का घर, 3. छोटा मकान।

घरघोई (स्त्री.) दे. घरघूल्ला।

घरड़ा (पुं.) 1. गले से उत्पन्न घरघराहट, घरघराहट की ध्वनि, साँस की बीमारी; ~**बोलणा** मरने से पूर्व गले से घरघराहट उत्पन्न होना, मृत्यु समय निकट आना।

घरड़ाट्टा (पुं.) घरघराहट; ~**ऊठणा** 'घर्र-घर्र' की ध्वनि उत्पन्न होना।

घरड़ू (पुं.) दे. घरड़ा।

घरबार (पुं.) 1. निवास स्थान, 2. गृहस्थ।

घरबारी (पुं.) 1. गृहस्थी, 2. पति, 3. स्वामी।

घरबत (स्त्री.) गृह-अधिष्ठात्री देवी।

घरसी (अव्य.) महिला के लिए प्रयुक्त संबोधन, अरी।

घरसे (अव्य.) संबोधन सूचक शब्द, अरे।

घरा (पुं.) अनुमान, अनुमानित मूल्य–यो बुळध किस घरे में मोल लिया; ~**भरणा** 1. क्षति-पूर्ति होना, 2. संतोष मिलना।

घराना (पुं.) ख़ानदान।

घरारी (वि.) बदमाश घर की। उ.–वा तै ऊत घरारी सै।

घरूँड (पुं.) दे. हटड़ी।

घरू (वि.) 1. घर में काम आने योग्य, 2. घर से संबंधित।

घरेलू (वि.) दे. घरेल्लू।

घरेल्लू (वि.) 1. घर का बना हुआ, 2. घर से संबंधित। **घरेलू** (हि.)

घरौंदा (पुं.) दे. घरौंद्धा।

घरौंद्धा (पुं.) 1. छोटा घर, 2. (दे. घरघूल्ला)। **घरौंदा** (हि.)

घलणा (क्रि. अ.) 1. डलना, पड़ना, किसी के अन्दर डलना, 2. उलझना, फँसना–जाग्गे मुकदमें मैं इसा घलग्या अक लिकड़णा बाक्कस (वश) मैं ना रह्या, 3. गले पड़ना–मेरे गळ मैं क्यूँ घलरह्या सै के मनैं तेरी भैंस खोल ली? **घलना** (हि.)

घलना (क्रि. अ.) दे. घलणा।

घलवाणा (क्रि. स.) 1. 'घलणा' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप, 2. भिजवाना।

घवा (पुं.) साक्षी देने वाला। **गवाह** (हि.)

घवाई (स्त्री.) साक्षी; ~**भरणा** गवाही देना। **गवाही** (हि.)

घसकणा (क्रि. अ.) 1. धँसना, 2. गड़ना, 3. किसी कड़ी वस्तु का नरम वस्तु में धँसना। **घसकना** (हि.)

घसका (पुं.) 1. धँसने की क्रिया, 2. झूठी बात–किमैं (कुछ) लेणा ना देणा खामखाँ घसका मार कै बहकाग्या, 3. तुल. घस्सा।

घसड़-पसड़ (स्त्री.) 1. काना-फूसी, 2. अस्त-व्यस्त स्थिति, 3. बेढंगे तरीके से किया हुआ काम।

घसणा (क्रि. स.) 1. रगड़ना, 2. खुजली मिटाने के लिए खूँटे, दीवार आदि से शरीर का कोई अंग रगड़ना, खुजली मिटाना, 3. पत्थर पर रगड़कर औज़ार को पैना करना; (क्रि. अ.) 1. सट कर निकलना, 2. उलझना, ज़बरदस्ती

उलझकर लड़ाई-झगड़ा करना, 3. धसकना, घुसना, 4. घिस जाना; (वि.) जो शीघ्र घिसे।

घिसना (हि.)

घसाई (स्त्री.) 1. घिसने का कार्य, 2. घिसने की मज़दूरी। **घिसाई** (हि.)

घसाणा (क्रि. स.) घिसवाना।

घिसवाना (हि.)

घसियारा (पुं.) घास बेचने वाला।

घसीट (स्त्री.) 1. रगड़ से बना चिह्न, 2. गंदा लेख, 3. (दे. गंडस्या); **~काटणा/लाणा/मारणा** 1. किसी काम को गंदे तरीके से करना, 2. गंदा लेख लिखना; **~काढणा** 1. टेढ़े-मेढ़े खूड़ निकालना, 2. दीवार पर चित्रादि बनाना, भूमि पर रेखा निकालना, 3. 'सोण' निकालना, भूमि पर रेखा खींच कर उनके आधार पर भविष्य निर्णय करना, (दे. सोण काढणा)।

घसीटणा (क्रि. स.) 1. किसी वस्तु को इस तरह से खींचना कि वह भूमि पर रगड़ खाए, 2. जल्दी-जल्दी काम ख़त्म करना, 3. जल्दी-जल्दी लिखना, गंदा लेख लिखना, 4. किसी काम में या अपराध में बलात् सम्मिलित करना।

घसीटना (हि.)

घसीटणा (क्रि. स.) दे. घसीटणा।

घसोड़ा (क्रि. स.) दे. घुसाणा।

घुसाना (हि.)

घस्सा (पुं.) 1. कठोर वस्तु को कोमल वस्तु में झटके से डालने की क्रिया, 2. रगड़, 3. झटका, 4. बहकावा; (वि.) घिसा हुआ; **ऊत का~** 1. शरारती, 2. मूर्ख; **~देणा** 1. बहकाना, 2. रगड़ना, 3. दाब डालना; **~मारणा/लाणा** 1. कठोर चीज को कोमल चीज से टकराना या रगड़ना, 2. कुश्ती के समय हाथ की दाब लगाना, 3. झूठ बोलकर काम निकालना, 4. बड़ाई करना।

घस्सी (स्त्री.) भ्रष्ट महिला, पतिता, यथा–ऊत की घस्सी; (क्रि. स.) 'घसणा' क्रिया का भूतकालिक एकवचन स्त्रीलिंग रूप।

घस्स्याणा (क्रि. स.) 1. धकेलना, 2. पीटना, 3. मर्दन करना।

घा (पुं.) 1. चोट, आघात, 2. 'गा' क्रिया प्रत्य. का बलाघाती रूप; **~करणा** 1. दिल को चोट पहुँचाना, 2. घायल करना; **~पै नूण छिड़कणा** 1. कष्ट याद दिलाना, 2. कष्ट पर कष्ट पहुँचाना; **~हर्या होणा** 1. घाव फिर से उभरना, 2. पुराने कष्ट स्मरण होना। **घाव** (हि.)

घाऊ-घप्प (पुं.) 1. गहन अंधकार, अंधेर घुप, 2. घटा-टोप।

घाओ (पुं.) दे. घा।

घाक (पुं.) 1. ख़रीददार, 2. स्वामी, 3. ग्रहणशील व्यक्ति; **~तोड़णा** अन्य के ख़रीददार को अपनी ओर करना; **~लागणा** 1. ख़रीददार का बार बार आना, 2. ख़रीददार बढ़ना–दूध के चार घाक और लागगे; **~होणा** 1. स्वामित्व जताना, 2. पीछे पड़ना–क्यूँ छोह्रे की ज्यान का घाक हो रह्या सै, खाण पीवण के दिन सैं इसके।

ग्राहक (हि.)

घाघ (वि.) 1. चतुर, समझदार, 2. धूर्त, चालाक; (पुं.) कृषि विषयक सूक्तियों के लिए प्रसिद्ध एक लोक कवि, 'भड्डरी' या 'भाडळी' का सहचर

(जनश्रुति के अनुसार इनका निवास गोरखपुर जिले में था, अकबर ने प्रसन्न होकर इन्हें कन्नौज के पास जागीर दी थी जो अकबर सराय घाघ के नाम से जानी जाती है); **~कही** 1. सच्ची बात, 2. अनुभव की बात; **~भड्डळी** 1. घाघ और भड्डरी, 2. मुक़ाबले का जोड़ा।

घाघरा (पुं.) 1. टखनों तक लंबा गोटाजटित कलीदार लहँगा, 2. भारी घघरी, 3. महँगी घघरी; **उलटी लाम्मण का~** उल्टी लामन का ऊँचा घाघरा जो प्राय: गूजरी पहनती हैं; **कत्था~** घाघरे का एकभेद; **कैरी~** घाघरे का एक प्रकार; **चाँद तारा~** एक प्रकार का घाघरा; **चूना**~घाघरे का एक प्रकार; **पहरणा~** 1. नाचने का बाना पहनना, 2. पुरुष द्वारा नाचने का काम शुरु करना, साँग में सम्मिलित होना, 3. जनानिया बनना; **बोरड़ा**~मोटे वस्त्र का घाघरा; **लहरिया~** लहरदार धारियों का घाघरा; **लेह~** घाघरे का एक प्रकार।

घाघरी (स्त्री.) पिंडलियों तक लंबा, अनेक कलियों वाला, नाड़ेदार अधोवस्त्र जो हरियाणे की महिलाओं का मुख्य पहनावा है (कुछ महिलाएँ 20 गज लंबे थान और बावन कली की उलटी-सुलटी झूम पड़ने वाली घघरी जिसमें नीचे मगज़ी लामन आदि होती है, पहनना पसंद करती हैं, घघरी मुख्यत: छींट, कंध आदि की होती है, मोटे कपड़े की हल्की घघरी को खारा कहते हैं, हर जाति की महिलाएँ अपनी आवश्यकता और सामर्थ्य के अनुसार घघरी को हल्का या भारी बनवाती हैं, स्वतन्त्रता के बाद घघरी का स्थान सलवार और साड़ी लेती जा रही है); **~काढणा** 1. निर्लज्ज होना, 2. निर्लज्ज करना; **~का नाड़ा टूटणा** पतिव्रत धर्म से विचलित होना; **~तले का** दब्बू पति; **~तारणा** 1. आबरू लूटना, 2. निर्लज्ज होना; **~पलटण** (घघरिया पलटण); **~पहरणा** 1. जनानापन दिखाना, 2. नाच मंडली में सम्मिलित होना, 3. हार मानना; **~फिरणा** 1. परसे हुए भोजन पर घघरी फिरने से भोजन अपवित्र होना, 2. छोटे बच्चे का महिला की घघरी की छाया में आने के कारण बीमार होना; **~लूगड़ी** घघरी और ओढ़ना या ओढ़नी; **~~जोग्गी होणा** युवती होना। **घघरी** (हि.)

घाघस (पुं.) बड़ी नस्ल का मुर्गा। टेवी मुर्गे का विलोम।

घाट[1] (स्त्री.) कुछ समय तक पानी में भिगो कर कूटा हुआ जौ, छिलका उतरा हुआ जौ (गेहूँ में घाट मिलाकर पीसने से गेहूँ का आटा स्वादिष्ट तथा पौष्टिक हो जाता है); **~कूटणा** भीगे हुए जौ को कूट कर उसका छिलका उतारना।

घाट[2] (पुं.) 1. जल का तट, 2. तलवार की धार, 3. मार्ग, 4. अता-पता; **~गोंड्डा** राह-रास्ता; **~~पाणा** समस्या का हल पाना।

घाट[3] (वि.) 1. कम तोल, माप आदि में कम--हजारी बणिया का तोल घाट लिकड़े बिना ना रहै, 2. मान-सम्मान या हैसियत में कम--हम कै झाब्बर क्याँ के तैं घाट साँ जो उनतैं दब के रहाँ?; **~ना घालणा** अपनी इच्छा के

अनुसार व्यवहार करना, कमी या कसर निकालना—छोट्टू नै भी घाट ना घाल्ली पूरे अस्सी लाड्डू खाग्या; **~तैं घाट** कम से कम—घाट तैं घाट 70 जनेत्ती अर 12 भारकस (वाहन) थे।

घाटिया (पुं.) घाट पर पूजा-पाठ कराने वाला।

घाटी (स्त्री.) पर्वत के बीच का सँकरा मार्ग।

घाटा (पुं.) दे. घाट्टा।

घाट्टा (पुं.) कमी। **घाटा** (हि.)

घाड़ना (क्रि.) दे. उघाड़ना।

घाण (पुं.) 1. उतनी वस्तु जितनी एक बारी में कड़ाही या कोल्हू में पक या बन सके, 2. चक्र, आवर्त्तन; **~मैं तैं काढणा** 1. कठोरतम दंड देना, अधिक पीड़ा पहुँचाना, 2. उबारना।

घाणी (स्त्री.) 1. कोल्हू में एक बार पेरने के लिए डाली गई सरसों, तरा आदि, 2. चारे की एक साथरी या ढेरी; **काच्ची~** एक बार पेरा हुआ तेल; **~का तेल** कच्ची घानी का तेल; **~तारणा** सरसों आदि पेर कर तेल निकालना; **~पेलणा** तेल निकालना। **घानी** (हि.)

घात (स्त्री.) 1. दाँव, 2. प्रतीक्षा।

घात्तण (पुं.) 1. वस्त्र, वस्त्रों का ढेर, 2. पुराने वस्त्र।

घान (पुं.) दे. घाण।

घानी (स्त्री.) दे. घाणी।

घाम (पुं.) 1. धूप, सूर्य-ताप, 2. गरमी के दिनों में शरीर पर निकलने वाली बहुत छोटी-छोटी फुंसियाँ जिन्हें मुलतानी मिट्टी लगाकर भी शांत किया जाता है, घमौरी; **~ऊप्पड़णा** शरीर पर छोटी-छोटी फुंसियाँ निकलना, घमौरी निकलना; **~छाह्याँ** अच्छे-बुरे दिन; **~बैठणा/मरणा** गरमी के कारण निकली हुई फुंसियाँ ठीक होना; **~लीकड़णा** 1. धूप निकलना, 2. घमौरी निकलना।

घाम्मड़ (वि.) 1. (वह पशु) जिसे धूप बहुत सताती हो, 2. (वह गाय) जो गरमी से बचने के लिए भैंस के समान पानी में जा घुसे; **~गा** धूप से अधिक पीड़ित होने वाली गाय (इसका रंग बहुधा नीला होता है और धूप के कारण यह हाँफती है तथा पानी का आश्रय तकती है, इसके बछड़े लंबे रुएँ वाले और नीले होते हैं)।

घायल (वि.) दे. घाल1।

घार (स्त्री.) दे. घिरणी।

घारा (पुं.) 1. सत्यानाश, 2. रास्ता।

घाल1 (स्त्री.) जख्मी। **घायल** (हि.)

घाल2 (स्त्री.) 1. मृतक शरीर की आत्मा को अन्य में प्रवेश कराने की विद्या, 2. सेवड़े की विद्या जिससे वह मृतक के भूत या प्रेत को अपने वश में करके मनमाना काम करा सकता है, 3. मृतक का भूत या प्रेत, 4. डली या समाई हुई वस्तु, 5. भिक्षा; (क्रि. स.) 'घालणा' क्रिया का आदे. रूप; **~आणा** 1. काम करने को बाध्य होना—याह् मेरै ए बार-बार घाल क्यूँ आवै सै काम करणियाँ और सारे कित जळगे?, 2. शरीर में मृतक के भूत का प्रवेश होना; **~काढणा** 1. सयाने (सेवड़ा या प्रेत विद्या जानने वाला व्यक्ति) द्वारा किसी व्यक्ति के शरीर से मृतक व्यक्ति के भूत-प्रेत को मंत्र, तंत्र, जंत्र आदि द्वारा

निकालना, 2. आपत्ति टालना; **~घालणा** 1. किसी के शरीर में मृतक का भूत प्रवेश करना, 2. आपत्ति में फँसाना; **~मारणा** 'घाल' डालना।

घालणा (क्रि. स.) 1. डालना, 2. फँसाना, 3. रखना, 4. आपत्ति में डालना, 5. भेजना, 6. भिक्षा देना। **घालना** (हि.)

घालना (क्रि. स.) दे. घालणा।

घाळा (पु.) घोटला, गोलमाल; **~माळा** गोलमाल; ~ **~करणा** 1. गोलमाल करना, 2. आफ़त खड़ी करना।

घाव (पु.) दे. घा।

घास (पुं.) 1. भूमि पर उगने वाले छोटे तिनके, 2. चारा, तृण, तुल. दूब; (वि.) 1. अलूना, 2. कच्चा (भोजन); **~काटणा** 1. बेगार करना, मन लगाकर काम न करना, 2. काम बिगाड़ना; **~खोदणा** 1. व्यर्थ में जीवन व्यतीत करना, समय नष्ट करना, 2. काम को निष्ठा से नहीं करना, 3. अपमानजनक काम करना; **~गेरणा** 1. पशु को भूसा देना, 2. बात पूछना, सम्मान करना, हैसियत को समझना, **~चरणा** 1. हीन कार्य करना, 2. व्यर्थ में समय नष्ट करना, 3. निम्न कोटि का भोजन करना, 4. बुद्धि भ्रष्ट होना; **~चाबणा** 1. मूर्खता का काम करना, 2. बहुत भूखा होना, 3. खाद्य-अखाद्य भोजन करना, 4. व्यर्थ में जीवन नष्ट करना, 5. हार मानना; **~नाँ गेरणा** 1. सम्मान नहीं करना, बात तक न करना, 2. छोटे से छोटा काम भी नहीं करना; **~मुँह में देणा/धरणा** हार मानना; **~होणा** 1. अस्वादिष्ट भोजन बनना, 2. सब्जी का ज्यादा पकना या उबलना, 3. भोजन का अलूना रहना।

घास-टूक का बखत (पुं.) सायं के भोजन का समय। दीये जलने का समय।

घास-पात (पुं.) 1. चारा, 2. सूखा चारा।

घास-फूस (पुं.) दे. घास-पात।

घिग्घी (स्त्री.) दे. घीग्घी।

घिघियाना (क्रि. अ.) दे. घिघ्याणा।

घिघ्याणा (क्रि. अ.) 1. डर के मारे काँपना, 2. गिड़गिड़ाना। **धिघियाना** (हि.)

घिचपिच (स्त्री.) 1. भीड़, 2. शोर; (वि.) (लेख) जो खुला न हो; **~करणा** 1. कानाफूसी करना, 2. भीड़ करना; **~माचणा/होणा** 1. शोर होना, 2. भीड़ होना; **~लिखणा** गंदा लेख लिखना, थोड़े स्थान में अधिक अक्षर लिखना।

घिचमिच (स्त्री.) दे. घिचपिच।

घिचोळणा (क्रि. स.) 1. तरल भोजन में गंदे हाथ डालकर उसे मथना, 2. खटकने वाली बात को बार-बार दोहराना।

घिच्च (वि.) 1. मोटा-ताज़ा, 2. मोटी गर्दन वाला।

घिण (स्त्री.) नफ़रत, घृणा, (दे. गिल्लाणी); **~आणा** 1. दुर्गंध आना, 2. घृणा होना; **~ऊठणा** दुर्गंध उठना; **~करणा** 1. घृणा करना, 2. दुर्गंधयुक्त चीज़ से बचना; 3. उपेक्षा करना; **~होणा** 1. घृणा होना, 2. किसी वस्तु के अधिक खाने से जी उकताना, 3. भोजन के भाव-दुष्ट होने के कारण उसे देख तक न सकना। **घिन** (हि.)

घिणका (वि.) 1. थोड़े स्थान में अधिक पौधे होने का भाव-घिणका बाजरा घणा नीपजै, 2. सघन, गाढ़ा (कपड़ा

आदि), 3. 'छीद्दा' का विलोम।

घितंग (पुं.) 1. मोटा सोटा, लठ, 2. मोटी रोटी; **~सेकणा** 1. लठ मारना, 2. मोटी रोटी बनाना।

घिन (स्त्री.) दे. घिण।

घिनौना (वि.) घृणित।

घिन्न्या (स्त्री.) नफ़रत। **घृणा** (हि.)

घिमरोल़ (स्त्री.) झुरमुट।

घिरड़ी (स्त्री.) दे. कोल्हड़ी।

घिरणा[1] (स्त्री.) नफ़रत। **घृणा** (हि.)

घिरणा[2] (क्रि. अ.) 1. घिर जाना, बच निकलने का मार्ग रुकना, शत्रुओं के घेराव में आना, 2 चाहरदीवारी के बीच में आना, 3 निरुत्तर होना, 4. किसी स्थान पर कब्ज़ा होना, (वि.) शीघ्र घूमे जाने वाला। **घिरना** (हि.)

घिरणी (स्त्री.) 1. चक्री, 2. खड़े चर्खे या किसान चर्खे की हथेली में डाली जाने वाली किल्ली (जिसको पकड़कर घुमाने में सुविधा रहती है), 3. चक्कर चढ़ने का भाव, सिर घूमने का भाव, 4. ग्राम-परिक्रमा, 5. गाँव के चारों ओर की वह भूमि जो पशुओं के चरने के लिए छोड़ दी जाती है, (दे. फिरणी), 6. कोल्हू; **~आणा/चढणा** सिर चकराना। **घेरनी** (हि.)

घिरत (पुं.) घी। **घृत** (हि.)

घिरना (क्रि. अ.) दे. घिरणा[2]।

घिरनी (स्त्री.) दे. घिरणी।

घिरमाँ (वि.) 1. घिरा हुआ, 2. बल खाया हुआ; **~बाल** चक्रवात, (दे. भभूळिया)। **घिरवाँ** (हि.)

घिरवाणा (क्रि. स.) 'घिरणा' क्रिया का प्रे. रूप। **घिरवाना** (हि.)

घिरसत (पुं.) गृहस्थ। दे. घरबारी।

घिराई (स्त्री.) 1. कब्ज़ा, क़ाबू, 2. घेरने की क्रिया; **~मैं आणा** 1. क़ाबू में आना, 2. चारों ओर से घिरना।

घिलणी (स्त्री.) दे. घीलड़ी।

घिवाळ (वि.) अधिक घी देने वाला (पशु)।

घिसट/घिसड़ (स्त्री.) किसी वस्तु के भूमि पर रगड़ के कारण पड़े चिह्न यथा–साँप आदि की घिसट, (दे. घसीट)।

घिसटणा (क्रि. अ.) दे. घिसड़णा।

घिसटना (क्रि. अ.) दे. घिसड़णा।

घिसटाणा (क्रि. स.) घसीटना।

घिसड़णा (क्रि. अ.) 1. भूमि पर हाथ टेक कर आगे बढ़ना, भूमि पर रगड़ खाते हुए चलना, 2. धीमी गति से चलना, जैसे-तैसे आगे बढ़ना; (वि.) वह जो घिसटे या घसीट खाए। **घिसटना** (हि.)

घिसड़-पिसड़ (स्त्री.) 1. काना-फ़ूसी, 2. भगदड़ के समय उत्पन्न ध्वनि।

घिसड़ाणा (क्रि. स.) घसीटना।

घिसना (क्रि. स.) दे. घसणा।

घिसळाणा (क्रि. स.) लाठी से पिटाई करना।

घिसवाना (क्रि. स.) दे. घसाणा।

घिसाई (स्त्री.) दे. घसाई।

घींटवा (पुं.) गला, गरदन, गरदन के बीच में ठोड़ी से नीचे गल-ग्रंथि जो कुछ बाहर की ओर उभरी दीख पड़ती है, (तुल. डीडवा); **~दाबणा/भींचणा** गला घोंटना, मारना।

घींट्टी (स्त्री.) दे. घीट्टी।

घींस (पुं.) दे. गंडास्सा।

घींसट (स्त्री.) दे. गंडस्या।

घी (पुं.) घृत; **~आँगळियाँ गुड़ डळियाँ** घी अंगुली-अंगुली से और गुड़

डली-डली करके समाप्त हो जाता है; **~का जलणा/का दीवा जलणा या चसणा** 1. इच्छा पूर्ण होना, 2. शत्रु परास्त होना; **~के दीवे जलाणा** खुशी मनाना; **~घूँटणा/पीणा** सब प्रकार के आनंद होना; **~ताणा** नूनी घी से छाछ अलग करना; **~प्याणा** 1. साँप के विष को कम करने के लिए घी पिलाना, 2. पौष्टिक भोजन खिलाना; **मुँह छोड़/मुँह मार~** भोजन में इतना घी होना कि खाने में अरुचि उत्पन्न हो।

घीग्घी (स्त्री.) 1. भय, डर के कारण काँपने का भाव, 2. घिघियाने का भाव; **~बँधणा** अत्यंत भयभीत होना, डर के मारे काँपना। **घिग्घी** (हि.)

घीच्ची (स्त्री.) गरदन, मोटी गरदन।

घीट्टी (स्त्री.) गला, गरदन, तुल. नाड़; **~नाँ मुड़णा** अकड़ जाना; **~भींचणा** गला घोंटना।

घीया (स्त्री.) एक तरकारी, लौकी।

घीया-कस (पुं.) घीयाकश, घीया, कद्दू, गोला आदि कसने का खुदरे तल का पाएदार बर्तन।

घीया झींझ (पुं.) झींझ विशेष। दे. झींझ।

घीया बेल (स्त्री.) दे. काग्गा रोट्टी।

घीया भाट्ठा (पुं.) एक चिकना पत्थर, सेलखड़ी।

घीलड़ी (स्त्री.) घी रखने का मिट्टी का छोटा पात्र (यह 'बारे' से छोटी होती है), (दे. बारा); (वि.) अधिक चिकना या स्निग्ध पात्र; **~ताणा** घीलड़ी में घी को गरम करके उससे छाछ (चेहड़ू) निकालना (घी को शनिवार के दिन ताना अशुभ माना जाता है क्योंकि यह तेल जैसा ही होता है और शनिवार के दिन इसे तराजू पर भी नहीं तोलते)।

घीसा पंथ (पुं.) हरियाणे का एक संत संप्रदाय।

घीस्सा (वि.) वह बच्चा जिसे मृत्यु-भय से बचाने के लिए जन्म के समय भूमि पर घसीट दिया जाए।

घुंघराळा (वि.) घुमावदार (बाल आदि)। **घुँघराला** (हि.)

घुंघरू (पुं.) दे. घूँघरू।

घुँटाणा (क्रि.) घूँट घूँट कर पिलाणा। दे. घुटवाणा।

घुंडी (स्त्री.) 1. गाँठ, 2. कील आदि के किनारे का मोड़, अटकाव, 3. कोंपल-चणे की घुंडी तीसरे दिन लिकड़्यावैं सैं; **~अटकणा** बाधा उत्पन्न होना।

घुंडीगरखंडा (पुं.) 1. चाँदी की एक घुँघरुँओं वाली शृंखला जो आँगी के निम्न भाग में जुड़ी होती है, 2. अंगिया (आभूषण)।

घुग्गी (स्त्री.) 1. (दे. टेह), 2. वह लिखाई जो पढ़ी न जा सके।

घुग्घू (पुं.) दे. घूग्घू।

घुध्याणा (क्रि. अ.) 1. ज़ोर-ज़ोर से रोना, 2. मोर का कूकना; (वि.) हर समय रोते रहने के स्वभाव वाला। **घुघुआना** (हि.)

घुघाट (पुं.) 1. ज़ोर से रोने का भाव, 2. मोटर गाड़ी के इंजन से उत्पन्न ध्वनि; **~ऊठणा** 1. रोना-धोना, 2. मोटर गाड़ी का तेज ध्वनि उत्पन्न करते हुए दौड़ना, 3. कार्य की गति में तेजी आना; **~ठाणा/मचाणा** 1. ज़ोर-ज़ोर से रोना, 2. घू-घू की आवाज़ उत्पन्न होना, 3. कार्य की गति में त्वरा आना।

घुघाणा (क्रि. अ.) ज़ोर-ज़ोर से रोना।

घुच (वि.) मोटा।

घुचड़ी (स्त्री.) तंग स्थान या तंग मकान।

घुच-पुच (स्त्री.) 1. गुप्त मंत्रणा, 2. किसी वस्तु को छिपाने का भाव, 3. जादूगरी।

घुच्चर (वि.) दे. घुच।

घुटणा[1] (पुं.) दे. गोड्डा। **घुटना** (हि.)

घुटणा[2] (क्रि. अ.) 1. आपस में खूब बनना, 2. किसी चीज़ का भली प्रकार से पकना या मिलना, खिचड़ी-दलिया आदि का पककर गाढ़ा होना, 3. एक जान होना, 4. मन ही मन घुटन अनुभव करना, 5. साँस लेने में कठिनाई होना, 6. सिर मुँडना। **घुटना** (हि.)

घुटना (पुं.) दे. गोड्डा।

घुटरूँ घूँ (स्त्री.) कबूतर के बोलने की ध्वनि।

घुटवाणा (क्रि. स.) घोटने या मथने का काम अन्य से करवाना। **घुटवाना** (हि.)

घुटवाना (क्रि. स.) दे. घुटवाणा।

घुटाई (स्त्री.) घोटने का काम। **घोटाई** (हि.)

घुटाणा (क्रि. स.) दे. घुटवाणा।

घुटाना (क्रि. स.) दे. घुटवाणा।

घुटाळा (पुं.) 1. गोल माल, 2. षड्यंत्र। **घोटाला** (हि.)

घुट्टी (स्त्री.) दे. घूँट्टी।

घुड़कना (क्रि. स.) 1. डाँटना, धमकाना, 2. आँख दिखाकर डराना।

धुड़की (स्त्री.) 1. डराने की क्रिया, 2. गीदड़-भभकी, बंदर-भभकी; **~घालणा/देणा** 1. डराना, 2. धमकी देना।

घुड़चड़ी (स्त्री.) विवाह के समय संपन्न एक प्रथा जिसके अनुसार बारात के प्रस्थान से पूर्व वर को घोड़ी पर बैठा कर शोभायात्रा निकाली जाती है (स्त्रियाँ गीत गाती हैं तथा बहन वर पर चावल फेंकती है, वर ग्राम-देवता, कुल-देवता, गाँव के मंदिर आदि की पूजा करता है और विवाह के बाद ही घर लौटता है)। **घुड़चढ़ी** (हि.)

घुड़चढ़ी (स्त्री.) दे. घुंड़चड़ी।

घुड़दौड़ (स्त्री.) 1. घोड़ों की दौड़, 2. यथाशक्ति प्रयत्न।

घुड़ला (पुं.) छोटा घोड़ा। दे. घोड़ता।

घुड़स्याम (पुं.) श्रीकृष्ण। **घनश्याम** (हि.)

घुड़सवार (पुं.) अश्वारोही।

घुड़साल (स्त्री.) दे. घुड़स्याल।

घुड़स्याल (स्त्री.) अश्वस्थल। **घुड़साल** (हि.)

घुण (पुं.) अन्न में लगने वाला एक छोटा कीट; **~पिसणा** निर्दोष व्यक्ति दंडित होना; **~लागणा** 1. अन्न में 'घुन' नाम का कीड़ा लगना, 2. खोखला होना। **घुन** (हि.)

घुणघुणा[1] (वि.) नाक में बोलने वाला; (पुं.) नाक का मैल; **~बोलणा** नाक में बोलना। **गुनगुना** (हि.)

घुणघुणा[2] (वि.) दे. गुणगुणा।

घुणणा (क्रि. अ.) घुन लगना। **घुनना** (हि.)

घुत्ता (स्त्री.) दे. योनि।

घुन (पुं.) दे. घुण।

घुनना (क्रि. स.) दे. घुणणा।

घुन्ना (वि.) दे. घूँह्न्ना।

घुप्प (पुं.) भयंकर अँधेरा।

घुमक्कड़ (वि.) जिसे इधर-उधर घूमते रहने की आदत हो।

घुमड़ना (क्रि. स.) बादलों का चारों ओर से उमड़ पड़ना।

घुमा (पुं.) घुमाव; (क्रि. स.) 'घुमाणा' क्रिया का आदे. रूप।

घुमाणा (क्रि. स.) 1. चक्कर देना, 2. सैर कराना, 3. मूर्ख बनाना, 4. चकमा देना, 5. वाहन आदि का मोड़ना। **घुमाना** (हि.)

घुमाना (क्रि. स.) दे. घुमाणा।

घुमाव (पुं.) दे. घुमा।

घुमेर (वि.) घुमक्कड़; (स्त्री.) चक्कर।

घुर (स्त्री.) 1. गीदड़, लोमड़ी आदि का भूमिगत बिल, 2. घुर-घुर की ध्वनि; **~पै गादड़ सेर** अपने स्थान पर सभी शक्तिशाली।

घुरकड़ी (स्त्री.) दे. घुड़की।

घुरकी (स्त्री.) दे. घुड़की।

घुरघुराणा (क्रि. स.) गले से 'घुर'-'घुर' की ध्वनि निकलना।

घुरचड़ी (स्त्री.) दे. घुड़चड़ी।

घुरळ-घुरळ (स्त्री.) पेट की अंतड़ियों से उत्पन्न ध्वनि; **~करणा/होणा** घबराहट या भूख के कारणवश पेट की अंतड़ियों से कुलकुलाने की ध्वनि निकलना।

घुरलाणा (क्रि. अ.) पेट की अंतड़ियों का कुलकुलाना।

घुरळिया (पुं.) दे. घुरळ-घुरळ।

घुरेड़िया (पुं.) चितकों वाला छोटा साँप; **~साँप** साँप की एक नस्ल।

घुळणा[1] (पुं.) 1. पिघलना, 2. मिल जाना, एक जान होना, 3. रोग के कारण शरीर का दुर्बल होना, 4. पश्चात्ताप करते रहना, 5. चिंतित रहना, प्रियजन की स्मृति में चिंतित रहना-दसरथ बेट्टयाँ की याद मैं घुळ-घुळ मर ग्या; (वि.) घुलनशील; **~मिलणा** 1. एक रस होना, 2. मिलना-जुलना। **घुलना** (हि.)

घुळणा[2] (क्रि. अ.) 1. मल्ल-युद्ध करना, 2. हाथा-पाई करना, 3. शक्ति-परीक्षण करना, 4. होड़ करना, बदना।

घुलना (क्रि. अ.) 1. दे. गुळणा[1], 2. दे. घुळणा[2]।

घुळवाणा (क्रि. स.) दे. घुळाणा।

घुलवाना (क्रि. स.) दे. घुळाणा।

घुळाई (स्त्री.) 1. कुश्ती, 2. घोलने या मिलाने की क्रिया।

घुळाणा (क्रि. स.) 1. कुश्ती करवाना, 2. मिलवाना, घुलवाना, 3. पिघलाना।

घुलाना (क्रि. स.) दे. घुळाणा।

घुसड़णा (क्रि. स.) 1. धँसना, गड़ना, चुभना, 2. अनधिकार प्रवेश करना, 3. घुसपैठ करना। **घुसना** (हि.)

घुसड़ना (क्रि. अ.) दे. घुसड़णा।

घुसड़-पुसड़ (स्त्री.) काना-फूसी।

घुसणा (क्रि. अ.) दे. बड़णा।

घुसना (क्रि. अ.) दे. बड़णा।

घुस-पुस (स्त्री.) काना-फूसी।

घुसपैठ (स्त्री.) जोर-ज़बरदस्ती से घुसने की क्रिया।

घुसाणा (क्रि. स.) अंदर डालना, (दे. बाड़णा)। **घुसाना** (हि.)

घुसाना (क्रि. स.) दे. घुसाणा।

घुसेड़णा (क्रि. स.) 1. अंदर डालना, 2. अंदर भेजना, 3. (दे. बाड़णा)। **घुसेड़ना** (हि.)

घुसेड़ना (क्रि. स.) दे. घुसेड़णा।

घुसेरा (पुं.) चूहेदानी।

घुस्सा (पुं.) 1. मुक्का, 2. बंद मुट्ठी की मुद्रा, तुल. डुक्का।

घुस्याणा (क्रि. स.) घूसों से पीटना।

घूँग्घट (पुं.) 1. ओढ़नी या चुनरी का वह पल्ला जो मुँह ढाँपने के लिए ठोड़ी या छाती तक ताना जाता है, (श्वसुर-पक्ष के) पति से बड़े व्यक्तियों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने या लज्जावश मुँह पर डाला जाने वाला आँचल का भाग, पर्दा, 2. ओढ़नी के पल्ले से जुड़ा घुँघरू वाला एक आभूषण; **~करणा/काढणा/लिकाड़णा** 1. पर्दा करना, 2. महिला द्वारा लज्जा का भाव प्रकट करना; **~की ओट/आड** गुप्त रूप से, लुक-छिप कर; **~गात्ती मैं रहणा** मान-मर्यादा के साथ रहना (महिला का); **~ताणणा** घूँघट निकालना; **~तारणा** 1. इज़्ज़त लूटना, 2. बेपर्दा होना या करना। **घूँघट** (हि.)

घूँघट (पुं.) दे. घूँग्घट।

घूँघरी¹ (स्त्री.) छोटा घुँघरू।

घूँघरी² (स्त्री.) दे. बाकळी।

घूँघरू (पुं.) नूपुर। **घुँघरू** (हि.)

घूँट (स्त्री.) 1. द्रव पदार्थ की वह मात्रा जो एक बार में गले से नीचे उतारी जाए, 2. हुक्के-बीड़ी आदि को पीते समय उसका धुआँ अंदर की ओर सहारने की क्रिया; (क्रि. स.) 'घूँटणा' क्रिया का आदे. रूप; **~मारणा** 1. हुक्का पीना, 2. कान भरना; **सबर की~**मन को समझाने का भाव; **~सहारणा** हुक्के की लंबी घूँट भरना।

घूँटणा (क्रि. स.) 1. घूँट भरना, पीना, 2. मन ही मन आनंद लेना। **घूँटना** (हि.)

घूँटना (क्रि. स.) दे. घूँटणा।

घूँटी (स्त्री.) दे. घूँट्टी।

घूँट्टी (स्त्री.) 1. जन्म के समय पिलाया जाने वाला मीठा द्रव पदार्थ (मोटी हरड़ का रस, शहद, औषधि आदि), जन्मघूँटी, 2. सीख, पट्टी; (क्रि.स.) 'घूँटणा' क्रिया का भूतकाल, एक वचन, स्त्रीलिंग रूप; **~चढाणा** बहकाना; **~प्याणा** 1. सीख देना, 2. पट्टी पढ़ाना, बहकाना। **घूँटि** (हि.)

घूँडरू (पुं.) 1. अंकुर, बीज में उत्पन्न पहली कोंपन, 2. (दे. बीटरू); **~आणा/जामणा/दीखणा/फूटणा** बीज अंकुरित होना।

घूँडी (स्त्री.) दे. ल्हूँढी।

घूँड्डी (स्त्री.) 1. गाँठ, 2. रुपयों की थैली; **~के बटण** सोने, चाँदी, धातु, वस्त्र आदि के घुंडीदार बटन; **~खोह्लणा** 1. समस्या का समाधान करना, 2. भेद प्रकट करना, 3. रुपये बाँटना या दान देना, (1. दे. घुंडी, 2. दे. हुंडी)। **घुंडी** (हि.)

घूँस¹ (स्त्री.) बड़े आकार का चूहा (जो मकानों की नींव को भी खोखला कर देता है); (वि.) 1. स्थूलकाय, 2. मूर्ख; **~सा** बहुत मोटा-ताज़ा; **~~होणा** मोटापा चढ़ना।

घूँस² (स्त्री.) घूस, (दे. कोड़)। **घूस** (हि.)।

घूँसळा (पुं.) पक्षी द्वारा बनाया गया तिनकों का निवास। **घोंसला** (हि.)

घूँसवा (पुं.) 1. चूहेदानी, 2. घोंसला, 3. छिपने या आश्रय लेने का स्थान, 4. हल की एक कल; **~लाणा** 1. चूहेदानी लगाना, 2. आश्रय खोजना।

घूँसा¹ (पुं.) मुक्का।

घूँसा² (पुं.) 1. दे. मुक्का 2. दे. डुक्का।

घूँहन्ना (वि.) 1. जिसके मन का भेद सुगमता से नहीं जाना जा सके, 2. शांत किंतु ख़तरनाक; **~मिथन** ऐसा स्वभाव जिसका भेद सुगमता से नहीं जाना जा सके; **~हराम** शांत किंतु दुष्ट स्वभाव का।

घूग्घी (स्त्री.) 1. 'टेह' पक्षी, 2. वह लिखाई जो पढ़ी न जा सके, 3. मृतक को पहनाया जाने वाला झगुला।

घुग्घु (पुं.) 1. एक जीव जो भूमि में रेत का सुंदर-सा बिल बनाकर रहता है, 2. कान का मैल, 4. मिल का हूटर, 4. उल्लू; (स्त्री.) घूँ-घूँ की ध्वनि; (वि.) मूर्ख।

घूघरी (स्त्री.) दे. बाकळी।

घूचड़ू (वि.) मूर्ख, मंद बुद्धि।

घूटना (क्रि. स.) दे. घूँटणा।

घून्ना/घून्नाह (क्रि. व.) दे. घूँहन्ना।

घूबणा (क्रि. स.) 1. मोटी सिलाई करना, 2. जैसा-तैसा सीना; (क्रि. अ.) (आँख में) चीस लगना।

घूब्बा (पुं.) आँख की पीड़ा जिसमें आँख सूज जाती है और रड़क के कारण भयंकर पीड़ होती है, पीड़ा; **~मारणा/लागणा/होणा** आँख के कष्ट के कारण भयंकर पीड़ा होना।

घूम (स्त्री.) 1. चुन्नट, 2. लहँगे, धोती आदि की कली या परत के हिलने से उत्पन्न लहर या घुमाव, 3. घूमने की क्रिया, 4. व्यर्थ का फेर; (क्रि. अ.) 'घूमणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पड़णा/लागणा** चलते समय लहँगे आदि की कलियों का झूमना या हिलना।

घुमाव (हि.)

घूमणा (क्रि. अ.) घूमना-फिरना, चक्कर लगाना, (दे. हाँढणा)। **घूमना** (हि.)

घूमना (क्रि. अ.) दे. हाँढणा।

घूमर (पुं.) एक नृत्य।

घूर (स्त्री.) 1. निगाह, दृष्टि—शेर की इसी घूर थी अक देक्खी नाजा, 2. कुदृष्टि, कुपित दृष्टि—न्यूँ देक्खै सै मेरे कान्नी जणू मनैं घूर खा घा (नज़र से ही खा जाएगा); (क्रि. स.) 'घूरणा' क्रिया का आदे. रूप; **~खाणा** नज़र से डराना, कुपित दृष्टि डालना; **~पाड़णा/मारणा** नज़र से ही खा जाने का भाव व्यक्त करना, डराना।

घूरणा (क्रि. स.) 1. कुपित दृष्टि से देखना, (दे. गटूरणा), 2. कामुक दृष्टि से देखना, 3. (दे. लखाणा)।

घूरना (हि.)

घूरना (क्रि. स.) दे. घूरणा।

घेंटा (पुं.) छः माह का सुअर का बच्चा।

घेटुआ (पुं.) 1. गरदन , ठोड़ी से नीचे का भाग, गरदन के बीच का वह भाग जो उभरा हुआ नजर आता है, (1 तुल. टींटवा, 2. तुल. डीडवा), 2. गला, (तुल. घीट्टी); **~दबोचणा** 1. गले से पकड़ना, 2. गला घोंटना।

घेट्टी (स्त्री.) दे. घीट्टी।

घेठी (स्त्री.) दे. खार की (गृष्ठि)

घेतळा (वि.) दे. गूहला।

घेर[1] (पुं.) 1. मुख्यतया पशुओं को बाँधने, उपले थापने, चारा सुरक्षित रखने आदि का स्थान जिसका परकोटा घास-फूस या कच्ची ईंटों का बना होता है, 2. गाँव की आबादी से बाहर का निवास स्थान, 3. घुटन; (क्रि.स.) 'घेरणा' क्रिया का आदे. रूप; **~काढणा/खेंचणा/घेरणा/बणाणा** 1. पड़ी ज़मीन का परकोटा खींचना, 2. खाली ज़मीन पर कब्ज़ा करना; **~घोट कै**

राखणा क़ाबू में रखना।

घेर[2] (पुं.) 1. चक्कर, 2. दूरी, 3. फैलाव, 4. परिधि; ~**घिराळा** 1. घुमावदार, 2. टेढ़ा-मेढ़ा; ~**पड़णा/लागणा/ होणा** चक्कर पड़ना, फेर पड़ना।

घेरणा[1] (पुं.) चक्की, लोहे या लकड़ी का चक्र।

घेरणा[2] (क्रि. स.) 1. क़ाबू में करना, 2. चारों ओर से रोकना, बच निकलने का कोई मार्ग न छोड़ना, 3. पशुओं को क़ाबू में रख कर चराना, 4. निरुत्तर करना। **घेरना** (हि.)

घेरणी[1] (स्त्री.) कूएँ, चर्खे आदि की चक्री, (दे. घिरणी)। **घिरनी** (हि.)

घेरणी[2] (स्त्री.) भूत बाधा भगाने के लिए थाली बजाने का भाव।

घेरा (पुं.) 1. परकोटा, चहारदीवारी, 2. परिधि, चारों ओर की सीमा, 3. लोहे या मिट्टी की चक्की जो बाल्टी आदि के नीचे लगती है, 4. घेराव; ~**काढणा** चहारदीवारी खींचना; ~**खींचणा** गोलाकार चक्र बनाना, रेखाबद्ध करना–लिछमन नैं धनस तैं सीता के चारूँ कूँट घेरा खींच दिया; ~**मारणा** चक्कर लगाना–साँझ सी खेत्ताँ कान्नी घेरा माराइये; ~**लाणा** चक्कर लगाना–तुहीराम नैं घर के बीस घेरे लाए जिब गाड्डी माँग्गी मिल्ली।

घेरिआ (पुं.) 1. सिर के बहुत छोटे वालों को गूँथने का ढंग, 2. छोटा घेर या बाड़ा।

घेरिया (पुं.) बच्चे के बालों को गोल घेरे में गूँथना।

घेरी (स्त्री.) 1. परिधि, 2. छोटा घेरा, 3. मुसीबत; (क्रि. स.) 'घेरणा' क्रिया का भूतकाल एक वचन स्त्रीलिंग रूप।

घेरे (क्रि. वि.) दूसरे दिन (मेवा.)।

घेवर (पुं.) मैदा से बनी एक मिठाई।

घेसळा (पुं.) मोटा किंतु लाठी से कुछ छोटा लठ।

घोंसला (पुं.) दे. घूँसळा।

घोखणा (क्रि. स.) रटना, बार-बार रटना।

घोग (स्त्री.) रिक्त स्थान या सूराख।

घोग्घा बापा (पुं.) दे. गूगा पीर। तुल. गोगा।

घोग्घो/घोघो (वि.) 1. शरीर को बहुत वस्त्रों से ढाँपने वाली तथा फिर भी ठिठुरने का भाव प्रकट करने वाली, 2. मंदबुद्धि, 3. मूर्खा; ~**माई** अधिक वस्त्रों में छिपी-सी रहने वाली महिला।

घोघ (पुं.) दे. तगार।

घोघड़ (पुं.) विवाह के अवसर पर वर पक्ष को भेंट किया जाने वाला गुड्डा।

घोघड़ी (स्त्री.) तांत्रिक महिला।

घोट (स्त्री.) 1. घुटन, 2. पाबंदी, बंदिश–घर क्याँ नै इसी घोट ला राक्खी सै अक धेल (देहली) तैं भार पाँ ना धर सकती; (पुं.) घोटाई–फरस पै घोट तै आच्छ्या कर दिया; (क्रि.स.) 'घोटणा' क्रिया का आदे. रूप।

घोटणा (क्रि. स.) 1. रगड़ना, पीसना, मथना, 2. रटना, 3. दबाना, भींचना–म्हारै छोहरे का गळ किसनैं घोट दिया, 4. उस्तरे से बाल काटना– रामपत नाई नैं तेरा सिर चोक्खा घोट दिया, टोल्ले मारण जोग्गा हो रह्या सै। **घोटना** (हि.)

घोटना (क्रि. स.) दे. घोटणा।

घोटा (पुं.) दे. घोट्टा।[2]

घोटाई (स्त्री.) दे. घुटाई।

घोटाला (पुं.) दे. घुटाळा।

घोट्टा[1] (पुं.) 1. रटने का भाव, 2. रगड़ने की क्रिया, 3. घोटने में कुशल व्यक्ति; **~लाणा/मारणा** 1. रटना, 2. रगड़ना। **घोटा** (हि.)

घोट्टा[2] (पुं.) चमकीले तार से बुना किनारीदार वस्त्र; **~किनारी** गोटा-किनारी। **गोटा** (हि.)

घोट्टू (वि.) घोटू, रटने वाला; **~पीर** रटने वाला, घोटने वाला।

घोड़ता (पुं.) छोटा घोड़ा।

घोड़ती (स्त्री.) छोटी घोड़ी। **घोड़ी** (हि.)

घोड़ा (पुं.) अश्व।

घोड़ागाड़ी (स्त्री.) घोड़े द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी।

घोड़ा-पछाड़ (वि.) घोड़े से भी तेज़ दौड़ने वाला (एक साँप)।

घोड़िया (स्त्री.) दे. घोड़ती।

घोड़ी (स्त्री.) 1. घोड़े की मादा, 2. रहेल, 3. लड़के के विवाह में गाए जाने वाले घोड़ी के गीत, 4. हल वहन करने का यंत्र, स्टैंड, (दे. गंडस्या); (वि.) तेज तर्राट (लड़की); **~के मोल** बहुत महँगे भाव; **~सी** चंचला।

घोर (वि.) 1. भयंकर, 2. घना, सघन, 3. बुरा, 4. बहुत ज्यादा; (पुं.) 1. मैल, जैसे–घोर जमणा, 2. एक संप्रदाय, अघोर संप्रदाय; **~अंधेरा** भयंकर अंधकार; **~~होणा** 1. आपत्ति टूट पड़ना, 2. मार्ग न सूझना।

घोर कुंड (पुं.) भयंकर नरक कुंड।

घोरण (वि.) 1. गंदी रहने वाली, 2. पापिन।

घोरणा (क्रि.) 1. घेरना। छा जाना। उदा. –लखमी चंद मौत शीश पै घोरै, कदे बिछा दे ना काल्लर कोरै। 2. बादल कड़कना। तुल. गरजणा।

घोरी (वि.) 1. बहुत गंदा रहने वाला, ग़लीज, 2. पापी, अत्याचारी; (पुं.) अघोर संप्रदाय से संबंधित साधु।

घोल (पुं.) दे. घोळ।

घोळ (पुं.) 1. घोल कर बनाया गया पदार्थ, 2. मिलावट, 3. मिश्रण, (दे. घोळिया); (क्रि. स.) 'घोळणा' क्रिया का आदे. रूप। **घोल** (हि.)

घोळणा (क्रि. स.) 1. तरल वस्तु को मिलाना, 2. सताना। **घोलना** (हि.)

घोळिया (पुं.) 1. घोल, 2. छाछ में चने, गेहूँ, जौ आदि का घोला हुआ आटा ताकि उसमें खटास उत्पन्न हो सके, 3. तरल पेय या खाद्य पदार्थ, 4. पेट में होने वाली घुरल-घुरल की ध्वनि; **~घोळणा** 1. राबड़ी के लिए खट्टा घोलना, 2. कढ़ी के लिए बेसन का घोल तैयार करना; **~चालणा/होणा** 1. मानसिक तनाव के कारण पेट में दर्द होना, 2. दस्त होना; **~बणाणा** खिचड़ी दलिया आदि को बहुत पतला कर देना।

घोषणा (स्त्री.) 1. उच्च स्वर से दी गई सूचना, 2. राजाज्ञा, 3. गर्जन की ध्वनि। दे. रेळ।

घोसी (पुं.) दे. घोस्सी।

घोस्सी (पुं.) 1. दूध का व्यापार करने वाला व्यक्ति, 2. गाय-भैंस पालने वाली एक जाति। **घोसी** (हि.)

घ्राण (स्त्री.) 1. सूँघने की शक्ति, 2. सुगंधि।

ङ

ङ हिंदी वर्णमाला में व्यंजन वर्ण का पाँचवाँ और कवर्ग का अंतिम अक्षर, यह स्पर्श वर्ण है, इसका उच्चारण स्थान कंठ और नासिका है।

च

च हिंदी वर्णमाला का छठा व्यंजन जिसका उच्चारण स्थान तालु है, हरियाणवी में इसके उच्चारण में तालु के साथ जिह्वा का कुछ अधिक भाग स्पर्श होता है।

चँ-चँ (स्त्री.) 1. शोर, 2. चिड़िया के चहचहाने की ध्वनि; **~करणा/लाणा** 1. प्रतिवाद करना, 2. व्यर्थ का शोर मचाना।

चंग (पुं.) एक ओर से खाल से मढ़ा बाजा। दे. तास्सा।

चंगा (वि.) 1. स्वस्थ, 2. अच्छा–मन चंगा तै कठोत्ती मैं गंगा।

चंगा च्यारी (पुं.) चौपड़ का खेल जिसमें 25 खाने होते हैं।

चंगुल (पुं.) दे. चुंगळ।

चँगेरी (स्त्री.) डलिया, टोकरी।

चंचल (वि.) 1. न टिकने वाला, अस्थिर, 2. चालाक।

चंचला (वि.) 1. चंचल स्वभाव वाला, 2. चतुर, 3. मनचला।

चंची (स्त्री.) रंग-बिरंगी ओढ़नी, बंधेज की रंगाई वाली ओढ़नी।

चँचोरणा (क्रि. स.) 1. वस्तु को चोंच से टाकना, चूसना या बखेरना, 2. बाजरा, जवार आदि की बाल या सिरटी के दानों को कहीं-कहीं से चोंच मारना, 3. काम को बेमन से करना या बिगाड़ना।

चंट (वि.) 1. चालाक, 2. धूर्त, 3. चुस्त।

चंटी (स्त्री.) 1. लचीली डंडी या साँटा, संटी, 2. हल्की चोट, दाएँ हाथ की तर्जनी और मध्यमा अंगुली को मिला कर लगाई गई चोट, 3. आर्थिक हानि; **~मारणा** 1. हानि पहुँचाना, 2. संटी से पीटना; **~लागणा** हानि होना।

चँडाई (स्त्री.) 1. मरम्मत, 2. (दे. चटाई)।

चंडाल (पुं.) दे. चंडाळ।

चंडाळ (पुं.) 1. एक जाति, 2. इस जाति का व्यक्ति; (वि.) 1. क्रूर, 2. नीच; **~चौंकड़ी** चंडाल-मंडली; **~बाळ भेणा** मकर संक्रांति के दिन निश्चित रूप से स्नान करना। **चांडाल** (हि.)

चंडाळिया (पुं.) एक भंगी-गोत।

चंडाली (स्त्री.) दे. चंडाळी।

चंडाळी (स्त्री.) चांडालिनी, चांडाली, कुलटा।

चंडिका (स्त्री.) दे. चंडी।

चंडी (वि.) 1. क्रोध करने वाली, 2. झगड़ालू; (स्त्री.) दुर्गा; **~चढणा** ज़िद करना।

चंडीगढ़ (पुं.) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शिवालिक पहाड़ की तलहटी में सुखना झील के तट पर बसाया गया एक नगर।

चंडू (वि.) 1. गप हाँकने वाला, 2. झूठा, 3. नशेबाज़।

चंडू-खान्ना (पुं.) वह स्थान जहाँ से झूठी बातें प्रचारित होती हैं।

चंद (वि.) कुछ।

चंदणा (पुं.) दे. चोरटा[2]। (स्त्री.) गीतों में गाया जाने वाला स्त्री पात्र जिसका परपति से अनुराग था।

चंदन (पुं.) 1. एक सुगंधित वृक्ष, 2. इस वृक्ष की लकड़ी; **~चिता** चंदन की लकड़ियों से रची गई चिता; **~चोक्की** चंदन की बनी चौकी या आसन; **~हरसा** वह पत्थर जिस पर चंदन घिसते हैं, (दे. हरसा); **~हार** चंदन का हार।

चंदबंस (पुं.) चंद्रवंश (श्रीकृष्ण चंद्रवंशी थे)। **चंद्रवंश** (हि.)

चंदबरदाई (पुं.) हिसार निवासी पृथ्वीराज का मित्र कवि।

चंदरमाँ (पुं.) चाँद; **~सा चेहरा** सुंदर मुख। **चंद्रमा** (हि.)

चंदा[1] (पुं.) 1. चाँद, 2. मोर का लंबा सुदर पंख (ये हर वर्ष दीपावली से पहले झड़ जाते हैं); **~(–दे) काटणा** मोर द्वारा अपने पंख गिराना।

चंदा[2] (पुं.) दान या शुल्क आदि के रूप में एकत्रित राशि।

चंदायन (पुं.) दाऊद द्वारा रचित एक रचना जिसकी भाषा दिल्ली के आस-पास की बोलियों (खादर, बाँगर, डाबर आदि) से प्रभावित है।

चँदिया (स्त्री.) 1. छोटी, मोटी और कुछ कच्ची रोटी जो पहले पहल बनाई जाती है तथा कुत्ते को डाल दी जाती है, श्वान-ग्रास, 2. डलिया, चंगेरी, 3. खोपड़ी।

चंदीगढ़ (पुं.) दे. चंडीगढ़।

चंदेवा (पुं.) दे. चंदोआ।

चंदोआ/चंदोवा (पुं.) 1. विवाह के समय दूल्हे के सिर पर रखा जाने वला वस्त्र, 2. विवाह के समय आच्छादन आदि के रूप में प्रयुक्त वस्त्र।

चंद्दर (पुं.) चाँद। **चंद्र** (हि.)

चंद्रगुप्त (पुं.) सिकंदर को हराने वाला एक मौर्य सम्राट।

चंद्रग्रहण (पुं.) चाँद का ग्रहण।

चंद्रमा (पुं.) चाँद, (दे. चंद्दर)।

चंद्रवंश (पुं.) क्षत्रियों का एक वंश जिसमें श्रीकृष्ण उत्पन्न हुए।

चंद्रवंशी (वि.) चंद्रवंश से संबंधित।

चंद्रवार (पुं.) सोमवार।

चंद्रशेखर (पुं.) शिव।

चंद्रहार (पुं.) नौलखा हार, एक प्रकार की रत्नमाला।

चंपई (वि.) चंपा के फूल जैसे रंग का।

चंपक (पुं.) चंपा का फूल।

चंपा (स्त्री.) 1. एक पीला सुगंधित फूल, 2. चंपा का पेड़; **~बाग** चंपा के फूलों का बाग।

चंपा कली (स्त्री.) एक माला जिसमें जौ के समान मनके पिरोए होते हैं, गले का एक आभूषण।

चंपा साड़ी (स्त्री.) एक विशेष प्रकार की साड़ी।

चंपा हार (पुं.) गले का एक आभूषण।

चंबल (स्त्री.) एक नदी; (पुं.) भीख माँगने का एक पात्र विशेष।

चंबोला (पुं.) दे. चमोल्ला।

चंभा (पुं.) अचंभा।

चंभो (स्त्री.) 1. आश्चर्यजनक काम करने वाली महिला, 2. चरित्रहीन महिला; **~चाळी** चरित्रहीन महिला।

चँमर/चँवर (पुं.) 1. डंडीयुक्त सुरा गाय की पूँछ जो देव मूर्ति, पूज्य-ग्रंथ या

दूल्हे आदि पर डुलाई जाती है, 2. झालर; **~डुलाणा/ढाळणा/ढोरणा** देव रक्षार्थ या सम्मानार्थ चँवर डुलाना।

चः चः (स्त्री.) रेवड़ को हाँकने के लिए प्रयुक्त ध्वनि।

चक[1] (पुं.) 1. पपड़ी, (दे. चक्कल), 2. चक्रः (स्त्री.) बिजली की चमक–चक बरसै सामणियाँ मींह।

चक[2] (पुं.) चकवा, (दे. चकवा)।

चक[3] (पुं.) खेत का भूखंड।

चक[4] (पुं.) बड़ा तमाशा।

चक[5] (पुं.) मिट्टी का तसलेनुमा बड़ा पात्र जिसमें पके गन्ने के रस को पेड़ी या भेली बनाने के लिए शीतल किया जाता है। दे. तई।

चक-चक (स्त्री.) 1. वाद-विवाद, कहा-सुनी, 2. व्यर्थ का शोर।

चकचाळ (वि.) 1. झगड़ालू, हर समय जान को चक-चक रखने वाली– मेरी सास बड़ी चकवाळ खाणा धरगी ताळै मैं (लो. गी.), 2. घुमक्कड़।

चकचूँधर (स्त्री.) चमगादड़।
छछूँदर (हि.)

चकडोर (स्त्री.) चकई खिलौने में लपेटी हुई डोरी।

चकणा (क्रि. स.) 1. दे. ठाणा, 2. दे. चकलाणा।

चकत्ता (पुं.) रक्त-विकार आदि के कारण शरीर पर पड़ा दाग़।

चकनाचूर (वि.) 1. चूर-चूर, 2. थककर चूर।

चकफूल (पुं.) एक आभूषण विशेष।

चकफेरी (स्त्री.) चक्कर या परिक्रमा लगाने की क्रिया।

चकबंध (पुं.) चोटी का एक आभूषण।

चकबंधी (स्त्री.) स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भूमि-सुधार के लिए की गई खेतों की पुनर्व्यवस्था। **चकबंदी** (हि.)

चकमक (पुं.) एक प्रकार का पत्थर।

चकमा (पुं.) 1. धोखा, भुलावा, 2. हानि, वंचना।

चकर चूँड्डा (पुं.) एक प्रकार का झूला, सी-सा।

चकराणा (क्रि. अ.) 1. चक्कर खाना, 2. भ्रमित होना। **चकराना** (हि.)

चकराना (क्रि. अ.) दे. चकराणा।

चकरी (स्त्री.) 1. चक्कर खाने वाला एक खिलौना, 2. (दे. चकली).
चक्री (हि.)

चकला[1] (पुं.) 1. रोटी बेलने के काम आने वाला लकड़ी या पत्थर का चक्र, 2. उठाऊ चक्की (जिसमें दाल, दलिया आदि पीसा जाता है), 3. परिधि, 4. चूना पीसने की चक्की; (क्रि.स.) 'चकलाणा' क्रिया का आदे. रूप।

चकला[2] (पुं.) वेश्यावृत्ति का अड्डा।

चकलाणा (क्रि. स.) 1. छोटे पौधे को मिट्टी सहित एक स्थान से दूसरे स्थान पर लगाने के लिए खोदना या उठाना, 2. जड़ खोदना। **चकलाना** (हि.)

चकला-बेल्लण (पुं.) चकला और बेलन।

चकली[1] (स्त्री.) 1. कूएँ की घेरनी, 2. वह चक्री जिस पर धागा या डोरी चढ़ाई जाती है, 3. गन्ना पेरने का कोल्हू, कोल्हू। **चक्री** (हि.)

चकली[2] (स्त्री.) गोलाकार शिला का हत्थी वाला मुगदर।

चकलेटी (स्त्री.) कुम्हार की चाक घुमाने की डंडी।

चकलेट्टी (स्त्री.) कुम्हार के चक्र को घुमाने की यष्टि या डंडा।

चकलोटी (स्त्री.) मिट्टी के बर्तन बनाने का छोटा चाक।

चकवा (पुं.) चक्रवाक, एक पक्षी जो रात के समय जोड़े से बिछुड़ जाता है।

चकवा बैण (पुं.) 1. एक राजा (जनश्रुति के अनुसार इसकी राजधानी खेड़ी गूजर [सोनीपत] थी, यहाँ इसका जमकत ऋषि से युद्ध हुआ था), 2. परिहार गोत के कीचकगढ़ के राजा।

चकवी (स्त्री.) चकवे की मादा।

चकाक (क्रि. वि.) तुरंत–यो काम चकाक दे करले, साँझ होण आळी सै।

चकाचक (वि.) अधिक सफेद, उज्ज्वल। 1. दे. चका चूँध 2. दे. चकचक।

चकाचूँध (स्त्री.) 1. अत्यधिक प्रकाश, 2. अधिक प्रकाश होने के कारण आँखें बंद होने का भाव, 3. हक्का- बक्का होने का भाव। **चकाचौंध** (हि.)

चकाचौंध (स्त्री.) दे. चकाचूँध।

चकारा (पुं.) 1. दे. मिरग, 2. दे. हिरण, 3. दे. कलपूँछिया।

चकिहार (स्त्री.) दे. छकियार।

चकूट्टा (वि.) चौकोर (चार कोनों वाला)।

चघूस गाड्डी (स्त्री.) रबड़ टायर वाली गाड़ी।

चकोतरा (पुं.) नीबू जाति का एक खट्टा फल।

चकोर[1] (पुं.) एक पक्षी जो जनसाधारण के अनुसार आग निगल सकता है और चाँद की चमक के कारण उस तक उड़ना चाहता है।

चकोर[2] (वि.) चार कोनों वाला। **चौकोर** (हि.)

चकोरी (स्त्री.) चकोर की मादा।

चक्कर[1] (पुं.) 1. मंडलाकार वस्तु, 2. चलने में दूरी या फेर पड़ने का भाव, 3. हैरानी, असमंजसता की स्थिति, 4. सिर घूमने या चकराने का भाव, 5. पानी की भँवर, 6. सुदर्शन चक्र; **~काटणा** 1. भ्रमित होना, 2. दौड़-धूप करना, 3. खुशामद करना, 4. हैरान होना–म्हारे फौजियाँ की आवण सुण कै एक बै तै बैरी भी चक्कर काटग्या, 5. टोह लेना, जासूसी करना; **~खाणा** 1. सिर घूमना, 3. घबराना, 3. बहकना, 4. व्यर्थ में घूमते रहना; **~पड़णा** 1. हिसाब-किताब ग़लत होना, 2. अनुमान से परे बात होना, 3. अधिक मार्ग तय करना पड़ना, फेर पड़ना, 4. अनावश्यक विवाद खड़ा होना; **~मैं आणा** 1. साज़िश में फँसना, 2. भ्रमित होना, 3. क़ाबू या वश में आना। **चक्र** (हि.)

चक्कर[2] (पु.) बुड़के से पड़े चिह्न। दे. बुड़का।

चक्कर व्यूह (पुं.) 1. अभिमन्यु के वध के लिए रचा गया व्यूह, (कुरुक्षेत्र के निकट अमीन [अभिमन्यु] गाँव में इसके खंडहर हैं), 2. युद्ध के समय सैनिकों को विशेष प्रकार से नियुक्त करने का ढंग, झंझट। **चक्रव्यूह** (हि.)

चक्कल (स्त्री.) मोटी पपड़ी, (दे. कत्तल)।

चक्का (पुं.) 1. गलहा (अधिकतर जमी हुई दही का), 2. जमे हुए घी का टुकड़ा, 3. चक्र, 4. पहिया।

चक्की (स्त्री.) दे. चाक्की।

चक्कू (पुं.) सब्ज़ी आदि छीलने का यंत्र। **चाक़ू** (हि.)

चक्र (पुं.) दे. चक्कर।

चक्रपाणि (पुं.) विष्णु।

चक्रवर्ती (वि.) समुद्रपर्यन्त भूमि पर राज्य करने वाला।

चक्रवाक (पुं.) दे. चकवा।

चक्रवात (पुं.) दे. भभूळिया।

चक्रवृद्धि ब्याज (पुं.) सूद-दर-सूद।

चक्रव्यूह (पुं.) दे. चक्कर ब्यूह।

चक्षु (पुं.) नेत्र।

चखना (क्रि. स.) दे. चाखणा।

चखाणा (क्रि. स.) स्वाद चखाना, चटाना। **चखाना** (हि.)

चखाना (क्रि. स.) दे. चखाणा।

चचा (पुं.) दे. चाच्चा।

चखूँट्टा (वि.) दे. चकूँट्टा।

चखोरा (वि.) 1. खाने में मीन मेख निकालने वाला 2. चख चख कर खाने वाला। दे. मनचरी।

चघूस गाड्डी (स्त्री.) रबड़ टायर वाली गाड़ी।

चचेरा (वि.) चाचा से उत्पन्न (भाई)।

चज (पुं.) शऊर (कौर.)।

चट (क्रि. वि.) तुरंत, झट–चट देनैं काम करले; (स्त्री.) 1. समाप्त–सारी राबड़ी नैं तड़कै ए तड़कै चट करगे, 2. चाट कर समाप्त करना, 3. 'चट' की ध्वनि, 4. नाखून के पास की उखड़ी हुई खाल, (दे. चर); **~दे सी** तुरंत, झट से।

चटक (वि.) तेज, अधिक मात्रा में– 1. खीचड़ी मैं नूण चटक सै, 2. चटक रंग का लत्ता आच्छ्या रहै सै; **~मटक** 1. भड़कीलापन, 2. सजधज, 3. नखरे का भाव।

चटकणा (क्रि. अ.) 1. टूटना 'चट' की ध्वनि के साथ टूटना, 2. छिटकना, 3. खिलना। **चटकना** (हि.)

चटकना (क्रि. अ.) दे. चटकणा।

चटकनी (स्त्री.) चटखणी।

चटका (पुं.) 1. चसका, 2. जादू, 3. अनोखी घटना–आ तनै मैं चटका दिखाऊँ कूण मैं झाँक कै देख, 4. पकी हुई ईंट का एक प्रकार।

चटकाणा (क्रि. स.) 1. 'चट'-'चट' की ध्वनि उत्पन्न करना, 2. तड़काना, 3. अंगुलियों को खींच कर 'चट' की ध्वनि करना, 4. उड़ा लेना, चोरी कर लेना। **चटकाना** (हि.)

चटकाना (क्रि. स.) दे. चटकाणा।

चटकीला (वि.) 1. दे. चटकील्ला 2. दे. चटक।

चटकील्ला (वि.) 1. तेज़ रंग का, 2. चुस्त, 3. चरपरा, चटपटा। **चटकीला** (हि.)

चटखना (क्रि. अ.) दे. चटकणा।

चटणी (स्त्री.) पीस कर बनाया गया लेह पदार्थ। **चटनी** (हि.)

चटनी (स्त्री.) दे. चटणी।

चटपट (क्रि. वि.) तुरंत; (स्त्री.) लड़ाई-झगड़ा–थारी दोनुँआँ की हर बखत चटपट होत्ती रहै सै क्यूक्कर बेड़ा पार होगा।

चटपटा (वि.) 1. तेज़ मिर्च-मसाले का, 2. मज़ेदार, 3. तेज़-तर्राट।

चटर-चटर (स्त्री.) 'चटर'-'चटर' की ध्वनि।

चटर-मटर (स्त्री.) 1. सत्यानाशी के काले बीज जिनके जलने से 'चटर'-'चटर' की ध्वनि उत्पन्न होती है, 2. एक प्रकार का पटाख़ा, (1. दे. कटहळी, 2. दे. सत्यानास्सी)।

चटरी (स्त्री.) एक घास विशेष।

चटवाणा (क्रि. स.) खुरपे, कुश, दराँती आदि यंत्रों की धार को तेज़ करवाना, सान लगवाना। **चटवाना** (हि.)

चटसाळ (स्त्री.) पाठशाला। दे. साळ[1]।

चटाई (स्त्री.) 1. वह मज़दूरी जो औज़ार के चटवाने या सान लगवाने के बदले दी जाती है, 2. कुशा, तृण आदि का आसन।

चटाणा[1] (क्रि. स.) 1. चटाना, 2. सान लगवाना।

चटाणा[2] (क्रि. स.) 1. चाटने का काम कराना, चखाना, 2. घूस देना।

चटाना (क्रि. स.) 1. दे. चटाणा[1], 2. दे. चटाणा[2]।

चटापटी (स्त्री.) बच्चों की छुटपुट मार-पिटाई।

चटियल (वि.) जहाँ पेड़-पौधे न हों, हरियाली रहित।

चटोरा (वि.) 1. हर समय चटपटी वस्तुएँ खाते रहने वाला, 2. लोलुप।

चट्टनपाळा (स्त्री.) लाल मिर्च की चटनी। दे. चटणी।

चट्टा (पुं.) विधिवत् लगाई गई ईंटों की ढेरी; (वि.) श्वेत (वर्ण)।

चट्टान (स्त्री.) शिलाखंड।

चट्टी[1] (स्त्री.) 1. पड़ाव, 2. एक निश्चित दूरी का पड़ाव–चार कोस की कोस बणाई, आठ कोस पै चट्टी जी। चलत्याँ-चलत्याँ गोड्डे थकगे, देक्खी होगी माट्टी जी।। ओड़ीसी जगन्नाथ पुरी में, ठाकुर भले बिराजे जी। वो तै सोह्दरा के बीर, समुंद्र तीर बिराज्जे जी।।

चट्टी[2] (स्त्री.) खड़ाऊँ।

चट्टू (पुं.) हल्का थप्पड़; (वि.) चटोरा।

चड़ (स्त्री.) दे. चर।

चड़स (पुं.) दे. चिड़स।

चड्ढम-चड्ढा (पुं.) एक खेल जिसमें बच्चे एक-दूसरे की सवारी करते हैं।

चड्ढी (स्त्री.) 1. (वाहन आदि पर की गई) सवारी, 2. कच्छी; **~खाणा** सवारी करना, (दे. मुज्झया)।

चढणा (क्रि. अ.) 1. ऊपर जाना, 2. उन्नति करना, 3. सवारी करना, 4. तैयारी करना, चलने की तैयारी करना, जैसे–बारात चढणा। **चढ़ना** (हि.)

चढत (स्त्री.) 1. देवता के नाम पर चढ़ाया गया पुजापा, भेंट, 2. बारात का प्रस्थान, घुड़चढ़ी।

चढ़ना (क्रि. अ.) दे. चढणा।

चढवाणा (क्रि. स.) 1. चढ़ने में सहायता करना, 2. चढ़ने का काम अन्य से करवाना। **चढ़वाना** (हि.)

चढ़वाना (क्रि. स.) दे. चढवाणा।

चढ़ा (स्त्री.) चढ़ाई, ऊँचाई–बुळध तै थे माड़े, चढ़ा पै कींह तराँह् चढते?; (पुं.) चढ़ावा, पुजापा। **चढ़ाव** (हि.)

चढ़ाई (स्त्री.) 1. आक्रमण, 2. चढ़ने का भाव, 3. ऊँचाई, 4. सामान चढ़ाने की मज़दूरी; **~उतराई** 1. ऊँची-नीची जगह, 2. ऊपर-नीचे चढ़ने-उतरने का भाव।

चढाणा (क्रि. स.) 1. चढ़ने में सहायता करना, 2. झूठी प्रशंसा करके बौराना, 3. गट-गट करके पी जाना, 4. अधिक मदिरा-पान करना। **चढ़ाना** (हि.)

चढ़ाना (क्रि. स.) दे. चढाणा।

चढावा (पुं.) पुजापा, भेंट।

चणक (स्त्री.) नस पर नस चढ़ने के कारण उत्पन्न पीड़ा।

चणा (पुं.) 1. रबी की फ़सल का दाल वाला एक मोटा अन्न (यह काला, पीला, देसी, काबुली, केसरी, चणी आदि अनेक रूपों में मिलता है); **~(–णे) का साग** चने के पत्तों से बनाया गया साग जिसे आलन (दही का) आदि मिलाकर बनाया जाता है; **~(–णे) की टाट** चने की फली जिसमें चने के कच्चे दाने होते हैं (इन्हें कच्चा भी खाते हैं); **~(–णे) के छोलिए** चने की टाट या फली से निकले कच्चे चने जिनकी चटनी तथा सब्ज़ी आदि बनाते हैं; **~(–णे) के बूँट** चने का पौधा, चने का पौधा जिसमें छोलिया लगे हों; **~(–णे) के साथ घुण पिसणा** निर्दोष व्यक्ति को कुसंगति के कारण कष्ट पहुँचना; **~गेर कै रास बटाणा** किसी काम में थोड़ा हिस्सा लेकर या व्यापार में अल्प राशि लगा कर लाभ का बड़ा अंश माँगना; **~(–णे) चबाणा** 1. आपत्ति में डालना, 2. हराना, छकाना; **~चबीणा** 1. भुना हुआ अन्न, 2. रूखा-सूखा भोजन; **~चिरौंजी होणा** किसी वस्तु का मूल्य बहुत बढ़ना या अलभ्य होना–चणा चिरौंजी हो गया अर गींहूँ होगे दाख। **चना** (हि.)

चणी (स्त्री.) छोटे आकार का चना।

चतर (वि.) 1. समझदार, 2. चालाक, (दे. चात्तर); **~सुजान** चतुर-सुजान। **चतुर** (हि.)

चतरभज (पुं.) 1. विष्णु, 2. चार भुजाओं वाला देवता। **चतुर्भुज** (हि.)

चतराई (स्त्री.) 1. समझदारी, 2. चालाकी; **~बरतणा** 1. समझदारी से काम लेना, 2. संभावनाओं के विषय में पहले सोच-विचार कर लेना। **चतुराई** (हि.)

चतुर (वि.) 1. दे. चतर, 2. दे. चात्तर।

चतुराई (स्त्री.) दे. चतराई।

चतुर्थाश्रम (पुं.) दे. चोत्थापण।

चतुर्थी (स्त्री.) दे. चोथ[2]।

चतुर्दशी (स्त्री.) दे. चोद्दस।

चतुर्भुज (पुं.) दे. चतरभज।

चतुर्मास (पुं.) दे. चमास्सा

चतुर्वेदी (पुं.) ब्राह्मणों का एक गोत्र।

चतेरा (पुं.) 1. चित्रकार, 2. कलाकार, 3. भगवान।

चत्तर साड़ी (स्त्री.) कशीदे वाली साड़ी।

चद्दर (स्त्री.) दे. चाद्दर।

चना (पुं.) दे. चणा।

चपकोणा (क्रि. स.) बहलाकर चुप कराना।

चपड़-चपड़ (स्त्री.) 1. भोजन करते समय मुँह से उत्पन्न ध्वनि, 2. चिपचिपाहट, 3. ज़ल्दी-ज़ल्दी बोलने की क्रिया; **~करणा** 1. ज़ल्दी-ज़ल्दी और अस्पष्ट बोलना, 2. व्यर्थ में गाल बजाना।

चपड़ा (पुं.) 1. साफ़ की हुई लाख का पत्तर, 2. लाल रंग का एक कीड़ा।

चपड़ास्सी (पुं.) कार्यालय का अनुचर। **चपरासी** (हि.)

चपत (स्त्री.) 1. थप्पड़, 2. हानि।

चपराणा (क्रि. स.) अन्य की वस्तु को अपना बताना या बनाना। **चपराना** (हि.)

चपरासी (पुं.) दे. चपड़ास्सी।

चपरुड़ (स्त्री.) एक खरपतवार।

चपल (वि.) चंचल।

चपलता (स्त्री.) चंचलता।

चपाड़ (स्त्री.) दे. चुपाड़।

चपाती (स्त्री.) फुलका।

चपेट (स्त्री.) 1. थप्पड़, 2. रगड़, 3. लपेट, 4. चेटक; **~मैं आणा** 1. भूत-प्रेत का प्रभाव होना, 2. लपेटे में आना।

चपेड़ (स्त्री.) थप्पड़, तमाचा।

चप्पल (स्त्री.) खुली एड़ी का जूता।

चप्पा[1] (पुं.) 1. थोड़ा भाग, 2. थोड़ी जगह, 3. चार अंगुल जगह।

चप्पा[2] (पुं.) एक प्रकार का ओढ़ना।

चप्पू (पुं.) नाव चलाने की डाँड।

चबवाणा (क्रि. स.) 'चाबणा' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप।

चबवाना (क्रि. स.) दे. चबवाणा।

चबाई (स्त्री.) चबाने की क्रिया।

चबाणा (क्रि. स.) दाँतों से कुचलना। **चबाना** (हि.)

चबाणी (स्त्री.) दे. चबीणा।

चबाना (क्रि. स.) दे. चबाणा।

चबारा (पुं.) दे. चुबारा[1]।

चबीणा (पुं.) 1. अल्पाहार जो बारात को प्रातःकाल दिया जाता है, अल्पाहार, 2. भुना हुआ अनाज। **चबेना** (हि.)

चबीना (पुं.) दे. चबीणा।

चबूतरा (पुं.) दे. चोंतरा।

चबोड़ा (वि.) हँसोड़।

चबोल्ली (स्त्री.) बकवास।

चभक (स्त्री.) 1. फोड़े-फुंसी में मवाद के कारण रुक-रुक कर होने वाली पीड़ा, पीड़ा, कष्ट, 2. टीस, बेचैनी; **~ऊठणा** 1. लालायित होना, 2. पीड़ा होना; **~लागणा** फोड़े, फुंसी, घाव आदि में रुक-रुक कर पीड़ा होना।

चभका (पुं.) दे. चभक।

चभोणा (क्रि. स.) 1. नुकीली वस्तु चुभाना या गड़ाना, 2. हल्के से गाड़ना, 3. पनीरी को कीचड़ में लगाना। **चुभाना** (हि.)

चमक (स्त्री.) दे. चिमक।

चमकचूड़ी (स्त्री.) घुँघरुओं वाली पैरों की चाँदी की चूड़ी।

चमकणा (क्रि. अ.) 1. प्रकाशित होना, 2. पशु का बिदकना, 3. प्रकाश के कारण सन्निपात या अन्य रोग के कारण रोगी का पीड़ा से उछलना, (दे. चिमकणा), 4. प्रसिद्धि मिलना; (वि.) चमकीला, चमकने वाला। **चमकना** (हि.)

चमकना (क्रि. अ.) दे. चमकणा।

चमका (पुं.) दे. चिमका।

चमकाना (क्रि. स.) दे. चिमकाणा।

चमकारा (पुं.) शीशे, पानी आदि के प्रकाशि धरातल से प्रतिबिंबित होकर पड़ने वाला प्रकाश, (दे. पळका); **~लागणा** अचानक तेज़ प्रकाश दिखना।

चमकीला (वि.) दे. चमकील्ला।

चमकील्ला (वि.) चमकदार। **चमकीला** (हि.)

चमक्खा (वि.) दे. चोमुखा।

चमगादड़ (पुं.) दे. चकचूँधर।

चमचम (स्त्री.) उज्ज्वल कांति, 2. एक मिठाई विशेष।

चमचमाना (क्रि. अ.) 1. जगमगाना, 2. रुक-रुक कर चमकना।

चमचा (पुं.) बड़ी चम्मच, कड़छी, (दे. डोई[1])।

चमची (स्त्री.) चम्मच, छोटा चमचा।

चमड़ा (पुं.) दे. चाम।

चमड़ी (स्त्री.) खाल; **~तारणा** 1. बहुत पीटना, 2. चाम उतारना, 3. महँगे भाव वस्तु बेचना।

चमत्कार (पुं.) 1. विस्मय, 2. विचित्रता, 3. करामात।

चमन रिसी (पुं.) प्रसिद्ध ऋषि जिनके आश्रमों का संबंध हरियाणा के कई स्थानों से माना जाता है।
च्यवन ऋषि (हि.)

चमरख (पुं.) दे. चमरस।

चमरखा (पुं.) चाम का गोलाकार चक्र (जिससे चर्खे का ताकू गुज़ारा जाता है)।

चमर-चमर (स्त्री.) चलते समय नई जूतियों से उत्पन्न ध्वनि।

चमरवा (वि.) 1. चमार द्वारा निर्मित, 2. चमार जाति का; (स्त्री.) चमार जाति; **~जूत्ती** चमार द्वारा बनाई गई जूती (मशीन द्वारा नहीं)।

चमरवी (वि.) चमार द्वारा बनाई गई (मशीन द्वारा नहीं); (स्त्री.) 1. चमार जाति, 2. चमारिन।

चमरस (पुं., चर्म का विष, जूता काटने के कारण पड़ा घाव; **~तारणा** 1. चमरस वाले स्थान पर चाम फूँक कर बाँधना, 2. चमरस का इलाज़ करना; **~लागणा/होणा** जूती के काटने के कारण छाला पड़ कर फूटना और उसमें चमड़े का विष या रस चढ़ना।

चमाइन (पुं.) गूजरों का एक गोत।

चमार (पुं.) 1. चाम का काम करने वाला व्यक्ति, 2. वह जाति जो चर्म का काम करती है, चमार जाति, (चमारों के मुख्य गोत हैं–जटुआ, कोरी, ढोरी)।

चमारण (स्त्री.) 1. चमार की पत्नी, 2. चमार जाति की महिला।
चमारिन (हि.)

चमार-बढ़ई (पुं.) खाती या बढ़ई का एक गोत या उपजाति।

चमारी (स्त्री.) दे. चमारण।

चमास्सा (पुं.) 1. वर्षा ऋतु, वर्षा-काल, 2. वर्षा ऋतु के चार महीने; **~ऊत्तरणा** वर्षा-काल समाप्त होना; **~लागणा** वर्षा-काल आरम्भ होना; **~होणा** आकाश मेघाच्छन्न होना, बूँदाबाँदी होना।
चतुर्मास (हि.)

चमेटणा (क्रि. स.) चिपकाना।

चमोट्टा (पुं.) 1. चाम का टुकड़ा जिस पर नाई उस्तरा पैना करता है, 2. चमड़े का थैला।

चमोट्ठा (पुं.) लकड़ी के किनारे को फटने से बचाने, उसे प्रहार के लिए तीव्र करने, पकड़ को मज़बूत करने अथवा सौंदर्य आदि बढ़ाने के लिए चाम की पतली पट्टियों या सूत की रस्सियों से विशेष प्रकार से गूँथा गया जाल; **~लाणा** लाठी के किसी भाग पर चाम अथवा रस्सी का जाल लगाना।

चमोल्ला (पुं.) 1. चार कलियों की रागिनी, 2. अश्लील रागिनी, 3. 'चमोल्ला' गाने वाला। **चौबोला** (हि.)

चम्मच (स्त्री.) छोटा चमचा।

चम्मन (वि.) चव्वन की गिनती।
चव्वन (हि.)

चम्हाट (पुं.) जोश, फुर्ती।

चरंद-परंद (पुं.) पशु-पक्षी।

चर (स्त्री.) 1. मोर के चंदे की छाल (जिसका गलपटिया गूँथा जाता है), 2. बाँस आदि लकड़ी की पतली छाल, 3. नाखून के आस-पास की बहुत कोमल खाल, 4. 'चर'-'चर' की ध्वनि, (पुं) गुप्तचर; (क्रि.स.) 'चरणा' क्रिया का आदे. रूप; **~ऊप्पड़णा/पाटणा** 1. बाँस की छाल हटना, 2. नाखून के आस-पास की खाल छिलना।

चरई (स्त्री.) दे. चरी।

चरक (पुं.) वैद्यक के एक आचार्य।

चरकणा (क्रि. अ.) 1. पुराने वस्त्र का कहीं-कहीं से फटना, 2. पतली टट्टी निकलना, 3. टूटते समय या टूटने से पहले 'चर'-'चर' की ध्वनि उत्पन्न होना, (दे. चिरकणा)।

चरख (पुं.) 1. काँटेदार खंभा जिस पर चढ़ कर शिव भक्त अपना शरीर धुनते हैं, 2. वह चक्री जिस पर चढ़ा कर कपड़े की कशीदाकारी आदि की जाती है, 3. कुम्हार का चाक, 4. चरक नाम के ऋषि; **~पै चढणा** आपत्ति में फँसना; **~पै चढाणा** 1. प्रशंसा अथवा चालाकी से किसी को विपत्ति में डालना, 2. कपड़े की सिकुड़न निकालने के लिए उसे चक्री पर चढ़ाना।

चरखड़ा (पुं.) दे. चरखा।

चरखा (पुं.) 1. सूत आदि कातने के काम आने वाला यंत्र, 2. शरीर, 3. रहँट की माल, 4. विश्व-चक्र; **~ठाणा** कातना बंद करना (अमावस्या को चरखा नहीं कातते); **~छेड़णा** चरखा कातना शुरू करना; **~परूँधणा** चरखा चलाना, निरन्तर 24 घंटे चरखा चलाना; **~होणा** 1 अत्यंत दुर्बल होना, 2. अंजर-पंजर ढीले होना।

चरखी (स्त्री.) 1. रस्सी गूँथने या बँटने का एक यंत्र, 2. गन्ना पेरने की चरखी या कोल्हू, 3. कपास ओटने की चरखी, 4. कूएँ की चरखी, घेरनी या चकली।

चरचणा (क्रि. स.) 1. चित्रित करना, 2. शरीर या माथे पर चंदन, भभूत आदि का लेप करना, 3. लेपना—जो पथवारी मैं चरचैगी पीळी तै जनम-जनम होगी सीळी राम (लो. गी.)।

चरचरा (वि.) 1. चटपटा, अधिक मसाले वाला, 2. चरचराहट उत्पन्न करने वाला, जैसे—चरचरा थप्पड़, 3. तेज़ गरम (पानी), 4. चुभने वाला, जैसे— चरचरा बोल।

चरचराट (स्त्री.) चरचरेपन का भाव, (दे. चरचरा)। **चरचराहट** (हि.)

चरचा (स्त्री.) 1. बातचीत, विचार-विनिमय, 2. अफ़वाह; **~चालणा/होणा** 1. गुप्त बात फैलना, 2. बदनामी होना। **चर्चा** (हि.)

चरण (पुं.) 1. पैर, सम्मानित व्यक्ति या देवता आदि के पैर, 2. चरने या भक्षण करने का काम—आज डाँगर कींग्घा नैं चरण गए?; **~धूळ लेणा** चरणों की धूलि लेना; **~लेणा** श्रद्धा प्रकट करने के लिए पैर स्पर्श करना।

चरण चापना (क्रि.) चापलूसी करना।

चरणा (क्रि. स.) 1. पशुओं द्वारा चारा आदि खाना, 2. चट करना, समाप्त करना, 3. बिना चबाए भोजन करना, 4. हर समय खाते रहना।

चरना (हि.)

चरणाबरत (पुं.) 1. चरणोदक, 2. दूध, दही, शक्कर, शहद, गंगाजल आदि का वह मिश्रण जिसमें देवमूर्ति का स्नान कराया गया हो।

चरणामृत (हि.)

चरणामृत (पुं.) दे. चरणाबरत।

चरणी (स्त्री.) गाँव के चारों ओर या किसी एक भाग में पशुओं के चरने के लिए छोड़ी गई भूमि, चरागाह, गोचर-भूमि; (वि.) 1. सभी प्रकार का घास-फूस खा जाने वाला पशु, 2. 'मनचरी' का विलोम।

चरत (पुं.) 'भरत' का छोटा भाई, शत्रुघ्न।

चरती (पुं.) 'व्रती' या व्रत करने वाले का विलोम–बरती सै अक चरती?।

चरना (क्रि. स.) दे. चरणा।

चरनी (स्त्री.) 1. चरागाह, 2. चारा।

चरपरा (वि.) दे. चटपटा।

चरबी (स्त्री.) 1. मांस, 2. मोटापा।

चरमोटा (पुं.) चाकू उस्तरे आदि पर धार लगाने का चाम का टुकड़ा विशेष।

चरवाणा (क्रि. स.) 'चराने' का काम अन्य से करवाना।

चरवाना (क्रि. स.) दे. चरवाणा।

चरवाहा (पुं.) गडरिया।

चरवाही (स्त्री.) दे. बीत।

चरस[1] (पुं.) दे. चिड़स।

चरस[2] (स्त्री.) गाँजे के पेड़ से निकला हुआ एक प्रकाश का गोंद जिसका धुआँ नशे के लिए पीते हैं।

चरसा (पुं.) दे. चिड़स।

चराई (स्त्री.) 1. मासिक, त्रैमासिक या अन्य प्रकार का पारिश्रमिक जो ग्वाले को दिया जाता है, तुल. बीत, 2. चराने का काम, 3. पशु को उत्तम और पौष्टिक आहार देने का भाव–नारड़ा (नारिया, बछड़ा) अर टारड़ा (बोतड़ा, ऊँट का बच्चा) चाळीस दिन की चराई मैं त्यार हो ज्या सै।

चरागाह (पुं.) दे. चरणी।

चराचर (पुं.) 1. जड़ और चेतन, 2. संसार।

चराणा (क्रि. स.) 1. पशु को चारा खिलाना। 2. अधिक भोजन खिलाना। **चराना** (हि.)

चरान (पुं.) दे. चरणी। तुल. चराँट, चरात।

चराना (क्रि. स.) दे. चराणा।

चरावा (पुं.) पशु चराने वाला, ग्वाला।

चरित्तर (पुं.) दे. चलित्तर।

चरित्र (पुं.) दे. चलित्तर।

चरी (स्त्री.) वह ज्वार जो ख़रीफ़ की फ़सल से कुछ पहले पशुओं को चारे के रूप में खिलाने के लिए बोई जाती है।

चरुआ (पुं.) 1. मिट्टी का एक पात्र जो देवताओं पर अन्न चढ़ाने के काम आता है, 2. देवताओं के निमित्त चढ़ाया जाने वाला अन्न या हव्यान्न; **~कमोऊ** चरुआ पात्र, (दे. कमोई); **~चढाणा** देवताओं के निमित्त अन्न, हव्यान्न आदि भेंट करना; **~बोलणा** फल की प्राप्ति के लिए देवताओं पर अन्न आदि चढ़ाने का प्रण लेना। **चरु** (हि.)

चरूदे (पुं.) पशु।

चरैया (पुं.) 1. ग्वाला, 2. एक पक्षी।

चरोणा (क्रि. स.) चोरी करना। **चुराना** (हि.)

चर्चा (स्त्री.) 1. ज़िक्र, 2. वार्ता।

चलकणा (क्रि. अ.) दे. चिलकणा।

चलगत (स्त्री.) चाल।

चलता (वि.) दे. चालता।

चलन (पुं.) 1. रिवाज़, 2. चलने का भाव।

चलना (क्रि. अ.) दे. चालणा।

चलवाणा (क्रि. स.) 'चालणा' क्रिया का प्रे. रूप। **चलवाना** (हि.)

चलवाना (क्रि. स.) दे. चलवाणा।

चलाऊ (वि.) 1. काम चलाऊ, 2. अधिक समय तक चलने वाला, 3. तेज़ चलने वाला (बैल), 4. बहकाने या मूर्ख बनाने में कुशल।

चलाक (वि.) चतुर। **चालाक** (हि.)

चलाण (पुं.) क़ानून तोड़ने के अपराध में अदालत बुलाने का काग़ज।
चालान (हि.)

चलाणा (क्रि. स.) 1. धकेलना, चलने के लिए प्रेरित करना, 2. मूर्ख बनाना, 3. आरंभ करना—हे! यो गीत तूँ चलाइये, 4. चालू रखना, 5. तीर आदि चलाना, 6. धोखे से प्रयोग में लाना—खोट्टी चवन्नी चलादी। **चलाना** (हि.)

चलाना (क्रि. स.) दे. चलाणा।

चलावणा (क्रि. स.) दे. चलाणा।

चलावा (वि.) 1. बहकाने वाला, 2. चालाक; (पुं.) दे. चाल्ला।

चलित्तर (पुं.) 1. चाल-चलन, 2. धूर्तता-पूर्ण चाल (व्यंग्य में); **~दिखाणा** 1. बहानेबाज़ी करना, 2. चरित्र उजागर करना; **~हाई** 1. बहानेबाज़ स्त्री, 2. विपरीत आचरण वाली; **~हाया** बहानेबाज़, नाटकबाज़। **चरित्र** (हि.)

चळु (स्त्री.) 1. कुल्ला, भोजन के बाद मुँह में पानी डालने की क्रिया, 2. शौच से निवृत्त होने के बाद कुल्ला करने की क्रिया, 3. अंजलि भर, 4. अंजलि; **~करणा** 1. चुल्लू करना, कुल्ला करना, 2. भोजन समाप्त करना, 3. पानी पीने के लिए अंजलि बनाना; **~भरणा** 1. चुल्लू भर पानी लेना, 2. चुल्लू में पानी लेकर संकल्प लेन; **~भर पाणी मैं डूबणा** शर्म के मारे मरना; **~लेणा** 1. भोजन के बाद चुल्लू करना, 2. भोजन समाप्त करना। **चुल्लू** (हि.)

चलेमान (वि.) चलायमान।

चवन्नी (स्त्री.) चार आने का सिक्का, पच्चीस पैसे का सिक्का।

चवा (पुं.) भूमि की वह परत जहाँ पानी का स्रोत मिलता है, (दे. चोवा)।

चवाणा (क्रि. स.) 1. चवा निकालना, चवे तक खोदते जाना, 2. गाय-भैंस आदि का दूध निकालना, 3. झकाना, थकाना।
चवाना (हि.)

चवाळी (वि.) चालीस और चार की गिनती।
चवालीस (हि.)

चश्मा (पुं.) 1. ऐनक, 2. पानी का स्रोत।

चसक (स्त्री.) 1. चभक, घाव में रुक-रुक कर होने वाला दर्द, 2. चाट, आदत, लत।

चसकणा (क्रि. अ.) 1. चभकना, दर्द उठना, 2. पुरानी शत्रुता बार-बार याद आना, 3. खटकना। **चसकना** (हि.)

चसकना (क्रि. अ.) दे. चसकणा।

चसका (पुं.) 1. आदत, 2. लत।

चसणा (क्रि. अ.) 1. प्रकाशित होना, प्रज्वलित होना—उनकै घराँ रात्तूँ दीवा चस्या, कोए बिमार दीक्खै सै, 2. जलना—दिवासलाई कोन्या चसती भीजगी दीक्खै, 3. चमकना; (वि.) जो शीघ्र प्रज्वलित या प्रकाशित हो; **दीवा सा~**अधिक प्रसन्नता मिलना।
चसना (हि.)

चसवाणा (क्रि. स.) 'चासणा' क्रिया का प्रे. रूप। **चसवाना** (हि.)

चहक (स्त्री.) 1. रौनक, 2. आभा, चमक—बिमारी पाच्छै छोहरे के सरीर तैं चहक चाल्ली गई, 3. चिड़ियों की चहचहाट।

चहकणा (क्रि. अ.) 1. चहचहाना, 2. कांतियुक्त होना। **चहकना** (हि.)

चहकना (क्रि. अ.) दे. चहकणा।

चहचहाना (कि अ.) दे. चहकणा।

चहल (पुं.) दे. चहली।

चहल-पहल (स्त्री.) रौनक, गहमागहमी।

चहली (स्त्री.) 1. छोटा गड्ढा–चण्याँ (चने) नैं चहलीभर मींह भी फालतू सै, 2. पशु के खुर की काट से बना गड्ढा; **~भर मींह** लगभग 2-3 अंगुल वर्षा।

चहेत (वि.) 1. इच्छित, 2. प्यारा या प्यारी; (स्त्री.) प्रेमिका।

चहेती (वि.) जिसे चाहा जाए; (स्त्री.) प्रेमिका।

चहोर (पुं.) 1. गहरा हरा रंग, 2. हरा चारा–मैं मेंहनत करकै जंगल तैं चहोर ल्याई-ओराँ के डाँगर चरगे; (वि.) 1. हरी-भरी–एक मींह बरस्या अक सारी खेत्ती चहोर हुई, 2. गहरा रंग–उसकी आँख लाल चहोर हो र्ही सैं।

चाँकना (क्रि.) छीलना, घड़ना।

चाँचड़ा/चाँचणा (पुं.) अन्न निकालने के बाद बचा ज्वार का भुट्टा या सिरटा–रुखाळ के बिना ज्वार के खेत के खेत नैं चाँचड़े करगे।

चाँची (स्त्री.) दुल्हन को उढ़ाई जाने वाली लाल चादर।

चाँटणा (क्रि. स.) दे. चाटणा।

चाँडणा (क्रि. स.) 1. चाँटा मारना, 2. (दे. चाटणा)।

चाँडर (स्त्री.) खरोंच।

चाँणक (पुं.) राजनीति का एक पंडित; (वि.) नीतिनिपुण। **चाणक्य** (हि.)

चाँद (पुं.) 1. चंद्रमा, 2. बच्चों के गले में बाँधा जाने वाला चंद्राकार आभूषण, 3. पुत्र; (स्त्री.) खोपड़ी, सिर का मुख्य भाग; **~कढवाणा** 1. सिर मुँडवाना, 2. सिर के बीच का भाग मुँडवाना, काकपक्षी मुंडन कराना; **~कला पै चढणा** यौवन पर आना; **~का टूक** बहुत सुंदर; **~सा मुँह** सुंदर मुख।

चाँदड़ा (पुं.) 1. चंद्रमा, 2. पुत्र (भावावेश में प्रयुक्त)।

चाँदड़ी (वि.) ईर्ष्यालु।

चाँदण (पुं.) शुक्ल पक्ष।

चाँदणा (पुं.) 1. प्रकाश, 2. शुक्ल पक्ष; **~लागणा** शुक्ल पक्ष शुरू होना।

चाँदणा (पुं.) 1. प्रकाश, 2. ज्ञान का प्रकाश–सब आदमियाँ के मन मैं चाँदणा नाँ होत्ता; **~लीकड़णा/होणा** 1. प्रभात होना, 2. होश ठिकाने आना।
चाँदना (हि.)

चाँदणी (स्त्री.) 1. चाँदनी, 2. बिछाने की एक प्रकार की चद्दर।

चाँद-तारा (पुं.) 1. एक प्रकार का घाघरा, 2. एक प्रकार की ओढ़नी, 3. लोहे के सितारे जो ओढ़नी, चोली आदि पर लगाए जाते हैं।

चाँदना (पुं.) दे. चाँदणा।

चाँदनी (स्त्री.) दे. चाँदणी।

चाँदमारी (स्त्री.) निशाना बाँधने के लिए गोली चलाने का अभ्यास।

चाँदी (स्त्री.) दे. चाँद्दी।

चाँद्दा (पुं.) 1. कोना, किनारा, 2. बिटोड़े (उपलों की व्यवस्थित, लंबी, चौड़ी और ऊँची ढेरी) का नीचे का कुछ भाग, बिटोड़े का किनारा; **~(–दे) धरणा** 1. बिटोड़े के आधे भाग पर उपले रखकर उसे पूरी ऊँचाई तक चिनना, 2. बिटोड़ा पूरा होने पर उसके मध्य तथा दोनों किनारों पर एक-एक उपला रखना।

चाँद्दी (स्त्री.) 1. चाँदी नामक धातु, 2. धन; **~कमाणा/कूटणा** धन कमाना।
चाँदी (हि.)

चा[1] (स्त्री.) 1. चाय की पत्ती, 2. एक पेय पदार्थ। **चाय** (हि.)

चा[2] (पुं.) शौक। **चाव** (हि.)

चाइला (वि.) उमंगित।

चाक[1] (पुं.) 1. कुम्हार की चक्री, 2. कूएँ पर लगी चक्री, 3. चीरा, काटा, 4. नीम चक, 5. कोल्हू, 6. कोल्हू का वह स्थान जहाँ गुड़ ठंडा किया जाता है, 7. अशुभ से बचने के लिए शरीर के किसी भाग पर कालिख से लगाया गया काटे का निशान; (क्रि. स.) 'चाकणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पूजणा** विवाह के समय महिलाओं द्वारा कुम्हार के चाक की पूजा करना; **~लाणा** काटे का चिह्न लगाना, काटना।

चाक[2] (पुं.) खड़िया मिट्टी से बनी बत्ती जो मुख्यतया श्यामपट पर लिखने के काम आती है।

चाकड़ा (पुं.) 1. कुम्हार का चाक, 2. कूएँ की चक्री। **चाक** (हि.)

चाकणा (क्रि. स.) 1. काटना, 2. चीरना, 3. काटे का चिह्न लगाना, 4. सीमा या पहचान का चिह्न लगाना। **चाकना** (हि.)

चाकरी (स्त्री.) छोटी, तुच्छ या हीन नौकरी–उत्तम खेत्ती मध्यम बाण, निखद चाकरी भीख निदान।

चाकू (पुं.) दे. चक्कू।

चाक्कर (पुं.) चाकरी करने वाला व्यक्ति, दासानुदास। **चाकर** (हि.)

चाक्की (स्त्री.) 1. चक्की, पत्थर के भारी दो पाटों का यंत्र [जिसके ऊपर के पाट में एक ओर हत्था या हथेली होती है जिसे पकड़ कर घुमाया जाता है तथा बीच में तीन-चार अंगुल का छेद होता है जिसमें 'गळा' (गल्ला, अन्न) डाला जाता है, नीचे का पाट बीच की 'कीली' से जुड़ा होता है, पाटों के चारों ओर मिट्टी का 'गरंड' होता है जिसमें आटा गिर-गिर कर इकट्ठा होता है, जिसे बाद में छाँटने (कपड़े का छोटा टुकड़ा) से हूँस (पोंछ) कर निकाल लिया जाता है, चक्की को भारी करने या अन्न के मोटा, बारीक पीसने के अनुकूल करने के लिए भी नीचे व्यवस्था होती है, यह पायों (पावा) पर खड़ी रहती है और पीसने वाली पीढ़े पर बैठ कर गाती, गुनगुनाती पीसती है, कई बार दो महिलाएँ एक चक्की को पीसती हैं], 2. चूना पीसने की चक्की; **उठाऊ~** 1. वह चक्की जो एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर रखी जा सके, 2. चकला, छोटी चक्की; **~~होणा** जीवन में अस्थिरता होना; **~(–कियाँ) का बखत** प्रभात- काल, भोर-वेला, पहर घड़ी का तड़का, सूर्य निकलने से दो घंटे पहले तक का समय;**~चकला ठाणा** गाँव छोड़ कर चले जाना; **~चलाणा** 1. दासता स्वीकार करना, 2. हार मानना, 3. जेल की सज़ा काटना, 4. भ्रमित करना, चक्कर में डालना; **~चाल्लण का बखत** दे. चाकियाँ का बखत; **~चूल्हा करणा** 1. घर का काम करना, 2. सेवा करना, 3. खाना बनाना; **~छूटणा** घर के काम-धंधे से फुरसत पाना; **~छोडणा** पीसना बंद करना (अमावस्या, चेचक आदि की बीमारी तथा श्राद्ध के दिनों में चक्की नहीं पीसते); **~झोहणा**

1. चक्की पीसना शुरू करना, 2. लंबी कथा शुरू करना; **~ठाणा** 1. चक्की पीसना बंद करना, 2. चक्की से पिसा आटा निकालना; **~मिलणा** जेल में सख़्त से सख़्त सज़ा मिलना; **~राहणा** पाटों का घर्षण बनाए रखने के लिए लोहे की नुकीली हथौड़ियों से पाटों को चाक कर उनमें छोटे-छोटे गड्ढे करना। **चक्की** (हि.)

चाक्की राहवा (पुं.) चक्की राहने या चाटने वाला—गंगाजी के राह मैं चाक्की राहवा का के काम?

चाख (पुं.) दे. चाक[1]।

चाखड़ा (पुं.) 1. बिलौनी के मुख पर ढका जाने वाला काष्ट का चक्राकार ढक्कन (जिसके बीच में रई डालने के लिए छिद्र होता है), 2. कूएँ की बड़ी चक्री।

चाखणा (क्रि. स.) स्वाद चखना। **चखना** (हि.)

चाच्चा (पुं.) तुल. काक्का; **~की ना ताऊ की ना** कुटुंब परिवार से असंबंधित; **~ताऊ** सगे संबंधी; **~~मैं** एक ही परिवार या कुटुंब से संबंधित। **चाचा** (हि.)

चाच्ची (स्त्री.) काकी, चाचा की पत्नी। **चाची** (हि.)

चाट (स्त्री.) 1. तेज़ मिर्च-मसाले युक्त फल आदि का मिश्रण, 2. वह चारा, दाना या आटा आदि जो पशु को दूहने से पहले या दूहते समय डाला जाता है, 3. चसका, लालसा, इच्छा; (पुं.) योद्धा, भट; **~पड़णा** 1. आदत पड़ना, 2. बुरी लत लगना; **~लागणा** इच्छा पूर्ति के लिए विवश होना।

चाटणा (क्रि. स.) 1. (खेती के) औज़ार की धार पैनी करना, 2. (चक्की) राहना, 3. चाटना, जिह्वा से चाटना, 4. चट कर जाना। **चाटना** (हि.)

चाटू (पुं.) एक पात्र।

चाणचक (क्रि. वि.) अचानक।

चातरी (स्त्री.) चतुराई। **चातुरी** (हि.)

चात्तर (वि.) 1. हुनरमंद, 2. चालाक। **चतुर** (हि.)

चात्तरणा (क्रि. अ.) (प्रियजन या मेहमान को देखकर) बनावटी व्यवहार करना—क्यूँ घणी चात्तर रही सै धरती पै पाँह टेक कै चाल।

चादर (स्त्री.) दे. चाद्दर।

चादरा (पुं.) बड़ी चद्दर।

चाद्दर (पुं.) 1. चद्दर, 2. ब्राह्मण तथा वैश्य महिलाओं द्वारा साड़ी पर ओढ़े जाने वाली चद्दर; **~ताण कै सोणा** बेफ़िक्री से सोना। **चादर** (हि.)

चानणी (स्त्री.) चाँदनी।

चान्नस (पुं.) 1. चेटक, 2. भूत-प्रेत; (क्रि. वि.) 1. अचानक, 2. संयोग।

चापर (वि.) वाचाल।

चापलूस (वि.) खुशामदी।

चापलूसी (स्त्री.) खुशामद।

चाप्पण (पुं.) लुहार का उपकरण जिससे वह वस्तुओं को 90° के कोण पर मोड़ता है।

चाप्परणा (क्रि. अ.) 1. ज़बरदस्ती अधिकार जमाना या जताना, कब्ज़ा करना, 2. ज़िद करना।

चाब (पुं.) चबीणा।

चाबणा (क्रि. स.) 1. दाँतों से पीसना या खाना, दाँतों से काटना, 2. दाँत पीसना। **चबाना** (हि.)

चाबना (क्रि. स.) दे. चाबणा।

चाबी (स्त्री.) दे. चाब्बी।

चाबुक (पुं.) कोड़ा।

चाब्बी (स्त्री.) दे. ताळी। **चाभी** (हि.)

चाम (पुं.) 1. चमड़ा, चर्म, खाल, 2. चमड़ी; **~कमाणा** 1. चमड़ा रंगना, 2. पशु का चमड़ा उतारना।

चामचिड़ी (स्त्री.) दे. स्यामचिड़ी।

चामचिरड़ (स्त्री.) दे. चकचूँधर।

चामर (वि.) भूरे रंग की (गाय)।

चामरा (वि.) भूरे बालों वाला।

चामुंडा (स्त्री.) दुर्गा देवी।

चार (वि.) दे. च्यार।

चारखाना (पुं.) चौखूँटी धारियों वाला वस्त्र।

चारण (पुं.) 1. भाट, 2. झूठी प्रशंसा करने वाला व्यक्ति।

चारदीवारी (स्त्री.) दे. चुभीत्ता।

चारपाई (स्त्री.) दे. खाट।

चारा[1] (पुं.) दे. न्यार।

चारा[2] (पुं.) उपाय, तदबीर।

चारु (वि.) 1. हरे चारे को मन से खाने वाला (पशु), 2. 'मनचरी' का विलोम।

चारुआ (पुं.) 1. दे. घोड़ता 2. दे. टट्टू।

चार्‌यूँ (वि.) चार के चार, चारों; **~खान्ने खराब होणा** हर प्रकार से बुरा होना; **~पास्सयाँ** चारों ओर से, चारों दिशाओं से; ~ **~चित्त होणा** बुरी तरह हारना। **चारों** (हि.)

चाल (स्त्री.) 1. चलने की क्रिया, 2. चरित्र, व्यवहार, 3. चालाकी, 4. खेल का दाँव, 5. रीति, रिवाज़, प्रथा; (क्रि. अ.) 'चालणा' क्रिया का आदे. रूप; **~काढणा** 1. नई प्रथा चलाना, 2. हिलाऊ या नए बैल या बछड़े को पहली बार हल में जोतकर उसे चलना सिखाना; **~कुचाल होणा** ठीक व्यवहार न रखना, ग़लत मार्ग पर चलना; **~ढाल** 1. चाल-चलन, 2. व्यवहार; **~दिखाणा** 1. चले जाने का आदेश देना–जा-जा अपणी चाल दिखा, 2. आचार-व्यवहार का प्रदर्शन करना; **देखणा** 1. बैल को खरीदने से पूर्व उसे हल में जोत कर क्षमता की परख करना, तुल. वाह[1] लेणा, 2. चरित्र की परख करना।

चालणा (क्रि. अ.) 1. बाट चलना, 2. काम बनना या चलना, 3. खेल की चाल चलना; (वि.) 1. तेज़ चलने वाला (बैल), 2. कुशाग्र बुद्धि, 3. अधिक दिनों तक टिकाऊ रहने वाली वस्तु। **चलना** (हि.)

चालता (क्रि. वि.) चलता हुआ, चलता-चलता, (वि.) चालू; **~काम करणा** मन लगाकर काम नहीं करना, बेगार काटना; **~पुरजा** चालाक; **~मींह** अल्प समय तक होने वाली वर्षा, चलते बादलों की वर्षा।

चालबाज़ (वि.) चालाक।

चालसी (क्रि.) चलती है (विरल प्रयोग)

चाला (पुं.) दे. चाल्ला।

चाळा (पुं.) 1. विचित्र चलन का कार्य, अद्‌भुत व्यवहार, 2. झमेला, 3. अद्‌भुत व्यक्ति–आदमी के चाला सै; **~करणा** अद्‌भुत, अनोखा या असंभावित कार्य करना; **~पाड़णा** विचित्र या असंभावित कार्य कर बैठना; **~रोपणा** 1. झमेला खड़ा करना, 2. विचित्र काम करना; **~होणा** अद्‌भुत घटना घटित होना।

चालाक (वि.) दे. चलाक।

चालाकी (स्त्री.) चतुराई।

चाळी[1] (स्त्री.) 1. अद्भुत व्यवहार की स्त्री, 2. स्त्री जाति के लिए प्रयुक्त एक अपशब्द।

चाळी[2] (वि.) दे. चाळीस।

चाळीस (वि.) चालीस की संख्या; **~दिन का चिल्ला** शीतकाल का चालीस दिन का समय। **चालीस** (हि.)

चाळीसा[1] (पुं.) चालीस का समूह; **~काळ** विक्रम संवत् 1840 का अकाल जिसमें हरियाणे में त्राहि-त्राहि मच गई थी।

चाळीसा (पुं.) चालीस गाँवों का भाईचारा या खाप।

चाल्ला (पुं.) द्विरागमन, वधू का विवाह के बाद पुनः पति के घर आगमन, तुल. मुकलावा। **चाला** (हि.)

चाल्लू (वि.) 1. चलने वाला, 2. वह काम जो मन लगा कर नहीं किया गया हो. 3. काजू-भाजू, कमज़ोर, 4. रवाँ, 5. चलता पुर्ज़ा, 6. चरित्रहीन।

चाव (पुं.) दे. चा[2]।

चावल (पुं.) दे. चावळ।

चावळ (पुं.) 1. एक अन्न, 2. कटहली के पीले फूल, 3. चावलों जैसे दाने; **~आणा/भेजणा** विवाह का निमंत्रण आना या भेजना; **~फैंकणा/मारणा** विवाह के समय बारौठी के अवसर पर दुल्हन द्वारा दूल्हे के स्वागतार्थ अपनी सहेलियों में छिपकर उसके मौर पर चावल फेंकना (यह प्रथा वरमाला के स्थान पर होती है और वर की पसंदगी का द्योतक है); **~भर** 1. अल्प मात्रा में, 2. एक रत्ती का आठवाँ भाग; **~से दाँत** सफ़ेद तथा छोटे दाँत, सुंदर दाँत। **चावल** (हि.)

चावळी (स्त्री.) दाँतों की पंक्ति, दंतावलि।

चाशनी (स्त्री.) दे. चासणी।

चास (स्त्री.) 1. आदत, लत, 2. चाशनी, 3. लगन, लगाव; **~पड़णा/लागणा/होणा** 1. लत लगना, 2. लगन होना।

चासड़ू (वि.) 1. जिसे किसी चीज़ की लत या आदत हो गई हो, 2. इच्छुक।

चासणा (क्रि. स.) 1. प्रकाशित करना, 2. जलाना।

चासणी (स्त्री.)चीनी का पकाया गया गाढ़ा रस। **चाशनी** (हि.)

चाह (स्त्री.) दे. चाहना।

चाहणा (क्रि. स.) इच्छा होना। **चाहना** (हि.)

चाहत (स्त्री.) 1. इच्छा, 2. आवश्यकता।

चाहना (स्त्री.) आवश्यकता, इच्छा--इसे मरद की चाहना कोन्या जो बखत पै डोब दे; (क्रि. स.) दे. चाहणा।

चाहया (पुं.) चक्की के नीचे का पाट; (स्त्री.) सिंचाई की भूमि; (वि.) चाहा हुआ, इच्छित; (क्रि. स.) 'चाहणा' क्रिया का भू. का. रूप।

चाहल (पुं.) एक जाट गोत। चहल।

चाहला (वि.) (पत्नी की) अधिक इच्छा रखने वाला।

चाही (स्त्री.) सींची जाने वाली भूमि; (वि.) इच्छित; (क्रि. स.) 'चाहणा' क्रिया का भू.का. स्त्रीलिंग रूप।

चाहे (अव्य.) 1. यदि, 2. विकल्प से, 3. जी चाहे तो, 4. भले ही।

चाह्ड (स्त्री.) लत।

चिंआँ (स्त्री.) 1. चिरमिटी, 2. कीकर के बीज की गुठली, 3. एक तोल; (वि.) क्षुद्र, तुच्छ; **~मान/सी** छोटी-सी, आकार में छोटी; **~मींआँ** 1. छोटा-सा, 2. नगण्य।

चिंकारा (पुं.) हिरन की एक नसल। दे. कलपूँछी।

चिंगरणा (क्रि. अ.) 1. पशु का बिदकना, 2. प्रजनन के बाद पशु द्वारा अपने बच्चे के पास ना फटकने देना, 3. ज़िद करना, 4. रो-रो कर किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए हठ करना; (वि.) वह पशु जो चिंगरे। **चिंगरना** (हि.)

चिंगराणा (क्रि.) 1. पशु को बिदकाना। दे. बिधकाणा 2. क्रोधित करना। दे. चिंगरणा।

चिंगार (पुं.) 1. चिनगारी, 2. दहकता हुआ चिंगारा; (वि.) क्रोधी; **~उगलणा** 1. खरी-खोटी कहना, 2. बहुत क्रोधित होना।

चिंगारी (स्त्री.) 1. अग्नि, 2. दहकता उपला।

चिंघवा (स्त्री.) दे. चिणघवा।

चिंघाड़ (स्त्री.) 1. हाथी की आवाज़, 2. ज़ोर-ज़ोर से चीखने या रोने की क्रिया, 3. आर्तनाद।

चिंडाळ (पुं.) दे. चंडाळ; **~बाळ** वह काल्पनिक बाल जो मकर संक्रांति के दिन स्नान के समय भिगोया जाता है; **~~भेणा** संक्रांति (मकर) के दिन स्नान करना। **चांडाल** (हि.)

चिंडाळणी (स्त्री.) दे. चंडाळी। **चांडाली** (हि.)

चिंदी (स्त्री.) कपड़े का छोटा टुकड़ा।

चिंहाणी (स्त्री.) श्मशान भूमि।

चिक[1] (स्त्री.) बाँस या सरकंडे आदि का बना पर्दा।

चिक[2] (स्त्री.) सोने की चौकोर पत्तियों की माला विशेष।

चिक-चिक (स्त्री.) 1. व्यर्थ का झगड़ा, 2. शोर।

चिकट (वि.) 1. चिकना और मैल से गंदा, 2. (दे. चिकटणा)।

चिकटणा (क्रि. अ.) तेल या गंदगी के कारण बाल आदि का चिपकना, चिपकना; (वि.) वह जो चिकटे। **चिकटना** (हि.)

चिकटना (क्रि. अ.) दे. चिकटणा।

चिकणा (वि.) दे. चीकणा।

चिकणाई (स्त्री.) 1. चिकनापन, 2. कोमलता। **चिकनाई** (हि.)

चिकणाट (स्त्री.) चिकनापन। **चिकनाहट** (हि.)

चिकणाणा (क्रि. स.) चिकना करना; (क्रि. अ.) चिकना होना। **चिकनाना** (हि.)

चिकना (वि.) दे. चीकणा।

चिकनाई (स्त्री.) दे. चिकणाई।

चिकनाहट (स्त्री.) दे. चिकणाट।

चिकराँडणा (क्रि. स.) 1. कीचड़ करना, गीली जगह पर बार-बार चक्कर काटना, 2. कुचलना, पददलित करना, 3. एक बात को बार-बार अनेक रूप से कहते रहना।

चिकराणा (क्रि.) दे. चिडाणा।

चिकळणा (क्रि. स.) 1. किसी वस्तु को दाढ़ों से कुचलना, 2. चीथना, कुचलना—चीकला पाँह (पैर) कै तळै चिकला ग्या, 3. कपड़े को दाँतों तले दबा कर चबाना, 4. किसी बात को अनेक बार कहना। **चिकलना** (हि.)

चिकाणी (स्त्री.) निशानी।

चिकान्ह (पुं.) चिह्न, निशान।

चिचड़ी (स्त्री.) दे. चीचड़ी।

चिचणा (क्रि. अ.) तर्क-वितर्क करना।

चिटली (स्त्री.) कनिष्ठा अंगुली, छोटी या कानी अंगुली; **~आँगळी** कनिष्ठा अँगुली; **~पै नाँ मूतणा** 1. आज्ञा पालन न करना, 2. छोटी से छोटी सहायता न करना।

चिट्टा (पुं.) गूदा (वि.) सफेद।

चिट्ठा (पुं.) 1. हिसाब-किताब की बही, 2. मज़दूर को बाँटा जाने वाला वेतन, 3. गुप्त भेद, 4. किसी से संबंधित व्यक्तिगत विवरण, 5. लंबी चिट्ठी, 6. लिखित भविष्यवाणी, 7. लिखित प्रमाण; **~खोह्लणा** 1. भेद बताना, 2. बदनाम करना; **~देणा** 1. भविष्य वाणी करना, 2. दान करना, 3. रुपया वसूली का लिखित तकाज़ा भेजना।

चिट्ठी (स्त्री.) 1. डाक-पत्र, 2. विवाह के लग्न से पूर्व नाई द्वारा भेजी जाने वाली विवाह तिथि की सूचना-पत्रिका; **काच्ची**~गुप्त भेद; **~पतरी** पत्र, ख़त; **~फिरणा** 1. क्षेत्र पर पड़ी आपत्ति की सूचना का प्रचार होना, 2. प्रसिद्धि होना; **~लिखवाणा** विवाह का लग्न लिखने से पूर्व की चिट्ठी लिखवाना।

चिड़ (स्त्री.) 1. चिढ़ने का भाव, चिढ़न, खीझ, 2. ज़िद, हठ, 3. चिड़िया की आवाज़; **~कढाणा** 1. चिढ़ाना, 2. जिह्वा बाहर निकाल कर या अन्य अंग संकेत से चिढ़ाना; **~काढणा** ऐसा शब्द या संकेत पकड़ना जिसे सुनते ही कोई चिढ़े, उपनाम रखना; **~पाकड़णा** ज़िद पकड़ना।

चिढ़ (हि.)

चिड़कला (पुं.) 1. चिड़िया का शावक, 2. सदा चिड़-चिड़ करने वाला व्यक्ति।

चिड़चिड़ा (वि.) चिड़चिड़े स्वभाव का।

चिड़चिड़ाणा (क्रि. अ.) 1. छोटी-छोटी बात पर नाराज़ होना, 2. बड़बड़ाना।

चिड़चिड़ाना (हि.)

चिड़चिड़ाना (क्रि. अ.) दे. चिड़चिड़ाणा।

चिड़णा (क्रि. अ.) खिजना।

चिढ़ना (हि.)

चिड़पिड़ा (वि.) लेसदार, चिपचिपा; 2. लालची, 3. रिश्वतखोर।

चिड़स (पुं.) चरसा, चमड़े का मोट।

चिड़सिया (पुं.) कूआँ वाहते समय कूएँ की मुँडेर पर खड़ा होकर चरसे के पानी को पैड़छे या नाली की ओर खाली करने वाला व्यक्ति, चरसा या चड़स उठाने या ढोने वाला, तुल. बारिया।

चिड़ा (पुं.) 1. नर चिड़िया, 2. नर पक्षी; (वि.) कामुक; **~चाँचड़ा/चेंचड़ा** पक्षी आदि।

चिड़िया (स्त्री.) चिड़े की मादा; **~की तिस** हर समय तृषित रहना; **~फँसाणा** फंदे में फँसाना, शिकार पकड़ना; **~(-याँ) मैं डला फैंकणा** बहुत शांति होना; **~रैन बसेरा** अस्थायी निवास; **~सा** क्षुद्र, तुच्छ; **~सिर पै बैठणा** अपशकुन होना।

चिड़ियाख़ाना (पुं.) दे. चिड़ियाखान्ना।

चिड़ियाखान्ना (पुं.) 1. चिड़ियाघर, 2. अधिक शोर वाला स्थान।

चिड़ी (स्त्री.) 1. चिड़िया, 2. पक्षी; (क्रि. अ.) 'चिड़णा' क्रिया का भू. का., एक व. स्त्री लि. रूप; **~का बास नाँ होणा** सुनसान होना, दूर-दूर तक कोई दिखाई न देना।

चिड़ीमार (पुं) शिकारी, चिड़ियों का शिकार करने वाला, बहेलिया।

चिड़ी लड़ावा (वि.) 1. झगड़ा कराने में कुशल, 2. नारदी विद्या (झगड़ाने की) जानने वाला।

चिड़ोकड़ी (वि.) 1. लड़ाका, 2. ईर्ष्यालु, 3. ज़ल्दी चिढ़ने वाली।

चिड़ोकली (वि.) दे. चिड़ोकड़ी।

चिणघवा (स्त्री.) छिन्नमूत्र का रोग, रुक-रुक कर अल्प मात्रा में मूत्र आने का रोग; **~होणा** 1. 'चिणघवा' रोग से पीड़ित होना, 2. एक स्थान पर टिक कर न बैठना।

चिणणा (क्रि. स.) 1. चिनाई करना, 2. एक-दूसरे पर क्रम से रखना। **चिनना** (हि.)

चिणाई (स्त्री.) चिनने का कार्य; (क्रि.स.) 'चिणणा' क्रिया का भू.का., स्त्रीलिं. रूप। **चिनाई** (हि.)

चिणाईगीर (पुं.) चिनाई का काम करने वाला, राजगीर, राज। **चिनाईगीर** (हि.)

चित/चित्त (पुं.) 1. मन, ध्यान, 2. चेतना, ज्ञान, 3. पीठ के बल लेटने की क्रिया, सीधा लेटने की क्रिया, 4. कुश्ती के समय प्रतिद्वंद्वी की पीठ भूमि से छुआने का भाव, 5. खेल के पाँसे का मुँह ऊपर रहने या सीधा पड़ने की स्थिति, 6. 'पट' का विलोम; **~आणा** 1. हारना, 2. पाँसे का सीधा पड़ना, 3. हानि की स्थिति में रहना; **~उतरणा** 1. दु:खी दिखाई पड़ना, 2. आभाहीन होना; **~करणा** 1. कुश्ती में हराना, 2. पीठ के बल लिटाना, 2. किसी चीज़ को पलटना, 4. ध्यान देना; **~ठिकाणै नाँ होणा** विक्षुब्ध अवस्था में होना; **~तैं उतरणा** 1. ध्यान से उतरना, 2. सम्मान का भाव कम होना, 3. मन भरना; **~होणा** 1. कुश्ती में हारना, हारना, 2. मन लगना, 3. चेतन होना। **चित्त** (हि.)

चितकबरा (वि.) 1. कबरा, जिसके शरीर पर चितके हों, 2. रंग-बिरंगा, (पशु)।

चितका (पुं.) 1. शरीर पर पड़ा सफ़ेद या अन्य रंग का दाग़, चिह्न, 2. धब्बा।

चितकोडिया (पुं.) छोटे चितकों वाला साँप।

चितचाही (स्त्री.) मनचाही।

चितरणा (क्रि.) चित्त लगाना। उदा.–सावित्री और अनसूइया भक्ति में चितरी थी।

चितराम (स्त्री.) आभूषणों पर की जाने वाली चित्रकारी।

चितरी (वि.) चतुर।

चितवाणा (क्रि. स.) 1. चित्रित करवाना, भित्ति चित्र बनवाना, 2. विवाह के समय मुँह या हथेली पर हल्दी, मेंहदी आदि से शुभसूचक चिह्न बनवाना, 3. गुदवाना, 4. याद दिलाना, 5. चित करने में सहायता देना। **चितवाना** (हि.)

चिता (स्त्री.) 1. मुर्दे को जलाने के लिए लकड़ी, उपलों आदि से चिना गया ढेर, 2. चिंता; (क्रि. स.) 'चिताणा' क्रिया का आदे. रूप; **~देणा** दाह संस्कार करना।

चिताई (स्त्री.) चित्रकारी का काम।

चिताणा (क्रि. स.) 1. लंबायमान करना, लिटाना, 2. हराना, पीठ को भूमि पर टिकाना, 3. सचेत करना, 4. दाह-संस्कार करना।

चितेरा (पुं.) दे. चतेरा।

चित्तड़ (स्त्री.) शरावती नदी।

चित्तर (पुं.) तसवीर। **चित्र** (हि.)

चित्तौड़ (पुं.) उदयपुर के महाराणाओं की राजधानी।

चित्र (पुं.) दे. चित्तर।

चित्रकार (पुं.) चित्र बनाने वाला, चित्रकारी करने वाला।

चित्रकूट (पुं.) वह स्थान जहाँ बनवास के समय राम और सीता ने बहुत समय तक निवास किया था।

चित्रलेखा (स्त्री.) 1. चित्र बनाने की कूँची, 2. बाणासुर की कन्या।

चित्रसाला (स्त्री.) विलास महल। वह भवन जिसमें नवविवाहित दंपति को प्रथम मिलन के लिए भेजा जाता है।

चित्रा (पुं.) सत्ताईस नक्षत्रों में से एक।

चिथड़ा (पुं.) दे. चीथड़ा।

चिथणा (क्रि. अ.) 1. कुचला जाना, 2. अधिक भार के नीचे दबना। **चिथना** (हि.)

चिथवाणा (क्रि. स.) कुचलवाना। **चिथवाना** (हि.)

चिनगारी (स्त्री.) दे. चिंगारी।

चिनमण (स्त्री.) बूँदा-बाँदी।

चिनारणा (क्रि. स.) 1. क्रम से रखना या सजाना, 2. साफ़े, साड़ी आदि के फेंटे व्यवस्थित करना। **चिनारना** (हि.)

चिनारी (स्त्री.) तह, परत; (क्रि. स.) 'चिनारणा' क्रिया का भू.का. स्त्रीलिंग रूप।

चिपकणा (क्रि. अ.) 1. सटना, 2. चिमटना, 3. चस्पा होना; (वि.) 1. वह जो शीघ्र चिपके, 2. लसलसा। **चिपकना** (हि.)

चिपकन (पुं.) पुरुषों का गले का एक आभूषण।

चिपकना (क्रि. अ.) दे. चिपकणा।

चिपकाणा (क्रि. स.) 1. चस्पा करना, 2. गले मढ़ना। **चिपकाना** (हि.)

चिपकाना (क्रि. स.) दे. चिपकाणा।

चिपचिपा (वि.) लेसदार, लसलसा।

चिपटण गोह (स्त्री.) दे. गोह।

चिपटणा (क्रि. अ.) 1. चिमटना, लिपटना, 2. हाथापाई करना, 3. चिपक जाना; (वि.) 1. लसलसा, 2. चिमटने वाला। **चिपटना** (हि.)

चिपटाणा (क्रि. स.) 1. लिपटाना, 2. चिपकाना, 3. लिपटने के लिए प्रेरित करना। **चिपटाना** (हि.)

चिपटाना (क्रि. स.) दे. चिपटाणा।

चिपड़क चूँधा (वि.) दे. चूँधा।

चिप्पम चिप्पा (स्त्री.) दे. महादे की चिप्पक।

चिमक (स्त्री.) 1. चुँधियाने का भाव, 2. (दे. चभक)। **चमक** (हि.)

चिमकणा (वि.) चमकीला, जगमगाता हुआ; (क्रि. अ.) 1. चमत्कृत होना, 2. पशु का बिदकना, 3. प्रकाश या अन्य वस्तु को देखकर डरना, हक्का-बक्का या हैरान रहना, 4. सन्निपात के कारण बार-बार उछलना। **चमकना** (हि.)

चिमका (पुं.) प्रकाश, तुल. पळका; (क्रि. अ.) चमत्कृत हुआ। **चमका** (हि.)

चिमकाणा (क्रि. स.) 1. माँज कर जगमगाना, 2. पशु को बिदकाना, 3. दर्पण के प्रकाश को अन्य स्थान पर डालना, 4. (नाम) रोशन करना, 5. चमत्कृत करना। **चमकाना** (हि.)

चिमकारा (पुं.) चमका, चिमका, तुल. पळका।

चिमटना (क्रि. अ.) दे. चिपटणा।

चिमटा (पुं.) 1. आग से कार्य करते समय हाथ में धारण किया जाने वाला लोहे का औज़ार विशेष, 2. साधुओं द्वारा ध ारण किया जाने वाला लोहे का चिमटेनुमा औज़ार (जो लगभग दो-तीन हाथ लंबा होता है), 3. बजाने के काम आने वाला वाद्य जिसमें स्थान-स्थान पर गोलाकार झाँझ लगी होती है; **~बजाणा** 1. अपशकुन करना, 2. झगड़ा करना, 3. साधु-वृत्ति या भिक्षावृत्ति अपनाना।

चिमनी (स्त्री.) 1. ईंटों का भट्टा, 2. लैंप का शीशा, 3. धुआँ निकलने का पोला स्तूप।

चिम्मल (पुं.) सिंचाई का एक साधन।

चिम्हलाणा (क्रि.) बच्चों के साथ अनाप शनाप शब्द निकालना।

चिरंजी (वि.) दीर्घायु वाला। **चिरंजीवी** (हि.)

चिरक (स्त्री.) दे. धरक।

चिरक चाँदणी (स्त्री.) दिखावा।

चिरकणा (क्रि. अ.) 1. पुराने वस्त्र का कहीं-कहीं से फटना, 2. पतली टट्टी निकलना; (वि.) जीर्ण-शीर्ण (वस्त्र)। **चिरकना** (हि.)

चिरड़की (स्त्री.) दे. चींड्डी।

चिरड़णा (क्रि. अ.) दे. चिरकणा।

चिरड़-मिरड़ (स्त्री.) 1. चूँ-चपाट, झुँझलाहट, 2. एक प्रकार का पटाखा; **~करणा** 1. बड़बड़ाना, 2. झुँझलाना।

चिरड़ाणा (क्रि. अ.) 1. बड़बड़ाना, 2. चटख कर टूटना, चरमर की ध्वनि के साथ टूटना, 3. कमज़ोर बालक का रुक-रुक कर धीमे-धीमे रोना, 4. ईर्ष्या करना; (क्रि. स.) रुलाना, सताना।

चिरड़ी (वि.) 1. ईर्ष्यालु, 2. हर समय रोते रहने वाला।

चिरणा (क्रि. अ.) 1. किसी चीज़ का चीरा जाना, कटना, फटना आदि, तेज़ धार के कारण कटना, 2. कन्नी काटना; (वि.) शीघ्र चिरने वाला। **चिरना** (हि.)

चिरमठी (स्त्री.) घुँघची, रत्ती, काले मुँह तथा शेष लाल रंग का बीज (जो तोलने के काम भी आता है); **~का मुँह काळा** एक दंत कथा के अनुसार शापवश चिरमठी का मुँह काला है; **~सा** छोटा-सा, बौना। **चिरमिटी** (हि.)

चिरमराट (स्त्री.) 1. अधिक मिर्च खाने के कारण मुँह जलने का भाव, 2. आँख, नाक आदि पर मिर्च लग जाने से उत्पन्न जलन, 3. तेज़ थप्पड़ लग जाने के कारण होने वाली पीड़ा, 4. मलमलाहट, 5. किसी अप्रिय बात को सुनकर उत्पन्न होने वाली जलन या बेचैनी; **~ऊठणा** शरीर में जलन या पीड़ा होना। **चिरमिराट** (हि.)

चिरमाँ (वि.) चिरा हुआ। **चिरवाँ** (हि.)

चिरमासा (पुं.) दे. चमास्सा।

चिरराणा (क्रि. अ.) 1. 'चिर'-'चिर' की ध्वनि होना, 2. बड़बड़ाना।

चिरली (स्त्री.) दे. चिल्ली।

चिरवाणा (क्रि. स.) दे. चिराणा।

चिरवाना (क्रि. स.) दे. चिराणा।

चिराई (स्त्री.) 1. चीरने की क्रिया, 2. चीरने की मज़दूरी।

चिराग (पुं.) दे. दीवा।

चिराणा (क्रि. स.) 1. चिरवाना, 2. कटवाना, 3. फड़वाना। **चिराना** (हि.)

चिराना (क्रि. स.) दे. चिराणा।

चिरी (स्त्री.) दे. चिड़ी।

चिरोरी (स्त्री.) खुशामद, (दे. लल्लो-चप्पो)। **चिरौरी** (हि.)

चिलक (स्त्री.) झलक, अचानक पड़ने वाली चमक।

चिलकणा (क्रि. अ.) 1. रुक-रुक कर चमकना, 2. कभी-कभी दिखाई देना, 3. कुछ-कुछ दिखाई देना; (वि.) चमकीला। **चिलकना** (हि.)

चिलकना (क्रि. अ.) दे. चिलकणा।

चिलका (पुं.) चमक, चमका, कभी-कभी चमकने या दिखाई देने का भाव, तुल. पळका; (क्रि. अ.) 'चिलकणा' क्रिया का भू.का., एकवचन, पुं. रूप।

चिलकाणा (क्रि. स.) 1. चमकाना, जगमगाना, 2. शीशे आदि को प्रतिबिंबित करना। **चिलकाना** (हि.)

चिलकाना (क्रि. स.) दे. चिलकाणा।

चिलगोजा (पुं.) एक सूखी मेवा।

चिलचिलाणा (क्रि. अ.) 1. तेज़ धूप चमकना, 2. तेज़ चमक आना। **चिलचिलाना** (हि.)

चिलचिलाना (क्रि. अ.) दे. चिलचिलाणा।

चिलचिली (वि.) चरचरी, तेज़ (धूप)।

चिलत्तर (पुं.) 1. बुरा आचरण (व्यंग्य में)–बस देख लिया तेरा चिलत्तर, 2. करतूत, (दे. फाहफोट्टा); **~हाई** 1. बुरे चरित्र वाली, 2. बनावटी व्यवहार दिखाने वाली। **चरित्र** (हि.)

चिलम (स्त्री.) 1. हुक्के के ऊपर आग, तंबाकू आदि रखकर पीने का मिट्टी का पात्र जो नीचे से नली के आकार और ऊपर से कटोरे के आकार का होता है (इस पर कुछ चित्रकारी भी कर दी जाती है, इसे टूटने से बचाने के लिए कई बार बाहर से लोहे की पत्तियाँ लगा देते हैं), 2. लंबोतरी चिलम जिसके चारों ओर गीला कपड़ा लपेट कर पिया जाता है, (दे. सुल्फी); **~ठावा** 1. गुलाम, सेवक, 2. खुशामदी; **~ठेकरी** गोलाकार या चक्राकार कंकर जो चिलम में रखी जाती है ताकि **तंबाकू** सीधा आग के संपर्क में न आए; **~बजाणा** चिलम पीना, हुक्का पीना; **~बाज़** धुएँ का नशा करने वाला, (दे. नसैहड़ी); **~भरणा** 1. खुशामद करना, 2. हुक्का भरना; **~सहारणा** चिलम पीना। **चिलम** (हि.)

चिलमची (वि.) 1. चिलम भरने वाला, 2. खुशामदी; (स्त्री.) देग़चीनुमा बरतन।

चिल्लर (स्त्री.) 1. चील की बोली, 2. चील (पक्षी)।

चिल्ला[1] (पुं.) 1. चालीस दिन का समय, 2. चालीस दिन का शीतकाल।

चिल्ला[2] (पुं.) धनुष की डोरी; **~चढाणा** धनुष पर बाण चढ़ाना; (क्रि. अ.) 'चिल्लाणा' क्रिया का आदे. रूप।

चिल्ला-चाँट (स्त्री.) 1. छोटे बच्चों की टोली, 2. साधारण लोगों की भीड़।

चिल्लाट (स्त्री.) चिल्लाने का भाव। **चिल्लाहट** (हि.)

चिल्लाणा (क्रि. अ.) 1. चीखना, 2. शोर मचाना, 3. पुकारना, 4. जोर-जोर से रोना। **चिल्लाना** (हि.)

चिल्लाना (क्रि. अ.) दे. चिल्लाणा।

चिल्ली (स्त्री.) 1. चीख, पुकार, 2. चीत्कार, रोने की ध्वनि, 3. तीखी ध्वनि; **~पड़णा** 1. आर्तनाद सुनाई

पड़ना, 2. भगदड़ मचना; **~मारणा** 1. चिल्लाना, 2. आर्त वाणी में पुकारना।

चिल्होड़ी (स्त्री.) पैर के तलुए में निकलने वाला एक प्रकार का अंदरूनी फोड़ा (जिसे गरम राख बाँध कर पकाते हैं और फिर सूई में नीला धागा बाँध कर उसे बींधते हैं ताकि मवाद निकल जाए)।

चीं (स्त्री.) 1. पक्षियों की ध्वनि, 2. कष्ट-द्योतक ध्वनि; **~चपाट** विरोधस्वरूप बोलना; **~चीं** 1. पक्षियों की ध्वनि, 2. 'चीं'-'चीं' की ध्वनि, 3. व्यर्थ का शोर, 4. चिड़िया; ~ **~करणा** 1. प्रतिकार करना, 2. रोना-पीटना, 3. शोर करना।

चींख (स्त्री.) 1. चीत्कार, 2. चिल्लाहट। **चीख** (हि.)

चींखणा (क्रि. अ.) 1. चिल्लाना, 2. ज़ोर से बोलना, 3. झुँझलाना। **चीखना** (हि.)

चींगरणा (क्रि. अ.) दे. चिंगरणा।

चींच (वि.) छोटा (बच्चा)।

चींचड़ (पुं.) गाय-भैंस की ओहड़ी (अयन) में लगने वाला लाल रंग का कई पैरों वाला खटमलनुमा जीव; (वि.) तेज़ पकड़ करने वाला; **~तोड़णा** पशु के अयन से चीचड़ हटाना; **~सा** 1. तुच्छ, 2. हठी। **चीचड़** (हि.)

चींचड़ी (स्त्री.) छोटा चीचड़, (दे. चींचड़)।

चींट्टी (स्त्री.) चींटी, (दे. कीड़ी)।

चींड्डी/चींढी (स्त्री.) 1. चंडी, 2. क्रोधित अवस्था, 3. ज़िद; **~चढणा** 1. ज़िद पर उतारू होना, 2. अति क्रोधित होना।

चींद्दी (स्त्री.) 1. सिर का अगला कोमल भाग, 2. छोटी टिकिया या टुकड़ा; **~लीक्कड़णा** सिर के बाल उड़ना।

चींद्धी/चींहधी (स्त्री.) 1. दीवार में लगी गड्ढेदार लकड़ी जिस पर किवाड़ (कपाट) की 'चूल' घूमती है, 2. (दे. चींधी)।

चींधी (स्त्री.) कपड़े आदि की छोटी चिप्पी।

चीकड़ (पुं.) कीचड़।

चीकणा (वि.) 1. लेसदार, 2. फिसलन वाला, 3. कोमल, गुदगुदा। **चिकना** (हि.)

चीकणी (वि.) 1. लेसदार, 2. घर्षण रहित; **~चोपड़ी** 1. चिकनी-चुपड़ी, खुशामद भरी बात, 2. माँजी-धुली, साफ़-सुथरी। **चिकनी** (हि.)

चीकला (पुं.) अंडे से निकला शावक; **~सा** 1. छोटा-सा, 2. कोमल-सा, 3. दुर्बल-सा, 4. निस्सहाय।

चीका-गाद (स्त्री.) खादर की मिट्टी।

चीखना (क्रि. अ.) दे. चींखणा।

चीग्घा (पुं.) दे. चीघसा।

चीघला (पुं.) दे. चीघसा

चीघवा (पुं.) मिट्टी का छोटा दीया, तुल. चीघसा।

चीघसा (पुं.) दे. चीघवा।

चीचड़ी (स्त्री.) 1. चुटकी, चुटकी काटना, 2. (दे. चींचड़ी)।

चीच्चड़ (पुं.) दे. चींचड़।

चीज (स्त्री.) 1. वस्तु, 2. काम—एक चीज कर दे, 3. आभूषण; **~बसत** चीज़, वस्तु। **चीज़** (हि.)

चीज्जी (स्त्री.) चीज़ का लघुताद्योतक रूप।

चीड़[1] (पुं.) एक पहाड़ी वृक्ष।

चीड़[2] (स्त्री.) दे. चिड़।

चीण (स्त्री.) सीवन।

चीणा (पुं.) 1. सामनु-फ़सल में बोया जाने वाला एक महीन अन्न, 2. टोली, भेड़-बकरियों का झुंड; **~बस मैं नाँ होणा** परिवार वश में न होना।

चीतण (पुं.) 1. भित्ति-चित्र, 2. बेतरतीब रेखाएँ; **~काढणा** भित्ति-चित्र बनाना।

चीतणा (क्रि. स.) 1. चित्रित करना, 2. लीपना-पोतना, 3. लिपिबद्ध करना, 4. विस्तृत विवरण देना। **चीतना** (हि.)

चीतना (क्रि. स.) दे. चीतणा।

चीतल (पुं.) चितके वाला हिरण।

चीता (पुं.) दे. चीत्ता।

चीतालंकी (वि.) चीते के समान पतली कमर वाली।

चीत्ता (पुं.) एक जंगली हिंसक पशु। **चीता** (हि.)

चीत्थड़ (पुं.) फटा पुराना वस्त्र।

चीत्या (वि.) चित्रित किया हुआ; (क्रि. स.) 'चीतणा' क्रिया का भू.का. एकवचन रूप; **~माँड्या** 1. चित्रित किया हुआ, 2. बुरी तरह चित्रित किया हुआ, 3. चित्र आदि से सजाया हुआ।

चीथड़ा (पुं.) 1. फटा पुराना वस्त्र, 2. छोटा वस्त्र, तुल. चीलड़ा; **~चीथड़ा होणा** 1. बुरी तरह से फटना, 2. फटे हाल होना। **चिथड़ा** (हि.)

चीथणा (क्रि. स.) 1. रौंदना, पद दलित करना, अंग को दबाकर घायल करना, 2. किसी वस्तु को हल्का-हल्का कूटना–अदरक नैं लोड्ढी तैं चीथ कै चा मैं गेर दे, (1. दे. छेतणा, 2. दे. दरड़णा)। **चीथना** (हि.)

चीथना (क्रि. स.) दे. चीथणा।

चीन (पुं.) भारत का एक पड़ोसी देश।

चीनी (स्त्री.) दे. चीन्नी।

चीनी-मिट्टी (स्त्री.) दे. चीन्नी-माट्टी।

चीन्नी (स्त्री.) दानेदार सफ़ेद बूरा; (पुं.) चीन देश का निवासी; (वि.) चीन देश से संबंधित। **चीनी** (हि.)

चीन्नी-माट्टी (स्त्री.) एक चिकनी मिट्टी विशेष जिससे बर्तन बनते हैं। **चीनी-मिट्टी** (हि.)

चीब्भी (स्त्री.) ज्वार की फ़सल काटने के बाद उसकी जड़ों से पुनः फूटी हुई कोंपल का चारा; **~फूटणा** ज्वार की जड़ से पुनः कोंपल प्रस्फुटित होना।

चीमची (स्त्री.) चुटकी।

चीयाँ (स्त्री.) 1. चिरमिटी, घुँघची, 2. कीकर, इमली आदि की फली का बीज, (दे. किकरोळी); **~मीयाँ** 1. चीयाँ, 2. छोटी वस्तु।

चीर (पुं.) 1. ओढ़नी, 2. साफ़ा, पगड़ी, 3. वस्त्र, कपड़ा; (क्रि. स.) 'चीरणा' क्रिया का आदे. रूप–मोरधज तूँ अपणे छोह्रे नैं चीर, अर मेरे सेर नैं खवा।

चीरणा (क्रि. स.) 1. आरे से काटना, 2. फाड़ना, 3. सब्ज़ी काटना या बिनारना, 4. मन को पीड़ा पहुँचाना–तेरी बात मेरे हिरदे नैं चीर गी; (वि.) नुकीला, शीघ्र चीरने वाला। **चीरना** (हि.)

चीरणी (स्त्री.) साग की वह मात्रा जो एक बार हाथ में लेकर दराँत आदि से काटी या बिनारी जा सके, (तुल. बिनारणी)।

चीरना (क्रि. स.) दे. चीरणा।

चीरपाड़ (स्त्री.) 1. चीरफाड़ करने का काम, 2. शल्य-चिकित्सा। **चीरफाड़** (हि.)

चीरफाड़ (स्त्री.) दे. चीरपाड़।

चीरमाँ (वि.) दे. चिरमाँ।

चीरा[1] (पुं.) 1. फोड़े-फुंसी पर लगाया गया काटा, 2. एक प्रकार का खेल जो गिट्टी या पाँसों से खेला जाता है, 3. काटे का चिह्न; **~खेंचणा** भूमि पर चीरे के खेल की आकृति बनाना; **~लाणा** 1. फोड़े-फुंसी को काटना, 2. काटे का चिह्न लगाना, 3. अशुद्धिद्योतक चिह्न लगाना।

चीरा[2] (पुं.) 1. सतरंगा साफ़ा, लहरदार साफ़ा, 2. विवाह के समय बाँधा जाने वाला साफ़ा, 3. (दे. चीर)।

चीरी (स्त्री.) बकरी की मेंगनी का गंधयुक्त वस्त्र जिसे उसके थनों पर बाँधा जाता है; (क्रि. स.) 'चीरणा' क्रिया का भू. का., एकवचन, स्त्रीलिंग रूप।

चील/चील्ह (स्त्री.) गिद्ध-जाति का एक पक्षी; **~सा त्योर** 1. गिद्ध-दृष्टि, पैनी दृष्टि, 2. दूर की वस्तु को साफ़-साफ़ देख लेने का भाव। **चील** (हि.)

चीळक (पुं.) दे. बाळक-चीळक।

चील-गाड्डी (स्त्री.) विमान, वायुयान, (दे. अंबर की चील गाड्डी)।

चीलड़ा (पुं.) चिथड़ा; (वि.) जीर्ण-शीर्ण (वस्त्र)।

चील्ला (पुं.) दे. पूड़ा।

चील्ह (स्त्री.) दे. चील।

चील्हड़ा (पुं.) दे. चीलड़ा।

चीस (स्त्री.) 1. टीस, रुक-रुक कर होने वाली पीड़ा, चसक, 2. उत्कट अभिलाषा; **~मारणा/लागणा** टीस उठना, रह-रह कर पीड़ा होना; **~मेटणा** 1. पीड़ा दूर करना, 2. इच्छा-पूर्ति करना।

चीसणा (क्रि. अ.) 1. पीड़ा होना, चभकना, 2. जिह्वा लालायित होना। **चीसना** (हि.)

चीसना (क्रि. अ.) दे. चीसणा।

चुंगळ (पुं.) चंगुल।

चुंगी (स्त्री.) दे. चूँगगी।

चुंघाणा (क्रि. स.) 1. गाय द्वारा अपने बछड़े को (असमय में) दूध पिलाना-आज गा चुँघागी, 2. चुसाना, गन्ना आदि चुसाना। **चुँघाना** (हि.)

चुँघाना (क्रि. स.) दे. चुँघाणा।

चुंडा बाँट (स्त्री.) 1. सामूहिक भोज आदि की वह रस्म जिसमें घरों की हर महिला को भोजन के लिए आमंत्रित किया जाता है या कोई वस्तु समान भाव से बाँटी जाती है। दे. तगड़ी-पागड़ी बाँटणा। दे. चूल्हा-न्योत।

चुंडेल (स्त्री.) 1. भूतनी, 2. कुलटा; (वि.) ऊँचे चूँडे वाली। **चुड़ैल** (हि.)

चुंड्याणा (क्रि.) दे. चूँड्डा करणा।

चुंदड़िया (स्त्री.) दे. चूँदड़ी।

चुंधा (वि.) दे. चूँद्धा।

चुँधियाना (क्रि. अ.) दे. चुँध्याणा।

चुँध्याणा (क्रि. अ.) 1. तेज़ प्रकाश के कारण आँखें मुँदना, 2. चकाचौंध होना, 3. विस्मित होना। **चुँधियाना** (हि.)

चुंबन (पुं.) दे. चूम्मा।

चुआणा (क्रि. स.) 1. कूआँ खोदते-खोदते पानी निकालना, (दे. चोवा काढणा), 2. दूध निकलवाना, 3. द्रवित करना, पसीजवाना। **चुआना** (हि.)

चुआना (क्रि. स.) दे. चुआणा।

चुकंदर (पुं.) गाजर के समान एक लाल रंग की सब्ज़ी।

चुकड़ात (पुं.) आपसी विवाद चुकाने वाली व्यापारियों की पंचायत।

चुकड़िया (स्त्री.) वह 'पोळी' जिसमें दो स्तंभ और चार भाग या खंड हों।

चुकणा (क्रि. अ.) 1. समाप्त होना, 2. रुपये-पैसे का लेन-देन समाप्त होना। **चुकना** (हि.)

चुकता (वि.) बेबाक।

चुकना (क्रि. अ.) 1. समाप्त होना, 2. अदा होना।

चुकनी (स्त्री.) दे. डोहरी।

चुकन्ना (वि.) दे. चोकन्ना।

चुकसाई (स्त्री.) दे. चोकसाई।

चुकाठ (स्त्री.) चौखट।

चुकाणा (क्रि. स.) 1. भुगतान करना, 2. बाँटना, 3. निर्णय करना। **चुकाना** (हि.)

चुकाना (क्रि. स.) दे. चुकाणा।

चुखंडी (स्त्री.) दरवाज़े के दोनों ओर बने पत्थर के ऊँचे चबूतरे; (वि.) चार खंड वाली।

चुगड्डा (पुं.) चार व्यक्तियों या वस्तुओं का समूह।

चुगणा[1] (क्रि. स.) 1. चिड़ियों द्वारा दाना-दुनका उठाना, 2. चुनना, मिट्टी, तिनके आदि निकालना, 3. एक-एक करके नष्ट कर देना। **चुगना** (हि.)

चुगणा[2] (वि.) चार गुणा, चौगुना।

चुगना (क्रि. स.) दे. चुगणा[1], (वि. दे) चुगणा[2]।

चुगरदा (पुं.) 1. चारों ओर का परकोटा, 2. परिक्रमा परिसर; **~काटणा** 1. चक्कर लगाना, 2. परिक्रमा देना; **~खींचणा** चहारदीवारी बनाना; **~घेरणा** 1. घेराव करना, 2. चहार दीवारी करना; **~(-दे) होणा** 1. घेराव करना, 2. दबाव डालना। **चौगिर्द** (हि.)

चुगल (वि.) पीठ पीछे चुगली करने वाला, (दे. लावा-लतूरी); (स्त्री.) हुक्के की चिलम में रखी जाने वाली ठेकरी या गोल कंकर।

चुगलख़ोर (वि.) चुगली करने वाला, चुगल।

चुगलख़ोरी (स्त्री.) चुगली करने का काम।

चुगल-ठेकरी (स्त्री.) चुगल और तंबाकू के ऊपर रखी जाने वाली ठेकरी।

चुगली (स्त्री.) अनुपस्थिति में की गई निंदा।

चुगाई (स्त्री.) 1. चुगने का काम, 2. चुगने की मज़दूरी।

चुगाठ (स्त्री.) दे. चोक्खट।

चुगाणा (क्रि. स.) पक्षियों को दाना आदि डालना।

चुगानण मात्ता (स्त्री.) चौगान या चौराहे की माता या देवी।

चुगाना (क्रि. स.) दे. चुगाणा।

चुग्गा (पुं.) 1. चिड़िया का भोजन, दाना, 2. छलावा, लालच; **~पाणी** 1. पक्षियों का भोजन, 2. अन्न-जल; **~ ~करणा** 1. पक्षियों द्वारा दाना-पानी ग्रहण करना, 2. भोजन करना।

चुघड़ा (पुं.) चार दीपकों का समूह।

चुघड़िया (पुं.) 1. चार घड़ी का समय, 2. ज्योतिष का एक काल विशेष।

चुघड़ी (स्त्री.) 1. छोटे मुँह का बर्तन, 2. (दे. चुघड़िया)।

चुचकारणा (क्रि. स.) 1. अन्न, पुस्तक अथवा अन्य श्रद्धास्पद वस्तु को पैर लगने या उसके अपवित्र स्थान पर

गिरने के कारण प्रायश्चित स्वरूप श्रद्धा के साथ हाथ से उठाते समय उसे प्रणाम करना तथा मुख से 'चच' की ध्वनि निकालना, 2. प्राप्त वस्तु को श्रद्धा के साथ झुककर तथा प्रणाम करके स्वीकार करना, 3. किसी वस्तु को झुक कर प्रणाम करना तथा उसे स्पर्श करना–छोहरे की नोकरी की बात सुण कै बाब्बू नैं तीन बार धरती चुचकारी, 4. पशुओं को दौड़ाने के लिए 'चुच'-'चुच' की ध्वनि करना। **चुचकारना** (हि.)

चुचकारना (क्रि. स.) दे. चुचकारणा।

चुचकारी (स्त्री.) पशु की चाल तेज़ करने के लिए मुँह से 'चुच'-'चुच' की ध्वनि करने का भाव, (दे. पुचकारी); (क्रि. स.) 'चुचकारणा' क्रिया का भू. का., एकवचन, स्त्रीलिंग रूप।

चुचाक (वि.) 1. चालाक, आवश्यकता से अधिक समझदार, 2. चहकदार, 3. चमकदार–इस तीळ का रंग ओढणे तैं चुचाक सै।

चुचाट (पुं.) पक्षियों के एक स्वर में बोलने से उत्पन्न ध्वनि; **~ऊठणा** चहचहाट होना; (वि.) चालाक। **चहचहाट** (हि.)

चुचाणा (क्रि. अ.) 1. चहचहाना, 2. चूना, रिसना, टपकना, 3. चमकना, भाषित होना। **चुचाना** (हि.)

चुचाना (क्रि. अ.) दे. चुचाणा।

चुटकला (पुं.) चुटकुला, लतीफ़ा, मज़ेदार बात; (वि.) हँसी-मज़ाक करने वाला; **~छोडणा** ठिठोली या दिल्लगी की बात कहकर चुप हो जाना।

चुटकी (स्त्री.) 1. मध्यमा अंगुली तथा अंगूठे के घर्षण से उत्पन्न की जाने वाली ध्वनि, 2. क्षणभर का समय, 3. सुहागिन स्त्रियों द्वारा पैर की अंगुली में धारण की जाने वाली चाँदी की छल्ली, 4. चुटकी से नोचने की क्रिया, (दे. चूँटकी); (वि.) चुटकी भर; **~देणा** 1. साधु-संत द्वारा धूने से भस्म देना, 2. गुरु-मंत्र देना, 3. आशीर्वाद देना, 4. सिखाना, बहकाना, 5. भड़काना, प्रोत्साहित करना, 6. चुटकी बजाना, 7. भिक्षा देना, 8. संकेत करना, 9. चिढ़ाना, सताना; **~फेरणा** किसी का मन बदलना; **~बजाणा** 1. अंगुली और अंगूठे से 'चुट'-'चुट' की ध्वनि निकालना, 2. प्रसन्नता व्यक्त करना, 3. अपमान करना; **~भरणा** 1. चुटकी भर वस्तु उठाना, 2. चुटकी से नोचना या काटना, 3. आनंद लेने के लिए कोई बात कहना, 4. कटूक्ति कहना, 5. गुप्त संकेत देना, गुप्त मंत्रणा करना; **~माँगणा** भीख माँगना, केवल चुटकी भर अन्न घर-घर माँगना, (इससे अधिक नहीं); **~मारणा** 1. चुटकी बजाना, 2. संकेत देना, 3. बहकाना; **~(–कियाँ) मैं आणा** 1. क्षण भर में लौटना, शीघ्र लौटना, 2. स्वल्प मात्रा में होना; **~(–कियाँ) मैं उडाणा** 1. थोड़ा-थोड़ा करके किसी चीज़ को समाप्त करना, 2. मूर्ख बनाना, 3. बात को गंभीरता से न लेना, 4. अपमान करना।

चुटिया (स्त्री.) 1. छोटी चोटी, 2. स्त्री की चोटी, 3. काले धागों की चोटी जो स्त्रियाँ अपनी चोटी में बाँधती हैं, 4. (दे. चूँड्डा); **~पाकड़णा** निरादर करना; **~पाड़णा** अपमान करना, लज्जित करना। **चोटी** (हि.)

चुटील्ला (पुं.) चोटी, धागों को गूँथ कर बनाई गई चोटी (जिसे महिलाएँ अपने बालों के साथ गूँथती हैं), चुटिया।

चुटैल (वि.) 1. चोटी वाला, 2. मोटी चोटी वाला; (पुं.) हिंदू।

चुड़ला (पुं.) दे. चूड़ा।

चुड़ाई (स्त्री.) चौड़ाई।

चुड़िहारा (पुं.) दे. मणिहार।

चुड़ैल (स्त्री.) प्रेतनी; (वि.) कुलटा, दुष्टा, व्यभिचारिणी।

चुणगट (स्त्री.) दे. चुन्नट।

चुणणा (क्रि. स.) 1. बहुतों में से छाँटना या पसंद करना, छाँटना, 2. सजाना, 3. क्रमबद्ध रूप से रखना, 4. चिनाई करना। **चुनना** (हि.)

चुतरफा (वि.) चोतरफा।

चुथाइया (पुं.) 1. चौथे अंश का भागी या स्वामी, 2. सामूहिक खेती की एक प्रणली जिसके अनुसार साझेदार को उपज का चौथा भाग मिलता है।

चुथाई (वि.) चौथा भाग या अंश। **चौथाई** (हि.)

चुनचुटी (वि.) भिखारी को चुटकी भर आटा देने वाली, कंजूस (स्त्री.)।

चुनना (क्रि. स.) दे. चुणणा।

चुनरी (स्त्री.) दे. चूँदड़ी।

चुना (पुं.) 1. चुनने का काम, 2. रायशुमारी, मतदान, निर्वाचन। **चुनाव** (हि.)

चुनाव (पुं.) दे. चुना।

चुनौती (स्त्री.) ललकार।

चुन्नट (स्त्री.) तह, परत।

चुन्नी (स्त्री.) दे. चूँदड़ी।

चुप (वि.) मौन, ख़ामोश; **~करणा** 1. शांत करना, 2. रिश्वत आदि देकर मुँह बंद करना; **~मारणा** चुप्पी साधना; **~होणा** 1. मौन होना, 2. अपना-सा मुँह लेकर रहना।

चुपका (वि.) 1. मौन, 2. शांत।

चुपकी (स्त्री.) चुप्पी, बात को सुनकर चुप या शांत रहने का भाव; **~मारणा/साधणा** 1. चुप का भाव; 2. अपने विचार प्रकट न करना, प्रतिक्रिया व्यक्त न करना।

चुपचाप (क्रि. वि.) 1. मौन, चुपके से, 2. गुप्त विधि से।

चुपचुपाला (वि.) दे. चुपचाप।

चुपड़णा (क्रि. स.) 1. किसी वस्तु पर घी, तेल आदि लगाना, 2. रिश्वत देना। **चुपड़ना** (हि.)

चुपड़ना (क्रि. स.) दे. चुपड़णा।

चुपड़ाई (स्त्री.) 1. चुपड़ने का काम, 2. रिश्वत, 3. चुपड़ने या तेल आदि लगाने की मज़दूरी।

चुपड़ी (वि.) 1. चुपड़ी हुई, 2. चिकनी; **~चीकणी** 1. चिकनी-चुपड़ी बात, 2. तेल आदि से युक्त।

चुपाई[1] (स्त्री.) एक प्रमुख छंद। **चौपाई** (हि.)

चुपाई[2] (स्त्री.) चार पैर वाला स्टैंड।

चुपाड़ (स्त्री.) 1. गाँव का सम्मिलित भवन (जहाँ ग्राम पंचायत होती है, आपसी न्याय के लिए लोग एकत्रित होते हैं, बारात ठहरती है, गाँव के साँड के चारे की व्यवस्था होती है), गाँव का सम्मिलित स्थान, 2. निर्जन स्थान; **~लागणा/होणा** 1. समस्या समाधान के लिए लोगों का चौपाल में इकट्‌ठा होना, 2. पंचायत लगना। **चौपाल** (हि.)

चुपाया (पुं.) पशु; (वि.) चार पैरों वाला। **चौपाया** (हि.)

चुपाल (स्त्री.) दे. चुपाड़।

चुप्पी (स्त्री.) मौन।

चुफेरा (पुं.) 1. चारों ओर का चक्कर, 2. चौगिर्दा, परिसर।

चुबच्चा (पुं) वह गहरा गड्ढा (अधिकांशतः पक्का) जहाँ कूएँ के निकास का व्यर्थ का पानी इकट्ठा होता रहता है।

चुबच्ची (स्त्री.) 1. कूएँ के अंदर बनाई गई छोटी कूई जहाँ कूएँ का पानी कम हो जाने पर नीचे के स्रोत का पानी अधिक मात्रा में इकट्ठा हो जाता है, 2. जल एकत्रित करने के लिए बनाया गया पक्का या कच्चा गड्ढा; **~गाळणा** कूएँ में छोटी कूई बनाना ताकि नीचे तक के स्रोत का पानी जमा हो सके।

चुबळधा (वि.) (गाड़ी) जिसमें चार बैल जुतते हों।

चुबारा[1] (पुं.) मकान के ऊपर बना झाँकीदार कमरा। **चौबारा** (हि.)

चुबारा[2] (क्रि. वि.) चौथी बार।

चुभणा (क्रि. अ.) 1. काँटे आदि नुकीली वस्तु का गड़ना या धँसना, 2. रड़कना, पीड़ा देना, 3. हृदय में खटकना; (वि.) चुभने वाला। **चुभना** (हि.)

चुभती (पुं.) कटूक्ति; (वि.) चुभने वाली, पीड़ा देने वाली–घणी चुभती बात कहग्या ईब बोल्ले बिना न रह्या जा।

चुभना (क्रि. अ.) दे. चुभणा।

चुभीत्ता (पुं.) चारों ओर की दीवार।

चुभोना (क्रि. स.) दे. चभोणा।

चुमंजला (वि.) चार मंज़िल का (भवन)। **चौमंज़िला** (हि.)

चुमक्खा (वि.) चार मुँह वाला (दीया); **~दीवा** 1. चार मुँह वाला दीया, वह दीया जिसमें एक साथ चार बत्तियाँ जलाई जाती हैं, 2. अधिक प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए जलाया जाने वाला दीप, 3. आटे से बना चौमुखा दीया।

चुमाणा (क्रि. अ.) चंपत होना; (क्रि. स.) चुंबन देना।

चुमासा (पुं.) दे. चमास्सा।

चुमेळी (वि.) 1. चार प्रकार की चीज़ों का मिश्रण, 2. चार डसों से बाँटी गई (रस्सी)।

चुम्मा (पुं.) चुंबन।

चुरंगा (वि.) 1. चार रंग का, 2. कई रंगों का; (पुं.) एक ओढ़नी विशेष। **चौरंगा** (हि.)

चुरणा (पुं.) लगभग चावल के आकार के श्वेत रंग के पतले कीड़े जो मल के साथ पेट से निकलते हैं; (वि.) धीरे-धीरे किरने वाला (क्रि. अ.); 1. चुरना, थोड़ा-थोड़ा भाग कट-कट कर गिरना, किरना, 2. चोरी होना। **चुरना** (हि.)

चुरना (पुं.) दे. चुरणा।

चुरमा (पुं.) दे. चूरमाँ।

चुरमुर (पुं.) 1. लापता होने का भाव, देखते-देखते अदृश्य होने का भाव, 2. जादूगर द्वारा किसी वस्तु को अदृश्य करते समय कहा जाने वाला शब्द, 3. जादू, 4. नष्ट होने का भाव; **~होणा** 1. अदृश्य होना, 2. रफ़ूचक्कर होना।

चुरला दिन (पुं.) दे. चुसरला दिन।

चुरस्ता (पुं.) दे. चुराह्या।

चुराणवें (वि.) चौरानवे की संख्या। **चौरानवे** (हि.)

चुराणा (क्रि. स.) 1. चोरी करना, 2. हड़पना, 3. छिपाना। **चुराना** (हि.)

चुराना (क्रि. स.) दे. चुराणा।

चुरास्सी[1] (वि.) चौरासी की संख्या; **~का फेरा** विभिन्न योनियाँ भोगने का चक्र; **~लाख जून्नी** लख-चौरासी योनियाँ। **चौरासी** (हि.)

चुरास्सी[2] (स्त्री.) बैल के गले की माला (जिसमें छोटे-छोटे अनेक घुँघरू होते हैं)।

चुरास्सी घंटे आळी (स्त्री.) एक देवी, माता।

चुराह्या (पुं.) 1. वह स्थान जहाँ चार मार्ग मिलते हों, 2. सम्मिलित स्थान, वह भूमि जो किसी एक की न हो, 3. वह स्थान जहाँ अनिष्ट होने की संभावना हो; **~पूजणा** 1. भूत-प्रेत आदि की कल्पना के कारण चौराहे पर जल-चावल आदि चढ़ाना, 2. चौराहे की माता पूजना; **~मैं आणा** भूत-प्रेत से पीड़ित होना। **चौराहा** (हि.)

चुरेट-मुरेट (पुं.) जादूगर द्वारा किसी चीज़ को अदृश्य करने से पहले प्रयुक्त शब्द; **~होणा** लुप्त होना, जादू द्वारा विलुप्त होना।

चुरोणा (क्रि.) दे. चुराणा।

चुलबुला (वि.) चंचल, शरारती।

चुळा (पुं.) मुँह भर।

चुळाई (स्त्री.) एक पौधा (जिसका साग बनाया जाता है, इसके बीज के लड्डू भी बनते हैं)। **चौलाई** (हि.)

चुळाणा (क्रि. स.) 1. किसी स्थान पर थोड़ा-थोड़ा करके बहुत पानी बहाना, 2. गीला करना, 3. पेशाब करके वस्त्र गीले करना, 4. हल्की सिंचाई करना।

चुलाया (वि.) चार लाव का (कूआँ), वह (कूआँ) जिसमें चार लाव या चरस एक साथ पानी खींच सकें; **~कूवा** वह कूआँ जिसमें चारों ओर चकली या चाक लगे हों ताकि चार चरस एक साथ पानी खींच सकें।

चुलु (स्त्री.) दे. चळू।

चुल्लू (स्त्री.) दे. चळू।

चुवाणा (क्रि. स.) 1. कूएँ को जल-स्रोत की गहराई तक खोदना, 2. दुहना, धार निकालना, 3. टपकाना, 4. पके चावल से माँड निकालना। **चुआना** (हि.)

चुसड़का (पुं.) 1. आनंदपूर्वक चूसने की क्रिया, 2. चूसते समय उत्पन्न होने वाली ध्वनि, 3. चसका, लगाव, लत; **~पड़णा/होणा** चसका पड़ना, लत लगना।

चुसड़णा (क्रि. स.) 1. कम दूध रहते भी स्तन या थन को चूसना, 2. चूसते समय 'चुस'-'चुस' की ध्वनि निकालना, 3. गन्ने आदि का कुछ रस चूस कर छोड़ देना। **चूसना** (हि.)

चुसरला (वि.) चौथा (दिन); **~दिन** आज से चौथे दिन (आगे या पीछे) का समय, यथा—आज, काल्ह (कल) परसूँ (परसों), परले दिन (तरसों), और चुसरले दिन।

चुसाणा (क्रि. स.) 1. चूसने में सहायता देना, 2. सँपेरे से विष चुसवाना, 3. टपका-टपका करके पिलाना, 4. पिलाना—जूतियाँ नैं घणा ए तेल चुसा दिया। **चुसाना** (हि.)

चुसाना (क्रि. स.) दे. चुसाणा।

चुसेरी (स्त्री.) 1. चार सेर का बाट, 2. चार सेर भार की गुड़ की भेली।

चुसैया (वि.) चूसने वाला, जो बहुत गन्ने चूस सके।

चुस्की (स्त्री.) 1. घूँट, 2. आनंद, 3. कुल्फ़ी; **~लेणा** 1. दूसरे की बात आनंद या उत्सुकता से सुनना, 2. पेय पदार्थ को घूँट-घूँट कर पीना। **चुसकी** (हि.)

चुस्त (वि.) 1. फुर्तीला, 2. कसा हुआ।

चुहत्तर (वि.) चौहत्तर की संख्या। **चौहत्तर** (हि.)

चुहेंतर (वि.) दे. चुहत्तर।

चूँ (स्त्री.) 1. 'चूँ' की ध्वनि, 2. चिड़िया की ध्वनि, 3. गाड़ी के पहिये से उत्पन्न ध्वनि, 4. चीख़; **~चाँ करणा** 1. शोर मचाना, 2. प्रतिवाद करना; **~नाँ करणा** सब कुछ शांतिपूर्वक सहन करना या सुनना।

चूँगळ (पुं.) 1. चंगुल, 2. पंजा, 3. जकड़, 4. पकड़। **चंगुल** (हि.)

चूँग्गी (स्त्री.) नगर प्रवेश-कर, टोल-टैक्स। **चुंगी** (हि.)

चूँघ (स्त्री.) गन्ना चूँघने या चूसने की क्रिया; (क्रि. स.) 'चूँघणा' क्रिया का आदे. रूप; **~चालणा/ लागणा** ईख के गन्ने का चूँघने या चूसने योग्य हो जाना।

चूँघणा (क्रि. स.) 1. गन्ना आदि चूसना, 2. (बछड़े द्वारा) ग़ैर समय में गाय का दूध पी जाना। **चूसना** (हि.)

चूँ-चूँ (स्त्री.) 1. चिड़िया की ध्वनि, 2. व्यर्थ का प्रतिवाद, 3. चिड़िया।

चूँच्ची (स्त्री.) 1. स्तन, कुच, दूधी, 2. शीशे की बोतल जिससे बच्चे को दूध पिलाया जाता है; **~धुआई** स्तन धुलाई का नेग जो ननद अपनी भाभी से भतीजे के जन्म पर प्राप्त करती है (यह अधिकांशतः किसी ज़ेवर के रूप में होता है); **~न्योंत** 1. दूध पीते बच्चों तक का निमंत्रण, 2. (दे. चूल्हा न्योंत)। **चूची** (हि.)

चूँटकी (स्त्री.) 1. अंगूठे और तर्जनी की दाब से की जाने वाली पकड़ या काट, 2. नकचूटी; (वि.) स्वल्प मात्रा भर; **~भरणा** 1. खोटना, चुटकी से नोचना या काटना, 2. मसख़री करना, 3. सचेत करना। **चुटकी** (हि.)

चूँटणा (क्रि. स.) 1. चुँटाई करना, 2. ज्वार-बाजरे आदि की बाली, सिरटी या भुट्टे को तने से तोड़ना, 3. काटना, दंशित करना—के तूँ साँप नैं चूँट लिया, 4. खुरचना या साफ़ करना—काटडू के खुरिया चूँट दे, 5. चुटकी भरना, नोचना, 6. पौधे की पत्ती तोड़ना, 7. बीनना, चुनना। **चूँटना** (हि.)

चूँटणी (स्त्री.) फ़सल के कट जाने पर पौधों से बाली, सिरटी आदि तोड़ने की क्रिया (यह काम बहुधा खेत में ही बहुत से लोगों द्वारा मिल कर किया जाता है); (वि.) चूँटने में कुशल; **~करणा** चूँटनी का काम करना, फ़सल की चुँटाई करना; **~पड़णा** फ़सल की चूँटनी का काम शुरू होना; **~लागणा** चूँटनी का काम शुरू करना। **चूँटनी** (हि.)

चूँडणा (क्रि. स.) दे. चूँटणा।

चूँडा (पुं.) दे. चूँड्डा।

चूँड्डा (पुं.) स्त्रियों के बालों की चोटी या जूड़ा; 1. **ऊँच्चा~** (खेत-क्यार के

काम में सुविधा के लिए) चोटी को नीचे लटकाने की बजाय सिर पर बाँधा गया जूड़ा, 2. ईंडरी, (दे. ईंह्ढी); **~करणा** जूड़ा गूँथना; **~धरणा** (आठ-दस साल की आयु में) लड़की के बाल कटवाना बंद करके चोटी बढ़वाना; **~पाड़णा** अपमान करना; **~बाँट** एक प्रथा जिसके अनुसार जन्म-विवाह आदि के अवसर पर स्त्रियों को रुपया या मिठाई आदि बाँटी जाती है। **चूँडा** (हि.)

चूँड्डी (स्त्री.) 1. छोटा जूड़ा, 2. चोटी, 3. चुटकी।

चूँड्डे वार (वि.) दे. चूँड्याँ ताँही भरणा।

चूँतरा (पुं.) दे. चोंतरा।

चूँदड़ (स्त्री.) दे. चूँदड़ी।

चूँदड़ी (स्त्री.) 1. ओढ़नी, सितारे आदि से सजाया गया ओढ़ना (चूँदड़ी छोटे छाप की होती है), 2. वह ओढ़नी जो भाई भात के समय बहन को और उसकी देवरानी-जेठानी आदि को उढ़ाता है (यह लाल रंग की होती है तथा तारे-गोटे आदि से सज्जित होती है)–आया मेरी माँ का जाया बीर, हीरा-बंध ल्याया चूँदड़ी; **~ओढणा** (दे. ओढणा-ओढणा)। **चुनरी** (हि.)

चूँदणी (स्त्री.) दे. चूँदड़ी।

चूँधा (पुं.) 1. कातते समय पूनी का बचा अवशिष्ट भाग, 2. (दे. चूँह्धा)।

चूँबणा (क्रि. स.) चुंबन करना। **चूमना** (हि.)

चुंबा (पुं.) दे. चूम्मा।

चूँह्टकी (स्त्री.) दे. चूँटकी।

चूँह्टी (स्त्री.) चुटकी; (वि.) चुटकी भर; **~भरणा** 1. चुटकी काटना, नोचना, 2. तंग करना, 3. चुटकी भर वस्तु उठाना। **चुटकी** (हि.)

चूँह्धा (वि.) छोटी या चिपचिपी आँखों वाला, 2. वह जिसे कम दिखाई दे; (पुं.) 1. चमक, हल्की चमक, 2. रुक-रुक कर आने वाला प्रकाश; **~आणा** बादलों के बीच से कभी-कभी प्रकाश दिखाई देना; **~किवाड़** (दे. आँद्धा किवाड़); **~मारणा** 1. आँखों पर तेज़ प्रकाश डालना, 2. रुक-रुक कर चमक आना, 3. कभी-कभी दिखाई देना; **~लागणा** 1. तेज़ प्रकाश अचानक आँखों पर पड़ना, 2. कभी- कभी बीच-बीच में दिखाई देना; **~होणा** कम दिखाई देने लगना।

चूक[1] (स्त्री.) भूल, ग़लती, असावधानी।

चूक[2] (वि.) बहुत खट्टा–यो आम तै कती खाट्टा चूक लिकड़्या।

चूकड़ा (पुं.) दे. चीघसा।

चूकणा (क्रि. स.) 1. अवसर चूकना, 2. निशाना चूकना, 3. बात मन से उतरना, भूलना। **चूकना** (हि.)

चूकना (क्रि. स.) दे. चूकणा।

चूक्खा (पुं.) सूत का गोला।

चूघड़ा (पुं.) चार ओर बत्तियों वाला दीया। चार बत्ती वाला दीया जो मृत्यु पर तेल से और दीवाली आदि शुभ अवसर पर घी से जलाया जाता है। दे. चुमक्खा।

चूघली (स्त्री.) मिट्टी का छोटा पात्र। दे. चीघसा।

चूची (स्त्री.) दे. चूँच्ची।

चूटणी (स्त्री.) दे. चूँटणी।

चूड़ा (पुं.) 1. कंगन, 2. लाख से बनी मोटी चूड़ी, 3. हाथी दाँत का कंगन; 4. (दे. चूँड्डा); **~कर्म** मुंडन संस्कार।

चूड़ी (स्त्री.) 1. महिलाओं द्वारा हाथ में पहनने की काँच या धातु आदि की चूड़ी या वलय, 2. पैर में पहनने की चाँदी की चूड़ी, 3. गिरारी, कील या ढक्कन आदि में कसने के लिए बनी घुमावदार गहरी रेखाएँ; **~करणा/तोड़णा** पति की मृत्यु पर चूड़ी तोड़ना; **~पहरणा** 1. मनिहार से चूड़ी पहनना, 2. विधवा होने पर अन्य व्यक्ति से पति-सा व्यवहार रखना या करना, विधवा होने के बाद किसी अन्य की पत्नी बनना, 3. हार मानना, 4. लड़ाई से बचना या छिपना; **~पहराणा** 1. चूड़ी पहनाना, 2. किसी स्त्री को बिना विवाह के पत्नी रूप में स्वीकारना; **बैंगणी~** बैंगनी चूड़ी, वलय तथा चूड़ी; **~मुळणा** चूड़ी टूट जाना (अपशकुन के कारण 'चूड़ी टूटना' नहीं कहते); ~मोळणा 1. चूड़ी तोड़ना, 2. विधवा होना; **~होणा** चूड़ी टूट जाना।

चूड़ीदार (वि.) जिसमें चूड़ी या घेरे पड़े हों; **~पजाम्माँ** तंग मोहरी का लंबा पायजामा।

चूणा (क्रि. अ.) 1. टपकना, 2. रिसना, बूँद-बूँद टपकना; (वि.) वह जो चूए। **चूना** (हि.)

चूत (स्त्री.) योनि, भग, स्त्री की इंद्री।

चूतड़ (पुं.) 1. कूल्हा, नितंब, 2. गुदा।

चूतिया (वि.) 1. मूर्ख, 2. अनाड़ी, 3. जनानिया, 4. उपेक्षित (व्यक्ति)।

चून (पुं.) आटा; **~ओसणणा** आटा गूँधना; **~माँगणा** भीख माँगना; **~रळाणा** पशुओं के चारे में आटा मिलाना।

चून कचरिआ (स्त्री.) बेसन में कचरी डालकर तैयार की गई कढ़ी।

चून कचरिया (पुं.) कचरी को आटे में मिला कर पकाया गया भोजन।

चूना[1] (पुं.) 1. एक प्रकार का घाघरा, 2. (दे. चून्ना); (क्रि.अ.) (दे. चूणा)।

चून्ना[2] (पुं.) चूने का पत्थर; **~लाणा** हानि पहुँचाना। **चूना** (हि.)

चून्नी (स्त्री.) चुनरी। **चुन्नी** (हि.)

चूमणा (क्रि. स.) 1. प्यार करना, ओठ या गाल को चूमकर प्यार करना, चुंबन करना, 2. ज़बान से चाटना; **~चाटणा** 1. पशु द्वारा अपने बच्चे को ज़बान से चाटना, 2. प्यार करना। **चूमना** (हि.)

चूमा (पुं.) दे. चूम्मा।

चूम्मा (पुं.) 1. चुंबन, 2. चूमने की क्रिया। **चुम्मा** (हि.)

चूर[1] (पुं.) चूरा, छोटे-छोटे टुकड़े; **~चूर** 1. टुकड़े-टुकड़े, 2. छिन्न-भिन्न।

चूर[2] (वि.) 1. नशे में मस्त, 2. थका हुआ, 3. लीन, 4. खट्टा; **~होणा** 1. नशे में होना, 2. थका हुआ होना, 3. बहुत खट्टा होना, 4. चूरा-चूरा होना।

चूरण (पुं.) 1. पेट-दर्द को मिटाने के लिए त्रिफले आदि के कूट का छान, 2. चूरण की ओषधि, 3. चाट- मसाला। **चूरन** (हि.)

चूरणा (पुं.) दे. चुरणा; (क्रि. स.) चूरा बनाना।

चूरमाँ (पुं.) 1. चूरी, रोटी में घी डालकर तथा उसे रगड़ कर बनाया गया खाद्य पदार्थ (मकर संक्रांति के दिन इसमें मनमाता घी डाल कर खाते हैं, बाट चलते समय यह राह का उत्तम भोजन माना जाता है), 2. कचूमर (व्यंग्य में); **~(-में) का पिंड या पींड** चूरमे की पिंडी; **~करणा/बणाणा/**

मळणा/रगड़णा रोटी में गुड़ आदि रखकर तथा घी मिलाकर चूरमा बनाना; **घी~** श्रेष्ठ भोजन।

चूरा (पुं.) बहुत छोटे-छोटे टुकड़े, बुरादा; **~होणा** वस्तु का अनेक छोटे खंडों में टूटना।

चूरी (स्त्री.) 1. चने का छिलका या फोलर, 2. मोटा आटा, 3. चूरमा।

चूर्ण (पुं.) दे. चूरण।

चूल (स्त्री.) दे. चूळ।

चूळ (स्त्री.) 1. जड़–दाँत की चूळ हलगी, 2. दो जोड़ों का मिलान, 3. लकड़ी आदि में बनाया गया गड्ढा जिसमें अन्य चीज़ फँसाई जाती है–गाड्डी की चूळ-चूळ हल्लण लाग गी; **~जमाणा** एक वस्तु में दूसरी वस्तु ठीक विधि से फँसाना; **~जामणा** दाँत उगना; **~हलणा** जड़ हिलना।

चूळा (पुं.) 1. चौखट के साथ दीवार में गड़ा लकड़ी आदि का वह भाग जिस पर किवाड़ (कपाट) की किल्ली घूमती है, 2. किवाड़ की नीचे की किल्ली, 3. जड़, नीचे का भाग, (दे. चींद्धी), 4. जड़।

चूळिया (स्त्री.) धूल भरी गर्म हवाएँ, अंधड़।

चूल्ह (स्त्री.) दे. गरंड।

चूल्हा (पुं.) भोजन बनाने के लिए प्रयुक्त मिट्टी का वह पात्र जिसके दो या तीन ओर डेढ़-दो बालिश्त लंबी दीवार होती है (यह लगभग एक बालिश्त चौड़ा होता है, कई चूल्हों पर आगे के भाग में रोटी तथा पीछे के भाग में दाल बन सकती है, इसे प्रतिदिन चिकनी मिट्टी से पोतकर पवित्र किया जाता है); **उठाऊ~**1 वह चूल्हा जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर उठाकर रखा जा सके, 2. अनिश्चित स्थिति; **~चाक्की** चूल्हा और चक्की, घर का काम-धंधा; **~जळाणा** 1. खाना बनाना, 2. बहुत ख़र्च करना; **~नाँ चढणा/जळणा** 1. अभाव या कष्ट की स्थिति के कारण भोजन न बनना, 2. आपत्ति पड़ना; **~न्यारा करणा** अलग घर बसाना; **~न्योंत** परिवार के समस्त सदस्यों का निमंत्रण, (दे. चूँच्ची न्योंत); **~फूकणा /धमणा** 1. चूल्हा जलाना, 2. भोजन बनाना; **~फोड़णा** बहुत क्रोधित होना; **~भाड़ होणा** न लीपने सँवारने के कारण चूल्हा गंदा दिखना; **~(–हे) मैं जड़** किसी परिवार से गहरी जान-पहचान, घर के सभी भेदों की जानकारी; **~ ~आळा** साला; **~ ~होणा** 1. (साला होने के कारण) घर में पूरी पहुँच होना, 2. गहरी पहुँच होना।

चूल्हा-टैक्स (पुं.) पंचायत द्वारा लगाया गया गृह-कर, गृह-कर।

चूस (पुं.) रस, अरक, तत्त्व, सार; (क्रि. स.) 'चूसणा' क्रिया का आदे. रूप।

चूसणा (क्रि. स.) 1. गन्ना आदि चूसना, 2. शोषण करना; (पुं.) बच्चों द्वारा चूसा जाने वाला एक खिलौना; (वि.) चूसने में कुशल। **चूसना** (हि.)

चूसना (क्रि. स.) 1. दे. चूसणा, 2. दे. चूँघणा।

चूहड़ा (पुं.) 1. भंगी, जमादार, घर का कूड़ा-करकट उठाने वाला, मेहतर, 2. एक जाति जो गाँव में घरों की सफ़ाई का काम करती है (इनका पूज्य लाल **गुरु या राक्षस** अरुणाकृत माना जाता है), **3. एक** अनुसूचित जाति (भंगियों

के मुख्य गोत हैं—भानीवाल, भीलपरवार, टाक, गहलौत, खोली, गागरा, सरोही, चंडालिया, सिरसावाल, सिरियार)।

चूहड़ी (स्त्री.) भंगिन।

चूहा (पुं.) दे. मूस्सा।

चूहेदान (पुं.) दे. घुसेरा।

चें-चें (स्त्री.) 1. व्यर्थ का शोर, 2. चिड़ियों की चहक।

चेचक (स्त्री.) चेचक रोग (दे. मात्ता)।

चेज्जी (स्त्री.) चिनाई का काम।

चेटक (पुं) 1. जादू, 2. भूत-प्रेत; **~देखणा** अनोखी या अलौकिक घटना देखना; **~होणा** असाधारण या अलौकिक घटना घटित होना।

चेट्टा (पुं.) दे. जेट्टा।

चेट्ठा (पुं.) चीरे के खेल का वह गोला जिस पर चीरे (×) का चिह्न लगा होता है।

चेड़णा (क्रि.) सन, पटसन को तोड़ कर उसका रेशा अलग करना। दे. तलसंडा तोड़णा।

चेतंग (स्त्री.) हरियाणा की एक नदी। (राक्शी, दृषदवती)

चेत[1] (स्त्री.) 1. होश, 2. ज्ञान, 3. सावधानी।

चेत[2] (पुं.) 1. दे. चैत, 2. दे. चेत।

चेतक (पुं.) महाराणा प्रताप का एक प्रसिद्ध घोड़ा।

चेतणा (क्रि. अ.) 1. होश में आना, 2. सावधान होना, सतर्क होना; (क्रि. स.) 1. रोटी सेकना, 2. खाना। **चेतना** (हि.)

चेतन (वि.) 1. सावधान, जाग्रत, सजग, 2. जीवित; (पुं.) प्राणी।

चेतना (स्त्री.) चेतनता; (क्रि. अ.) दे. चेतणा।

चेतवा (वि.) चैत्र मास से संबंधित। चैत में उत्पन्न।

चेतावनी (स्त्री.) सतर्क होने की सूचना।

चेपणा (क्रि. स.) 1. दो चीज़ों को जोड़ना, 2. ज़बरदस्ती गले मढ़ना। **चिपकाना** (हि.)

चेपुआ (पुं.) फ़सल का एक रोग; (वि.) चिपचिपा, लेसयुक्त।

चेबड़ो (पुं.) दे. चेह्बड़ा।

चेब्ड़ा (पुं.) दे. चेभड़ा।

चेल्ला (पुं.) 1. शिष्य, विद्यार्थी, 2. किसी से धार्मिक मंत्र लेने वाला, 3. सच्चा सेवक, 4. भक्त; **~मूँडणा** 1. शिष्य बनाना, 2. अपने मत का बनाना, 3. संगत में मिलाना। **चेला** (हि.)

चेसटा (स्त्री.) 1. हरकत, चाल-ढाल, 2. ध्यान, 3. कुचेष्ट (व्यंग्य में)। **चेष्टा** (हि.)

चेहडू (पुं.) घी ताने के बाद छाछ, फेन आदि के रूप में बची गाद; **~का घी** 1. दुर्गंधयुक्त खट्टा घी, 2. बिना ताया हुआ घी।

चेहरा (पुं.) मुँह, मुखाकृति; **~उतरणा** चिंतित या लज्जित दीख पड़ना।

चेह्बड़ा (पुं.) सूअर का छोटा बच्चा।

चैंची (स्त्री.) बँधेज की ओढ़नी।

चै (अव्य.) या।

चैत (पुं.) चैत्र, देसी वर्ष का पहला महीना। **चैत्र** (हि.)

चैत बदी चौथ (स्त्री.) संकटचतुर्थी व्रत का दिन जो संभावित संकट निवारण के लिए किया जाता है।

चैत्र (पुं.) दे. चैत।

चैन (पुं.) आराम, सुख।

चैल्हू (वि.) सुर्ख लाल। दे. चहोर।

चोंक (पुं.) 1. चौराहा, 2. आंगन, 3. मंगल अवसर पर आटा, रंग आदि से भूमि पर रचा गया चीरा या चित्र। **चौक** (हि.)

चोंकड़ा (पुं.) 1. चार वस्तुओं का समूह, 2. चार जलेबियों का समूह, 3. चार कटोरियों वाला सागदान।

चोंकड़ी (स्त्री.) 1. पशु की छलाँग, छलाँग, कूद, 2. चार का समूह; **~भरणा/मारणा** 1. छलाँग मारना, 2. प्रसन्नता व्यक्त करना; **~भूलणा** होश-हवास गायब होना, घबराना। **चौकड़ी** (हि.)

चोंकणा (क्रि. अ.) चौंकना।

चोंच (स्त्री.) 1. पक्षी का मुँह, पक्षी के मुँह से आगे निकली हुई हड्डी, 2. वस्तु का नुकीला भाग।

चोंचली हाई (वि.) चोंचले करने वाली।

चोंतरा (पुं.) 1. मिट्टी आदि से बना ऊँचा मंच, 2. समाधि। **चबूतरा** (हि.)

चोंती (वि.) चौंतीस की संख्या। **चौंतीस** (हि.)

चोंधणा (क्रि. अ.) 1. चुँधियाना, 2. चौंकना, 3. हक्का-बक्का रहना। **चौंधना** (हि.)

चोंरी (स्त्री.) विवाह की वेदी।

चोंसला (पुं.) मुसलमानों की चौपाल।

चोंह्टी (स्त्री.) दे. चूँह्टी।

चोआ (पुं.) 1. भूमि के नीचे का जल-स्रोत, 2. जड़, मूल; (वि.) 1. पोषक—सबका चोआ (मुँह में भोजन डालने वाला) भगवान सै, 2. चुगलख़ोर; **~(-ए) मैं जड़** गहरी पैठ।

चोइया (पुं.) भीगी दाल से उतरे छिलके।

चोकटा (पुं.) चौराहा।

चोकन्ना (वि.) सावधान रहने वाला, चतुर, समझदार। **चौकन्ना** (हि.)

चोकर (पुं.) 1. दे. बूर, 2. दे. राळी।

चोकलिया (वि.) 1. चार कली की (रागनी), 2. जिसमें चार कलियाँ या भाग हों।

चोकस (वि.) 1. मज़बूत, सुगठित—आदमी तै चोकस गात का सै, 2. निश्चित—मेरी रामरमी चोकस करकै कह दिए, 3. सावधान रहने वाला—इसा चोकस आदमी होकै भी धोक्खा खाग्या, 4. सावधानी पूर्वक; **~करणा** 1. सावधान या सचेत करना, 2. मज़बूत करना; **~रहणा** ख़बरदार रहना, सावधान रहना; **~होणा** 1. सावधान होना, सचेत होना, ख़तरे के लिए तैयार रहना, 2. सुगठित शरीर का होना। **चौकस** (हि.)

चोकसाई (स्त्री.) सावधानी। **चौकसाई** (हि.)

चोकसी (स्त्री.) 1. सावधानी, 2. रक्षा, सुरक्षा। **चौकसी** (हि.)

चोक्का (पुं.) 1. रसोई, 2. चार कोण का पत्थर; (वि.) चार का समूह; **~करणा** 1. रसोई में लिपाई-पुताई करना, 2. रसोई के बरतन माँजना, 3. भोजन बनाना। **चौका** (हि.)

चोक्की (स्त्री.) 1. चार पैरों का नीचा-छोटा तख्त, 2. छोटा पीढ़ा, 3. पुलिस का छोटा थाना, 4. चौकीदारे का काम, 5. चौकीदारा करने वाली टुकड़ी, 6. चुंगी-वसूली का स्थान, 7. भूतों का झुंड, 8. चबूतरा, 9. मकान की कुर्सी; **~आणा** 1. चौकीदारे की बारी आना, 2. क्रमानुसार काम की बारी आना, 3. जादू-टोना लगना, भूत या प्रेतात्मा का प्रवेश होना; **ऊँच्ची~** उभरा चबूतरा जिस पर मकान बनाया जाता है (डी.

पी. सी.); **~काढणा** 1. क्रम से चौकीदारा करना या देना, 2. भूतात्मा निकालना, 3. वसूली देना या महसूल देना; **~घालणा** 1. जादू-टोना करना, (दे. घाल[2]), 2. चौकी बिछाना; **~चढणा** 1. विवाह के लिए तैयार होना, 2. सूली पर चढ़ना, 3. साधू बन जाना **~तारणा** 1. मामा द्वारा भानजी को फेरों के बाद पटरे से उतारना, 2. चौकीदारे की बारी उतारना, 3. भूत, जादू-टोना उतारना; **~तोड़ तमास्सा** स्वाँग, साँग; **~देणा** 1. चौकीदारा करना, 2. सत्कार पूर्वक आसन देना; **~बैठणा** 1. तपस्या करना, 2. भजन-पूजन करना, 3. लड़की का विवाह-मंडप में बैठना; **~भरणा** 1. चुंगी का महसूल अदा करना, 2. चौकीदारे के पैसे देना। **चौकी** (हि.)

चोक्कीदार (पुं.) 1. पहरा देने का काम करने वाला कर्मचारी, 2. सरकार का प्रतिनिधि जो पटवारी को जन्म-मरण की भी सूचना देता है। **चौकीदार** (हि.)

चोक्कीदारा (पुं.) 1. पहरेदारी का काम, 2. चौकसी करने का कार्य, 3. चौकसी या सुरक्षा का कार्य करने की मज़दूरी। **चौकीदारा** (हि.)

चोक्कीदारी (स्त्री.) 1. पहरा देने का काम, 2. हीन कार्य। **चौकीदारी** (हि.)

चोक्खट (स्त्री.) 1. वह ढाँचा जिसमें किवाड़ के पल्ले जुड़ते हैं, 2. मुखाकृति। **चौखट** (हि.)

चोक्खा (वि.) 1. अच्छा, 2. बिना खोट का, खरा, शुद्ध, 3. काम चलाऊ– जिसा सोच्चै सै उसा तै कोन्या पर चोक्खा सै। **चोखा** (हि.)

चोखटा (पुं.) 1. चहारदीवारी, चारों ओर का घेरा, 2. मुखाकृति, 3. चौखट, बड़ी चौखट।

चोखटी (स्त्री.) छोटी चौखट।

चोखा (वि.) दे. चोक्खा।

चोगरदा (पुं.) दे. चुगरदा।

चोगा (पुं.) दे. चोग्गा।

चोग्गा (पुं.) 1. साधुओं द्वारा धारण किया जाने वाला ढीला-ढाला कुर्ता, 2. हल जोतते समय चद्दर को लपेट कर सिर पर रखा जाने वाला टोपा। **चोगा** (हि.)

चोचड़ू (वि.) 1. शौकीन, 2. इच्छुक, . रसिक।

चोचला (पुं.) 1. नख़रा, 2. चुलबुलापन; **~(ले-) करणा** ओढ़ने-पहनने, खाने-पीने के समय नख़रे दिखाना।

चोज (पुं.) आश्चर्य (अही.); दे. अचरज।

चोट (स्त्री.) 1. आघात, एक वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु का बल के साथ किया गया टकराव–भार्या मूसळ की चोट तैं बाजरे की राळी तावळी उतरै सै, 2. घाव, जख्म, 3. प्रहार करने की क्रिया, 4. मानसिक चोट–जिवान छोहरे की चोट वे सही जा सै; (पुं.) टोपा, नोकदार टोपी; **~आणा** चोट लगना, जख्मी होना; **~करणा** 1. हानी पहुँचाना, 2. घायल करना, 3. आक्रमण करना; **~खाणा** 1. हानि उठाना, 2. घायल होना, 3. दिल को आघात पहुँचना; **~मारणा** 1. आघात करना, 2. व्यंग्य कसना।

चोटिया (पुं.) 1. चद्दर की कई तह करके बनाया गया टोपा, 2. फूँदा, टोपी के ऊपर का फूँदा या फुँदना, 3. जूती के पीछे के भाग में उभरा हुआ चाम का फीता (जिसे पकड़ कर जूती पहनते हैं), 4. तराजू की डंडी की रस्सी पर लगा फूँदा; (वि.) चोट करने वाला।

चोटी (स्त्री.) दे. चोट्टी।

चोट्टा (पुं.) 1. मोटी या भारी चोटी, 2. स्त्री की चोटी, 3. बड़ा टोपा; (वि.) चोरटा, चोर। **चोटा** (हि.)

चोट्टी (स्त्री.) 1. शिखा, सिर के मध्य भाग से कुछ पीछे की ओर के बालों का गुच्छा जिसे हिंदू अपने सिर पर धारण करता है (स्नान के बाद इसमें गाँठ लगा दी जाती है, कुछ लोग गोपुच्छ या गोखुर के आकार की चोटी रखते हैं, कुछ बच्चों के सिर पर दो चोटी रख दी जाती हैं, काक के ऊपर वाली चोटी को कुलदेवी या कुलदेवता पर यथा समय चढ़ा दिया जाता है), 2. स्त्रियों द्वारा लंबे बाल गूँथकर बनाई गई वेणी, 3. सूत आदि का डोरा जिसे महिलाएँ अपने बालों में गूँथती हैं, 4. कलगी, 5. सबसे ऊपर का उठा हुआ भाग, शिखर, 6. सिर–के मेरी चोट्टी पै बैट्ठैघा, 7. उत्कर्ष, चरमोत्कर्ष, 8. पर्वत-शिखर, 9. जटा; (वि.) चोरटी; **~आळा** 1. हिंदू, 2. जटाधारी; **~कटणा** 1. अपमान होना, लज्जित होना, 2. धर्म बदलना; **~काटणा** 1. धोखा देना, मूर्ख बनाना, 2. बलात् धर्म-परिवर्तन करना, 3. टोना करना; **~बाँधणा** 1. प्रतिज्ञा करना, 2. किसी कार्य के लिए कटिबद्ध होना; **~राखणा** 1. इज़्ज़त बचाना, लाज रखना, 2. चोटी बढ़ाना, (दे. चूँड्डा धरणा)। **चोटी** (हि.)

चोड़ (स्त्री.) 1. छीदापन, 2. भूल--आग्गै दौड़ पाच्छै चोड़, 3. हानि।

चोढ (स्त्री.) 1. चाव, 2. दे. चोहड्डा; (वि.) मनचाही।

चोणा (क्रि. स.) 1. तरल पदार्थ को टपकाना या उँडेलना, 2. चुपके से कान में कहना–याह बात उसके कान्नाँ मैं चो दिए (कह दिए); (पुं.) पशुओं का झुंड। **चुआना** (हि.)

चोत्था (वि.) चौथे नंबर का या चौथे क्रम पर। **चौथा** (हि.)

चोत्था-पण (पुं.) 1. बुढ़ापा, 2. चतुर्थ आश्रम। **चौथापन** (हि.)

चोत्थी[1] (वि.) चौथे नंबर की; (स्त्री.) चौथी कक्षा। **चौथी** (हि.)

चोत्थी[2] (स्त्री.) गोबर, अल्प मात्रा का गोबर--माँ हाँड्डै चोत्थी-चोत्थी नैं पूत बिटोड़े बकसै (परिश्रम का मूल्य नहीं आँकना)। **चोंथ** (हि.)

चोथ[1] (पुं.) गोबर; **~करणा** 1. हार मानना, 2. काम बिगाड़ना।

चोथ[2] (स्त्री.) 1. चतुर्थी तिथि, 2. कर, 3. उपज का चौथाई अंश; **~आणा** कर अदा करने की बारी आना; **~काढणा** उपज का चौथा भाग निकालना।

चोथिया (पुं.) 1. उपज के चौथे हिस्से का साझीदार, 2. चौथे दिन चढ़ने वाला ज्वर।

चोदणा (क्रि. स.) 1. स्त्री प्रसंग करना, मैथुन क्रिया करना, 2. वंचिका देना।

चोदना (क्रि. स.) दे. चोदणा।

चोदरी (पुं.) दे. चौधरी।

चोदा (वि.) चौदह की संख्या।
चौदह (हि.)

चोदा-चोकस (अव्य.) निश्चित रूप से। उदा. चोदा चोकस हारै बाजी।

चोद्दस (स्त्री.) चतुर्दशी तिथि।
चौदस (हि.)

चोद्धर (स्त्री.) 1. चौधराई, चौधराहट, 2. प्रधानगी, 3. बड़प्पन, 4. दावा, हक़, 5. राज, 6. आदेश, 7. भेड़िया धसानी शासन; **~आणा** 1. व्यक्ति, परिवार, कुल, खाप, गोत्र आदि को बड़ा सम्मान या पद मिलना, 2. गर्व, अभिमान या अहंकार का भाव आना; **~करणा** 1. अपनी बात मनवाना, 2. शासन करना, प्रधानगी करना, 3. महत्त्वपूर्ण मसले पर निर्णय देना; **~खुसणा** सम्मान का पद छिनना; **~जमाणा** 1. शासन जमाना, 2. हक़ का दावा करना, 3. क़ब्ज़ा करना, 4. नाजायज़ दबाव डालना; **~जाणा** 1. मान, सम्मान, पद गौरव छिनना, 2. तिरस्कार होना; **~थ्याणा** बड़ा पद मिलना; **~दिखाणा** 1. अपना हक़ या दावा दिखाना, 2. किसी को डराना, धमकाना या सताना, 3. अन्य की वस्तु पर अपना हक़ बताना; **~पाणा** सम्मान या बड़ा पद पाना; **~मनवाणा** 1. अपनी बात मनवाना, 2. अपना बड़प्पन सिद्ध करना। **चौधर** (हि.)

चोधराट (स्त्री.) 1. शासन, हुकूमत, 2. मुखियापन, प्रधानगी, 3. ज़बरदस्ती अधिकार जतलाने का भाव; **~जमाणा** ज़बरदस्ती अधिकार जतलाना, कोई चीज़ कब्ज़े में करना।
चौधराहट (हि.)

चोधरी (पुं.) 1. स्वामी, मालिक, 2. नाम से पहले जोड़ा जाने वाला सम्मान सूचक शब्द जो अधिकतर जाट, गूजर आदि जाति के लोगों के लिए प्रयुक्त होता है, 3. मुखिया, प्रधान, 4. सम्मानित व्यक्ति, बड़ा आदमी; **~बणणा** विवाह आदि के कार्य में मुख्य कर्ता-धर्ता बनना; **~मानणा** किसी एक व्यक्ति में पूर्ण निष्ठा रखना; **~होणा** 1. किसी चीज़ पर अधिकार जमा लेना, 2. किसी काम का कर्ता-धर्ता होना, 3. बड़ा आदमी होना। **चौधरी** (हि.)

चोप (स्त्री.) 1. दाँत में जड़ी धातु की कील, 2. ऊपर के दाँत, (दे. चोप्पा); **~जड़वाणा** (सौंदर्य आदि के लिए) दाँत में सोने, चाँदी, ताँबे आदि की कील लगवाना।

चोपट (वि.) 1. चारों ओर से खुला हुआ, खुला हुआ—चोपट किवाड़ खोल कै सोग्या जिब नींद आई, 2. नष्ट, विनाश—कर्या कराया सब कुछ चोपट कर दिया मींह नें; (स्त्री.) चौपड़ का खेल; **~करणा** नाश करना, किया हुआ काम बिगाड़ना; **~होणा** 1. बना बनाया काम बिगड़ना, 2. नष्ट होना। **चौपट** (हि.)

चोपटा (पुं.) 1. मुँह, 2. आगे के चार दाँत, 3. खुला स्थान।

चोपड़णा (क्रि. स.) 1. रोटी को घी लगाना, 2. घी, तेल आदि से लथपथ करना, 3. चापलूसी करना, 4. रिश्वत देना।
चुपड़ना (हि.)

चोपड़ी (वि.) 1. चुपड़ी हुई, चिकनी, 2. घी लगी हुई, 3. 'चोपड़णा' क्रिया का भूत कालिक स्त्रीलिंग रूप; **~अर दो दो** दो-दो लाभ उठाना; **~कहणा** चापलूसी करना; **~चीकणी~** 1. सजी-सँवरी, 2. चापलूसी।

चोपाड़ (स्त्री.) दे. चुपाड़।

चोप्पड़ (पुं.) 1. घी, 2. स्निग्ध पदार्थ, 3. लालच; (स्त्री.) चौपड़ का खेल; (क्रि.) 'चोपड़णा' क्रिया का आदे. रूप।

चोप्पा (पुं.) 1. आगे के ऊपर के दो दाँत, 2. सामने के दाँतों की पंक्ति; **ऊँच्चा~** ऊँचा चोपा, आगे की ओर निकले दाँत; **~चढाणा** आगे के दाँत लगवाना, दाँत चढ़वाना; **~झाड़णा** 1. दाँत तोड़ना, 2. अपमान करना। **चोपा** (हि.)

चोबी (पुं.) चौबीस की संख्या।
चौबीस (हि.)

चोबीसा (पुं.) 1. एक भाईचारे के चौबीस गाँव की खाप। 2. विक्रम संवत 1924 का भयंकर अकाल।

चोबुळधा (वि.) जिसमें चार बैल जोते जाएँ।

चोब्बा (पुं.) 1. पंडा, तीर्थ स्थान का पंडित, 2. ब्राह्मणों का एक गोत्र, चतुर्वेदी ब्राह्मण; (वि.) बहुभोजी।
चौबा (हि.)

चोब्भा (पुं.) लोहे की कील, छोटी कील।

चोभ[1] (स्त्री.) आँख की चोट जिसमें आँख लाल हो जाती है, आँख की लाली; (क्रि. स.) 'चोभणा' क्रिया का आदे. रूप; **~झाड़णा** हाथ की अँगूठी, मोर के चंदे या झाड़ू आदि से आँख में झाड़ा लगाना, मंत्र विद्या से आँख की लाली ठीक करना; **~पड़णा/होणा** चोट आदि लगने के कारण आँख लाल होना, आँख में कोये के पास लाली होना।

चोभ[2] (स्त्री.) दे. चीब्भी।

चोभ[3] (पुं.) चोट। डंके की चोट। उदा. –लागै चोभ अंगारे में। दे. चोभ[1,2]।

चोभणा (क्रि. स.) 1. गीली भूमि में पौधे लगाना या गाड़ना, पनीरी आदि लगाना, फ़सल बोना, 2. हल्के से गाड़ना।

चोभणी (स्त्री.) चमड़ा सीने का औजार।

चोभळणा (क्रि. स.) 1. किसी चीज को मथना, 2. किसी तरल चीज में बार-बार हाथ डालकर अपवित्र करना या मैला करना, तुल. घिचोळणा।

चोभळा (पुं.) 1. गड्ढा, पौधा लगाने के लिए खोदा गया गड्ढा, 2. वह गड्ढा जिसमें थोड़ा पानी हो।

चोभळी (स्त्री.) पशु के खुर से बना छोटा गड्ढा जिसमें वर्षा के समय पानी भर जाता है, छोटा गड्ढा, (दे. चहली)।

चोमणा (पुं.) 1. एक बीघे में चार मन (अन्न, गुड़, सनी आदि) की उपज, 2. चार मन का माप, चार मन भार मापने का पात्र।

चोमासा (पुं.) दे. चमास्सा।

चोमुखा (वि.) 1. चार मुख का, 2. चार बत्तियों वाला (दीपक), 3. (मकान) जिसमें चार ओर दरवाज़े हों, (दे. चुमक्खा)। **चौमुखा** (हि.)

चोया (पुं.) दे. चोइया; (क्रि. स.) 'चोणा' क्रिया का भू.का. रूप।

चोर (पुं.) 1. दूसरों की वस्तु चुराने वाला व्यक्ति, 2, ठग।

चोरटा[1] (वि.) छुटपुट चोरी करने वाला।

चोरटा[2] (पुं.) हरियाणा का एक अभिसारिका गीत।

चोर दाँत (पुं.) दाँत पर उगा दाँत।

चोरबत्ती (स्त्री.) बैट्री, टार्च।

चोरस (वि.) 1. चार कोने की (आकृति), 2. वर्गाकार। **चौरस** (हि.)

चोरसा (पुं.) एक प्रकार का ओढ़ना या ओढ़नी जो चारों ओर से बेल-बूटेदार और बीच से उन्नाबी आदि रंग की होती है।

चोरा (पुं.) वह पशु जिसकी पूँछ के बाल तथा पलकें चामरे या भूरे रंग के हों; (वि.) चाँवरे रंग का।

चोराहा (पुं.) दे. चुराह्या।

चोरी[1] (स्त्री.) चुराने का काम, चोरकर्म; (क्रि. स.) 'चोरणा' क्रिया भूत-कालिक स्त्रीलिंग रूप।

चोरी[2] (स्त्री.) दे. चँवर; **~डोलणा** चँवर से धीरे-धीरे पवन करना।
चँवर (हि.)

चोलण।। (पुं.) दे. चोल्ला।

चोला (पुं.) 1. दे. चोल्ला, 2. दे. चोळा[1, 2]।

चोळा[1] (पुं.) 1. मोटी दाल, 2. चौले की फलियाँ, लोबिया; **~से दाँत** सफेद-सुंदर-छोटे दाँत।

चोळा[2] (पुं.) 1. वह कटि वस्त्र जो दुल्हन विवाह के समय पहनती है, 2. जामा; **~चून्नी** चोला और चुन्नी; **~(–ळे) मैं राँड होणा** द्विरागमन या मुकलावे से पहले ही विधवा होना। **चोला** (हि.)

चोळाई (स्त्री.) दे. चुलाई।

चोली (स्त्री.) दे. चोल्ली।

चोल्लड़ (वि.) 1. चार लड़ियों का, 2. चार लड़ी का (हार), 3. चार तह का; **~करणा** 1. चार तह का बनाना, 2. चार तह में गूँथना, 3. पीटना; **~हार** चार लड़ियों का हार।
चौलड़ा (हि.)

चोल्ला (पुं.) 1. वस्त्र, जामा, वह वस्त्र जो पहले-पहल नवजात शिशु को पहनाया जाता है, 2. चोगा, 3. शरीर; **~तारणा** मरना; **~पहरणा** 1. साधु का वेश धारण करना, 2. नए वस्त्र धारण करना; **~बदलणा** 1. पुनर्जन्म होना, 2. मृत्यु होना, 3. योनि बदलना। **चोला** (हि.)

चोल्ली (स्त्री.) अँगिया, तनीदार उप-वस्त्र जिसे महिलाएँ छाती पर धारण करती हैं (इसे कई बार गोटे, शीशे आदि से भी सजाया जाता है); **~तारणा** अपमान करना, आबरू लूटना; **~दामण** पूरी तीयल, चोली तथा दामन, (दे. तीयल); **~ ~का साथ** समान और गहरे ध रातल की मित्रता, पक्की दोस्ती; **~प्याणा** बच्चे को दूध पिलाना; **~बदल भाण** पक्की सहेली, चोली-बदल बहन; **~मैं हाथ देणा** 1. वर्जित कार्य करना, 2. इज़्ज़त लूटना। **चोली** (हि.)

चोल्लू (पुं.) 1. अनोखा काम, 2. धूर्तता का काम; **~करणा/काटणा/पाटणा** 1. अनोखा काम करना, 2. चालाकी से काम करना, 3. व्यवहार में सीमोल्लंघन करना; **~होणा** विचित्र या असंभावित घटना घटित होना।

चोवा (पुं.) भूमि के अंदर प्राप्त जल स्रोत; (वि.) पोषक, पालक; **~आणा** खोदते-खोदते जल-स्रोत निकलना; **~ऊतरणा** कूएँ में पानी कम होना; **~काढणा** 1. कूएँ को गहराई तक खोदना, 2. बात की गहराई में जाना; **~(–वे) की बात** 1. गहरी बात, 2. गुप्त बात; **~चढणा** 1. कूएँ का पानी ऊपर आना, 2. अधिक वर्षा के कारण भूमि के नीचे का पानी ऊपरी सतह तक आना, 3. चवे के पानी का ऊपर आकर बह निकलना, सेम आना;

~**तारणा** कूएँ को जल-स्रोत तक खोदना (इस समय प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए गुड़ या लड्डू बाँटे जाते हैं)। **चवा** (हि.)

चोसी (स्त्री.) 1. खादी, हाथ का बना मोटा कपड़ा, 2. चार लड़ से बना कपड़ा।

चोस्सर (पुं.) 1. वधू का चौथी बार ससुराल आने का भाव, 2. चौपड़ का खेल; (वि.) 1. चार लड़ी का (हार), 2. चार बार जोती हुई (भूमि); ~**करणा** 1. भूमि को चार बार जोतना, 2. लड़की को चौथी बार ससुराल भेजने के लिए कपड़े आदि तैयार करना; ~**दिखाणा** चौथी बार ससुराल जाते समय लड़की को दिया जाने वाला दहेज पास-पड़ोस की स्त्रियों को दिखाना; ~**पणमेस्सर** चार बार जोती गई भूमि भगवान के समान अतुल ध न देती है। **चोसर** (हि.)

चोहद्दी (स्त्री.) 1. चारों ओर की सीमा, 2. चौदह गाँव की खाप। **चौहद्दी** (हि.)

चोहर्याँह् (वि.) वह वस्तु जिसकी चार तह की गई हों। **चौहरा** (हि.)

चोहसी (स्त्री.) दे. चोसी।

चोहल्ला (पुं.) 1. अचानक लगने वाला झटका, 2. जूँ निकालते समय सिर में लगने वाला झटका, 3. विवाह-शादी के समय तेल-बान चढ़ाते-उतारते समय भाभी द्वारा हँसी में लगाया जाने वाला झटका; ~**मारणा** झटका देना।

चौंकणा (क्रि. अ.) 1. चौकन्ना होना, हक्का-बक्का रहना, 2. सोते समय अचानक जाग उठना, 3. डरना, 4. पशु का भड़कना या बिदकना। **चौंकना** (हि.)

चौंकना (क्रि. अ.) दे. चौंकणा।

चौंतरा (पुं.) भूमि पर उठा चौकोर ठूहा या मिट्टी का मंच। **चबूतरा** (हि.)

चौंतीसा (पुं.) विक्रम संवत् 1934 (जो अकाल के कारण जाना जाता है); **~(-से) का काळ** विक्रम संवत् 1934 का वर्ष जिसमें हरियाणे में भयंकर अकाल पड़ा था (इसके बारे में कहावत है कि 'चौंतीसे ने चौंतीस मारे, जीए बैस, कसाई। ओह मारै ताखड़ी, उसनैं छुरी उठाई।।' अर्थात् इस संवत् में छत्तीस जातियों में से दो जातियों ने लाभ उठाया, व्यापारी ने महँगा अन्न बेचा और कसाई ने सस्ते भाव में पशु खरीद कर खाल का व्यापार किया)।

चौंध (स्त्री.) चमक।

चौंसी (स्त्री.) दे. चोसी।

चौंहटी (स्त्री.) दे. चूँहटी।

चौआ (पुं.) 1. दे. चवा, 2. दे. सोत[2]।

चौक (पुं.) दे. चोक।

चौकड़ी (स्त्री.) दे. चोंकड़ी।

चौकन्ना (वि.) दे. चोकन्ना।

चौकस (वि.) दे. चोकस।

चौकसी (स्त्री.) दे. चोकसी।

चौका (पुं.) दे. चोक्का।

चौकी (स्त्री.) दे. चोक्की।

चौकीदार (पुं.) दे. चोक्कीदार।

चौखट (स्त्री.) दे. चोक्खट।

चौखटा (पुं.) दे. चोखटा।

चौखड़ (वि.) 1. चार समय का, 2. चार भागों में विभाजित; ~**रोट्टी** बारात को दिया जाने वाला चार समय का भोजन।

चौखड़ी (वि.) 1. चार समय की, 2. चौकड़ी, चार का समूह।

चौगड्डा (पुं.) दे. चुगड्डा।

चौगान (पुं.) चौराहा, मार्ग।

चौगानण (वि.) चौगान या चौराहे से संबंधित; **~मात्ता** चौराहे पर स्थापित मातृका या माता की मूर्ति, चौराहे की देवी।

चौड़ा[1] (पुं.) पशु बाँधे जाने वाले स्थान का कीचड़।

चौड़ा[2] (वि.) 1. खुला, विस्तृत, 2. बिना ढका; **~चालणा** अकड़ कर चलना; **~(–ड़ै)** सरे आम, सबके सामने; **~(–ड़ै) धाड़े** सरे आम, तुल. दिन धोळी; **~(–ड़ै) राम्मैं** सरे आम (सबके सामने); **~(–ड़े) हाथ करणा/ दिखाणा** 1. समय पर सहायता न करना, 2. कुछ भी पास न होना; **~होणा** अकड़ कर चलना।

चौड़ाई (स्त्री.) दे. चुड़ाई।

चौड़ी उघाड़ी (वि.) 1. बिना धरी ढकी, 2. सरेआम खुली।

चौतंग (स्त्री.) शिवालक के गिरिपादीय क्षेत्र से निकलने वाली एक बरसाती नदी।

चौथ (स्त्री.) दे. चोथ[2]।

चौथा (वि.) दे. चोत्था।

चौथाई (वि.) दे. चुथाई।

चौथी (वि.) दे. चोत्थी[1]।

चौदस (स्त्री.) दे. चोद्दस।

चौदह (वि.) दे. चौदाह।

चौदाह (वि.) चौदह की संख्या; **~की साल** विक्रम संवत् 1914 जो प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का वर्ष था (सन् 1857), गदर का वर्ष। **चौदह** (हि.)

चौधरी (पुं.) दे. चोधरी।

चौना (पुं.) भेड़ बकरी आदि का झुंड। **~खराब होणा** अपना परिवार वश में न होना।

चौपट (वि.) दे. चोपट।

चौपटा (पुं.) दे. चुराह्या।

चौपाई (स्त्री.) दे. चुपाई।

चौपाया (पुं.) दे. चुपाया।

चौपाल (स्त्री.) दे. चुपाड़।

चौबारा (पुं.) दे. चुबारा[1]।

चौबे (पुं.) दे. चोब्बा।

चौबोला (पुं.) दे. चमोल्ला।

चौमंज़िला (वि.) दे. चुमंजला।

चौमासा (पुं.) दे. चमास्सा।

चौमुखा (वि.) दे. चोमुखा।

चौरंगा (वि.) दे. चुरंगा।

चौरंगी नाथ (पुं.) हरियाणे में पागल-पंथ संप्रदाय के प्रवर्तक [इनका दूसरा नाम पूरण भगत था, इन्हें गोरखनाथ का गुरुभाई, राजा सातवाहन का पुत्र और मछंदरनाथ का शिष्य बताया जाता है, इन्होंने 'प्राण संकली' नामक पुस्तक रची है, इन्होंने हरियाणे में बोहर ग्राम (रोहतक) में 12 वर्ष तक तपस्या की, इनके शिष्यों को जोगी कहते हैं]।

चौरस (वि.) दे. चोरस।

चौरासी (वि.) दे. चुरास्सी[1]।

चौराहा (पुं.) दे. चुराह्या।

चौरी (स्त्री.) बेदी, दे. चोरी[2]।

चौळा[1] (पुं.) 1. एक अनाज, 2. चोले की फलियाँ।

चौळा[2] (पुं.) पका हुआ बिना कुटा धान।

चौलाई (स्त्री.) दे. चुलाई।

चौसंग (वि.) चार भागों में विभक्त कोई वस्तु।

चौसंग-जेळी (स्त्री.) खेती-बाड़ी के अनेक कामों में प्रयुक्त एक औज़ार जिसमें एक लंबी लाठी के किनारे पर सींगनुमा चार नुकीले डंडे होते हैं।

चौसर (पुं.) दे. चोस्सर।

चौहड्डा (पुं.) 1. स्मृति, याद, किसी से मिलने की तीव्र इच्छा, 2. अपने प्रिय की अनुपस्थिति में बालक के हृदय में उपजा प्यार; **~(–डे) लागणा/होणा** 1. याद सताना, 2. बालक को अपने माँ–बाप या प्रिय संबंधी की बहुत याद आना और हर क्षण बिलखना–भाणजे कै अपणी दाद्दी की याद मैं चौहड्डे होगे, छोहरी ने उलट पाह्याँ (तुरंत) सुसराड़ जाणा पड़्या।

चौहद्दी (स्त्री.) चारों ओर की सीमा।

चौहान (पुं.) राजपूतों का एक गोत्र।

च्याऊँ (पुं.) बिल्ली का बच्चा; (स्त्री.) बिल्ली के बच्चे द्वारा उत्पन्न ध्वनि।

च्याऊँ-म्याऊँ (स्त्री.) 1. छोटे बच्चे, 2. व्यर्थ का शोर।

च्यातर (वि.) चतुर।

च्याम चिड़ी (स्त्री.) 1. दे. स्याम चिड़ी, 2. सोण चिड़ी।

च्यार (वि.) चार की संख्या; **~आँख होणा** 1. अक्ल आना, 2. आगे-पीछे की बात सोचना; **~काणे पड़णा** हार होना, विफलता मिलना; **~कूँट** चार दिशाएँ; **~घड़ी का तड़का** उषा-काल; **~चंदे लाणा** ख्याति बढ़ाना, नाम रोशन करना; **~चंदे होणा** 1. चिंताग्रस्त होना, आगे-पीछे की चिंता लगना, 2. अक्ल आना; **~(–रूँ) खान्याँ/पास्याँ** हर ओर से; **~ ~चित होणा** 1. हर ओर से विफलता मिलना, 2. कुश्ती में बुरी तरह हारना; **~बिल्लात** 1. चार विलायत–इंग्लैंड, पुर्तगाल, फ्रांस, डच आदि देश, 2. बहुत दूरी का स्थान; **~ ~ पढणा** देश-विदेश की शिक्षा प्राप्त करना। **चार** (हि.)

च्यारी (स्त्री.) चौपड़ से मिलता-जुलता खेल।

छ

छ हिंदी वर्णमाला का सातवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण स्थान तालु है, इसके उच्चारण के समय हरियाणवी में जिह्वा का तालु के साथ अधिक स्पर्श होता है।

छंगा (वि.) जिसके हाथ या पैर में छः अंगुलियाँ हों।

छँटणा (क्रि. अ.) 1. अलग होना, 2. स्वच्छ होना, साफ़ होना, 3. बादल फटना या छितरना, 4. अपना अस्तित्व अलग दिखाना, प्रसिद्ध होना, 5. पेट साफ़ होना, 6. दुबला होना। **छटना** (हि.)

छँटना (क्रि. अ.) दे. छँटणा।

छँटमाँ (वि.) 1. अलग से, अन्य से भिन्न, 2. औरों से अच्छा, 3. अपना अस्तित्व या सत्ता अलग रखने वाला, 4. चालाक, धूर्त, 5. छाँटे हुए, मनपसंद। **छटवाँ** (हि.)

छँटवाणा (क्रि. स.) 1. चुनवाना, 2. तलाश करवाना, ढुँढ़वाना, 3. हाथ की चक्की

के आटे को गरंड से निकलवाना, 4. चटाना, अस्त्र को पैना करवाना। **छँटवाना** (हि.)

छँटवाना (क्रि. स.) दे. छँटवाणा।

छँटा (पुं.) पेट आदि से निकलने वाली गंदगी। छँटाव।

छँटाई (स्त्री.) 1. छाँटने का काम, छटनी, 2. चुनने का काम, 3. वृक्ष के पत्ते, टहनी आदि काटने का काम, 4. किसी वस्तु के साफ़ होने का भाव।

छंटी (स्त्री.) दे. संटी।

छँटैल (वि.) छँटा हुआ, धूर्त, बदमाश।

छंद (पुं.) दे. छन[1]।

छ: (वि.) छ: की संख्या या गिनती; **~लंबर पलटण** हरियाणवी पलटन जो द्वितीय विश्व-युद्ध में शहीद हुई।

छकड़ा (पुं.) 1. छोटी गाड़ी, 2. टूटी-फूटी गाड़ी।

छकना (क्रि. अ.) दे. छिकणा।

छकलिया (वि.) 1. छ: कली का, 2. (गाना) जिसमें छ: कलियाँ हों।

छकाना (क्रि. स.) दे. छिकाणा।

छकियार (स्त्री.) हाली की छाक या रोटी खेत में पहुँचाने वाली महिला।

छकियारी (स्त्री.) दे. छकियार।

छक्कड़ (वि.) छ: थन वाली गाय। दे. ढोल[2]।

छक्का (पुं.) 1. छ: का समूह, 2. खेल का एक दाँव, 3. सुध-बुध; **~(–के) छूटणा** 1. होश-हवास गुम होना, 2. पराजित होना, 3. साहस टूटना।

छगुणी (वि.) छ: गुनी।

छग्गी (स्त्री.) ताश का पत्ता जिस पर छ: चिह्न अंकित हों। **छक्की** (हि.)

छछूंदर (पुं.) 1. दे. चकचूँधर, 2. दे. सुणसुणियाँ।

छज्जा (पुं.) वह भाग जो दरवाज़े के ऊपर छत के साथ बाहर की ओर निकला होता है; (स्त्री.) मूँछ; **~(–जे) झुकणा** अधिक धनी होना; **~लाणा** सम्मान बढ़ाना।

छटंकी (स्त्री.) 1. पाँच तोले के बराबर का तोल, 2. इस तोल का बट्टा। **छटाँक** (हि.)

छट (स्त्री.) दे. छठ।

छटकणा (क्रि. अ.) 1. उछलना, 2. उछटना, 3. व्याप्त होना, फैलना–भोत बढ़िया चाँदणी छटक रही थी; (क्रि. स.) हाथ से बीज बखेर कर खेती बोना। **छटकना/ छिटकना** (हि.)

छटकना (क्रि. अ.) दे. छटकणा।

छटपटाणा (क्रि. अ.) 1. तड़पना, 2. फड़फड़ाना, 3. याद में व्याकुल होना, 4. छुड़ाकर भागने का प्रयत्न करना। **छटपटाना** (हि.)

छटपटाना (क्रि. अ.) दे. छटपटाणा।

छटाँक (स्त्री.) दे. छटंकी।

छटाँकेक (वि.) लगभग एक छटाँक।

छटा[1] (वि.) दे. छट्ठा।

छटा[2] (पुं.) 1. छटाव, 2. पेट से निकलने वाली गंदगी।

छटी (स्त्री.) दे. छठी।

छटे-चमास (क्रि. वि.) 1. चार-छ: महीने में, चार-छ: महीने के अवधि में–छटे-चमास म्हारे कान्नी (हमारी ओर) बी चक्कर मार ज्याया कर, 2. यदा-कदा, कभी-कभी।

छटोरा (वि.) छँटा हुआ (बदमाश)।

छट्टू (वि.) 1. छंटा हुआ (बदमाश), 2. चुना हुआ। 3. श्रेष्ठता के आधार पर छाँटा हुआ। उदा.–छट्टू बैल।

छट्ठा (वि.) क्रम से छः नंबर पर। **छठा** (हि.)

छट्ठी-देब्बी (स्त्री.) 1. सत्य की देवी, 2. सती देवी, 3. जन-साधारण की धारणा के अनुसार वह देवी जो जन्म के छठे दिन बालक का भाग्य लिखती हैं।

छठ (स्त्री.) पक्ष की छठी तिथि। **षष्ठी** (हि.)

छठा (वि.) दे. छट्ठा।

छठी (स्त्री.) 1. जन्म से छठा दिन, इस दिन संपन्न संस्कार [इस दिन बेहमात्ता (भाग्य की देवी) बालक का भाग्य लिखने आती है], 2. छठी कक्षा; **~ताँहीं का काढणा** सभी खाया-पीया व्यर्थ करना, इतना सताना कि बचपन का खाया-पीया भी व्यर्थ हो जाए।

छड़ (स्त्री.) 1. मोर का लंबा पंख, 2. धातु का लंबा और पतला डंडा, 3. काँटों की छड़ी; (क्रि. स.) 'छड़णा' क्रिया का आदे. रूप।

छड़णा (क्रि. स.) 1. छाज में डालकर फटकना, 2. पौधों को भूमि पर पटक-पटक कर अन्न निकालना, 3. बाजरे आदि के अन्न को ओखली में डालकर मूसल से कूटना, 4. पद-दलित करना, पैरों से रौंदना, भूमि पर पड़ी वस्तु पर बार-बार चक्कर लगाना, 5. किसी के घर बार-बार चक्कर लगाना—तनैं तैं म्हारा घर छड़ गिरा (दिया), 6. किसी बात को बार-बार दोहराना—बात नैं घणी छड़ण का के फाद्या, 7. पीटना, छेतना, कूटना; **~पिछोड़णा** 1. छड़ने या कूटने के बाद अन्न को छाज में डालकर फटकारना या साफ़ करना, 2. भिगोए हुए बाज़रे या जौ को ऊँखल में कूटकर तथा छाज में डालकर उसकी राळी (दे.), बूर या फोलर उतारना, 3. अन्न को साफ़-सुथरा करना, 4. परख करना, सूक्ष्म निरीक्षण करना। **छड़ना** (हि.)

छड़दम (पुं.) हुड़दंग; **~तारणा** हुड़दंग मचाना।

छड़वाणा (क्रि. स.) 'छड़णा' क्रिया का प्रे. रूप। **छड़वाना** (हि.)

छड़ा (वि.) 1. अकेला, 2. अविवाहित; (पुं.) अधिक टहनियों वाला वृक्ष, झाड़ी का टहना; (क्रि. स.) 'छड़णा' क्रिया का भूतकालिक पुं. रूप; **~काढणा/बुझाणा** होलिका दहन के समय जलते छड़े को निकाल कर भागना तथा उसे निकट के जोहड़ में बुझाना (जो इस बात का प्रतीक है कि भक्त प्रह्लाद अग्नि की लपटों से बच गया); **~गाडणा** वसंत पंचमी के दिन कैर (करील) के वृक्ष का छड़ काटकर उस स्थान पर गाड़ना जहाँ होलिका-दहन होगा, 1. (दे. डाँड्डा गड़णा) 2. (दे. होली का डाँड्डा); **~फेरणा/मारणा/लाणा** 1. खेत की रापड़ (दे.) तोड़ने के लिए किसी छड़ी को खेत पर घुमाना (ताकि खेत के ऊपर की पपड़ी टूट जाए और बीज-अंकुरण में सुविधा हो), 2. अन्न निकालने के लिए खलिहान में छड़ा घुमाना।

छड़ी (स्त्री.) 1. टहनी, 2. काँटेदार टहनी, 3. डंडी, 4. मोर-पंख का झाड़ू 5. गूगापीर की छड़ी; (वि.) अकेली (महिला); **~छटाँक** अकेली, ठाली।

छड़ी भटिंका (स्त्री.) कैर की छड़ी (?)

छड़े (पुं.) कड़े के आकार का आभूषण।

छण (स्त्री.) बहुत कम समय, (दे. छिण[1, 2])। **क्षण** (हि.)

छणक (स्त्री.) छन-छन की ध्वनि, छनकने की ध्वनि।

छणकणा (क्रि. अ.) 1. छन-छन की ध्वनि उत्पन्न होना, 2. उछलना, कूदना, 3. अपनी बड़ाई करना; (पुं.) झुन-झुना, एक खिलौना जिसे हिलाने से छन-छन की ध्वनि उत्पन्न होती है। **छनकना** (हि.)

छणकाणा (क्रि. स.) छनछनाना, झुन-झुने को हिलाकर 'छन'-'छन' की ध्वनि उत्पन्न करना। **छनकाना** (हि.)

छणणा (क्रि. अ.) किसी वस्तु का बारीक होकर निकलना या चलनी आदि से गिरना, 2. तार-तार होना, जीर्ण-शीर्ण होना, छिद्रित होना–1. धोत्ती कती छणगी, 2. गोलियाँ तैं देही छणगी, 3. बनना, आपस में मेल से रहना-सहना–दोन्नूँ नसेहड़ी (नशा करने वाले) सैं, दोनवाँ की खूब छणैगी, 4. छाना जाना। **छनना** (हि.)

छणबंदी (पुं.) दे. छानियाँ।

छणवाणा (क्रि. स.) दे. छणाणा।

छणाणा (क्रि. स.) 1. साफ़ करवाना, कूड़ा-करकट निकलवाना, 2. तलाश करवाना। **छनवाना** (हि.)

छणाळ/छणैळ (वि.) 1. चरित्रहीन, जो पर-पति से भेद नहीं बरतती हो, 2. कपटी या छली (महिला)। **छिनाल** (हि.)

छत (स्त्री.) दे. छात।

छतर (पुं.) दे. छत्तर।

छतराणी (स्त्री.) क्षत्रिय की पत्नी; (वि.) साहसी (महिला)। **क्षत्राणी** (हि.)

छतरापण (पुं.) 1. क्षत्रियत्व, 2. वीरता। **क्षत्रियपन** (हि.)

छतरी¹ (पुं.) 1. क्षत्रिय जाति, 2. क्षत्रिय जाति से संबंधित व्यक्ति (हरियाणे के जाट, गूजर, अहीर आदि लोग अपने को इसी जाति से संबंधित बताते हैं)। **क्षत्रिय** (हि.)

छतरी² (स्त्री.) 1. छाता, 2. समाधि पर बनाया गया मंडप, मढ़ी, 3. नीला आकाश, 4. खुंभी, कुकुरमुत्ता, छत्रक; **~आळा** भगवान, ईश्वर।

छतरीपण (पुं.) दे. छतरापण।

छतरी फोज़ (स्त्री.) वायु सेना की छाता-फौज़, छाताधारी फौज़।

छत्तर (पुं.) 1. विवाह के समय दूल्हे पर शोभा पाने वाला चमकीला बड़ा छाता, 2. राजा का छत्र; **~धाड़ी/धारी** 1. छत्र धारण करने वाला, 2. यशस्वी राजा। **छत्र** (हि.)

छत्तर-पत्ती¹ (पुं.) छत्रपति शिवाजी जो मराठा राजा थे और भारत में हिंदू राज्य स्थापित करना चाहते थे [इनके पेशवा हरियाणे में पहुँच गए थे और पानीपत की तीसरी लड़ाई में कुंजपुरे (करनाल) में युद्ध किया था, इनके जीवन से संबंधित अनेक दंत कथाएँ हरियाणे में प्रचलित हैं]। **छत्रपति** (हि.)

छत्तर-पत्ती² (स्त्री.) जन-धारणा के अनुसार नाक की देवी जो ब्रह्माजी के नाक से उत्पन्न मानी जाती है (महिलाएँ बच्चों की छक के समय उनकी सुरक्षा के लिए छींक की देवी का आह्वान करके 'छत्तर पत्ती नंदी माई' कहती हैं); **~नंदी माई** बच्चों की छींक के समय कही जाने वाली जकड़ी।

छत्ता (पुं.) 1. शहद की मक्खी, ततैया, भिड़ (भिरड़) आदि द्वारा बनाया हुआ घर, 2. मक्खियों का झुंड, 3. छोटे जीवों या कीड़े-मकोड़ों का झुंड, 4. चकता, दल, मोटा दल; **~(–ते) का छत्ता** दल का दल; **~बैठणा/लागणा** मधु-मक्खियों द्वारा छत्ता बना कर बैठना।

छत्ती (वि.) छत्तीस की संख्या। **छत्तीस** (हि.)

छत्तीस-जात (स्त्री.) छत्तीस जातियाँ, छोटी-बड़ी सभी जातियाँ, जैसे--ब्राह्मण, ब्यास, बनिया, जाट, गूजर, अहीर, राजपूत, खाती, लुहार, सुनार, कुम्हार, कहार, मनिहार, डाकोत, बिरागी, जोगी, भाट, नट, नाई, माली, तेली, धोबी, खटीक, डूम, छीपी, नीलगर, झीमर, गवारिया, बावरिया, भड़भूँजा, फकीर, चमार, धाणक, गडरिया, चूहड़ा, कसाई आदि (क्षेत्रीय भेद से 36 जातियों के नामों में भेद मिलता है); **~का पाणी पीणा** जाति-पाँति का भेद न बरतना; **~न्योतणा** सभी जातियों को भोज पर आमंत्रित करना।

छत्र[1] (पुं.) दे. छत्तर।

छत्र[2] (पुं.) अन्न क्षेत्र।

छत्रपति (पुं.) दे. छत्तर-पत्ती[1]।

छत्रभंग (पुं.) राजा के नाश का योग।

छदाम (पुं.) 1. पैसे का चौथाई भाग, 2. दो दमड़ी का सिक्का।

छन[1] (पुं.) वह कविता या पद जो दूल्हे की सालियाँ उसके पिंगल ज्ञान तथा बुद्धि, स्वभाव आदि की परख के लिए फेरे होने के बाद सुनाने को कहती हैं (दुल्हन के पक्ष की ओर से हर छन पर कुछ निधि या वचन दिया जाता है); **~कुहाणा** 1. फेरे हो चुकने के बाद कन्या-पक्ष की लड़कियों द्वारा दूल्हे से पद्य-बद्ध बात सुनना, 2. वर की अभिलाषा या इच्छा जानना। **छंद** (हि.)

छन[2] (पुं.) हाथ का एक आभूषण जिसमें जौ की आकृति के बीज उभरे होते हैं।

छन-कंगन (पुं.) छनकने वाला हाथ का एक आभूषण विशेष।

छनकना (क्रि. अ.) दे. छणकणा।

छनक-मनक (स्त्री.) गहनों की झंकार।

छनकाना (क्रि. स.) दे. छणकाणा।

छनछनाना (क्रि.स.) झनझनाना; (क्रि.अ.) चिढ़ जाना।

छनना (क्रि. अ.) दे. छणणा।

छनाना (क्रि. स.) दे. छणाणा।

छन्न (पुं.) 1. दे. छन[1], 2. दे. छन[2]; (स्त्री.) 'छन' की ध्वनि।

छपका (पुं.) पशु के शरीर पर उठने वाली फुंसी, ददोड़ा या छपाकी।

छपटा (पुं.) छोटी साँकल।

छपणा (क्रि. अ.) 1. अंकित होना, 2. प्रकाशित होना। **छपना** (हि.)

छपना (क्रि. अ.) दे. छपणा।

छपना-काळ (पुं.) विक्रम संवत् 1956 का वर्ष जब हरियाणे में भयंकर अकाल पड़ा था।

छपमाँ (वि.) 1. छपी हुई, 2. चित्रित (वस्त्र आदि)। **छपवाँ** (हि.)

छपवाना (क्रि. स.) दे. छपाणा।

छपाई (स्त्री.) 1. छापने का काम, 2. छापने की मज़दूरी।

छपाक (स्त्री.) पानी में उत्पन्न 'छप'-'छप' की ध्वनि।

छपाणा (क्रि. स.) 1. छपवाना, प्रकाशित कराना, 2. प्रसिद्धि देना, प्रचार करना। **छपाना** (हि.)

छपोणा (क्रि.) दे. छिपणा।

छपाना (क्रि. स.) दे. छपाणा।

छप्पर (पुं.) घास-फूस आदि की छान वाला घर जिसकी कच्ची दीवारें होती हैं या दीवार के स्थान पर लकड़ी खड़ी कर दी जाती है, तुल. उसारा; **~ठाणा** बहुत जिम्मेवारी सिर पर लेना; **~ढहणा/पड़णा** आपत्ति आना।

छबाल (स्त्री.) (पिंड खजूर?) उदा.–तोड़ी छबाल खजूर की रे। (लचं)

छबील (स्त्री.) धर्मार्थ प्याऊ, मीठे पानी की प्याऊ जो पर्व विशेष पर बैठाई जाती है।

छबील्ला (वि.) शौकीन, छैला। **छबीला** (हि.)

छब्बळ-छब्बळ (स्त्री.) पानी में उत्पन्न 'छप'-'छप' की ध्वनि।

छब्बी (वि.) छब्बीस की संख्या। **छब्बीस** (हि.)

छम (स्त्री.) 1. नृत्य के समय घुँघरू आदि से उत्पन्न ध्वनि, 2. वर्षा के समय उत्पन्न ध्वनि।

छमक (स्त्री.) 'छम'-'छम' की ध्वनि।

छमकणा (क्रि. अ.) 1. 'छम'-'छम' की ध्वनि उत्पन्न होना, 2. उछल-कूद करना, 3. बिजली का चमकना। **छमकना** (हि.)

छमछमाणा (क्रि. अ.) 1. 'छम'-'छम' की ध्वनि उत्पन्न होना, 2. बिजली का चमकना; (क्रि.स.) 'छम'-'छम' की ध्वनि उत्पन्न करना। **छमछमाना** (हि.)

छमछमाना (क्रि. अ.) दे. छमछमाणा।

छमाँ (स्त्री.) माफ़ी। **क्षमा** (हि.)

छमाई (स्त्री.) दे. छमाही।

छमासी (स्त्री.) दे. छमास्सी।

छमास्सी (स्त्री.) छः माशे के भार का सोने का सिक्का; (वि.) छः माशे के तोल की।

छमाही (स्त्री.) 1. मृत्यु के छः महीने बाद होने वाला श्राद्ध, 2. छः महीने का काल; (वि.) छः महीने का, छः महीने में घटित होने वाला।

छमुखा (वि.) छः मुँह वाला (दीपक आदि); **~दीवा** वह छः मुँह का दीया जिसमें एक साथ छः बत्ती जल सकें।

छम्मक-छम्मक (स्त्री.) 1. 'छम'-'छम' की ध्वनि, 2. 'ठुमक'-'ठुमक' कर चलने की क्रिया।

छयामा (वि.) दे. छ्यामाँ।

छरकाना (क्रि.) दे. झोड़ काटणा।

छररा (पुं.) 1. बारूद से भरा लंबा पटाखा जो 'छर'-'छर' की ध्वनि के साथ जलता है, 2. गोली के अंदर का लोहे का छोटा टुकड़ा; **~छुटाणा/ छुड़ाणा** छर्रा जलाना; **~लागणा** गोली का कोई भाग शरीर में लगना। **छर्रा** (हि.)

छरींट (पुं.) दे. छोहरट।

छर्रा (पुं.) दे. छररा।

छल (पुं.) दे. छळ।

छळ (पुं.) 1. धोखा, 2. धूर्तता, ठगी; **~खाणा** छला जाना। **छल** (हि.)

छलक (स्त्री.) तरल पदार्थ का पात्र से बाहर झटके से निकल कर बिखरने की क्रिया।

छलकणा (क्रि. अ.) 1. तरल पदार्थ का पात्र से बाहर झटके से गिरना, 2. आँखों में आँसू आना, 3. प्यार

उमड़ना। **छलकना** (हि.)

छलकना (क्रि. अ.) दे. छलकणा।

छलछलाणा (क्रि. अ.) 1. 'छल'-'छल' की ध्वनि के साथ बहना, 2. तरल पदार्थ का झटके के साथ बह निकलना। **छलछलाना** (हि.)

छळणा (क्रि. स.) धोखा देना; (पुं.) (दे. छालणा[2])। **छलना** (हि.)

छलना (क्रि. स.) दे. छळणा।

छलनी (स्त्री.) दे. छालणी।

छलाँग (स्त्री.) कूदने की क्रिया। **फलाँग** (हि.)

छलाँगणा (क्रि. स.) 1. कूदना, फाँदना, 2. कूद कर पार करना, 3. बाधा पार करना। **छलाँगना** (हि.)

छळा (पुं.) 1. श्मशान, 2. चिता; (क्रि. स.) 'छळणा' क्रिया का भूतकालिक रूप।

छलावा (पुं.) दे. छळावा।

छळावा (पुं.) 1. छल, कपट, 2. भूत-प्रेत, 3. जादू, 4. जलती हुई चिता; (वि.) छली, कपटी। **छलावा** (हि.)

छळिया (वि.) छलिया, कपटी।

छळिहार (वि.) छलने वाला। **छली** (हि.)

छळिहारी (वि.) 1. कलिहारी, 2. कपटी (महिला)।

छळी (वि.) दे. छळिया; (क्रि. स.) 'छळणा' क्रिया का भूतकालिक स्त्रीलिंग रूप।

छल्ला (पुं.) 1. चाँदी, सोने आदि की अँगूठी, 2. कड़ा, 3. पैर के अँगूठे में पहना जाने वाला एक आभूषण, 4. मंडलाकार वस्तु, 5. नोकदार अँगूठी जो कशीदाकारी (बंधेज) के काम आती है।

छल्ली (स्त्री.) 1. अँगूठी, 2. आभूषण, जैसे—टूम-छल्ली, 3. पैर की अंगुली का एक आभूषण, 4. भुट्टा, मकई का सिरटा।

छवाणी (स्त्री.) दे. छुआणी।

छवाना (क्रि. स.) आच्छादित करना।

छवैणी (पुं.) घी।

छस्सैह (वि.) छः सौ की संख्या। **छः सौ** (हि.)

छाँ (स्त्री.) 1. छाया, परछाईं, 2. भूत-प्रेत आदि का प्रभाव, 3. संरक्षण, शरण, (दे. छाह्ळी); **~करणा** 1. शरण देना, 2. बहुत देखभाल करना—छोह्रा हात्थाँ की छाँ करकै पाळ्या था, 3. सीधा प्रकाश न पड़ने देना, 4. आच्छादित करना; **~छाँ-छन्नी** सरदी में किसी पर छाया डालने वाले बच्चे को कही जाने वाली चिढ़ के रूप में जकड़ी—'छाँ-छाँ छन्नी, उसकी माँ बन्नी' (ऐसा कहने से बच्चे धूप छोड़ देते हैं); **~पड़णा/लागणा** बुरे व्यक्ति का प्रभाव पड़ना। **छाँव** (हि.)

छाँकटा (वि.) दे. छाकटा।

छाँकणा (क्रि. अ.) मोर का कूकना—बिर उड़ती लाग्गै सै चिड़कली, छाँकत लाग्गै सै मोर, (लो. गी.)।

छाँट (स्त्री.) 1. छाँटना, छाँटने की क्रिया, 2. अलग की हुई वस्तु, 3. छँटनी, 4. परख, 5. विरेचन, 6. वमन, कै, 7. कतरन; **~करणा** 1. वस्तुओं में विभेदीकरण करना, चुनना, 2. पहचानना, 3. विरेचन करना, पेट की सफाई करना—जुलाब तैं पेट की छाँट हो सै; **~पड़णा** तलाशी होना, ढूँढ़ पड़ना; **~होणा** परख होना, परीक्षा होना—बखत पड़े पै आदमी की छाँट हो सै।

छाँटणा (पुं.) वह उप-वस्त्र जिससे हाथ की चक्की के गरंड से आटा बाहर निकाला जाता है; (क्रि. स.) 1. अच्छी-बुरी चीज़ों को अलग-अलग करना, 2. छँटनी करना, 3. परखना, 4. पहचानना, 5. पेट साफ़ करना, 6. दूर करना, हटाना, 7. साफ़ करना, कंकड़-मिट्‌टी दूर करना, 8. किसी वस्तु को संक्षिप्त या कम करना, 9. अपने कौशल या पांडित्य का अनावश्यक प्रदर्शन करना—क्यूँ घणी बात छाँट्‌टै सै जिसा तूँ सै मैं सभ जाणूँ सूँ। **छलना, छाँटना** (हि.)

छाँटणी (स्त्री.) दे. छालणी।

छाँटना (क्रि. स.) दे. छाँटणा।

छाँट्‌टा (पुं.) 1. छाँटी हुई वस्तु, 2. निम्न कोटि की समझकर निकाल दी गई वस्तु, 3. कतरन।

छाँत (स्त्री.) दे. छात।

छाँवणी (स्त्री.) दे. छुआणी।

छाँह (स्त्री.) छाँव, (दे. छाँ)।

छाः (स्त्री.) दे. सीत। **छाछ** (हि.)

छाक (स्त्री.) 1. नाश्ता, 2. बड़े आकार की फीकी सुहाली, सुहाल, 3. वह भोजन जो हाली-पाली (ग्वाला) के पास जंगल या खेत में भेजा जाता है; (क्रि. स.) छाकना या छिद्र करना।

छाकटा (वि.) छँटा हुआ (बदमाश)।

छागल[1] (स्त्री.) दे. छाग्गळ।

छागळ[2] (पुं.) छाती का एक आभूषण।

छाग्गळ (स्त्री.) 1. कनवास, रबड़, चमड़े आदि का बना जल-पात्र, 2. मशक।

छाछ (स्त्री.) दे. सीत।

छाज (पुं.) 1. अनाज फटकने के लिए सरकंडे, तुली, बाँस की खपच्ची या लोहे आदि द्वारा बनाया गया पात्र, 2. मस्तक का एक आभूषण, बंदनी आभूषण का बड़ा आकार; **~(ज्जाँ) उडाणा** फ़िज़ूलख़र्ची करना; **~कढवाणा/काढणा/देणा/मारणा** छाज में रस्सियाँ बाँध कर उससे झील के पानी को ऊपर या ऊँचाई के खेतों में डालना या सिंचाई करना; **~ठाणा** कूच करना; **~पकड़ाणा/ देणा** खलियान में अन्न ओसाते समय छाज भर कर पकड़ाना।

छाज द्वादशी (पुं.) कार्तिक कृष्ण द्वादशी। इस दिन नया अन्न छाज में रख कर पूजा जाता है। दे. छाज।

छाजिया (पुं.) 1. वह व्यक्ति जो झील में भरे पानी को छाज में भरकर खेतों में सिंचाई के लिए फेंकता है, 2. वह व्यक्ति जो खलियान में अन्न ओसाते या बरसाते समय छाज भर-भर कर बरसाने वाले (बरसाइया) को पकड़ाता है।

छाजा (स्त्री.) छाज बनाने, बेचने वाली एक जाति।

छाज्जू (पुं.) जन्म होते ही छाज में डाल कर घसीटा हुआ नवजात शिशु।

छाण (पुं.) 1. छाना हुआ, बूर, 2. बचा हुआ अंश; (स्त्री.) तलाश, पहचान; (क्रि. स.) 'छाणणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पड़णा** तलाशी शुरू होना; **~मारणा** छानना, खोजबीन करना। **छान** (हि.)

छाणणा (क्रि. स.) 1. चोकर निकालने के लिए आटे को छानना, 2. तिनके या फोक आदि को निकालने के लिए तरल वस्तु को छानना, 3. जाँचना, 4. ढूँढ़ना, तलाश करना; (पुं.) छालना,

छलना। **छानना** (हि.)

छाणस (पुं.) दे. छाण।

छात (स्त्री.) 1. छत, 2. आच्छादन।

छाता (पुं.) दे. छत्तरी[2]।

छाती (स्त्री.) दे. छात्ती।

छात्ती (स्त्री.) 1. वक्षस्थल, 2. कुचा, 3. हिम्मत करना, 2. मन समझाना; **~छोलणा** 1. भरा ठेस पहुँचाना, 2. आँखों के सामने कष्टदायक काम करना; **~पाकणा** स्त्री की कुचा या चूची पकना; **~भार्या होणा** बच्चे के प्रति प्रेम उमड़ना; **~समान्नी** छाती जितने नाप का, छाती तक आने वाली, लगभग ढाई हाथ का नाप; **~सीळी करणा** मन भाता काम करना, **~सीळी होणा** मन की इच्छा पूरी होना; **हिम्मत~** हिम्मत-छाती, साहस का कार्य–तेरी हिम्मत-छात्ती सै अक छोरे का दुख सह ग्या। **छाती** (हि.)

छात्र (पुं.) विद्यार्थी।

छात्रवृत्ति (स्त्री.) वजीफ़ा।

छान (स्त्री.) 1. बिटोड़े आदि पर डाला जाने वाला घास-फूस का आच्छादन, 2. छप्पर, (दे. उसारा), 3. दे. छाण।

छानणा (क्रि. स.) 1. टहनी आदि काटना, (दे. झाँगणा), 2. आच्छादित करना, 3. (दे. छाणणा)।

छानना (क्रि. स.) दे. छानणा।

छानबीन (स्त्री.) जाँच-पड़ताल।

छानियाँ (पुं.) छान बाँधने वाला।

छान्नी (वि.) 1. शेष, 2. गुप्त, छिपाव–भगवान तैं के छान्नी सै; (क्रि. स.) 'छाणणा' क्रिया का भूतकालिक स्त्रीलिंग रूप।

छाप (स्त्री.) 1. चिह्न, 2. किसी चीज़ से छूने के कारण पड़ा चिह्न–खाट के बाण की छाप न्यूँ की न्यूँ मँगराँ पै उपड़् याई, 3. मोहर, मुद्रा–किस छाप का रपैया सै?, 4. प्रभाव–आच्छी बात्ताँ की आच्छी छाप लाग्गै सै, 5. ढोलक की ताल, 6. अँगूठी, 7. बाड़ का कुछ भाग; (क्रि. स.) 'छापणा' क्रिया का आदे. रूप; **~मारणा** 1. मोहर लगाना, 2. ढोलक पर ताल लगाना; **~लागणा** 1. निशान पड़ना, 2. स्थायी प्रभाव होना, 3. कोई वस्तु किसी के नाम निश्चित होना।

छापणा (क्रि. स.) 1. ज्यों का त्यों उभारना, 2. अनुकृति बनाना, 3. प्रकाशित करना, 4. प्रसिद्धि करना, 5. ठप्पा लगाना। **छापना** (हि.)

छापना (क्रि. स.) दे. छापणा।

छापा (पुं.) दे. छाप्पा।

छापाखाना (पुं.) मुद्रणालय।

छाप्पा (पुं.) 1. धावा, आक्रमण, अचानक किया गया धावा, 2. तलाशी, ढूँढ़, छानबीन, 34. किसी वस्तु की अनुकृति, वह चिह्न जो किसी अन्य वस्तु के लगने या छूने से बन जाता है, 4. ठप्पा, 5. थापा, हाथ का चिह्न, 6. मुद्रण; **~मारणा** 1. आक्रमण करना, 2. अचानक आक्रमण करना, 3. अनायास धन मिलना या कोई वस्तु प्राप्त होना, 4. ठप्पा लगाना, 5. अपनी मोहर या चिह्न अंकित करना; **~लागणा** 1. पशुओं का मेला शुरू होना, 2. मुद्रा का चिह्न अंकित होना, 3. काम बनना, सफलता मिलना। **छापा** (हि.)

छाबड़ा (पुं.) 1. टोकरी, 2. पुरानी टोकरी, (दे. छीतरा); **~सा मुँह** गंदा मुँह, मोटा और भद्दा मुख।

छाबड़ी (स्त्री.) टोकरी, छोटी टोकरी, (दे. झल्ली)।

छाबन (स्त्री.) दे. छाब्बळ।

छाब्बळ (स्त्री.) बैलगाड़ी के बीच का फ़र्श जो तार या रस्सी से बाँस आदि बाँध कर बनाया जाता है।

छाब्बा (पुं.) दे. छाबड़ा; **~(–ब्बे) आळा** झल्ली वाला।

छामाँ (स्त्री.) मोटे कपड़े की लाल ओढ़णी जिस पर शीशे आदि की कढ़ाई भी होती है।

छाय (स्त्री.) छाछ, (दे. सीत)।

छायाँ (स्त्री.) दे. छाँ।

छाया (स्त्री.) दे. छाँ।

छार (स्त्री.) 1. राख, 2. धूल। **क्षार** (हि.)

छारू (पुं.) एक रोग।

छाल (स्त्री.) दे. छाळ[1]।

छाळ[1] (स्त्री.) 1. वल्कल, 2. खाल। **छाल** (हि.)

छाळ[2] (स्त्री.) 1. कूद, उछल, उछाल, 2. झलक; **~भरणा** 1. छलाँग लगाना, 2. उछलना; **~मारणा** 1. अन्न भूनते समय भड़भूँजे द्वारा चालाकी से कुछ दाने उछाल कर चुराना, 2. पानी का उछलना, 3. छलाँग लगाना। **उछाल** (हि.)

छाळणा[1] (क्रि. स.) 1. छाल उतारना, 2. किसी मोटे टहने की टहनियाँ काटना, 3. छिद्र करना। **छालना** (हि.)

छाळणा[2] (पुं.) रसोई में काम आने वाला वस्त्र। **छलना** (हि.)

छालणी (स्त्री.) चलनी; **~करणा** 1. छेद-छेद करना, 2. फाड़ना, 3. टुकड़े-टुकड़े करना; **~छाँटणी** घर का छुटपुट सामान। **छलनी** (हि.)

छाली (स्त्री.) बकरी।

छाळी (स्त्री.) दे. छाह्ली।

छाला (पुं.) 1. दे. छाल्ला, 2. दे. फफोल्ला।

छाल्ला (पुं.) फफोला। **छाला** (हि.)

छावनी (स्त्री.) दे. छ्यावणी।

छावळी (स्त्री.) दे. छाह्ली।

छावा (स्त्री.) दे. छ्यावा।

छाह्ळा (पुं.) 1. परछाईं, 2. मलिन अवस्था के समय तथा गर्भ अवस्था के समय की परछाईं, 3. भूत-प्रेत की परछाईं, 4. झलक। **छाया** (हि.)

छाह्ळी (स्त्री.) 1. परछाई, साया, 2. भूत की परछाईं, 3. अशुभ प्रतिबिंब, 4. मलिन वसना या गर्भवती स्त्री की परछाईं, 5. बुरी छाया, 6. छाया की झलक, 7. दीए के नीचे की हल्की-हल्की छाया, 8. प्रेत-आत्मा; **~आणा** 1. शरीर में भूत या प्रेत-आत्मा द्वारा प्रवेश करना, 2. रूह मिलना, किसी की आकृति में अन्य की झलक आना; **~तारणा** भूत-प्रेत भगाना; **~दीखणा** 1. स्वप्न में मृतक से भेंट होना, 2. परछाईं दिखाई पड़ना, झलक पड़ना, 3. भूत-प्रेत दिखाई देना; **~पड़णा** 1. किसी के चरित्र का प्रभाव पड़ना, 2. भूत-प्रेत की लपेट में आना, 3. स्त्री की छाया पड़ना– पेट मैं बाळक आळी बीरबान्नी की छाह्ली साँप पै पड़ ज्या तै वो जिब ताहीं आँद्धा रहै जिब ताहीं बाळक ना होले, 4. झलक दिखाई पड़ना। **छाया** (हि.)

छिंदळिया (वि.) दे. छिणाळ।

छिंदी (पुं.) दे. छिपकली।

छि (स्त्री.) 1. तिरस्कारद्योतक शब्द, 2. बच्चे की टट्टी, 3. आँख का मैल।

छिकणा (क्रि. अ.) 1. तृप्त होना, भर-पेट भोजन करना, 2. तंग आना, 3. दर्शनों से तृप्त होना, 4. सभी इच्छाएँ पूर्ण होना, माला-माल होना, 5. भरपूर होना–इतणा मींह बरस्या अक झोड़ क्यारी ताहीं छिकगे। **छकना** (हि.)

छिकमाँ (वि.) 1. मनपसंद मात्रा में–रिसाल्ले के ब्याह मैं छिकमाँ लाड्डू खाँगा (खाऊँगा), 2. भरपूर मात्रा में–ईब कै आच्छ्या दोंगड़ा (हल्का मींह) हो ग्या तै छिकमाँ ज़ोर लगा ले फेर बी पहले लंबर पै मैं रहूँगा; **~जोर लाणा** कोई कसर न रख छोड़ना। **छिकवाँ** (हि.)

छिकाई (स्त्री.) तृप्त होने का भाव; **~का** यथेष्ट मात्रा में। **छकाई** (हि.)

छिकाणा (क्रि. स.) 1. भरपेट खिलाना-पिलाना, तृप्त करना, 2. तंग करना, सताना। **छकाना** (हि.)

छिछका (पुं.) बाधा, रुकावट।

छिजना (क्रि. अ.) 1. सुशोभित होना, जँचना, फबना, 2. (दे. छीझणा)।

छिटकणा (क्रि. अ.) 1. इधर-उधर फैलना, 2. किरणों का फैलना, 3. उछलना, उभरना, 4. भूनना, 5. नस पर नस चढ़ना; (क्रि. स.) बीज डालना, हाथ से बीज डालना; (वि.) छिटकने वाला। **छटकना** (हि.)

छिटकना (क्रि. अ.) दे. छिटकणा।

छिड़कणा (क्रि. स.) छिड़काव करना। **छिड़कना** (हि.)

छिड़कना (क्रि. स.) दे. छिड़कणा।

छिड़का (पुं.) 1. पानी बखेरने की क्रिया, 2. हल्की बूँदा-बाँदी। **छिड़काव** (हि.)

छिड़काणा (क्रि. स.) 1. छिड़कवाना, छिड़काव करवाना, 2. छिड़काव करना। **छिड़काना** (हि.)

छिड़काव (पुं.) दे. छिड़का।

छिड़णा (क्रि. अ.) 1. शुरू होना–ईब तैं घर बणावण का काम छिड़ग्या तूँ फेर कदे आइये, 2. किसी बात पर चर्चा शुरू होना–के कहाणी छेड़ दी, 3. अपनी पर उतारू होना–ईब पंडत छिड़ग्या कीहें की नाँ मान्नै, 4. आघात पहुँचने पर मधु-मक्खियों द्वारा काटने दौड़ना–बच कै जाइये म्हाळ छिड़ रह्या सै, 5. पशु का (भैंसे आदि का) क्रोधित होकर प्रतिकार पर उतारू होना, 6. ज़िद पर उतारू होना, 7. चिढ़ना; (वि.) जो शीघ्र छिड़े। **छिड़ना** (हि.)

छिड़ना (क्रि. अ.) दे. छिड़णा।

छिण[1] (स्त्री.) कंकड़ आदि का छोटा अंश।

छिण[2] (स्त्री.) अल्प काल। **क्षण** (हि.)

छिणाळ (वि.) व्यभिचारिणी, कुलटा। **छिनाल** (हि.)

छितणा (क्रि. अ.) 1. पिटना, 2. आघात या दबाव से चारों ओर फैलना–गरम थी तै तावळी छितगी, (दे. चिथणा)। **छितना** (हि.)

छितमाँ (वि.) 1. हथौड़े से पीटा हुआ, 2. फैला हुआ, 3. छितरा हुआ। **छितवाँ** (हि.)

छितरणा (क्रि. अ.) 1. विकीर्ण होना, 2. पृथक्-पृथक् होना।

छितराणा (क्रि. स.) फैलाना, बखेरना। **छितराना** (हि.)

छितवाणा/छिताणा (क्रि. स.) 1. पिटवाना, 2. छितवाना।

छिताई (स्त्री.) 1. पिटाई, 2. छेतने या कूटने का भाव।

छिदड़ाणा (क्रि. स.) 1. छीदा करना, 2. तितर-बितर करना।

छिदवाणा (क्रि. स.) 1. कान छिदवाना, 2. छेदन कराना, तुल. बिंधवाणा। **छिदवाना** (हि.)

छिदाणा (क्रि. स.) 1. छिदवाणा, छेदन कराना, 2. नाक, कान आदि बिंधवाना।

छिदाना (क्रि. स.) दे. छिदाणा।

छिदाम (पुं.) दे. छदाम।

छिनना (क्रि. अ.) दे. खुसणा।

छिनाल (वि.) दे. छिणाळ।

छिन्न-भिन्न (वि.) 1. तितर-बितर, 2. नष्ट-भ्रष्ट, (दे. खिंड़-मिंड)।

छिपकण (वि.) चिमटने वाली, वह जो चिमट जाए; (स्त्री.) एक पक्षी जिसके पशु पर बैठने से छपाक (ददोड़ा) नामक रोग हो जाता है।

छिपकण-गोह (स्त्री.) दे. गोह चिपटण।

छिपकी (स्त्री.) छपकली।

छिपणा (क्रि. अ.) 1. ओझल होना, 2. अस्त होना, 3. ओट में होना, 4. जानबूझ कर किसी के सामने से हटना, (दे. ल्हुकणा)। **छिपना** (हि.)

छिपना (क्रि. अ.) दे. छिपणा।

छिपमाँ (वि.) 1. गुप्त, 2. छिपा हुआ; (क्रि. वि.) आँख बचाकर; **~बात** 1. गुप्त बात, 2. रहस्य। **छिपवाँ** (हि.)

छिपा (पुं.) लुकाव; (क्रि. स.) 'छिपाणा' क्रिया का आदे. रूप। **छिपाव** (हि.)

छिपाण (क्रि. वि.) छिपने के निकट, अस्त होने का समय–सुरज छिपाण आया, तावळी-तावळी चाल्लो।

छिपाणा (क्रि. स.) 1. गुप्त रखना, 2. इस विधि से रखना कि कोई वस्तु दिखाई न दे, तुल. दबकोणा, तुल. ल्हकोणा। **छिपाना** (हि.)

छिपाना (क्रि. स.) दे. छिपाणा।

छिपाव (पुं.) छिपा।

छिबका (पुं.) छींटा, पानी का छींटा; **~देणा/मारणा/लाणा** पानी के छींटे लगाना।

छिमा (स्त्री.) छमा, माफ़ी, क्षमा।

छिया (क्रि.) छुआ। स्पर्श किया।

छियेंतर/छिहेंतर (वि.) छिहत्तर की संख्या।

छिर किलोदवाटी (स्त्री.) एक मेवाती खाप।

छिलका (पुं.) 1. दे. फोल्लर, 2. दे. बक्कल।

छिलड़ा (पुं.) दे. छेलड़ा।

छिलणा (क्रि. अ.) दे. छुलणा।

छिलना (क्रि. अ.) दे. छुलणा।

छिल्लड़ (पुं.) एक जाट गोत।

छींक (स्त्री.) छींक, छींकने की क्रिया; **आग्गे की~** सामने की छींक जो अशुभ मानी जाती है; **~(-ते) का नाक काटणा** असहनशील होना; **पाच्छे की~** पीछे के ओर की छींक जो शुभ मानी जाती है; **~मारणा** 1. काम में बाधा पहुँचाना, 2. अपशकुन करना।

छींकणा (क्रि. अ.) 1. छींक लेना, 2. अपशकुन करना, 3. बाधा उत्पन्न करना; (वि.) जो हर समय छींके। **छींकना** (हि.)

छींकना (क्रि. अ.) दे. छींकणा।

छींका (पुं.) दे. छींक्का।

छींक्का[1] (पुं.) 1. पतली तीलियों या तारों का बना टोकरी के आकार का पात्र जिसमें रोटी रखी जाती हैं, तुल. बोहिया,

2. बैलों के मुँह पर चढ़ाया जाने वाला रस्सियों का जाल, मुँह का आवेष्टन, 3. तीलियों से बना लंबोतरा गोलाकार पात्र जिसमें पीलू (पीह्ल-जाल पर लगने वाला फल) तोड़-तोड़ कर जमा किए जाते हैं; **~टूटणा** मनपसंद बात होना; **~बाँधणा** 1. बैल के मुँह पर छींका लगाना ताकि वह फसल न खा सके, 2. भोजन की मनाही करना; **~लाणा** पाबंदी लगाना, मनाही करना–तनैं तै मेरै पै सब तराँह की छींक्का लाराक्ख्या सै। **छींका** (हि.)

छींक्का² (पुं.) 1. तुली आदि से बना रोटी रखने का पात्र जिसे रस्सी बाँध कर छत से भी लटकाया जाता है। दे. बोहिया, 2. पशु के मुख पर बाँधा गया रस्सी का जालीदार छींका। दे. मुखेरणा।

छींक्की¹ (स्त्री.) छोटा छींका; (क्रि. अ.) 'छींकणा' क्रिया का भूत का. स्त्रीलिंग रूप।

छींक्की² (स्त्री.) छोटा छींका, दे. मुखेरणा।

छींट (स्त्री.) 1. पानी, वर्षा आदि की बूँद, 2. बेल-बूटेंदार कपड़ा विशेष; **~परोळ** फटा-पुराना वस्त्र; **~मारणा** 1. अपवित्र या उच्छिष्ट पानी की छींट मारना, 2. कीचड़ के पानी के छीटे लगाना; **~लागणा** उत्तेजित होना– मेरी बात्ताँ की तै तेरै तेल किसी छींट लाग्गैं सैं; **~सी लागणा** तेल की गरम छींट का सा प्रभाव होना, उत्तेजित होना। **छींटा** (हि.)

छींट्टा (पुं.) 1. पानी की बूँद, 2. वर्षा की बूँद; **~देणा** 1. जल का छींटा देना, 2. साधु-संन्यासी द्वारा अपने कमंडल से कनिष्ठा अथवा मध्यमा अंगुली से किसी की शुद्धि या शुभ के लिए जल का छींटा लगाना, 3. उफनते दूध को शांत करने के लिए जल की कुछ बूँदें डालना, 4. अग्नि जिमाने के बाद दो-चार जल के छींटे देना, 5. गंगा जल से स्थान को पवित्र करना, 6. बेहोशी से चेतनता में लाने के लिए जल छिड़कना, 7. जीवन-दान देना, जीवित करना, 8. चेचक के दाने समाप्त होने के बाद नीम की टहनी से रोगी पर जल या गंगाजल छिड़कना (इस छींटे के बाद रोगी घर से बाहर निकल सकता है), 9. उत्तेजित करना; **~(–ट्टे) पड़णा** 1. हल्की वर्षा होना, 2. बात चुभना, 3. उत्तेजित होना; **~मारणा/लाणा** जल का छींटा देना, (दे. छींट्टा देणा)। **छींटा** (हि.)

छींदरा (पुं.) दे. झीरम झीर।

छींपी (पुं.) दे. छीप्पी।

छींवी (पुं.) दे. छीप्पी।

छी: (स्त्री.) 1. अनादरद्योतक शब्द, 2. मल, गंदगी।

छीजना (क्रि. अ.) 1. दे. छीझणा, 2. दे. बीझणा।

छीझणा (क्रि. अ.) 1. पुराना पड़ना, 2. जीर्ण-शीर्ण होना, 3. फटना, 4. दुर्बल होना, 5. (दे. बीझणा); (वि.) जो शीघ्र छीजे। **छीजना** (हि.)

छीड़ (स्त्री.) 1. 'भीड़' का विलोम, 2. जहाँ कम लोग हों, तुल. छीद; **~करणा/छोडणा** तितर-बितर होना, भीड़ कम करना।

छीणी (स्त्री.) टाँकी। **छेनी** (हि.)

छीतकछाळा (वि.) 1. चितकों वाला, 2. छीदा बुना हुआ।

छीतरा (पुं.) 1. कूड़े-करकट का टोकरा, 2. वह टोकरा जिसके किनारे छितरा

गए हों, 3. टूटी हुई जूती या लीतरा; **~सा-मुँह** 1. गंदा मुँह, 2. असाधारण चौड़ा मुँह।

छीतरी (स्त्री.) टोकरी, गंदगी की टोकरी।

छीद (स्त्री.) 1. जहाँ भीड़ नहीं हो, 2. खेती के सघन न होने का भाव–खेत में कई जघाँ (जगह) छीद दीक्खै सै, 3. कपड़े का झीनापन, (दे. छीड़); **~छोडणा** बीच-बीच में खाली स्थान छोड़ना।

छींदणा (क्रि. अ.) 1. छीदा होना, 2. छीजना। **छीदना** (हि.)

छीदा/छीद्दा (वि.) 1. 'घिणका' का विलोम, 2. जो सघन न हो, 3. विरल, एक आध–तेरे सा तै कोए छीद्दा एक आदमी मिल्लैगा; **~करणा** 1. वस्तुओं को दूर तक फैलाना, 2. खेत के पौधे कहीं-कहीं से उखाड़ना, 3. सघनत्व कम करना; **~छड़ा** कोई-कोई, विरल; **~जामणा** खेत में पौधों का दूर-दूर उगना। **छीदा** (हि.)

छीद्दी (वि.) 1. 'घणी' का विलोम, कहीं-कहीं, 2. विरल; **~बाह** खेत की ऐसी जोताई जिसमें दूर-दूर पर 'खूड' निकाले गए हों। **छीदी** (हि.)

छीन (वि.) 1. जीर्ण-शीर्ण, 2. दुर्बल। **क्षीण** (हि.)

छीनणा (क्रि. स.) दे. खोसणा। **छीनना** (हि.)

छीनना (क्रि. स.) दे. खोसणा।

छीपणा (क्रि. स.) छापा या ठप्पा लगाना, कपड़ा छापना। **छीपना** (हि.)

छीपी (पुं.) दे. छीप्पी।

छीप्पण (स्त्री.) 1. वस्त्र छीपने या छापने वाली, 2. 'छीपी' जाति की महिला।

छीप्पा (पुं.) 1. कपड़े पर ठप्पा लगाने वाला, कपड़ा छापने वाला, 2. नीलगर, 3. छीपी जाति का व्यक्ति। **छीपा** (हि.)

छीप्पी (पुं.) 1. एक जाति जो कपड़े सीने का काम करती है, 2. कपड़े छापने वाला व्यक्ति। **छीपी** (हि.)

छीर (पुं.) क्षीर।

छीलना (क्रि. स.) दे. छोलणा।

छुआणी (स्त्री.) प्रसूता को दिया जाने वाला गुड़, अजवायन आदि का पेय पदार्थ।

छुआना (क्रि. स.) दे. छुहाणा।

छुआछूत (स्त्री.) दे. छूआछात।

छुईमुई (स्त्री.) दे. छूईमूई।

छुकनी (स्त्री.) दे. कामड़ा। तुल. छिकनी, छाकुन, छेंडली।

छुटकारा (पुं.) मुक्ति।

छुटणा (क्रि. अ.) 1. छूट जाना, 2. हाथ से निकलना, 3. चालू होना, 4. स्खलित होना, (दे. छूटणा), 5. मुक्ति मिलना। **छुटना** (हि.)

छुटत्याँहे (क्रि. वि.) 1. छुटते ही, 2. तुरंत, 3. बिना सोचे-विचारे–ओ छुटत्याँहे गाळ (गाली) देण लाग्या।

छुट देणे (क्रि. वि.) तुरंत–छुट देणे वो न्यूँ बोल्या अक तूँ मैरै घराँ क्यूँ आग्या।

छुटना (क्रि. अ.) छुटणा।

छुटपण (पुं.) 1. बचपन, 2. अबोधपन, 3. छोटापन। **छुटपन** (हि.)

छुटपन (पुं.) दे. छुटपण।

छुटभैयन (वि.) सम्मान हीन, हेय। तुच्छ।

छुटमाँ (वि.) 1. रुचि के अनुसार–हरियाणे मैं सकराँत (मकर संक्रांति) के दिन बाळक-बूड्ढे छुटमाँ घी खाँ सैं, 2. प्रचुर मात्रा में–आच्छ्या मींह बरस

ग्या तै छुटमाँ बाजरा नीपजैगा (उपजेगा); **मुँह~** गरिष्ठ भोजन जिसके अधिक खाने की इच्छा नहीं हो–चूरमें मैं मुँह छुटमाँ घी गेर राक्ख्या था। **छुटवाँ** (हि.)

छुटवाणा (क्रि. स.) 1. छुड़वाना, 2. स्वतंत्र कराना, बंधन-मुक्त कराना, 3.खान-पान आदि छुड़वाना, 4. बैलगाड़ी को विश्राम आदि के लिए रुकवाना, 5. नीलामी में बोली देकर वस्तु खरीदना, 6. झगड़ते व्यक्तियों को अलग-अलग करना, 7. कुश्ती में पहलवानों को अलग-अलग करना, 8. पूजा के स्थान पर अक्षत आदि छुड़वाना, 9. रंग, धब्बा आदि छुड़वाना, 10. बंदूक, पटाख़ा, बारूद आदि की वस्तु को चलवाना, 11. पार्सल, बैरंग चिट्ठी आदि को पैसे देकर छुटवाना, 12. निकलवाना–तनैं मेरी रेल छुटवादी, 13. स्खलित कराना। **छुटवाना** (हि.)

छुटा (पुं.) 1. दे. साँड, 2. दे. झोट्टा।

छुटाणा (क्रि. स.) 1. बंधन-मुक्त कराना, 2. लड़ते-लड़ते व्यक्तियों को अलग-अलग करना, 3. बंदूक-पटाख़े आदि चलाना, (दे. छुटवाणा), 4. गोंद आदि से चिपकी वस्तु को अलग करना। **छुड़ाना** (हि.)

छुटाना (क्रि. स.) 1. दे. छुटाणा, 2. दे. छुडाणा।

छुट्टा (पुं.) दे. अनेरा।

छुट्टी (स्त्री.) 1. अवकाश, 2. फुर्सत, 3. मुक्ति, 4. स्वतंत्रता, 5. स्कूल- कार्यालय आदि बंद होने का समय या दिन, 6. आह्वान, कुश्ती की चुनौती; **~आणा** छुट्टी लेकर नौकरी से घर आना (विशेषकर फौज से); **~करणा** 1. अवकाश करना, विश्राम लेना, 2. काम से हटाना, 3. चुनौती देना (विशेष कर कुश्ती के लिए), 4. छूट देना, स्वछंद आचरण की अनुमति देना; **~के** प्रचुर मात्रा में–आज तै छुट्टी के आँम चूस्से; **~देणा** 1. सभी को चुनौती देना (विशेषकर कुश्ती के लिए), 2. मनमाने व्यवहार की अनुमति देना, 3. नौकरी से मुक्त करना, 4. अवकाश स्वीकृत करना; **~बोलणा** कुश्ती के लिए चुनौती देना–चंदगी पहलवान नैं गाम गुहाँड की छुट्टी बोलदी, जी चाह्वै सो घुळले; **~मारणा** 1. अवकाश पर रहना, 2. विश्राम करना; **~होणा** 1. स्कूल आदि बंद होना, 2. पूर्ण स्वतंत्रता होना, 3. नौकरी से निकलना।

छुडवाणा (क्रि. स.) दे. छुटवाणा।

छुड़वाना (क्रि. स.) दे. छुटवाणा।

छुडाणा (क्रि. स.) दे. छुटाणा।

छुड़ाणी/छुडाणी (स्त्री.) तहसील झज्झर में स्थित संत गरीबदास की तपोभूमि जिसकी गद्दी अभी भी चलती है, यहाँ मेला भी लगता है।

छुड़ाना (क्रि. स.) दे. छुटाणा।

छुडोत्ती (स्त्री.) ब्याज आदि के रूप में छोड़ा गया रुपया। **छुड़ौती** (हि.)

छुपना (क्रि. अ.) दे. छिपणा।

छुपमाँ (वि.) दे. छिपमाँ।

छुररा (पुं.) दे. छररा।

छुरा (पुं.) फलदार बड़ा चाकू विशेष।

छुरी (स्त्री.) फलदार छोटा चाकू।

छुलणा (क्रि. अ.) 1. खाल उतरना, रगड़ से हल्की चोट आना, 2. छीला जाना; **हीया~** हृदय को चोट पहुँचना;

(वि.) जिसे शीघ्र छीला जा सके।
छिलना (हि.)

छुलवाणा (क्रि. स.) 'छोलणा' क्रिया का प्रे. रूप। **छिलवाना** (हि.)

छुलाणा (क्रि. स.) 1. गन्ने को पेरने से पूर्व उसकी पत्तियाँ हटवाना, 2. सब्ज़ी आदि कटवाना या बिनरवाना।
छिलाना (हि.)

छुहाणा (क्रि. स.) 1. स्पर्श कराना, 2. साधु-संन्यासी से बालक के सिर पर आशीर्वाद का हाथ रखवाना।
छुआना (हि.)

छुहारा (पुं.) खजूर से बड़े आकार का एक फल जो तासीर में गर्म होता है (विवाह के समय कई प्रथाओं) में इसका आदान-प्रदान होता है)।

छूआ छात (स्त्री.) 1. वस्तु को अपवित्र समझकर स्पर्श न करने का भाव, 2. धर्म या जाति के आधार पर भेद-भाव बरतने का भाव; **~करणा/बरतणा/राखणा** धर्म या जाति की श्रेष्ठता के आधार पर खान-पान या व्यवहार में भेदभाव बरतना। **छुआ छूत** (हि.)

छूई मूई (स्त्री.) छुईमुई या लाजवंती का पौधा; (वि.) 1. अत्यंत कोमल, 2. काजू-भाजू।

छूचक की हीर (स्त्री.) हीर-राँझा के स्वाँग में वर्णित एक नायिका।

छूछक (पुं.) उपहार जो पुत्री की संतान-उत्पत्ति के समय पिता भेजता है (इसमें मुख्यत: गोटेदार पीलिया, चूड़ियों का जोड़ा, घी, शिशु के लिए वस्त्र-आभूषण आदि वस्तुएँ सामर्थ्य के अनुसार होती हैं); **~न्योंतणा** पुत्री की संतान के (विशेषत: पुत्र) जन्म के समय पिता को नाई द्वारा सूचना भिजवाना।

छूट (स्त्री.) 1. स्वतंत्रता, आज़ादी, 2. फ़ुर्सत, अवकाश फालतू समय—तेरे धोरै जिब छूट हो तै आइये, 3. कार्य को न करने की आज्ञा मिलना—मन्नै तै खेल्लण तैं छूट मिल रही सै, 4. वह रुपया जो देनदार से न लिया जाए, 5. सिवाय, अतिरिक्त—एक आदमी की छूट और कोए घुळले, 6. विकल्प; (क्रि. अ.) 'छूटणा' क्रिया का आदे. रूप; **~का** प्रचुर मात्रा में—ईब कै थोड़ी माहवट (शीतकाल की वर्षा) हुई अर छूट का नाज हुया; **~देणा** 1. स्वतंत्रता देना, 2. किसी को अनिवार्यता से मुक्त करना।

छूटणा (क्रि. अ.) 1. कोई वस्तु हाथ से निकलना, 2. गाड़ी निकलना, 3. गाड़ी चलना, 4. छुटकारा मिलना, 5. प्राण छूटना, 6. मुक्ति मिलना, 7. वीर्य स्खलन होना, 8. पीछे रह जाना, 9. परिवार वालों से अलग होना, 10. शेष रहना, 11. भूलना, 12. तेज़ दौड़ना, 13. वेग से फूट निकलना—कूआ खोदती हाणाँ (समय) बाह्ळा (जल-स्रोत) जोर तैं छूट्या; **पाच्छा~** (दे. पाच्छा छूटणा); **पींड~** 1. मृत्यु होना, 2. छुटकारा मिलना; **पैंड्डा~** (दे. पैंड्डा छूटणा)। **छूटना** (हि.)

छूटत्याहें (क्रि. वि.) दे. छुटत्याँहे।

छूटना (क्रि. अ.) दे. छूटणा।

छूटमाँ (क्रि. वि.) कहीं-कहीं से छोड़कर, कुछ-कुछ दूरी पर; (वि.) प्रचुर मात्रा में, (दे. छुटमाँ)।

छूणा (क्रि. स.) दे. छूहणा।

छूत (पुं.) अछूत, अस्पृश्य; (स्त्री.) 1. संक्रामक रोग, 2. ओठ आदि स्थल पर

उठने वाली फुंसी, तुल. लुत; **~जात** अछूत जाति।

छूत्ता (वि.) 1. अछूता, 2. खाने से पूर्व देवी-देवताओं के निमित्त निकाला गया (भोजन)।

छूना (क्रि. स.) दे. छूह्णा।

छूमंतर (पुं.) 1. जादू, 2. लुप्त होने की क्रिया।

छूम (स्त्री.) पायल की छमक या ध्वनि।

छूह्णा (क्रि. स.) 1. स्पर्श करना, 2. खेल के समय किसी को पकड़ना, 3. स्पर्श से अपवित्र होना या करना।
छूना (हि.)

छेंट (स्त्री.) दे. छींट।

छे (स्त्री.) 1. पशुओं को (विशेषकर गाय को) पानी पिलाते समय प्रेरित करने के लिए की गई ध्वनि, 2. पशुओं की पानी पीने का इच्छा जानने के लिए की गई ध्वनि (यदि पशु कान उठाकर देखे तो पानी पीने की इच्छा का द्योतक संकेत माना जाता है)।

छेक (पुं.) 1. छिद्र, छेद, 2. कटाव, तुल. घट्टा; 3. (दे. छेग); (क्रि. स.) 'छेकणा' क्रिया का आदे. रूप; **~छिकाळा** 1. छेदयुक्त, 2. दोषयुक्त; **~मारणा** छिद्र बंद करना; **~होणा** 1. किसी बात की कमी होना, लांछन होना, दोष होना, 2. छिद्र बनना।
छेद (हि.)

छेकणा (क्रि. स.) 1. छेद निकालना, 2. दिल दुखाना–तनैं मेरी छात्ती छेक राक्खी सै, 3. औज़ार से छेद करना।
छेदना (हि.)

छेकल (पुं.) काँजी हाउस। मवेशीखाना।

छेकला (वि.) छेदों वाला; (पुं.) छिद्र, छोटा छिद्र।

छेका (पुं.) दे. चरणी।

छेग (पुं.) दे. छेक।

छेछड़ा (पुं.) 1. फटे हुए दूध का गल्हा या पिंड, 2. मांस का टुकड़ा; **~होणा** दूध फटना।

छेछर (पुं.) बहाना, तुल. मक्कर।

छेड़ (पुं.) 1. छेड़ने, सताने, तंग करने, चिढ़ाने आदि की क्रिया, 2. हँसी-ठिठोली का भाव, 3. झगड़ा–के छेड़ छेड़ दिया, 4. कार्य आरंभ करने का भाव–ईब तै चिनण (चिनाई) का काम छेड़ दिया, 5. साँप, बिच्छू, मधुमक्खी आदि को छूने, सताने या भड़काने का काम; (क्रि. स.) 'छेड़णा' क्रिया का आदे. रूप; **~करणा** 1. सताना, तंग करना या जानबूझ कर उकसाना, 2. ठिठोली करना; **~छाड़** 1. ठिठोली, मज़ाक, 2. छेड़खानी; **~छेड़णा** 1. कठिन या उत्पात का कार्य आरंभ कर बैठना, 2. मुसीबत मोल लेना, काँटों में हाथ देना–ईब यो छेड़ छेड़ तै लिया पर पूरा ए कर्‌याँ पींड छूट्टैगा; **~लाणा** 1. उल्टे सीधे काम में फँसाना–तूँह् भी बाळकाँ नैं उलटा छेड़ लावै सै, 2. बुरी आदत या लत में लगाना।

छेड़खान्नी (स्त्री.) 1. छेड़छाड़, 2. अठखेली; **~करणा** 1. शरारत करना, 2. महिला से अभद्र व्यवहार करना।
छेड़खानी (हि.)

छेड़णा (क्रि. स.) 1. किसी चीज़ को छूना या स्पर्श करना, 2. तंग करना, 3. उत्तेजित करना–साँप का छेड़णा आच्छ्या नाँ होत्ता, 4. महिला से अनचाहे मज़ाक करना, 5. नया काम

शुरू करना, 6. गीत शुरू करना; (वि.) जो सबको छेड़ता फिरे। **छेड़ना** (हि.)

छेड़ना (क्रि. स.) दे. छेड़णा।

छेछालेदर (स्त्री.) अवज्ञा।

छेतणा (क्रि. स.) 1. पीटना, छिताई करना, 2. हथौड़े से पीटकर चौड़ा करना; (पुं.) हथौड़ा; **रोट्टी~** रोटी बनाना (शीघ्रता में)। **छेतना** (हि.)

छेद (पुं.) दे. छेक।

छेदणा (क्रि. स.) दे. छेकणा।

छेदना (क्रि. स.) दे. छेकणा।

छेनी (स्त्री.) दे. छीणी।

छेपरा (वि.) वह पशु जिसके सींग दाईं-बाईं दिशा में भूमि के समानांतर हों; (पुं.) 1. फसल का एक रोग, 2. एक हानिकारक कीड़ा।

छेम (स्त्री.) 1. कुशल, 2. सामर्थ्य। **क्षेम** (हि.)

छेरणा (क्रि. अ.) 1. पशु द्वारा बार-बार पतला गोबर करना, पतला मल-विसर्जन करना, 2. भयभीत होना, डरना; (वि.) छेरने वाला। **छेरना** (हि.)

छेरी (स्त्री.) 1. छेरने की क्रिया, 2. पशु का पतला गोबर, 3. बछेरी, 4. बछिया; **~लागणा** पेट चलना, दस्त लगना।

छेरु (वि.) डरपोक।

छेलड़ा (पुं.) 1. फटे हुए दूध का टुकड़ा या गल्हा, 2. गाय-भैंस के प्रजनन काल से दूसरे-तीसरे दिन का खीस (दे.) के बाद का दूध जो उबालने पर फट जाता है, 3. पनीर, 4.टुकड़ा; **~(-ड़े) करणा/बणाणा** दूध फाड़ना, पनीर बनाना; **~(-ड़े) होणा** 1. दूध फटना, 2. छिन्न-भिन्न होना।

छेवर (पुं.) दे. छोर।

छैंयाँ[1] (वि.) छः की गिनती जो बहुधा तोल के समय उच्चरित की जाती है।

छैंयाँ[2] (स्त्री.) साया। **छाया** (हि.)

छै. (क्रि.) है। 1. दे. सै। उदा.–थारो के घटै छै. जी–अजी आप का क्या घटता है। (सीमित प्रयोग)

छैल (पुं.) 1. सुंदर युवक, 2. पति; (वि.) शौक़ीन, बन-ठन कर रहने वाला; **~छूटणा** मनचाहा व्यवहार करना।

छैलकड़ा (पुं.) पैर का एक वलयाकार आभूषण जो कड़ी (दे.) के ऊपर पहना जाता है; **गिटियाँ का~** गिट्टी वाले छैलकड़े जिसमें दोनों वलयों के बीच में गिट्टियाँ लगी होती हैं।

छैलछबील्ला (वि.) शौक़ीन। **छैल छबीला** (हि.)

छैल-छलैरा (पुं.) श्वेत तथा लाल रंग के चंदन के वृक्ष।

छैलड़ (पुं.) 1. वह बछड़ा जो गाय का सारा दूध पीता हो (गाय का सारा दूध उस बछड़े को पिलाया जाता है जिसे साँड बनाना हो), 2. शक्तिशाली सुडौल बछड़ा, 3. नया साँड; (वि.) स्वतंत्र, स्वछंद विचरने वाला; **~छूटणा** 1. स्वछंद विचरण की अनुमति मिलना, 2. साँड छुटना या घोषित किया जाना; **~छोडणा** 1. पूर्ण स्वतन्त्रता देना, 2. बछड़े को गाय का सारा दूध पीने देना, 3. साँड छोड़ना।

छै लंबर (पुं.) सेना का वह दस्ता जो दूसरे महायुद्ध में जर्मन के खिलाफ लड़ते हुए वीरता से शहीद हुआ।

छो (पुं.) दे. छोह।

छोकरा (पुं.) दे. छोहरा।

छोकरी (स्त्री.) दे. छोहरी।

छोक्कर (पुं.) गूजरों का एक गोत।

छोटकी (वि.) दे. छोटळी।

छोटणा (वि.) 1. छोटा, 2. सबसे छोटा बच्चा–दाद्दा तेरे छोटणे का न्यौता सै, तुल. छोटळा, 3. 'बड़ळा' का विलोम। **छोटेवाला** (हि.)

छोटळा (वि.) दे. छोटणा।

छोटळी (वि.) 1. छोटी, 2. 'बड़ळी' का विलोम।

छोटा (वि.) दे. छोट्टा।

छोटाखान्ना (पुं.) गूजरों का एक गोत।

छोटापन (पुं.) दे. ओच्छापण।

छोट्टळ (वि.) 1. छोटा, 2. 'बड्डल' का विलोम।

छोट्टा (वि.) 1. छोटे कद का, 2. आयु में छोटा, 3. हीन, तुच्छा, हेय; **~मोट्टा** 1. छोटा-बड़ा, 2. साधारण, जैसा-तैसा। **छोटा** (हि.)

छोट्टी (वि.) 1. छोटे कद की, 2. आयु में छोटी; **~काट्ठी का/रास का** छोटे क़द का। **छोटी** (हि.)

छोड (स्त्री.) 1. विश्राम, 2. कूआँ जोतने वालों का विश्राम का समय, 3. सूद में या वसूली में दी जाने वाली कटौती, 4. सिवाय–गीह्ल्लू नैं छोड कोए घुळले, 5. छूट, स्वतंत्रता; (क्रि. स.) 'छोडणा' क्रिया का आदे. रूप; **~करणा** 1. बैलों को विश्राम देना, 2. पशुओं को चारा खिलाने आदि के लिए कूआँ चलाना बंद करना; **~का बखत** कूआँ, हल, गाड़ी आदि जोतते समय विश्राम करने का समय (कूएँ में लगभग तीन बार 'छोड' होती है–पूर्वान्ह लगभग दस बजे, मध्यान्ह लगभग एक बजे तथा अपराह्न लगभग चार बजे, सूर्यास्त के समय कूआँ जोतना प्रायः बंद कर देते हैं); **~मारणा** 1. निकम्मा रहना, 2. विश्राम करना।

छोडणा (क्रि. स.) 1. त्यागना, 2. हाथ से फेंकना या डालना, 3. क्षमा करना–जा आज तै छोड दिया सै, फेर इतकै मतना आइये, 4. विवाह-बंधन तोड़ना–टीट्टू झीम्मर नैं अपणी बहू छोड़ दी, 5. बलि चढ़ाना–मात्ता पै जाकै इब बी बालकाँ पै मुरगा छुडवावैं सैं यो बली का पुराणा ढंग सै पहल्याँ तै मुरगे का सिर काट दिया करते, 6. साँड छोड़ना या दागना–रामचंद बाणिया नैं अपणी देई गा (वह गाय जिसका दूध बिलोना मना है, केवल पीया जाता है) का बाछड़ा आँक्कल छोड़ दिया, 7. तीर आदि चलाना या फेंकना, 8. बीमारी आदि से मुक्ति मिलना, 9. वेग के साथ बाहर निकालना, 10. बचाना, 11. भूल से किसी काम का बच रहना, 12. मैथुन के लिए नर पशु को मादा के पीछे छोड़ना या लगाना–गा पै आँक्कल (साँड) छुडवाल्या, 13. पीटना, हाथ छोड़ना या चलाना। **छोड़ना** (हि.)

छोड़ना (क्रि. स.) दे. छोडणा।

छोडिया (पुं.) 'छोड' (दे.) के समय पर भोजन ले जाने वाला।

छोड्डा (पु.) दे. बक्कल।

छोत (स्त्री.) 1. स्वच्छता या पवित्रता का भाव, 2. संक्रामक बीमारी, (दे. लुत), 3. किसी वस्तु पर रहने वाली पतली परत, 4. आभा; **~ऊप्पड़णा** छूत की

फुंसियाँ होना; **~करणा** 1. स्वच्छता का हर समय ध्यान रखना, 2. पवित्र-अपवित्र का भेदभाव बरतना; **~झड़वाणा** छूत की बीमारी का झाड़ा लगवाना; **~तारणा** छूत के कीटाणु हटाना–छोत तार कै चूँच्ची प्याइये; **~मानणा** किसी अपवित्र वस्तु का पवित्र वस्तु पर प्रभाव पड़ना–तुळसाँ सूख न्यूँ गई अक या छोत मानगी; **~राखणा** स्वच्छता का हर समय ध्यान रखना, 2. पवित्र-अपवित्र का भेदभाव बरतना; **~झड़वाणा** छूत की बीमारी का झाड़ा लगवाना; **~तारणा** छूत के कीटाणु हटाना–छोत तार कै चूँच्ची प्याइये; **~मानणा** किसी अपवित्र वस्तु का पवित्र पर प्रभाव पड़ना–तुळसाँ सूख न्यूँ गई अक या छोत मानगी; **~राखणा** स्वच्छता का ध्यान रखना; **~लागणा** छूत की बीमारी लगना।

छोतका (पु.) छिलका।

छोतला (वि.) 1. छुआछूत बरतने वाला, 2. साफ-सुथरा रहने वाला, 3. अच्छी नस्ल का (बछड़ा)।

छोमान (वि.) क्षीयमान।

छोर (पु.) किनारा, (दे. छ्योर[2, 3])।

छोरट (पु.) दे. छोहरा।

छोरा (पु.) दे. छोहरा।

छोल (स्त्री.) 1. गन्ने छीलने का काम, 2. शरीर का कोई अंग छिलने का भाव–कूँहणी पै बुलध के सींग की छोल लागगी, 3. निन्दा, चुगली–तूँह तै सारी हाण (समय) मेरी छोल पै लाग्या रहै सै, 4. बोल, बोली (व्यंग्य) छीलने वाले वचन, 5. छीलने के लिए डाले गए गन्ने, 6. छिला हुआ स्थान, घाव, 7. छोल की मज़दूरी; (क्रि. स.) 'छोलणा' क्रिया का आदे. रूप; **~आणा** गन्ना पेरने योग्य हो जाना, गन्ना पकना; **~करणा** 1. पेरने से पहले गन्ने की पत्तियों को दराँती से हटाना, 2. निंदा करना; **~छोलणा** 1. घाव ताज़ा करना, 2. गहरी चोट करना; **~लागणा** 1. गन्ने की कटाई शुरू होना, 2. घाव होना, 3. बात चुभना।

छोलक (पुं.) छिलका।

छोलणा (क्रि. स.) 1. छाल उतारना, 2. लकड़ी को समतल करना या आवश्यकता अनुसार काटना, 3. गन्ने की पत्तियाँ हटाना, 4. घायल करना, 5. बोली मारना, ताना कसना, 6. खुरचना, 7. चने, बादाम आदि की गिरी निकालना; (वि.) पैना या तेज़ धार वाला (औज़ार)। **छीलना** (हि.)

छोलना (क्रि. स.) दे. छोलणा।

छोला (पुं.) 1. दे. छोल्ला, 2. दे. छोलिया।

छोलिया (पुं.) 1. चना, 2. चने की टाट को छीलकर निकाला हुआ हरा चना, 3. भुना हुआ कच्चा चना, 4. गन्ने की छोल का काम करने वाला; **~आणा** चने के पौधे पर टाट (दे. टाट[1]) लगनी शुरू होना; **~करणा** हरे चने को भून कर 'होळे' (दे.) बनाना; **~सा मुँह** कोमल और सुंदर मुख।

छोल्लक (पुं.) दे. फोल्लर।

छोल्लण (पुं.) छिलके; **ओल्लण~** बचा-खुचा।

छोल्ला (पुं.0 1. गन्ने की छीलने का काम करने वाला, 2. चना।

छोह (पुं.) क्रोध, गुस्सा; **~औढणा** क्रोध को शांतिपूर्वक सहना; **~तारणा** क्रोध

उतारना; **~थूकणा** क्रोध भुलाना; **~पीणा/मारणा** क्रोध को मन ही मन समा लेना। **क्षोभ** (हि.)

छोहणा (क्रि. अ.) क्षुब्ध होना, गुस्से में आना; (वि.) क्रोधी।

छोहरट (पुं.) छोटा बच्चा, तुल. छोहरा।

छोहरा/छोह्रा (पुं.) 1. लड़का, 2. पुत्र, 3. छोटा बच्चा, 4. सुंदर युवक; **~छोहरी** 1. छोटे बच्चे, संतान, 2. पुत्र-पुत्री। **छोकरा** (हि.)

छोहरी/छोह्री (स्त्री.) 1. लड़की, 2. पुत्री; (वि.) 1. हिजड़ा–छोहरी कै छोहरी ब्याही गई, 2. दुर्बल या कमजोर जाति की–बिचारी के करती, छोह्री की जात थी; **~का खाणा** 1. पाप कमाना, पाप की कमाई खाना, 2. घोर अपराध करना, 3. लड़की का हक दबाना, 4. लड़की बेचकर पैसा काम में लाना; **~का धन** 1. लड़की जाति, 2. पुत्री का धन; **~की जात** कमज़ोर या दुर्बल जाति या वर्ग; **~बेचणा** 1. वर-पक्ष से पैसे लेकर पुत्री का विवाह करना, 2. जघन्य कार्य करना, 3. समाज-विरोधी काम करना; **~बेच्चा** 1. एक गाली, 2. पुत्री बेचने वाला। **छोकरी** (हि.)

छोहला (वि.) क्रोधी स्वभाव का।

छोहली (वि.) क्रोधी स्वभाव की (महिला)।

छोह्रटी (स्त्री.) दे. छोहरी।

छोह्रड़ा (पुं.) दे. छोहरा।

छौंक (पुं.) दे. छ्योंक।

छौंकणा (क्रि. स.) 1. दे. छ्योंकणा, 2. दे. ढुंगार।

छ्याणमैं (वि.) छियानवे की संख्या। **छियानवें** (हि.)

छ्याणा (क्रि. स.) 1. छत डालना, 2. छाया करना, 3. ढाँपना, 4. रक्षा करना, 5. व्याप्त होना, 6. प्रसिद्धि प्राप्त करना, 7. बादल आदि का आच्छादित होना; **तळी~** पात्र का नीचे का भाग भरना–गा नैं थोड़ा ए दूध दिया बाल्टी की तळी-तळी छ्या पाई। **छाना** (हि.)

छ्यामाँ (वि.) 1. कशीदा की हुई (ओढ़नी), 2. छाया हुआ, आच्छादित।

छ्याळी (वि.) छियालीस की संख्या। **छियालीस** (हि.)

छ्यावणी (स्त्री.) सेना के ठहरने का स्थान, पड़ाव। **छावनी** (हि.)

छ्यावा (स्त्री.) 1. घर, मकान, ऐसा मकान जिस पर छत डली हो, 2. छाया, 3. आश्रय, संरक्षण; **~करणा** 1. छाया करना, 2. रक्षा करना, संरक्षण में रखना; **~छ्याणा** 1. घर बनाना, 2. घर की छत डालना, 3. कष्ट का समय आना; **~राखणा** रक्षा करना, देखभाल करना–हे भगवान तूँ हे छ्यावा राखले; **~होणा** 1. धूप नहीं पड़ना, छाया आना, 2. अँधेरा होना, 3. कष्ट का समय आना।

छ्यासट (वि.) छियासठ की संख्या। **छियासठ** (हि.)

छ्यास्सी (वि.) छियासी की संख्या। **छियासी** (हि.)

छ्योंक (पुं.) 1. छोंकने की क्रिया, 2. मिश्रण, मिलावट, 3. (दे. ढुंगार); **~लाणा** 1. छोंकना, 2. बीच में टोकना। **छौंक** (हि.)

छ्योंकणा (क्रि. स.) तड़का लगाना, छोंक लगाना। **छौंकना** (हि.)

छ्योर[1] (पुं.) आयत या शंकु आकार में लगाया गया जवार, बाजरे आदि की

पूलियों (चारा) का ढेर, पूलियों की व्यवस्थित ढेरी; **~खोह्लणा/पाड़णा** 1. छोर से पूलियाँ निकालना शुरू करना, 2. पूलियों को सुखाने के लिए उन्हें इधर-उधर फैलाना, 3. बखेड़ा खड़ा करना, मुसीबत मोल लेना; **~छांपणा/लाणा** पूलियों को व्यवस्थित ढंग से चिनारना। **छोर** (हि.)

छ्योर[2] (पुं.) किनारा; **~पाणा** किनारा पाना, अंत मिलना। **छोर** (हि.)

छ्योर[3] (पुं.) असंख्य जीव-जंतुओं का झुंड–सिर में ल्हीख अर ढेर्याँ का छ्योर पड़ रह्या सै; **~चालणा/पड़णा/होणा** असंख्य जीव-जंतु होना (जूँ, कीड़े आदि)।

छ्योरी (स्त्री.) छोटे आकार का छोर, (दे. छ्योर[1])।

ज

ज हिंदी वर्णमाला का एक व्यंजन जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है, इसका उच्चारण स्थान तालु है, हरियाणवी में इसका उच्चारण कुछ-कुछ 'ज अ' या 'जै' के समान है।

जंक (पुं.) चाँदी की पतरी का टुकड़ा।

जंग (स्त्री.) 1. लड़ाई, 2. बड़ी लड़ाई, युद्ध, 3. रथ में बजने वाला बड़ा घंटाला, 4. जर, (दे. जर[1]); **~जीतणा/मारणा** 1. मनोरथ सफल होना, 2. मोर्चा जीतना, 3. बाज़ी मारना; **~झोणा** युद्ध में जूझना।

जंगल (पुं.) दे. जंग्गल।

जंगला (पुं.) 1. दीवार में बना झरोखा, 2. दीवार में बनी छोटी अलमारी जिसमें खिड़की न लगी हो।

जंगली (वि.) 1. जंगल में रहने वाला, 2. जो पालतू न हो, 3. (शिशु) जिसका जन्म संयोग से जंगल में हो गया हो, 4. असभ्य, गँवार, 5. (पौधा) जो बिना बोए उगा हो।

जँगाड़िया (पुं.) दे. तीर[1]।

जंगाल (पुं.) बड़ी कूँड, (दे. कूँड)।

जंगाळी (स्त्री.) 1. युक्ति, तिकड़म, 2. बाधा, 3. भारी जंगल; **~लाणा** 1. युक्ति निकालना, 2. बाधा होना–किमैं इसी जंगाळी लाग्गी अक नीच्चै ढह पड़्या।

जंगी (वि.) 1. भारी, भारी-भरकम, 2. मज़बूत–जूत्ती तै आच्छी जंगी बणवाई, 3. वीर, लड़ाका, 4. युद्ध से संबंधित; **~ढोल** 1. बड़ा ढोल, 2. वह ढोल जो युद्ध के समय बजाया जाता है; **~बेड़ा** जहाजी बेड़ा; **~मोगरा** भारी- भरकम लाठी।

जँगोड़णा (क्रि. स.) 1. संचित करना, 2. परिश्रमपूर्वक संचय करना–मैं तै जोड़ूँ रे जँगोड़ूँ थोड़ा खाऊँ रे बना, (लो. गी.), 3. पालना-पोसना। **जोड़ना** (हि.)

जंग्गल (पुं.) 1. निर्जन स्थान, 2. खेत, 3. चरागाह, 4. मल, टट्टी; **~ठाणा** बच्चे की टट्टी उठाना; **~बास्सा** जंगल में निवास; **~बोलणा** 1. वर्षाकाल में जंगल से एक विशेष प्रकार की गूँज सुनाई पड़ना, 2. जंगल में पशु-पक्षियों का चहचहाना; **~मैं मंगल होणा** जंगल में नई बस्ती बसने या मंदिर आदि के

बनने पर चहल-पहल होना। **जंगल** (हि.)

जंगगल-बास्सा (पुं.) बारात ठहरने का स्थान, चौपाल। **जनवासा** (हि.)

जँघा (स्त्री.) दे. जघाँ।

जंघा (स्त्री.) दे. जाँघ।

जँचणा (क्रि. अ.) 1. शोभा देना, अच्छा लगना–कुल्ले का साप्फा पहर कै तूँ खूब जँच्चै सै, 2. टिकना, स्थिर होना, स्थापित होना–आँहे! मटका ईंढी पै ठीक जँचग्या?, 3. निश्चय होना, मान लेना–आँह रे, तिरै (तुम्हें) या बात जँचगी अक मैं लड़ाई मैं मरग्या था?, 4. प्रतीत होना, लगना– मन्नै तै इस जँच्चै सै अक बटेऊ साँझ ताहीं आ लेगा, (दे. जचणा)। **जचना** (हि.)

जँचना (क्रि. अ.) दे. जँचणा।

जंजाल (पुं.) दे. जँजाळ।

जँजाळ (पुं.) 1. झंझट, उलझन, 2. पहेली, 3. स्वप्न–रात नैं इसे जँजाळ आए अक के बताऊँ, 4. भ्रम–दुनिया जँजाळ सै, 5. झगड़ा, विवाद; **आळ~** 1. बखेड़ा, झंझट, 2. स्वप्न; **~खड़्या होणा** उलझन उत्पन्न होना।

जँजाळिया (वि.) 1. उलझन में डालने वाला, 2. झगड़ालू, (दे. अळझेड़िया), 3. भूत-विद्या जानने वाला, सेवड़ा।

जँजीर (स्त्री.) 1. जंजीर, जँजीरा, सोने की शृंखला की माला, 2. (दे. बेल)।

जंटर मैन (पुं.) फ़ैशनपरस्त व्यक्ति।

जंत (पुं.) सुनार का एक उपकरण, तारकशी का एक उपकरण।

जंतर[1] (पुं.) 1. जादू-टोने का ताबीज़, गंडा-डोरी आदि, 2. टोना टोटका, 3. तांत्रिक यंत्र, 4. गले में पहनने का एक गहना; **~करणा** जादू-टोना करना, जादू करना; **~चढणा** जादू लगना।

जंतर[2] (पुं.) 1. छोटा या क्षुद्र जीव, कीड़ा, 2. साँप, 3. विषैला कीट–रात नैं देख कै जाइए कदे कोए जीव जंतर पड़्या हो।

जंतर[3] (पुं.) एक फसल जो ज्येष्ठ-आषाढ़ में सन-पटसन के साथ बोई जाती है।

जंतर-मंतर (पुं.) 1. जादू-टोना, 2. न समझ में आने वाली बात, 3. वेध शाला।

जंतरी (स्त्री.) पत्रा, तिथि-पत्र, (दे. पतरा)।

जंता (स्त्री.) 1. जनता, प्रजा, 2. भीड़, समूह।

जंती (पुं.) छिद्र।

जंतु (पुं.) जीव, प्राणी।

जंत्री (स्त्री.) दे. जंतरी।

जंद (स्त्री.) सेवियाँ बनाने की मशीन।

जंदणी (स्त्री.) दे. जतणी।

जंदा (पुं.) दे. ताळा।

जंबू दीप (पुं.) जंबू द्वीप, वह द्वीप जिसमें भारत-भूमि स्थित है।

जंबूर (पुं.) दे. जमूर।

जंबूरा (पुं.) दे. जमूरा।

जँभाई (स्त्री.) जम्हाई, उबासी।

जःजः (स्त्री.) ऊँट को बैठाने या जहकाने के लिए उच्चरित ध्वनि।

जइयाँ (पुं.) एक कीट।

जई (स्त्री.) एक अन्न जिसका दाना बहुत छोटा और हल्का होता है।

जक (स्त्री.) 1. चैन, 2. रट।

जकड़ (स्त्री.) 1. पकड़, 2. फंदा, 3. वश।

जकड़णा (क्रि. स.) 1. वश में करना, 2. जकड़बद्ध करना। **जकड़ना** (हि.)

जकड़ना (क्रि. स.) दे. जकड़णा।

जकड़बध (वि.) जकड़ बद्ध; **~करणा** बुरी तरह से लपेटना, रस्सियों से लपेटकर डालना।

जकड़ी (स्त्री.) तुकांत या अतुकांत रंजक उक्ति–भोळा बूज्झे भोळी नैं, के राँद्धैगी होळी नैं। सब दिन राँद्धे टींट बाड़वे, सक्कर चावल होळी नैं।।

जकोड़णा (क्रि. स.) दे. जँगोड़णा। **जोड़ना** (हि.)

जक्क (पुं.) 1. यक्ष, 2. कपिल यक्ष।

जक्की (स्त्री.) लड़कियों द्वारा खेला जाने वाला कंकड़ों का खेल।

जखम (पुं.) दे. घा।

जखमी (वि.) घायल।

जखीरा (पुं.) वस्तुओं का संग्रह, भंडार।

जग[1] (पुं.) संसार, दुनियाँ; **~जीतणा** 1. बड़ा मोर्चा जीतना, 2. सफलता मिलना; (क्रि. स.) 'जागणा' क्रिया का आदे. रूप; **~जोन्नी** चौरासी लाख योनियाँ; **~ ~मैं पड़णा** जीवन-मरण के चक्र में पड़ना; **~दिखाई होणा** 1. भेद खुलना, 2. निंदा फैलना; **~दिखावा** 1. सबके सम्मुख अपना अपमान कराने वाला, 2. वह कार्य जो दिखावे के लिए किया जाए; **~सारू** 1. इतनी मात्रा जो सभी के लिए काफ़ी हो, अमित, 2. 'घर सारू' का विलोम–आज तै जग सारू मींह बरस्या; **~हँसाई** व्यापक निंदा, लोक हँसाई; **~ ~होणा** चारों ओर से अपमान ही अपमान मिलना।

जग[2] (पुं) 1. हवन, 2. पुण्य कार्य; **~करणा** 1. यज्ञ करना, 2. पुण्य कार्य करना; **~बोलणा** किसी कार्य की सिद्धि होने पर यज्ञ का प्रण लेना। **यज्ञ** (हि.)

जग[3] (पुं.) शीशे आदि का बना जलपात्र विशेष।

जगणा (क्रि. अ.) 1. सोकर उठना, नींद खुलना, 2. ज्योतित होना, प्रकाशित होना–दीवा जग्गण का बखत हो ग्या, 3. जोत जगना। **जगना** (हि.)

जगत (पुं.) 1. संसार, 2. कूएँ की मुँडेर, 3. तट, किनारा; **~झूट्ठा** सदा झूठ बोलने वाला, महा झूठा; **~-पती** भगवान; **~-सेठ** बहुत धनी, जिसके पास अमित संपत्ति हो।

जगदीश (पुं.) दे. जगदीस।

जगदीश चंद्र वत्स (पुं.) (1916-1997) कवि शिरोमणि का जन्म कुराना (करनाल) में हुआ। बाद में ये एंचरा खुर्द जींद में जा बसे।

जगदीस (पुं.) भगवान, ईश्वर। **जगदीश** (हि.)

जगना (क्रि. अ.) दे. जगणा।

जगन्नाथ (पुं.) जगत का स्वामी, ईश्वर।

जगन्नाथ पुरी (स्त्री.) हिंदुओं का एक प्रसिद्ध धाम जो वर्तमान ओड़ीशा राज्य में समुद्र-तट पर स्थित है–ओडीसी जगन्नाथपुरी मैं, ठाक्कर भले बिराजे जी; वै तै सहोदरा के बीर, समन्दर तीर बिराजे जी, (लो. गी.)।

जगमग (वि.) 1. प्रकाशित, 2. ऐसा प्रकाश जो कभी जले तथा कभी बुझे; (स्त्री.) प्रकाशमान स्थिति; **~ज्योत** 1. जगमग ज्योति, 2. अखंड ज्योति, 3. तेज़ चमक।

जगमगाट (स्त्री.) प्रकाशमान होने की स्थिति। **जगमगाहट** (हि.)

जगमगाणा (क्रि. अ.) 1. चमकना, 2. रुक-रुक कर चमकना, 3. टिम-टिमाना, 4. अत्यधिक प्रकाशित होना, 5. शरीर से आभा या चमक निकलना; (क्रि. स.) माँज कर चमकाना (पात्र आदि को), अधिक स्वच्छ करना। **जगमगाना** (हि.)

जगमगाना (क्रि. अ.) दे. जगमगाणा।

जगमगाहट (स्त्री.) दे. जगमगाट।

जगमोतिया (पुं.) एक कीमती हार।

जगमोतियारा (वि.) जगमग मोतियोंवाला (हार)।

जगरा (पुं.) (मकर संक्रांति के दिन) आग जलाने के लिए लगाया गया उपलों का समूह।

जगवाणा (क्रि. स.) जगाने का काम अन्य से करवाना।

जग-साल्ला (पुं.) यज्ञ का स्थान। **यज्ञशाला** (हि.)

जगह (स्त्री.) दे. जघाँ।

जगाणा (क्रि. स.) 1. सोते हुए को उठाना, 2. सावधान करना, सचेत करना, 3. उद्‌बोधन करना–देऊठणी ग्यास (देवोत्थानी एकादशी) नैं थाळी पीट कै दे (देव) जगाण लाग रहे थे, 4. आग जलाना, सुलगाना, 5. उत्तेजित होना या करना, जैसे–राड़ जगाणा, साँप जगाणा, 6. झगड़े के लिए प्रेरित करना। **जगाना** (हि.)

जगात (स्त्री.) 1. चुंगी, 2. टैक्स, कर।

जगाना (क्रि. स.) दे. जगाणा।

जघाँ (स्त्री.) 1. स्थान, 2. मज़बूत स्थिति या स्थान;**–सिर** ठीक स्थान पर; **–बैठणा** उचित स्थान पर बैठना। **जगह** (हि.)

जचणा (क्रि. अ.) 1. टिक कर बैठना, 2. स्थिर होना, 3. विश्वास होना, (दे. जँचणा), 4. फबना। **जचना** (हि.)

जच्चा (स्त्री.) 1. स्त्री जिसने हाल ही में बच्चे को जन्म दिया हो, बालक को जन्म देने के बाद से चालीस दिन तक स्त्री की स्थिति [इस समय उसे कोई शारीरिक श्रम नहीं करने दिया जाता तथा खाने के लिए घी, गूंद (पँजीरी) सौंठ, अजवायन आदि के लड्डू दिए जाते हैं, इसकी चारपाई के चारों ओर लोहे की जंजीर, पल्टा, चिमटा आदि रखते हैं ताकि भूत-प्रेत आत्माओं से सुरक्षित रहे], 2. वे गाने जो जच्चा और बच्चा की मंगल कामना, अच्छे भविष्य, हँसी, ठिठोली आदि विषयों से संबंधित होते हैं, जैसे–1 जच्चा की चटोरी जीभ जलेब्बी माँग्गै सै, 2. जच्चा तेरा बच्चा बड़ा बलवान बणै; (वि.) कमज़ोर, क्षीण काय; **~गाणा** जच्चा के गीत गाना।

जज (पुं.) दे. झज।

जजमान (पुं.) 1. वह जो ब्राह्मणों को दान देता हो [गाँव की जाट, गूजर आदि जातियाँ ब्राह्मणों के यजमान हैं, परंपरा के अनुसार गाँव में बसने वाली विभिन्न उच्च जातियाँ ब्राह्मण परिवार को अपने साथ ही रखती थीं और गाँव बदलने के साथ ब्राह्मण को भी अपने साथ ले जाती थीं, ब्राह्मण संस्कार हवन तथा धार्मिक कृत्य करते थे और यजमान दौहली (दान में दी गई भूमि) आदि का दान देते थे, कहीं-कहीं एक ही ब्राह्मण पाँच-सात गाँवों में यजमानी करता है], 2. वह जो दान देता हो (जाट, गूजर, अहीर आदि भंगी तथा

चमारों के जजमान हैं क्योंकि वे इन जातियों को दान देते हैं), 3. यज्ञ कराने वाला ब्राह्मण, 4. सम्मानित व्यक्ति। **यजमान** (हि.)

जजमान्नी (स्त्री.) 1. यजमानी का कार्य, यज्ञ करने, संस्कार आदि करने, यजमानों के घरों में भोजन बनाने आदि का कार्य, 2. यजमानों से दान ग्रहण करने का कार्य; **–करणा** विशेष अवसरों पर यजमान के घर में जाकर भोजन करना तथा दान आदि ग्रहण करना; **–चालणा** पीढ़ी-दर-पीढ़ी परिवार में यजमानी का कार्य होना; **–बांटणा** यजमानों के परिवारों में बढ़ोतरी होने पर घरों का फिर से बंटवारा करना। **यजमानी** (हि.)

जजरबेद (पुं.) 1. चार वेदों में से एक वेद, 2. उलझन भरा काम; **–छेड़णा** समझ में न आने वाली बात कहना; **–बांचणा/पढणा/सुणाणा** 1. उपदेश देना, 2. समझ में न आने वाली बात कहना, 3. यजुर्वेद का पारायण करना। **यजुर्वेद** (हि.)

जट (पुं.) 1. जाट का अल्प रूप, 2. उन जातियों के साथ लगने वाला विशेषण जो कभी जाट थे, यथा–मूळे जट।

जटराणा/जटराणी (पुं.) 1. जाटों का एक गोत जिसे अब 'राणा' भी कहा जाता है, राणा जाट, 2. इस गोत के लोगों की खाप या गाँव-समूह।

जटवाड़ा (पुं.) जाटों की जाति का मोहल्ला या 'पान्ना' (दे.)।

जटा (स्त्री.) 1. सिर के लंबे बाल, 2. साधुओं के सिर के लंबे बाल (जो बड़ का दूध लगाने आदि के कारण छोटी लटाओं में बंट जाते हैं), (दे. लटा), 3. बड़-पीपल की हवाई जड़, 4. जड़ के पतले-पतले सूत, जड़; **–आणा** बड़, पीपल आदि के पौधों में हवाई जड़ निकलना शुरू होना; **–जामणा** 1. हवाई जड़ उगना, 2. साधुओं के बालों की लटाएँ बनना, 3. स्थिति मजबूत होना; **–बणणा/ बंधणा** जटाएँ बनना, लटा बनना।

जटा-जूट (स्त्री.) 1. लंबे बाल, 2. साधु की लटें, 3. अधिक जड़ों वाली घास-फूस;**–बधाणा** सिर के बाल बढ़ाना।

जटाधारी (वि.) जिसके सिर पर जटा हों।

जटिया (वि.) जाट से संबंधित।

जटिया चमार (पुं.) एक चमार जाति, एक अनुसूचित जाति।

जटैत (स्त्री.) 1. मेवात से सटा एक जाट-बहुल क्षेत्र, 2. जाट जाति के लोगों का समूह; **~कट्ठी होणा** जाट जाति की पंचायत जुड़ना।

जठाणी (स्त्री.) दे. जिठाणी।

जठै (अव्य.) जहाँ। तुल. जड़ै।

जठोड़ा (पुं.) दे. जेठूड़ा।

जड़ (स्त्री.) 1. पेड़-पौधों का वह भाग जो भूमि में रहता है, मूल, 2. नींव, बुनियाद, यथा–झगड़े की जड़; (वि.) 1. मूर्ख, 2. अचेतन, 3. अंतिम छोर; (क्रि. वि.) निकट, समीप–मेरी जड़ में बैठ जा; (क्रि. सा.) 'जड़णा' क्रिया का आदे. रूप; **~काटणा/ खोदणा/ पाड़णा** 1. चुगली या निंदा करना, 2. समूल नष्ट करना; **~काटणिया** 1. शत्रु, बैरी, 2. पापी; **~चालणा** 1. वंश बेल फैलना, 2. नई जड़ें फूटना; **~जामणा** 1. पहुँच होना, 2. बातें

आना, 3. स्थिति मज़बूत होना;–तैं **~खोणा** 1. नापैद करना, वंश नष्ट करना, 2. जड़ से उखाड़ फैंकना; **~पाकड़णा** 1. हौसला बढ़ना, 2. जमना, 3. स्थिति मज़बूत होना, 4. पैर जमाना–गौह नैं इसी जड़ पाकड़ी अक छुटाई नां छूट्टी।

जड़णा (क्रि. अ.) जड़ निकलना, अंकुर निकलना; (क्रि. स.) 1. एक चीज़ को दूसरी चीज़ में गड़ाना, 2. प्रहार करना, 3. सुदर लेख लिखना, 4. बात गढ़ना, जकड़ी बनाना। **जड़ना** (हि.)

जड़ना (क्रि. स.) दे. जड़णा।

जड़ भरत (पुं.) अँगिरस गोत्रीय एक ब्राह्मण जो जड़वत् रहते थे और जिनके नाम पर हमारे देश का 'भारत' नाम पड़ा माना जाता है।

जड़वाड़िया (पुं.) एक अहीर गोत, (दे. हीर)।

जड़वाणा (क्रि. स.) 1. लगवाना, युक्त करवाना, 2. ठुकवाना, 3. चिपकवाना, 4. जुड़वाना, 5. पिटाई करवाना, 6. जड़ने का काम अन्य से करवाना। **जड़वाना** (हि.)

जड़वाना (क्रि. स.) दे. जड़वाणा।

जड़ाई (स्त्री.) 1. जड़ने की मज़दूरी, 2. जड़ने का काम; (क्रि. स.) 'जड़ाणा' क्रिया का भूत कालिक, एक वचन, स्त्रीलिंग रूप।

जड़ाऊ (वि.) 1. जिस पर नग आदि जड़ा हो, जिस पर कुछ चीज़ जड़ी या बँधी हो, 2. जड़ने योग्य; **~किवाड़** 1. ऐसा दरवाज़ा जो पूरी तरह जुप कर बंद हो, 2. जिस किवाड़ में जड़ाई का काम हो; **स्याम~** वह लाठी जिसके नीचे लोहे की पोली लगी हो (ताकि प्रहार घातक सिद्ध हो)।

जड़ाणा (क्रि. स.) दे. जड़ावणा।

जड़ाना (क्रि. स.) दे. जड़ावणा।

जड़ाब्बा (पुं.) 1. बहुत सी जड़ें, 2. पौधा या घास जिसमें जड़ ही जड़ हों, 3. व्यर्थ की घास-फूँस; **~बैठणा** 1. बहुत जड़ें होना, जड़ें फैलना, 2. स्थिति मज़बूत होना।

जड़ाबा (हि.)

जड़ामूड़ (क्रि. वि.) जड़ सहित, मूल सहित, समूल; **~तैं खोणा** नष्ट करना।

जड़ावणा (क्रि. स.) 1. बीज बोने से पूर्व उसे पानी में भिगोकर अंकुरित करना, 2. जड़वाना, (दे. जड़वाणा)।

जड़ियल (वि.) दे. जड़ाऊ।

जड़िया (पुं.) 1. जड़ने का काम करने वाला, 2. स्वर्णकार, 3. सुंदर ढंग से काम करने वाला, 4. जकड़ी जोड़ने वाला; (वि.) जड़ा हुआ।

जड़ी (स्त्री.) जड़ी-बूटी, ओषधि।

जडूला (पुं.) दे. झडूल्ला।

जड़ै (क्रि. वि.) जहाँ–जड़ै तेरी मरजी आवै, जा।

जण (अव्य.) 1. जनु, जैसे, मानो (उत्प्रेक्षा वाचक)–दोन्नू मिल कै इसे झूल्ले, जण आँद्धी मैं टहणा-टहणी, 2. ख्याल या संभावना द्योतक शब्द–इसा लाग्या जण बटेऊ आवैगा, 1. (दे. जणु), 2. (दे. जणणा); (क्रि. स.) 'जणणा' क्रिया का आदे. रूप, यथा– जणकै (जन्म देकर)। **जनु** (हि.)

जणणा (क्रि. स.) जन्म देना।

जनना (हि.)

जणणी (स्त्री.) 1. जन्म देने वाली, माता, 2. जड़ या मूल कारण। **जननी** (हि.)

जणवाणा (क्रि. स.) दे. जणाणा।

जणा (पुं.) जन, एक व्यक्ति–एक जणा केक्के (क्या-क्या) कर ले (बहुवचन जणे), आए तै कई जणे थे (कुछ क्षेत्रों में एकवचन और बहुवचन का रूप समान है–आए तै कई जणा थे)।

जणाणा (क्रि. स.) 1. जितळाना, 2. महत्ता स्वीकार कराना, 3. चेतावनी देना, 4. जन्म दिलाने में सहायता देना। **जनाना** (हि.)

जणी (स्त्री.) जनीं, महिला–एक जणी गीत क्यूकर गामती (बहु व. जणियाँ–कई जणियाँ नैं मिल कै गीत ठाया); (क्रि. स.) 'जणणा' क्रिया का भू. का. स्त्रीलिंग रूप।

जणु (अव्य.) मानो, जैसे, दे. जण।

जणो (अव्य.) 1. दे. जण, 2. दे. जणु।

जत (पुं.) 1. जति पुरुष, 2. इंद्रियों को जीतने वाला, 3. लक्ष्मण, (दे. जती)। **जती** (हि.)

जतणी (स्त्री.) 1. बालों को रस्सी की तरह बट देकर बनाई गई डोरी (यह छोटे बछड़े-बछिया के गले में बाँधी जाती है), 2. चरसे में प्रयुक्त एक रस्सी, 3. रस्सी, काली रस्सी, बालों से गुँथी रस्सी; **~छुटाणा** बालों की रस्सी मेलना या बनाना; **~बाँधणा** गले में बालों की रस्सी बाँधना (ताकि नज़र न लगे)।

जतन (पुं.) 1. प्रयत्न, 2. प्रबंध, व्यवस्था, 3. भूत-प्रेत को दूर रखने के लिए किया गया कृत्य, 4. गुप्त प्रयत्न, 5. षड्यंत्र–उसका इसा जतन बाँध दिया अक ईब जीमता ना आवै, 6. संक्षिप्त रूप में किया गया धार्मिक कृत्य, 7. सरल उपाय; **~करणा** 1. प्रबंध करना, 2. सुरक्षा की व्यवस्था करना, 3. भूत-प्रेत दूर रखने के लिए पूजा-पाठ, जादू-टोना, गंडा-डोरा आदि करना, 4. प्रयत्न करना, 5. सरल उपाय निकालना; **~बाँधणा** 1. व्यवस्था करना, 2. उपाय साधना या उपाय सिद्ध करना, 3. कार्यपूर्ति के लिए साधना करना, 4. तपस्या करना, वरदान-प्राप्ति के लिए साधना करना; **~होणा** 1. पूर्ण व्यवस्था या उपाय होना, 2. धार्मिक कृत्य संपन्न होना, 3. समस्या का हल निकलना। **यत्न** (हि.)

जतनी (वि.) 1. यत्नशील, 2. उपाय निकाल लेने वाला, 3. सूझ-बूझ वाला, (दे. जतणी)।

जतरी (स्त्री.) 1. वह ताबीज़ या गंडा-डोरी जो नज़र से बचने, भूत-प्रेत से रक्षित रहने के लिए मंत्र-तंत्र द्वारा सिद्ध कराकर बाँधा जाता है, (दे. पतरी), 2. चाँदी, ताँबे के तार खींचने के काम में आने वाला यंत्र, जंता, जंती।

जत-सत (पुं.) 1. त्याग-तपस्या, साधना, 2. जती-सती; **~बिचासणा** त्याग-तपस्या की परीक्षा करना।

जताणा (क्रि. स.) 1. बतलाना, 2. अपनी सत्ता यथाशक्ति जतलाना, 3. सिद्ध करना। **जतलाना** (हि.)

जताना (क्रि. स.) दे. जताणा।

जती (पुं.) 1. इंद्रियों को जीतने वाला, 2. लक्ष्मण। **यती** (हि.)

जती-सती (पुं.) पवित्र आचरण वाला, धर्मात्मा।

जत्था (पुं.) दे. झत्था।

जद (क्रि. वि.) जब (सीमित प्रयोग)।

जदन (क्रि. वि.) जिस दिन।

जदुपति (पं.) श्री कृष्ण। **यदुपति** (हि.)

जदुराई (पुं.) 1. श्री कृष्ण, 2. यदुवंशी राजा। **यदुराई** (हि.)

जनक (पुं.) 1. सीता जी के पिता, 2. पिता।

जनकपुरी (स्त्री.) राजा जनक की राजधानी।

जनता (स्त्री.) दे. जंता।

जनना (क्रि. स.) दे. जणणा।

जननी (स्त्री.) दे. जणणी।

जनम (पुं) 1. पैदाइश, 2. जीवन; **~कमाणा** जन्म सफल करना; **~करम** जीवन-काल में किए गए अच्छे-बुरे कार्य; **~जात** जन्म काल से, जन्मतः। **जन्म** (हि.)

जनम कँवारी (स्त्री.) अक्षत योनि। उदा. –मेरी आज सुहागण रात भाई की सूँ जनम कँवारी सूँ (लचं)।

जनम कूँडळी (स्त्री.) टीप, जन्म पत्री। **जन्म-कुंडली** (हि.)

जनम-दिन (पुं.) वर्षगाँठ, वह दिन जब कोई पैदा हुआ हो। **जन्मदिन** (हि.)

जनम-पतरी (स्त्री.) पंचांग के अनुसार जन्मतिथि का ब्यौरा। **जन्म-पत्री** (हि.)

जन्म-भोम्मी (स्त्री.) 1. वह स्थान जहाँ किसी का जन्म हो, 2. मातृभूमि, 3. देश जहाँ जन्म लिया हो। **जन्मभूमि** (हि.)

जनमास्टमीं (स्त्री.) श्री कृष्ण जन्माष्टमी, भादों कृष्ण अष्टमी। **जन्माष्टमी** (हि.)

जनमेजय (पुं.) हस्तिनापुर के राजा परीक्षित के पुत्र (जिन्होंने सर्प-यज्ञ किया था)।

जनरी (स्त्री.) मछली पकड़ने का जाल।

जनवाना (क्रि. स.) दे. जणाणा।

जनवासा (पुं.) दे. जनवास्सा।

जनवास्सा (पुं.) चौपाल, बारात ठहरने का स्थान। **जनवासा** (हि.)

जनसंख्या (स्त्री.) आबादी की कुल संख्या।

जनान ख़ाना (पुं.) स्त्रियों के रहने का स्थान।

जनाना (क्रि. स.) दे. जणाणा।

जनाब (पुं.) दे. जिनाब।

जनार (स्त्री.) दे. जीम्मणवार।

जनावर (पुं.) दे. जिनावर।

जनी (स्त्री.) दे. जणी।

जनु (क्रि. वि.) दे. जणु।

जनेऊ (पुं.) यज्ञोपवीत; **~की सूँह** पवित्र सौगंध, धर्म की सौगंध; **~लेणा/घालणा** यज्ञोपवीत धारण करना, संस्कार के साथ विधिवत् यज्ञोपवीत पहनना (हरियाणे में कुछ विशिष्ट संस्कारित परिवारों को छोड़कर यह संस्कार विवाह के समय ही संपन्न होता है, ब्राह्मण छः लड़ों का तथा वैश्य नौ लड़ों का जनेऊ लेते हैं)।

जनेत (स्त्री.) वर-यात्रा, बारात; **~ऊत्तरणा** बारात का जनवासे में ठहरना; **~चढणा** 1. दुल्हे का विवाह के लिए प्रस्थान करना, 2. विवाह होना–थारे बड्डे भी कदे जनेत चड्ढे सैं?, 3. बालक का पहली बार बारात में जाना (इस अवसर पर विशेष प्रसन्नता मनाई जाती है और घर में गीत गाए जाते हैं, भाव यह है कि बालक संन्यासी नहीं वर के अनुकरण पर आगे चलकर गृहस्थी ही बनेगा); **~देखणा** गाँव की लड़कियों, महिलाओं और बच्चों द्वारा दुल्हे तथा बारात को देखना; **~लेणा** जनेत का जनवासे में उतरने के बाद दोनों ओर के गोत्रों और शाखाओं का उच्चारण करके जनेत का विधिवत् स्वागत करना;

~**सी जीमणा** 1. काम निपटना, 2. शोर मचना।

जनेत्ती (पुं.) बाराती।

जन्म (पुं.) दे. जनम।

जन्म कुंडली (स्त्री.) दे. जनम कूँडळी।

जन्म दिन (पुं.) दे. जनम दिन।

जन्मपत्री (स्त्री.) दे. जनम पतरी।

जन्मभूमि (स्त्री.) दे. जनम-भोम्मी।

जन्म स्थान (पुं.) दे. जनम भोम्मी।

जन्माष्टमी (स्त्री.) दे. जनमास्टमीं।

जप (पुं.) 1. मंत्र को मन ही मन दोहराने की क्रिया, जाप, 2. तपस्या; (क्रि. स.) 'जपणा' क्रिया का आदे. रूप।

जपणा (क्रि. स.) 1. भगवान को स्मरण करना, 2. घनीभूत इच्छा के साथ स्मरण करना, 3. अनिष्ट सोचना (व्यंग्य में), 4. हड़पना (व्यंग्य में)। **जपना** (हि.)

जप-तप (पुं.) साधना, जपने और तपने की साधना। **जप-तप** (हि.)

जपना (क्रि. स.) दे. जपणा।

जपमाळा (स्त्री.) जाप करने की माला, 108 मनकों की माला।

जब (क्रि. वि.) दे. जिब।

जबक (स्त्री.)1. स्वभाव, आदत, 2. चैन, 3. (दे. जक)।

जबड़ा (पुं.) दे. जाबड़ा।

जबत (पुं.) हड़प, हरण; (वि.) ज़ब्त, हड़पा हुआ। **ज़ब्त** (हि.)

जबर (वि.) 1. भारी, बोझिल–जबर भरोट्टा मत ठा (उठा) रास (क़द) छोट्टी रह ज्यागी, 2. बलवान, 3. मोटा, भारी भरकम; ~**पड़णा** भारी पड़ना, शक्ति से अधिक पड़ना–यो काम तूँ मन्ना (मत) करै तनैं जबर पड़ैगा।

ज़बरदस्त (वि.) 1. भीमकाय, 2. बलवान।

ज़बरदस्ती (स्त्री.) 1. धींगामस्ती, 2. ताक़त-आजमाई, 3. ज़्यादती, अन्याय।

जबरी (वि.) 1. बलवान, 2. भारी, 3. मोटा।

जबाड़ी (स्त्री.) दे. जाबड़ा।

ज़बान (स्त्री.) 1. वचन, 2. जिह्वा, 3. भाषा; ~**करणा** उल्टा-सीधा बोलना ~**काटणा** 1. मुँह की बात छीनना, अवाक् करना, 2. क्रूरतापूर्ण दंड देना; ~**काढणा** 1. अधिक बोलना, बोलना, 2. चिढ़ाना, 3. बोलती बंद करना, 4. दंड देना; ~**होणा** कहने का साहस होना। **ज़बान** (हि.)

जबानी (वि.) दे. जबान्नी।

जबान्नी (वि.) मौखिक। **ज़बानी** (हि.)

जबाब्बी (पुं.) जवाबी पोस्ट कार्ड; (वि.) जवाबी, जिसके उत्तर की आशा की जाए। **जवाबी** (हि.)

जबेट्टा (पुं.) (?)–ओळ्याँ-कोळ्याँ धरे जबेट्टे ये भाण (बहन) फीम्मों तेरे बेट्टे (लो. गी.)

जब्त (पुं.) दे. जबत।

जम (पुं.) 1. मृत्यु का देवता, 2. जमाई; (क्रि. स.) 'जमणा' क्रिया का आदे. रूप; ~**का दूत** यम-दूत; ~**की फाँस्सी** 1. यमपाश, 2. कठिनतम कार्य; ~ ~**आणा** मुसीबत में फँसना, आपत्ति आ पड़ना; ~~**लाणा** विपत्ति में डालना; ~**जोरा** 1. यम की इच्छा, 2. यमदेव। **यम** (हि.)

जमइया (पुं) 1. एक घास, 2. (दे. जमैया)।

जमकत (पुं.) एक ऋषि जिनका चकवाबैन राजा की राजधानी खेड़ी गूज्जर में युद्ध हुआ माना जाता है। (इनकी स्मृति में इस स्थान पर एक बावड़ी है और यहाँ

हर वर्ष मेला लगता है)।

जमघट (पुं.) भीड़, लोगों का जमाव।

जम-जूम (स्त्री.) आँख की पलकों की जूँ (लोगों के अनुमान के अनुसार अधिक चिंता इनके जन्म का कारण है)।

जमड़ा (पुं.) 1. जमाई, 2. पुत्र।

जमणा (क्रि. अ.) 1. स्थिर होना, 2. उगना, 3. तरल पदार्थ का ठोस होना, 4. व्यापार आदि में स्थान बनना, 5. हाथ बैठना, अभ्यस्त होना, 6. जन्म लेना, 7. (दे. जँचणा); (वि.) वह जो जम जाए। **जमना** (हि.)

जमदगनी (पुं.) 1. एक प्रसिद्ध ऋषि जिन्होंने हाँसी के निकट राखीगढ़ के आस-पास आश्रम बनाकर तपस्या की थी, 2. एक ब्राह्मण गोत्र। **जमदग्नि** (हि.)

जमना[1] (क्रि. अ.) दे. जमणा।

जमना[2] (स्त्री.) यमुना नदी। **यमुना** (हि.)

जमा[1] (पुं.) जमघट। **जमाव** (हि.)

जमा[2] (वि.) 1. इकट्ठा किया हुआ, 2. कुल मिलाकर, 3 रंच मात्र– घर मैं जमा बी घी कोन्या; (स्त्री.) जोड़ने की क्रिया; **~ए** 1. पूरी तरह, 2. रंच मात्र; (क्रि. स.) 'जमाणा' क्रिया का आदे. रूप।

जमाई (पुं.) दामाद, जामाता; (क्रि. स.) 'जमाणा' क्रिया का भू. का. स्त्री लिं. रूप।

जमाऊ (वि.) 1. जमा हुआ, स्थिर, 2. जो जम जाए (घृत आदि); **~चूल्हा** 1. स्थिर चूल्हा, 2. टिकाऊ घर, सम्मानित घर।

जमाण (स्त्री.) एक मसाला जिसकी तासीर गर्म होती है; **~करणा** जच्चा के लिए अजवायन का भोज्य बनाना; (क्रि.स.) जमाने, सँवारने, व्यवस्थित करने की क्रिया। **अजवायन** (हि.)

जमाणा (क्रि. स.) 1. (तरल पदार्थ) ठोस करना, 2. (दही) जमाना, 3. वस्तु को भूमि पर इस प्रकार रखना कि हिले-डुले नहीं, 4. प्रहार करना, 5. (व्यापार आदि में) स्थायित्व लाना, 6. बात पर बात कहना। **जमाना** (हि.)

जमात (स्त्री.) 1. श्रेणी, कक्षा, 2. साधुओं की पंक्ति या टोली, 3. पंक्ति, 4. कोटि, प्रकार, 5. जमघट, समूह; **~चालणा** साधुओं का टोली में होकर चलना; **~बैठणा** 1. साधुओं की टोली का भोजन के लिए बैठना, 2. सामूहिक भोज के लिए बैठना। **जमायत** (हि.)

जमादार (पुं.) 1. सेना का एक छोटा अधिकारी, 2. पुलिस का एक छोटा अधिकारी, 3. सिपाही के लिए प्रयुक्त सम्मानार्थक शब्द, 4. मुखिया, 5. मज़दूरों की सामान्य देखभाल करने वाला कर्मचारी, 6. सफ़ाई कर्मचारी, 7. (दे. चूहड़ा)।

जमादारणी (स्त्री.) 1. जमादार की पत्नी, 2. सफ़ाई कर्मचारिन, 3. मंगिन।

जमाना[1] (क्रि. स.) दे. जमाणा।

जमाना[2] (पुं.) दे. जमान्ना।

जमान्ना (पुं.) 1. काल, बहुत अधिक समय, 2. संसार, दुनिया। **ज़माना** (हि.)

जमाल (वि.) मुख की शोभा।

जमालगोटा (पुं.) दे. जमालघोट्टा।

जमालघोट्टा (पुं.) एक रेचक ओषधि। **जमाल गोटा** (हि.)

जमाव (पुं.) दे. जमा[1]।

जमावट (स्त्री.) 1. जमने की क्रिया,

2. भीड़, जमघट, 3. जँचने का भाव।

जमावड़ा (पुं.) जमघट।

जमावणी (स्त्री.) पात्र जिसमें दूध या दही जमाई जाती है, (दे. बिलोवणी)।

जमींदार (पुं.) 1. कृषक, किसान, खेती का काम करने वाला छोटा किसान, 2. भूमि का स्वामी, 3. बड़ी जोत का स्वामी, 4. धनी किसान।

जमींदारी (स्त्री.) 1. खेती का व्यवसाय, 2. अधिक खेती का स्वामित्व होने का भाव; **~चालणा** बिना परिश्रम खेती की आमदनी मिलना।

जमीन (स्त्री.) 1. पृथ्वी, धरती, 2. खेत, 3. मिट्टी।

जमुआँ मीर[1] (पुं.) हरियाणे का एक भूतपूर्व स्वाँगी।

जमुआ मीर[2] (पुं) (1879-1959) सुनारियाँ (रोहतक) निवासी एक मीरासी साँगी।

जमूर (पुं.) एक प्रकार की संडासी। **जंबूर** (हि.)

जमूरा (पुं.) 1. जादूगर के साथ रहने वाला छोकरा (जो मुँह पर कपड़ा ढक कर प्रश्नों के उत्तर देता है), 2. विदूषक, मज़ाक करने वाला, 3. सेवक।

जमैया (पुं.) जमाई, जामाता।

जमोट (पुं.) काठ की 64 पट्टियों को जोड़कर बनाया गया गाड़ी का पहिया।

जमोया[1] (पुं.) एक वृक्ष विशेष।

जमोया[2] (पुं.) गर्मी में पकने वाला जामुन की तरह का एक जंगली फल।

जम्हाई (स्त्री.) उबासी।

जयंती (पुं.) दे. जींद।

जय (स्त्री.) दे. जै[1]।

जय-मंत्रधर (पुं.) 1. यौधेयों की उपाधि, 2. यौधेयों की मुद्रा पर अंकित चिह्न।

जयमाला (स्त्री.) 1. वरमाला, 2. विजयी व्यक्ति को पहनाई जाने वाली माला, 3. वरमाला की रस्म।

जर[1] (पुं.) 1. लोहे का मोरचा या जंग, 2. प्रभाव, असर, अज़ार, 3. धन-दौलत; **~ना आणा** प्रभाव न पड़ना— इसनैं कितणाए समझाले इसकै जर ना आवै। **जंग** (हि.)

जर[2] (पुं.) बुखार, ताप; **हड~** हड्डियों का ज्वर, (दे. जुर)। **ज्वर** (हि.)

जरक (पुं.) दे. जरख।

जरकोव (पुं.) वरक कूटने वाला।

जरख (पुं.) हिरन के आकार का एक मुर्दख़ोर पशु।

जरड़ (वि.) अधिक पकी हुई (गाजर, मूली आदि), जरठ, (दे. झरड़)।

जरणा (क्रि. अ.) 1. निश्चय होना, विश्वास होना, मान लेना, 2. जंग या जर लगना। **जरना** (हि.)

जरणीगार (वि.) जरनिगार, स्वर्ण जटित।

जरत (पुं.) दे. जरतकारु।

जरत्कारु (पुं.) दे. जुरतकारु।

जरद (वि.) पीले रंग का, पीला; **पीळा~** बहुत पीला, गाढ़ा पीला। **ज़र्द** (हि.)

जरदा (पुं.) पान में खाने की सुगंधित सुरती।

जरदाई (स्त्री.) ज़रदई, पीलापन; **~आणा** शरीर का खून सूखना, दुर्बल होना।

जरदी (स्त्री.) पीलापन।

जरनल (पुं.) दे. झरनैल।

जरना (क्रि. अ.) दे. जरणा।

जरब (स्त्री.) 1. आघात, चोट, 2. लचक— कदै आज्या जरब कमर मैं बाब्बा तूँ थोड़ा बोझ टिकाइये, 3. गुणा की क्रिया, 4. प्रभाव।

जराई जरणा (क्रि.) कहने से विश्वास होना।

जराणा (क्रि. स.) 1. भरोसा दिलाना, विश्वास दिलाना, बात को इस प्रकार कहना कि विश्वास हो जाए, 2. जंग या जर लगाना, 3. प्रयोग में न लाना, 4. पुराना करना। **जराना** (हि.)

जरी (स्त्री.) 1. बादले से बुना हुआ कपड़ा, 2. सोने-चाँदी आदि के तारों से किया गया काम।

जरीब (स्त्री.) 1. लोहे की वह जंजीर जिससे भूमि नापी जाती है, 2. भूमि का एक नाप, 22 गज या 100 कड़ियों का नाप।

जरीमान्ना (पुं.) दे. जुरमान्ना।

जरूर (क्रि. वि.) निश्चित रूप से; ~-**बे जरूर** निश्चित रूप से। **ज़रूर** (हि.)

जरूरी (वि.) आवश्यक।

जलंधर (पुं.) 1. पेट की एक बीमारी जिसमें उदर में जल भर जाने से वह फूल जाता है, 2. एक नाथपंथी फ़क़ीर; ~**बढणा/फूलणा** जलोदर के रोग के कारण पेट बढ़ना। **जलोदर** (हि.)

जल (पुं.) 1. पानी, 2. पवित्र जल।

जळ (पुं.) फ़सल का एक हानिकारक कीड़ा; (क्रि. अ.) 'जळणा' क्रिया का आदे. रूप।

जलचारी (पुं.) दे. जलधारी।

जलजला (पुं.) दे. हल्लण।

जळज्याणा (वि.) जलने योग्य (एक गाली जो पुरुषों को दी जाती है)।

जलण (स्त्री.) 1. ईर्ष्या, 2. क्लेश, 3. गरमी–देही में जळण सी लाग रही सै, 4. जलने की क्रिया। **जलन** (हि.)

जळणा (क्रि. अ.) 1. भस्म होना, फुँकना, दग्ध होना, 2. अधिक गरम होना– थळियाँ मैं रेत तात्ता जळै सै, 3. ईर्ष्या-द्वेष रखना; (क्रि. स.) जला देना, जलाना; (वि.) जो शीघ्र जल जाए, ज्वलनशील; ~**भुनणा** 1. कुढ़ना, 2. लाल-पीला होना, 3. ईर्ष्या करना; ~**मरणा** 1. शरीर खपाना, 2. कुढ़ते रहना। **जलना** (हि.)

जळत खोड़ा (वि.) 1. चुगलख़ोर, 2. ईर्ष्या करने वाला।

जलधारा (स्त्री.) पानी की धार।

जलधारी (पुं.) जल-जंतु–जल मैं रहैं जलधारी कहावैं, जल मैं रहैं हर के मीन अर मछियाँ, (लो.गी.)।

जलन (स्त्री.) दे. जळण।

जलना (क्रि. अ.) दे. जळणा।

जलपान (पुं.) 1. अल्पाहार, कलेवा, 2. आचमन।

जलबणा (क्रि.) पानी से गलना।

जलवा (पुं.) 1. जल का छोटा पात्र जो पूजा के काम आता है, 2. प्रकाश, 3. प्रभाव; ~**पूजणा** जच्चा द्वारा कूआँ पूजना, (दे. कूआ पूजणा)।

जळवाणा (क्रि. स.) फुँकवाना, जलाने का काम अन्य से कराना। **जलवाना** (हि.)

जलसा (पुं.) दे. झिलसा।

जलहोरी (स्त्री.) जल-कलश।

जळाणा (क्रि. स.) फूँकना। **जलाना** (हि.)

जलाना (क्रि. स.) दे. जळाणा।

जलावन (पुं.) दे. बाळण।

जळी (स्त्री.) एक गाली जो स्त्रियों को दी जाती है; (वि.) जली हुई; (क्रि.अ.)

'जळणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~कटी कहणा/भुनी कहणा** चुभने वाली बात कहना।

जलूस (पुं.) दे. झलूस।

जलेबिया (वि.) जलेबी के आकार का, गोलाकार; (स्त्री.) एक काँटेदार झाड़ी, जंगल जलेबी; **~साँप** छोटे आकार का एक साँप जो कुंडली मार कर बैठता है।

जलेबी (स्त्री.) दे जलेब्बी।

जलेब्बी (स्त्री.) मिठाई, खमीर उठाकर बनाई गई मैदा-निर्मित एक मिठाई; **~का चोकड़ा** चार जलेबियों का समूह; **लाड्डू~** 1. पक्की रोटी, 2. जलेबी तथा लड्डू। **जलेबी** (हि.)

जलेब्बी जूड़ा (पुं.) घेर घिराला जूड़ा विशेष।

जळेवा[1] (पुं.) जलन।

जलेवा[2] (अव्य.) जलाने योग्य।

जलैहरी (स्त्री.) चाँद के चारों ओर कभी-कभी दिखाई पड़ने वाली तेज़ चमक जो वर्षा या आँधी की द्योतक मानी जाती है–सूरज कुंडल, चाँद जलैहरी भरदे झोड़ अर डहरी।

जळोकड़ा (वि.) दे. जळतखोड़ा।

जल्दी (स्त्री.) दे. तावळ।

जळ्या (पुं.) पुरुषों को दी जाने वाली एक गाली; (वि.) जला हुआ; (क्रि. अ.) 'जळणा' क्रिया का भू.का. रूप।

जल्लाद (पुं.) फाँसी तोड़ने वाला व्यक्ति; (वि.) क्रूर।

जवान (पुं.) दे. जिवान।

जवानी (स्त्री.) दे. जिवान्नी।

जवाब (पुं.) दे. जुबाब।

जवाबी (वि.) दे. जवाब्बी।

जवारा (पुं.) 1. मध्याह्न का आहार जो हाली तथा बैल के लिए खेत पर भेजा जाता है, (दे. गवारा), 2. जौ के पौधे, (दे. ज्वारा)।

जवारिया (पुं.) 1. खेत में जुआरा ले जाने वाला व्यक्ति, 2. जूआ खेलने वाला। **जुआरी** (हि.)

जवाहर (पुं.) रत्न, मणि।

जस (पुं.) 1. कीर्ति, 2. श्रेय–गंगा नैं आणा था अर भगीरथ नैं जस था; **~लूटणा/लेणा** 1. कार्य का श्रेय मिलना, 2. कीर्ति मिलना; **~होणा** बरकत होना–किसै-किसै आदमी के हाथ मैं इसा जस हो सै अक क्याँहे कै हाथ लादे तै नाँ साँपड़ै (समाप्त न हो)। **यश** (हि.)

जसरथ (पुं.) दशरथ।

जसवंती (वि.) यशस्विनी, (स्त्री.) यशवंती माला। **यशवती** (हि.)

जसोद्दा (स्त्री.) 1. नंद की पत्नी जिसने श्री कृष्ण का पालन-पोषण किया था, 2. विमाता–याह् सै वा जसोद्दा जिसनैं सारा कुकरम रोप्या। **यशोदा** (हि.)

जस्ता (पुं.) एक धातु विशेष।

जहकणा (क्रि. अ.) 1. 'जह्'-'जह्' की ध्वनि सुनकर ऊँट का बैठना, 2. बसकना, किसी पशु का चलते-चलते भूमि पर बैठ जाना; (वि.) दब्बू।

जहकाणा (क्रि. स.) 'जह्'-'जह्' की ध्वनि करके ऊँट को बैठाना।

जहणा (क्रि.) परखणा (?) उदा. गुण ओगण की बात जहै थी, सेवा कर आनंद सहै थी। (लचं)।

जहर (पुं.) 1. विष, 2. अधिक खारी–साग मैं नूण घणा सै, ज़हर होग्या, 3. अधिक खट्टा–आज तै सीत खाट्टी ज़हर होगी, 4. क्रोध, 5. ईर्ष्या–यो आदमी जहर तै भर्‌या सै; **~उगळणा**

1. विष वमन करना, 2. खरी-खोटी सुनाना; **~करणा** 1. आनंद में विघ्न डालना, 2. खाद्य वस्तु में अधिक नमक डाल देना; **~की घूँट भरणा/पीणा** कठोर बात पचाना; **खाट्टी~** खट्टी ज़हर, अधिक खट्टी (दही, छाछ); **~गेरणा** 1. विद्वेष उत्पन्न करना, 2. (जन धारणा के अनुसार) शनिवार के दिन साँप द्वारा विष-वमन करना; **~घूँटणा** अपमान सहना; **~फलाणा** 1. झगड़े का बीज बोना, 2. ईर्ष्या तथा विद्वेष फैलाना; **~होणा** 1. खाद्य-पदार्थ का अधिक नमकीन या खट्टा होना, 2. विद्वेष की भावना होना। **ज़हर** (हि.)

जहर पीर (पुं.) 1. विष का देवता, 2. जिस व्यक्ति को साँपों से प्यार हो, 3. ज़ाहिर (प्रकट) पीर, 4. गूगा पीर, (दे. गूग्गा पीर)।

जहर मोरा (पुं.) काले रंग का एक मोटा बीज जो साँप के काटे हुए स्थान पर रखने से ज़हर को सोख लेता है, विष-मणि, विषौषध। **ज़हर मोहरा** (हि.)

जहरी (वि.) 1. ज़हर वाला, 2. प्रतिकार की भावना रखने वाला।

जहाँ[1] (क्रि. वि.) दे. जित।

जहाँ[2] (पुं.) संसार। **जहान** (हि.)

जहाज (पुं.) दे. झाज।

जहूरा (पुं.) 1. प्रकाश, 2. तमाशा।

जाँगड़ा (पुं.) 1. बढ़ई, खाती, 2. खाती या बढ़ई, खाती, 2. खाती जाति का एक गोत।

जाँगळी (वि.) जंगल प्रदेश का। दे. जंगली।

जाँगिल (पुं.) लकड़हारा।

जाँघ (स्त्री.) उरु, (दे. साँथळ); **~बणाणा** 1. बैठक लगाकर जंघा सुडौल करना, 2. ताल ठौंकना। **जंघा** (हि.)

जाँघिया (पुं.) कच्छा, एक अधोवस्त।

जाँच (स्त्री.) 1. परीक्षा, 2. देखभाल, जाँचने की क्रिया; (क्रि. स.) 'जांचणा' क्रिया का आदे. रूप; **~होणा** 1. परीक्षा होना, 2. निश्चय होना, 3. जांचना।

जाँचणा (क्रि. स.) 1. परखना, 2. प्रहार करना (थप्पड़, लाठी आदि से)। **जाँचना** (हि.)

जाँचना (क्रि. स.) दे. जाँचणा।

जाँजलवास्सा (पुं.) दे. जंगलवास्सा।

जाँट (पुं.) कीकर की जाति का एक ऊबड़-खाबड़ वृक्ष जो गरमी में फलता है, शमी-वृक्ष (इसकी लकड़ी हवन के काम आती है, इसकी फली को सांगर कहते हैं जो सूखने पर झींझ कहलाती है)।

जाँटड़ी (स्त्री.) 1. जाँट का हलका पौधा, 2. पं. लखमी चंद का गाँव, 3. ऊनता द्योतक रूप। उदा.–लखमी चंद का गाम जाँटड़ी।

जाँट्टी (स्त्री.) कीकर की जाति का एक पेड़, जांट का छोटा पौधा जिसकी लकड़ी यज्ञ में काम आती है, शमी वृक्ष; **~आळा** पंडित लखमी चंद सांगी जिनका गांव शेरशाह जांट्टी था, (दे. लखमी चंद)।

जाँड (पुं.) दे. जाँट।

जाँण (स्त्री.) 1. अनुमान–मेरी जाँण मैं तै तूं परसूं तांही आ लेघा, 2. पहचान, 3. जानकारी, 4. ज्ञान; (क्रि. अ.) जाने के लिए; (क्रि. स.) 'जाणणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पिछाण**1. जान-पहचान, 2. रिश्तेदारी।

जाँबवान (पुं.) एक रीछ जो सुग्रीव का मंत्री था।

जांभा (पुं.) जम्भेश्वर गुरु।

जाँवर (स्त्री.) दे. झारी।

जाँवाँ (पुं.) दे. झाम्मां।

जा (क्रि.) जाना क्रिया का आदे. रुप।

जाई (स्त्री.) पुत्री, बेटी, जिसको जन्म दिया हो–अपणीजाई का तै सब ध्यान राक्खैं सैं, पर (परंतु) पराई जाई का कूण-कूण राक्खै; (क्रि. स.) 'जाणा' (जन्म देना) क्रिया का भू. का. स्त्रीलिंग एक व. का रूप; पराई - 1 पुत्र-वधु, 2. अन्य की पुत्री 3. दया की पात्रा; **~मा**--सगी बहन सहोदरा; **~रोई** 1. लड़कियों को दी जाने वाली एक गाली, 2. जिसे जन्म देकर रोया या पछताया जाए।

जाकड़ (स्त्री.) जकड़ने का भाव।

जाक्खड़ (पुं.) दे. जाखड़।

जाखट (स्त्री.) जवाहरकट, एक प्रकार की अंग्रेजी कुरती या सदरी। **जाकेट** (हि.)

जाखड़ (पुं.) एक जाट गोत।

जाखड़ा (पुं.) खराब आँख के कारण पड़ने वाली अस्पष्ट झाँकी। दे. झाँक्का।

जाग (स्त्री.) 1. जागने या सावधान रहने का भाव, 2. रात्रि में सोने से पहले का समय या प्रातः उठने का समय, 3. जामन (जिससे दही जमाया जाता है); (क्रि. अ.) 'जागणा' क्रिया का आदे. रूप; **~खुलणा** 1. नींद खुलना, उठ बैठना, 2. सावधान होना; **~लाणा** दूध में छाछ डाल कर दही जमाना; **~होणा** 1. नींद खुलना, नींद से उठ बैठना, 2. सावधान होना।

जागड़ा (वि.) दे. जाग्गू।

जागणा (क्रि. अ.) 1. जागना, 2. सावधान होना, 3. उदय होना–अरै! देखिये सुरज जागग्या, 4. शुरू होना, जैसे–झगड़ा जागणा, 5. दही जमना, (वि.) 1. जागरूक, 2. जो जागे या कम सोये; **~(-ती) जोत!** 1. सुंदर महिला, 2. ज्योति के समान सुंदर रूप; 3. जलता हुआ दीपक; **राड़~** द्वेष या झगड़ा शुरू होना; **~(गा) मींच्ची** अर्ध जाग्रत अवस्था। **जागना** (हि.)

जागना (क्रि. अ.) दे. जागणा।

जागरण (पुं.) 1. जागना, 2. किसी पर्व पर रात भर जागना, (दे. रत जगा)।

जागीर (स्त्री.) 1. संपत्ति, 2. राज्य की ओर से मिली भूमि या प्रदेश।

जागे (पुं.) वीरगाथा सुनाकर जीविका कमाने वाले।

जाग्गा-मीच्ची (स्त्री.) कच्ची नींद की स्थिति।

जाग्गू (वि.) 1. जागने वाला, जगने वाला, 2. सदा कच्ची नींद सोने वाला, वह जो सोते-सोते तुरंत उठ बैठे, 3. सावधान, जागरूक, भविष्य की कठिनाइयों को पहले ही भांपने वाला; **~तैं लाग्गू बाघ** सावधान रहने वाले से सदा काम में लगा रहने वाला सफल होता है।

जाचक (पुं.) याचक।

जाजिम (स्त्री.) मखमली बिछौना। **जाजम** (हि.)

जाट (पुं.) 1. एक जाति जो अधिकतर खेती-बाड़ी का काम करती है (यह जाति हरियाणा, पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश में फैली हुई है), 2. जार्तिक (वाल्हीक जाति), पंजाब की एक जाति जिसका प्रायः वाल्हीक (वल्ख-प्रदेश) के साथ भ्रम किया जाता है,

(इलियट के अनुसार जाट का संबंध यूती, गोथ आदि जाति से नहीं है--एस.जी.); (वि.) 1. खेतिहर किसान, 2. गांव का रहने वाला; **~गोत** जाटों के मुख्य गोत हैं–अडार (उडार), अहलावत, आंतल (आतला), ऊंटवाळ, कटारिया, कसोह, काद्‌याण, कालीरावण, किलोड़, कुहाड़, खंडिया, खडेड्डे, खतरी, खास, खुटेल, खेवड़िया, खोक्खर, खोबरा, गंठवाल, गड़वाल, गढ़ास, गरीढ, गहलावत (गैलोठ), गारे, गिल, गुळिया, (गोलैया), गूडिया, गोदारा, धंधा, घंड (गंड), घणोई, चहर, चाहल, चोपड़ा, चौहान, छकारा, छिल्लर, छोक्कर, जटराणा (जटराणी), जाक्खड़, जागोत, जून, टोकस, ठाकरान, ठुकराल, डबास, डागर, डाला, डोगरा (ढोगरा), ड्योडी-आली, ढांक्का, तंवर, तुसीर, तेवतिया, थानवाल, दलाल, दहिया, दिघेलिया, धनखड़, धनोक, धारीवाला, निरमले, नुहवाल, नेवार, पंवार, पहल, पिलानिया, पूणियां, फौकाट, बंहगीवाल, बच्छस, बडुजल, बरेला, बलारा, बहलावत, बागड़ी, बाल्याण, बृहमान, बेडवाल, बोडा, बोहरे, भंगीवाल, भटोनिया, भूरे, भोकड़ा, मलिक, महलवाल, माच्छड़, मान, मिरचू, मुंडियाण, मेहले, मोर, रपथेल, राठी, राणा (जटराणा), रावत, रूंगी, लछिया, लाकड़ा, लाठड़, लाम्बा, लोहचब, लोहिन, शोयराण, सकरावत, सकेल, सतरोंगी, सनसनवाल, सब्बरवाल, महरावत, साँकल्याण, सँगवान, साथल, सुरइया, सेजवाळ, सोंडा, सोकड़ (शोकीन), सोखंदा, सोलंकी, हड्डी, हुड्डा। (स्थानीय उच्चारण भेद के कारण शब्दों के उच्चारण में कुछ भेद संभव है, सूची के कुछ गोत 'सपलीमेंटल गलोसरी' पृ. 130-137 के अनुसार हैं)।

जाटणी (स्त्री.) जाट की पत्नी; (वि.) हृष्ट-पुष्ट महिला।

जाटू (वि.) दे. जाट्टू; (स्त्री.) दे. जाट्टू बोल्ली।

जाट्टू (वि.) जाट से संबंधित; **~काम** सादा काम, वह काम जिसमें बारीकी न हो; **~चाल** जाटू रिवाज, जाटू पहनावा या रहन-सहन; **~चीज** सादी चीज, वह वस्तु जिसमें दिखावा न हो; **~पह्रावा** साधारण पहनावा, घाघरी-ओढ़ने का पहनावा; **~बोल्ली** 1. गाँव की बोली, हरियाणे के गाँवों की बोली, 2. वह बोली जिसमें नागरी शिष्टता न हो किंतु स्पष्टवादिता और सरलता हो; **~भाट्टू** 1. सीधा-सादा, बिना दिखावट का, 2. गाँव का; **~भाक्खा/भास्सा** 1. जाटू बोली, 2. ग्रामीण बोली; **~रोट्टी** 1. साधारण खानपान, 2. दाल-रोटी का भोजन, 3. बारात को दिया जाने वाला लड्डू-जलेबी का भोजन। **जाटू** (हि.)

जाड़ (स्त्री.) जबड़े के अन्दर के मोटे दाँत; **~काढणा** 1. बच्चे की दाढ़ निकलना, 2. अपमानित करना, 3. खिसियाना; **~चाबणा** दाँत पीसना, क्रोधित होना; **~चीसणा** 1. किसी चीज़ को खाने की बार-बार इच्छा होना, 2. दाढ़ में दर्द होना; **~जामणा** साहस बढ़ना, सामना करने का साहस होना; **~पीसणा** क्रोध प्रकट करना। **दाढ़** (हि.)

जाड़ा[1] (पुं.) 1. घास, तिनका, तृण, घास-फूँस-दूब (दूर्वा) के दो जाड़े ले

आ पूज्जा मैं काम आवैंघे, 2. जड़ों वाली घास, 3. (दे. जाड्डा); **~(-ड़े) जामणा** घास-फूँस उगना; **~(-ड़े) ल्याणा** घास खोदकर लाना; **~होणा** पशुओं के लिए यथेष्ट घास-फूँस होना।

जाड़ा[2] (पुं.) दे. जाड्डा।

जाड़िया (पुं.) दाढ़ों के विष से पैदा होने वाला फोड़ा।

जाड़ी (स्त्री.) बच्चों के छोटे-छोटे जाड़-दाँत, दाढ़,; **~आणा** बच्चों के जाड़-दाँत निकलना; **~दाँतियाँ का** छोटी अवस्था का बच्चा (जिसके दूध के दाँत निकलने शुरू हुए हों); **~बाजणा** ठंड के कारण काँपना, दाँत किटकिटाना; **~भिंचणा** 1. दौरा पड़ना, 2. ठंड के कारण मुँह बंद होना, 3. अवाक् होना, 4. मृत्यु के निकट पहुँचना; **~भींचणा** क्रोधित होना; **~दाँत्ती** 1 दूध के दाँत, 2. दाढ़ और दाँत।

जाड्डा (पुं.) 1. सरदी, शीतकाल, 2. ठंड, 3. भय, कँपकँपी–इमतिहाणाँ की बात सुण कै जाड्डा सा लाग्गै सै; **~काढणा** सरदी बिताना या निकालना; **~जमणा** सरदी का काफ़ी समय तक बने रहना; **~भाजणा** 1. सरदी दूर होना, 2. भय दूर होना; **~लागणा** 1. भयभीत होना, डरना, 2. ठंड लगना; **~लीकड़णा** जैसे-तैसे सरदी समाप्त होना, ठंड समाप्त होना; **~होणा** सरदी पड़ना। **जाड़ा** (हि.)

जाण (क्रि. अ.) जाना; **~गेड़ा** जाने का समय, विनाश काल; **~~आणा** विनाश काल आना; **~जोग्गी** 1. मरने योग्य, 2. महिलाओं को दी जाने वाली एक गाली, 3. विवाह के योग्य लड़की; **~बावळा** जान-बूझ कर अज्ञानता प्रकट करने वाला।

जाणणा (क्रि. स.) 1. जानकारी प्राप्त करना, 2. ख़बर रखना, 3. परखना– मनैं तूँ खूब जाण कै देख लिया। **जानना** (हि.)

जाणा (क्रि. स.) 1. गमन करना, चलना, 2. गुम होना, हाथ से निकलना, 3. मृत्यु को प्राप्त होना; (क्रि. स.) 1. जन्म देना, 2. ब्याना। **जाना** (हि.)

जाणु (अव्य.) दे. जणु।

जात (स्त्री.) 1. वर्ण, 2. वंश, कुल, 3. नसल–बुळध हिसारी जात का सै, 4. स्वभाव, 5. कुल की आराध्य देवी या देवता की पूजा–ईब कै स्यामजी (खाटू का श्याम) की जात देणी बोल राक्खी सै, 6. गोत्र, 7. धर्म, जैसे–हिंदू जात, 8. सम्मान, आबरू, 9. भरोसा, विश्वास; **~उतरणा** अपमान होना; **~कट्टी होणा** सभी जाति के पंचों का इकट्ठा होना; **~कहणा** 1. अपनी प्रकृति प्रकट करना, 2. जातीय गुण प्रकट करना; **~का ना गोत का** किसी प्रकार का संबंध न होना; **~का लेवा** अपमान करने वाला; **~कुजात** अज्ञात जाति का; **~~होणा** धर्म भ्रष्ट होना; **~खोणा** 1. धर्म से विचलित होना, 2. वचन से मुकरना, 3. विश्वास खोना; **गट जोड़े की~** विवाह आदि के बाद पति-पत्नी द्वारा अपने कुल के आराध्य देव के सम्मुख गठ-बन्धन के साथ पूजा करने का कार्य; **छत्तीस~**छत्तीस जाति, छोटी-बड़ी सभी जातियाँ, (दे. छत्तीस जात); **~तारणा** 1. अपमान करना, 2. इज़्ज़त लूटना; **~तैं गेरणा** 1. जाति-च्युत करना, 2. हुक्का पानी बंद

करना; **~देणा** 1. गुण, प्रकृति या स्वभाव प्रकट करना, 2. अपमान करवाना, 3. आराध्य देवी या देव के सम्मुख पूजा करना; **~देवा** 1. अपमान कराने वाला, 2. अपनी प्रकृति स्वयं प्रकट कराने वाला, 3. कुल-कलंकी; **~पाणा** 1. पुनर्जन्म होना, 2. सद्गति को प्राप्त होना, 3. स्वभाव का पता लगना–टके की हँडिया गई, कुत्ते की जात पाई; **~बिचासणा** स्वभाव-गुण की परख करना, जातिगत गुणों की परीक्षा लेना; **~बूझणा** 1. अता-पता पूछना, जानकारी प्राप्त करना, 2. अपमान करना; **~बोलणा** फल प्राप्ति हेतु आराध्य देवी-देवता को प्रसन्न करने के लिए धर्म-पुण्य आदि का प्रण करना; **~भाई** जाति-बन्धु; **~राखणा** 1. जाति का सम्मान रखना, 2. इज़्ज़त बचाना, 3. धर्म की रक्षा करना; **~लूटणा** 1. स्त्री की इज्जत लूटना, 2. अपमान करना; **~लेवा** अपमान- जनक स्थिति में डालने वाला; **~होणा** सम्मानजनक स्थिति में होना। **जाति** (हि.)

जातक (पुं.) नवजात शिशु।

जात-पात (स्त्री.) वर्ण और उसके उप-विभाग। **जाति-पाँति** (हि.)

जातरा (पुं.) धार्मिक यात्रा। **यात्रा** (हि.)

जातरी (पुं.) धार्मिक यात्रा करने वाला। **यात्री** (हि.)

जातरु (पुं.) दे. जातरी।

जातला (वि.) अच्छी जाति का–जातला बाछड़ा मोल ल्याँह्ये।

जाति (स्त्री.) दे. जात।

जाति-पाँति (स्त्री.) दे. जात-पात।

जात्तण (स्त्री.) जात देने वाली महिला जो अपने आराध्य देवी-देवता के सम्मुख अपनी श्रद्धा अर्पित करने जाए।

जात्ती (पुं.) 1. देवी-देवता के सम्मुख 'जात' देने वाला, 2. यात्री।

जात्थर (पुं.) सामर्थ्य–पतळी कमर, जबर बाब्बाजी, सेत्ती मरलेगी। जात्थर थोड़ा बोझ घणा, डग क्यूक्कर भरलेगी (ल. चं.)।

जाथर (स्त्री.) जत्रु। ग्रीवा से आबद्ध स्कंध की नसें। दे. जात्थर।

जादू (पुं.) दे. जाद्दू।

जादूगर (पुं.) दे. जाद्दूगर।

जादूगरी (स्त्री.) दे. जाद्दूगिरी।

जाद्दू (पुं.) 1. नज़रबंदी का तमाशा, 2. इंद्रजाल, 3. आश्चर्य, 4. टोना; **~करणा** 1. नजरबंदी का तमाशा दिखाना, 2. टोटका करना; **~तारणा** भूत-प्रेत का प्रभाव दूर करना; **~दिखाणा** 1. हैरानी में डालना, 2. कौतुकपूर्ण काम दिखाना; **~मारणा** 1. अपने मत का बना लेना, 2. बहकाना, 3. जादू करना; **~होणा** 1. आश्चर्य जनक कार्य होना, 2. आकस्मिक घटना घटित होना। **जादू** (हि.)

जाद्दूगर (पुं.) 1. जादू दिखाने वाला, 2. वह व्यक्ति जिसके व्यवहार पर विश्वास नहीं किया जा सके, 3. एक जाति जिसका काम जादू दिखाना है। **जादूगर** (हि.)

जाद्दूगिरी (स्त्री.) 1. जादूगर का काम, 2. पागल या मूर्ख बनाने की क्रिया। **जादूगरी** (हि.)

जान (स्त्री.) 1. दे. ज्यान, 2. दे. जाँण।

जानकार (वि.) 1. परिचित, 2. विशेषज्ञ।

जानकी (स्त्री.) दे. ज्यानकी।

जानकीनाथ (पुं.) जनक नंदिनी सीता जी के पति, भगवान राम।

जानणहार/जानणहारा (वि.) जानने वाला, जानकारी रखने वाला; (पुं.) ईश्वर।

जानदार (वि.) शक्तिशाली; (पुं.) प्राणी।

जाननहार (वि.) दे. जानणहार।

जानना (क्रि. स.) दे. जाणणा।

जानवर (पुं.) दे. जिनावर।

जानवा (पुं.) एक रोग।

जाना (क्रि. अ.) दे. जाणा।

जानी (स्त्री.) प्रेमिका।

जानुआ (पुं.) एक बीमारी।

जाप (पुं.) दे. जप।

जापा (पुं.) दे. जाप्पा।

जाप्पा (पुं.) बच्चे का जन्म, प्रसूतिकागृह, सौरी; **~करणा** 1. बच्चे को जन्म देना, 2. बच्चा और जच्चा की सेवा करना; **~काढणा** बच्चा-जच्चा का कार्य करना, जापे के समय जच्चा की सेवा- सुश्रुषा करना; **~सा फैलणा** घर में अधिक काम होना; **~होणा** बच्चे का जन्म होना। **जापा** (हि.)

जाबड़ा (पुं.) 1. मुँह का वह भाग जिसमें दोनों ओर दाँत लगे रहते हैं, 2. मुँह, 3. दाँत; **~चढवाणा** नए दाँत लगवाना; **~चढाणा** 1. मुँह फुलाना, 2. उपेक्षा करना, 3. असहयोग का भाव प्रकट करना; **~ढील्ला करणा** नक्शा ढीला करना; **~तोड़णा** 1. दाँत तोड़ना, 2. अपमान करना। **जबड़ा** (हि.)

जाबड़ी (स्त्री.) दे. जाबड़ा।

जाबता (पुं.) प्रबंध, व्यवस्था; **~करणा/बाँधणा** अग्रिम व्यवस्था करना; **~काढणा** उपाय निकालना; **~होणा** प्रबंध होना। **जाब्ता** (हि.)

जाबर[1] (स्त्री.) एक घास, दूब, (दे. जाड़ा)।

जाबर[2] (पुं.) 1. दे. जूड़, 2. दे. जड़ाब्बा, 3. दे.जड़ामूड़।

जाम[1] (पुं.) पुत्र, जाया हुआ; **~कुजाम होणा** संतान कुल-कलंकी होना; **कुमस्सल का~** 1. वर्ण संकर सन्तान, 2. एक गाली।

जाम[2] (पुं.) याम, प्रहर।

जाम[3] (पुं.) प्याला।

जामण (स्त्री.) 1. जामुन का पौधा, 2. जामुन का फल; 3. (दे. जाम्मण); **~सी आँख** सुंदर आँखें। **जामुन** (हि.)

जामण जाई (स्त्री.) सहोदरा बहन।

जामणा (क्रि. अ.) 1. जन्म लेना, 2. उगना, अंकुरित होना, 3. दही जमना; (क्रि. स.) जन्म देना, पैदा करना। **जामना** (हि.)

जामणी[1] (वि.) जामुनी रंग का। **जामुनी** (हि.)

जामणी[2] (वि.) जल्दी उगने वाला बीज

जामणी[3] (स्त्री.) दे. जमावणी।

जामणूँ (वि.) जन्मजात–जामणूँ बिमारी मर्याँ ताहीं ना जा।

जामन (पुं.) दे. जाम्मण।

जामनी (पुं.) जामिनी, जमानत करवाने वाला। (वि.) शराबी।

जामवंत (पुं.) दे. जांबवान।

जामा (पुं.) 1. पहनावा, 2. पायजामा।

जामाता (पुं.) दे. जमाई।

जामिन (पुं.) जाम्मन।

जामुन (स्त्री.) दे. जामण।

जामुनी (वि.) दे. जामणी[1]।

जाम्मण[1] (पुं.) 1. दही जमाने के लिए दूध

में डाला गया दही या खट्टा, 2. (दे. जामण); **~गेरणा/देणा/ लाणा** दही जमाना। **जामन** (हि.)

जाम्मण[2] (स्त्री.) माँ, जननी।

जाम्मन (पुं.) जमानती। **जामिन** (हि.)

जाम्माँ मँहजिद (स्त्री.) शहर की बड़ी मस्जिद। **जामा मस्जिद** (हि.)

जायका (पुं.) स्वाद, खाने-पीने की चीजों का मजा।

जायज (वि.) उचित।

जायदाद (स्त्री.) सम्पत्ति।

जाया[1] (पुं.) पुत्र, बेटा; **माँ~** सहोदर भाई; **~रोया** 1. एक गाली जो लड़कों को दी जाती है, 2. जिसे जन कर रोना आए; (क्रि. स.) जन्म दिया।

जाया[2] (स्त्री.) पत्नी।

जाया[3] (क्रि.) जाओ, जा कर देखो, जाकर लौटो। उदा.-तूँ भी उत जा या। देख के कहैगा (तुम भी जा आओ। देखो वह क्या कहेगा)

जार (वि.) पराई स्त्री से प्रेम करने वाला, बदमाश, यार, उप-पति; **~करम** 1. पराई स्त्री से प्यार करने का भाव, 2. व्यभिचार।

जारज[1] (पुं.) संतान जो उप-पति या अन्य पुरुष से उत्पन्न हुई हो।

जारज[2] (पुं.) अंग्रेजी बादशाहों की उपाधि या कुल। **जॉर्ज** (हि.)

जारज थामस (पुं.) एक अंग्रेज़ जो 1781-82 में भारत आया और 1787 में बेगम सामरू की सेना में भर्ती हो गया, अपा कांडी राव ने इसे गोद ले लिया और झज्झर, बेरी, मांडोठी तथा पाटोद्धा का इलाका इसे सौंप दिया, 1802 में इसने सिंधिया के जनरैल के सामने हाँसी में हथियार डाल दिए, (जन सा. 4-10-11)। **जार्ज थॉमस** (हि.)

जार बेजार (पुं.) 1. दुर्दशा, 2. जोर जोर से (रोना।)

जारी[1] (स्त्री.) पर-स्त्री गमन, जारकर्म, व्यभिचार।

जारी[2] (वि.) 1. प्रचलित, 2. निरन्तर।

जालंधर नाथ (पुं.) नाथ संप्रदाय के ओघड़ साधु।

जाल (पुं.) दे. जाळ[3]।

जाळ[1] (स्त्री.) एक झाड़ीदार पेड़ जिस पर गर्मी की ऋतु में छोटे अँगूर के समान बीजदार फल लगता है (इसके फल को पीह्ल (पीलू) कहते हैं)।

जाळ[2] (पुं.) 1. पशु-पक्षी पकड़ने का सूत का बना पट या जाल, 2. लोहे आदि की शलाखों से बनाया गया जाल, 3. लकड़ी का जाला, 4. जाली, 5. पूर, जाल, 6. षड्यंत्र, 7. समूह। **जाल** (हि.)

जालसाज (पुं.) धोखेबाज़।

जाळसाज्जी (स्त्री.) धोखाधड़ी। **जालसाज़ी** (हि.)

जाला (पुं.) दे. जाळा।

जाळा (पुं.) 1. तंतु, 2. झिल्ली, 3. मकड़ी का तंतु, 4. (दे. जाळ)। **जाला** (हि.)

जाळामाई (स्त्री.) ज्वाला देवी।

जालिम (वि.) निर्दयी, क्रूर, बेरहम।

जाली (स्त्री.) दे. जाळी[1]; (वि.) दे. जाळी[2]।

जाळी[1] (स्त्री.) 1. छिद्रदार वस्तु, 2. छिद्र, 3. फल-सब्ज़ी के अंदर के तंतु, 4.

झिल्ली, 5. खिड़की। **जाली** (हि.)

जाळी[2] (वि.) नक़ली, बनावटी, अनुकृति। **जाली** (हि.)

जाहिल (वि.) अशिष्ट, मूर्ख।

जासूस (पुं.) भेदिया, गुप्तचर।

जासूस्सी (स्त्री.) 1. जासूस का काम, 2. भेद, रहस्य। **जासूसी** (हि.)

जाहर (पुं.) दे. ब्यान।

जाहर पीर (पुं.) 1. दे. जहरपीर, 2. दे. गूग्गा।

जाहवा (पुं.) एक जंगली चूहा जिसके शरीर पर लंबे काँटे होते हैं; **~सा सिर** ऐसा सिर जिस पर ऊर्ध्व बाल हों।

जाहवा मूस्सा (पुं.) दे. जाहवा।

जाहिआ (पुं.) गेहूँ की फसल के दोनों ओर बोई जाने वाली सरसों आदि।

जाहिया धान (पुं.) ओरने या पोरे द्वारा बोए गए धान।

जिंजाळ (पुं.) 1. उलझन, बखेड़ा, 2. स्वप्न, 3. संसार; **~आणा** स्वप्न आना; **~खड्या होणा** उलझन उत्पन्न होना; **~जाळ** 1. उलझन, न सुलझने वाली उलझन, 2. भवसागर; **~जी नैं घलणा** आफ़त खड़ी होना, आफ़त से पीछा न छुटना; **~जाल मैं फँसणा** 1. मुसीबत में फँसना, 2. भवसागर में फँसना। **जंजाल** (हि.)

जिंद (पुं.) भूत-प्रेत।

ज़िंदगी (स्त्री.) 1. जीवन, 2. आयु।

जिंदड़ी (स्त्री.) जिंदगी।

जिंदराळा[1] (पुं.) दे. मेज।

जिंदराळा[2] (पुं.) 1. दे. मेज, 2. दे. पाटा।

जिंदल (पुं.) अग्रवाल बनियों का एक गोत्र।

जिंदा (वि.) दे. जीमता।

जिंस (स्त्री.) 1. वस्तु, 2. सामान, सामग्री, 3. भाँति, किस्म।

जिंह (सर्व.) जिस–जिंह नैं यो कुकरम कर्या हो बतादे।

जिकर (पुं.) चर्चा, वर्णन। **जिक्र** (हि.)

जिकरा (पुं.) दे. जिकर।

जिगर (पुं.) 1. चित्त, मन, 2. यकृत।

जिगरा (वि.) साहसी। (पुं.) साहस।

जिगरी (वि.) प्रिय, बहुत प्यारा।

जिजमान (पुं.) दे. जजमान।

जिठाणी (स्त्री.) जेठ की पत्नी। **जेठानी** (हि.)

जित (क्रि. वि.) 1. जहाँ, 2. जिस स्थान पर–जित जी मैं आवै उड़ै हाँड।

जितणा (वि.) 1. जिस मात्रा का, 2. इस मात्रा का। **जितना** (हि.)

जितना (वि.) दे. जितणा।

जितवाणा[1] (क्रि. स.) 1. अपना मत स्वीकार कराना, 2. मनवाना, 3. बताना, 4. सचेत कराना, सावधान कराना। **जतलाना** (हि.)

जितवाणा[2] (क्रि. स.) जीतने में सहायता करना। **जिताना** (हि.)

जितवाना (क्रि. स.) दे. जितवाणा[2]।

जिताणा (क्रि. स.) विजय कराना, (1. दे. पुगाणा, 2. दे. जितवाणा[1])। **जिताना** (हि.)

जिताना (क्रि. स.) दे. जिताणा।

जित्तल (पुं.) अग्रवाल बनियों का एक गोत्र।

जिद[1] (स्त्री.) हठ, अड़; (क्रि. वि.) जब, (दे. जिब); **~बाँधणा** 1. हठ करना, 2. शत्रुता ठानना।

जिद[2] (अव्य.) हठ। दे. जिब।

जिद्दा-बिद्दी (स्त्री.) ज़िद करने का भाव या क्रिया, ज़िदने और बदने का भाव; **~चालणा/रहणा/ होणा** 1. ईर्ष्या-द्वेष रहना, 2. कहा-सुनी रहना।

जिद्दी (वि.) हठी।

जिधर (क्रि. वि.) दे. जींग्घाँ।

जिन (सर्व.) 1. 'जिस' का बहुवचन रूप, 2. जिसने-जिन ये लिख दिये लेख, कलम क्यूँ नाँ ढँह् पड़ी मेरे राम! (लो. गी.)।

जिन जिनात (पुं.) भूतप्रेत।

जिनानिया (वि.) 1. निर्लज्ज, 2. स्त्रियों के स्वभाव का, 3. नामर्द। **जनानिया** (हि.)

जिनान्नी (स्त्री.) 1. स्त्री, 2. पत्नी; (वि.) औरतों से संबंधित-जैसे जिनान्नी धोत्ती आदि। **जनानी** (हि.)

जिनाब (पुं.) सम्मानबोधक शब्द। **जनाब** (हि.)

जिनावर (पुं.) 1. जंतु, जीव, 2. छोटे-कीड़े; (वि.) मूर्ख, जड़; **जी~** (दे. जी जिनावर); **~पड़णा/ होणा** कीड़े पड़ना, शरीर के किसी अंग में कीड़े पड़ना। **जानवर** (हि.)

जिनै (अव्य.) जिसने। उदा.-जिनै जाणा हो सो जा।

जिनोर (पुं.) दे. जिनावर।

जिब (क्रि. वि.) 1. उस समय, तब, 2. प्रश्नवाचक अव्यय। **जब** (हि.)

जिब्बै (क्रि. वि.) 1. तुरंत, अविलंब, 2. 'इब्बै' का विलोम, 3. जब ही। **जभी** (हि.)

जिब्भ्या (स्त्री.) 1. जीभ, 2. वाणी, वचन; **कळ~** 1. काली जिह्वा वाला, जिस व्यक्ति की आधी जीभ काली हो, 2. बुरे वचन बोलने वाला, बुरी भविष्य-वाणी करने वाला। **जिह्वा** (हि.)

जिभड़ना (क्रि. अ.) बात करना।

जिमाई (स्त्री.) जीमने या भोजन करने की क्रिया; (क्रि. स.) **'जिमाणा'** क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~झुठाई** भोजन परसने का कार्य; **~~करणा** 1. निमंत्रण देकर भोजन कराना, 2. भोजन करना।

जिमाणा (क्रि. स.) 1. भोजन खिलाना, निमंत्रण देकर भोजन खिलाना, पंडितों को या बिरादरी को भोजन खिलाना, 2. रिश्वत देना; **~झुठाणा** भोजन कराना; **बटेऊ सा~** दामाद की तरह भोजन खिलाना; **बाहमण~** (दे. बाहमण जिमाणा); **न्योंत~** निमंत्रण देकर भोजन कराना-न्योंत जिमाऊँ अपणा माई जाया बीर, (लो. गी.)। **जिमाना** (हि.)

जिमाना (क्रि. स.) दे. जिमाणा।

जिमैं (क्रि. वि.) जैसे, मानों, यों-इसा ऊछळ्या फिरै सै जिमैं तनैं किमैं पाग्या हो, (दे. जणु); **~किमैं करकै** 1. जैसे-तैसे करके, 2. युक्ति निकाल कर, सूझ-बूझ से।

जिम्माँ (पुं.) 1. जिम्मेदारी, 2. भरोसा-अपणे जिम्मैं पै जो करणा हो, कर ले; **~आणा** 1. भार आ पड़ना, काम का उत्तरदायित्व मिलना, 2. हिस्से में आना; **~(-म्में) करणा** भार सौंपना; **~भेड़णा** 1. हिस्से में देना, 2. प्रतिरूप में मिलना, किसी वस्तु के बदले में मिलना, 3. ज़बरदस्ती उत्तरदायित्व देना; **~होणा** 1. हिस्से में आना, 2. कोई आरोप सिर लगना।

जिरणा (क्रि. अ.) 1. पुराना होना, जीर्ण-शीर्ण होना, 2. किरना, अंश-अंश

होकर (कट कर) गिरना; (वि.) जीर्ण-शीर्ण।

जिरह (स्त्री.) तर्क, बहस, दलील; **~छाँटणा** तर्क-वितर्क करना।

जिलंधर (पुं.) दे. जलंधर।

जिलद (स्त्री.) 1. पर्त, पपड़ी, 2. चर्म, खाल, 3. पुस्तक पर गत्ते आदि का कवर, आवेष्टन। **ज़िल्द** (हि.)

जिलहरी (स्त्री.) दे. जलहरी।

जिला (पुं.) प्रांत, डिसट्रिक्ट, तहसील से बड़ी प्रशासनिक इकाई।

जिलाना (क्रि. स.) दे. जिवाणा।

जिलेदार (पुं.) नहर का एक अधिकारी। **ज़िलादार** (हि.)

जिले साहब (पुं.) जिले का बड़ा अधिकारी।

जिल्द (स्त्री.) दे. जिलद।

जिवड़ा (पुं.) 1. जीव, 2. हिय, हृदय; **लोभी** ~लोभी जीव, संसार में लिप्त प्राणी।

जिवाणा (क्रि. स.) 1. जीवित करना, 2. भीड़ पड़ी में सहायता करना, आपत्ति काल में सहायता मिलना। **जिलाना** (हि.)

जिवान (वि.) 1. दे. सिवास्सण, 2. दे. गाभरू। **जवान** (हि.)

जिवान्नी (स्त्री.) 1. यौवनावस्था, 2. उन्माद, मस्ती; **~आणा/चढणा** यौवन पर आना, मदमस्त होना; **~ऊत्तरणा/ढळणा** 1. उमर ढलना, बुढ़ापा आना, 2. जवानी का नशा उतरना। **जवानी** (हि.)

जिवावणिया (वि.) जिलाने वाला, जीवन-दान देने वाला।

जिवास्सा (पुं.) 1. ज़िंदगी, जीवन, 2. जीवित रहने की आशा, 3. आंतरिक इच्छा, 4. लालच, मोह।

जिस (सर्व.) 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है; **~करकै** जिस कारण से-मैं जाणू सूँ जिस करकै वो नाँ आया।

जिसा (वि.) जैसा-जिसा बोवैघा उसा काट्टैघा; **~उसा** 1. जैसा-तैसा, 2. सामान्य; **~-तिसा** जैसा-तैसा।

जिसाक (अव्य.) जैसा कि। जाणू सूँ जिसाक तूँ सै। (जानता हूँ जैसे तुम हो।)

जिसी (वि.) जिस तरह की; **~-तिसी** जैसी-तैसी।

जिस्याँ (वि.) 'जैसे' का बहुवचन-तेरे जिस्याँ तैं रोज फेट्टूँ सूँ (मिलता हूँ)। **जैसों** (हि.)

जिहाद (पुं.) धर्मयुद्ध।

ज़िहान (पुं.) संसार। **जहान** (हि.)

जींगड़ (पुं.) 1. छोटा बच्चा, बालक, 2. बच्चे के लिए प्रयुक्त अनादर बोधक शब्द।

जींगड़ी (स्त्री.) 1. लड़की, 2. दुर्बल लड़की।

जींगगड़ (पुं.) दे. जींगड़।

जींग्घाँ (क्रि. वि.) जिधर।

जींदवाळ (वि.) जींद का, जींद से संबंधित।

जींदे जी (अव्य.) जीवित रहते रहते।

जींह (वि.) जिस-जींह गाम नाँ जा उसकी कोस के गिणै।

जी (पुं.) 1. जंतु, 2. प्राण, 3. आत्मा, 4. मन-जी मैं आवै सै अक कथा सुणूँ, 5. गला, घेंटुआ, 6. साँस, 7. दिल, हृदय, 8. सम्मानबोधक शब्द; (क्रि. स.) 'जीणा' क्रिया का आदे. रूप तथा प्रे. रूप; **~आच्छ्या होणा**

1. प्रसन्न चित्त होना, 2. नीरोग होना; **~आणा** 1. बहुत आनंद मिलना, 2. पुनर्जीवित होना, 3. मन मचलना, 4. दिल डिगना; **~करकै** मन लगाकर, चाव से; **~करणा** 1. मन आना, 2. किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा होना, 3. जी मचलना, 4. हाँ कहना, स्वीकार करना; **~का जी बैरी** बड़ी मछली छोटी मछली को निगलती है, एक प्राणी दूसरे के प्राणों का भूखा है; **~का झाड़** 1. मार्ग की बाधा, 2. झंझट; **~की खाट** देव उठनी एकादशी से देव-शयनी एकादशी के बीच में बनाई जाने वाली चारपाई जिसके बीचों-बीच तीन की बजाय चार रस्सियाँ इकट्ठी होती हैं; **~खाट्टा होणा** 1. मन भरना, 2. निराश होना; **~खोणा** 1. मन हारना, 2. उचाटी होना, 3. आत्महत्या करना; **~चालणा** 1. मन विचलित होना, 2. मन आना; **~जी करणा** चापलूसी करना, हाँ में हाँ मिलाना, **~ठाणा** चारपाई बुनते समय जी (चार रस्सियाँ जो चारपाई के बीचों-बीच होती हैं) का अन्य रस्सियों से ऊपर रखना; **~तैं मारणा** जान से मारना; **~दाबणा** 1. गला घोंटना, गला घोट कर मारना, 2. मन को वश में करना; **~धरणा** 1. किसी पर मन लगाना, 2. लालच करना; **~बचाणा** प्राण बचाना, अपनी रक्षा करना; **~धरणा** 1. किसी पर मन लगाना, 2. लालच करना; **~बचाणा** प्राण बचाना, अपनी रक्षा करना; **~बाह्वड़णा** 1. पुनर्जीवित होना, 2. हौसला बढ़ना, 3. पुनः आशा बँधना; **~भरणा** 1. आँसू आना, 2. दिल भारी होना, 3. मन भरना; **~मारणा** 1. इच्छा का दमन करना, अपने मन को समझाना–जी मार कै जीया तै के जीया, 2. प्राणी-हत्या करना; **~मैं आणा** जी चाहना, मन में आना; **~मैं जी आणा** 1. मन को तसल्ली मिलना, 2. भय दूर होना, 3. इच्छा पूर्ण होना, इच्छा अनुसार कार्य सम्पन्न होना, 4. प्राण बचना, 5. ओषधि सेवन से तुरंत लाभ मिलना; **~राखणा** 1. मन रखना, 2. सांत्वना देना; **~लागणा** 1. मन लगना, 2. मन आना; **~लीकड़णा** 1. प्राण-पखेरू उड़ना, 2. अधिक भयभीत होना; **~सा आणा** प्रसन्नता मिलना; आनंद प्राप्त होना; **~हालणा** 1. दिल घबराना, 2. भावी दुर्घटना के प्रति आशंकित होना; **~होणा** 1. अंतिम साँस शेष होना, 2. जीवित अवस्था में होना, 3. रुचि होना, 4. स्वीकृति होना। **जीव** (हि.)

जी जंतर (पुं.) 1. जीव-जंतु, 2. छोटे कीड़े-मकौड़े।

जी जी (स्त्री.) 1. स्वीकारोक्ति द्योतक शब्द, 2. (दे. जीज्जी)।

जीज्जा (पु.) बहिन का पति, बहनोई, (दे. भिणोई)। **जीजा** (हि.)

जीज्जी (स्त्री.) बहिन। **जीजी** (हि.)

जीण (पु.) 1. जिन्दगी, 2. जीविका; **~जोग्या** जीने योग्य; **~ताँही** जीवन के लिए; **~देणा** 1. जीने देना, 2. क्षमा करना; **~मरण** 1. जीवन-मरण, 2. सुख-दुःख; **~~का साथी** सुख-दुःख का साथी। **जीवन** (हि.)

जीणा (क्रि.अ.) जीवित रहना; (क्रि.स.) भोगना–जीवन जीणा। **जीना** (हि.)

जीत (स्त्री.) सफलता, विजय; (क्रि.स.) 'जीतणा' क्रिया का आदे. रूप।

जीतणा (क्रि. स.) विजय पाना; (वि.) जीत दिलाने वाला, जीत में सहायक– यो पास्सा जीतणा सै। **जीतना** (हि.)

जीतणिया (वि.) जीतने वाला, सफलता प्राप्त करने वाला।

जीतना (क्रि. स.) दे. जीतणा।

जीतल (वि.) 1. जीतने वाला, 2. वह पाँसा आदि जो जिताने में सहायक हो।

जीत्ता (वि.) जीवित; (क्रि. स.) 'जीतणा' क्रिया का भू. का. रूप; **~(-त्ते) जी** प्राण रहते, जीवित रहते; **~मरता** 1. जीवित या मरते समय, 2. जीवन में किसी समय। **जीता** (हि.)

जीन (स्त्री.) 1. घोड़े की पीठ पर रखी जाने वाली गद्दी, 2. एक प्रकार का बहुत मोटा सूती कपड़ा। **जीन** (हि.)

जोना (क्रि. अ.) दे. जीणा; (पुं) दे. सीड्ढी।

जीन्ना (पु.) 1. दे. सीड्ढी, 2. दे. पैड–काळा। **जीना** (हि.)

जीब (स्त्री.) दे. जीभ। (अव्य.) दे. जिब।

जीबड़ा (पुं.) जीव, आत्मा। दे. जी।

जीभ (स्त्री.) 1. रसेन्द्री, जबान, 2. वचन; **~आणा** जीभ लाल होना, जीभ में छाले पड़ना; **~कटणा** 1. भोजन करते समय जीभ दाँतों के नीचे आना (जन धारणा के अनुसार चुगलख़ोर की जीभ अधिक कटती है), 2. वचन देना, 3. धोखे से वचन देना, 4. मौन धारण करना; **~काढणा** 1. चिढ़ाना 2. जीभ काटने का दंड देना, 3. संकेत देना; **~चाटणा** 1. किसी वस्तु का धीरे-धीरे रसास्वादन करना, 2. स्वादिष्ट वस्तु खाते-खाते पेट न भरना, 3. लालची; **~चलाणा** बातें बनाना; **~दाबणा** 1. बात छिपाना, 2. संकेत करना, 3. कामुक संकेत करना; **~दिखाणा** 1. चिढ़ाना, 2. संकेत देना; **~भिड़ाणा** पक्की मित्रता गाँठना (जीभ स्वाद में अलूनी होती है); **~हलाणा** 1. आदेश देना, 2. केवल बातचीत करते रहना (काम न करना), 3 चिढ़ाना। **जिह्वा** (हि.)

जीभा जोरी (स्त्री.) बहस। उलट बहस।

जीमणवार (स्त्री.) दे. जीम्मणवार।

जीमणा (क्रि. स.) 1. भोजन करना, विशेष निमंत्रण पर या बारात आदि में श्रेष्ठ भोजन करना, 2. चट कर जाना, हड़पना; **~झूठणा** भोजन करना। **जेंवना/जीमना** (हि.)

जीमता[1] (क्रि. वि.) जीवित अवस्था में; (वि.) भोजन करता हुआ; **~जी** जीवित रहते, प्राण रहते।

जीमता (पुं.) 1. जीवित, 2. मजबूत, कठोर।

जीमना (क्रि.स.) दे. जीमणा।

जीम्मण-झूट्ठण (स्त्री.) 1. भोजन का बचा खुचा अंश, 2. उच्छिष्ट भोजन, 3. भोजन करने की क्रिया।

जीम्मणवार (स्त्री.) 1. सामूहिक भोज, 2. पंक्तिबद्ध भोजन; **~ऊठणा** 1. सामूहिक भोज समाप्त होना, 2. भोज का बीच में बहिष्कार होना; **~चालणा** लोगों का पंक्तिबद्ध भोजन करते रहना, एक पंक्ति के बाद दूसरी पंक्ति का भोजन पर बैठना, सामूहिक भोज चालू रहना; **~निमटणा** सामूहिक भोज सम्पूर्ण होना; **~लागणा** सामूहिक भोज शुरू होना। **जेंवनवार/ जीमनवार** (हि.)

जीम्याँ-झूट्या (पुं.) 1. भोजन की क्रिया, 2. उच्छिष्ट भोजन, (दे. जीम्मण-झूट्ठण); **~मार्‌या-कूट्या सब**

बरोब्बर भोजन करने के बाद और पिटने के बाद सब चीजें बराबर हो जाती हैं अर्थात् इन्हें भुला देना चाहिए।

जीया (पुं.) 1. जीव, प्राणी, 2. मन, 3. हृदय; (क्रि.अ.) 'जीणा' क्रिया का पुं. एक व. का भूतकालिक रूप।

जीया जंतु (स्त्री.) दे. जीया जूण।

जीया-जूण (स्त्री.) 1. जीव द्वारा भोगी जाने वाली योनियाँ, 2. असंख्य जीव-योनि, 3. असंख्य जीव-जंतु; **~छोड़णा** मोक्ष मिलना; **~तिरणा** मोक्ष मिलना, भव-सागर पार करना; **~पड़णा** 1. कीड़े पड़ना, 2. कीटाणु उत्पन्न होना; **~भोगणा** जन्म मरण के चक्र में पड़ना; **~मैं आणा/पड़णा** जीव-योनि में आना। **जीव-योनि** (हि.)

जीरण (वि.) 1. पुराना, 2. क्षीण। **जीर्ण** (हि.)

जीरा (पुं.) छौंक लगाने का एक मसाला; (वि.) छोटा, महीन।

जीरी (स्त्री.) 1. धान, 2. बहुत बारीक पत्थर, 3. वह वस्त्र जो बकरी की मेंगन में भिगोकर थन में बाँध दिया जाता है (ताकि उसका बच्चा असमय में दूध न पी सके); **~लाणा** बकरी के थन में मेंगन-गंधयुक्त कपड़ा बाँधना।

जील (स्त्री.) एक वाद्य यंत्र।

जीव (पुं.) प्राणी।

जीवण (पुं.) 1. उस शिशु का रखा जाने वाला नाम जिससे पूर्व कई संतान मर चुकी हों, 2. आयु, 3. ज़िन्दगी; **~मरण** 1. जीवन-मृत्यु, 2. सुख- दुःख; **~~का साथी** सुख-दुःख का साथी। **जीवन** (हि.)

जीवण-बूँट्टी (स्त्री.) वह बूटी जो हनुमान जी लक्ष्मण मूर्च्छा के समय लाए थे, संजीवनी; **सरब ~**1. सबको जीवन देने वाला, भगवान, 2. सर्वजीवनी बूटी। **जीवन बूटी** (हि.)

जीवणा (क्रि. अ.) दे. जीणा।

जीवता (वि.) दे. जीमता; **~मरता** सुख-दुःख की स्थिति में।

जीवन-बूटी (स्त्री.) दे. जीवण बूँट्टी।

जीव-लोक (पुं.) पृथ्वी।

जीव-हत्या (स्त्री.) 1. हत्या, 2. निर्दोष की हत्या।

जीवित (वि.) ज़िंदा।

जीहड़ी (स्त्री.) बस्ती (?) उदा.–भीलों की जीहड़ी।

जी हत्या (स्त्री.) जीव हत्या।

जुंडी (स्त्री.) दे. जुट्टी।

जुंबिस (स्त्री.) हिलने-डुलने की क्रिया; **~खाणा** हिलना-डुलना। **जुंबिश** (हि.)

जु (स्त्री.) 1. बैलों को जुए में जोतते समय उच्चरित ध्वनि, 2. सम्मान बोधक परसर्ग, जी (सीमित प्रयोग)।

जुआ (पुं.) दे. जूवा।

जुआणा (क्रि. स.) 1. जुए में जोतना, 2. जुए में जोतने में सहायता करना।

जुआब (पुं.) जवाब। तुल. जबाब।

जुआर (स्त्री.) दे. जवार।

जुआरण (स्त्री.) 1. महिला जो हाली तथा पशुओं का आहार लेकर दोपहर के समय खेत में जाती है, 2. जुआ खेलने वाली महिला।

जुआरा (पुं.) 1. चारा जो हल में जुते बैलों के लिए घर से भेजा जाता है, 2. हाली का भोजन जो खेत में पहुँचाया जाता है, 3. नवरात्रों में पूजन के लिए बोए

जाने वाले जौ के पौधे, (दे. जवारा); **~(–रे) आळी** दे. जुआरण।

जुआरिया (पुं.) 1. वह पुरुष जो बैलों के लिए खेत में 'जुआरा' ले जाता है, 2. जुआरी, 3. (दे. जुआरा)।

जुआरी (पुं.) जुआ खेलने वाला।

जुकाम (पुं.) दे. जुखाम।

जुखाम (पुं.) नज़ला, (दे. खेर-खाँस्सी)। **जुक़ाम** (हि.)

जुग (पुं.) 1. लंबा समय, 2. समय का एक परिमाण, जैसे सतयुग आदि; (वि.) दोनों, युगल। **युग** (हि.)

जुगत (स्त्री.) उपाय, सरल विधि; **~काढणा** युक्ति या उपाय निकालना; **~देखणा** अवसर की तलाश में रहना; **~बैठणा** 1. अवसर मिलना, 2. काम बनना, 3. युक्ति सफल होना; **~लगाणा** 1. युक्ति से काम निकालना, 2. अवसर की प्रतीक्षा करना। **युक्ति** (हि.)

जुगती[1] (स्त्री.) दे. जुगत। **युक्ति** (हि.)

जुगती[2] (स्त्री.) चाँद की एक कला।

जुगनू (पुं.) दे. पटबीजणा।

जुगाड़[1] (पुं.) प्रबंध, युक्ति।

जुगाड़[2] (पुं.) भार ढोने, सवारी ले जाने का वाहन जो ट्रेक्टर से खींचा जाता है। दे. युक्ति।

जुगात[1] (पुं.) (?)–दे आढत अर जुगात भरले, जो लाल्लाजी चीज मोल ले।

जुगात[2] (स्त्री.) भाग्य, उदा.–पता चाले ना जुगात का।

जुगाळ (स्त्री.) चारा खाने के बाद पशुओं की जुगालने की क्रिया; (क्रि.स.) 'जुगाळणा' क्रिया का आदे. रूप; **~काढणा/गेरणा** जुगाली करते समय मुँह से झाग डालना। **जुगाली** (हि.)

जुगाळणा (क्रि.स.) 1. जुगाली करना, चर्वण करना, 2. बात को अनावश्यक रूप से दोहराते रहना; (वि.) वह जो जुगाली करे। **जुगालना** (हि.)

जुगालना (क्रि. स.) दे. जुगाळणा।

जुगाली (स्त्री.) दे. जुगाळी।

जुगाळी (स्त्री.) जुगालने की क्रिया। **जुगाली** (हि.)

जुग्गी (स्त्री.) 1. वयन-जीवी, 2. जुलाहा जाति।

जुजमान (पुं.) दे. जजमान।

जुज्झ (पुं.) लड़ाई, बड़ी लड़ाई; **~करणा/झोणा** 1. युद्ध करना, 2. लंबी लड़ाई करना। **युद्ध** (हि.)

जुज्झणा (क्रि.अ.) 1. छूना, स्पर्श होना, 2. खेलते समय गिल्ली, गेंद आदि का उन अंगों से स्पर्श होना जो नियम-विरुद्ध हैं, 3. युद्ध करना, 4. जूझना।

जुज्झया (स्त्री.) 1. झूलने की क्रिया, 2. (दे. मुज्झया)।

जुट[1] (पुं.) समूह, झुंड, दल; (क्रि.अ.) 'जुटणा' क्रिया का आदे. रूप; **~होणा** 1. एका होना, 2. दल बनाना।

जुट[2] (स्त्री.) 1. चने, गेहूँ आदि की छोटी ढेरी, 2. चने आदि की ढेरी पर लगाया गया बाँध या बंधन।

जुटणा (क्रि. अ.) 1. काम में लगना, 2. इकट्ठे होना–घुळाई देख कै घणे सारे लोग जुटगे, 3. जुड़ना, 4. लिपटना, 5. रस्सी का बँटना। **जुटना** (हि.)

जुटना (क्रि. अ.) दे. जुटणा।

जुटवाणा (क्रि. स.) दे. जुटणा। **जुटवाना** (हि.)

जुटाणा (क्रि. स.) 1. काम में लगाना, 2. व्यवस्था करना, रुपये आदि या अन्य सामग्री इकट्ठी करना, 3. भिड़ंत कराना, भिड़ाना, झगड़ा करवाना, 4. जोतना। **जुटाना** (हि.)

जुट्टी (स्त्री.) 1. पत्ते वाली सब्जी आदि की गड्डी, पुदीने, पालक आदि की जुट्टी, 2. कटे हुए चने के पौधों की ढेरी, 3. सन या पटसन के रेशे की बींडी या लूँह्ढी, (दे. जूँट्टी); **~बणाणा** 1. चने की फ़सल काटते समय छोटी-छोटी ढेरी बनाना, 2. पत्ते वाले शाक की गड्डी बनाना, 3. डंठल या तळसंडे (दे.) से सन या पटसन अलग करके बींडी बाँधना।

जुड़ (स्त्री.) दे. जु.

जुड़णा (क्रि. अ.) 1. संचित होना, 2. अंग में (बात) बाव आना, 3. शरीर ऐंठना, 4. भीड़ इकट्ठी होना, 5. जुतना, 6. बंद होना—मैं गया तै किवाड़ जोड़्याँ सोवैं थी, 7. युक्त होना, 8. फँसना; **कूआ~** कूआँ जुतना; **गाड्डी~** गाड़ी जुतना; **देही~** गठिया बा (वात) आना। **जुड़ना** (हि.)

जुड़ना (क्रि. अ.) दे. जुड़णा।

जुड़माँ (वि.) मिले हुए, जुड़े हुए, युक्त। **जुड़वाँ** (हि.)

जुड़वाँ (वि.) दे. जुड़माँ; **~बाळक** 1. एक साथ उत्पन्न बच्चे, 2. जोड़ले बच्चे, यमज।

जुड़वाणा (क्रि. स.) दे. जुड़ाणा। **जुड़वाना** (हि.)

जुड़वाना (क्रि. स.) दे. जुड़वाणा।

जुड़ाणा (क्रि. स.) 1. मिलाना, 2. बनवाना या गढ़वाना—रुग्घा तैं गाड्डी के पहिएँ जुड़वावण भाद्दरगढ़ गया, 3. जुटाना, 4. हथकड़ी डलवाना। **जोड़ना** (हि.)

जुड़ाना (क्रि. स.) दे. जुड़ाणा।

जुणसा (सर्व.) जोन सा, जो-जो भी, जो कोई—जुणसा थारै मैंह कै गाभरू हो, वो आज्या, (दे. जोण)।

जुतणा (क्रि. अ.) 1. जोता जाना, 2. जूए के नीचे आना, 3. काम में लगना। **जुतना** (हि.)

जुतवाणा (क्रि. स.) 1. हल चलवाना, 2. जोतने में सहायता करना, 3. ज़बरदस्ती काम में लगाना। **जुतवाना** (हि.)

जुताई (स्त्री.) 1. जोतने का कार्य, 2. जोतने की मज़दूरी; **~बटाई** हल जोतने के पारिश्रमिक के रूप में दिया जाने वाला भाग; **~~पै देणा** खेत को उपज के बँटवारे के आधार पर देना। **जोताई** (हि.)

जुतियाणा (क्रि. स.) जूतियों से पिटाई करना।

जुदा (वि.) पृथक्, अलग।

जुध (पुं.) लड़ाई, बड़ी लड़ाई, सैनिक-लड़ाई; **~बोलणा** 1. युद्ध की घोषणा करना, 2. हल्ला बोलना; **~मारणा** 1. युद्ध जीतना, 2. सफलता मिलना। **युद्ध** (हि.)

जुधणा (क्रि. अ.) दे. जुज्झणा।

जुपणा (क्रि. अ.) 1. जुड़ना, दो वस्तुओं का आपस में मिलकर एक होना, 2. चिपकना, मिलना, 3. आँखें मिचना, 4. बंद होना, दरवाजा बंद होना—आरती होत्याँ हे, सिवाल्ले के किवाड़ जुपगे। **जुपना** (हि.)

जुपना (क्रि. अ.) दे. जुपणा।

जुपवाणा (क्रि. स.) 1. जुड़वाना, खंडित

भागों को फिर से मिलवाना, 2. दरवाजा बंद कराना। **जुपवाना** (हि.)

जुबाब (पुं.) 1. उत्तर, 2. बदला, प्रतिशोध। **जवाब** (हि.)

जुम्माँ[1] (पुं.) किसी बात को करने या कराने का भार ग्रहण करने का भाव, (क्रि. वि.) ओर से–मेरे जुम्में, कित्तै जा; **~करणा** काम को करने का भार सौंपना; **~ठाणा** जिम्मेवारी लेना; **~पड़णा** काम को करने का भार आ पड़ना; **~लाणा** 1. आरोप लगाना, 2. कार्य-भार सौंपना; **~होणा** 1. जिम्मेवारी मिलना, 2. आरोप लगना।
जिम्मा (हि.)

जुम्माँ[2] (पुं.) शुक्रवार।

जुर (स्त्री.) 1. हल्का बुखार, दिन के किसी भाग में रहने वाला ज्वर, 2. भय, 3. भय के कारण रहने वाला ज्वर; **हड~** हड्डी का ज्वर। **ज्वर** (हि.)

जुरतकारू (पुं.) 1. वासुकी नाग की बहिन और जरत्कारू महर्षि की पत्नी, 2. सँपेरा, 3. सँपेरा जाति।
जरत्कारू (हि.)

जुरमान्ना (पुं.) 1. दंड, 2. अर्थदंड; **~ठाणा** दंड भोगना। **जुरमाना** (हि.)

जुराब (स्त्री.) मोजा। **जुर्राब** (हि.)

जुर्म (पुं.) अपराध।

जुर्माना (पुं.) दे. जुरमान्ना।

जुर्राब (स्त्री.) दे. जुराब।

जुल़ (पुं.) धोखा। उदा.–जै तिरिया चाल्लै इस ढंग तैं, दुनिया में जुळ हो सै, जती मोर और सती मोरणी, चाळी बुलबुल हो सै। (लचं)

जुलफी (स्त्री.) अलक, लहरदार बाल।
जुल्फ़ (हि.)

जुलम (पुं.) अत्याचार; **~पाटणा** अनोखी घटना घटित होना। **जुल्म** (हि.)

जुलाई (स्त्री.) अंग्रेजी वर्ष का सातवाँ महीना।

जुलाब (पुं.) दस्त लाने वाली दवा, रेचक ओषधि; **~लागणा** 1. दस्त लगना, 2. बार-बार पेशाब आना।

जुलाहा (पुं.) दे. जुलाह्या।

जुलाह्या (पुं.) 1. एक जाति जो कपड़े बुनने का काम करती है, 2. 'धानक' जाति जो खादी या मोटा कपड़ा बनाने का काम करती है, 3. बुनकर, 4. एक अनुसूचित जाति।
जुलाहा (हि.)

जुल्फ (स्त्री.) दे. जुलफी।

जुल्म (पुं.) दे. जुलम।

जुल्माणा (क्रि.) जुल्म ढाहना।

जुवारा (पुं.) 1. दे. जवारा, 2. दे. ज्वारा।

जुसील्ला (वि.) दे. जोशीला।

जुहार (स्त्री.) 1. आर्त पुकार, 2. विनती; (क्रि. स.) 'जुहारणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पड़णा** सहायता के लिए पुकारना।

जुहारणा (क्रि. स.) 1. न्यौछावर करना, 2. वर पर रुपये-पैसे न्यौछावर करना या वारना।

जुहारना (क्रि. स.) दे. जुहारणा।

जुहारी (स्त्री.) लड़के के विवाह के समय एक रस्म जिसमें लड़की वाला लड़के के बाप को कुछ रुपये देकर उसका सम्मान करता है।

जूँ[1] (स्त्री.) यूक, (दे. जूम)।

जूँ[2] (क्रि.वि.) दे. ज्यूँ।

जूँट्टी (स्त्री.) पुदीने, हरे शाक आदि की गड्डी या छोटी ढेरी, 1 (दे. जुट्टी), 2. (दे. लूँहढी)। **जूट्टी** (हि.)

जूँहडी (स्त्री.) दे. लूँहढी।

जू (स्त्री.) दे. जु।

जूअड़ (पुं.) दे. जूआ।

जूआ (पुं.) 1. बैलों के कंधों पर रखा जाने वाला लकड़ी का यंत्र जिसमें छोटी डंडियाँ, चमड़े तथा सन आदि की रस्सियाँ बँधी होती हैं, 2. दासता, अधीनता, 3. द्यूत-क्रीड़ा; (दे. जूवा), **~गेरणा** 1. हार मानना, 2. हिम्मत हारना, 3. काम को बीच में छोड़ देना; **~टाँकणा** खेती-क्यारी का काम बंद करना; **~(–ए) तळे की यारी** 1. क्षणिक या कम समय की मित्रता, 2. स्वार्थ-प्रेरित मित्रता; **~धरणा** 1. बछड़े के कंधे पर पहली बार जुआ रखना, बछड़े को जोतना शुरू करना, 2. गुलाम बनाना, 3. अपने मत का बनाना; **~ना धरण देण देणा** 1. हाथ न टिकाने देना, 2. काबू में न आना; **~ना धरणा** अमावस्या, एकादशी के दिन बैल नहीं जोतना; **~हटाणा** 1. संरक्षण हटाना, 2. स्वतंत्र करना, 3. सहयोग न देना। **जुआ** (हि.)

जूझणा (क्रि. अ.) 1. संघर्ष करना, 2. लड़ना। **जूझना** (हि.)

जूझना (क्रि. अ.) दे. जूझणा।

जूट (पुं.) लंबे बाल, जटा, (दे. लटूर); **जटा~**दे. जटाजूट।

जूट्टी (स्त्री.) दे. जूँट्टी।

जूठन (स्त्री.) झूठा भोजन, उच्छिष्ट भोजन।

जूठा (वि.) दे. झूट्ठा।

जूड़[1] (पुं.) जड़ युक्त घास–खेत मैंह कै जूड़ नाँ काड्ढया तै के खेत्ती होगी; **~करणा/मारणा** खेत से व्यर्थ के पौधे निकालना।

जूड़[2] (पुं.) दे. जूआ।

जूड़[3] (पुं.) झूलने का मोटा रस्सा।[2]

जूड़णा (क्रि. स.) 1. बाँधना, रस्सी से कस कर बाँधना, 2. बेतरतीबी से बाँधना, 3. जकड़बद्ध करना। **जूड़ना** (हि.)

जूड़ा (पुं.) 1. मस्तक का एक आभूषण, सिंगार पट्टी, बेदनी, 2. स्त्रियों की चोटी, 3. खड़ी ईख को बाँधने के लिए काम में लाई गई रस्सी, 4. बर्तन माँजने के लिए काम में आने वाली (ईंडरी) ऐंढी आकार मूँज आदि की रस्सी, जूना, 5. पूली या भूसे को बाँधने के लिए टहनियों को गूँथ कर बनाई गई रस्सी; **~बाँद्धी** 1. बाँधने-जूड़ने का काम, 2. किसी चीज को सँभाल कर रखने का भाव।

जूण[1] (स्त्री.) समय–गरीब नैं एक जूण रोट्टी मिल ज्या वाह् भी भोत; **एक~** एक समय, दिन में एक बार। **जून** (हि.)

जूण[2] (स्त्री.) 1. जीव योनि–बुरे काम करणियाँ नैं कीड़्याँ की जूण मिल्या करै, 2. जन्म, मनुष्य जन्म–फेर बेरा ना कद जूण मिल्लैगी, 3. जाति; **~भोगणा** 1. अनेक जन्म लेना, 2. कठिनाई में जीवन व्यतीत करना। **योनि** (हि.)

जूण[3] (स्त्री.) पेट के कैंचुए।

जूण[4] (पुं.) 1. वह बंध या गाँठ जो फसल काटते समय चारे की छोटी ढेरी के लिए लगाई जाती है, 2. एक जाट गोत; **~खोह्लणा** 1. बंधन-मुक्त करना, 2. चारा काटने से पूर्व पूली का बंध या जून खोलना।

जूण[5] (सर्व.) जो–जूण भी हो आज्या।

जूणणा (क्रि.स.) फसल की छोटी ढेरी को जून से बाँधना।

जूणसा (सर्व.) दे. जुणसा।

जूणा (पुं.) बरतन मलने के लिए घास-फूंस या रस्सी को बाँधकर बनाया गया पोंछा। **जूना** (हि.)

जूणी (स्त्री.) जीव योनि। दे. जूण[2]।

जूत[1] (पुं.) बड़ा जूता; **~अर हुक्के का पाणी देणा** 1. भयंकर अपमान करना, 2. कठोर दंड देना; **~मारणा** अपमान करना; **~मारै सौ, गिणै एक** बहुत पिटाई करना। **जूता** (हि.)

जूत[2] (पुं.) समुदाय, यूथ–हुक्का कुणसे जूत का सै?

जूता (पुं.) दे. जूत्ता।

जूती (स्त्री.) दे. जूत्ती।

जूत्ता (पुं.) अंग्रेज़ी जूता। **जूता** (हि.)

जूत्ती (स्त्री.) हाथ से बना साधारण जूता; **इकपरती**~इकहरे चमड़े की जूती; **इकपेसवाँ**~ इकहरे चमड़े की जूती; **उल्टी होणा** 1. यात्रा के लक्षण होना, 2. पिटाई के लक्षण होना; **कढवाँ**~ सलमे-सितारे से कढ़ी जूती; **खुदरंग**~ 1. भद्दे रंग की खुरदरी जूती, 2. प्राकृतिक रंग की जूती; **~घिसणा** बहुत घूमना (विशेषत: वर की खोज में); **~छिपाई/ ल्हकोई** सालियों द्वारा दुल्हे की जूतियाँ छिपाने की रस्म (जिन्हें वे कुछ रुपये ऐंठ कर लौटाती हैं); **~झाड़णा** 1. अतिथि का किसी के घर पहुँचना, 2. यात्रा की तैयारी करना; **~दुपरती** दोहरे चमड़े की जूती; **दुपेसवाँ**~ दोहरे चमड़े की जूती; **धोळी**~ भूरे या बिना रंगे चमड़े की जूती; **नरी**~ बकरी के चमड़े की बनी सुंदर जूती; **पंजाब्बी**~ हल्की-फुल्की सुंदर चोंचदार जूती; **~पै जूत्ती चढणा** यात्रा के लक्षण होना, यात्रा का शकुन होना; **~मारणा** अपमान करना; **लपेटवाँ**~सलमे-सितारे की जूती; **लाल**~लाल रंगे चमड़े की जूती; **साईबंद**~नाप देकर बनवाई गई जूती; **हँडेरू**~1. वे जूती जो घूमने-फिरने वाले बेचते फिरते हैं, वे जूती जो नाप देकर न बनवाई हों किन्तु घूमने-फिरने वाले चमार से खरीद ली हों, 2. 'साईबंद जूती' का विलोम। **जूती** (हि.)

जून (पुं.) 1. समय, काल, 2. अंग्रेज़ी वर्ष का छठा महीना, 3. (दे. जूण 1, 2, 3)।

जून्नी (स्त्री.) 1. योनि–जैसे मनुष्य जून्नी, पशु जून्नी, 2. जाति, 3. जन्म, (दे. जूण[2]); **~छूटणा** 1. मरना, 2. मोक्ष मिलना; **~भोगणा** 1. जन्म-मरण के फेर में आना, 2. अनेक योनि भोगना, 3. कर्म के अनुसार फल भोगना; **मनुख** ~मनुष्य योनि; **~~मैं आणा** मनुष्य शरीर मिलना।

जूम (स्त्री.) जूँ, ल्हीक, ढेरा; **~चालणा** 1. जूँ चलना, 2. प्रभाव पड़ना, 3. चेतन होना।

जूमत सैन (पुं.) शाल्व देश के राजा जो सत्यवान के पिता थे। **द्युमत्सेन** (हि.)

जूल[1] (पुं.) दस हाथ वर्गाकार तथा एक हाथ गहरे माप का घनफल।

जूल[2] (स्त्री.) दे. झूल।

जूल[3] (पुं.) फसल ढोने का भारी साधन।

जूला (पुं.) दे. जुआ।

जूवा (पुं.) 1. बाज़ी लगाकर खेला जाने वाला खेल, द्यूत, 2. (दे. जुआ)। **जुआ** (हि.)

जूस (पुं.) 1. उबाली हुई चीज़ का रस, 2. रस।

जूह-जूह (स्त्री.) बैल को जूए में जोतते समय उच्चरित किया जाने वाला सांकेतिक शब्द, 1. (दे. जु), 2. (दे. जू)।

जूही (स्त्री.) एक फूलदार पौधा, 2. इस पौधे के फूल।

जेंह (सर्व.) जिस (सीमित प्रयोग)।

जेघड़ (स्त्री.) 1. कूएँ की मुंडेर जहाँ घड़ा रखा जाता है, 2. वह स्थान (पेंहडी) जहाँ जल के मटके रखे जाते हैं, 3. (दे. दोघड़)।

जेट (स्त्री.) चारे की ढेरी।

जेट्टा (पुं.) काटे गए चने के पौधों की छोटी ढेरी; ~**धरणा** चने के पौधों की छोटी ढेरी लगाना।

जेट्ठा (वि.) 1. बड़ा, 2. बड़ा (लड़का) (जनधारणा के अनुसार जेठी संतान पर बिजली पड़ने का डर रहता है), (दे. पहलौट्ठी), 3. ज्येष्ठ महीने से संबंधित। **ज्येष्ठ** (हि.)

जेट्ठी (वि.) 1. बड़ी (लड़की), पहली (लड़की), 2. अगेती (फ़सल), (वह फ़सल) जो ज्येष्ठ के महीने में ही बो दी जाती है–जेठ जेट्ठी, साढ हेट्टी। साम्मण बोई ना बोई।, 3. ज्येष्ठ महीने से संबंधित।

जेठ[1] (पुं.) 1. ज्येष्ठ का महीना, 2. पति का बड़ा भाई, 3. जिससे घूँघट का रिश्ता हो। **ज्येष्ठ** (हि.)

जेठ[2] (वि.) दे. जेट्ठा।

जेठड़ा (पुं.) दे. जेठोड़ा।

जेठा (पुं.) दे. जेट्ठा।

जेठानी (स्त्री.) दे. जिठाणी।

जेठी (वि.) दे. जेट्ठी।

जेठूड़ा (पुं.) ज्येष्ठ के महीने में जलदान (श्रद्धालु महिलाएँ ज्येष्ठ के महीने में जल का घड़ा ब्राह्मण के घर, शिवालय या किसी प्याऊ में प्रति दिन भर कर रखती हैं); ~**धरणा** ज्येष्ठ महीने में जल का घड़ा सार्वजनिक स्थान पर रखना; ~**प्याणा** ज्येष्ठ के महीने में किसी सार्वजनिक स्थान पर बैठकर ग्वालों, हालियों, पीलू तोड़ने वालों, मज़दूरों या यात्रियों को पानी पिलाना; ~**बोलणा** ज्येष्ठ महीने में जल-दान का प्रण लेना।

जेठूत (पुं.) जेठ का पुत्र।

जेठोहड़ा (पुं.) दे. जेठूड़ा।

जेड़ (पुं.) दे. रेवड़।

जेफर (पुं.) फड़ा। दे. दोफड़।

जेबकट (पुं.) जेब काटने वाला।

जेब-खर्च (पुं.) वह अल्प धन जो किसी को स्वयं पर खर्च करने के लिए मिले।

जेब-घड़ी (स्त्री.) जेब में रखी जाने वाली छोटी घड़ी।

जेभ (स्त्री.) दे. गोझ।

जेर (स्त्री.) 1. वह झिल्ली जो मादा पशु प्रजनन के बाद गर्भ से निकालती हैं, 2. मादा पशु की योनि के साथ लटकने वाली लेसदार झिल्ली जो ब्याने से पूर्व तथा पश्चात् व गर्भाधान से पूर्व लटकती है, 3. जेरज-योनि, 4. योनि से निकलने वाला मैला।

जेरज (पुं.) 1. जेर से उत्पन्न योनि, 2. वे जीव जिनके कान होते हैं।

जेर-जूनी (स्त्री.) वह योनि जिसमें जीव जेर से उत्पन्न होता है।

जेरा (पुं.) 1. मादा की योनि में लटकने

वाली लेसदार झिल्ली, (दे. जेर), 2. (दे. झेरा)।

जेल (स्त्री.) दे. जेळ[1]।

जेळ[1] (स्त्री.) 1. कारागार, 2. पाबंदी; **~होणा** 1. कैद का दंड मिलना, 2. बंधन में होना, पाबंदी होना। **जेल** (हि.)

जेळ[2] (स्त्री.) 1. मनिआर की वह रस्सी जिसमें वह चूड़ियाँ डालता है, 2. रस्सी, 3. माला, पिरोई हुई माला–हरी मिर्चां की जेळ बणा ले, लाल हो ज्याँघी, 4. बड़ी 'जेळी'।

जेलखाना (पुं.) दे. जेळखान्ना।

जेळखान्ना (पुं.) कारागार। **जेलख़ाना** (हि.)

जेलदार (पुं.) दे. जैलदार।

जेळवा (पुं.) छोटी जेली, (दे. जेळी)।

जेळी (स्त्री.) 1. लाठी की लंबाई का यंत्र जिसके किनारे पर दो, चार या छः की संख्या तक लगभग एक-एक हाथ लंबी सींग के आकार की लोहे की छड़ें जड़ी होती हैं और जो झाड़ इकट्ठा करने या खेत-खलिहान के अन्य कामों में उपयोगी होती है, 2. एक आयुध; **~चालणा** जेलियों से लड़ाई होना; **चुसंगी~** वह जेली जिसमें सींग के आकार की चार छड़ें लाठी पर जुड़ी हों; **दुसंगी~** दो छड़ों वाली जेळी।

जेल्ली (पुं.) 1. जेल की सजा भुगतने वाला, 2. जिसने जेल की सजा भुगती हो।

जेवड़णा (क्रि. स.) 1. जेवड़े या रस्सी से पिटाई करना, 2. मोटे रस्से से बाँधना।

जेवड़ा (पुं.) 1. रस्सा, 2. लंबाई का एक प्रमाण जो लगभग एक पुरुष या साढ़े तीन हाथ लंबा होता है–1. इस गाम के कूयाँ मैं एक जेवड़ा नीच्चै पाणी सै, 2. बटेऊ घराँ आया तै एक जेवड़ा सूरज दीक्खै था; **~काढणा** 1. पशु को स्वच्छंद छोड़ देना, 2. स्वतंत्र करना; **~बेचणा** पशु को बेचना; **~मेळणा** रस्सा बाँटना।

जेवड़ी (स्त्री.) 1. पतली रस्सी, रस्सी, 2. एक जरीब का नाप, 22 गज का एक नाप, (दे. जरीब); **~काढणा** चारपाई बुनना; **~गेरणा** 1. किसी दूरी की लंबाई रस्सी से नापना, 2 रस्सी से नाप कर भूमि का बँटवारा करना; **~बाँटणा** बट देकर रस्सी बाँटना या बुनना।

जेवर (पुं.) 1. आभूषण, (दे. टूम), 2. साँप (भयवश साँप का नाम नहीं लिया जाता)।

जेवरसिंह (पुं.) गूगापीर का पिता (अन्य धारणा के अनुसार इनके पिता का नाम बच्छराज या भीम था)।

जेह (स्त्री.) 1. देहलीज़, (दे. धेळ), 2. घर, 3. चौपाल आदि का उभरा हुआ चबूतरा, 4. कूएँ की मुँडेर, (दे. जेघड़); **~काढणा/बाँटणा** विवाह के समय गाँव के प्रत्येक घर या अपनी जाति के घरों में निश्चित तोल की मिठाई बाँटना; **~न्योंतणा** देहली के अनुसार निमंत्रण देना।

जैंगड़ा (पुं.) 1. दे. बाछड़ा, 2. दे. जींगड़।

जैंह (सर्व.) जिस।

जै[1] (स्त्री.) 1. जीत, 2. जयकारा; **~करणा/बोलणा** 1. जयकारा बोलना, 2. वाहवाही करना। **जय** (हि.)

जै[2] (सर्व.) 'जो', संबंधवाचक सर्वनाम।

जै[3] (अव्य.) यदि–1. बाब्बू, जै भेज्जै तै रोवण पीट्टण लाग्गूँ, ना तै गोब्बर कूड़े लाग्गूँ, 2. जै गीहूँ खाणा चाहवै था, आठ बै क्यूँ ना बाह्वै था। .

जै[4] (वि.) 1. जितना, जिस मात्रा का–1. जै दिन चाल्लै जेठ में पिरवा। उतणे दिन रहै साम्मण सूक्का।। 2. बेट्टा, जै-जै बात तेरी सास्सू नैं कही, वै सारी खोल दे, 2. जो।

जैकारा (पुं.) जयघोष, जय जयकार; **बोलणा/मारणा** जय-जय करना, स्तुति करना।

जैघड़ (पुं.) माँढे के पात्र।

जै जैकारा (पुं.) दे जैकारा।

जैट्ठै (क्रि. स.) जहाँ।

जैत (स्त्री.) दे. जात।

जैतराम (पुं.) हरियाणा के संत कवि जिन्होंने हरियाणवी में रामायण लिखी, (ये गरीब पंथ के प्रवर्तक संत गरीबदास के पुत्र थे, इन्होंने हरियाणवी में 'बाणियाँ' भी लिखी हैं)।

जैतून (पुं.) एक सदाबहार पौधा जिसके फल और बीज दवा के काम आते हैं।

जैन (पुं.) 1. महावीर स्वामी जो जैन धर्म के प्रवर्तक थे, 2. महावीर स्वामी द्वारा चलाया गया धार्मिक संप्रदाय, 3. जैनी, जैन धर्म को मानने वाला (इस धर्म के अनुयायी प्राय: बनिया जाति के होते हैं)।

जैनी (वि.) दे. जैन्नी।

जैन्नण (स्त्री.) जैन महिला, जैन धर्म को मानने वाली।

जैन्नी (वि.) 1. जैन धर्म को मानने वाला, 2. जैन धर्म से संबंधित।

जैमनी (पुं.) 1. एक ऋषि, 2. ब्राह्मणों का एक गोत्र। **जैमिनी** (हि.)

जैमिनी (पुं.) दे. जैमनी।

जैर (पुं.) दे. जहर।

जैल (स्त्री.) 1. दे. थोक, 2. दे. ठोळा।

जैलदार (पुं.) 1. जेल का अधिकारी, 2. एक उपाधि।

जैसा (वि.) दे. जिसा।

जैहकाणा (क्रि. स.) दे. जहकाणा।

जोंक (स्त्री.) दे. जोख।

जोंड्डा (पुं.) दे. डामचा।

जो[1] (पुं.) 1. यव, रबी की फ़सल का एक अन्न जो गेहूँ से कुछ लंबा होता है (इसे भून कर धानी बनाई जाती है और धानी में गुड़ मिलाकर गुड़धानी बनाई जाती है, इसकी धानी को पीसकर सत्तू बनाया जाता है जिसका गुण शीतल होता है, जौ पूजा-पाठ में काम आता है, नवरात्रों में इसे बोया जाता है और इसके पौधे कान, चोटी और पुस्तकों पर रखे जाते हैं), 2. एक नाप (8 जौ की एक अंगुली और तीन जौ की एक इंच होता है); **~बोणा** पुण्य का काम करना; **~मान** 1. लघु आकार का, 2. जौ के नाप का। **जौ** (हि.)

जो[2] (सर्व.) एक संबंधवाचक सर्वनाम– जो-जो गंगा जी नहाण चाल्लै मेरी गाड्डी भाड़ै कर लैं।

जो[3] (स्त्री.) जोरु, पत्नी। उदा.–मत बाळे की मा मरै, मत बूढ़े की जो।

जो[4] (स्त्री.) दे. ज्योति/दे. जोत।

जोए (पुं.) मैदा को गूद कर जौ के आकार के बनाए गए टुकड़े (ये अधिकतर वर्षा ऋतु में बनाए जाते हैं, इन्हें पहले भून लिया जाता है और फिर उबाला जाता है); **~तोड़णा** जवे बनाना, दे. सेमीं। **जवे** (हि.)

जोक्खम (स्त्री.) 1. विपत्ति, संकट, 2. रुपया-पैसा, धन। **जोखिम** (हि.)

जोख (स्त्री.) एक जल-जीव जो अंग पर चिपट कर खून चूसता है; (वि.) पराश्रयी, परजीवी; **~लवाणा** गंदा खून

सोखने के लिए शरीर के उस अंग विशेष पर जोंक लगवाना। **जोंक** (हि.)

जोखणा (क्रि. स.) तौल की पड़ताल करना।

जोग[1] (पुं.) 1. संन्यास, 2. गृह-त्याग, 3. काषाय वेश, 4. संयोग, 5. ध्यान, 6. उपाय, 7. शुभ काल, 8. संबंध, 9. जोड़; **~धरणा** 1. योग धारण करना, जोगी बनना, 2. ध्यान लगाना, 3. शुभ मुहूर्त निश्चित करना; **~मिलाणा /भिड़ाणा** 1. उपयुक्त जोड़ी मिलाना, 2. उपयुक्त अवसर देखना; **~होणा** 1. संयोग होना, 2. संबंध जुड़णा, 3. सुअवसर होना। **योग** (हि.)

जोग[2] (वि.) 1. लायक, पात्र, अधिकारी, 2. श्रेष्ठ, अच्छा, 3. उचित, 4. आदरणीय। **योग्य** (हि.)

जोगड़ा (पुं.) 1. जोगी, 2. योगी, 3. साधु (अपमानद्योतन रूप में प्रयुक्त), 4. छली, कपटी साधु, 5. जोगी जाति का व्यक्ति।

जोगण (स्त्री.) 1. जोगी जाति के व्यक्ति की पत्नी, 2. जिस महिला ने जोग या संन्यास धारण कर लिया हो, साध्वी, 3. काषाय या गेरुए वस्त्र धारण करने वाली, 4. जादू-टोना जानने या करने वाली, 5. प्रेम दीवानी। **योगिन** (हि.)

जोगणी (स्त्री.) 1. योग साधना करने वाली, 2. जादू-टोना करने वाली, जादूगरनी, 3. पिशाचिनी, 4. योगी की पत्नी, 5. घर-बार नष्ट करने वाली महिला। **योगिनी** (हि.)

जोग-बल (पुं.) साधना की शक्ति। **योग-बल** (हि.)

जोगराज सिंह (पुं.) तैमूर के आक्रमण को समाप्त करने के लिए सर्वखाप पंचायत द्वारा चुना गया एक सेनापति (यह हरिद्वार के पास का निवासी था, इसका भार 63 धड़ी था, यह प्रतिदिन 22 सेर दूध पीता था और चार सेर अनाज खाता था–जन. सा. 4, 11-10)।

जोगिन (स्त्री.) दे. जोगण।

जोगिनी (स्त्री.) दे. जोगणी।

जोगिया (वि.) जोगिया या गेरुए रंग का; (पुं) 1. सामान्य साधु, 2. प्रेमी; **~बाणा** साधु का वेश; **~~पहरणा** जोगी बनना।

जोगी (पुं.) दे. जोग्गी।

जोगीड़ा/जोग्गीड़ा (पुं.) 1. योगी, 2. प्रेमी, जोगी के वेश में प्रेमी, 3. जोगी जाति का। **जोगी** (हि.)

जोग्गम-जोग (वि.) 1. हर प्रकार से उचित, योग्य या उपयुक्त–भगवान जोग्गम जोग जोड़ी किसै-किसै की मिलावै सै, 2. दैव योग से हुई (बात)।

जोग्गा (वि.) लायक–आदमी देखण जोग्गा सै। **योग्य** (हि.)

जोग्गी (पुं.) 1. साधु, 2. पाखंडी, बनावटी साधु, 3. हरियाणा की एक जाति (इस जाति का आदि पुरुष पूरण भगत (चौरंगी नाथ) कहा जाता है, इस जाति का मुख्य व्यवसाय सारंगी लेकर पूरण भगत तथा रिसालू की गाथाएँ गा-गाकर भिक्षा माँगना था, समय प्रभाव वश इस जाति के लोग आजकल अन्य रोजगार-धंधों में भी लग गए हैं); **~गाणा** श्लाघनीय कार्य की प्रशंसा होना, सर्वत्र प्रशंसा होना; **~बणणा** 1. योग धारण करना, साधु बनना, 2. भिक्षावृत्ति अपनाना, 3. प्रेम दीवाना होना। **योगी** (हि.)

जोजण (स्त्री.) दूरी का एक नाप या प्रमाण जिसका प्रमाण भिन्न-भिन्न रूपों में मिलता है। **योजन** (हि.)

जोट[1] (स्त्री.) 1. जोड़ी, 2. एक ही रंग-रूप या बनावट की दो चीजें, 3. बैलों की जोड़ी, 4. कोल्हू में गन्ना पेरने की बारी–म्हारी जोट आद्धी रात डल्याँह आवैगी, 5. तुलना, बराबरी–तेरी जोट का आदमी पाणा सुखाळा नाँ सै, 6. जोड़ना, दो पशुओं के गले में एक रस्सी डालने का भाव; 7. बदला, 8. सहायता, 9. (दे. जोट्टा); (क्रि. स.) 'जोटणा' क्रिया का आदे. रूप; **~आणा** कोल्हू पेरने की बारी आना; **~काढणा** पशुओं के लिए कूएँ से धर्मार्थ पानी निकालना; **गळ~** दो पशुओं के गले में एक रस्सी बाँधने की क्रिया; **~तैं जोट मिलाणा** 1. जोड़ी का वर ढूँढ़ना, 2. बराबरी की जोड़ी मिलाना; **~तारणा** 1. कोल्हू पेरने की अपनी बारी लेना, 2. बदला उतारना– तन्नैं पाछली बरियाँ बुळध माँग्या दिया था इस बरियाँ मन्नैं तेरी जोट तार दी; **~मारणा** कार्य का प्रतिदान न करना; **~मिलणा** जोड़ी मिलना; **~हाँकणा** कोल्हू में जुते बैलों को हाँकना।

जोट[2] (स्त्री.) दे. नार।

जोटिया (पुं.) कोल्हू जोतने वाला। दे. जोट्टा।

जोट्टण (स्त्री.) 1. जोड़ी की (स्त्री), 2. सहेली–हे जोट्टण! साल्लाँ (वर्षों) मैं मिल्ली सै सासरे मैं घणा जी लागग्या के?

जोट्टा (पुं.) 1. सहयोग, 2. सहायता, 3. मुक़ाबला; **~पड़णा** 1. मुक़ाबला होना, 2. आमना-सामना होना, 3. मल्ल-युद्ध होना, 4. हाथापाई होना, 5. उत्कर्ष की स्थिति में पहुँचना; **~मारणा/ लाणा** 1. सहायता करना, 2. काम में हाथ बँटवाना, 3. खेती-बाड़ी का काम लगातार एक समय में कर डालना, 4. साहस करना, 5. आवेश में काम करना। **जोटा** (हि.)

जोट्टी (पुं.) 1. साथी, 2. जोड़ी का।

जोड (वि.) 1. जितना–तेरे जोड का अक (दे.) छोट्टा, 2. समान; **~बर** जिस समय।

जोड़ (पुं.) 1. वह स्थान जहाँ दो या अधिक पदार्थ मिलते हैं, 2. कई संख्याओं का योग, 3. गाँठ, 4. मेल-मिलाप, 5. एक समान दो चीजें, जोड़ी, मिलती-जुलती वस्तुएँ, 6. बराबरी, समानता, 7. छल, कपट; **~मैं जोड़ मिलाणा** 1. हर प्रकार से बराबरी करना, 2. पूरी तरह सटाना या समाना; **~पड़णा** 1. मन में अंतर या फ़र्क़ आना, मन-मुटाव होना, 2. गाँठ लगना, 3. बाधा उत्पन्न होना; **~बढाणा** 1. ताल-मेल मिलाना, 2. युक्ति निकालना; **~बैठणा/मिलणा** 1. किसी से बनना, मेल-मिलाप होना, 2. युक्ति सफल होना; **~भिड़णा** 1. मेल-मिलाप होना, 2. काम बनना, 3. उपाय सफल होना; **~मिलाणा** 1. तुकबन्दी करना, हल्की कविता रचना, 2. दो रस्सियों को बाँधना, 3. प्यार कराना, दो व्यक्तियों को निकट लाना, शत्रुता दूर करवाना, 4. खर्च पूरा करना, 5. योग करना; **~लगाणा/लाणा** 1. अनुमान लगाना, 2. उपाय निकालना, 3. योग करना; **~होणा** व्यवस्था होना, प्रबंध होना–जोड़ होत्याँ हैं, तेरे पइसे उतार द्यूँगा।

जोड़णा (क्रि. स.) 1. दो वस्तुओं को आपस में मिलाना, खंडित वस्तु को जोड़ना, 2. इकट्ठा करना, 3. जलाना,

प्रज्वलित करना—हे! दीवा जोड़ण का बखत होग्या, 4. संबंध स्थापित करना, 5. वस्तुओं को व्यवस्था से रखना, 6. बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना, तिल का ताड़ बनाना, 7. लोगों को एकत्रित करना, 8. जोतना, 9. धन जोड़ना, 10. योग करना; **दीवा~** दीया जलाना; **दीवे तैं दीवा~** पाप करना (दीये से दीया जलाना अपशकुन माना जाता है)। **जोड़ना** (हि.)

जोड़-तोड़ (पुं.) 1. युक्ति, उपाय, 2. छल-कपट, 3. अनुमान, 4. व्यवस्था, प्रबंध; **~होणा** 1. रुपए-पैसे की व्यवस्था होना, 2. व्यवस्था या प्रबंध होना।

जोड़ना (क्रि. स.) दे. जोड़णा।

जोड़ला (पुं.) एक ही साथ उत्पन्न दो संतानों में से एक, यमज।

जोड़ले (पुं.) यमज, एक ही साथ उत्पन्न दो संतानें।

जोड़ा (पुं.) 1. एक ही-सी दो चीजें, 2. नर-मादा, पति-पत्नी, 3. युगल, युग्म, 4. दो तारों का जोड़ा जिनसे माघ मास में रात्रि का प्रमाण देखा जाता है; (क्रि.स.) 'जोड़णा' क्रिया का भू. का. पुं. रूप।

जोड़िया (वि.) 1. जोड़ी का, 2. तुल. बराबरी का।

जोण (सर्व.) जो, जो भी, जो कोई, (दे. जुणसा); (क्रि. वि.) ज्योतित करने का समय—दीवे जोण का बखत होग्या।

जोणा (क्रि.) 1. दे. ज्योणा।2 दे. जोग्गम जोग।

जोत[1] (स्त्री.) 1. प्रकाश, 2. मंदिर का दीपक, 3. दीपक की बत्ती, 4. प्राण, 5. कीर्ति, जैसे—कुल की जोत बधाणा; **~बुझणा** मरना; **~मैं जोत मिलाणा** 1. भगवान में लीन होना, मोक्ष प्राप्त करना, 2. मृत्यु को प्राप्त होना, 3. ध्यान रखना, लौ लगना; **~लगाणा** दीपक जलाना; **~सवाई करणा** कीर्ति बढ़ाना; **~सवाई होणा** कीर्ति व्याप्त होना। **ज्योति** (हि.)

जोत[2] (स्त्री.) 1. चमड़े की रस्सी जो जूए आदि में बाँधी जाती है, 2. खेती की ज़मीन; (क्रि. स.) 'जोतणा' क्रिया का आदे. रूप; **~लगाणा** हल पर कर लगाना।

जोत की रोट्टी (स्त्री.) विवाह के बाद का भोजन जिसमें सात जोड़े (युग्म) बैठ कर कढ़ी आदि का भोजन करते हैं।

जोतणा (क्रि. स.) 1. पशु को कोल्हू, हल, गाड़ी आदि के जूए के नीचे बाँधना या जोड़ना, 2. खेत में हल चलाना, 3. किसी काम में ज़बरदस्ती लगाना; (स्त्री.) जोतने में काम आने वाली रस्सी। **जोतना** (हि.)

जोतना (क्रि. स.) दे. जोतणा।

जोतसी (पुं.) ज्योतिष-विद्या जानने वाला। **ज्योतिषी** (हि.)

जोता (पुं.) दे. जोत्ता।

जोताई (स्त्री.) दे. जुताई।

जोत्ता (पुं.) 1. हल जोतने वाला, हल जोतने में कुशल व्यक्ति, 2. चमड़े की रस्सी जो जुए या हल के काम आती है, 3. संधि-स्थल, जोड़।

जोत्ती (स्त्री.) दे. जोत[1]; (क्रि. स.) **'जोतणा'** क्रिया का भू. का. स्त्रीलिं. रूप। **ज्योति** (हि.)

जोद्धा (पुं.) 1. वीर, 2. युद्ध लड़ने वाला। **योद्धा** (हि.)

जोन्नी (स्त्री.) 1. जाति, जैसे–मनुष्य या पशु योनि, 2. देह, शरीर, (दे. जून्नी)। **योनि** (हि.)

जोपणा (क्रि. स.) दे. जोड़णा।

जोबन (पुं.) दे. जोब्बन।

जोबना (पुं.) यौवन।

जोब्बन (पुं.) 1. जवानी, 2. सुंदरता, खूबसूरती, 3. रौनक, बहार; **~आणा /चढणा/छ्याणा** 1. यौवन की मस्ती आना, युवा होना, 2. काम के मठाठे लगना; **~जोर मारणा** यौवन उफनना; **~टपकणा** शरीर से यौवन झलकना; **~ढळणा** यौवन ढलना; **~लूटणा** 1. सम्मान लूटना, इज्जत लेना, 2. यौवन का आनंद लेना, यौवन भोग भोगना; **~हारणा** स्त्री का किसी के सम्मुख समर्पण करना। **यौवन** (हि.)

जोब्भळ (स्त्री.) मुसीबत, आपत्ति, कठिनाई, स्वयं आरोपित कठिनाई; **~में पड़णा** मुसीबत में फँसना।

जोमाळा (स्त्री.) एक प्रकार की माला, जिसमें जौ के आकार की मणिकाएँ पिरोई जाती हैं।

जोयण (स्त्री.) 1. पत्नी (लो. गी. में प्रयुक्त), 2. युवती।

जोर (पुं.) 1. बल, शक्ति, 2. अधिकार, 3. वश– मेरा जोर चाल्लै तै उसनैं नापैद कर द्यूँ, 4. प्रभाव, आधिक्य–चमास्से मैं माच्छर माखियाँ का जोर हो ज्या सै, 5. कुश्ती, 6. रौब; **~करणा** 1. कुश्ती का अभ्यास करना, 2. दबाव डालना– भैंस के थणाँ में दूध जोर कर रह्या सै; **~का** 1. जोरदार– ईब्बै ईब जोर का मींह बरस के थम्म्या सै, 2. अधिक मात्रा में–बाजरा तै जोर का ऐ होगा, 3. तेजी से, उच्च स्वर में–जोर का रुक्का मार जिब सुणैगा, 4. गजब का–के जोर का रूप सै, 5. बेजोड़– म्हारे फोज्जी भाइयाँ ने जोर का काम करकै दिखा दिया; **~जमणा** 1. अन्य का अधिकार होना, 2. रौब पड़ना, 3. प्रभाव पड़ना; **~जमाणा** 1. अधिकार में करना, 2. अधिकार दिखाना, 3. रौब डालना; **~(-म) जोरा** बलात्, धींगा मस्ती से; **~दिखाणा** 1. शक्ति प्रदर्शन करना, 2. अधिकार दिखाना; **~पड़णा** 1. दबाव पड़ना, 2. प्रभाव पड़ना, 3. बोझ पड़ना, 4. अज़ार आना–तेरे पै के जोर पड़ै सै एक बै हाँ कह दे; **~पै कूदना** किसी के भरोसे कूदना **~पै होणा** पूरे प्रभाव या यौवन पर आना; **~मारणा** 1. शक्ति लगाना, 2. कुश्ती करना, 3. मठाठे मारना, 4. उफनना, बाहर निकलने का प्रयत्न करना, 5. धन-यौवन आदि का मद होना; **~होणा** 1. ताक़त आना, 2. अधिक मात्रा में होना–माच्छर माखियाँ का जोर हो र्‌ह्या सै।

जोरा (पुं.) 1. भैंस, 2. ताक़त–जोरा उसका गोरा (शक्तिवान की भूमि है); **~जोरी** धींगा मस्ती।

जोरा जोरी (स्त्री.) जोर जबरदस्ती। दे. धींगा मस्ती।

जोरा दस्ती (स्त्री.) जबरदस्ती।

जोरामदी (पुं.) बलात्कार।

जोरा-सिंध (पुं.) जरासंध जो एक प्रतापी राजा था– जोरा सिंध नैं राज कर्‌या। पिरथी पै नो खंड करकै, (लो.गी.)। **जरासंध** (हि.)

जोरू (स्त्री.) पत्नी, (दे. बीरबान्नी)।

जोळ (पुं.) दे. टोळ।

जोश (पुं.) दे. जोस।

जोशीला (वि.) 1. जोशपूर्ण, 2. जिसमें जोश हो।

जोस (पुं.) 1. उबाल, उफान, 2. आवेश, 3. क्रोध; **~आणा** क्रोध आना; **~देणा** उबालना। **जोश** (हि.)

जोहड़ (पुं.) दे. झोड़।

जोहड़ी (स्त्री.) छोटा जोहड़, गड्ढ़ा (जिसमें वर्षा के दिनों में पानी भर जाए), 1. (तुल. लेट), 2. (तुल. लेटड़ा); **~भर बरसणा** पर्याप्त वर्षा होना।

जोहणा (क्रि. स.) 1. प्रतीक्षा करना, 2. चक्की चलाना, 3. पीसना; **चाक्की~** चक्की चलाना; **बाट~** प्रतीक्षा करना। **जोहना** (हि.)

जोहर (पुं.) 1. वीरता, 2. वह प्रथा जिसमें राजपूत महिलाएँ पति के रण में मरने पर अग्नि में जल मरती थीं; **~दिखाणा** वीरता दिखाना, रणकौशल दिखलाना। **जौहर** (हि.)

जोह्री (पुं.) 1. पारखी, 2. हीरे-जवाहरात की परख करने वाला। **जौहरी** (हि.)

जौं (पुं.) दे. जो[1]।

जौड़ा (वि.) दे. जुड़माँ।

जौहरी (पुं.) जोह्री।

ज्ञाता (वि.) 1. जानने वाला, 2. विशेषज्ञ।

ज्ञान (पुं.) दे. ग्यान।

ज्ञानवान (वि.) ज्ञान वाला, ज्ञाता।

ज्ञानी (वि.) दे. ग्यान्नी।

ज्याँ (अव्य.) 1. जिस, 2. इस; **~करकै** जिस कारण से; **~ताहीं/तैं** इसी कारण से–वै आज ज्याँ ताँहीं गीत गावण ना आई अक काल्ह मीट्ठी बाकळी नाँ बाँट्टी; **~नैं** जिस कारण से–ज्याँ नैं बुलाया था वो काम तै पहल्याँ करवा ले।

ज्या (प्रत्य.) एक प्रत्यय जिसका अर्थ 'जाओ' जान पड़ता है, जैसे–खाज्या (खा जाओ), लेज्या (ले जाओ), भाजज्या (भाग जाओ)।

ज्याणी (स्त्री.) गाँव के साधु-संत को भिक्षा के रूप में मिला दूध।

ज्यादती (स्त्री.) 1. अधिकता, 2. अत्याचार, 3. ज़बरदस्ती।

ज़्यादा (वि.) दे. घणा।

ज्यान (स्त्री.) 1. प्राण, 2. बल, शक्ति, 3. सामर्थ्य, 4. सार, तत्त्व, 5. शोभा, 6. ज्ञान, जानकारी; **~आणा** 1. तसल्ली होना, 2. मरते-मरते बचना, 3. शक्ति लौटना, ताकत आना; **~का गाळा** मौत का सामान, **~~करणा** आत्मघात करना; **~का गाळा होणा** प्राण सूखना; **~काढणा** 1. मारना, 2. सार निकालना; **~घालणा** 1. प्राणवान करना, पुनर्जीवित करना, 2. साकार चित्र या मूर्ति बनाना, 3. शोभा बढ़ाना, 4. हिम्मत या साहस बढ़ाना, 5. भूत-प्रेत का प्रवेश कराना; **~जोक्खम** 1. आपत्ति-काल, 2. प्राण-संकट; **~~मैं आणा** 1. मुसीबत में पड़ना, 2. प्राण संकट में होना; **~तैं जाणा** मरना, प्राण से हाथ धोना; **~नैं खाड़ा होणा** मुसीबत आना, उलझन में पड़ना; **~पै बणणा** 1. प्राण संकट में होना, 2. मुसीबत में पड़ना; **~बचाणा** 1. छिपते फिरना 2. क्षमादान देना, 3. प्राण-रक्षा करना; **~मैं ज्यान आणा** 1. संकट टलना, 2. घबराहट दूर होना; **~रोणा** 1. मन रोना, 2. मानसिक कष्ट होना; **~लिकड़णा** 1.

भयभीत होना, 2. प्राण-पखेरू उड़ना, 3. सार-हीन होना; **~लेणा** मार डालना; **~सताणा** सताना, तंग करना; **~होणा** 1. बात में सार होना, 2. बल या ताक़त होना, 3. जीवित अवस्था में होना। **जान** (हि.)

ज्यानकी (स्त्री.) जनकनंदिनी सीताजी। **जानकी** (हि.)

ज्यानवर (पुं.) दे. जिनावर (हि.) **जानवर** (हि.)

ज्यान्नी (वि.) 1. जान के समान, जान से प्यारा, 2. जिगरी, 3. प्रेमी, 4. ज्ञानी, ज्ञानवान। **जानी** (वि.)

ज्यूँ (क्रि. वि.) जैसे; **~ए** जैसे ही–ज्यूँ ए वो आवै धर दबोचिए; **~कर** 1. जिस प्रकार से, जैसे, 2. यथा-इच्छा–ज्यूँकर तूँ चाह्वै करले; **~का ज्यूँ** ज्यों का त्यों, समान; **~ज्यूँ** ज्यों-ज्यों, जैसे-जैसे–ज्यूँ-ज्यूँ दिन चड्ढैगा, काम बद्धैगा; **~त्यूँ** ज्यों-ज्यों, जैसे-तैसे– ज्यूँ-त्यूँ करकै छोह्री के हाथ पीळे करणे पड़ैं सैं। **ज्यों** (हि.)

ज्यूँरी (स्त्री.) दे. झींमरी।

ज्यूण (स्त्री.) दे. जूण[2]।

ज्येष्ठ (पुं.) दे. जेठ[1]; (वि.) बड़ा-बूढ़ा।

ज्यों (अव्य.) 1. जैसे, समान, तरह– छोहरियाँ की चाँद ज्यों कला बद्धै सै, 2. मानों, (दे. ज्यूँ); **~का ज्यूँ/का त्यूँ** वैसे का वैसा, अभिन्न।

ज्योंडा (पुं.) दे. डामचा।

ज्योड़ा[1] (पुं.) 1. दे. जेवड़ा, 2. दे. जिवड़ा।

ज्योड़ा (पुं.) दे. जेवड़ा।

ज्योणा (क्रि. स.) ज्योतित करना, दीपक जलाना–दीवे ज्योण का बखत होग्या।

ज्योत (स्त्री.) 1. प्रकाश, 2. दीपक, 3. प्राण, 4. (दे. जोत[1]); **जीमती~** 1. जीवित ज्योति, 2. प्रकाशवान, 3. प्राणवान। **ज्योति** (हि.)

ज्योतस (स्त्री.) ज्योतिष विद्या **ज्योतिष** (हि.)

ज्योतसी (पुं.) दे. जोतसी।

ज्योति (स्त्री.) दे. ज्योत।

ज्योतिष (स्त्री.) दे. ज्योतस।

ज्योतिषी (पुं.) दे. ज्योतसी।

ज्वर (पुं.) दे. जुर।

ज्वान (पुं.) दे. जिवान।

ज्वार (स्त्री.) खरीफ़ की एक फ़सल जिसका अन्न खाने के काम तथा भूसा प्रमुख चारे के काम आता है, (दे. चरी)। **जवार** (हि.)

ज्वारा (पुं.) जौ का छोटा पौधा जिन्हें नवरात्रों में दशहरा-देवी पर चढ़ाते हैं (आस्तिक हिंदू बहनें इन्हें अपने भाइयों के कान पर टाँगती हैं, विद्यार्थी सरस्वती पूजन के रूप में इन्हें पुस्तकों और लेखनी पर चढ़ाते हैं); **~टाँगणा/धरणा** विजय दशमी के दिन बहन द्वारा भाई के कान पर जौ के पौधे टाँगना; **~(-रे) बोणा** आश्विन शुक्ल प्रतिपदा के दिन जौ के बीज घर में बोना (ताकि दशहरे तक वे उग कर बड़े हो जाएँ और पूजा के काम आ सकें)।

ज्वाला (स्त्री.) 1. लपट, 2. जलन, ताप, 3. विष आदि की गरमी।

ज्वालादेवी (स्त्री.) एक देवी, मंत्रमयी देवी (बेरी की भीमेश्वरी देवी इसी का रूप मानी जाती है)।

ज्वालामुखी पर्वत (पुं.) एक पर्वत जिसकी चोटी से ज्वाला निकलती है।

झ

झ हिन्दी वर्णमाला का नौवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण स्थान तालु है।

झंकार (स्त्री.) दे. झणकार।

झंकारना (क्रि. स.) 1 'झन-झन' शब्द उत्पन्न करना, 2. प्रेरित क़रना।

झंकारा (पुं.) 1. 'झन'-'झन' की ध्वनि, 2. नूपुरों की ध्वनि; **~ठाणा** 'झन'-'झन' की ध्वनि उत्पन्न करना; **~मारणा** 1 प्रेम के चक्कर में फँसना, 2. 'झन'-'झन' की ध्वनि उत्पन्न करना।

झंखाड़ (पुं.) 1. काँटेदार झाड़ियाँ, 2. खेत में उगे व्यर्थ के पौधे, 3. कठिन मार्ग, 4. आपत्ति, 5. झंझट; **~काढणा** 1. खेत से व्यर्थ के पौधे निकालना, 2. मार्ग की बाधाएँ दूर करना; **~बोणा** आपत्ति बुलाना; **~मैं पड़ना/फँसणा** आपत्ति में फँसना।

झंग (पुं.) 1. झंग प्रांत, 2. (दे. जंग)।

झंगी (स्त्री.) झंग प्रांत की बोली; (वि.) झंग प्रांत से संबंधित।

झँगोड़णा (क्रि. स.) दे. जँगोड़िणा।

झंझट (पुं.) 1. व्यर्थ का झगड़ा, 2. उलझन।

झँझोड़णा (क्रि. स.) वेग से हिलाना

झकझोरना (हि.)

झँझोड़ना (क्रि. स.) दे. झँझोड़णा।

झंझोरका (पुं) प्रभातकाल। दे. पीली पाट्याँ।

झंडा (पुं.) 1. पताका, ध्वज, 2. वर्षा के कारण ईख के पौधे पर आने वाला फूल, 3. पौधों पर आने वाला एक लंबोतरा फूल, नर फूल, 4. यश, कीर्ति, प्रसिद्धि; **~आणा** 1. विजय के बाद विजय-पताका घर आना, 2. अधिक वर्षा के कारण ईख पर विशेष फूल आना, 3. फसल पकना; **~खड्या करणा** 1. सम्मान बढ़ाना, 2. विजय प्राप्त करना, 3. चुनौती देना; **~गाडणा** 1. विजय दिलाना, 2. सम्मान बढ़ाना, 3. धर्म-पताका फहराना, 4. हक़ जमाना, 5. असाधारण कार्य कर दिखाना; **~गेरणा** 1 हार मानना, 2. हिम्मत तोड़ना; **~घुमाणा** विजय के प्रतीक स्वरूप झंडा घुमाना, विजय का झंडा स्थान-स्थान पर घुमाना; **~चढाणा** 1. मंदिर में झंडा लगाना, 2. यश फैलाना; **~तारणा** अपमान करना; **~रोपणा** सामना करना; **~लेणा** बीड़ा उठाना; **~होणा** 1. धाक होना, 2. सम्मान होना।

झंडी (स्त्री.) 1. छोटी पताका, 2. नरसल आदि पौधे का छोटा फूल, 3. काग़ज़ आदि से बनी झंडी; **~दिखाणा/हलाणा** 1. साफ इनकार करना, सहायता न करना, 2. गमन का संकेत देना; **~पाड़णा** खेमा उखाड़ना, कूच करना; **हरी~** 1. समझौते का संकेत, 2. स्थल का बाधा-रहित होने का संकेत।

झंपर (पुं.) जंफर, आधुनिक ढंग से सिली स्त्रियों की चोली या कुर्त्ती।

जंफर (हि.)

झकंत (क्रि.) दे. झखंत।

झक (स्त्री.) 1. मछली, 2. सनक, धुन; (वि.) दे. बुक[1]। **झख** (हि.)

झक-झक (स्त्री.) व्यर्थ का विवाद।

झकझोरणा (क्रि. स.) बहुत वेग से हिलाना;

(क्रि. अ.) अनेक प्रकार के विचार उठना; (वि.) झकझोरने वाला।
झकझोरना (हि.)

झकरी (स्त्री.) दे. झाकरी ।

झकरुआ (पुं.) दे. झाकरा।

झकोई (पुं.) 1. एक गाली, 2. झकाने वाला, 3. झक-झक करने वाला।

झकोरना (क्रि. स.) दे. झकझोरणा।

झकोळणा (क्रि. स.) 1. दूध, पानी आदि में गंदे हाथ डालकर हिलाना, 2. पानी में कपड़ा डुबा कर हिलाना, 3. कपड़े को बिना साफ़ किए पानी से निकालना।
झकोलना (हि.)

झकोळा (पुं.) 1. किसी वस्तु को पानी में डुबाकर हिलाने की क्रिया, 2. डुबकी, 3. वाहन में लगने वाला झटका; (क्रि. स.) 'झकोळणा' क्रिया का भू. का. स्त्रीलिं. रूप; **~खाणा** 1. डुबकी खाना, पानी में ऊपर-नीचे होना, 2. झटका खाना; **~देणा** 1. झकोलना, पानी में डाल कर झटका देना, 2. झटका देना; **~मारणा** 1. बालटी आदि को पानी में डालकर झटका देना, 2. जोर से हिलाना-डुलाना। **झकोला** (हि.)

झक्कत (क्रि.) परिश्रम करते हुए, परिश्रम करते रहने पर।

झक्की (वि.) दे. झक्खी।

झक्खड़ (पुं.) अंधड़।

झक्खी (वि.) सनकी, वहमी।

झखंत (क्रि. वि.) 1. झक मारता हुआ, 2. परिश्रम करता हुआ–झखंत खेत्ती रटंत बिद्या (खेती पचने या परिश्रम करने से सफल होती है तथा विद्या रटने से आती है।)

झख (स्त्री.) दे. झक; (क्रि. अ.) झकना' क्रिया का प्रे. रूप।

झगड़णा (क्रि. अ.) 1. झगड़ा करना, 2. विवाद करना; (वि.) झगड़ालू।
झगड़ना (हि.)

झगड़ा (पुं.) 1. लड़ाई. 2. कहा-सुनी, 3. मन-मुटाव, 4. मुक़दमा, (दे. राड़); **~(-ड़े) की जड़** झगड़े का मूल कारण; **~तारणा** झगड़ा करना; **~निमेड़णा/मेटणा** झगड़ा समाप्त करना, समझौता करना; **~मोल लेणा** 1. जान-बूझकर झगड़ा करना, 2. आफ़त गले डालना; **~रगड़ा** झंझट झगड़ा; **~रोपणा** लड़ाई मोल लेना; **~लाणा** 1. मुक़दमा दायर करना, 2. पेशी लगवाना।

झगड़ालू (वि.) दे. झगड़ाल्लू।

झगड़ाल्लू (वि.) झगड़ा करने वाला।
झगड़ालू (हि.)

झगड़ू (वि.) झगड़ालू।

झगला (पुं.) दे. झुगला।

झगा (पुं.) दे. झुगला।

झगूड़ (पुं.) झाग।

झग्याणा (क्रि. स.) 1. झाग उठाना या बनाना, 2. लड़ते-लड़ते मुँह में झाग ला देना।

झजझर (पुं.) 1. न्यायाधीश, 2. न्यायकारी।
जज (हि.)

झज्जर (पुं.) हर्षवर्धन कालीन नगर जिसे गौरी ने लूटा।

झज्झर (स्त्री.) 1. दे. झारी, 2. एक शहर।

झझरी (स्त्री.) सुराही, (दे. झारी); (वि.) झज्झर शहर से संबंधित।

झझोड़णा (क्रि. स.) दे. झँझोड़णा।

झट (क्रि.वि.) तुरंत, अविलंब, (क्रि.स.) 'झटणा' क्रिया का प्रे. रूप; **~दे सी/दणे सी** झट से, तुरंत।

झटक (स्त्री.) दुर्बल या कमज़ोर होने की स्थिति, (दे. झटीक्कर); (क्रि. स.) 'झटकणा' क्रिया का आदे. रूप।

झटकणा (क्रि. स.) 1. झटके से अलग करना, तोड़ना, 2. उखाड़ना।
झटकना (हि.)

झटकना (क्रि. स.) दे. झटकणा।

झटका (पुं.) 1. झटका देने की क्रिया, 2. धक्का, हल्का धक्का, 3. सताने की क्रिया, निरुत्साहित करने की क्रिया, 4. अनोखी घटना, मज़ेदार घटना–आज तै इसा झटका देक्ख्या, अक कदे नाँ देक्ख्या, 5. झटके के साथ किया गया वध, **~आणा** झटके के कारण नस पर नस चढ़ना, सूजन आना या पीड़ा होना; **~करणा** 1. अनोखा काम करना। 2. वध करना; **~खाणा** 1. धोखा खाना, 2. व्यापार में हानि उठाना, 3. छला जाना; **~सहणा** 1. धक्के, सदमे या कष्ट को सहन करना, 2. मज़ाक बरदाश्त करना; **~होणा** 1. मज़ेदार या अनोखी घटना घटित होना, 2. वध होना।

झटणा (क्रि. स.) 1. झटकना, 2. झटके से तोड़ना।

झटा (पुं.) दो वस्तुओं को गरम करके राँगे आदि से जोड़ने की क्रिया, जोड़, वैल्डिंग; **~खोल्हणा** 1. जोड़ ढीले करना, 2. अंग ढीले करना, 3. पिटाई करना; **~लाणा** 1. टूटी हुई वस्तु के खंडों को गरम करके राँगे आदि से जोड़ना, 2. मेल-मिलाप करना, सहायता देना।

झटीक्कर (वि.) कृष-काय, दुर्बल हड्डियों का ढाँचा; (पुं.) 1. झाड़ का सूखा पौधा, 2. सूखा पौधा, (दे. ढींक्खर), 3. नेवले के आकार का एक जीव; **~सा** दुबला-पतला। **~होणा** सूख कर काँटा होना।

झटोल (वि.) (चारपाई) जिसकी पाँयत ढीली हो गई हों, (चारपाई) जिसकी रस्सियाँ बीच-बीच से टूट गई हों।

झड़ (पुं.) 1. वर्षा का दिन, 2. लगातार होने वाली वर्षा, 3. झड़ने, टपकने या रिसने की क्रिया; (स्त्री.) विलंब; (क्रि.अ.) 'झड़णा' क्रिया का प्रे. रूप; **~आणा** वर्षा के दिन आना; **~करणा** 1. नभ मेघाच्छन्न होना, 2. काम करने में देरी करना–अरे भोत झड़ करकै आया, कोड्ढाणै (किस समय से) तैं बाट (प्रतीक्षा) देखण लाग रहे साँ; **~खुल्हणा/हटणा** मौसम साफ़ होना, बादल छँटना; **~पड़णा** अपने आप अलग होना, झड़ कर गिरना; **~रुपणा/होणा** आकाश में वर्षा के बादल छाना; **~लाणा** 1. लगातार वर्षा का मौसम करना (भगवान द्वारा), 2. देरी लगाना, प्रतीक्षा कराना–कित लाई सै झड़, मा के जाए भात ल्याण मैं, (लो. गी.)।

झड़[2] (पुं.) एक छंद।

झड़क[1] (स्त्री.) 1. दूध बिलोने से उत्पन्न ध्वनि, 2. झिड़की, 3. (दे. झटक)।

झड़क[2] (स्त्री.) 1. दे. झरक, 2. झर झर की ध्वनि।

झड़काणा (क्रि. स.) 1. झिड़की देना, 2. झाड़ना, झटका देकर धूल आदि हटाना।
झिड़काना (हि.)

झड-कोहड़ा (पुं.) वर्षा के दिन, वर्षा, कुहरा आदि के दिन।

झड़ झड़ी (स्त्री.) 1. झुल-झुली, कँप-कँपी,

2. ज्वर आने से पहले होने वाली कँप-कँपी, 3. भभकी; **~चढ़णा** 1. कँप-कँपी चढ़ना, 2. भय करना. **~देणा** गीदड़ भभकी देना।

झड़णा (क्रि. अ.) 1.किसी चीज़ का टूट कर गिरना, 2. मोटापा कम होना, दुर्बल होना, 3. शरीर की आभा कम होना, 4. वीर्य स्खलन होना, वीर्य या रजपात होना, 5. मोर द्वारा चंदे गिराए जाना, 6. निर्धन होना, 7, रिक्त होना, 8. झाड़े द्वारा झाड़ा जाना (वि.) दे. झड़ियल। **झड़ना** (हि.)

झड़ना (क्रि. अ.) दे. झड़णा।

झड़पणा (क्रि. स.) ज़बरदस्ती हथियाना, छीनना। **झड़पना** (हि.)

झड़पना (क्रि. स.) दे. झड़पणा।

झड़फ (स्त्री.) 1. मुठभेड़, 2. टोना; **~मैं आणा** टोने के प्रभाव में आना। **झड़प** (हि.)

झड़बेरी (स्त्री.) छोटे और लाल बेरों की झाड़ी, झाड़बेरी।

झड़वाणा (क्रि. स.) झाड़ा लगवाना, रोग को झाड़ फूँक से ठीक करवाना। **झड़वाना** (हि.)

झड़वाना (क्रि. स.) दे. झड़वाणा।

झड़ियल (वि.) 1. (मोर) जो दीवाली से काफ़ी पहले ही चंदे डाल दे, 2. स्वतः झड़ने वाला; **~मोर** 1. अन्य मोरों से पहले चंदे गिराने वाला मोर, 2. 'लँडूरा' मोर का विलोम; (वि.) कंगाल, निर्धन।

झड़ी (स्त्री.) 1. लगातार झड़ने की क्रिया, निरंतरता, 2. छोटी बूँदों की लगातार वर्षा, (दे. झड़), 3. लगातार बहुत-सी बातें कहते जाने का भाव, 4. दान देते समय लगातार रुपये गिनते जाने की क्रिया; (क्रि. अ.) 'झड़णा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; (वि.) झड़कर अपने आप गिरी हुई; **~पड़णा/लागणा** निरंतर हल्की बूँदें गिरना; **~लाणा** 1 बहुत दान करना, 2. देरी लगाना, 3. प्रतीक्षा करवाना।

झड़ूल्ला (पुं.) 1. वह बालक जिसके जन्म के बाल न कटे हों, 2. जन्मजात केश, 3. पुत्र–के तनैं न्यारे ए झड़ूल्ले जाम राक्खे सैं; **~(-ले) बाळ** जन्मजात बाल, गर्भ के केश।

झणकण (क्रि. अ.) झनझनाना; (वि.) झनकने वाला; (पुं.) झुनकना, झुनझुना। **झनकना** (हि.)

झणकार (स्त्री.) 1. 'झन'-'झन' की ध्वनि, 2. नूपुर और वाद्य-यंत्रों आदि की ध्वनि; (क्रि. स.) झनकारना क्रिया का आदे. रूप; **~ऊठणा** 1. नृत्य होना, 2. 'झन'-'झन' की ध्वनि होना। **झंकार** (हि.)

झणझणाट (स्त्री.) 1. 'झन'-'झन' की ध्वनि, 2. सनसनाहट, जैसे–पाह्ँया मैं झणझणाट होणा। **झनझनाहट (हि.)**

झणझणाणा (क्रि. अ.) झनझन की ध्वनि उत्पन्न होना; (क्रि. स.) झनझन की ध्वनि उत्पन्न करना।

झत्था (पुं.) जत्था।

झथूर (पुं.) लंबे और भद्दे बाल।

झनकना (क्रि. अ.) दे. झणकणा।

झनकार (स्त्री.) दे. झणकार।

झनझनाना (क्रि. अ.) दे. झणझणाणा।

झनन-झनन (स्त्री.) झनझनाहट की ध्वनि।

झन्नाहट (स्त्री.) दे. झणझणाट।

झपक (स्त्री.) 1. क्षण भर का समय, 2. शीघ्र, अविलंब–एक झपक मैं

जाइये-आइये, 3. हल्की नींद, 4. तबले की ताल; (क्रि. स.) 'झपकणा' क्रिया का आदे. रूप।

झपकणा (क्रि. स.) 1. पलक हिलाना, 2. हिचकना, 3. (दे. झबकणा)। **झपकना** (हि.)

झपकना (क्रि. स.) 1. दे. झपकणा, 2. दे. झबकणा।

झपकाना (क्रि. स.) दे. झबकाणा।

झपका (पुं.) 1. नींद का झटका, 2. झपकने की क्रिया।

झपकी (स्त्री.) 1. ऊँघ का भाव, 2. आँख बंद करने का भाव; **~आणा** 1. ऊँघना, 2. हल्की नींद आना।

झपटणा (क्रि. अ.) 1. आक्रमण करना, 2. झपट्टा मारना; (क्रि. स.) लपकना; (वि.) झपट्टा मारने में कुशल। **झपटना** (हि.)

झपटा (पुं.) 1. दे. झाड़ा-झपटा, 2. दे. झपेट।

झपट्टा (पुं.) 1. झपटने की क्रिया, 2. पक्षी द्वारा मारी गई ठोंक या पंखों का आघात; **~खाणा** आकाश में ऊपर-नीचे उड़ना; **~मारणा** पक्षी द्वारा अचानक ठोंक मारना।

झपताल (स्त्री.) संगीत की एक ताल।

झपाना (क्रि.) झपकना।

झपेट (स्त्री.) 1. झपट्टा, 2. चपेट, 3. थप्पड़; **~मैं आणा** 1. चपेट में आना, 2. टोने के प्रभाव में आना।

झप्फी (स्त्री.) 1. आलिंगन, 2. अंगुलियों में अंगुली फँसा कर बनी मुद्रा, 3. कुश्ती; **~मारणा** 1. कुश्ती करना, 2. आलिंगन करना।

झब (वि.) छवि।

झबकणा (क्रि. स.) 1. अग्नि प्रज्वलित करने के लिए पंखा हिलाना, 2. हवा करना, 3. पलक मारना. (क्रि. अ.) 1. चमकना, बिजली का रुक-रुक कर चमकना, 2. आग का पूरी तरह न बुझना; (वि.) 1. झपकने वाला, 2. चमकीला। **झपकना** (हि.)

झबकाणा (क्रि. स.) झपकाना।

झबकी (स्त्री.) दे. झपकी; (क्रि. स.) 'झबकणा' क्रिया का भू. का. रूप।

झबरा/झबरू (वि.) लंबे बालों वाला (कुत्ता)।

झबरू कुत्ता (पुं.) 1. लंबे बालों वाला कुत्ता 2. आक के डोडे से निकलने वाला रेशे युक्त काला बीज।

झबला (पुं.) दे. झुगला।

झबीरा (पुं.) भाई (?)–(कृष्ण की उक्ति देवकी से) मात्ता तेरे सात झडू ल्ले मारे, तनैं एक ना नीर बहाया, मात्ता तेरा एक झबीरा (जो बीरा) मार्‌या तन्नैं नो नो नीर बहाए, (लो. गी.)।

झबेली (स्त्री.) एक आभूषण।

झबोल्ला (पुं.) 1. झाब, पात्र जिसमें छाछ रखी जाती है, 2. मिट्टी का छोटा पात्र, 3. अपवित्र पात्र। **झबोला** (हि.)

झबोल्ली (स्त्री.) झाब, छोटी झाब।

झब्बर (वि.) 1. लंबे बालों वाला (कुत्ता), 2. भारी, मोटा।

झब्बा (पुं.) 1. बालों का गुच्छा, 2. गुच्छा, 3. चाँदी की तगड़ी में लगा गुच्छा।

झमक (स्त्री.) झमकने या चमकने की क्रिया।

झमा-झम (स्त्री.) 1. बिजली की चमक, 2. जगमगाहट, 3. चकाचौंध, 4. पानी बरसने का शब्द, 5. नृत्य, गायन, वादन आदि की ध्वनि।

झमेला (पुं.) झमेल्ला।

झमेल्ला (पुं.) झंझट। **झमेला** (हि.)

झम्मक-झम्मक (स्त्री.) 1. रुक-रुक कर चमकने का भाव, 2. घुँघरू की ध्वनि

झरंता (क्रि. वि.) झरता हुआ, गिरता हुआ—पात झरंता न्यूँ कहै, सुण तर-वर बनराय। इब के बिछड़े नाँ मिलाँ, दूर पड़ाँघे जाय।

झर (स्त्री.) 1. कपड़ा फाड़ते समय उत्पन्न ध्वनि, 2. झर-झर की ध्वनि।

झरक (स्त्री.) फटन, कपड़े का छोटा फटा भाग; (पुं.) दे. जरख; **~आणा** कपड़े का किसी भाग से फटना—धोत्ती पुराणी थी बैठत्याँ हे, झरक आगी।

झरकणा (क्रि. अ.) जीर्ण होकर फटना, फटना; (क्रि. स.) फाड़ना; (वि.) जीर्ण-शीर्ण।

झरझर (स्त्री.) पानी बहने से उत्पन्न ध्वनि, 'झर'-'झर' की ध्वनि।

झरड़ (वि.) 1. पका हुआ—गाज्जर पाक कै झरड़ होगी, 2. मोटा, कठोर—कईयाँ के (कुछ के) बाळ इसे झरड़ हूँ सैं अक उस्तरे की धार भी खूँट्टी होज्या; (स्त्री.) 'झर' की ध्वनि; (क्रि.स.) 'झरड़ण' क्रिया का आदे. रूप।
जरड़ (हि.)

झरड़-झरड़ (स्त्री.) 1. कपड़े या अन्य किसी वस्तु को फाड़ते समय उत्पन्न ध्वनि, 2. (दे. झरळ-झरळ); **~पाटणा** किसी कपड़े का सुगमता से फटना।

झरड़णा (क्रि. स.) 1. झटके से उखाड़ना, 2. (दे. झरूड़णा)

झरड़ाणा (पुं.) बूढ़ा दिखाई पड़ने लगना।

झरण-झरण (स्त्री.) 1. धातु से निकलने वाली ध्वनि, 'झन'-'झन' की ध्वनि, 2. सनसनाहट (शरीर के किसी अंग में)।

झरणा (पुं.) 1. झरना, 2. (दे. झारणा); (क्रि. अ.) 1. बहना, 2. झर-झर की ध्वनि करते हुए बहना, 3. रिस-रिस कर निकलना; (वि.) झरने वाला—यो झरणा नीम सै। **झरना** (हि.)

झरणाट्टा (पुं.) 'झरन'-'झरन' की ध्वनि; **~ऊठणा** 'झरन'-'झरन' की ध्वनि निकलना।

झरना (पुं.) दे. झरणा; (क्रि. अ.) दे. झरणा।

झरनी (स्त्री.) दे. झारणी।

झरनैल (पुं.) जनरल, सेना का एक बड़ा अधिकारी। **जनरैल** (हि.)

झरमट (पुं.) माथे तक का घूँघट।

झरमरिया (पुं.) छोटी-मोटी बूँद आकाश से टपकना।

झरळ-झरळ (स्त्री.) पेशाब करते समय उत्पन्न ध्वनि।

झरिया (वि.) 1. झरने वाला, 2. रिसने वाला (नीम); **~नीम दे. नींम** झारा।

झरी (स्त्री.) दे. झिरी।

झरूड़णा (क्रि. स.) 1. झटकना, किसी टहनी से झटके के साथ पत्ते तोड़ना, पौधे की टहनी हथेली से पकड़ कर एक सिरे से दूसरे सिरे तक खींचना ताकि पत्ते हाथ में आ जाएँ, 2. ज़बरदस्ती छीनना।

झरोखा (पुं.) 1. खिड़की, 2. छिद्र।

झल (स्त्री.) मृग तृष्णा।

झळ (स्त्री.) 1. लपट, अग्नि की ज्वाला, 2. दाह, जलन, 3. मिर्च खाने से मुँह में उत्पन्न दाहकता, 4. उग्रकामना—जीभ मैं जलेब्बी खाण की झळ ऊट्ठैं सैं, 5.

क्रोध; (क्रि. स.) 'झळणा' क्रिया का आदे. रूप; **~ऊठणा/ लीकड़णा** 1. ज्वाला निकलना, 2. तेज़ गरमी निकलना, 3. (दे. डीक लिकड़णा); **~चालणा** गरम लू चलना; **~पड़णा/ बरसणा** गरमी पड़ना, तेज़ गरमी पड़ना।

झलक (स्त्री.) 1. क्षणिक दर्शन, 2. **चमक**, 3. एक आकृति में दूसरी आकृति की समानता, हूबहूपन; **~आणा** 1. एक की आकृति में दूसरे की समानता होना, मिलता- जुलता होना, 2. चमक लगना; **~दीखणा** आंशिक दर्शन होना, कुछ-कुछ दिखाई पड़ना; **~मारणा** 1. चमकना, 2. एक वस्तु का कुछ भाग दूसरे के समान होना।

झलका (पुं.) 1. झलक, 2. चमक, (दे. पळका); **~पड़णा** कुछ-कुछ दिखाई पड़ना; **~लागणा** कभी-कभी दिखाई पड़ना।

झलकार (पु.) दे. झलक।

झळझळा (वि.) 1. चटपटा, मुँह को जलाने वाला (मसाला), ऐसी वस्तु जिसे खाकर मुँह में झलझलाहट उत्पन्न हो, 2. गरम प्रकृति का, 3. क्रोधी।

झळझळाट (स्त्री.) 1. चरपराहट, मिर्च मसाला खाते समय मुँह से उत्पन्न ज्वलनशीलता, 2. क्रोध; **~आणा** 1. मुँह में ज्वलनशीलता उत्पन्न होना, 2. क्रोध आना; **~ऊठणा** 1. क्रोध आना, 2. लालसा उठना, 3. जीभ जलना; **~होणा** 1. मसाले के चरपरा होने के कारण मुँह जलना, 2. क्रोधित होना। **झलझलाहट** (हि.)

झळझळी (वि.) चरपरी, मुँह को जलाने वाली (मिर्च); (स्त्री.) 1. मलेरिया का ज्वर होने से पूर्व आने वाली कँप-कँपी, (दे. झुळझुळी), 2. **क्रोधी** स्वभाव की महिला, 3. खुजलाहट।

झळणा (क्रि. स.) 1. झुलसना, 2. जलाना।

झलना (क्रि. स.) दे. झिलणा^{2}।

झलमल (स्त्री.) चमक, चमक-दमक, रुक-रुक कर होने वाली चमक।

झलसा (पुं.) जलसा।

झलूस (पुं.) शोभायात्रा। **जलूस** (हि.)

झलोरा (पुं.) दे हिलोरा।

झल्ला (पुं.) बड़ा टोकरा, 1. (दे. खारी^{1}), 2. (दे. खरोल्ला); (क्रि. अ.) 'झल्लाणा' क्रिया का प्रे. रूप।

झल्लाणा (क्रि. अ.) 1. तमतमाना, क्रोधित होना, आवेश में आना, 2. झुँझलाना। **झल्लाना** (हि.)

झल्लाना (क्रि. अ.) दे. झल्लाणा।

झल्ली (स्त्री.) 1. छोटी टोकरी, 2. भार ढोने की टोकरी।

झवारकट (स्त्री.) जवाहरकट, (दे. वास्कट)।

झाँ (क्रि. वि.) जहाँ, (दे. जित); (पुं.) जगत। **जहाँ** (हि.)

झाँई (स्त्री.) 1. छाया, प्रतिबिंब, 2. झलक, 3. दीपक के नीचे की छाया, 4. मुँह, आँख आदि के नीचे पड़ने वाली कालिमा, 5. बुरी छाया, अपवित्र छाया, 6. किसी के चरित्र की छाया, प्रभाव–इस पै तै दाद्दी की झाँई पड़गी सारी बात न्यूँ की न्यूँ करै सै, 7. क्षणिक दर्शन, 8. आँख-मिचौनी, बच्चों का झाँई-झात का खेल; **~आणा/पड़णा** 1. किसी की झलक प्रतिबिंबित होना, शरीर के अंग या मुखाकृति का किसी अन्य से मिलना, 2. चेहरे पर काली झाईं आना; **~करणा** 1. आँख-मिचौनी करना, (दे. झात करणा), 2. छाया करना;

~**खेल्हणा** आँख-मिचौनी खेलना; ~**दिखाणा** 1. अपना चेहरा दिखलाना, 2. प्रकट होना, बहुत दिनों के बाद दिखाई पड़ना; ~**मारणा** झलक पड़ना, झलक दिखना; ~**लागणा** 1. झलक पड़ना, कभी- कभी दिखाई पड़ना, 2. कम दिखना, धुँधला दिखना; ~**होणा** 1. मुँह पर काले दाग उभरना, 2. आँख-मिचौनी के खेल में विरोधी टोली के व्यक्ति का दीख पड़ना। **झाई** (हि.)

झाँई-झात (स्त्री.) 1. आँख-मिचौनी का खेल, 2. वंचिका देने का भाव, 3. क्षणिक दर्शन।

झाँई-माँई (स्त्री.) 1. अल्प दर्शन, 2. आँख-मिचौनी का खेल।

झाँक (स्त्री.) 1. ताक-झाँक करने की क्रिया, 2. झलक; (क्रि. स.) 'झाँकणा' क्रिया का आदे. रूप; ~**मारणा** 1. व्यर्थ में घूमते फिरना, 2. ताक-झाँक करते फिरना, 3. किसी की आकृति की झलक अन्य में मिलना।

झाँकणा (क्रि. अ.) 1. झुक कर देखना, 2. कूएँ में झुक कर देखना, 3. किसी खिड़की या छिद्र आदि से ध्यान से देखना, 4. अश्लील भाव से देखना, 5. आना, प्रकट होना, बहुत दिनों बाद मिलना–जिब का गया ईब झाँक्कै सै, 6. संशकित दृष्टि से देखना, 7. व्यर्थ की बाधा डालना। **झाँकना** (हि.)

झाँकना (क्रि. अ.) दे. झाँकणा।

झाँकी (स्त्री.) दे. झाँक्की।

झाँक्का (पुं.) 1. चमक, झलक, 2. मंद-दृष्टि; ~**पड़णा** 1. दृष्टि मंद होना, 2. झलक मात्र मिलना; ~**लागणा** 1. धुँधला दिखाई देना, 2. झलक मात्र मिलना, 3. तेज़ चमक आँख पर पड़ना।

झाँक्की (स्त्री.) 1. छोटी खिड़की, 2. झरोखा, 3. शोभा यात्रा, किसी पर्व-त्योहार आदि के अवसर पर निकलने वाली झाँकी या दृश्य; (क्रि. अ.) 'झाँकणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; ~**काढणा** 1. झरोखा छोड़ना, 2. शोभा यात्रा निकालना; ~**लाणा** झाँकी सजाना। **झाँकी** (हि.)

झाँखणा (क्रि. अ.) दे. झाँकणा।

झाँखा (पुं.) 1. नेत्र विकार के कारण थोड़ा दिखाई पड़ना, 2. दे. मोंक्खा, 3. दीवार में रोशनी-हवा के लिए बना छोटा गोल सूराख, 4. सूर्योदय से काफी पहले का समय। दे. झोळ भोळा।

झाँग (स्त्री.) दे. झाँग्गा।

झाँगण (पुं.) 1. पतली-पतली लकड़ियाँ, 2. (दे, झाँग्गा), 3. फुनगी, टहनी।

झाँगणा (क्रि. स.) 1. पेड़-पौधे के पत्ते, टहनी आदि छाँटना या काटना, 2. पौध को काट-छाँट कर हल्का करना, 3. पीटना; (पुं.) झाँगने का औज़ार।

झाँग्गा (पुं.) 1. पेड़-पौधे को काटने-छाँटने के बाद बची या उतरी हुई लकड़ी, 2. जलाने योग्य छोटी लकड़ी, (दे. बाळण)।

झाँजण (स्त्री.) दे. झाँझण।

झाँझ (स्त्री.) 1. मंजीरे की तरह का बाजा जिससे झंकार उठती है, 2. हथकड़ी, 3. झाँझन, पैर का आभूषण, 4. पैंजनी, 5. चूड़ी, 6. (दे. झींझ); ~**पहरणा** 1. चूड़ी पहनना, 2. नामर्दगी दिखलाना, 3. हथकड़ी लगना; ~**बजाणा** प्रशंसा करना।

झाँझण (स्त्री.) 1. पैर का झनझन करने

वाला एक आभूषण, 2. पैंजनी, 3. वाद्य विशेष। **झाँझन** (हि.)

झाँझण-पात्ती (स्त्री.) झुन-झुन बजने वाला पैर का एक आभूषण, (दे. पात्ती[2])।

झाँझर (स्त्री.) झाँझ बाजा।

झाँझिया (पुं.) 1. झाँझ बजाने वाला, 2. झूठी बड़ाई करने वाला, 3. झाँझ-वाद्य।

झाँझी (स्त्री.) दे. साँझी।

झाँट (स्त्री.) गुप्तांग पर उगने वाले बाल जो युवा होने का संकेत देते हैं।

झाँपट (पुं.) दे. झापड़।

झाँवळी (स्त्री.) दे. छाह्ळी।

झाँसणा (क्रि. स.) 1. फँसाना, फंदे में फँसाना, 2. साजिश में डालना, 3. ठगना; (वि.) झाँसा देने में कुशल। **झाँसना** (हि.)

झाँसा (पुं.) दे. झाँस्सा।

झाँसुआ (छोटा) (पुं.) मोहन बाड़ी का ऊजड़ खेड़ा; (विद्वानों के अनुसार) व्यास द्वारा वर्णित हरियाणे के दस दुर्गों में से एक।

झाँस्सा (पुं.) ठगने की क्रिया, ठगी, धोखाधड़ी; (क्रि. स.) 'झाँसणा' क्रिया का भू. का. पुं रूप; **~पट्टी** धोखाधड़ी। **झाँसा** (हि.)

झाऊ (पुं.) 1. एक प्रकार का छोटा झाड़ जो पानी के कंठारे पर उगता है, 2. अधिक लंबे और बिखरे बाल; **~झूँड** जंगल की झाड़ियाँ, झाड़- झंखाड़; ~ **~जामणा** झाड़-झंखाड़ उगना।

झाऊ मूस्सा (पुं.) दे. जाह्वा।

झाकरा (पुं.) बड़ा मटका, (तुल. माँट); **~सा पेट** मोटा पेट, बढ़ा हुआ पेट।

झाकरी (स्त्री.) 1. छोटी मटकी, 2. अहोई के आगे रखी जाने वाली छोटी हंडिया।

झाक्का (पुं.) घासफूँस; **~चढणा** बरसात के मौसम में अधिक घासफूँस छा जाना।

झाखर (पुं.) सूखा वृक्ष।

झाग (पुं.) फेन; (वि.) कच्ची अवस्था का; (क्रि. स.) 'झग्याणा' क्रिया का प्रे. रूप तथा आदे. रूप; **~आणा** थकना; **काच्चा~** अधिक कच्चा, झाग के समान कोमल; **~गिरवाणा** हराना, हार मनवाना; **~गेरणा** 1. जुगाली डालना, 2. हार मानना, 3. झाग डालना; **~मारणा** फेन समाप्त करना, फेन हटाना–दूध के झाग मार दे; **~होणा** 1. कच्ची अवस्था में होना, 2. फेनिल होना।

झागणा (क्रि. स.) 1. झाग उत्पन्न करना, 2. छाछ में कच्चे दूध की धार लगाना, (दे. झग्याणा)।

झागोर (वि.) वाचाल महिला।

झाग्गा (पुं.) दे. झाक्का।

झाज (पुं.) 1. वायुयान, 2. जलयान, पोत। **जहाज** (हि.)

झाज्जर (स्त्री.) दे. झारी।

झाज्जी-बेड़ा (पुं.) समुद्री बेड़ा।

झाड़ (पुं.) 1. झड़बेरी का पौधा, 2. कँटीली-झाड़ी, 3. खेत में उगे व्यर्थ के पौधे, 4. कठिनाई, 5. बाधा; (स्त्री.) दुतकार; (क्रि. स.) 'झाड़णा' क्रिया का आदे. रूप; **~आणा** मार्ग में बाधा उत्पन्न होना; **~करणा/ काटणा/ मारणा** खेत जोतने से पहले झाड़ काटना, (तुल. सूड़ करणा); **~(-ड़ाँ) जाणा** शौच जाना; **ज्यान का ~** 1. जीवन के लिए कठिनाई या बाधा, आफ़त, 2. जान लेवा; **~मैं पाँह फाहणा** आपत्ति मोल लेना।

झाड़-झंखाड़ (पुं.) 1. जंगल या खेत में

उगी छोटी-बड़ी काँटेदार झाड़ियाँ, 2. खेत में उगे अवांछित पौधे।

झाड़णा (क्रि. स.) 1. साफ़ करना, पोंछना, 2. झिड़की देना, 3. झाड़ा लगाना, झाड़ा-झपट्टा लगाकर बीमारी ठीक करना, 4. रुपये-पैसे ऐंठना; (पुं.) 1. पोंछने का वस्त्र, 2. झारना; **~झपटणा** 1. जादू-टोना करना, 2. डाँटना-डपटना; **~फटकारणा** 1. डराना धमकाना, 2. अन्न आदि की सफाई करना। **झाड़ना** (हि.)

झाड़न (पुं.) 1. सफ़ाई करने, झाड़ापोंछी करने आदि का उप-वस्त्र, 2. वह जो झाड़ने से निकले, अवशिष्ट।

झाड़ना (क्रि. स.) दे. झाड़णा।

झाड़-फूँक (स्त्री.) जादू-टोना।

झाड़ा (पुं.) 1. मोर के चंदों की बुहारी या झाडू, 2. जादू-टोना, 3. जादू-टोने का मंत्र, 4. तलाशी, 5. अवशिष्ट, वह अंश जो झाड़ने से निकला हो, 6. झाड़ने की क्रिया, 7. (दे. झारा); (क्रि. स.) 'झाड़णा' क्रिया का भू. का. पुं. रूप; **~करणा** 1. जादू करना, 2. ताबीज़ बनाना, भूत-प्रेत के प्रकोप से बचने के लिए ताबीज़ बनाना, 3. झारना; **~चढणा** जादू का प्रभाव होना; **~देणा** 1. तालाशी देना, 2. जादू-टोना करना; **~बणाणा** 1. मोर के चंदों को बाँध कर झाडू बनाना, 2. ताबीज़ आदि बनाना; **~मारणा** 1. झाड़े के प्रभाव से रोग का निदान करना, 2. नष्ट करना, 3. प्रभावित करना, 4. तलाशी करना; **~लाणा** 1. झाड़ा लगाते समय मंत्र आदि बोलना, 2. प्रभाव में लेना, 3. नष्ट करना, 4. सफ़ाई करना; **~लेणा** तलाशी लेना।

झाड़ा-झपटा (पुं.) जादू-टोना; (क्रि.स.) 'झाड़णा-झपटणा' क्रिया का भू. का. पुं. रूप।

झाड़ी (स्त्री.) 1. काँटेदार छोटा पौधा, 2. छोटे पौधों का समूह, 3. झाड़ने के बाद अवशिष्ट अंश; (क्रि. स.) 'झाड़णा' क्रिया का भू. का. स्त्रीलि. रूप।

झाड़ू (पुं.) कूड़ा-करकट बुहारने के काम आने वाली बुहारी, 1. (दे. भोकरा), 2. (दे. माँज्जण); **~देणा** 1. लूटना, 2. नष्ट-भ्रष्ट करना, 3. अपमानित करना; **~बुहारी** घर साफ़ करने की क्रिया; **~मारणा** 1. बुहारी देना, 2. किसी काम के महत्त्व को कम समझना–अरै मार झाड़ू इसे काम कै जिसतें दो पइसे बी नाँ बच्चैं, 3. अपमान करना, 4. सफ़ाया करना, नष्ट करना, किए हुए पर पानी फेरना; **~सहारणा** झाड़ू से पीटना।

झात (स्त्री.) 1. छिपने की क्रिया या भाव, 2. बच्चों के साथ खेला जाने वाला आँख-मिचौनी का खेल, 3. आँख मिचौनी।

झात-माँत (स्त्री.) 1. झूठे भाव से, झूठ-मूठ, 2. ठगी, वंचिका, 3. आँख-मिचौनी का खेल, 4. क्षणिक दर्शन; **~का** लेश मात्र का, दिखावे मात्र के लिए।

झापड़ (पुं.) तमाचा।

झाब (स्त्री.) 1. मिट्टी की छोटी मटकी जिसमें अधिकतर छाछ रखी जाती है। 2. कुशा वाली नीची भूमि, 3. गुच्छा; **~झबोल्ली** 1. घर के छोटे-बड़े मिट्टी के पात्र या बर्तन, 2. अपवित्र पात्र; ~ **~करणा** घर के बर्तन साफ़ करना, घर में सफ़ाई आदि करना।

झाबा (पुं.) दे. झाब्बा।

झाब्बर (वि.) 1. जबर, भारी, 2. बोझल। जैसे झाब्बर कड़े।

झाब्बा (पुं.) (रोटी रखने की) छोटी टोकरी। **झाबा** (हि.)

झाब्बी (स्त्री.) दे. ओरणा।

झाम[1] (पुं.) दे. झाळ।

झाम[2] (पुं.) गाद।

झाम[3] (पुं.) बड़ी से बड़ी कस्सी।

झामणा (क्रि.) झाल लगाना।

झाम्माँ[1] (पुं.) कूएँ का पानी न निकलने के कारण उत्पन्न दुर्गंध (जिसके सूँघने से मनुष्य बेहोश हो जाता है और कुछ स्थिति में कूएँ में भी गिर जाता हैं); **~काढणा** कूएँ की गैस निकालना; **~पड़णा/मारणा** कूएँ का प्रयोग न होने की स्थिति में बेहोशी लाने वाली गैस बनना।

झाम्माँ[2] (पुं.) मैल खोरा, मैल उतारने का मिट्टी का पात्र जिसके नीचे का भाग खुरदुरा होता है।

झाम्माँ[3] (पुं.) 1. भूत-प्रेत, 2. भूत-प्रेत की बारात, 3. उड़न तश्तरी; **~उडणा/चालणा** प्रेतात्मा का उड़ना।

झारणा (पुं.) लोहे की बड़ी छलनी; (क्रि. स.) 1. छानना, झारने से अन्न छानना, 2. फुंसी को नीम के पानी से टकोरना, 3. झाड़ना, 4. झाड़ा लगाना, 5. रस निकालना। **झारना** (हि.)

झारणी (स्त्री.) छोटा झारना। **झारनी** (हि.)

झारना (क्रि. स.) दे. झारणा।

झारा(पुं.) 1. झरा हुआ रस, रिस-रिस कर निकला हुआ जल या रस, 2. नहर का वह पानी जो निश्चित समय के बाद भी खेत में बहता रहता है, 3. बड़ा मटका; (क्रि. स.) 'झारणा' क्रिया का भू. का. पुं. रूप; (वि.) झारा हुआ।

झारी (स्त्री.) 1. मिट्टी का टोंटीदार जलपात्र, 2. सुराही, (दे. झझरी); (क्रि. स.) 'झारणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

झाल[1] (स्त्री.) 1. पानी की लहर, जल-तरंग, 2. बड़ा पात्र, बड़ा मटका; **~ऊठणा** 1. काम की तरंग उठना, 2. जल तरंगित होना; **~गेरणा** झील के जल को सिंचाई के लिए छाज की सहायता से ऊपर की ओर निरंतर उछालना, (दे. छाज काढणा) **~डाटणा** 1. मन को समझाना, 2. कामुक विचारों को दबाना, 3. बहाव रोकना; **~मारणा** 1. कामुक विचार आना; 2. पानी की तरंग किसी की ओर फेंकना, 3. दाने भूनते समय भड़भूँजे द्वारा अन्न का कुछ अंश उछाल कर चुराना; **~लागणा** 1. कामुक विचार आना, 2. प्रेमिका या प्रेमी की फटकार लगना।

झाल[2] (स्त्री.) एक मन नाप का पात्र।

झाळ (पुं.) झटा लगाने या खामने की क्रिया, (दे. झटा); (क्रि. स.) 'झाळणा' क्रिया का आदे. रूप।

झाळड़ा (पुं.) दे. झालरा।

झाळणा (क्रि. स.) 1. झाल लगाना, धातु के टुकड़ों को गरम करके जोड़ना, वैल्डिंग करना, 2. पंखा डुलाना या झलना।

झालना (क्रि. स.) दे. झाळणा।

झालर (स्त्री.) दे. झाल्लर।

झालर पत्ती (स्त्री.) कटि का आभूषण।

झालरा (पुं.) गले में पहनने का हार जो

अधिकतर चाँदी के रुपयों से बनता है **म्होर ~** मोहर का झालरा।

झाला (पुं.) दे. झोल्ली।

झाल्लर (स्त्री.) झालर या किनारी के आकार की लटकती हुई वस्तु; **~लाणा** शोभा बढ़ाना। **झालर** (हि.)

झावा (पुं.) 1. झाँप, छिद्रों वाला मिट्टी का गोलाकार पात्र जो कढावणी (दे.) के ढक्कन के रूप में काम आता है, 2. छत के मोखे या छिद्र पर ढका जाने वाला मिट्टी का ढक्कन; **~सा मुँह** 1. भारी और भद्दा मुख, 2. जिस मुँह पर चेचक या माता के रन या छिद्र हों।

झिंगार (पुं.) वर्षा गीत।

झिंगारणा (क्रि.) कोयल का कूकना।

झिंगोरणा[1] (क्रि.) 1. दे. कूकणा। 2. दे. पीहू।

झिंगोरणा[2] (क्रि.) शोभा पाना।

झिंझोरणा (क्रि.) पकड़ कर जोर से हिलाना।

झिआझगढ (पुं.) एक प्रसिद्ध उप-नगर जहाँ पशुओं का मेला लगता है (इसे जार्ज थॉमस ने बसाया था अत: इसका नाम जार्जगढ़ पड़ा), (दे. जारज थामस)। **जहाजगढ़** (हि.)

झिकोई (पुं.) दे. झकोई।

झिकोळ (पुं.) झकोला हुआ गिधला पानी, धोवन; (क्रि. स.) 'झिकोळणा' क्रिया का आदे. रूप।

झिकोळणा (क्रि. स.) दे. झकोळणा।

झिकोळा (पुं.) दे. झकोळा।

झिझक (स्त्री.) 1. हिचक, संकोच, 2. भय; **~खुल्हणा** संकोच या भय दूर होना।

झिझकणा (क्रि. अ.) 1. हिचकना, संकोच करना, 2. भयभीत रहना; (वि.) वह जो शीघ्र झिझके। **झिझकना** (हि.)

झिझकाऊ (वि.) डरपोक।

झिझकाणा (क्रि. स.) 1. हिचकाना, 2. डराना। **झिझकना** (हि.)

झिटोल (वि.) दे. झटोल।

झिट्टी (पुं.) दे. बींडिया।

झिड़की (स्त्री.) डाँट-फटकार।

झिणवाँ (वि.) 1. महीन, 2. झीना, 3. जीर्ण; **~चावळ** 1. महीन चावल का धान, 2. महीन चावल।

झिनझिणा (वि.) 1. बारीक (कपड़ा), 2. (कपड़ा) जिसके तार-तार हो गए हों; 3. छीदा, 4. छीजा हुआ, 5. जीर्ण-शीर्ण। **झिनझिना** (हि.)

झिबका (पुं.) दे. झिमाळ।

झिबकी (स्त्री.) दे. झिमाळ।

झिमाळ (स्त्री.) बिजली की चमक, चमक।

झिमाळणा (क्रि. अ.) 1. बिजली चमकना, 2. चमक निकलना; (क्रि. स.) दर्पण आदि को सूर्य-प्रकाश से चमकाना; (वि.) वह जो झिलमिलाए।

झिमाळा (पुं.) चमक।

झिर (स्त्री.) 1. छिद्र, फटाव, कपड़े की फटन, 2. (दे. झिरी), 3. चिढ़ाने के लिए प्रयुक्त शब्द; (वि.) जीर्ण; **~लीकड़णा** पुराना होने के कारण कपड़े का स्थान-स्थान से फटना।

झिरकणा (क्रि. अ.) दे. झरकणा।

झिरका (पुं.) 1. चवे से रिस-रिस कर निकला हुआ पानी, 2. रसाव, 3. फटाव, 4. कटाव; (क्रि. अ.) 'झिरकणा' क्रिया का भू. का., पुं. रूप; **~लागणा** 1. टपकना, रिसना, 2. दस्त लगना, 3. जीर्ण वस्त्र का फटना शुरू होना।

झिरणा[1] (क्रि. अ.) दे. झरणा।

झिरणा[2] (क्रि.) 1. तरसना, 2. बरबाद होना, 3. घटना। उदा.–बहू बाल्लम बिना झिरवै सै।

झिरणी डंका (पुं.) बच्चों का एक खेल।

झिरस (पुं.) दे. झेद।

झिरसळा (वि.) पेटू।

झिराणा (क्रि. स.) 1. चवा निकालना, 2. फोड़े-फुंसी को टकोरना।

झिरी (स्त्री.) 1. भूमि के नीचे वह स्थान जहाँ पानी का स्राव होता रहता है, चवा 2. कूएँ के अंदर पड़े कटाव, कच्चे कूएँ के अंदर दीवारों के साथ-साथ पड़े कटाव जिसमें पक्षी अपना घोंसला बना लेते हैं, 3. दरार, कटाव, 4. बिवाई का कटाव।

झिलणा[1] (क्रि. अ.) 1. सहन करना, 2. समाना। **झिलना** (हि.)

झिलणा[2] (क्रि. अ.) 1. हवा करना, पंखा करना, 2. चँबर झलना।
झलना (हि.)

झिलना (क्रि. अ.) दे. झिलणा[1]।

झिलमिल (स्त्री.) 1. हिलता हुआ प्रकाश, 2. झिलमिलाने का भाव; (वि.) झिलमिल करने वाला।

झिलमिलाना (क्रि. अ.) रह-रह कर चमकना; (क्रि. स.) किसी वस्तु को इस तरह हिलाना कि वह रह-रहकर चमके।

झिलाण (पुं.) 1. ढलान, 2. झील का भाग।

झिल्ली (स्त्री.) पतली तह या परत।

झींख (स्त्री.) 1. कुढ़न, 2. बड़बड़ाहट; (क्रि. अ.) 'झींखणा' क्रिया का आदे. रूप।

झींखणा (क्रि. अ.) कुढ़ना।
झींकना (हि.)

झींखतड़ (वि.) व्यवहार में बहुत बहसबाजी करने वाला। दे. झींखुआ।

झींखना (क्रि. अ.) दे. झींखणा।

झींगर (पुं.) किसारी। **झींगुर** (हि.)

झींज/झींझ (पुं.) 1. शमी वृक्ष। 2. इसकी फली।

झींज्झर/झींझर (वि.) जीर्ण-शीर्ण, फटा-पुराना (कपड़ा), स्थान-स्थान से फटा हुआ (कपड़ा)।

झींझ (स्त्री.) 1. जाँट या जाँट्टी पर लगने वाली लंबी फली जो लगभग 'चोळे' (दे.) की फली जैसी होती है (यह ज्येष्ठ में पकती है और खाने में स्वादिष्ट होती है, इसे खाने से हैज़ा होने की आशंका रहती है, हरे होने की अवस्था में इसे 'साँगर' कहते हैं और सूख कर यह झींझ बन जाती हैं), (दे. साँगर), 2. रुन-झुन की ध्वनि देने वाली, सूखी फली।

झींडिया (पुं.) एक जंगली जानवर।

झींमर (पुं.) दे. झीम्मर।

झीखुआ (स्त्री.) झीखने या बड़बड़ाने का भाव।

झीणा (वि.) झीना।

झीमरी (स्त्री.) 1. साग-सब्ज़ी बेचने वाली, 2. धींवरी, 3. पानी भरने वाली, कहारिन।

झीम्मर (पुं.) 1. साग-सब्ज़ी उगाने वाला, 2. पानी भरने वाला, कहार, 3. धींवर जाति का व्यक्ति। **धींवर** (हि.)

झीरमझीर (वि.) 1. जीर्ण-शीर्ण, 2. बुरी तरह से फटा हुआ (वस्त्र); **~करणा** 1. बुरी तरह फाड़ना, 2. घायल करना।

झील (स्त्री.) 1. गड्ढा 2. वह बड़ा गड्ढा जिसमें पानी भरा हो, 3. ढलान।

झुँझळा[1] (वि.) दे. झूँझळा; (स्त्री) दे. झुँझलाट; (क्रि. अ.) 'झुँझळाणा' क्रिया का आदे. रूप।

झुंझळा[2] (पुं.) 1. दे. धूंधला, 2. दे. झोंक्का।

झुँझळाट (स्त्री.) 1. क्रोध में आने की मुद्रा, चिड़चिड़ाहट, 2. खुजली, (दे. झूँझ); **~ऊठणा** 1. आक्रोश प्रकट करना, 2. खुजली होना; **~मारणा** खुजली उठना, दाद में खुजली उठना। **झुँझलाहट** (हि.)

झुँझळाणा (क्रि. अ.) क्रोधित होना, दाँत पीसना। **झुँझलाना** (हि.)

झुंड/झुंडा (पुं.) 1. समूह, 2. झुंड का पौध ा, (दे. झूँड)।

झुकणा (क्रि. अ.) 1. एक ओर टेढ़ा होना, 2. नीचे लटकना–बेराँ की मारी बडबेर झुक्की पड़ी सै, 3. विनम्र होना–बड्डे आदमी सदा तैं झुकते आए, 4. हार मानना, समर्पण करना, 5. तरफ़दारी करना, 6. प्रणाम करना, 7. टूट पड़ना, सेना आदि का एक ओर धावा बोलना–सारी फोज एककान्नी झुक पड़ी जिब बैरी बाकस (वश) मैं आए; (वि.) विनम्र। **झुकना** (हि.)

झुकता (वि.) तोल में कुछ अधिक, (दे. धुकता)।

झुकना (क्रि. अ.) दे. झुकणा।

झुका (पुं.) 1. किसी ओर झुकने की प्रवृत्ति, 2. ढलान, 3. तरफ़दारी; (क्रि. अ.) 'झुकाणा' क्रिया का आदे. रूप **~करणा/लेणा** 1. तरफ़दारी करना, 2. झुकाना; **~मारणा** लज्जा आना, संकोच होना; **~होणा** 1. बोझ का एक ओर झुकना, 2. तरफ़दारी करना, 3. पेड़ पर अधिक फल आना, फ़सल में सुकाल होना। **झुकाव** (हि.)

झुकाणा (क्रि. स.) 1. दबाव द्वारा एक ओर मोड़ना, 2. अपमानित करना, 3. अपनी बात मनवाने पर बाध्य करना, 4. समर्पण करना, 5. अपने पक्ष का कराना, 6. समस्त बल या धन झोंकना या लगाना–बाणियाँ नैं सारा ए धन छोह्री के ब्याह मैं झुका दिया। **झुकाना** (हि.)

झुकाना (क्रि. स.) दे. झुकाणा।

झुकाव (पुं.) दे. झुका।

झुगला (पुं.) 1. झगा, छोटे बच्चे को लपेटने का वस्त्र जो अधिकतर सिला हुआ नहीं होता, शिशु का वस्त्र, 2. बिना सिला वस्त्र, 3 ोटा, चोगा, 4. अधसिला वस्त्र जिर. मुर्दे को पहनाते हैं। **झगला** (हि.)

झुगला-टोप्पी (पुं.) 1. छोटे बच्चे का वह वस्त्र जिसमें टोपी के साथ ही नीचे की ओर सिला हुआ फ्रॉक या वस्त्र होता है, 2. वे वस्त्र जो शिशु के जन्म पर उसकी बूआ लाती है, 3. शिशु जन्म पर सगे-संबंधियों द्वारा दिए जाने वाले शिशु के वस्त्र; **~आणा** शिशु-जन्म पर किसी सगे-संबंधी द्वारा वस्त्र प्राप्त होना; **~करणा** शिशु-जन्म के समय उसके वस्त्रों की व्यवस्था करना।

झुज्झ्या (स्त्री.) दे. मुज्झक।

झुटपुटा (पुं.) दे. झोळ भोळा।

झुठलाना (क्रि. स.) दे. झुठाणा।

झुठाणा (क्रि. स.) 1. झूठा ठहराना, 2. मुँह झूठा कराना, भोजन खिलाना, 3. खूँठा करना, कुंठित करना; **~जिमाणा** भोजन खिलाना। **झुठलाना** (हि.)

झुठाना (क्रि. स.) दे. झुठाणा।

झुणक (स्त्री.) पायल, घुँघरू आदि की ध्वनि। **झुनक** (हि.)

झुणकणा (क्रि. अ.) 1. झुनक की ध्वनि उत्पन्न होना, नूपुर बजना, 2. उछल-कूद करते फिरना; (पुं.) दे. झुण-झुणा; (वि.) झुनझुन की ध्वनि करने वाला। **झुनकना** (हि.)

झुणझुणा (पुं.) बच्चों का एक खिलौना; (वि.) झनकने वाला। **झुनझुना** (हि.)

झुणझुणिया (पुं.) झन-झन की आवाज़ करने वाला बच्चों का एक खिलौना।

झुणझुणी (स्त्री.) 1. तगड़ी जिसमें नूपुर बँधे हों, 2. चूड़ी, 3. हथकड़ी।

झुनकना (क्रि. अ.) दे. झुणकणा।

झुनझुना (पुं.) दे. झुणझुणा।

झुमका (पुं.) बूजनी (दे.) के नीचे लटकने वाला कान का एक आभूषण। **झूमका** (हि.)

झुमकी (स्त्री.) छोटा झुमका।

झुरखा (पुं.) दे. झूरखा।

झुरझुर (वि.) जर्जर। उदा. झुरझुर पिंजरा हुआ बदन।

झुरझुरी (स्त्री.) 1. कँपकँपी, ज्वर से पहले आने वाली कँपकँपी, 2. हल्का ज्वर।

झुरड़ाणा (पुं.) झुर्रियाँ पड़ना, कमजोर होना।

झुरणा (क्रि. अ.) 1. अधिक चिंता करना, 2. चिंता से दुबला होना।

झुरणी डंडा (पुं.) लड़कियों का एक खेल जिसमें शाखाओं पर लटक कर सिर के बल उतरा जाता है।

झुरमट (स्त्री.) 1. सघन टहनियाँ, 2. टहनियों का निचला भाग जिसमें पत्तों की अधिकता होती है। **झुरमुट** (हि.)

झुरमुट (स्त्री.) दे. झुरमट।

झुररी (स्त्री.) शरीर पर पड़ी खाल की सिकुड़न। **झुर्री** (हि.)

झुरी (स्त्री.) 1. सर्दी की वर्षा के समय चलने वाली पवन, 2. ठंडी पवन; **~चालणा** बहुत ठंडी हवा चलना।

झुर्री (स्त्री.) दे. झुररी।

झुळ (स्त्री.) 1. लू, गर्म हवा, 2. (दे. झळ); **~ऊठणा** 1. उत्कट अभिलाषा होना, 2. खुजली होना, 3. लू चलना।

झुळ-झुळी (स्त्री.) 1. कँप-कँपी, 2. क्रोध, 3. खुजली; **~आणा** कँप-कँपी आना; **~ऊठणा** 1. खुजली उठना, 2. आवेश आना। **झुरझुरी** (हि.)

झुळसणा (क्रि. अ.) अधजली अवस्था में होना; (क्रि. स.) भूनना, गरम राख में दबाकर भूनना; (वि.) झुलसने वाला। **झुलसना** (हि.)

झुलसना (क्रि. अ.) दे. झुळसणा।

झुलाणा (क्रि. स.) दोलायमान कराना, झूले आदि पर झुलाना। **झुलाना** (हि.)

झुलाना (क्रि. स.) दे. झुलाणा।

झुलावणा (क्रि. स.) दे. झुलाणा।

झुळी (स्त्री.) गरम लू, (दे. झुळ)।

झूँगा (पुं.) 1. पलड़े का बेचने वाले के पक्ष में झुकाव, 2. (दे. रूँगा), 3. (दे. झूँगा[1])

झूँगल (पुं.) 1. समूह, 2. तारा पुंज, विशेष, तारा पुंज जो पारधी तारे के ऊपर होता है; **~करणा** जमघट करना या लगाना; **~का झूँगल** समूह का समूह; **~चालणा** जीव-जन्तुओं द्वारा झुंड बनाकर चलना।

झूँगा[1] (वि.) 1. आगे की ओर निकला हुआ (माथा या सींग), 2. (पशु)

जिसके सींग माथे से आगे की ओर निकले हुए हों, 3. (व्यक्ति) जिसका माथा बहुत कम चौड़ा हो या सिर के बाल माथे के चारों ओर तक उग गए हों. **~मात्था** माथा जो कम चौड़ा हो या जिस पर बाल उग गए हों; **~सींग** सींग जो माथे से अगली ओर निकल कर भूमि की ओर झुक गए हों।

झूँगगा[2] (पुं.) दे. रूँगगा।

झूँझ (स्त्री.) 1. मीठी-मीठी खुजली–नस्तराँ (चेचक का टीका) मैं इसी झूँझ मारैं सैं जणू पपोळ्याँ (पपोलता) जाँ (जाऊँ), 2. खुज़लाने की तीव्र इच्छा; **~ऊठणा** 1. खुजली चलना, 2. किसी काम को करने की उत्कट इच्छा होना; **~चालणा/माँचणा/ मारणा/ होणा** 1. खुजली होना, 2. आन्तरिक इच्छा बलवती होना; **~मेटणा** 1. इच्छा पूर्ति करना, 2. खुजली मिटाना, 3. काम-तृप्ति करना।

झूँझणा[1] (पुं.) दे. झुणझुणा; (क्रि. अ.) 1. खुजली उठना, (दे. झूँझ ऊठणा), 2. खुज़ली करना।

झूँझणा[2] (पुं.) एक प्रकार की फुलझड़ी, दे. झूँझणा।

झूँझळ (स्त्री.) 1. झुँझलाहट, 2. झन-झनाहट; **~ऊठणा** 1. क्रोध आना, 2. खुज़ली उठना; **~तारणा** क्रोध उतारना, किसी पर बरस पड़ना; **~मारणा** 1. गुस्सा पीना, 2. खुज़ली उठना; **~होणा** क्रोध होना, प्रतिकार की भावना होना।

झूँझळा (वि.) क्रोधी–घणा झूँझळा आदमी बी किमै नाँ।

झूँड (पुं.) 1. सघन झाड़ी, 2. सरकंडे की झाड़ी जिसे काटकर मूँज बनाई जाती है, 3. समूह, पुंज, 4. झुंड, (दे. जड़ाब्बा), 5. लंबे सघन बाल; (क्रि. स.) 'झूँडणा' क्रिया का आदे. रूप; **~का झूँड** झुंड का झुंड, समूह का समूह; **~काटणा** फ़सल को इस तरह काटना कि नीचे डंठल और जड़ बची रहे; **~छोडणा** ईख के पौधे या अन्य फसल को इस तरीके से काटना कि उसकी जड़ें पुनः फूटने या उगने के लिए बची रहें; **~जामणा** खेत में व्यर्थ की झाड़ी, उगना; **~झाऊ** 1. सघन झाड़ी 2. झाऊ की झाड़ी।

झूँडणा (क्रि. स.) 1. काटना, 2. समूल नष्ट करना, 3. फ़सल को ऊपर-ऊपर से काटना।

झूँड्डी (स्त्री.) 1. छोटी झाड़ी, 2. झाड़ी की जड़, 3. वे डंठल जो फसल काटने के बाद खेत में बचे रहते हैं, 4. ईख की मूढ़ी।

झूँपड़ा (पुं.) दे. झूँपड़ी।

झूँपड़ी/झूँफड़ी (स्त्री.) घास-फूस की छत का आवास। **झोंपड़ी** (हि.)

झूई (स्त्री.) मामूली झड़ी।

झूकमका (पुं.) झुंड। समूह।

झू-झू (स्त्री.) छोटे बच्चों को दोनों पैरों पर बैठाकर झुलाने की क्रिया, जकड़ी–झू-झू के, मैयाँ के, कटोरी थी, भरी थी, छोहरे नैं खिढाई थी, बिल्ली नैं मूद्धी पड़कै पीई थी।

झूट (स्त्री.) दे. झूठ।

झूट्ठा (वि.) 1. झूठ बोलने वाला, 2. उच्छिष्ट, 3. खूँठा, मोटा, 4. अविश्वसनीय, 5. खोटा (सिक्का); **~पड़णा/होणा** 1. औज़ार की धार मंद होना, 2. कही हुई बात झूठी सिद्ध

होना, 3. गवाही सिद्ध न होना, 4. हाथ-पैर अशक्त होना। **झूठा** (हि.)

झूठ (स्त्री.) 1. असत्य, 2. उच्छिष्ट भोजन, 3. थाली में बचा भोजन, 4. गन्ने का छिलका जो चूखने से पहले उतार लिया जाता है, 5. मुँह पर (विशेष कर ओठों पर) होने वाली फुंसियाँ जो प्राय: झूठा भोजन खाने से उत्पन्न होती हैं, छूत से होने वाली फुंसी, 6. कुट्टी काटते समय गंडासे के किनारों पर बचे लंबे डंठल; **~ऊपड़णा/ लीकड़णा** ओठों के आस-पास छूत की फुंसियाँ होना, (दे. लुत); **~खाणा** 1. जूठन खाना, 2. झूठ बोलना, 3. असत्य भाषी; **~घालणा** भोजन आरंभ करने से पहले उच्छिष्ट करना; **~चालणा** झूठी बात चल निकलना; **~छोडणा** 1. जूठन बचाना, 2. मेहमान द्वारा अपनी थाली में कुछ भोजन जान-बूझ कर बचाना (ताकि बाद में बच्चे उसे खा सकें), 3. गंडासे द्वारा किनारों का खोटा होने के कारण कुट्टी काटते समय लंबे तिनके छोड़ना, 4. झूठी बात चलाना; **~ठाणा** सामूहिक भोज के बाद बचा-खुचा भोजन उठाना या खाना; **~लाणा** दोषारोपण करना।

झूठमूठ (वि.) 1. असत्य, 2. काल्पनिक।

झूठल (पुं.) झूठ मूठ का खेल (जिसमें हारने जीतने के बाद अपनी वस्तु अपने पास रहती है) (वि.) झूठा व्यक्ति।

झूठा (वि.) दे. झूट्ठा।

झूथर (पुं.) सिर पर उगे छोटे-छोटे बाल।

झूनागढ़ (पुं.) जूनागढ़।

झूड़णा (क्रि.) दे. झरूड़णा।

झूम (स्त्री.) 1. घुमाव, 2. सलवट, 3. परत–घाघरी में उल्टे-सूद्धे झूम पड़ैं थे, 4. झूमने, ऊँघने आदि की क्रिया या भाव; (क्रि. अ.) 'झूमणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पड़णा** लँहगे या अन्य कपड़े में लहर पड़ना।

झूमका (पुं.) दे. झुमका।

झूमणा (क्रि. अ.) 1. नशे में मस्त होना, नशे में बहकना, 2. नाचना, खुशियाँ मनाना, 3. लट्टू होना, 4. मन आना। **झूमना** (हि.)

झूमना (क्रि. स.) दे. झूमणा।

झूमर (पुं.) दे. झूमर नाच।

झूम्मर नाँच (पुं.) हरियाणे का एक नृत्य। **झूमर नाच** (हि.)

झूमर नाच (पुं.) ढोलक और थाल के साथ किया जाने वाला नृत्य।

झूरखा (पुं.) 1. नाखूनों से नोंचने का भाव या क्रिया, 2. खरोंच, 3. नाखून– हाए तेरे झूरखे बध र्‌हें सैं, कटवा क्यूँ नाँ ले; **~बधणा** नाखून बढ़ना; **~भरणा/मारणा** नाखूनों से नोंचना; **~(-ख्याँ) खाणा** झूरखों से घायल करना; **~(-ख्याँ) पाड़णा** नाखून से विदीर्ण करना।

झूरणा (क्रि. स.) 1. टहनी को एक सिरे से पकड़ कर दूसरे तक इस प्रकार खींचना कि उसके पत्ते टूट जाएँ, 2. नाखूनों से नोंचना, (दे. झरूड़णा)। **झूरना** (हि.)

झूल (स्त्री.) 1. झूलने की रस्सी, 2. फाँसी का फंदा, 3. गाड़ी में काम आने वाली रस्सी, 4. पशुओं पर डाला जाने वाला सिला हुआ वस्त्र; (क्रि. अ.) 'झूलणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पड़णा** हरियाली तीज के समय झूला डलना; झूला डलना। **झूला** (हि.)

झूलणा (क्रि. अ.) 1. झूला झूलना, 2.

हाथ में कोई आश्रय पकड़ कर लटकना, 3. अधर में लटकना, 4. प्रसन्न होना, झूमना, 5. फाँसी के तख़्ते पर लटकना; (वि.) वह जो झूले। **झूलना** (हि.)

झूलना (क्रि. अ.) दे. झूलणा।

झूल-सीड्ढी (स्त्री.) 1. झूल तथा पटरी, 2. झूले की पटरी।

झूला (पुं.) दे. झूल्ला।

झूल्ला (पुं.) 1. झूल, 2. हिंडोला, 3. पलना, पालना। **झूला** (हि.)

झेंपना (क्रि. अ.) दे. झेपणा।

झेद (पुं.) तोंद, निकला हुआ पेट; **~आणा** 1. पेट बढ़ना या निकलना, 2. गर्भ प्रकट होना; **~काढणा** तोंद बढ़ना।

झेदला (वि.) पेटू, जिसका पेट निकला हुआ हो।

झेद्दू (वि.) दे. झेदला।

झेपणा (क्रि. अ.) झिझकना, संकोच करना; (वि.) शर्मीला। **झेंपना** (हि.)

झेरा (पुं.) 1. कुँआ जिसका पानी सूख गया हो, कच्चा कुँआ जिसका पानी सूख गया हो तथा उसमें पक्षियों ने अपने घोंसले बना लिए हों, 2. गहरा गड्ढा, 3. बाधा, 4. विपत्ति, 5. पेट; **~आँटणा** 1. मार्ग की बाधा हटाना, 2. पेट भरना; **कुआ ~** आत्म-हत्या का स्थान, डूब मरने का स्थान; **~~देखणा** 1. आत्म-हत्या करना, 2. आत्म-हत्या का स्थान ढूँढ़ना; **~खोदणा** आपत्ति मोल लेना; **~(-रे) मैं पड़णा** 1. मुसीबत में फँसना 2. आत्म-हत्या करना।

झेलणा (क्रि. स.) 1. सहन करना, 2. समाना, समाहित करना। **झेलना** (हि.)

झेलना (क्रि. स.) दे. झेलणा।

झोंकण आळा (पुं.) दे. झोंक्का।

झोंकणा (क्रि. स.) 1. भट्ठी में ईंधन डालना, 2. धकेलना, 3. अत्यधिक मात्रा में डालना या लगाना, 4. लाठी चलाना, 5. कूदना, कूएँ में कूदना (आत्महत्या करना) 6. निगलना, 7. पशु द्वारा सिर हिलाकर मारने की चेष्टा करना; (वि.) झोंकने वाला (पशु); **~डाँगगर** पास से गुजरने वाले को सींग से मारने की चेष्टा करने वाला पशु। **झोंकना** (हि.)

झोंकना (क्रि. स.) दे. झोंकणा।

झोंका (पुं.) दे. झोंक्का।

झोंक्का (पुं.) 1. भाड़ या कोल्हू में ईंधन झोंकने वाला, 2. पवन का झोंका, 3. भंयकर प्यास, 4. पानी की हिलोर, 5. झपट्टा, 6. झटका; **~मारणा/लाणा** 1. ईंधन झोंकना, 2. हवा करना; **~लागणा** 1. बार-बार प्यास लगना, 2. रोगी को हवा लगाना, 3. कुप्रभाव पड़ना।

झोंझ (स्त्री.) **दे. झूँझ।**

झोंटा (पुं.) दे. झोट्टा[2]।

झोंपड़ी (स्त्री.) दे. झूँपड़ी।

झोंवासा (पुं.) दे. झिंवासा।

झोक (स्त्री.) 1. झुकाव, प्रवृत्ति, 2. बोझा, भार, 3. दवाब, 4. आवेश, आवेग, 5. झोंकने की क्रिया, 6. पशु द्वारा अपने सींगों से मारने की क्रिया, 7. बारी, जैसे–पहलम झोक (पहली बार); (क्रि. स.) 'झोंकणा' क्रिया का आदे. रूप; **~डाटणा/थाँभणा** (दे. झोल डाटणा); **~होणा** 1. एक ओर झुकाव होना–गाँद्धी की बात्ताँ नैं सुण सुण कै आद्दमियाँ अर बीर-बानियाँ की झोक

उस्सै कान्नीं (की ओर) होगी थी, 2. बोझे का एक ओर झुकना। **झोंक** (हि.)

झोकणा (क्रि. स.) दे. झोंकणा।

झोका (पुं.) दे. झोक्का।

झोटड़ा (पुं.) छोटी आयु का भैंसा, हल्के शरीर का भैंसा, (दे. झोट्टा[1])।

झोटड़ी (स्त्री.) नई उम्र की हल्के शरीर की भैंस।

झोट्टा[1] (पुं.) भैंसा, भैंस का नर; (वि.) 1. क्रोधी, गुसैल, 2. प्रतिकार की भावना रखने वाला, 3. मोटा, भारी भरकम; **~छोडणा** कटड़े को दाग़ कर भैंसा घोषित कना; **~पळणा/होणा** मोटा-ताज़ा होना; **~(-ट्टे) लड़ैं झाड़ियाँ का खो** सबलों के झगड़े में निरपराधियों की हानि। **झोटा** (हि.)

झोट्टा[2] (पुं.) पेंग, झूल या पलने को हिलाने की क्रिया; **~आणा** नींद का लटका आना, उनींदा होना; **~खाणा** 1. झूल या पलने में झूलना, 2. कुछ क्षण के लिए अधर में लटक जाना, 3. गाड़ी के पीछे लटकना और आनंद लेना, (दे. मुज्झया खाणा); **~देणा** झूले या पलने को हिलाना; **~बधाणा /लेणा** झूल पर ऊँचे आयाम में झूलना। **झोटा** (हि.)

झोड़ (पुं.) कच्चा तालाब, जोहड़ी से बड़े आकार का तालाब, गाँव के निकट की वह लंबी-चौड़ी प्राकृतिक या बनावटी झील जहाँ वर्षा में पानी एकत्रित हो जाता है (जिसका पानी पशुओं के पीने, कपड़े धोने, स्नान करने आदि के काम आता है, गरमी के दिनों में इसे नहर के पानी से भी भर दिया जाता है, कुछ गाँवों में अतिरिक्त जोहड़ को सिंघाडे लगाने के लिए धींवरों को ठेके पर दे दिया जाता है); **~आँटणा** अधर्म कमाना; **~काटणा** जोहड़ के एक किनारे से दूसरे किनारे तक तैरते हुए जाना; **~कान्नी जाणा/कैड़ जाणा** मल-विसर्जन के लिए जाना; **~छाँटणा** जोहड़ से मिट्टी निकालना (यह कार्य पवित्र माना जाता है तथा अधिकतर सामूहिक रूप से किया जाता है); **~बणणा/होणा** समतल भूमि का झील बन जाना; **~भरणा** 1. धर्म कमाना, 2. कुँआ आदि चलाकर गर्मियों में जोहड़ भरना। **जोहड़** (हि.)

झोड़ कैड़ (पुं) मल, भिष्टा, टट्टी; **~जाणा** मल-विसर्जन के लिए जाना।

झोड़ा[1] (पुं.) दे. झोरा।

झोड़ा[2] (पुं.) 1. कम गहरा घाव, 2. खुजलाने से बना घाव। दे. झोरा, 3. दुबला, क्षीणकाय।

झोणा (क्रि. स.) 1. चक्की चलाना-तड़कै ए तड़कै झोण के बखत अलख जगा दिया, 2. शुरू करना, चर्चा चलाना-अपणी बात सब जघाँ नाँ झोणी चाहिए, 3. आरंभ करना, 4. दीपक आदि ज्योतित करना; **गाह्रड़~** लंबी कथा शुरू करना, (दे. गाह्रड़); **चाक्की~** चक्की पीसना शुरू करना। **जोहना** (हि.)

झोर[1] (पुं.) झुंड, समूह; **~का झोर** झुंड का झुंड, समूह का समूह।

झोर[2] (पुं.) दे. चहोर।

झोरणा (क्रि. स.) दे. झरूड़णा।

झोरना (क्रि. स.) दे. झरूड़णा।

झोरखा (पुं.) दे. झूरखा।

झोरा (पुं.) मूँग, मोठ आदि का भूसा; (स्त्री.) खुजली।

झोरी (स्त्री.) 1. खुजलाने की क्रिया। 2. कम गहरा घाव। **~लागणा** खुझली लगना या उठना।

झोल (स्त्री.) 1. तरंग, लहर, 2. कपड़े का ढीला या तना भाग, 3. चुन्नट 4. हाथ का संकेत; **~डाटणा/थाँभणा** 1. जवानी का नशा क़ाबू में रखना, 2. गिरते-गिरते सँभलना; **~पड़णा** कपड़े का किसी स्थान से तना हुआ या ढीला होना; **~मारणा** 1. कम तोलना, धोखे से सामान वाले पलड़े की ओर तराजू झुकाना, 2. कामुक तरंग उठना।

झोल (स्त्री.) 1. आभा, चमक, धातु का पानी चढ़ाकर पैदा की गई चमक, 2. (दे. झाळ); **~चढाणा** कलई आदि चढ़ाना।

झोलणा (क्रि. स.) 1. पंखा डुलाना, 2. लाठी आदि का प्रहार झुकाना।

झोलदार (वि.) (वस्त्र) जिसमें कहीं-कहीं झोल पड़ती हों।

झोळ-भोळ (पुं.) भोर या प्रभात वेला-झोळभोळे ऊठ कै चाक्की झोई थी; **~होणा** प्रात:काल का वह समय होना जब प्रकाश के अभाव में एक- दूसरे का मुँह स्पष्ट नहीं दिखाई दे।

झोला (पुं.) 1. दे. झोल्ला, 2. दे. झोळा।

झोळा (पुं) 1. थैला, 2. बस्ता, 3. ढीला-ढीला वस्त्र, 4. मदारी का थैला, 5. (दे. झौंर); **~ठावणियाँ** पिछलग्गू। **झोला** (हि.)

झोली (स्त्री.) 1. दे. झोळी, 2. दे. झोल्ली।

झोळी (स्त्री.) 1. वस्त्र को मोड़कर बनाई गई थैली, 2. घास बाँधने की पल्ली, 3. भिक्षा-पात्र, साधु का भिक्षा-पात्र, 4. भिक्षा; **~करणा** 1. भिक्षा के लिए पात्र फैलाना, 2. याचना करना; **~ठाणा** 1. भिक्षावृत्ति अपनाना, 2. पिछलग्गू होना; **~पसारणा/ फैलाणा** 1. अनुनय-विनय करके कोई चीज़ माँगना, बहुत दीन-हीन स्थिति प्रकट करना, 2. प्राण-रक्षा की भीख माँगना; 3. भीख माँगना **~फैंकणा** 1. भिक्षावृत्ति त्यागना; 2. पुन: गृहस्थ जीवन अपनाना; **~बाँधणा** 1. घास आदि खोदते समय पीठ पर कपड़े की झोली बनाकर बाँधना, 2. भिक्षावृत्ति अपनाना; **~भरणा** 1. मन-माँगा या मनचाहा दान देना, 2. कमाई करना, 3. खजाना भरना, 4. किसी चीज़ का अभाव न रहना, 5. किसी का माल लूटना; **~माँगणा** 1. भिक्षा माँगना, 2. यज्ञोपवीत के समय गुरु के लिए भीख माँगना; **~सोंपणा** जिम्मेदारी उतारना या संभलवाना। **झोली** (हि.)

झोल्ला (पुं.) 1. हाथ के इशारे से दिया गया संकेत, 2. झटका, आघात, धक्का, 3. कीलिया (दे.) द्वारा लाव पर दिया जाने वाला झटका ताकि चरसिया (लाव वाला) चरसे को सुगमता से पकड़ कर मुँडेर पर रखकर पानी उलट सके, 4. वह ध्वनि या संकेत जब चरसिया कीलिया को सचेत करता है कि चरसा कूएँ की मुँडेर पर आ गया है अत: वह लाव को झटका दे, 5. तोलने वाला, 6. भड़भूँजे द्वारा अन्न भूनते समय कुछ अन्न चोरी करने का भाव, 7. पेंग; **~देणा** 1. हाथ हिलाकर संकेत करना, 2. लाव को झटका देना ताकि चरसा मुँडेर पर आ सके, 3. झुलाना तुल. छोट्टा देणा; **~मारणा** 1. कम तोलना, डंडी मारना, 2. हाथ का संकेत करना,

3. अन्न भूनते समय भड़भूँजे द्वारा अन्न चुराना। **झोला** (हि.)

झोल्ली (स्त्री.) अंगुलियाँ हिलाकर किया गया इशारा; **~देणा** हाथ से संकेत करना; **~मारणा** 1. संकेत करना, 2. बुलाना, 3. कामुक संकेत देना; **~लागणा** इश्क की फटकार लगना।

झोहरा (स्त्री.) पूँछ।

झौंर (पुं.) हवा का झौंका।

ञ

ञ हिंदी वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन जो चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है, इसका उच्चारण स्थान तालु और नासिका है।

ञ-ञ (स्त्री.) बच्चे के रोने की ध्वनि; **~करणा/मचाणा/लाणा** 1. रोना, बच्चे का रोना, 2. चिढ़ाना, (दे. रिंवाँटणा)।

ट

ट हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ व्यंजन जो टवर्ग का पहला वर्ण है, इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है, हरियाणवी में इसका उच्चारण मूर्द्धा और तालु है।

टंक[1] (पुं.) 1. पानी की बड़ी टंकी, 2. एक युद्ध-आयुध, टैंक। **टैंक** (हि.)

टंक[2] (पुं.) चैन।

टँकणा (क्रि. अ.) 1. लटकना, 2. खोद-कर लिखा जाना, 3. शिला आदि का खुरदरा किया जाना, 4. पात्र आदि पर कटाव चिह्न पड़ना, 5. वस्त्र का कहीं-कहीं से कटना 6. (दे. टँगणा); (क्रि. स.) टाँका लगाने का कार्य करना। **टँकना** (हि.)

टँकना (क्रि. स.) 1. दे. टँकणा, 2. दे. टँगणा।

टँकवाणा (क्रि. स.) 1. टाँकी से नाम गुदवाना, 2. धातु के पात्र को टाँका लगवाना, 3. सिलवाना, 4. लटकवाना। **टँकवाना** (हि.)

टंकाणा (क्रि. स.) 1. सिक्का परखना, 2. धातु के पात्र को बजाना।

टंकार (स्त्री.) 1. धनुष के टूटने से उत्पन्न भयंकर ध्वनि, 2. धातु के टकराने से उत्पन्न तेज ध्वनि; (क्रि. स.) 'टंकारणा' क्रिया का आदे. रूप।

टंकारणा (क्रि. स.) 1. धातु के पात्र को किसी चीज़ से टकरा कर ध्वनि निकालना, 2. धनुष की डोरी खींचकर ध्वनि निकालना, 3. पुकारना, आह्वान करना, 4. चुनौती देना, 5. परखना। **टंकारना** (हि.)

टंकारना (क्रि. स.) दे. टंकारणा।

टंकारा (पुं) 'टन'-'टन' की ध्वनि; **~ऊठणा** टन-टन की भयंकर ध्वनि उत्पन्न होना।

टंकी (स्त्री.) 1. पानी का बड़ा पात्र, 2. लोहे आदि का लंबोतरा गोल पात्र।

टँगणा (क्रि. स.) 1. अपने आप लटकना, 2. गोदी चढ़ना, 3. सवारी करना, 4. लटका-लटका फिरना, 5. अभिमान करना, 6. अनिश्चितता की स्थिति में रहना। **टँगना** (हि.)

टँगना (क्रि. स.) दे. टँगणा।

टँगवाणा (क्रि. स.) लटकवाना, खूँटी आदि पर लटकवाना। **टँगवाना** (हि.)

टँगाणा (क्रि. स.) दे. टँगवाणा।

टंगोरिया (पुं.) एक अहीर गोत।

टंच (वि.) 1. ओढ़-पहन कर या बनठन कर तैयार, 2. पूर्ण रूप से तैयार; **~करणा** (बालक को) नहला-धुलाकर तैयार करना; **~होणा** 1. तैयार होना, कूच करने के लिए तैयार होना, 2. भरपेट भोजन करना।

टंटा (पुं.) 1. व्यर्थ का झगड़ा या फ़जीता, 2. आडंबर, 3. दंगा; **~ठाणा** झगड़ा या झंझट शुरू करना; **~रोपणा** 1. आडंबर करना, 2. झगड़ा मोल लेना।

टंडराणा (क्रि. स.) ठिठुरना।

टंडवाळ (स्त्री.) दे. देखभाळ।

टंपू (पुं.) सवारी ढोने का मशीनी वाहन।

टंडिया (स्त्री.) छोटी टाँड या ताक।

टक (स्त्री.) 1. टक की ध्वनि, 2. बिना पलक झपके देखने की क्रिया; (पुं.) 1. कटाव, 2. कलम के अगले भाग की काट; (क्रि. स.) 'टकणा' क्रिया का आदे. रूप।

टक-टक (स्त्री.) 1. ललचाई नज़र से देखने की क्रिया, 2. टक-टक की ध्वनि; **~ताकणा/देखणा** टक-टकी लगाकर देखना।

टकटकाणा (क्रि. स.) टकटकी बाँधना। **टकटकाना** (हि.)

टकटकी (स्त्री.) 1. बिना पलक झपके देखने की क्रिया, 2. ललचाई नज़रों से देखने का भाव; **~लाणा** नज़र गाड़ना।

टकणा[1] (क्रि. स.) तकना; (क्रि. स.) टाँक मारना।

टकणा[2] (पुं.) टखना। दे. गट्टा।

टकरा (पुं.) भिड़ने या टकराने की क्रिया। **टकराव** (हि.)

टकराणा (क्रि. अ.) 1. टक्कर होना, 2. संयोग से मुलाकात होना, 3. अचानक कोई विचार सूझना। **टकराना** (हि.)

टकराना (क्रि. अ.) दे. टकराणा।

टकला (पुं.) गंजा। दे. गंजा पटील।

टकसाल (स्त्री.) दे. टकसाळ।

टकसाळ (स्त्री.) 1. खाजाना, 2. वह स्थान जहाँ सिक्के ढाले जाते हैं; **~खोह्लणा** 1. धन लुटाना, 2. धन बाँटना। **टकसाल** (हि.)

टकसाळी (वि.) 1. (सिक्का) जो टकसाल में ढला हो या टकसाल की मोहर से अंकित हो, 2. खरा, खोटरहित, 3. प्रमाणित।

टका (पुं.) 1. ताँबे का अनगढ़ चौकोर सिक्का जो विवाह आदि के अवसर पर पूजा के समय दक्षिणा के रूप में चढ़ाया जाता था और जिसका मूल्य अधन्ने–दो मसूरिया पैसे (वर्तमान तीन नए पैसे) के तुल्य होता था, 2. तीन तोले का तोल, 3. रुपया-पैसा, द्रव्य, रुपया, 4. 'कौड़ी' का विलोम; **~(-के) का** 1. सस्ता, मुफ्त के बराबर, 2. सम्मान-रहित (व्यक्ति); **~(-के) टके मैं** सस्ते भाव में, बिना भाव का; **~~बिकणा** 1. सम्मान कम होना, 2. बहुत सस्ता होना; **~~मिलणा** सस्ता और सुगमता से प्राप्त होना; **~धरणा/धरवाणा** पूजा के समय टके का सिक्का रखवाना या माँगना; **~(-के) मैं** सस्ते दामों में; **~सा** 1.तुरंत या अविलंब (उत्तर), 2. स्पष्ट (उत्तर); **~~जुबाब** 1. स्पष्ट उत्तर, 2. नकारात्मक उत्तर; **~~मुँह ले कै रहणा** अपमान

सहन करना; ~**सी जान** मूल्यवान प्राण, जीवन, साँस; ~~**जाणा** मरना, प्राण-हानि होना; ~**होणा** धन जुड़ना।

टका टोकरी (स्त्री.) रोजी रोटी के साधन।

टकिहार (स्त्री.) वेश्या; (वि.) टके के बदले सम्मान बेचने वाली।

टकोर (स्त्री.) गरम पानी या हल्की आग में सेंकने की क्रिया, सेंक; (क्रि.स.) 'टकोरणा' क्रिया का आदे. रूप।

टकोरणा (क्रि. स.) पीड़ा वाले अंग को हल्के गरम पानी अथवा आग से सेंकना। **टकोरना** (हि.)

टकोरना (क्रि. स.) दे. टकोरणा।

टक्कर (स्त्री.) 1. टकराव, भिड़ंत, 2. मुक़ाबला, सामना—उसकी टक्कर मैं ठहरणा सब के बस की बात नाँ सै, 3. सामने, ठीक सामने—म्हारी हेल्ली (हवेली) की टक्कर मैं छाज्जू जाट के खेत सैं, 4. (दे. दूण); ~**करणा** 1. मुकाबला करना, 2. सामना करना, 3. बराबरी करना; ~**की चोट** मुक़ाबले की जोड़ी; ~**लेणा** मुक़ाबले का होना—काद्याणाँ (गोत विशेष) का कूआ टाल्लयाँ (गोत विशेष) के कूए की टक्कर ले सै; ~**होणा** भिड़ंत होना।

टखणा (पुं.) दे. गट्टा।

टखना (पुं.) दे. गट्टा।

टग-टग (स्त्री.) 1. चलते समय उत्पन्न पैरों की ध्वनि, 2. अबाध गति से चलने की क्रिया; ~**चढणा** गति के साथ सीढ़ी पर चढ़ना; ~**पाँ धरणा** बच्चे द्वारा सँभल-सँभल कर पैर रखना; ~**लखाणा** टकटकी बाँधकर देखना।

टटकारणा (क्रि. स.) 1. मुँह से 'टट्'-'टट्' की ध्वनि निकालना, 2. पशु को (विशेषकर गधे को) 'टट्'-'टट्' करके चलाना, टहलाना या खदेड़ना, 3. टहलाना, 4. इनकार करना, 5. 'पुचकारणा' का विलोम। **टटकारना** (हि.)

टटकारी (स्त्री.) पशु को टहलाने या चलाने के लिए की जाने वाली 'टट्'-'टट्' की ध्वनि; ~**मारणा** 'टट्'- 'टट्' की ध्वनि करके पशु को टहलाना।

टटपूँजिया (वि.) दे. टट्पूँजिया।

टटवाणी (स्त्री.) टट्टू की मादा।

टटीरी (स्त्री.) दे. टटीहरी।

टटीहरी (स्त्री.) जल-तट पर रहने वाला पक्षी। **टिटिहरी** (हि.)

टटोळ (स्त्री.) 1. पड़ताल, जाँच, 2. तलाश, 3. टटोलने, देखने, परखने आदि की क्रिया, 4. हाथ से परख करने या पहचानने की क्रिया; (क्रि. स.) 'टटोळणा' क्रिया का आदे. रूप; ~**करणा** 1. तलाश करना, 2. पहचानना, परख करना; ~**पड़णा/माँचणा/होणा** किसी व्यक्ति (चोर, उचक्का) या वस्तु की छान-बीन होना; ~**मारणा** पूरी खोजबीन करना। **टटोल** (हि.)

टटोळणा (क्रि. स.) 1. किसी वस्तु को हाथ से परखना या पहचानना, 2. वस्तु की उपस्थिति या अनुपस्थिति की परख करना, 3. मन का भाव लेना, 4. तलाशी लेना, (दे. झाड़ा लेणा)। **टटोलना** (हि.)

टटोलना (क्रि. स.) दे. टटोळणा।

टट्टी (स्त्री.) 1. टाट्टी, 2. (दे. गूह)।

टट्टू (पुं.) 1. गधा, 2. लद्दू पशु, 3. मूर्ख व्यक्ति, 4. भाड़े का व्यक्ति; ~**पार करणा** बेग़ार समझ कर कार्य समाप्त करना।

टट्पूँजिया (वि.) 1. ओछी पूँजी वाला, 2. (वह) जिसकी साख न हो, 3. निर्धन, 4. टाट मात्र है पूँजी जिसकी।

टड्डा (पुं.) दे. टाड[1]।

टणकाणा (क्रि. अ.) दे. टंकाणा।

टनकना (क्रि. स.) दे. टन-टन बजना।

टनखोप्पर (वि.) दे. खोप्परटन।

टनटनाना (क्रि. स.) चाँदी के सिक्के आदि को परखना।

टपकणा (क्रि. अ.) 1. बूँद-बूँद करके गिरना, 2. अकस्मात् आना, प्रकट होना; (वि.) (वस्तु) जो टपकती रहे। **टपकना** (हि.)

टपकना (क्रि. अ.) दे. टपकणा।

टपकला (पुं.) दे. टपका।

टपकलिया (पुं.) दे. टपका।

टपका (पुं.) 1. वर्षा के समय छत से चूकर आने वाली बूँद, 2. टपकने की क्रिया; (क्रि. अ.) 1. **'टपकाणा'** क्रिया का भू. का. पुं. रूप, 2. **'टपकाणा'** क्रिया का आदे. रूप।

टपकाणा (क्रि. स.) बूँद-बूँद करके उँडेलना या गिराना। **टपकाना** (हि.)

टपकाना (क्रि. स.) दे. टपकाणा।

टपरी (स्त्री.) सरकंडों की सिरकी।

टपाणा (क्रि.स.) 1. फाँदाना, 2. उलाँकना।

टप्पा (पुं.) छलाँग, कूद, उछाल (दे. टाप); ~**पड़णा** उछल कर किसी स्थान पर गिरना; ~**मारणा** (दे. टोर मारणा); ~**लागणा** गेंद आदि का किसी स्थान पर उछलना या उछल कर गिरना।

टफ (पुं.) पानी आदि रखने के लिए नाँद के आकार का खुला बड़ा बर्तन। **टब** (हि.)

टब (पुं.) दे. टफ।

टमटम (स्त्री.) दे. टिम टिम।

टमोट्टी (स्त्री.) छोटा तंबू।

टरंक (पुं.) 1. संदूकची, 2. संदूक। **ट्रंक** (हि.)

टर (स्त्री.) 1. मेंढ़क की आवाज, 2. बकरी या रेवड़ को हाँकते समय उच्चरित ध्वनि, 3. चिढ़ाने के लिए उत्पन्न ध्वनि; ~**टर करणा** व्यर्थ में बोलना, शोर मचाना। **टर्र** (हि.)

टरकाणा (क्रि. स.) बहाना लगाकर टहलाना।

टरकाना (क्रि. स.) दे. टरकाणा।

टरड़ू (पुं.) दादुर, मेंढ़क; (वि.) टर्र-टर्र की ध्वनि करने वाला।

टरणा (क्रि.) कहना। पुकारना, दे. टेरणा।

टरणाट्टा (पुं.) **'टरन'-'टरन'** की ध्वनि; ~**ऊठणा** निरंतर 'टरन'-'टरन' की ध्वनि उत्पन्न होना।

टरराणा (क्रि. अ.) 1. मेंढ़क का टर्राना, 2. व्यर्थ का प्रलाप करना। **टर्राना** (हि.)

टरेकटर (पुं.) हल जोतने आदि का मशीनी यंत्र। ट्रेक्टर।

टर्राना (क्रि. अ.) दे. टरराणा।

टळणा (क्रि. अ.) 1. आँखों से परे चले जाना, 2. काम से जान-बूझ कर बचना, काम से बचने के लिए खिसकना, 3. बुरी घड़ी बीतना, 4. स्थगित होना—खाम खाँ छोह्री का ब्याह टळग्या लपेट्टी जात्ती (भाँवर पड़ जाते) तै आच्छ्या था। **टलना** (हि.)

टलना (क्रि. अ.) दे. टळणा।

टल्लैह (स्त्री.) सेवा-सुश्रूषा। **टहल** (हि.)

टल्हाणा (क्रि. स.) 1. खिसकाना, 2. स्थान से हिलाना, 3. खदेड़ना, 4. टालना। **टहलाना** (हि.)

टस (स्त्री.) 1. टसकने की ध्वनि, 2. टसकने का भाव, 3. आँसू टपकने का भाव, 4. थोड़ा हिलने का भाव; **~तैं मस नाँ होणा** 1. हठ करके डटे रहना, 2. अपने स्थान से तनिक भी न हिलना।

टसक (स्त्री.) 1. पीड़ा, 2. तीव्र इच्छा; (क्रि. स.) 'टसकणा' क्रिया का आदे. रूप; **~लागणा** 1. पीड़ासूचक शब्द निकलना, 2. चभक होना, पीड़ा होना, 3. इच्छा होना।

टसकणा (क्रि. अ.) 1. पीड़ा से कराहना, 2. चभक लगना; (वि.) जो टसके या हर समय कराहे।

टसकना (क्रि. अ.) दे. टसकणा।

टसका (पुं.) बार-बार टसकने की क्रिया।

टस-टस (स्त्री.) 1. टसकने या आंतरिक पीड़ा व्यक्त करने की ध्वनि, 2. टपकने की क्रिया, बूँद-बूँद करके गिरने की क्रिया; **~आँस्सू गेरणा** 1. आँसू बहाना, 2. भयंकर पीड़ा व्यक्त करना।

टसर (स्त्री.) कड़ा और मोटा रेशम।

टसवा (पुं.) दे. टसुआ।

टसुआ (पुं.) 1. आँसू, 2. टसक, (दे. टसक)।

टहणा (पुं.) मोटी डाली। **टहना** (हि.)

टहणी (स्त्री.) दे. डाळ्ही। **टहनी** (हि.)

टहना (पुं.) दे. टहणा।

टहनी (स्त्री.) 1. दे. टहणी, 2. दे. डाळ्ही।

टहल (स्त्री.) सेवा; **~बजाणा** 1. सेवा करना, 2. आज्ञा पालन करना।

टहलणा (क्रि. अ.) 1. टहलना, चहलकदमी करना, 2. आगे बढ़ना, 3. स्थगित होना।

टहलना (क्रि. अ.) दे. टहलणा।

टहलाणा (क्रि. स.) 1. स्थगित करना, 2. पशु आदि को दुत्कार कर आगे बढ़ाना, 3. बहकाना, 4. चहलकदमी कराना।

टहलाना (क्रि. स.) दे. टहलाणा।

टहलुआ (वि.) 1. टहल करने वाला, 2. टहल करने योग्य, 3. (दे. ठेसवा)।

टाँक[1] (स्त्री.) 1. दाग़, चोट के कारण पड़ने वाला दाग़, कटाव या चिह्न, 2. कलम की नोंक, 3. चोंच।

टाँक[2] (पुं.) खाती या बढ़ई जाति का एक गोत या उप-जाति।

टाँक[3] (पुं.) 1. दे. टाँक 2. दे. ताखड़ी।

टाँक[4] (पुं.) पशु पक्षियों के लिए बनाया गया जल का गड्ढा या टेंक। दे. खेळ।

टाँकणा (क्रि. स.) 1. लटकाना, 2. शिला आदि को राहना, 3. चिह्नित करना; **खूँटियाँ~** 1. शस्त्र विफल कर देना, 2. लड़ाई के समय विरोधी की एक न चलने देना, 3. हथियार बेकार करना। **टाँकना** (हि.)

टाँकना (क्रि. स.) दे. टाँकणा।

टाँका (पुं.) दे. टाँक्का।

टाँकी (स्त्री.) दे. टाँक्की।

टाँक्का (पुं.) 1. सिलाई का टाँका, 2. धातु के पात्रों का लगाया गया जोड़ 3. किसी तंतु के साथ जुड़ी या चिपकी हुई अवस्था, जैसे–जीभ का टाँक्का, 4. डाक्टर द्वारा रेशम के धागे से की गई सिलाई; (क्रि. स.) 'टाँकणा' क्रिया का भू. का. पुं. रूप; **~(-के) उधेड़णा** 1. दबी बातें उखाड़ना, 2. घाव हरा करना; **~(-के) की टूम** टाँका लगाकर बनाई गई टूम या आभूषण; **~टूटणा** 1. क़ाबू से बाहर होना,

2. जनेंद्री की ऊपरी खाल का वह तंतु टूटना जिससे आगे का मनिया खाल से बाहर निकलने लगे, 3. सिलाई उधड़ना; **~मारणा/लाणा** फटे हुए वस्त्र को सीना। **टाँका** (हि.)

टाँक्की (स्त्री.) 1. टाँकी, छोटी हथौड़ी, 2. छोटा टाँका; (क्रि. स.) 'टाँकणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

टाँक्यूँ-टाँक (क्रि. वि.) वह तोल जो मुश्किल से पूरा हो; **~तोलणा** पूरा तोल तोलना (अधिक या कम नहीं)।

टाँग (स्त्री.) 1. पैर, पाँव, 2. तिपाई आदि का पैर; (क्रि. स.) 'टाँगणा' क्रिया का आदे. रूप; **~टूटणा** 1. आश्रय समाप्त होना, 2. पंगु होना, 3. पाया आदि टूटना; **~ठा कै खड़्या होणा** 1. अपराध स्वीकार करना, 2. क्षमा माँगना; **~तळै कै काढणा** 1. हार मनवाना, 2. अपमान करना; **~तळै कै लीकड़णा** हर तरह से हार मानना, पूर्ण समर्पण करना; **~(-गाँ) ताँही** घुटनों तक (का प्रमाण); **~पसारणा** 1. विश्राम करना, 2. मरना, 3. आवश्यकता से अधिक साधनों पर अधिकार जमाना; **~मारणा** 1. बाधा उत्पन्न करना, 2. अड़ंगी लगाना; **~लीकड़णा** घर से बाहर पैर निकलना; **~होणा** छोटा बच्चा इस योग्य होना कि स्वयं चल-फिर सके।

टाँगणा (क्रि. स.) 1. लटकाना, (दे. टाँकणा), 2. सूली पर लटकाना। **टाँगना** (हि.)

टाँगना (क्रि. स.) दे. टाँगणा।

टाँगरी (स्त्री.) शिवालक के गिरिपादीय क्षेत्र से निकलने वाली एक बरसाती नदी।

टाँगळी (स्त्री.) छः सींगों की 'जेळी' (दे.)।

टाँच (स्त्री.) 1. रगड़ या चोट का दाग़, 2. खरोंच; (क्रि. स.) 'टाँचणा' क्रिया का आदे. रूप।

टाँचणा (क्रि. स.) 1. चाँटना या पैना करना, 2. कहीं-कहीं दाग़ या धब्बे लगाना, 3. काटना, 4. खोंटा करना। **टाँचना** (हि.)

टाँट (स्त्री.) 1. सिर के ऊपर का भाग, खोपड़ी, 2. बुद्धि, दिमाग़, 3. थुह, साँड का कूबड़ या डेला; **~कढवाणा** सिर के बाल उस्तरे से मुँडवाना; **~खाल्ली होणा** दिमाग़ खाली होना; **~ठाणा/खैंचणा** जन्म के समय बछड़े का कूबड़ खींचना; **~फोड़णा** सिर फोड़ना, सिर पर आघात करना; **~मुँडाणा** 1. हानि में रहना, 2. हार मानना।

टाँटल/टाँट्टल (वि.) 1. गंजी खोपड़ी वाला, 2. (साँड) जिसका कूबड़ सुडौल हो।

टाँटी (स्त्री.) दे. टाट्टी।

टाँड (स्त्री.) 1. ताक, परछत्ती, 2. घर के अंदरूनी भाग में मोटी लकड़ी दीवार में गाड़ कर सामान रखने के लिए बनाया गया स्थान; **~पै टाँगणा/पै धरणा** 1.हथियार निरर्थक करना, 2. वस्तु का उपयोग बंद होना, वस्तु काम में न आना।

टाँडा (पुं.) बणजारा।

टाँड्डा (पुं.) 1. बनजारा या घुमंतु जाति का क़ाफ़िला, 2. परिवार, कुटुंब, 3. खेमा; **~उतरणा** बनजारों के समूह का खेमा लगना; **~ऊठणा** 1. बनजारों के

खेमों या बस्ती द्वारा अगले पड़ाव के लिए प्रस्थान करा, 2. बस्ती उजड़ना, 3. मृत्यु होना; **~गेरणा** पड़ाव डालना; **~-टेरा/टीरा** समस्त परिवार, परिवार और उसका सामान; **~~ठाणा** सभी सामान उठाकर कूच करना; **~~बाँधणा** प्रस्थान की तैयारी करना; **~लदणा** पड़ाव उठना। **टाँडा** (हि.)

टाँड्डी (स्त्री.) 1. टाँड का छोटा रूप, 2. दीपक रखने का स्थान, 3. दीवार में बनी किवाड़-रहित छोटी अलमारी। **टाँडी** (हि.)

टाक (पुं.) 1. एक भंगी गोत, 2. (दे. टाँक[2]); (स्त्री.) खरोंच।

टाट[1] (स्त्री.) 1. चने के पौधे की फली जिससे चना निकलता है, 2. (दे. होळा[1]); **~भूनना** चने की टाट भूनना, होला बनाना।

टाट[2] (पुं.) 1. सन, पटसन आदि से बना मोटा कपड़ा, बोरी, 2. गोफन (गोपिया), गोफना।

टाटस (स्त्री.) दे. टाट[1]।

टाटा (पुं.) बड़ी टाटी।

टाट्टा (पुं.) सरकंडे, पूली द्वारा तैयार की गई आड़।

टाट्टी (स्त्री.) 1. बाँस आदि की फट्टियों से बनाई गई दीवार, 2. झोंपड़ी की दीवार, 3. झोंपड़ी का दरवाज़ा, 4. झोंपड़ी; **~की आड़ मैं सिकार खेल्हणा** छिपकर चाल चलना; **धोक्खे की~** कपट योजना; **~लाणा** भेदभाव बरतना। **टट्टी** (हि.)

टाड[1] (स्त्री.) बाहु में पहनने का गहना।

टाड[2] (स्त्री.) 1. साँड द्वारा निकाली जाने वाली ध्वनि, 2. ऊँचे स्वर में चीखने का भाव; (क्रि. स.) 'टाडणा' क्रिया का आदे. रूप; **~(-डूँ) अक लपकूँ** दुविधा में पड़ने की स्थिति; **~मारणा** 1. साँड द्वारा क्रोध की अवस्था में ध्वनि निकालना, 2. चुनौती देना, 3. क्रोध से चीखना।

टाडणा (क्रि. अ.) 1. साँड द्वारा क्रोध की अवस्था में ध्वनि निकालना, 2. बहुत ऊँची आवाज़ में बोलना; (क्रि. स.) ललकारना; (वि.) वह जो टाड निकाले। **टाडना** (हि.)

टाडल (वि.) 1. ज़ोर-ज़ोर से टाड निकालने वाला, 2. व्यर्थ की बकवास करने वाला।

टाप (स्त्री.) 1. सुम, खुर, 2. घोड़े के सुम से उत्पन्न शब्द, 3. कूद; (क्रि. स.) 'टापणा' क्रिया का आदे. रूप।

टापणा (क्रि. स.) 1. लाँघना, 2. घोड़े आदि द्वारा लाँघा जाना।

टापरा (पुं.) सिर, खोपड़ी।

टापू (पुं.) द्वीप, दे. दीप[1]।

टाब्बर (पुं.) 1. दाढ़ी-मूँछ आने से पहले की अवस्था का बालक, 2. बालक, 3. परिवार के अबोध सदस्य। **टाबर** (हि.)

टामक (पुं.) एक वाद्य यंत्र।

टामकी (स्त्री.) ढोलकी।

टार (पुं.) छोटे कद का टट्टू।

टारड़ा (पुं.) ऊँट का बच्चा, बोतड़ा।

टाळ (स्त्री.) 1. टहलाने का भाव, स्थगन, 2. नकारात्मक उत्तर, मनाही; (क्रि. स.) 'टाळणा' क्रि. का आदे. रूप; **~करणा/मारणा** 1. किसी काम को न करना, 2. निषेध करना।

टाल (स्त्री.) 1. बड़ी घंटी या टाली, 2. कोयले, लकड़ी आदि की दुकान।

टाळणा (क्रि. स.) 1. टहलाना, स्थगित करना, 2. निषेध करना, 3. समय बिताना, 4. आज्ञा-पालन न करना, 5. टरकाना, 6. गति देना–गींड्डो नैं थोड़ा उरे नै टाळ दे, 7. बाज़ी चुकाना; (वि.) वह जो टाले; **लंघी~** लघुशंका करना। **टालना** (हि.)

टालना (क्रि. स.) दे. टाळणा।

टाळमटोळ (स्त्री.) बहाना, टालने का भाव। **टालमटोल** (हि.)

टाळा (पुं.) मनाही।

टाली (स्त्री.) दे. टाल्ली।

टाल्ली (स्त्री.) 1. पशु के गले की घंटी, 2. मंदिर की घंटी; **~बजाणा** 1. मंदिर में मूर्ति-पूजा करना, 2. घंटी बजाना। **टाली** (हि.)

टाप्स (पुं.) कान की त्वचा के साथ चिपकने वाला आभूषण विशेष।

टिंडवाळणा (क्रि. स.) ढूँढ़ना, खोजना।

टिंडी (स्त्री.) 1. छोटे आकार का पेट (कौर.) 2. (दे. पींड्डी)।

टिकट (स्त्री.) 1. यात्रा-पत्र, 2. चुनाव आदि लड़ने का अधिकार-पत्र; **~कटाणा** 1. टिकिट लेना, 2. यात्रा की तैयारी करना, 3. परलोक सिधारना; **~काटणा** 1. हिसाब बेबाक़ करना, 2. चालू करना, गम करवाना, 3. मार डालना। **टिकिट** (हि.)

टिकड़ी (स्त्री.) 1. गोल और मोटी चिंदिया, 2. एक आभूषण, 3. छोटी टिकिया; **~बिंदी** 1. मस्तक का एक आभूषण, 2. बिंदिया, 3. शृंगार के साधन; **~~लाणा** शृंगार करना।

टिकणा (क्रि. स.) 1. स्थिर होना, 2. बैठना; (वि.) जो टिक सके। **टिकना** (हि.)

टिकना (क्रि. स.) दे. टिकणा।

टिकली (स्त्री.) दे. टिकड़ी।

टिकवाणा (क्रि. स.) 1. एक स्थान पर स्थापित करवाना, 2. पिटाई करवाना, 3. छोटे बच्चे को दफ़नवाना, 4. अँगूठा लगवाना, 5. सिर से मटका, गठरी आदि का भार उतरवाना, 6. बसाना, बसने में सहायता करवाना, 7. ठिकाने लगवाना। **टिकवाना** (हि.)

टिका (पुं.) 1. निर्वाह, 2. टिकने या ठहरने की क्रिया। **टिकाव** (हि.)

टिकाण (स्त्री.) 1. ठहराव, 2. ठहरने का पता या स्थान।

टिकाणा (क्रि. स.) 1. रखना, 2. लाठी जमाना, 3. अँगूठा लगाना, 4. हीनतम स्थिति में पहुँचाना। **टिकाना** (हि.)

टिकाणी (स्त्री.) गाड़ी की धुरी; **~पै टेकणा** 1. धर पटकना, 2. ठिकाने लगाना।

टिकाना (क्रि. स.) दे. टिकाणा।

टिकावर (पुं.) दे. टिकावल हार।

टिकावल हार (पुं.) कठले की आकृति का गले का एक आभूषण जिसमें रुपये पिरोए होते हैं।

टिकिया (स्त्री.) 1. टिक्की आदि, 2. बिंदी, 3. मोटी और छोटी कुछ कच्ची रोटी; **~बिंदिया** टिक्की-बिन्दी, साज-शृंगार।

टिकौड़ा (पुं.) गाहटे में गाहने से पूर्व जवार-बाजरे की पूलियों का चारों ओर लगा ढेर। दे. ढेह।

टिक्की (स्त्री.) दे. टिक्की।

टिटकारी (स्त्री.) 'टिट'-टिट' की ध्वनि

जो पशु को टहलाने के लिए की जाती है।

टिड्डा (पुं.) दे. टीड्डा।

टिड्डी (स्त्री.) दे. टीड्डी।

टिमकारी (स्त्री.) दे. टीप।

टिम-टिम (स्त्री.) 1. एक वाहन जिसमें पशु के स्थान पर मनुष्य जुतता है, फैशन गाड़ी, 2. हल्की घोड़ा गाड़ी।
टम टम (हि.)

टिमटिमाणा (क्रि.अ.) 1. मंद प्रकाश के साथ जलना, 2. रुक-रुक कर चमकना।
टिमटिमाना (हि.)

टिमटिमाना (क्रि.अ.) दे. टिमटिमाणा।

टिमाटर (पुं.) एक सब्जी, टमाटो।
टमाटर (हि.)

टिर (स्त्री.) 1. 'टिर' की ध्वनि जो भेड़-बकरियों के रेवड़ को हाँकने के लिए की जाती है, 2. चिढ़ाने के लिए प्रयुक्त ध्वनि।

टींगर (पुं.) 1. दे. जींगड़, 2. दे. जींगड़ी।

टींट[1] (पुं.) डेला, कैर या करील की झाड़ी पर गरमी के दिनों में फलने वाला गोल फल जो कच्चे रूप में हरा और पक कर कुछ नीला-लाल हो जाता है (इसका अचार डाला जाता है जो उदर रोग के लिए लाभप्रद होता है, जनध ारणा के अनुसार इसके सेवन से अन्य भूमि का पानी नहीं लगता), (दे. पीच्चू);~**बाड़वा** जंगली भोजन, टैंट आदि का भोजन, साधारण से साधारण भोजन; ~**खाणा** अत्यंत अभाव की स्थिति में रहना; ~**सा** क्षुद्र, तुच्छ। **टैंट** (हि.)

टींट[2] (पुं.) दे. **टींटवा**[1]।

टींटवा[1] (पुं.) ठोड़ी के नीचे गर्दन पर कुछ-कुछ उभरी हुई हड्डी; ~**दाबणा** गला घोंटना; ~**लीकड़णा** गर्दन की हड्डी आगे की ओर उभरना।
टेंटवा (हि.)

टींटवा[2] (पुं.) 'टींट[1]' का बहुवचन रूप; ~**झुकणा** अधिक मात्रा में टैंट लगना (यह अकाल का द्योतक है)।

टींट्टा (पुं.) कपास की डोडी।

टींड[1] (पुं.) निकला हुआ पेट, (दें. झेद)।

टींड[2] (पुं.) 1. दे. डोड्डी, 2. दे. टींट, 3. रहेंट की डोलची (कौर.)।

टींडसी (स्त्री.) कद्दू जाति की एक सब्जी, टिंडा; **रान्नी**~ जंगली टींडसी जिन पर लंबा रूआँ होता है; ~**सा पेट** गोल-मटोल छोटा पेट।

टींडा (पुं.) बाड़ी की डोडी।

टींड्डा (पुं.) दे. टींडसी।

टींड्डी (स्त्री.) 1. पेट, गोल-मटोल पेट, 2. टिंडा, 3. मक्खन का लौंदा।

टी (अव्य.) विवाहित लड़कियों के लिए पितृगृह में प्रयुक्त किया जाना वाला संबोधन का शब्द। तुल. हे।

टीक (वि.) दे. ठेठ।

टीकड़/टीक्कड़ (पुं.) 1. रोटी, मोटी रोटी, 2. गोल और मोटी रोटी जो सख़्त आटे को सीधा आग पर तपा कर बनती है, (दे. टीकड़ा); ~**खाणा /निगलना** अधिक भोजन खाना (व्यंग्य में प्रयुक्त); ~**सेकणा** रोटी बनाना, मोटी रोटी बनान (व्यंग्य में)।

टीकड़ा (पुं.) 1. सख़्त आटे से बनी मोटी और गोलाकार रोटी जो सीधे आग पर सेंक कर बनाई जाती है। [यह अधि कतर जौ, चने तथा गेहूँ के आटे की होती है, कुछ लोग इसे गरम राख

(भूभळ) में भी पकाते हैं], (दे. अँगाकड़ा), 2. तवे पर पकी अधकची टिकिया जो कुत्ते को डाली जाती है, 3. मोटी टिकिया या टिक्की; **~थापणा** टीकड़ा बनाना, मोटी रोटी बनाना; **भूब्भल में**~जल्दी में होने का भाव, बेगार का काम; **~ ~दाबणा** 1. बहुत जल्दी में होना, 2. बेग़ार काटना।

टीकड़ी (स्त्री.) 1. छोटी रोटी, 2. छोटी और मोटी रोटी जो कुत्ते के लिए बनाई जाती है, श्वान ग्रास, 3. टिकिया। **टिकड़ी** (हि.)

टीकला (वि.) जिसके माथे पर चितका हो, जिसके शरीर पर बड़े चितके हों; (पुं.) 1. तिलक, 2. बड़े आकार की बिंदिया, 3. माथे का एक आभूषण, टीका।

टीका (पुं.) दे. टीक्का।

टीक्का (पुं.) 1. तिलक, 2. सगाई पक्की करने के लिए मनोनीत वर को तिलक करने की प्रथा, 3. मस्तक का एक आभूषण, 4. चितका, चमड़ी का दाग़, 5. इंजैक्शन, 6. कुल की शोभा; (स्त्री.) ग्रंथ पर लिखी गई व्याख्या। **टीका** (हि.)

टीक्की (स्त्री.) 1. बिंदी, 2. छोटी टिकिया। **टीकी** (हि.)

टीड्डा (पुं.) 1. टिड्डी का नर, फ़सल को हानि पहुँचाने वाला परदार कीड़ा विशेष, 2. परदार कीड़ा। **टिड्डा** (हि.)

टीड्डी (स्त्री.) फ़सल को हानि पहुँचाने वाला परदार कीड़ा; **~दल** 1. टिड्डियों का झुंड या बादल, 2. भारी झुंड। **टिड्डी** (हि.)

टीन (पुं.) कनस्तर, पीपा; (स्त्री.) लोहे की चद्दर। **टिन** (हि.)

टीप (स्त्री.) 1. टेवा, जन्म-पत्री, कुंडली, 2. ईंटों के जोड़ों पर की जाने वाली मरम्मत, 3. नक़ल; (क्रि.स.) 'टीपणा' क्रिया का आदे. रूप; **~लिखवाणा/बणवाणा** जन्म कुंडली बनवाना; **~मिलाणा** जन्म-कुंडली मिलाना।

टीपणा (क्रि.स.) 1. नक़ल करना, 2. दीवार पर टीप करना, चित्रकारी करना; (वि.) नकलची। **टीपना** (हि.)

टीप्पस (स्त्री.) मेल-जोल, जान-पहचान; **~भिड़ाणा/लाणा** जान-पहचान करना।

टीबड़ी (स्त्री.) रेत का छोटा टीबा, टीला, थली।

टीबा (पुं.) दे. टीब्बा।

टीब्बा (पुं.) 1. रेत का ऊँचा ढेर, 2. थली, 3. गाँव, 4. वंश, कुल, 5. विध्वंसित स्थल; **~ऊठणा** 1. उजड़ना, 2. गाँव उजाड़ना, 3. कुल या वंश नष्ट होना; **~करणा** 1. काम बिगाड़ना, 2. नष्ट-भ्रष्ट करना, (दे. ऊँटमटील्ला); **~ठाणा** 1. भारी विनाश करना, 2. गाँव उजड़ना। **टीबा** (हि.)

टीमला (पुं.) 1. तिनका, तीली, सींक, 2. जलती हुई तीली; **~चासणा** तीली जलाना; **~लाणा/दिखाणा** आग लगाना।

टीरी (स्त्री.) साहस, हिम्मत–तेरी इतणी टीरी सै तै पहल्याँ झोळी क्यूँ पसारी थी।

टीरी-खाँ (पुं.) साहसी, वीर।

टीला (पुं.) दे. टील्ला।

टीली ली ली (स्त्री.) चिढ़ाने के लिए कहे जाने वाले शब्द, अँगूठा दिखा कर चिढ़ाने का भाव; **~करणा** चिढ़ाना, संकेत से चिढ़ाना; **~झर** चिढ़ाने के लिए कहे गए शब्द।

टील्ला (पुं.) 1. टीबा, 2. मिट्टी का पुरना ढेर, 3. प्राचीन नगरी के भग्नावशेष, 4. नगर, 5. ग्रीवा-ग्रंथि; **~बसणा** पुरानी बस्ती पर नई बस्ती बसना; **~होणा** बस्ती उजड़ना। **टीला** (हि.)

टीस (स्त्री.) 1. रह-रह कर उठने वाली पीड़ा, चसक, कसक, 2. तीव्र इच्छा, (दे. चीस); **~ऊठणा/लागणा/मारणा** 1. रह-रह कर पीड़ा होना, 2. आंतरिक इच्छा को पूर्ण करने के लिए तीव्र वेदना अनुभव करना।

टीँसणा (क्रि. अ.) टीस उठना, टीस लगना। **टीसना** (हि.)

टीसना (क्रि. अ.) दे. टीसणा।

टुंटा (वि.) दे. टूँड्डा।

टुइयाँ (स्त्री.) 1. वस्तु का क्षुद्र अंश, 2. गन्ने की छोटी पोरी, गनीरी, 3. कच्चा भुट्टा; (वि.) बौना, (दे. पिद्दी); **~सा** छोटा-सा।

टुक[1] (वि.) कम, स्वल्प; **~सा थोड़ा**-सा स्वल्प–1. अरै, मेरा भी टुकसा काम कर दें, 2. टुक सा-टुक सा करकै सारा घी साँपड़ग्या।

टुक[2] (स्त्री.) 1. आघात, चोट, खरोंच, 2. कलंक, लांछन; (क्रि. स.) 'टुकणा' क्रिया का आदे. रूप; **~लागणा** 1. वस्त्र का किसी स्थान से कटना, 2. चरित्र पर कलंक लगना; **~होणा** चरित्र-दोष होना।

टुकटुकी (स्त्री.) 1. धीरे-धीरे मारी गई चोट, 2. (दे. टकटकी)।

टुकटेरा (पुं.) भिखारी; (वि.) लज्जाहीन।

टुकड़-खोर (पुं.) 1. भिखारी, 2. अन्य के टुकड़ों के बल पर जीने वाला।

टुकड़ा (पुं.) 1. भाग, अंश, 2. रोटी का कुछ भाग, 3. रोटी, भोजन, 4. कपड़े का कुछ अंश, 5. भूमि का कुछ भाग, खेत, छोटा खेत, 6. (दे. टूक), 7. लालच के लिए दी गई वस्तु; **~खोसणा** रोजी छीनना; **~गेरणा/फेंकणा** लालच देना; **~मिलणा** अपमान का भोजन मिलना।

टुकड़ी (स्त्री.) 1. सेना के कुछ सिपाहियों का समूह, जत्था, 2. छोटा खेत, 3. छत पर डालने के काम आने वाली छोटी सिल्ली या कड़ी 4. छोटा टूक।

टुकणा (क्रि. अ.) बर्तन आदि पर खरोंच पड़ना; (क्रि. स.) 1. टोका जाना, 2. नज़र लगना; (वि.) वह जिस पर शीघ्र खरोंच पड़े।

टुकर-टुकर (क्रि. वि.) ललचाई नजरों से देखने का भाव; **~करणा** 1. मन ललचाना, 2. मन में लालच होना, आशंका होना; **~लखाणा/देखणा** 1. ललचाई नजरों से देखना, 2. घूर कर देखना।

टुकल्लो (पुं.) दे. टूक।

टुकसा (वि.) अल्प मात्रा में।

टुकेक (क्रि. वि.) थोड़े समय के लिए–टुकेक ठहर ज्या।

टुग्गा (पुं.) खेल के कंकड़, (दे. कंटू)।

टुच्चा (वि.) 1. हीन आचरण वाला, हीन भाव रखने वाला, 2. अनुदार, 3. तुच्छ।

टुटाती (वि.) 1. टोटे वाला, 2. कम पूँजी वाला, 3. कंजूस।

टुटैत (वि.) दे. टुटाती।

टुनटुणाणा (क्रि. स.) 1. टनटनाना, 2. 'टुन'-'टुन' की ध्वनि निकालना, 3. माथा ठनकाना। **टुनटुनाना** (हि.)

टुनटुनाना (क्रि. स.) दे. टुनटुणाणा।

टुराणा (क्रि. स.) 1. ठोकर या धक्का मारकर हिलाना या आगे करना, 2. टोर मारना, गेंद को लकड़ी से धकेलना, (दे. टोर मारणा)।

टुळकणा (क्रि. अ.) 1. अपने आप टूटना, फल आदि के पकने पर स्वयं पौधे से अलग होना, 2. चुपके से खिसकना, टालना, 3. शनैः शनैः चलना, 4. मरना; (वि.) शीघ्र टुलकने या पौधे से अलग होने वाला फल; **कचरी~** कचरी पकने पर बेल से स्वयं अलग होना।

टुलकाणा (क्रि. स.) 1. टहलाना, धीरे से आगे धकेलना, 2. बहका कर टहला देना, 3. चोरी करना, खिसकाना।

टूंड (पुं.) 1. सूखा हुआ ठूँठ, 2. खंडित अंश, (दे. ठूँठ), 3. खंडित अंग।

टूंडकणा (पुं.) 1. हैंडिल, 2. बच्चों की तख्ती का पतला नुकीला हैंडिल, 3. ढक्कन को उठाने के लिए लगाया हैंडिल; **~सा** छोटा-सा, छोटे क़द का।

टूंडळिया (वि.) दे. टूँड्डा।

टूँड्डा (वि.) 1. जिसका हाथ या हाथ का अंश कट गया हो, लूला 2. टूटे सींग वाला (पशु)।

टूँड्डी (स्त्री.) नाभि; (वि.) लूली, भंग अंग वाली।

टूँब (पुं.) दे. टूम।

टूक (पुं.) 1. टुकड़ा, खंड, 2. रोटी, रोटी का टुकड़ा, 3. जूठन, 4. रस्सी का टुकड़ा; **~घालणा** 1. रोटी बनाना, 2. भिक्षा देना; **~टूक नैं तरसणा** रोटी के लाले पड़ना; **दो~** स्पष्ट उत्तर; **~मळाई** 1. रोटी और मलाई का भोजन, 2. बच्चों के तीसरे पहर का भोजन।

टूट (स्त्री.) 1. व्यापार या सौदे में हानि, 2. फूट, फूट पड़ने का भाव, 3. कटने या टूटने का भाव, 4. टूटी या खंडित वस्तु; (क्रि. अ.) 'टूटणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पड़णा** 1. धावा बोलना, 2. भूख के कारण भोजन पर झपटना, 3. फूट पड़ना, 4. टूट कर गिर पढ़ना।

टूटणा (क्रि. अ.) 1. भंग होना, 2. दूसरे पक्ष में मिलना; (वि.) 1. जो शीघ्र टूट जाए, 2. पंगु। **टूटना** (हि.)

टूटना (क्रि. अ.) दे. टूटणा।

टूटफूट (स्त्री.) 1. रख-रखाव से होने वाली कमी या हानि, 2. टूटी-फूटी वस्तु।

टूटा (वि.) दे. टूट्टा।

टूट्टा (वि.) दे. टूँड्डा।

टूट्टी (स्त्री.) मृत्यु। उदा. टूटी कै बूटी नहीं। दे. ठूट्ठी।

टूणा (पुं) जादू-टोना; **~टुणमुण** जादू-टोना; **~धरणा** चौराहे पर जादू-टोना करना या रखना; **~मारणा** जादू करना, जंत्र-तंत्र करना। **टोना** (हि.)

टूम (स्त्री.) आभूषण, तुल. कील-काँटा (संकेत में प्रयुक्त); **~-छल्ली/-ठेकरी** आभूषण आदि।

टूरणा (क्रि.) जाना।

टूल (स्त्री.) 1. एक प्रकार का उत्तम वस्त्र, 2. नींद की झपकी–पढत्याँ- पढत्याँ थोड़ी टूलसी आ गी थी मैं सो नहीं रह्या, 3. मोहित होने का भाव; (क्रि. अ.) 'टूलणा' क्रिया का आदे. रूप।

टूलणा (क्रि. अ.) 1. धीरे-धीरे हिलना, 2. झपकी आना, 3. लट्टू होना, 4. दीपक की लौ का धीरे-धीरे हिलना, 5. लट्टू का धीमी गति से घूमना; (वि.) वह जो शीघ्र टूले। **टूलना** (हि.)

टूस्सा (पुं.) तिनका, सींख; **~तोड़णा** 1. तिनका तोड़ना, 2. गुदा में तिनका या अंगुली डालना।

टूस्सी (स्त्री.) आक की डोडी, डोडी।

टूह्लणा (क्रि. अ.) दे. टूलणा।

टूही (स्त्री.) दे. टूस्सी।

टेंट (पुं.) दे. टींट।

टेंटुआ (पुं.) दे. टींटवा[2]।

टें-टें (स्त्री.) दे. टैं-टैं।

टेक (स्त्री.) 1. वह लकड़ी जो छत, दीवार या अन्य भारी वस्तु को गिरने से बचाए रखने के लिए लगाई गई हो, 2. गाड़ी की टेक, 3. सहयोग, सहायता, 4. सहारा, आश्रय, 5. हठ, 6. प्रण, 7. आदत, 8. गीत का पहला पद, 9. टीला, 10. सम्मान; **~राखणा** 1. इज्जत रखना, 2. भगवान की कृपादृष्टि होना; **~लाणा** गिरती हुई छत या दीवार के नीचे लकड़ी का सहारा लगाना।

टेकड़ा (पुं.) 1. उभरा हुआ स्थल, जमी हुई मिट्टी का टीला, 2. जल या स्थल में सामान्य तल से उठा हुआ भू-भाग, 3. ऊजड़ खेड़ा; **~ऊठणा/ लीकड़णा** 1. जल का स्तर कम होने के कारण बीच-बीच में स्थल दिखाई देना; 2. आँधी के कारण टेकड़ा बनना; **~बसणा** ऊजड़ खेड़ा पुनः बसना।

टेकड़ी (स्त्री.) छोटा टेकड़ा, (दे. टेकडा)।

टेकणा (क्रि. स.) 1. टिकाना, 2. धीरे से भूमि पर रखना, 3. सिर का बोझा उतार कर रखना, 4. लाठी या थप्पड़ से मारना, पीटना, 5. पछाड़ना। **टेकना** (हि.)

टेकना (क्रि. स.) दे. टेकणा।

टेक्की (स्त्री.) दे. टेक; (क्रि. स.) 'टेकणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

टेड्डा (पुं.) 1. छोटी कड़ी, 2. हाथ का एक आभूषण, 1. (दे. टाड[1]), 2. (दे. टोड्डा)।

टेगिया (पुं.) सब्जी आदि पकाने का पात्र। दे. डेगची।

टेड्ढा (वि.) 1. वक्र, तिरछा, 2. कठिन (कार्य), 3. कुटिल, 4. (दे. बाँक्का); **~चालणा** वक्रगति अपनाना; **~पड़णा** 1. उग्र रूप धारण करना, 2. अनुमान से उलट निकलना 3. आड़े लेटना; **~-मेड्ढा** टेढ़ा-मेढ़ा, वक्र। **टेढ़ा** (हि.)

टेड्ढी (वि.) 1. तिरछी, 2. कुटिल; (स्त्री.) (दे. बाँक्की); **~खीर** कठिन काम, जटिल समस्या। **टेढ़ी** (हि.)

टेढ (स्त्री.) 1. टेढ़ापन, तिरछापन, 2. वक्रता, वक्र-व्यवहार; **~काढणा** 1. अकड़ निकालना, 2. वस्तु का टेढ़ापन निकालना।

टेढ़ा (वि.) दे. टेड्ढा।

टेम (पुं.) समय, घड़ी के अनुसार समय। **टाइम** (हि.)

टेर (स्त्री.) 1. पुकार, 2. विनय, प्रार्थना; (क्रि. स.) 'टेरणा' क्रिया का आदे. रूप; **~करणा** सहायता के लिए निवेदन करना; **~लाणा** 1. हठ करना, 2. बार-बार सहायता के लिए अनुरोध करना।

टेरणा[1] (क्रि. स.) पुकारना, सहायता के लिए पुकारना। **टेरना** (हि.)

टेरणा[2] (पुं.) अटेरन, सूत अटेरने का यंत्र; (क्रि. स.) सूत को अटेरन पर चढ़ाना या अटेरना। **अटेरना** (हि.)

टेरना (क्रि. स.) दे. टेरणा[1]।

टेरवा (पुं.) 1. हुक्के का वह भाग जिस पर चिलम रखी जाती है, 2. छाज के नीचे

का एक डंडा।

टेरुआ (स्त्री.) 1. एक अनुसूचित जाति, 2. (दे. टेरवा)।

टेरुआ (पुं.) दे. टेरणा[2]।

टेलिग्राम (पुं.) तार से भेजी हुई ख़बर।

टेलिफून (पुं.) दूरभाष। **टेलिफोन** (हि.)

टेलिविजन (पुं.) दे. टेल्लीवीज्जन।

टेल्लीवीज्जन (पुं.) दूरदर्शन, दूरदर्शन यंत्र। **टेलिविजन** (हि.)

टेवटा (पुं.) 1. जन्मपत्री, 2. दे. ट्यावठा।

टेवा (पुं.) दे. टीप।

टेवीं (पुं.) छोटी नस्ल का मुर्गा। दे. घाघस।

टेस्सू (पुं.) पलाश, (दे. ढाक)।

टेह (स्त्री.) दे. टेह-मोड्डी।

टेह-मोड्डी (स्त्री.) एक पक्षी, फाख़्ता पक्षी।

टेहला (पुं.) विवाह आदि शुभ अवसर पर संपन्न कृत्य; **नेग~** विवाह आदि के शुभ अवसर पर संपन्न कृत्य।

टेहेर (स्त्री.) दे. आर टेहेर।

टैंट (स्त्री.) दे. टाँट; (पुं.) दे. टींट।

टैं-टैं (स्त्री.) 1. व्यर्थ की ध्वनि, 2. तोते की आवाज़।

टैणी (वि.) छोटे क़द का, बौना। **टैनी** (हि.)

टैर (पुं.) टायर।

टैल (स्त्री.) टाइल। दे. टहल।

टोंट (स्त्री.) ताश का एक खेल; (पुं.) दे. ट्योंट।

टोई (स्त्री.) गन्ने की सबसे ऊपर की गँडेरी जो कच्ची और कम मीठी होती है, (दे. टोरी); (वि.) बौना।

टोक (स्त्री.) 1. रोकने-टोकने का भाव, रोक, 2. नज़र लगने का भाव, बुरी दृष्टि से देखने का प्रभाव, 3. निषिद्ध कार्य, वर्जित बात; (क्रि. स.) 'टोकणा' क्रिया का आदे. रूप; **~करणा** 1. नज़र लगाना, 2. मनाही करा; **~लाणा** 1. टोक करना, 2. गली में पड़े चोथ या गोबर पर पैर का चिह्न लगाना (ताकि उसे अन्य न उठाए); **~होणा** 1. नज़र लगना, 2. मनाही होना।

टोकणा (पुं.) पीतल या धातु का बड़ा जलपात्र, बंटा (जिसमें मुख्यतः खीर बनाई जाती है); (वि.) जो हर बात पर टोके; (क्रि. स.) रोकना, मनाही करना; **~चढाणा** सामूहिक खाने-पीने का आयोजन करना। **टोकना** (हि.)

टोकणी (स्त्री.) 1. पानी भरने के काम आने वाला पीतल या धातु का पात्र, 2. दोहनी, दोहिनी; (वि.) 1. अधिक रोक-टोक करने वाली, 2. जिसकी नज़र शीघ्र लगे। **टोकनी** (हि.)

टोकना (क्रि. स.) दे. टोकणा; (पुं.) दे. टोकणा।

टोकरा (पुं.) टहनियों से बना भूसा डालने के काम आने वाला पात्र।

टोकस (पुं.) एक जाट गोत।

टोकसा (वि.) छोटा, (दे. टुकसा); **~(-सी) सा अंबर लागणा** बात का महत्त्व न समझना, अंबर के विस्तार को भी महत्त्व न देना।

टोक्का (वि.) 1. टोकने वाला, वह जो टोके, 2. जिसकी नज़र शीघ्र लगे। **टोका** (हि.)

टोटका[1] (पुं.) टोना, (दे. लटोटका)।

टोटका[2] (पुं.) 1. सूत्र, 2. सूक्ति का अंश, (कौर.)।

टोटा (पुं.) दे. टोट्टा।

टोट्टा (पुं.) कमी, अभाव, (दे. तोड़ा); **~बिरड़ाणा** निपट निर्धनता होना। **टोटा** (हि.)

टोठा (पुं.) दे. ट्यावठा।

टोडर (पुं.) कोटर, खोह, पेड़ के तने का खोखला भाग।

टोडी (स्त्री.) दे. टोट्डी।

टोडी-पट्टी (स्त्री.) एक कतार सीधी और दूसरी लंबवत ईंटों की चिनाई।

टोड्डा (पुं.) 1. छज्जे के नीचे लगने वाली विशेष आकार में घड़ी गई सिल्ली, 2. सहायता, सहयोग, सहारा–तूँ के न्यारा एक टोड्डा लावैघा। **टोडा** (हि.)

टोड्डी (वि.) 1. खुशामदी, 2. हीन स्वभाव का, 3. अंग्रेजी शासन-काल में अंग्रेज़ों का पक्ष लेने वाला (व्यक्ति), 4. शासक की जी हजूरी करने वाला, 5. गद्दार; (स्त्री.) छोटा टोडा, (दे. टोड्डा)। **टोडी** (हि.)

टोणहाई (स्त्री.) जादू-टोना करने वाली, जादूगरनी।

टोना (पुं.) दे. टूणा।

टोप (पुं.) 1. अंग्रेज़ी हैट, 2. बड़ा टोपा; **~लाणा** 1. अंग्रेजी टोप पहनना, 2. बाबू बनना।

टोपरा (पुं.) 1. भूसा आदि डालने के काम आने वाला लकड़ी की खपच्चियों से बना पात्र, 2. गंदा या अपवित्र पात्र। **टोकरा** (हि.)

टोपा (पुं.) दे. टोप्पा।

टोपिआ (पुं.) (सब्ज़ी बनाने के काम आने वाला) धातु का पात्र जो खुले मुँह का होता है, भगोना।

टोपी (स्त्री.) दे. टोप्पी।

टोप्पा (पुं.) 1. टपका, बूँद–भैंस तळै टोप्पा दूध भी कोन्या, 2. टोपा, 3. गोपुर। **टोपा** (हि.)

टोप्पी (स्त्री.) 1. गांधी टोपी, 2. चोटी, 3. वस्तु का ऊपरी भाग; **~तारणा** 1. इज्ज़त लूटना, 2. सम्मान प्रदर्शित करना। **टोपी** (हि.)

टोब्भा (पुं.) 1. टपका, क़तरा, 2. स्याही का टपका; **~भरणा** दवात में कलम डुबोकर निकालना।

टोभ (स्त्री.) 1. ठभक, आँख में लगी हल्की चोट, (दे. खोभ), 2. चाल।

टोर (पुं.) 1. गेंद पर लगने वाला आघात, 2. चोट, आघात; **~मारणा/लाणा** गेंद को लकड़ी या पैर के आघात से धकेलना या उछालना।

टोरड़ा (पुं.) 1. दे. टारड़ा, 2. दे. कंकड़।

टोरणा (क्रि. स.) 1. टोर मारना, 2. चलाना, सरकाना।

टोरवा (पुं.) गेरुआ, अंगुली का तीसरा भाग, पोर; (वि.) छोटे क़द का, बौना।

टोरी (स्त्री.) गन्ने की कच्ची पोरी या गँडेरी, 1. (दे. टोई,) 2. (दे. पोरी)।

टोल (पुं.) दे. टोळ।

टोळ (पुं.) 1. टोल, टोली, समूह, 2. मोटा टोला, (दे. टोळा); **~करणा** 1. समूह बनाना, 2. पंचायत बुलाना, 3. भीड़ इकट्ठी करना; **~होणा** 1. पंचायत होना, 2. भीड़ इकट्ठी होना।

टोला (पुं.) दे. टोळा।

टोळा (पुं.) 1. समूह, एक वर्ग या जाति के लोगों का समूह, 2. मोटे आकार की कौड़ी, 3. गुम चोट लगे स्थान पर उभरा भाग; **~ऊठणा/होणा** 1. चोट

के स्थान पर उभार होना, 2. खून की ग्रंथि बनना; **~दाबणा** चोट के उभरे हुए स्थान को दबाना ताकि खून एक स्थान पर न जमे; **~-सी आँख** मोटी मोटी आँखें।

टोली (स्त्री.) दे. टोळी।

टोळी (स्त्री.) 1. मंडली, 2. मित्र-मंडली, 3. छोटी कौड़ी। **टोली** (हि.)

टोल्ला (पुं.) 1. अंगुली से सिर पर की जाने वाली चोट, पक्षी की चोंच से सिर पर मारा गया आघात; **~बी नाँ मारणा** 1. रंचमात्र काम भी न करना, 2. काम से टलना।

टोह[1] (स्त्री.) तलाश, खोज; **~पड़णा/ होणा** 1. तलाश या खोज होना, 2. जाँच-पड़ताल होना; **~लेणा** 1. खोज-बीन करना, 2. चोरी करने से पूर्व चोरों द्वारा खोज-बीन किया जाना, 3. जासूसी करना।

टोह[2] (स्त्री.) खोज।

टोहणा (क्रि. स.) 1. तलाश करना, 2. टटोलना 3. मन का भेद लेना। **टोहना** (हि.)

टोहळक (स्त्री.) 1. छिपने का स्थान, गुप्त स्थान, 2. तलाश, 3. जान- पहचान का स्थान; **~देखणा** 1. छिपने का स्थान तलाश करना, 2. परिचय निकालना; **~लाणा** परिचय निकालना।

ट्याँ-ट्याँ (स्त्री.) 1. टाँय-टाँय की ध्वनि, 2. व्यर्थ का शोर, 3. बालक के रोते समय उत्पन्न ध्वनि।

ट्यावठा (पुं.) 1. धूप, 2. सरदी की धूप; **~आणा/लीकड़णा** धूप निकलना; **~(-ठे) मैं बैठणा/ सेकणा** धूप तापना।

ट्योंट (पुं.) लठ, लाठी, टेढ़ी-मेढ़ी लाठी; **~चालणा** लाठी चलना; **~मारणा/ सेकणा** 1. लाठी से आघात करना, 2. कौए द्वारा चोंच मारकर आघात करना।

ट्योंट्टी (स्त्री.) दे. टूट्ठी।

ट्योंडी (स्त्री.) खाँड की गोल टिक्की, (कौर.)।

ट्रंक (पुं.) दे. संदूक।

ट्राम (स्त्री.) बिजली से चलने वाली एक प्रकार की गाड़ी जो रेल के समान दो पटरियों पर चलती है।

ठ

ठ हिंदी वर्णमाला का बारहवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है, हरियाणवी में इसका उच्चारण मूर्द्धा और तालु के बीच का है।

ठँ-ठँ (स्त्री.) 1. धातु के बजने से उत्पन्न ध्वनि, 2. ठिनकने का शब्द; **~करणा** ठिनकना।

ठंड (स्त्री.) सरदी, (दे. सीळक)

ठंडा (पुं.) 1. शीतल, 2. (तुल. सीळा)।

ठंढक (स्त्री.) जाड़ा। **ठंडक** (हि.)

ठंढा (वि.) दे. ठंडा।

ठंढाई (स्त्री.) शरीर को ठंडा रखने के लिए गर्मियों में प्रयुक्त ओषधि-युक्त पेय। **ठंडाई** (हि.)

ठई (स्त्री.) 1. स्थान, स्थान जहाँ कारीगर बैठ कर काम करता है, 2. (दे. ठोड़), 3. (दे. ठहिया); **~ठिकाणा** मिलने का अता-पता।

ठक (स्त्री.) 1. ठोकते समय उत्पन्न ध्वनि, 2. धीमी चोट–ठक-ठक सुनार की, एक्कै चोट लुहार की।

ठकठकाणा (क्रि. स.) 1. दरवाज़ा खटखटाना, 2. बात को कुरेद-कुरेद कर पूछना, 3. परखना, रुपये आदि को परखना। **ठकठकाना** (हि.)

ठकठकाना (क्रि. स.) दे. ठकठकाणा।

ठकरा (पुं.) दे. अळगोड्डा। तुल. ठकड़ा।

ठकुरसुहाती (स्त्री.) 1. चापलूसी, 2. मिथ्या प्रशंसा।

ठकुराइन (स्त्री.) दे. ठाकराणी।

ठकुराई (स्त्री.) दे. ठुकराई।

ठग (पुं.) धोखेबाज व्यक्ति, ठगने वाला।

ठगणा (क्रि. स.) छल या चालबाज़ी से लूटना; (वि.) ठग। **ठगना** (हि.)

ठगणी (वि.) 1. ठगने वाली, 2. मोहित करने वाली; (स्त्री.) 1. माया, 2. ठग की पत्नी। **ठगनी** (हि.)

ठगना (क्रि. स.) दे. ठगणा।

ठगनी (वि.) दे. ठगणी।

ठगवाणा (क्रि. स.) दूसरे से धोखा दिलवाना।

ठगबिद्या (स्त्री.) ठगाई, ठगी, ठगने की विद्या।

ठगाई (स्त्री.) दे. ठग्गी।

ठगिया (वि.) दे. ठगोरिया।

ठगी (स्त्री.) दे. ठग्गी।

ठगोड़ा/ठगोरा (पुं.) दे. ठग।

ठगोरिया (वि.) ठग।

ठग्गा बग्गी (स्त्री.) जालसाजी, धोखेबाजी।

ठग्गी (वि.) ठग, ठगने वाला; (स्त्री.) ठगी, ठगने का कार्य।

ठट्ठ (पुं.) 1. भीड़, झुंड, 2. लोगों का समूह; **~उमड़ाण** भीड़ उमड़ना; **~रुपणा** भीड़ होना, भीड़ उमड़ना; **~रोपणा** भीड़ इकट्ठी करना। **ठठ** (हि.)

ठट्ठा (पुं.) हँसी-मज़ाक, उपहास।

ठठ (पुं.) दे. ठट्ठ।

ठठकणा (क्रि. अ.) 1. स्तब्ध होना, 2. झिझकना, 3. ठिठुरना। **ठिठकना** (हि.)

ठठकना (क्रि. अ.) दे. ठठकणा।

ठठड़ी/ठठरी (स्त्री.) हड्डियों का ढाँचा।

ठठेरा (पुं.) बर्तन बनाने या गढ़ने वाला, कसेरा।

ठठोली (स्त्री.) दे. ठठोळी।

ठठोळी (स्त्री.) हँसी-मज़ाक; **~लागणा** हँसी-मज़ाक सूझना। **ठिठोली** (हि.)

ठड (वि.) उजड्ड, गँवार; **~आदमी** उजड्ड व्यक्ति; **~बोल्ली** उजड्ड या गँवारू बोली; **मुँह~** 1. मुँह के सामने खरी-खोटी कहने वाला, 2. उजड्ड।

ठड्डा (पुं.) धक्का; **~(-डे) मारणा** धक्के देकर बाहर निकालना, धक्के मारना।

ठण (स्त्री.) जिद।

ठणकणा (क्रि. अ.) माथा चढ़ाकर रोना; (वि.) वह जो ठिनके। **ठिनकना** (हि.)

ठणणा (क्रि. अ.) आमना-सामना होना, 2. शत्रुता उत्पन्न होना। **ठनना** (हि.)

ठणाठण (स्त्री.) 1. ठनठन की आवाज़, 2. गोली चलते समय उत्पन्न ध्वनि।

ठनकना (क्रि. अ.) दे. ठणकणा।

ठन-ठन (स्त्री.) दे. ठँ-ठँ।

ठनठन गुपाल (पुं.) निर्धन मनुष्य। **ठनठन गोपाल** (हि.)

ठनना (क्रि. अ.) दे. ठणणा।

ठप्प (पुं.) गत्यवरोध; (स्त्री.) 'ठप' की ध्वनि।

ठप्पा (पुं.) 1. मोहर, 2. चिह्न, 3. किसी संस्था का चिह्न, 4. छाया; **~मारणा** 1. विशेष चिह्न या संकेत लगाना, 2. स्वीकृति देना।

ठमक (स्त्री.) ठुमकने या ठुमका लगाने की क्रिया। **ठुमक** (हि.)

ठमक-ठमक (क्रि. वि.) ठुमक-ठुमक कर।

ठमरणा (क्रि. अ.) धीमे-धीमे चलना, मस्ती से चलना।

ठया (पुं.) दे. ठीहा।

ठरक (स्त्री.) चस्का।

ठरकी (वि.) जिसे (नशा करने का) चस्का पड़ गया हो, नशेबाज।

ठरड़ (वि.) 1. स्वस्थ, 2. चुस्त, उदा.–सदा ठरड़ रहो।

ठरणा (क्रि.) दे. ठिरणा।

ठररा (पुं.) देशी शराब। **ठर्रा** (हि.)

ठराहणा (क्रि. स.) दे. ठहराणा।

ठरास (स्त्री.) 1. ठहरने का समय, 2. ठहरने का भाव।

ठल्ला (पुं.) मजाक, दे. ठट्ठा।

ठवाणा (क्रि. स.) 1. उठवाने में सहायता करना, 2. चोरी करवाना। **उठवाना** (हि.)

ठस (स्त्री.) 1. गाढ़े पदार्थ के पकते समय बुलबुले फूटने से उत्पन्न ध्वनि, 2. 'ठस'-'ठस' की ध्वनि, 3. अपशब्द, पाद; **~ठस करणा** 1. पकते समय ठस-ठस की ध्वनि निकलना, 2. ठिनकना।

ठसक (स्त्री.) 1. धसक, 2. बिना बलगम की खाँसी, सूखी खाँसी, 3. अकड़, 4. ठसकने का भाव।

ठसका (पुं.) 1. 'ठस'-'ठस' करके पकने की क्रिया, 2. (दे. टसका)।

ठसकी (पुं.) ठरकी।

ठसाठस (क्रि. वि.) ठूँस-ठूँस कर भरा हुआ; (स्त्री.) 'ठस'-'ठस' की ध्वनि; **~भरणा** 1. ठूँसकर भरना, 2. भीड़ इकट्ठी होना।

ठहरणा (क्रि. अ.) 1. रुकना, गति में न होना, 2. प्रतीक्षा करना, 3. किसी के यहाँ रुकना, 4. गर्भ रहना, 5. कुछ दिन काम करने के लायक रहना, 6. धीरज रखना, 7. सौदा निश्चित होना, 8. संबंध आदि निश्चित होना–तूँ मेरा फुफेरा भाई ठहर्या। **ठहरना** (हि.)

ठहरना (क्रि. अ.) दे. **ठहरणा**।

ठहरा (पुं.) 1. रुकने का भाव या क्रिया, 2. कुछ समय का विश्राम–मेरा आज इत ठहरा होणा मुसकल सै, 3. निश्चय, निर्धारण–भा-ता (भाव-ताव) का ठहरा करकै साई (दे.) ले ले। **ठहराव** (हि.)

ठहराई (स्त्री.) 1. निश्चित या निर्धारित करने का भाव –भा-ता की ठहराई हो तै बात बणै, 2. मजदूरी (निश्चित की हुई), 3. निवास काल। **ठहराव** (हि.)

ठहराणा (क्रि. स.) 1. रोकना, गतिहीन अवस्था में करना, 3. भाव-ताव निश्चित करना, 3. चलते काम को रोकना, 4. गाभिन करना, गर्भवती करना। **ठहराना** (हि.)

ठहराना (क्रि. स.) दे. ठहराणा।

ठहराव (पुं.) दे. ठहरा।

ठहाका (पुं.) दे. ठहाक्का।

ठहाक्का (पुं.) ज़ोर-ज़ोर से हँसने की ध्वनि; **~ऊठणा** ज़ोर-ज़ोर से हँसी की

आवाज़ आना; **~मारणा** खिल-खिलाकर हँसना। **ठहाका** (हि.)

ठहिया[1] (पुं.) कारीगर का काम करने का स्थान या स्थल; **ठोड़~** काम करने या रोज़गार का स्थान।

ठहिया[2] (पुं.) 1. गन्ना पेरने के कोल्हू के दोनों ओर गाड़े गए लट्ठे। दे. ठहिया, 2. (पुं.) इस स्थान पर बैठकर काम करने वाला। दे. ठीहा।

ठही (स्त्री.) 1. स्थान, उचित स्थान, 2. किसी वस्तु के प्राप्त होने का निश्चित स्थान; **~ठिकाणा** 1. निश्चित स्थान, 2. वास-स्थान।

ठह्या (पुं.) दे. ठीहा।

ठाँ-ठाँ (स्त्री.) 1. ठाँय-ठाँय की ध्वनि, 2. गोली चलते समय उत्पन्न ध्वनि।

ठाँस (पुं.) 1. फाँस, काँटा, 2. बाँस आदि का बहुत बारीक किनारा, (दे. सळी); **~चुभणा/चालणा** लकड़ी या काँटे की बारीक सळी (दे.) चुभना।

ठाँसरा (पुं.) सरसों या सनी के पौधे का डंठल।

ठाईगीर (पुं.) दे. उठाईगीर।

ठाईस (पुं.) अठाईस की संख्या। **अठाईस** (हि.)

ठाकराणी (स्त्री.) 1. नाइन, 2. ठाकुर की पत्नी, 3. क्षत्राणी। **ठकुराइन** (हि.)

ठाकरी (स्त्री.) 1. सेवा, 2. गुलामी, 3. प्रधानता, सरदारी।

ठाकुर (पुं.) दे. ठाक्कर।

ठाकुरद्वारा (पुं.) दे. ठाक्कर दवारा।

ठाक्कर (पुं.) 1. नाई, 2. बैरागियों की एक जाति, 3. एक चौहान जाति, 4. देवता, 5. विष्णु के अवतारों की मूर्ति, 6. स्वामी। **ठाकुर** (हि.)

ठाक्कर दवारा (पुं.) मंदिर, वह मंदिर जिसमें विष्णु के अवतारों की मूर्तियाँ हों। **ठाकुरद्वारा** (हि.)

ठाट्ठी (वि.) 1. ठाठ-बाट से रहने वाला, 2. शौकीन, 3. प्रसन्न चित्त, 4. (दे. धाड़ी)। **ठाठी** (हि.)

ठाठ (पुं.) 1. आनंद, प्रसन्नता का समय, 2. सभी प्रकार की तृप्ति का भाव; **~होणा** सब प्रकार के आनंद होना। **ठाट** (हि.)

ठाठ-बाट (पुं.) 1. हर प्रकार की संतुष्टि, 2. सजावट। **ठाटबाट** (हि.)

ठाठा (पुं.) दे. गोरा।[1]

ठाठिआ (पुं.) दे. डालड़ी।

ठाठिया (पुं.) कागज की लुगदी से बना एक पात्र।

ठाडा (वि.) दे. ठाड्ढा।

ठाड्डा (वि.) 1. शक्तिशाली, तगड़ा– ठाड्ढा मारै रोवण दे ना, 2. मज़बूत, दृढ़, 3. समूचा, संपूर्ण– झोड़ ठाड्ढा भर्‌या सै; **~भरणा** संपूर्ण भरना।

ठाड्ढी (वि.) 1. तगड़ी, बलवती–हरियाणे की गा ठाड्ढी हूँ सै, 2. संपूर्ण, पूरी, जैसे–ठाड्ढी ठोकना (पूरी भरना); **~छात्ती करणा** हिम्मत से काम लेना; **~पड़णा** 1. महँगी पड़ना, हानि देना, 2. ग्रह आदि भारी पड़ना।

ठाड्ढू (क्रि. वि.) 1. ऊँचे स्वर में, ज़ोर-ज़ोर से, 2. ज़बरदस्ती से; **~कहणा** सबको सुना कर कहना, ऊँचे स्वर में बोलना; **~ठाढ** जबरदस्ती से; **~बोलणा** 1. क्रोध में भर कर बोलना, 2. ऊँचे स्वर में बातचीत करना, 3. डराने की मुद्रा में बोलना।

ठाढ (स्त्री.) 1. शक्ति, ताक़त, बल, 2. जबरदस्ती, 3. श्रेष्ठता, 4. अकड़,

5. हौसला, 6. दुस्साहस; **~दिखाणा** 1. मुक़ाबला करना, 2. ज़बरदस्ती करना, 3. शक्ति का प्रदर्शन करना; **~मानणा** किसी से डर कर रहना; **~राखणा** अकड़ रखना; **~होणा** मुक़ाबला करने का बल होना।

ठाढला (वि.) 1. बलवान, 2. साहसी, 3. सामना करने वाला, 4. हिमायती; (पुं.) स्वामी, पति।

ठाढवाँ (पुं.) बलात्कार। तुल. जोरा गरदी।

ठाण (पुं.) स्थान जहाँ पशु बाँधा जाता है; **~पै रँजणा** पशु का नए खूँटे पर जी लगना; **~बैठणा** पशु किसी काम का न रहना। **स्थान** (हि.)

ठाणणा (क्रि. स.) 1. दृढ़ संकल्प करना, 2. आयोजन करना। **ठानना** (हि.)

ठाणा (पुं.) दे. थाणा; (क्रि. स.) 1. भूमि से ऊपर उकसाना, 2. चोरी करना, 3. नाभि (धरण) उठाना, 4. जगाना, 5. बैठे पशु को उठाना, 6. रुके काम को फिर से चालू करना, 7. बीड़ा उठाना, 8. मारना, यम द्वारा उठाया जाना, 9. खर्च करना, 10. भाड़े या किराए पर देना, 11. कसम खाना, 12. किसी के विरुद्ध उभरना, 13. मनपसंद वस्तु चुनना, 14. गीत आदि को आरंभ करना; **गंगाजली~** दे. गंगाजली; **धरम~** धर्म की सौगंध लेना; **रामजी सिर पै~** 1. उधम मचाना, 2. धर्म-कर्म का विचार न करना। **उठाना** (हि.)

ठानना (क्रि. स.) दे. ठाणणा।

ठाना (पुं.) दे. थाणा; (क्रि. स.) दे. ठाणा।

ठाप्पा (पुं.) दे. ठप्पा।

ठारा (पुं.) 1. अधिक ठंड, 2. पाला।

ठारी (स्त्री.) दे. ठ्यारी।

ठाल (स्त्री.) 1. विश्राम, 2. निठल्लापन, 3. कूआँ जोतते समय किया जाने वाला विश्राम, 4. ढील, 5. फ़ुरसत का समय; **~करणा** 1. रोज़गार पर न जाना, 2. काम बंद करना, 3. थोड़े विश्राम के लिए कूआँ चलाना बंद करना, 4. ढील छोड़ना; **~(-ल्याँ) का बखत** कूआँ जोतने वालों का विश्राम-काल; **~मारणा** 1. जीवन का आनंद लेना, 2. निठल्ला रहना, 3. व्यर्थ में समय नष्ट करना; **~होणा** 1. विश्राम का समय मिलना, फ़ुरसत मिलना–थोड़ी ठाल हो तै आऊँ, 2. कूएँ की छोड (विश्राम) होना; **~(-म) ठाल** निठल्ला, हर प्रकार से ठाली।

ठाली (वि.) दे. ठाल्ली।

ठाल्ली (वि.) 1. निठल्ला, खाली, हाथ पर हाथ रख कर बैठने वाला, 2. बेरोज़गार; (स्त्री.) रिक्तता की स्थिति; **~करणा** विश्राम देना, काम न लेना; **~छोडणा** 1. विश्राम देना, 2. भय या दबाव न रखना; **~-राम्मैं** बिना परिश्रम किए, घर बैठे–ठाल्ली राम्मैं बैट्ठे, किमैं हाथ हिला लिया करो; **~~होणा** 1. फ़ुरसत में होना, 2. रोज़गार या धंधा छूटना। **ठाली** (हि.)

ठाल्लू (पुं.) ढेंकली का वह मोटा मजबूत लट्ठा जो भूमि में गड़ा होता है और ऊपर से दो भागों में (दुसंगा) बँटा होता है तथा जिस पर बरवाळा (दे.) बँधी बल्ली ऊपर-नीचे की जाती है।

ठावणा/ठामणा (क्रि. स.) दे. ठाणा।

ठाहरा (वि.) दे. अठारा।

ठाह्डा (वि.) दे. ठाड्ढा।

ठिकाणा (पुं.) 1. स्थान, 2. रोज़गार करने

का स्थान, 3. अनुमान–तूँ कद के कर बैठ्ठे के ठिकाणा सै, 4. सीमा, पारावार, 5. प्रबन्ध, बन्दोबस्त– तूँ अपणा ठिकाणा देखले म्हारा के सै; **~(-णै) आणा** 1. राह, रास्ते पर आना, 2. सीधा चलना; **~(-णे)** की विश्वसनीय स्थान की–गा न्याणे की, बहू ठिकाणे की (अर्थात् गाय वह ठीक है जिसके पैरों में रस्सी बाँध कर दूध निकाला जाए और स्त्री वह ठीक है जिसके कुल के विषय में जानकारी हो); **~~बात** 1. अनुकूल या समयानुकूल बात, 2. प्रमाणित बात; **~(-णे) मैं** वश में–उसका बोलता (मन) ठिकाणे मैं नाँ सै; **~(-णै) भेड़णा/लाणा** 1. मार डालना, 2. उचित स्थान पर पहुँचा देना। **ठिकाना** (हि.)

ठिकाना (पुं.) दे. ठिकाणा।

ठिगणा (वि.) बौना, (दे. बावना)। **ठिंगना** (हि.)

ठिगणी (वि.) ठिंगनी, छोटे क़द की; **~रास** छोटा क़द। **ठिंगनी** (हि.)

ठिगना (वि.) दे. ठिगणा।

ठिठकणा (क्रि. अ.) 1. झिझकना, 2. ठिठुरना। **ठिठकना** (हि.)

ठिठकना (क्रि. अ.) दे. ठिठकणा।

ठिठरणा (क्रि. अ.) सर्दी के मारे काँपना। **ठिठुरना** (हि.)

ठिठुरना (क्रि. अ.) दे. ठिठरणा।

ठिठोलिया (वि.) मज़ाकिया मनोवृत्ति का; (पुं.) विदूषक।

ठिठोळी (स्त्री.) हँसी–मज़ाक।

ठिणकणा (क्रि. अ.) दे. ठणकणा।

ठिणोई (पुं.) दे. ठिह्णोई।

ठिनकना (क्रि. अ.) दे. ठणकणा।

ठिमणा (क्रि. अ.) हल्की बूँदा–बाँदी होना।

ठिर (स्त्री.) अधिक ठंड, (दे. ठ्यारी); **~खुल्हणा** 1. ठंड दूर होना, 2. हल्का गरम होना; **~चढणा/ लागणा** 1. सरदी लगना, 2. ठंड लगने के कारण काँपना, 3. भयभीत होना, 4. आशंका से डरना; **~मारणा** ठंड या पाले के कारण पौधे का जलना या नष्ट होना।

ठिरणा (क्रि. अ.) 1. ठिठुरना, 2. सरदी के कारण काँपना या सिकुड़ना। **ठिरना** (हि.)

ठिरणाणा (क्रि.) ठिर से काँपना। उदा. –रुई तैं जाड्डा डरै, कांबळ तैं ठिरणावै। जिसकै दीखे दोलड़ा, दे गोड्डे पड़ जावै।।

ठिरना (क्रि. अ.) दे. ठिरणा।

ठिह्णोई (पुं.) 1. बहनोई?, 2. ऊँचे रिश्ते वाला, 3. ठिनकने वाला, 4. जिद्दी।

ठिह्णोवण (स्त्री.) 1. सास?, 2. स्त्री को दी जाने वाली एक गाली।

ठींच्चा (पुं.) विवाह आदि का समय।

ठीक (वि.) 1. उचित, सच, यथार्थ, 2. प्रामाणिक, 3. अच्छा, 4. ठहराया हुआ, स्थिर या पक्का किया हुआ; (पुं.) 1. द्विरागमन गा गौने की तिथि का ठहराव या पक्का करने का भाव, 2. बात के बीच–बीच में भरा जाने बाला हुँकारा; **~करणा** 1. मार–पीट कर सीधा करना, 2. मरम्मत करना, सँवारना, 3. वधु को द्विरागमन के लिए लाने से पूर्व व्यक्तिगत रूप से जाकर कोई दिन निश्चित करना (यह तिथि–निश्चय संभवत: गोपनीयता बनाए रखने तथा बाल–विवाह की स्थिति में

यौवन प्राप्ति की जानकारी के लिए किया जाता था); **~ठीक कहणा** साफ़-साफ़ कहना, कोई बात या तथ्य छिपाकर न रखना; **~भेजणा** द्विरागमन की तिथि निश्चय का संदेश भेजना; **~होणा** 1. व्यवहार में परिवर्तन आना, 2. सुधार होना।

ठीकरा (पुं.) दे. ठेकरा।

ठीकरी (स्त्री.) दे. ठेकरी।

ठीक्कम-ठीक (वि.) हर प्रकार से ठीक या उचित, जैसा चाहिए वैसा।

ठीहा (पुं.) 1. स्थान जहाँ कारीगर बैठकर अपना काम करता है, 2. ठिकाना, 3. सीमा, हद, 4. रोज़गार; **~काढणा** जान-पहचान निकालना; **~ढूँढणा** रोज़गार की तलाश करना।

ठुंठ (पुं.) दे ठूँठ।

ठुकणा (क्रि. अ.) 1. ठोका जाना, 2. पिटना, 3. अपने आप किसी अन्य वस्तु में समाना, धँसना, 4. हानि होना–छोह्रे नैं जूत्ती खो दी पाँच की ओर ठुकगी, 5. मन मानना, ठीक जँचना–तेरी छात्ती ठुकती हो तै सौद्दा पक्का कर ले, 6. गिरने या शरीर पर कोई बोझा पड़ने से पुट्ठों में पीड़ा होना, 7. शरीर में भराव या पकाव आना; **छात्ती/मन/बोलता~** मन मानना। **ठुकना** (हि.)

ठुकना (क्रि. अ.) दे. ठुकणा।

ठुकमाँ (वि.) 1. ठुका हुआ, सुगठित–ठुकमाँ गात उभरमाँ छात्ती गाल्हाँ पै तिल ला र्‌ही (लो. गी.), 2. जो पोपला न हो, 'पोला' का विलोम; **~गात** सुगठित शरीर। **ठुकवाँ** (हि.)

ठुकराई (स्त्री.) 1. चौधराहट, 2. कृपा, 3. नाईगिरी का काम, 4. सेवकाई; (क्रि. स.) 'ठुकराणा' क्रिया का भू. का. एक व. स्त्रीलिं. रूप। **ठकुराई** (हि.)

ठुकराणा (क्रि. स.) 1. ठोकर मारना, 2. निरादर करना, 3. स्वीकार या ग्रहण न करना। **ठुकराना** (हि.)

ठुकराना (पुं.) एक जाट गोत; (क्रि.स.) दे. ठुकराणा।

ठुकरेल (पुं.) एक जाट गोत।

ठुकरेश (स्त्री.) दे. ठकुराई।

ठुकवाणा (क्रि. स.) 1. अंदर डलवाना, 2. पात्र को भरवाना, 3. संभोग करवाना, 4. पिटवाना। **ठुकवाना** (हि.)

ठुकवाना (क्रि. स.) दे. ठुकवाणा।

ठुट्ठी (स्त्री.) 1. मिट्टी की छोटी कटोरी (कौर.), 2. दे. (ठूट्ठी)।

ठुड्डी (स्त्री.) दे. ठोड्डी।

ठुमकणा (क्रि. अ.) 1. उछल-कूद मचाना, 2. नाचना, 3. मस्ती से चलना। **ठुमकना** (हि.)

ठुमकना (क्रि. अ.) दे. ठुमकणा।

ठुमकी (स्त्री.) 1. ठुमक-ठुमक कर चलने की क्रिया, 2. धीमी चाल, 3. नाच, एक प्रकार का नाच; (क्रि. अ.) 'ठुमकणा' क्रिया का भू. का. स्त्रीलिं. एक व. रूप; **~लाणा** नाचना, (दे. घमोड़ा)।

ठुमरी[1] (स्त्री.) 1. धीमी चाल, 2. एक गान, 3. एक तान।

ठुमरी[2] (वि.) छोटे कद की गाय।

ठुरी (स्त्री.) तेज़ चाल; **~(-याँ) होणा** शीघ्रता से चना।

ठुस (स्त्री.) दे. ठस।

ठुसाणा (क्रि. स.) अधिक मात्रा में भरना या भरवाना। **ठूँसना** (हि.)

ठूँ (स्त्री.) 1. 'ठूँ' की ध्वनि, गोली चलने की ध्वनि, 2. ठिनकने का भाव; **~-ठाँ करणा** 1. गोली दागना, 2. ठिनकना; **~दणें सी** 'ठूँ' की ध्वनि के साथ।

ठूँठ (पुं.) 1. पेड़-पौधे का सूखा भाग, 2. कटा हुआ भाग; (वि.) 1. खूँठा, भोंटा, 2. मूर्ख; **~करणा** 1. पेड़-पौधे की सभी पत्तियाँ चूँटना, 2. भोंटा करना; **~होणा** 1. बेकार होना, 2. औज़ार की धार समाप्त होना। 3. पौधे का सूखकर पत्तियाँ गिराना।

ठूँठा (वि.) दे. खूँट्टा।

ठूँसना (क्रि. स.) दे. ठूसणा।

ठूँस्सा (पुं.) मुक्का, (दे. डुक्का); (वि.) अधिक आहार करने वाला।

ठूई (स्त्री.) दे. थूह।

ठूट्ठी (स्त्री.) 1. नल, पानी का नलका, 2. डाट, डाटा; **~खोल्हणा** 1. घी या दूध की धार बहाना, 2. उन्मुक्त रूप से घी-दूध देना।

ठूना (पुं.) बहाना। दे. मिस।

ठूर (पुं.) प्रपंच।

ठूस (स्त्री.) बाधा; **~मारणा/लागणा** अड़चन डालना; (क्रि. स.) ठूसणा क्रिया का आदे. रूप.।

ठूसणा (क्रि. स.) 1. ज़बरदस्ती धकेलना, 2. जल्दी-जल्दी भोजन करना, 3. ठूँस-ठूँस कर भरना। **ठूँसना** (हि.)

ठेक (स्त्री.) 1. टेक, सहारा, आश्रय, (दे. टेक), 2. तली, पैंदा, 3. अन्न भंडारण का छोटा कुठला।

ठेकर (स्त्री.) 1. दे. ढेग्गर, 2. दे. ठेकरी।

ठेकरा (पुं.) 1. मिट्टी के पात्र का खंडित अंश, 2. टूटा हुआ पात्र, 3. सराईं, 4. (दे. ढेगरा), 5. (दे. ढेग्गर); **~फोड़णा** लकड़ी के जन्म पर शोक प्रकट करने के लिए ठेकरा फोड़े जाने की एक रस्म।

ठेकरी (स्त्री.) 1. पक्की कंकर, 2. मटके का खंडित अंश, 3. चिलम में रखी जाने वाली कंकड़ जो 'गुल' के ऊपर रखे तंबाखू को ढाँपती है, 4. चौकी, रात का पहरा, चौकीदारी, 5. घाल, भूत-प्रेत; **आँक्ख्याँ पै~** अनदेखी करने का भाव; **~काढणा** पहरा देने का क्रम लगाना; **~चालणा** भूत-प्रेत की चलती या जगती मशाल दिखाई देना; **~देणा** 1. रात का पहरा देना, 2. होली-दीपावली की रात चौराहे पर टोना आदि करना।

ठेका (पुं.) दे. ठेक्का।

ठेक्कर (पुं.) कंकर, (दे. ढेगरा); **~चाबणा** 1. गर्भवती स्त्री द्वारा कंकर चबाना, 2. अभक्ष्य वस्तु खाना। **ठेकर** (हि.)

ठेक्का (पुं.) 1. अन्न भंडारित करने का कुठला जो अधिकतर टाट सीकर बनाया जाता है, 2. किसी काम को पूरा करने की जिम्मेदारी का भार, 3. शराब आदि नशीली वस्तुओं के मिलने का स्थान; **~छूटणा** ठीके या ठेके पर कोई काम देना; **~लाणा** 1. अन्न भंडारित करने के लिए टाट सीकर कुठला बनाना, 2. अन्न भंडारित करना, 3. रुपया-पैसा जोड़ना; **~लेणा** काम करने का भार लेना। **ठेका** (हि.)

ठेक्की (स्त्री.) छोटा ठेका या अन्न भंडारण का छोटा कोठा।

ठेठ (वि.) 1. शुद्ध, अमिश्रित या सीधी-

सादी (बोली)–ठेठ जाट्टू बोल्ली जहाँगीरपुर के ओरे-धोरे (आस- पास) की सै नाँ तै इँधै-ऊँधै बिरज, हीरवाट्टी, राजस्थान्नी अर पंजाब्बी बोल्ली के सबद अर लह्जा बीच-बीच मैं आज्याँ सैं, 2. धुर, अंतिम सीमा–ठेठ दिल्ली ताँहीं के आदमी जाट्टू बोल्ली बोल्लैं सैं, 3. खास-खास, 4. संबंधित–ठेठ-ठेठ आदमियाँ की बुला कर राक्खी सै।

ठेरा (पुं.) दे. बुड्ढा-ठेरा। स्थविर।

ठेल (स्त्री.) 1. धक्का, धकेलने का भाव, 2. हिलने का भाव या क्रिया; (क्रि. स.) 'ठेलणा' क्रिया का आदे. रूप; **~लागणा** हाल लगना, हिलना।

ठेलणा (क्रि. स.) 1. धकेलना, 2. धक्का-मुक्की करना। **ठेलना** (हि.)

ठेलना (क्रि. स.) दे. ठेलणा।

ठेला (पुं.) दे. ठेल्ला।

ठेल्ला (पुं.) 1. ट्रक, 2. एक प्रकार की बैल-गाड़ी जिसका जूआ घूम सकता है, 3. हथ-रहडी; **ल्हीक बिचाळै~** भँवर बीच नाव। **ठेला** (हि.)

ठेस (स्त्री.) 1. हल्का धक्का, 2. हिलने की क्रिया, 3. मानसिक आघात।

ठेसरा (पुं.) दे. ठेसरी।

ठेसरी (पुं.) आसरा, भरोसा–तेरै ठेसरी बैट्ठे रहाँ तै चाल लिया म्हारा काम (तुल. बिसर)।

ठेसवा (वि.) घर के काम-काज में हाथ बँटवाने की अवस्था की (बालिका), काम करने लायक अवस्था–ईब तै तेरी छोहरी ठेसवा हो रही सै पाणी-पात उसतैं भरवा लिया कर।

ठेसुआ (वि.) दे. ठेसवा।

ठोंकना (क्रि. स.) दे. ठोकणा।

ठोक (स्त्री.) 1. चोट, प्रहार, 2. लाठी की चोट जो किनारे के सहारे सीधी मारी जाती है, 3. ठोकने की क्रिया या भाव, 4. दबाव, प्रभाव, 5. सौदा करने से पूर्व की जाने वाली स्पष्ट बातचीत; (क्रि. स.) 'ठोकणा' क्रिया का आदे. रूप; **करम~** हत भाग्य; **~बजाणा** 1. खुलासा बात करना, 2. पूरी जाँच-पड़ताल करना; **~मारणा /लाणा** 1. प्रहार करना, 2. दबाव डालना।

ठोकणा (क्रि. स.) 1. किसी के अंदर डालना या फँसाना, 2. ठक-ठक करना, 3. पिटाई करना, 4. दंड डालना, 5. पूरा भरना, भरना–आज तै रामजी नैं कूए-झोड़ ताँही के ठोक दिए, 6 ताल ठोंकना, 7. कमर थपथपाना, 8. अदालत में मुक़दमा आदि करना, 9. परखना; (पुं.) औज़ार जो ठोकने के काम आए; **~बजाणा** 1. हर प्रकार से परखना, जाँच करना, 2. घोषणा करके कार्य करना, स्पष्ट कहना। **ठोकना** (हि.)

ठोकर (स्त्री.) दे. ठोक्कर[1]।

ठोक्कर[1] (स्त्री.) 1. किसी अज्ञात रुकावट से पैर टकराने से उत्पन्न आघात, 2. पत्थर, कंकर जो पैर से टकरा जाए, राह की रुकावट, 3. पैर के पंजे से किया जाने वाला आघात, 4. धक्का। **ठोकर** (हि.)

ठोक्कर[2] (स्त्री.) एक हल्का वाहन जो रथ के अगले दो पहियों के साथ जुड़े भाग के समान होता है, एक हल्का वाहन।

ठोक्की (स्त्री.) 1. ठोकने का काम, 2. किसी वस्तु को ठूँस-ठूँस कर करने का काम; (क्रि. स.) 'ठोकणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; 2. अधिक भोजन

करना।

ठोठ (पुं.) दे. ठूँठ।

ठोड़ (स्त्री.) 1. स्थान, 2. ठिकाना, 3. अता-पता, 4. घर, 5. किनारा, अंत, अंतिम सीमा–जा, धरती का ठोड़ टोहले; **~अ** अपने स्थान पर ही–खैर चाहवै तै ठोड़ अ खड़्या रह; **~खड़्या रहणा** 1. अपने स्थान पर रुके रहना, 2. आज्ञा मानना; **~ठिकाणा** मिलने का अता-पता; **~ठोड़** 1. जगह-जगह, हर स्थान पर, 2. पर्याप्त मात्रा में।

ठोड (पुं.) लाठी का अंतिम छोर।

ठोड़ी (स्त्री.) दे. ठोड्ड़ी।

ठोड्डी (स्त्री.) 1. ठुड्डी, 2. दाढ़ी; **~ठाणा** अकड़ में रहना, सीधे मुँह बात न करना; **~बणवाणा** दाढ़ी बनवाना; **~राखणा** दाढ़ी रखना, दाढ़ी के बाल बढ़वाना। **ठोड़ी** (हि.)

ठोणी (स्त्री.) दे. उठावणी।

ठोळा[1] (पुं.) 1. मोहल्ला, एक ही जाति, धर्म या व्यवसाय आदि के लोगों का समूह, 2. एक व्यक्ति विशेष की बात को मानने वाले लोगों का समूह, 3. (दे. टोळा), 4. (दे. पान्ना); **~पूजणा/मानणा** विवाह या अन्य विशेष अवसरों पर ठोले के अनुसार रुपये देकर ठोले वालों के प्रति सम्मान प्रकट करना।

ठोला[2] (पुं.) दे. टोल्ला।

ठोळेदार (पुं.) 1. ठोले या समूह विशेष का नायक या नेता, 2. सम्मानित व्यक्ति। **ठोलेदार** (हि.)

ठोल्ला[1] (पुं.) धक्का।

ठोल्ला[2] (पुं.) दे. पोरवा।

ठोस (वि.) 1. जो खोखला या पोला न हो, 2. मज़बूत, 3. सख़्त।

ठोसा (पुं.) दे. ठोस्सा।

ठोस्सा (पुं.) 1. अँगूठा, 2. अँगूठा दिखा कर किया जाने वाला अपमान या अनादर का संकेत; **~करणा** 1. चिढ़ाना, 2. अपमान करना; **~दिखाणा** 1. अपमान करना, 2. चिढ़ाना, 3. समय पड़ने पर सहायता न करना, 4. धोखा देना; **~देणा** 1. सहायता न करना, 2. चिढ़ाना। **ठोसा** (हि.)

ठ्यारा (पुं.) ठंड, कड़ी सरदी।

ठ्यारी (स्त्री.) 1. ठंड, कड़ाके की ठंड, 2. कँपकँपी; **~खुल्हणा** 1. ठंड दूर होना, 2. कँपकँपी दूर होना; **~चढणा** 1. ठंड लगना, सरदी के मारे दाँत बजना, 2. भयभीत होना; **~होणा** ठंड होना। **ठारी** (हि.)

ड

ड हिंदी वर्णमाला का तेरहवाँ व्यंजन और टवर्ग का तीसरा वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है, हरियाणवी में इसका उच्चारण मूर्द्धा और तालु के बीच का है।

डंक[1] (पुं.) 1. बिच्छू, साँप आदि का पैना दाँत या ज़हरीला काँटा, 2. विष, 3. कलम की जीभ, 4. औज़ार की तेज़ नोंक; **~चभोणा** 1. चुभती बात कहना, 2. उत्तेजित करना; **~मारणा** 1. भारी हानि पहुँचाना, 2. विषैले जीव द्वारा काटा जाना, 3. कटूक्ति कहना, ताना देना; **~लागणा** 1. बात चुभना, 2. डंक चुभना।

डंक[2] (पुं.) सहदे-भड्डरी के तुल्य एक लोक भविष्यवक्ता। दे. डाकोत।

डंकणी (स्त्री.) 1. डाइन, (दे. डाक्कण) 2. मादा साँप।

डंका (पुं.) 1. डंडा, 2. नगाड़ा, 3. खड्ग; **~(-के) की चोट** 1. सार्वजनिक घोषणा, 2. चुनौती के साथ, 3. आह्वानपूर्वक; **~खेल्हणा** 1. होली खेलना, रंग खेलना, 2. (दे. काँ डंका); **~बाजणा** 1. युद्ध होना, 2. लाठियों से लड़ना; **~फैंकणा** 1. समझौता होना, 2. हार मानना, 3. शस्त्र डालना; **~लागणा** 1. हानि होना, 2. डंका बजना।

डंका-बित्ती (पुं.) 1. गिल्ली-डंडा, 2. गिल्ली-डंडे का खेल।

डंकोळा (पुं.) सरकंडा।

डंग (स्त्री.) दे. डंघ। **डग** (हि.)

डंगर (पुं.) दे. डाँगर।

डंगराळा (पुं.) 1. पशुओं का झुंड, 2. सामूहिक जोत की एक विधि।

डंगरोळा (पुं.) पशुओं के लिए छोड़ा गया पथ। दे. डंगवारा।

डंगवारा (पुं.) 1. पशुओं का झुंड, 2. बैल, हल आदि माँग कर की जाने वाली सामूहिक जुताई आदि, (दे. बड़सी); **~करणा** खेती को जल्दी जोतने के लिए अन्य के बैल, हल आदि की सहायता माँगना; **~चढाणा** किसी के यहाँ खेती के काम-काज में सहयोग देना ताकि वह भी आवश्यकता के समय सहयोग दे; **~देणा/तारणा** किए हुए खेती के काम के बदले काम करना, (दे. बड़सी तारणा); **~माँगणा** खेती की जुताई, बुवाई, कटाई आदि के काम में अन्य परिवारों का सहयोग माँगना।

डँगोसरा (पुं.) 1. बारी, पारी, 2. (दे. डंगवारा); **~साधणा** किसी की बारी पर काम करना।

डंग्गी (स्त्री.) दे. आँकड़ा।

डंघ (स्त्री.) 1. क़दम, एक क़दम से दूसरे क़दम के बीच की दूरी, 2. एक नाप; **~धरणा/भरणा/ नापणा** 1. क़दम रखकर स्थान की दूरी नापना, 2. चलना, चलायमान होना। **डंग** (हि.)

डंठल (पुं.) दे. डाँठळ।

डंड (पुं.) 1. सज़ा, जुर्माना, 2. घाटा, 3. डंडा, सोटा, 4. एक प्रकार की कसरत, 5. समय का माप; (क्रि. स.) डंडणा किया का आदे. रूप**~करणा/ बोलणा/होणा** जुर्माना होना; **~काढणा/पेलणा/मारणा** दंड पेलना, कसरत करना। **दंड** (हि.)

डंडणा (क्रि. स.) दे. दंडणा।

डंड-बैठक (स्त्री.) दंड और बैठक का व्यायाम।

डंडवासा (पुं.) काल कोठरी।

डंडा (पुं.) 1. छोटी लकड़ी, छड़ी, 2. भय, दबाव।

डंडा-चौथ (स्त्री.) दे. गणेस चोथ।

डंडी[1] (पुं.) साधुओं का संप्रदाय जो दंड धारण करता है; **~स्याम्मीं** दंडी-स्वामी या साधु। **दंडी** (हि.)

डंडी[2] (स्त्री.) 1. पतली लकड़ी, 2. तराजू की डंडी, 3. हत्था (दे. डाँड्डी)।

डंडीमार (वि.) कम सौदा तोलने वाला।

डंडूक (पुं.) 1. रस्सी का छोटा टुकड़ा, 2. छोटी लकड़ी, 3. अंश।

डंडोत (स्त्री.) 1. प्रणाम, नमस्कार, 2. दंडवत होकर किया जाने वाला प्रणाम; **~करणा** दंडवत नमस्कार करना;

~**बाब्बा जी** बाबाजी या साधु को दंडवत नमस्कार कहना। **दंडवत** (हि.)

डंपर (पुं.) भार ढोने का मशीनी ठेला।

डंलप गाड़ी (स्त्री.) रबड़ टायर की गाड़ी।

डंस (स्त्री.) दे. डोरी।

डकार (स्त्री.) 1. डकारने का भाव, 2. ज़ोर-ज़ोर से रोने का शब्द, 1. (दे. अढकार), 2. (दे. ढकार); (क्रि.अ.) 'डकारणा' क्रिया का आदे. रूप; ~**नाँ लेणा** किसी की चीज़ को हड़पना और पता भी न लगने देना।

डकारणा (क्रि. स.) निगलना, हड़पना; (क्रि. अ.) 1. ज़ोर-ज़ोर से रोना, 2. आर्तनाद करना, 3. रंभाना, 4. डकार लेना। **डकारना** (हि.)

डकारना (क्रि. स.) दे. डकारणा।

डकैत (पुं.) डाकू, दस्यु।

डकैती (स्त्री.) दे. डकैत्ती।

डकैत्ती (स्त्री.) डाका डालने की क्रिया, डाका। **डकैती** (हि.)

डकोत (पुं.) दे. डाकोत।

डक्का (पुं.) दे. डोक्का; ~**डोहरी लेणा** आस लगाना।

डग (स्त्री.) 1. क़दम, एक क़दम से दूसरे क़दम के बीच की दूरी, 2. मार्ग।

डगमग (स्त्री.) 1. हिलने-डुलने की क्रिया या स्थिति, 2. अस्थिर चित्तवृत्ति; ~**होणा** 1. चक्कर आना, 2. अस्थिर होना, 3. दोलायमान होना।

डगमगाणा (क्रि. अ.) 1. लड़खड़ाना, 2. शरीर के अंगों का हिलना, 3. चित्त डोलना, 4. निश्चय की स्थिति में न होना; (वि.) जो डगमगाए। **डगमगाना** (हि.)

डगमगाना (क्रि. अ.) दे. डगमगाणा।

डगमेळा (पुं.) 1. डगमगाने की क्रिया, 2. चक्कर आने का भाव; ~**आणा/खाणा** चक्कर खाना।

डगर (स्त्री.) मार्ग, पगडंडी।

डगराणा (क्रि.) सायंकाल पशुओं को गाँव की तरफ हाँकना।

डगरी (स्त्री.) दे. डगर।

डगाणा (क्रि. स.) दे. डिगाणा।

डग्गा (पुं.) 1. धक्का, 2. धकेलने की क्रिया; ~**देणा/मारणा** 1. धक्का देना, 2. धकेलना, हाथ या कंधे के धक्के से हटाना।

डटणा (क्रि. अ.) 1. रुकना, ठहरना, 2. भरना, पूर्ण होना–1 झोड़ पाणी तैं डटग्या,–2 डट कै खीर खाई, 3. किसी के अंदर समाना, डाटा लगना या ठुकना, 4. शोभा पाना--कुल्लेदार साफ्फा बाँध कै तै तूँ डट ज्या सै, 5. सामना करना, भिड़ना--कोरूबाँ पाँडवाँ की सेन्ना आहमाँ-साहमीं आ ड्टी। **डटना** (हि.)

डटना (क्रि. अ.) दे. डटणा।

डटवाणा (क्रि. स.) 1. रुकवाना, थमवाना, 2. भरवाना।

डटवाना (क्रि. स.) दे. डटवाणा।

डठोरा (पुं.) रौब, दबाव, दबदबा; ~**दिखाणा/मारणा** रौब डालना, दबदबा दिखाना।

डडमेळा (पुं.) दे. डिडमेळा।

डडाणा (क्रि. अ.) 1. दे. डिड्याणा, 2. दे. अरड़ाणा।

डपट (स्त्री.) झिड़की; (क्रि. स.) 'डपटणा' क्रिया का आदे. रूप।

डपटणा (क्रि. स.) झिड़कना, डाँटना।

डपट्टा (पुं.) दे. डुपट्टा।

डफ (पुं.) 1. दे. ढप, 2. ढप-नृत्य, एक नृत्य जिसमें ढपों की ध्वनि शेष वाद्यों पर छा जाती है, शृंगार और वीरता-प्रधान नृत्य, ढोल-नृत्य।

डफली (स्त्री.) दे. ढपली।

डबकना (क्रि. अ.) डभकणा।

डबका (पुं.) संशय।

डब-डब (क्रि. वि.) 1. आँखों में आँसू भरने का भाव, 2. दिल भारी होने के कारण आँखों में पानी आने का भाव—साथण चाल पड़ी हे, मेरे डब-डब भर आए नैण (लो. गी.)।

डबडबाणा (क्रि. अ.) 1. आँखों में आँसू आना, 2. हृदय भारी होना, 3. गद्-गद् होना, 4. पात्र का पूरी तरह भरना। **डबडबाना** (हि.)

डबडबाना (क्रि. अ.) दे. डबडबाणा।

डबरवा (वि.) 1. डाबर भूमि का, 2. जिसका गाँव नीची भूमि में बसा हो, 3. डाबर (भूमि), (दे. डाब्बर)।

डबरवी (वि.) 1. डाबर प्रदेश की (महिला), 2. डाबर प्रदेश से संबंधित।

डबरा (पुं.) दे. डाबड़ा।

डबल (वि.) 1. दोहरा, 2. मोटा, 3. भारी।

डबलरोटी (स्त्री.) दे. डबल रोट्टी।

डबल रोट्टी (स्त्री.) खमीरे आटे की रोटी विशेष। **डबल रोटी** (हि.)

डबली (पुं.) दे. ढबली।

डबास (पुं.) एक जाट गोत।

डबोट्टा (पुं.) घघरी की वह सींवन जिसमें नाड़ा डाला जाता है। **डबोटा** (हि.)

डबोणा (क्रि. स.) 1. पानी में छिपाना या डुबाना, 2. चौपट करना, 3. पूँजी डुबोना। **डुबोना** (हि.)

डबोना (क्रि. स.) दे. डबोणा।

डब्बा (पुं.) दे. डिब्बा।

डबोळिया (पुं.) गोताखोर, डूबते हुए को निकालने वाला।

डभकणा (क्रि. अ.) 1. चभकना, 2. रुक-रुक कर चभकना, 3. डबडबाना, 4. आँखों में नीर आना। **डभकना** (हि.)

डभोळी (स्त्री.) 1. मूँज का गट्ठा, 2. डाभ का गट्ठा, 3. डाभ (इसका प्रयोग धार्मिक कार्यों में किया जाता है, जैसे—ब्रह्मचारी की मेखला बनाना, यज्ञोपवीत बनाना तथा पवित्री आदि बनाना)।

डमरू (पुं.) एक बाजा, (दे. डोरू)।

डमाच (पुं.) 1. एक प्रकार का वस्त्र, 2. (दे. डेमची)।

डर (पुं.) 1. भय, 2. आशंका; (क्रि. अ.) 'डरणा' क्रिया का आदे. रूप; **~भो** डर तथा भय; **~ ~नाँ मानणा** 1. किसी से न डरना, 2. स्वछंद व्यवहार करना।

डरणा (क्रि. अ.) भय मानना; (वि.) डरपोक। **डरना** (हि.)

डरना (क्रि. अ.) दे. डरणा।

डरनो (पुं.) मेमना (अही.)।

डरपना (क्रि. अ.) दे. डरणा।

डरपावणा (वि.) डराने वाला; (क्रि. स.) डराना। **डरावना** (हि.)

डरपावणी (वि.) 1. भयानक रूप वाली—या काळी घटा डरपावणी, अर धोळी बरसणहार, 2. डरावनी। **डरावनी** (हि.)

डरपोक (वि.) कायर।

डराम (पुं.) 1. पैट्रोल रखने का लंबा और गोल डिब्बा, 2. भंडारण पात्र। **ड्रम** (हि.)

डराम्माँ (पुं.) 1. नाटक, 2. बनावटी बात या खेल, 3. तमाशा। **ड्रामा** (हि.)

डरावणा (वि.) दे. डरपावणा।

डरावना (वि.) भयानक, भयभीत करने वाला।

डरावा (पुं.) 1. पुतला जो खेत में खड़ा किया जाता है ताकि पशुओं को उसमें मनुष्य का भ्रम हो, 2. डराने के लिए कही गई बात, 3. धमकी, 4. छलावा; **~खड्या करणा** डराने की बात प्रचारित करना; **~भेजणा** धमकी भेजना।

डरेवर (पुं.) बस-चालक, वाहक। **ड्राइवर** (हि.)

डरेवा (पुं.) दे. डरावा।

डलणा (क्रि. अ.) डाला जाना। **डलना** (हि.)

डळणा (क्रि. स.) डलों या ढेलों से बीच या खाली स्थान को भरना।

डलना (क्रि. अ.) दे. डलणा।

डलवाणा (क्रि. स.) 1. उँडेलवाना, 2. फेंकवाना, 3. डालने की क्रिया अन्य से करवाना। **डलवाना** (हि.)

डलवाना (क्रि. स.) दे. डलवाणा।

डला (पुं.) दे. डळा।

डळा (पुं.) 1. ढेला, 2. कच्ची मिट्टी का लोंदा; (वि.) 1. निष्क्रिय, जिसमें चंचलता न हो, 2. मंदबुद्धि; **~(–ळे) ढोणा** 1. व्यर्थ में जीवन व्यतीत करना, 2. दास बनकर रहना; **सुरग मैं~~** 1. स्वर्ग में डले ढोना, 2. अच्छे या पवित्र स्थान पर भी निकृष्ट कार्य करना; **~मारणा** 1. व्यंग्योक्ति कहना, 2. ढेलों से लड़ना; **~(–ळे) मारणा/फोड़णा** खेत के मोटे ढेलों को तोड़ना; **~ल्हकोई** बच्चों का एक खेल जिसमें छिपाए गए ढेले को खोजना पड़ता है। **डला** (हि.)

डलिया (स्त्री.) दे. डालड़ी।

डली (स्त्री.) दे. डळी।

डळी (स्त्री.) 1. कंकड़, 2. गुड़ या मिस्त्री की डली; **~सी आँख** मोटी आँख। **डली** (हि.)

डलेवर (पुं.) दे. डरेवर।

डस (स्त्री.) बटुए, नाड़े, तराजू आदि की रस्सी; (क्रि. स.) 'डसणा' क्रिया का प्रे. रूप।

डसणा (क्रि. स.) 1. डंक मारना, 2. रस्सी से बाँधना। **डसना** (हि.)

डसना (क्रि. स.) दे. डसणा।

डसबा (अव्य.) डसने का भाव या क्रिया।

डसेणा (वि.) 1. दे. डरावणा, 2. दे. डरावा।

डहर (पुं.) वह नीची भूमि जिसमें वर्षा-ऋतु में लंबे-चौड़े भू-भाग में जल भर जाता है।

डहरी (स्त्री.) छोटा डहर या झील जहाँ वर्षा के दिनों में पानी भर जाता है; (वि.) 1. डहरी (भूमि), 2. डहर से संबंधित।

डहळक (पुं.) चौपाल आदि में पड़ा भारी पलंग जिसे सरकाना कठिन हो।

डहळा (पुं.) दे. डहळक।

डही (स्त्री.) 1. बैलगाड़ी के पंजारे के नीचे लटकने वाली दो लड़कियाँ जो गाड़ी को खड़ा करते समय नीचे लगा दी जाती हैं, 2. आश्रय, सहारा।

डाँ[1] (स्त्री.) पशु की आर्त ध्वनि।

डाँ[2] (स्त्री.) दे. काँ।

डाँक (पुं.) दे. डाक।

डाँका (स्त्री.) दे. डाक्कळ।

डाँक्का (पुं.) सरसों के पत्ते, (दे. सरसम-पात्ता)।

डाँग (पुं.) ढेरी, ऊँची ढेरी; **~मारणा/लाणा** ढेरी पर ढेरी लगाना।

डाँगर (पुं.) पशु; (वि.) 1. अबोध, 2. मूर्ख; **~छोडणा** पशु को ग्वाले के पास चरने के लिए छोड़कर आना; **~-ढोर** 1. पशु आदि, 2. नगण्य लोग; **~~का बखत** सायंकाल का समय जब पशु जंगल से गाँव की ओर लौटते हैं।

डाँग्गर (पुं.) दे. डाँगर।

डाँट (स्त्री.) प्रताड़ना, डपट।

डाँटणा (क्रि. स.) फटकारना, झिड़की देना। **डाँटणा** (हि.)

डाँटना (क्रि. स.) दे. डाँटणा।

डाँठळ (स्त्री.) 1. सरसों के पौधे का तना, 2. सरसों के पौधे का चारा, 3. पौधे या कंद-मूल का कठोर भाग या गूदा, (दे. नरड़ा)। **डंठल** (हि.)

डाँठळी (स्त्री.) 1. दे. डाक्कळ, 2. दे. डाँठळ।

डाँड (स्त्री.) 1. मुँडेर, वह डोली या रेखा जो बुवाई से पूर्व की जाने वाली सिंचाई के लिए बनाई जाती है, 2. चप्पू; **~काढणा** मुँडेर बनाना।

डाँडळबास्सा (पुं.) दे. जंग्गलबास्सा।

डाँडा[1] (पुं.) दे. डाँड्डा[12]।

डाँडा[2] (पुं.) (?) उदा.–खीर लापसी डांडे को हम खूब सराहया करते।

डाँडा चालणा (पुं.) दे. पिर्रो चालणा।

डाँडी (पुं.) नाव खेने वाला, नाविक; (स्त्री.) दे. डाँड्डी।

डाँडी करणा (क्रि.) गाय का गाभिन होने के तुरंत बाद पूँछ का ऊपर का भाग उठाए रखना।

डाँड्डा[1] (पुं.) 1. डंडा, 2. कैर (करील) के पेड़ की मोटी छड़ या डंडा जो होलिका-दहन के स्थान पर वसंत-पंचमी के दिन गाड़ा जाता है; **~गडणा** 1. किसी स्थान पर अपना स्वामित्व स्थापित होना, 2. वसंत- पंचमी के दिन होली दहन के स्थान पर छड़ स्थापित होना (डाँडा गड़ने के बाद होली तक लड़कियों को सासरे भेजना वर्जित है), 3. मुसीबत आना; **~गाडणा** 1. महत्त्वपूर्ण कार्य करना, 2. होली का डाँडा गाड़ना। **डाँडा** (हि.)

डाँड्डा[2] (पुं.) कान का लटकवाँ आभूषण विशेष।

डाँड्डी (स्त्री.) 1. डाँडी, छड़ी जिसमें तराजू के पलड़े लटकते हैं, 2. कान का एक आभूषण, 3. छोटी और पतली लकड़ी; **~चढाणा/मारणा** कम तोलना; **~झुकणा** अधिक तोल होना, तोल की ओर पलड़ा झुकना; **~मार** 1. कम तोलने वाला, 2. धोखा देने वाला। **डंडी** (हि.)

डाँवाडोल (वि.) डगमग होने की स्थिति वाला, अस्थिर।

डाँस (पुं.) लंबे और मोटे आकार का मच्छर।

डा (स्त्री.) इच्छा। उदा.–मेरे साजन नैं खेलने का चा सै, दूणी लगी जुए की डा सै। (लचं)

डाइण (स्त्री.) दे. डैण।

डाइन (स्त्री.) दे. डैण।

डाई (स्त्री.) चूड़ी काटने का उपकरण (सरिए आदि में)।

डाक (स्त्री.) 1. दौड़, 2. चिट्ठी, हरकारे द्वारा लाई गई चिट्ठी आदि, 3. वमन, 4. चौकी, पुलिस चौकी; **~चालणा/**

लागणा वमन शुरू होना; **~मरवाणा** दौड़ाना; **~मारणा** 1. छलाँग लगाना, 2. कूएँ में गिरना, 3. तीव्र गति से दौड़ना, 4. वस्तु को छीनकर भागना, 5. वमन करना।

डाकख़ाना (पुं.) दे. डाखान्ना।

डाकगाड़ी (स्त्री.) डाक ले जाने वाली रेल।

डाकघर (पुं.) डाकख़ाना, (दे. डाखान्ना)।

डाका (पुं.) दे. डाक्का।

डाकिन (स्त्री.) दे. डाक्कण।

डाकिया (पुं.) हरकारा, चिट्ठी रिसा।

डाकू (पुं.) दे. डाक्कू

डाकोत (पुं.) 1. ज्योतिष, हस्तरेखा आदि देखने का काम करने वाला, 2. एक जाति।

डाक्कण (स्त्री.) 1. चंडालिका, 2. वह स्त्री जो किसी की संतान का भक्षण करे, 3. साहसी स्त्री, 4. निर्दयी महिला, (दे. सिहारी)। **डाकिनी** (हि.)

डाक्कर (वि.) कठोर (भूमि)।

डाक्कळ (स्त्री.) सरसों के पौधे का कच्चा तना जिसका साग बनाया जाता है (यह साग नेत्र-ज्योति को बढ़ाने वाला होता है); **~सा** गदराया हुआ, पुष्ट।

डाक्काँ (क्रि. वि.) दौड़ते हुए, तेज़ दौड़ते हुए; **~जाणा** दौड़ते हुए जाना–डाक्काँ जा अर डाक्काँ आ।

डाक्का (पुं.) डकैती; **~पड़णा** डकैती पड़ना; **~मारणा** दिन दहाड़े लूट-खसोट करना; **~लागणा** लूट का माल हाथ लगना, बिना कमाए मिलना। **डाका** (हि.)

डाक्की (वि.) 1. साहसी, 2. उद्दंड, 3. निर्दयी। **डाकी** (हि.)

डाक्कू (पुं.) डाका डालने वाला; (वि.) दुस्साहसी। **डाकू** (हि.)

डाक्टर/डाक्डर (पुं.) अंग्रेज़ी या एलोपैथी विधि से उपचार करने वाला। **डाक्टर** (हि.)

डाखान्ना (पुं.) वह सरकारी दफ्तर जहाँ से पत्र आदि बाँटने की व्यवस्था की जाती है, डाकघर। **डाकख़ाना** (हि.)

डाग (स्त्री.) डाकिनी (कौर.)।

डाग्गर (पुं.) 1. एक जाट गोत, 2. एक यवन गोत। **डागर** (हि.)

डाट (स्त्री.) 1. लकड़ी का छोटा टुकड़ा, 2. मेहराब बनाने के लिए नीचे लगाई गई टेक, 3. कार्क, 4. फटकार; (क्रि. स.) 'डाटणा' क्रिया का आदे. रूप; **~की छात** लेंटिन या लदाव की छत जिसमें कड़ी नहीं लगती; **~ठोकणा** 1. रौब डालना, 2. टेक या डाँट लगाना; **~मारणा/लाणा** झिड़की देना।

डाटणा (क्रि. स.) 1. रोकना, चलने न देना, 2. बंद करना, चक्की, मशीन आदि को रोकना, 3. पूरी तरह भरना, 4. रोते हुए को चुप करना, 5. फटकारना, 6. मन को समझाना, 7. छिद्र बंद करना, 8. चीज़ की कमी न रहने देना। **डाटना** (हि.)

डाटना (क्रि. स.) दे. डाटणा।

डाट्टा (पुं.) कार्क, (तुल. डूज्जा)। **डाट** (हि.)

डाठ (पुं.) दे. घेर।

डाडी (स्त्री.) औज़ार या उपकरण का ऊपर या नीचे का लकड़ी का भाग।

डाड्ढल (वि.) दाढ़ी वाला, लंबी दाढ़ी वाला।

डाड्ढी (स्त्री.) ठोडी पर उगने वाले बाल; **~का बाळ** सम्मानित वस्तु; **~पाड़णा** अपमान करना; **~मूँछ आणा** यौवन आना। **दाढ़ी** (हि.)

डाढ़ (स्त्री.) दे. जाड़।

डाढ़ी (स्त्री.) दे. डाड्ढी।

डाण (स्त्री.) दे. डैण।

डाबड़ा (पुं.) पानी से भरा गड्ढा, बड़ा गड्ढा; **~भरणा** गड्ढे, झील आदि में पानी भरना; **~(–ड़िया) खेत** खेत जो नीची भूमि पर होने के कारण पानी से भर जाए।

डाबर (वि.) दे. डाब्बर।

डाबर नैणी (क्रि.) मोटे बड़े नेत्र वाली।

डाब्बर (वि.) नीची भूमि जिसमें वर्षा के दिनों में पानी भर जाता हो। **डाबर** (हि.)

डाभ (स्त्री.) दूर्वा, कुशा, नुकीली घास जो पूजा-पाठ तथा आसन बनाने के काम आती है (इसी घास से रस्सी भी बनती है)।

डामचा (पुं.) मचान; **~घालणा/बाँधणा** मचान डालना।

डायण (स्त्री.) दे. डैण।

डायन (स्त्री.) दे. डैण।

डार[1] (स्त्री.) 1. हिरनों का झुंड, 2. पशुओं का झुंड, 3. समूह; **~की डार** हिरनों या जंगली पशुओं का झुंड का झुंड; **~पाटणा** 1. हिरनों का समूह तितर-बितर होना, 2. बिछुड़ना—न्यारी-न्यारी पाट्टण लाग्गी हिरणाँ कैस्सी डार (लो. गी.); **~बैठणा** हिरनों के झुंड का एक स्थान पर बैठना।

डार[2] (पुं.) हाथ का आभूषण जिसमें छोटे-छोटे दाने होते हैं।

डारा (स्त्री.) कपड़े बाँधने की चद्दर।

डारी (स्त्री.) रोज़नामचा; **~भरणा** 1. सरकार के विरोध में दिए गए भाषण को नोट करना, 2. रोज़नामचा पूरा करना। **डायरी** (हि.)

डाळ (स्त्री.) दे. डाळ्ही।

डालडा (पुं.) वनस्पति घी, कृत्रिम घी, (दे. रेल्ली घी)।

डालड़ा (पुं.) 1. बड़ी डलिया, 2. (दे. डाल्ला)।

डालड़ी (स्त्री.) डलिया, छोटी डलिया।

डालणा (क्रि. स.) 1. गिराना, फेंकना, 2. उँडेलना। **डालना** (हि.)

डालना (क्रि. स.) दे. डालणा।

डाळिया (पुं.) डाली या छाज से पानी निकालने वाला, (दे. छाजिया)।

डाली (स्त्री.) दे. डाळ्ही।

डालू (पुं.) दे. डार।

डाल्ला (पुं.) 1. विवाह आदि के समय भातियों अथवा अतिथियों के लिए डलिया में बाँध कर दी जाने वाली मिठाई जो सामर्थ्य व श्रद्धानुसार सवा मन तोल तक की होती है, 2. मिठाई की डलिया; **~करणा/बाँधणा** डलिया या बड़े डाले में अतिथियों के लिए मिठाई बाँधना। **डाला** (हि.)

डाल्ली (स्त्री.) छाजनुमा पात्र जिसकी सहायता से नीचे के पानी को ऊँचाई की ओर निकाला जाता है, (दे. छाज गेरणा)।

डाळ्ही (स्त्री.) टहनी, वृक्ष की टहनी; **~टाँकणा** चेचक वाले घर के बाहर संकेत स्वरूप नीम की टहनी लटकाना।

डासणा (पुं.) धोबी का डंडा। दे. थपकी।

डाह (स्त्री.) दे. ढा।

डाही (स्त्री.) 1. दाह, जलन, 2. दाढ़; **~बळणा** किसी वस्तु को प्राप्त करने या खाने के लिए आतुर होना।

डाह्ळा (पुं.) मोटा टहना, मोटा तना; **~रोकणा** हरियाली तीज से पूर्व ही किसी टहनी पर कपड़ा बाँधकर अधिकार जमाना ताकि उस पर अन्य कोई झूला न डाल सके।

डाह्ली (स्त्री.) दे. डाळ्ही।

डिंडोत (स्त्री.) दे. डंडोत।

डिकरी (पुं.) 1. दे. पाटा, 2. दे. मेज, 3. दे. कोल्हड़ी।

डिक्का (पुं.) दे. डीकड़ा; **~तोड़णा** 1. तंग करना, 2. बाधा पहुँचाना।

डिगणा (क्रि. अ.) 1. अपने स्थान से हटना, 2. अस्थिरता आना; (वि.) वह जो शीघ्र डिग जाए। **डिगना** (हि.)

डिगना (क्रि. अ.) दे. डिगणा।

डिगमिग (वि.) दे. डगमग।

डिगरणा (क्रि. अ.) जाना, गमन करना, डिगना—आँक्ख्याँ के साहमीं तैं डिगरज्या नाँ खून-खराब्बा हो ज्यागा। **डिगरना** (हि.)

डिगरी (स्त्री.) 1. क्षति-पूर्ति के लिए न्यायालय द्वारा दिया गया निर्णय, 2. सनद, 3. उपाधि।

डिगर्याणा (क्रि. अ.) वापिस लौटना—भल्ले का छोह्रा फोज मैं कै नाम कटा कै डिगर्याया।

डिगाणा (क्रि. स.) 1. अपने स्थान से हिलाना, 2. आगे टहलाना, 3. वचन से हटाना, 4. किसी कृत्य को अगली तिथि के लिए स्थगित करना, 5. हड्डी-पसली तोड़ना। **डिगाना** (हि.)

डिगाना (क्रि. स.) दे. डिगाणा।

डिग्गी (स्त्री.) 1. ताँगा-स्टैंड, 2. पानी का हौज़।

डिठोणा (पुं.) कालिख आदि का वह चिह्न जो नज़र से बचाने के लिए लगाया जाता है। **डिठौना** (हि.)

डिठोरा (पुं.) दे. डठोरा।

डिठौना (पुं.) दे. डिठोणा।

डिड्ड्याणा (क्रि. अ.) 1. रंभाना, 2. ज़ोर-ज़ोर से रोना; (वि.) रोने चीखने वाला।

डिबिया (स्त्री.) छोटा डिब्बा; **~सी आँख** छोटी आँखें।

डिब्बा (पुं.) डब्बा।

डिरघ (वि.) लंबे क़द का—डिरघ का डिरघ बध ग्या पर अक्कल नाँ आई।

डिसमिस (पुं.) नौकरी से निकालने का भाव।

डींग (स्त्री.) झूठी बड़ाई; **~मारणा** डींग हाँकना; **~चलाणा/हाँकणा** 1. गप्प हाँकना, 2. झूठी बड़ाई करना।

डीक (स्त्री.) 1. घनीभूत पीड़ा, 2. घाव से उत्पन्न तीव्र पीड़ा; **~बळणा/लीकड़णा** 1. रह-रह कर पीड़ा होना, 2. प्रतिशोध की ज्वाला में जलना।

डीकड़ा (पुं.) तिनका (तुल. लीकड़ा); (वि.) क्षीणकाय; **~तोड़णा** 1. बाधा उत्पन्न करना, 2. छिद्रान्वेषण करना, 3. जंत्र करना, जादू-टोना करना; **~देणा/लाणा** उत्तेजित करना; **~सा** क्षीणकाय।

डीग्गरणा (क्रि. अ.) दे. डिगरणा।

डीडवा (पुं.) ठोड़ी के नीचे गरदन पर उभरा हुआ हड्डियों का पिंड, टेंटुआ।

डीपटी (स्त्री.) 1. काम, रोज़गार, 2. रोज़गार-काल। **ड्यूटी** (हि.)

डीबट (स्त्री.) दे. दीवट।

डीबळा (पुं) दीया, छोटा दीया, (दे. दिवला)।

डीम्मापुर (पुं.) सिंगापुर के निकट एक स्थान जहाँ आज़ाद हिंद फौज लड़ी थी।

डील (स्त्री.) 1. काँटे आदि के अधिक समय तक हाथ-पैर में गड़े रहने के कारण बनी गाँठ, 2. बाधा, 3. (दे. आट्टण)।

डील-डौल (पुं.) शरीर की लंबाई-चौड़ाई, शरीर का ढाँचा।

डीला (पुं.) घास विशेष।

डुंगर (पुं.) पर्वत।

डुंगी (स्त्री.) डमरू के समान बाजा।

डुंड (पुं.) 1. टूटा हुआ अंश, 2 1 (दे. डूँड), 2. (दे. ठूँठ); (वि.) अपंग।

डुंढरा (स्त्री.) हिरण्यकश्यप की बहन, भक्त प्रह्लाद की बूआ जो जल कर भस्म हो गई थी, होलिका, (दे. धुलैंहड्ढी)। **ढुंढा** (हि.)

डुक (पुं.) मुक्का, घूसा।

डुकास (स्त्री.) 1. सरदी की प्यास, प्यास, 2. कामना को तृप्त करने की तीव्र इच्छा।

डुक्का (पुं.) दे. डुक।

डुक्याणा (क्रि. स.) घूसों से पीटना।

डुगडुगिया (पुं.) 1. डुगडुगी बजाने वाला, 2. मदारी।

डुगडुगी (स्त्री.) 1. छोटी ढोलकी, 2. बाज़ीगर की डुगडुगी; **~बजाणा** नचाना, संकेत पर नचाना; **~सा** छोटा-सा।

डुग्गी (स्त्री.) दे. डुगडुगी।

डुडूड़ा (पुं.) ढोल, विवाह के समय बजने वाला ढोल।

डुपट्टा (पुं.) 1. चदरा, दुकूल, 2. ओढ़नी; (वि.) दो पाट का (चदरा)। **दुपट्टा** (हि.)

डुबक (स्त्री.) डुबकी; (क्रि. स.) 'डुबकणा' क्रिया का आदे. रूप।

डुबकणा (क्रि. अ.) 1. डुबकी लगाना, 2. डुबकना।

डुबकी (स्त्री.) दे. डुबक।

डुबाण (वि.) डुबाऊ, लगभग साढ़े तीन हाथ गहरा (पानी)–कूए मैं डुबाण पाणी था।

डुबाणा (क्रि. स.) दे. डबोणा।

डुबाना (क्रि. स.) दे. डबोणा।

डुरच (स्त्री.) 1. चिढ़ाने के लिए हाथ की मुट्ठी हिला कर कहा जाने वाला शब्द, 2. तिरस्कार बोधक शब्द, 3. साँड का ध्यान आकृष्ट कराने के लिए उच्चरित शब्द।

डुर्र्र (स्त्री.) दे. डुरच।

डुळ (स्त्री.) 1. घूमने-फिरने की क्रिया, 2. चलते समय पड़ने वाला फेर या अतिरिक्त चक्कर, 3. थकान; **~पड़णा** चलने में फेर या अतिरिक्त चक्कर पड़ना; **~मानणा** थकान मानना; **~होणा** व्यर्थ की घुमाई होना।

डुळणा (क्रि. अ.) 1. डोलना, 2. चलना-फिरना, 3. मिट्टी में मिलना, नष्ट होना। **डुलना** (हि.)

डुळाणा (क्रि. स.) 1. व्यर्थ के चक्कर लगवाना, 2. नष्ट करना, 3. उँडेलना, 4. पंखा झलना, चँवर झलना। **डुलाना** (हि.)

डुलाना (क्रि. स.) दे. डुळाणा।

डूँगा (पुं.) पहाड़ (अही.)।

डूँग्घा (वि.) 1. गहरा, 2. जिसकी थाह न मिले; **~माणस** गंभीर व्यक्तित्व वाला।

डूँघा (हि.)

डूँग्घी (वि.) गहरी, गहरा (पात्र), जैसे–डूँग्घी कूँड्डी; **~मारणा** 1. दूर की बात कहना, 2. पते की बात कहना। **डूँघी** (हि.)

डूँघा (वि.) दे. डूँग्घा।

डूँड (पुं.) दे. ठूँठ।

डूँडळी (स्त्री.) 1. अन्न के पौधे के डंठल (जो गहाई-ओसाई के बाद बचते हैं), 2. व्यर्थ का चारा; (वि.) बचा-खुचा; **~भुरळी** अन्न के पौधे के मोटे डंठल।

डूँड्डा (पुं.) एक प्रकार की नाव; (वि.) 1. टूटा हुआ, खंडित, 2. (बैल या पशु) जिसका एक सींग टूट गया हो, 3. ध्वंसित; **~ऊठणा** 1. किसी वस्तु से धुआँ निकलना, 2. नष्ट होना; **~ठाणा** नष्ट-भ्रष्ट करना; **~ढेळी** नष्ट-भ्रष्ट। **डूँडा** (हि.)

डूँड्डी (स्त्री.) मुनादी, ढोल पीटकर की गई घोषणा; (तुल. रेळ)। **डोंडी** (हि.)

डूक (स्त्री.) 1. घनीभूत इच्छा, हूक, 2. टीस, पीड़ा; **~मारणा/लागणा** इच्छा-तृप्ति के लिए लालायित होना, (दे. डुकास)।

डूज्जा (पुं.) 1. डाट, कार्क, 2. कपड़े को मोड़कर बनाई हुई डाट। **डूजा** (हि.)

डूडूडे (पुं.) बराती।

डूड्डी (स्त्री.) दे. ढूड्ढी।

डूबणा (क्रि. अ.) 1. जल-निम्न होना, 2. मार्ग से विचलित होना, चरित्र-भ्रष्ट होना, 3. आचार-विरुद्ध कामुक इच्छा तृप्त करना; (वि.) जो शीघ्र डूब जाए; **तारा~** शुक्र-ग्रह अस्त होना (जिसके उदय तक विवाह आदि कार्य रुक जाते हैं), (दे. सूक डूबणा)। **डूबना** (हि.)

डूबना (क्रि. अ.) दे. डूबणा।

डूब्बा (स्त्री.) 1. जल-प्लावन, अतिवृष्टि, 2. अराजकता, 3. भूल; **~करणा** अतिवृष्टि होना; **~ढेळी** 1. नष्ट-भ्रष्ट, 2. अतिवृष्टि; **~पड़णा** 1. लिहाज़-शर्म समाप्त होना, 2. अतिवृष्टि होना; **~होणा** अतिवृष्टि के कारण धन-जन की हानि होना।

डूभ (स्त्री.) दे. डाभ।

डूम (पुं.) 1. गाने-बजाने वाली एक मुसलमान जाति 2. मिरासी (पुत्र-जन्म के दसवें दिन यह वंशावली गाता है); (वि.) बड़ाईख़ोर। **डोम** (हि.)

डूमणा (पुं.) दे. डूम।

डूमणी (स्त्री.) 1. डोम की पत्नी, 2. एक पक्षी (जो समूह में गाते हैं)।

डेगची (स्त्री.) चौड़े मुँह का पात्र जिसमें खिचड़ी, दलिया आदि बनाया जाता है। **देगची** (हि.)

डेग्गा (पुं.) 1. धक्का, 2. सहारा, टेक, 3. बैलगाड़ी की टिकानी में ठुकने वाली लकड़ी; **~(-गे) हालणा** पुर्ज़े-पुर्ज़े या अंग-अंग हिलना।

डे-डे (स्त्री.) भैंस को पुकारने के लिए उच्चरित ध्वनि।

डेड्डे (पुं.) 1. गूजरों का एक गोत, 2. कान का एक आभूषण।

डेढ्ढी (स्त्री.) मुख्य-द्वार; **~चढणा** विवाह के समय दूल्हे का दुल्हन के द्वार पर जाना, ड्योढ़ी पर जाना। **ड्योढ़ी** (हि.)

डेढ (वि.) 1. एक पूरा और उसका आधा भाग, 2. तुलना में अधिक शक्तिशाली –मैं हर बात मैं तेरे तैं डेढ मिल्लूँगा। **डेढ़** (हि.)

डेढ राज (पुं.) नांगी संप्रदाय के मूल प्रवर्तक संत (इनका जन्म नारनौल जिले के घरुस गाँव में सन् 1828 में हुआ था)।

डेरा[1] (पुं.) 1. पड़ाव, थोड़े समय का ठहराव, 2. छावनी, 3. मकान, 4. खाना-बदोश लोगों का पड़ाव, 5. साधुओं का निवास-स्थान; **~गेरणा** 1. कुछ काल के लिए ठहरना, विश्राम के लिए रुकना, 2. किसी स्थान को अपना निवास बना लेना, 3. साधु-संत का किसी स्थान पर रुकना; **~लाणा** 1. जम कर बैठना, 2. धूनी तपना।

डेरा[2] (पुं.) एक प्राचीन रस्म जिसके अनुसार दो-चार बाराती अलग-अलग घरों में ठहरकर भोजन करते थे। दे. डेरा।

डेरी (स्त्री.) 1. स्थान जहाँ दूध के लिए गाय-भैंस आदि रखी जाती हैं, 2. घी-दूध की दुकान। **डेयरी** (हि.)

डेरू (पुं.) शिवजी का वाद्य-यंत्र। **डमरू** (हि.)

डेळ (पुं.) पेट-दर्द (कौर.)।

डेवा (पुं.) 1. खंदक पर लगाया गया लकड़ी का पुल, 2. खेत में प्रवेश के लिए खाई पर लगाई गई मोटी लकड़ी जिससे केवल आदमी जा सकें, पशु नहीं; **~लाणा** 1. लकड़ी का छोटा पुल बनाना, 2. सहयोग देना।

डैकण (अव्य.) 1. दे. लवै, 2. दे. नीड़ै।

डैण (स्त्री.) 1. कुलटा, 2. नर-भक्षी महिला, 3. महिला को दी जाने वाली एक गाली। **डायन** (हि.)

डैणे (पुं.) पक्षी-शावक के पंख।

डैमची (स्त्री.) चमकीला मज़बूत धागा, डबल मरसेराइज़्ड कोर्ड।

डैमरोदवाटी (स्त्री.) एक मेवाती खाप विशेष।

डैहर (पुं.) दे. ढहर।

डोंगरा (पुं.) दे. दोंगड़ा।

डोंगा (पुं.) दे. डोंग्गा।

डोंग्गा (पुं.) 1. सब्ज़ी आदि रखने का गहरा या डूँघा पात्र, 2. चौड़े पत्ते को मोड़कर बनाया गया डोना, 3. बड़ी नाव। **डोंगा** (हि.)

डोंग्गी (स्त्री.) छोटी नाव।

डोइया (वि.) दे. डोई।

डोई (स्त्री.) लकड़ी का चमचा या कड़छी; (वि.) जिसके पैर के पंजे टेढ़े पड़ गए हों (क्लब फीटिड)।

डोऊ (पुं.) डोई से बड़े आकार का लकड़ी का चमचा; **~चलाणा/रोड़णा** खिचड़ी, राबड़ी (दे.) आदि को डोऊ से मथना; **~चाटणा** डोऊ को चाटना (जन धारणा के अनुसार डोऊ चाटने वाले व्यक्ति के विवाह के अवसर पर आँधी-मेंह आता है)।

डोकरी (स्त्री.) 1. लड़की, 2. बूढ़ी महिला।

डोकळा (पुं.) दूहते समय पशु द्वारा जान-बूझकर कुछ दूध चढ़ाने की क्रिया।

डोक्का (पुं.) 1. दूध की धार-भैंस के नीच्चै के डोक्के धरे सैं, 2. मादा पशु के उन्मादन की स्थिति, (दे. आम्मण), 3. तीव्र प्यास; **~करणा/काढणा** मादा पशु का मैथुन के लिए गरमाना, (दे. आम्मण करणा); **~(-के) चुळकणा** कम दूध वाले पशु की धार निकालना; **~मारणा** मादा पशु की उन्मादन की स्थिति समाप्त होना, (दे. आम्मण तोड़णा); **~(-के) लागणा** 1. बार-बार प्यास लगना, 2. याद सताना; **~(-के) लेणा** (दे. धार लेणा)

डोक्की (स्त्री.) मिट्टी का एक छोटा पात्र।

डोगरा (पुं.) 1. डोगरा जाति, 2. एक जाट गोत।

डोग्गर (स्त्री.) एक यवन जाति।

डोग्गा (पुं.) हाथ की मोटी छड़ी।

डोचणा (क्रि. स.) खाने के लिए व्यंग्यात्मक प्रयोग, ठूँसना, 1. (दे. धूँसणा), 2. (दे. गटकणा)।

डोड्डा (पुं.) 1. आक के पौधे का फल जिससे कोमल रूई निकलती है, 2. पानी या हवा भरने के कारण फूली हुई वस्तु, 3. कान का एक आभूषण, 4. पौधे की डोडी; **~सा फूलणा** मोटा-ताज़ा होना। **डोडा** (हि.)

डोड्डी (स्त्री.) 1. आक का छोटा फल, 2. कली। **डोडी** (हि.)

डोड्ढी (स्त्री.) 1. द्वार, भव्य द्वार, 2. देहलीज़। **ड्योढ़ी** (हि.)

डोड्ढीवान (पुं.) द्वारपाल। **ड्योढ़ीवान** (हि.)

डोन्ना (पुं.) डोना, पत्ते आदि को मोड़ कर दिया गया प्याले का रूप। **दोना** (हि.)

डोबटी (स्त्री.) हाथ के कते सूत से बना मोटा कपड़ा।

डोबणा (क्रि. स.) निमज्जित करना; (वि.) दे. डोब्बा। **डुबाना** (हि.)

डोब्बा/डोब्बू (वि.) काम को बीच ही में छोड़ भागने वाला।

डोब्भा (पुं.) टोब्भा।

डोभ (स्त्री.) दे. डाभ।

डोम (पुं.) दे. डूम।

डोमनी (स्त्री.) दे. डूमणी।

डोर (स्त्री.) डोरी, रस्सी; **~खेंचणा/चलाणा** किसी कार्य का संचालन इस प्रकार छिप कर करना कि किसी को पता न चले।

डोरवा (पुं.) दे. डेरू।

डोरा (पुं.) 1. मोटा धागा, 2. आँख में पड़ने वाली लाल धारियाँ, 3. तोते के गले की धारी, 4. गले का पट्टा, 5. जंत्र-तंत्र का धागा, (तुल. गंडा), 6. बस्ती की सीमा, 7. प्रेम-सूत्र, 8. षड्यंत्र, 9. दीवार; **~खींचणा** सीमा-बद्ध करना; **~डालणा/ फलाणा/ फैंकणा** जाल फेंकना; **लाल~** गाँव की आबादी की सीमा, पटवारी के खाते पर खींची गई लाल धारी जो कृषि-भूमि और आबादी की भूमि का विभाजन करती है।

डोरियाना (क्रि.) दे. गळजोट

डोरिया (पुं.) 1. एक वस्त्र जिस पर लंबी धारियाँ होती हैं, 2. ओढ़नी विशेष।

डोरी (स्त्री.) दे. डोर।

डोरू (पुं.) डमरू, (दे. डेरू)।

डोल (पुं.) गोल पैंदे की लोहे की भारी बालटी; (क्रि. अ.) 'डोळणा' क्रिया का आदे. रूप; **~मारणा** सताना।

डोळ (पुं.) 1. शरीर या मन की स्थिति, हाल-चाल, 2. विचार, भाव, 3. व्यवस्था-मेळे मैं चाल्लण तैं पहल्याँ पइस्याँ का भी डोळ कर लिया?, 4. (दे. डुळ;) **~करणा** प्रबंध करना, व्यवस्था करना; **~डाळ** हालत, अवस्था-बेरी के मेळे मैं चाल्लण का डोळ-डाळ सै कै ना?। **डोल** (हि.)

डोलची (पुं.) कूएँ से पानी खींचने वाला; (स्त्री.) छोटा डोल; (वि.) 1. खुशामदी, 2. हीन (पुरुष)।

डोळणा (क्रि. स.) 1. डुलाना, पंखा झलना, 2. भेजना, (दे. खँधाणा); (क्रि. अ.) 1. दोलायमान होना, 2. व्यर्थ में घूमना; (वि.) घुमक्कड़। **डोलना** (हि.)

डोलना (क्रि. अ.) दे. हाँढणा।

डोला (पुं.) दे. डोळा[1]।

डोळा[1] (पुं.) 1. पालकी, 2. हिंडोला; **~देणा** पुत्री को विवाह में देना; **~(–ळै) बैठणा** डोली में बैठना, विवाह होना। **डोला** (हि.)

डोळा[2] (पुं.) 1. खेतों के बीच में उभरी हुई विभाजन रेखा, खेत की मेंड़, 2. भुजा या जंघा का पुष्ट माँस, 3. मार्ग, पगडंडी, 4. (दे. डेवा); **~नाक्का** डोला और नाका, खेत की सीमा; ~ **~टूटणा** वर्षा के कारण जल-थल एक होना; **~बाँधणा** 1. खेत के बीच में मिट्टी का उभार देकर मेंड़ बनाना, 2. व्यवस्था करना, आने वाली विपत्ति का सामना करने की व्यवस्था करना; **~लाणा** बाधा उत्पन्न करना, रोड़ा अटकाना।

डोळा[3] (पुं.) आँख। आँख का पपोटा।

डोळा-मारू (पुं.) दे. ढोल्ला।

डोलाना (क्रि. स.) दे. डुळाणा।

डोली (स्त्री.) दे. डोल्ली।

डोळी (स्त्री.) 1. दीवार, 2. कम ऊँची दीवार, 3. डाँड, ऊँची मेंड़; **~काढणा** दीवार खींचना।

डोल्ली (स्त्री.) 1. झोली या संकेत देने का भाव, हाथ से किया गया इशारा, 2. पालकी, 3. छोटी बालटी, 4. एक तान विशेष; **~मारणा** (?), –लखमी चंद जिब डोल्ली मारै, खुश हों हाळी-पाळी (लो. गी.)।

डोहरा (पुं.) 1. नाग का फन, 2. दूध या छाछ डालने का बड़ा पात्र, 1. (दे. पळिया), 2. (दे. पळवा); **~ठाणा** 1. साँप द्वारा फन उठा कर खड़े होना, 2. सिर उठाना।

डोहरिया (वि.) फन वाला (साँप)।

डोहरी (स्त्री.) 1. मिट्टी की गहरी सराईं या नारियल की प्याली जो छाछ डालने के काम आती है, 2. मिट्टी की कूँडी।

ड्यूड (वि.) डेढ़।

ड्योड्ढा (वि.) डेढ़ गुणा। **ड्योढ़ा** (हि.)

ड्योड्ढी (वि.) डेढ़ गुणी; (स्त्री.) दे. डोड्ढी। **ड्योढ़ी** (हि.)

ड्योढणी (स्त्री.) (कौर.), (दे. देऊठणी ग्यास)।

ड्योढ़ा (वि.) दे. ड्योड्ढा।

ड्योढ़ी (स्त्री.) दे. डोड्ढी; (वि.) दे. ड्योड्ढी।

ड्योढ़ीवान (पुं.) दे. डोड्ढीवान।

ड्रम (पुं.) लोहे का बना गोलाकार पीपा।

ड्राइवर (पुं.) दे. डरेवर।

ड्राम (पुं.) दे. ड्रम।

ड्रामा (पुं.) दे. डराम्मा।

ढ

ढ हिंदी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन और टवर्ग का चौथा अक्षर, हरियाणवी में इसका उच्चारण मूर्द्धा और तालू के बीच का है।

ढँकणा (क्रि. स.) 1. ढाँपना, आच्छादित करना, 2. बात को दबाना, 3. पर्दा करना; (पुं.) ढक्कन। **ढकना** (हि.)

ढंग (पुं.) 1. दशा, 2. चाल-ढाल, आचरण, 3. तरीका, ढब, रीति, 4. प्रकार; **~डोळ** हालत, हाल-चाल—अरै, के ढंग ढोळ सै तेरा?; **~सिर** दे. ढिंग-सिर।

ढंगी (स्त्री.) एक उपकरण। लम्बे बांस के एक सिरे पर लोहे का दराँतीनुमा फाल लगा कर पेड़ों की पतली शाखों को काटने का औजार, जिसे भेड़-बकरी चराने वाले रखते हैं। दे. आँकड़ा।

ढंचर (पुं.) दे. खेर खाँसी।

ढँढेळा (पुं.) ढूंढ़ने या तलाश करने का काम; **~मारणा** ढूँढ़ना।

ढँढेस्सा (पुं.) ढूँढने की क्रिया; **~मारणा** ताक-झाँक करते फिरना।

ढँढोई (स्त्री.) गन्ने के रस को उबालने के बाद कड़ाही की प्रथम धुलाई।

ढँढोरची (पुं.) डोंडी पीटने वाला, प्रचार करने वाला; (वि.) इधर की बात उधर कहने वाला। **ढिंढोरची** (हि.)

ढँढोरणा (क्रि. स.) तलाश करना, ढूँढ़ना।

ढँढोरा (पुं.) मुनादी, चौकीदार द्वारा प्रमुख चौराहों पर खड़े होकर (अधिकतर सूर्यास्त के बाद) ऊँची आवाज़ में की जाने वाली घोषणा (जो किसी की वस्तु के गुम होने, पंचायत इकट्ठी होने, सरकार से प्राप्त घोषणा की सूचना देने अथवा अन्य आवश्यक जानकारी देने के विषय में होती है), (दे. रेळ); **~पीटणा** 1. प्रचार करना, 2. किसी की बदनामी करना। **ढिंढोरा** (हि.)

ढइया (स्त्री.) 1. ढाई सेर वजन की गुड़ की भेली, 2. ढाई वर्ष का काल (ज्योतिष में); (वि.) अढ़ाई की संख्या से संबंधित। **ढैया** (हि.)

ढई (स्त्री.) टेक, खड़ी हुई अवस्था में गाड़ी का संतुलन बनाए रखने के लिए आगे की ओर लगाई जाने वाली टेक, (दे. उळाळवा); **~लाणा** सहायता करना; **~हटाणा** सहायता देना बंद करना।

ढकणा (पुं.) ढक्कन; (क्रि. स.) 1. ढाँपना, 2. बात को दबाना। **ढकना** (हि.)

ढकणी (स्त्री.) छोटा ढक्कन।

ढकना (पुं.) दे. ढकणा; (क्रि. स.) दे. ढँकणा।

ढकनी (स्त्री.) दे. ढकणी।

ढकरी (स्त्री.) कपड़ा बुनने के काम आने वाली शटल जिसमें धागा भरा जाता है।

ढका (पुं.) एक जाट गोत।

ढकार (स्त्री.) डकार, (दे. अढकार); **~मारणा/लेणा** डकारना, डकार लेना।

ढकेलना (क्रि. स.) दे. धिकाणा।

ढकोसला (पुं.) दे. ढकोसळा।

ढकोसळा (पुं.) दिखावटी काम, अडंबर। **ढकोसला** (हि.)

ढक्कण (पुं.) ढाँपने का पात्र, ढकना। **ढक्कन** (हि.)

ढक्कन (पुं.) दे. ढक्कण।

ढढवा (स्त्री.) दे. ढिढवा।

ढढेण (स्त्री.) दे. ढिढाण।

ढढैंण (स्त्री.) दे. ढिढाण।

ढप (पुं.) 1. एक ओर से मढ़ा बड़ा ढोल, 2. बड़ी पतंग; (वि.) विशाल, बड़ा। **डफ** (हि.)

ढपड़ा (पुं.) डफ, बड़ा ढोल।

ढपली (स्त्री.) छोटा डफ। **डफली** (हि.)

ढप्पू (वि.) मोटा-ताज़ा।

ढफ (पुं.) दे. ढप।

ढफ नाच (पुं.) फसल और वसंत का नृत्य।

ढब[1] (पुं.) 1. विधि, तरीका–देक्खो ऊँट कींह ढब बैट्ठैगा?, 2. परिचय, संबंध –परदेस मैं ढब लिकड़्-यावै तै के कहणे; **~ढूँढणा** जान-पहचान निकालना; **~मिलाणा** परिचय बढ़ाना; **~लाणा** मित्रता या प्रेम बढ़ाना।

ढब[2] (अव्य.) ओर। की तरफ। उदा.–पर तिरिया अर पर धन की ढब नहीं लखाणा चाहिए। (लचं.)

ढबली (पुं.) ताँबे का बना बड़े आकार का पैसा; (वि.) मोटा, बड़ा और मज़बूत; **~पइसा/पैसा** ताँबे का बड़ा पैसा।

ढब्बण (स्त्री.) 1. सहेली, 2. प्रेमिका।

ढब्बा (पुं.) 1. दाग़, 2. कलंक।
धब्बा (हि.)

ढब्बी (पुं.) 1. मित्र, 2. परिचित, 3. अवैध प्रेमी।

ढभोळी (स्त्री.) 1. डाभ, कुशा, 2. डाभ की गड्डी।

ढम जर (पुं.) 1. गर्म जल। 1. दे. निवाया, 2. दे. तात्ता। 2. जुकाम। तुल. खेर।

ढमाळ (पुं.) 1. बड़े आकार का ढोल, 2. ढोल के साथ किया जाने वाला एक नाच; (वि.) बड़े आकार का।

ढमाल नाच (पुं.) अहीर जाति का नृत्य विशेष, फाल्गुन नृत्य।

ढम्माँढेळी (स्त्री.) विनाश, ध्वंस, (दे. ऊँट-मटील्ला; **~होणा** नष्ट-भ्रष्ट होना।

ढरकना (क्रि. अ.) दे. ढळकणा।

ढरकी (स्त्री.) बुनाई का एक औजार।

ढररा (पुं.) 1. पुरानी रट, पुरानी लीक, 2. कुप्रथा, कुप्रचलन। **ढर्रा** (हि.)

ढर्रा (पुं.) दे. ढररा।

ढलकना (क्रि. अ.) दे. ढळकणा।

ढळकणा (क्रि. अ.) 1. टपक पड़ना, 2. फिसलना, 3. आँखों से आँसू टपकना; (वि.) जो शीघ्र लुढ़क जाए।
ढुलकना (हि.)

ढळकवा (पुं.) आँखों से पानी टपकने का रोग, टरकोमाँ।

ढळका (पुं.) आँख से पानी बहने की बीमारी। **ढलकाव** (हि.)

ढळणा (क्रि. अ.) 1. चलायमान होना, 2. उतार की ओर जाना, 3. जवानी उतरना, 4. अपराह्न होना, 5. लुढ़कना, 6. ढाला जाना, 7. किसी ओर रुझान होना, 8. चेचक का प्रभाव कम होना; **दिन~** 1. अपराह्न होना, 2. कीर्ति, मान-मर्यादा का समय समाप्त होना।
ढलना (हि.)

ढलना (क्रि. अ.) दे. ढळणा।

ढळमाँ (वि.) 1. ढलावदार, 2. साँचे में ढाला हुआ। **ढलवाँ** (हि.)

ढलवाँ (वि.) दे. ढलमाँ।

ढळवाणा (क्रि. स.) 1. साँचे में रख कर वाँछित आकार की वस्तु बनवाना, 2. पिघलवाना, गलाना।
ढलवाना (हि.)

ढलवाना (क्रि. स.) दे. ढळवाणा।

ढलाई (स्त्री.) दे. ढळाई।

ढळाई (स्त्री.) 1. ढालने या गलाने का काम, 2. ढलान, 3. ढालने की मज़दूरी; (क्रि. स.) 'ढाळणा' का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

ढळाऊ (वि.) 1. ढलान वाला, 2. ढाला हुआ, 3. नीचे की ओर का, 4. (दे. दबाऊ)।

ढलाण (पुं.) 1. नीचा भाग, 2. गड्ढा, 3. उतराव। **ढलान** (हि.)

ढलाना (क्रि. स.) दे. ढळवाणा।

ढळ्याँ (क्रि. वि.) ढलते-ढलते–1. दिन ढळ्याँ पैंड्डा छूट्या,–2. उमर ढळ्याँ पाच्छै कूण बूज्झै सै।

ढसकणा (क्रि. अ.) 1. धँसना, 2. खाँसना; (क्रि. स.) 1. निगलना (व्यंग्य में), 2. फिसलना।

ढस्सू (वि.) चुप्पी साधने वाला।

ढहणा (क्रि. अ.) 1. गिरना, मकान, दीवार आदि का गिरना, 2. कुश्ती हारना, 3. गिर पड़ना, 4. क़िले आदि का शत्रु के अधिकार में आना, 5. पतित होना; (वि.) जो डह जाए। **ढहना** (हि.)

ढहना (क्रि. अ.) दे. ढहणा।

ढहाना (क्रि. स.) दे. ढाहणा।

ढही (स्त्री.) दे. ढई।

ढह्वाणा (क्रि. स.) गिरवाना, गिराने का काम अन्य से करवाना।

ढाँक (स्त्री.) 1. भैंस जिसका दूध सूख गया हो, 2. भैंस, 3. न ब्याने वाली भैंस।

ढाँक्का (पुं.) एक जाट गोत।

ढाँख (स्त्री.) दे. ढाँक।

ढाँच[1] (स्त्री.) एक हरा चारा।

ढाँच[2] (पुं.) गाड़ी, ताँगे आदि का एक भाग।

ढाँचा (पुं.) दे. ढाँच्चा।

ढाँच्चा (पुं.) 1. अस्थि पंजर, 2. गठन, 3. एक हरा चारा। **ढाँचा** (हि.)

ढाँड्ढा (पुं.) बैल जो बुढ़ापे के कारण जोता न जा सके, बूढ़ा बैल।

ढाँड्ढी (वि.) 1. बूढ़ी (गाय), 2. वह गाय जिसका दूध सूख गया हो।

ढाँपना (क्रि. स.) दे. ढापणा।

ढा[1] (स्त्री.) दे. ढाह।

ढा[2] (स्त्री.) ईर्ष्या, दे. ढाह।

ढाई[1] (वि.) दो और आधा, अढ़ाई की संख्या।

ढाई[2] (स्त्री.) दे. धाड़[2]।

ढाईला (पुं.) आँख-मिचौनी का खेल।

ढाक (पुं.) पलाश का पौधा (इसके पत्तों की पत्तलें बनती हैं, इसके पौधे पर तीन की संख्या में पत्ते निकलते हैं, इसकी लकड़ी कमज़ोर होती है और हवन में काम आती है, यह ग्रीष्म ऋतु में फलता-फूलता है); **~के तीन पात** अपरिवर्तित स्थिति; **~पै चढाणा** झूठी प्रशंसा करके पड्यंत्र में फँसाना।

ढाकला (पुं.) दे. ढाक्का।

ढाक्का (पुं.) ढाका, ढाक का जंगल।

ढाक्का-पात्ता (पुं.) ढाका-पाटन, एक प्रकार की मलमल।

ढाट्ठा[1] (पुं.) मुँह पर बाँधने की पट्टी, (स्त्री. द्वारा) अपनी चुन्नी के पल्ले को इस तरह बाँधने की मुद्रा कि केवल नाक से आँख तक का भाग दिखाई दे; **~मारणा** 1. (मिर्च मसाले कूटते समय) ओढ़नी को मुँह पर इस प्रकार लपेटना कि नाँक में धाँस न जा सके, 2. खेत-खलिहान में काम करते समय ओढ़नी को नाक-मुँह पर इस प्रकार लपेटना कि केवल आँख दिखाई दे और महिला निस्संकोच मर्दों के साथ काम कर सके। **ढाटा** (हि.)

ढाट्ठा[2] (वि.) दृढ़, साहसी।

ढाट्ठी (वि.) ढाटी, साहसी (महिला), निडर (स्त्री)।

ढाढस (पुं.) ढारस, हिम्मत।

ढाणा[1] (पुं.) 1. बड़ा गाँव, 2. (दे. मैड़ा); (क्रि. स.) दे. ढाह्णा।

ढाणा[2] (पुं.) कुँआ गालने से पहले भूमि पर तैयार की गई गोल कोठी जिसे धीरे धीरे खोद कर 'गाला' या धँसाया जाता है। दे. ढाह्णा।

ढाणी (स्त्री.) छोटा गाँव।

ढापणा (क्रि. स.) 1. ढकना, 2. मढ़ना। **ढाँपना** (हि.)

ढाब (स्त्री.) 1. भूमि जो झील में हो, 2. झील के वे खेत जहाँ अधिक कुशा उगती हो।

ढाबा (पुं.) दे. ढाब्बा।

ढाबिया (पुं.) ढाबे का रसोइया।

ढाब्बा (पुं.) शाकाहारी भोजनालय। **ढाबा** (हि.)

ढारा (पुं.) झोंपड़ी, 2. टूटा-फूटा मकान, 3. मकान जहाँ पशु बाँधे जाते हों।

ढाल (स्त्री.) 1. तलवार के वार को रोकने के लिए हाथ में धारण किया जाने वाला अस्त्र, 2. गोबर की ढाल (जिसे होली पर चढ़ाते हैं); **~बुड़कला** ढाल और बुड़कला (दे. बुड़कला)।

ढाळ[1] (स्त्री.) 1. आदत, 2. किस्म, प्रकार; **~कुढाळ** अच्छी-बुरी आदत; **~ ~होणा** कुमार्ग पर चलना, आदत बिगड़ना; **~ढाळ का** तरह-तरह का; **~पड़णा** आदत पड़ना। **ढाल** (हि.)

ढाळ[2] (पुं.) ढलान, उतार; (क्रि. स.) 'ढाळणा' क्रिया का आदे. रूप।

ढाळणा (क्रि. स.) 1. अपने अनुकूल करना–छोह्रा था तै अहड़ा पर तनैं ढाळै लिया, 2. चाँदी, राँगा आदि को पिघला कर इच्छित रूप में बदलना, 3. भूमि को ढालू बनाना, 4. अर्घ्य देना–आँ हे, करवा चौथ के चाँद नैं पाणी ढाळ्याई?, 5. बात को बना-बना कर कहना–बात ढाळण मैं तै तूँ पक्का ए सै, 6. बंद करना–जात्ता- जात्ता किवाड़ ढाळ जाइये। **ढालना** (हि.)

ढालना (क्रि. स.) दे. ढाळणा।

ढाळाँ (स्त्री.) 1. ढाल, तरह, प्रकार–कींह ढालाँ काम चाल्लैगा?, 2. ठीक रास्ते आना, अनुकूल होना–ढाळाँ आज्या नाँ तै घर बिगड़ ज्यागा; (वि.) अनेक प्रकार का–दिल्ली मैं ढाळाँ-ढाळाँ के आदमी मिल्लैंघे, बच कै रहियो; **~पड़णा** 1.आदत पड़ना, 2. अनुकूल अवस्था में ढलना।

ढाला (स्त्री.) आदत। दे. बाँण[1]।

ढाळा (पुं.) 1. आदत। उदा.–रहा चोरी का ढाळा। 2. झुकाव, 3. ढलान।

ढालू (वि.) दे. ढाळू।

ढाळू (वि.) 1. ढलवाँ, 2. तिरछा, 3. वह जिसे अपने अनुकूल ढाला जा सके। **ढालू** (हि.)

ढाह (स्त्री.) 1. पानी के कटाव से बना गहरा खड्ढ, 2. गुफा, 3. खान, 4. मिट्टी की गहरी खदान; **~पड़णा** खदान की छत गिरना।

ढाह्णा (क्रि. स.) 1. गिराना, दीवार, मकान आदि को गिराना, 2. कुश्ती में हराना। **ढाहना** (हि.)

ढाह्रा (पुं.) दे. ढारा।

ढिंगसर/ढिंगसिर (क्रि. वि.) ढंग से, तरीके से, करीने से–काम करणा हो तै ढिंगसिर कर, ना गूँच अड़ै तैं।

ढिंढा लहकोई (पुं.) ढेला छिपाकर लड़कियों द्वारा खेला जाने वाला एक खेल। दे. डळा लहकोई।

ढिंढोरा (पुं.) दे. ढँढोरा।

ढिग (अव्य.) पास।

ढिठाई (स्त्री.) निर्लज्जता, गुस्ताख़ी, 2. दुस्साहस।

ढिढवा (स्त्री.) नीची जाति के लोगों का समूह।

ढिढाण (स्त्री.) पाँच-छः हाथ लंबा कटवाँ पत्तों वाला बारीक तने का पौधा विशेष जिसमें फली लगती हैं।

ढिढाणा (क्रि. अ.) दे. डिडाणा।

ढिबरी (स्त्री.) 1. बोतल, दवात आदि का ढक्कन, 2. बिना शीशे की छोटी लालटेन; **~टैट होणा** 1. कठिनाई में पड़ना, 2. मृत्यु होना।

ढिमका (वि.) 1. अमुक, फलाँ, 2. 'फलाणा' का अनुवर्ती–फलाणे-ढिमके आदमियाँ तैं बात नाँ कर्‌या करैं।

ढिमकी (वि.) अन्य, दूर की–आँ हे, मैं तत्तैं (तेरे से) ढिमकी कद तैं होगी (मैं तुझसे पराई कब से हूँ); **फलाणी~** अमुक–फलाणी ढिमकी बात न्यूँ सै।

ढिलाई (स्त्री.) 1. ढील देने का भाव, 2. छूट या स्वतंत्रता देने का भाव, 3. सुस्ती, 4. देरी।

ढिल्लिका (स्त्री.) दिल्ली (विरल प्रयोग)।

ढिसळणा (क्रि. अ.) 1. शिथिल होना, 2. फिसलना, 3. चरित्र से पतित होना, (दे. धिसळणा)। **धिसलना** (हि.)

ढींक्खर (पुं.) 1. झड़बेरी का सूखा पौधा, झड़बेरी का काँटों वाला सूखा भाग जिससे सभी पत्तियाँ झाड़ ली गई हों (पात झड़ी झाड़ी), 2. काँटेदार सूखी झाड़ी, काँटेदार झाड़ी; (वि.) सूखा या दुबला-पतला व्यक्ति; **~काटणा** मार्ग की बाधा दूर करना; **~बोणा** जान को झंझट खड़ा करना; **~लाणा** 1. खेत की बाड़ लगाना, 2. अगत बिगाड़ना; **~होणा** 1. सूखना, 2. सूख कर काँटा होना।

ढींखळी (स्त्री.) डहर या अन्य ऐसे स्थान पर बनी कच्ची कूई जहाँ जलस्तर ऊँचा हो; **~बाहणा** ढेंकली चलाना। **ढेंकली** (हि.)

ढींग (वि.) दे. धींग।

ढींगड़ा (वि.) दे. धींगड़ा।

ढींगा (पुं.) हुक लगी लाठी जो फसल को सूड़ने के काम आती है। दे. सूड़णा।

ढींढरा[1] (पुं.) पौधे की डोडी जिसमें बीज होते हैं, जैसे–कटहली, केंदू के ढींढरे, डोडी।

ढींढरा[2] (पुं.) पटसन के बीज की डोडी जिसका साग भी बनाया जाता है। दे. ढींढरा।

ढी (पुं.) 1. डोला, मुँडेर, 2. नाका; **~तोड़ मींह** ज़ोर की वर्षा।

ढीड्ढू (वि.) जिसकी आँख में सफ़ेद मल लगा रहता हो।

ढीढ (स्त्री.) आँख के कोये पर जमने वाला लसलसा सफ़ेद मैल; **~आणा** कठिनाई अनुभव करना।

ढीम (पुं.) भारी ढेला, मोटा ढेला; (वि.) मंद बुद्धि; **~सा सिर** 1. मंद बुद्धि, 2. भारी सिर।

ढीमचक्क (पुं.) बड़ा पत्थर।

ढीमड़ा/ढीमरा (पुं.) दे. ढीम; **~सा फूटणा** आर्थिक व्यवस्था प्रकट होना।

ढीम्माँ (पुं.) एक अहीर गोत।

ढील (स्त्री.) 1. हल्की पकड़, 2. स्वतंत्रता; **~छोडणा** 1. अनुशासन ढीला करना, 2. शरीर को ढीला छोड़ना, 3. सुस्ती दिखाना; **~लागणा** विलंब होना।

ढीला (वि.) दे. ढील्ला।

ढील्ला (वि.) 1. ढीला, जो तंग न हो, ढीला-ढाला, 2. खुला हुआ, मुक्त-हस्त–फलाणे की बहू का हाथ घणा ढील्ला सै, 3. जो गाढ़ा न हो, 4. आलसी, 5. नर्म स्वभाव का; **~पड़णा/होणा** 1. क्रोध कम होना, 2. हठ छोड़ना; **~ढाल्ला** ढीला-ढाला।

ढीह (स्त्री.) दे. ढी।

ढीहा (पुं.) दे ढूह।

ढुँगार (पुं.) 1. दहकते अंगारे पर घी डालकर खाली पात्र को उस पर औंधा मारकर लगाया गया छोंक (इस सुगंधित पात्र में रायता आदि डाल दिया जाता है), 2. अपान वायु (व्यंग्य में); **~लाणा/मारणा** 1. अंगारे की सहायता से छोंक लगाना, 2. पादना। **धुंगार** (हि.)

ढुँगारणा (क्रि. स.) ढुँगार या धुंगार लगाना।

ढुँढवाणा (क्रि. स.) खोज करवाना। **ढुँढ़वाना** (हि.)

ढुँढ़वाना (क्रि. स.) दे. ढुँढवाणा।

ढुँढेरा (पुं.) दे. ढिंढोरा।

ढुआणा (क्रि. स.) ढुलाई का काम अन्य से करवाना। **ढुलाना** (हि.)

ढुका (स्त्री.) विवाह की एक रस्म जब दूल्हा पहली बार श्वसुर के दरवाज़े पर जाता है।

ढुलकना (क्रि. अ.) दे. लुढकणा।

ढुळकाणा (क्रि. स.) 1. ढुलकाना, 2. लुढ़काना।

ढुलवाई (स्त्री.) दे. ढुळवाई।

ढुळवाई (स्त्री.) 1. ढुलवाने का काम, ढुलाई, 2. ढोने की मज़दूरी। **ढुलवाई** (हि.)

ढुलाना (क्रि. स.) दे. ढुआणा।

ढुवाई (स्त्री.) दे. ढुलवाई।

ढूँ (पुं.) दे. ढूह।

ढूँगा (पुं.) कूल्हा; **~(–गै) धरणा** 1. गोद में लेना, 2. पटकी लगाना; **~मटकाणा/मारणा** मटकते फिरना, इतराना; **~लाणा** सहायता करना। **ढूँगा** (हि.)

ढूँढ[1] (पुं.) 1. टूटा-फूटा मकान, कच्चा मकान, 2. भवन के अवशेष; (वि.) अंधा।

ढूँढ[2] (स्त्री.) खोज, तलाश; (क्रि. स.) 'ढूँढणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पड़णा** तलाश होना; **~मारणा** 1. छान-बीन करना, 2. पूरी तरह खोजना।

ढूँढणा (क्रि.स.) खोजना। **ढूँढ़ना** (हि.)

ढूँढना (क्रि. स.) दे. ढूँढणा।

ढूँसणा (क्रि. स.) दे. ठूँसणा। **ठूँसना** (हि.)

ढूड्ढी (स्त्री.) गुदा के ऊपर की पहली हड्डी; **~ठाणा** ढूढ़ी का उपचार करना; **~डिगणा** ढूढ़ी की हड्डी अपने स्थान से हिलना।

ढूह (पुं.) 1. मिट्टी आदि का ढेर, ढेर, 2. टीला, भूमि का धरातल से उठा हुआ भाग, 3. कुरड़ी, कूड़ी; **~करणा/मारणा/लाणा** ढेर लगाना।

ढूही (स्त्री.) छोटी ढेरी।

ढूहडी (स्त्री.) दे. ढूड्ढी।

ढेंकळी (स्त्री.) दे. ढींखळी।

ढेंच्चा (पुं.) एक हरा चारा।

ढे[1] (पुं.) एक जाट गोत।

ढे[2] (स्त्री.) भूसे आदि की ढेरी।

ढेक्कण (क्रि. वि.) निकट।

ढेगरा (पुं.) 1. टूटा हुआ पात्र, 2. मटके का टुकड़ा, 3. (दे. ठेक्कर)।

ढेग्गर (पुं.) 1. (दे. ढेगरा), 2. (दे. ठेक्कर)।

ढेट्ठा (वि.) 1. साहसी, 2. दृढ़, 3. निडर, 4. निर्लज्ज। **ढेठा** (हि.)

ढेठ (स्त्री.) साहस--तनैं रात नैं बाब्बा जी ध रैं जाण की ढेठ क्यूकर करी?।

ढेड (पुं.) दे. ढेढ।

ढे ड़े (अव्य.) दे. डे-डे।

ढेढ (पुं.) 1. कौआ, 2. एक अनुसूचित जाति, 3. एक गाली। **ढेंढ** (हि.)

ढेढराज (पुं.) दे. डेढराज।

ढेढवाई (स्त्री.) दे. ढिढवा।

ढेबणा (क्रि. स.) 1. बंद करना, जैसे--ताळा ढेबणा, 2. गंदा लेख लिखना।

ढेबळा (पुं.) 1. गड्ढा, 2. गंदा लेख; **~मारण** गंदा लेख लिखना।

ढेबा (पुं.) धक्का।

ढेब्बर (पुं.) दे. ढेगरा।

ढेमलो (पुं.) एक पात्र।

ढेर[1] (पुं.) अंबार, ढेरी; **~करणा** मारना, मौत के घाट उतारना; **~मारणा** ढेरी बनाना; **~होणा** 1. कुढ़ना, मन ही मन जलना, 2. मरना।

ढेर[2] (पुं.) कुरुक्षेत्र भूमि। तुल. बेट। तुल. नरकद।

ढेरा (पुं.) मोटी जूँ।

ढेरी (स्त्री.) 1. ढेर, अंबार, 2. ठठरी; **~होणा** 1. तन सूख कर ठठरी होना, 2. मरना।

ढेला (पुं.) दे. ढेल्ला।

ढेळिया (पुं.) दे. छाजिया।

ढेळी (स्त्री.) सुहागी। दे. सुहाग्गा। तुल. मेज।

ढेल्ला (पुं.) पत्थर, कंकर, (दे. ढीम)।

ढेहा (पुं.) पिशाच।

ढैंक्का (पुं.) ढेंकली चलाने वाला।

ढैया (स्त्री.) दे. ढइया।

ढैर (पुं.) दे. ढहर।

ढोंक्का (पुं.) पाद।

ढोंग[1] (पुं.) पाखंड।

ढोंग[2] (पुं.) दे. थोक।

ढोंगी (वि.) दे. ढोंग्गी।

ढोंग्गी (वि.) पाखंडी। **ढोंगी** (हि.)

ढोंच्चा (पुं.) साढ़े चार का पहाड़ा; (वि.) साढ़े चार गुणा। **ढोंचा** (हि.)

ढोक (स्त्री.) 1. टेक, सहारा, 2. चारपाई, बैलगाड़ी आदि का संतुलन बनाए रखने के लिए लगाई गई ईंट, लकड़ी आदि; **~-सा** छोटा सा।

ढोकणा[1] (क्रि. स.) दे. धोकणा।

ढोकणा[2] (क्रि.) ढेंकली उँडेलना। उदा. हम पै ढोको ढोंकली, तुम सींचो और की क्यार।

ढोकळी (स्त्री.) मथानी, रई ('रै' या 'रये' जाति के लोग रई या मथानी को ढोकळी कहते हैं क्योंकि 'रई' में जाति की ध्वनि-साम्यता है)।

ढोकसा (पुं.) गीली मिट्टी का बड़ा सा दीपक बना कर भूमि पर उल्टा पटखने का एक खेल।

ढोणा (क्रि. स.) बोझा उठाना, भार ढोना। **ढोना** (हि.)

ढोना (क्रि. स.) दे. ढोणा।

ढोबरा (पुं.) 1. खंडित-पात्र, 2. अपवित्र पात्र, 3. मिट्टी का बना पात्र; **~सा मुँह** गंदा मुँह।

ढोबा (पुं.) शादी के मिट्टी के पात्र।

ढोब्बर (पुं.) दे. ढोबरा।

ढोर (पुं.) पशु (गाय, बैल आदि)।

ढोरची (पुं.) 1. ग्वाला, 2. ढिंढोरा पीटने वाला; (वि.) असभ्य।

ढोरा (पुं.) अन्न का एक कीड़ा विशेष।

ढोरी[1] (पुं.) चमार जाति का एक गोत।

ढोरी[2] (पुं.) दे. ढोर।

ढोल[1] (पुं.) चमड़ा मढ़ा बाजा विशेष; (वि.) 1. खोखला, 2. हर समय बोलते रहने वाला; **~बजाणा/ पीटणा** प्रचार करना।

ढोल[2] (वि.) दो थण वाली गाय।

ढोलक/ढोलकी (स्त्री.) छोटा ढोल; **~-सा पेट** गोल-मटोल पेट।

ढोलकिया (पुं.) ढोल बजाने वाला; (वि.) हाँ में हाँ मिलाने वाला।

ढोलचीं (पुं.) ढोल बजाने वाला।

ढोळणा (क्रि. स.) चँवर डुलाना। **डुलाना** (हि.)

ढोलना (पुं.) 1. ताबीज़ जिसमें चौकोर आकृति के स्थान पर ढोल की आकृति की डिब्बी धागे में पिरोई जाती है, 2. गले का एक आभूषण।

ढोला (पुं.) दे. ढोल्ला।

ढोलिया (पुं.) दे. ढोलकिया।

ढोल्ला (पुं.) 1. ढोल कँवर, निहालदे साँग में वर्णित कीचकगढ़ के पणिहार-गोत्री राजा मैनपाल के पुत्र, मरवण का धर्म-भाई, नरसुल्तान, 2. गीतों में वर्णित एक राजा, 3. एक प्रकार का संगीत, 4. प्रेमी; **~मारू** ढोला और मरवण जिनका वर्णन गीतों में मिलता है।

ढोल्लू (वि.) मोटे पेट वाला।

ढोवणी (स्त्री.) 1. कटी फ़सल को खलिहान में ले जाने का काम, 2. ढोने का काम; (वि.) ढोने में कुशल; **~चालणा/लागणा** खेतों से ढुलाई का काम शुरू होना।

ढोसी (स्त्री.) महेन्द्रगढ़ में च्यवन ऋषि आश्रम-स्थल (तीर्थस्थल) की पहाड़ी। यहाँ बरसाती दोहन नदी बहती है।

ढोस्सी (स्त्री.) नारनोल के पास एक नदी। **ढोसी** (हि.)

ढोस्सी-परबत (पुं.) ढोसी नदी के तट पर एक पर्वत जहाँ जनधारणा के अनुसार च्यवन ऋषि का आश्रम था (यहाँ च्यवन ऋषि का स्मारक है तथा हर वर्ष मेला लगता है)।

ढोस्सेर (पुं.) भार्गव ब्राह्मण (महर्षि भृगु ढोसी पर्वत पर आश्रम बना कर रहते थे, उन्हीं के वंशज ढोसेर कहलाए, इस वंश के लोग बनिया जाति में भी हैं)।

ण

ण हिंदी वर्णमाला का पंद्रहवाँ तथा टवर्ग का पाँचवाँ व्यंजन, इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है, हरियाणवी में शब्द के मध्य तथा अंत की स्थिति में 'न' के स्थान पर अधिकांशत: 'ण' का ही उच्चारण होता है।

णमोकार (पुं.) जैन सम्प्रदाय का एक प्रसिद्ध मंत्र

त

त हिंदी वर्णमाला का सोलहवाँ व्यंजन और तवर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारण स्थान दंत है, हरियाणवी में इसका उच्चारण दंत और तालु के मध्य है।

तंग (पुं.) 1. घोड़े का तंग, घोड़े की जीन आदि को कसने का तस्मा, 2. गाँठ, छप्पर आदि बाँधते समय काम आने वाली गाँठ; (वि.) 1. कम चौड़ा, 2. ओछा, 3. परेशान; **~लाणा** 1. घोड़े का तंग बाँधना, 2. छप्पर आदि बाँधते समय स्थान-स्थान पर गाँठ बाँधना।

तंग्गी (स्त्री.) कमी, (दे. तोड़ा)। **तंगी** (हि.)

तंघणा (क्रि. अ.) 1. तरफ़दारी करना, 2. किसी की ओर बढ़ना, 3. मुँह ताकना।

तंडल (पुं.) चावल। **तंडुल** (हि.)

तंत (पुं.) 1. चरम उत्कर्ष–लखमी बाह्मण साँग मैं तंत पै पोंह्च ग्या था, 2. तत्त्व, सार–बात तै तंत की कही सै, 3. शुद्ध तोल; **~आणा** बात चरम उत्कर्ष पर पहुँचना।

तंतर (पुं.) 1. झाड़ने-फूँकने का मंत्र, 2. कार्य-प्रणाली–तेरा ए तंतर समझ मैं नाँ आमता। **तंत्र** (हि.)

तंतरी (स्त्री.) एक बाजा विशेष; (पुं.) तांत्रिक। **तंत्री** (हि.)

तँतवा (पुं.) 1. दे. धुनिया, 2. दे. तेल्ली।

तंतीपाल (पुं.) अज्ञातवास में सहदेव का नाम। दे. सहदे।

तंत्र (पुं.) दे. तंतर।

तंदरुस्त (वि.) स्वस्थ।

तंदरुस्ती (स्त्री.) स्वास्थ्य, सेहत।

तंबा (पुं.) तहमद के समान एक पहनावा।

तंबाकू (पुं.) दे. तमाँक्खू।

तँबाणा (क्रि. अ.) ताँबे के पात्र में रखी वस्तु पर धातु का प्रभाव आना।

तँबिया (स्त्री.) 1. ताँबे आदि से बनी छोटी और हल्की तश्तरी, (दे. रिकाब्बी), 2. छोटा तंबा या तहमद।

तंबू (पुं.) खेमा, शामियाना।

तँबूरा (पुं.) तानपुरा, एक बाजा।

तंबेल्ला (पुं.) दे. तबेल्ला।

तँबोल्ली (स्त्री.) एक अनुसूचित जाति; (पुं.) पान बेचने वाला।

तअ (अव्य.) तो, (दे. तै)।

तई[1] (स्त्री.) कम गहरी कड़ाही, जलेबी आदि बनाने की कड़ाही; (क्रि.अ.) 'तैणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

तई[2] (त्री.) 1. दे. सीम, 2. दे. सीम सद्धा।

तईया (वि.) 1. तीन दिन में आने वाला (ताप), 2. तीसरे हिस्से का साझीदार।

तईया-ताप (पुं.) मलेरिया ज्वर (जो एक दिन छोड़कर दूसरे दिन चढ़ता है)।

तक[1] (अव्य.) पर्यंत–कित्तै तक जाले भाग आग्गै चाल्लैगा, (दे. ताँहीं)।

तक[2] (स्त्री.) (कौर.) दे. ताखड़ी; (क्रि. स.) 'तकणा' क्रिया का आदे. रूप।

तकड़ा (वि.) दे. तगड़ा।

तकड़िया-घास (स्त्री.) एक प्रकार की घास जिसके फूल तीन धागों की तरह होते हैं।

तकणा (क्रि. स.) 1. ललचाई या बुरी निगाह से देखना, 2. पराई वस्तु को ग्रहण करने की सोचना। **तकना** (हि.)

तक़दीर (स्त्री.) भाग्य।

तकना (क्रि. स.) दे. तकणा।

तकमा (पुं.) तमगा, पदक।

तकरार (स्त्री.) कहा-सुनी, मन-मुटाव।

तकला (पुं.) 1. चर्खे का मोटा सूआ जिस पर कुकड़ी लिपटती या बनती है, 2. मोटा सूआ।

तकली (स्त्री.) सूत कातने का छोटा यंत्र विशेष जिसमें तकुए के नीचे चक्र होता है।

तकलीफ़ (स्त्री.) पीड़ा, कष्ट।

तकवा (पुं.) चरखे का मोटा ताकू (जिस पर धागे की कुकड़ी बनती है)।

तक़सीम (स्त्री.) 1. बाँटने की क्रिया, 2. भाग।

तकसीर (स्त्री.) दोष।

तक़ाज़ा (पुं.) दे. तगाज्जा।

तकावी (स्त्री.) वह धन जो ग़रीब खेतीहरों को बीज खरीदने, कूआँ आदि बनाने के लिए कर्ज़ के रूप में दिया जाता है।

तकिया (पुं.) दे. गींडवा।

तक्षक (पुं.) दे. तच्छक।

तखड़िया (पुं.) घास का एक क्षुद्र जंतु।

तखत (पुं.) 1. बड़ी चौकी, 2. साधु की गद्दी, 3. राज-गद्दी, 4. स्वाँग का मंच, 5. फाँसी का तख़्ता। **तख़्त** (हि.)

तखत हजारा (पुं.) साँग में वर्णित 'राँज्झा' (दे.) का निवास स्थान।

तखता (पुं.) 1. लकड़ी का चौड़ा पट्टा, 2. वह पट्टा जिस पर क़ैदी को फाँसी लगाई जाती है, 3. (दे. तखत)। **तख़्ता** (हि.)

तखती (स्त्री.) 1. लकड़ी की पट्टिका जिस पर छात्र लिखना सीखते हैं, पट्टी, 2. नई सीख। **तख़्ती** (हि.)

तख़्त (पुं.) दे. तखत।

तख़्ता (पुं.) दे. तखता।

तख़्ती (स्त्री.) दे. तखती।

तगड़ा (वि.) 1. बलवान, 2. साहसी, 3. अधिक मात्रा में, जैसे–तगड़ा मींह।

तगड़ी (वि.) 1. मोटी-ताज़ी, 2. बलवान, 3. प्रभावशाली–कितै तगड़ी सिफारिस टोह तै काम बणै, 4. अधिक मात्रा में–ईब कै तै तगड़ी बरखा होगी, 5. स्वस्थ, 6. सुडौल–जवार तै तगड़ी सै, 7. कठोर–1 घणी तगड़ी बात कह ग्या–2. छात्ती तगड़ी करले; (स्त्री.) (दे. तागड़ी)।

तगमाँ (पुं.) दे. तकमा।

तगा (पुं.) त्यागी गोत का व्यक्ति, (दे. त्यागी)।

तगाई (स्त्री.) तकावी।

तगाजिया (वि.) 1. उधार पैसे वसूलने के लिए बार-बार तक़ाज़ा करने वाला, 2. हर काम को ज़ल्दी-ज़ल्दी करने वाला।

तगाज्जा (पुं.) ज़ल्दी, शीघ्रता से–इस काम नैं तगाज्जे तैं कर ले। **तक़ाज़ा** (हि.)

तगाड़ (पुं.) 1. मूँज की मोटी तगड़ी, 2. मोटा धागा, 3. (दे. तगार)।

तगार (पुं.) 1. दीवार आदि चिनने के लिए तैयार की गई गीली मिट्टी, 2. वह स्थान जहाँ चिनाई की मिट्टी तैयार की जाए; **~करणा/मचाणा** 1. कीचड़ मचाना, 2. तगार की मिट्टी मथना।

तगिया (स्त्री.) दे. तिगनी।

तच्छक (पुं.) पाताल के आठ नागों में से एक। **तक्षक** (हि.)

तजणा (क्रि. स.) 1. छोड़ना, 2. प्रतिज्ञा-पूर्वक छोड़ना, 3. छुटकारा पाना, 4. प्राण छोड़ना, 5. जाति- बहिष्कृत करना। **तजना** (हि.)

तजना (क्रि. स.) दे. तजणा।

तजरबा (पुं.) अनुभव।

तज़बीज़ (स्त्री.) 1. राय, सम्मति, 2. विचार।

तड़ (स्त्री.) 1. 'तड़' की ध्वनि, 2. झूठी बड़ाई।

तड़क (स्त्री.) 1. तड़कने या चटखने की क्रिया, 2. किसी वस्तु या पात्र के चटखने से पड़ा चिह्न, 3. प्रात:काल, तड़के।

तड़कणा (क्रि. अ.) 1. फली आदि का पक कर चटखना, 2. मिट्टी, शीशे आदि के पात्र का चटख कर टूटना, 3. कड़कना, 4. झुँझलाना, 5. चमकना, बिजली का चमकना; (क्रि. स.) सब्ज़ी, दाल आदि में तड़का या छोंक लगाना, (दे. ढुँगारणा)। **तड़कना** (हि.)

तड़कना (क्रि. अ.) दे. तड़कणा।

तड़क-भड़क (स्त्री.) 1. चमक-दमक, 2. दिखावा, 3. ठाठ-बाट।

तड़क-साँझ (क्रि. वि.) दे. तड़कै-साँझ।

तड़का (पुं.) 1. भोर का समय, 2. सब्ज़ी, दाल आदि में छोंक लगाने की क्रिया।

तड़काऊ (पुं.) उषा-काल; **~सी** लगभग प्रात:काल के समय।

तड़की (स्त्री.) प्रात:। 1. दे. तड़का, 2. दे. तड़काऊ।

तड़कीला (वि.) दे. तड़कील्ला।

तड़कील्ला (वि.) तड़क-भड़क वाला, चटकीला। **तड़कीला** (हि.)

तड़कै (क्रि. वि.) 1. आने वाला या बीता हुआ कल; 2. प्रात:काल का समय— तड़कै-तड़क माँग्गण आग्या; **~परसूँ** 1. कल-परसों, 2. हाल ही में; **~-वड़कै** कल या परसों, आजकल में; **~-साँझ** 1. प्रात:सायं, 2. निकट भविष्य में, 3. किसी समय भी; **~ ~करणा** टाल-मटोल करना; **~ ~जाणा** जैसे-तैसे समय बीतना; **~ ~होणा** देर-सवेर होना।

तड़पड़ी (स्त्री.) तड़पन।

तड़पना (क्रि. अ.) दे. तड़फणा।

तड़पाना (क्रि. स.) दे. तड़फाणा।

तड़फड़ी (स्त्री.) हड़बड़ी।

तड़फणा (क्रि. अ.) 1. पीड़ा से तिल-मिलाना, 2. वियोग को घनीभूत रूप से अनुभव करना, 3. (दे. सुसकणा)। **तड़पना** (हि.)

तड़फना (क्रि. अ.) दे. तड़फणा।

तड़फाणा (क्रि. स.) तड़पाना, सताना।

तड़ाक (स्त्री.) 'चट' या 'तड़' से वस्तु टूटने की ध्वनि; (क्रि. वि.) ज़ल्दी से; **तू~** अबे-तबे बोलने या कहने का भाव।

तड़ाक्का (पुं.) 1. 'तड़' से टूटने की क्रिया, 2. तड़ाक की ध्वनि। **तड़ाका** (हि.)

तड़ाणा (क्रि. स.) 1. ताड़ना, 2. भगाना, दौड़ाना, 3. (दे. तरड़ाणा)।

तड़ातड़ (क्रि. वि.) 1. 'तड़'-'तड़' की ध्वनि के साथ (पिटाई), 2. निरंतर, अविरल।

तड़ी (स्त्री.) 1. रौब, दबदबा, 2. झूठी बड़ाई; **~दिखाणा** रौब गाँठना; **~मारणा** झूठी बड़ाई करना।

तड़ी पार (वि.) सीमा पार। **~करणा**— सीमा से बाहर खदेड़ना या निकालना।

तड़ोस्सी (पुं.) 1. पड़ोस से कुछ दूर का घर, 2. पड़ोसी से भी कुछ दूर का संबंध।

तणणा (क्रि. अ.) 1. अकड़ कर सीधा खड़ा होना, 2. ऐंठना, 3. पदार्थ का कड़ा होना; (क्रि. स.) ताना जाना, तानना। **तनना** (हि.)

तणा[1] (पुं.) 1. वृक्ष का टहना, 2. बँधना, फुँदना; (क्रि. अ.) 'तणणा' क्रिया का भू. का., पुं. रूप; **~(–णे) तोड़णा** 1. बंधन-मुक्त होने के लिए पूरी शक्ति लगाना, 2. पूरी शक्ति से काम लेना। **तना** (हि.)

तणा[2] (पुं.) ऐंठन। **तनाव** (हि.)

तणाणा[1] (क्रि. स.) 1. तंबू आदि लगवाना, 2. ऐंठवाना। **तनवाना** (हि.)

तणाणा[2] (क्रि.) पीट कर लंबायमान करना। लंबा पसारणा।

तणियाँ (पुं.) 1. एक टोपी जो ठोड़ी के नीचे तनी या रस्सी से बाँधी जाती है, 2. चोली या वस्त्र जिसमें बटन के स्थान पर तनी लगी होती है, 3. छोटे बच्चे का अधसिला वस्त्र। **तनिया** (हि.)

तणी (स्त्री.) 1. रस्सी जो टोपी या अधसिले वस्त्र के साथ बँधी होती है और बटन का काम देती है, 2. रस्सी; (क्रि. अ.) 'तणणा' क्रिया का भू.का, स्त्रीलिं. रूप; **~मैं आणा** जाल में फँसना; **~सी तोड़णा** बंधन मुक्त करना। **तनी** (हि.)

तत (पुं.) 1. सार, 2. वास्तविकता, 3. चरम उत्कर्ष, 4. रहस्य, 5. (दे. तंत); **~काढणा** तत्त्व निकालना; **~की बात** पते की बात।
तत्त्व (हि.)

ततबीर (स्त्री.) तरकीब। **तदबीर** (हि.)

ततेरा (वि.) दे. तात्ता।

ततैया (पुं.) दे. ततैहिया।

ततैहिया (पुं.) भिड़ के आकार का पीले रंग का कीट। **ततैया** (हि.)

तत्ता (वि.) दे. तात्ता।

तत्तैं (सर्व.) 'तू' सर्वनाम का करण और अपादान कारक का रूप, तुम से–तत्तैं कई बै कहली।

तत्त्व (पुं.) दे. तत।

तद (अव्य.) तब।

तदबीर (स्त्री.) दे. ततबीर।

तन (पुं.) शरीर, (दे. गात)।

तनक (वि.) तनिक।

तनना (क्रि. अ.) दे. तणणा।

तनवाना (क्रि. स.) दे. तणाणा।

तना (पुं.) दे. तणा[1]।

तनाव (पुं.) दे. तणा[2]।

तनिया (स्त्री.) दे. तणियाँ।

तनी (स्त्री.) दे. तणी।

तनैं (सर्व.) दे. तन्नैं।

तन्नैं (सर्व.) 'तू' सर्वनाम का कर्ता और कर्म कारक का चिह्न, तूने, तुझे–तन्नैं ईब बात आवण लागगी।

तन्हा (वि.) दुखी।

तप (पुं.) 1. तपस्या, 2. परिश्रम; (क्रि.अ.) 'तपणा' क्रिया का आदे. रूप।

तपकाली (स्त्री.) बुख़ार आदि की बीमारी।

तपड़ा (पुं.) छोटा तप्पड़।

तपणा (क्रि. अ.) 1. तपस्या करना, 2. प्रसिद्ध होना, 3. अधिक गर्म होना; (क्रि. स.) पकाना, यथा–रसोई तपणा; (वि.) जो शीघ्र तपने लगे।
तपना (हि.)

तपत (स्त्री.) तपन, गरमी; (वि.) तपाया हुआ। **तप्त** (हि.)

तपता (वि.) तपता हुआ, उबलता हुआ–तपता पाणी ऊप्पर पड़ग्या।

तपदार (पुं.) सरपंच से बड़ा तथा जेलदार से छोटे पद का अधिकारी।

तपधारी (वि.) 1. तपस्या करने वाला, 2. सिद्ध-वचन (पुरुष)।

तपन (स्त्री.) 1. ताप, जलन, 2. गर्मी, 3. धूप, 4. वियोग से उत्पन्न पीड़ा।

तपना (क्रि. अ.) दे. तपणा।

तपस (स्त्री.) दे. तपत।

तपस्या (स्त्री.) दे. तप।

तपस्वी (पुं.) तपस्या करने वाला।

तपाक (क्रि. वि.) तुरंत।

तपाणा (क्रि. स.) 1. आगे में डाल कर लाल करना, 2. भोजन बनाना, 3. प्रसिद्धि दिलाना, 4. तपस्या करवाना। **तपाना** (हि.)

तप्पड़ (पुं.) वस्त्र आदि का छादन।

तपाना (क्रि. स.) दे. तपाणा।

तपिश (स्त्री.) दे. तपत।

तपेदिक (स्त्री.) दे. दिक।

तपोबण (पुं.) तपोभूमि। **तपोवन** (हि.)

तपोबल (पुं.) तपस्या का बल, प्रताप।

तपोभूमि (स्त्री.) दे. तपोभोम्मी।

तपोभोम्मी (स्त्री.) आश्रम। **तपोभूमि** (हि.)

तपोवन (पुं.) दे. तपोबण।

तप्त (वि.) दे. तपत।

तफरी (स्त्री.) 1. आधी छुट्टी, अर्ध-अवकाश, 2. सैर-सपाटा। **तफ़रीह** (हि.)

तफरीक (स्त्री.) दे. तफरी।

तबंचा (पुं.) दे. तमनचा।

तब (अव्य.) दे. तद।

तबका (पुं.) 1. खंड, विभाग, 2. समुदाय।

तबदील (स्त्री.) परिवर्तन।

तबलची (पुं.) तबला बजाने वाला; (वि.) खुशामदी।

तबला (पुं.) एक प्रकार का ढोल।

तबाक (पुं.) एक पात्र।

तबाई (स्त्री.) दे. तबाही।

तबाही (स्त्री.) विनाश।

तबीज (पुं.) जंत्र-तंत्र, (दे. गंडा-डोरा); **~बणवाणा/सधवाणा** जंत्र-तंत्र बनवाना। **ताबीज** (हि.)

तबील (स्त्री.) बहर-ए तबील, एक छंद विशेष।

तबेल्ला (पुं.) तबेला।

तब्बै (अव्य.) 1. उसी समय, 2. इसी कारण से, (दे. तिब्बै)।

तब्बड़तोड़ (क्रि.) तेज दौड़ कर भाग निकलना। दे. ताब्बड़ तोड़।

तभी (अव्य.) दे. तिब्बै।

तम (सर्व.) 1. तुम, 2. तुम सब।

तमक (स्त्री.) 1. जोश, 2. चमक।

तमकणा (क्रि. अ.) 1. चमकना, 2. क्रोधित होना; (वि.) वह जो तमके।

तमकना (क्रि. अ.) दे. तमकणा।

तम का (सर्व.) तुम्हारा। दे. थारा।

तमगा (पुं.) दे. तगमा।

तमगुण (पुं.) तमोगुण।

तमतमाणा (क्रि. अ.) 1. क्रोध से अभिभूत होना, 2. जगमगाना।

तमनचा (पुं.) छोटी बंदूक। **तमंचा** (हि.)

तमन्ना (स्त्री.) 1. मनोकामना, 2. भगवान से की गई प्रार्थना।

तमाँक्खू (पुं.) 1. चौड़े पत्तों का एक पौधा जिसके पत्ते सूँघे, पीए और खाए जाते हैं, 2. सुरती; **कड़वा~** श्रेष्ठ तमाकू; **~तड़ा** तमाकू का पात; **~पीणा** हुक्का पीना। **तमाकू** (हि.)

तमाँच्चा (पुं.) थप्पड़, (दे. रहपटा)। **तमाचा** (हि.)

तमाँस्सा (पुं.) 1. खेल, मदारी का खेल, 2. अनोखी घटना, 3. स्वाँग; **~करणा** 1. तमाशा दिखाना, 2. अनोखा व्यवहार दिखाना; **~दिखाणा** चमत्कार दिखाना; **~माँचणा** विचित्र घटना घटित होना; **~होणा** 1. स्वाँग होना, 2. हँसी का पात्र बनना। **तमाशा** (हि.)

तमाकू (पुं.) दे. तमाँक्खू।

तमाचा (पुं.) दे. तमाँच्चा।

तमाम (वि.) समस्त, सारे।

तमारा (सर्व.) तुम्हारा, (दे. थारा)।

तमाल (पुं.) एक बेल या झाड़।

तमाशा (पुं.) दे. तमाँस्सा।

तमीज़ (स्त्री.) 1. अदब, क़ायदा, 2. भले-बुरे को पहचानने की शक्ति।

तमोट्टी (स्त्री.) 1. छोटी चद्दर, 2. तहमद, 3. छोटा तंबू।

तम्महैं (सर्व.) तुम ही।

तम्ह (सर्व.) 'तू' का कर्ता और कर्म का रूप। **तुम** (हि.)

तरंग[1] (स्त्री.) 1. पानी की लहर, 2. स्वर-लहरी, 3. चित्त की उमंग।

तरंग[2] (पुं.) तुरग, घोड़ा।

तरंतक (पुं.) एक यक्ष तो सींख (कुरुक्षेत्र) के पास है।

तर (वि.) 1. तरल, 2. भीगा हुआ, जो सूखा न हो।

तरक (पुं.) प्रतिवाद। **तर्क** (हि.)

तरकश (पुं.) दे. तरकस।

तरकस (पुं.) बाण रखने का खोल। **तरकश** (हि.)

तरकारी (स्त्री.) सब्ज़ी, साग।

तरक़ीब (स्त्री.) उपाय।

तरक्की (स्त्री.) उन्नति।

तरखाण (पुं.) बढ़ई। **तरखान** (हि.)

तरखान (पुं.) दे. तरखाण।

तरज (स्त्री.) 1. गाना गाने की लय, 2. लचक। **तर्ज़** (हि.)

तरजणा[1] (क्रि. अ.) लचकना, (दे. लरजणा); (वि.) लचकीला।

तरजणा[2] (क्रि.) तर्जनी उंगली के संकेत से रोकना।

तरजना (क्रि. अ.) दे. तरजणा।

तरड़ा[1] (पुं.) पानी को धार बना कर उँडेलने की क्रिया; (क्रि. स.) 'तरड़ाणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पड़णा** पानी का धार बन कर बहना; **~लाणा** पानी, दूध आदि पदार्थ को धार बना कर उँडेलना।

तरड़ा[2] (पुं.) चसक, घाव में उठने वाली पीड़ा; **~लागणा** घाव में रह-रह कर पीड़ा उठना।

तरड़ाट्टा (पुं.) 1. पानी को धारबद्ध बहाने की क्रिया, 2. चभक; **~ऊठणा** तरड़-तरड़ की ध्वनि उत्पन्न होना।

तरड़ाणा (क्रि. स.) तरल पदार्थ को धार बनाकर उँडेलना, फेंटना; (क्रि. अ.) 1. घाव में रह-रह कर चसक उठना, 2. बर्तन आदि में दरार पड़ना, चटखना।

तरणतारण (पुं.) उस पार तारने वाली नदी। उदा. कदे. फरक पड़्ज्या भजन में, दिल तरणतारण कर लिया (लचं.)। वैतरणी।

तरतीब (स्त्री.) 1. क्रम, सिलसिला, 2. करीना, सलीका।

तरणी (स्त्री.) 1. पवित्र नदी, 2. वैतरणी, यम के द्वार की नदी जो गाय की पूँछ पकड़ कर पार की जाती है। **वैतरणी** (हि.)

तर-तर (स्त्री.) 1. शीघ्र बोलने की क्रिया, 2. तर-तर की ध्वनि; **~लाणा** 1. व्यर्थ का शोर मचाना, 2. तर्क-वितर्क करना।

तरना (क्रि. अ.) दे. तिरणा।

तरपण (पुं.) पितरों को जल देने की क्रिया। **तर्पण** (हि.)

तरफ़ (अव्य.) ओर।

तरबूज (पुं.) दे. तरबूज्जा।

तरबूज्जा (पुं.) गरमी में पकने वाला सीताफल के आकार का हरी छाल का जलयुक्त फल। **तरबूज** (हि.)

तरराणा (क्रि. अ.) 1. तर-तर करना, 2. शीघ्रता से बोलना।

तरल (वि.) 1. द्रव, 2. रसयुक्त, तरीवाला, 3. भीगा हुआ, गीला।

तरला (वि.) 1. नीचे वाला, जिसकी स्थिति सबसे नीचे हो, 2. 'ऊप्परला' का विलोम; **~दिन** अतरला दिन, (दे. अतरला दिन); **~समझाणा** अन्तर्मन को मनाना या समझाना।

तरवाणा (क्रि. स.) 1. घड़े, बोझे आदि को सिर से उतरवाना, 2. फोटो खिंचवाना, 3. छाल आदि हटवाना, 4. पार उतरवाना। **उतरवाना** (हि.)

तरस (स्त्री.) रहम, दया; **~तरस कै मरणा** किसी चीज़ के अभाव में प्राण छोड़ना; **~माँगणा** दया की भिक्षा माँगना।

तरसणा (क्रि. अ.) 1. ललचाना, 2. किसी चीज़ का अभाव खटकना। **तरसना** (हि.)

तरसना (क्रि. अ.) दे. तरसणा।

तरसाणा (क्रि. स.) 1. अभाव की स्थिति में रखना, 2. ललचाना। **तरसाना** (हि.)

तरसाना (क्रि. स.) दे. तरसाणा।

तरसूँ (क्रि. वि.) आज से चौथा दिन, तरसों।

तरह (स्त्री.) दे. तराँ।

तराँ/तराँह (स्त्री.) 1. प्रकार, 2. रीति, ढंग, 3. ढाँचा, बनावट। **तरह** (हि.)

तराई (स्त्री.) 1. गीलापन, 2. (दे. तरावट), 3. तलहटी।

तराजू (स्त्री.) दे. ताखड़ी।

तराज्जू (स्त्री.) दे. ताखड़ी।

तरातर (वि.) सराबोर, तरबतर।

तरारा (पुं.) 1. आवेश, 2. क्रोध।

तरावट (स्त्री.) 1. स्निग्धता, 2. गीलापन, 3. ताज़ापन।

तराशना (क्रि. स.) औज़ार आदि से छीलना, (दे. छोलणा)।

तरासणा (क्रि. स.) 1. डराना, 2. कष्ट देना, 3. औज़ार आदि से छीलना।

तरियाँ (स्त्री.) तरह—देक्खो किस तरियाँ ऊँट बैट्ठैगा।

तरी (स्त्री.) 1. तरावट, 2. सब्ज़ी का रसा।

तरीक़ा (पुं.) ढंग, विधि, उपाय।

तरेड़ (स्त्री.) दरार; (वि.) मूर्ख; **~आणा/खाणा** वस्तु में हल्की दरार आना; **बावळी~** मूर्ख व्यक्ति,

तरेत्ता (पुं.) चार युगों में से दूसरा युग। **त्रेतायुग** (हि.)

तरेप्पन (वि.) तरेपन की संख्या। **तरेपन** (हि.)

तरेरणा (क्रि. स.) 1. क्रोध भरी निगाह से देखना, 2. आँख से संकेत देना। **तरेरना** (हि.)

तरोजा (पुं.) दे. तीस्सर।

तरोताल (पुं.) तालमेल।

तर्क (पुं.) दे. तरक।

तर्जनी (स्त्री.) अँगूठे के साथ वाली उँगली।

तर्पण (पुं.) दे. तरपण।

तल (पुं.) 1. जल के नीचे की भूमि, 2. पेंदी, तली, 3. सात पातालों में से पहला।

तलक[1] (वि.) तिक्त, कुछ-कुछ कड़ु आपन या कसैलापन–सरसूँ का साग तलक हो सै।

तलक[2] (अव्य.) तक, उदा.–ईब तलक नहीं आया। दे. तलक।

तळणा (क्रि. स.) 1. तेल, घी आदि में तलना, 2. रौंद डालना। **तलना** (हि.)

तलना (क्रि. स.) दे. तळणा।

तलब (स्त्री.) 1. घनीभूत इच्छा, चाह, 2. बुलावा।

तलबाना (पुं.) वह ख़र्च जो गवाह को तलब करने के लिए अदालत में दाखि़ल किया जाता है।

तलवा (पुं.) दे. तळवा।

तळवा (पुं.) पैर के पंजे और एड़ी के बीच का कोमल भाग; **~(-वे) चाटणा/ रोळणा** तलवे सहलाना, खुशामद करना। **तलवा** (हि.)

तलवार (स्त्री.) खड्ग, एक आयुध; **~कै घाट तारणा** वध करना।

तळसंडा (पुं.) सन, पटसन आदि के मोटे डंठल (जो रेशा उतारने के बाद बचे रहते हैं); **~तोड़णा** 1. सन-पटसन के तने तोड़ कर उसका रेशा उतारना, 2. कार्य में बाधा पहुँचाना।

तलसा (स्त्री.) कम पकी ईंट।

तळहटी (स्त्री.) 1. तली, 2. शहर के निकट का स्थान–दिल्ली की तलहटी मैं कई गाम बस्सैं सैं, 3. प्रतिच्छाया। **तलहटी** (हि.)

तला (पुं.) दे. तळा[1]।

तळा[1] (पुं.) जूती की तली।

तला[2] (पुं.) तालाब।

तलाक़ (पुं.) विवाह-विच्छेद।

तलाक्की (पुं.) 1. स्त्रियों की ओर से पुरुषों को दी जाने वाली गाली, 2. व्यक्ति जो तलाक दे चुका हो। **तलाक़ी** (हि.)

तलाश (स्त्री.) खोज, ढूँढ़।

तलाशी (स्त्री.) दे. तलास्सी।

तलास्सी (स्त्री.) 1. छानबीन, 2. गुम हुई या छिपाई हुई वस्तु अथवा छुपे हुए व्यक्ति को पाने के लिए हुई देखभाल, 3. पुलिस द्वारा की जाने वाली खोज। **तलाशी** (हि.)

तळियार (वि.) दूध पीता (बछड़ा, छौना)।

तली (स्त्री.) दे. तळी।

तळी (स्त्री.) 1. किसी वस्तु का तल, 2. तलहटी; **~आणा** अंतिम गहराई तक पहुँचना; **~मैं पोंहँचणा** बात की जड़ मालूम करना। **तली** (हि.)

तले (क्रि. वि.) दे. तळै।

तलेट (स्त्री.) 1. तली, तल, 2. तलहटी; (वि.) दूध पीता (छौना)।

तलेहडू[1] (वि.) अधीन; (पुं.) नीचे का तलछट।

तलेहडू[2] (वि.) 1. कम मर्मज्ञ, दे. सिखदड़, 2. अधीन। उदा.–शास्त्र और संगति नारद के तलेहडू थे।

तळै (क्रि. वि.) 1. नीचे, 2. 'ऊपर' का विलोम। **तले** (हि.)

तलैया (स्त्री.) छोटा ताल, (दे. लेटड़ी)।

तलो (पुं.) तालाब।

ताळोत्ती (स्त्री.) हल का एक भाग।

तलौआ (पुं.) तिल के लड्डू।

तल्ला (पुं.) 1. मंजिल, 2. जूते के नीचे का भाग।

तल्लारा (पुं.) जल-स्तर भरपूर होने पर उठने वाली लहर, ताल-लहर; **~मारणा** जल द्वारा मठाठे मारा जाना; **~(-रे) लेणा** लहर उठना।

तवा (पुं.) 1. रोटी पकाने का लोहे का पात्र, 2. ग्रामोफोन का प्लेइंग रिकार्ड; (वि.) काले रंग का; (क्रि. स.) 'तवाणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पराँत करणा** भोजन की व्यवस्था करना; **~मूँद्धा मारणा** 1. किसी की मृत्यु होने पर भोजन न बनाना, ओला वृष्टि रोकने के लिए तवे को खुले स्थान में औंधा मारना; **~सा** गहरे काले रंग का।

तवाई[1] (स्त्री.) 1. विनाश, 2. दुःख, आफ़त, 3. शीघ्रता; **~माँचणा** 1. जल्दी में होना, 2. विनाश होना। **तबाही** (हि.)

तवाई[2] (स्त्री.) कष्ट। दे. तकावी।

तवाई[3] (स्त्री.) (?) उदा. दासी दास खड़े चौगरदे लागे भरण तवाई।

तवाणा (क्रि. स.) घी आदि को पिघालने का काम अन्य से करवाना। **तवाना** (हि.)

तवी (स्त्री.) 1. कम गहरी कड़ाही, 2. चिलम की ठेकरी।

तश्तरी (स्त्री.) दे. तसतरी।

तसतरी (स्त्री.) 1. तश्तरी, 2. (दे. सतपकवान्नी)। **तश्तरी** (हि.)

तसतिया (पुं.) कष्ट।

तसदीक़ (स्त्री.) 1. प्रमाण द्वारा पुष्टि, समर्थन, 2. सच्चाई।

तसबीर (स्त्री.) दे. मुरत। **तस्वीर** (हि.)

तसळणा (क्रि. स.) 1. खूँटे औज़ार को पत्थर पर रगड़ कर तीक्ष्ण करना, (दे. पनाणा), 2. रौंदना, 3. तलना।

तसला (पुं.) लोहे की पराँत जो अनेक घरेलू कामों में प्रयुक्त होती है।

तसल्ली (स्त्री.) 1. शांति, धीरज, 2. ढाढ़स, सांत्वना।

तसवीर (स्त्री.) दे. मूरत।

तसाया (वि.) दे. तिसाया।

तसील (स्त्री.) 1. अनेक गाँव की प्रशासनिक इकाई, 2. तहसीलदार का कार्यालय। **तहसील** (हि.)

तसीलदार (पुं) तहसील का बड़ा अधिकारी। **तहसीलदार** (हि.)

तस्मीं (स्त्री.) दे. खीर।

तह (स्त्री.) 1. परत, 2. गहराई, 3. स्तर।

तहख़ाना (पुं.) 1. दे. तहखान्ना, 2. दे. भोंहरा।

तहख़ान्ना (पुं.) दे. भोंहरा। **तहख़ाना** (हि.)

तहज़ीब (स्त्री.) सभ्यता, शिष्टता।

तहण (स्त्री.) दे. तहनाळ।

तहधर (वि.) (वस्त्र) जिसकी तह भी न खुली हो, नया (वस्त्र,) (तुल. नया-नटंग)।

तहनाळ (स्त्री.) नाल, लोहे की अर्द्ध-चंद्राकार चपटी कील जो जूती या घोड़े के सुम के नीचे लगती है; **~गाडणा** मृतक शरीर के स्थान पर नाल गाड़ना जिससे भूत-प्रेत का प्रभाव न हो सके। **तहनाल** (हि.)

तहबाज़ारी (स्त्री.) बाज़ार या पटरी पर सौदा बेचने वालों से लिया जाने वाला महसूल।

तहमद (पुं.) 1. यवन-पद्धति से लपेटी हुई धोती, आधी धोती जो बिना लाँग के बाँधी हो, 2. लुंगी। **तहमत** (हि.)

तहसील (स्त्री.) दे. तसील।

तहसीलदार (पुं.) दे. तसीलदार।

तहेता (स्त्री.) अगेती फसल।

ताँगबस्ता (पुं.) धानक जाति का एक गोत।

ताँगा (पुं.) दे. ताँग्गा।

ताँग्गा (पुं.) घोड़े द्वारा खींचा जाने वाला एक वाहन। **ताँगा** (हि.)

ताँग्गा-तुळसी (स्त्री.) कंजूसी; **~करणा** कंजूसी बरतना।

तांचणा (क्रि.) काटना। उदा. मेरै तू जाइए धड़ ने ताँच कै। (लचं.)

ताँछणा (क्रि.) दे. ताँचणा।

ताँत (स्त्री.) 1. बकरे की अंतड़ी जिसे धुनिया धुनकी में बाँधता है, 2. अंतड़ी, 3. तंतु।

ताँता (पुं.) दे. ताँत्ता।

ताँत्ता (पुं.) क़तार, अटूट पंक्ति। **ताँता** (हि.)

ताँत्ती (स्त्री.) 1. संतति, वंश परम्परा, 2. श्रेणी, पंक्ति।

ताँद[1] (स्त्री.) दे. ताँत।

ताँद[2] (पुं.) चमड़े का एक पात्र। तुल. तरखू।

ताँदा (पुं.) सन का रेशा (तंतु)।

ताँब्बा (पुं.) एक धातु। **तांबा** (हि.)

ताँसणा (क्रि. स.) तंग करना।

ताँसळा (पुं.) तंग करना।

ताँसला (पुं.) दे. तसला।

ताँहीं (अव्य.) 1. तक—घर ताँही हो या, 2. पास, निकट, 3. लिए—मेरे ताँहीं भी कुछ दे, 4. संप्रदान कारक का चिह्न।

ता[1] (पुं.) 1. आवेश, 2. मूँछ आदि की मरोड़ी, 3. उबाल, उबालने की क्रिया; **~आणा/खाणा** क्रोध या आवेश में आना; **~देणा** घी आदि को पिघालना। **ताव** (हि.)

ता[2] (प्रत्य.) विशेषण और संज्ञा शब्द के अंत में लगने वाला एक प्रत्यय।

ता[3] (पुं.) काग़ज़ का तख़्ता, दस्ते का चौबीसवाँ भाग। **ताव** (हि.)

ताईं (अव्य.) दे. ताँहीं।

ताई (स्त्री.) ताऊ की पत्नी, पिता की बड़ी भाभी; (वि.) बूढ़ी।

ताऊ (पुं.) पिता का बड़ा भाई।

ताक[1] (स्त्री.) 1. घात, 2. खोज, 3. अवसर की प्रतीक्षा, 4. अवलोकन, 5. टकटकी; (क्रि. स.) 'ताकणा' क्रिया का आदे. रूप; **~लाणा** घात लगाना।

ताक[2] (पुं.) टाँड, (दे. आळा)।

ताक-झाँक (स्त्री.) 1. लुक-छिप कर देखने का भाव, 2. टोह।

ताकणा (क्रि. स.) 1. ललचाई निगाह से देखना, 2. बुरी (कामुक) निगाह से देखना, 3. देखना, 4. रखवाली करना। **ताकना** (हि.)

ताक़त (स्त्री.) शक्ति।

ताक़तवर (वि.) शक्तिशाली।

ताकना (क्रि. स.) दे. ताकणा।

ताकि (अव्य.) जिससे कि।

ताक़ीद (स्त्री.) चेतावनी।

ताक्की (स्त्री.) 1. छोटी ताक, खिड़की वाली ताक, 2. (दे. ताक[2])

ताक्कू (पुं.) 1. तकला, चरखे का मोटा तकला, 2. ताकू, 3. सलाई।

ताक्खा (वि.) 1. भैंगा, 2. पशु जिसकी पुतली कुछ सफेद रंग की हो। **ताखा** (हि.)

ताखड़ी (स्त्री.) 1. तराजू, तुला, 2. ख़रीफ-फ़सल में उगने वाली एक घास। **तकड़ी** (हि.)

तागड़ (पुं.) मोटी तागड़ी या मेखला; **~तोड़** 1. जो तागड़ी या मेखला न बाँधे, 2. यवन।

तागड़ी (स्त्री.) 1. वह धागा जो हिंदू परिवार के लड़के कमर में बाँधते हैं (यह अधिकतर काले रंग की होती है, बच्चों की तागड़ी में घुँघरू आदि भी बाँध दिए जाते हैं), 2. पुत्र-जन्म पर चमार द्वारा दी जाने वाली भेंट, 3. रसना, मेखला, सोने या चाँदी की शृंखलाओं की पट्टी जो घाघरे या साड़ी पर पहनी जाती है; **~टूटणा** ब्रह्मचर्य नष्ट होना; ~-**पागड़ी** एक प्रकार का कर जो परिवार में तागड़ी बाँधने वाले (लड़के) तथा पगड़ी बाँधने वाले (पुरुष) की संख्या के अनुसार उगाहा जाता है; ~**~बाँटणा** विवाह या पुत्र-जन्म आदि की प्रसन्नता में बालिग तथा नाबालिग बच्चों (लड़कों) को मिठाई, रुपया आदि देना; **~समान्नी** कटि तक के नाप का।

तागा (पुं.) दे. ताग्गा।

ताग्गा (पुं.) 1. धागा, 2. प्रेम-सूत्र, 3. सूत्र, 4. एकशृंखला की शृंगारपट्टी, मस्तक का एक आभूषण; **काच्चा~** 1. जंत्र-तंत्र में काम आने वाला कुकड़ी का कच्चा धागा, 2. कच्चा धागा; **~खोल्हणा** अनंत चतुर्दशी को धागा खोलना; **~(-गे) घालणा /पोणा** रजाई, गुदड़ी आदि में धागे डालना; **~(ग्याँ) घालणा** 1. घघरी आदि में रुपये छिपाने के लिए विशेष प्रकार की सींवन डालना, 2. धोती या घघरी का फटा भाग निकाल कर पुनः सीना; **~टूटणा** 1. युवा होते- होते बच्चों की जनेन्द्री का वह तंतु टूटना जिससे खाल पीछे पलट कर मणि या गिरी बाहर निकल जाती है, 2. कौमार्य भंग होना, 3. प्रतिज्ञा भंग होना; **~तीळ** स्त्रियों के वस्त्र, तीयल; **~बाँधणा** 1. भादों शुक्ल चतुर्दशी के दिन पुरुषों द्वारा दाहिनी तथा स्त्रियों द्वारा बाईं भुजा पर धागा बाँधना, 2. अनंत का धागा बाँधना। **तागा** (हि.)

ताज (पुं.) मुकुट।

ताज़गी (स्त्री.) 1. ताज़ापन, 2. स्वस्थता।

ताज़पोशी (स्त्री.) राजतिलक।

ताजमहल (पुं.) शाहजहाँ द्वारा आगरे में बनवाया गया एक मकबरा।

ताजसीन (पुं.) बादशाह।

ताज़ा (वि.) दे. ताज्जा।

ताजिया (वि.) मोहर्रम में मुसलमानों द्वारा निकाली जाने वाली एक प्रकार की सजी-धजी अर्थी।

ताजी (पुं.) अरबी घोड़ा।

ताज्जा (वि.) जो बासी न हो। **ताज़ा** (हि.)

ता थैया (स्त्री.) तबले, गायन आदि की ताल।

ताड़ (पुं.) एक लंबा पेड़ विशेष; (स्त्री.) 1. प्रताड़ना, 2. प्रभाव; (क्रि. स.) 'ताड़णा' क्रिया का आदे. रूप, **~पड़णा** 1.पीछा किया जाना, 2. मार पड़ना।

ताड़का (स्त्री.) एक राक्षसी जिसे श्री रामचंद्र जी ने मारा था; (वि.) विकराल रूप वाली।

ताड़णा (क्रि. स.) 1. मारना, 2. डाँटना; (क्रि. अ.) समझना, भाँपना; (स्त्री.) प्रताड़ना। **ताड़ना** (हि.)

ताड़ना (क्रि. स.) दे. ताड़णा।

ताड़ा[1] (पुं.) 1. कड़ाके की सर्दी, 2. तड़ित, बिजली।

ताड़ा[2] (वि.) बराबरी, समानता का, तुल्य।

ताड़ा[3] (पुं.) ठंढक।

ताड़ी[1] (स्त्री.) 1. देशी शराब, ठर्रा, 2. साईकिल के पहिये की तीली, तीली; (क्रि. स.) 'ताड़णा' क्रिया का भू. का. , स्त्रीलिं., एकव. रूप; **सेक्का**~ गुम चोट को सेंकने या टकोरने की क्रिया।

ताड़ी[2] (स्त्री.) ताली, करतल ध्वनि। 1. दे. ताड़ी, 2. नीम झारा।

ताण (स्त्री.) 1. सहारा–के कुत्ते के ताण गाड्डी चाल्लै सै, 2. वश–कुछ नाँ चाल्ली ताण पिया, (लो. गी.), 3. जाल, जुलाहे का ताना, ताना, 4. मुक्ति के लिए छटपटाने का भाव, 5. पूर; (क्रि. स.) 'ताणणा' क्रिया का आदे. रूप; **~कै सोणा** मस्ती से सोना, निश्चिंत होना; **~पूरणा** ताना पूरना; **~बाणा** बुनावट; **~मारणा/ लाणा** बंधन-मुक्त होने के लिए उछल-कूद करना। **तान** (हि.)

ताणणा (क्रि. स.) 1. आच्छादित करना, 2. खींचना, 3. चद्दर आदि ओढ़ना, 4. आघात करने के लिए लाठी आदि उठाना। **तानना** (हि.)

ताणा (पुं.) लंबाई की ओर का सूत; (क्रि. स.) 1. घी आदि गर्म करके पिघलाना, 2. 'ताणणा' क्रिया का भू. का. एक व. , पुं. रूप। **ताना** (हि.)

ताणा-बाणा (पुं.) 1. उल्टी-सीधी बुनावट, 2. उधेड़-बुन करने का भाव।

ताणी (स्त्री.) सूत की बुनाई के लंबाई की ओर के धागे; (क्रि. स.) 1. 'ताणणा' क्रिया का भूतकाल, स्त्रीलिं. रूप 2. संधान क्रिया, निशाना बाँधा; **~बणाणा** हाथ से कते धागों से बुनाई करना। **तानी** (हि.)

तात्ता (वि.) 1. गरम, 2. तपाया हुआ, तप्त, 3. गर्म स्वभाव का; **~-सीळा** ठंडा-गरम; **~~करणा** जैसा-तैसा भोजन बनाना। **ताता** (हि.)

तात्तिण (पुं.) एक नाग जिसने गूगा पीर से सिरियल का विवाह करवाया था।

तात्ती[1] (वि.) 1. गरम, 2. तप्त, 3. गर्म स्वभाव की। **ताती** (हि.)

तात्ती[2] (स्त्री.) पैर का एक आभूषण जो चाँदी की आधा इंच पत्ती से बना होता है, (दे. पात्ती[3])।

तादाद (स्त्री.) संख्या।

तान (स्त्री.) लय, स्वर, धुन; **~चालणा/ बाजणा** काम सरना; **~साधणा/ सारणा** 1. काम बनाना, 2. अल्प मात्रा से ही जैसे-तैसे काम निकालना।

तानना (क्रि. स.) दे. ताणणा।

तानपूरा (पुं.) सितार के आकार जैसा एक बाजा, तंबूरा।

तानसेन (पुं.) एक प्रसिद्ध गायक।

ताना (पुं.) 1. दे. ताणा, 2. दे. तान्ना; (क्रि. स.) दे. ताणा।

तानाबाना (पुं.) दे. ताणाबाणा।

तानाशाही (स्त्री.) अधिनायकतंत्र।

तानी (स्त्री.) दे. ताणी।

तान्ना (पुं.) व्यंग्य, कटाक्ष; **~(-याँ) तैं सारणा** व्यंग्य कसना; **~मारणा** व्यंग्य कसना; **~लागणा** बात चुभना। **ताना** (हि.)

ताप (पुं.) 1. ज्वर, गरमी; (क्रि. स.) 'तापणा' क्रिया का आदे. रूप; **~चढणा**

1. भयभीत होना, आने वाले संकट से डरना, 2. ज्वर आना; ~**तारणा** भय दूर करना; **तेइया**~ तीसरे दिन आने वाला ज्वर, मलेरिया- ज्वर; **सिरवा**~ बुखार और सरदर्द।

तापड़ (वि.) दे. ताप्पड़।

तापणा (क्रि. स.) 1. आग सेंकना, 2. गरम करना, 3. आग में डाल कर लाल करना; (क्रि. अ.) 1. तपस्या करना, 2. सिकना। **तपाना** (हि.)

तापना (क्रि. स.) दे. तापणा; (क्रि.अ.) दे. सिकणा।

ताप्पड़ (वि.) 1. कठोर (भूमि), 2. बिना जुता (खेत)।

ताब (स्त्री.) 1. डर, 2. अधीनता, 3. हिम्मत–तेरी इतणी ताब!

ताबतोल (क्रि. वि.) दे. ताब्बड़तोड़।

ताबीज़ (पुं.) सोने की चौकोर डब्बी का एक आभूषण जिसे धागे में पिरो कर गले में बाँधते हैं।

ताबेदार (वि.) दे. ताब्बेदार।

ताब्बड़तोड़ (क्रि. वि.) तीव्र दौड़, बिना रुके दौड़ने का भाव; ~**भाजणा** 1. बहुत तेज़ दौड़ना, बिना रुके गंतव्य तक दौड़ना, 2. भयभीत होकर तेज़ दौड़ना।

ताब्बेदार (वि.) सेवक, आज्ञाकारी। **ताबेदार** (हि.)

ताभा (वि.) स्वल्प।

तामड़ा (स्त्री.) बहुत अच्छी पकी ईंट।

तामड़ी (स्त्री.) तांबे का बना जलपात्र।

तामरधज (पुं.) मोरध्वज के पुत्र (इसी वीर ने पांडवों द्वारा छोड़ा गया अश्वमेधी घोड़ा पकड़ा था। एक अन्य धारणा के अनुसार राजा मोर ध्वज ने इसे चीर कर शेर के सामने डाल दिया था)। **ताम्रध्वज** (हि.)

तामलोट (पुं.) लोहे का गहरा प्याला जिस पर रोगन या लुक होता है, तामलोट, टंबलर।

तामुरा (पुं.) दे. तंबूरा।

तायल (पुं.) अग्रवाल वैश्यों का गोत्र, इनका संबंध तैत्तिरी मुनि, यजुर्वेद, माध्यांदिनी शाखा और कात्यायन सूत्र से है, इनका प्रवर मांकील है।

तायस (स्त्री.) ताई-सास, पति की ताई।

तायसरा (पुं.) पति का ताऊ।

ताया (पुं.) दे. ताऊ।

तार (पुं.) 1. सूत धागा, 2. धातु का धागा, 3. संबंध, 4. टेलीग्राफ, 5. तार से आई ख़बर, 6. परंपरा, 7. सिलसिला; (स्त्री.) अवसर, सुयोग; (क्रि. स.) 'तारणा' क्रिया का आदे. रूप; ~**कुतारी** वह पशु जो नियमित दूध देना बंद कर दे; ~**जोड़णा** संबंध स्थापित करना, ~**तार होणा** बुरी तरह से फटना, जीर्ण-शीर्ण होना; ~**देणा** टेलीग्राम भेजना; ~**बैठणा/ होणा** आनंद मिलना, जी लगना।

तारघर (पुं.) वह सरकारी दफ्तर जहाँ से तार द्वारा ख़बरें भेजी जाती हैं।

तारछूँ (क्रि. वि.) तिरछा, तिरछे-तिरछे– तारछूँ नद्दी पर करणा सुखाळा पड़ै सै।

तारणा (क्रि. स.) 1. सिर से बोझा आदि उतारना, 2. पार उतारना, 3. धन्य करना। **उतारना** (हि.)

तारना (क्रि. स.) दे. तारणा।

तारपीन (पुं.) चीड़ के पेड़ से निकाला गया तेल।

ताराँ/ताराँह् (स्त्री.) आनंद की स्थिति;

~**आणा** 1. पशु द्वारा ठीक समय पर दूध देना शुरू करना, 2. पशु का मन लगने के कारण अधिक मात्रा में दूध देना, 3. सुख मानना।

तारा (पुं.) 1. नक्षत्र, 2. आँख की पुतली, 3. भाग्य, 4. प्यारा, 5. विरल, 6. धातु का चमकीला सितारा जिन्हें वस्त्रों की सजावट के लिए लगाते हैं, 7. मिट्टी का तारा; **~(-र्याँ) की छाँह** 1. बहुत प्रातः, 2. रात्रि के समय, **~~आणा/जाणा** बहुत परिश्रम से कमाना; **~टूटणा** 1. अशुभ का संकेत मिलना, 2. महान् व्यक्ति का मरना, 3. नक्षत्र-पात होना, 4. आशा टूटना; **~डूबणा** दे. सूक डूबणा; **~तोड़णा** अलौकिक कार्य करना।

तारा पूछी (स्त्री.) वह स्त्री जो पुच्छल तारे की तरह दर दर भटके या दूर तक निकल जाए।

तारामंडळ (पुं.) नक्षत्रों का समूह या घेरा।

तारी (स्त्री.) ताली।

तारीख़ (स्त्री.) 1. तिथि, अंग्रेज़ी महीने की तिथि, 2. मुक़दमें की तिथि, 3. इतिहास; **~लागणा** कचहरी में मुक़दमें की तारीख़ पड़ना।

तारीफ़ (स्त्री.) प्रशंसा।

ताल[1] (स्त्री.) जंघा पर हथेली मार कर उत्पन्न किया हुआ शब्द; (पुं.) ताड़ का पौधा; **~ठोकणा** चुनौती देना।

ताल[2] (पुं.) दे. तळा[2]।

ताल[3] (स्त्री.) संगीत की तर्ज जैसे एक ताल, तीन ताल। 1. दे.ताल।

ताल मखाणा (पुं.) कमल ककड़ी के टुकड़ों को भून कर बनाया गया व्रत आदि का खाद्य पदार्थ।

ताल-मखाना (पुं.) दे. मखाणा।

तालमेळ (पुं.) उचित संयोग, बाधारहित मेल-मिलाप। **ताल मेल** (हि.)

ताला (पुं.) दे. ताळा।

ताळा (पुं.) 1. घर की सुरक्षा के लिए दरवाज़े पर लगाया जाने वाला धातु का यंत्र विशेष, 2. रहस्य, भेद; **~खोल्हणा** गुत्थी सुलझाना; **~(-ले) भीत्तर** सुरक्षित अवस्था में; **~भेड़णा /मारणा** ताला लगाना। **ताला** (हि.)

तालाब (पुं.) दे. तळा[2]।

ताली (स्त्री.) दे. ताळी।

ताळी (स्त्री.) 1. कुंजी, 2. हथेलियों को टकराकर उत्पन्न की गई ध्वनि, 3. कूड़ा-करकट इकट्ठा करने के लिए प्रयुक्त दाँतेदार फावड़ा।
ताली (हि.)

तालीम (स्त्री.) शिक्षा।

तालुका (पुं.) क्षेत्र, इलाका।

ताळुवा (पुं.) तालु, (दे. टाँटवा)।

तालू (पुं.) दे. ताळुवा।

ताल्लुक (पुं.) संबंध।

ताल्लोमेल्ली (स्त्री.) उचाटी।

ताव (पुं.) दे. ता[13]

तावळ (स्त्री.) तावलापन, शीघ्रता; **~करणा/मचाणा/लागणा** जल्दी में होना, शीघ्रता करना; **~मैं हावळ होणा** जल्दी में काम बिगड़ना।

तावळा (वि.) वह जो जल्दी में हो; (क्रि. वि.) तावला, शीघ्रता से।
उतावला (हि.)

तावळी (क्रि. वि.) जल्दी, शीघ्रता से।

ताश (पुं.) दे. तास।

ताशा (पुं.) दे. तास्सा।

तास (पुं.) 1. ताश का पत्ता, 2. बड़ा तासा या ढोलक। **ताश** (हि.)

तासणा (क्रि.) त्रस्त करना।

तासीर (स्त्री.) 1. गुण, 2. प्रभाव।

तास्सा (पुं.) ढोल के आकार का एक वाद्य, (दे. ढपड़ा)। **तासा** (हि.)

ताहणा (क्रि. स.) 1. खदेड़ना, 2. ताड़ना, दुत्कार कर भगाना।

ताहरै (सर्व.) दे. थारै।

तिंगल (पुं.) अग्रवाल वैश्यों का गोत्र, इनका संबंध तांड्य मुनि, यजुर्वेद माध्यंदिनी शाखा और कात्यायन सूत्र से है, इनका प्रवर मांकील है।

तिंघड़णा (क्रि. अ.) शक्ति से अधिक ज़ोर लगाना।

तिकड़म (स्त्री.) तरक़ीब, उल्टा-सीधा उपाय, चाल।

तिकड़मी (वि.) 1. तरक़ीब लड़ाने वाला, 2.चालबाज़।

तिकड़िया (वि.) (बड़ा कमरा या पोली) जिसमें तीन खंड हों; **~साळ** तीन खंडों की साल (शाला) या पोली।

तिकड़ी (वि.) तीन का समूह, (दे. तिगड्डा;) (स्त्री.) 1. तीन व्यक्तियों द्वारा खेला जाने वाला ताश का पत्ता।

तिकूँट्टा (वि.) तीन कोनों वाला।

तिकूणा (वि.) तीन कोनों वाला। **तिकोना** (हि.)

तिकोण (पुं.) बच्चे का लंगोटनुमा कटिवस्त्र; (स्त्री.) त्रिभुज।

तिकोना (वि.) दे. तिकूणा।

तिकोनिया (वि.) दे. तिकूँट्टा।

तिक्की (स्त्री.) 1. तीन नए पैसे का सिक्का, 2. (दे. तिग्गी)।

तिखूँट्टा (वि.) दे. तिकूँट्टा।

तिगड़णा (क्रि. अ.) अधिक बिगड़ना।

तिगड़ा (क्रि.) पथराना (आँखें)।

तिगड़म (स्त्री.) दे. तिकड़म।

तिगड्डा (वि.) 1. तीन चीज़ों के मेल से बना हुआ, 2. अशुभ-सूचक (अंक)।

तिगणा (वि.) तीन गुना। **तिगुना** (हि.)

तिगना (स्त्री.) ऊँची या ओछी घघरी।

तिगनी (स्त्री.) ओछी घघरी, घघरी।

तिगस (स्त्री.) विधवा की चोटी।

तिगाई (स्त्री.) दे. तकावी।

तिगाळा (पुं.) 1. त्रिगर्त प्रदेश के निवासी जिनका युद्ध नकुल से हुआ और जिन्होंने अर्जुन को भी नाकों चने चबाए (त्रिगर्त प्रदेश सप्तगण के संगठन में से एक था), 2. ब्राह्मण वंश के लोगों को चिढ़ाने के लिए प्रयुक्त शब्द (संभवतः इसलिए कि वे नकुल और अर्जुन के साथ युद्ध में भिड़े थे)।

तिगुणा (वि.) दे. तिगना।

तिग्गन (पुं.) दे. तिगना।

तिग्गी (स्त्री.) ताश का पत्ता जिस पर तीन चिह्न होते हैं।

तिजवाँस्सा (पुं.) गर्भाधान से तीसरे महीने होने वाला उत्सव, पुंसवन संस्कार।

तिजाब (पुं.) तेज़ाब।

तिज़ारत (स्त्री.) व्यापार।

तिजारी (पुं.) तीसरे दिन चढ़ने वाला ज्वर, (दे. तेइया)।

तिजूरी (स्त्री.) 1. धन रखने की मंजूषा, 2. खजाना। **तिजोरी** (हि.)

तिजोरी (स्त्री.) दे. तिजूरी।

तिणका (पुं.) 1. भूसा, चारा, 2. घास, 3. तृण तीली। **तिनका** (हि.)

तितर-बितर (वि.) 1. अस्त-व्यस्त, 2. बिखरे हुए, छिन्न-भिन्न।

तितली (स्त्री.) रंग-बिरंगे पंखों वाला एक छोटा कीट।

तिताळी (वि.) तैंतालीस की संख्या। **तैंतालीस** (हि.)

तित्तल (पुं.) दे. तिंगल।

तिथ (स्त्री.) चंद्रमा की गति के अनुसार काल-गणना, मिति, हिन्दू महीने की तारीख; **~टूटणा** तिथि-क्षय होना; **~कढवाणा/दिखाणा/बूझणा/पड़ाणा** विशेष प्रयोजन के लिए पंचांग से तिथि निकलवाना या सधवाना; **~बधणा** तिथि की वृद्धि होना। **तिथि** (हि.)

तिथि (स्त्री.) दे. तिथ।

तिदरा (पुं.) बरामदा।

तिदरी (स्त्री.) तीन दरों का छोटा कमरा।

तिनक-मिनक (वि.) 1. क्षुद्र, छोटा, 2. उपेक्षित, 3. हीन, 4. तुच्छ।

तिनका (पुं.) दे. तिणका।

तिपाया (पुं.) तीन पैरों की चौकी।

तिबारा (वि.) तीसरी बार–कई आदमी लगन की सक्कर तिबारा बी लेगे।

तिबारी (वि.) तीसरी बार (संज्ञा) बैठक (?)।

तिबासी (वि.) दे. तिबास्सी।

तिबास्सी (वि.) तीन दिन या समय का बासी (भोजन)।

तिबोल्ला (पुं.) तीन कली की रागिनी।

तिब्बै (अव्य.) 1. तब ही, 2. इसी कारण से।

तिमँजला (वि.) तीन मंज़िल का। **तिमंज़िला** (हि.)

तिमंज़िला (वि.) दे. तिमँजला।

तिमेळी (वि.) 1. तीन मेल की, तीन वस्तुओं के सम्मिश्रण से बनी, 2. तीन वट वाली (रस्सी)।

तिरछा (वि.) 1. टेढ़ा, 2. जटिल, 3. कुटिल।

तिरणा (क्रि. अ.) 1. पानी की सतह पर रहना, 2. भवसागर पार करना, 3. उद्धार होना, 4. सहारा लेकर पार होना; (वि.) जो तैरे, डूबे नहीं; **~डूबणा** असमंजसता की स्थिति में होना। **तैरना** (हि.)

तिरपाल (पुं.) 1. मोटा टाटा, 2. पशु का पुआल, 3. पुआल।

तिरफळा (पुं.) हरड़, बहेड़ा तथा आँवले का सम्मिश्रण। **त्रिफला** (हि.)

तिरबेणी (स्त्री.) 1. तीन पौधों का समूह (जिसमें बड़, गूलर, तथा पीपल मुख्य रूप से माने गये हैं), 2. गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम स्थल –प्रयाग, 3. तीन का समूह। **त्रिवेणी** (हि.)

तिरमिरा (पुं.) 1. तरल पदार्थ की सतह पर तैरने वाली स्निग्धता, 2. नेत्र-दोष के कारण आँखों के सामने उड़ते दिखाई पड़ने वाले कण; **~(-रे) छूटणा** 1. तरल पदार्थ की सतह पर स्निग्धता आना, 2. आँखों के सामने अँधेरी आना।

तिरमिराट (पुं.) दे. चिरमिराट।

तिरलोक्की (पुं.) तीन लोक का स्वामी, ईश्वर। **त्रिलोकी** (हि.)

तिरसणा (स्त्री.) लालसा। **तृष्णा** (हि.)

तिरसूळ (पुं.) 1. शिवजी का शस्त्र, 2. बछड़े को साँड घोषित करते समय पीठ पर दागा जाने वाला त्रिशूल का चिह्न। **त्रिशूल** (हि.)

तिरस्कार (पुं.) अनादर, अपमान।

तिरा[1] (पुं.) 1. सरसों की जाति का एक पौधा, 2. इस पौधे का बीज। **तारामीरा** (हि.)

तिरा[2] (सर्व.) तेरा। (क्रि.) तैराना क्रिया का आदे. रुप। उदा.–तू कत्तल तिरा। 1. दे. तिराणा 2. दे. तिरा।

तिराक (पुं.) तैराक।

तिराणमैं (वि.) तिरानवें की संख्या। **तिरानवें** (हि.)

तिराणा (क्रि. अ.) 1. पानी की सतह पर तैराना, 2. कल्याण करना। **तैराना** (हि.)

तिराना (क्रि. स.) दे. तिराणा।

तिरारकै (वि.) तीन वर्ष पहले का समय, काल गणना का क्रम, यथा--इस बरस, पुर कै (गत वर्ष) पुरारकै (गत से गत वर्ष), तिरारकै (तीसरे वर्ष)।

तिरावट (स्त्री.) दे. तरावट।

तिरास्सी (वि.) तिरासी की संख्या। **तिरासी** (हि.)

तिराहा (पुं.) दे. तिराह्या।

तिराह्या (पुं.) तीन रास्तों का मिलन स्थल।

तिरि (सर्व.) तेरी, तुम्हारी।

तिरिया (स्त्री.) 1. स्त्री, 2. छल-कपट करने वाली महिला; **~चलित्तर** 1. तिरिया चरित्र, 2. असंभावित व्यवहार, संदिग्ध चरित्र या व्यवहार; **~हठ** स्त्री-हठ (बाल, तिरिया और राज हठ प्रसिद्ध हैं)।

तिरे (सर्व.) 1. तेरे पास, 2. 'तिर' का बहुवचन रूप। **तेरे** (हि.)

तिरोदसी (स्त्री.) तेरस, विक्रमी संवत् के किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि। **त्रयोदशी** (हि.)

तिल (पुं.) 1. तिल, एक बीज जिसका तेल निकाला जाता है (यह पूजा के काम भी आता है), 2. शरीर के किसी अंग पर उठा प्राकृतिक छोटा काला चिह्न, 3. गुदवाया हुआ दाग़, 4. छोटा अंश; (वि.) क्षुद्र, छोटा; **काळे~** पूजा के काम में आने वाले काले रंग के तिल; **~~चाबणा** अपराध करना; **~जोड** 1. तिल जितना, 2. एक नाप, 3. अत्यन्त क्षुद्र; **~मान** क्षुद्र।

तिलक (पुं) 1. माथे का टीका, 2. शिरोमणि, 3. राज्याभिषेक; (वि.) दे. तलक; **~चढ़ाणा** 1. लड़की की सगाई करना, 2. देव-मूर्ति पर तिलक लगाना।

तिलकुट-चौथ (स्त्री.) संकट चतुर्थी, माघ कृष्ण चतुर्थी।

तिलगोज्जा (पुं.) चिलगोजा।

तिलचावळी (स्त्री.) तिल और चावल का मिश्रण।

तिलड़ी (स्त्री.) 1. गले का एक आभूषण, 2. (दे. तेलड़ी)।

तिलत्त (पुं.) जादूगर।

तिलमान (वि.) अति क्षुद्र, बहुत छोटा।

तिलमिलाणा (क्रि. अ.) 1. छटपटाना, 2. क्षुब्ध होना; (वि.) जो तिलमिलाए। **तिलमिलाना** (हि.)

तिलमिलाना (क्रि. अ.) दे. तिलमिलाणा।

तिलस्मी (वि.) अद्भुत या अलौकिक करामात संबंधी।

तिलहन (पुं.) वे पौधे जिनके बीजों का तेल निकाला जाता है।

तिलही (स्त्री.) नाक का एक आभूषण।

तिलियार (स्त्री.) दे. काबरी।

तिलोए (पुं.) तिल के लड्डू।

तिलोड़ी (स्त्री.) दे. तेलड़ी।

तिल्ला (पुं.) कलाबत्तू आदि का काम।

तिल्ली[1] (स्त्री.) प्लीहा, एक उदर रोग।

तिल्ली[2] (स्त्री.) 1. माचिस की तीली, 2. तिनका। **तीली** (हि.)

तिल्लू (पुं.) सरकंडा (कौर.)।

तिवाड़ा (पुं.) दे. पाड़तिवाड़ा।

तिवाड़िया (वि.) दे. तिवाड़ी।

तिवाड़ी (वि.) 1. तोड़-फोड़ करने वाला, 2. षड्यंत्र कारी; **पाड़ ~** षड्यंत्रकारी।

तिवाया (पुं.) दे. तिपाया।

तिवाळा (पुं.) 1. सिर चकराने की स्थिति, 2. चोट लगने या ठेस पहुँचने के कारण आँखों के सम्मुख अँधेरा आने की स्थिति; **~आणा/खाणा** आँखों के सामने अँधेरा छाना।

तिस (स्त्री.) प्यास। **तृषा** (हि.)

तिसाई (वि.) तृषित, प्यासी।

तिसाया (वि.) 1. प्यासा, 2. जिसे किसी वस्तु का अभाव हो। **तृषित** (हि.)

तिहाइया (वि.) तीसरे भाग का स्वामी।

तिहाई (वि.) वस्तु का तीसरा अंश।

तिहेत्तर (वि.) तिहेत्तर की संख्या। **तिहत्तर** (हि.)

ती (वि.) तीस की संख्या। **तीस** (हि.)

तीक्खा (वि.) 1. पैना, 2. कड़ुआ, 3. उग्र। **तीखा** (हि.)

तीखा (वि.) दे. तीक्खा।

तीगड़ो (वि.) दे. तिगड्डा।

तीज (स्त्री.) 1. श्रावण-शुक्ल तृतीया का दिन, हरियाली तीज, 2. त्योहार का दिन, 3. तृतीया, 4. मखमल के समान गुदगुदा लाल जंतु जो वर्षा-ऋतु में निकलता है; **~त्युहार** 1. त्योहार का दिन, 2. प्रसन्नता का दिन।

तीजा (वि.) दे. तीज्जा।

तीज्जण[1] (पुं.) 1. स्थान जहाँ चर्खा काता जाता है, 2. सुई, धागा, कतरन आदि रखने का पिटारा।

तीज्जण[2] (पुं.) स्त्रियों के मिल बैठने का स्थान। दे. तीज्जण।[1]

तीज्जा (पुं.) मृत्यु का तीसरा दिन; (वि.) तीसरा। **तीजा** (हि.)

तीज्जै (वि.) तीसरे नंबर पर, तीसरी—तीज्जै न्यू कह्वा भेज्जी सै अक चोक्कस सोइये; (क्रि. वि.) हरियाली तीज पर।

तीज्याँ (वि.) तीसरी वार।

तीतर (पुं.) दे. तीत्तर।

तीतरी (स्त्री.) तीतर की मादा; (वि.) 1. वह जो तीतर के समान तेज़ दौड़े, 2. तीतरी रंग का; **~होणा** तेज़ी से दौड़ना।

तीत्तर (पुं.) तीतर पक्षी; **~चाल** तेज़ चाल; **~बोलणा** शकुन होना।

तीत्तर-पंखी (वि.) तीतर के पंख जैसे रंग के बादल (जो वर्षा के द्योतक होते हैं)।

तीन (वि.) 1. तीन की संख्या, 2. अपशकुन द्योतक संख्या; **~काणे पड़णा** खेल में अपशकुन होना; **~तेराह होणा** नष्ट-भ्रष्ट होना; **~मैं नाँ तेराह मैं** किसी भी महत्त्व का न होना, नगण्य।

तीन ताप (पुं.) दैविक, भौतिक तथा आध्यात्मिक कष्ट। उदा.—संकट कट ज्या तीन ताप का। (लचं.)

तीन दरा (पुं.) तीन द्वारों वाला पुल।

तीनाँ (वि.) 1. तोलते समय गिनती बोलने की विधि, यथा—एकाँ, देवाँ, तीनाँ, 2. तीनों।

तीयळ (स्त्री.) 1. घघरी, 2. घघरी-ओढ़नी तथा चोली (ये मिल कर पूरी तीयल कहलाती है); **~देणा** (विवाह आदि के उपलक्ष में) दान या भेंट-स्वरूप तीयल देना; **~बाँचणा** तीयल के हक़ से वंचित रखना। **तीयल** (हि.)

तीया (पुं.) खेल के तीन पासों का सीधा पड़ना।

तीया-पाँच्चा (पुं.) 1. मृत्यु के तीसरे या पाँचवें दिन होने वाला संस्कार, 2. जैसे-तैसे काम निपटाने का भाव; **~करणा/होणा** काम को जैसे-तैसे निपटाना।

तीर[1] (पुं.) बाण; **~लागणा** वचन से घायल होना।

तीर[2] (पुं.) किनारा।

तीर-कमाण (स्त्री.) 1. तीर-कमान, तीर और कमान, एक आयुध, 2. इंद्र-धनुष।

तीरणा (क्रि. स.) तीर से बेंधना।

तीरथ (पुं.) 1. स्नान करने का पवित्र स्थान, पवित्र तथा पूजनीय स्थान, 2. माता-पिता, 3. गुरु। **तीर्थ** (हि.)

तीर्थ (पुं.) दे. तीरथ।

तीर्थयात्रा (स्त्री.) तीर्थाटन।

तील (स्त्री.) घघरी, (दे. तीयळ); **~ताग्गा** वस्त्र आदि (महिलाओं के); **~~करणा** लड़की को ससुराल भेजने के लिए वस्त्रों का प्रबंध करना।

तीली (स्त्री.) दे. तिल्ली[2]।

तीसरा (वि.) 1. तीसरे नंबर का, 2. अन्य, अनजान; **~तेल्ली** अवांछित व्यक्ति- म्हारी तेरी जोट बणी रहै तै कूण तीसरा तेल्ली सै (लो. गी.)।

तीस्सर (पुं.) 1. लड़की को तीसरी बार पति-गृह भेजने की रस्म, 2. वस्त्र जो लड़की तीसरी बार श्वसुर-गृह ले जाती है; (वि.) तीन बार जोती हुई (भूमि)।

तीस्सी (स्त्री.) 1. तीस की गिनती, 2. गणना की एक विधि जिसमें तीस को आधार मान कर गिना जाता है; (वि.) लगभग तीस वर्ष की आयु का।

तीहर (स्त्री.) दे. तीयल। दे. तील।

तुंगल (पुं.) मर्दाने डांडे, पुरुषों द्वारा धारण किया जाने वाला कान का आभूषण।

तुंबा (पुं.) दे. तूंबा।

तुँह (सर्व.) तू, तुम, आप।

तुआई (स्त्री.) तबाही (कौ.)।

तुक (स्त्री.) 1. गीत की कड़ी, 2. मेल, जोड़, 3. अनुमान; **~भिड़ाणा** 1. अनुमान से बात कहना, 2. घटिया कविता करना; **~लागणा** 1. अनुमान से बात ठीक निकलना, 2. अनायास काम बनना।

तुकबंदी (स्त्री.) तुकयुक्त सामान्य कविता।

तुक्कल (स्त्री.) बड़ी पतंग

तुक्का (पुं.) 1. लक्ष्य-रहित बाण, 2. बाण जो निशाने पर न लगे--लाग ग्या तै तीर नाँ तुक्का, 3. अनुमान, अंदाज़ा।

तुखम (पुं.) 1. पुत्र, 2. संतान, 3. वंशज। **तुख़्म** (हि.)

तुख़्म (पुं.) दे. तुखम।

तुच्छ (वि.) 1. छोटा, 2. हीन, 3. क्षुद्र, 4. अल्प।

तुझ (सर्व.) 'तू' सर्वनाम का रूप।

तुझे (सर्व.) दे. तन्नै।

तुड़वाणा (क्रि. स.) दे. तुड़ाणा।

तुड़वाना (क्रि. स.) दे. तुड़वाणा।

तुड़ाइया (पुं.) 1. पशु द्वारा अपनी रस्सी तुड़ाकर या खूँटा उखाड़ कर भागने के लिए किया जाने का प्रयत्न, 2. बंधन तोड़ कर किसी से मिलने का भाव, 3. किसी वस्तु के प्रति लाल ायित होने का भाव; **~करणा** (पशु द्वारा) बंधन-मुक्त होने के लिए छटपटाना।

तुड़ाणा (क्रि. स.) 1. बंधन-मुक्त होना, 2. पशु द्वारा अपना रस्सा तोड़ना, 3. संबंध -विच्छेद कराना, 4. रुपया आदि भुनवाना, 5. विषैले जंतु, यथा साँप, बिच्छू को शरीर से हटाना, 6. शहद की मक्खी का छत्ता तुड़वाना, 7. तोड़ने का काम अन्य से कराना। **तुड़ाना** (हि.)

तुड़ाना (क्रि. स.) दे. तुड़ाणा।

तुणका (पुं.) 1. कुशा, घास, 2. चारा, 3. तिनका, तीली; **~(-के) तोड़णा** 1. काम में बाधा उत्पन्न करना, 2. जादू-टोना करना। **तिनका** (हि.)

तुणणा (क्रि. स.) तुनना, ओटाई करना।

तुतळाणा (क्रि. अ.) 1. तुतला कर बोलना, 2. जबान लड़खड़ाना; (वि.) वह जो तुतलाए। **तुतलाना** (हि.)

तुतलाना (क्रि. अ.) दे. तुतळाणा।

तुनक (वि.) 1. दुर्बल, 2. नाजुक, कोमल।

तुम (सर्व.) 1. दे. थम, 2. दे. तूँ।

तुम्हारा (सर्व.) दे. थारा।

तुम्हें (सर्व.) दे. तन्नै।

तुरंत (क्रि. वि.) दे. तुरत।

तुरई (स्त्री.) दे. तोरी।

तुरक (पुं.) तुर्क।

तुरग (पुं.) घोड़ा।

तुरत (क्रि. वि.) शीघ्र, चटपट, झटपट; **~फुरत मैं** जल्दी-जल्दी, अति शीघ्र। **तुरंत** (हि.)

तुरप (स्त्री.) तुरफ़ का पत्ता। **तुरफ़** (हि.)

तुरपणा (क्रि. स.) सिलाई करना, एक टाँके विशेष से सीना। **तुरपना** (हि.)

तुरपना (क्रि. स.) दे. तुरपणा।

तुरफ़ (स्त्री.) दे. तुरप।

तुररा/तुरराह् (पुं.) 1. साफ़े की कलगी या फुँदना, 2. रौब; **~लाणा** 1. रौब डालना, 2. साफ़े का फुँदना खड़ा करना। **तुर्रा** (हि.)

तुरियापद (स्त्री.) ब्रह्मावस्था। उदा.–लगा समाधी तुरियापद की आग्गा सूझै पल में (लचं)। तुरीय।

तुरी (स्त्री.) घोड़ी–जाट नैं ली तुरी, वाह भी बुरी, ब्राह्मण नैं ठाई छुरी, वाह भी बुरी, साम्मण मैं चाल्ली पुरी, वाह भी बुरी।

तुर्की (वि.) तुर्क देश का; (स्त्री.) तुर्किस्तान की भाषा।

तुर्रा (पुं.) दे. तुररा।

तुल (अव्य.) तुल्य।

तुलकी (वि.) तुल्य की, बराबरी की। दे. बरोब्बर।

तुलना (क्रि. अ.) 1. तोला जाना, 2. तुल्य या समान होना; (स्त्री.) 1. समता, 2. मिलान, उपमा।

तुलमाँ (वि.) तोला हुआ।

तुलवाई (स्त्री.) 1. तोलने की मज़दूरी, 2. तोलने की क्रिया।

तुलवाणा (क्रि. स.) दे. कूतणा। **तुलवाना** (हि.)

तुलवाना (क्रि. स.) दे. तुलवाणा।

तुळसी (स्त्री.) दे. तुळसी[12]।

तुळसी[1] (स्त्री.) तुलसी का पवित्र पौधा जिसे आस्तिक हिंदू प्रतिदिन सींचते हैं (लड़कियाँ इसका विवाह भी रचाती हैं, तुलसी के अनेक लोकगीत प्रचलित हैं, यह कृष्ण की पत्नी मानी जाती है, यह ओषधि के काम आती है)। **तुलसी** (हि.)

तुळसी[2] (स्त्री.) 'ताँग्गा' का अनुवर्ती शब्द, दे. ताँग्गा-तुळसी।

तुळसीदास (पुं.) रामचरितमानस के रचयिता एक भक्त कवि।

तुला (स्त्री.) 1. तराजू, (दे. ताखड़ी), 2. एक राशि; **~दान** व्यक्ति के बराबर भार का दान।

तुलाई (स्त्री.) 1. तोलने का कार्य, तोलने की मज़दूरी; (क्रि. स.) 'तुलवाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

तुलाना (क्रि. स.) दे. तुलवाणा।

तुलार (वि.) तौलने में कुशल।

तुळी (स्त्री.) गेहूँ, जौ आदि के पौधे की तीली (जिनसे अनेक प्रकार के खिलौने बनाए जाते हैं), 1. (दे. सरकंडा), 2. (दे. नाळ)।

तुलैया (वि.) तौलने में कुशल, दे. तुलार।

तुस (पुं.) 1. गेहूँ-जौ की बालियों के नुकीले भाग, 2. भूसी।

तूँ/तूँह् (सर्व.) तू, तुम आप (तुल. तैं)।

तूँत/तूत (पुं.) शहतूत।

तूँबड़ा (पुं.) दे. तूंबा।

तूँबड़ली (स्त्री.) पुत्रवती, बाँझड़ली का विलोम।

तूँबड़ी (स्त्री.) 1. सकोरेनुमा पात्र जिसमें बालक दीपावली के अवसर पर दीपक रखते हैं, 2. तूंबे नामक वाद्य-यंत्र का लघु रूप, 3. तूंबे की बेल; **~-सा मुँह** बेढंगा मोटा मुँह।

तूंबा (पुं.) 1. कमंडलु, 2. बीन बनाने के काम आने वाला एक फल, 3. तूंबे से बना एक वाद्ययंत्र। **तूंबा** (हि.)

तू (सर्व.) तू, तुम; **~तू मैं-मैं होणा** कहा-सुनी होना।

तूड़ (पुं.) मोटा तूड़ा।

तूड़ा (पुं.) गेहूँ-जौ के सूखे पौधों के डंठल, इन डंठलों का चारा।

तूड़ी (स्त्री.) भूसी, महीन चारा।

तूणा (क्रि. अ.) 1. मादा पशु का गरमाना, 2. गाभिन होना–बिना तूयाँ किततैं ब्यावै, 3. मादा पशु का गर्भपात होना।

तूती (स्त्री.) दे. तूत्ती।

तूत्ती (स्त्री.) 1. बच्चों को दूध पिलाने के काम आने वाला टोंटीदार पात्र, 2. मुँह से बजाया जाने वाला एक बाजा; **~बाजणा/बोलणा** 1. दब- दबा होना, 2. एकच्छत्र अधिकार होना; **~-सा मुँह** मोटा या भारी मुँह। **तूती** (हि.)

तूफ़ान (पुं.) 1. समुद्री आँधी, 2. धूलभरी तेज़ आँधी, 3. आफ़त, 4. दंगाफ़साद।

तूमणा (क्रि.) अधिक दुख देना।

तूर[1] (पुं.) वीर, बहादुर। उदा.–लखमी चंद लगे भरपूर छापण, जणू तूराँ की कीली गड़्ग्यी।

तूर[2] (पुं.) वह फट्टा जिस पर बुनाई के समय वस्त्र लिपटता रहता है।

तूरफरी-फरफरी (स्त्री.) तांत्रिक विद्या का शब्द।

तूही (सर्व.) तुम ही, आप ही।

तृतीया (स्त्री.) हिंदी महीने की तीसरी तिथि।

तृप्त (वि.) 1. छका हुआ, 2. संतुष्ट।

तृप्ति (स्त्री.) 1. संतुष्टि, 2. प्रसन्नता।

तृष्णा (स्त्री.) दे. तिरसणा।

तें (प्रत्य.) से, द्वारा, यथा–तेरे तें।

ते (प्रत्य.) दे. तें।

ते इंद्रियकाय (स्त्री.) तीन इंद्रियों का शरीर। दे. काय।

तेइया (वि.) तीसरे दिन से संबंधित; **~ताप** तीसरे दिन चढ़ने वाला ज्वर।

तेक (वि.) तनिक।

तेखड़ (वि.) 1. वह (पशु) जो दिन में तीन बार दूध दे, 2. तीन बार घटित होने वाला।

तेग (पुं.) खड्ग, तलवार।

तेगा (पुं.) 1. दे. खड़ग, 2. दे. तेग।

तेघड़ (स्त्री.) एक-दूसरे पर रखे तीन घड़े, सिर पर रखे पानी के तीन मटके (कुछ गाँवों में दोघड़ तथा तेघड़ रखने की सार्वजनिक रूप से मनाही है)।

तेज (पुं.) 1. चमक, प्रकाश, 2. पराक्रम, बल, 3. गरमी, 4. उग्रता, 5. प्रताप, (वि.) 1. तेज़, तीक्ष्ण (धार), 2. महँगा, 3. उग्र, 4. तेज़ बुद्धि वाला।

तेजपात (पुं.) दारचीनी की जाति के पेड़ की पत्तियाँ जो मसाले के रूप में काम आती हैं। **तेजपत्ता** (हि.)

तेजस्वी (वि.) 1. प्रतापी, 2. कांतिमान।

तेजाब (पुं.) दे. तिजाब।

तेज़ी (स्त्री.) दे. तेज्जी।

तेज्जी (स्त्री.) 1. शीघ्रता, 2. महँगाई, 3. उग्रता। **तेज़ी** (हि.)

तेड़ा (पुं.) पुरुषों के गले का एक आभूषण।

तेती (वि.) तेतीस की संख्या। **तेतीस** (हि.)

तेत्थण (वि.) (पशु) जिसके तीन थनों में दूध हो (एक थन मर गया हो)।

तेपूकाय (स्त्री.) तेजस या प्रकाश काया या शरीर। दे. काय।

तेरड़ी (सर्व.) तेरी, तुम्हारी, 'तेरी' का लघुतावाचक रूप।

तेरला (सर्व.) तेरा, तुम्हारा, आपका, 'तेरा' का लघुतावाचक रूप।

तेरस (स्त्री.) दे. तिरोदसी।

तेरह (वि.) दे. तेराह्।

तेरा (सर्व.) तुम्हारा, आपका, 'तू' का संबंधवाचक रूप; (वि.) दे. तेराह्; **~मेरा बरतणा** भेद-भाव बरतना।

तेरातल्ली (स्त्री.) नृत्य के समय भुजाओं पर बंधी घंटियाँ जो तेरह प्रकार की ध्वनि या ताल निकालती हैं। दे. तेरा ताळी।

तेरा ताळी (वि.) 1. स्वछंद आचरण वाली (महिला), 2. वंचिका देने वाली (स्त्री)।

तेराळी (सर्व.) तेरे वाली, तेरी, आपकी।

तेराह् (वि.) तेरह की संख्या। **तेरह** (हि.)

तेरी (सर्व.) तुम्हारी, आपकी।

तेरे (सर्व.) आपके, तुम्हारे, 'तू' का संबंध कारक रूप; **~ताँहीं** तुमको, 'तू' का संप्रदान कारक रूप; **~मैंह** 1. तेरे पास, 2. 'तू' का अधिकरण कारक का रूप।

तेरै (सर्व.) 1. तेरे यहाँ, तेरे पास, 2. तुम्हारे–तेरै काँ आगी (तुम्हारे बाजी आ गई); **~तै** तुम से, तुझ से, 'तू' का करण और अपादान कारक-रूप; **~सेत्ती** तुझ से, 'तू' का करणकारक रूप।

तेल (पुं.) 1. सरसों, तिल आदि से निकला स्निग्ध द्रव पदार्थ, 2. मिट्टी का तेल; **~चढाणा** विवाह के समय वर तथा कन्या को उबटन मलने की प्रथा संपन्न करना; **~लिकड़णा** 1. पसीना छूटना, 2. हिम्मत हारना; **~सा छींट्टा लागणा** बात चुभना, बात लगना।

तेलड़ (वि.) तीन लड़ियों वाला; **~हार** तीन लड़ी का हार।

तेलड़ी (स्त्री.) तेल रखने का मिट्टी का पात्र; (वि.) तीन लड़ी की।

तेल-बान (पुं.) दे. बान।

तेलिन (पुं.) दे. बान।

तेलिन (स्त्री.) दे. तेल्लण।

तेलिया (वि.) वह (पानी) जिसमें तेल की गंध आती हो, तेलयुक्त (जल)।

तेली (पुं.) दे. तेल्ली।

तेल्लण (स्त्री.) 1. तेली की पत्नी, 2. विवाह के समय वर या कन्या को तेल चढ़ाने की रस्म करने वाली सधवा महिला–तेल्लण तेल चढाइया (लो. गी.)। **तेलिन** (हि.)

तेल्ली (पुं.) 1. तेल पेरने वाला, 2. यवनों की एक जाति, 3. लाल रंग का एक कीड़ा जिस पर काला दाग़ भी होता है; **~का बुळध** 1. कम ज्ञान रखने वाला, 2. अदूरदर्शी। **तेली** (हि.)

तेवर (पुं.) दे. त्योर।

तेवल (स्त्री.) (कौर.) दे. तीयळ।

तेस्सर (वि.) तीन बार जोती गई (भूमि)–तेस्सर पणमेस्सर।

तेह (स्त्री.) खोज (दे. टोह)।

तेहरा (वि.) दे. तेहर्याँ।

तेहराम्मीं (स्त्री.) 1. मृत्यु के तेरहवें दिन दिया जाने वाला मृत्यु-भोज, 2. तेरहवीं पर संपन्न धार्मिक कृत्य; **~करणा/मनाणा** तेरहवीं की रस्म करना। **तेरहवीं** (हि.)

तेहर्याँ (वि.) 1. तीन लड़ियों का, 2. तीन परतों का। **तिहरा** (हि.)

तैं (सर्व.) 1. तू, तुम, आप, 2. 'तू' का कर्ता और कर्म कारक चिह्न ('तैं' का प्रयोग दुजाना, बेरी के आस-पास किया जाता है)–तैं गुलगुले ना खात्ता; (प्रत्य.) 1. से–जी तैं मरग्या, 2. करण और अपादान कारक का चिह्न।

तै (अव्य.) तो–मन्नैं तै अपणी कहली ईब तूँ सुणा।

तैड़ (स्त्री.) 'तड़' की ध्वनि; (क्रि. वि.) 'तड़' की ध्वनि के साथ।

तैणा (क्रि. अ.) 1. पिघलना, घी आदि का पिघलना, 2. पसीजना, 3. पसीना छूटना; (वि.) जो शीघ्र पिघले। **तैना** (हि.)

तैत्तरीय (स्त्री.) 1. यजुर्वेद की एक शाखा, 2. इस शाखा का उपनिषद्।

तैनात (वि.) नियुक्त।

तैयार (वि.) दे. त्यार।

तैयारी (स्त्री.) दे. त्यारी।

तैरना (क्रि. अ.) दे. तिरणा।

तैराक (वि.) दे. तिराक।

तैराना (क्रि. स.) दे. तिराणा।

तैश (पुं.) 1. आवेश, 2. क्रोध।

तैसा (वि.) वैसा।

तोंद (पुं.) मोटा या फूला हुआ पेट।

तोंह (सर्व.) 1. दे. तूँ, 2. दे. तैं।

तोंहमद (स्त्री.) तोंहमत, लांछन; **~लाणा** लांछित करना, आरोप लगाना।

तो[1] (अव्य.) दे. तै; **~तो करणा** अगर-मगर करना।

तो[2] (स्त्री.) कुत्ते को बुलाने या दुत्कारने के लिए प्रयुक्त शब्द; (पुं.) कुत्ता।

तोख (स्त्री.) तोक, गले और पैरों की बेड़ी, बेड़ी।

तोड़[1] (पुं.) 1. अंत, अंतिम सीमा–धरती का तोड़ किसनैं पाया, 2. अंतिम निर्णय–बात का तोड़ करकै छोड्या, तुल्य, समता–दुनियाँ के माँह बीर मिलै नाँ तेरे तोड़ की, 4. रागिनी की टेक, 5. जामन, दूध जमाने के लिए डाली गई लाग या जाग, 6. कटाव; (अव्य;) तक– घर तोड़ भाज्या चला जा; (क्रि. स.) 'तोड़णा' क्रिया का आदे. रूप; **जोड़~**साँठ-गाँठ; **नया~**1. अछूता, 2. नया गाना।

तोड़[2] (पुं.) गायन शैली की एक तर्ज या छंद। उदा.दुर्गे रखो हमारी लाज, तेरी शरणागत आए आज। दे. तोड़।

तोड़णा (क्रि. स.) 1. खंडित करना, 2. दो भागों में बाँटना, 3. अपने पक्ष में करना, 4. प्रण भंग करना, 5. साँप द्वारा काटा जाना–कै साँप नैं तोड़ लिया? **तोड़ना** (हि.)

तोड़ना (क्रि. स.) दे. तोड़णा।

तोड़ा (पुं.) 1. टोटा, कमी, अभाव, अकाल, 2. गले का आभूषण, एक आभूषण जो लच्छेदार चौड़ी जंजीर का होता है; (क्रि. स.) 'तोड़णा' क्रिया का भू. का. रूप **~पड़णा/होणा** वस्तु का अभाव होना; **~मारणा** किसी वस्तु का मिलना कठिन होना।

तोड़िया (पुं.) 1. सरसों जैसा एक अन्न जिसका तेल निकाला जाता है 2. पैरों का एक घुँघरुओं वाला आभूषण विशेष।

तोड़ी (स्त्री.) 1. माथे की सलवट, 2. क्रोध भरी दृष्टि; (अव्य.) तक, जैसे–घर तोड़ी; (क्रि. स.) 'तोड़णा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिंग रूप। **त्यौरी** (हि.)

तोतला (वि.) दे. तोतळा।

तोतळा (वि.) तुतला कर बोलने वाला।

तोता (पुं.) दे. तोत्ता।

तोत्तक-बैया (वि.) तोतला (व्यक्ति)।

तोत्ता (पुं.) सुआ; (वि.) 1. नकलची, 2. तोतला। **तोता** (हि.)

तोद्दा (पुं.) 1. ढेर, 2. बरफ़ का ढेर।

तोप (स्त्री.) दे. तोब।

तोपख़ाना (पुं.) 1. युद्ध के लिए सुसज्जित चार से आठ तोपों तक का समूह, 2. तोप चलाने वाले सैनिकों का दल, 3. वह स्थान जहाँ तोपें रखी जाती हैं।

तोपची (पुं.) तोप चलाने वाला।

तोपरा (पुं.) जगाधरी के निकट एक गाँव जहाँ पहले अशोक स्तंभ था (इसी स्तंभ को तुगलक वंशीय फीरोजशाह दिल्ली लाया था)।

तोब (स्त्री.) गोला दाग़ने का बड़ा यंत्र; (वि.) बड़ी पहुँच वाला। **तोप** (हि.)

तोबची (पुं.) तोपची।

तोबड़ा[1] (पुं.) छोटी तोप; **~सा मुँह** भारी मुँह।

तोबड़ा[2] (पुं.) चमड़े या टाट आदि की वह थैली जिसमें दाना भर कर घोड़े को खिलाते हैं।

तोबा (स्त्री.) 1. किसी कार्य को भविष्य में न करने की शपथ, 2. पश्चात्ताप।

तोमर (पुं.) दे. तोम्मर।

तोय (सर्व.) तुझे। दे. तन्नैं।

तोम्मर (पुं.) 1. बर्छा, 2. तोमर वंश, 3. तोमर वंश का व्यक्ति।

तोयस (स्त्री.) तेरहवीं तिथि, (दे. तिरोदसी)। **त्रयोदशी** (हि.)

तोर (पुं.) दे. त्योर।

तोरण (पुं.) 1. घर का बड़ा दरवाज़ा, 2. स्वागत-द्वार, 3. बंदनवार; **~चटखाणा** बारोठी (दे. बरोठ्ठी) की रस्म पर दूल्हे की छड़ी से तोरण छुआना (जो वीरगाथा काल के समान विजय प्राप्त कर दुल्हन को अपनाने का द्योतक है)।

तोरावाटी (स्त्री.) अहीरवाटी की एक सीमावर्ती बोली।

तोरिया (पुं.) दे. तोड़िया।

तोरी (स्त्री.) एक सब्ज़ी विशेष (कड़वी तोरी के फल का भूसा गद्दी में भर कर बैठने से बवासीर दूर होती है); (सर्व.) तेरी (सीमित प्रयोग)। **तुरई** (हि.)

तोल (पुं.) 1. वजन, भार, 2. स्वभाव– उसका तोल कूण जाणै घून्ना माणस सै, 3. अनुमान, 4. तराजू, 5. भार तोलने का बट्टा; (क्रि. स.) 'तोलणा' क्रिया का आदे. रूप; **~करणा** 1. तोलना, 2. परखना; **~पाटणा** स्वभाव का अनुमान लगना–अरै, तेरा ए तोल नाँ पाटता। **तौल** (हि.)

तोलणा (क्रि. स.) 1. भार करना, 2. परखना। **तोलना** (हि.)

तोलना (क्रि. स.) दे. तोलणा।

तोल मोल (पुं.) दे. भा–ता। खरीद से पहले वस्तु की जाँच-परख या भाव-ताव।

तोला (पुं.) दे. तोळा।

तोळा (पुं.) तोला-भर भार; (क्रि. वि.) दे. तावळा; (वि.) तोला-भर भार का। **तोला** (हि.)

तोलिया (पुं.) 1. दे. अंगोच्छा, 2. दे. छालणा।

तोळी[1] (अव्य.) तक।

तोळी[2] (क्रि. वि.) दे. तावळी।

तोल्ला (पुं.) 1. मिट्टी का भिक्षा पात्र, 2. खंडित पात्र जिसमें पशु (कुत्ते, बिल्ली) को भोजन खिलाते हैं, 3. एक माप, 4. बड़े मुँह वाले मटके आदि का ढक्कन, 5. दही जमाने का मिट्टी का बरतन; (वि.) तोलने वाला; **~-सा मुँह** मोटा या फूला हुआ मुँह।

तोल्ली (स्त्री.) छोटा तोला, (दे. तोल्ला)।

तोश (पुं.) पुरुषों के गले का एक आभूषण।

तोस[1] (स्त्री.) दे. तोयस।

तोस[2] (पुं.) संतुष्टि।

तोसक (पुं.) हल्का गद्दा–दरी-गींडवा, तोसक-तकिया ले कै सोग्या न्यारा, परदेस्सी नैं पिलंग बिछा लिया अपणे नाँ का न्यारा (लो. गी.)। **तोशक** (हि.)

तोसाम (पुं.) 1. प्रकाश-पुंज, 2. हिसार के निकट एक नगर जो सृष्टि का आदि नगर माना जाता है (जनधारणा के अनुसार आदि मानव ने प्रकृति के प्रथम प्रकाश-पुंज का दर्शन यहीं किया था, ज. सा. 4. 10–11)। **तोशाम** (हि.)

तोहमत (स्त्री.) दे. तोंहमद।

तोहर (पुं.) गूजरों का एक गोत।

तोहे (सर्व.) तुझे।

तौंह् (सर्व.) दे. तूँ।

तौर (अव्य.) 1. तरह, समान, उदा. कमल के तौर। 2.वेशभूषा।

तौल (अव्य.) दे. तावळ।

तौला (वि.) दे. तुलैया।

तौळा (वि.) दे. तावळा।

तौलिया (पुं.) दे. तोलिया।

तौहीन (स्त्री.) अपमान।

त्यल (पुं.) दे. तिल।

त्याँ (क्रि. वि.) इस कारण से–त्याँ तैं ब्याह मैं नाँ आया अक तूँ भी तै नाँ गया; **~तै** (कारक) (कौर.) से।

त्याँगळी (स्त्री.) दे. जेळी।

त्याग (पुं.) 1. छोड़ना अथवा किसी से दूर रहने की क्रिया, 2. घर-बार आदि छोड़ने का भाव; (क्रि. स.) 'त्यागणा' क्रिया का आदे. रूप।

त्यागणा (क्रि. स.) 1. छोड़ना, 2. संबंध तोड़ना। **त्यागना** (हि.)

त्यागना (क्रि. स.) दे. त्यागणा।

त्याग-मास (पुं.) कार्तिक का महीना।

त्यागी (पुं.) दे. त्याग्गी; (वि.) दे. त्याग्गी।

त्याग्गी (पुं.) ब्राह्मणों की एक जाति जिसके बीस्सा और दूस्सा दो उपभाग हैं, (दे. तगा); (वि.) त्यागी, त्यागवान।
त्यागी (हि.)

त्यार (वि.) 1. तत्पर, 2. बना-ठना।
तैयार (हि.)

त्युहार (पुं.) पर्व; **~रुपणा** अनहोनी घटना घटित होना; **~होणा** अधिक हानि होना (व्यंग्य में प्रयुक्त)।
त्योहार (हि.)

त्युहारी (स्त्री.) त्योहार के दिन माँगी जाने वाली भिक्षा या दान।

त्यूँ (क्रि. वि.) त्यों।

त्योड़ी (स्त्री.) दे. तोड़ी।

त्योना (पुं.) 1. प्रस्तुत या भेंट करने योग्य वस्तु, 2. दुर्लभ एवं प्रिय वस्तु।

त्योहार (पुं.) दे. त्युहार।

त्यौंखा (पुं.) तीन शंकुओं वाला खंभा।

त्रा-त्रा (स्त्री.) त्राहि-त्राहि (कौर.)।

त्राफ (पुं.) गांव के कारीगरों पर लगाया जाने वाला कर।

त्रास (पुं.) डर। दे. भो।

त्राहि (अव्य.) बचाओ या रक्षा करो।

त्रिकाल (पुं.) तीनों समय (भूत, भविष्य, वर्तमान और प्रातः, मध्याह्न, सायं)।

त्रिकालदर्शी (पुं.) तीनों कालों की बातों को जानने वाला।

त्रिकुटा (पुं.) सोंठ, मिर्च और पीपल का मिश्रण।

त्रिकुटी (स्त्री.) दोनों भौंहों के मध्य का स्थान।

त्रिकोण (पुं.) दे. तिकोण।

त्रिजटा (स्त्री.) विभीषण की बहिन जो अशोक वाटिका में सीताजी के साथ रहती थी।

त्रिदोष (पुं.) वात, पित्त और कफ़ विकार।

त्रिनेत्र (पुं.) शिव।

त्रिपुंड (पुं.) मस्तक पर लगाया जाने वाला तीन आड़ी रेखाओं का तिलक।

त्रिफला (पुं.) दे. तिरफळा।

त्रिबली (स्त्री.) वे तीन बल जो पेट पर पड़ते हैं।

त्रिभुज (पुं.) तीन भुजाओं वाली आकृति।

त्रिभुवन (पुं.) तीन लोक (स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल)।

त्रिया (स्त्री.) दे. तिरिया।

त्रिलोक (पुं.) दे. त्रिभुवन।

त्रिलोकीनाथ (पुं.) तीनों लोकों का स्वामी।

त्रिवेणी (स्त्री.) दे. तिरबेणी।

त्रिशंकु (पुं.) एक राजा जिसकी स्थिति स्वर्ग और पृथ्वी के बीच में मानी जाती है।

त्रिशूल (पुं.) दे. तिरसूल।

त्रुटि (स्त्री.) 1. कमी, 2. अशुद्धि।

त्रेतायुग (पुं.) चार युगों में से दूसरा युग।

थ

थ हिंदी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन और तवर्ग का दूसरा अक्षर जिसका उच्चारण स्थान दंत है, हरियाणवी में इसका उच्चारण दंत और तालु के बीच का है।

थंब-पंचात (स्त्री.) छोटी खाप की पंचायत।

थंबुआ (पुं.) (कौर.) दे. थाँभ।

थंभ (पुं.) दे. थाँभ।

थँभणा (क्रि. अ.) 1. रुकना, 2. रोते-रोते चुप होना, 3. बहाव (जल, रक्त) का रुकना, 4. पानी का (गड्ढे में) रुकना, 5. डटे रहना। **थमना** (हि.)

थंभू (वि.) बलिष्ठ; (पुं.) स्वयंभू, शिव।

थंभोळा (पुं.) 1. वृक्षारोपण के लिए बनाया गया गड्ढा, गड्ढा, 2. छोटी दीवार, 3. ओसारे या छप्पर की स्तंभनुमा दीवार। **थाला** (हि.)

थंभोळिया (पुं.) 1. छोटा थंभ, 2. छोटी दीवार; **~काढणा** छोटी दीवार चिनना।

थई (स्त्री.) दे. थही।

थकणा (क्रि. अ.) 1. हारना, थकान अनुभव करना, काम करते-करते निष्क्रिय होना, 2. हिम्मत तोड़ना। **थकना** (हि.)

थकना (क्रि. अ.) दे. थकणा।

थकान (स्त्री.) थकने का भाव।

थकाणा (क्रि. स.) परिश्रम से अशक्त बनाना, इतना काम कराना कि कोई थक जाए। **थकाना** (हि.)

थकाना (क्रि. स.) दे. थकाणा।

थकामाँदा (वि.) दे. थक्क्या-माँद्या।

थकावट (स्त्री.) थकान।

थक्क्या-माँद्या (वि.) दे. हार्‌या-नीर्‌या। **थकामाँदा** (हि.)

थड़ा (पुं.) 1. स्थान या गद्दी जहाँ दुकानदार बैठकर लेन-देन करता है, 2. कारीगर (मोची आदि) के बैठने का स्थान, 3. छोटा चबूतरा।

थण (पुं.) पशु का थन; **~मरणा** विकार के कारण थन छोटा पड़ना या उससे दूध निकलना बंद होना। **थन** (हि.)

थन (पुं.) दे. थण।

थनथनी (स्त्री.) 1. हीक, खाद्य पदार्थ से मन उकताने का भाव, 2. कँपकँपी।

थनवान (पुं.) एक जाट गोत।

थनेला (पुं.) स्तन सूजने की बीमारी।

थनैल (वि.) मोटे थनों वाला (पशु)

थपकणा (क्रि. स.) थपथपाना। **थपकना** (हि.)

थपकना (क्रि. स.) दे. थपकणा।

थपकाना (क्रि. स.) दे. थपथपाणा।

थपकी (स्त्री.) 1. कपड़े, मिट्टी आदि कूटने का डंडा, 2. थपथपी, पीठ थपथपाने की क्रिया, 3. हथेली से धीरे-धीरे थपथपाने की क्रिया; (क्रि. स.) 'थपकणा' क्रिया का भू. का. स्त्रीलिं. रूप; **~मारणा** उत्तेजित करना; **~लवाणा** कनफेड़ के रोग में कुम्हार के चाक की मिट्टी कान पर लगवाना।

थपड़ाणा (क्रि. स.) थप्पड़ मार-मार कर पीटना।

थपणा (क्रि. अ.) 1. शर्त लगना, 2. बात निश्चित होना, 3. (दे. थपना)।

थपथपाणा (क्रि. स.) 1. पीठ पर थपथपी देना, प्रेरित करना, उत्तेजित करना, 2. शाबाशी देना, 3. सहलाना, 4. धीरे-धीरे ठोंकना। **थपथपाना** (हि.)

थपना (क्रि. अ.) 1. जमना, स्थापित होना, 2. पाथा जाना, थापा जाना।

थपवाणा (क्रि. स.) 1. कच्चे मकान की मरमत करवाना, 2. थपथवाने का काम करवाना, 3. मिट्टी की वस्तु गढ़वाना; (क्रि. स.) 1. पिटवाना, 2. (दे. पथवाणा)। **थपवाना** (हि.)

थपेड़ (स्त्री.) दे. थपेड़ा।

थपेड़णा (क्रि. स.) 1. पीठ ठोंकना, 2. पीटना।

थपेड़ा (पुं.) 1. पानी का आघात, 2. थप्पड़, 3. पवन आदि का झोंका,

4. झटका; (क्रि. स.) 'थपेड़णा' क्रिया का भू. का. रूप।

थप्पड़ (पुं.) 1. तमाचा, झापड़, 2. व्यंग्य भरी बात।

थबक (स्त्री.) कंकर के खेल में कंकर ऊपर उछालकर खाली हथेली को जमीन पर मारने का भाव। दे. धाई धप्पा।

थम (सर्व.) 1. तू, आप, 2. स्त्री द्वारा पति के लिए प्रयुक्त सम्मानपूर्वक संबोधन; (क्रि. अ.) 'थमणा' क्रिया का आदे. रूप। **तुम** (हि.)

थमणा (क्रि. अ.) दे. थँभणा।

थमना (क्रि. अ.) दे. थँभणा।

थमाँस (स्त्री.) 1. संतोष, 2. प्रतीक्षा करने का धैर्य।

थर (वि.) स्थिर–दुनिया मैं के चीज थर सै; (स्त्री.) 'थर' की ध्वनि।

थरथर (स्त्री.) 1. कँपकँपी, 2. भूकंप के समय पृथ्वी के हिलने की स्थिति; **~काँपणा** 1. डरना, 2. डर के कारण आज्ञा-पालन करना।

थरथराना (स्त्री.) कँपकँपी।

थरथराट (स्त्री.) कँपकँपी। **थरथराहट** (हि.)

थरथराणा (क्रि. अ.) 1. डरना, 2. काँपना, 3. हिलना। **थर्राना** (हि.)

थरथराना (क्रि. अ.) दे. थरथराणा।

थरथराहट (स्त्री.) दे. थरथराट।

थरमाँमीट्टर (पुं.) ज्वर मापने का यंत्र। **थरमामीटर** (हि.)

थरमामीटर (पुं.) दे. थरमाँमीट्टर।

थरमोस (स्त्री.) थरमस-बोतल। **थरमस** (हि.)

थरी नोट थ्री (स्त्री.) विशेष मार्के की घातक बंदूक।

थर्राना (क्रि. अ.) 1. थर-थर काँपना, 2. भयभीत होना।

थल (पुं.) दे. थळ।

थळ (पुं) 1. भू-भाग, 2. 'जल' का विलोम। **स्थल** (हि.)

थळकणा (क्रि. अ.) हिलना, शरीर के शिथिल अंग का हिलना; (वि.) वह जो थलके। **थलकना** (हि.)

थलकना (क्रि. अ.) दे. थळकणा।

थलचर (पुं.) स्थल पर रहने वाले जीव-जंतु।

थलथल (विं.) 1. मोटापे के कारण लटकता हुआ (शरीर), 2. गुदगुदा।

थळसणा (क्रि. अ.) फिसलना; (वि.) वह जो शीघ्र फिसले।

थळिया (स्त्री.) 1. छोटी थाली, 2. तश्तरी; (वि.) थली से संबंधित, थली का, जैसे–थळिया-मूस्सा। **थलिया** (हि.)

थळी (स्त्री.) दूर-दूर तक फैला रेतीला भू-भाग; **~चराणा** वर्षाकाल में पशुओं को थली पर चराना। **थली** (हि.)

थली (स्त्री.) दे. थळी।

थसळणा (क्रि. स.) कूटना या चूरा करना; (क्रि. अ.) रिपट कर गिर पड़ना, (दे. थिसळणा)।

थही (स्त्री.) ढेरी, थाक, वस्तु पर वस्तु रख कर बनी ढेरी, जैसे–रोटियाँ की थही; **~मारणा** ढेरी लगाना।

थाँ/थाँह (सर्व.) तुम, (दे. थम); (पुं.) गाय-भैंस बाँधने का स्थान।

थाँब/थाँभ (पुं.) खंभा; (स्त्री.) पकड़, रोक; (क्रि. स.) 'थाँभणा' क्रिया का आदे. रूप। **स्तंभ** (हि.)

थाँभणा (क्रि. स.) 1. चलती हुई चीज़ को रोकना, 2. किसी कार्य को करने से वर्जित करना, 3. पकड़ना, सँभालना– अरै मेरी लाट्ठी थाँभिये, 4. रोते हुए को चुप करना, 5. मन समझाना। **थामना** (हि.)

थाँभळा (पुं.) 1. थाला, 2. गड्ढा, पेड़ या पौधा लगाने के लिए बना गड्ढा।

थाँवला (पुं.) दे. थाँभळा।

था (क्रि. अ.) 'सै' क्रिया का भूत-कालिक रूप।

थाई (स्त्री.) (कौर.), दे. चुपाड़।

थाक (स्त्री.) ढेरी, (दे. थही)।

थागरी (स्त्री.) जिला रोहतक की एक बोली।

थाण (पुं.) पशु बाँधने का स्थान; **~काटणा** 1. पशु का बेचैनी से थान में इधर-उधर घूमना, 2. पशु का बिना दूध दिए थान पर चरना; **~बैठणा** निष्क्रिय होना।

थाणा (पुं.) पुलिस स्टेशन। **थाना** (हि.)

थाणेदार (पुं.) थाने का बड़ा अधिकारी। **थानेदार** (हि.)

थाणेस्सर (पुं.) दे. थानेसर।

थाती (स्त्री.) 1. पूँजी, 2. धरोहर।

थान[1] (पुं.) कपड़े का बंडल (जिसकी लंबाई लगभग 20 गज होती है); **~का थान** 1. पूरा थान, 2. अधिक लंबा वस्त्र।

थान[2] (पुं.) 1. दे. मंढ, 2. दे. मँढी।

थाना (पुं.) दे. थाणा।

थानेदार (पुं.) दे. थाणेदार।

थानेसर (पुं.) सातवीं शताब्दी में महाराज हर्षवर्धन की राजधानी (धन के लालच में यहाँ महमूद गज़नवी ने आक्रमण किया, इसके निकट ही कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय है, यहाँ पर स्थाणेश्वर भगवान का मंदिर है)। **स्थाणेश्वर** (हि.)

थानै (सर्व.) तुमने।

थाप (स्त्री.) 1. मोहर, मोहर का चिह्न, 2. पंचायत, (दे. खाप), 3. सौदेबाज़ी, निर्णय या ठहराव, 4. थपकी, 5. तबले पर लगने वाली थपकी; (क्रि. स.) 'थापणा' क्रिया का आदे. रूप; **~लाणा/मारणा** 1. मुद्रा से अंकित करना, 2. तबले पर थाप देना।

थापणा (क्रि. स.) 1. महत्त्व देना, सम्मान देना, 2. थापना, पाथना, उपले आदि बनाना, 3. बिटौड़े (दे.), दीवार आदि पर मिट्टी-गोबर का लेप करना, 4. चिह्नित करना, 5. मिट्टी की ईंट बनाना, साँचे में ईंट ढालना; **बिटौड़ा सा~** कमर पर बार-बार आघात पहुँचाना। **थापना** (हि.)

थापना (क्रि. स.) दे. थापणा।

थापा (पुं.) दे. थाप्पा।

थाप्पल (स्त्री.) ढेर।

थाप्पा (पुं.) 1. मेंहदी, गेरू आदि से लिप्त हथेली से दीवार आदि पर अंकित किया गया हाथ का चिह्न, 2. रस्म जिसमें विदाई के समय दुल्हन की माता समधी (लड़की का ससुर) की छाती और पीठ पर मेंहदी से लिप्त हाथ का थापा लगाती है, 3. (दे. छाप्पा)। **थापा** (हि.)

थाप्पी (स्त्री.) दे. थपकी; (क्रि. स.) 'थापणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. एकव. रूप।

थाम[1] (पुं.) दे. थाँब।

थाम[2] (सर्व.) दे. तम।

थामना (क्रि. स.) दे. थाँभणा।

थारड़ा (सर्व.) 1. तुम्हारा, आपका, 2. 'तुम' का संबंध कारक रूप।

थारला (सर्व.) 1. तुम्हारा, आपका, 2. 'तुम' का संबंध कारक रूप—थारले छोह्रे का ब्याह सै।

थारा (सर्व.) 1. आपका, 2. 'तुम' का संबंध कारक रूप। **तुम्हारा** (हि.)

थारी (सर्व.) 1. आपकी, 2. 'तुम' का संबंध कारक रूप। **तुम्हारी** (हि.)

थारे (सर्व.) 1. आपके पास, आपके यहाँ, 2. तुम्हारे; **~ताहीं** 1. आपके, लिए, तुम्हारे लिए, तुम को, 2. तुम्हें— थारे ताँहीं कई बै कह ली मान ज्याओ।

थाल (पुं.) दे. थाळ।

थाळ (पुं.) 1. बड़ी थाली, 2. लोहे का बड़ा पात्र जिसमें रहँट की बाल्टी का पानी गिरता है। **थाल** (हि.)

थाळा (पुं.) 1. बड़ी थाली, 2. जल से पूरित विस्तृत भू-भाग, 3. वह पात्र जिसमें रहँट की बाल्टियों का पानी गिरता रहता है, 4. (दे. थाँभळा), (तुल. थाला, थाँवला)।

थाली (स्त्री.) दे. थाळी।

थाळी (स्त्री.) भोजन परसने की बड़ी तश्तरी; **~कढवाणा/लिखवाणा** (बच्चा होने से पूर्व) प्रसव-पीड़ा के समय पंडित से थाली में चक्रव्यूह तथा अर्जुन के दस नाम लिखवाना (इस पात्र में गरम दूध भर कर महिला को पिलाते है ताकि बच्चे का जन्म शीघ्र हो सके); **~काढणा** किसी के निमित्त अन्न आदि समर्पित करना; **~नाँच** थालियों को हाथों में लेकर किया जाने वाला नृत्य विशेष; **~बाजणा** पुत्र-जन्म की प्रसन्नता के सूचनार्थ थाली बजाना। **थाली** (हि.)

थावर (पुं.) शनिवार, (दे. सनीच्चर); (वि.) स्थावर, 'जंगम का विलोम'।

थाह (स्त्री.) 1. गहराई (भूमि की वह तह जहाँ पानी मिलता है), 2. अंत, अंतिम किनारा, 3. अता-पता, 4. मन की गहराई; (क्रि. स.) 'थाहणा' क्रिया का आदे. रूप; **~टोहणा/ ढूँढणा/देखणा** 1. मन का पता लगाना, 2. (दे. थाहणा); **~पाणा** 1. पानी की गहराई का पता लगना, 2. मन की बात का पता चलना।

थाहणा (क्रि. स.) 1. पानी की गहराई का पता लगाना, 2. मन के रुझान का पता लगाना, 3. मन की गइराई का पता लगाना। **थाहना** (हि.)

थिर (वि.) टिका हुआ, जो चंचल न हो—इसका मन थिर कोन्या। **स्थिर** (हि.)

थिरकणा (क्रि. अ.) 1. अंग मटकाना, 2. नाचना; (वि.) थिरकने वाला। **थिरकना** (हि.)

थिरकना (क्रि. अ.) दे. थिरकणा।

थिसळण (स्त्री.) फिसलन।

थिसळणा (क्रि. अ.) 1. रपटना, रपट कर गिरना, 2. चरित्र-पतित होना— बूड्ढा हो कै थिसळग्या; (वि.) फिसलने वाला। **फिसलना** (हि.)

थीगी (क्रि.) थी।

थुक-थुक (स्त्री.) 1. घृणा और तिरस्कार-सूचक शब्द, थू-थू, 2. थूकने योग्य, कड़ुआ; **~होणा** सब जगह निंदा होना।

थुकवाणा (क्रि. स.) 1. मुँह की चीज़ गिरवाना या उगलवाना, 2. थूकने के लिए प्रेरित करना। **थुकवाना** (हि.)

थुक्कम-थुक्का (स्त्री.) 1. कहा-सुनी, 2. गाली-गलौज़।

थुक्का-पुजारी (स्त्री.) गाली-गलौज़।

थुक्का-फजीत्ता (पुं.) लड़ाई-झगड़ा।

थुड़ (स्त्री.) कमी।

थुत्थ्या (स्त्रीं.) 1. खेल खेलते समय खिलाड़ी द्वारा माँगा गया कुछ विश्राम का समय, 2. खेल के बीच माँगी गई क्षमा; **~करणा/माँगणा** 1. खेलते समय चोट लगने, पानी पीने जाने या अन्य किसी कारण से कुछ क्षण या समय का विश्राम माँगना, 2. खेल के बीच क्षमा माँगना, 1. (दे. थू), 2. (दे. थूथ)।

थुथराणा (क्रि. स.) 1. खोखला करना, 2. भूमि को पोला करना, 3. लकड़ी को बीच से पोला करना; (क्रि.अ.) खोखला होना; (वि.) वह जो थोथा कर डाले। **थुथराना** (हि.)

थुलथुल (वि.) 1. मोटा, मोटापे का शरीर, 2. मोटा और गिलगिला।

थुल्ली (स्त्री.) दे. थूल्ही।

थुहल्लाह (पुं.) छोटी ढेरी, गोबर-मिट्टी की ढेरी, ढेरी।

थू (स्त्री.) 1. बैल का कूबड़, टाँट, 2. खेल के बीच में खिलाड़ी द्वारा माँगा गया विश्राम, 3. खेल के बीच में माँगी गई क्षमा, 4. थूकने का भाव या क्रिया, 5. निंदा, अपमान या घृणा-सूचक शब्द।

थूक (पुं.) 1. मुँह की बुलबुले या झागदार लार, 2. खखार; **~चाटणा** 1. कही बात वापिस लेना, 2. अपमान सहन करना; **~बिलोणा** व्यर्थ का विवाद करना; **~लाणा** 1. हानि पहुँचाना, 2. धोखा देना, 3. थूक से किसी वस्तु को लसलसा करना या धागे आदि को नोकदार करना, 4. उच्छिष्ट करना।

थूकणा (क्रि. अ.) 1. निरादर करना, 2. थूक डालना; (क्रि. स.) उगलना। **थूकना** (हि.)

थूकना (क्रि. अ.) दे. थूकणा।

थूणा (पुं.) बड़ा खंभा।

थूणी (स्त्री.) छप्पर आदि के नीचे लगने वाला खंभा।

थूथ (स्त्री.) खेल के बीच में कुछ समय के लिए माँगी गई छूट।

थूथड़ा (पुं.) थूथन, पशु का मुँह या थूथनी।

थूथणी (स्त्री.) दे. थूथड़ा।

थूनी (स्त्री.) दे. थूणी।

थूल्ही (स्त्री.) छोटी ढेर।

थूह (स्त्री.) दे. थुत्थ्या। **थू** (हि.)

थूहर (पुं.) दे. थोहर।

थूही (स्त्री.) 1. गाय की टाँट या कुकभ, 2. छोटी ढेरी।

थे (सर्व.) तू, आप; (क्रि. अ.) 'था' का बहु व. रूप।

थेकळी (स्त्रीं.) फटे वस्त्र पर लगाया गया पैबंद; **अंबर की**~अलौकिक कार्य। **थिगली** (हि.)

थेगली (स्त्री.) दे. थेकळी।

थेगळी (स्त्री.) दे. थेकळी।

थेट्टर (पुं.) 1. सिनेमा, फ़िल्म, 2. वह स्थान जहाँ ड्रामा आदि देखा जाए। **थियेटर** (हि.)

थेड़ (पुं.) दे. ढूहा।

थेपड़णा (क्रि. स.) 1. थपथपाना, थपकी देना, 2. उपले थापना, 3. बिटौड़े (दे.) पर गोबर चढ़ाना, 4. थप्पड़ से पीटना।

थेपड़ी (स्त्री.) गोबर का हल्का उपला, (दे. गोस्सा); (क्रि. स.) 'थेपड़णा' क्रिया का भू. का. स्त्रीलिं. का रूप; **~पाथणा** छोटे उपले बनाना या थापना।

थेल्ला (पुं.) दे. झोळा। **थैला** (हि.)

थेल्ली (स्त्री.) 1. रुपये रखने की थैली, 2. नक़दी, (दे. न्योळी); **~सोंपणा** घर के ख़र्च का भार अन्य को संभलवाना। **थैली** (हि.)

थेवा (वि.) आश्रित।

थेह (स्त्री.) मिट्टी का ढूहा।

थेही (स्त्री.) ढेरी, (दे. थही)।

थैं (सर्व.) तू।

थैपल (वि.) मांसिल। दे. थुलथल।

थैगो (अव्य.) था।

थैला (पुं.) 1. दे. थेल्ला, 2. दे. झोळा।

थैली (स्त्री.) दे. थेल्ली।

थोंद (पुं.) दे. तोंद।

थो (क्रि. अ.) दे. था।

थोक (पुं.) 1. ढेर, समूह, 2. 'खुदरा' का विलोम, 3. एक ही कुल, जाति, मान्यता आदि के लोगों का समूह, 4. एक मुहल्ले, ठोले या पाने के लोग, 5. मुहल्ला, 6. ढेरी; **~पूरणा** कमी पूरी करना; **~बाजणा** किसी कुल के लोगों को नाम विशेष से अभिहित करना, जैसे–'टाल्ले', 'गंजे', 'कमेरे' आदि का थोक।

थोड़ (स्त्री.) 1. दे. ठोड़, 2. कमी।

थोड़ा (वि.) कम, अल्प मात्रा; **~-थोड़ा** अल्प मात्रा में।

थोड़ा थुड़णा (क्रि.) घटित होना।

थोत्था (वि.) 1. खोखला, पोला, 2. विहीन, शून्य, 3. शक्तिहीन, 4. बुद्धू। **थोथा** (हि.)

थोथ (स्त्री.) खोखलापन, खाली स्थान।

थोथरी (स्त्री.) पशु की खोपड़ी।

थोथा (वि.) दे. थोत्था।

थोपणा (क्रि. स.) गले मढ़ना, ज़बरदस्ती आरोपित करना। **थोपना** (हि.)

थोबड़ा (पुं.) 1. मुँह (तिरस्कार, उपेक्षा में प्रयुक्त), 2. भारी मुँह; **~चढाणा** 1. क्रोध व्यक्त करना, 2. उपेक्षा का भाव दिखाना; **~सूजणा** 1. किसी को देखकर मुँह फुलाना, 2. मुँह पर सूजन आना।

थोळ (पुं.) दे. लठोळ।

थोहर (पुं.) एक काँटेदार पेड़ जिसका रस ओषधियों में काम आता है। **थूहर** (हि.)

थौं: (स्त्री.) स्थान (कौर.)।

थौड़ी (स्त्री.) (कौर.) दे. हिथोड़ी।

थौळा (पुं.) (कौर.) दे. थाँभळा।

थ्याई (स्त्री.) 1. दे. चुपाड़, 2. परस।

थ्याणा (क्रि. अ.) 1. मिलना, प्राप्त होना, 2. हाथ आना; (क्रि. स.) 1. हथियाना, 2. पकड़ना।

थ्यावस (स्त्री.) 1. धैर्य, धीरज–थोड़ी थ्यावस पकड़ रामजी सब ठीक कर देगा, 2. फ़ुरसत, अवकाश; **~होणा** समय होना–कदे थ्यावस हो तै म्हारे कान्नी आइये।

थ्यास/थ्योस (स्त्री.) दे. थ्यावस।

थ्योस (स्त्री.) 1. दे.थ्यावस, 2. दे.थ्यास।

द

द हिंदी वर्णमाला का अठारहवाँ व्यंजन जो तवर्ग का तीसरा वर्ण है, इसका उच्चारण दंत्य है।

दंग (वि.) चकित, हैरान।

दंगई (वि.) 1. दंगा करने वाला, 2. झगड़ालू।

दंगल (पुं.) 1. अखाड़ा, कुश्ती का अखाड़ा, 2. स्वाँग का अखाड़ा, 3. दंगा। **दंगल** (हि.)

दंगा (पुं.) 1. हुल्लड़, 2. शोर, 3. मार-पीट।

दंगाळणा (क्रि. स.) झगड़ा करना।

दंड (पुं.) 1. लाठी, 2. जुर्माना, 3. (दे. डंड)।

दंडकारण्य (पुं.) गोदावरी के आस-पास का वन जहाँ श्री रामचंद्र जी ने वनवास-काल में निवास किया था।

दंडणा (क्रि. स.) 1. दंड देना, 2. हानि पहुँचाना। **दंडना** (हि.)

दंडना (क्रि. स.) दे. दंडणा।

दंडवत् (स्त्री.) दे. डंडोत।

दंडीस्याम्मीं (पुं.) 1. वह स्वामी या साधु जो दंड धारण करता हो, 2. संन्यासियों का एक संप्रदाय। **दंडीस्वामी** (हि.)

दंडोत (स्त्री.) दे. डंडोत।

दंत (पुं.) दे. दाँत।

दंतकथा (स्त्री.) सुनी-सुनाई परंपरागत बात, जनश्रुति।

दंतधावन (पुं.) 1. दातुन करने की क्रिया, 2. (दे. दात्तण)।

दंतर (पुं.) दानव। दे. दान्ना।

दंताळी (स्त्री.) दाँतों वाला लोहे का फावड़ा।

दंदराळा (पुं.) दाँतीनुमा औजार।

दंपती (पुं.) पति-पत्नी।

दंभ (पुं.) 1. अभिमान, 2. अहंकार।

दंभी (वि.) 1. घमंडी, अभिमानी, 2. पाखंड़ी।

दंभोळी (स्त्री.) दे. डभोळी।

दँवरी (स्त्री.) दे. पैर[2]।

दई (पुं.) 1. देवता, देवी-देवता, 2. आराध्य, 3. भाग्य; (क्रि. स.) 'देणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~देवता** देवी-देवता; **~~पूजणा** आराध्य देवों का पूजन करना; **~~मनाणा** कष्ट के समय आराध्य देवों का स्मरण करना। **देवी** (हि.)

दकनी (वि.) दे. दखणी।

दक्खण (स्त्री.) 1. दक्षिण दिशा, 2. अशुभ दिशा, 3. लंका।

दक्खिन (स्त्री.) दे. दक्खण।

दक्खिनी (वि.) दे. दखणी।

दक्ष (पुं.) शिव की पत्नी 'सती' के पिता; (वि.) निपुण, चतुर।

दक्षकन्या (स्त्री.) राजा दक्ष की पुत्री 'सती' जो शिव की पत्नी थी और अपने पिता द्वारा शिव का अपमान न सह सकने के कारण यज्ञकुंड में भस्म हो गई थी।

दक्षणी (वि.) दे. दखणी।

दक्षिण (स्त्री.) दे. दक्खण; (वि.) दायाँ, दाहिना।

दक्षिणायन (पुं.) दे. दखणायण।

दखणा (क्रि. वि.) दे. दखणाह्या।

दखणादा (वि.) दे. दखणाहा।

दखणायण (पुं.) सूर्य की दक्षिण की ओर गमन की स्थिति। **दक्षिणायन** (हि.)

दखणाह्या (क्रि. वि.) 1. दक्षिणा की ओर का, 2. दक्षिण की ओर।

दखणी (वि.) दक्षिण दिशा से संबंधित; **~-चीर** दक्षिण का चीर (जिसका वर्णन गीतों में मिलता है)। **दक्षिणी** (हि.)

दखल (पुं.) 1. हस्तक्षेप, 2. प्रवेश, पहुँच। **दख़्ल** (हि.)

दखोड़ी (स्त्री.) 1. ततैये से कुछ कम पीले रंग का कीड़ा विशेष, 2. गोबर में होने वाला डंकदार कीड़ा विशेष।

दगड़ा (पुं.) राही, कच्चा मार्ग।

दगणा (क्रि. अ.) 1. (गोली) दगना, 2. दग्ध होना, जैसे–धूणा दगणा, 3. मार्ग पर आवागमन होना, जैसे–दगड़ा दगणा; (क्रि. स.) दागना, गोली दागना। **दगना** (हि.)

दगदगाणा (क्रि. अ.) निडर होकर (कुत्ते आदि का) घुसना, (क्रि. स.) भयभीत या आतंकित करना। **दगदगाना** (हि.)

दगदगी (स्त्री.) (पशु का) निडर होकर घर, खेत आदि में घुसने की क्रिया।

दगवाना (क्रि. स.) 1. दागने का काम दूसरे से करवाना, 2. दाग़ दिलवाना।

दगा[1] (पुं.) धोखा।

दगा[2] (स्त्री.) एक जाति विशेष।

दगाबाज (वि.) छली, कपटी।

दग्ध (वि.) जला हुआ।

दचक (स्त्री.) 1. छोटा गड़ढा, 2. हल्का झटका।

दचकणा (क्रि. अ.) 1. दचकी खाना, 2. लचकना; (वि.) वह जो शीघ्र दचकी खाए।

दचकना (क्रि. अ.) दे. दचकणा।

दचका (पुं.) 1. यात्रा के समय वाहन के हिलने के कारण लगने वाला धक्का, 2. झटका, 3. छोटा गड्ढा जिसमें पहिया उछल जाए; (क्रि. स.) 'दचकाणा' क्रिया का आदे. रूप।

दचकाणा (क्रि. स.) दचकी देना।

दचकी (स्त्री.) छोटे गड्ढे में पहिये का झटके से गिरने का भाव, हल्का उछाल।

दछणा (स्त्री.) दे. दिछणा। **दक्षिणा** (हि.)

दड़ (स्त्री.) 1. मिष, बहाना, 2. सोने का बहाना; **~खींचणा/मारणा/लेणा** 1. सोने का झूठमूठ अभिनय करना, 2. मुर्दे के समान लेटना, 3. मूक रहना।

दड़काँ (क्रि. वि.) दुड़की लगाते हुए, दौड़ते हुए–दड़काँ जाइये; (वि.) मिष या बहाना (दड़) करने वाली (महिला)।

दड़बड़ (स्त्री.) 1. भगदड़, 2. दौड़ते समय पैरों से उत्पन्न ध्वनि; **~माँचणा** भगदड़ मचना।

दड़बा (पुं.) 1. मुर्गीख़ाना, 2. छोटा घर।

दड़वाई (स्त्री.) दे. पीसणी।

दड़ा (पुं.) 1. खेत का कुछ भाग–एक दड़े मैं चणे बो कै तिरे की आड लगा दी, 2. मिला-जुला अन्न (गेहूँ), 3. ढेरी।

दड़ूकणा (क्रि.) दहाड़णा, दे. टाडणा।

दढ़ियल (वि.) दे. डाड्ढल।

दड़ी[1] (स्त्री.) दे. गींड।

दड़ी[2] (स्त्री.) ठप्पा, साँचा।

दणा/दणे (पुं.) शब्द के अंत में 'से' के योग में प्रयुक्त परसर्ग–झट दणेसी काम करले।

दतई (स्त्री.) दे. दुतई।

दताळी (स्त्री.) तलवार के आकार का घास काटने का यंत्र विशेष।

दतोड़ा (पुं.) दे. ददोड़ा।

दत्तात्रेय (पुं.) विष्णु के अंश से उत्पन्न अनसूया के पुत्र, एक प्राचीन ऋषि।

ददरेवा (पुं.) गूगापीर का पवित्र गाँव।

ददोड़ा (पुं.) 1. ततैये आदि के काटने से उत्पन्न सूजन, 2. पित्ती, (दे. दाफड़)। **ददोरा** (हि.)

ददोरा (पुं.) दे. ददोड़ा।

दधि (स्त्री.) दे. दही।

दनदनाना (क्रि. अ.) दन-दन शब्द करना; (क्रि. स.) बंदूक दागना।

दनादन (स्त्री.) गोली दागने से उत्पन्न ध्वनि; (क्रि. वि.) निरंतर।

दनाली (स्त्री.) दे. दुनाळी।

दफतर (पुं.) 1. सरकारी कार्यालय, 2. कार्यालय। **दफ़्तर** (हि.)

दफन (पुं.) दफ़नाने की क्रिया।

दफ़नाना (क्रि. स.) शव को भूमि में दबाना।

दफ़ा (स्त्री.) दंड-संहिता की धारा; (वि.) दूर किया हुआ, भगाया हुआ।

दफादार (पुं.) दे. दफेदार।

दफेदार (पुं.) सेना का एक छोटा अधिकारी। **दफादार** (हि.)

दबंग (वि.) 1. रौबीला, 2. दबदबे वाला।

दबकणा (क्रि. अ.) दे. दुबकणा।

दबका (पुं.) 1. दबाव, 2. भय।

दबकोड़ा (पुं.) दुबक कर दौड़ने की क्रिया।

दबकोणा (क्रि. स.) छिपाना, आड़ में रखना। **दुबकाना** (हि.)

दबड़क (स्त्री.) बच्चे की तेज़ गति से दौड़ने की क्रिया।

दबड़का (पुं.) तेज़ दौड़ने की क्रिया।

दबड़काणा (क्रि. स.) 1. खदेड़ना, 2. भगाना।

दबड़की (स्त्री.) दौड़, (दे. दबड़क)।

दबणा (क्रि. अ.) 1. भार के नीचे दबना, 2. डरना, भय खाना, 3. किसी के सामने हीन ठहरना, 4. धीमा पड़ना, 5. बढोतरी रुकना। **दबना** (हि.)

दबदबा (पुं.) 1. रौब, 2. आतंक।

दबना (क्रि. अ.) दे. दबणा।

दबवाणा (क्रि. स.) 1. पैर आदि दबवाना, 2. गड़वाना, 3. दाबने में सहायता करना। **दबवाना** (हि.)

दबवाना (क्रि. स.) दे. दबवाणा।

दबवार (वि.) दे. दबवाळ।

दबवाळ (वि.) 1. दब्बू 2. डरपोक। 3. अधीन, आश्रित।

दबा (पुं.) दबाव के कारण पड़ने वाला प्रभाव; **~लागणा** 1. मल-विसर्जन के लिए पेट में दबाव होना, 2. पीछा किया जाना। **दबाव** (हि.)

दबाऊ (वि.) 1. वाहन की जूए की ओर अधिक भार होने की अवस्था, 2. 'उळाळू' का विलोम, 3. दब्बू।

दबाणा (क्रि. स.) 1. दबाव डालना, 2. गाड़ना, 3. बाध्य करना, (दे. दाबणा)। **दबाना** (हि.)

दबाव (पुं.) दे. दबा।

दबोच (स्त्री.) पकड़, जकड़; (क्रि. स.) 'दबोचणा' क्रिया का प्रेरक रूप।

दबोचणा (क्रि. स.) 1. दबाया जाना, 2. दबाना, 3. छिपाना। **दबोचना** (हि.)

दबोचना (क्रि. स.) दे. दबोचणा।

दबोट्टा (पुं.) 1. दाब, 2. (दे. डबोट्टा)।

दबोट्टी (स्त्री.) दबाव।

दब्बड़-दब्बड़ (क्रि. वि.) दौड़ते हुए; (स्त्री.) दौड़ते समय उत्पन्न ध्वनि।

दब्बी (स्त्री.) 1. दबाव या प्रभाव के कारण बाध्य होने का भाव, 2. दबाव पड़ने का भाव, 3. भगदड़ (दे. दाब्बी); (क्रि.अ.) 'दबणा' क्रिया का भू. का. स्त्रीलिं. रूप; **~पड़णा** 1. भगदड़ मचना, 2. दबाव पड़ना, 3. दबाव या प्रभाव पड़ना।

दब्बू (वि.) 1. भीरू, 2. (दे. दबाऊ)।

दम (पुं.) 1. साहस, 2. साँस, प्राण, 3. (दे. साँस); **~मारणा/लाणा** 1. हुक्का

आदि पीना, 2. विश्राम करना।

दमकणा (क्रि. अ.) चमकना; (वि.) जो अधिक दमके। **दमकना** (हि.)

दमकना (क्रि. अ.) दे. दमकणा।

दमखम (पुं.) साहस, हिम्मत।

दमगजा (पुं.) धोखा।

दमड़का (पुं.) 1. दमड़ी के आकार का चक्र, 2. ताकू के एक भाग में लगा चमड़े आदि का चक्र जो कुकड़ी को व्यवस्थित रखता है।

दमड़ा (पुं.) दे. दमड़का।

दमड़ी (स्त्री.) ताँबे का एक सिक्का जो अंग्रेज़ी शासन-काल में प्रचलित था और जिसका मूल्य पुराने पैसे का आठवाँ भाग था, (दे. दाम); **~के तीन** 1. कौड़ी के भाव की वस्तु, अति सस्ती, 2. निरादृत व्यक्ति।

दमदमा (पुं.) मोरचा, लड़ाई के समय बोरियों में बालू भर कर बनाई गई क़िलेबंदी।

दमदमाट (स्त्री.) 1. चमक, शोभा, चमचमाहट, 2. 'दम'-'दम' की आहट या ध्वनि।

दमदार (वि.) साहसी।

दमन (पुं.) 1. दबाने या रोकने की क्रिया, 2. निग्रह, दम।

दमयंती (स्त्री.) राजा नल की पत्नी जिसका वर्णन कहानी-किस्सों में आता है।

दमरा (पुं.) दे. आरणा।

दमाँ (पुं.) श्वास का रोग, (दे. साँस)। **दमा** (हि.)

दमूही (वि.) 1. दो मुँह वाली (नागिन), 2. कुल- कलंकिनी, 3. दोहरा व्यवहार करने वाली।

दया (स्त्री.) करुणा, दया का भाव; **~धरम हारणा** मानवता से गिरना।

दयादृष्टि (स्त्री.) दया की दृष्टि।

दयानतदार (वि.) ईमानदार।

दयानिधान (पुं.) 1. ईश्वर, 2. बहुत दयालु।

दयालु (वि.) दे. दयाल्लु।

दयाल्लु (पुं.) ईश्वर; (वि.) दया करने वाला। **दयालु** (हि.)

दयावंत (पुं.) ईश्वर; (वि.) दयालु।

दर (पुं.) 1. दरवाज़ा, 2. देहली, देहलीज़; (स्त्री.) 1. इज्जत, सम्मान–तन्नैं अपणी दर आप खोली, 2. छोटी दरार, 3. भाव, लागत; (क्रि. स.) 'दरणा' क्रिया का आदे. रूप।

दरकणा (क्रि. अ.) 1. फटक़ना, 2. दरार पड़ना, 3. चिरना; (क्रि. स.) दे. दरणा।

दरकना (क्रि. अ.) दे. दरकणा।

दरका (पुं.) 1. भय, 2. आघात।

दरकार (वि.) 1. आवश्यक 2. मयस्सर।

दरकिनार (क्रि. वि.) अलग।

दरखास (स्त्री.) 1. दरख़्वास्त, 2. प्रार्थना-पत्र।

दरखास्त (स्त्री.) दे. दरखास।

दरगा (स्त्री.) 1. कब्रिस्तान, 2. नमाज पढ़ने का स्थान। **दरगाह** (हि.)

दरगाह (स्त्री.) दे. दरगा।

दरज (स्त्री.) दरार; (वि.) लिखा हुआ, अंकित। **दर्ज** (हि.)

दरजी (पुं.) दे. दर्ज़ी।

दरड़ (वि.) मोटा पीसा हुआ (अन्न), दरदरा; (क्रि. स.) 'दरड़णा' क्रिया का आदे. रूप; **~देणा** 1. मोटा कूटना, 2. मोटा पीसना, 3. चीथना।

दरड़णा (क्रि. स.) 1. मोटा कूटना या पीसना, 2. अंग के किसी भाग को चीथना, 3. आघात करना, 4. नष्ट करना।

दरड़ा (वि.) 1. दरदरी पिसी (वस्तु), 2. मोटा पिसा हुआ, 3. आघात से नष्ट; **~करणा** मोटा पीसना; **~दळणा** 1. मोटा-पीसना, 2. आघात पहुँचना, चोट पहुँचाना।

दरणा (क्रि. स.) छिद्रों को मिट्टी डाल कर भरना, दरार भरना। **दरना** (हि.)

दर-दर (क्रि. वि.) द्वार-द्वार, स्थान-स्थान पर।

दरदरा (वि.) 1.खुरदरा, 2. रवेदार, 3. मोटा पिसा अन्न, (दे. दरड़ा)।

दरध (पुं.) 1. पीड़ा, 2. प्रसव-पीड़ा। **दर्द** (हि.)

दरना (क्रि. स.) दे. दरणा।

दरपण (पुं.) शीशा, मुकुर; (वि.) चुगलख़ोर। **दर्पण** (हि.)

दरब (पुं.) धन, धन-दौलत। **द्रव्य** (हि.)

दरबान (पुं.) द्वारपाल।

दरबार (पुं.) 1. राजा की सभा, 2. इष्ट-देव का स्थान।

दरबारी (पुं.) दरबार में बैठने वाला; (वि.) दरबार से संबंधित।

दरमियान (पुं.) मध्य, बीच।

दरमियानी (वि.) बीच की, (दे. बिचोधड़ा)।

दरवाजा (पुं.) दे. किवाड़।

दरवेश (पुं.) फ़क़ीर।

दरस (पुं.) दर्शन, साक्षात्; (क्रि. अ.) 'दरसणा' क्रिया का आदे. रूप।

दरसणा (क्रि. अ.) दर्शन करना।

दरसनी (पुं.) कनफाड़े साधुओं का संप्रदाय विशेष (कान में 'दर्शन' नामक मुद्रा पहनने के कारण इन्हें 'दरसनी' कहा गया); **सवरण~** अबोहर (रोहतक) अस्थान की तीन गद्दियों में से प्रथम प्रमुख गद्दी (इसके स्वामी सवर्ण होते हैं और ये हरियाणे में मान्य सिद्ध हैं)।

दरसनी-हुंडी (स्त्री.) वह हुंडी जिसका भुगतान तुरंत करने का आदेश हो।

दरसाणा (क्रि.) दिखाना, प्रकट करना।

दराँत (पुं.) साग बिनारने, चीरने या काटने आदि का लोहे का एक सरल यंत्र जिसकी तेज़ फाल अर्ध-चंद्राकार-सी होती है।

दराँत्ती (स्त्री.) हँसिया, (दे. दाँती); **~पड़णा** फ़सल की कटाई आरंभ होना। **दाँती** (हि.)

दराज (पुं.) 1. छिद्र, 2. दरार।

दराड़ (स्त्री.) दे. तरेड़।

दराणी (स्त्री.) दे. दुराणी।

दरार (स्त्री.) दे. दराड़।

दरारा (वि.) मोटा पिसा हुआ (अन्न), रवेदार।

दरिंदा (पुं.) मांस-भक्षक वन-जंतु; (वि) क्रूर।

दरिद्दर (वि.) दे. दलिद्दर।

दरिद्र (वि.) दे. दलिद्दर।

दरिया (पुं.) नदी।

दरियादास (पुं.) एक संत कवि।

दरियादासी (पुं) एक निर्गुण संप्रदाय जिसके प्रवर्तक दरियादास थे; (वि.) इस संप्रदाय के अनुयायी।

दरियाई (वि.) 1. नदी संबंधी, 2. नदी के निकट का।

दरियाई-घोड़ा (पुं.) गैंडे के आकार का एक जल-जीव।

दरियाफ़्त (वि.) मालूम, ज्ञात; (स्त्री.) अनुसंधान।

दरेस (पुं.) दो नसलों का सुअर।

दरेसी (क्रि.) भूमि को समतल करना। दे. दरणा।

दरी (स्त्री.) मोटे सूत का बुना हुआ मोटे दल का बिछौना।

दरोगा (पुं.) दे. दरोग्गा।

दरोग्गा (पुं.) थानेदार, पुलिस का एक अधिकारी। **दारोगा** (हि.)

दरोण (पुं.) द्रोणाचार्य, (दे. गुड़-गाम्माँ)। **द्रोण** (हि.)

दरोणाचारी (पुं.) दे. दरोण।

दरोपती/दरोपदी (स्त्री.) पांडवों की पत्नी–लड़ाई मैं के था सुदरसन चक्कर, के था दरोपदी का खप्पर। **द्रौपदी** (हि.)

दर्ज (वि.) दे. दरज।

दर्जन (पुं.) बारह वस्तुओं का समूह।

दर्जा (पुं.) 1. पद, 2. कक्षा।

दर्जी (पुं.) 1. सिलाई का काम करने वाली एक जाति, 2. इस जाति का व्यक्ति (दे. छीप्पी)।

दर्द (पुं.) दे. दरध।

दर्पण (पुं.) शीशा, मुँह देखने का शीशा, आईना।

दर्रा (पुं.) पहाड़ों के बीच का सँकरा मार्ग।

दर्शक (पुं.) दर्शन करने वाला, देखने वाला।

दर्शन (पुं.) 1. दे. दरस, 2. 'दरसनी' साधुओं के कान की मुद्रा।

दर्शनशास्त्र (पुं.) हिन्दुओं के छः आस्तिक दर्शन।

दल (पुं.) दे. दळ।

दळ (पुं.) 1. परत, जैसे–मैल का दळ, 2. समूह, झुंड, 3. टिड्डियों का समूह, 4. सेना, जैसे–अठारा छोहणी दळ मरग्या, 5. किसी वस्तु के दो खंडों में से एक; (क्रि.स.) 'दळणा' क्रिया का आदे. रूप; **~का दळ** झुंड का झुंड, (दे. दळ-बाद्दळ); **~चढणा** 1. सेना द्वारा आक्रमण होना, 2. मैल आदि की परत चढ़ना, 3. पौधे पर अधिक पत्ते या फल आना; **~जामणा** अधिक पौधे उगना। **दल** (हि.)

दलक (स्त्री.) 1. गाड़ी में यात्रा करते समय लगने वाला झटका, 2. धक्का, हल्का धक्का, 3. आघात से उत्पन्न कंपन, जैसे–दिल पै दलक लागणा, 4. हृदय की चुभन।

दलकणा (क्रि. अ.) 1. कंपित होना, 2. हल्का झटका लगना, 3. छाती दहलना, 4. लचकना; (वि.) वह जो शीघ्र लचक जाए। **दलकना** (हि.)

दलकना (क्रि.अ.) दे. दलकणा।

दळणा (क्रि. स.) 1. मोटा पीसना, दर-दरा करना 2. दलिया दलना, 3. रगड़ना, 4. नीचे डाल कर पीटना, 5. ध्वस्त करना; **छाती पै मूँग ~**शत्रु को किसी क्रिया द्वारा चिढ़ाना। **दलना** (हि.)

दलदल (पुं.) गहरा कीचड़; **~माँचणा/होणा** कीचड़ होना।

दलदला (वि.) 1. दलदल वाला, 2. गीला और नरम, 3. गिलगिला, कोमल।

दलदली (वि.) 1. कीचड़ वाली (मिट्टी), वह मिट्टी जिसमें पैर धँसे, 2. कोमल, गिलगिली।

दलदली-ऊँट (पुं.) गिलदरी ऊँट, (दे. गिल्दर)।

दलना (क्रि. स.) दे. दळणा।

दलपति (पुं.) सेनापति।

दलबल (पुं.) दे. दळ-बाद्दळ।

दल-बादल (पुं.) दे. दळ-बाद्दळ।

दळ-बाद्दळ (पुं.) 1. ढेर का ढेर, समूह का समूह, 2. बादलों का समूह; **~ऊठणा** 1. गहरी घटा छाना, 2. टिड्डी-दल आना, 3. किसी कारण

आकाश में अंधकार छाना। **दल-बादल** (हि.)

दलाई (स्त्री.) दे. दुलाई।

दळाणा (क्रि. स.) दलने का काम करवाना। **दलवाना** (हि.)

दलाल (पुं.) 1. कुछ धन लेकर दूसरे की वस्तु का क्रय-विक्रय कराने वाला, 2. बिचौलिया, मध्यस्थ, 3. जाटों का एक गोत।

दलाली (स्त्री.) दे. दलाल्ली।

दलाल्ली (स्त्री.) दलाल का काम। **दलाली** (हि.)

दलिदरी (वि.) 1. आलसी, 2. निर्धन; (स्त्री.) 1. निर्धनता, 2. आलस्य। **दरिद्री** (हि.)

दलिद्दर (वि.) 1. निर्धन, 2. आलसी; (पुं.) 1. आलस्य, 2. निर्धनता–मेहनत कर्‌याँ दलिद्दर नास्सै; **~आणा/ छाणा** 1. आलस्य व्याप्त होना, 2. निर्धन होना। **दरिद्र** (हि.)

दलिया (पुं.) दे. दळिया।

दळिया (पुं.) 1. मोटा पीसा हुआ गेहूँ जिसे खिचड़ी के समान पकाया जाता है, 2. मोटा आटा, दरदरा आटा, 3. दल का स्वामी; **~करणा** 1. ध्वसित करना, 2. मोटा पीसना; **~दळणा** 1. दलिया पीसना, 2. शत्रु को चिढ़ाना, 3. नष्ट करना, 4. मोटा पीसना; **~होणा** 1. कचूमर निकलना, 2. ध्वंसित होना। **दलिया** (हि.)

दलील (स्त्री.) तर्क।

दलेर (वि.) वीर, साहसी। **दिलेर** (हि.)

दलेल (वि.) दे. दलेर।

दवंगरा (पुं.) दे. दोंगड़ा।

दवा (स्त्री.) दवाई।

दवाई (स्त्री.) ओषधि।

दवाख़ाना (पुं.) औषधालय।

दवात[1] (स्त्री.) स्याही रखने का बर्तन।

दवात[2] (स्त्री.) 1. दे. दीवट, 2. दे. दवात[1]।

दवादसी (स्त्री.) पक्ष की बारहवीं तिथि। **द्वादशी** (हि.)

दवादारू (स्त्री.) ओषधि।

दवारका (स्त्री.) 1. द्वारकापुरी, सात पुरियों में से एक, 2. श्रीकृष्ण की राजधानी। **द्वारका** (हि.)

दशरथ (पुं.) भगवान श्रीराम के पिता।

दशा (स्त्री.) हालत।

दशाश्वेध (पुं.) दस अश्वमेध यज्ञों का क्रम।

दशाह (पुं.) मृतक-संस्कार का दसवाँ दिन।

दस (वि.) दस की संख्या; **एक की~** बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करना; **~लक्खण खोणा** धर्म के दसों लक्षणों से विहीन होना।

दसखत (पुं.) हस्ताक्षर, स्वाक्षर, (दे. दस्तक)।

दसमाँ (पुं.) मृत्यु के बाद का दसवाँ दिन या इस दिन होने वाला कृत्य; (वि.) दसवें नंबर पर। **दसवाँ** (हि.)

दसमाल (पुं.) दरवाजे के ऊपर का स्थान जहाँ वस्तुएँ रखी जा सकती हैं।

दसमीं (स्त्री.) 1. पक्ष की दसवीं तिथि, 2. दसवीं कक्षा; (वि.) दसवें क्रम पर। **दसवीं** (हि.)

दसरथ (पुं.) अयोध्यापति राम के पिता। **दशरथ** (हि.)

दसलंबरी (पुं.) प्रसिद्ध बदमाश, दस नंबर के खाते में जिस बदमाश का नाम हो।

दसवाँ (वि.) दे. दसमाँ।

दसहरा (पुं.) 1. आश्विन शुक्ल दशमी या विजय दशमी का दिन, 2. ज्येष्ठ शुक्ल दशमी का दिन, गंगा दशहरा।
दशहरा (हि.)

दसांधा (पुं.) जुशाँदा।

दसाई (स्त्री.) दसवें दिन (मृत्यु के) दूर किया जाने वाला पातक।

दसाम (स्त्री.) दहाई, दस की गुणा, जैसे–दस दसाम सौ।

दसाल्ला (पुं.) दे. दुसाल्ला।

दसूठण (पुं.) पुत्र-जन्म के अवसर पर दिया जाने वाला भव्य भोज (या जातीय भोज) विशेष।

दसूत्ती (स्त्री.) दो धागों के मेल से बना मोटा वस्त्र। **दसूती** (हि.)

दसेरी (स्त्री.) दस सेर का बट्टा।

दसोठण (पुं.) दे. दसूठण।

दसोद्धा (स्त्री.) 1. श्रीकृष्ण की विमाता, 2. सौत, 3. स्त्रियों के लिए प्रयुक्त निंदापरक शब्द–याह् सै वा दसोद्धा जिसने कुकरम रोप्या। **यशोदा** (हि.)

दसोधरा (स्त्री.) 1. दे. दसोद्धा, 2. यशोधरा।

दस्त (पुं.) 1. पतला पाखाना, 2. हाथ।

दस्तक (पुं.) हस्ताक्षर; **~गूटँठा** हस्ताक्षर; या अँगूठे का चिह्न; **~ ~ करवाणा** लिखित प्रमाण लेना। **दस्तख़त** (हि.)

दस्तकार (पुं.) कारीगर।

दस्तख़त (पुं.) दे. दसखत।

दस्ता (पुं.) 1. मूठ, बेंट, 2. गुलदस्ता, 3. सिपाहियों का छोटा दल, 4. काग़ज़ के चौबीस तावों की गड्डी।

दस्ताना (पुं.) हस्तावरण।

दस्तावर (वि.) रेचक।

दस्ती (वि.) जो हाथ से ले जाया जाए, जैसे–दस्ती-चिट्ठी।

दस्तूर (पुं.) 1. रीति-रिवाज़, 2. नियम।

दस्तूरी (स्त्री.) वह धन जो धनिकों के नौकर अपने मालिक का सौदा लाने में हक के तौर पर पाते हैं।

दस्सा (स्त्री.) वे पुरानी हिंदू जातियाँ जिनमें कभी करेवा विवाह हुआ करता था (करेवा विधवा विवाह का पुराना रूप है); (पुं.) 1. दस वस्तुओं का समूह, 2. दस का पहाड़ा; (वि.) दस-गुना।

दह (स्त्री.) 1. नदी, जैसे–कालीदह, 2. कुंड; (वि.) दस।

दहक (स्त्री.) 1. गरमी, आग से उत्पन्न गरमी, 2. अग्नि की लपट, 3. जलन, दाहकता, 4. कुढ़न।

दहकणा (क्रि. अ.) 1. अंगारे की तरह चमकना, 2. धधकना, 3. गरमी पड़ना, तपना, 4. कुढ़ना, जलना।
दहकना (हि.)

दहकना (क्रि. अ.) दे. दहकणा।

दहड़ (पुं.) 1. दे. डहर, 2. दे. धड़ाम।

दहणा (वि.) दायाँ; (क्रि. अ.) दे. दहकणा; **~बोलणा** 1. दाईं ओर तीतर बोलना, 2. शुभ लक्षण होना। **दाहिना** (हि.)

दहणी (वि.) दायीं। बाम्मी का विलोम।

दहन (पुं.) जलाने की क्रिया, दाह।

दहना (क्रि. अ.) दे. दहकणा।

दहम (स्त्री.) 1. वर्षा के दिनों में बादलों की घुटन से उत्पन्न गरमी, 2. गरमी।

दहलणा (क्रि. अ.) 1. भय से स्तंभित होना, 2. काँपना। **दहलना** (हि.)

दहला (पुं.) ताश का पत्ता जिस पर दस बूटियाँ हों।

दहलीज (स्त्री.) दे. धेळ। दे. पौळी।

दहशत (स्त्री.) दे. दहसत।

दहसत (स्त्री.) डर, भय; **~खाणा** भयभीत होना। **दहशत** (हि.)

दहा (पुं.) 1. मुहर्रम का महीना, 2. मुहर्रम से एक से दस तारीख़ तक का समय, 3. ताज़िया।

दहाई (स्त्री.) 1. दस का मान या भाव, 2. खेलते समय विजय-स्थान को छूने की क्रिया, 3. (दे. धाँई)।

दहाड़ (स्त्री.) 1. शेर आदि की चिंघाड़, 2. तेज़ पुकार, चीख, 3. आक्रमण कारियों का झुंड; (क्रि. अ.) 'धाड़णा' क्रिया का आदे. रूप; **~चढणा** आक्रमण कारियों की भीड़ द्वारा चढ़ाई करना; **~मारणा** 1. दहाड़ना, 2. पछाड़ खा कर गिरना।

दहाड़ना (क्रि. अ.) दे. धाड़णा।

दहाड़ा (पुं.) 1. दिन का अनुवर्ती शब्द–दिन-दहाड़ै चोरी होगी, 2. दिन का समय।

दहाना (पुं.) दे. दहान्ना।

दहान्ना (पुं.) 1. नहर की मोरी से निकाला गया छोटा नाला, (दे. दाह्न्ना), 2. सिंचाई का नाला। **दहाना** (हि.)

दहाम (स्त्री.) दस-गुणा, दस का मान, जैसे–दस दहाम सौ।

दहिया (पुं.) 1. एक जाट गोत, 2. चालीस गाँवों की एक खाप।

दही (स्त्री.) जमा हुआ दूध (जिसे मथकर मक्खन निकाला जाता है)।

दहेज (पुं.) दे. दान।

दाँगड़ी (स्त्री.) कूएँ की मुँडेर की लकड़ी, (दे. कटखड)।

दाँडणा (क्रि.स.) 1. दंडित करना, 2. दंड की घोषणा करना। **दंडना** (हि.)

दाँत[1] (पुं.) दे. दराँत।

दाँत[2] (पुं.) 1. दंत, 2. चाकू, छुरी जैसे औज़ार की धार पर पड़े कटाव के चिह्न; **~काट्टी रोट्टी** गहरी मित्रता; **~काढणा** 1. खिसियाना, 2. क्रोध प्रकट करना, 3. प्रतिवाद़ करना, 4. दाँत निकालना; **~झाड़णा/तोड़णा** 1. हराना, 2. छकाना, 3. अपमानित करना, 4. पीटना; **~(-त्ताँ) धरणा** हर समय कोसना; **~होणा** शत्रु प्रबल होना।

दाँतड़ा (पुं.) दे. दराँत; (वि.) दे. दाँतला।

दाँतरी (स्त्री.) 1. दूध के कच्चे दाँत, 2. दराँती के दाँते, 3. बंदर आदि के छोटे-नुकीले दाँत; **~काढणा** दे. जाड़ी-दाँत्ती।

दाँतला (वि.) जिसके दाँत लंबे हों।

दाँतवा (वि.) दे. दाँतला।

दाँता (पुं.) दे. दाँत्ता।

दाँती (स्त्री.) 1. दे. दाँत्ती, 2. दे. दराँत्ती।

दाँत्ता (पुं.) लोहे के औज़ार का कँगूरा या काँटा; **~(-ते) काढणा** दाँती के काँटे पुनः तेज़ करना; **~(-ते) झड़णा/ मरणा** दाँत्ती के काँटे घिसना या भोंटे होना।

दाँत्ता-सींगगी (वि.) (भैंस) जिसके सींग गर्दन के समानांतर जाकर मुड़े हों।

दाँत्ती (स्त्री.) 1. पहले पहल उगे दाँत, 2. (दे. दराँत्ती)।

दाँत्तो (वि.) लंबे दाँत वाली।

दाँद (पुं.) दाँत (सीमित प्रयोग)।

दाँव (पुं.) दे. दा।

दाँहणा (वि.) 1. 'बाम्माँ' का विलोम, 2. दक्षिण दिशा से संबंधित, 3. सबल; (क्रि. स.) दाहना, दाग़; देना, जलाना;

~**हाथ** भरोसेमंद व्यक्ति।
दाहिना (हि.)

दाँहणी (वि.) दाईं ओर की। **दाहिनी** (हि)

दाँहवैं (क्रि. वि.) 1. भली प्रकार से, पूरी तरह से, विवरण के साथ–मेरा संदेस्सा दाँहवैं करकै कह दिए, 2. निश्चित रूप से–या बात दाँहवैं हुई होगी।

दा (पुं.) 1. बाज़ी, 2. खेल का पाँसा, 3. कुश्ती का दाँव-पेच, 4. जूए की बाज़ी, 5. ताक, घात; **~आणा** 1. अनुकूल पाँसा पड़ना, 2. कुश्ती के दाँव-पेच आना; **~-पेच** दाँव-पेच; **~पै चढणा** वश में आना; **~पड़णा** 1. बात बनना, 2. अनुकूल पाँसा पड़ना; **~लाणा** 1. घात लगाना, 2. कुश्ती का दाँव लगाना।
दाँव (हि.)

दाईं (वि.) 1. समान, तुल्य, जैसा, 2. हम-उमर; (स्त्री.) दाहिनी; **~दिवाळ** 1. तुल्य आयु के, 2. तुल्य।

दाई (स्त्री.) 1. बच्चे को जनाने वाली स्त्री (जो अधिकतर गाँव की धानकी होती थी), 2. नर्स; **~तैं पेट ल्हकोणा** जनाने वाले से बात छिपाना।

दाऊ (पुं.) बलदेव, बलराम।

दाएँ (क्रि. वि.) दाहिनी ओर को, दाईं ओर।

दाक्खाँ (वि.) मुनक्का या दाख के समान मीठी; (स्त्री.) द्राक्षा, मुनक्का।
द्राक्षा (हि.)

दाक्खिल (वि.) 1. प्रविष्ट, 2. सम्मिलित।
दाख़िल (हि.)

दाक्खिल-खारिज (पुं.) भूमि को नए हक़दार के नाम लिखने का कार्य, (दे. दाखिल-खारिज)।

दाख (स्त्री.) 1. सूखा अंगूर, 2. अंगूर, मोटा या बड़ा अंगूर। **द्राक्षा** (हि.)

दाखिल (वि.) प्रविष्ट।

दाखिल-खारिज (पुं.) 1. किसी सरकारी काग़ज़ से किसी जायदाद के पुराने हक़दार को नाम काट का उस पर दूसरे हक़दार का नाम लिखना, 2. प्रवेश-निष्क्रमण।

दाखिला (पुं.) प्रवेश।

दाग[1] (पुं.) शव-दाह; (क्रि. स.) 'दागणा' क्रिया का आदे. रूप; **~देणा/लाणा** मुर्दे का अग्नि-संस्कार करना।

दाग[2] (पुं.) 1. धब्बा, चितका, 2. चरित्र पर लगा कलंक। **दाग़** (हि.)

दागणा (क्रि. स.) 1. आग लगाना, 2. शव-दाह करना, 3. बछड़े पर त्रिशूल का चिह्न अंकित करना, 4. कलंकित करना, 5. गोली चलाना।
दाग़ना (हि.)

दागदार (वि.) 1. जिस पर दाग़ या धब्बा लगा हो, 2. कलंकित।

दागना (क्रि. स.) दे. दागणा।

दागी (वि.) दाग़दार।

दाज (पुं.) दहेज।

दाझणा (क्रि. अ.) जलना, दग्ध होना–आग लगी बण खंड मैं, दाझे चंदन रूँख, हम दाझाँ बिन पंख के, तम क्यूँ दाझो हंस। फूल बिगाड़े, फळ चुगे, बैठे तुमरी डाळ, तम दाझो हम ऊभराँ, जीवाँघे कै काळ।

दाड़ा (पुं.) 1. डाका, चोरी, 2. दस्यु-कर्म; **~मारणा** 1. अलभ्य वस्तु प्राप्त करने में सफल होना, 2. चोरी करना; **~लागणा** 1. काम बनना, इच्छित वस्तु मिलना, 2. चोरी के लिए अनुकूल परिस्थिति मिलना।

दाढ (स्त्री.) जाड़, (दे. डाढ); **~उघड़णा** कुत्ते के समान पागल होना।

दाड़िम (पुं.) अनार।

दाढ़ी (स्त्री.) दे. डाड्ढी।

दाणण (स्त्री.) दाने की पत्नी। (वि.) दानशील महिला।

दाणा (पुं.) 1. अन्न, अन्न का एक बीज, 2. रवा, कण, 3. चने की दाल, 4. पशु का चारा, जैसे–चने, बिनौले आदि (तुल. बाँट), 5. चेचक का दाग़, 6. शिकार फँसाने के लिए जाल पर डाला गया अन्न, 7. पक्षियों का चुग्गा, 8. भोजन, जैसे–दाणा-पाणी, 9. फुंसी आदि का छोटा उभार; **~(-णे) गेरणा** 1. लालच देना, 2. अन्न के बदले में वस्तु खरीदना; **~(-णे) दळणा** 1. चने को दलना, 2. पीसना, 3. दासता करना; **~(-णे) दाणे नैं तरसणा** रोटियों के लाले पड़ना; **~दुणका** 1. दाना-दुनका, 2. पशुओं का भोजन, 3. चुग्गा-पानी; **~पाणी** 1. दाना-पानी, अन्न-जल, खान-पान, 2. जीविका; **~~ऊठणा** मरना; **~~मिलणा** 1. आजीविका का साधन मिलना, 2. मेल-जोल होना। **दाना** (हि.)

दाणेदार (वि.) रवेदार। **दानेदार** (हि.)

दात (पुं.) विवाह के समय वधू के पिता का दिया हुआ दान-दहेज।

दाता (पुं.) दे. दातार।

दातार (वि.) दानी; (पुं.) ईश्वर।

दातुन (स्त्री.) दे. दात्तण।

दात्तण (स्त्री.) दाँत साफ़ करने के लिए काम आने वाली कीकर, नीम आदि की कोमल डंडी। **दातुन** (हि.)

दात्ता (पुं.) दे. दातार।

दादका (वि.) पितामह और प्रपितामह से संबंधित; (पुं.) 1. दादा के वंशज, 2. दादा, परदादा आदि।

दादस (स्त्री.) 1. ब्राह्मण की पत्नी (जिसे सभी इतर जाति की महिलाएँ सम्मानार्थ दादस (दादी सास) कहती हैं), 2. पति की दादी; (वि.) बड़ी- बूढ़ी। **दादी सास** (हि.)

दादसरा (पुं.) 1. गाँव का ब्राह्मण (जिसे सम्मानार्थ गाँव की इतर जाति की महिलाएँ दादसरा कहती हैं), गाँव का पुरोहित–दादसरा पतरा देख, मनैं दुनियाँ बाँझ बतावै सै, 2. पति का दादा; (वि.) सम्मानित बड़ा-बूढ़ा।

दादा (पुं.) दे. दाद्दा।

दादान (पुं.) दादाओं/ब्राह्मणों का मोहल्ला।

दादी (स्त्री.) दे. दाद्दी।

दादू (पुं.) दे. दाद्दू।

दादूपंथी (पुं.) दे. दाद्दूपंथी।

दाद्दा (पुं.) 1. पितामह, 2. गाँव का ब्राह्मण; (वि.) 1. सम्मानित व्यक्ति, 2. बदमाश, गुंडा; **~-लाही** पैतृक अधिकार। **दादा** (हि.)

दाद्दी (स्त्री.) 1. पिता की माता, 2. गाँव के ब्राह्मण की पत्नी, 3. घर की बड़ी-बूढ़ी महिला; (वि.) 1. समझदार महिला, 2. षड्यंत्रकारी महिला। **दादी** (हि.)

दाद्दू (पुं.) 1. संत दादू दयाल इनका जीव-काल 1544-1603 ई. माना जाता है (इनकी जयंती चैत्र-शुक्ल अष्टमी को मनाई जाती है), 2. दादू-पंथी; **~-पंथी** दादूपंथ को मानने वाला।

दाद्दे (पुं.) दादा का बहुवचन।

दाध (पुं.) दद्रू, एक प्रकार का चर्म-रोग। **दाद** (हि.)

दान (पुं.) 1. दहेज, नक़द राशि जो कन्या-पक्ष वर-पक्ष को विवाह के अवसर पर देता है, 2. इस अवसर पर

दिए जाने वाले कपड़े, बर्तन आदि उपहार, 3. धर्मार्थ दिया गया धन आदि।

दानपात्र (पुं.) वह पात्र जिसमें दान डाला जाए।

दानलीला (स्त्री.) श्रीकृष्ण की वह लीला जिसमें उन्होंने ग्वालिनों से गोरस बेचने का कर वसूल किया था।

दानव (पुं.) राक्षस, असुर; (वि.) क्रूर, निर्दयी।

दानवीर (पुं.) अत्यंत दानी।

दानशील (वि.) दानी।

दाना (पुं.) दे. दाणा; (वि.) चतुर, (दे. दान्ना)।

दानापानी (पुं.) दे. अनजलपाणी।

दानी (वि.) दे. दान्नी।

दान्ना (पुं.) दानव; (वि.) समझदार। **दाना** (हि.)

दान्नी (पुं.) 1. दान करने वाला, 2. उदार हृदयी, 3. परोपकारी। **दानी** (हि.)

दा-पेच (पुं.) 1. मल्ल-युद्ध का कौशल, 2. बुद्धि की उड़ान। **दाँव-पेंच** (हि.)

दाफड़ (पुं.) मच्छर आदि विषैले कीट के काटने से उत्पन्न सूजन, (दे. ददोड़ा)।

दाब[1] (स्त्री.) 1. दबाने या दबने की क्रिया, 2. प्रभाव, 3. डर, भय 4. बाध्य करने का भाव, 5. सरिया काटने का उपकरण विशेष; (क्रि. स.) 'दाबणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पड़णा** कार्य को करने की बाध्यता होना।

दाब[2] (स्त्री.) गाहटा (दे.) मलने की फलसी, (दे. फळसी)।

दाबणा (क्रि. स.) 1. किसी वस्तु पर भार डालकर दबाना, 2. हड़पना, 3. बात-छिपाना, 4. घर आदि पर छत देना–बड्ड्याँ नैं कोठड़ा दाब लिया था तै काम आ र्‌हया सै, 5. गाड़ना; (वि.) दाबने में कुशल या सक्षम। **दबाना** (हि.)

दाबना (क्रि. स.) दे. दाबणा।

दाब्बा (पुं.) किसी बात या वस्तु को दबाने या छिपाने का भाव; **~दड़िया** 1. अस्थायी व्यवस्था, 2. दबाने का भाव या क्रिया; **~देणा** 1. रोगी को रजाई आदि से ढाँपना, 2. गुप्त भेद को न फैलने देना।

दाब्बी (स्त्री.) दबाव पड़ने का भाव या क्रिया–पुलिस की दाब्बी पड़ी अर उसनैं सब कुछ उगल्या; (क्रि. स.) 1. दाबी, 2. 'दाबणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप, 3. दौड़ाई–उसनैं साइकल दाब्बी, म्हारे गाम की राही (लो. गी.); **~पड़णा** 1. पीछा किया जाना, 2. दबाव पड़ना; **~(ब्बूँ) दाब** 1. जल्दी-जल्दी, 2. अधिक मात्रा में ठूँस कर भरने की स्थिति; **~~जाणा** बिना शोर किए चुपके से खिसकना; **~भरणा** अधिक मात्रा में ठूँसना, ठूँस-ठूँस कर भरना। **दाब** (हि.)

दाब्बू (वि.) 1. वाहन की जूए की ओर अधिक भार होने की स्थिति, 2. 'उळाळू' का विलोम, 3. वह जो बात को दबा ले, 4. (दे दब्बू)।

दाभ (स्त्री.) 1. दे. फळसी, 2. दे. डाभ।

दाम (पुं.) 1. पैसे, नक़दी, 2. भाव–चीज्जाँ के दाम घट तै गे, 3. एक पुराना सिक्का जिसका मूल्य रुपये का चालीसवाँ भाग होता था (कुछ लोग इसे टके का पचासवाँ भाग व पैसे का पच्चीसवाँ भाग मानते हैं); **~ऊठणा** 1. वस्तु की क़ीमत मिलना, 2. खर्च

होना, 3. नक़दी की चोरी होना; **~लागणा** चीज की ख़रीद के लिए क़ीमत लगना।

दामणी (स्त्री.) दे. बीजळी, दामिनी।

दामड़ी (स्त्री.) 1. अत्यंत अल्प मूल्य; 2. (दे. दमड़ी)।

दामन (पुं.) दे. दाम्मण।

दामनगीर (पुं.) सहयात्री।

दामाद (पुं.) दे. जमाई

दामोदर (पुं.) श्रीकृष्ण।

दाम्मण (पुं.) 1. भारी घघरी, (दे. घाघरी), 2. पल्लू। **दामन** (हि.)

दाय (पुं.) 1. वह धन जो किसी को देने के लिए हो, 2. दानार्थ धन, 3. पैतृक धन।

दायज (पुं.) दहेज, (दे. दान)।

दायर (वि.) 1. चलता, 2. जारी।

दायरा (पुं.) घेरा, वृत्त।

दायला (पुं.) दादा।

दायाँ (वि.) दाहिना।

दार (प्रत्य.) वाला, रखने वाले–पाणीदार।

दारण (वि.) दारुण।

दारमदार (पुं.) 1. सहारा, 2. किसी पर अवलंबित रहना, आश्रय।

दारा[1] (पुं.) दे. दायरा।

दारा[2] (स्त्री.) पत्नी–सुत, दारा, अर लिच्छमी बैरी कै बी हो।

दारी (स्त्री.) 1. रखैल, 2. दासी, 3. स्त्रियों के लिए प्रयुक्त निंदापरक शब्द।

दारू (स्त्री.) 1. शराब, 2. बारूद, 3. ओषधि।

दारोगा (पुं.) दे. दरोग्गा।

दाल (स्त्री.) दे. दाळ।

दाळ (स्त्री.) 1. अन्न विशेष, दो परती बीज, 2. घाव की पपड़ी, 2. खुरंड, 3. फ़सल का हानिकारक कीड़ा विशेष; **~दपाळ** सामान्य भोजन; **~दळिया** साधारण भोजन; **~नाँ गळणा** वश न चलना; **~-रोट्टी** 1. साधारण भोजन, 2. दाल और रोटी का भोजन। **दाल** (हि.)

दाळमोंठ (स्त्री.) तली हुई मसालेयुक्त दाल।

दालान (पुं.) बरामदा।

दाव (पुं.) दे. दा।

दावत (स्त्री.) 1. भव्य भोजन, 2. निमंत्रण।

दास (पुं.) 1. सेवक, 2. नौकर, 3. एक प्राचीन जनजाति।

दासा (पुं.) दे. दास्सा।

दासानुदास (पुं.) सेवकों का सेवक।

दासी (स्त्री.) दे. दास्सी; (वि.) दास जाति से संबंधित।

दास्ताँ (स्त्री.) 1. वृत्तांत, 2. कथा, 3. वर्णन। **दास्तान** (हि.)

दास्सा (पुं.) 1. दरवाज़े के बाहर का चबूतरा, 2. दीवार के साथ-साथ उभरा हुआ चबूतरा जो अधिकतर शिलाखंडों से बनाया जाता है, (दे. सहमची)। **दासा** (हि.)

दास्सी (स्त्री.) सेविका; **~बाँद्दी** सेविका; **~लोंड्डी** सेविका। **दासी** (हि.)

दाह (पुं.) मुर्दे को जलाने की क्रिया; (स्त्री.) डाह, ईर्ष्या; (क्रि. स.) 'दाहणा' क्रिया का आदे. रूप।

दाहणा (क्रि. स.) 1. दाह करना, 2. जलाना; (वि.) दाहिना। **दाहना** (हि.)

दाहना (क्रि. स.) दे. दाहणा।

दाहिने (क्रि. वि.) दाईं ओर।

दाहूँ/दाहौं (क्रि. वि.) दे. दाँहवैं।

दाह्न्ना (पुं.) नहर से निकला छोटा नाला। **दहाना** (हि.)

दाह्भ (स्त्री.) दे. डाभ।

दिक (स्त्री.) 1. क्षय, तपेदिक, 2. कठिनाई; (वि.) तंग, हैरान।

दिके (अव्य.) दे. धिखे।

दिक़्क़त (स्त्री.) कठिनाई।

दिक्पाल (पुं.) दिशाओं के देवता।

दिक्शूल (पुं.) दे. दिसासूळ।

दिखना (क्रि. अ.) दे. दीखणा।

दिखलाना (क्रि. स.) दे. दिखाणा।

दिखा (पुं.) 1. दिखावट, ब्याने से पूर्व गाय-भैंस के अयन के लटकने का भाव, 2. बनावट, 3. तीयल, दान आदि देने से पूर्व उसे प्रदर्शित करने का भाव, 4. बनावट, 5. सार-हीनता। **दिखाव** (हि.)

दिखाई (स्त्री.) वह धन जो देखने के बदले में दिया जाए, जैसे–मुँह- दिखाई; (क्रि. स.) 'दिखाणा' क्रिया का भू. का. स्त्रीलिं. एकव. रूप।

दिखाऊ (वि.) 1. दिखावटी, बनावटी, 2. काम-चलाऊ।

दिखाणा (क्रि. स.) 1. प्रदर्शित करना, 2. जताना; (वि.) लजावा। **दिखाना** (हि.)

दिखाव (पुं.) दे. दिखा।

दिखावट (स्त्री.) 1. दिखावा, 2. छलावा, 3. बनावट, आकार; **~करणा** बनावटी व्यवहार करना।

दिखावटी (वि.) 1. केवल शोभा के योग्य, 2. बनावटी।

दिखावा (पुं.) 1. व्यर्थ का प्रदर्शन, 2. छलावा, 3. डरावा; (वि.) लजावा, लजाने योग्य।

दिखे (अव्य.) 1. सावधान करने के लिए प्रयुक्त संबोधन–दिखे! बात न्यूँ सै, 2. अरी, अरे।

दिगंबर (पुं.) 1. जैनियों का एक संप्रदाय, 2. शिव।

दिग्गज (पुं.) दिशाओं के हाथी जिन्होंने पृथ्वी को आठों दिशाओं से दबाया हुआ है; (वि.) बहुत भारी, बहुत बड़ा।

दिग्विजय (स्त्री.) देश-देशांतर की विजय।

दिछणा (स्त्री.) धार्मिक कृत्य कराने के उपलक्ष में पंडित को दिया दान, (दे. स्याहवड़ी)। **दक्षिणा** (हि.)

दिठौना (पुं.) दे. डिठौना।

दितवार (पुं.) आदित्यवार। रविवार। दे. ऐंतवार।

दिदोड़ा (पुं.) दे. ददोड़ा।

दिन (पुं.) 1. दिन का समय, 2. प्रकाश, 3. सप्ताह का कोई दिन, जैसे–सोम, मंगल, 4. कुदिन–तेरे दिन आगे दीक्खैं (व्यंजना), 5. किसी कार्य के लिए निश्चित तिथि, 6. सूर्य–दिन लिकड़्याया; **~आणा** निश्चित या प्रतीक्षित समय आना; **~काटणा/ तोड़णा** हीन अवस्था में समय बिताना, समय बिताना; **~के दिन** पूर्व-निर्धारित समय के अनुसार, ठीक समय पर, मौक़े पर; **~चढणा** 1. गर्भवती होना, 2. निश्चित काल में मासिक धर्म न होना, 3. विलंब होना, देरी होना, 4. सूर्य का काफ़ी ऊपर आकाश में आना; **~जाणा बात रहणा** समय निकलने पर बात रह जाना; **~ढळणा** 1. बुरे दिन आना, 2. अपराह्न होना; **~ढळ्याँ** दोपहर बाद का समय, दिन ढलने पर; **~दिन मैं** दिन के समय में, सूर्य के प्रकाश में;

~**दीखणा** 1. सूर्य उदय होना, 2. वर्तमान तथा भविष्य उज्ज्वल होना; ~**दूणा रात चौगणा** अप्रत्याशित प्रगति; ~**धरणा** किसी कार्य के लिए समय या तिथि निश्चित करना; ~**धाड़ै** 1. सरे आम, 2. दिन के समय; ~**धोळी** 1. सरे आम, 2. दिन की रोशनी में; ~**बोलणा** कुदिन आना; ~**मैं तारा** 1. ऊँगा का पौधा जिसमें उल्टे काँटे लगते हैं. (बच्चे इसे किसी की मुट्ठी में पकड़ा कर खींच लेते हैं ताकि हथेली में काँटे चुभ जाएँ), 2. विचित्र घटना, अलौकिक घटना;~~**दिखाणा** 1. विचित्र कार्य करना, 2. छकाना, हराना; ~**लीकड़णा/होणा** 1. गुप्त बात प्रकट होना, 2. प्रकाशित होना।

दिनमान (पुं.) दिन का प्रमाण।

दिमाक (पुं.) 1. बुद्धि, 2. मस्तिष्क। **दिमाग़** (हि.)

दिमाग़ (पुं.) दे. दिमाक।

दिमाग़दार (वि.) बुद्धिमान।

दिमाग़ी (वि.) 1. दिमाग़ संबंधी, 2. बुद्धिमान।

दियासलाई (स्त्री.) दे. दिवासळाई।

दिल (पुं.) 1. मन, अंतर्मन, 2. हृदय, (दे. जी); ~**डाटणा/थाँभणा** मन समझाना; ~**गवाही देणा** मन मानना।

दिलचस्प (वि.) चित्ताकर्षक।

दिलजमीं (स्त्री.) तसल्ली।

दिलजानी (पुं.) प्रेमी।

दिलदार (वि.) 1. रसिक, 2. प्रेमी, 3. उदार।

दिलद्दर (वि.) 1. दरिद्र, 2. आलसी; (पुं) 1. ग़रीबी, 2. आलस्य; ~**भाजणा** 1. ग़रीबी दूर होना, 2. आलस्य हटना।

दिलदरी (वि.) 1. आलसी, 2. ग़रीब, (दे. दलिदरी)। **दरिद्री** (हि.)

दिलवाना (क्रि. स.) दे. दिवाणा।

दिलाना (क्रि. स.) दे. दिवाणा।

दिलावर (वि.) 1. वीर, 2. निर्भीक।

दिली (वि.) 1. हृदय या दिल संबंधी, 2. अत्यंत घनिष्ठ।

दिलीप (पुं.) श्रीरामचंद्र जी के वृद्ध प्रपितामह।

दिलेर (वि.) वीर, साहसी।

दिल्लगी (स्त्री.) मखौल, परिहास।

दिल्ला (पुं.) किवाड़ के पल्ले में लकड़ी का वह चौखटा जो शोभा के लिए जड़ दिया जाता है।

दिल्ली[1] (स्त्री.) रोहतक से लगभग चालीस कोस पूर्व में यमुना तट पर स्थित भारत की राजधानी (जिसके चारों ओर के गाँव में हरियाणवी, जाटू या बाँगरू के समान ही बोली बोली जाती है तथा जिसके कटड़ों और मौहल्लों के मूल निवासियों की भाषा आज भी हरियाणवी से प्रभावित है, जैसे–खाता है, पीता है के स्थान पर 'खा है', 'खावै है' तथा 'पीवै है' आदि बोलते हैं, इसी प्रकार 'करणा' क्रिया के 'क्रिया' रूप के स्थान पर 'करा' का प्रयोग होता है)।

दिल्ली[2] (स्त्री.) चौपड़ के खेल का वह स्थान जहाँ चार सड़क आपस में काटती हैं।

दिल्ली-मंडल (पुं.) हरियाणा।

दिवला (पुं.) दीया (तुल. दीवा); ~**ज्योणा** दीया जलाना या ज्योतित करना।

दिवाऊ (वि.) दे. दिवाळ।

दिवाणा (क्रि. स.) दिलवाना। **दिलाना** (हि.)

दिवान्ना (वि.) मुग्ध। **दीवाना** (हि.)

दिवान्नी (स्त्री.) वह न्यायालय जो संपत्ति-संबंधी मुक़दमों पर विचार करे; (वि.) मुग्धा। **दीवानी** (हि.)

दिवाल (स्त्री.) दे. भीत।

दिवाळ (स्त्री.) 1. देने में सक्षम–या भैंस घणे दूध की दिवाळ सै, 2. देने वाला, ऋणी।

दिवाला (पुं.) दे. दिवाळा।

दिवाळा (पुं.) व्यापार में पड़ने वाला घाटा। **दिवाला** (हि.)

दिवाळिया (पुं.) दिवाला निकालने वाला व्यक्ति। **दिवालिया** (हि.)

दिवाली (स्त्री.) दे. दिवाळी।

दिवाळी (स्त्री.) दीपावली, (दे. गिरड़ी)। **दिवाली** (हि.)

दिवासणी (स्त्री.) दीवट (दे.)–गोरी दीवा तै धरो दिवासणी (लो. गी.)।

दिवासळाई (स्त्री.) माचिश। **दीयासलाई** (हि.)

दिव्य (वि.) 1. बहुत सुंदर, 2. भव्य, 3. आलौकिक।

दिशा[1] (स्त्री.) दे. दिसा[2]।

दिशा[2] (स्त्री.) शाप। **~लागणा** शाप लगना।

दिशाशूल (पुं.) दे. दिसासूळ।

दिसा[1] (स्त्री.) 1. हालत, 2. तारक-मंडल की स्थिति; **~आणा/चढणा/ बोलणा** कुसमय आना; **~सवार होणा** कुसमय के कारण बुरा काम करने को प्रवृत्त होना। **दशा** (हि.)

दिसा[2] (स्त्री.) ओर, तरफ़; **~बोलणा/ गूँजणा** जंगल से अपने आप तेज़ ध्वनि निकलना, जंगल गूँजना। **दिशा** (हि.)

दिसाम (स्त्री.) दे. दहाम।

दिसावर (पुं.) प्रदेश, अपने प्रांत से बाहर का स्थान; **~जाणा** परदेश जाना, प्रांत से बाहर गमन करना।

दिसावरी (वि.) प्रांत या प्रदेश के बाहर की वस्तु; **~खाँड** अपने प्रदेश से बाहर बनी खाँड; **~मूँगा** समुद्र-तट से प्राप्त कीमती मूँगा।

दिसासूळ (वि.) 1. अशुभ काम करने वाला (व्यक्ति), 2. अशुभ; (पुं.) 1. कष्ट, 2. विभिन्न दिवसों में विभिन्न स्थानों पर निवास करने वाला (काल्पनिक) कष्ट का देव, जैसे–शनिवार और सोमवार को पूर्व दिशा में, बृहस्पतिवार को दक्षिण दिशा में आदि (दिशाशूल वाले दिन उस दिशा में यात्रा नहीं करते या एक दिन पहले उस ओर जूतियों का अग्रभाग कर दिया जाता है)।

दिसोट्टा (पुं.) 1. देश-निकाला, 2. वन-वास–रामचंदर ने चौदाह बरस का दिसोट्टा भोग्या।

दिसोठण (पुं.) दे. दसोठण।

दिसोर (पुं.) दे. दिसावर।

दिसोरी (वि.) दे दिसावरी।

दिस्टांत (पुं.) उदाहरण, तर्क की पुष्टि के लिए दिया गया कथा आदि का उदाहरण। **दृष्टांत** (हि.)

दिहात (पुं.) ग्रामीण क्षेत्र। **देहात** (हि.)

दिहात्ती (पुं.) गाँव का निवासी; (वि.) भोला-भाला; **~भाई** 1. ग्रामीण बंधु, 2. सीधा-सादा आदमी; **~बोली** ग्रामीण बोली। **देहाती** (हि.)

दीक्षा (स्त्री.) गुरु या आचार्य का नियमपूर्वक मंत्रोपदेश।

दीक्षागुरु (पुं.) मंत्रोपदेष्टा गुरु।

दीक्षित (पुं.) ब्राह्मणों का एक गोत्र; (वि.) जिसने आचार्य से मंत्र लिया हो।

दीखणा (क्रि. अ.) 1. दिखाई देना, 2. अनुमान से जान पड़ना–इसा दीक्खै जणूँ बटेऊ आवैगा। **दीखना** (हि.)

दीखना (क्रि. अ.) दे. दीखणा।

दीदा (पुं.) दे. दीद्दा।

दीदी (स्त्री.) 1. बड़ी बहिन, 2. अध्यापिका।

दीद्दा (पुं.) 1. मन–तेरा दीद्दा अड़ै क्याँह नै लागै, 2. मोटी आँख, आँख; **~(-द्दे) काढणा** 1. क्रोध से लाल नेत्र करना, 2. आँख निकालना; **~दिखाणा** 1. डराना, 2. आँख दिखाना; **~लागणा** मन लगना। **दीदा** (हि.)

दीन (पुं.) धर्म, मजहब; (वि.) वह जो दयनीय स्थिति में हो।

दीनता (स्त्री.) 1. दरिद्रता, 2. नम्रता।

दीनदयाल (पुं.) 1. दीनों पर दया करने वाला, 2. भगवान।

दीन-दुनियाँ (स्त्री.) दे. दीन-दुनी।

दीन-दुनी (स्त्री.) 1. संसार, 2. इहलोक तथा परलोक; **~तैं खोणा** 1. नष्ट-भ्रष्ट करना, 2. मार डालना,

दीनबंधु (पुं.) 1. दीनों के मित्र, 2. भगवान।

दीन-बेदीन (पुं.) मार्ग भ्रष्ट, धर्म भ्रष्ट।

दीनानाथ (पुं.) दीनों के स्वामी, 2. ईश्वर।

दीप[1] (पुं.) 1. द्वीप, 2. समुद्र के बीच का भूखंड जहाँ सुंदरियों की कल्पना की गई है।

दीप[2] (पुं.) 1. दीया, 2. पुत्र, 3. उजाला।

दीपक (पुं.) दे. दीप[2]।

दीपचंद पंडित (पुं.) (1883-1942) एक साँगी (सेरी खांडा– सोनीपत)।

दीपणा (क्रि. अ.) दीप्त होना, जग मगाना; (क्रि. स.) दीप जलाना।

दीपमाला (स्त्री.) जलते हुए दीपकों की पंक्ति।

दीपावली (स्त्री.) दे. दिवाळी।

दीमक (स्त्री.) दे. डीम्मक।

दीया (पुं.) दीपक; **~-बात्ती करणा** 1. दीप जलाना, 2. आरती-पूजा करना।

दीयासलाई (स्त्री.) दे. दिवासळाई।

दीवट (स्त्री.) दीया रखने का स्थान जो लकड़ी के स्टैंड या दीवार के आले में होता है, (दे. दिवासणी)।

दीवड़ (स्त्री.) दे. दीवट।

दीवड़ी (स्त्री.) 1. दे. दीवट, 2. छोटा दीया।

दीवा (पुं.) दीपक; **~(-वे) तैं दीवा जळाणा** अशुभ कार्य करना; **~बढाणा** दीपक को हाथ के झपट्टे से बुझाना; **~बाळणा/लाणा** दीपक जलाना; **~बुझणा** 1. मृत्यु होना, 2. अंधकार होना; **मोरी-~** यमदीप।
दीया (हि.)

दीवान (पुं.) 1. मंत्री, 2. राजा के बैठने की जगह, दरबार, 3. तख़्तपोश।

दीवानी (स्त्री.) 1. दे. दिवान्नी, 2. मंत्रित्व; (वि.) 1. मुग्धा, 2. उन्मत्त (महिला)।

दीवार (स्त्री.) दे. भींत।

दीवाल (स्त्री.) दे. भींत।

दीवाली (स्त्री.) दे. दिवाळी।

दीवी (स्त्री.) काजल तैयार करने के लिए जलाया जाने वाला दीपक।

दीहना (अव्य.) दिया। उदा. कह दीहना।

दुंद (पुं.) मल्ल-युद्ध। **द्वंद्व** (हि.)

दुअन्नी (स्त्री.) लगभग वर्गाकार पीतल या मिश्रित धातु का पुराना सिक्का जो अब प्रचलित नहीं है, किंतु इसका मूल्य वर्तमान सिक्के के बारह पैसे के बराबर आँका जाता है।

दुआ (स्त्री.) 1. प्रार्थना, 2. आशीर्वाद।

दुआई (स्त्री.) दवाई।

दुआण (स्त्री.) दे. पाँत।

दुआळी (स्त्री.) दे. दिवाळी।

दुआस (स्त्री.) दे. दवादसी।

दुकड़ा (पुं.) 1. सागदान जिसके एक हत्थे में दो पात्र जुड़े हों, 2. दो वस्तुओं का समूह।

दुकड़िया (वि.) (वह कमरा) जिसके बीच में शहतीर और खंभा हो।

दुकड़ी (स्त्री.) दो वस्तुओं का समूह।

दुकानदार (पुं.) दुकान चलाने वाला। **दुकानदार** (हि.)

दुकानदारी (स्त्री.) दुकान पर माल बेचने का काम। **दुकानदारी** (हि.)

दुकलिया (पुं.) दो कली का (गाना); (पुं.) एक प्रकार की ओढ़नी।

दुकान (स्त्री.) दे. हाट।

दुकानदार (पुं.) दे. दुकनदार।

दुकानदारी (स्त्री.) दे. दुकनदारी।

दुकानिया (पुं.) कढ़ाई की रंगीन ओढ़नी।

दुकाळ (पुं.) सुकाल का विलोम। दुर्भिक्ष।

दुकेल्ला (वि.) 1. जिसके साथ दो हों, 2. जो अकेला न हो।

दुक्की (स्त्री.) 1. दे. दुग्गी, 2. नए दो पैसे का सिक्का।

दुख (पुं.) कष्ट।

दुखठाणी (वि.) दुख उठाने या भोगने वाली।

दुखड़ा (पुं.) 1. कष्ट, भोगा हुआ कष्ट, 2. दुख या तकलीफ़ का बयान।

दुखद (वि.) दुखदायी।

दुखना (क्रि. स.) दे. दूखणा।

दुखयारा (वि.) दुखियारा, दुखी, दुखिया।

दुखराहणा (क्रि. अ.) बुरा लगना।

दुखाणा (क्रि. स.) 1. चोट आदि को छूना, 2. कष्ट पहुँचना, व्यथित करना। **दुखाना** (हि.)

दुखाना (क्रि. स.) दे. दुखाणा।

दुखाळा (वि.) दुखदायी, कष्टकारक।

दुखित (वि.) दुखी, दुःख पाया हुआ।

दुखिया (वि.) दुखी।

दुखियारी (स्त्री.) दुखी महिला।

दुखी (वि.) दुखिया, जो कष्ट या पीड़ा में हो।

दुगणा (वि.) दूना। **दुगना** (हि.)

दुगणी (स्त्री.) एक नमाज़; (वि.) दुगनी, दूनी।

दुगना (वि.) दे. दुगणा।

दुगाड़ा[1] (पुं.) 1. दोनाली बंदूक, (दे. दुनाली), 2. दोहरी गोली; **~लागणा** घातक हथियार से आहत होना। **दुगड़ा** (हि.)

दुगाड़ा[2] (पुं.) दे. जोड़ा।

दुग्गी (स्त्री.) ताश का पत्ता जिस पर दो बूटियाँ होती हैं।

दुग्ध (पुं.) दे. दूध।

दुचंदी (वि.) 1. दुगनी, 2. दुराचारिणी, दुश्चरित्रा।

दुचाभ (पुं.) वर्षाकाल का एक खरपतवार।

दुज्झणा (क्रि. अ.) 1. खेल में शरीर के निर्धारित वर्जित स्थान से गिल्ली या गेंद का स्पर्श होना, 2. 'दुज्झने' के कारण बाजी से निकलना।

दुड़की (स्त्री.) 1. धीरे-धीरे दौड़ने की क्रिया, 2. घोड़े की एक चाल।

दुणिया (पुं.) दे. बिलोवणी।

दुतई (स्त्री.) दो तह की ओढ़ने की चादर।

दुतकारणा (क्रि. स.) दे. दुदकारणा।

दुतरफ़ा (वि.) दोनों तरफ़ का।

दुदकारणा (क्रि. स.) 1. तिरस्कृत करना, 2. कुत्ते आदि को खदेड़ना। **दुतकारना** (हि.)

दुधारा (वि.) (वह शस्त्र) जिसके दोनों ओर धार हो।

दुधारी (वि.) 1. दूध देने वाली, जो दूध दे, 2. जिसके दोनों ओर धार हो; (स्त्री.) तलवार।

दुधारू (वि.) दूध देने वाला (पशु)।

दुधैल (वि.) अधिक दूध देने वाला (पशु)।

दुनका (पुं.) दाना का अनुवर्ती शब्द–जैसे दाना-दुनका।

दुनामा (स्त्री.) बदनामी।

दुनाली (स्त्री.) दे. दुनाळी।

दुनाळी (स्त्री.) दो नाल वाली बंदूक, (दे. दुगाड़ा)।

दुनियाँ (स्त्री.) संसार।

दुनियाँदारी (स्त्री.) 1. घर-गृहस्थी, 2. लोक-व्यवहार, 3. बनावटी व्यवहार; **~निभाणा** औपचारिकता निभाना; **~मैं पड़णा** गृहस्थ के चक्कर में फँसना।

दुनी (स्त्री.) दुनिया, संसार।

दुपट्टा (पुं.) दे. डुपट्टा।

दुपल्ली (स्त्री.) दो परत की घघरी जिसे उलट पलट कर पहना जा सके।

दुपहर (स्त्री.) मध्याह्न (तुल. दोफाहरा); **~करणा** काम में विलंब करना। **दोपहर** (हि.)

दुपहरी (स्त्री.) दे. दोफाहरी।

दुप्यारी (वि.) प्यारी का विलोम।

दुफाड़ (वि.) जिसके दो भाग या खंड हों।

दुबकणा (क्रि. अ.) 1. दुबक कर बैठना, 2. छुपना, छुप कर बैठना; (वि.) दुबक कर बैठने वाला। **दुबकना** (हि.)

दुबड़दो (स्त्री.) दे. गाड्डी।

दुबधा (स्त्री.) द्विविधा, असमंजसता की स्थिति। **दुविधा** (हि.)

दुबरसा (वि.) 1. दो वर्ष पुराना (गुड़, ईख आदि), 2. दो वर्ष में घटित होने वाला।

दुबला (वि.) दे. दूबळा।

दुबली (वि.) दे. दूबळी।

दुबारा (क्रि. वि.) पुनः। **दोबारा** (हि.)

दुभाँत (स्त्री.) 1. सौतेला व्यवहार, 2. दोगला व्यवहार–मोस्सी दुभाँत बरत्याँ बिनाँ नाँ रह; **~करणा/बरतणा** दोहरा व्यवहार करना।

दुभुड़धा (स्त्री.) दुविधा। दे. धुकड़ चुकड़।

दुमंजला (वि.) दो मंजिल का।

दुम (स्त्री.) 1. पूँछ, पुच्छ, 2. पूँछ की तरह पीछे लगी कोई वस्तु; (वि.) पिछलग्गू।

दुमदार (वि.) 1. पूँछ वाला, 2. जिसके पीछे पूँछनुमा कोई वस्तु हो।

दुरंगा (वि.) 1. दो रंग का, 2. दो प्रकार का (व्यवहार), 3. छली।

दुरंगी (वि.) 1. दो रंग की, 2. दो मेल की, 3. अनमेल; **~चाल** 1. असमान व्यवहार, 2. कपट-नीति।

दुरगत (स्त्री.) दुर्दशा, बुरी हालत। **दुर्गति** (हि.)

दुरगा (स्त्री.) 1. एक देवी, 2. कलह-प्रिया। **दुर्गा** (हि.)

दुरजोद्धन (पुं.) धृतराष्ट्र का सबसे बड़ा पुत्र; (वि.) घृणित (व्यक्ति)। **दुर्योधन** (हि.)

दुरबास्सा (पुं.) एक क्रोधी मुनि जो अनसूया और अत्रि के पुत्र थे, इनका आश्रम 'दूबळधन-माजरा' (रोहतक) माना जाता है, यहाँ इन्होंने यज्ञ किया था, (दे. दूबळधन); (वि.) क्रोधी। **दुर्बासा** (हि.)

दुरबीन (स्त्री.) एक यंत्र जिससे दूर की चीजें बहुत पास और स्पष्ट दिखाई दें।

दुरबेस (पुं.) फ़कीर, मुसलमान फ़कीर। **दरवेश** (हि.)

दुरभाग (पुं.) दुर्भाग्य।

दुराग (पुं.) दे. दुहाग।

दुराणा (क्रि. स.) 1. दूर करना, हटाना, 2. छिपाना। **दुराना** (हि.)

दुराणी (स्त्री.) देवर की पत्नी; **~जिठाणी की तकरार** 1. व्यर्थ का झगड़ा, 2. स्थायी झगड़ा। **देवरानी** (हि.)

दुराना (क्रि. स.) दे. दुराणा।

दुराहा (पुं.) दो राहा।

दुरुस्त (वि.) 1. जो टूटा-फूटा न हो, 2. उचित, 3. यथार्थ।

दुरेहटा (वि.) 1. दूर स्थान का, 2. दूरी पर स्थित (स्थान)।

दुर्गंध (स्त्री.) बुरी गंध, महक, बदबू, (दे. बास[1])।

दुर्ग (पुं.) क़िला, कोट, गढ़।

दुर्गति (स्त्री.) 1. दे. दुरगत, 2. दे. गत।

दुर्गा (स्त्री.) दे. दुरगा।

दुर्घटना (स्त्री.) 1. बुरी घटना, अशुभ घटना, 2. बुरा संयोग, 3. विपद, आफ़त।

दुर्जन (वि.) खोटा आदमी, खल।

दुर्दशा (स्त्री.) दुर्गति, बुरा दशा।

दुर्दिन (पुं.) बुरे दिन, दुःख और कष्ट का समय।

दुर्भाग्य (पुं.) खोटा भाग्य, मंद भाग्य।

दुर्भाव (पुं.) 1. बुरा भाव, 2. द्वेष।

दुर्भावना (स्त्री.) 1. बुरी भावना, 2. आशंका, अंदेशा।

दुर्भिक्ष (पुं.) अकाल, (दे. काळ[2])।

दुर्योधन (पुं.) दे. दुरजोद्धन।

दुर्लभ (वि.) 1. दुष्प्राप्य, 2. अनोखा।

दुर्वचन (पुं.) कटु वचन, कठोर वचन।

दुर्वासा (पुं.) दे. दुरबास्सा।

दुर्व्यवहार (पुं.) बुरा बरताव।

दुर्व्यसन (पुं.) कुटेव, बुरी लत।

दुलंगी (स्त्री.) दो लाँग, लाँगड़ या काछ की धोती।

दुलत्ती (स्त्री.) पिछली टाँगें एक साथ उठा कर मारी गई लात।

दुल्ली (पुं.) दो पाँसे उल्टे तथा दो सीधे पड़ना।

दुल्हन (स्त्री.) नव-वधू।

दुलाई (स्त्री.) 1. दो तह की चद्दर, (दे. धरे), 2. स्त्रियों की हल्की रंगीन ओढ़नी।

दुलाया (वि.) दो लाव का (कूआँ), (कूआँ) जिसमें एक साथ दो चरस जोते जा सकें, (दे. चुलाया)।

दुलार (पुं.) लाड़-प्यार, आवश्यकता से अधिक प्रेम।

दुलारणा (क्रि. स.) अधिक प्रेम करना, (दे. लडाणा)।

दुलारा (वि.) लाडला।

दुलीज़ (स्त्री.) दे. धेळ।

दुलैंहढी (स्त्री.) दे. धुळैंहढी।

दुळ्हैंढ़ी (स्त्री.) दे. धुळैंहढी।

दुविधा (स्त्री.) दे. दुबधा।

दुशाला (पुं.) ओढ़ने के काम आने वाला ऊनी वस्त्र विशेष।

दुश्मन (पुं.) शत्रु, बैरी।

दुश्मनी (स्त्री.) शत्रुता, बैर।

दुष्कर्म (पुं.) कुकर्म, पाप।

दुष्कर्मी (वि.) दुराचारी।

दुष्ट (वि.) 1. दुर्जन, 2. दूषित।

दुष्टता (स्त्री.) 1. बदमाशी, 2. दोष, ऐब।

दुष्यंत (पुं.) शकुंतला के पति तथा भरत के पिता एक प्रतापी राजा।

दुसंखे (पुं.) दे. दुसंगी।

दुसंगा (पुं.) वह लकड़ी या यंत्र जो अंतिम सिरे से दो भागों में बँटा हो, जैसे–गुलेल।

दुसंगी (वि.) दो सींग या फाल वाली।

दुसंगी-जेली (स्त्री.) वह 'जेळी' (दे.) जिसके दो फाल या भाग हों।

दुसमन (पुं.) दे. दुश्मन।

दुसा (वि.) विद्वेषी।

दुसाल्ला (पुं.) ओढ़ने का ऊनी वस्त्र, दुशाला; (वि.) 1. (छात्र) जो कक्षा में एक बार फेल हो जाए, 2. दो वर्ष में घटित होने वाला।

दुसूती (स्त्री.) दे. दसूत्ती।

दुसेरी (स्त्री.) दो सेर भार का गोलाकार बट्टा।

दुहत्था (वि.) दो मूठों वाला (औज़ार),

दुहराणा (क्रि. स.) 1. आवृत्ति करना, 2. दोहरा करना। **दोहराना** (हि.)

दुहाग (पुं.) 1. वैधव्य, रंडापा, 2. दुर्भाग्य; **~(-गी) बाणा** विधवा का पहनावा, श्वेत वस्त्र।

दुहाथड़ (स्त्री.) दोहत्था, दोनों हाथों का थप्पड़; **~पीटणा/ मारणा** प्रबल शोक व्यक्त करने के लिए दोनों हाथों से छाती या साँथल पीटना; **~बाजणा** मृत्यु पर रुदन होना।

दुहार (स्त्री.) दे. बावड़ी।

दुहिता (स्त्री.) पुत्री।

दुहेज्जू (वि.) (व्यक्ति) जिसकी दूसरी शादी हुई हो।

दुहेल्ला (वि.) 1. दुखदायी–बड़ा दुहेल्ला है मा मेरी सासरा (लो. गी.), 2. दुर्लभ। **दुहेला** (हि.)

दूँद (पुं.) मोटा, बड़ा या लटका हुआ पेट, (दे. तोंद); **~छूटणा** पेट बढ़ना।

दूँदड़ (वि.) बड़े पेट वाला।

दूँदी (वि.) मूर्ख। दे. तोंद।

दूआ (पुं.) कड़ूले की आकृति का हाथ का एक आभूषण जिसके ऊपर गोल बीज लगे रहते हैं।

दूक (स्त्री.) दे. टाड[2]।

दूखणा (क्रि. अ.) पीड़ होना, दर्द होना; (वि.) वह जो दुखे। **दुखना** (हि.)

दूजा (वि.) दूसरा।

दूज्याँ (क्रि. वि.) दूसरी बार।

दूण (स्त्री.) 1. सिर से मारी गई टक्कर, 2. सामने की स्थिति, सामने; **~मारता हाँडणा** इधर-उधर लड़ते-झगड़ते फिरना; **~लागणा** 1. हानि पहुँचना, 2. हानि के बाद होश में आना, 3. पशु की टक्कर लगना।

दूणा (वि.) दुगना, दो गुना; **~होणा** 1. बहुत मोटा होना, 2. प्रसन्न होना, 3. छाती फुला कर चलना, घमंड होना, 4. दुगना उपजना।

दूत (पुं.) संदेशवाहक; (वि.) 1. भेदिया, 2. झूठा।

दूतावास (पुं.) राजदूत का कार्यालय।

दूती (स्त्री.) दे. दूत्ती।

दूत्ता (वि.) 1. झूठा, 2. एक-दूसरे की लड़ाई कराने वाला, 3. नारद।

दूत्ती (वि.) झूठी, (दे. चिड़ीलड़ावा); (स्त्री.) संदेश ले जाने वाली। **दूती** (हि.)

दूद[1] (पुं.) दे. दूध।

दूद[2] (पुं.) वंश। कुल। उदा.–तुम कुणसे दूद के सो। दे. दूध।

दूदाभ (वि.) दूध की आभा वाला वस्त्र।

दूद्दू (स्त्री.) 'दू'-'दू' की ध्वनि, रुका हुआ पानी बहने से उत्पन्न ध्वनि; (पुं.) दूध के लिए प्यार में प्रयुक्त शब्द; **~नाक्का** नाला जिसमें पानी 'दू'-'दू' की ध्वनि के साथ या तेज़ी से बहे)?; **~~छूटणा** रुके पानी का 'दू'-'दू' की ध्वनि के साथ बहना।

दूद्धी (स्त्री.) कुचा, स्तन; (वि.) कच्ची।

दूध (पुं.) 1. दुग्ध, 2. स्तन-स्राव, स्तन का दूध, 3. टहनी का रस, वनस्पति का रस, 4. जाति, वंश; **~ऊत्तरणा** स्नेहवश छाती में दूध आना; **~का सा उबाळ** 1. क्षण में घटित होने वाली घटना, 2. शिशु-जन्म से पहले गर्भवती स्त्री की अवस्था; **~के दाँत भी नाँ टूटणा** शैशव अवस्था में होना; **~(-द्धाँ) न्हाणा** हर प्रकार का सुख प्राप्त होना; **~~पूत्ताँ फळणा** सुख-समृद्धि भोगना; **~धोया** पवित्र, खरा; **~(-द्धाँ) पाँ पखाळणा** जीवन के भोग भोगना; **~पिवाई** 1. एक रस्म जिसमें बारात चढ़ने से पूर्व दूल्हा माँ के स्तन पीने का अभिनय करता है (जो संभवत: दूध की लाज रखने या बाल-विवाह प्रथा का द्योतक है), 2. इस प्रथा के ऐवज में माँ को प्रदत्त राशि; **~पूत कोसणा** विनाश की कामना करना; **~बचाणा** माता तथा पिता के वंश या गोत्र में विवाह संबंध स्थापित न करना।

दूधमुँहा (वि.) दे. दूधमूँहा।

दूधमूँहा (वि.) दूध पीता (बच्चा)।

दूधल (वि.) दे. दुधैल।

दूधिया (वि.) 1. दूध जैसे रंग का, 2. (बीज की) पकने से पहले की अवस्था; (पुं.) दूध बेचने वाला; **~पत्थर** 1. एक प्रकार का सफ़ेद पत्थर, 2. एक प्रकार का नग।

दूधी (स्त्री.) 1. चूँची, 2. औरत की छाती।

दूना (वि.) दे. दूणा।

दूब (स्त्री.) घास, दूर्वा; **~किसे नाळ** मिली-जुली रिश्तेदारी।

दूबड़ी[1] (स्त्री.) आश्विन कृष्ण अष्टमी (इस दिन मिट्टी का घोड़ा और सवार बनाया जाता है)।

दूबड़ी[2] (स्त्री.) एक रस्म जिसके अनुसार वधु सास को कुछ भेंट करती है।

दूब-नाळ (स्त्री.) एक प्रकार की घास, नाल वाली घास।

दूबळधन (पुं.) महर्षि दुर्वासा के आश्रम का गाँव जहाँ इनकी याद में मेला लगता है (यह गाँव जिला रोहतक में बेरी से पाँच-छ: कोस की दूरी पर है)।

दूबळधन-माजरा (पुं.) महाराज नित्यानंद की तपोभूमि।

दूबळा (वि.) दुर्बल। **दुबला** (हि.)

दूबळी[1] (वि.) 1. कमज़ोर, 2. क्षीणकाय (महिला); **~नैं दो साढ** आपत्ति पर आपत्ति। **दुबली** (हि.)

दूबळी[2] (स्त्री.) सर्दी की ओढ़नी।

दूब्भर (वि.) कठिन; **~होणा** जीवन जीना कठिन होना। **दूभर** (हि.)

दूरंदेश (वि.) दूरदर्शी।

दूर (क्रि. वि.) 1. जो अंतर या दूरी पर हो, फासले पर, 2. 'निकट' का विलोम; **~का** 1. पराया, 1. अनजान।

दूरदर्शी (वि.) दूर की सोचने वाला।

दूरबीन (स्त्री.) दे. दुरबीन।

दूरी (स्त्री.) फ़ासला, अंतर।

दूर्वा (स्त्री.) दे. दूब।

दूल्हा (पुं.) वर, (दे. बंदड़ा)।

दूवा (पुं.) 1. दो का पहाड़ा, 2. दो से दस तक के पहाड़े; (स्त्री.) प्रार्थना।

दूसरा (वि.) 1. अन्य, 2. द्वितीय।

दूसरापण (पुं.) 1. गृहस्थ आश्रम, 2. परायापन; **~आणा** मनों में अंतर आना; **~ढळणा** बुढ़ापा आना।

दूस्सर (पुं.) द्विरागमन, गोना; **~करणा** 1. गोने में भेजना, 2. गोने के लिए वस्त्र आदि देने की व्यवस्था करना।

दूस्सा (पुं.) त्यागी गोत का एक उप-गोत।

दूहणी (स्त्री.) दे. दोहणी।

दूहना (क्रि. स.) दे. दोहणा।

दूहनी (स्त्री.) दे. दोहणी।

दृढ़ (वि.) 1. मज़बूत, कड़ा, 2. अटल, 3. बलवान, 4. कठोर।

दृश्य (पुं.) नज़ारा।

दृष्टकूट (पुं.) दे. कूट।

दृष्टांत (पुं.) पौराणिक उदाहरण।

दृष्टि (स्त्री.) 1. नज़र, आँख की ज्योति, 2. कृपा-दृष्टि, 3. परख।

दृष्टिकोण (पुं.) विचार, किसी बात को देखने का नज़रिया।

दृष्टिगोचर (वि.) जो देखने में आ सके।

दृष्टिपात (पुं.) देखने की क्रिया या भाव।

दे (पुं.) देवता; (क्रि. स.) 'देणा' क्रिया का आदे. रूप; **~ले कै** जैसे-तैसे, ले देकर। **देव** (हि.)

देई (स्त्री.) 1. देवी, 2. माता, 3. कन्या; **~गा** 1. देवी-गाय, वह गाय जिसका दूध केवल पीने के काम आता है, जमाया या बिलोया नहीं जाता (इसका बछड़ा साँड बनता है), 2. दिव्य गुणों से युक्त गाय।

देऊ (वि.) दे. दिवाळ।

दे-ऊठणी ग्यास (स्त्री.) देवोत्थानी एकादशी जो कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन रात्रि के समय मनाई जाती है (भूमि पर गेरू के देव बना कर तथा फल आदि चढ़ा कर थाली से ढक दिए जाते हैं और फिर गीत के साथ थाली पीट-पीट कर देवों का आह्वान किया जाता है, बच्चे डंडे पर कपड़े बाँध कर उनमें आग लगाते हैं और 'हर-नारायण की पूछड़ी जळै, मेरै भट सा बळै' की जकड़ी गाते हैं)।

देखणा (क्रि. स.) दे. लखाणा।
देखना (हि.)

देखना (क्रि. स.) दे. लाखणा।

देखभाळ (स्त्री.) 1. जाँच-पड़ताल, 2. निगरानी।

देखरेख (स्त्री.) 1. निरीक्षण, 2. देखभाल।

देखादेखी (क्रि. वि.) दूसरों के अनुकरण पर।

देग (पुं.) बड़ी देगची, बड़ी कड़ाही।

देगची (स्त्री.) छोटा देग।

देण (पुं.) कर्ज़-कितणा देण देणा रहग्या; (स्त्री.) देन, प्रदत्त वस्तु; **~-लेण** 1. लेन-देन, 2. व्यापार, 3. विशेष अवसरों पर वस्त्र, धन आदि का आदान-प्रदान, 4. नाम मात्र का-तूँ हे तै नाम देण-लेण का था तूँ हे पराया हो ग्या।

देणदार (पुं.) ऋणी। **देनदार** (हि.)

देणहार (पुं.) देने वाला।

देणा (क्रि. स.) 1. अपनी वस्तु अन्य को सौंपना, 2. त्यागना, 3. दान देना, 4. ठोकना, अंदर डालना, फँसाना या लगाना आदि-बुळध नैं चोर कूण दे दिया, 5. उत्पन्न करना-या गा बाछड़े देण आळी सै, 6. निकालना, उत्सर्जन करना-गा दूध देण लाग गी, 7. आघात

करना, प्रहार करना–दीये रै इसकै दो लाट्ठी, 8. छोड़ना, देकर जाना–आप तै मरग्या पर बाळकाँ नै दुख देग्या, 9. लौटाना; (पुं.) दे. देण। **देना** (हि.)

देणिया (वि.) 1. देने वाला, देनहार, 2. कर्ज़वान।

देन (पुं.) दे. देण।

देना (क्रि. स.) दे. देणा।

देब्बी (स्त्री.) देवी का अवतार; (वि.) सीधी-सादी; **~की कढाई करणा** दुर्गाष्टमी के दिन हलवा आदि बनाना; **~आणा/चढणा** 1. व्यक्ति में देवी का आवेश आने के कारण असाधारण व्यवहार करना, 2. भविष्य वाणी या भूतकाल की बात कहना, 3. ज़िद पर उतारू होना; **~धोकणा** देवी की पूजा करना; ~-**पुत्तर** चोर; **~मंढ मैं आणा** 1. ज़िद छोड़ना, 2. अनुकूल समय आना। **देवी** (हि.)

देर (स्त्री.) विलंब, (दे. वार[2])।

देरी (स्त्री.) विलंब।

देव (पुं.) दे. दे।

देव-ऋषि (पुं.) 1. देवलोक में रहने वाले ऋषि, 2. नारद।

देवकन्या (स्त्री.) देवता की पुत्री, देवी।

देवकी (स्त्री.) श्रीकृष्ण की माता।

देवकीनंदन (पुं.) देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण।

देवठान (स्त्री.) दे. दे ऊठणी ग्यास।

देवता (पुं.) सुर, देव, अशरीरी प्राणी; (वि.) सज्जन।

देवतीरथी (पुं.) रामह्रद, रामराय।

देवदार (पुं.) एक पहाड़ी वृक्ष जिससे तेल भी निकाला जाता है।

देव धरती (स्त्री.) कुरुक्षेत्र। तुल. हरियाणा दे. अड़क।

देवनागरी (स्त्री.) 1. हिंदी भाषा की लिपि, 2. हिंदी भाषा।

देवभाषा (स्त्री.) संस्कृत भाषा।

देवभूमि (स्त्री.) भारत, स्वर्ग।

देवर (पुं.) 1. पति का छोटा भाई, 2. देवर-संबंधी गीत।

देवरा (पुं.) देवालय, मंदिर।

देवरानी (स्त्री.) दे. दुराणी।

देवलोक (पुं.) स्वर्ग।

देवसभा (स्त्री.) 1. देवताओं का समाज, 2. वह सभा जिसे 'मय' ने युधिष्ठिर के लिए बनाया था।

देवांगना (स्त्री.) अप्सरा।

देवा (वि.) 1. दाता, देने वाला, 2. ऋणी, 3. 'लेवा' का विलोम।

देवी (स्त्री.) दे. देब्बी।

देवीपुराण (पुं.) एक उप-पुराण जिसमें देवी का माहात्म्य वर्णित है।

देवीभागवत (पुं.) एक महापुराण।

देश (पुं.) दे. देस।

देश-निकाला (पुं.) दे. देस-लिकाड़ा।

देस (पुं.) 1. प्रांत, 2. प्रदेश, 3. जन्म-स्थान, 4. देश की राजनीतिक सीमा, 5. असंख्य लोग, कटक, 6. हरियाणा। **देश** (हि.)

देसड़ी (स्त्री.) हरियाणवी भाषा, (दे. हरयाणवी)।

देस-लिकाड़ा (पुं.) 1. जन्म-स्थान से बाहर निवास करने का दंड, 2. राजा द्वारा अपनी राजनीतिक सीमाओं से बाहर निकालने का दंड, (दे. दिसोट्टा)।

देसवाळ (पुं.) जाटों की एक उपजाति (ये वर्तमान भारत के मूल निवासी माने जाते हैं)।

देसवाळी (स्त्री.) हरियाणवी भाषा, (दे. हरयाणवी)।

देसी (वि.) दे. देस्सी।

दे-सोणी ग्यास (स्त्री.) आषाढ़ शुक्ल

एकादशी (एक धारणा के अनुसार विष्णु भगवान चार महीने के लिए क्षीरसागर में सो जाते हैं और इन दिनों रजोगुण, तमोगुण की प्रधानता के कारण विवाह-संस्कार नहीं होते)।
देवशयनी एकादशी (हि.)

देस्सी (वि.) 1. देसी, स्थानीय, अपने ही देश, जन्म-भूमि या स्थान से संबंधित, 2. स्थानीय बीज से उत्पन्न उपज जो गुण की दृष्टि से लाभप्रद मानी जाती है, 3. घटिया वस्तु (संभवत: दासता के कारण शब्द-अपकर्ष), 4. भोला-भाला, साधारण और सरल- स्वभाव का; **~खाँड** स्थानीय खाँड; **~खाणा** 1. दाल-रोटी का साधारण शाकाहारी भोजन, 2. घी-दूध का भोजन; **~गुड़** स्थानीय गुड़; **~घी** 1. गाय-भैंस के दूध को बिलो कर निकाला हुआ घी, 2. 'रेल्ली' या वनस्पति घी का विलोम; **~चाल** 1. स्थानीय व्यवहार या रीति-रिवाज़, 2. स्थानीय भाव-भंगिमा में किया जाने वाला नृत्य; **~चीज** 1. स्थानीय वस्तु, स्थानीय उपज, 2. गुणकारी वस्तु; **~दवाई** 1. घरेलू उपचार, 2. आयुर्वेदिक दवाई; **~बाणा** स्थानीय पहनावा; **~बोल्ली** 1. स्थानीय बोली, 2. हरियाणवी, जाट्टू या बाँगरू बोली, 3. प्यारी बोली; **~माणस** 1. अपने प्राँत या पास-पड़ोस का व्यक्ति जिसका खानपान, पहनावा, बोली, विचार आदि समान हों, 2. स्थानीय व्यक्ति, 3. सादा-सरल व्यवहार का व्यक्ति। **देसी** (हि.)

देस्सोहरी (वि.) सारे देश से संबंधित; **~काज** सामूहिक मृत्यु-भोज जिसमें सभी जातियाँ सम्मिलित हों, (दे. काज[1]); **~मींह** व्यापक क्षेत्र में होने वाली वर्षा।

देह[1] (स्त्री.) 1. शरीर, चोला–माणस-देह मुसकिल तैं मिलती किरोड़ाँ बंद छूट कै, 2. योनि; **~धरणा** शरीर धारण करना, जन्म लेना; **~छूटणा** 1. मुक्ति मिलना, 2. मृत्यु होना।

देह[2] (स्त्री.) 1. दे. धेळ। 2. दे. पान्ना, 3. दे. जेह।

देहता (पुं.) जाटों की एक उपजाति।

देहधारी (पुं.) जीव-धारी, शरीर-धारी, प्राणी।

देहली (स्त्री.) 1. दे. दहळी, 2. दे. दिल्ली।

देहळी (स्त्री.) 1. देहलीज, 2. घर; **~उघाणा** चूल्हा-टैक्स इकट्ठा करना; **~पुजणा** परिवार का सम्मान होना; **~बाँटणा** पुत्र-जन्म, विवाह आदि अवसरों पर प्रत्येक घर (देहली) के अनुसार निश्चित धन या मिठाई आदि बाँटना; **~न्योतणा** घरों की गिनती के अनुसार दावत का निमंत्रण देना। **देहलीज** (हि.)

देहली-दीप (पुं.) 1. देहलीज पर रखा दीपक जो भीतर और बाहर प्रकाश फैलाता है, 2. यमदीप।

देहांत (पुं.) मृत्यु।

देहात (पुं.) दे. दिहात।

देहाती (वि.) दे. दिहात्ती।

देही (स्त्री.) शरीर; **~कणताणा** शरीर टूटना; **~छोडणा** 1. हिम्मत हारना, 2. मरना; **~जुड़णा** गठिया बाय (वात) के कारण शरीर जुड़ना; **~मैं गुळझट पड़णा** बुढ़ापा आना; **~साधणा** शरीर को वश में रखना; **~हरी होणा** चित्त प्रसन्न होना।

दैया (पुं.) 1. देवता, ईश्वर। उदा.–टेर सुणैंगे गरीब की दैया। 2. आश्चर्य या सूचना बोधक शब्द। दे. दई देवता।

दैवयोग (पुं.) संयोग।

दैवी (वि.) 1. देवता-संबंधी, 2. आकस्मिक, 3. प्राकृतिक।

दों (स्त्री.) आग, जंगल की अग्नि, दावानल। **दावानल** (हि.)

दोंगड़ा (पुं.) हल्की वर्षा। **दवंगरा** (हि.)

दो (वि.) दो की संख्या; (क्रि. स.) 'देणा' क्रिया का आदे. रूप; **~चून के भी बुरे** एक से दो सदा श्रेष्ठ ठहरते हैं; **~तिल आगला** हर हिसाब से श्रेष्ठ; **~धेल्ले का** 1. हर प्रकार से सस्ता, 2. असम्मानित व्यक्ति; **~-दो अर चोपड़ी** दो-दो लाभ उठाना; **~-दो होणा** आमना-सामना होना; **~बर की** अन्न के तोल के बदले दुगनी वस्तु मिलना।

दोख[1] (पुं.) दोष।

दोख[2] (पुं.) नरक, दोज़ख।

दोखड़ (वि.) वह पशु (गाय) जो दोनों समय दूध दे।

दोखड़ा (स्त्री.) दो बैलों की गाड़ी।

दोगड़ा (पुं.) दे. दोंगड़ा।

दोगला (वि.) 1. दो प्रकार का व्यवहार करने वाला, 2. चुगलख़ोर, 3. वर्ण-संकर।

दोगल (वि.) दे. दोगला।

दोघड़ (स्त्री.) 1. सिर पर घड़े के ऊपर रखा हुआ घड़ा, 2. पानी के मटके जो एक पर एक रखे हों; **~आणा** शुभ शकुन होना; **~पूजणा** पुत्र- उत्पत्ति के बाद जच्चा द्वारा दोघड़ पूजने की रस्म अदा करना।

दोज (स्त्री.) पक्ष की दूसरी तिथि; **~का चाँद** कभी-कभी दिखाई पड़ने वाला व्यक्ति। **दूज** (हि.)

दोजख (पुं.) मुसलमानों के धर्म के अनुसार एक नरक, (दे. दोख[2])।

दोजवार (पुं.) धानकों की एक उपजाति।

दोझा (पुं.) दूध बेचने वाला। दे. दूधिया।

दोड़ (स्त्री.) दौड़; (क्रि. अ.) 'दोड़णा' क्रिया का आदे. रूप।

दोड़णा (क्रि. अ.) दे. भाजणा। **दौड़ना** (हि.)

दोतरफ़ा (वि.) दोनों तरफ़ का; (क्रि. वि.) दोनों ओर।

दोत्यी (स्त्री.) वह भूमि जिसमें वर्ष में दो फसल होती हों।

दोत्राळी (स्त्री.) दे. दुताळी।

दोथण (वि.) (पशु) जो केवल दो थनों से दूध दे (चार से नहीं)।

दोना (पुं.) दे. डोन्ना।

दोनों (पुं.) दे. दोन्नूँ।

दोन्नूँ (वि.) उभय; **~बखत मिल्याँ** संध्याकाल (मुख्यत: सूर्यास्त)। **दोनों** (हि.)

दोपहर (स्त्री.) दे. दोफाहरा।

दोफाहरा (पुं.) दोपहर का समय, मध्याह्न-काल; **~करणा** प्रात: कालीन कार्य में विलंब करना।

दोफाहरी (स्त्री.) दे. दोफाहरा।

दोबल (पुं.) दे. छेक्का।

दोबळधा (वि.) जिसमें दो बैल जुतें।

दोबारा (क्रि. वि.) दे. दुबारा।

दोमंज़िला (वि.) दे. दुमंजला।

दोमुँहा-साँप (पुं.) दे. दमूही।

दोरंगी (विं.) दे. दुरंगी।

दोर-जिठाणी (स्त्री.) देवरानी तथा जेठानी।

दोरड़ा (पुं.) दे. दोलड़ा।

दोरा (पुं.) 1. चक्कर, 2. फेरी, गश्त, 3.

रोग का अतिशय प्रभाव, यथा–मिरगी आदि। **दौरा** (हि.)

दोराणी (स्त्री.) दे. दुराणी।

दोलड़ (वि.) 1. दो रस्सियों से बनाया हुआ, 2. दो तह वाला; (पुं.) औज़ार के टेढ़े होने की स्थिति, टेढ़ापन; **~करणा** 1. रस्सी, वस्त्र आदि की दो तह करना, 2. चरख़े के ताकू को टेढ़ा करना, 3. इतना पीटना कि शरीर सिकुड़ जाए या टेढ़ा हो जाए, अधिक पिटाई करना; **~होणा** 1. चरखे के ताकू में बल पड़ना, 2. औज़ार का टेढ़ा-मेढ़ा होना।

दोलड़ा (पुं.) पुराने लोगड़ के मोटे सूत से बनाया गया वस्त्र (यह वस्त्र सामूहिक मिलन के अवसरों पर बिछाने के काम भी आता है), 1. (दे. धोर), 2. (दे. खरड़); (वि.) दो लड़ों वाला, **~(-ड़े) का राछ** 1. मज़बूत चीज़, 2. बहु-उपयोगी वस्तु।

दो लाँग की धोत्ती (स्त्री.) दे. धोत्ती।

दोल्ली (वि.) मस्त, मोटा-ताज़ा व्यक्ति; **~-मोल्ली** मस्त व्यक्ति।

दोवाँ (वि.) दो, भार तोलते समय दो की संख्या बोलने का एक ढंग, गिनती बोलने का एक ढंग, जैसे–दो कूँ दोवाँ।

दोष (पुं.) दे. दोस।

दोषी (वि.) दे. दोस्सी।

दोस (पुं.) 1. कमी, 2. कलंक, 3. अभाव, 4. अपराध, 5. पाप; **~काढणा/लिकाड़णा** 1. दोष धरना, 2. दोष दूर करना; **~धरणा/लाणा** 1. कमी निकालना, 2. दोषारोपण करना। **दोष** (हि.)

दोसणा (क्रि.) दोषी मानना या ठहराना। उदा.–हे तू अणदोस्सी नै दोस्सैगी, या तेरी बढ़ती बेल मोसैगी। (लचं)

दोसीगढमुक्तेश्वर (पुं.) प्रायश्चित के लिए गंगा के निकट का एक तीर्थ।

दोस्त (पुं.) मित्र, यार।

दोस्ताना (पुं.) मित्रता।

दोस्ती (स्त्री.) मित्रता।

दोस्सर (वि.) दो बार जोती गई (भूमि); **~करणा** खेत दो बार जोतना; **~पणमेस्सर** दो बार जुती भूमि परमेश्वर के समान लाभकारी होती है।

दोस्सी (वि.) 1. कसूरवार, 2. अपराधी, 3. पापी, 4. अभियुक्त। **दोषी** (हि.)

दोहणा (क्रि. स.) 1. पशु का दूध निकालना, 2. सार-भाग निकालना।

दोहणी (स्त्री.) दूध दुहने का पात्र। **दोहनी** (हि.)

दोहता (पुं.) दे. धेवता।

दोहन (स्त्री.) महेन्द्रगढ़ के निकट ढोसी तीर्थ पहाड़ी पर बहने वाली एक नदी।

दोहना (क्रि. स.) दे. दोहणा।

दोहनी (स्त्री.) दे. दोहणी।

दोहर (स्त्री.) दे. धोर।

दोहरा (वि.) दे. दोहर्याँ।

दोहराना (क्रि. स.) दे. दुहराणा।

दोहा (पुं.) स्वाँग का एक छंद जो मानक मात्रिक छंद दोहा पर पूर्ण घटित नहीं होता।

दोहर्याँ (वि.) दो परत का; **~करणा** 1. दो तह या परत करना, 2. लचीली वस्तु के दोनों सिरे मिलाना, 3. अधिक पीटना, अकड़ निकालना, 4. चरखे के ताकू आदि को मोड़ना; **~धोत्ती** मर्दानी धोती बाँधने का एक ढंग जिसमें धोती दो तह करके तथा दो लाँग छोड़ कर बाँधी जाती है (यह धोती अभिमानी स्वभाव का द्योतक है); **~मार** दुगनी हानि। **दोहरा** (हि.)

दोहळी (स्त्री.) खेत जो यजमान अपने कुल के ब्राह्मण को दान में देता है और उसका भूमि-कर भी स्वयं देता है, दक्षिणा में दी गई भूमि; **~बकसणा** दक्षिणा में भूमि का खंड देना।

दोहा (पुं.) एक प्रसिद्ध छंद।

दौड़[1] (स्त्री.) दे. दोड़।

दौड़[2] (स्त्री.) संगीत की एक तर्ज या छंद। दे. दौड़।

दौड़धूप (स्त्री.) परिश्रम, प्रयत्न।

दौड़ना (क्रि. अ.) दे. भाजणा।

दौर (पुं.) 1. चक्र, फेरा, 2. प्रभाव, प्रताप, 3. बारी, पारी, 4. बार, दफ़ा।

दौरड़ा (पुं.) दे. दोलड़ा।

दौरा (पुं.) दे. दोरा।

दौलतख़ाना (पुं.) निवास-स्थान (आदरार्थ प्रयोग)।

दौलतमंद (वि.) धनी।

द्यूतसेन (पुं.) शाल्व देश के राजा सत्यवान के पिता।

द्यो (क्रि.) 1. देने का भाव या क्रिया। उदा. –या चीज मन्नै द्यो। 2. उदा.–होण द्यो (होने दो)

द्योतक (वि.) बताने वाला, सूचक।

द्योर (पुं.) दे. देवर; (स्त्री.) देवरानी, जैसे–द्योर-जिठाणी।

द्योराणी (स्त्री.) दे. दुराणी।

द्रव (पुं.) रस; (वि.) 1. तरल, 2. गीला, 3. पिघला हुआ।

द्रविड़ (पुं.) दे. द्रावड़।

द्रव्य (पुं.) दे. दरब।

द्रष्टा (वि.) 1. साक्षात् करने वाला, 2. देखने वाला।

द्राक्ष (स्त्री.) दे. दाख।

द्रावड़ (पुं.) 1. द्रविड़-जाति, 2. द्रविड़-जाति का व्यक्ति; (वि.) द्रविड़-जाति से संबंधित।

द्रुपद (पुं.) महाभारत काल में पांचाल देश के राजा और द्रौपदी के पिता।

द्रोण (पुं.) द्रोणाचार्य जो कौरवों और पांडवों के गुरु थे।

द्रोणमुख (पुं.) कई खापों का समूह, (दे. खाप)।

द्रोह (पुं.) वैर, द्वेष।

द्रोही (वि.) द्रोह करने वाला।

द्रौपदी (स्त्री.) दे. दरोपती।

द्वंद्व-युद्ध (पुं.) 1. वह लड़ाई जो दो पुरुषों के मध्य हो, 2. कुश्ती।

द्वादशी (स्त्री.) दे. दवादसी।

द्वापर (पुं.) चार युगों में से तीसरा युग।

द्वार (पुं.) दरवाज़ा।

द्वारका (स्त्री.) दे. दवारका।

द्वारकाधीश (पुं.) श्रीकृष्ण।

द्वारकानाथ (पुं.) श्रीकृष्ण।

द्वारपाल (पुं.) दरबान, (दे. पोळिया)।

द्वारदान (पुं.) वह टोटका जिसमें ऊपर के दाँत पहले आने पर भानजे के द्वार पर उसका मामा अनबोल मिठाई आदि रखकर लौट जाता है।

द्वारा (अव्य.) जरिए से, साधन से।

द्विज (पुं.) ब्राह्मण।

द्वितीया (स्त्री.) दे. दोज।

द्विवेदी (पुं.) 1. ब्राह्मणों का एक गोत्र, 2. दूबे ब्राह्मण।

द्वीप (पुं.) टापू।

द्वेष (पुं.) वैर, ईर्ष्या।

द्वेषी (वि.) ईर्ष्या रखने वाला।

द्वैपायन (पुं.) 1. गंगा के एक टापू में पैदा हुए व्यास जी जिन्होंने महाभारत और पुराणों की रचना की, 2. एक ह्रद या ताल जिसमें कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योध न भाग कर छिपा था।

ध

ध हिंदी वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण–स्थान दंत-मूल है, हरियाणवी में इसका उच्चारण तालू और दंत-मूल के बीच है।

धंदा (पुं.) 1. कारोबार, व्यवसाय, 2. कार्य, 3. रोज़गार, छोटा रोज़गार; **~फूँकणा** अन्यमनस्क भाव से काम करना। **धंधा** (हि.)

धँधकणा (क्रि. अ.) दे. धधकणा।

धंधा (पुं.) दे. धंदा।

धँबोड़ा (पुं.) एक नृत्य, (दे. घमोड़ा)।

धँसणा (क्रि. अ.) 1. कीचड़ में फँसना, (दे. सनणा), 2. धसकना।
धँसना (हि.)

धँसना (क्रि. अ.) दे. धँसणा।

धँसा (पुं.) 1. धँसने का भाव या क्रिया, 2. दलदल–गाड़ी धँसा मैं आगी।
धँसाव (हि.)

धँसाणा (क्रि. स.) धसाना। **धसाना** (हि.)

धँसाना (क्रि. स.) दे. धँसाणा।

धई-धाम (पुं.) देवी का धाम, मंदिर; **~धोकणा/पूजणा** विवाह के बाद वधू के पति–गृह आने पर दंपति द्वारा गाँव के मंदिर में जाकर देवी की पूजा करना। **देवी-धाम** (हि.)

धक (स्त्री.) 1. छोटी जूँ या लीक, 2. हृदय की धड़कन से उत्पन्न ध्वनि, 3. धक-धक की ध्वनि; (क्रि. अ.) चल, चलो; (क्रि. वि.) अचानक–धक दणे सी आबड़्या **~दे सी होणा** 1. अचानक कोई घटना घटित होना, 2. कलेजा धड़कना।

धकणा (क्रि. स.) धकना, धकेलना–मेळे में आच्छी- भूँड्डी सब चीज धक ज्याँघी; (क्रि. अ.) 1. जैसे-तैसे निभना, 2. चलना, पिलना, 3. हर आदेश का पालन होना।

धकधकाणा (क्रि. अ.) 1. तेज़ी से जल उठना, 2. बेरोक-टोक या निडर भाव से आचरण करना, 3. धक-धक की ध्वनि होना, 4. दिल धड़कना।
धकधकाना (हि.)

धकधकाना (क्रि. अ.) दे. धकधकाणा।

धकधकाया (क्रि. वि.) निडरता के साथ–कुत्ता धकाधकाया घराँ बड़ग्या।

धकधकी (स्त्री.) निडर होकर आगे बढ़ने का भाव या क्रिया, (दे. दगदगी)।

धकाणा (क्रि. स.) दे. धिकाणा।
धकेलना (हि.)

धकाधक (स्त्री.) 1. 'धक'-'धक' की ध्वनि, 2. 'धक'-'धक' की आवाज़ से चलने या दौड़ने की क्रिया; (क्रि. वि.) जल्दी-जल्दी, जल्दी से।

धकेलना (क्रि. स.) दे. धिकाणा।

धक्का (पुं.) 1. धक्का देने या ठेलने की क्रिया, 2. टक्कर, 3. मानसिक आघात, 4. झटका; **~(–क्के) खाणा** 1. समय नष्ट करते फिरना, 2. मारा-मारा फिरना, 3. निठल्ला घूमना; **~(–क्के) खाणी** कुलटा; **~देणा** 1. घर से बाहर निकालना, 2. मानसिक आघात पहुँचाना, 3. धोखा देना, 4. व्यापार में हानि पहुँचाना, 5. अपमानित करना, 6. बला टालना; **~-पेल** 1. धकापेल, आगे-पीछे ठेलने का भाव या क्रिया,

2. धींगा-मस्ती, 3. अव्यवस्था या अराजकता की स्थिति; ~-**मुक्की** 1. भीड़ के कारण आगे-पीछे ठेलने की क्रिया, 2. भीड़ के कारण एक-दूसरे के शरीर से टकराने का भाव।

धखे (अव्य.) 1. सचेत करने या ध्यान आकृष्ट करने के लिए प्रयुक्त संबोधन, देखो, सुनो, 2. अरे, 3. डराने के लिए प्रयुक्त संबोधन।

धग्गड़ (वि.) 1. निडर, 2. निर्लज्ज।

धचका (पुं.) झटका।

धचकाणा (क्रि. स.) 1. कोमल वस्तु में कठोर वस्तु को डालना, 2. लचकाना, (दे. लरजाणा)।

धचकी (स्त्री.) दे. दचकी।

धज (पुं.) दे. धजा।

धजा (पुं.) 1. झंडा, पताका, 2. धार्मिक झंडा; ~**ठाणा/गाडणा** बीड़ा उठाना। **ध्वजा** (हि.)

धजा नारियळ (पुं.) देवी पूजा की सामग्री।

धज्जी (स्त्री.) कपड़े, कागज़ आदि के टुकड़े जो गूँथ कर सजावट के काम लाए जाते हैं; ~**उडाणा** 1. अपमान करना, 2. तार-तार करना, 3. बखिया उधेड़ना।

धड़ंग (वि.) नंगे बदन; **नंग**~ दे. नंग-धड़ंग।

धड़ (पुं.) 1. गरदन से नीचे और पैरों से ऊपर का भाग, 2. शरीर, 3. छाती, 4. साँस; (स्त्री.) धड़ाम की ध्वनि; ~**चढणा** छाती फूलना-हँस-हँस कै धड़ चढगे।

धड़क (स्त्री.) 1. धड़कन, हृदय का स्पंदन, 2. भय।

धड़कणा (क्रि. अ.) 1. हृदय-गति का असामान्य स्थिति से चलना, 2. दिल घबराना, 3. सशंकित होना-मेरा दिल पहल्याँ ए धड़क ग्या था। **धड़कना** (हि.)

धड़कना (क्रि. अ.) दे. धड़कणा।

धड़का (पुं.) 1. डर, भय, 2. आशंका, 3. हृदय-रोग जिसमें दिल तेज़ी से धड़कता है; ~**लागणा** दिल का तेज़ी से धड़कना।

धड़धड़ाणा (क्रि. अ.) धड़कना, धक-धक करना, धड़-धड़ की ध्वनि उत्पन्न होना।

धड़ल्ला (क्रि. वि.) 1. निडरता के साथ, 2. बेधड़कपन के साथ, 3. बेरोक-टोक।

धड़शीश (पुं.) धड़ और सिर।

धड़ा[1] (पुं.) 1. समान विचारधारा के लोगों की टोली, समकक्ष, 2. मोहल्ला, 3. टोली, पक्ष; ~**भाहर्‌या होणा** पलड़ा भारी होना।

धड़ा[2] (पुं.) तराजू की डंडी को बराबर या सम करने के लिए पलड़े में रखा गया बाट या भार, पासंग, पसंगा; ~**करणा** वस्तु के बराबर का भार दूसरे पलड़े में रखना।

धड़ाका (पुं.) दे. धड़ाक्का।

धड़ाक्का (पुं.) धड़-धड़ की ध्वनि।

धड़ाधड़ (क्रि. वि.) जल्दी-जल्दी, शीघ्रता से; (स्त्री.) धड़-धड़ की ध्वनि; ~**बिकणा** हाथों हाथ बिकना।

धड़ाबंदी (स्त्री.) पार्टीबाजी।

धड़ाम (स्त्री.) ऊपर से कूदने या गिरने की ध्वनि; (क्रि. वि.) धम से, धम की ध्वनि के साथ।

धड़ी (स्त्री.) 1. पाँच सेर भार, 2. पाँच सेर का बट्टा; (वि.) पाँच सेर भार का; ~-**पक्का** 1. लगभग पाँच सेर भार का, 2. पूरे पाँच सेर का।

धड़ूकणा (क्रि.) गर्जन करना, गुर्राना। दे. टाडणा।

धण (स्त्री.) 1. वधू, 2. युवती—जो पथवारी नैं चरचैगी पीळी, वो धण सदा सुहाग्गण हो राम (लो. गी.), 3. स्नेहपात्रा।

धणवाणा (क्रि. स.) पशु (गाय) को गाभिन करवाना।

धणा (पुं.) स्थान जहाँ से कुम्हार चिकनी मिट्टी प्राप्त करता है—चकबंधी मैं कुम्हाराँ ताँही कुम्हार धणे दिए गए।

धणाणा (क्रि. स.) 1. मादा पशु (गाय) को गाभिन कराना, 2. (दे. बूहणा)।

धणियाँ (पुं.) एक मसाला। **धनिया** (हि.)

धणी (पुं.) 1. धनी, 2. पति, स्वामी; (वि.) 1. धनवान, 2. जिम्मेदार (व्यक्ति), मुखिया, 3. किसी विद्या का ज्ञानी, दक्ष-हस्त, सिद्ध-हस्त; **~गुसाईं** स्वामी, मालिक।

धत (स्त्री.) तिरस्कार-बोधक शब्द; **~तेरे की** छी: छी:।

धतूरा (पुं.) 1. एक पौधा जिसके बीज मादकता देने वाले होते हैं, 2. एक बाजा, (दे. धुतारा)।

धतूरिया चिलम (स्त्री.) धतूरा रख कर पीने की सुल्फी।

धथूरा (पुं.) दे. धतूरा।

धधक (स्त्री.) 1. जलने की क्रिया, 2. ललक, घनीभूत इच्छा।

धधकणा (क्रि. स.) 1. दहकना, 2. क्रोधित होना; (वि.) जो शीघ्र धधक उठे। **धधकना** (हि.)

धधकना (क्रि. अ.) दे. धधकणा।

धधका (पुं.) 1. दहकने की क्रिया, 2. गरमी; (क्रि. स.) 'धधकणा' क्रिया का आदे. रूप।

धनंजय (पुं.) अर्जुन का एक नाम।

धन[1] (पुं.) 1. रुपया-पैसा, 2. पशु-धन, 3. मूल पूँजी।

धन[2] (स्त्री.) 1. प्रशंसा या बड़ाई, 2. बड़ाई का पात्र। **धन्य** (हि.)

धन[3] (स्त्री.) दे. धण।

धनक (पुं.) एक प्रकार की ओढ़नी।

धनकणा (क्रि. अ.) धन-धन की ध्वनि निकलना।

धनकुबेर (पुं.) धन का देवता, कुबेर; (वि.) धनी।

धन-तेरस (स्त्री.) कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी (इस दिन घरों में बड़ा दीया (यम दीप) जलाया जाता है और लोग पीतल के बर्तन खरीदते हैं), इसी दिन धनवंतरी जयंती मनाई जाती है।

धन-धन (स्त्री.) सुयश का कार्य, प्रशंसनीय कार्य; **~करणा** कृतार्थ करना।

धनधान (पुं.) धन और अन्न आदि।

धनपत (पुं.) (1914-1979) निदाना (रोहतक) का एक साँगी।

धनपत राज (पुं.) कुबेर।

धनपति (पुं.) धनवान, कुबेर के समान धनवान।

धनवंत (वि.) धनवान।

धनवान (वि.) धनी।

धनस (पुं.) 1. इंद्रधनुष, 2. तीर-कमान। **धनुष** (हि.)

धनसधारी (पुं.) 1. धनुषधारी, 2. धानक जाति का व्यक्ति।

धनस-बा (पुं.) एक रोग जिसमें शरीर अकड़ जाता है, टैटनस।

धनाढ्य (वि.) धनी, अमीर।

धनिया (पुं.) दे. धणियाँ।

धनिष्ठा (स्त्री.) सताइस नक्षत्रों में से एक।

धनी (वि.) दे. धणी।

धनुष (पुं.) दे. धनस।

धन्न (अव्य.) धन्य।

धन्ना (वि.) धनी।

धन्ना-जाट (पुं.) जाट जाति का एक भगवत् भक्त (जनश्रुति के अनुसार इन्होंने पशु-पक्षियों को जवार खिला दी और बीज के स्थान पर भगवान का नाम लेकर कंकर बीज दिए किंतु जवार के पौधे ही उगे)।

धन्ना-सेठ (पुं.) धनी व्यक्ति।

धन्य (वि.) 1. प्रशंसा या बड़ाई के योग्य, 2. पुण्यवान।

धन्यवाद (पुं.) 1. साधुवाद, शाबाशी, 2. शुक्रिया।

धनवंतरी (पुं.) देवताओं के वैद्य।

धपकणा (क्रि. स.) 1. लपकना, पकड़ना, 2. कंटू के खेल के समय कंकड़ लपकना। **धपना** (हि.)

धपाई (स्त्री.) 1. दे. छिकाई, 2. अधपई, आधे पाव का बाट; (वि.) आधापाव भार का।

धपैरी (स्त्री.) दोपहर।

धप्प (पुं.) 1. खेल में वस्तु को छू लेने की क्रिया या भाव, 2. धप की ध्वनि; **~करणा** लक्ष्य को छूकर बाजी जीतना।

धप्पक-धाँई (स्त्री.) बच्चों का एक खेल जिसमें वे बाजी देने वाले के बिना स्पर्श हुए लक्ष्य को छूते हैं।

धप्पा (पुं.) दे. धप्प।

धब्बा (पुं.) 1. दाग़, 2. लाँछन, (दे. बट्टा[1])

धमक (स्त्री.) 1. ठुमक, नाच, 2. पैर की आहट, 3. धमकने की क्रिया; (क्रि. स.) 'धमकणा' क्रिया का प्रे. रूप।

धमकणा (क्रि. अ.) 1. उपस्थित हो जाना, 2. धमाका होना; (वि.) जो धमक सके। **धमकना** (हि.)

धमकना (क्रि. अ.) दे. धमकणा।

धमकाणा (क्रि. स.) झिड़की देना। **धमकाना** (हि.)

धमकाना (क्रि. स.) दे. धमकाणा।

धमकी (स्त्री.) 1. डाँट-डपट, भय या त्रास दिखाने का भाव, 2. आँगिक या सांकेतिक भय; (क्रि. अ.) 'धमकणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; (क्रि. स.) 'धमकाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

धमड़ा (पुं.) 1. दे. दमड़ा, 2. दे. दमड़ी, 3. दे. दमड़का।

धमणा (क्रि. स.) 1. दौड़ाना–इसी साइकल धम्मी अक लिकड़ भाज्या, 2. नष्ट करना, जैसे– फूकणा-धमणा। **धमना** (हि.)

धमनी (स्त्री.) नस, नाड़ी।

धमसाल (स्त्री.) धर्मशाला, (दे. धरमसाळा)।

धमाका (पुं.) दे. धमाक्का।

धमाक्का (पुं.) 1. धमाके की ध्वनि, 2. रहस्योद्घाटन। **धमाका** (हि.)

धमा-चौकड़ी (स्त्री.) उछल-कूद, भाग-दौड, ऊधम-मस्ती।

धमाळ[1] (पुं.) 1. बड़ा ढोल, (दे. ढपड़ा), 2. वसंत ऋतु का एक अहीरवाटी नृत्य। **धमाल** (हि.)

धमाळ[2] (वि.) 1. धूल युक्त, धूल- धूसरित, 2. भारी-भरकम; **धूळिया~** धूल से लथपथ।

धमोड़ा (पुं.) 1. सादा नृत्य, 2. चक्की को घुमाने की क्रिया, 3. आने-जाने का चक्कर; **~मारणा** 1. नाचना, 2. चक्की घुमाना।

धम्म (स्त्री.) धमाके की ध्वनि; (क्रि. वि.) धम की ध्वनि के साथ–वो धम्म देणी पड़्या। **धम** (हि.)

धम्मल (वि.) 1. मोटा, 2. धम-धम की ध्वनि से चलने वाला।

धम्मा-धम (स्त्री.) धम-धम की ध्वनि। **धमाधम** (हि.)

धरक (स्त्री.) 1. कतरन, कपड़े आदि का छोटा टुकड़ा, 2. फटन;(क्रि.स.) 'धरकणा' क्रिया का आदे. रूप।

धरकणा (क्रि. स.) 1. फाड़ना, 2. छोटे-छोटे टुकड़े करना; (क्रि. स.) पुराने कपड़े का स्वत: फटना।

धरकार (स्त्री.) धिक्कार।

धरड़ (स्त्री.) कपड़ा फाड़ते समय उत्पन्न ध्वनि।

धरड़णा (क्रि. स.) कपड़े आदि को बेतरतीबी से फाड़ना।

धरण (स्त्री.) 1. नाभि के पास की एक नस जिसके अपने स्थान से हिलने से उदर-पीड़ा होती है, 2. पृथ्वी, धरणी, 3. रहन रखी वस्तु; **~ठाणा** नाभि की समीपस्थ नस को पुन: पूर्व-स्थिति में लाना; **~डिगणा** नाभि की नस का अपने स्थान से हटना, नाप डिगना। **धरन** (हि.)

धरणा (क्रि. स.) 1. रखना, 2. (बालक को कब्र में) दबाना, 3. गिरवी रखना, 4. धर पटकना, 5. लाठी मारना; (पुं.) हठ, धरना देने का भाव; **~देणा/मारणा** हठ करके बैठना। **धरना** (हि.)

धरणिया (वि.) रखने वाला, जैसे–नाँम का धरणिया।

धरणी (स्त्री.) धरती, पृथ्वी; **~-धर** राजा।

धरती (स्त्री.) 1. पृथ्वी, 2. खेत–तेरै धोरै कितणी धरती सै, 3. पृष्ठ-भूमि, जैसे–ओढणे के धरती तै थी पीळी उस पै काढ दिए लाल फूल, 4. वस्त्र के ताने का पूर; **~आणा** वर्षा के बाद भूमि जोतने योग्य होना; **~उथळणा/उलटणा** अनोखा काम करना; **~काटणा** 1. व्यर्थ का जोश दिखाना, 2. पशु का खूँटे पर चक्कर लगाना; **~खोदणा** 1. आचार-विरुद्ध कार्य करना, 2. दर्प प्रदर्शित करना; **~धरणा** पृथ्वी रहन रखना; **~पाड़णा** 1. अनोखा काम करना, 2. दर्प प्रदर्शित करना।

धरन (स्त्री.) दे. धरण।

धरना (क्रि. स.) दे. धरणा; (पुं.) दे. धरणा।

धर-पकड़ (स्त्री.) गिरफ्तार करने की क्रिया।

धरम (पुं.) 1. पुण्य का काम, 2. धर्म-संबंधी काम, 3. सत्य, 4. गुण, स्वभाव –सबका अपणा-अपणा धरम हो सै, 5. कर्तव्य–सास-बहू नैं अपणा- अपणा धरम निभाणा चाहिए, 6. संप्रदाय, जैसे–हिंदूधर्म; **~कमाणा** 1. पुण्य अर्जन करना, 2. परोपकार करना; **~करणा** वर्षा न होने अथवा अन्य प्राकृतिक प्रकोप से बचने के लिए धार्मिक अनुष्ठान करना; **~के थाँभ हलाणा** घोर अनैतिक कार्य करना; **~बिगाड़णा** 1. धर्मच्युत होना, 2. धर्म-भ्रष्ट करना; **~-बेल सदा हरी** पुण्य क्षीण नहीं होता, कर्म अमर है; **~भिस्टळ करणा** 1. अखाद्य वस्तु खिलाना, 2. धर्म-भ्रष्ट करना। **धर्म** (हि.)

धरम की माँ (स्त्री.) 1. मौसी। 2. धर्म माता।

धरम धजी (पुं.) दे. धरम धजा।

धरम-ताकड़ी (स्त्री.) 1. धर्मराज का काँटा, 2. धर्म-काँटा।

धरम-धजा (स्त्री.) धर्म-ध्वजा; **~ठाणा** धर्म प्रचार के लिए निकलना। **धर्म-ध्वजा** (हि.)

धरम पल्ला (पुं.) जिस कपड़े पर जुआ खेला जाता है।

धरम-भाण (स्त्री.) धर्म-बहिन।

धरमराज (पुं.) 1. युधिष्ठिर, 2. यम, 3. न्यायाधीश। **धर्मराज** (हि.)

धरमसाळा (स्त्री.) यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मार्थ बनवाया गया भवन। **धर्मशाला** (हि.)

धरमाद्दा (पुं.) व्यापार के लाभांश से धार्मार्थ निकाला गया धन; **~काढणा** पूँजी से धर्मार्थ धन निकालना।

धरमीं (वि.) धार्मिक व्यक्ति, धर्म करने वाला। **धर्मी** (हि.)

धरळ-धरळ (क्रि. वि.) 'धरळ'-'धरळ' की ध्वनि के साथ।

धरवाणा (क्रि. स.) 1. रखवाना, 2. रुपया-पैसा छीनना, 3. गिरवी रखवाना, 4. पूजा के स्थान पर पैसे आदि रखवाना, 5. सिर से बोझा उतरवाना, 6. एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर रखवाना। **धरवाना** (हि.)

धरवाना (क्रि. स.) दे. धरवाणा।

धरस (पुं.) लंबाई विशेष का खेत। दे. पट्टी।

धरवै (वि.) निकट। दे. धोरै।

धरा (स्त्री.) 1. धरती, पृथ्वी, 2. पूजा के लिए निकाली गई वस्तु।

धराई (स्त्री.) 1. धरवाने या रखवाने की क्रिया, 2. वह वस्तु जो रुपया उधार देने के बदले रखी जाती है; (क्रि. स.) 'धराणा' क्रिया का भू. का. स्त्रीलिं. रूप; **नाम~** वह दक्षिणा जो नामकरण करने वाले को दी जाती है।

धराकड़ा (वि.) 1. धर्म-भ्रष्ट, धर्मच्युत, 2. आचरण-हीनता के कारण धर्म या बिरादरी से निकाला हुआ (व्यक्ति), जातिच्युत।

धराणा (क्रि. स.) दे. धरवाणा।

धरा पकड़ (स्त्री.) दे. पकड़ धकड़।

धरू (पुं.) 1. ध्रुव तारा जो ध्रुव भक्त की अटल भक्ति का प्रतीक माना जाता है (जनधारणा के अनुसार यह तारा मृत्यु से छः महीने पूर्व दिखाई देना बंद हो जाता है), 2. ध्रुवभक्त; (वि.) अटल। **ध्रुव** (हि.)

धरोड़ (स्त्री.) धरोहर।

धरोहर (पुं.) कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय परिसर में स्थापित संग्रहालय।

धर्म (पुं.) दे. धरम।

धर्म-कर्म (पुं.) 1. धार्मिक दृष्टि से करणीय काम, 2. पुण्य।

धर्म-क्षेत्र (पुं.) 1. कुरुक्षेत्र, 2. भारत-भूमि, 3. धर्म-स्थल, 4. हरियाणा।

धर्म-ग्रंथ (पुं.) धार्मिक पुस्तक।

धर्मचक्र (पुं.) भारत के राज-चिह्नों में प्रयुक्त चक्र जिसका संबंध महात्मा बुद्ध से है।

धर्मतुला (स्त्री.) धर्म काँटा।

धर्मथली (स्त्री.) धर्मस्थली।

धर्मधाम (पुं.) सढोरा स्थान।

धर्मधुरी (स्त्री.) अग्रोहा के लिए प्रयुक्त सम्मानबोधक शब्द।

धर्मभूषण (पुं.) एक सम्मानार्थ उपाधि।

धर्म महतारी (स्त्री.) धर्ममाता।

धर्म-युद्ध (पुं.) धर्म-रक्षार्थ किया जाने वाला युद्ध।

धर्मराज (पुं.) दे. धरमराज।
धर्मशास्त्र (पुं.) धार्मिक ग्रंथ।
धर्मात्मा (पुं.) धर्म के अनुसार आचरण करने वाला व्यक्ति; (वि.) धर्मशील, धार्मिक।
धर्मार्थ (क्रि. वि.) केवल धर्म या पुण्य के उद्देश्य से, परोपकार के लिए।
धर्मी (वि.) दे. धरमीं।
धर्मोपदेशक (पुं.) धर्म का उपदेश देने वाला, धर्म-प्रचारक।
धर्र (स्त्री.) धर्र-धर्र की ध्वनि।
धर्राटा (पुं.) दे. धर्र।
धर्राणा (पुं.) 1. धर--धर की आवाज गुंजरित होना, 2. तीव्र गति से चलने का भाव।
धलीज (स्त्री.) देहलीज।
धवलगिरि (स्त्री.) हिमालय पर्वत की एक प्रसिद्ध चोटी।
धवाणा (क्रि. स.) 1. धुलवाना, 2. तेज़ाब से आभूषण साफ़ करवाना। **धुलाना** (हि.)
धसक (स्त्री.) 1. खाँसी की ठसक, 2. सूखी खाँसी, 3. मिर्च आदि की गंध से उठने वाली खाँसी या धाँस; **~ऊठणा** 1. सूखी खाँसी होना, 2. धाँस आना।
धसकणा (क्रि. अ.) 1. धँसना, 2. नीचे गिरना, 3. पशु का हलके-हलके खाँसना, 4. पशु का चलते-चलते बैठ जाना, 5. आचरण भ्रष्ट होना। **धसकना** (हि.)
धसकना (क्रि. अ.) दे. धसकणा।
धसका (पुं.) दे. धसक।
धसणा (क्रि. अ.) दे. धँसणा।
धसमाँ (वि.) अंदर धँसी हुई (आँख आदि)।
धाँई (स्त्री.) 1. बच्चों के खेल में लक्षित वस्तु को छूने की क्रिया, 2. दहाई; **~करणा** खेल में लक्षित वस्तु को छूना।
धाँई-धप्प (पुं.) बच्चों का एक खेल जिसमें वे लक्षित स्थान का स्पर्श करते हैं।
धाँई-माई (स्त्री.) बच्चों का एक खेल जिसमें वे चक्राकार घूमते हैं।
धाँगरला (स्त्री.) मूँग, माश तथा मोठ मिश्रित दाल।
धाँध[1] (स्त्री.) प्रशंसनीय कार्य–तन्नैं के धाँध कर ली, (दे. धन-धन)।
धाँध[2] (स्त्री.) 1. माँद, 2. ढेरी, 3. मोटा कछुआ।
धाँधळ-पातळ (स्त्री.) बहुत भारी आकार का कछुआ।
धाँधळी (स्त्री.) 1. बेतरतीबी, 2. अराजकता, 3. गड़बड़ी, 4. नियम की अवहेलना।
धाँस[1] (स्त्री.) बाँस, धातु आदि का छोटा अंश या कण जो कई बार हाथ में धँस जाता है; (क्रि. स.) 'धाँसणा' क्रिया का आदे. रूप; **~नाँ देणा** अल्पभाग भी न देना; **~लागणा** धाँस का शरीर में चुभना।
धाँस[2] (स्त्री.) सूखी मिर्च, तंबाकू आदि से उठने वाली गंध; **~ऊठणा** 1. खाँसी उठना, 2. मिर्च, तंबाकू आदि कूटते समय गंध उठना; **~मारणा** मिर्च आदि कूटते समय उसमें तेल का छींटा लगाना।
धाँसणा (क्रि. स.) 1. फँसाना, 2. जाल में फँसाना, 3. कीचड़ में लथपथ करना; (क्रि. अ.) 1. खाँसना, 2. पशु द्वारा खाँसना; (वि.) वह जो धाँसे। **धाँसना** (हि.)
धाँस्सू (वि.) विशिष्टता, विलक्षणता के कारण ध्यान आकृष्ट करने का भाव।
धाई[1] (स्त्री.) 1. दहाई, 2. (दे. धाँई)।

धाई² (स्त्री.) धापने, अघाने या छिकने का भाव; (क्रि.अ.) 1. धन्य हुई, 2. अघाई।

धाई धमोकड़ा (पुं.) दे. धाँईं धप्प।

धाए (क्रि. अ.) 1. धन्य हुए (व्यंग्य में प्रयुक्त)–धाए तेरे काम तैं, 2. तृप्त हुए, अघाए।

धाक (स्त्री.) 1. आतंक, 2. रौब, 3. ढेरी।

धाकड़ (पुं.) 1. दे. आँकल, 2. दे. बिजार।

धाकड़ छोह (पुं.) दे. खड्डू।

धाजणा (क्रि. अ.) जलना, तेज़ लपट के साथ जलना।

धाड़¹ (स्त्री.) 1. लुटेरों की टोली, 2. जंगली पशुओं का झुंड, 3. सेना का समूह; **~कै जाणा** चोर के पल्ले पड़ना, चोरी होना; **~चढणा** लुटेरों के झुंड द्वारा आक्रमण किया जाना।

धाड़² (स्त्री.) 1. शेर की चिंघाड़, 2. ज़ोर-ज़ोर से रोने का भाव, 3. ललकारने का भाव; (क्रि. अ.) 'धाड़णा' क्रिया का आदे. रूप; **~मारणा** 1. ज़ोर-ज़ोर से रोना, 2. सिंह द्वारा गरजना। **दहाड़** (हि.)

धाड़णा (क्रि. अ.) 1. शेर का गरजना, 2. क्रोध में भर कर ललकारना। **दहाड़ना** (हि.)

धाड़ा (पुं.) दे. दाड़ा।

धाड़ी (वि.) 1. (बैल) जो हर प्रकार के काम में जोता जा सके, 2. साहसी, 3. बलवान, 4. (दे. धोरी²); (प्रत्य.) धारी, धारणा करने वाला, जैसे–छत्तर-धाड़ी (छत्र धारण करने वाला)।

धाणक (पुं.) एक अनुसूचित जाति जो कपड़ा बुनने का काम भी करती है (यह जाति अपने को धनुर्धारी बताती है, इस जाति के गोत हैं–ताँगबस्ता, मथुरिया, कटारिया, जैसवार, मघैया, दोजवार, छिलातिया)। **धानक** (हि.)

धाणकी (स्त्री.) 1. धानक की पत्नी, 2. धानक जाति की महिला। **धानकी** (हि.)

धाणा (क्रि. अ.) 1. धन्य होना, 2. तृप्त होना।

धाणी (स्त्री.) 1. जौ-गेहूँ का भुनवाया गया खाद्य-पदार्थ जिसका सत्तू भी बनता है, 2. धान की पत्ती के रंग जैसा हल्का हरा रंग का; 3. (दे. खील); (वि.) धानी या हल्के हरे रंग का; **~करणा** 1. नष्ट-भ्रष्ट करना, 2. धानी भूनना; **~कराणा/भुणाणा** भाड़ में धानी भुनवाना। **धानी** (हि.)

धात (स्त्री.) 1. धातु, जैसे–लोहा आदि, 2. वीर्य, शुक्र, 3. श्वेत प्रदर, 4. चमक, जैसे– धात मरणा; **~-पड़णा** वीर्यस्खलन रोग से पीड़ित होना। **धातु** (हि.)

धातु (स्त्री.) दे. धात।

धान (पुं.) चावल जिससे छिलका नहीं उतरा हो; **~-सा झाड़णा** शत्रु को सुगमता से पछाड़ना।

धानक (पुं.) दे. धाणक।

धान बोना (पुं.) वह रस्म जिसमें संबंधी वर-वधु की परिक्रमा कर धान (जौ) हाथ में लेकर उन पर डालते हैं।

धानी (स्त्री.) दे. धाणी; (वि.) दे. धाणी।

धानू (पुं.) संत धन्ना जाट

धान्ना (पुं.) दे. दहान्ना।

धाप (स्त्री.) संतोष, तृप्त होने का भाव–तेरै कदे धाप बी आवैगी; (क्रि. अ.) 'धापणा' क्रिया का आदे. रूप; **~कै** बहुत अधिक।

धापणा (क्रि. अ.) 1. तृप्त होना, 2. सांसारिक इच्छाओं से तृप्त होना, 3. तंग आना (व्यंग्य में)–तेरे तैं धप लिए, 4. (दे. छिकणा)। **धापना** (हि.)

धापना (क्रि. अ.) 1. दे. धापणा, 2. दे. छिकणा।

धापमाँ (क्रि. वि.) मनपसंद मात्रा में, भरपूर मात्रा में, (दे. छिकमाँ)।

धाप्पाँ (स्त्री.) वह स्त्री जो हर प्रकार से तृप्त हो (व्यंग्य में प्रयुक्त)।

धाम[1] (पुं.) 1. स्थान, 2. पुण्य-स्थान, 3. घर।

धाम[2] (वि.) 1. दस या दस की गुणा, **जैसे**–दस धाम सौ, 2. दहाई।

धामणा (पुं.) भानजे के विवाह में मामा द्वारा बारात को दिया जाने वाला मार्ग का जलपान; (क्रि. स.) 1. वाहन को तेज़ गति से दौड़ाना, 2. झोंकना, 3. फूँकना।

धामणा देणा (क्रि.) स्वैच्छिक दान देना।

धार[1] (स्त्री.) 1. धारा, 2. दूध–गा नीच्चै धार नाँ रही, 3. मध्य धारा, नदी का बीच–धार मैं पोंह्च कै ना डगमगागी, 4. नदी, 5. हथियार का पैना भाग, 6. तलवार; **~काढणा** पशु का दूध निकालना; **~चढाणा** पशु द्वारा अपने छौने के लिए दूध थन से ऊपर चढ़ा लेना; **~देणा** पशु द्वारा दूध देना; **~तारणा** थनों में दूध उतारना; **~पै धरणा** 1. मज़ा चखाना, 2. प्रतिशोध लेना; **~मारणा** 1. छाछ में कच्चे दूध की धार मार कर 'गोज्जी' (दे.) बनाना, 2. भोंटा करना; **~लागण** तलवार का आघात लगना; **~लेणा** दूध निकालते समय दूध की धार मुँह से पीना; **~होणा** 1. पशु के नीचे दूध होना, 2. औज़ार का तेज़ होना। **धार** (हि.)

धार[2] (स्त्री.) धारणा, निश्चय करने का भाव या क्रिया–न्यूँ बता तन्नैं के करण की धार राक्खी सै; (क्रि. स.) 'धारणा' क्रिया का आदे. रूप।

धारण[1] (पुं.) अग्रवाल वैश्यों का गोत्र, इनका संबंध धौम्य मुनि, यजुर्वेद, माध्यंदिनी शाखा और कात्यायन सूत्र से है, इनका प्रवर मांकील है।

धारण[2] (पुं.) ग्रहण करने की क्रिया, अंगीकार।

धारणा (क्रि. स.) 1. धारण करना, 2. वस्त्र आदि पहनना, 3. निश्चय करना; (स्त्री.) 1. विचार, 2. निश्चय।

धारना (क्रि. स.) दे. धारणा।

धारा (स्त्री.) 1. पानी का निरंतर प्रवाह, 2. झरना, 3. दफ़ा, 4. (दे. धार[1])।

धारी (स्त्री.) 1. लकीर, 2. कपड़े पर बनी किसी रंग की पट्टी; (क्रि. स.) 'धारणा' क्रिया का भू.का., स्त्रीलिं., एकव. का रूप, पहनी, धारण की।

धारीदार (वि.) (वह वस्त्र आदि) जिस पर धारियाँ या लकीरें हों।

धारु (पुं.) दे. फूलमंजीर; (वि.) धारण करने वाला।

धारुड़ा (पुं.) बाँस, काग़ज़, वस्त्र आदि से लपेट कर बनाया गया घोड़े का धड़ जिसका मध्यभाग खोखला होता है (नर्तक इस खोखले भाग में खड़ा होकर नृत्य करता है); **~-नाँच** वर-यात्रा आरंभ होने से पहले या घुड़चढ़ी के समय किया जाने वाला धारुड़ा या घोड़ा-नाच।

धार्मिक (वि.) 1. धर्मशील, 2. धर्म-संबंधी।

धावा (पुं.) चढ़ाई, आक्रमण।

धिंगताणा (पुं.) ज़ोर-ज़बरदस्ती का भाव,

सीनाजोरी; **~करणा** ज़ोर-ज़बरदस्ती करना।

धिकड़ा (पुं.) 'फलाणा' का अनुवर्ती, (दे. फलाणा), अमुक।

धिकणा (क्रि. अ.) 1. अपने आप आगे सरकना, 2. निभना, 3. व्यक्ति का प्रभाव बना रहना, 4. मनमानी चलना, 5. अंदर घुसना या घुसाया जाना, 6. खराब वस्तु का बिकना, 7. जीवन-निर्वाह होना। **धिकना** (हि.)

धिकाणा (क्रि. स.) 1. आगे सरकाना, 2. मनमानी चलाना, 3. निभाना, 4. घुसाना। **धकेलना** (हि.)

धिक् (स्त्री.) धिक्कार, लानत।

धिक्कार (स्त्री.) 1. लानत, 2. अनादर, तिरस्कार, 3. घृणा-व्यंजक शब्द।

धिक्कारणा (क्रि. स.) धिक्-धिक् करना, लानत देना। **धिक्कारना** (हि.)

धिक्कारना (क्रि. स.) दे. धिक्कारणा।

धिखे (अव्य.) 1. दे. दिखे, 2. दे. धखे, 3. अरे।

धिरतरासटर (पुं.) महाभारत में वर्णित जन्मांध राजा जो दुर्योधन के पिता थे, पांडु इनके छोटे भाई थे और पाडंव भतीजे। **धृतराष्ट्र** (हि.)

धींग (वि.) 1. पुष्ट अंगों वाला, दृढ़ांग, 2. बदमाश, 3. (दे. कुलंग)।

धींगड़/धींगड़ा (वि.) दे. धींग।

धींगड़ी (वि.) 1. चुलबुली युवती, 2. पुष्ट शरीर वाली।

धींगाधाणी (स्त्री.) दे. धींगा मस्ती।

धींगामस्ती (स्त्री.) 1. ज़ोर-ज़बरदस्ती, 2. बदमाशी, 3. छीना-झपटी।

धी (स्त्री.) 1. लड़की, 2. पुत्री; **~-जमाई** **पुत्री तथा** दामाद—धी जमाई ले गए, बहुआँ ले गए पूत। राघो चेत्तन न्यूँ कहैं, रहे ऊत के ऊत।

धीज (पुं.) धैर्य।

धीणा[1] (पुं.) 1. धेनु, दुधारू गाय, 2. पशु-धन, 3. भाग्य।

धीणा[2] (पुं.) धन। उदा.—शिक्षा तै बढ़ कै कोए धीणा कोन्या।

धीणू (स्त्री.) 1. धेनु, 2. गाभिन गाय, 3. दुधारू गाय; (पुं.) पशु-धन; **~होणा** पशु (गाय) का गाभिन होना (तुल. बूहणा)। **धेनु** (हि.)

धीमा (वि.) दे. होळ्याँ।

धीयड़ (स्त्री.) धी, पुत्री, 'धी' का लघुताद्योतक रूप—तेरा तीज्जण सून्ना हो बाबल तेरी धीय बिना, मेरी पोत्ती कात्तैं हे, धीयड़ घर जा अपणे (लो. गी.)।

धीर (स्त्री.) 1. धीरज, 2. हिम्मत, साहस; (वि.) धैर्यवान; **~बँधाणा** दिलासा देना, हिम्मत बढ़ाना।

धीरज (पुं.) 1. धैर्य, 2. ढाढ़स।

धीरे (क्रि. वि.) दे. होळ्याँ।

धीर्‌याँ (क्रि. वि.) धीरे-धीरे, (दे. होळ्याँ)।

धीवर (पुं.) दे. झीम्मर।

धुँगार (स्त्री.) दे. ढुँगार।

धुंध (स्त्री.) दे. धूँध।

धुंध ऋषि (पुं.) पराशर ऋषि।

धुँधला (वि.) दे. धूँधळा।

धुँधळाणा (क्रि. अ.) 1. धुँधला होना, 2. आँखों के सामने धुआँ-सा दिखाई देना, आँखों से कम दिखना, 3. प्रकाश कम होना, 4. भूलना, विस्मरण होना; (क्रि. स.) धुँधला करना। **धुँधलाना** (हि.)

धुँधलाना (क्रि. अ.) दे. धुँधळाणा।

धुँधलापन (पुं.) कम सूझने या दीख पड़ने का भाव।

धुंधोटी (स्त्री.) गुड़गावाँ के निकट का क्षेत्र जहाँ राजा संगत का राज्य था।

धुआँ (पुं.) दे. धूँम्माँ।

धुआँधार (वि.) 1. धुएँ से भरा, 2. काला, स्याह, 3. प्रचंड, घोर; (क्रि. वि.) बहुत अधिक या बहुत जोर से।

धुआई (स्त्री.) 1. धोने की क्रिया, 2. धोने का पारिश्रमिक; (क्रि. स.) 'धुआणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं., एकव. का रूप। **धुलाई** (हि.)

धुआणा (क्रि. स.) दे. धुवाणा।

धुक (स्त्री.) 1. कलेजा धड़कने से उत्पन्न ध्वनि, 2. भयंकर आग से उत्पन्न ध्वनि; (पुं.) धुआँ।

धुकड़-चुकड़ (स्त्री.) 1. भय के कारण शरीर, मन या हृदय में उत्पन्न असमंजसता का भाव, घबराहट, 2. कानाफूसी; **~माचणा/होणा** घबराहट के कारण मन में अस्थिरता होना।

धुकणा (क्रि. अ.) 1. पूजा जाना– गुड़गाम्में की मात्ता चैत मैं धुक्कै सै, 2. तराजू का जिंस वाले भाग की ओर झुकना, 3. झुकना।

धुकता (वि.) तराजू का जिंस के पलड़े की ओर झुकाव; **~-धाया** तोल में अधिक, अधिक तोल; **~~तोलणा** निश्चित मात्रा से अधिक तोलना।

धुकधुकी (स्त्री.) 1. बच्चों का एक खिलौना, 2. हृदय की कंपन, 3. कँपकँपी; **~लागणा** कलेजा धुकधुकाना।

धुकना (क्रि. अ.) दे. धुकणा।

धुकवाणा (क्रि. स.) 1. पूजा करवाना, 2. धोक मरवाना या लगवाना।

धुकाणा (क्रि. स.) 1. तराजू के जिंस वाले पलड़े को झुकाना, अधिक तोलना, 2. कर्ज़ चुकाना, 3. धोक मरवाना, पूजा करवाना।

धुकाना (क्रि. स.) दे. धुकाणा।

धुड़ी (स्त्री.) 1. दे. धड़ी (कौर.), 2. (दे. धुरा)।

धुणकणा (क्रि. स.) धुनना, रूई धुनना, (दे. पीनणा); (क्रि. अ.) बड़- बड़ाना; (पुं.) 1. धुनिया, 2. रूई धुनने का औज़ार।

धुणकी (स्त्री.) रूई धुनने का धनुषाकार औज़ार। **धुनकी** (हि.)

धुणणा (क्रि. स.) 1. धुनाई करना, (दे. पीनणा), 2. सिर धुनना, 3. रौंदना। **धुनना** (हि.)

धुणाई (स्त्री.) 1. रूई धुनने का कार्य, 2. रूई धुनने की मज़दूरी, 3. पिटाई; (क्रि. स.) 'धुणाणा' क्रिया का भू. का. , स्त्रीलिं. रूप। **धुनाई** (हि.)

धुणाणा (क्रि. स.) धुनवाना।

धुणियाँ (पुं.) 1. रूई धुनने वाला, 2. एक जाति। **धुनियाँ** (हि.)

धुतारा (पुं.) तंबूरे के समान एक वाद्य-यंत्र। **दुतारा** (हि.)

धुत्त (वि.) नशे में चूर।

धुत्ता (पुं.) दे. गुच्ची।

धुनकी (स्त्री.) दे. धुणकी।

धुनना (क्रि. स.) दे. धुणणा।

धुनिया (पुं.) दे. धुणियाँ।

धुनी[1] (स्त्री.) 1. नाद, आवाज़, 2. लय। **ध्वनि** (हि.)

धुनी[2] (वि.) धुन का पक्का; (क्रि. स.) 'धुनना' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; (स्त्री.) ध्वनि।

धुमाळा (पुं.) भट्ठी का वह भाग जिससे धुआँ निकलता है, 1. **(दे. मोंक्खा)**,

2. (दे. धूँधळा); (वि.) धुएँ के रंग का।

धुरंधर (वि.) 1. जो सबसे बड़ा, भारी या बली हो, 2. श्रेष्ठ, प्रधान, 3. प्रवीण।

धुर (क्रि. वि.) 1. पर्याप्त दूर, 2. लक्ष्य-बिंदु पर, 3. आरंभ से; (स्त्री.) 1. धुरी, 2. मूल; **~की बात** 1. दूर की बात, गहरी बात, 2. परिपाटी से चली आई बात; **~तैं** 1. दूर से, 2. एक किनारे से; **~दिन तैं** 1. पहले दिन से, 2. बहुत दिनों से।

धुरा (पुं.) 1. छड़ जिसमें पहिया डाला जाता है–धुरा कमाणी टूट गए, ल्हीक बिचाळै ठेल्ला रहग्या, दमयंती गई न्हाण तळा पै, नल निरभाग अकेल्ला रहग्या, (ल. चं.), 2. क्रेंद्र-बिंदु।

धुरिया/धोरिया (पुं.) जूए के दाएँ-बाएँ जोते जाने वाले बैल।

धुलना (क्रि. अ.) धोया जाना, (दे. धूणा)।

धुलवाना (क्रि. स.) दे. धुवाणा।

धुलाई (स्त्री.) दे. धुआई।

धुलाना (क्रि. स.) दे. धुवाणा।

धुलैंडी (स्त्री.) दे. धुळैंह्ढी।

धुळैंह्ढी (स्त्री.) होली से अगले दिन खेला जाने वाला फाग जिसमें वर-पक्ष के लोग स्त्रियों पर पानी-कीचड़ आदि फेंकते हैं और वे प्रतिकार-स्वरूप कोलड़े या डंडे की मार लगाती है (यह त्योहार प्रात:काल से काफ़ी रात गए तक खेला जाता है, मुख्यत: यह त्योहार देवर-भाभी के रिश्ते का त्योहार है), फाग। **धुलैंडी** (हि.)

धुवाणा (क्रि. स.) धुलवाना। **धुलाना** (हि.)

धूँ (स्त्री.) धड़ाम की ध्वनि।

धूआँ (पुं.) दे. धूँम्माँ।

धूँगला (पुं.) दे. गुणगुणा।

धूँद्धाँ (वि.) भारी-भरकम बदसूरत औरत (स्त्री.) दे. भंभो।

धूँध (स्त्री.) सरदी के दिनों में छाने वाला कोहरा; (पुं.) मोटा कछुआ; (वि.) 1. भारी भरकम शरीर का, 2. जिसे धुँधला या कम दिखाई दे; **~की धूँध** मोटा शरीर, भारी शरीर। **धुंध** (हि.)

धूँध-पसारा (पुं.) भयंकर अंधकार का प्रसार (अँधेरा)।

धूँधळा (पुं.) 1. भट्ठी का वह भाग जिससे धुआँ निकलता है (तुल. धुमाळा), (दे. मोख), 2. भट्ठी, वह भट्ठी जहाँ गन्ने के रस से गुड़ बनाया जाता है, 3. धुँधलापन, अस्पष्ट दिखाई देने का भाव।

धूँम्माँ (पुं.) धूम्र, धूम; **~ऊठणा** 1. आग लगना, 2. नष्ट होना; **~लाणा** दे. धूमणी; **~-धार** 1. अधिक धुआँ होने की अवस्था, 2. प्रभावशाली (भाषण); **~-धाळी** 1. नष्ट-भ्रष्ट, 2. धुएँ से भरा हुआ, (दे. ढम्माँ-ढेळी); **~होणा** 1. नष्ट होना, 2. जल कर भस्म होना। **धुआँ** (हि.)

धूँसणा (क्रि. स.) 1. ठूँसना, 2. भोजन करना (व्यंग्य में)।

धूँह (स्त्री.) धड़ाम की ध्वनि; (क्रि. वि.) धड़ाम की ध्वनि के साथ; **~-दणे सी** धड़ाम की ध्वनि के साथ; **~मारणा** 1. पटकी लगाना, कुश्ती में हराना, 2. प्रहार करना।

धूज (स्त्री.) दे. धूजणी।

धूजणी (स्त्री.) दे. कँपकँपी।

धूणा (पुं.) 1. वह अग्नि जो साधु तपस्या के समय जलाता है, 2. साधु का

तपस्या-स्थल, 3. स्थान जहाँ हर समय अग्नि प्रज्वलित रखी जाती है; (क्रि. अ.) धुलना, धोया जाना; **~ठाणा** 1. तपस्या-स्थल बदलना, 2. कूच करना, 3. नष्ट करना, **~दगणा** 1. धूनी जलते रखना, 2. तपस्या करना; **~रमणा/तपणा** अग्नि के सामने बैठकर तपस्या करना; **~लगाणा** 1. तपस्या के लिए बैठना, 2. प्रणपूर्वक बैठना। **धूना** (हि.)

धूणी (स्त्री.) 1. स्थान जहाँ हर समय अग्नि जलती रहे, 2. साधु की तपस्थली, 1. (दे. धूणा), 2. (दे. धूमणी)। **धूनी** (हि.)

धूत (पुं.) संन्यासी; (वि.) पाखंडी। **अवधूत** (हि.)

धूत्तू (पुं.) 1. एक प्रकार का बाजा जो फूँक मार कर बजाया जाता है, 2. कारख़ाने का सायरन या भोंपू, 3. चिमनी का पाइप जिससे धुआँ निकलता है, 4. सायरन द्वारा दिया गया ख़तरे का संकेत; **~बोलणा** 1. कारख़ाने का भोंपू बजना, 2. ख़तरे का संकेत मिलना; **~-सा मुँह** लंबा मुँह। **धुतू** (हि.)

धूद्धळ (स्त्री.) 1. धूलि, 2. (दे. भूभळ)।

धूना (पुं.) दे. धूणा।

धूनी (स्त्री.) 1. दे. धूणी, 2. दे. धूमणी।

धूप (स्त्री.) 1. सुगंधित द्रव्य जिसके जलाने से सुगंधि मिलती है, 2. सूर्य का प्रकाश, (दे. घाम); **~-छाँह** 1. धूप-छाया का वस्त्र विशेष, 2. धूप-छाया, 3. अच्छे-बुरे दिन।

धूपदानी (स्त्री.) धूप या गंध-द्रव्य जलाने का पात्र।

धूपबत्ती (स्त्री.) जलने पर सुगंधित धुआँ फैलाने वाली बत्ती।

धूपिया (पुं.) दिन रात चरखा चलाने की क्रिया। दे. सुरातिया।

धूम (स्त्री.) 1. प्रसन्नता का वातावरण, 2. प्रसिद्धि, 3. (दे. धूँम्माँ); **~माचणा** 1. प्रसिद्धि फैलना, 2. प्रसन्नता का वातावरण होना।

धूमणा (क्रि. स.) 1. जलाना, 2. नष्ट-भ्रष्ट करना, 3. कीटाणु नष्ट करने या अन्य भाव से किसी वस्तु पर धुआँ लगाना, 4. (दे. धमणा)। **धूमना** (हि.)

धूमणी (स्त्री.) 1. मच्छर-मक्खी आदि हटाने के लिए धुआँ लगाने या देने का भाव, 2. भूत-प्रेत निकालने के लिए सुगंधित धुआँ देने की क्रिया।

धूमधाम (स्त्री.) 1. प्रसन्नता का वातावरण, 2. ठाट-बाट।

धूमरी (वि.) धुएँ जैसे रंग की (गाय)।

धूम्मर (वि.) दे. धूमरी; (स्त्री.) धुंध; (पुं.) धूम्र, धुआँ।

धूम्मा (पुं.) दे. धूँम्माँ।

धूर्त (वि.) 1. शठ, चालबाज, 2. धोखा देने वाला, छली।

धूल (स्त्री.) दे. धूळ।

धूळ (स्त्री.) 1. महीन मिट्टी, रेत, ख़ाक, 2. आकाश में उड़ने वाली गर्द, 3. रजकण; (वि.) अनुपयोगी; **~उडाणा** 1. नष्ट-भ्रष्ट करना, 2. चुनौती देना, लड़ने के लिए उत्तेजित करना; **~ऊठणा** 1. पराजय होना, 2. नष्ट- भ्रष्ट होना, 3. आँधी आना; **~करणा/ ठाणा** धूलि में मिलाना, नष्ट करना; **~चाटणा** 1. अपमान की स्थिति में जीवन व्यतीत करना, 2. हारना; **~झोंकणा** छल-कपट से काम निकालना; **~डालणा** 1. किसी बात को दबाना, 2. निरादर

करना, 3. किरकिरी करना; **~होणा** 1. मलियामेट होना, 2. आकाश में गर्द चढ़ना। **धूलि** (हि.)

धूळम-धूळ (वि.) धूल-धूसरित।

धूलि (स्त्री.) दे. धूळ।

धूळिया (पुं.) बबूला, चक्रवात; (वि.) धूळि से लथपथ रहने वाला; **~ऊठणा** 1. चक्रवात बनना, 2. नष्ट-भ्रष्ट होना; **~-धमाळ** धूलि-धूसरित;**~-धमाळिया** 1. आँधी, 2. चक्रवात, बबूला।

धूवाँ (पुं.) धूम्र, (दे. धूँम्माँ)।

धूसड़ (वि.) दे. धूसणा।

धृष्टद्युम्न (पुं.) द्रौपदी का भाई जिसने महाभारत के युद्ध में बेहोश हुए द्रोणाचार्य का सिर काटा था।

धेंगलवाटी (स्त्री.) एक मेवाती खाप।

धेन (स्त्री.) धेनु, गाय।

धेनु (स्त्री.) 1. दे. धेन, 2. दे. धीणू।

धेळ (स्त्री.) दहलीज (इसे अपवित्र स्थान मानते हैं क्योंकि भगवान नरसिंह ने दहलीज पर हिरण्यकश्यप का पेट विदीर्ण किया था); **~पुजणा** परिवार को सम्मान मिलना; **~बाँटणा** सगाई आदि अवसरों पर हर घर के अनुसार मिठाई या रुपये बाँटना। **दहलीज़** (हि.)

धेला (पुं.) दे. धेल्ला।

धेल्ला (पुं.) 1. धेला, ताँबे का अनगढ़ सिक्का जो **ढबली** (दे.) **पैसे** के आधे मूल्य का होता था, चार दमड़ी के मूल्य का या 12 दाम का सिक्का, 2. धेले भर का भार, तोल विशेष; **~(-ल्ले) का** 1. बहुत सस्ता, 2. जिसका कोई मूल्य न हो, तुच्छ— धेल्ले के दो सिपाहीड़े, टके के दो थाणेदार, गांधी ऊठ्या सै ललकार, गांद्धी-गांद्धी हो रही; **~नाँ ऊठणा** 1. मूल्य गिरना, 2. कम ख़र्च होना; **~नाँ होणा** निर्धन अवस्था में होना। **अधेला** (हि.)

धेल्ली (स्त्री.) धेले से कम मूल्य का सिक्का; **~-पावली** 1. अधेला, पाई आदि का सिक्का, 2. स्वल्प-मात्रा का धन। **अधेली** (हि.)

धेवता (पुं.) पुत्री का पुत्र। **दौहित्र** (हि.)

धेवती (स्त्री.) पुत्री की पुत्री। **दौहित्री** (हि.)

धैड़ (स्त्री.) धड़ाम का शब्द; (क्रि. वि.) धड़ाम की ध्वनि के साथ।

धैर्य (पुं.) दे. धीरज।

धोंद्दाँ (स्त्री.) दे. भंभो।

धोंधा (पुं.) दे. तोंद।

धोंस (स्त्री.) 1. धौंस, भय या आतंक दिखाने का भाव, 2. धमकी देने का भाव।

धोंसा (पुं.) एक वाद्य यंत्र, नगाड़ा।

धो (पुं.) धोवन, धोया हुआ (पानी), जैसे— चावळ का धो, (दे. धोवण); (क्रि.स.) 'धोणा' क्रिया का आदे. रूप।

धोक (स्त्री.) श्रद्धास्पद के सामने झुकने या माथा टेकने की क्रिया या भाव; (क्रि. स.) 'धोकणा' क्रिया का आदे. रूप; **~चढाणा** मूर्ति पर उपहार चढ़ाना; **~मारणा** 1. सिर झुका कर श्रद्धा प्रकट करना, 2. माता-मसानी या मूर्ति के सम्मुख झुकना और उपहार चढ़ाना, 3. पूजा करना।

धोकणा[1] (क्रि. स.) पूजना, धोक मारना, श्रद्धावनत होना।

धोकणा² (क्रि. अ.) हाँफना; (क्रि. स.) 1. भट्ठी में हवा फूँकना, 2. हड़पना।

धोक्खा (पुं.) छल, कपट। **धोखा** (हि.)

धोखा (पुं.) दे. धोक्खा।

धोखेबाज (वि.) छली, धोखा देने वाला, कपटी।

धोज¹ (स्त्री.) चिंता (?) उदा.–रही बाँध धोज, करै मोज रोज ठग विद्या करकै खाई सै।

धोज² (स्त्री.) दे. धजा।

धोण¹ (पुं.) बीस सेर भार का बट्टा; (वि.) आधा मन।

धोण² (पुं.) 1. वह पानी जिसमें कोई चीज धोई गई हो, 2. अधिक पानी वाला दूध या छाछ, 3. धोने की क्रिया, (दे. धोवण); **~करणा** दूध में पानी ही पानी मिलाना; **~बिलोणा** व्यर्थ का परिश्रम करना। **धोवन** (हि.)

धोणा (क्रि. स.) मैल निकाल कर साफ़ करना; (पुं.) बीस सेर भार का बट्टा; (वि.) बीस सेर का, धोनभर। **धोना** (हि.)

धोत¹ (पुं.) मोटी और भारी धोती।

धोत² (पुं.) दे. धेवता। **~बहू** धेवते की पत्नी। उदा. पोत बहू की राबड़ी, धोत बहू की खीर। मीठी लागै राबड़ी, खाट्टी लागै खीर।

धोतनी (स्त्री.) छोटी धोती।

धोत बहु (स्त्री.) धेवते की वधु।

धोती (स्त्री.) दे. धोत्ती।

धोत्ती (स्त्री.) पुरुषों का मुख्य अधोकटि-वस्त्र जो लगभग छः गज का होता है और गाँठ, अड़बंध, पल्ला छोड़, एक या दो लाँग आदि विधि से बाँधा जाता है, इसे दो भागों में काटकर अद्धा बनाकर भी बाँधते हैं, 2. साड़ी, 3. एक यौगिक क्रिया; **~खुल्हणा** भयभीत होना। **धोती** (हि.)

धोना (क्रि. स.) दे. धोणा; (पुं.) दे. धोण¹।

धोबिन (स्त्री.) दे. धोब्बण।

धोबी (पुं.) दे. धोब्बी।

धोब्बण (स्त्री.) 1. धोबी की पत्नी, 2. धोबी जाति की महिला। **धोबिन** (हि.)

धोब्बा (स्त्री.) दे. ओक।

धोब्बी (पुं.) 1. वस्त्र धोने का व्यवसाय करने वाला, 2. अनुसूचित जाति जो अस्पृश्य नहीं मानी जाती, सत् शूद्र। **धोबी** (हि.)

धोब्बी-घाट (पुं.) 1. वह स्थान जहाँ धोबी कपड़े धोता है, 2. कुश्ती का एक दाँव।

धोब्बी-पाट (पुं.) 1. कुश्ती का एक दाँव, 2. कपड़े धोने का पटरा।

धोम्य (पुं.) 1. एक ऋषि, 2. एक ब्राह्मण गोत्र। **धौम्य** (हि.)

धोर (स्त्री.) एक मोटा वस्त्र जो बिछाने आदि के काम आता है, 1. (दे. दोलड़ा), 2. (दे. खरड़)।

धोरा¹ (पुं.) किनारा, खलिहान का किनारा; (क्रि. वि.) निकट, पास; **~मारणा** खलिहान के किनारे के भूसे को सँवारना।

धोरा² (पुं.) दे. धोळा।

धोरा³ (पुं.) अहसान। **~मानणा**–अहसान मानना। दे. धोरा। **~ना देणा**। निकट न फटकने देना।

धोरा धरणा (क्रि.) त्यागना।

धोरासण (वि.) ताजा। उदा. ऊँटनी का धोरासण दूध पीते हैं।

धोरिया (वि.) दे. धोरी[1, 2]।

धोरी[1] (वि.) 1. धुरे या जूए में जोता जाने वाला (बैल) जिस पर गाड़ी खींचते समय अधिक भार पड़ता है, बींडिया (दे.) बैल के पीछे जुतने वाला बैल– म्हारे देस के लोग्गाँ मैं या बिन बिद्या कमजोरी, बींड्डी बैल की के पार बसावे जिब जूआ गेर दे धोरी, 2. विद्रोही; (क्रि. वि.) निकट; **~-बुळध** 1. बींडिया बैल के पीछे जुतने वाला बैल, 2. शक्तिशाली बैल।

धोरी[2] (स्त्री.) दे. धोली।

धोरै (अव्य.) 1. पास–तेरे धोरै कोए पइसा सै?, 2. निकट–उनका घर म्हारे घर के धोरै ए सै, 3. अपादान तथा करण कारक का चिह्न; **ओरै-~** आस-पास– ओरै-धोरै या चीज मिलणी मुसकिल सै।

धोळ (वि.) 1. (जवार का) वह पौधा जिसके पत्ते में बीचों-बीच सफ़ेद धारी हो (इसका रस मीठा नहीं होता), 2. 'लाप्पर' का विलोम, (दे. लाप्पर), 3. धूर्त, 4. अज्ञानी, 5. दिखावटी, 6. (दे. धोळा); **~-गंड्डा** दे. धोळ।

धोळपोस (पुं.) 1. श्वेत वस्त्र पहनने वाला, साफ़-सुथरा रहने वाला व्यक्ति, 2. सम्मानित व्यक्ति, 3. एक उपाधि जो क्षेत्र के किसी सम्मानित व्यक्ति को दी जाती थी।

धोळफूल्ली (स्त्री.) एक घास जिस पर सफ़ेद फूल आते हैं।

धोळा (वि.) 1. श्वेत, 2. श्वेत रंग का, 3. उज्ज्वल, 4. दाग़-रहित, 5. चमकीला, जैसे– धोळे दाँत, 6. उज्ज्वल या श्रेष्ठ चरित्र का, 7. कम रक्त का; **~करणा** 1. डराना, मुँह फ़क करना, 2. उज्ज्वल पक्ष करना; **~-दिन लिकड़णा** दिन चढ़ना; **~पड़णा** 1. मुँह फ़क होना, 2. शरीर में रक्त की कमी होना; **~होणा** 1. हक्का-बक्का रह जाना, 2. खून की कमी होना। **धवल** (हि.)

धोळागढ (पुं.) भर्तृहरि की राज नगरी।

धोळिया (वि.) धवल।

धोळी (वि.) 1. श्वेत रंग की, श्वेत, 2. श्रेष्ठ चरित्र की, 3. गाय (व्यंजना में प्रयुक्त); **~-धप** 1. धूप के समान चमकीली, 2. अतिरिक्त श्वेत; **~-धार** दूध; **~धरती होणा** 1. खेत नराने योग्य होना, 2. ओला-वृष्टि होना; **~नाँ होणा** घर में दूध की व्यवस्था न होना। **धोली** (हि.)

धोवण (पुं.) 1. पानी जिसमें कोई चीज धोई गई हो, 2. दूध वाला पानी, दे. दोण[2]। **धोवन** (हि.)

धौंकणी (स्त्री.) 1. फुकनी या फूँकनी, 2. हाँपने की क्रिया; **~लागणा** 1. बुरी तरह से हाँपना, 2. बार-बार प्यास लगना। **धौंकनी** (हि.)

धौंकनी (स्त्री.) दे. धौंकणी।

धौंक्की (स्त्री.) हाँपने की क्रिया। **धौंकी** (हि.)

धौंस (स्त्री.) दे. धोंस।

धौंसपट्टी (स्त्री.) डराने-धमकाने या धौंस देने का भाव।

धौंसा (पुं.) एक वाद्य यंत्र। तुल. नक्कारा।

धौज (पुं.) ध्वजा।

धौड़ी (स्त्री.) भैंस का मोटा चमड़ा (कौर.)।

धौम्य (पुं.) दे. धोम्य।

धौरिय (पुं.) दे. धोरी[1]।

धौळ जमाना (क्रि.) एक प्रकार की मालिश विशेष करना।

ध्याए (क्रि. अ.) दे. धाए।

ध्याड़ा (पुं.) दे. धाड़ा।

ध्याड़ी (स्त्री.) दिन-भर के परिश्रम की मज़दूरी, मज़दूरी; **~टूटणा** किसी दिन की मज़दूरी न मिलना।

ध्याड़े (पुं.) 1. मुसीबत, 2. डाका।

ध्याणा (क्रि. स.) 1. स्वर्ग सिधारना, 2. स्मरण करना; (पुं.) दे. ध्याह्णा।

ध्यान (पुं.) एक विषय पर चित्त लगाने की क्रिया, 2. सोच-विचार–अरै किस ध्यान मैं पड़ ग्या, 3. स्मृति, 4. मन का भाव–क्यूँ ध्यान डिगावै सै, 5. नज़र; **~आणा** किसी बात का स्मरण हो जाना; **~करणा** 1. किसी चीज़ को प्रयत्लपूर्वक याद करना, 2. सावधानी बरतना, 3. ईश्वर में ध्यान लगाना; **~डिगणा** 1. मन विचलित होना, 2. कामुक नीयत से देखना, 3. मन से बात उतरना, 4. असावधानी बरतना; **~तैं उतरणा** 1. भूलना, 2. नज़र से गिरना; **~धरणा** चित्त लगाना, लौ लगाना; **~मैं आणा/चढणा** 1. बात स्मरण हो आना, 2. नज़र में आना, 3. बात समझ में आना; **~मैं डूबणा** 1. चिंतामग्न होना, 2. भक्ति में डूबना; **~मैं राखणा** 1. बात मन में रखना, 2. किसी की तलाश में सदा चौकन्ना रहना, 3. सदा याद रखना; **~होणा** किसी चीज़ पर मन आना।

ध्यानगी (स्त्री.) 1. प्रतिदिन की मज़दूरी (तुल. ध्याड़ी), 2. राज या बढ़ई की प्रतिदिन की मज़दूरी।

ध्यानी (वि.) 1. ध्यान लगाने वाला, 2. समाधिस्थ।

ध्यान्नी (वि.) 1. भगवान में सदा ध्यान रखने वाला, 2. जिसकी स्मरण-शक्ति तेज़ हो। **ध्यानी** (हि.)

ध्याह्णा (पुं.) 1. दूल्हे का जीजा (जो फेरों के बाद मौड़ खोलता है और विदा के समय संदूक का ताला खोलने की रस्म संपन्न करता है), 2. दान ग्रहण करने के पात्र, जैसे–पुत्री की संतान; (क्रि. स.) दे. ध्याणा।

ध्याह्णी (स्त्री.) वे संबंधी महिलाएँ जो दान ग्रहण करने की पात्र हैं, जैसे–बूआ, भानजी, नातिन (धेवती) आदि।

ध्रुव[1] (पुं.) दे. धरू।

ध्रुव[2] (पुं.) नासिका का अग्र भाग। अणी।

ध्रुवतारा (पुं.) एक तारा जो अटल रहता है।

ध्रुवदर्शन (पुं.) विवाह-संस्कार का एक कृत्य जिसमें वर-वधू को ध्रुवतारा दिखाया जाता है।

ध्वजा (स्त्री.) दे. धजा।

ध्वनि (स्त्री.) दे. धुनी[1]।

न

न हिंदी वर्णमाला का बीसवाँ व्यंजन, जिसका उच्चारण स्थान दाँत और नाक है, हरियाणवी में इसके उच्चारण में अधिक नासिक्यता है।

नंग (वि.) 1. निर्वस्त्र, नंगा, 2. बदमाश, 3. बेहया।

नंग-धड़ंग (वि.) 1. बिल्कुल नंगा, 2. निर्लज्ज अवस्था का।

नंग-मलंग (वि.) दे. रंड-मलंग।

नंग्गा (वि.) 1. निर्वस्त्र, 2. निर्लज्ज, 3. (पौधा) जिस पर पत्ते न हों, 4. विहीन, जैसे—नंगा हाथ नंगा सिर, 5. (दे. उघाड़ा), 6. (दे. उभाणा); **~करणा** 1. भेद खोलना, 2. बेइज्जती करना, 3. वृक्ष की छाल उतारना, 4. सम्मान लूटना; **~हाथ होणा** 1. विधवा होना, 2. चूड़ी खंडित होना।
नंगा (हि.)

नंग्गा-बूच्चा (वि.) 1. अत्यंत निर्धन, 2. हीन और विकलांग।
नंगा-बूचा (हि.)

नंग्गी (वि.) 1. निर्वस्त्रा, 3. निर्लज्ज (महिला), (महिला) जो हर अवस्था में हर व्यक्ति से हर प्रकार की बात कर ले; **~सूई** धागा-रहित सूई।

नंघेस (वि.) 1. नग्न रहने वाला, 2. नंगापन ही जिसका वेश है, 3. निर्लज्ज।

नंद (पुं.) यशोदा के पति जिन्होंने श्रीकृष्ण का पालन-पोषण किया।

नंदकिशोर (पुं.) श्रीकृष्ण।

नंदकुमार (पुं.) श्रीकृष्ण।

नंद-गाँव (पुं.) वृंदावन का एक गाँव जहाँ नंद-गोप रहते थे।

नंदनंदिनी (स्त्री.) नंद की वह कन्या जिसे वसुदेव श्रीकृष्ण को नंद-गाँव पहुँचा कर बदले में ले आए थे, योगमाया।

नंदलाल (पुं.) 1. श्रीकृष्ण, 2. पुत्र।

नंदिनी (स्त्री.) 1. पुत्री, 2. पत्नी, 3. देवताओं की एक गाय; (वि.) आनंद देने वाली।

नंदी (पुं.) 1. शिव का द्वारपाल, बैल, 2. शिव के नाम पर दाग़ कर उत्सर्ग किया हुआ बछड़ा, साँड, 3. वह बैल जिसके शरीर पर अधिक अंग हों, (इसे खेती में नहीं जोतते)।

नंदीगण (पुं.) 1. शिव के द्वारपाल, 2. बैल।

नंदीमाई (स्त्री.) एक देवी जिसका स्मरण बच्चों की छींक बंद कराने के लिए किया जाता है।

नंदोल (पुं.) 15 सेर का नाप का मिट्टी का पात्र। दे. नाँद।

नंबर (पुं.) दे. लंबर।

नंबरदार (पुं.) दे. लंबरदार।

नई (वि.) 1. नवीन, 2. अछूती; **~होणा** मादा पशु का गर्भवती होना, (दे. बूहणा)।

नई-तोड़ (वि.) 1. बंजर भूमि में पहली बार की गई खेती, 2. पहली बार गर्भवती मादा पशु।

नकचूँट्टी (स्त्री.) छोटे चिमटेनुमा एक यंत्र जिसकी सूई काँटा खोदने और चिमटी काँटे को पकड़ कर खींचने के काम आती है।

नकचूँड्डी (स्त्री.) दे. नकचूँट्टी।

नकछिकनी (स्त्री.) दे. नकछींकणी।

नकछींकणी (स्त्री.) 1. एक पौधा जिसके पत्ते को सूँघने से छींक आती है, 2. हुलाँस; (वि.) जो नाक पर मक्खी न बैठने दे। **नकछींकनी** (हि.)

नकछेद (वि.) 1. निर्लज्ज, 2. पशु जिसके नाक में कड़ा पहना दिया जाए, 3. (दे. नकटा)।

नकटा (वि.) 1. जिसका नाक कट गया हो, 2. जिसका नाक कटा हो, 3. छोटे या चपटे नाक वाला, 4. बेहया; **~होणा** निर्लज्ज होना।

नकटाई (स्त्री.) अंग्रेज़ी पहनावे के साथ कंठ में बाँधा जाने वाला वस्त्र विशेष।
नेकटाई (हि.)

नक़द (पुं.) वह धन जो सिक्कों के रूप में हो; (वि.) 1. माल जो पैसे लेकर दिया जाए, 2. 'उधार' का विलोम।

नक़दी (स्त्री.) रुपया-पैसा।

नकब (स्त्री.) सेंध। दे. पाड़।

नकमोरा (पुं.) घृणा प्रकट करने के लिए नाक चढ़ाने का भाव या क्रिया; **~करणा** ओढ़ने-पहनने या खाने-पीने में नाक चढ़ाना।

नकर-चकर (स्त्री.) दे. नुकर-चुकर।

नकरा (पुं.) सफेद रंग का एक कीड़ा।

नकल (स्त्री.) 1. अनुकरण की क्रिया, 2. हास्यजनक अनुकृति, 3. अनुकृति, 4. भंडोती, 5.(दे. साँग); **~मारणा/तारणा** 1. व्यंग्य कसना, 2. अनुकरण करना, 3. टीपना।

नकलची (पुं.) साँग (दे.), ड्रामा आदि का पात्र या विदूषक जो श्रोताओं को हँसाता रहता है; (वि.) नक़ल करने वाला।

नकलिया (वि.) दे. नकलची।

नक़ली (वि.) 1. बनावटी, जो असली न हो, 2. मिश्रित।

नक-सक (पुं.) 1. आकृति, 2. चेहरा। **नखशिख** (हि.)

नकसीरी (स्त्री.) 1. नाक से बहने वाला खून, 2. नाक से खून बहने का रोग। **नकसीर** (हि.)

नक़ाब (पुं.) 1. चेहरे को छिपाने या ढकने का वस्त्र, 2. बनावटी मुखौटा, 3. घूँघट।

नकारथ (वि.) व्यर्थ।

नकुल (पुं.) 1. पांडु राजा के चौथे पुत्र, माद्रीपुत्र, 2. (दे. न्योळ)।

नकेल (स्त्री.) 1. कील जो ऊँट के नाक में डाली जाती है, 2. पशु के नाक में डली रस्सी, 3. बागडोर–उसकी नकेल मेरे हाथ मैं सै, 4. किसी को **वश में** रखने की व्यवस्था, 5. (दे. नाथ); **~खोल्हणा** 1. अनुशासन न रखना, 2. बूढ़े पशु की नकेल निकालना; **~घालणा** 1. वश में करना, 2. बहुत सताना, 3. पशु (बैल आदि) के नाक में छिद्र करके नकेल डालना; **~ढील्ली छोडणा** अंकुश ढीला करना।

नकेलणा (क्रि. स.) 1. नकेल डालना, नथना, 2. वश में करना।

नक्कारख़ाना (पुं.) नौबतखाना।

नक्कारची (पुं.) नक्कारा बजाने वाला।

नक्क़ाल (पुं.) दे. नकलची।

नक्क़ाशी (स्त्री.) धातु आदि पर खोद कर बेल-बूटे आदि बनाने का काम।

नक्को (वि.) 1. लंबे नाक वाली, 2. अपने सम्मान का अधिक ध्यान रखने वाली (व्यंग्य में प्रयुक्त), तुनक मिज़ाज।

नक्श (पुं.) शक्ल-सूरत की बनावट।

नक्शा (पुं.) दे. नक्सा।

नक्शानवीस (पुं.) नक्शा लिखने या बनाने वाला।

नक्षत्र (पुं.) दे. नछत्तर।

नक्सा (पुं.) 1. नक्शा, चित्र, मानचित्र, 2. स्वभाव–तैरै ए नक्से का भेद नाँ पाँमता, 3. झूठा अभिमान, 4. नखशिख; **~करणा** नखरे करना; **~खींचणा** 1. यथावत् वर्णन करना, 2. नक्शा उतारना; **~झाड़णा** मान- मर्दन करना।

नख (पुं.) दे. नूँह।

नखबाघा (पुं.) वह ताबीज जिसमें रींछ आदि का नख बंधा हो।

नखरा (पुं.) 1. नाज़, चोचला, 2. चुल-बुलापन, चंचलता।

नखशिख (पुं.) नख से शिखा तक के शरीर के सभी अंग।

नखालस (वि.) ख़ालिस, शुद्ध, अमिश्रित।

नखिद (वि.) दे. निखद।

नग (पुं.) 1. नगीना, 2. रत्न, मणि, 3. पहाड़, 4. हाथी, 5. अदद, संख्या।

नगद (वि.) 'उधार' का विलोम, (दे. नकद)।

नगदी (स्त्री.) ठोस रक़म, रुपया-पैसा। **नक़दी** (हि.)

नगन (वि.) 1. निर्लज्ज, 2. वस्त्रहीन; **~-उघाड़ा** सर्वथा वस्त्र-रहित। **नग्न** (हि.)

नगर (पुं.) 1. शहर, 2. नवीनतम सुविधाओं से युक्त बड़ी बस्ती।

नगरपालिका (स्त्री.) स्वायत्त शासन करने वाली स्थानीय संस्था।

नगरी[1] (स्त्री.) 1. छोटा शहर, 2. राजधानी।

नगरी[2] (पुं.) गूजरों का एक गोत।

नगारा (पुं.) 1. युद्ध का बाजा, 2. बड़ा ढोल।

नगीना (पुं.) दे. नगीन्ना।

नगीन्ना (पुं.) मणि, चमकीला पत्थर; (वि.) श्रेष्ठ (व्यक्ति)। **नगीना** (हि.)

नगोड्डा (वि.) नीच, दुष्ट, (दे. अणगोड्ड्या)। **निगोड़ा** (हि.)

नगोळ (स्त्री.) मकान के ऊपर शिखर पर बनी छत (कौर.)।

नचणउँआ (पुं.) नर्तक, नाचने वाला; (वि.) निर्लज्ज, (दे. जिनानिया)।

नचाणा (क्रि. स.) 1. नचवाना, 2. तंग करना, 3. लट्टू-फिरकी आदि घुमाना। **नचाना** (हि.)

नचाना (क्रि. स.) दे. नचाणा।

नचार (पुं.) नाचने वाला (सीमित प्रयोग), (दे. नचणउँआ)।

नचिकेता (पुं.) वाजश्रवा के पुत्र जिसने साक्षात् यम से मृत्यु का ज्ञान प्राप्त किया था।

नचीत/नचीत्ता (वि.) निश्चिंत, निधड़क; **~होणा** हर प्रकार की चिंता से मुक्त होना।

नछत्तर (पुं.) 1. भाग्य, 2. ग्रह, तारा; **~माड़ा होणा** बुरे दिन होना। **नक्षत्र** (हि.)

नज़दीक (क्रि. वि.) दे. नजीक।

नजर (स्त्री.) दृष्टि, निगाह; **~करणा** नज़र लगाना, ऐसी दृष्टि से देखना कि वस्तु आदि में विकार उत्पन्न हो जाए; **~चढणा** 1. पसंद आना, 2. आँखों में खटकना; **~बाँधणा** 1. नज़रबंदी करना, 2. बुरी नजर का प्रभाव दूर करना; **~मारणा** 1. दूर से चमकना, 2. बुरी नज़र पड़ना, 3. जाँच-पड़ताल करना।

नजरबंद (वि.) शासक द्वारा किसी व्यक्ति पर एक स्थान विशेष पर ही रहने का प्रतिबंध; (पुं.) क़ैदी।

नजरबंधी (स्त्री.) 1. जादूगरी, 2. नज़रबंद करने का भाव। **नज़रबंदी** (हि.)

नजराणा (क्रि. अ.) नज़र लगना, बुरी दृष्टि का प्रभाव पड़ना; (वि.) जिसे शीघ्र नज़र लगे; (पुं.) भेंट। **नजराना** (हि.)

नजराना (क्रि. अ.) दे. नजराणा; (पुं.) दे. नजराणा।

नजला (पुं.) जुकाम।

नज़ाकत (स्त्री.) 1. नाजुक होने का भाव, 2. नखरा।

नजात (स्त्री.) छुटकारा।

नज़ारा (पुं.) दृश्य।

नजीक (क्रि. वि.) नज़दीक, निकट।

नजीरा (पुं.) बालक को नज़र से बचाने के लिए बाँधी जाने वाली काली माला या अन्य कोई ताबीज़ आदि।

नजेट (स्त्री.) भेंट। नजराना।

नट (पुं.) 1. एक जाति विशेष, 2. कलाबाज, रस्सी-नृत्य तथा बाँस पर चढ़कर कला-कौशल दिखाने वाला, 3. (दे. भाँड)।

नटणा (क्रि. स.) दे. नाटणा।

नटणी (स्त्री.) 1. नट की पत्नी, 2. नृत्य करने वाली; (वि.) चंचल महिला। **नटनी** (हि.)

नटराज (पुं.) शिव।

नटवा (वि.) छोटा। नाटा।

नटूर (पुं.) 1. नारा, छोटी अवस्था का बैल, 2. वह बछड़ा जिसे बधिया नहीं कराया हो, 3. (दे. नारिया); (वि.) उच्छृंखल; **~सूद्‌धा कराणा** बछड़े को बधिया कराना।

नढाहल्ली (स्त्री.) दे. नढेल।

नढेल (स्त्री.) रस्सी जिससे बैल जुए में जोता जाता है; **~काढणा** 1. सहायता देना बंद करना, 2. संरक्षण वापिस लेना।

नढेली (स्त्री.) दे. नढेल।

नणद (स्त्री.) पति की बहिन। **ननद** (हि.)

नणदल (स्त्री.) ननद (स्नेह-द्योतन में प्रयुक्त)।

नणदी (स्त्री.) दे. नणद।

नणदूत (पुं.) दे. भाणजा।

नणदेऊ (पुं.) ननद का पति। **ननदोई** (हि.)

नणदोइया (पुं.) ननदोई।

नतीजा (पुं.) दे. नतीज्जा।

नतीज्जा (पुं.) परिणाम, फल। **नतीजा** (हि.)

नत्थी (वि.) काग़ज़ आदि एक-दूसरे के साथ संलग्न करने या जोड़ने की क्रिया, 2. वह पुरुष जिसका नाक छिदा हो।

नत्थु (वि.) 1. जिसका नाक बींधा गया हो, वह लड़का जिसके नाक में छिद्र हो, 2. जिसके छिदे नाक में आभूषण न हो।

नत्थो (वि.) जिसके नाक का छेद बड़ा छिद गया हो।

नथ (स्त्री.) दे. नाथ।

नथणा (पुं.) नाक के आगे का फूला हुआ भाग; (क्रि. स.) 1. पशु के नाक में रस्सी डालना, 2. क़ाबू में करना। **नथना** (हि.)

नथना (पुं.) दे. नथणा।

नथली (स्त्री.) छोटी नथ। दे. नाथ।

नथाळा (वि.) 1. (बैल) जिसके नाक में नाथ डाल दी गई हो, 2. (बैल) जो नाथ के झटके की परवाह न करे।

नदी (स्त्री.) दे. नद्‌दी।

नदीद्‌दा (वि.) 1. जिसे किसी चीज़ का अभाव खटकता हो, 2. जो हर किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा करे, 3. लोभी।

नद्‌दी (स्त्री.) दरिया। **नदी** (हि.)

ननद (स्त्री.) दे. नणद।

ननदोई (पुं.) दे. नणदेऊ।

ननसाळ (पुं.) ननिहाल, नाना का घर।

ननिहाल (पुं.) ननसाळ।

नन्नो (वि.) लड़की जिसका जन्म ननसाल में हुआ हो; (स्त्री.) नाइन।

नन्हा (वि.) दे. नान्हा।

नपाई (स्त्री.) दे. नेप[2]।

नपीणा (पुं.) 1. नाप, 2. नपाई, 3. (दे. नेप[2]), 4. (दे. नाप)।

नपुंसक (पुं.) दे. नपुणसक।

नपुणसक (पुं.) हिजड़ा; (वि.) 1. नामर्द, 2. डरपोक। **नपुंसक** (हि.)

नपूत (वि.) 1. जिसके घर पुत्र न हो, 2. अभागा, 3. रंडवा; **~जाणा** 1. पुत्र-विहीन मरना, 2. वंश-परंपरा न चलना।

नपूतड़ा (पुं.) पुरुषों को दी जाने वाली एक गाली; (वि.) पुत्रहीन।

नपूत्ता (वि.) दे. नपूतड़ा।

नपूत्ती (वि.) (स्त्री.) जिसके पुत्र न हो; (स्त्री.) स्त्रियों को दी जाने वाली एक गाली।

नपोज (स्त्री.) जिस भूमि में कम अन्न उपजे।

नफ़रत (स्त्री.) घृणा।

नफराम (वि.) दे. निफराम।

नफर (पुं.) दास, गुलाम।

नफरी (स्त्री.) टोली।

नफा (पुं.) लाभ, रुपये-पैसे का लाभ।

नफ़ीरी (स्त्री.) तुरही।

नफ़ीस (वि.) 1. सुंदर, 2. बढ़िया, उम्दा।

नबज (स्त्री.) नाड़ी; **~पिछाणणा** 1. समयानुसार व्यवहार करना, 2. नाड़ी देखना। **नब्ज़** (हि.)

नबिया (पुं.) नब्बे, विक्रम संवत् 1990 का वर्ष (इस वर्ष अतिवृष्टि के कारण जल-थल एक हो गया था); **~आळी साल** वि. सं. 1990 का वर्ष जो बाढ़ के कारण स्मरणीय है।

नबी (पुं.) ईश्वर का दूत, रसूल।

नबेड़णा (क्रि. स.) 1. निपटाना, 2. कार्य का समापन करना। **निबेड़ना** (हि.)

नबेड़ना (क्रि. स.) दे. नबेड़णा।

नबेड़ा (पुं.) 1. निपटारा, 2. कार्य के समापन का भाव, 3. (दे. निमतेड़ा)।

नबौला (पुं.) 1. दे. बिंदौळा, 2. काकड़ा (मेवा.)।

नब्बे (वि.) दे. नब्बै।

नब्बै (वि.) नब्बे की संख्या।

नम (वि.) गीला, कम गीला (तुल. आल्ला)।

नमक (पुं.) नूण।

नमकगर (पुं.) नमक बनाने वाला, (दे. आगरी)।

नमकहराम (वि.) कृतघ्न।

नमकहलाल (वि.) स्वामीनिष्ठ।

नमकीन (वि.) दे. नूणा; (पुं.) वह पकवान जिसमें नमक पड़ा हो।

नमतेड़ा (पुं.) दे. निमतेड़ा।

नमदा (पुं.) जमाया हुआ ऊनी कपड़ा विशेष।

नमन (पुं.) प्रणाम।

नमल (वि.) तुलना में कुछ न्यून।

नमफ़सल (स्त्री.) चावल आदि की फ़सल।

नमस्कार (पुं.) प्रणाम।

नमस्ते (स्त्री.) नमस्कार, प्रणाम (तुल.) 1. राम-राम, 2. जयराम जी की।

नमा (पुं.) वैश्नोई संप्रदाय की नमन-पद्धति।

नमाज़ (स्त्री.) दे. निमाज।

नमूना (पुं.) दे. नमून्ना।

नमून्ना (पुं.) 1. बानगी, 2. ख़ाका, ढाँचा, 3. आदर्श।

नमेड़ (पुं.) एक छोटा सा फल।

नमोनराण (पुं.) साधुओं को किया जाने वाला नमस्कार। **नमोनारायण** (हि.)

नम्र (वि.) विनीत।

नम्रता (स्त्री.) विनय।

नयणा (क्रि. अ.) 1. टहनी आदि का झुकना या टेढ़ा होना, 2. विनम्रता से

काम निकालना, 3. हठ छोड़ना, 4. झुकना; (वि.) लचीला; (पुं.) नयन (कविता आदि में प्रयुक्त)। **नयन** (हि.)

नयणी (वि.) 1. झुकने या शीघ्र मुड़ने वाली, लचीली, 2. बड़े नेत्र वाली।

नयन (पुं.) दे. नैण।

नयना (क्रि. अ.) दे. नयणा; (पुं.) दे. नयणा।

नया (वि.) 1. नवीन, नूतन, 2. अनुभवहीन।

नयापण (पुं.) नए होने का भाव। **नयापन** (हि.)

नर (पुं.) पुरुष; (वि.) साहसी; **~-माणस** दृढ़-संकल्प का व्यक्ति।

नरक (पुं.) 1. वह लोक जहाँ दुष्कर्म करने वाला व्यक्ति मृत्यु के बाद भयंकर यातना भोगते हैं, 2. भयंकर कष्टदायक स्थान; **~करणा** जीवन को अत्यंत कष्टमय बनाना; **~भोगणा** 1. भयंकर दुःख भोगना, 2. नरक में जाना।

नरक-चौद्दस (स्त्री.) छोटी दीवाली का दिन। **नरक-चतुर्दशी** (हि.)

नरकद[1] (पुं.) रोहतक, जींद, अंबाला, जगाधरी तथा करनाल के बीच का क्षेत्र।

नरकद[2] (स्त्री.) कम उपजाऊ भूमि। दे. नरकद[1]।

नर गंधर्व (पुं.) पं. लखमी चंद को लोकमान्यता द्वारा दी गई उपाधि।

नरगिस (स्त्री.) 1. एक सुगंधित फूल, 2. इस फूल का पौधा।

नरजणा (क्रि. अ.) दे. लरजणा; (वि.) वह जो शीघ्र लचक जाए, लचकीला।

नरजा (पुं.) 1. छोटा तराजू, 2. नरसल, सरकंडा।

नरड़ा (पुं.) गाजर-मूली आदि के अंदर का भाग जो पक कर कठोर पड़ जाता है; (वि.) अधिक पकी हुई (सब्जी आदि); **~पड़णा/होणा** गाजर, मूली आदि का पकना।

नरद (पुं.) नारद (वि.) लड़ाई झगड़ा करवा देने वाला। उदा. नारद तै माता नरद घणेरा।

नरदक[2] (पुं.) 1. करनाल कैथल क्षेत्र की बोली।

नर-नारायण (पुं.) नर-नारायण नामक मुनि जिन्होंने हरियाणे में तपस्या की और अनेक यज्ञों का अनुष्ठान किया (म. भा.-वन पर्व)।

नरपति नाल्ह (पुं.) वीरगाथा काल का भिवानी निवासी एक कवि।

नरम (वि.) 1. कोमल, 2. गुदगुदा, 3. ढीला, जैसे-नरम आटा, 4. शांत स्वभाव का (व्यक्ति)। **नर्म** (हि.)

नरमा (स्त्री.) 1. एक प्रकार की कपास, 2. ओढ़नी; (क्रि. स.) 'नरमाणा' क्रिया का आदे. रूप।

नरमाई (स्त्री.) 1. विनम्रता, 2. किसी वस्तु के नरम या ढीला होने का भाव; (क्रि. स.) 'नरमाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~पकड़णा** 1. विनम्रता का व्यवहार अपनाना, 2. नरम होना। **नर्मी** (हि.)

नरमाणा (क्रि. अ.) 1. नर्म होना, 2. क्रोध कम होना, 3. गुड़-शक्कर आदि का ढीला पड़ना; (क्रि. स.) 1. नरम करना, 2. ढीला या पतला करना। **नरमाना** (हि.)

नरमाना (क्रि. अ.) दे. नरमाणा; (क्रि. स.) दे. नरमाणा।

नरमी (स्त्री.) दे. नरमाई।

नरसल (पुं.) बैंत की जाति का एक पौधा।

नरसिंघी (पुं.) नरसिंह भगवान का अवतार (इनकी जयंती वैशाख शुक्ल चतुर्दशी को होती है)। **नरसिंह** (हि.)

नरसी (पुं.) 1. नरसिंह का अवतार, नरसिंह, 2. भगवान का एक भक्त जिसके यहाँ श्रीकृष्ण स्वयं भात भरने गए थे।

नरी[1] (पुं.) लाल रंग की जूती का चमड़ा।

नरी[2] (स्त्री.) जुलाहे की बुनाई का नाप-तोल।

नरेश (पुं.) राजा।

नरोई (वि.) नीरोग (कौर.)।

नरोळ (वि.) 1. साफ़, बेदाग़, 2. अमिश्रित।

नर्म (पुं.) दे. नरम।

नर्मदा (स्त्री.) एक पवित्र नदी।

नल (पुं.) 1. दे. नळ[1], 2. दे. नळ[2]।

नळ[1] (पुं.) 1. सिंचाई के लिए बनाया गया नाला, 2. पानी की टोंटी, 3. पेट की एक नाली विशेष। **नल** (हि.)

नळ[2] (पुं.) एक प्रतापी राजा जिसे घोर आपत्तियाँ झेलनी पड़ीं, दमयंती का पति।

नळकी (स्त्री.) नाली, रबड़ आदि की छोटी नाली। **नलकी** (हि.)

नळगा (क्रि. स.) निराई करना, (दे. नळाणा); (क्रि. अ.) निराई का कार्य संपन्न होना; (वि.)जिसकी निराई शीघ्र हो।

नळवा (पुं.) 1. हरिसिंह नलवा जो प्रसिद्ध योद्धा था तथा जिसके नाम की धाक अफ़गानिस्तान में अब भी है, 2. छोटी नाली।

नला (पुं.) दे. नळा[1]।

नळा[1] (पुं.) 1. पेट की अंतड़ी, 2. जुलाहे की शटल।

नळा[2] (पुं.) निराई, निराने या नलाने की क्रिया; (क्रि. स.) 'नळाणा' क्रिया का आदे. रूप; **~आणा** खेत का निराई योग्य होना; **~करणा** खेत की निराई करना।

नळाई (स्त्री.) 1. निराई या नलाई का काम, 2. निराई की मज़दूरी।

नळाणा (क्रि. स.) खेती के औज़ारों से फ़सल का खरपतवार आदि निकालना। **निराना** (हि.)

नळावा (वि.) निराई या नलाई करने वाला।

नळिया (स्त्री.) छोटी नाली।

नळी (स्त्री.) 1. नली, 2. नाली, 3. फुँकनी।

नलौणा (क्रि.) दे. नलाणा।

नवंबर (पुं) अंग्रेज़ी वर्ष का ग्यारहवाँ महीना।

नवखंड (पुं.) पृथ्वी के नौ खंड।

नवग्रह (पुं.) सूर्य, चंद्र आदि नौ ग्रह जिनका पूजन धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता है।

नवदुर्गा (स्त्री.) चंद्रा घंटा, कात्यायनी आदि नौ दुर्गाएँ।

नवमी (स्त्री.) दे. नोम्मी।

नवरात्र (पुं.) दे. नोरते।

नवाणा (क्रि. स.) झुकाना, मोड़ना। **नवाना** (हि.)

नवाना (क्रि. स.) दे. नवाणा।

नवाब (पुं.) मुसलमान शासक; (वि.) ठाठ-बाट से रहने वाला।

नवाबी (वि.) दे. नवाब्बी; (स्त्री.) दे. नवाब्बी।

नवाब्बी(वि.) 1. नवाब के समान (ठाठ-बाट), 2. नवाब से संबंधित; (स्त्री.) नवाब का शासन। **नवाबी** (हि.)

नवासा (पुं.) 1. नाती, 2. (दे. नोस्सा)।

नवास्सा (पुं.) नाती।

नवास्सी (वि.) नवासी की गिनती। **नवासी** (हि.)

नवेल्ला (वि.) नया, बिल्कुल नया। **नबेला** (हि.)

नवेल्ली (वि.) नई (वधू); (स्त्री.) वधू। **नवेली** (हि.)

नवैहा (पुं.) नया अन्न। फसल से पहला निकाला गया अन्न।

नशा (पुं.) दे. नसा।

नशीला (वि.) मादक।

नशेबाज (पुं.) दे. नसेहड़ी।

नश्तर (पुं.) दे. नस्तर।

नश्वर (वि.) नाशवान।

नष्ट (वि.) जिसका नाश हो गया हो।

नस (स्त्री.) 1. नाड़ी, 2. व्यवहार या चरित्र का दुर्बल पक्ष; **~पाकड़णा** 1. कमज़ोरी जानना, 2. रोग पहचानना; **~दाबणा** कमज़ोरी पहचानना।

नसणा (क्रि. अ.) 1. बच निकलना, बचना–काम तैं नसणा, 2. भागना। **नसना** (हि.)

नसद्दर (पुं.) एक तीक्ष्ण क्षार या नमक। **नौसादर** (हि.)

नसल (स्त्री.) 1. वंश, जाति, 2. पशु-पक्षी की जाति।

नसवार (स्त्री.) दे. हुलाँस।

नसा (पुं.) 1. मस्ती, 2. उन्मत्त होने का भाव, 3. मादकता; (वि.) नष्ट करने वाला। **नशा** (हि.)

नसाणा[1] (क्रि.) भगाना।

नसाणा[2] (क्रि.) नष्ट करना, उदा.–ब्रह्महत्या का पाप नसाया।

नसाणी (स्त्री.) 1. दे. नकछींकणी, 2. दे. हुलाँस।

नसान (पुं.) ढोल।

नसीब (पुं.) दे. नसीब्बा।

नसीब्बा (पुं.) भाग्य, दैव; **~रूसणा** बुरे दिन आना, भाग्य रूठना। **नसीब** (हि.)

नसीहत (स्त्री.) 1. सीख, 2. उपदेश।

नसूर (पुं.) नासूर।

नसेसक (वि.) नि:शेषक, जिसके पास करने को कुछ न हो (कौर.)।

नसेहड़ा (वि.) 1. नशेबाज, 2. नशा चढ़ाने वाली वस्तु, मादक (पदार्थ)।

नसेहड़ी (वि.) नशाख़ोर, नशा करने वाला।

नस्तर (पुं.) 1. चेचक का टीका, 2. टीका। **नश्तर** (हि.)

नहणी (स्त्री.) सुनार की छैनी।

नहर (स्त्री.) नदी से निकाला गया बड़ा नाला, सिंचाई के लिए खोद कर बनाया गया चौड़ा-लंबा नाला।

नहरणा (पुं.) दे. नेहरणा।

नहरनी (स्त्री.) दे. नेहरणा।

नहरवा (वि.) 1. नहरी क्षेत्र का रहने वाला, 2. नहर से संबंधित; (पुं.) छोटी नहर।

नहरी (वि.) 1. नहरी क्षेत्र का निवासी, 2. (क्षेत्र) जिसमें नहर से सिंचाई की जाती है।

नहलाना (क्रि. स.) दे. नुहाणा।

नहाणबार (पुं.) वह वार या दिन जब जच्चा का शुद्धि-स्नान करवाया जाता है (अधिकतर दसवें दिन); **~कढवाणा/सिधवाणा** जच्चा की शुद्धि के लिए हवन की तिथि निश्चित करवाना।

नहाणा (क्रि. अ.) 1. स्नान करना, 2. भार-मुक्त होना (व्यंजना में प्रयुक्त)। **नहाना** (हि.)

नहणी (स्त्री.) सुनार की छैनी।

नहाना (क्रि. अ.) दे. नहाणा।

नहार (पुं.) शेर। **नाहर** (हि.)

नहारवा (पुं.) नासूर।

नहावड़ा (पुं.) दे. नाहवड़ा।

नहियाँ (पुं.) चमड़ा आदि साफ़ करने का उपकरण।

नहीं (अव्य.) 1. नकारात्मक शब्द, न, 2. 'हाँ' का विलोम।

नहुष (पुं.) दे. नहुस।

नहुस (पुं.) एक प्रतापी राजा। **नहुष** (हि.)

नहेली (स्त्री.) दे. नवेल्ली।

नाँ[1] (अव्य.) न, नहीं, निषेधद्योतक शब्द; **~का सिर फोड़णा** कार्य को अनमने भाव से करना।

नाँ[2] (पुं.) नाम; **~काढणा/धरणा** 1. नुक़्ता-चीनी करना, 2. नामकरण करना।

नाँगळ (पुं.) अग्रवाल वैश्यों का गोत्र, इनका संबंध नगेंद्र मुनि, सामवेद, कौथमी शाखा और गोभिल सूत्र से है, इनका प्रवर मांकील है, 2. हल।

नाँगळा (पुं.) 1. हल की एक रस्सी, 2. रस्सी, 3. हल।

नाँगी-पंथ (पुं.) हरियाणे का एक संत संप्रदाय।

नाँच (पुं.) 1. नृत्य, 2. स्वाँग; (क्रि.अ.) 'नाँचणा' क्रिया का आदे. रूप; **खोड़िया-~** दे. खोड़िया; **खेड्डा-~** दे. खेड्डे; **गणगोर-~** दे. गणगोर-नाँच; **डफ-~** दे. डफ-नाँच; **धमाळ-~** दे. धमाळ-नाँच; **फाग-~** दे. फाग-नाँच; **बीन बाँसुरी-~** दे. बीन-बाँसुरी नाँच; **रतवाई-~** दे. रतवाई-नाँच; **रसिया-~** दे. रसिया- नाँच; **रास-~** दे. रास-नाँच; **ल्हूर (लूर)~** दे. ल्हूर-नाँच।

नाँचणा (क्रि. अ.) 1. नृत्य करना, 2. इशारे पर काम करना, 3. प्रसन्नता व्यक्त करना, 4. इधर-उधर घूमना। **नाचना** (हि.)

नाँथणा (क्रि. स.) 1. (बछड़े आदि की) नाक में रस्सी डालना, 2. परेशान करना; (पुं.) नाथ डालने की खूँटी। **नाथना** (हि.)

नाँद[1] (स्त्री.) 1. दे. खोर, 2. शिशु-जन्म पर कुम्हार द्वारा दी जाने वाली नाँद की भेंट।

नाँद[2] (स्त्री.) एक मन नाप का मिट्टी का घड़ा। दे. झाल।

नाँदणी (स्त्री.) एक प्रकार की रस्सी विशेष।

नाँम (पुं.) दे. नाम।

नाँस (पुं.) दे. नास।

नाँसखेत (वि.) विनाशक, हर काम को बिगाड़ने वाला; (पुं.) एक पौराणिक व्यक्ति।

नाँही (अव्य.) दे. नाँ[1]।

ना[1] (अव्य.) नहीं।

ना[2] (स्त्री.) नौका। **नाव** (हि.)

ना[3] (अव्य.) ही। उदा.-तू आया ना मैं चाल्या ना। तुम्हारे आते ही मैं चलूँगा।

नाइड़ा (पुं.) नाई का ऊनता द्योतक रूप। **नाई** (हि.)

नाइन (स्त्री.) दे. नाण।

नाई (पुं.) 1. एक जाति जिसका मुख्य व्यवसाय बाल काटना, विवाह या उत्सव के समय संदेशवाहक का कार्य करना आदि है, 2. नाई जाति का व्यक्ति, 3. संदेशवाहक, 4. एक प्रकार का हल।

नाए (अव्य.) नहीं।

नाक (पुं.) नासिका; (वि.) सम्मान; **~-कान काटणा** कड़ा दंड देना; **~का बाळ** प्रतिष्ठा की वस्तु; **~पै माक्खी नाँ बैट्ठण देणा** अपनी आलोचना न सुन सकना।

नाका[1] (पुं.) दे. नाक्का।

नाका[2] (पुं.) मगर की (नक्र) आकृति के कड़े।

नाकाबंदी (स्त्री.) दे. नाक्काबंधी।

नाक़ाबिल (वि.) अयोग्य, नालायक़।

नाक्कर मोरा (पुं.) दे. नकमोरा।

नाक्का (पुं.) 1. सिंचाई की मुख्य मोरी, 2. प्रवेश-द्वार, 3. सूईं का छेद, छिद्र, 4. बंधन, 5. बाँध, 5. **~करणा** 1. छिद्र करना, 2. पानी के निकास की व्यवस्था करना; **~काटणा** पानी की निकासी करना; **~-तोड़** भरी वर्षा। **नाका** (हि.)

नाक्काबंधी (स्त्री.) सीमाबंदी; **~लाणा** बाँध लगाना। **नाकाबंदी** (हि.)

नाक्कू[1] (स्त्री.) एक प्रकार की टिड्डी, नक्र (कौर.); (पुं.) बैंगन-फल आदि का शिरोडंठल।

नाक्कू[2] (पुं.) नक्र, मगरमच्छ। दे. नाक्कू[1]।

नाक्खर (स्त्री.) दे. मुँहकाण।

नाखर (स्त्री.) दे. मुँहकाण।

नाख़ुश (वि.) अप्रसन्न।

नाखून (पुं.) दे. नूँह।

नाग[1] (पुं.) काला साँप; (वि.) भयंकर व्यक्ति; **~-नगोळा** दे. गूग्गा नोंम्मी।

नाग[2] (पुं.) हलका हल। दे. नाग।

नागड़ रागड़ (पुं.) उच्च स्वर का झूठ मूठ का गाना। उदा.-गाऊँ झूठे नागड़ रागड, खागड़ की ज्यूँ टाड रहा। (लचं.)

नागपंचमी (स्त्री.) सावन सुदी पंचमी, (इस दिन नाग की पूजा की जाती है)।

नागपंथ (पुं.) एक संप्रदाय विशेष।

नागफण (पुं.) काँटेदार झाड़ी जिसके पत्ते पर काँटेदार पत्ता उगता है और जिसकी डोडी से लाल स्याही बनाई जाती है।

नागफनी (स्त्री.) दे. नागफण।

नागर (वि.) दे. नाग्गर; (पुं.) दे. नाग्गर।

नागरिक (पुं.) किसी देश विशेष का निवासी; (वि.) नगर-संबंधी।

नागरी (स्त्री.) 1. नगर में रहने वाली स्त्री, 2. चतुर स्त्री, 3. देवनागरी लिपि, 4. हिंदी भाषा।

नागवा (पुं.) अहीर जाति का एक गोत।

नागवाण (पुं.) दे. नागवा।

नागह्रद (पुं.) पुंडरीक तीर्थ।

नागा (पुं.) दे. नाग्गा[1]; (स्त्री.) दे. नाग्गा[2]।

नागौरी (वि.) दे. नाग्गोरी।

नाग्गण (स्त्री.) नागिन (जनधारणा के अनुसार यह साँप से बिना मिले 101 अंडे देती है, जो अंडे पूँछ से खींची गई रेखा से बाहर निकल जाते हैं उनका भक्षण करती है); (वि.) विद्वेषी (महिला)। **नागिन** (हि.)

नाग्गर (वि.) समझदार, चतुर; (पुं.) 1. ब्राह्मणों का एक गोत्र, 2. एक गूजर गोत। **नागर** (हि.)

नाग्गर-पान (पुं.) अच्छी जाति का पान विशेष।

नाग्गर-सुजान (वि.) चतुर। **नगर-सुजान** (हि.)

नाग्गा[1] (पुं.) 1. नग्न अवस्था में रहने वाला साधु, 2. नागा संप्रदाय, 3. नागा जाति। **नागा** (हि.)

नाग्गा² (स्त्री.) अनुपस्थिति। **नाग़ा** (हि.)

नाग्गी¹ (स्त्री.) नागिन।

नाग्गी² (वि.) निर्लज्ज स्त्री।

नाग्गोरी (वि.) नागौर स्थान से संबंधित (पशु)। **नागौरी** (हि.)

नाच (पुं.) दे. नाँच।

नाचना (क्रि. अ.) दे. नाँचणा।

नाचीज़ (वि.) क्षुद्र, प्रभावहीन।

नाज (पुं.) अन्न; **~का कीड़ा** 1. अधिक अन्न खाने वाला व्यक्ति, 2. मनुष्य। **अनाज** (हि.)

नाज़ (पुं.) गर्व।

नाजायज़ (वि.) अनुचित।

नाज़िर (पुं.) कचहरी का एक छोटा अधिकारी।

नाझ (पुं.) 1. दे. नटूर, 2. दे. नारिया।

नाट (अव्य.) नहीं कहने का भाव।

नाटक (पुं.) 1. ड्रामा, 2. आडंबर और दिखावटी काम।

नाटणा (क्रि. स.) 1. मना करना, 2. वर्जना करना, काम करते हुए को रोकना, 3. वचन से मुकरना, 4. गर्दन हिला कर नकारात्मक उत्तर देना, 5. पशु का दूध से सूखना–गा दूध तैं नाटगी। **नाटना** (हि.)

नाटना (क्रि. स.) दे. नाटणा।

नाटवा (पुं.) 1. दूसरी बार जन्मा बछड़ा, 2. बछड़ा।

नाटा (वि.) 1. दे. नाट्टा, 2. दे. नटूर।

नाट्टा (पुं.) 1. छोटा बछड़ा, 2. (दे. नटूर); (वि.) नाटा, नाटे या छोटे क़द का; **~सूद्धा करणा** बछड़े के अंडकोश दबा कर बधिया करना, बछड़े को निर्बीज करना। **नाटा** (हि.)

नाठ (वि.) निस्संतान (मेवा.)।

नाड़¹ (स्त्री.) 1. गर्दन, ग्रीवा, 1. (दे. घीट्टी), 2. (दे. गुद्दी), 2. बैलगाड़ी के जुए को कसने वाली रस्सी; **~तुड़ाणा** सामर्थ्य से अधिक बोझा ढोना।

नाड² (पुं.) दे. नारिया।

नाड़³ (स्त्री.) गाड़ी की रस्सी। दे. नाड़ा।

नाड़ा (पुं.) 1. कटिबंध, नीवीबंध, 2. जुए को हल से संबद्ध करने वाली चमड़े की रस्सी, 3. कटि का आभूषण जिसमें चाँदी की पतली शृंखलाओं में घुँघरू बँधे होते हैं, इसके दो किनारों पर चाँदी के गुच्छे होते हैं; **~टूटणा** चरित्र से गिरना; **~(–ड़े) तैं नाड़ा घसणा** गृहस्थ-जीवन निभाना।

नाड़ा खाड़ा (स्त्री.) सूखी खाल।

नाड़ी (स्त्री.) 1. नब्ज़, धमनी, 2. रस्सी, 3. चमड़े की रस्सी; **~छूटणा** नब्ज़ चलनी बंद होना, शरीर शांत होना; **~-साँट्टा** चमड़े की रस्सियों का चाबुक।

नाण (स्त्री.) नाई की पत्नी; **~सी हाँडणा** अधिक कार्यरत दीख पड़ना। **नाइन** (हि.)

नाता (पुं.) दे. नात्ता।

नाती (पुं.) दे. नात्ती।

नातेदार (पुं.) दे. नात्तेदार।

नात्ता (पुं.) 1. संबंध, रिश्तेदारी, 2. रस्सी जो रई या मथानी के चारों ओर लपेटी जाती है, नेता; **~करणा** सगाई करना, विवाह-संबंध करना; **~(–ते) ढील्ले होणा** 1. शरीर शिथिल पड़ना, 2. संबंधों में शिथिलता आना; **~लीकड़णा** आपस में कोई संबंध या रिश्तेदारी मिलना। **नाता** (हि.)

नात्तिण (स्त्री.) 1. रिश्ते या संबंध में पास की बैठने वाली, 2. पुत्री की पुत्री। **नातिन** (हि.)

नात्ती (पुं.) 1. रिश्तेदार, 2. (दे. धेवता), 3. (दे. गोत्ती)। **नाती** (हि.)

नात्ते (पुं.) 1. धेवता या दौहित्र, पुत्री की संतान, 2. संबंध।

नात्तेदार (पुं.) 1. संबंधी, 2. परिचित। **नातेदार** (हि.)

नात्थी (वि.) 1. जिसके नाक में नाथ डाल दी गई हो, 2. (दे. नत्थी); (क्रि. स.) 'नाथणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

नाथ (स्त्री.) 1. पशु के नाक को छेद कर डाली गई रस्सी, 2. स्त्रियों द्वारा नाक में धारण किया जाने वाला वलय; (पुं.) 1. स्वामी, 2. साधु, 3. नाथ संप्रदाय का साधु; (क्रि. स.) 'नाथणा' क्रिया का आदे. रूप; **~की काण करणा** 1. बंधन स्वीकार करना, 2. नाक के बँधे रस्से के इशारे पर चलना; **~-गळाम्मी तोड़णा** 1. स्वछंद होना, 2. बूढ़ा होने पर बैल को स्वछंद छोड़ना; **~घालणा** 1. बछड़े को नथना, 2. बहुत परेशान करना, 3. क़ाबू में रखना; **~टूटणा** कौमार्य भंग होना।

नाथना (क्रि. स.) दे. नाँथणा।

नाथ-पंथ (पुं.) कनफाड़े साधुओं का संप्रदाय विशेष।

नाथ-पंथी (पुं.) नाथ पंथ को मानने वाला, (दे. मोड्डा)।

नाथ-संप्रदाय (पुं.) हरियाणे के कुछ क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक आस्तिक संप्रदाय [एक मत के अनुसार 'न' का अर्थ नहीं और 'अथ' का अर्थ आरंभ से है, अर्थात् जिस मत का आरंभ नहीं, अनादि शिव इस मत के आदि माने गए हैं, कुछ लोग इसे बौद्ध धर्म की विकृति मानते हैं, अबोहर (भोर-रोहतक) और पेहवा (कुरुक्षेत्र) में इस संप्रदाय के मंदिर और अखाड़े हैं]।

नाद (पुं.) 1. ध्वनि, 2. संगीत, 3. एक बाजा विशेष।

नादान (वि.) 1. नासमझ, 2. अल्पवयस्क।

नादारी (स्त्री.) दरिद्रता।

नादिरशाह (पुं.) फ़ारस का एक लुटेरा और क्रूर बादशाह जिसने 1739 ई. में दिल्ली को लूटा था।

नादिरशाही (स्त्री.) मनमाना जुल्म; (वि.) बहुत कठोर और उग्र।

नादी (पुं.) शंख।

नाधिया (पुं.) 1. शिव का वृषभ, 2. अधिक अंग वाली गाय या बछड़ा। **नादिया** (हि.)

नानक (पुं.) 1. वह बालक जिसका जन्म नाना के घर हुआ हो, 2. एक संत जो सिख-धर्म के आदि गुरु थे, गुरु नानकदेव (1469-1539 ई.)।

नानकपंथी (पुं.) गुरु नानकदेव के पंथ को मानने वाले, सिख।

नानका (वि.) 1. नाना के अंश, स्वभाव या प्रकृति से प्रभावित या संबंधित, 2. नाना से संबंधित; (पुं.) नाना का परिवार–नानका के दादका–प्रकृति, गुण, स्वभाव नाना या दादा के कुल से प्रभावित होते हैं।

नानगी (स्त्री.) एक साध्वी।

नाना (पुं.) दे. नान्ना।

नान्नस (स्त्री.) नानी-सास, पति की नानी।

नान्नसरा (पुं.) पति का नाना, नाना-ससुर।

नान्ना (पुं.) माँ का पिता। **नाना** (हि.)

नान्हा (वि.) 1. बारीक (सूत या आटा), 2. क्षुद्र, छोटा; (पुं.) छोटा बालक;

~**कातणा** बारीकी से सोचना; **बाळक**-~ गोद का बच्चा।
नन्हा (हि.)

नान्हीं (वि.) 1. छोटी, 2. बारीक; (स्त्री.) बालिका, छोटी बालिका।? **नन्हीं** (हि.)

नाप (पुं.) 1. नाप की निश्चित प्रमाण या लंबाई, 2. (दे. माँप), 3. कपड़े, जूते आदि का नाप, 4. (दे. पवाणा); (स्त्री.) दे. धरण।

नापक (पुं.) दे. नाप।

नापणा (क्रि. स.) 1. प्रमाण जाँचना, 2. थाह लेना; (पुं.) नाप का माप।
नापना (हि.)

नापना (क्रि. स.) दे. नापणा।

नापसंद (वि.) 1. अप्रिय, 2. जो अच्छा न लगे।

नापाक (वि.) 1. अपवित्र, 2. मैला- कुचैला।

नापैद (वि.) 1. विलुप्त, अदृश्य, 2. नष्ट, 3. जो पैदा ही न हुआ हो; ~**करणा** 1. वंश मिटाना, 2. पैदा ही न होने देना।

नाबालिग़ (वि.) 1. जो पूरा जवान न हुआ हो, 2. अल्पवयस्क।

नाब्भी (वि.) 1. उन्नाबी (रंग), 2. उन्नाबी रंग का, कालापन लिए हुए लाल रंग का; (स्त्री.) दे. सूँड्डी। **नाभि** (हि.)

नाभि (स्त्री.) दे. सूँड्डी।

नाभी (पुं.) पीला मिश्रित लाल रंग।

नामंजूर (वि.) अस्वीकार।

नाम (पुं.) 1. किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु आदि को संबोधित करने के लिए दिया गया शब्द, 2. प्रसिद्धि, 3. भगवान का नाम, जैसे–नाम जपणा; ~**कढाई/धराई/रखाई** दक्षिणा जो नामकरण संस्कार के समय दी जाए; ~**कमाणा** प्रसिद्धि अर्जित करना; ~-**का** 1. कहने-सुनने मात्र का, 2. प्रभावहीन; ~**काढणा/धरणा** 1. कमी निकालना, 2. चिढ़ निकालना, 3. नाम रखना; ~**चालणा** 1. प्रसिद्धि बनी रहना, 2. वंशावली चलना, 3. वस्तु का उसके ट्रेड-मार्क के कारण बिकते रहना; ~**तरणा** 1. नाम चलना, 2. चरितार्थ होना; ~**नाँ लेणा** 1. किसी के प्रति घृणा उत्पन्न होना, 2. चुप्पी साधना, 3. भूलना; ~**मिटाणा** 1. वंश समाप्त करना, 2. नापैद करना; ~**लगाणा** दोष मढ़ना; ~-**लेण नैं** नाम मात्र को; ~-**लेवा** 1. नाम चलाने वाला (संतति), 2. संध्या-तर्पण के समय पितरों का नाम लेने वाला (पुत्र); ~ ~**पाणी देवा** 1. संतान (पुत्र), मृत्यु के बाद वंश चलाने वाले, 2. पितरों का तर्पण करने वाली संतान; ~-**स्याम के** बिना परिश्रम की मज़दूरी; ~**होणा** 1. प्रसिद्धि होना, 2. पराई बुराई सिर लगना।

नामक (वि.) नाम से प्रसिद्ध, नाम वाला, जैसे–राम नामक।

नामकरण (पुं.) हिंदुओं के सोलह संस्कारों में से पाँचवाँ संस्कार जिसमें बच्चे का नाम रखा जाता है।

नामचारा (पुं.) औपचारिकता निभाने या नाम मात्र करने के लिए।

नामज़द (वि.) 1. जिसका नाम किसी बात के लिए निश्चित कर लिया गया हो, 2. प्रसिद्ध।

नामड़ (वि.) 1. नामवाली, 2. कीमती।

नामदेव (पुं.) एक प्रसिद्ध भक्त (1270-1350 ई.) जो छीपी जाति के थे (कार्तिक शुक्ल नवमी को इनकी जयंती मनाई जाती है)।

नामधारी (पुं.) वीर नाम वाला, सरनाम।

नामनिशान (पुं.) चिह्न, पट्टा।

नामर्द (वि.) 1. नपुंसक, 2. डरपोक।

नामावली (स्त्री.) नामों की सूची।

नामुमकिन (वि.) असंभव।

नामोर (वि.) नामवर, प्रसिद्ध।

नामोस (वि.) जिसे मनाया ना जा सके, पक्का जिद्दी।

नामोस्सी (स्त्री.) मन मारने का भाव।

नाम्माँ (पुं.) नक़द रुपया-पैसा, धन- दौलत; **~उछळणा** अधिक धन होना। **नावाँ** (हि.)

नाम्मीं (वि.) जिसका नाम प्रसिद्ध हो गया हो, प्रसिद्ध, जाना-माना। **नामी** (हि.)

नाम्मीं-गराम्मीं (वि.) प्रसिद्ध, सर्वविदित।

नायक (पुं.) अगुआ।

नायन (स्त्री.) दे. नाण।

नायब (पुं.) सहायक, सहकारी।

नारंगी (स्त्री.) संतरा; (वि.) नारंगी रंग का।

नारंजी (स्त्री.) दे. नारंगी; (वि.) दे. नारंगी।

नार (स्त्री.) 1. स्त्री, 2. पत्नी। **नारी** (हि.)

नारड़ा (पुं.) दे. नारिया।

नारद (पुं.) लंबी चोटी वाला एक मुनि जिसका काम तीनों लोकों में विचरण करना तथा इधर की ख़बर बढ़ा-चढ़ा कर उधर कहना है (ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को इनकी जयंती मनाई जाती है); (वि.) 1. झगड़ा करवाने वाला, 2. चिड़ी-लड़ावा।

नारदपुराण (पुं.) अठारह पुराणों में से एक।

नारदी (वि.) 1. झगड़ा करवाने वाला, 2. झगड़ालू। **नारदीय** (हि.)

नारदी-विद्या (स्त्री.) लड़ाने व झगड़ा कराने की विद्या।

नारवा (पुं.) एक रोग।

नारा[1] (पुं.) छोटी आयु का बैल, बड़ा बछड़ा, 1. (दे नारिया), 2. (दे. नाधिया), 3. (दे. नटूर)।

नारा[2] (पुं.) 1. उद्घोष, 2. जय-ध्वनि; **~लाणा** उद्घोष करना।

नाराज (वि.) अप्रसन्न।

नारायण (पुं.) 1. विष्णु, 2. भगवान।

नारियल (पुं.) दे. नारियळ।

नारियळ (पुं.) 1. नारियल का फल जो विवाह-शादी जैसे धार्मिक उत्सवों पर काम आता है, 2. छोटा हुक्का जिसकी पेंदी नारियल की होती है। **नारियल** (हि.)

नारिया (पुं.) 1. बड़ा बछड़ा, 2. नया बैल, 3. (दे. नाधिया)।

नारी[1] (स्त्री.) स्त्री, (दे. नार)।

नारी[2] (स्त्री.) हलका हल। दे. नारी[1]।

नाल (स्त्री.) 1. दे. तहनाळ, 2. दे. नाळ।

नाळ[1] (स्त्री.) 1. बाँस की खोखली नली जिससे घी, गुड़, आवटी आदि तरल पदार्थ पशु के मुँह में उंडेल दिए जाते हैं, 2. एक प्रकार की घास, 3. जन्म के समय बच्चे की नाभि से जुड़ी नाल, (दे. ओरनाळ), 4. तहनाल, 5. गेहूँ का तना, 6. फुँकनी, 7. बुनकरों का एक उपकरण; **~ओजणा /देणा** 1. नाल में डाल कर पशु को पेय पदार्थ पिलाना, 2. बलात् भोजन खिलाना; **~गडणा** स्थान विशेष पर हक़ का दावा करना या होना; **~गाडणा** जन्म के समय नाभि की नाल काट कर घर के किसी भाग में गाड़ना; **~छुहाणा** बच्चे की नाल (ओरनाल या उदरनाल) काटना; **~लाणा** तहनाल लगाना।

नाल[2] (स्त्री.) कपड़ा बनाते समय काम आने वाले किश्तीनुमा यन्त्र, शटल।

नाल[3] (अव्य.) साथ (सीमित प्रयोग) (पुं.) पिननी का लंबा डंडा। दे. पिननी।

नाला[1] (पुं.) 1. दे. नाळा, 2. दे. नाड़ा।

नाळा (पुं.) 1. बड़ी नाली, 2. पतनाला, 3. नाड़ा।

नालाकी (स्त्री.) नालायकी।

नालायक (वि.) अयोग्य।

नालिश (स्त्री.) 1. अभियोग, 2. फ़रियाद।

नाली[1] (स्त्री.) 1. दे. नाळी, 2. दे. नळी।

नाली[2] (स्त्री.) सरस्वती और घग्घर के बीच का क्षेत्र।

नाळी (स्त्री.) 1. सिंचाई का नाला, 2. नलिका, 3. लंबे तिनके की घास। **नाली** (हि.)

नाव (स्त्री.) दे. ना[2]।

नावड़णा (क्रि. अ.) 1. निकट आना–अरै तावळा नावड़िये लाट्ठी ले कै, 2. ज़ल्दी आना या लौटना, 3. समाना–इतणा गींहूँ बास्सण मैं नाँ नावड़ै, 4. वश में रहना या रखना–अरै देही मैं नावड़ कै रह।

नावारसी (वि.) लावारिसी।

नाविक (पुं.) नाव चलाने वाला।

नाश (पुं.) दे. नास।

नाशपाती (स्त्री.) 1. एक फल विशेष, 2. इस फल का वृक्ष।

नाशवान (वि.) नष्ट होने वाला।

नाश्ता (पुं.) प्रातरास, (दे. कळेवा)।

नास[1] (पुं.) 1. नष्ट होना, 2. हानि; (वि.) नाश करने वाला–अरै जा नैं नास; **~जाणा** 1. नष्ट होना, 2. नष्ट होने योग्य (गाली), 3. एक गाली। **नाश** (हि.)

नास[2] (पुं.) नाक का नथुना (कौर.)।

नासखेत (पुं.) 1. एक पौराणिक पात्र, 2. पुरुषों के लिए प्रयुक्त निंदापरक शब्द।

नासटा (पुं.) 1. नासिका, नाक, 2. नाक का छिद्र।

नासणी (वि.) नाशिनी, कुल-घातिनी।

नासपीटी (वि.) दे. नासणी।

नासमझ (वि.) 1. अज्ञानी, बेवकूफ़, 2. नादान।

नासला (वि.) लंबी नाक वाला। नकटा का विलोम।

नासिक (पुं.) एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गोदावरी पर स्थित है।

नासी (अव्य.) नहीं सही। उदा.–ना खात्ता तै ना सी।

नासूर (पुं.) पुराना घाव जिससे मवाद बहता रहे, नाड़ीव्रण।

नास्तिक (वि.) 1. जिसका मूर्ति-पूजा में विश्वास न हो, 2. जिसका भगवान में विश्वास न हो, 3. अधर्मी, 4. विधर्मी, 5. 'आस्तिक' का विलोम।

नाह[1] (पुं.) 1. मालिक, 2. पति, 3. ईश्वर; (स्त्री.) चरखे का वह भाग (नाभि) जिस पर चक्कर चढ़ा होता है। **नाथ** (हि.)

नाह[2] (स्त्री.) नाभि, सूँडी। तुल. धरण।

नाहक (क्रि. वि.) वृथा।

नाहड़ (पुं.) जुआ बाँधने के काम आने वाली रस्सी।

नाहरू (पुं.) एक जानलेवा फोड़ा जो केवल नाई के नहेरने की चाक से ठीक होता है।

नाहवड़ा (पुं.) मिट्टी का पात्र जिसमें नहाने का पानी गरम किया जाता है।

नाहुक (पुं.) नहुष।

नाहेड़ा (स्त्री.) मेवाती की एक उपबोली।

निंघा (स्त्री.) 1. दृष्टि, 2. ध्यान, 3. स्मृति–मेरी बात निंघा मैं राखिये, 4. परख, 5. चौकसी, 6. कु-दृष्टि, 7. दृष्टिपात; (क्रि. स.) 'निंघाणा' क्रिया का आदे. रूप; **~करके** ध्यान से; **~चढणा** 1. पसंद आना, 2. विशेष ध्यान होना; **~पड़णा** 1. कृपा-दृष्टि होना, 2. दीख पड़ना, 3. कुदृष्टि पड़ना; **~राखणा** ध्यान रखना, ख़्याल रखना; **~लाणा** 1. नज़र गाड़ना, 2. किसी वस्तु को हथियाने के लिए हर समय नज़र रखना, 3. नज़र लगाना। **निगाह** (हि.)

निंघाणा (क्रि. स.) 1. निगाह लगाना, देखना, 2. ललचाई नज़र से देखना, 3. नज़र से निकालना, 4. कुपित दृष्टि से देखना।

निंदक (वि.) निंदा करने वाला।

निंदा (स्त्री.) 1. चुगली, 2. दूसरे की अनुपस्थिति में की गई बुराई।

निंदिया (स्त्री.) नींद।

निंबार्क (पुं.) 1. वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्तक एक आचार्य, 2. इनका चलाया हुआ संप्रदाय।

निंबेड़णा (क्रि. स.) दे. नबेड़णा।

निंबोळी (स्त्री.) श्रावण मास में नीम पर पकने वाला फल जिसकी गुठली का तेल निकाला जाता है (स्त्रियाँ इसके चूर्ण को सिर में लगाती हैं ताकि जूँ न पड़ें)। **निबोली** (हि.)

नि (अव्य.) एक उपसर्ग।

निउणी (स्त्री.) दे. नूणी[1]।

निकट (क्रि. वि.) पास, समीप, (दे. धोरै)।

निकडू (वि.) दे. नीखडू।

निकम्मा (वि.) 1. जो किसी काम का न हो, 2. निठल्ला, 3. आलसी।

निकर्मा (वि.) आलसी।

निकलना (क्रि. अ.) दे. लिकड़णा।

निकलवाना (क्रि. स.) दे. लिकड़वाणा।

निकसणा (क्रि. अ.) 1. जड़ के रोग के कारण पौधे सूखना, (दे. ओगळणा), 2. निकलना, 3. प्रकट होना, 4. परखा जाना। **निकसना** (हि.)

निका (पुं.) मुसलमानी पद्धति से किया गया विवाह। **निक़ाह** (हि.)

निकारो (वि.) मूर्ख।

निकालना (क्रि. स.) दे. लिकाड़णा।

निकाला (पुं.) दे. लिकाड़ा।

निकास (पुं.) 1. उद्गम-स्थान, 2. कुटुंब-कबीले का निकास-स्थान–म्हारा निकास दूबळधन माजरे का सै।

निकासणा (क्रि. स.) 1. उखाड़ना, 2. उभारना, 3. कठोर धरातल पर चित्र उभारना या गोदना, 4. निकालना, 5. निष्कासित करना। **निकासना** (हि.)

निकास्सी (स्त्री.) 1. निकालने की क्रिया, 2. (दे. ओगळणा)। **निकासी** (हि.)

निकाह (पुं.) दे. निका।

निकृष्ट (वि.) 1. हीन कोटि का, 2. नीच।

निकोंद (वि.) विशुद्ध–निकोंद गींह्वाँ का भा तै तेज्जै सै।

निखंड (वि.) शुद्ध। उदा. निखंड आधी रात।

निखट्टू (वि.) 1. निठल्ला, जो कोई काम न करे, 2. आलसी।

निखद (वि.) निकृष्ट, हीन कोटि का।

निखरणा (क्रि. अ.) निखार आना, साफ़ होना। **निखरना** (हि.)

निखरना (क्रि. अ.) दे. निखरणा।

निखराम (वि.) 1. निश्चिंत या मुक्त होने का भाव, 2. ठाली, खाली।

निखाया (वि.) छोटा (मेवा.)।

निखार (पुं.) 1. चमक, उज्ज्वलता, 2. स्वच्छता।

निखाळणा (क्रि. स.) दे. पखाळणा।

निखाल्ळस (वि.) शुद्ध, अमिश्रित।

निगरान (पुं.) पहरेदार।

निगळणा (क्रि. स.) 1. गले से नीचे उतारना, 2. हड़पना, 3. (दे. सफळणा)। **निगलना** (हि.)

निगाह (स्त्री.) दे. निंघा।

निगुरा (वि.) 1. अभद्र, 2. (दे. घूह्ना), 3. (दे. नुगरा), 4. बिना गुरु का।

निगोड़ा (वि.) दे. अणगोड्ड्या।

निगोड्ड्या (वि.) दे. अणगोड्ड्या।

निग्गर (वि.) ठोस।

निचड़णा (क्रि. अ.) 1. वस्त्र आदि से अपने आप पाना टपकना, 2. सराबोर होना, 3. सारहीन होना, 4. किसी वस्तु में तरलता न रहना, 5. दुर्बल होना, 6. वर्षा होना, 7. खाली हाथ होना। **निचुड़ना** (हि.)

निचड़वाणा (क्रि. स.) निचोड़ने का काम अन्य से करवाना। **निचुड़वाना** (हि.)

निचला (वि.) 1. शांत, स्थिर, निश्चल, 2. नीचे वाला, 3. 'ऊप्परला' का विलोम; **~बैठणा** 1. शांति से बैठना, 2. हार मानना; **~रहणा** शांत रहना।

निचाई (स्त्री.) 1. नीचे तल होने का भाव, 2. नीचता। **नीचाई** (हि.)

निचाण (पुं.) ढलान, ढालान। **निचान** (हि.)

निचुड़ना (क्रि. अ.) दे. निचड़णा।

निचोड़ (पुं.) 1. सार, तत्त्व, 2. निचुड़ा हुआ अंश, 3. पसीना; **~करणा** 1. अंतिम निर्णय देना, 2. सार की बात कहना; **लत्ता-~** इतनी वर्षा कि कपड़े निचुड़ने लगें; **~ ~मींह** तगड़ी वर्षा, भारी वर्षा।

निचोड़णा (क्रि. स.) 1. कपड़े को दबाकर पानी निकालना, 2. सार निकालना, 3. शोषण करना। **निचोड़ना** (हि.)

निचोड़ना (क्रि. स.) दे. निचोड़णा।

निछत्तर (पुं.) दे. नछत्तर।

निछावर (पुं.) बलिदान। **न्यौछावर** (हि.)

निछेद (वि.) दे. नकछेद।

निछोह (वि.) (शुद्ध ?)—लखमी के साँग में निछोह ग्यान लुट्टै सै।

निज़ाम (पुं.) 1. हैदराबाद के नवाबों की पदवी, 2. इन्तज़ाम।

निजामत (स्त्री.) 1. तहसील, 2. निज़ाम का राज्य।

निजाम्मीं (स्त्री.) नवाबी राज।

निजारा (पुं.) नज़ारा, दृश्य।

निजी (वि.) 1. दे. निज्जी, 2. दे. घरू।

निज्जस (वि.) कंजूस।

निज्जी (वि.) 1. निजी, स्वयं का, 2. (दे. घरू)।

निठल्ला (वि.) 1. सदा ठाली रहने वाला, 2. आलसी।

निड़ाई (स्त्री.) दे. नळाई।

निढाल (वि.) 1. निश्चिंत, 2. निहाल, 3. शिथिल।

निणाणा (क्रि.) दे. नलाणा।

नित (अव्य.) प्रतिदिन। **नित्य** (हि.)

नितारणा (वि.) अत्यंत कमजोर।

नितारा (पुं.) दे. निस्तारा।

नित्य (अव्य.) दे. नित।

नित्यकर्म (पुं.) 1. प्रतिदिन का काम, 2. प्रतिदिन के धार्मिक कृत्य।

निथरणा (क्रि. अ.) 1. तरल पदार्थ की गंदगी तली में बैठना, 2. तरल पदार्थ का स्वच्छ या निर्मल होना; (वि.) जो शीघ्र निथरे। **निथरना** (हि.)

निथरना (क्रि. अ.) दे. निथरणा।

निथरा (वि.) 1. स्वच्छ तथा निर्मल (जल), 2. निथारा हुआ। **निथराव** (हि.)

निथार (पुं.) तरल पदार्थ का स्वच्छ या निर्मल होने का भाव; (क्रि. स.) 'निथारणा' क्रिया का आदे. रूप।

निथारणा (क्रि. स.) 1. निथारना या साफ़ करना, 2. गरम घी से चेहड़ू (दे.) या तैरती हुई छाछ आदि निकालना। **निथारना** (हि.)

निथारना (क्रि. स.) दे. निथारणा।

निदरा (स्त्री.) नींद। **निद्रा** (हि.)

निदाणा (क्रि.) बुझाना।

निदान[1] (पुं.) 1. उपचार, 2. अंत–निखद चाकरी, भीख निदान।

निदान[2] (पुं.) निधान।

निद्रा (स्त्री.) दे. निदरा।

निधड़क (क्रि. वि.) 1. बे रोक-टोक, बिना रुकावट के, 2. अचेतन अवस्था में, 3. निश्चिंतता से, बेखटके; **~सोणा** 1. निश्चिंतता की नींद सोना, 2. गहरी नींद सोना।

निधन (पुं.) मृत्यु।

निधन बाण (पुं.) 1. मृत्यु शैया। 2. मृत्यु बाण।

निधारा (पुं.) एक प्रकार का संबंध जो विवाह पर सहायता-अनुदान देकर स्थापित किया जाता है।

निधारी (पुं.) दे. न्युथ्यारी।

निधि (स्त्री.) 1. ख़ज़ाना, सम्पत्ति, 2. आगार, घर, 3. कुबेर के नौ रत्न।

निनाणमें (वि.) निन्यानवें की संख्या, एक कम सौ। **निन्यानवें** (हि.)

निनाई (स्त्री.) एक रोग।

निन्नाई (स्त्री.) गर्दन की फुंसी।

निपज (स्त्री.) 1. भूमि की पैदावार, 2. उपज।

निपजणा (क्रि. अ.) अन्न, वनस्पति आदि का उगना–गींहूँ कितणे मण बीग्धे का निपज्या; (वि.) जो शीघ्र या अधिक उपजे। **निपजना** (हि.)

निपजाणा (क्रि.स.) 1. अन्न आदि उत्पन्न करना, 2. पैदा करना। **उपजाना** (हि.)

निपट (वि.) निरा।

निपात (वि.) पत्तों से रहित (सूखे)। उदा. –तरुवर होई निपात।

निपुण (वि.) 1. चतुर, 2. कुशल, दक्ष।

निफराम (वि.) निश्चिंत, (दे. निखराम)।

निबंध (पुं.) किसी विषय पर लिखा गया लेख।

निबटणा (क्रि. अ.) दे. निमटणा।

निबटना (क्रि. अ.) दे. निमटणा।

निबटाणा (क्रि. स.) दे. निमटाणा।

निबटारा (पुं.) दे. निमतेड़ा।

निबटेरा (पुं.) 1. काम से निवृत्त होने का भाव, 2. छुटकारा; **~करणा** झगड़ा सुलझाना; **~होणा** 1. निर्णय होना, 2. कार्य सुलझना।

निबड़णा (क्रि. अ.) 1. समाप्त होना, 2. (दे. निमटणा)। **निपटना** (हि.)

निबरत (वि.) छुटकारा होने या मिलने का भाव। **निवृत्त** (हि.)

निबेड़णा (क्रि. स.) 1. निपटाना, 2. गुत्थी सुलझाना, 3. समाप्त या संपन्न करना।

निबेड़ना (क्रि. स.) दे. निबेड़णा।

निबोली (स्त्री.) दे. निंबोळी।

निभणा (क्रि. अ.) 1. किसी से बनना या पटना, 2. निर्वाह होना, 3. बरदाश्त होना–तेरी भोत निभली आग्गै नाँ निब्भै। **निभना** (हि.)

निभना (क्रि. अ.) दे. निभणा।

निभा (पुं.) 1. निर्वाह, 2. निभाने का भाव, 3. गुज़र; **~करणा** 1. जैसे-तैसे समय व्यतीत करना, 2. निबाहना। **निबाह** (हि.)

निभाणा (क्रि. स.) 1. निर्वाह करना, 2. बर्दाश्त करना, 3. वायदा पूरा करना। **निबाहना** (हि.)

निभाना (क्रि. स.) दे. निभाणा।

निमंत्रण (पुं.) दे. न्योंत्ता।

निमंत्रण-पत्र (पुं.) बुलावे की चिट्ठी।

निमटणा[1] (क्रि. अ.) 1. कार्य-निवृत्त होना, 2. शौच से निवृत्त होना, 3. झगड़ा समाप्त होना, झगड़े का निर्णय होना, 4. समाप्त या संपन्न होना–तेरा काम निमटा के नाँ? **निबटना** (हि.)

निमटणा[2] (क्रि.) शेष बचा रहना। दे. निमटणा[1]।

निमटाणा (क्रि. स.) 1. कार्य संपन्न करना, 2. झगड़ा सुलझाना। **निबटाना** (हि.)

निमड़णा (क्रि. अ.) 1. निबटना, 2. समाप्त होना, (दे. नीमड़णा)।

निमत (पुं.) 1. हेतु, कारण, 2. उद्देश्य, 3. भाग्य। **निमित्त** (हि.)

निमतेड़ा (पुं.) 1. निर्णय, 2. निबटारा, 3. (दे. सुळझेड़ा); **~करणा** 1. निर्णय करना, 2. समाप्त या संपन्न करना।

निमाई (वि.) अधिक कातर भाव।

निमाणी (वि.) कमनीय।

निमाज (स्त्री.) नमाज।

निमाण (स्त्री.) निम्न तल का भू-भाग।

निमाणा (वि.) 1. विनम्र, 2. नीचा (भाग), 3. निम्न स्तर की।

निमाणी[1] (वि.) 1. निम्न, नीची, 2. घटिया, हीन; **~मौत** निम्न स्तर की मृत्यु।

निमाळा (पुं.) जहाँ अधिक नीम हों; (वि.) नीम वाला।

निमित्त (पुं.) दे. निमत।

निमिस (स्त्री.) क्षण भर का समय, चुटकी बजने तक का समय। **निमिष** (हि.)

निमेड़ा (पुं.) दे. निमतेड़ा।

निरख-परख (क्रि.) भली प्रकार जाँच पड़ताल ।

नियंत्रण (पुं.) क़ाबू।

नियत (वि.) 1. स्थिर, 2. निश्चित, 3. मुक़र्रर, तैनात; (स्त्री.) दे. नीत।

नियम (पुं.) दे. नेम।

नियारगर (पुं.) सुनार के हारे की राख खरीदने वाला।

नियुक्त (वि.) तैनात, नियोजित।

नियुक्ति (स्त्री.) नियुक्त या तैनात करने का भाव।

नियोग (पुं.) एक प्रथा जिसके अनुसार निस्संतान स्त्री अपने किसी संबंधी से संतान उत्पन्न करा सकती है।

निरंकुश (वि.) स्वेच्छाचारी, जिसके लिए कोई अंकुश न हो।

निरंजन (पुं.) परमात्मा।

निरंजी (वि.) दे. नारंजी।

निरंतर (क्रि. वि.) 1. लगातार, 2. हमेशा।

निरंद (वि.) पूरी तरह से अंधा; **~-आँद्धा** पूर्ण रूप से अंधा। **निरंध** (हि.)

निरगुण (पुं.) 1. मंगलाचरण संबंधी कविता। 2. निराकार।

निरजला (स्त्री.) निर्जला एकादशी; (पुं.) बिना जल पीये किया गया व्रत।

निरणा-बास्सी (वि.) निराहार उपवासी, बिना खाए-पीए, जिसने प्रातःकाल से पानी तक न पिया हो; **~रहणा** उपवास रखना।

निरदोस (वि.) निरपराध। **निर्दोष** (हि.)

निरबाण (पुं.) 1. एक अहीर गोत, 2. निर्वाण, मोक्ष।

निरभंग (वि.) बिना भोजन खाए।

निरभंगी (पुं.) साधुओं का एक संप्रदाय विशेष।

निरभाग (वि.) 1. भाग्यहीन, 2. बुरा काम करने वाला; **~जाणा** 1. पुत्रहीन मरना, 2. कुमार्गी होना। **निर्भाग** (हि.)

निरमल (वि.) स्वच्छ, साफ़। **निर्मल** (हि.)

निरर्थक (वि.) व्यर्थ का, सारहीन।

निरलज (वि.) लज्जाहीन। **निर्लज्ज** (हि.)

निरलाज (वि.) निर्लज्ज।

निरलेप (वि.) 1. निर्दोष, 2. आसक्तिरहित। **निर्लेप** (हि.)

निरा (वि.) 1. विशुद्ध, 2. अछूता, 3. केवल, 4. अधिक मात्रा में–इस जघाँ निरा गींहूँ हो सै, (दे. अणमीत्ता); **~(-रे) का निरा** 1. अधिक मात्रा में, 2. विशुद्ध।

निराई (स्त्री.) दे. नलाई।

निराकरण (पुं.) 1. निवारण करने का भाव, 2. युक्ति या दलील को काटने का काम।

निरादर (पुं.) दे. निराद्दर।

निरादरा (वि.) जिसका आदर न हो, उपेक्षित।

निरादरी (वि.) उपेक्षिता।

निराद्दर (पुं.) अपमान। **निरादर** (हि.)

निराना (क्रि. स.) दे. नळाणा।

निराला (वि.) दे. निराळा।

निराळा (वि.) 1. विचित्र, अनोखा, 2. (दे. न्यारा)। **निराला** (हि.)

निराश (वि.) आशा-रहित।

निराशा (स्त्री.) बिना आशा या उम्मीद के।

निरी (वि.) 1. अधिक मात्रा में--आज तै निरी टीड्डी आई, 2. अकेली, अमिश्रित–निरी खीचड़ी क्यूक्कर खाँ।

निरोग्घा (वि.) नीरोग, रोग-रहित–निरोग्घा सरीर किसै-किसै का हो सै। **नीरोगी** (हि.)

निर्ख (पुं.) भाव, दर।

निर्गुण (पुं.) 1. गुण या विशेषण-रहित अवस्था, 2. परमेश्वर; (वि.) गुणहीन, बुरा।

निर्जन (वि.) सुनसान, एकांत।

निर्जल (वि.) जल-रहित।

निर्जला एकादशी (स्त्री.) दे. निरजला।

निर्णय (पुं.) फ़ैसला।

निर्दय (वि.) बेरहम, निष्ठुर।

निर्दयी (वि.) दे. निर्दय।

निर्दोष (वि.) दे. निरदोस।

निर्धन (वि.) गरीब।

निर्धारण (पुं.) निश्चित करना।

निर्बल (वि.) 1. कमज़ोर, 2. दीन।

निर्भय (वि.) निडर।

निर्भर (वि.) आश्रित।

निर्मल (वि.) दे. निरमल।

निर्मला (वि.) बिल्कुल वर्षा न होने की स्थिति। अनावृष्टि।

निर्माण (पुं.) रचना, बनावट।

निर्माता (पुं.) बनाने वाला।

निर्मूल (वि.) 1. निराधार, 2. बेबुनियाद, 3. सर्वथा नष्ट।

निर्यात (पुं.) देश से बाहर भेजा जाने वाला सामान।

निर्लज्ज (वि.) बेशर्म।

निर्लिप्त (वि.) जो किसी विषय में आसक्त न हो।

निर्लेप (वि.) दे. निरलेप।

निर्वाण (पुं.) 1. मृत्यु, 2. मुक्ति।

निर्वाह (पं.) गुजर, (दे. निभा)।

निर्विघ्न (वि.) विघ्न-रहित।

निर्विरोध (वि.) बिना विरोध के।

निवाई (स्त्री.) ज्वर, हल्का ज्वर, (दे. ताप); **~आणा/चढणा/होणा** 1. बुख़ार चढ़ना, 2. किसी आशंका से घबराना।

निवाड़ (पुं.) दे. निवार।

निवाया (वि.) हलका गरम।

निवार (पुं.) निवाड़। **नेवार** (हि.)

निवारण (पुं.) 1. हटाने या दूर करने की क्रिया, 2. निवृत्ति, छुटकारा।

निवारणा (क्रि. स.) 1. निवारण करना, 2. दूर करना, 3. कष्ट दूर करना।

निवारी (वि.) नेवार का बुना (पलंग)।

निवाला (पुं.) टुकड़ा। **निवाला** (हि.)

निवास (पुं.) 1. रहने का स्थान, ठौर, 2. ठहरने का भाव।

निवासी (पुं.) दे. निवास्सी।

निवास्सी (पुं.) निवास करने वाला, स्थान विशेष में रहने वाला। **निवासी** (हि.)

निवीछणा (पुं.) दे. नीखड़ू।

निवेदन (पुं.) विनती, प्रार्थना।

निशान (पुं.) 1. चिह्न, 2. झंडा, 3. निशाना।

निशाना (पुं.) दे. निसान्ना।

निशानी (स्त्री.) दे. निसान्नी।

निश्चिंत (वि.) दे. नचीत।

निषाद (स्त्री.) एक वनवासी जाति; (पुं.) इस जाति का व्यक्ति।

निषेध (पुं.) न करने का आदेश।

निष्क (स्त्री.) दे. मोहर।

निष्ठा (स्त्री.) 1. विश्वास, 2. निश्चय।

निष्ठुर (वि.) क्रूर।

निष्पक्ष (वि.) पक्षपात-रहित।

निसचलदास (पुं.) एक संत कवि जिन्होंने 'वृत्ति प्रभाकर' की रचना की। **निश्चलदास** (हि.)

निसद देश (पुं.) राजा नल का देश। निषध।

निस दिन (पुं.) रात दिन।

निसफल (वि.) विफल, नाक़ामयाब। **निष्फल** (हि.)

निसबत (स्त्री.) अपेक्षा, तुलना, मुकाबला।

निसाच्चर (पुं.) राक्षस; (वि.) दुष्ट, नीच वृत्ति का। **निशाचर** (हि.)

निसाद्र (पुं.) एक क्षार। **नौसादर** (हि.)

निसान (पुं.) 1. चिह्न, 2. दाग़। **निशान** (हि.)

निसान्ना (पुं.) लक्ष्य; ~साधणा 1. सीध बाँधना, 2. लक्ष्य-संधान करना। **निशाना** (हि.)

निसान्नी (स्त्री.) 1. निशान, 2. स्मृति-चिह्न। **निशानी** (हि.)

निसैणी (स्त्री.) दे. नकछीकणी।

निस्तरणा (क्रि. अ.) 1. पथ-भ्रष्ट होना, 2. आचरण से गिरना, 3. निर्लज्जता धारण करना–अरै तूँ क्याँह तैं निस्तरग्या जो तेरी नीत मैं खोट आया।

निस्तार (पुं.) कल्याण, बेड़ा पार होने का भाव–राम भज, निस्तार हो ज्यागा।

निस्तारा (पुं.) दे. निस्तार।

निस्सर (वि.) निरक्षर। तुल. गूँठा टेक।

निहंग (पुं.) 1. एक साधु-संप्रदाय, 2. निषंगधारी साधु।

निहचू (पुं.) निश्चय।

निहाई (स्त्री.) धातु पीटने की गोल या चौकोर वस्तु जिसे भूमि में गाड़ दिया जाता है।

निहाण[1] (पुं.) चने के कटे हुए पौधों का ढेर, ढेरी।

निहाण[2] (पुं.) बड़ी निहाई।

निहाणी (स्त्री.) दे. निहाई।

निहारणा (क्रि.) निहारना।

निहारी (पुं.) दे. नाल।[2]

निहाल (पुं.) सब प्रकार से तृप्त होने का भाव; **~करणा** हर प्रकार से तृप्त करना।

निहाल्ली (स्त्री.) तकिया; (वि.) निहाल करने वाली। **निहाली** (हि.)

नीं (अव्य.) 1. नहीं, 2. अरी।

नींच-ऊँच (स्त्री.) 1. अच्छा-बुरा, 2. ऊँच-नीच का भेद; **~देखणा** अच्छा-भला देखना; **~बरतणा** जाति के आधार पर भेदभाव बरतना।

नींद (स्त्री.) 1. निद्रा, 2. असावधानी।

नींदड़ी (स्त्री.) दे. नींद।

नींबू (पुं.) नीबू।

नींम[1] (पुं.) नीम का पौधा (इसकी टहनी पुत्र-जन्म तथा चेचक निकलने के संकेत स्वरूप दरवाज़े पर लटकाई जाती है); (वि.) कड़ुआ; **~झराई** बारोठी के अवसर पर साली द्वारा नीम झारने का नेग; **~झारना** फोड़े-फुंसी आदि को नीम के पानी से झारना; **~-सा** अधिक कड़ुआ।

नींम[2] (स्त्री.) 1. नींव, (दीवार का) वह भाग जो भूमि के नीचे रह जाता है, 2. आधारशिला, 3. आधार, बुनियाद; **~खोदणा** 1. विनाश का कार्य करना, 2. आधारशिला के लिए भूमि खोदना; **~चवे मैं होणा** मज़बूत स्थिति में होना; **~धरणा** नया कार्य आरंभ करना; **~बैठणा** नींव धँसना। **नींव** (हि.)

नींमझारा (पुं.) कड़ुआ रस जो कभी-कभी नीम से झरता है।

नींवाँ (वि.) (कौर.), (दे. नीच्चा)।

नी (अव्य.) 1. नहीं, 2. अरी।

नीकड़ू (पुं.) 1. खेत, 2. क्रीड़ा उद्यान। दे. नीखड़ू।

नीखड़ू (पुं.) बिना पानी मिला दूध, शुद्ध दूध; **~दूध** बिना पानी मिला दूध, नीर-रहित दूध।

नीच (वि.) 1. नीची जाति का, 2. कमीन; (स्त्री.) नीचा तल या भाग।

नीचा (वि.) दे. नीच्चा।

नीच्चरला (वि.) 1. नीचे का—नीच्चरले खेत मैं पाणी भरग्या, 2. 'ऊप्परले' का विलोम।

नीच्चा (वि.) 1. ढलान की ओर का भाग, ढालू, 2. छोटा, छोटे क़द का, 3. लटकता हुआ, 4. ओछा, 5. ओछे व्यवहार वाला, 6. छोटी जाति का; **~-ऊँच्चा** जो समतल न हो। **नीचा** (हि.)

नीच्चै (वि.) 1. नीचे की ओर का, 2. नीच ही—सै तै नीच्चै।

नीठ (स्त्री.) कठिनाई।

नीड़णा (क्रि. स.) निकट लाना, मिलाना।

नीड़ै (क्रि. वि.) 1. निकट, बहुत निकट—नीड़ै-धोरै याह् चीज पावणी मुसकल

सै, 2. 'दूर' का विलोम; ~-**धोरै** आस-पास, निकटवर्ती स्थान में।

नीणा (क्रि.) नमन करना। दे. नयणा।

नीत (स्त्री.) 1. मन, 2. इच्छा, आंतरिक इच्छा; **~टहलणा/बिगड़णा** 1. मन डिगना, 2. लालच आना; **~धरणा** बुरी आशा लगाना; **~होणा** किसी वस्तु को प्राप्त करने की लालसा होना। **नीयत** (हि.)

नीति (स्त्री.) दे. नीत्ती।

नीतिशास्त्र (पुं.) वह शास्त्र जिसमें नीति का ज्ञान हो।

नीत्ती (स्त्री.) 1. व्यवहार की रीति, 2. उपाय, युक्ति, 3. आध्यात्मिक आचरण के सिद्धान्त। **नीति** (हि.)

नीन्नै (अव्य.) दे. न्यूनैं।

नीपा (पुं.) एक भक्त।

नीबू (पुं.) दे. नींबू।

नीम (पुं.) दे. नींम[1]।

नीमचक (पुं.) लकड़ी का वह चक्र जिस पर कूएँ की दीवार खड़ी की जाती है।

नीमझरी (पुं.) मोतीझारा। तुल. पाणी झारा।

नीमड़णा (क्रि. अ.) दे. निमड़णा।

नीमड़ी (स्त्री.) 1. छोटा नीम, 2. नीम का छोटा पौधा।

नीमण (वि.) मज़बूत (मेवा.)।

नीमणा (क्रि.) दे. न्यौणा।

नीम्मल (पुं.) जाटों का एक गोत।

नीयत (स्त्री.) दे. नीत।

नीर (पुं.) 1. जल, 2. आँसू–उसकी आँख्याँ मैं नीर आग्या।

नीरणा (पुं.) भोजन, हालियों का भोजन–चार हळाँ का हाळीड़ा नीरणा (लो. गी.); (क्रि. स.) 1. खिलाना, 2. सिंचित करना।

नील (पुं.) दे. लील; (वि.) नील की संख्या।

नीलकंठ (पुं.) 1. दे. नीलटाँच, 2. शिव।

नीलगाय (स्त्री.) नीलापन लिए एक बड़ा हिरन जिसके गलकंबल नहीं होता, (दे. रोझ[2])।

नीलटाँच (पुं.) नीलकंठ पक्षी (जिसके दर्शन शुभ माने जाते हैं)।

नीलम (पुं.) नीलमणि, एक कीमती पत्थर।

नीला (वि.) दे. नील्ला।

नीलाथोथा (पुं.) दे. लील्लाथोत्था।

नीलाम (वि.) दे. लिलाम।

नील्ला (वि.) 1. नीला (रंग), 2. नीले रंग का, 3. आसमानी, (दे. लील्ला[1]); (पुं.) आसमान।

नीव (स्त्री.) दे. नींम[2]।

नीवर (पुं.) एक वृक्ष।

नीसरणा (क्रि. अ.) निकलना, बाहर की ओर निकलना–बल्लम एक ओड तैं दूसरी ओड़ाँ नीसरगी।

नुक़्ता (पुं.) 1. चिह्न, 2.विचार-बिंदु, 3. दशमलव का चिह्न।

नुकती (स्त्री.) बूँदी, बेसन आदि की छोटी बूँदी।

नुकती-दाणा (पुं.) लड्डू-दाना।

नुकर-चुकर (स्त्री.) नुक़्ता-चीनी, छिद्रान्वेषण।

नुकल (पुं.) नकुल, पाँच पांडवों में से एक।

नुकस (पुं.) 1. कमी, त्रुटि, 2. ऐब, दोष।

नुकसान (पुं.) हानि।

नुकीला (वि.) नोकदार।

नुक्कड़ (पुं.) किनारा, छोर।

नुक्स (पुं.) दे. नुकस।

नुगरा (वि.) 1. जिसने कोई गुरु नहीं बनाया हो, 2. मक्कार, धूर्त, 3. मौन

रह कर छल-कपट करने वाला 4. कृतघ्न।

नुमाँस (स्त्री.) नुमाइश, प्रदर्शनी।

नुमाइंदा (पुं.) प्रतिनिधि।

नुमाइश (स्त्री.) दे. नुमाँस।

नुलाई (स्त्री.) दे. नळाई।

नुळाणा (क्रि. स.) दे. नळाणा।

नुसखा (पुं.) 1. विधि, उपाय, 2. काग़ज़ का वह पर्चा जिस पर चिकित्सक द्वारा रोगी के लिए ओषधि आदि लिखी हो।

नुहाणा (क्रि. स.) स्नान कराना। **नहलाना** (हि.)

नुहेल्ली (स्त्री.) नव-वधू। **नवेली** (हि.)

नूँ (अव्य.) दे. न्यूँ; (पुं.) 1. दे. नूँह, 2. 'को' के लिए प्रयुक्त कारक चिह्न।

नूँखर (पुं.) दे. नूँह-खर।

नूँह (पुं.) 1. नाखून, 2. लोहे का नाखून जो बंधेज के काम के समय अंगुली में पहना जाता है; ~-**खर** नाखून में घुसा हुआ तिनका या काँटा; ~**पै सफेद्दी** अल्प मात्रा में, नगण्य। **नख** (हि.)

नूण (पुं.) नमक, खारे पानी या चट्टान का क्षार (इसके बारे में धारणा है कि यदि उसे भूमि पर गिराएँगे तो अगले जन्म में पलकों से उसे उठाना पड़ेगा); (वि.) खारी, खारी स्वाद वाला, अधिक नमक का; ~**करणा** अधिक खारी करना, अधिक नमक डालना; ~-**राई करणा** नज़र उतारना, आग में नमक तथा राई डाल कर नज़र उतारना; ~**वारा** अत्यंत अल्प मात्रा में। **लवण** (हि.)

नूणगर (पुं.) नमक बनाने वाला, (दे. आगरी)।

नूण-पाळा (पुं.) बच्चों का एक खेल विशेष।

नूणा (वि.) 1. नमकीन, 2. 'अलूणा' का विलोम, 3. खारी; ~-**क्यारी** बच्चों का एक खेल। **सलूना** (हि.)

नूणी दा (पुं.) 1. दे. नूण पाळा, 2. दे. नूणा-क्यारी।

नूणा दे (स्त्री.) भक्त पूरणमल की विमाता।

नूणाघाटी (पुं.) नूणा माट्टी।

नूणी[1] (पुं.) नूनी घी, मक्खन, वह घी जिसे ताया नहीं गया हो।

नूणी[2] (स्त्री.) 1. नूनी, एक लवण या क्षार विशेष जिससे खेत की मिट्टी का रंग श्वेत हो जाता है, 2. दीवार के निचले भाग में लगने वाला लवण या रेह, 3. चने के पौधे के पत्तों का क्षार, 4. एक बूटी विशेष जिसके पत्ते चिकने और जायकेदार होते हैं; (वि.) नमकीन, नमकदार।

नूणी घी (पुं.) दे. नूणी[1]।

नून्ना-कूआ (पुं.) दे. बोड़ा कूआ।

नून्ना-क्यारी (स्त्री.) एक खेल विशेष जिसमें बच्चे भूमि पर वर्गाकार क्यारी बनाकर मध्य भाग से मिट्टी (कल्पना का नमक) लेकर भागते हैं तथा पारी देने वाला बच्चा उन्हें पकड़ता है।

नूपुर (पुं.) घुँघरू।

नूर (पुं.) 1. ज्योति, प्रकाश, 2. कांति, 3. रूप।

नूह (पुं.) एक पैगंबर जिसके समय में जल-प्रलय हुई थी।

नृप (पुं.) राजा।

नृसिंह (पुं.) दे. नरसिंघी।

ने (प्रत्य.) सकर्मक भूतकालिक वाक्य में कर्ता के साथ लगने वाली विभक्ति (इसका उच्चारण 'नैं' या 'नँअ' है), (दे. नैं); (स्त्री.) स्नेही; (पुं) नेह, स्नेह।

नेक (वि.) भला; (क्रि. वि.) ज़रा, ज़रा सा।

नेकी (स्त्री.) 1. भलाई, 2. उपकार।

नेकीराम (पुं.) (1919-1996) जैतवाड़, रिवाड़ी के लोक कवि।

नेग (पुं.) 1. राशि, वस्तु या भेंट जो किसी रस्म के समय ली-दी जाती है, 2. धार्मिक रस्म, 3. नाता, 4. नियम की बात; **~करणा** संबंध (सगाई आदि) स्थापित करना; **~-जतन** धार्मिक रस्म; **~बरतणा** रिश्ते के अनुसार यथायोग्य व्यवहार बरतना; **~माँगणा** शुभ अवसर पर अपने संबंध या सेवा- सुश्रेषा के रूप में भेंट माँगना; **~होणा** 1. संबंध या रिश्तेदारी होना, 2. आपस में हँसी-मज़ाक का संबंध होना, 3. रस्म संपन्न करना, 4. रस्म की अनिवार्यता होना।

नेग-जोग (पुं.) 1. विवाह, पुत्र-जन्म या अन्य अवसरों पर यथायोग्य दी जाने वाली भेंट, 2. धार्मिक अवसरों पर संपन्न रस्म; **~करणा** रस्म संपन्न करना; **~माँगणा** विवाह आदि अवसरों पर अपनी भेंट (हक़ की) माँगना।

नेग-टेहला (पुं.) 1. विवाह-शादी, 2. धार्मिक रस्म।

नेग्गी (पुं.) नेग ग्रहण करने वाला।

नेच्चा (पुं.) हुक्के की दोहरी नली जिसके एक सिरे पर चिलम रखते हैं और दूसरे से धुआँ खींचते हैं, हुक्के की निगाली। **नेचा** (हि.)

नेजा (पुं.) दे. नेज्जा।

नेज्जा (पुं.) 1. सरकंडा, 2. एक आयुध विशेष, 3. एक सूखा मेवा। **नेजा** (हि.)

नेज्जू (स्त्री.) कूएँ से पानी निकालने की रस्सी, (दे. लेज्जू)।

नेठम (अव्य.) अवश्य। निश्चित रूप से।

नेठाँ (वि.) 1. अनूठा, 2. चालाक।

नेड़ी (स्त्री.) दही बिलौने की गाड़ी हुई लकड़ी। दे. नेह[1]।

नेड़ै (क्रि. वि.) निकट, पास, (दे. नीड़ै); **~-धोरै** आस-पास।

नेणी (स्त्री.) दे. नेहरणी।

नेता (पुं.) दे. नेत्ता[2]।

नेत्ता[1] (पुं.) रस्सी जो रई या मथानी के चारों ओर लपेटी जाती है। **नेता** (हि.)

नेत्ता[2] (पुं.) 1. अगुआ, 2. सुभाष चंद्र बोस। **नेता** (हि.)

नेत्र (पुं.) आँख।

नेप[1] (स्त्री.) नाभि।

नेप[2] (पुं.) 1. दे. नाँप, 2. दे. पवाणा; (क्रि. स.) 'नापणा' क्रिया का आदे. रूप।

नेप[3] (पुं.) गोलाकार बड़ा मटका जो अन्न नापने (तोलने) के काम भी आता है। दे. नेप[1,2]।

नेपाल (पुं.) हिंदुस्तान के उत्तर में हिमालय की गोद में स्थित एक हिंदू राज्य।

नेपाली (वि.) नेपाल देश का; (पुं.) इस देश का निवासी।

नेप्पा (पुं.) 1. उपज, निपज, 2. मापने का उपकरण।

नेफ (पुं.) दे. नेप[2]।

नेफ़ा (पुं.) 1. अधोवस्त्र के घेरे में नाड़ा डालने का स्थान, 2. भारत का पूर्वोत्तर खंड।

नेम (पुं.) 1. प्रतिज्ञा, 2. कानून; **~करणा/ठाणा/लेणा** शपथ लेना; **~धरणा** नियम लेना, प्रतिज्ञा करना; **~(–म्माँ) धरमीं** नियम-धर्म के साथ। **नियम** (हि.)

नेम-धरम (पुं.) 1. नियम तथा धर्म, 2. सौगंध; **~ठाणा** सौगंध उठाना।

नेमी (वि.) दे. नेम्मीं।

नेम्मीं (वि.) नियमधारी, नियम-पालन करने वाला।

नेम्मीं-धरमीं (वि.) नियम-धर्म का पालन करने वाला।

नेवगा (पुं.) नेग-जोग करने वाला नाई या ब्राह्मण।

नेवड़ी (स्त्री.) दे. नेवरी।

नेवरा (पुं.) दे. नेवरी।

नेवरी (स्त्री.) पैरों का एक वलयाकार आभूषण विशेष जिससे नूपुर की ध्वनि निकलती है।

नेवला (पुं.) दे. न्योळ।

नेवा (पुं.) उक्ति, कहावत, 2. मतलब, अभिप्राय–उस आळा नेवा से तू नाँ मान्नैं।

नेसंग (स्त्री.) हल के निचले भाग में लगने वाली एक छोटी कीली।

नेस्तर (वि.) सुस्त। दे. निस्तरणा।

नेस्ती (वि.) आलसी।

नेह[1] (स्त्री.) 1. भूमि में गड़ी सानी या चारा काटने की मोटी और गोल लकड़ी, 2. हुक्के की नली जिससे धुआँ खींचते हैं, 3. लकड़ी का अड्डा जो ज़मीन में गड़ा होता है और जिसके सहारे रई को अटका कर दूध बिलोया जाता है। **नै** (हि.)

नेह[2] (पुं.) प्यार। **स्नेह** (हिं.)

नेहज (अव्य.) निश्चित, अवश्य। उदा.–जै सामण पंचक गळै नेहज सम्मत होय।

नेही (स्त्री.) दे. नेह[1, 2]।

नेहेरणा (पुं.) नाखून काटने की धातु की कलम।

नैं (प्रत्य.) 1. भूतकालिक सकर्मक वाक्य में कर्ता के साथ लगने वाला कारक चिह्न, 2. कर्म कारक का चिह्न–रथ नैं हाँक दे, 3. संप्रदान कारक का चिह्न–राम्मूँ नैं (रामू के लिए) भी रोट्टी ले चाल, 4. 'में'–जो जाम्मैं सो मरै अन्त नैं।

नैंणी (पुं.) (कौर.) दे. नूणी[1]।

नै[1] (स्त्री.) 1. जूए में जोतते समय पशु के लिए उच्चरित शब्द, 2. बैलगाड़ी को घुमाते समय उच्चरित शब्द, 3. ऊँट को बैठाने के लिए उच्चरित शब्द, (दे. जहकाणा)।

नै[2] (स्त्री.) 1. हुक्के की नाल। 2. दे. नेह[2]।

नैक (अव्य.) जरा।

नैकलस (पुं.) गले का एक आभूषण जिसकी चौड़ाई लगभग एक इंच होती है।

नैड़े (अव्य.) दे. नीड़ै।

नैण (पुं.) नयन, सुंदर आँखें; **~(–णाँ) तैं सारणा** आँखों की मार मारना। **नैन** (हि.)

नैणा (क्रि. अ.) दे. नयणा।

नैतिक (वि.) नीति-संबंधी, 2. समाजविहित।

नोंऊँ (वि.) नौओं, नौ के नौ।

नोंक (स्त्री.) 1. नुकीला किनारा, 2. छोर, अग्र भाग, 3. कलम का डंक। **नोक** (हि.)

नोंक-झोंक (स्त्री.) 1. झड़प, 2. छेड़-छाड़, (दे. रै-भै)।

नोंकरी (स्त्री.) 1. सरकारी नौकरी, 2. गुलामी। **नौकरी** (हि.)

नोंम्माँ (वि.) नवें क्रम पर; **~लागणा** प्रसवकाल निकट आना। **नवाँ** (हि.)

नोंम्मी (स्त्री.) 1. नवमीं तिथि, 2. नवमी कक्षा, नवीं; (वि.) नवें क्रम पर। **नवमीं** (हि.)

नोंह (पुं.) दे. नूँह।

नो (वि.) नौ की संख्या। **नौ** (हि.)

नोकंटू (पुं.) नौ कंकरों का एक खेल विशेष।

नोकराणी (स्त्री.) दासी, गुलाम स्त्री। **नौकरानी** (हि.)

नोक्कर (पुं.) 1. सरकारी कर्मचारी या नौकर, 2. गुलाम। **नौकर** (हि.)

नोगरी (स्त्री.) एक आभूषण। दे. नेवरी।

नोघण (पुं.) 1. नवोदित बादल, गहरा बादल, 2. तेज़ (वर्षा); ~**-धार** घनी वर्षा, तेज़ वर्षा; ~**पड़णा/ बरसणा** अत्यधिक वर्षा होना। **नवघन** (हि.)

नोचणा (क्रि. स.) दे. झूरणा।

नोजिवान (पुं.) 1. सैनिक, 2. जवान। **नौजवान** (हि.)

नोटंकी (स्त्री.) 1. कहानी-किस्सों में वर्णित एक सुंदरी, 2. नौटंकी पर आधारित एक प्रसिद्ध स्वाँग, 3. स्वाँग की एक पद्धति, (दे. साँग)।

नोट (पु.) काग़ज़ी मुद्रा (तुल. लोट[2])।

नोड़णा (क्रि. अ.) दे. नावड़णा।

नोद्दी (पुं.) सर्वेसर्वा, कर्ताधर्ता।

नो मुल्कयाँ की नाथ (पुं.) नौ मोती जड़ी नथ विशेष।

नोरते (पुं.) 1. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमीं तिथि तक के दिन (वासंतिक नवरात्र), 2. आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमीं तिथि तक के दिन (शारदीय नवरात्र, शारदीय नवरात्रें में साँझी की पूजा भी की जाती है)।

नोलखा (पुं.) नौ लाख मूल्य का (हार), जड़ाऊ और बहुमूल्य (हार)।

नोसर हार (पुं.) नौ सेर का हार।

नोसुवा (पुं.) नाक नथने की लकड़ी।

नोस्सा (पुं.) नौशा, दूल्हा, वर।

नोहर बाहरा (पुं.) राजस्थान का वह गाँव जहाँ गूगा की मैड़ी है।

नोहळ (पुं.) एक जाट गोत।

नौ (वि.) दे. नो।

नौकर (पुं.) दे. नोक्कर।

नौकरानी (स्त्री.) दे. नोकराणी।

नौकरी (स्त्री.) दे. नोंकरी।

नौका (स्त्री.) दे. ना[2]।

नौजवान (पुं.) दे. नोजिवान।

नौणी (पुं.) दे. नूणी।

नौतणा (क्रि. स.) दे. न्योंतणा।

नौनंद (पुं.) हर प्रकार का सुख या आनंद। **नवनिधि** (हि.)

नौबत (स्त्री.) 1. आपत्ति, आफ़त, 2. दुर्दशा, शामत, 3. हालत, दशा, 4. शहनाई।

नौरंगाबाद (पुं.) प्रकृतानाक नगर, भिवानी से कुछ दूरी पर बामला ग्राम के निकट यौधेयों का ध्वस्त दुर्ग जो महाभारत में व्यास द्वारा वर्णित दस दुर्गों में से एक है (इस खेड़े से प्राप्त सामग्री गुरुकुल झज्झर संग्रहालय में है)।

नौलखा (वि.) दे. नोलखा।

नौसादर (पुं.) दे. नसद्दर।

नौहरा (पुं.) 1. पुरुषों के उठने-बैठने की बैठक, 2. उप-गृह या छोटा घर, बैठक, (दे. पोळी)।

नौहरी (स्त्री.) स्त्रियों की बैठक।

न्या (पुं.) 1. फ़ैसला, निर्णय, 2. उचित या नियमानुकूल बात; ~**का न्या होणा** उचित न्याय होना; ~**खुल्हणा** न्यायपूर्ण राज्य आना; ~**छाँटणा** 1. उचित निर्णय देना, 2. तर्क-वितर्क करना; ~**मरणा** अन्याय का राज्य होना, न्याय का गला

घुटना; **~होणा** 1. सुकर्म तथा कुकर्म का उचित फल मिलना, 2. भगवान के घर (दरबार) में उचित-अनुचित का फल मिलना। **न्याय** (हि.)

न्याई[1] (वि.) 1. वह जो न्याय करे, 2. न्याय-पथ का गामी, 3. न्यायवादी। **न्यायी** (हि.)

न्याई[2] (वि.) दे. गोरा।

न्याऊ (वि.) 1. अन्यायी, 2. पापी--ओ ! तूँ इसा न्याऊ क्यूँ सै?, 3. न्याय के विरुद्ध--यो काम तै न्याऊ **सै**, 4. अनुचित; **~करणा** अनुचित व्यवहार करना, बुरा काम करना; **~कहणा** 1. गाली देना, 2. अनुचित कहना, 3. न्याय-विरुद्ध कहना; **~होणा** अन्यायपूर्ण व्यवहार होना।

न्याकारी (वि.) न्यायशील।

न्याणा (पुं.) 1. रस्सी जो गाय का दूध निकालते समय उसके पिछले पैरों के मध्य भाग में बाँधी जाती है--गा न्याणे की बहू ठिकाणे की, 2. **बंधन; ~तुड़ाणा** 1. बंधन-मुक्त होना, 2. बंधन-मुक्त होने का प्रयत्न करना, 3. किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए आतुर होना; **~लाणा** 1. वश में करना, 2. प्रतिबंध लगाना।

न्यानत (स्त्री.) लानत।

न्यानती (स्त्री.) लानत।

न्याम-श्याम (अव्य.) दे. नाम-स्याम।

न्याम्मी (वि.) नामी।

न्याय (पुं.) दे. न्या।

न्यायी (वि.) दे. न्याई।

न्यार (पुं.) 1. हरा चारा, 2. चारा; **~करणा** पशु का चारा-पानी करना; **~ल्याणा** खेत से घास आदि खोद कर लाना।

न्यारा (वि.) 1. निराला, 2. अलग, पृथक्; **~करणा** 1. कुटुंब के सदस्यों से अलग घर बसवाना, 2. छाँटना, 3. टोली से अलग निकालना, 4. निराला काम करना; **~चालणा** 1. स्वतंत्र व्यवहार रखना, 2. टोली या समाज में मिल कर न रहना, 3. नया चलन निकालना; **~-न्यारा करणा** 1. झगड़ते हुओं को छुटाना, 2. बँटवारा करना, 3. उचित न्याय करना, 4. अलग-थलग करना; **~पड़णा** 1. अकेला रह जाना, 2. सहयोग न मिल पाना; **~पाटणा** 1. अलग होना, 2. जीवन में नया मार्ग अपनाना, 3. बिछुड़ना, टोली से अलग होना--न्यारी-न्यारी पाटण लाग्गी हिरणाँ कैसी डार (लो. गी.)।

न्यारी (वि.) 1. निराली, 2. अलग, 3. विशिष्ट, 4. श्रेष्ठ।

न्याळी (स्त्री.) लकड़ी में सूराख करने वाला यंत्र।

न्युथ्यारी (पुं.) 1. निमंत्रित, 2. विवाह के समय 'न्योत्ता' डालने वाला, (दे. न्योत्ता)।

न्यूँ (अव्य.) 1. इस प्रकार, 2. ऐसे; **~-एँ** 1. ऐसे ही, यों ही, 2. इस प्रकार से, 3. व्यर्थ में--यो तै न्यूँ एँ छोहमैं आ रह्या सै; **~का न्यूँ** ज्यों का त्यों, हूबहू; **~कै** 1. उधर से--न्यूँ कै मतना जाइये फेर पड़ैगा, 2. एक संयोजक जिसका कोई अर्थ नहीं निकलता, कि--उसतैं कहिये, न्यूँ कै एक बै आज्या; **~घै** उधर, उस ओर, (दे. ऊँघै); **~नैं** उधर को, उधर; **~तैं** 1. उस ओर से, उधर से--न्यूँ तैं आँद्धी रोज आवै सै; 2. यों तो, यूँ तो, वैसे तो; **~सी** 1. उधर को, 2. कुछ दूरी पर--थोड़ा न्यूँ सी हो कै बैठ। **यों** (हि.)

न्यून (वि.) कम।

न्यूँनै (क्रि. वि.) 1. उधर को, 2. इधर को। उदा. न्यूँनै होले। दे. न्यूँ।

न्योंकळा (वि.) नया दूध, पशु के ब्याने के बाद का दूध; ~-**दूध** दे. न्योंकळा।

न्योंदा (पुं.) दे. न्योत्ता।

न्योंदा निधार (पुं.) दे. नुथारी।

न्योगलणा (क्रि.) रस्से से बाँधना।

न्योज (स्त्री.) देवी-देवता के अनुष्ठान के निमित्त लगाई गई सामग्री (तुल. कंडवारा)।

न्योड़णा (क्रि.) दे. नावड़णा।

न्योणम (पुं.) नमः वैश्नोइयों की नमन-पद्धति।

न्योणा (क्रि. अ.) दे. नयणा।

न्योतणा (क्रि. स.) 1. निमंत्रण देना, 2. बुलावा देना—क्यूँ आँद्धा न्योतै, क्यूँ दो आवैं।

न्योतना (क्रि. स.) दे. न्योतणा।

न्योतहरी (पुं.) दे. न्युथ्यारी।

न्योता (पुं.) दे. न्योत्ता।

न्योत्ता (पुं.) 1. निमंत्रण, 2. वह राशि जो लड़के के विवाह के समय निकट के संबंधी लड़के के पिता को इस आशा से देते हैं कि ऐसे ही अवसर पर वह उस राशि को लौटा देगा, (दे. न्युथ्यारी; **~घालणा** 'न्योत्ता' डालना; **~चाल्लू करणा** निकट के संबंधी द्वारा लड़के के विवाह के समय कोई निश्चित धनराशि देना ताकि वह ऐसे ही अवसर पर उसे लौटा दी जाए; **~देणा** 1. 'नयोत्ता' डालना, 2. निमंत्रण देना; ~-**न्योतणा** 1. निमंत्रण देना, 2. 'न्युथ्यारी' को निमंत्रण देना; **~पाड़णा** 1. निमंत्रण जीमना, 2. निमंत्रण के समय भर-पेट भोजन करना। **न्योता** (हि.)

न्योरते (पुं.) दे. नोरते।

न्योरी (स्त्री.) दे. नेवरी।

न्योळ[1] (पुं.) नकुल, नेवला, गोह की जाति का एक जंगली जीव।

न्योळ[2] (स्त्री.) ऊँट के पैर की कड़ी।

न्योळा (पुं.) 1. दे. न्योळी। 2. न्योळ।

न्योला (पुं.) घास का तिनका।

न्योली (स्त्री.) दे. न्योळी।

न्योळी (स्त्री.) 1. चाँदी के रुपये आदि रखने की कपड़े की थैली जिसे कमर के चारों ओर भी बाँध लिया जाता है, 2. धन-दौलत, 3. पेट की अंतड़ी विशेष; **~खोल्हणा/बकसणा** दान देना; **~सौंपणा** घर की जिम्मेवारी सौंपना।

न्योहरा[1] (पुं.) निहोरा।

न्योहरा[2] (वि.) नखरे बाजी।

न्यौणा (क्रि.) झुकना, विनम्र होना।

न्यौरी (स्त्री.) दे. नेवरी।

न्हचोरी (स्त्री.) खुशामद।

न्हाण (पुं.) 1. स्नान, 2. गंगा-स्नान, 3. नहाने की क्रिया, 4. शुद्धि।

न्हाणवार (पुं.) दे. नहाणबार।

न्हाणा (क्रि. अ.) दे. नहाणा।

न्हारुआ (पुं.) नस पर होने वाला एक फोड़ा (जो प्रायः कच्चा पानी पीने से होता है)।

न्हैंया (अव्य.) तरह।

न्होरे (पुं.) खुशामद।

प

प हिंदी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अंतिम वर्ग का पहला वर्ण, इसका उच्चारण ओष्ठ है, हरियाणवी में इसका उच्चारण कुछ 'पै', 'पअ' की तरह होता है।

पंक (पुं.) कीचड़।

पंकज (पुं.) कमल।

पंक्ति (स्त्री.) दे. पंगत।

पंख (पुं.) दे. पाँख।

पंख-मत (पुं.) करनाल, थानेश्वर आदि के आस-पास मिलने वाला एक नाथ संप्रदाय।

पंखा (पुं.) 1. हवा डोलने का बीजना, (दे. बीजणा), 2. यांत्रिक पंखा, 3. फेफड़ा, 4. पानी निकालने या सींचने का यंत्र विशेष; **~डोलणा** पंखा झलना; **~पाटणा** छाती का पर्दा फटना।

पंखी (स्त्री.) 1. सिंचाई के लिए काम आने वाली नली, 2. छोटा पंखा, 3. पंखुड़ी; (पुं.) पक्षी।

पंखुड़ी (स्त्री.) दे. पाँखड़ी।

पंगत (स्त्री.) 1. भोजन करने वालों की पंक्ति, 2. साधुओं की टोली, 3. मंडली, 4. समाज; **~ऊठणा** 1. सामूहिक भोज का समय समाप्त होना, 2. पंक्ति के लोगों द्वारा भोजन कर लेना; **~जिमाणा** सामूहिक भोज देना; **~बाँचणा/भंग करणा** सामूहिक भोजन के समय भोजन परसने में भेद-भाव बरतना (जो एक पाप है); **~पाटणा** भोजन-काल समाप्त होना। **पंक्ति** (हि.)

पंगा (पुं.) 1. व्यर्थ का टंटा या झगड़ा, 2. अँघाई; **~लेणा** व्यर्थ का झगड़ा मोल लेना।

पंगु (वि.) दे. पाँगळा।

पंच (पुं.) 1. पंचायत का सदस्य, 2. मुखिया, 3. न्याय के लिए नियुक्त व्यक्ति, निर्णायक; (वि.) पाँच का समूह; **~-फैसला** 1. पंचायती निर्णय, 2. सर्वमान्य निर्णय; **~बणणा** 1. चौधरी बनना, 2. नेता बनना, 3. निर्णायक होना; **~मानणा** 1. सम्मान देना, 2. किसी को मध्यस्थ स्वीकार करना।

पंचक (पुं.) 1. अशुभ समय, 2. एक मुहूर्त विशेष।

पंचकन्या (स्त्री.) अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी।

पंचगब्ब (पुं.) गाय के पाँच द्रव्य–दूध, दही, घी, गोबर व गो-मूत्र। **पंचगव्य** (हि.)

पंचगव्य (पुं.) दे. पंचगब्ब।

पंचगौड़ (पुं.) दे. गोड़।

पंचनद (पुं.) पंजाब प्रदेश; (स्त्री.) पंजाब की पाँच नदियाँ।

पंच पणमेस्सर (पुं.) 1. पंच में भगवान का रूप देखने का भाव, 2. महा-न्यायवादी। **पंच परमेश्वर** (हि.)

पंचपात्र (पुं.) 1. गिलास के आकार का पूजा में काम आने वाला एक पात्र, 2. पूजा के पाँच पात्र।

पंचपुर (पु.) दे. पिंजोर।

पंच पैया (पुं.) ज्येष्ठ शुल्क पंचमी को मनाया जाने वाला एक त्योहार जिसमें लड़कियाँ नया अनाज लेकर गांव की परिक्रमा करती हैं। अन्न की पूजा की जाती है।

पंच-भीखम (पुं.) गंगा स्नान से पूर्व के पाँच दिन, कार्तिक शुक्ल के अंतिम पाँच दिन।

पंचमी (स्त्री.) किसी भी पक्ष की पाँचवीं तिथि।

पंचवटी (स्त्री.) दंडकारण्य में वह स्थान जहाँ से सीता हरण हुआ था।

पँचवासा (पुं.) गर्भ रहने से पाँचवें महीने में किया जाने वाला संस्कार।

पंचांग (पुं.) ज्योतिष के अनुसार तैयार तिथि-पत्र जिसमें किसी संवत् के वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण का व्यौरा होता है, पत्रा।

पंचा (वि.) पचास की संख्या।
पचास (हि.)

पंचात (स्त्री.) 1. पंचों की सभा, 2. सभा, समिति, 3. व्यर्थ की भीड़; **~कट्ठी करणा/जोड़णा** 1. भीड़ इकट्ठी करना, 2. पंचायत बुलाना; **~करणा** निर्णय के लिए पंचायत बुलाना; **~जुड़णा/लागणा** 1. पंचायत बैठना, 2. भीड़ जुड़ना। **पंचायत** (हि.)

पंचाती (पुं.) 1. पंचायत का सदस्य, पंच, 2. सम्मानित व्यक्ति; (वि.) पंचायत की (धन, ज़मीन आदि), सामूहिक (संपत्ति), (दे. गाँम- सामलात)।
पंचायती (हि.)

पंचानन (पुं.) 1. शिव, 2. शेर।

पंचायत (स्त्री.) दे. पंचात।

पंचायती (पुं.) दे. पंचाती।

पंचाल (पुं.) हिमालय और चंबल के मध्य का भाग जहाँ राजा द्रुपद राज्य करते थे।

पंचेद्रिंय काय (स्त्री.) पाँच इंद्रियों का शरीर। दे. काया।

पंछी (पुं.) 1. पक्षी, 2. जीव, 3. आत्मा।

पंजर (पुं.) दे. पिंज्जर।

पंजा (पुं.) 1. पाँच उँगलियों का समूह, 2. चंगुल, 3. पक्षी का पंजा, 4. जूते का अगला भाग, 5. ताना-बाना ठोंकने का हत्था, 6. गिनती गिनने का एक तरीका, 7. पाँच का पहाड़ा, 8. दाँव-पेंच, 9. एक खेल; **~(–ज्याँ) ताण चालणा** 1. पंजों के बल चलना, 2. बिना शोर किए चलना, दबे पैर चलना; **~करणा/लड़ाणा** पंजा भिड़ाकर बल-परीक्षा करना; **~मारणा** 1. झपट्टा मारना, 2. झपटना।

पंजाब (पुं.) भारत के उत्तर-पश्चिम का एक उपजाऊ प्रदेश।

पंजाबण (स्त्री.) पंजाबी महिला।
पंजाबिन (हि.)

पंजाबी (पुं.) दे. पंजाब्बी।

पंजाब्बी (पुं.) 1. भारत-विभाजन के बाद पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) से आया व्यक्ति, 2. पंजाब का निवासी, (दे. पाकिस्तान्नी); (वि.) पंजाब का, पंजाब से संबंधित; (स्त्री.) पंजाबी भाषा। **पंजाबी** (हि.)

पंजारा[1] (पुं.) गाड़ीवान के बैठने का स्थान।

पंजारा[2] (पु.) पाँच वर्ष आयु का घोड़ा।

पंजारिया (पुं.) 1. पंजारे पर बैठने वाला, गाड़ीवान (तुल. गडवाळा), 2.श्रीकृष्ण।

पंजाळ (पुं.) रसोईघर में सामान रखने के लिए बनाए गए खाने, टाँड।

पंजाळा (पुं.) दे. पंजारा।

पँजाळी[1] (स्त्री.) झूला, पींग–हरियळ पीप्पळ पड़िए पँजाळी।

पंजाळी[2] (स्त्री.) 1. दे. सहमची 2. दे. पांचाळी।

पंढे (पुं.) दे. पट्ठे।

पंजी (स्त्री.) पाँच पैसे का सिक्का।

पँजीरी (स्त्री.) 1. भुने आटे का प्रसाद जो कथा के बाद बाँटा जाता है, 2. प्रसाद, 3. (दे. गूँद[1])।

पंडत (पुं.) 1. ब्राह्मण, ब्राह्मण जाति का व्यक्ति, 2. विद्वान्, 3. संस्कृत जानने वाला, 4. अध्यापक, 5. पुरोहित, 6. ज्योतिषी, 7. रसोइया। **पंडित** (हि.)

पंडताई (स्त्री.) पंडितपन का कार्य, विवाह तथा अन्य संस्कार करवाने का कार्य, पुरोहिताई। **पंडिताई** (हि.)

पंडताऊ (पुं.) 1. पंडितपन, 2. शास्त्रीय विधि; (वि.) 1. पंडित से संबंधित, 2. पंडितों के समान; **~पण** 1. विद्वत्ता, 2. ज्ञान का थोथा दिखावा।

पंडताणी (स्त्री.) 1. पंडित की पत्नी, 2. ब्राह्मणी। **पंडितानी** (हि.)

पंडा (पुं.) 1. गंगा पर रहने वाला पुजारी, 2. तीर्थ का पुजारी, 3. वह पंडित जो अस्थि-विसर्जन के समय तीर्थ पर दान लेता है तथा वंशावली का लेखा-जोखा लिखता है, 4. दाह-संस्कार कराने वाला ब्राह्मण, 5. पंडित।

पंडागिरी (स्त्री.) पंडेपन का काम करने वाला।

पंडाल (पुं.) दे. पंडाळ।

पंडाळ (पुं.) सभा-मंडप।

पंडित (पुं.) दे. पंडत।

पंडिताई (स्त्री.) दे. पंडताई।

पंडितानी (स्त्री.) दे. पंडताणी।

पंडू (पुं.) पाँच पांडव, पांडु के पाँच पुत्र जो कुंती और माद्री के पुत्र थे और जिन्होंने चौदह वर्ष का वनवास भोगा तथा महाभारत की लड़ाई जीती थी; (वि.) पीत वर्ण का। **पांडव** (हि.)

पंढी (स्त्री.) दे. पैंन्ढी।

पँजावा (पुं.) दे. पजावा।

पंताळ (पुं.) 1. भूमि के नीचे का वह लोक जहाँ अँगूठे के परिमाण के लोग रहते हैं, 2. राजा बलि का लोक, 3. भूमि की गहराई में वह भाग जहाँ गहरा पानी होता है। **पाताल** (हि.)

पंताळ-लोक (पुं.) पृथ्वी के नीचे का सातवाँ लोक।

पंथ (पुं.) 1. मार्ग, 2. धार्मिक संप्रदाय; **~पाकड़णा** संप्रदाय विशेष में सम्मिलित होना।

पंथी (पुं.) 1. पथिक, 2. किसी संप्रदाय विशेष को मानने वाला।

पंदरा (वि.) पंद्रह की संख्या। **पंद्रह** (हि.)

पंद्रह (वि.) दे. पंदरा।

पंधरमाँ (वि.) पंद्रहवाँ, पंद्रहवें क्रम पर; (पुं.) पंद्रहवें दिन होने वाला संस्कार।

पंधराड़ा (पुं.) पंद्रह दिन का समय, पक्ष।

पंप (पुं.) 1. साइकिल आदि के पहिए में हवा भरने का यंत्र, 2. नलकूप, 3. थोथी नली।

पंपापर (स्त्री.) बाली की नगरी। **पंपापुरी** (हि.)

पँवाड़ा (पुं.) दे. पवाड़ा।

पँवार (पुं.) जाटों का एक गोत।

पँवारा (पुं.) गेय पद।

पंसार[1] (स्त्री.) ईंट थापने की जगह।

पंसार[2] (स्त्री.) फर्श की समतलता।

पंसारी (पुं.) मसाले, जड़ी-बूटी आदि बेचने वाला।

पंसेरी (स्त्री.) 1. पाँच **सेर का** बाट, 2. (दे. पैंहसेरी)।

पँहसेरी (स्त्री.) दे. पैंहसेरी।

पँहिया (पुं.) दे. पहियाँ।

प (अव्य.) दे. पै।

पइसा (पुं.) 1. धन-दौलत–आदमी तै पइसे आळा दीक्खै सै, 2. एक पैसे मूल्य का तांबे का सिक्का विशेष, 3. एक पैसे का सिक्का, 4. (दे. ढबली); ~-**धेल्ला** पैसा-धेला, रुपया-पैसा। **पैसा** (हि.)

पई (पुं.) बर्तन बनाने का पत्थर।

पऊवा (पुं.) दे. पौवा।

पकड़ (स्त्री.) 1. पकड़ने या जकड़ने की क्रिया, 2. भूल को पकड़ने का भाव, 3. क़ाबू या वश में होने या करने का भाव–ईब तै वो मेरी पकड़ मैं सै; (क्रि. स.) 'पकड़णा' क्रिया का आदे. रूप; **~मैं होणा** 1. वश में होना, 2. पहुँच में होना।

पकड़णा (क्रि. स.) 1. हाथ में सँभालना, 2. दौड़ते हुए को रोकना, 3. चोर को पकड़ना, 4. आगे निकले हुए व्यक्ति को तेज़ चलकर पकड़ना, 5. भूल पकड़ना, 6. किसी वस्तु को पकड़े रहना, 7. दूसरे के प्रभाव या गुण से प्रभावित होना, जैसे–किसी की आदत पकड़ना, कपड़े का रंग पकड़ना, 8. चिपटना या चिमटना, (दे. आपड़णा); (वि.) जिसकी पकड़ तेज़ हो; **बात~** 1. किसी बात को बार-बार दोहराना, 2. संकेत ग्रहण करना। **पकड़ना** (हि.)

पकड़-धकड़ (स्त्री.) पुलिस द्वारा पकड़ने की क्रिया, धर-पकड़; **~करणा** पुलिस द्वारा हिरासत में लिया जाना; **~माँचणा /होणा** लोगों को हिरासत में लेना, धर-पकड़ का दौर चलना।

पकड़ना (क्रि. स.) दे. पकड़णा।

पकड़म-पकड़ा (पुं.) एक खेल जिसमें बच्चे एक-दूसरे को पकड़कर बाज़ी जीतते हैं।

पकड़वाणा (क्रि. स.) 1. चोर, डकैत आदि को पकड़वाना, 2. पकड़वाने में सहायता देना; **कान~** 1. क्षमायाचना करवाना, 2. कान पकड़ने का दंड देना। **पकड़वाना** (हि.)

पकड़वाना (क्रि. स.) दे. पकड़वाणा।

पकड़ाणा (क्रि. स.) 1. लौटाना, 2. सौंपना, 3. पकड़ने में सहायता देना। **पकड़ाना** (हि.)

पकना (क्रि. अ.) दे. पाकणा।

पकवान (पुं.) तल कर बनाया गया खाद्य-पदार्थ, 2. मिठाई आदि। **पक्वान्न** (हि.)

पकवाना (क्रि. स.) पकाने का काम अन्य से करवाना।

पकसपात (पुं.) भेद-भावपूर्ण व्यवहार, किसी का पक्ष लेना। **पक्षपात** (हि.)

पकसी (पुं.) दे. पंछी। **पक्षी** (हि.)

पकाणा (क्रि. स.) 1. भोजन बनाना, 2. फ़सल आदि को पकने देना, 3. कच्ची वस्तु को आग में रखकर पकाना, 4. मानसिक रूप से तैयार करना–आज तीन घवा (गवाह) पकाए, 5. फोड़े-फुंसी को पकने देना। **पकाना** (हि.)

पकाना (क्रि. स.) दे. पकाणा।

पकावा (पुं.) कोल्हू पर गुड़ पकाने वाला।

पकी-पकाई (वि.) 1. बिना परिश्रम से प्राप्त, 2. पकी हुई।

पकेवा (पुं.) फोड़ा।

पकौड़ा (पुं.) घी या तेल में तल कर बनाई हुई बेसन आदि की बड़ी।

पक्का (वि.) 1. आग में पकाया हुआ, 2. पेड़-पौधे पर पका हुआ, 3. कठोर, दृढ़, सख़्त, 4. जिसमें किसी प्रकार के अनिश्चय का भाव न हो, यथा–पक्का काम, 5. प्रामाणिक या पूरा तोल, जैसे–सेर पक्का, 6. अनुभवी, जिसमें पूर्णता आ गई हो, 8. न छूटने वाला, जैसे–पक्का रंग; **~खाणा** 1. तला हुआ भोजन (जो अधिकतर बाट चलने वाले व्यक्ति के लिए बनाया जाता है), 2. लड्डू, जलेबी आदि मिठाई का भोजन।

पक्की (वि.) 1. आग में पकाई हुई, 2. पकी हुई, 3. कठोर, 4. निश्चित; **~बात** 1. अटल बात, 2. सच्ची बात; **~रसोई** तला हुआ भोजन, जैसे–पूरी, कचौरी, खीर, हलुआ आदि। **पकी** (हि.)

पक्ष (पुं.) दे. पख।

पक्षपात (पुं.) दे. पकसपात।

पक्षाघात (पुं.) लक़वा, फ़ालिज।

पक्षी (पुं.) दे. पंछी।

पख (पुं.) 1. पहलू, 2. पंख, 3. पक्षपात, तरफ़दारी, 4. धड़ा, जमायत, 5. पखवाड़ा। **पक्ष** (हि.)

पखवाड़ा (पुं.) दे. पंधराड़ा।

पखाना (पुं.) दे. पाखाना।

पखाळ (पुं.) दे. मसक; (क्रि. स.) 'पखाळणा' क्रिया का आदे. रूप।

पखाळणा (क्रि. स.) प्रक्षालन करना, पानी से निकालना।

पखावज (स्त्री.) ढोलक से छोटा एक बाजा।

पखेरू (पुं.) 1. पक्षी, उड़ता पक्षी, 2. आत्मा, जीव, 3. सैलानी।

पखोड़ (पुं.) पार्श्व भाग।

पग (पुं.) दे. डंघ; (क्रि. स.) 'पगणा' (दे.) क्रिया का आदे. रूप।

पगडंडी (स्त्री.) कच्चा व तंग रास्ता।

पगड़ी (स्त्री.) दे. पागड़ी।

पगणा (क्रि.) दे. पागणा।

पगाणा (क्रि. स.) वस्तु को तल कर चाशनी में डुबोना। **पगाना** (हि.)

पगाना (क्रि. स.) दे. पगाणा।

पग्गड़ (पुं.) 1. साफ़ा (ऊनताद्योतक), 2. भारी पगड़ी।

पग्गड़बाज (वि.) 1. पगड़ी पहनने वाला (ऊनताद्योतक), 2. भारी पगड़ी वाला।

पचंत (अव्य.) परिश्रम करने पर। पचने पर। उदा. झखंत विद्या, पचंत खेती।

पचकोळी (स्त्री.) व्यर्थ का बात।

पचगुणा (वि.) पाँच गुणा। **पचगुना** (हि.)

पचगुना (वि.) दे. पचगुणा।

पचड़ा (पुं.) 1. व्यर्थ का झंझट, 2. व्यर्थ का अटकाव।

पचणा (क्रि. अ.) 1. हजम होना, 2. किसी बात को अपने तक रखना, 3. एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में विलीन होना, 4. पकना, आग पर सिकना, 5. मगज खपाना, हुज्जतबाजी करना; (वि.) जो शीघ्र पचे। **पचना** (हि.)

पचना (क्रि. अ.) दे. पचणा।

पचपन (वि.) पचपन की संख्या; **~साल्ला** 1. सरकारी नौकरी से सेवा-निवृत्त होने की आयु, 2. बुढ़ापा।

पचमेळा (वि.) 1. पाँच मेल का, 2. रंग-बिरंगा, 3. कई वस्तुओं के मेल से बना हुआ।

पचरंग (पुं.) चौक पूरने की सामग्री–मेंहदी का चूरा, अबीर, बुक्का, हलदी और सुखारी के बीज; (वि.) रंग-बिरंगा।

पचरंगा (पुं.) विशेष प्रकार का रंग-बिरंगा ओढ़ना; (वि.) 1. रंग-बिरंगा, 2. बेमेल।

पचवाणा (क्रि. स.) 1. भोजन आदि पकवाना, 2. पच्चड़ या पच्चर लगवाना, 3. पचने के लिए बाध्य करना। **पचवाना** (हि.)

पचहर्‌याँ (वि.) पाँच तह या पाँच लड़ का।

पचाणा (क्रि. स.) 1. पकाना, 2. हज़म करना, 3. हड़पना, 4. आत्मसात् कर लेना, 5. तर्क-वितर्क करने के लिए बाध्य करना। **पचाना** (हि.)

पचाद्दा (पुं.) राजपूतों की एक यवन जाति।

पचाना (क्रि. स.) दे. पचाणा।

पचास (वि.) दे. पंचा।

पचास्सा (पुं.) 1. पचास वस्तुओं का समूह, 2. पचास का संवत्; (वि.) पचास वर्ष की आयु का।

पचीस्सी (वि.) पच्चीस वस्तुओं का समूह; (स्त्री.) भरी जवानी; **~मैं होणा** भरपूर यौवन में होना।

पचोतरा (पुं.) उगाही उगाहने के पारिश्रमिक स्वरूप नंबरदार को मिलने वाला पाँच प्रतिशत भाग।

पचोत्तरसो (पुं.) 1. एक सौ पाँच, 2. कौरव तथा पांडव जो संख्या में एक सौ पाँच थे; (वि.) एक सौ पाँच की संख्या, पाँच ऊपर सौ।

पच्चमपच्चा (स्त्री.) कहा-सुनी या लड़ाई-झगड़े की क्रिया; **~करणा/ होणा** 1. ज़िद करना, 2. कहा-सुनी करना।

पच्ची (वि.) पच्चीस; (स्त्री.) मगज़-पच्ची; (क्रि.अ.) 'पचणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं., एकव. का रूप।

पच्चीकारी (स्त्री.) धातु निर्मित पदार्थ पर अन्य धातु चढ़ाने की कला।

पच्छाद्दी (स्त्री.) पश्चिम में राजस्थान और पंजाब के मिलन-क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली।

पच्छिम (स्त्री.) पश्चिम दिशा, (दे. आथमणा)। **पश्चिम** (हि.)

पछत (क्रि.) दे. पचते हुए।

पछताना (क्रि. अ.) दे. पिछताणा।

पछतावा (पुं.) दे. पिछतावा।

पछवा (स्त्री.) पश्चिम की ओर से आने वाली पवन।

पछवाड़ (स्त्री.) 1. बौछाड़, वर्षा की वे बूँदे जो पवन के वेग से तिरछी होकर गिरती हैं, 2. मकान का पृष्ठ भाग, 3. पीछे का भाग।

पछवाड़ा (पुं.) निवास-स्थान का पिछला भाग–पतराह्ल तै पछवाड़े मैं पड़ते आए, (दे. पछीत)।

पछाँण (स्त्री.) दे. पिछाण।

पछाँह (वि.) पश्चिम देश या दिशा से संबंधित; (स्त्री.) पश्चिम।

पछाँहीं (वि.) पश्चिम दिशा की ओर का।

पछाँहे (वि.) दे. पछाँही।

पछाड़ (स्त्री.) 1. मानसिक आघात के कारण अचेत होने की अवस्था, 2. दुलत्ती, 3. प्रतियोगी को पीछे छोड़ने का भाव, 4. बौछार, 5. जल का उछाल; (क्रि. स.) 'पछाड़णा' क्रिया का आदे. रूप; **~खाणा** 1. बेसुध होकर गिरना, 2. पानी का वेग के साथ किनारे पर टकराना; **घोड़ा-~** एक

सर्प जो घोड़े से भी तेज़ गति से दौड़ता है; ~**देणा** पछाड़ना, हराना; ~**मारणा** 1. चीख़ मार कर बेसुध होना, 2. दुलत्ती मारना।

पछाड़णा (क्रि. स.) हराना, पराजित करना। **पछाड़ना** (हि.)

पछाड़ना (क्रि. स.) दे. पछाड़णा।

पछाड़ी (स्त्री.) घोड़े की पिछली टाँगे, पिछली टाँगे; (क्रि. वि.) 1. बाद में, 2. बाद का, जैसे–पछाड़ी का बालक। 3. पीछे की ओर; (क्रि. स.) 'पछाड़णा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिंग रूप।

पछादरा (वि.) पश्चिम की ओर रहने वाला। दे. पछाँहीं।

पछाद्दा (वि.) 1. हरियाणे का पश्चिमी भाग, 2. पश्चिमी भाग का।

पछीत (स्त्री.) 1. पीठ की ओर का भाग, 2. मकान के पीछे का भाग, 3. विलंब होने का भाव, 4. (दे. पछेत); ~**पै होणा** एक बच्चे के बाद दूसरे बच्चे का जन्म होना, (दे. पीठिया); ~**लागणा** दो घरों की पीछे की दीवार मिलना।

पछेत (स्त्री.) 1. विलंब, 2. फसल के बोने-काटने आदि में विलंब का भाव, 3. 'अगेत' का विलोम, 4. पृष्ठ भाग; ~**करणा** कार्य करने में विलंब करना; ~**का** 1. अंत का, 2. बाद का; ~**मारी जाणा** अधिक विलंब होना–के पछेत मारी जा सै एक हुक्का तै पी ले; ~**होणा** विलंब होना।

पछेत्ता (वि.) 1. देर से बोया हुआ (खेत), 2. विलंब से, 3. सदा पिछड़ने वाला, 4. पिछला, 5. बाद का।

पछेत्ती (वि.) 1. विलंब से बोई गई (फसल), 2. विलंब से हुई।

पछेली (स्त्री.) दे. पछेल्ली।

पछेल्ला (पुं.) हल में काम आने वाला एक खूँटा।

पछेल्ली (स्त्री.) पछेली, कलाई का कड़ूले जैसा आभूषण विशेष जिसके ऊपर चोंचदार बीज होते हैं।

पछोकड़ा (पुं.) दे. पछवाड़ा।

पछोड़ना (क्रि. स.) दे. पिछोड़णा।

पजाम्माँ (पुं.) यवन या यवनी का पहनावा विशेष (जिसे आजकल अन्य लोग भी पहनने लगे हैं), 1. (दे. सुत्थन), (दे. सुथना)। **पायजामा** (हि.)

पजाम्मीं (स्त्री.) तंग पायजामा।

पजावा (पुं.) ईंट पकाने का भट्ठा (एक राख की ढेरी पर दूसरा भट्ठा लगता रहता है और कुछ काल में वह एक पहाड़ी-सी बन जाती है); ~**खोल्हणा** पजावे से ईंट निकालनी शुरू करना।

पजेब (स्त्री.) पैर का आभूषण विशेष। **पाजेब** (हि.)

पजैया ईंट (स्त्री.) पँजावे की पकी ईंट।

पजोणा (क्रि. स.) 1. निमज्जित करना, 2. पिरोना।

पटंबर (पुं.) 1. साधुओं द्वारा धारण किया जाने वाला पीला वस्त्र, पीतांबर, 2. पटका, 3. रेशमी वस्त्र। **पाटंबर** (हि.)

पट[1] (स्त्री.) 'पट'-'पट' की ध्वनि।

पट[2] (पुं.) 1. पुष्ट जंघा, 2. पुट्ठा।

पट[3] (पुं.) 1. मंदिर का दरवाजा, 2. दरवाजा, 3. अंतः चक्षु, 4. पर्दा, 5. (दे. पटका); ~**खुल्हणा** 1. अंतः चक्षु खुलना, 2. दर्शन हेतु मंदिर के द्वार खुलना।

पट[4] (पुं.) 1. औंधा पड़ने की अवस्था, 2. 'खिल' या 'चित्त' का विलोम, 3. पाँसे का औंधा गिरने का भाव।

पटक (स्त्री.) गिराने या पटकने की क्रिया; (क्रि. स.) 'पटकणा' क्रिया का आदे. रूप; ~**लाणा/मारणा** 1. कुश्ती में हराना, 2. पछाड़ना।

पटकणा (क्रि. स.) 1. ऊपर से गिराना, 2. हाथ से छोड़ना, 3. कुश्ती में हराना, 4. सिर पटकना, 5. दूर फेंकना, (क्रोध में आकर) सिर के भार को उतार फेंकना। **पटकना** (हि.)

पटकना (क्रि. स.) दे. पटकणा।

पटका (पुं.) 1. वह वस्त्र जिससे वर-वधू का गठबंधान किया जाता है 2. गले का दुपट्टा, 3. ओढ़नी (क्रि. स.) 'पटकणा' क्रिया का भू. का., पुं., एकव. रूप।

पटकी (स्त्री.) (कुश्ती में) गिराने की क्रिया; (क्रि. स.) 'पटकणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिंग, एकव. रूप; ~**खाणा** 1. गिरना, 2. हारना, 3. कुश्ती में हारना; ~**मारणा** 1. कुश्ती करना, 2. कुश्ती जीतना, 3. थपथपाना।

पटड़ा (पुं.) दे. पाटड़ा।

पटड़ी (स्त्री.) 1. पटरी, छोटा पटड़ा, 2. रेल की पटड़ी, 3. नहर के किनारे का समतल मार्ग, 4. मार्ग, 5. लिखने की तख्ती, 1. (दे पाटड़ी), 2. (दे पाटड़ा); ~**उत्तरणा** मेल-मिलाप न होना, मन-मुटाव होना; ~**चराणा** खेत या खेत की पट्टी पर पशु चराना; ~**बैठणा** 1. ताल-मेल बैठना, 2. विवाह की रस्म होना, 3. सुमार्ग अपनाना।

पटणा (क्रि. अ.) 1. आपस में बनना, दिल मिलना, 2. सौदा निश्चित होना, 3. गड्ढा समतल होना, 4. (दे पाटणा); (वि.) 1. जो शीघ्र फटे, 2. जो शीघ्र पटे; (पुं.) पटना शहर; **सोद्दा**~बात तय होना। **पटना** (हि.)

पटपटी (स्त्री.) दे. कनपटी।

पटपड़ (वि.) 1. अधिक वर्षा के कारण हुई कठोर भूमि, 2. (दे. राप्पड़); ~**होणा** 1. वर्षा के कारण बोया हुआ खेत चौपट या सभतल होना, 2. बीज अंकुरित न होना।

पटबीजणा (पुं.) 1. जुगनू, 2. तितली। **पटबीजना** (हि.)

पटबीजना (पुं.) दे. पटबीजणा।

पटबीजली (वि.) विनाशकारी बिजली।

पटमाँ (वि.) 1. औंधे रुख–खड़ंजे की ईंट पटमाँ बिछाई जाँ सैं, 2. खिले हुए, जैसे–पटमाँ चावल। **पटवाँ** (हि.)

पटमेळी (स्त्री.) 1. कुकर्म, 2. बिजली–चीज्जाँ नैं के पटमेळी मारगी मिलती कोन्याँ।

पटर-पटर (स्त्री.) 1. मोटी बूँदें या ओले गिरते समय उत्पन्न ध्वनि, 2. 'पट'-'पट' की ध्वनि।

पटरा (पुं.) दे. पाटड़ा।

पटराणी (स्त्री.) मुख्य रानी, पट्टम हिषी, राजा के साथ सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी रानी। **पटरानी** (हि.)

पटरानी (स्त्री.) दे. पटराणी।

पटरी (स्त्री.) दे. पटड़ी।

पटवा (पुं.) 1. एक जाति जो रेशम के धागों से बनी वस्तुओं का व्यापार करती है, 2. इस जाति का व्यक्ति, 3. रेशम; ~**सा** सुंदर।

पटवारी (पुं.) जमीन, फसल आदि का लेखा-जोखा रखने वाला सरकारी कर्मचारी।

पटसण (पुं.) 1. पटसन का पौधा, 2.

पटसन का रेशा या छाल, 3. पटसन का बीज। **पटसन** (हि.)

पटसन (पुं.) दे. पटसण।

पटा (पुं.) 1. लोहे की तलवारनुमा पट्टी जिसमें तलवार से प्रहार करने और रोकने का अभ्यास सीखा जाता है, 2. 'पटा' खेलने का कोई आयुध; (क्रि. स.) 'पटाणा' क्रिया का आदे. रूप; **~खेल्हणा** 1. तलवार चलाने का अभ्यास करना, 2. फुरती के साथ आक्रमण से बच निकलना, 3. चकमा देना, वंचिका देना।

पटाका (पुं.) दे. पटाक्का।

पटाक्का (पुं.) 1. पटाका, पटाखा, आतिशबाजी की एक वस्तु, 2. 'पटाक' की ध्वनि; (वि.) तेज-तर्राट;**~छूटणा** 1. विस्फोट होना, 2. रहस्य उद्घाटित होना, 3. पटाका चलना; **~सा/-सी** सुंदर, आकर्षक, चित्ताकर्षक।

पटापट (स्त्री.) मोटी बूँद या ओले आदि के गिरने से उत्पन्न ध्वनि; (क्रि.वि.)। शीघ्रता से, 2. तड़ातड़।

पटार[1] (पुं.) दे. पिटार।

पटार[2] (पुं.) दे. पिटारी।

पटिया (स्त्री.) 1. मोर-पंख या कपड़े के रंग-बिरंगे चिथड़ों से गूँथी पशुओं की माला, 2. गले का पट्टा (दे. गळ-पटिया)

पटी (वि.) वह खेत जो लंबाई में अधिक ज्यादा हो चौड़ाई में कम।

पटील (पुं.) गंजा व्यक्ति; **गंजा**~गंजा व्यक्ति।

पटुआ (पुं.) दे. पटवा।

पटेबाज (वि.) 1. पटा खेलने में चतुर, 2. चालाक।

पटेरा (पुं.) पटेर, बाजरे के पौधे जैसी एक घास विशेष जो झीलों के किनारे उगती है।

पटेला (पुं.) दे. सुहाग्गा, 2. दे. मैज।

पटैल (वि.) दे. पटेबाज।

पट्ट (पुं.) दे. पट[3]।

पट्टा (पुं) 1. भूभाग, 2. सरकारी करारनामा जिस पर भूमि-संबंधी विवरण होता है, 3. सनद, करारनामा, 4. चमड़े का पट्टा (जो पशु के गले में बाँधा जाता है) 5. पटरी, पटड़ा; **~करणा/लिखणा** इकरारनामा लिखना; **~चालणा** वंश-परंपरा में संपत्ति आदि चलती रहना; **~देणा** अपनी भूमि या संपत्ति का अधिकार अन्य को सौंपना; **~(-याँ) बगणा** 1. काम को हुनरपूर्वक करना, 2. बे रोकटोक काम करना; **~होणा** अधिकार होना, अधिकार मिलना।

पट्टी (स्त्री.) 1. तख्ती, 2. भूमि का छोटा टुकड़ा, 3. घाव पर बाँधी जाने वाली पट्टी, 4. सीख, 5. बहकावा, 6. माँग का एक आभूषण विशेष, 7. पहाड़े-गिनती, 8. रोगन में डाला जाने वाला बुरादा, 9. सुनार का एक उपकरण, 10. धारी; (क्रि.अ.) 6. 'पटणा' क्रिया का भू. का स्त्रीलिंग रूप; **~आणा** 1. कई प्रकार के व्यवहार का ज्ञान होना, 2. गिनती-पहाड़े याद होना; **~खोल्हणा** छिपा रहस्य बताना; **~चढ़ाणा/पढ़ाणा** सीख देना; **~चालणा** 1. परपंरा पड़ना, 2. सीख का प्रभाव पड़ना; **पोल~** 1. छिपा रहस्य, 2. बनावटी व्यवहार; **~खुल्हणा** रहस्य का पता लगना, वास्तविकता सामने आना, **~बाँधणा** सब्र करना।

पट्टीदार (वि.) 1. धारी वाला, 2. अधिक भूमि वाला; (पुं.) 1. दरबार का अधिकारी, 2. हिस्सेदार।

पट्टी (पुं.) दे. पट्टा।

पट्ठा (वि.) 1. युवक, 2. छबीला; (पुं.) 1. मांसपेशी, 2. जुल्फ।

पट्ठे (पुं.) 1. अंग्रेजी विधि से काटे गए सिर के बाल, 2. 'पट्टा' का बहुव. रूप~**काढणा/बाहणा** अंग्रेजी विधि से काटे गए बालों से माँग निकालना। **उल्लु के~** एक गाली (उल्लू की संतान–व्यंजना में प्रयुक्त)।

पठनेटा (पुं.) पठान।

पठाण (पुं.) 1. काबुल के आस–पास की एक मुसलमान जाति। 2. पठान जाति का व्यक्ति; (वि.) वीर, साहसी। **पठान** (हि.)

पठाणी (स्त्री.) पठान की पत्नी; (वि.) वीरांगना।

पड़ंती (क्रि. वि.) पड़ती हुई (पैर पड़ती हुई)–पाँ पड़ंती रुकमण बोल्ली कहो तै कात्तक न्हा ल्याँ हो राम (लोक गीत)

पड़काळा (पुं.) दे. पैड़काळा।

पड़क्याणा (क्रि.) दे. भाळ।

पड़खणा (वि.) 1. कटखना, पाड़ या काट खाने वाला (कुत्ता), 2. क्रोधी।

पड़चंदा (पुं.) 1. तोहमत, 2. पीपल का प्रेत।

पड़छत्ती (स्त्री.) 1. टाँड, 2. दो छतों के बीच की छोटी कोठरी।

पड़छी (स्त्री.) दे. छान।

पड़णा (क्रि. अ.) 1. गिरना, 2. लेटना, 3. (दे. ढहणा); (वि.) जो शीघ्र गिर जाए। **पड़ना** (हि.)

पड़त (वि.) पड़ती, बिना जुती (भूमि); (स्त्री.) परत, तह।

पड़त मेल (पुं.) दे. पड़ता।

पड़ता (पुं.) लागत और न्यूनतम लाभ; (क्रि. वि.) पड़ता हुआ, गिरता हुआ; **~खाणा/पड़गा** लागत और मुनाफा मिलना।

पड़ताळ (स्त्री.) 1. जाँच या पुनः जाँच, 2. खोजबीन। **पड़ताल** (हि.)

पड़ती (वि.) दे. पड़त।

पड़द पोस (वि.) 1. पर्दा ओढ़े हुए, 2. गुप्त वेश में, 3. पर्दा नशीन।

पड़दा (पुं.) परदा; **~ठाणा** 1. रहस्य का उद्घाटना करना, 2. निर्लज्ज होना या करना।

पड़दाद्दा (पुं.) दादा का पिता; (वि.) बुजुर्ग। **परदादा** (हि.)

पड़नान्ना (पुं.) माता के पिता का पिता; (वि.) दूर का रिश्तेदार।

पड़पोता (पुं.) दे. पड़पोत्ता।

पड़पोत्ता (स्त्री.) परपोता, पोते का पुत्र; **~पड़पोतियाँ का होणा** दीर्घ आयु पाना। **पड़पोता** (हि.)

पड़बाळ (पुं.) आँख की एक बीमारी। दे. बाळ तोड़।

पड़ला (पुं.) विवाह पक्ष की ओर से दिए जाने वाले वस्त्र।

पड़वा (स्त्री.) 1. हिन्दी मास की पहली तिथि, 2. (दे. परवा[2]); **~दोज करणा** बात को टालते रहना। **प्रतिपदा** (हि.)

पड़वाए (पुं.) नक्षत्र का वह भाग जिसमें बच्चा जन्म लेता है, जैसे–सोने, चांदी, तांबे आदि के पड़वाए।

पड़वाणा (पुं.) 1. वस्त्र आदि से कुछ भाग खरीदना, 2. लकड़ी कटवाना या

चिरवाना, 3. फाड़ने का काम अन्य से करवाना, 4. कुत्ते से कटवाना (दे. पड़ाणा), 5. गिरवाना; **कफन~** हर समय मृत्यु के लिए तैयार रहना। **फड़वाना** (हि.)।

पड़ा (पुं.) 1. विश्राम स्थल, 2. गाड़ीवान आदि का विश्राम-स्थल; (क्रि. अ.) 'पड़णा' क्रिया का भू. का., पुं., एक व. रूप; **~गेरणा/मारणा/लाणा** मेहमान का आवश्यकता से अधिक समय तक ठहरना। **पड़ाव** (हि.)

पड़ाई (स्त्री.) 1. बीमारी, 2. वधू द्वारा पैर छूने के उपलक्ष में मिलने वाली राशि, 3. पड़ने या गिरने की क्रिया।

पड़ाणा (क्रि. स.) 1. कटवाना, चिरवाना, 2. कुत्ते पीछे लगाना, (दे. पड़वाणा), 3. पैरों पर गिराना। **पड़वाना** (हि.)

पड़ापड़ (क्रि. वि.) 'पड़'-'पड़' की ध्वनि के साथ (वर्षा, थप्पड़ आदि का आघात); (स्त्री.) 'पड़'-'पड़' की ध्वनि।

पड़ाव (पुं.) दे. पड़ा।

पड़ावे (पुं.) दे. पड़वाए।

पड़ैत (स्त्री.) 1. परती भूमि, 2. चरागाह।

पड़ोत्ता (पुं.) दे. पड़पोत्ता।

पड़ोत्था (पुं.) हल का एक औजार, ओघ।

पड़ोस[1] (पुं.) 1. घर से सटा हुआ घर, घर के निकट के मकान, 2. आस-पास के गाँव; **~निभाणा** पड़ोसी के साथ उचित व्यवहार बरतना (चाहे अनचाहे); **~बरतणा** निकट के व्यक्ति को दूर का समझना

पड़ोस[2] (पुं.) रस्सी जो पशु (गधा) के अगले पैरों या एक अगले, एक पिछले पैर में बाँध दी जाती है ताकि वह दूर न निकल जाए; **लाणा** गति विधि सीमित करना। **पाद-पाश** (हि.)

पड़ोसी (पुं.) दे. पड़ोस्सी।

पड़ोस्सण (स्त्री.) 1. पड़ोस में रहने वाली, 2. जिसके प्रति अपनत्व का भाव न हो। **पड़ोसिन** (हि.)

पड़ोस्सी (पुं.) 1. पड़ोस में रहने वाला, 2. पराया, अन्य। **पड़ोसी** (हि.)

पड्ढणियाँ (पुं.)पढ़ने वाला, विद्यार्थी, (दे. पढेसरी)।

पड्डूय (स्त्री.) कपड़े पर चित्रित लंबी कथा।

पढंता (वि.) पढ़ने वाला (व्यंग्य में प्रयुक्त)–देक्ख्याए नाँ इसा पढंता; (क्रि. वि.) पढ़ता हुआ।

पढणा (क्रि. अ.) 1. पढ़ाई करना, 2. पढ़ना-लिखना सीखना, 3. बात को सावधानी से समझने का यत्न करना, 4. चारित्रिक गुण को समझना, 5. भविष्य के विषय में जानना, 6. बात को गहराई से न समझना और सुनने की अवस्था तक न पहुँचना, 7. कान में मंत्र फूँकना, उल्टी सीख देना; (क्रि. स.) बाँचना, लिखावट को बाँचना; (वि.) पढ़ने में रुचि रखने वाला; **~अर गुणणा** पढ़ना और उसके अनुसार चिन्तन-मनन करके व्यवहार करना। **पढ़ना** (हि.)

पढत (स्त्री.) 1. पढ़ने का कार्य, 2. लेखबद्ध या लिपिबद्ध करने का कार्य–पइसे देण तैं पहल्याँ पढत कर ले।

पढ़ना (क्रि. अ.) दे. पढणा; (क्रि.स.) दे. पढणा।

पढवाणा (क्रि. स.) 1. पढ़ने का कार्य अन्य से करवाना, 2. पत्र पढ़वाना। **पढ़वाना** (हि.)

पढ़वाना (क्रि. स.) दे. पढ़वाणा।

पढ़ाई (स्त्री.) 1. पढ़ने का काम, 2. विद्या, 3. किसी विशेष दर्जे तक की शिक्षा, 4. वाचन करने या वर्णों को पढ़ने का काम, 5. उपदेश, 6. पढ़ाई की फीस–पढ़ाई कितणी देणी पड़ैगी; (क्रि. स.) 'पढाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिंग, एकव. रूप, पढ़वाई; ~**पढणा** 1. शिक्षा प्राप्त करना, 2. शिक्षा ग्रहण करना।

पढ़ाक्कू (वि.) विद्या-व्यसनी, पढ़ने वाला, पठनशील। **पढ़ाकू** (हि.)

पढ़ाणा (क्रि. स.) 1. विद्यालयी शिक्षा देना, 2. सीख देना, 3. हुनर सिखाना, 4. कान भरना, 5. पक्षी आदि को बोलना सिखाना। **पढ़ाना** (हि.)

पढावणा (क्रि.स.) दे. पढ़ाणा।

पढावणिया (वि.) 1. पढ़ाने वाला, 2. शिक्षा देने वाला, 3. उल्टी-सीधी सीख देने वाला; (पुं.) मंत्र-गुरु (व्यंग्य में)।

पढेसरी (वि.) पढ़ने वाला; (पुं.) विद्यार्थी (व्यंग्य में प्रयुक्त)।

पण (पुं.) 1. प्रण, वचन, 2. व्यापार, 3. एक सिक्का विशेष; ~**राखणा** वचन-पालन करना।

पणकाळ (पुं.) अतिवृष्टि के कारण होने वाला अकाल।

पणघट (पुं.) पानी भरने का स्थान;~**का कूवा** कूआँ जिससे पीने का पानी भरा जाता है, मीठे पानी का कूआँ; ~**जुड़णा** पनघट के कूएँ पर पनिहारियों की भीड़ जुड़ना; ~**लागणा** कुएँ पर प्रातः या सायं पनिहारिनों की भीड़ जुड़ना। **पनघट** (हि.)

पणचक्की (स्त्री.) पवन-चक्की **पनचक्की** (हि.)

पणपणा (क्रि. अ.) 1. उभरना, 2. बड़ा होना, 3. पुनः स्वस्थ स्थिति में आना, 4. दीन-हीन अवस्था से उबरना, कर्ज से उभरना; (वि.) वह जो पनप सके। **पनपना** (हि.)

पणपीट (वि.) 1. फसल जो अधिक वर्षा के कारण जल से प्रभावित हो गई हो, 2. अधिक जल से प्रभावित, 3. पानी के आघात से प्रभावित। **पनपीट** (हि.)

पणपेल (स्त्री.) वह मोटी नमकीन रोटी जो पानी के साथ घूँट-घूँट कर खाई जाए; (वि.) वह जो पानी से पेली जाए।

पणमेस्सर (पुं.) 1. साक्षी ईश्वर, 2. मन, 3. आत्मा--मैं जाणूं मेरा पणमेस्सर जाणैं जै मनैं तेरी कटती करी हो तै। **परमेश्वर** (हि.)

पणवाड़ी (पुं.) पाने बेचने वाला। **पनवाड़ी** (हि.)

पणहार[1] (पुं.) पानी भरने वाला, धीवर; (स्त्री.) पनिहारिन। **पनिहार** (हि.)

पणहार[2] (स्त्री.) दे. पणिहार।

पणाणा (क्रि. स.) 1. पैना करना, 2. लालायित या इच्छुक होना–ब्याह के लाडुआँ पाच्छै मुँह पनायाँ बैट्ठया सै, 3. पक्षी द्वारा चोंच को साफ करना।

पणियल (वि.) अधिक पानी वाला। दे. पणियाळा।

पणियारा (वि.) दे. पणियाळा।

पणियाळा (पुं.) गाँव का भूभाग जो ढलान की ओर हो और अधिकतर पानी से भरा रहता हो, झील; (वि.) 1. अधिक पानी वाला (भोजन), 2. मीठे जल का (कुआँ)।

पणिहार (स्त्री.) पनिहारिन; (पुं.) 1. पनिहार, पानी भरने वाला, 2. एक राजपूत गोत्र।

पणिहारिण/पणिहारी (स्त्री.) 1. कूएँ पर पानी भरने वाली महिला, 2. (दे. हूँसुवा)। **पनिहारिन** (हि.)

पणील्ला (वि.) अधिक पानी वाला (भोजन)। **पनीला** (हि.)

पतंग (पुं.) 1. एक कीड़ा विशेष जो प्रकाश पर मंडराता है, 2. कागज की पतंग या गुड्डी।

पतंगड़ (पुं.) पतंगबाज, पतंग उड़ाने में निपुण व्यक्ति।

पतंगा (पुं.) 1. आग के छिटकने पर उड़ने वाला स्फुलिंग या चिंगारी, 2. आग, 3. एक कीट जो दीपक की लौ पर मंडराता है; (वि.) 1. कामुक, 2. विवेकहीन, **~सा लागणा** 1. बात चुभना, 2. बौखलाना।

पतंजलि (पुं.) 1. एक प्रसिद्ध वैयाकरण, 2. एक वैदिक ऋषि, 3. एक ब्राह्मण गोत्र।

पत (स्त्री.) 1. लाज, 2. सम्मान;**~मारणा** प्रतिष्ठा कम करना; **~राखणा** सम्मान या लाज रखना। **प्रतिष्ठा** (हि.)

पतझड़ (पुं.) 1. वृक्षों के पत्ते गिरने की ऋतु, 2. बुढ़ापा।

पतनाल (पुं.) दे. पतराळ।

पतरा (पुं) 1. तिथि-पत्र, पंचांग, 2. कागज, 3. धातु की पत्ती; (वि.) पतला (मेवा.) **~खोल्हणा/बाँचणा** 1. भविष्यवाणी करना, 2. पोल खोलना, 3. ठीक-ठीक विवरण प्रस्तुत करना; **~दिखाणा** पंचांग के अनुसार भविष्य-फल पूछना, शुभ घड़ी पूछना; **~की बात हिरदे मैं** मन की बात अनुमान से जानना।

पतराळ/पतराह्ल (पुं.) 1. पतनाला, पनाला, 2. छत के पानी के निकास के लिए बनाया गया मिट्टी का पक्का पात्र, 3. छत की मोरी; **~चालणा/बहणा** मध्यम दर्जे की वर्षा होना। **पतनाला** (हि.)

पतराह्ळी (स्त्री.) 1. नाली, 2. खेत की नाली, 3. मोरी।

पतरी (स्त्री.) 1. जन्म-पत्री, 2. धातु की चपटी कील, 3. गले का ताबीज (ताबीज की आकृति ईंट, पान, चिड़ी या हुक्म के चिह्न जैसी होती है); (वि.) पतली (मेवा.) **~पढणा** भविष्य बताना।

पतला (वि.) दे. पतळा।

पतळा (वि.) 1. दुर्बल, 2. अधिक तरल, 3. झीना, 4. लचीला; **~पड़णा** क्षीण होना। **पतला** (हि.)

पतळिया (वि.) 1. पतला, दुर्बल, 2. अधिक तरल अवस्था का।

पतलून (स्त्री.) अंग्रेजी ढंग से सिला पायजामा नुमा वस्त्र विशेष।

पतवार (स्त्री.) 1. ज्वार-बाजरे के पौधों से टूटी पत्तियाँ, 2. भूसे की पत्तियाँ; **~करणा** छिन्न-भिन्न करना।

पता (पुं.) 1. समाचार, सूचना, 2. डाकपत्र आदि पर लिखा गया नाम, स्थान का ब्यौरा, 3. गूढ़ भेद, रहस्य, 4. जानकारी, ज्ञान; **~(-ते) की बात** सूझ भरी बात।

पताका (स्त्री.) झंडा।

पताल (पुं.) दे. पंताळ। **पाताल** (हि.)

पतावा (पुं.) जूती के अंदर के भाग में डाला जाने वाला अतिरिक्त चमड़ा ताकि जूती ढीली न रहे।

पतासा (पुं.) दे. पतास्सा।

पतास्सा (पुं.) खाँड से बनी एक मिठाई; (वि.) ऊपर से बताशे के आकार का। **बताशा** (हि.)

पति (पुं.) दे. पती।

पतित (वि.) अधम।

पतिव्रता (स्त्री.) दे. पतीभरता।

पती (पुं.) 1. स्वामी, 2. ईश्वर, 3. वह व्यक्ति जिससे विवाह हुआ हो। **पति** (हि.)

पतीभरता (स्त्री.) सती-साध्वी; ~**नार** पतिव्रता स्त्री। **पतिव्रता** (हि.)

पतील (पुं.) एक प्रकार का पशु चारा।

पतीली (स्त्री.) 1. दे. पतील्ली, 2. दे. डेगची।

पतील्ला (पुं.) सब्जी आदि बनानेके काम आने वाला चौड़े मुँह का धातु का पात्र। **पतीला** (हि.)

पतील्ली (स्त्री.) छोटा पतीला।

पतेवड़ा (स्त्री.) दे. जेर।

पतोर (पुं.) 1. बिना मोअन की मीठी पतली सुहाली, 2. (दे. पतहोर)।

पत्तर (पुं.) 1. चिट्ठी, 2. धातु का चपटा खंड, 3. (दे. पत्तळ)। **पत्र** (हि.)

पत्तल (स्त्री.) दे. पत्तळ।

पत्तळ (स्त्री.) 1. ढाक आद के पत्तों को जोड़ कर बनाई प्लेट, 2. विवाह तथा सामूहिक भोज के समय किसी अनुपस्थित व्यक्ति के लिए दिया जाने वाला भोजन जो लगभग आठ लड्डू और बारह पूरी आँका जाता है, 3. शुभ अवसर पर अलग से निकाला जाने वाला एक व्यक्ति का भोजन; **आद्धी~** सामूहिक भोज आदि पर छोटे बच्चे के लिए अलग से निकाला जाने वाला भोजन; ~**करणा/ बणाणा** सामूहिक भोज के अवसर पर एक व्यक्ति का भोजन निकालना; ~**काढणा** धर्मार्थ एक व्यक्ति का भोजन निकालना; ~**खाणा/जीमणा/ पाड़णा/ मारणा** सामूहिक भोज के समय भर पेट मिठाई खाना; ~**बाँधणा** लेन-देन या भाईचारे में निश्चित मात्रा की मिठाई देना; ~**माँगणा** अपना हक समझ कर पत्तल माँगना।

पत्ता (पुं.) 1. पेड़-पौधे का पत्ता, 2. हजामत बनाने का ब्लेड, 3. ताश का पत्ता, 4. कागज का नोट या रुपया; ~**काटणा** 1. उपेक्षा करना, 2. मार डालना; ~**तोड़ भाजणा** 1. तेज दौड़ना, 2. निकल भागना; ~**लिखणा** 1. गंडा-डोरी बनाना, 2. पीपल के पत्ते पर मंत्र-तंत्र लिखना।

पत्ती (स्त्री.) 1. छोटी कोंपल या पत्ती, 2. धातु की पतरी, 3. खपच्ची, 4. जंत्र; **नसा~** मादक पत्तियाँ।

पत्थर (पुं.) दे. पात्थर।

पत्नी (स्त्री.) अपनी स्त्री, भार्या (दे. ब्याहता)।

पत्याणा (क्रि.) विश्वास करना।

पत्र (पुं.) दे. पत्तर।

पत्रा (पुं.) दे पतरा।

पत्रिका (स्त्री.) 1. चिट्ठी, 2. लग्न की चिट्ठी 3. सावधि समाचार-पत्र।

पथ (स्त्री.) दे. राही।

पथराणा (क्रि. अ.) 1. पत्थर का होना, 2. आँखें स्थिर होना, 3. स्तब्ध होना; (क्रि.स.) पत्थरों से मारना, पत्थर फेंकना –बाळकाँ नैं साँप पथरा दिया। **पथराना** (हि.)

पथराना (क्रि. अ.) दे. पथराणा।

पथरिया (वि.) 1. पथरीला, 2. पत्थर से संबंधित, जैसे–पथरिया साँप।

पथरी (स्त्री.) 1. एक उदर-रोग विशेष, 2.

उस्तरा तेज करने की सिल्ली; (वि.) पथरीली।

पथरीला (वि.) 1. पत्थर का, 2. पत्थरों से युक्त।

पथवाणा (क्रि. स.) गोबर आदि थपवाना।

पथवारा (पुं.) 1. स्थान जहाँ गोबर के उपले आदि थापे जाते हैं, (दे. गितवाड़ा), 2. गोबर थापने का काम; **~माँगणा** पशुओं का गोबर माँगना; **~लागणा** वर्षा-समाप्ति के बाद गोबर थापना शुरू करना।

पथवारी (स्त्री.) 1. कार्तिक-स्नान के दिनों में मिट्टी के छोटे ढूह के रूप में बनाई गई 'माता' जिसकी स्नान के बाद पूजा की जाती है और गंगा-स्नान वाले दिन जिसका जल-विसर्जन (पधारना) किया जाता है, 2. पथवारी के गीत।

पथिक (पुं.) यात्री (तुल. राहचालता)।

पथेरण (स्त्री.) दे. पथेरी।

पथेरा (पुं.) भट्ठे की ईंट थापने वाला व्यक्ति; (वि.) थापने या पाथने में निपुण।

पथेरी (स्त्री.) कुशलता से उपले या गोबर आदि थापने वाली।

पथ्य (पुं.) 1. इलाज, 2. परहेज।

पथ्या (स्त्री.) हरियाणे में बोली जाने वाली प्राचीन संस्कृत का नाम।

पद (पुं.) 1. पदवी, 2. मोक्ष, 3. भजन, 4. गीत का अंश, 5. चरण; **~पाणा** 1. मोक्ष मिलना, 2. उच्च पद मिलना।

पदक (पुं.) 1. चरण, 2. तमगा।

पद-चिह्न (पुं.) चरण-चिह्न।

पदणा (क्रि. अ.) दे. पिदणा।

पदम (पुं.) पदम् का पुष्प; (वि.) पदम् की संख्या। **पद्म** (हि.)

पदमनी (स्त्री.) 1. सुंदर स्त्री, 2. स्वाँग आदि में वर्णित एक सुंदर नायिका। **पद्मिनी** (हि.)

पदवी (स्त्री.) 1. उपाधि, 2. दर्जा।

पदारथ (पुं.) 1. स्वादिष्ट भोजन, 2. वस्तु। **पदार्थ** (हि.)

पदार्थ (पुं.) दे. पदारथ।

पदार्पण (पुं.) किसी स्थापन पर पैर रखे जाने की क्रिया (आदर सूचक)।

पदावली (स्त्री.) 1. पदों का समूह, 2. भजनों का संग्रह।

पदार (वि.) पायेदार।

पदी (पुं.) मोक्ष पद।

पदोरा (वि.) अधिक पादने वाला।

पद्दड; (वि.) दे. पदोरा।

पद्दड़-पद्दड़ (स्त्री.) तेज दौड़ते या चलते समय पैरों से उत्पन्न ध्वनि; (क्रि.वि.) तेज गति से, तेजी के साथ; **~भाजणा** 1. पैरों से ध्वनि उत्पन्न करते हुए दौड़ना, 2. डर कर भागना।

पद्धति (स्त्री.) रीति, ढंग, तरीका।

पद्धी (स्त्री.) कंधा, (दे. पद्ध्याँ)।

पद्ध्याँ (क्रि. वि.) कंधे पर बैठाए हुए; **~चढणा/बैठणा** 1. कंधे पर बैठना, 2. सबल स्थिति में होना; **~बठाणा** 1. सम्मान देना, 2. कंधे पर बैठाकर घुमाना, 3. सिर चढ़ाना।

पद्म (पुं.) दे. पदम।

पद्मपुराण (पु.) एक पुराण जिसका लेखन हरियाणा में हुआ माना जाता है।

पद्मा (स्त्री.) पद्मावती नायिका।

पद्मावती (स्त्री.) एक नायिका जिसका वर्णन कहानी किस्सों में मिलता है।

पद्मिनी (स्त्री.) दे. पदमनी।

पद्य (पुं.) कविता, छंद-बद्ध रचना, 'गद्य' का विलोम।

पधराणा (क्रि. स.) 1. पीटना, पीट कर सीधा करना, 2. पथवारी, साँझी या मूर्त्ति आदि का जल-विसर्जन करना, 3. स्थापित करना, 4. सम्मानपूर्वक गमन कराना; (क्रि. अ.) बड़े पुरुष का आगमन होना। **पधराना** (हि.)

पधराना (क्रि. स.) दे. पधराणा।

पध्या (स्त्री.) हरियाणा में पाधों द्वारा बोली जाने वाली एक प्राचीन संस्कृत।

पनघट (पुं.) दे. पणघट।

पनचक्की (स्त्री.) दे. पणचक्की।

पनडुब्बी (स्त्री.) एक प्रकार की नाव, (दे. डूँड्डा)।

पनपना (क्रि. अ.) दे. पणपणा।

पनवाड़ी (पुं.) दे. पणवाड़ी।

पनसारी (पुं.) मसाले और जड़ी-बूटी बेचने वाला व्यापारी। **पंसारी** (हि.)

पनसाल (स्त्री.) 1. प्याऊ, 2. पानी की गहराई मापने का एक उपकरण; (पुं.) पानी की गहराई मापने वाला एक कर्मचारी।

पनसेरी (स्त्री.) दे. पंसेरी।

पनाणा (क्रि. स.) पैना करना।

पना (स्त्री.) जूती।

पनाह (स्त्री.) शरण। आड़। उदा.—पनाह पेट का, जीभ सचाई हो सै बात की। (लचं.)

पनिहार (पुं.) एक राजपूत गोत्र।

पनिहारी (स्त्री.) दे. पणिहारी।

पनीर (पुं.) छैना, दूध को फाड़कर निकाला गया छेलड़ा।

पनीरी (स्त्री.) पौध, जैसे—चावल, टमाटर आदि की।

पनीला (वि.) दे. पणील्ला।

पन्ना (पुं.) 1. पृष्ठ, 2. कच्ची अंबिया से तैयार रस, 3. एक मूल्यवान पत्थर।

पन्हाँ (पुं.) कपड़े की चौड़ाई या अरज। **पनहा** (हि.)

पपड़ी (स्त्री.) दे. पापड़ी।

पपीत्ता (पुं.) 1. अंड-खरबूजा, एक फल, 2. इस फल का वृक्ष। **पपीता** (हि.)

पपीरी (स्त्री.) गेहूँ की नली से बनाया गया एक बाजा। तुल. पुंबी। दे. भँभीरी।

पपैया/पपैहिया (पुं.) 1. सुरीला गाने वाला छोटा पक्षी विशेष, 2. मुँह से बजाया जाने वाला बाजा विशेष; (वि.) सुरीला गाना गाने वाला।

पपोटा (पुं.) दे. पपोट्टा।

पपोट्टण (स्त्री.) दे. पिलपोटण।

पपोट्टा (पुं.) आँख की ऊपरी पलक से ऊपर का भाग, भौंह से नीचे का भाग। **पपोटा** (हि.)

पपोळणा (क्रि. स.) 1. (फुंसी-फोड़े को) धीरे-धीरे खुजलाना या सहलाना, 2. फुसलाकर वश में करना; **~-रोळणा** 1. खुजलाना या सहलाना, 2. फुसलाकर वश में करना।

पपोलना (क्रि. स.) दे. पपोलणा।

पब्बा (पुं.) पैर का पंजा (कौर.)।

पयान (पु.) गमन।

परंतु (अव्य.) दे. पर[4]।

परंद (पुं.) दे. परंदा।

परंदा (पुं.) दे. पंछी।

परंपरा (स्त्री.) पुराने समय से चली आ रही रीति।

पर[1] (पुं.) पक्षियों के पंख; **~काटणा/केंचणा** निस्सहाय करना; **~जामणा**

/**होणा** 1. अटखेलियाँ सूझना, 2. जमाने की हवा लगना, 3. छोटा बच्चा चलने-फिरने योग्य होना; ~**सी पाटणा** अधिक थकान अनुभव होना।

पर[2] (वि.) पराया, दूसरा, अपर, अन्य; ~**लाणा** पराया समझना।

पर[3] (अव्य.) अधिकरण का चिह्न; (क्रि. वि.) ऊपर, (दे. पै)।

पर[4] (अव्य.) परंतु, लेकिन, मगर– समझाया तै भोत पर नाँ मान्या।

परकम्माँ (स्त्री.) पवित्र स्थान के चारों ओर घूमने की क्रिया; ~**देणा/लाणा** पवित्र स्थान, मंदिर आदि का श्रद्धापूर्वक चक्कर लगाना। **परिक्रमा** (हि.)

परकार (पुं.) गोल दायरा खींचने का एक यंत्र।

परकास (पुं.) 1. उजाला, 2. प्रभाव। **प्रकाश** (हि.)

परकोटा (पुं.) दे. परकोट्टा।

परकोट्टा (पुं.) 1. चारदीवारी, 2. प्राचीर, किले की दीवार। **परकोटा** (हि.)

परख (स्त्री.) 1. परीक्षण, जाँच-पड़ताल, 2. खरे-खोटे को परखने का भाव; (क्रि. स.) 'परखणा' क्रिया का आदे. रूप।

परखणा (क्रि. स.) 1. जाँच-पड़ताल करना, 2. खरे-खोटे सिक्के की पहचान करना। **परखना** (हि.)

परखना (क्रि. स.) दे. परखणा।

परखाणा (क्रि. स.) जाँच करवाना। **परखवाना** (हि.)

परखाना (क्रि. स.) दे. परखाणा।

परखी (पुं.) परख करने या रखने वाला; (स्त्री.) लोहे की नली विशेष जिसे बोरी में डालकर बानगी की वस्तु निकाली जाती है; (क्रि. स.) 'परखणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. एकव. रूप। **पारखी** (हि.)

परगट (वि.) प्रकट।

परगणा (पुं.) शासन की छोटी इकाई। **परगना** (हि.)

परगास (पुं.) रोशनी, चाँदनी, उजाला। **प्रकाश** (हि.)

परचंड (वि.) प्रचंड।

परचंदा (पुं.) दे. पड़चंदा।

परचरे (पुं.) भिक्षा में प्राप्त वस्तु (?)। उदा.–जिसने टूक परचरे खालिए, के माड़ा के मोट्टा। (लचं.)

परचा (पुं.) 1. पत्र, कागज, 2. चिट्ठी, 3. लेखा-जोखा, 4. प्रश्न-पत्र, 5. दस्तावेज़, 6. इश्तहार; ~**देणा** 1. देवी या देवता द्वारा अपना प्रभाव दिखलाना, 2. सार्वजनिक भविष्यवाणी करना; ~**बाँटणा** 1. समाचार फैलाना, 2. लिखित भविष्यवाणी करना; ~**लाणा** आराध्यदेव के सामने आत्म- निवेदन करना।

परचाणा[1] (क्रि. स.) 1. मन को समझाना या थामना, जैसे– क्यूक्कर मन परचाऊँगी, 2. विश्वास दिलाना। **परचाना** (हि.)

परचाणा[2] (क्रि.) मन प्रसन्न करना।

परचार (पुं.) विचार आदि फैलाने का भाव। **प्रचार** (हि.)

परचारक (पुं.) विचारधारा विशेष का प्रचार करने वाला। **प्रचारक** (हि.)

परचारी (वि.) प्रचारक।

परची (स्त्री.) 1. कागज का छोटा टुकड़ा, 2. छोटा दस्तावेज। **पर्ची** (हि.)

परचून (पुं.) 1. आटा, दाल, मसाले आदि का सामान, 2. 'थोक' का विलोम।
परछत्ती (स्त्री.) दे. पड़छत्ती।
परछाईं (स्त्री.) दे. छाह्याँ।
परजा (स्त्री.) 1. प्रजा, जनता, 2. सेवक, आश्रित। **प्रजा** (हि.)
परजापत (पुं.) 1. कुम्हार, 2. कुम्हार के लिए प्रयुक्त सम्मानित शब्द, 3. प्रजापति, ब्रह्मा, 4. राजा। **प्रजापति** (हि.)
परड़तागड़ी (स्त्री.) कटि का एक आभूषण विशेष, (दे. तागड़ी)।
परण[1] (पुं.) 1. प्रतिज्ञा, 2. सौगंध। **प्रण** (हि.)
परण[2] (स्त्री.) पगड़ी।
परणा (पुं.) पति, जिससे परिणय हुआ हो।
परणाणा (क्रि. स.) 1. विवाह करना, 2. वरण करना।
परणाम (पुं.) प्रणाम।
परणाळा (पुं.) दे. पतराळ।
परणी (स्त्री.) विवाहिता। दे. परणा।
परणु (पुं.) पति।
परत (स्त्री.) दे. पुड़त।
परताप (पुं.) 1. प्रभाव, 2. प्रकाश, 3. शक्ति, साहस, 4. (दे. राणा)। **प्रताप** (हि.)
परताप्पी (वि.) 1. प्रताप वाला, 2. शक्तिशाली (राजा)। **प्रतापी** (हि.)
परती (स्त्री.) पड़त की जमीन।
परथा (स्त्री.) रिवाज। **प्रथा** (हि.)
परदा (पुं.) दे. पड़दा।
परदादा (पुं.) दे. पड़दाद्दा।
परदेश (पुं.) दे. परदेस।
परदेशी (पुं.) दे. परदेस्सी।
परदेस (पुं.) 1. पराया देश, 2. देश या निवास से दूर का स्थान।
परदेस्सी (पुं.) 1. अपने से भिन्न प्रांत या राज्य का निवासी, 2. दूर प्रांत या राज्य का निवासी, 3. पति, 4. प्रेमी। **परदेशी** (हि.)
परधान (पुं.) प्रधान, मुखिया।
परनाला (पुं.) दे. परणाळा।
पर-पुरुष (पुं.) दे. जार।
परपोता (पुं.) दे. पड़पोत्ता।
परबंध (पुं.) 1. व्यवस्था, 2. जोड़-तोड़ **प्रबंध** (हि.)
परब (पुं.) धार्मिक अवसर, त्योहार। **पर्व** (हि.)
परबत (पुं.) पहाड़। **पर्वत** (हि.)
परबतसर (पुं.) 1. विवाह के समय संपन्न एक रस्म जिसमें दूल्हा पैर से शिला का स्पर्श करता है (जो दंपती के स्थिर प्रेम का द्योतक माना जाता है), 2. स्थान विशेष जहां के पशु प्रसिद्ध है।
परबतसरी (वि.) परवतसर नस्ल से संबंधित पशु (बैल)।
परबस (वि.) पराधीन। **परवश** (हि.)
परभात (स्त्री.) प्रातःकाल **प्रभात** (हि.)
परभात्ती (स्त्री.) प्रातः काल गाए जाने वाले विशेष गीत; (वि.) 1. (बालक) जिसका जन्म प्रभात-वेला में हुआ हो, 2. प्रातः फेरी देने वाला। **प्रभाती** (हि.)
पर भी (स्त्री.) प्रभाती गीत। (पु.) अमृत।
परमधाम (पुं.) बैकुण्ठ।
परमपद (पुं.) मोक्ष, मुक्ति।
परमाण (पुं.) प्रमाण, सबूत।
परमाणु (पुं.) सूक्ष्मतम अणु।
परमातमाँ (पुं.) परमात्मा, ईश्वर।
परमार्थ (पुं.) 1. वास्तविक सत्ता, 2. सत्य, 3. धर्म, 4. दूसरे की भलाई के लिए किया गया काम।

परळ (स्त्री.) चारे को खुले स्थान में सुरक्षित रखने के लिए भंडारित करने की एक व्यवस्था, 1 (दे. बूँगा), 2. (दे. छ्योरी)।

परळ-परळ (स्त्री.) परल-परल की ध्वनि-झोळी मैं तैं नाज परळ-परळ लीक्कड़ ग्या।

परळय (स्त्री.) 1. सृष्टि विनाश का अंतिम दिन, 2. विनाश-काल, 3. विनाश। **प्रलय** (हि.)

परला (वि.) 1. उधर का, उस ओर का, 2. पराया, 3. 'उरला' का विलोम; **~(-ले) लंबर का** असाधारण (बदमाश); **~(-ले) पार** 1. उस पार, जल के उस पार, 2. दूसरे लोक में; **~~उतरणा** 1. नैया पार होना, 2. मोक्ष मिलना, 3. दूसरे लोक में जाना, 4. कार्य विधिवत् संपन्न होना।

परला दिन (पुं.) परसों से अगला दिन (भूत और भविष्य दोनों कालों में)।

परला-मन (पुं.) 1. ऊपरी मन, 2. अनमना भाव, (दे. ऊप्परला मन)।

परली (वि.) 1. उधर की, उस ओर की, 2. पराई-मैं तन्नैं इतणी परली ला ली (समझ ली)।

परळो (स्त्री.) विनाश-वेला; **~पड़णा** 1. आपत्ति आना, 2. अतिवृष्टि होना। **प्रलय** (हि.)

परलोक (पुं.) 1. स्वर्ग, 2. दूसरा लोक।

परवरदिगार (पुं.) खुदा, ईश्वर।

परवरिश (स्त्री.) पालन-पोषण।

परवश (वि.) दे. परबस।

परवस्त (वि.) युवा। उदा.-लखमी चंद हरफ़ कहै गिण कै, घणा परवस्त बणा दिया जण कै।

परवा[1] (स्त्री.) चिन्ता, **परवाह** (हि.)

परवा[2] (स्त्री.) पूर्वी वायु (जो रोगवर्धक मानी जाती है)।

परवाना (पुं.) 1. आज्ञा-पत्र, 2. पतंगा, 3. स्फुलिंग, 4. प्रेमी।

परशुराम (पुं.) दे. परसराम।

परसंद (स्त्री.) पसंद करने या छाँटने की क्रिया। **पसंद** (हि.)

परस[1] (स्त्री.) चौपाल, (दे. चुपाड़)।

परस[2] (पुं.) छूने की क्रिया। **स्पर्श** (हि.)

परसणा[1] (क्रि.स.) भोजन परोसना। **परोसना** (हि.)

परसणा[2] (क्रि.स.) स्पर्श करना। **परसना** (हि.)

परसन (वि.) प्रसन्न।

परसराम (पुं.) भगवान परशुराम (बैशाख शुक्ल तृतीया को इनकी जयंती मनाई जाती है।)

परसाद (पुं.) 1. कथा आदि के बाद बाँटा जाने वाला भोग, 2. मीठा मिला भुना आटा, पंजीरी। **प्रसाद** (हि.)

परसाल (पुं.) गत वर्ष, (दे. पुरकै)।

परसीन्ना (पुं.) दे. पसीन्ना। **पसीना** (हि.)

परसीन्या (पुं.) दे. पसीन्ना।

परसूँ (क्रि. वि.) भूत अथवा भविष्यत में बीते कल से पहले और आगामी कल के बाद का दिन; **~काल्ह करणा** बात को टालना। **परसों** (हि.)

परसों (क्रि. वि.) दे. परसूँ।

परसोत्तम-मास (पुं.) अधिक मास, लोंद का महीना। **पुरुषोत्तम-मास** (हि.)

परहाणा (क्रि. स.) वस्त्र आदि पहनाना, धारण करवाना; **उढाणा- ~पाल-** पोसकर बड़ा करना। **पहनाना (हि.)**

परहेज (पुं.) 1. पथ्य, 2. दोष और बुराइयों से दूर रहना।

पराँ (क्रि.वि.) दे. परा।

पराँट (स्त्री.) दे. चरणी।

पराँठा (पुं.) दे. परामठा।

पराँत (स्त्री.) दे. कठोत्ती, **परात** (हि.)

परा (क्रि. वि.) परे, दूसरी ओर। **परे** (हि.)

पराई (वि.) 1. दूसरी, अन्य की, 2. विचित्र; **~समझणा** अपनत्व का भाव न होना; **~ होणा** (लाड्डो) 1. बात हाथ से निकलना, 2. लड़की का विवाह होना।

पराई-जाई (स्त्री.) 1. अन्य की पुत्री, 2. पत्नी, 3. पुत्र-वधू।

पराक्रम (पुं.) 1. बल, 2. पुरुषार्थ।

पराक्रमी (वि.) 1. बलवान, बलिष्ठ, 2. उद्योगी।

पराग (पुं.) पुष्प के रजकण।

पराजय (स्त्री.) हार।

पराधी (पुं.) अपराधी।

पराधीन (वि.) परतंत्र, परवश।

पराधीनता (स्त्री.) परतंत्रता, परवशता।

परामठा (पुं.) तवे पर घी लगाकर सेंकी हुई रोटी।

परामर्श (पुं.) सलाह, विचार-विमर्श।

पराया (वि.) अन्य का, दूसरा।

परारकै (क्रि. वि.) दे. पुरारकै।

पराळ (स्त्री.) दे. परणाळी।

पराशर (पुं.) दे. पारासर।

परिचय (पुं.) जान-पहचान।

परिचित (वि.) जान-पहचान का, जाना-पहचाना।

परिजाद (पुं.) परी का पुत्र।

परिणाम (पुं.) नतीजा, फल।

परिपाटी (स्त्री.) 1. परंपरा, 2. प्रणाली, पद्धति।

परिपूर्ण (वि.) 1. पूरा, 2. समाप्त किया हुआ।

परिभाषा (स्त्री.) 1. स्पष्ट कथन, संशय-रहित कथन, 2. लक्षण।

परिमाण (पुं.) नाप, तोल, मात्रा।

परिवर्तन (पुं.) तबदीली, बदलाव।

परिवार (पुं.) दे. कुणबा।

परिवेश (पुं.) घेरा।

परिव्राजक (पुं.) संन्यासी।

परिशिष्ट (पुं.) बचा हुआ अंश।

परिश्रम (पुं.) मेहनत।

परिश्रमी (वि.) मेहनती।

परिषद (स्त्री.) सभा।

परी (स्त्री.) 1. परम सुंदरी, 2. अप्सरा।

परीक्षा (स्त्री.) 1. इम्तिहान, 2. परख, 3. प्रयोग।

परीक्षित (पुं.) 1. अर्जुन के पोते और अभिमन्यु के पुत्र, 2. एक राजा।

परीच्छा (स्त्री.) परीक्षा।

परीत (स्त्री.) प्रीति।

परे (क्रि.वि.) दे. परै।

परेड (स्त्री.) 1. सैनिक शिक्षा, कवायद, 2. पद-संचलन।

परेत (पुं.) 1. भूत-आत्मा, 2. वह योनि जो किसी को अकाल मृत्यु के कारण मिली मानी जाती है। **प्रेत** (हि.)

परेम (पुं.) प्यार, मिल-जुल कर रहने का भाव। **प्रेम** (हि.)

परेम्मी (वि.) 1. आशिक, 2. जिसे किसी से लगाव हो। **प्रेमी** (हि.)

परेशान (वि.) व्याकुल।

परेशानी (स्त्री.) व्याकुलता।

परेसन (पुं.) डाक्टर द्वारा की गई शल्य-चिकित्सा। **आपरेशन** (हि.)

परै (क्रि. वि.) 1. परे, दूर, 2. उस ओर, 3. अलग।

परोज्जन (पुं.) 1. धार्मिक आयोजन, 2. कर्णवेधन संस्कार, 3. प्रयोजन, उद्देश्य, आशय।

परोडिया (पुं.) कुम्हारों की एक उप जाति।

परोणा (क्रि. स.) धागा डालना (तुल. पोणा)। **पिरोना** (हि.)

परोपकार (पुं.) दूसरे के हित का काम।

परोपकारी (पुं.) दूसरे की भलाई करने वाला।

परोळ (पुं.) दे. छाँटणा।

परोला (पुं.) दे. छाँटणा।

परोसणा (क्रि. स.) भोजन परसना। **परोसना** (हि.)

परोसना (क्रि. स.) दे. परोसणा।

परोसा (पुं.) दे. परोस्सा।

परोस्सा (पुं.) 1. एक व्यक्ति का भोजन, 2. भोजन या दाल-आटा आदि जो किसी को दानार्थ दिया जाता है, 3. (दे. पत्तल); (क्रि. स.) 'परोसणा' क्रिया का भू. का. एकवचन, पुं. रूप; **~काढणा/लिकाड़णा** धर्मार्थ एक व्यक्ति का भोजन निकालना। **परोसा** (हि.)

परोह्णा (पुं.) मेहमान।

पर्त (स्त्री.) दे. पुड़त।

पर्दा (पुं.) दे. पड़दा।

पर्नी (स्त्री.) विवाहिता।

पर्व (पुं.) त्यौहार।

पर्वत (पुं.) दे. परबत।

पलंग (पुं.) दे. पिलंग।

पलंगड़ी (स्त्री.) रथ पर बैठने का आसन (दे. पिलंग)

पलंगपोश (पुं.) पलंग पर बिछाने की मोटी चादर।

पळंजर (पुं.) दे. ताणा।

पल (पुं.) 1. समय का एक अत्यंत छोटा विभाग, क्षण, 2. समय का एक प्राचीन परिमाण; (स्त्री.) पलक।

पलक (स्त्री.) 1. आँख की पुतली पर झपकने वाले बाल, 2. क्षण, 3. समय का एक परिमाप; **~चलाणा** आँख मारना; **~नाँ लागणा** नींद न आना; **~मारत्याँ** क्षण-भर में, पलक मारते-मारते।

पलका (पुं.) 1. अचानक लगने वाली चमक, 2. किसी धातु आदि से निकलने वाली चमक, 3. सूर्य का प्रकाश, 4. प्रतिच्छाया; **~लागणा** 1. किसी पर मोहित होना, 2. आँख पर अचानक बहुत तेज प्रकाश पड़ना; **~लीकड़णा** 1. बादलों से कभी-कभी धूप चमकना, 2. प्रकाश होना, 3. सूर्य निकलना।

पळका (स्त्री.) दे. पिलंग।

पलट (पुं.) 1. पलटने या औंधा होने का भाव, 2. विचार बदलने का भाव, 3. 'सुलट' का विलोम; (क्रि. स.) 'पलटणा' क्रिया का आदे. रूप।

पलटण (स्त्री.) पैदल सेना की टुकड़ी, (दे. रिसाल्ला)। **पलटन** (हि.)

पलटणा (क्रि. स.) 1. औंधा मारना, 2. किसी चीज को ऊपर-नीचे करना, 3. मिट्टी पलटना, 4. विचारधारा बदलना; (क्रि. अ.) उलट जाना; (वि.) जो शीघ्र पलट जाए। **पलटना** (हि.)

पलटणियाँ (वि.) 1. पलटन का (सिपाही),

2. वह जो शीघ्र पलट या बदल जाए, 3. बदलने या पलटने वाला।

पलटना (क्रि. स.) दे. पलटणा।

पलटा[1] (पुं.) तबदीली। **पलटाव** (हि.)

पलटा[2] (पुं.) धातु का डंडीदार कड़छा विशेष जो किसी वस्तु को तलते समय उलटने-पलटने के काम आता है; (क्रि. स.) 'पलटणा' क्रिया का भू. का., पुं. एकवचन रूप।

पलटू (वि) 1. जो शीघ्र अपने विचार बदल ले, 2. शिशु की मृत्यु के बाद पैदा होने वाली अगली संतान, 3. दे. बदलू।

पलड़ा (पुं.) दे. पालड़ा।

पलडो (पुं.) एक चौड़ा बर्तन, (दे. पालड़ा)।

पलणा (क्रि.अ.) मोटा-ताजा होना; (पुं.) पालना, झूला; **झोट्टा~** हृष्ट-पुष्ट होना, हट्टा-कट्टा होना। **पलना** (हि.)

पलथी (स्त्री.) दे. पालती।

पलदार (पुं.) बोझा ढोने वाला व्यक्ति, कुली।

पलना (पुं.) दे. पलणा; (क्रि. अ.) दे. पलणा।

पलनी (स्त्री.) 1. दे. गोरा, 2. दे. घेर।

पलवा (पुं.) लोहे का अंजलीनुमा डंडीदार पात्र विशेष जिससे कढावणी (दूध उबालने का पात्र) से दूध निकालते हैं, (दे. पली)। **पलवा** (हि.)

पलवी (स्त्री.) पली, छोटा पलना, (दे. पली)।

पलसाणा (क्रि. स.) फुसलाना।

पलस्तर (पुं.) 1. हड्डी आदि की टूट के उपचार के लिए चढ़ाया जाने वाला एक लेप विशेष, 2. चूने, सीमेंट आदि का लेप।

पलहंडी (स्त्री.) दे. पेंहढी।

पलहो (पुं.) 1. अतिरिक्त जल की मात्रा जो दूध का पात्र धोकर दूध में मिलाई जाती है, 2. अधिक पानी मिला दूध, 3. वृद्धि में सहायक; (क्रि. स.) 'पलहोणा' क्रिया का आदे. रूप; **~घोलणा** उबालने से पूर्व दूध में अतिरिक्त पानी मिलाना; **~लागणा** शक्ति या बल मिलना-उसका के पलहो लाग्गैगा नाँ आया तै नाँ सी (नहीं सही); **~लाणा** 1. दूध उबालने से पूर्व उसमें अतिरिक्त जल डालना जिससे कि पानी जलता रहे दूध नहीं, 2. सहयोग देना।

पलहोणा (क्रि. स.) दूध उबालने से पूर्व उसमें जल मिलाना।

पला (पुं.) 1. सरदी की सिंचाई, सिंचाई, 2. बड़ा पलवा; **~करणा/देणा** सिंचाई करना। **प्लावन** (हि.)

पलाण (पुं.) 1. गधे के ऊपर लादा जाने वाला बोरा, 2. लद्दू पशू की काठी। **पलान** (हि.)

पलाणा (क्रि. स.) सिंचाई करना, (दे. बलाणा)। **पलाना** (हि.)

पलान (पुं.) दे. पलाण; (स्त्री.) प्लान, योजना।

पलाश (पुं.) दे. ढाक।

पलास (पुं.) 1. जमूर, एक प्रकार की संडासी, 2. (दे. ढाक)।

पळिआ (पुं.) दे. पळवा।

पली (स्त्री.) दे. पळी।

पळी (स्त्री.) 1. छोटा पलिआ या पलवा 2. तेल आदि निकालने की कलछी; (वि.) पालित, पली हुई, सींच दी गई। **पली** (हि.)

पलीता (पुं.) दे. पलीत्ता।

पलीत्ता (पुं.) 1. बारूद, 2. बैलगाड़ी में प्रयुक्त भारी वस्त्र। **पलीता** (हि.)

पलुसणा (क्रि.) प्यार से छूना।

पलूरा (पुं.) दे. पिलूरा।

पळे (पुं.) 1. सिंचाई के लिए छोड़े गए खेत, 2. बोने से पहले की सिंचाई, 3. रबी की फसल के लिए निश्चित किए गए खेत; **~करणा** सिंचाई करना; **~राखणा** 1. खेत को रबी की फसल के लिए बचा रखना, 2. खेत में एक फसल न बोना।

पलेक (क्रि. वि.) 1. पल-भर, 2. कुछ पल, कुछ समय।

पलेज[1] (स्त्री.) सब्जी की छोटी क्यारी।

पलेज[2] (स्त्री.) दे. बरोल्ली।

पलेणा (क्रि. स.) 1. सरदी में खेत की सिंचाई करना, 2. सिंचाई करना।

पलेथन (पुं.) दे. पलोत्थण।

पलेव (स्त्री.) बोने से पहले की सिंचाई।

पलोंद्दा (पुं.) 1. अंजली (आँदला) भर वस्तु, 2. अंजली भर घी–इनकी भैंस के नीच्चै एक पलोंद्दा घी रोज लिकड़ै सै, 3. अंजली भर गीली मिट्टी; (वि.) अंजली भर; **~काढणा/छाँटणा** जोहड़ से धर्मार्थ पलोंदा भर-भर मिट्टी निकालना। **लोंदा** (हि.)

पलोटणा (क्रि. स.) 1. पैरों में लेटना, 2. कीचड़ में लथपथ करना, 3. लपेटना, 4. पैर दबाना, चरण-सेवा करना।

पलोतणी (स्त्री.) 1. पलेथन लगाकर बनी रोटी, 2. रोटी (व्यंग्य में)।

पलोत्थण (पुं.) रोटी बेलते समय प्रयुक्त सूखा आटा; **~की रोट्टी** रोटी पानी के हाथ की बजाय पलेथन से बनाई गई हो; **~झाड़णा** रोटी को हल्का चुपड़ना; **~नाँ लाणा** अपनी ओर से कुछ भी खर्च न करना–भठयारण घर तैं पलोथण लावैगी तै के खागी, के कमागी। **पलेथन** (हि.)

पलोथणी (स्त्री.) दे. पलोतणी।

पलोसणा (क्रि.) बड़ों द्वारा छोटों पर आशीर्वाद का हाथ फेरना। दे. पुचकारणा।

पल्लव (पुं.) दे. कूप्पळ।

पल्ला (पुं.) 1. कपड़े का कोना, 2. ओढ़ने या ओढ़नी का किनारा, 3. झोली, 4. आश्रय, सहारा, 5. दरवाजा, कपाट, 6. लकड़ी का चौड़ा तख्ता, 7. पक्ष, 8. पलड़ा; **~ऊठणा** 1. निर्लज्ज होना, 2. गुप्तांग दिखाई देना; **~ओढणा** पति की मृत्यु पर अन्य की पत्नी बनना; **~करणा** 1. घूँघट निकालना, 2. किसी से कोई बात छिपाकर रखना, 3. झोली फैलाना, भिक्षा माँगना; **~(-लै) गाँठ लाणा** 1. प्रतिज्ञा करना, 2. प्रतिज्ञा-स्मृति स्वरूप पल्ले पर गाँठ लगाना; **~(-ल्याँ) घालणा** धोती के फटे अंश को निकाल कर फिर से सीना; **~छूटणा** 1. पीछा छूटना, 2. निराश्रित होना, 3. कष्ट भोग कर मरना, 4. भिक्षा-वृत्ति से छुटकारा मिलना, 5. निर्लज्ज होना; **~छोड़ धोत्ती** धोती को दुहरा करके अथवा आधा भाग काट कर इस प्रकार बाँधना कि एक लाँग टंग सके और दूसरी जंघा पल्ले के बीच से दिखाई दे (ऐसी धोती में नाभि के नीचे आधे भागों की गाँठ मारी जाती है, यह धोती यवन-पद्धति की मानी गई है और कई स्थानों पर इस प्रकार की धोती को नहीं बाँधने देते);

~टाँगणा घघरी या घाघरी के एक भाग में ओढ़नी के पल्ले को विशेष प्रकार से खोंसना; **~ठाणा** 1. हार मानना, 2. बेपर्द करना या होना; **~तारणा** बेइज्जती करना; **धरम~**1. सार्वजनिक भीख, 2. धर्मार्थ माँगी गई भीख; **~(-ल्लै) पड़णा** 1. चाहे-अनचाहे बला गले लगना, 2. अनचाहे विवाह-सूत्र में बँधना; **~पसारणा/बिछाणा** 1. सहायतार्थ चद्दर फैलाना, 2. भीख माँगना; **~पाकड़णा** 1. आश्रय लेना, 2. सहायता लेना, 3. पत्नी बनाना; **~बाँधणा** 1. पल्ले की गाँठ लगाना ताकि कोई चीज स्मृति में रहे, 2. शिक्षा ग्रहण करना, 3. किसी चीज को संभाल कर रखना, 4. यात्रा के समय भोजन बाँध कर ले जाना, 5. किसी वस्तु को जबरदस्ती दूसरे पर थोपना; **~बिछाणा** 1. भिक्षा माँगना, 2. आत्मनिवेदन करना, 3. शरण माँगना; **~सँधवाणा** 1. बात समेटना, 2. पल्ला सँभालना, 3. इज्जत बचाना; **~(-ल्लै) होणा** पास होना, अधिकार में होना।

पल्ला-गात्ती (स्त्री.) घूँघट-गाती; **~मैं रहणा** 1. लज्जा या संकोच से रहना, 2. ससुराल में उचित आचार-व्यवहार से रहना।

पल्ली (स्त्री.) टाट की चद्दर।

पल्लू (पुं.) 1. चाँदी का बना गोल लोटे के आकार का आभूषण जिसे ओढ़नी के एक पल्ले से जोड़ा जाता है, 2. पल्ला।

पल्लेदार (पुं.) कुली, झल्ली ढोने वाला।

पल्वी (स्त्री.) दे. पळवा।

पल्हाए-गाहे गीत (पुं.) कोल्हू पर गाए जाने वाले गीत।

पल्हीं (क्रि. वि.) दे. पहल्याँ।

पवन (स्त्री.) दे. पोन।

पवनपरीक्षा (स्त्री.) दे. पोनपरीच्छा।

पवनसुत (पुं.) हनुमान।

पवसाणा (क्रि. स.) 1. दूहने से पूर्व पशु के थनों को सहलाना जिससे उनमें दूध उतर आए, 2. फुसलाना।

पवाड़ा (पुं.) 1. प्रमाद या आवेशवश किया गया कार्य, 2. असमय का कार्य, 3. झंझट; **~करणा/पाथणा/रचणा/रोपणा** 1. झगड़े का काम करना, 2. जान को झंझट खड़ा करना, 3. अनोखा काम करना।

पवाणा (पुं.) पैर का माप, जूते आदि का माप जो प्रायः अंगुल से नापा जाता है; **~लेणा** मोची द्वारा पैर का माप लेना।

पवासणा (क्रि. स.) दे. पवसाणा।

पवितरी (स्त्री.) कुश की बनी छल्ली जो कर्मकांड के समय अनामिका में पहनी जाती है। **पवित्री** (हि.)

पवित्तर (वि.) शुद्ध।

पवित्र (वि.) दे. पवित्तर।

पव्वा (पुं.) 1. पाव भर तोल का माप, 2. शराब की छोटी बोतल; (वि.) 1. खुशामदी, 2. बौना।

पशमीना (पुं.) पशम (बढ़िया मुलायम ऊन) का बुना हुआ कपड़ा।

पशु (पुं.) दे. पसु।

पशुपति (पुं.) शिव।

पश्चात्ताप (पुं.) दे. पिछतावा।

पश्चिम (स्त्री.) दे. पच्छिम।

पश्तो (स्त्री.) दे. पिस्तो।

पसगाम्मा (पुं.) निकट का दूसरा गाँव।

पसर (स्त्री.) खेत, विस्तृत चारण भूमि; (क्रि. अ.) 'पसरणा' क्रिया का आदे. रूप; ~**चराणा** चारण-भूमि में पशु चराना, चारण-भूमि में रात के समय पशु चराना।

पसर-कटहळी (स्त्री.) कटहली की एक जाति जो भूमि पर फैली रहती है और जिस पर मोटे ढींढरे (डोडी) लगते हैं।

पसरणा (क्रि. अ.) 1. लंबा लेटना, 2. रूठ कर लेटना, फैलना, 3. व्याप्त होना, 4. अधिकार जमाने के लिए हाथ मारना। **पसरना** (हि.)

पसराणा (क्रि. स.) दे. पसारणा। **पसारना** (हि.)

पसली (स्त्री.) छाती की हड्डी; ~**चालणा** एक रोग जिसमें पसलियाँ धोंकनी के समान चलती हैं। **पसली** (हि.)

पसवाड़ा (पुं.) दे. पछवाड़ा।

पसाणा (क्रि. स.) 1. भात आदि से माँड निकालना, 2. पवसाना, (दे. पवसाणा)। **पसाना** (हि.)

पसाना (क्रि. स.) 1. दे. पसाणा, 2. दे. पवसाणा।

पसार (क्रि.) तानै का फैलाना।

पसारणा (क्रि. स.) 1. लंबा लिटाना, 2. पैर फैलाना, 3. पीटकर डालना, 4. लंबायमान करना। **पसारना** (हि.)

पसारना (क्रि. स.) दे. पसारणा।

पसारा[1] (पुं.) 1. भोजन जो कूआँ खोदते समय कार्य की सकुशल समाप्ति के लिए धर्मार्थ दिया जाता है, 2. प्रसादार्थ भोजन।

पसारा[2] (पुं.) 1. बैल गाड़ी खड़ी करने, चारा आदि एकत्र करने का खुला स्थान। 2. प्रसार। दे. पसारा[1]।

पसीज (पुं.) दे. पसीन्ना।

पसीजणा (क्रि. अ.) 1. द्रवित होना, 2. सीला या गीला होना, 3. रिसना; (वि.) जल्दी पसीजने वाला। **पसीजना** (हि.)

पसीजना (क्रि. अ.) दे. पसीजणा।

पसीना (पुं.) दे. पसीन्ना।

पसीन्ना (पुं.) स्वेद; ~**आणा** 1. घबराना, 2. हक्का-बक्का रहना, 3. शरीर से पसीना निकलना; ~**मारणा/मोड़णा** पसीना सुखाना। **पसीना** (हि.)

पसु (पुं.) दे. चुपाया; (वि.) 1. भोलाभाला, 2. दुराचारी। **पशु** (हि.)

पसे (पुं.) दे. पसीन्ना।

पस्सो (स्त्री.) पसार, एक हाथ की अंजलि, (दे. आँदळा); ~**फैंकणा/मारणा** चढ़त के अवसर पर दूल्हे पर अंजलि भर कर पैसों की बौछार करना।

पहँडा/पहँढा (पुं.) दे. पैंह्ढा।

पहँढी (स्त्री.) दे. पैंह्ढी।

पहचान (स्त्री.) दे. पिछाण।

पहचानना (क्रि. स.) दे. पिछाणणा।

पहतालुपुरी (स्त्री.) 1. दे. पंताळ।

पहनना (क्रि. स.) वस्त्र आदि धारण करना।

पहनवाना (क्रि. स.) वस्त्र आदि धारण करने में सहायता कराना।

पहनावा (पुं.) दे. पहरावा।

पहमान्ना (पुं.) 1. मापने का साधन विशेष, 2. मानदंड। **पैमाना** (हि.)

पहर (पुं.) 1. समय का एक प्रमाण, दिन-रात का आठवाँ भाग, 2. पर्याप्त समय; (क्रि. स.) 'पहरणा' क्रिया का आदे. रूप; ~**करणा/ लाणा** अधिक समय लगाना; ~**का तड़का** रात्रि का

अंतिम पहर, 1. (दे. झोळ-भोळा), 2. (दे. चाकियाँ का बखत); ~**घड़ी का** 1. मृत्यु के निकट, 2. कुछ समय **प्रहर** (हि.)

पहरवा (पुं.) पहरा देने वाला। **पहरुआ** (हि.)

पहरा (पुं.) रक्षा करने या निगाह रखने का भाव।

पहराई (स्त्री.) 1. यजमानी प्रथा का वह उसूल जिसके अनुसार मोची, सुनार आदि हकदार को वर्षभर जूती, चूड़ी आदि की व्यवस्था करता है। 2. पहनाने की फीस या पैसा।

पहरान (पुं.) पहनावा।

पहरावा (पुं.) ओढ़ने-पहनने के रीति-रिवाज। **पहनावा** (हि.)

पहरु (पुं.) पहरेदार।

पहरेदार (पुं.) 1. चौकीदार, 2. रक्षक; ~**छोड़णा** गतिविधि पर निगाह रखने के लिए पहरेदार नियुक्त करना।

पहल[1] (स्त्री.) 1. काम को सबसे पहले आरंभ करने का भाव, 2. आरंभ; ~-**गैल** पहली बार गर्भावस्था का समय।

पहल[2] (पुं.) एक जाट गोत।

पहलड़ा (वि.) 1. पहला-पहला, 2. पहला(बच्चा), 3. पहले का, पूर्व समय का, 4. पहले वाला।

पहलड़ी (वि.) 1. पहली, पहली बार की, 2. गत समय से संबंधित, 3. पहली (कक्षा), 4. पहले वाली (वधू आदि)–पहलड़ी के बाळकाँ की टल्लहै (टहल) कोण करैगा।

पहलम (क्रि. वि) 1. पहली बार, 2. पूर्व समय में; ~**चोट** 1. पहली बार, 2. एक नंबर पर; ~-**पहल** पहली बार, सबसे पहले। **पहले** (हि.)

पहलवान (पुं.) 1. कुश्ती लड़ने वाला, 2. बलवान। दे. अखाड़िया।

पहलवानी (स्त्री.) पहलवान होने का भाव, काम या पेशा।

पहला (वि.) दे. पहलड़ा।

पहलाद (पुं.) भक्त प्रह्लाद। दे. होळी।

पहलापण (पुं.) बाल्यावस्था, बचपन।

पहलीं (क्रि. वि.) दे. पहल्याँ।

पहली (वि.) 1. शुरू की, 2. पुराने समय की; (स्त्री.) प्रथम कक्षा।

पहलू (पुं.) 1. पार्श्व, बगल, 2. करवट, 3. पक्ष।

पहले (क्रि. वि.) दे. पहल्याँ।

पहलोट्ठी (वि.) प्रथम (प्रसव), पहला (बच्चा); ~**का** सबसे बड़ा बच्चा (जन धारणा के अनुसार ऐसे बच्चे पर बिजली शीघ्र पड़ती है)।

पहल्याँ (क्रि. वि.) 1. पहले, 2. एक बार, पहली बार, 3. शुरू में; ~**पहल्याँ** 1. शुरू-शुरू में, 2. आरंभ काल में; ~-**राम्मैं** प्रथम बार।

पहाड़ (पुं.) 1. पर्वत, 2. भारी रूकावट या बाधा, 3. आपत्ति; ~**टूटणा** विपत्ति आना।

पहाड़ण (वि.) मैदानी भाग में ब्याही गई पहाड़ की (महिला); (स्त्री.) एक देवी विशेष जिसका पहाड़ में निवास है।

पहाड़वा (वि.) 1. पहाड़ से संबंधित, 2. पहाड़ का निवासी; ~**महाळ** मोटी मधुमक्खियों का छत्ता।

पहाड़ा (पुं.) गुणाकार गिनती, जैसे– $2 \times 2 = 4$।

पहाड़ा-पट्टी (स्त्री.) पहाड़ा सारावली या सारिणी।

पहाड़ी (स्त्री.) छोटा पहाड़; (वि.) 1. जो पहाड़ पर रहता हो, 2. जिसका संबंध पहाड़ से हो; **~महाळ** मोटी मधुमक्खी का छत्ता।

पहाड़ो (वि.) दे. पहाड़ण।

पहाण (पुं.) 1. चने की फसल की ढेरी, साथरी, 2. भारी पत्थर, पाहन।

पहावणा (पुं.) अतिथि (तुल. मुटियार)। **पाहुना** (हि.)

पहलू[2] (पुं.) कटि, कमर उदा.–पहलू तक चोट्टी आई। (लचं)।

पहियाँ (पुं.) वाहन आदि का पहिया। **पहिया** (हि.)

पहुंच (स्त्री.) दे. पहोंच।

पहुँचना (क्रि. अ.) दे. पहोंचणा।

पहुँचाना (क्रि. स.) दे. पहोंचाणा।

पहेली (स्त्री.) 1. घुमा-फिरा कर कही गई बात, 2. समस्या, 3. बुझौवल।

पहेल्ली (स्त्री.) पहेली। उदा.–आड़ मैंह तैं बाड़ लिकड़ी, बाड़ मैंह तैं कचरा। सास मैंह तै बहू लिकड़ी, बहु मैंह तैं सुसरा। (उत्तर–कपास) दे. कहाणी।

पहोंच (स्त्री.) 1. पैठ, प्रवेश, 2. किसी स्थान का लगातार फैलाव; (क्रि.स.) 'पहोंचणा' क्रिया का आदे. रूप।

पहोंचणा (क्रि. अ.) 1. गंतव्य स्थान पर पहुँचना, 2. घुसना, पैठना, 3. समझने में समर्थ होना। **पहुँचना** (हि.)

पहोंचाणा (क्रि. स.) किसी को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। **पहुँचाना** (हि.)

पाँ (पुं.) पैर, टाँग; **~आणा** पशु के खुरों में रोग लगना; **~जारी होणा** गर्भपात होना; **~दाबणा** 1. पैर दबाना, 2. बड़ी-बूढ़ी औरत के पैर दबाना, 2. बड़ी-बूढ़ी औरत के पैर पड़ना, 3. खुशामद करना; **~पड़णा** 1. बड़ी बूढ़ी औरत के चरण स्पर्श करना, 2. क्षमा-याचना करना, 3. आगमन होना; **~पीटणा** 1. तड़पना, 2. व्यर्थ घूमना-फिरना; **~पीटिया करणा** 1. जिद्द या आग्रह करना, 2. असफल नकल करना; **~भाहर्या होणा** गर्भवती होना; **~लाँड्डे होणा** 1. थकना, 2. जाने में शर्म महसूस करना; **~लागणा** 1. चरण-स्पर्श करना, 2. ठोकर लगना, 3. भूमि से परिचित होना; **~लीक्कड़णा** 1. आवारा होना, 2. चरित्रहीन होना; **~होणा** 1. छोटा बच्चा चलने-फिरने योग्य होना, 2. स्वछंद होना, **पाँव** (हि.)।

पाँक (पुं.) ईश्वर।

पाँख (स्त्री.) 1. पक्षियों के पर, 2. पंखुड़ी; **~पाड़णा** निस्सहाय करना; **~सी पाटणा** 1. बहुत थकना, 2. कष्ट होना। **पंख** (हि.)

पाँखड़ा (पुं.) पाँव की बेड़ी।

पाँखड़ी (स्त्री.) पंखुड़ी।

पाँगळा (वि.) 1. लंगड़ा, 2. विकलांग। **पंगु** (हि.)

पाँघळा (पुं.) 1. लस्सी, 2. लस्सी में बनाया आटे का घोल, (दे. खाट्टा)।

पाँच (वि.) पाँच की संख्या।

पांचजन्य (पुं.) श्रीकृष्ण का शंख।

पांचाल (वि.) 1. पंचाल प्रदेश का (निवासी), 2. पंचाल प्रदेश संबंधी। **पंचाल** (हि.)

पाँचाली (स्त्री.) द्रौपदी।

पाँच्चूँ (वि.) पाँच के पाँच; **~घी मैं होणा** लाभ ही लाभ होना; **~लत्ते** दानार्थ दिए जाने वाले पाँच वस्त्र (कुर्ता, टोपी या साफा, जूता, चद्दर, धोती आदि)। **पाँचों** (हि.)

पाँच्चैं (स्त्री.) पक्ष की पंचमी तिथि। **पंचमी** (हि.)

पाँ जोपणा (क्रि.) अडिग रहना।

पाँड (स्त्री.) गठरी। उदा.–कपास की पांड बाँध कर लाना।

पांडुरोग (पुं.) दे. पीळिया।

पांडव (पुं.) पांडु के पाँच पुत्र–युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव।

पांडवनगर (पुं.) दिल्ली।

पाँथा (पु.) 1. दे. पाखर, 2. दे. सीमसद्धा।

पाँडू पिंडारा (पुं.) वह तीर्थ जहाँ पांडवों ने पितृ तर्पण किया।

पांडुलिपि (स्त्री.) लेख आदि की हस्तलिखित प्रति।

पाँड्डा[1] (पुं.) 1. गंगा आदि तीर्थ-स्थानों का ब्राह्मण, 2. ब्राह्मण, 3. विद्वान, 4. (दें. पंडा), 5. एक जलचर; **सीख्या~** 1. समझदार, 2. पढ़ा-लिखा। **पंडा** (हि.)

पांड्डा[2] (पुं.) दे. पाँड्डू।

पांड्डू (पुं.) पंच-पांडव, (दे. पांडव)। **पांडव** (हि.)

पाँढा (पु.) एक डंकदार जंतु।

पाँणछा (पुं.) बिजाई से पहले की सिंचाई। दे. पाणस्या।

पाँत (स्त्री.) 1. अदवायन, 2. पैताना, चारपाई का अदवायन की ओर का भाग; **~तोड़णा** खुशामद करना; **~बैठणा हीन अवस्था में समय बिताना।**

पाँत्याँ (क्रि. वि.) अदवायन की ओर; **~बैठणा** 1. सीख लेना, 2. हीन स्थिति में रहना।

पाँद (स्त्री.) दे. पाँत।

पाँमचा (पुं.) 1. मोहरी, सलवार, पायजामा आदि की मोरी, 2. (दे. पोमचा)। **पाँयचा** (हि.)

पाँयता (पुं.) दे. पाँत; (क्रि. वि.) दे. पाँत्याँ।

पाँलागाँ (पु.) बड़ों के पैर छूने के लिए उच्चरित शब्द।

पाँसणा (क्रि. स.) 1. कूएँ में लटकाना, 2. गाँठ लगाना।

पाँसेली (स्त्री.) खुशामद।

पाँस्सा (पुं.) 1. पाश, 2. फंदा, 3. दाँव, 4. मृत्यु; **~आणा** 1. आपत्ति आना, 2. गले में फंदा पड़ना; **~फेंकणा** 1. फंदा फेंकना, 2. लालच देना, 3. दाँव लगाना; **~लाणा** 1. विपत्ति में डालना, 2. फाँसी तोड़ना; **सरक-** ~एक प्रकार की गाँठ जिसके फंदे को आवश्यकता अनुसार घटाया- बढ़ाया जा सकता है। **पांसा** (हि.)

पाँस्सू (स्त्री.) 1. पसली, 2. कूल्हे और पसलियों के बीच का भाग, गोदी का भाग; (क्रि.वि.) निकट, पास; **~चालणा** रोग के कारण पसलियाँ चलना। **पाँसू** (हि.)

पाँह (पुं.) दे. पाँ।

पाँह्याँ (क्रि. वि.) पैदल, पैदल-पैदल, पैरों से; **~-पड़ाई** 1. नकदी जो वधू ससुराल की सम्मानित महिलाओं के चरण स्पर्श के बाद भेंट देती है, 2. पाँव पड़ने की रस्म; **~-पाँह्याँ** 1. पैदल-पैदल, 2. बिना सवारी के; **~लागणा** 1. स्थान की दूरी से अति परिचित होना, 2. धूल में मिलना।

पा[1] (वि.) 1. चौथाई, 2. चार छटाँक का मान; (पुं.) दे. पाँ; (क्रि.स.) 'पाणा' क्रिया का संक्षिप्त रूप, जैसे–तनै के पा ग्या। **पाव** (हि.)

पा[2] (अव्य.) पर।

पाइया (वि.) पाव भर; (पुं.) पाव का बट्टा; **~पक्का** 1. पक्का पाव-सेर, 2. लगभग एक पाव।

पाई[1] (स्त्री.) 1. एक छोटा सिक्का जो पुराने एक पैसे का तीसरा भाग होता था, 2. पूर्णविराम सूचक खड़ी रेखा, 3. खड़ी रेखा, 4. वह खड़ी लकीर जो आने, चवन्नी, रुपये आदि के चौथे भाग को प्रकट करती है, जैसे–सवा चार (4।); (क्रि. स.) 'पाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिंग रूप।

पाई[2] (स्त्री.) 1. एक छोटा सिक्का जो पुराने एक पैसे का तीसरा भाग होता था।

पा[1] (वि.) 1. चौथाई, 2. चार छटाँक का मान; (पुं.) दे. पाँ; (क्रि. स.) 'पाणा' क्रिया का संक्षिप्त रूप, जैसे– तनै के पा ग्या। **पाव** (हि.)

पा[2] (अव्य.) पर।

पाइया (वि.) पाव भर; (पुं.) पाव का बट्टा **~पक्का** 1. पक्का पाव सेर, 2. लगभग एक पाव।

पाए (पुं.) 1. चारपाई के पैर, पावा, 2. नक्षत्र का भाग (जिसमें शिशु जन्म लेता है), (दे. पड़वाए); (क्रि.स.) 'पाणा' क्रिया का भू. का., पुं., बहुव. रूप।

पाक (स्त्री.) चाशनी में बनी बरफीनुमा मिठाई; (वि.) पवित्र।

पाकड़णा (क्रि. स.) दे. पाक्कड़णा। **पकड़ना** (हि.)

पाकणा (क्रि. अ.) 1. फसल आदि पकना, 2. फुंसी आदि पकना, 3. बनना, रँधना; (वि.) जो शीघ्र पके। **पकना** (हि.)

पाकणी (वि.) जो जल्दी पकती हो।

पाकिस्तानी (पुं.) 1. सन् 1947 के भारत-विभाजन के बाद पाकिस्तान के भाग से आया हुआ व्यक्ति, 2. पाकिस्तान का निवासी; (वि.) पाकिस्तान से संबंधित। **पाकिस्तानी** (हि.)

पाक्कड़णा (क्रि. स.) 1. मजबूती से पकड़ना, 2. दौड़ते हुए को पकड़ना, 3. आगे निकले हुए व्यक्ति को पकड़ना, 4. जकड़ना, 5. बात पकड़ना, 6. ग्रहण करना, 7. गिरफ्तार करना, 8. सहारा देना; (क्रि. स.) किसी वस्तु में संचारित होना, जैसे– आग पाक्कड़णा, रंग पाक्कड़णा; (वि.) जो पकड़ने में कुशल हो; **चाल~** अपने राह लगना। **पकड़ना** (हि.)

पाक्खा (पुं.) दे. पिछवाड़ा।

पाक्या (वि.) पका हुआ; (क्रि. अ.) 'पाकणा' क्रिया का भू. का., पु., एकव. रूप। **पका** (हि.)

पाखंड (पुं.) ढोंग।

पाखंडी (वि.) 1. धोखेबाज, 2. कपट का आचरण करने वाला, ढोंगी।

पाखर (स्त्री.) काठी।

पाखाना (पुं.) 1. मल, टट्टी, 2. शौचालय।

पाग (पुं.) पगड़ी, (दे. खंडवा)–बिना किनारी बाँद्धै पाग, बिना नूण का राँद्धै साग, बिना कंठ का गावै राग, वो नाँ पाग, नाँ साग, नाँ राग; (क्रि. स.) 'पागणा' क्रिया का आदे. रूप।

पागड़ी (स्त्री.) 1. तंग पनहें का असाधारण लंबा साफा जो मारवाड़ी विधि से लपेटा

जाता है, 2. साफा जो पिता की मृत्यु पर ननसाल, रिश्तेदार या समाज की ओर से बड़े पुत्र को बाँधा जाता है, 3. एक रस्म जो तेरहवीं के दिन संपन्न होती है, 4. सम्मान-द्योतक चिह्न; (वि.) सम्मान, गौरव; ~**उछालणा** बेइज्जती करना; ~**की लाज राखणा** बड़प्पन का सम्मान रखना; ~-**तागड़ी** घर के बड़े (पुरुष) तथा बालक (पुत्र); ~~**कट्ठी करणा** परिवार के पुरुष और बच्चों (पुत्र) की संख्या के आधार पर पैसा (कर) इकट्ठा करना; ~~**बाँटणा** पुत्र-जन्म या विवाह के अवसर पर घर के पुरुष और बालकों की संख्या के अनुसार मिठाई या नकदी बाँटना; ~**तारणा** अपमान करना; ~**पाह्याँ मैं गेरणा** 1. क्षमा-याचना करना, 2. अधिक अनुनय-विनय करना; **पेचदार**~मारवाड़ी ढंग से बाँधी जाने वाली कसी हुई पगड़ी; ~**बाँधणा** 1. सम्मान बढ़ाना, अधिक आदर देना, 2. बड़प्पन में आना, 3. तेरहवीं की रस्म पर पगड़ी धारण करना। **पगड़ी** (हि.)

पागणा (क्रि. स.) किसी वस्तु को तलने के बाद चाशनी में डुबोना; (क्रि.अ.) प्रेम-रत होना। **पागना** (हि.)

पागल (वि.) 1. दे. पाग्गल, 2. दे. बावळा।

पागलखाना (पुं.) मानसिक रोगों से पीड़ित लोगों का अस्पताल।

पागलपन (पुं.) 1. मूर्खता, 2. विक्षिप्तता।

पाग्गल (वि.) बावळा। **पागल** (हि.)

पाग्गल-पंथ (पुं.) चौरगीनाथ (पूरण-भगत) द्वारा चलाई गई नाथ संप्रदाय की शाखा विशेष।

पाचक (पुं.) रसोइया; (वि.) पचाने या हज्म करने में सहायक।

पाचनशक्ति (स्त्री.) हाजमा।

पाच्चर (स्त्री.) लकड़ी का बारीक टुकड़ा जो किसी खाली स्थान में ठोंकने के काम आता है; ~**मारणा** 1. पच्चर ठोंकना, 2. काम में बाधा डालना। **पच्चर** (हि.)

पाच्छम (क्रि.वि.) पीठ के पीछे; (स्त्री.) पश्चिम दिशा।

पाच्छा (पुं.) 1. पीछे का भाग, 2. कमर, 3. चूतड़ या कूल्हे का भाग, 4. बाद का समय, 5. मायका, 6. 'आग्गा' का विलोम; ~**छूटणा** छुटकारा मिलना; ~**(-च्छै) पड़णा** 1. पीछा करना, 2. सताना, 3. धुन सवार होना।

पाच्छै (क्रि. वि.) 1. बाद में, 2. विलंब से, 3. पीछे होकर, 4. ओट में, किसी पर्दे के सहारे, 5. 'आग्गै' का विलोम। **पीछे** (हि.)

पाछणा (पु.) उस्तरा।

पाछला (वि.) 1. सबसे पीछे वाला, 2. गत समय का, 3. सबसे बाद में आने वाला, 4. पिछलग्गू। **पिछला** (हि.)

पाजामा (पुं.) दे. पजाम्माँ।

पाजी (वि.) दे. पाज्जी।

पाजी (पुं.) अनुचर, दे. पाज्जी।

पाजेब (स्त्री.) दे. पजेब।

पाज्जी (वि.) 1. दुष्ट, 2. लुच्चा। **पाजी** (हि.)

पाझा (पुं.) दे. घेर।

पाट (स्त्री.) लंबी, मोटी लकड़ी जिससे कोल्हू, रहँट आदि घूमता है, 2. चौड़ाई, फैलाव, 3. वस्त्र के अर्ज या पनहें की चौड़ाई, 4. धोबी की शिला, 5. कूँए की मुंडेर की लकड़ी, 6. रेशम, 7. रेशमी वस्त्र, 8. एक दाँव।

पाटड़ा (पुं.) 1. लकड़ी की छोटी चौकी, 2. लकड़ी का पीढ़ा; **~-गोह** भारी भरकम गोह; **~(-ड़ै) चढणा/ बैठणा** विवाह होना; **~(-ड़ै) तारणा** 1. विवाह करना, 2. मामा द्वारा लड़की के फेरों के बाद पटरे से उतारने की रस्म संपन्न करना; **~-सी** 1. मोटी- ताजी, 2. बेडौल। **पटरा** (हि.)

पाटड़ा-फेर (पुं.) विवाह के समय संपन्न होने वाली एक रस्म जिसमें दूल्हा-दुल्हिन अपने पटरे बदलते हैं तथा द्विरागमन का मार्ग तुरंत खुल जाता है।

पाटड़ी (स्त्री.) 1. छोटा पटरा, 2. झूले में रखी जाने वाली सीढ़ी। **पटरी** (हि.)

पाटणा (क्रि. अ.) 1. फटना, 2. अलग होना, बिछुड़ना, 3. एक स्थान से दो मार्ग निकलना, 4. दूध आदि का फटना, 5. जोर-जोर से हँसना, 6. बिजली का चमकना, 7. आपे से बाहर होना, 8. समाचार पाना या मिलना, जैसे–बेरा पाटणा, 9. कचरी आदि का पकने के बाद खिल जाना, 10. किसी वस्तु का जीर्ण-शीर्ण होकर फटना; (वि.) जो शीघ्र फट जाए; (क्रि. स.) 1. पाटना, गड्ढे आदि को भरना, 2. छत आदि डालना; **जाण~** 1. समाचार मिलना, पता लगना, 2. होश ठिकाने आना; **पीली~** पौ फटना।

पाटना (क्रि. स.) दे. पाटणा।

पाटा (पुं.) दे. मैज।

पाटी (स्त्री.) दे. पाट्टी।

पाट्टी (स्त्री.) 1. तख्ती, 2. शृंगार-पट्टी जिसे केशों को दबाए रखने के लिए माँग पर बाँधते हैं, 3. परिपाटी; (क्रि. अ.) 'पाटणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं०, एकव. रूप, फटी। **पाटी** (हि.)

पाट्टे (पुं.) 1. ढालान के खेत, 2. जोहड़ की पाल में वह स्थान जिससे होकर पशु पानी पीने जाते हैं, 3. पाटा भूमि, कठोर भूमि; (वि.) 1. फटे हुए, 2. विस्फारित (नयन); (क्रि. अ.) 'पाटणा' क्रिया का भू. का., पुं. बहुव. रूप, फटे; **~आळा खेत** वह खेत जो पाटा भूमि पर हो; **~दीद्याँ आळी** 1. मोटे नेत्रों वाली, विस्फारित नेत्रों वाली, 2. भैरवी।

पाट्ठा (वि.) 1. कठोर, 2. पुष्ट, 3. अधिक पानी बरसने के कारण मिट्टी के कठोर होने की अवस्था; **~मारणा** अधिक वर्षा के कारण भूमि कठोर होना। **पाठा** (हि.)

पाट्या (वि.) फटा हुआ, जैसे–पाट्या लत्ता; (क्रि. अ.) 1. 'पाटणा' क्रिया का भू. का., पुं. रूप, फटा, 2. खिल-खिलाकर हँसा; **~-पुराणा** फटा-पुराना, जीर्ण-शीर्ण। **फटा** (हि.)

पाठ (पुं.) 1. शिक्षा, 2. सीख, 3. धार्मिक ग्रंथ का पारायण, 4. अभ्यास; **~पट्टी पढाणा** 1. सीख देना, 2. भड़काना, 3. भाषा और गणित पढ़ाना।

पाठशाला (स्त्री.) दे. पाठसाल्ला।

पाठसाल्ला (स्त्री.) 1. विद्यालय जहाँ संस्कृत-हिन्दी की शिक्षा दी जाती है, 2. विद्यालय, स्कूल, 3. प्राथमिक स्तर तक विद्यालय, 4. (दे. गुरकल)। **पाठशाला** (हि.)

पाड़ (स्त्री.) 1. सेंध, 2. बंजर खेत की पहली जुताई, 3. एक हलाई के बाद की बिजाई, 4. फूट, 5. जोहड़ आदि

की मुँडेर, पाल; (क्रि. स.) 'पाड़णा' क्रिया का आदे. रूप, फाड़; **~पड़णा** 1. फूट पड़ना या डलना, 2. सेंध लगना; **~पै थ्याणा** रंगे हाथों पकड़ा जाना; **~लाणा** सेंध लगाना।

पाड़छा (पुं.) दे. पैड़छा।

पाड़णा (क्रि. स.) 1. फाड़ना, 2. चीरना, 3. कुत्ते द्वारा काटा जाना, 4. अपने पक्ष में करना—म्हारे घवा उननैं पाड़ लिए, 5. पेड़-पौधे का उखाड़ना, 6. थप्पड़ लगाना; (वि.) काट खाने वाला (कुत्ता)।

पाड़-तिवाड़ा (पुं.) 1. फूट डालने का काम, 2. जोड़-तोड़; **~करणा** 1. लड़ाई-झगड़ा करना, 2. भेदभाव डालना।

पाड़ा (पुं.) दे. पवाड़ा।

पाडूँ-खाऊँ (स्त्री.) 1. क्षुधातुर अवस्था, 2. डाँटने-डपटने या धमकाने का भाव; **~करणा** क्रोधित होना।

पाड्डा (पुं.) दे. काटड़ा।

पाड्डी (स्त्री.) दे. कटिया।

पाण[1] (पुं.) माँडी जो ज्वार आदि के घोल से तैयार होती है और वस्त्र बुनते समय ताने-बाने में दी जाती है; **~लाणा** ताना बुनने से पूर्व माँडी देना।

पाण[2] (स्त्री.) 1. पाई, खड़ी रेखा जो सिक्के, नाप, तोल आदि के चतुर्थ अंश का द्योतक है, (दे. पाई), 2. अक्षर के साथ लगने वाली मात्रा, 3. प्रण; **~खींचणा** भूमि पर तीन लकीर खींच कर प्रतिज्ञा करना; **~लाणा** 1. अंक के साथ पाई लगाना, 2. वर्ण के साथ मात्रा लगाना।

पाणछा (स्त्री.) दे. पाणस्या।

पाणस्या (स्त्री.) वर्षा या सिंचाई के बाद की जुताई।

पाणा (क्रि. स.) 1. मिलना, प्राप्त करना, 2. गुम हुई वस्तु मिलना, 3. पता लगना, 4. कुछ न कुछ जानना, 5. परिणाम भुगतना—करणा सो पाणा, 6. भोजन करना, 7. अलभ्य या अमूल्य वस्तु मिलना, 8. उड़ेलना। **पाना** (हि.)

पाणिग्रहण (पुं.) विवाह।

पाणिनि (पुं) एक प्रसिद्ध वैयाकरण हरियाणा जिसकी साधना-स्थली रही।

पाणी[1] (पुं.) 1. जल, 2. सम्मान, 3. आब या चमक, 4. हिम्मत, 5. स्नेह. (वि.) जलयुक्त पतली (वस्तु); **~आणा** 1. आँखों में आँसू आना, 2. प्यार उमड़ना, 3. नहर के जल की बारी आना; **~काटणा/तोड़णा** 1. पानी की निकासी करना, 2. नहर तोड़ना; **~की तराँ बहाणा** फिजूल खर्ची करना; **~के मोल** सस्ते भाव; **~चढ़ाणा** 1. आब देना, 2. पानी गर्म रखना, 3. मूर्ति पर जल चढ़ाना; **~देणा** 1. पितृ-तर्पण करना, 2. सिंचाई करना, 3. आपत्ति-काल में सहायता देना; **~देवा** वंशज, पितृ-तर्पण का अधिकारी; **~ना माँगणा** आघात पहुँचते ही मरना; **~नाँ मिलणा** 1. वंश समाप्त होना, 2. पितरों को जल न मिलना; **~-पाणी करना** 1. लज्जित करना, 2. जलयुक्त करना; **~-पाणी होणा** 1. लज्जित होना, 2. जल-थल एक होना; **~-पात** हुक्का-पानी; **~पै जाणा** सिंचाई के लिए खेत पर जाना; **~बणाणा** मेहमान के लिए शरबत आदि बनाना; **~बलाणा** एक क्यारी से दूसरी क्यारी में पानी काटना;

~**भरणा** 1. दासता करना, 2. तुलना में कम बैठना, 3. कूएँ से पानी लाना, 4. जल-मग्न होना; ~**मरणा** 1. दोषी होना, 2. दराज आदि में पानी रिसना; ~**लागणा** 1. जलवायु अनुकूल होना, 2. हृष्ट-पुष्ट होना, 3. वाचाल होना, 4. खाली पेट पानी लगना, 5. मोटापा बढ़ना, 6. किसी प्रदेश की जलवायु अनुकूल होना; ~**लाणा** सिंचाई करना, सींचना; ~**सूखणा** 1. प्यार का अभाव रहना, 2. आभाहीन होना; ~**होणा** 1. सहनशील होना, 2. लज्जित होना, 3. द्रवित होना, 4. पसीजना, 5. कोई चीज मात्रा में अधिक पतली होना या जलयुक्त होना, 6. आभा या चमक का होना; ~**देवा-नामलेवा** 1. वंशज, 2. पितृ-तर्पण का अधिकारी। **पानी** (हि.)

पाणी[2] (पुं.) जल। यह हल्का, भारी, खारी, मीठा, मर्रा आदि 48 प्रकार का गिनाया जाता है। दे. पाणी।

पात (पुं.) 1. पत्ता, 2. चौड़ा पत्ता, 3. तंबाकू का पत्ता, 4. तंबाकू का उतना अंश जो एक बार चिलम में रखा जा सके, 5. पत्ता, घास का अनुवर्ती, जैसे-घास-पात; (स्त्री.) चाशनी; **एक** ~इतना तंबाकू जो एक बार चिलम में रखा जाता है।

पातकी (वि.) पापी।

पातण (स्त्री.) जूती।

पातर (स्त्री.) 1. पतरी 2. नर्तकी 3. परी। दे. पातरायण।

पातरायण (स्त्री.) वेश्या।

पातला (वि.) 1. अधिक जलयुक्त, 2. दुर्बल, 3. हल्का, 4. 'गाड्ढा' या 'मोट्टा' का विलोम, बारीक, महीन।

पतला (हि.)

पाताल (पुं.) दे. पताळ।

पाती[1] (स्त्री.) दे. पात्ती[1,2]।

पाती[2] (स्त्री.) 1. दे. ठोळा, 2. दे. पान्ना।

पात्तक (पुं.) 1. नीच कर्म, 2. मृत्यु से तेरहवीं तक बरती जाने वाली शुचिता या शुद्धता, 3. सूर्य या चंद्र ग्रहण का दोषयुक्त काल, (दे. सूत्तक)

पातक (हि.)

पात्तर (वि.) 1. योग्य, 2. दान-ग्रहण करने योग्य, 3. पतला; (पुं.) पात्र, बर्तन। (स्त्री.) वेश्या। **पात्र** (हि.)

पात्ता (पुं.) 1. हरा-चारा (जो अधिकतर) सरसों के पत्ते के रूप में होता है, 2. बडे आकार का पत्ता। **पत्ता** (हि.)

पात्ती[1] (स्त्री.) 1. गन्ने के पत्ते जो गन्ना पेरने से पहले अलग कर दिए जाते हैं, 2. लोहे की चौकोर पत्ती, 3. पत्ती।

पाती (हि.)

पात्ती[2] (स्त्री.) पैर का एक आभूषण विशेष।

पाती (हि.)

पात्थर (पुं.) प्रस्तर, पाषाण; (वि.) 1. निश्चेष्ट, 2. कठोर; ~**पड़णा** 1. बुद्धि भ्रष्ट होना, 2. पत्थर बरसना या पड़ना; ~**पाड़णा** 1. बड़ा या असाधारण काम करना, 2. व्यर्थ शक्ति नष्ट करना; ~**फोड़णा** 1. व्यर्थ में जीवन व्यतीत करना, 2. पत्थर तोड़ना; ~-**सा मारणा** कटु वचन कहना। **पत्थर** (हि.)

पात्र (पुं.) दे. पात्तर।

पात्रता (वि.) योग्यता।

पाथ (स्त्री.) गोबर की ढेरी, ढेरी; (क्रि. स.) पाथणा; क्रिया का आदे. रूप।

पाथणा (क्रि. स.) 1. थापना, गढ़ना, बनाना,

2. उपले बनाना, 3. ठोंकना, 4. पीटना। **पाथना** (हि.)

पाथना (क्रि. स.) दे. पाथणा।

पाथवार (पु.) दे. कुम्हार धणे।

पाथा (पु.) 1. दे. पाखर, 2. दे. सीमसद्धा।

पाद[1] (क्रि. स.) 1. अपशब्द, अपान वायु, 2. चरण, सम्मानित व्यक्ति के पैर।

पाद[2] (स्त्री.) अनाज तोलने की पद्धति (इसी से 'पाव', 'पा' बना है)

पादणा (क्रि. अ.) 1. पादना, 2. भयभीत होना, 3. घबराना; (वि.) जो बार-बार पादे, पदोरा।

पादरी (पुं.) ईसाइयों का पुरोहित या पंडित।

पादुका (पुं.) 1. खड़ाऊँ, 2. जूता, (दे. खड़ाम)।

पाद्दा (पुं.) दे. पाद्धा।

पाद्धर (स्त्री.) सीध; **नाक की~** नाक की सीध; **~धरणा/बाँधणा** सीध बाँधना।

पाद्धा (पुं.) 1. उपाध्याय, 2. पाठशाला का पंडित, 3. पंडित, 4. कुल गुरु। **पाधा** (हि.)

पाध (स्त्री.) उपाधी, उच्छृंखलता; **~लागणा** शरारत सूझना।

पाधरा (वि.) 1. सीधा, 2. भोला-भाला, 3. सीधा (मार्ग); **~करणा** 1. प्रताड़ना के बाद ठीक व्यवहार पर लाना, 2. चोट लगाकर टेढ़ापन निकालना, 3. पीटना, 4. लंबायमान या लंबलेट करना; **~चालणा** 1. सद्व्यवहार करना, 2. अपने काम से काम रखना, 3. सीधे चलना; **~होणा** 1. दुर्व्यवहार से सद्व्यवहार पर आना, 2. टेढ़ापन निकलना।

पान (पुं.) 1. पान का पत्ता, 2. पान का पौधा, 3. विवाह आदि विशेष अवसरों पर लगाया हुआ पान का पत्ता, 4. 'खान' का अनुवर्ती शब्द, जैसे– खान-पान, 5. पीने की क्रिया; (वि.) पाँच; **~-सह** पाँच सौ।

पाना (क्रि. स.) दे. पाणा।

पानी (पुं.) दे. पाणी।

पानीड़ा (पुं.) पानी (लघुताद्योतक), जैसे– एक घूँट पानीड़ा पिला (लो. गी.)।

पानीपत्त (पुं.) पाणिप्रस्थ, पानीपत, एक धारणा के अनुसार वह भू-भाग जिसकी माँग पांडवों ने कलह की उप-शांति के लिए की थी।

पान्ना (पुं.) 1. किसी एक ही जाति, कुल, विचारधारा या रोजगार करने वाले लोगों का निवास-स्थान, 2. मोहल्ला, (दे. ठोळा)। **पाना** (हि.)

पान्नी (स्त्री.) एक प्रकार की घास।

पाप (पुं.) धर्म-विरोधी काम; **~कटणा** 1. छुटकारा मिलना, 2. पापों से मुक्ति मिलना; **~कमाणा/ मोल लेणा** 1. जान-बूझ कर झंझट में फँसना, 2. पाप का भागी बनना।

पापड़ (पुं.) दे. पाप्पड़।

पापड़ा (पुं.) वर्षा ऋतु में उगने वाली कुछ चौड़े पत्तों की बेलनुमा घास विशेष।

पापड़ी[1] (स्त्री.) 1. पपड़ी, परत, 2. फुंसी आदि की पपड़ी, 3. मैदे आदि का छोटा पापड़।

पापड़ी[2] (स्त्री.) दे. पापड़ा।

पाप्पड़ (पुं.) 1. पापड़, 2. दाल आदि को पीस कर बनाई गई चपाती; (वि.) 1. सूखा, 2. पतला; **~सा** सूखा, पतला और करारा। **पापड़** (हि.)

पाप्पण (वि.) पाप करने वाली। **पापिन** (हि.)

पाप्पी (वि.) 1. धर्म विरोधी काम करने वाला, 2. क्रूर, निर्दयी। **पापी** (हि.)

पाबंदी (स्त्री.) प्रतिबंध।

पायँता (पुं.) दे. पाँत।

पायक (पुं.) नौकर।

पायल (स्त्री.) पाजेब।

पाया (पुं.) 1. चारपाई का पैर, 2. स्तंभ, खंभा; (क्रि. स.) 'पाणा' क्रिया का भू. का., पुं. एकव. रूप; **~ठाणा** चारपाई बुनते समय बींडी डालने के लिए पाया या पाबा उठाना; **~-सा** छोटे कद का, बौना। **पावा** (हि.)

पार (पुं.) 1. दूसरी ओर का किनारा, 2. यमुना नदी से पूर्व दिशा का भाग, 3. यमुना से पार का प्रदेश जहाँ गन्ने की खेती अधिक होती है और जिनकी भाषा हरियाणवी के कुछ समान तथा ब्रज से प्रभावित है; (स्त्री.) वश, जैसे—पार बसाणा; **~उतरणा** 1. भवसागर पार करना, 2. सफलता मिलना; **~करणा** 1. नदी, तालाब आदि को तैर कर पार करना, जलमार्ग तय करना, 2. कार्य सपन्न होना, 3. उबारना; **~की** यमुना पार की महिला, (दे. पारो); **~गेरणा** जैसे-तैसे कार्य पूरा करना; **~पड़णा** कार्य संपूर्ण होना; **~पाणा** 1. अंतिम छोर तक पहुँचना, 2. थाह मिलना; **~बसाणा** परिस्थिति पर काबू होना—पिया नौक्कर चाल्या मेरी कुछ नाँ पार बसाई (लो. गी.); **~होणा** 1. सफलता मिलना, 2. मुक्ति मिलना, 3. जल-मार्ग पार करना।

पारखी (वि.) 1. छोटे-खरे की पहचान रखने वाला, 2. बुद्धिमान, 3. दूरदर्शी।

पारटी (स्त्री.) दे. पालटी।

पारधी (पुं.) 1. शिकारी, व्याध, 2. वह चमकीला तारा विशेष जो आकाश में तीन हिरनियों का पीछा करता हुआ माना जाता है और जिसके अनुसार पौष मास में रात्रि के काल का प्रमाण किया जाता है (क्योंकि यह सूर्यास्त के समय निकल कर सूर्योदय के समय अस्त होता है, ज्येष्ठ मास में यह हिरनियों को पकड़ने में सफल होता है तुल. हेड़ी-तारा)।

पारबती (स्त्री.) 1. पर्वत की पुत्री, 2. कथा-कहानियों में वर्णित दया-भाव दिखाने वाली देवी जिसका संबंध शिव से है, 3. पतिव्रता स्त्री, 4. सदा शिव का वरण करने वाली देवी, 5. (दे. पहाड़ो)। **पार्वती** (हि.)

पारवा (वि.) दिल्ली से पश्चिम की ओर यमुना पार का निवासी। दे. पारवी।

पारवी (स्त्री.) 1. यमुना से पार पूर्व दिशा की बोली जो ब्रज भाषा से प्रभावित है (जिसमें ड, ड़ का उच्चारण 'र' है तथा ओकारांत शब्दों की प्रधानता है), 2. पूर्व दिशा की यमुनापार की महिला, (दे. पारो)।

पारस (पुं.) 1. एक काल्पनिक पत्थर जिसके स्पर्श से लोहा सोने में बदल जाता है, 2. पारस पत्थर; (वि.) शुद्ध; **~का** खरा (आदमी)।

पारसी (स्त्री.) 1. फारसी भाषा, 2. फारस देश का निवासी, 3. वह भाषा जो समझ में न आए—गूँगे तेरी पारसी नैं समझै तेरी माँ; (वि.) फारस देश से संबंधित। **फारसी** (हि.)

पारा (पुं.) पारद, एक विशेष तरल धातु जो अनेक ओषधियों में काम आती है

और जो विष-तुल्य है; (वि.) अस्थिर, **~चढणा** 1. क्रोधित होना, 2. गर्मी होना।

पारायण (पुं.) समय बाँधकर किसी ग्रंथ का आद्योपांत पाठ।

पारावार (पुं.) सीमा, ठिकाना, ओरछोर।

पाराशर (पुं.) दे. पारासर।

पारासर (पुं.) 1. ब्राह्मणों का एक गोत्र विशेष, पराशर के वंशज, 2. वेद व्यास जी। **पाराशर** (हि.)

पारिया (पु.) दे. भाँड।

पारो (स्त्री.) यमुना पार की स्त्री (जो पार की या पारवी भाषा बोलती है, यमुना से पूर्व दिशा की महिला जिसकी बोली और पहनावा हरियाणवी से कुछ भिन्न होता है, यह पतले को पतरा, काले को कारा कहती है, इनमें से कोई-कोई महिला हुकटी से धूम्रपान भी करती है)।

पार्क (पुं.) छोटा उद्यान, वाटिका।

पार्टी (स्त्री.) दे. पालटी।

पार्वती (स्त्री.) दे. पारबती।

पार्सल (पुं.) डाक से भेजने के लिए बँधा हुआ पुलिंदा या बंडल।

पालंग (स्त्री.) पाँव पड़ने या लगने की क्रिया।

पाल[1] (पुं.) 1. बैलों को ओढ़ाने के काम आने वाला सिला हुआ बेल-बूटेदार वस्त्र, 2. बहुत मोटा वस्त्र।

पाल (स्त्री.) जाति विशेष का क्षेत्र।

पाळ (स्त्री.) 1. जोहड़ के चारों ओर का ऊंचा किनारा या मेंड़, 2. एक जाति विशेष के लोगों का समूह; (क्रि.स.) 'पालणा' क्रिया का आदे. रूप; **~बाँधणा** 1. विरोध खड़ा करना, 2. मेंड़ बाँधना; **पाणी पहल्याँ~** खतरे की अग्रिम व्यवस्था। **पाल** (हि.)

पालकी (स्त्री.) शिविका, बद डोली।

पालटी (स्त्री.) 1. दल, टोली, 2. राजनीतिक दल, जैसे-काँगरिस पालटी, 3. (स्वादिष्ट) सामूहिक भोज।
पार्टी (हि.)

पालड़ा (पुं.) 1. तराजू का पलड़ा, 2. पक्ष; **~भार्या होणा** पक्ष मजबूत होना।
पलड़ा (हि.)

पालड़ी[1] (स्त्री.) छोटी टोकरी (जिसमें दस-बारह सेर भार आ सके)।
पलड़ी (हि.)

पालड़ी[2] (स्त्री.) 12 सेर तोल नापने की टोकरी। दे. पालड़ा।

पालणा[1] (क्रि. स.) 1. पालन-पोषण करना, 2. हष्ट-पुष्ट करना, 3. सिर चढ़ाना, मुँह लगाना, 4. अपने आप मुसीबत खड़ी करना, 5. पशु-पक्षी को पालना, 6. वचन पालन करना।
पालना (हि.)

पालणा[2] (पुं.) पलना, झूला। **पालना** (हि.)

पालती (स्त्री.) पालथी या पलाथी मार कर बैठने की मुद्रा। **पालथी** (हि.)

पालतू (वि.) 1. पाला हुआ, 2. पाला जाने वाला।

पालथी (स्त्री.) दे. पालती।

पालन (पुं.) 1. भरण-पोषण, 2. न टालने का भाव; **~-खाप** 360 गाँवों की एक खाप।

पालना (क्रि. स.) दे. पालणा।

पालपूत (पुं.) 1. अन्य द्वारा पाला हुआ पुत्र। 2. खाप।

पालर पाणी (पुं.) वर्षा का ताजा स्वच्छ पानी।

पाला (पुं.) दे. पाळा[1, 2]।

पाळा[1] (पुं.) पाला, अतिशीत के कारण खुले स्थान का पानी या जलवाष्प के बरफ के समान जमने की क्रिया।

पाळा[2] (पुं.) 1. कबड्डी खेलते समय दो टोलियों के बीच (रेत से) बनाई गई विभाजन-रेखा, 2. छोटी मेंड़, 3. संपर्क, वास्ता, 4. पक्ष, 5. संगठित टोली; (क्रि. स.) 'पालणा' क्रिया का भू. का. , पुं. एकव. रूप; **~खेलणा** कबड्डी खेलना; **~तोड़णा** 1. विरोधी दल में मिलना, दल बदलना, 2. कबड्डी डालते समय अपने पाले में वापिस न पहुँच सकना; **~पड़णा** 1. वास्ता पड़ना, 2. सामना पड़ना; **~बाँधणा** 1. कबड्डी खेलने से पूर्व रेत से डोली खींचना, 2. मोर्चा बंदी करना, 3. द्वेष मोल लेना, 4. खेत में मेंड बनाना। **पाला** (हि.)

पाळा[3] (पुं.) मिट्टी का बना टूंडकनेदार (हैंडल वाला) ढक्कन।

पालिश (स्त्री.) रोगन आदि जिसके लगाने से वस्तु पर चमक आए।

पाली[1] (स्त्री.) घुटने की हड्डी; (क्रि. स.) 'पालणा' क्रिया का भू. का., एकव. स्त्रीलिंग रूप। **पाली** (हि.)

पाळी[2] (पुं.) ग्वाला; (वि.) 1. अनपढ़, 2. मूढ़–पाळी की जात कुचाळी।

पाळीड़ा (पुं.) दे. हाळी[2]।

पालेवार (स्त्री.) बोने से पहले की सिंचाई।

पाल्लक (पुं.) एक हरा साग। **पालक** (हि.)

पाल्लर (स्त्री.) लस्सी में सूखी कचौरियाँ डालकर बनी वस्तु (कौर.)।

पाल्ला (पुं.) 1. झड़बेरी के सूखे पत्ते, 2. मुख्य फसल काटने के बाद बीच में बची काँटेदार झाड़ियाँ, 3. चेचक की फुंसियों की पपड़ी; **~काटणा** रबी की फसल काटने के बाद खेत की बची-खुची झाड़ियाँ काटना, (दे. सूड़); **~झाड़णा** झड़बेरी के सूखे पत्ते झाड़ना; **~-सा झड़णा** 1. चेचक, खुजली आदि रोग अदृश्य होना, 2. पेड़-पौधों का ठूँठ होना।

पाल्हैट (वि.) 1. वह गाय-भैंस जो समय पर गाभिन न हो, 2. समय पर गाभिन न होने के कारण मोटापा चढ़ा पशु; **~रहणा** गाय-भैंस का समय पर गाभिन न होना, ब्याँत उलाँकना।

पावँ (पुं.) दे. पाँ।

पाव (पुं.) दे. पा।

पावटा (पुं.) यमुना नगर के निकट सिखों का गुरुद्वारा, पौंटा साहब।

पावड़ा (पुं.) 1. पावँडा, पायदान, 2. स्वागत या आगमन-स्थल पर बिछाया गया वस्त्र आदि। **पावँड़ा** (हि.)

पावणा[1] (क्रि. स.) दे. पाणा; (पुं.) दे. पुआणा।

पावणा[2] (पु.) दे. बटेऊ। पाहुना।

पावन (वि.) पवित्र।

पावना (पुं.) पाहुना। दे. बटेऊ।

पावला (पुं.) 1. पैसे का सिक्का, पैसा, 2. पैसा अथवा पाई का लघुताद्योतक रूप, 3. चौथाई पैसे के मूल्य का प्राचीन सिक्का; **~धेल्ला--~रुपया-** पैसा (अल्प मात्रा में)।

पावली (स्त्री.) 1. पाई का सिक्का, 2. क्षुद्र धन।

पावसणा (क्रि. अ.) 1. गाय-भैंस आदि के थन सहलाने पर उनमें दूध उतरना, 2. किसी कार्य को करने के लिए रजू होना, 3. द्रवित होना।

पावा (पुं.) दे. पाया।

पावा डालणा (क्रि.) उच्छृंखल पशु की गति को सीमित करने के लिए गले में रस्सी के साथ पाया बाँधना। दे. अळगोड्डा।

पाश (पुं.) दे. फाँस।

पासंग (पुं.) 1. वस्तु तोलने से पूर्व उठे हुए पलड़े के समान या डंडी को भूमि के समानान्तर करने के लिए डाला गया अल्प भार, 2. तोलने से पूर्व तराजू के पलड़ों का ऊपर नीचे रहने या डंडी का समानान्तर न रहने का भाव, (दे. धड़ा[2]); (वि.) तुलना में अति न्यून; **~करणा** 1. तोलने से पूर्व तराजू के ऊपर उठने वाले पलड़े में अल्प भार डाल कर समान करना, 2. कम तोलना; **~भी नाँ होणा** तुलना में आस-पास भी न ठहर सकना; **~होणा** 1. तुलना में आसपास होना, 2. तुलना में बहुत कम होना, 3. तोलने से पूर्व तराजू के पलड़े ऊपर नीचे होना।

पास[1] (पुं.) 1. परिचय-पत्र, 2. अनुमति पत्र, 3. सरकारी अनुमति-पत्र; (वि.) उत्तीर्ण।

पास[2] (पुं.) 1. बगल, तरफ, 2. निकटता; (अव्य.) 1. निकट, साथ, 2. करण कारक का चिह्न, 1. (तुल. धोरै), 2. (तुल. नीड़ै); **~नाँ फटकणा** निकट न आना।

पास[3] (अव्य.) लिहाज, इज्जत।

पासणा (क्रि. स.) 1. कूएँ आदि में रस्सी डालना या लटकाना, 2. नीचे गिराना, 3. 'सहारणा' का विलोम। **पाँसना** (हि.)

पासना (क्रि. स.) दे. पासणा।

पासा (पुं.) दे. पास्सा।

पास्सा (पुं.) 1. दाँव या बाजी खेलने का टुकड़ा या छड़, 2. सुनार का एक उपकरण, 3. सहारने या खींचने की क्रिया, 4. ग्रंथि, 5. करवट; **~आणा/पड़णा** अनुकूल दाँव पड़ना, भाग्योदय होना; **~(स्से) का सोन्ना** एक विशेष प्रकार का सोना; **~खेल्हणा** 1. द्यूत या जुआ खेलना, 2. बाजी लगाना; **~पलटणा** 1. भाग्य बदलना, 2. करवट बदलना; **~फैंकणा** चाल चलना। **पाँसा** (हि.)

पास्सै (क्रि. वि.) 1. तरफ, ओर, 2. पास ही।

पाहकस (पुं.) निकट का दूसरा गाँव।

पाहरणा (क्रि. स.) दे. पहरणा।

पाहल (स्त्री.) वैष्णोई संप्रदाय की प्रार्थना।

पाही (वि.) गैर-बिस्वेदार, भूमिहीन।

पाहुणा (पुं.) मेहमान, अतिथि। **पाहुना** (हि.)

पाह्कस (पुं.) दूर का खेत।

पाह्न्नी (स्त्री.) एक प्रकार की घास जिसकी रस्सी बनाई जाती है।

पिंगल (पुं.) 1. राग-रागिनी की विद्या, 2. छंद-शास्त्र।

पिंगला (स्त्री.) 1. भर्तृहरि की पत्नी, 2. एक नाड़ी जिसकी साधु साधना करते हैं।

पिंघळणा (क्रि. अ.) दे. पींघळणा।

पिंघाळणा (क्रि. स.) 1. पिघलाना, 2. द्रवित करना, 3. ठोस पदार्थ को गरम करना, तपाना। **पिघालना** (हि.)

पिंजड़ा (पुं.) दे. पींजरा।

पिंजरा (पुं.) दे. पींजरा।

पिंजस (स्त्री.) कील उखाड़ने का एक उपकरण।

पिंजू (पु.) दे. पीच्चू।

पिंज्जर (पुं.) 1. हड्डियों का ढाँचा, 2. सूखा या दुर्बल शरीर, 3. ढाँचा; **~लीकड़णा** शरीर की अस्थियाँ दिखाई देना। **पिंजर** (हि.)

पिंझोळा (पुं.) 1. दे. झूल 2. दे. पींग।

पिंड (पुं.) 1. शरीर, 2. चूरमे की पींडी, 3. मिट्टी आदि का गोला या लोथड़ा, 4. आपत्ति, 5. ग्रह, 6. जौ के आटे का पिंड जो पितरों को अर्पित करते हैं, 7. (दे. पींड्डा); **~छुटाणा** पीछा छुड़ाना; **~छूटणा** 1. मुक्ति मिलना, 2. पीछा छुटना।

पिंड-खिजूर (पुं.) खजूर विशेष का मीठा फल।

पिंडत (पुं.) दे. पंडित।

पिंडदान (पुं.) पितरों के निमित्त पिंड देने का धार्मिक कृत्य।

पिंडली (स्त्री.) टाँग का ऊपरी पिछला भाग जो मांसल होता है (तुल. पींड्डी)।

पिंडी (स्त्री.) 1. दे. पींड्डी, 2. शिवपिंडी।

पिघलना (क्रि. अ.) दे. पींघळणा।

पिघलाना (क्रि. स.) दे. पिंघाळणा।

पिचकणा (क्रि. अ.) 1. फिसना, 2. चिथना, 3. सूखने के कारण सिकुड़ना, 4. गाल आदि का अंदर धँसना; (वि.) जो शीघ्र पिचक जाए। **पिचकना** (हि.)

पिचकना (क्रि. अ.) दे. पिचकणा।

पिचकारी (स्त्री.) 1. खोखली नली जिसमें पानी आदि भर कर फेंका जाता है, 2. दबाव के साथ द्रव्य वस्तु के बह निकलने की क्रिया।

पिचपन (वि.) पचपन की संख्या। **पचपन** (हि.)

पिचपिचा (वि.) 1. दबा हुआ, 2. लसलसा, 3. मवाद आदि से भरा हुआ।

पिचरका (पुं.) तरल या अर्ध तरल पदार्थ का बाहर निकला अंश।

पिचहेंतर (वि.) पिचहत्तर की संख्या। **पिचहत्तर** (वि.)

पिचाण मैं (वि.) पिचानवें की संख्या। **पिचानवें** (हि.)

पिच्यास्सी (वि.) पिचासी की संख्या। **पिचासी** (हि.)

पिछड़णा (वि.) 1. पीछे रह जाना, (दे. बीछटणा), 2. पिछोड़ा जाना, (दे. पिछोड़णा)। **पिछड़ना** (हि.)

पिछड़ना (क्रि. अ.) दे. पिछड़णा।

पिछणणा (क्रि. अ.) (विशिष्टता के कारण) पहचाना जाना।

पिछताणा (क्रि. अ.) पछताना, पश्चात्ताप करना।

पिछतावा (पुं.) प्रायश्चित करने का भाव। **पछतावा** (हि.)

पिछलग्गू (वि.) 1. बिना सोचे-समझे अनुकरण करने वाला 2. चापलूस।

पिछला (वि.) दे. पाछला।

पिछवा (स्त्री.) दे. पछवा।

पिछवाड़ (स्त्री.) दे. पछवाड़।

पिछवाड़णा (क्रि.) बाँधना। उदा.–मोंढा पिछड़वाया।

पिछवाड़ा (पुं.) दे. पछवाड़ा।

पिछाड़ी (स्त्री.) दे. पछाड़ी।

पिछाण (स्त्री.) 1. जान-पहचान, 2. स्मृति-चिह्न (क्रि. स.) 'पिछाणणा' क्रिया का आदे. रूप; **~करणा/ लाणा** 1. स्मृति चिह्न लगाना या ढूँढना, 2. स्मृति-चिह्न अंकित या निश्चित करना; 2. शरीर के ऐसे अंग को देखना जिससे पहचान हो सके; **~मारणा** 1. परिचय के कारण लज्जा आना–के पिंछाण

मारिये सै काम काढ कै आगै चाल, 2. पहचान का चिह्न मिटाना, 3. पहचान कर धोखा देना; ~**होणा** परिचय होना, जान-पहचान होना। **पहचान** (हि.)

पिछाणणा (क्रि. स.) 1. जानना, 2. परीक्षा लेना; **उड़ती चिड़िया**~घटना को भाँप लेना।**पहचानना** (हि.)

पिछानना (क्रि. स.) दे. पिछाणणा।

पिछोकणा (पुं.) दे. पछोकड़ा।

पिछोड़णा (क्रि. स.) 1. फटकना, अन्न से आवंछित भाग निकालने के लिए छाज में डालकर फटकना, 2. खिचड़ी बनाने से पूर्व कुटे हुए बाजरे को फटककर उसका बूर (राली) उतारना, 3. उलट-पलट कर परख करना; ~-**छड़णा** 1. अन्न की सफाई करना, 2. पूरी जाँच पड़ताल करना।

पिटणा (क्रि. अ.) 1. पीटा जाना, मार खाना, 2. आघात खाना (पानी, ओले आदि की), 3. किसी वस्तु का पसंद न आना, असफल होना, 4. कील या धातु आदि का (ठठेरे द्वारा) पीटा जाना, 5. अपमानित होना, 6. (दे. छितणा); (वि.) जो रोज पिटे; **भद**~बदनामी होना। **पिटना** (हि.)

पिटना (क्रि. अ.) दे. पिटणा।

पिटरोल (पुं.) इंजिन चलाने के काम आने वाला गाढ़ा तेल। **पैट्रोल।**

पिटवाणा (क्रि. स.) पिटाई करवाना। **पिटवाना** (हि.)

पिटवाना (क्रि. स.) दे. पिटवाणा।

पिटवारी (पुं.) दे. पटवारी।

पिटाई (स्त्री.) पीटने की क्रिया।

पिटार (पुं.) 1. बड़ी टोकरी जिसमें बहुधा मिठाई रखी जाती है, 2. ढक्कनदार टोकरी, 3. बड़ा संदूक; ~**बाँटणा** मिठाई बाँटना।

पिटारा (पुं.) 1. ढक्कनदार टोकरा, 2. साँप रखने की टोकरी, 3. अनमेल वस्तुओं का समूह, 4. न सुलझने वाली गुत्थी; (वि.) किसी विशेष विषय में पर्याप्त जानकारी रखने वाला।

पिटारी (स्त्री.) 1. ढक्कनदार टोकरी, 2. आभूषण रखने की टोकरी, 3. जादू की टोकरी।

पिटोकड़ा (वि.) दब्बू, मार खाने वाला।

पिट्ठी (स्त्री.) 1. दाल पीस कर बनाई गई लुगदी, दाल की टिक्की। **पीठी** (हि.)

पिट्ठू (वि.) सदा हाँ में हाँ मिलाने वाला, चापलूस; (पुं) 1. बच्चों का एक खेल विशेष, 2. खेल में बनने वाला जीत का अंक।

पिड़वा (स्त्री.) दे. पड़वा।

पिड़ाई (स्त्री.) चावल, दाल आदि खाद्य पदार्थों में लगने वाला एक कीड़ा।

पिणाणा (क्रि. स.) रूई धुनवाना। **पिंजवाना** (हि.)

पित्त (पुं.) 1. एक रोग जिससे शरीर पर ददोड़े बन जाते हैं, 2. अम्ल। **पित्त** (हि.)

पितर (पुं.) 1. मृतक-आत्मा (जिनके नाम पर श्राद्ध किया जाता है तथा जिन्हें जल दिया जाता है), 2. कुल के पूर्वज; ~**मनाणा** 1. पितरों को स्मरण करना, 2. श्राद्ध-कर्म करना; ~**रूसणा** 1. कुल देवी-देवता कुपित होना, 2. आपत्ति आना। **पितृ** (हि.)

पितलाणा (क्रि. अ.) 1. पीतल के पात्र में रखे खाद्य पदार्थ पर धातु का प्रभाव उतरना, 2. भोजन में धातु का कसैला स्वाद आना। **पितलाना** (हि.)

पितस (स्त्री.) दे. पीत्तस।

पिता (पुं.) बाप, (दे. बाब्बू)।

पिताणा (क्रि. अ.) विश्वास करना। **पतियाना** (हि.)

पितामह (पुं.) दे. दाद्दा।

पितृ-ऋण (पुं.) तीन ऋणों में से एक (पुत्र उत्पन्न करके इस ऋण से मुक्ति मिलती है)।

पितृ-कर्म (पुं.) श्राद्ध, तर्पण आदि कार्य।

पितृ-कुल (पुं.) पिता का वंश।

पितृ-तर्पण (पुं.) दे. तरपण।

पितृ-तिथि (स्त्री.) अमावस्या।

पितृ-दोष (पुं.) पितरों के कुपित होने का प्रभाव।

पितृ-पक्ष (पुं.) पितरों का लोक जो चन्द्र-लोक के ऊपर माना जाता है।

पित्ती (स्त्री.) दे. पित्त।

पिथौरा (पुं) दिल्ली के एक राजा, पृथ्वीराज चौहान।

पिथौरागढ़ (पुं.) दिल्ली नगर।

पिदणा (क्रि. अ.) 1. (गेंद आदि के) खेल में बार-बार बाजी देते प्रताड़ित होना, 2. बाजी देते-देते थकना, 3. बाजी न उतार सकने के कारण अपमानित या लज्जित होना।

पिद्दम-पिद्दा (पुं.) छोटे-छोटे गड्ढे खोदकर खेला जाने वाला (गींड-खुळी का) खेल जिसमें पाँच-सात बालक अपने गड्ढों पर खड़े होते हैं और बाजी देने वाला उन पर गेंद फेंकता है।

पिद्दा (पुं.) छोटा गड्ढा जो गेंद का खेल (गींड-खुळी) खेलते समय बहुधा एड़ी की दाब से बनाया जाता है और जिसमें खिलाड़ी अपना पैर अथवा लाठी का किनारा टेके रहता है और यदि बाजी देने वाला इसे खाली अवस्था में स्पर्श कर ले तो उसकी बाजी उतर जाती है।

पिद्दाणा (क्रि. स.) 1. बाजी देने वाले (गींड-खुळी के खेल में) की बाजी न उतरने देना और उसे इधर-उधर दौड़ाना, 2. खेल में हराना।

पिद्दी (स्त्री.) 1. एक छोटा पक्षी, 2. बहुत छोटा गड्ढा जो एड़ी की दाब से बनाया जाता है; (वि.) 1. नगण्य, 2. छोटा, नाटा; (क्रि. अ.) 'पिदणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलि. रूप।

पिनकना (क्रि. अ.) 1. अफीम आदि के नशे के कारण झूमना, 2. ऊँघना।

पिननी (स्त्री.) रुई धुनने या पीनने का यंत्र।

पिनसल[1] (स्त्री.) वह राशि जो सरकारी कर्मचारी को सेवा-मुक्त होने के बाद प्रति माह राजकोष से मिलती है; **~पाणा/होणा** 1. बिना परिश्रम के पैसे मिलते रहना, 2. सेवा-निवृत्ति के बाद पेंशन मिलना। **पेन्शन** (हि.)

पिनसल[2] (स्त्री.) सुरमी पेंसिल, सिक्के की पेंसिल। **पेंसिल** (हि.)

पिनहारी (स्त्री.) दे. पिसनहारी।

पिनारा (पु.) दे. धुनिया।

पिन्नस (स्त्री.) 1. एक वाहन विशेष, यथा-रथ मंझोल्ली पिन्नस ऊँच्चे, 2. नशे की अवस्था।

पिन्नी (स्त्री.) आटे, दाल आदि के लड्डू।

पिपया (पुं.) दे. पपैया।

पियक्कड़ (पुं.) 1. अधिक शराब पीने वाला 2. बोतलबाज।

पिया (पुं.) 1. प्रिय, 2. पति।

पिरड़ (वि.) मोटा-ताजा।

पिरथी[1] (स्त्री.) पृथ्वी, (दे. धरती)।

पिरथी[2] (पुं.) महाराज पृथ्वीराज।

पिरथीराज (पुं.) दे. पृथ्वीराज।

पिरभू (पुं.) 1. ईश्वर, 2. स्वामी। **प्रभु** (हि.)

पिरवा (स्त्री.) पूर्वी पवन, (दे. परवा)।

पिरस (स्त्री.) दे. परसा[1]।

पिराण (पुं.) जान, (दे. जी)। **प्राण** (हि.)

पिराणा (क्रि.) पीड़ा होना।

पिराणी[1] (पुं.) 1. मनुष्य, 2. जीवधारी। **प्राणी** (हि.)

पिराणी[2] (स्त्री.) दे. पिराण।

पिरितपाल (स्त्री.) प्रीतिपूर्वक पालना।

पिरोगराम (पुं.) कार्यक्रम, कार्यक्रम की योजना **प्रोग्राम**।

पिरोणा (क्रि. स.) पिरोना।

पिर्रो (स्त्री.) गुदा; **~चालणा** 1. दस्त लगना, 2. घबराना; **~बोलणा** 1. पादना, 2. भयभीत होना।

पिलंग (पुं.) पलंग, निवार आदि से बुनी चारपाई।

पिलखण (स्त्री.) गूलर के समान एक वृक्ष।

पिलचणा (क्रि. अ.) (कौर.) दे. पिलमणा।

पिलटण (स्त्री.) दे. पलटण।

पिलटणा (क्रि. अ.) 1. लिपटना, 2. गुँथना, 3. धींगामस्ती करना, 4. हाथापाई करना, (दे. पिलमणा)।

पिलणा (क्रि. अ.) 1. मारा-मारा फिरना, 2. जुटा रहना, 3. उलझना, हाथापाई करना, 4. पेरा जाना; (वि.) जो सुगमता से पिल सके।

पिलना (क्रि. अ.) दे. पिलणा।

पिलपिला (वि.) नर्म और गुदगुदा।

पिलपिलाणा (क्रि. अ.) पिलपिला होना, नर्म और गुदगुदा होना; (क्रि. स.) पिलपिला करना।

पिलपोट्टण (स्त्री.) अंगूर के समान बेल पर लगने वाला फल जो एक झिल्ली या आवरण के अंदर होता है।

पिलमणा (क्रि. स.) 1. जबरदस्ती लिपटना, 2. कुश्ती के लिए लिपटना, 3. आलिंगनबद्ध होना।

पिलवाणा (क्रि. स.) 1. पिरवाना, सरसों आदि को कोल्हू में डालकर तेल निकलवाना, 2. गन्ने का रस निकलवाना, 3. एक दंड (जिसके अनुसार मनुष्य को कोल्हू में डालकर पेल दिया जाता था), (दे. कुणबाघाणी), 4. किसी को बहुत दूरी के स्थान पर भिजवाना, 5. सताना, 6. खेल में धता देना, 7. पेय पदार्थ पीने में सहायता करना, 8. पिलाने का कार्य अन्य से करवाना। **पिलवाना** (हि.)

पिलसण (स्त्री.) दे. पिनसल[1]।

पिलहरू (पुं.) मिट्टी से बना पपीहा।

पिलाई[1] (स्त्री.) 1. पेलने या पेरने की क्रिया, 2. पेरने की मजदूरी, 3. पीड़ा पहुँचाने का भाव। **पिराई** (हि.)

पिलाई[2] (पुं.) एक डंकदार जंतु।

पिलाणा (क्रि. स.) 1. पिलवाना, 2. (दे. प्याणा)।

पिलाना (क्रि. स.) दे. प्याणा।

पिलूरा (पुं.) दे. पिल्ला।

पिल्ला (पुं.) 1. कुतिया का छोटा बच्चा, 2. बच्चा; (वि.) खुशामदी, चापलूस, पिछलग्गू।

पिवाणा (क्रि.) दे. पिलाणा।

पिशाच (पुं.) एक हीन देव-योनि, भूत।

पिस (स्त्री.) प्यास, पिपासा। दे. तिस।

पिसणहारी (स्त्री.) 1. दूसरों का आटा पीस-पीस कर जीवन-यापन करने वाली, 2. चक्की पीसने वाली।

पिसणा (क्रि. अ.) 1. पीसा जाना, 2. अधिक कार्य करना। **पिसना** (हि.)

पिसना (क्रि. अ.) दे. पिसणा।

पिसवाना (क्रि. स.) दे. पिसाणा।

पिसाई (स्त्री.) 1. पीसने की मजदूरी, 2. पीसने का काम; (वि.) प्यासी (तुल. तिसाई); (क्रि. स.) 'पिसाणा' क्रिया का भू. का. स्त्रीलिं., एकव. रूप; ~**पीसणा** आटा पीसकर जीवन बिताना; ~**खुँटाई** अन्न साफ करने और उसे पीसने का कार्य।

पिसाणा (क्रि. स.) 1. पिसवाना, 2. पीसने का काम अन्य से कराना।

पिसाना (क्रि. स.) दे. पिसाणा।

पिसाब (पुं.) 1. मूत्र, 2. वीर्य, बीज; ~**करणा/लिकड़णा** डरना, भयभीत होना; ~**बंध होणा** बहुत घबराना, (दे. बंधा); ~**मैं दीवा जलणा** धाक जमना। **पेशाब** (हि.)

पिसाया (वि.) 1. प्यासा, 2. इच्छुक, लालायित; (क्रि. स.) 'पिसाणा' क्रिया का भू. का., एकव. पुं. रूप।

पिसोरी (वि.) पेशावर से संबंधित।

पिसौर (पुं.) पेशावर नगर (जो अब पाकिस्तान में है)।

पिसौरी (वि.) पेशावर नगर से संबंधित **पेशावरी** (हि.)

पिस्ता (पुं.) एक सूखा मेवा विशेष।

पिस्तो (स्त्री.) 1. पश्तो, 2. वह भाषा जो समझ में न आए।

पिस्तौल (पुं.) पिस्टल, छोटी नाली की बंदूक।

पिस्सा (पुं.) दे. पइसा।

पिस्सू (पुं.) कुत्ते-बिल्ली के शरीर की जूँ, (दे. पीहू)।

पिहरानी (पुं.) प्राणी। उदा.–मेरी अकल बही, के कसर रही, कई कई पिहरानी छोड़ आया। (लचं)

पिहाण (पु.) 1. भारी पत्थर या ढेला, 2. भारी ढक्कन। 3. पाहन।

पिहीर (पुं.) दे. पीहर।

पिह्रोत (पुं.) 1. गाँव या परिवार का पंडित, 2. पंडित; ~**लागणा** सम्मानित या पूज्य व्यक्ति होना या समझा जाना–कै तूँ न्यारा एक पिह्रोत लाग्गै सै? **पुरोहित** (हि.)

पिह्रोताई (स्त्री.) 1. पंडिताई, पुरोहितपन का कार्य, 2. पुरोहित की दक्षिणा, 3. अधिकार, स्वामित्व; ~**चालणा** आस-पास के क्षेत्र में पुरोहित का कार्य करना। **पुरोहिताई** (हि.)

पीं (स्त्री.) 1. हॉर्न से उत्पन्न बारीक ध्वनि, 2. पीं-पीं की ध्वनि।

पींग/पींघ (स्त्री.) 1. झूल, झूल की रस्सी, 2. (दे. झोट्टा[2]); ~**बधाणा** पेंग भरना, पेंग बढ़ाना। **पेंग** (हि.)

पींघलणा (क्रि. अ.) 1. गर्मी के कारण घी आदि पदार्थ का पतला होना, 2. जल में चीनी आदि का मिलकर विलीन होना, 3. पसीजना, 4. द्रवित होना; (वि.) जो शीघ्र पिघले। **पिघलना** (हि.)

पींजणा (क्रि. स.) 1. धुनना–मकड़ी नैं मच्छर पकड़ कै पींज गिर्‌या, 2. रूई आदि धुनना। **पींजना** (हि.)

पींजर (पुं.) दे. पींज्जर।

पींजरा (पुं.) 1. चूहेदान, 2. पालतू पशु-पक्षी रखने का ढक्कनदार पात्र विशेष,

3. कैदखाना, 4. कटघरा, 5. हड्डियों का ढाँचा, 6. शरीर। **पिंजरा** (हि.)

पींजरी (स्त्री.) मुर्दे की अर्थी।

पींज्जर (वि.) हड्डियों का ढाँचा; (वि.) कृशकाय। **पिंजर** (हि.)

पींज्जा (पुं.) रूई धुनने वाला।

पींझू (पुं.) दे. पीच्चू।

पींड (स्त्री.) दे. पींद।

पींडवा (स्त्री.) दे. पिछवा।

पीड़िया (पुं.) दे. मूठिया।

पींड्डा (पुं.) 1. लौंदा या पिंड, 2. चूरमे का पिंड या पींडी 3. चरखे की नाभि। **पिंड** (हि.)

पींड्डी (स्त्री.) 1. पिंडली, 2. लड्डूनुमा पिंड, 3. कुम्हार का एक उपकरण; **~काँपणा/हालणा** आतंकित होना। **पींडी** (हि.)

पींणण (स्त्री.) रुई पीनने का बेलनाकार सोटा।

पींद/पींद्दी (स्त्री.) 1. छत्ते का वह भाग जिसमें शहद होता है, 2. मटके आदि की तली, 3. तली, 4. ताकू के बीच की मोटी पेंदी। **पेंदी** (हि.)

पी (पुं.) 1. पति, 2. पपीहा, 3. प्रेमी; (स्त्री.) 1. पपीहे की बोली, 2. पी-पी की ध्वनि।

पीकदान (पुं.) उगालदान।

पीचरा (वि.) दे. कचूमर।

पीच्चू (पुं.) 1. ज्येष्ठ में करील पर लगने वाला लाल फल जो स्वाद में मीठा होता है, 2. पका टेंट, (दे. टींट); **~सा** लाल रंग का, गहरे लाल रंग का।

पीछला (वि.) दे. पाछला।

पीछा (पुं.) दे. पाच्छा।

पीछे (क्रि. वि.) दे. पाच्छै।

पीटणा (क्रि. स.) 1. पिटाई करना, 2. लोहे आदि धातु को छेतना, 3. लकीर पीटना; **रीस~** 1. ईर्ष्या करना, 2. अंधानुकरण करना; **ल्हीक~** परंपरा निभाना। **पीटना** (हि.)

पीटना (क्रि. स.) दे. पीटणा।

पीट्ठी (स्त्री.) दाल आदि पीस कर बनाई गई लुगदी। **पीठी** (हि.)

पीट्ठी-दाँत्ती (स्त्री.) गन्ने की छोल में काम आने वाली बिना दाँतरों की दाँती। (दे. दराँत्ती)।

पीठ (स्त्री.) 1. कमर, (दे. कड़), 2. पीछे का भाग।

पीठिया (वि.) एक संतान के बाद उत्पन्न अगली संतान।

पीठी (स्त्री.) दे. पीट्ठी।

पीड़ (स्त्री.) 1. शारीरिक या मानसिक कष्ट, 2. रोग, व्याधि, 3. दर्द–मेरै ऊट्ठैं थीं पीड़, तूँ तै सोवै था नींद, नाँ द्यूँ नाँ द्यूँ पँजीरियाँ (लो.गी.)। **पीड़ा** (हि.)

पीड़ा (स्त्री.) दे. पीड़।

पीड़ित (वि.) 1. पीड़ायुक्त, 2. रोगी, 3. दबाया हुआ, दमित।

पीड्ढा (पुं.) छोटा खटोला; **~देणा** सम्मान देना; **~मूद्धा मारणा** अपशकुन करना। **पीढ़ा** (हि.)

पीड्ढी[1] (स्त्री.) 1. छोटा पीढ़ा, 2. छोटी और नीची चारपाई। **पीढ़ी** (हि.)

पीड्ढी[2] (स्त्री.) वंश-परंपरा, पुश्त; **~उघड़वाणा/ खुल्हवाणा/ बंचवाणा** वंश-नामावली जानने के लिए गंगा के पंडे या अन्य तीर्थ-स्थल के पंडे से बही दिखवाना; **~उघड़णा** 1. कोसना, 2. वंशावली का वर्णन करना;

~**चालणा** वंश-परंपरा चलना; ~**पाटणा** सातवीं पीढ़ी से वंश-परंपरा अलग होना; ~**पाड़णा** 1. अपनी वंश-परंपरा से हट कर नई पुश्त मानना, 2. वंशावली का वर्णन करना। **पीढ़ी** (हि.)

पीढ़ा (पुं.) दे. पीड्ढा।

पीढ़िया कोल्हू (पुं.) पीढ़ी या लकड़ी का कोल्हू।

पीढ़ी (स्त्री.) 1. दे. पीड्ढी[1], 2. दे. पीड्ढी[2]।

पीणस (स्त्री.) रुई पीनने का बेलनाकार सोटा।

पीणा (क्रि. स.) 1. घूँटना, 2. शराब पीना, 3. क्रोध को वश में रखना, 4. बात पचा लेना, 5. हुक्का आदि पीना, 6. सोख लेना, 7. संपत्ति हड़पना; (वि.) जो शीघ्र सोख ले। **पीना** (हि.)

पीतंबर (पुं.) 1. पीले वस्त्र धारण करने वाला, 2. श्रीकृष्ण। **पीतांबर** (हि.)

पीतल (पुं.) दे. पीत्तळ।

पीतळिया (पुं.) कई बार का कुटा भूसा। दे. पीत्तळिया।

पीत्तळ (पुं.) एक धातु। **पीतल** (हि.)

पीत्तळिया (पुं.) 1. तली, 2. दिवालियापन की अवस्था, 3. अत्यंत अभाव की अवस्था, 4. भंडारे में सामान समाप्त होने का भाव; ~**काढ़णा** 1. भंडारे की सभी वस्तुएँ समाप्त कर देना, 2. अत्यंत अभाव या निर्धनता की स्थिति में पहुँचाना, 3. पूरी तरह लूटना।

पीत्तस (स्त्री.) पति की चाची, चाची-सास। **पीतस** (हि.)

पीत्तसरा (पुं.) पति का चाचा, चाचा-ससुर, पीतस का पति। **पीतसरा** (हि.)

पीन (पु.) दे. खागड़।

पीनणा (क्रि. वि.) रूई धुनना।
पीनना (हि.)

पीना (क्रि. स.) दे. पीणा।

पीप (स्त्री.) मवाद। **पीब** (हि.)

पीपनी (स्त्री.) बच्चों का एक बाजा।

पीपल (पुं.) दे. पीप्पळ।

पीपळी (स्त्री.) 1. छोटे या हल्के आकार का पीपल, 2. पीपल का फल जो ग्रीष्म में लगता है, पीपलबंटी, 3. पीपल की कोंपल। **पिपली** (हि.)

पीपसी (स्त्री.) कोंपल।

पीपा (पुं.) दे. पीप्पा।

पीपू (पुं.) अधपकी ईंट।

पीप्पळ (पुं.) 1. एक विशालकाय वृक्ष जिसे हिन्दू पवित्र मानते हैं तथा जिसकी पूजा की जाती है, इसमें देवता तथा भूतों का निवास भी माना जाता है (इसे काटना पाप माना जाता है), 2. एक ओषधि जो कुछ-कुछ लौंग-सी लंबी-काली होती है; ~**गाणा** विवाह के समय पीपल का गीत गाना; ~-**पत्ती से होठ** पतले ओष्ठ; ~-**बड़ बधणा** 1. वयस्क होना, 2. दाढ़ी-मूँछ आना; ~**पूजणा** संतानोत्पत्ति के बाद पीपल-पूजन की रस्म संपन्न करना; ~**फलणा** 1. वंश-वृद्धि होना, 2. पुष्य का फल मिलना; ~**लाणा** पुण्य कार्य करना; ~**सींचणा** 1. पीपल में पानी देना, 2. पुण्य कार्य करना। **पीपल** (हि.)

पीप्पळ-बंटी (स्त्री.) पीपल पर लगने वाला फल (यह ग्रीष्म में लगता है)
पीपलबंटी (हि.)

पीप्पा (पुं.) कनस्तर।

पीप्पी (स्त्री.) छोटी कनस्तरी। **पीपी** (हि.)

पीर (पुं.) मुसलमानों का देवता या सिद्ध; (स्त्री.) दे. पीड़।

पीरी[1] (स्त्री.) 1. हुकूमत, अधिकार-क्षेत्र, 2. आदेश, 3. पीरपन; **~चालणा** 1. वश चलना, 2. आदेश चलना।

पीरी[2] (पु.) उँगलियों के निशान। दे. पोरवा।

पीरोगदा (पुं.) पीर और भिखारी, उदा. –क्या शहनशाह और पीरोगदा (लचं)।

पील (स्त्री.) दे. पील्ह।

पीळक (स्त्री.) पीलापन।

पीलड़ा (पुं.) दे. पीलिया।

पीलड़ी (पुं.) दे. पीळा।

पीलरू (पुं.) फूँक का बाजा।

पीलवाण (पुं.) गूजरों का एक गोत।

पीलवान (पुं.) हाथीवान। **फीलवान** (हि.)

पीला (वि.) दे. पीळा।

पीळा (वि.) 1. पीले वर्ण का, 2. कांतिहीन, फीका; (पुं.) दे. पीळिया[1]; **~गीत** पीलिया या छूछक आने पर गाया जाने वाला गीत; **~(-ळी) चिट्ठी** विवाह के निमंत्रण की चिट्ठी; **~पड़ना/होणा** 1. हक्का-बक्का रह जाना, 2. निस्तेज होना, 3. खून सूखना, 4. फलादि का पकना, पकना; **~(-ळे) बाद्दळ** सूर्योदय से पूर्व का समय; **~रँगाणा** पुत्र-जन्म पर पीले रंग की ओढ़नी बनवाना; **~(-ले) हाथ करणा** (पुत्री का) विवाह रचना, लड़की का विवाह होना। **पीला** (हि.)

पीळापण (पुं.) जर्दी, पीला होने का भाव। **पीलापन** (हि.)

पीलिया (पुं.) दे. पीळिया[1, 2]

पीळिया[1] (पुं.) 1. पीले रंग की बड़े छापे की ओढ़नी, 2. वह ओढ़नी जिसे पिता अपने दैहित्र के जन्म पर पुत्री के लिए भेजता है और जिसे ओढ़कर वह कूआँ पूजती है।

पीळिया[2] (पुं.) एक रोग, पीलिए का रोग जिसमें सब चीजें पीली नजर आती हैं।

पीळी (वि.) पीले रंग की; (स्त्री.) 1. गाँव का वह भू-भाग जिससे पीली मिट्टी निकलती है, 2. सूर्योदय से पहले की बेला; **~पाट्याँ/हुयाँ** पौ फटने से पूर्व का समय; **~माट्टी** 1. चौके-आँगन को पोतने के काम आने वाली पीली और चिकनी मिट्टी, 2. (दे. मुल्तान्री)। **पीली** (हि.)

पीळे-चावळ (पुं.) 1. कटहली के चावल, 2. शुभ-निमंत्रण सूचक चावल जिन्हें हल्दी में रंग कर पीला कर दिया जाता है।

पील्ला (वि.) 1. वस्तु जो आवे या भट्ठे में पूरी तरह न पक सकी हो, 2. 'खंघर' का विलोम, 3. कमजोर, दुर्बल 4. कच्चा (पात्र)।

पील्ली (वि.) 1. अधपकी, 2. पीले रंग की। **पीली** (हि.)

पील्ह् (स्त्री.) ग्रीष्म-ऋतु में जाल के वृक्ष पर लगने वाला अंगूर से छोटे आकार का बीजदार फल जिसके अधिक खाने से जीभ फट जाती है। **पीलू** (हि.)

पील्ह्या (वि.) दे. पील्ला।

पीव (पुं.) 1. पति, 2. स्वामी, 3. पपीहा; (स्त्री.) पी-पी की ध्वनि।

पीवड़ा (पु.) एक पक्षी।

पीवणा (क्रि. स.) पीना; (वि.) जो अधिक पिए।

पीस (स्त्री.) ताश के पत्तों को बाँटने का काम; (क्रि.स.) 'पीसणा' क्रिया का आदे. रूप; **~आणा** ताश की बाजी आना; **~तारणा** ताश के खेल की

बाजी उतारना।

पीसणा (पुं.) वह अन्न जो पीसने के लिए साफ कर लिया गया हो; (क्रि. स.) 1. पिसाई करना, 2. ध्वस्त करना; ~**करणा** पिसवाने या पीसने से पूर्व अन्न को साफ करना; ~**पोसणा** पिसाई करके जीवन-यापन करना; ~**पोणा** 1. गृहस्थी का मुख्य काम करना, 2. खाने-पीने का काम करना। **पीसना** (हि.)

पीसणी (स्त्री.) अन्न, जो किसी पिसनहारी से पिसवाया जाता है; (वि.) पीसने में कुशल; ~**पिसवाणा** 1. विवाह के समय अधिक कार्यवश पाँच-दस सेर अन्न हर पास-पड़ोस के घर में निःशुल्क पीसने के लिए देना, 2. पिसनहारी से पिसवाना।

पीसना (क्रि. स.) दे. पीसणा।

पीसा (पुं.) 1. दे. पैसा, 2. दे. पइसा।

पीहर (पुं.) स्त्री के पिता का घर।

पीहू (पुं.) बिल्ली-चूहे की जूँ; (स्त्री.) 1. मोर की ध्वनि, 2. पपीहे की ध्वनि। **पिस्सू** (हि.)

पीह्ल (स्त्री.) दे. पील्ह्।

पुंगल (स्त्री.) कोंपल।

पुंगलोतवाटी (स्त्री.) एक मेवाती खाप।

पुंबी (स्त्री.) दे. पपीरी।

पुल्लिंग (पुं.) 1. पुरुष का चिह्न, 2. पुरुषवाचक शब्द, 3. (दे. नर)।

पुआड़ (पुं.) खरीफ की फसल में उगने वाली चौड़े पत्तों की बेल।

पुआड़ा (पुं.) दे. पवाड़ा।

पुआणा[1] (पुं.) दे. पवाणा।

पुआणा[2] (क्रि. स.) रोटी पोने का काम अन्य से करवाना।

पुआणा[3] (क्रि. स.) 1. सूई में धागा डलवाना, 2. हार आदि गुँथवाना।

पुकार (क्रि. स.) 1. आर्त निवेदन, 2. टेर, 3. रक्षा के लिए पुकारने का भाव; (क्रि. स.) 'पुकारणा' क्रिया का आदे. रूप।

पुकारणा (क्रि. स.) 1. तेज आवाज देकर बुलाना, 2. भूत-प्रेत आत्मा का किसी के माध्यम से बोलना (तुल. बबकारणा), 3. आत्म-निवेदन करना, 4. टेरना। **पुकारना** (हि.)

पुकारना (क्रि. स.) दे. पुकारणा।

पुखराज (पुं.) एक पीला रत्न।

पुख्ता (वि.) पक्का, दृढ़।

पुगणा (क्रि. अ.) 1. खेल की बाजी जीतना, 2. काम में सफलता मिलना, 3. उस पार जाना, भवसागर उतरना; (वि.) खेल के लिए प्रयुक्त वह कंकर या पाँसा आदि जो बाजी जिताने में सहायक हो। **पुगना** (हि.)

पुगवाणा (क्रि. स.) पुगने में सहायता करना।

पुगाणा (क्रि. स.) 1. निबाहना, 2. वचन पूरा करना, 3. बेड़ा पार कराना, सफलता दिलाना, 4. बाजी जिताना। **पुगाना** (हि.)

पुगाना (क्रि. स.) दे. पुगाणा।

पुग्गम-पुग्गा (पुं.) बच्चों का एक खेल जिसमें वे किसी के सिर पर दोनों हाथों की मुट्ठी रखकर कुछ बोलते हैं, (दे. कुकड़म-कुकड़ा)।

पुचकारणा (क्रि. स.) 1. बड़े व्यक्ति द्वारा छोटे के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देना, 2. रोते बच्चे को सहलाना या मनाना, 3. पशु को संकेत देते हुए मुँह से कुछ 'पुच'-'पुच' की ध्वनि निकालना, 4. पशु की पीठ पर हाथ

रखकर सहलाना तथा मुँह से कुछ ध्वनि निकालना, 5. रूठे को मनाना।
पुचकारना (हि.)

पुचकारना (क्रि. स.) दे. पुचकारणा।

पुचकारी (स्त्री.) पशु को (बैल को) प्रेरित करने के लिए मुँह से 'पुच'-'पुच' की ध्वनि निकालने का भाव; (क्रि. स.) 'पुचकारणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं., एकव. रूप; **~देणा** पशु को प्रेरित या उत्तेजित करना।

पुच्छल (वि.) दे. पूँच्छल।

पुछल्ला (पुं.) भारी पूँछ, पूँछ; (वि.) 1. पिछलग्गू, 2. खुशामदी।

पुजणा (क्रि.अ.) पूजा जाना। **पुजना** (हि.)

पुजना (क्रि. अ.) दे. पुजणा।

पुजवाणा (क्रि. स.) दे. पुजाणा।

पुजाई (स्त्री.) 1. पूजने का भाव, 2. भरपेट भोजन करने का भाव, 3. पुजापा, 4. पिटाई (व्यंग्य में); **~करणा** 1. पूजना, 2. मरम्मत करना, 3. पेट-पूजा करना।

पुजाणा (क्रि. स.) पूजा करवाना।
पुजवाना (हि.)

पुजाना (पुं.) दे. पुजाणा।

पुजापा (पुं.) दे. पुजाप्पा।

पुजाप्पा (पुं.) 1. पूजा का सामान, वह सामान जो देवी-देवता पर चढ़ाया जाता है, 2. पूजा से प्राप्त दक्षिणा।
पुजापा (हि.)

पुजारी (पुं.) पूजा-पाठ कराने वाला।

पुट (स्त्री.) बहुत हल्का मेल, अल्प मिश्रण।

पुटपड़ी (स्त्री.) कान के पास सिर का भाग जहाँ नब्ज चलती है।

पुटळिया (स्त्री.) 1. छोटी गठरी, 2. वस्त्र के कोने पर बँधी छोटी गठरी, 3. छोटा बटुआ, 4. छोटी गठरी जिसके अंदर की वस्तु का भेद ज्ञात न हो।
पोटली (हि.)

पुठपैरा (वि.) 1. दे. डोई। विलोमगामी।

पुड़त (स्त्री.) तह, दल। **परत** (हि.)

पुड़ा (पुं.) 1. मिठाई का पिटारा, 2. कागज का लिफाफा, 3. छोटी पोटली।

पुड़िया[1] (स्त्री.) 1. काली स्याही की पुड़ी, 2. पुड़ी जिसमें दवाई बाँधी गई हो, 3. बहुत थोड़ी मात्र में बाँधी गई कोई वस्तु, 4. ताबीज, 5. जादू की पिटारी, 6. रहस्यमय बात; **~खोलणा** रहस्य प्रकट करना; **गुप-चुप की~** रहस्य भरी बात।

पुड़िया[2] (स्त्री.) बाड़ी (कपास) की बंद डोडी। दे. पुड़िया।

पुणक (स्त्री.) वह उपकरण जिसे कपड़ा बुनते समय इस उद्देश्य से प्रयोग में लाते हैं कि कपड़े में तिरछापन न आने पाए।

पुणवास्सी (स्त्री.) पूर्णिमा तिथि।
पूर्णिमा (हि.)

पुण्य (पुं.) दे. पुन।

पुण्यभूमि (स्त्री.) आर्यवर्त।

पुतणा (क्रि.अ.) पोता जाना। **पुतना** (हि.)

पुतर (पुं.) 1. संतान, 2. लड़का।
पुत्र (हि.)

पुतला (पुं.) 1. खेत का डराया, 2. भूसे, कपड़े आदि की मनुष्य की आकृति, 3. जादू-टोने की आकृति, 4. शरीर, 5. मनुष्य। **पुतला** (हि.)

पुतली (स्त्री.) 1. दे. पुतळी, 2. दे. माणसिया।

पुतळी (स्त्री.) दे. पूतळी।

पुताई (स्त्री.) 1. पोतने या लीपने की क्रिया, 2. पोतने का पारिश्रमिक; (क्रि.

स.) 'पोतणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलि०, एकव. रूप।

पुत्र (पुं.) दे. पुतर।

पुत्रवती (स्त्री.) पुत्र वाली।

पुत्रवधू (स्त्री.) पुत्र की पत्नी।

पुत्री (स्त्री.) बेटी, दे. छोहरी।

पुदीना (पुं.) दे. पुदीन्ना।

पुदीन्ना (पुं.) एक पौधा जिसके पत्तों की चटनी बनती है। **पोदीना** (हि.)

पुन (पुं.) 1. पुण्य, दान-कर्म, 2. धार्मिक कार्य।

पुनखात्ता (पुं.) दे. धरमाद्दा।

पुनरजन्म (पुं.) अगला जन्म; **~पाणा** 1. खतरे से बच निकलना, 2. मृत्यु के बाद अगला जन्म पाना। **पुनर्जन्म** (हि.)

पुनरब्याह (पुं.) दूसरा विवाह। **पुनर्विवाह** (हि.)

पुनरावृत्ति (स्त्री.) दोहराई।

पुनर्जन्म (पुं.) दे. पुनरजनम।

पुन्नदान (पुं.) पुण्यदान।

पुन्याई (स्त्री.) 1. प्रताप, 2. संतति, 3. पुण्य-कर्म; **~फळणा/बधणा** 1. धर्म का फलना-फूलना, 2. संतति बढ़ना।

पुन्यो (स्त्री.) पूर्णमासी, पूर्णिमा।

पुपळवाणा (क्रि. स.) सहलवाना, फुँसी को सहलवाना।

पुरंजणी (स्त्री.) पुंरजन की पत्नी। माया।

पुरंजन (पुं.) 1. भागवत कथा का एक पात्र। 2. ईश्वर।

पुर (पुं.) 1. नगर, 2. गाँव के नाम के साथ जुड़ने वाला प्रत्यय, 3. गढ़-ईब के तूँ पुर मैं जा बस्या जो नाँ हिथ्यावैघा (हाथ नहीं आवेगा), 4. लोक, 5. गत, पूर्व; (स्त्री.) पुर-पुर की ध्वनि।

पुरकै (पुं.) गत वर्ष; **~(-का) बास्सी** 1. गत वर्ष का, 2. पुराना।

पुरख (पुं.) पुरुष, मनुष्य; (स्त्री.) साढ़े तीन हाथ की लंबाई का नाप, (दे. पुरस)।

पुरखा (पुं.) पूर्वज।

पुरजा (पुं.) 1. मशीन का कोई खंड, 2. शरीर का अंग, 3. कागज पर लिखा प्रमाण-पत्र; **~जोड़णा** 1. बंद काम फिर से चालू करना, 2. काम बनाना; **~पुरजा करणा** 1. खंड-खंड करना, 2. नष्ट-भ्रष्ट करना। **पुर्जा** (हि.)

पुरड़का (पुं.) पशुओं की साँस की बीमारी।

पुरबला (वि.) 1. गत समय का, 2. गत जीवन का; **~(-ले) लेख** गत जन्म के कर्म-फल।

पुरबिया (पुं.) 1. पूर्व देश का वासी, 2. पूर्व देश का व्यक्ति जो अभाव की स्थिति में खेतीबाड़ी या मजदूरी का काम करने आया हुआ हो और जो अपनी बोली, पोशाक तथा शारीरिक गठन से अलग से पहचाना जा सकता हो, 3. यमुना या गंगा पार का वासी, (दे. पारवा)।

पुरळ (स्त्री.) पुरल-पुरल की ध्वनि, (दे. पुरळकी)।

पुरळक (स्त्री.) वमन, उल्टी; **~मारणा** 1. कै या वमन करना, 2. पतले दस्त आना, 3. (दे. पुरळकी)।

पुरळका (पुं.) अचानक आने वाली कुछ समय की वर्षा।

पुरळकी (स्त्री.) छोटी पुरल, परल या घ्योरी (ज्वार, बाजरे की पूलियों की क्रमिक ढेरी)।

पुरळ-पुरळ (स्त्री.) दे. परळ-परळ।

पुरला (पुं.) दे. भूसा।

पुरळी (स्त्री.) 1. अनी या नोक की सुरक्षा के लिए उस पर लगाया जाने वाल खोल, 2. लोंग से बड़ा नाक का छिद्रदार आभूषण विशेष, पुरली, 3. हल का एक उपकरण, 4. पोत, शीशे की रंगीन नली जो कशीदाकारी के काम आती है।

पुरवाई (स्त्री.) दे. परवा[3]।

पुरस (पुं.) 1. आदमी, 2. मनुष्य की अपनी लंबाई के समान का नाप जो एक हाथ की अंगुली से दूसरे हाथ की अंगुली तक छाती से होती हुई लंबाई जितना होता है; **~गेरणा** 'पुरस' के बराबर रस्सी या डंडा लेकर भूमि को नापना। **पुरुष** (हि.)

पुरसारथ (पुं.) 1. परोपकार, 2. सामर्थ्य, 3. परिश्रम। **पुरुषार्थ** (हि.)

पुरसोत्तम-मास (पुं.) दे. परसोत्तम मास।

परुस्कार (पुं.) इनाम, पारितोषिक।

पुराण (पुं.) प्राचीन धार्मिक ग्रंथ जो रोचक कथाओं से परिपूर्ण हैं।

पुराणा (वि.) 1. प्रयोग में लाया हुआ, 2. पूर्व समय से संबंधित, 3. जीर्ण-शीर्ण, 4. अनुभवी, 5. अप्रचलित; **~करणा** 1. उपयोग द्वारा जीर्ण-शीर्ण कर देना, 2. बात को भुला देना; **~-धुराणा** फटा-पुराना। **पुराना** (हि.)

पुराना (वि.) दे. पुराणा।

पुरारकै (क्रि. वि.) 1. गत से गत वर्ष, 2. अगले से अगले वर्ष।

पुराळ (पुं.) चावल का छिलका या भूसी।

पुरी (स्त्री.) 1. नगरी, 2. पवित्र नगरी, 3. जगन्नाथपुरी, 4. पूर्वी पवन।

पुरुष (पुं.) दे. पुरस।

पुरुष-वृषभ (पुं.) नर-वृषभ (कुछ जातियों में शक्ति और सौंदर्य बनाए रखने के लिए पुरुष-वृषभ (साँड) छोड़ने का विधान था, अब यह प्रथा बंद हो गई है)।

पुरुषार्थ (पुं.) 1. परिश्रम, 2. सामर्थ्य।

पुरुषार्थी (वि.) 1. उद्यमी, 2. सामर्थ्यवान।

पुरुषोत्तम (पुं.) 1. श्रीकृष्ण, 2. ईश्वर, 3. विष्णु, 4. मलमास।

पुरोहित (पुं.) दे. पिह्‌रोत।

पुलंदा (पुं.) ढेरी, कागज आदि की ढेरी या बंडल।

पुल (पुं.) दे. पुळ।

पुळ (पुं.) 1. सेतु, 2. पात्र आदि का ऊपरी किनारा, 3. मेंड़; **~(-लाँ) ताँहीं भरणा** पूरा भरना, किनारे तक (पानी) भरना; **~बाँधणा** 1. बड़ाई करना, 2. बात का बतंगड़ बनाना, 3. मेंड़ लगाना। **पुल** (हि.)

पुलट (स्त्री.) पलटने की क्रिया।

पुलटस (स्त्री.) घाव पर बाँधने के लिए आटे, गुड़, तेल, हल्दी आदि को राँधकर बनाया गया सख्त घोल। **पुल्टिस** (हि.)

पुळमपुळ (वि.) किनारे तक भरा हुआ, पूरा भरा हुआ, लबालब।

पुलस्य (पुं.) 1. रावण के पिता, 2. एक ऋषि। **पुलत्स्य** (हि.)

पुवाड़ (पुं.) वर्षा-ऋतु में उगने वाला एक पौधा जिसके पत्तों का साग बनाया जाता है।

पुवाड़ा (पुं.) दे. पवाड़ा।

पुश्त (स्त्री.) 1. वंश-परंपरा, 2. पृष्ठ, पीठ, 3. (दे. पुस्ता)।

पुश्ता (पुं.) दे. पुस्ता।

पुश्तैनी (वि.) दे. दाद्दालाही।

पुष्कर (पुं.) दे. पुसकर।

पुष्प (पुं.) फूल।

पुष्पक (पुं.) कुबेर का विमान।

पुष्पदंत (पु.) रोहतक के जैन मतावलंबी कवि, जिनकी रचनाएँ हैं–नाथकुमार चरिउ, जसहर चरिउ, तिसाठी गुणालंकार।

पुष्पवाटिका (स्त्री.) फुलवारी।

पुसकर (पुं.) तीर्थराज पुष्कर। **पुष्कर** (हि.)

पुसतक (स्त्री.) 1. किताब, 2. धार्मिक पोथी, 3. संस्कृत भाषा की पोथी। **पुस्तक** (हि.)

पुसाक (स्त्री.) वस्त्र, सिले वस्त्र। **पोशाक** (हि.)

पुसाणा (पुं.) दे. पवसाणा।

पुस्तक (पुं.) दे. पुसतक।

पुस्तकालय (पुं.) लाइब्रेरी, वाचनालय।

पुस्ता (पुं.) बाँध, ऊँची मेंड़। **पुश्ता** (हि.)

पूंई (स्त्री.) वह मजदूर जो पैसे के बदले कपास चूँटता है।

पूंगी[1] (स्त्री.) गेहूँ को लगने वाला एक कीट।

पूँगी[2] (स्त्री.) गेहूँ का एक कीड़ा। दे. कूँगी।

पूँच्छड़ (पुं.) पूँछ, दुम; **~पाड़णा** हानि पहुँचाना–कै तनैं मेरी पूँच्छड़ पाड़ ली; **~बाँक्की नाँ होणा** कोई हानि न पहुँचना।

पूँच्छल (वि.) पूँछल, लंबी पूँछ वाला।

पूँछ (स्त्री.) दे. पूँच्छड़।

पूँछणा (क्रि. स.) 1. रगड़ कर साफ करना, 2. (दे. बूझणा)। **पूछना** (हि.)

पूँजड़ी (स्त्री.) दे. पूँछड़ी।

पूँजी (स्त्री.) 1. संचित धन, 2. व्यापार में लगाया हुआ धन।

पूँजीपति (पुं.) धनवान।

पूँज्जा (पुं.) रस्सी आदि बनाने के लिए निकाला गया सन, मूँज आदि का कुछ अंश; **~फेरणा** 1. रस्सी बाँटने के बाद उसमें बल चढ़ाने से पूर्व एक पूँजा और गूँथना, 2. चौपट करना। **पूँजा** (हि.)

पूँज्झड़ (स्त्री.) दे. पूँच्छड़।

पूँझड़ी (स्त्री.) कुम्हार की कूँची जिससे वह बर्तन चित्रित करता है।

पूंबी (स्त्री.) बच्चों की पिपनी।

पूआ (पुं.) दे. पूड़ा।

पूच्छी (स्त्री.) पशु की संख्या अनुसार लगाया जाने वाला कर।

पूछ (स्त्री.) 1. सम्मान, आदर, 2. पूछने का भाव, (दे. बूझ)।

पूछड़ा (पुं.) पूँछ, दुम, लंबी दुम; **~ठाणा** 1. न करने योग्य काम करने के लिए लालायित होना, 2. पशु का उन्मादित स्थिति में पूँछ उठाकर भागना; 3. वर्जित स्थान पर जाने के लिए लालायित होना; **~ठा कै आणा** अवांछित रूप से किसी के घर पहुँचना।

पूछड़ी (स्त्री.) हल्की और ओछी पूँछ, पूँछ जिस पर कम बाल हों।

पूछणा (क्रि. स.) 1. पोंछा देना, 2. (दे. बूझणा)। **पूछना** (हि.)

पूछना (क्रि. स.) दे. बूझणा।

पूजक (पुं.) पुजारी।

पूजणा (क्रि. स.) 1. पूजा करना, 2. पिटाई करना (व्यंग्य में)। **पूजना** (हि.)

पूजन (पुं.) दे. पूज्जन।

पूजना (क्रि. स.) दू. पूजणा।

पूजनीय (वि.) 1. पूजा-योग्य, 2. आदरणीय।

पूज-लगन (पुं.) विवाह की सिद्धि न होने पर किसी ग्रह की पूजा करके संपन्न होने वाला विवाह।

पूजा (स्त्री.) दे. पूज्जा।

पूज्जन (पुं.) 1. पूजा की क्रिया, 2. आदर, सम्मान।

पूज्जा (स्त्री.) 1. मूर्ति, देवता आदि की पूजा करने का कृत्य, 2. पेट-पूजा, 3. पिटाई (व्यंग्य में)। **पूजा** (हि.)

पूज्य (वि.) पूजनीय।

पूट्ठा (पुं.) पशु की पूँछ से कुछ ऊपर का दायाँ-बायाँ भाग; (वि.) विलोम आचरण वाला; **~(-ट्ठे) ढील्ले होणा** ब्याने से कुछ समय पूर्व पुट्ठों का पिलपिलाना। **पुट्ठा** (हि.)

पूड़ा (पुं.) 1. पूआ, चीला, 2. पतले आटे को तवे पर फैला कर तली गई रोटी।

पूणिया (पुं.) एक जाट गोत।

पूणी (स्त्री.) रूई की पूनी–ऊणी री माँ ऊणी तनैं रत परूँद्धी पूणी (अरी माँ तेरा काम अपूर्ण रहेगा क्योंकि तूने रात्रि के समय कातना शुरू किया है।)

पूत (पुं.) पुत्र, सपूत; **~नपूत जाणा** 1. निस्संतान मरना, 2. वंश समाप्त होना।

पूतड़ा (पुं.) पूत का निंदापरक रूप।

पूतणा (स्त्री.)एक राक्षसी। **पूतना** (हि.)

पूतना (स्त्री.) दे. पूतणा।

पूत-पतोह (स्त्री.) पुत्र-वधू।

पूतळा (पुं.) दे. पुतळा।

पूतळी (स्त्री.) 1. आँख की पुतली (तुल. माणसिया), 2. कठपुतली; (वि.) दुमछल्ला; **~काढणा** आँखें निकालना; **~जमणा** आँखे पथराना; **~नचाणा** 1. कठपुतली नचाना, 2. आँख मटकाना; **~फिरणा** अचेत होना; **~फेरणा** 1. डराना, 2. मुकरना; **~लीक्कड़णा** मरना। **पुतली** (हि.)

पूत्ता (पुं.) स्त्रियों द्वारा पुरुषों के लिए प्रयुक्त निंदापरक शब्द; (वि.) पुत्रहीन।

पूदणा (वि.) 1. नाटा (व्यक्ति), 2. (दे. पिद्दी); (पुं.) दे. पुदीन्ना।

पून (स्त्री.) दे. पोन।

पूनम-ब्याह (पुं.) पुनर्विवाह।

पूनी (स्त्री.) दे. पूणी।

पून्नो (स्त्री.) 1. शरद् पूर्णिमा, 2. पूर्णिमा।

पून्यम (पुं.) पूर्णिमा।

पूर[1] (पुं.) 1. परा, परिपूर्ण, 2. पूरने, कटखने, 3. सूखे आटे, रंग आदि से खींची गई रेखा, 4. कपड़े का ताना, 5. देवताओं के निमित्त अर्पित सामग्री, 6. (दे. चोंक); (क्रि. स.) 'पूरणा' क्रिया का आदे. रूप; **~काढणा/ घालणा** 1. किसी कार्य को पूर्ण करना (व्यंग्य में), 2. छोटी-छोटी लकीरें डालना, 2. कटखने डालना; **~तारणा** 1. कार्य को पूरा करना, 2. ताना बुनना; **~पड़णा/ पाटणा** 1. कार्य संपन्न होना, 2. जैसे-तैसे कार्य पूरा करना; **~पूरणा** 1. ताना पूरना, 2. नव-ग्रह आदि पूजने के लिए चौक पूरना, 3. किसी समाचार को जगह-जगह फैलाना।

पूर[2] (पुं.) अग्नि का ढेर। उदा. गोरा गोरा गात इसा दीखै जाणू अंगारा पूर का (लचं)। दे. जगरा।

पूरण (वि.) पूर्ण, पूरा, संपूर्ण।

पूरण भगत (पुं.) दे. चौरंगीनाथ।

पूरणमाँ (स्त्री.) पूर्णमासी; **~सा चेहरा** चाँद-सा मुखड़ा। **पूर्णिमा** (हि.)

पूरणा (क्रि. स.) 1. फैलाना, छितराना, 2. व्याप्त करना, समाचार फैलाना, 3. बाँटना, 4. चौक आदि भरना; (पुं.) दे. कटखणे।

पूरणे (पुं.) दे. कटखणे।

पूरनमासी (स्त्री.) दे. पूरणमाँ।

पूरना (क्रि. स.) दे. पूरणा।

पूरब (पुं.) पूर्व दिशा, वह दिशा जहाँ से सूर्य निकलता है।

पूरबला (वि.) पूर्व जन्म का; (पुं.) भाग्य।

पूरबिया (वि.) दे. पुरबिया।

पूरा (वि.) 1. संपूर्ण, 2. जो टूटा-फूटा न हो, 3. सच्चा, जैसे–पूरा आदमी, 4. जिसमें कोई कमी न हो; **~उतरणा** खरा उतरना; **~पड़णा** 1. काम निकलना, 2. कमी न रहना; **~पट** सपूर्ण; ~-**पूरा** 1. सही-सही, 2. पूर्ण विवरण सहित; **~पाड़णा/ सारणा** किसी सामग्री से जैसे-तैसे काम निकालना।

पूरी (स्त्री.) कड़ाही में तली छोटी रोटी विशेष; (क्रि. स.) 'पूरणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं०, एकव. रूप।

पूर्ण (वि.) दे. पूरण।

पूर्णमासी (स्त्री.) दे. पूरणमाँ।

पूर्णाहूति (स्त्री.) 1. वह आहूति जिसके द्वारा होम समाप्त करते हैं, 2. किसी कार्य की समाप्ति की क्रिया।

पूर्व (पुं.) दे. पूरब; (वि.) 1. पहले का, 2. पुराना, 3. पिछला; (क्रि. वि.) पहले, पेशतर।

पूर्वज (पुं.) 1. बाप, दाद आदि, पुरखे, 2. बड़ा भाई।

पूर्वजन्म (पुं.) वर्तमान से पहले का जन्म, पिछला जन्म।

पूर्व मीमांसा (पुं.) 1. हिन्दुओं का एक दर्शन, 2. इस दर्शन का ग्रंथ।

पूर्ववत् (क्रि. वि.) पहले की तरह।

पूर्ववर्ती (वि.) पहले का।

पूर्वी (वि.) 1. पूर्व की, 2. (दे. परवा[2])।

पूला (पुं.) दे. पूळा।

पूळा (पुं.) 1. मूँज आदि का बँधा गट्ठा, 2. मुँज का वह गट्ठा जो अर्थी पर डाला जाता है, 3. बड़ी पूली, 1. (दे. गद्दा), 2. (दे. गदूर); **~कूटणा** मूँज के पूले को मोगरी से कूटना ताकि रस्सी बाँटने में सुभीता रहे।

पूळी (स्त्री.) ज्वार-बाजरे आदि के चारे को छोटा गट्ठा, (दे. भरोट्टा); **~खड़ी करणा** 1. दे. अरड़ा, 2. दे. सूआ;[4] **~-सी पाड़णा** छिन्न-भिन्न करना। **पूली** (हि.)

पूस (पुं.) दे. पोह।

पृथु (पुं.) राजा वेणु के एक पुत्र, (दे. पेहवा)।

पृथ्वी (स्त्री.) दे. पिरथी।

पृथ्वीराज (पुं.) एक राजपूत शासक।

पृष्ठ (पुं.) 1. पुस्तक का पन्ना, पन्ना, 2. पीठ।

पेंग (स्त्री.) दे. पींग।

पेंदा (पुं.) तली, तला।

पेई (स्त्री.) गोबर में कंकर छिपाकर खेलने का एक खेल।

पेओ (पुं.) दे. बाब्बू।

पेओसाळ (पुं.) पितृगृह।

पेच (पुं.) 1. मशीन का पुर्जा, 2. चूड़ीदार कील, 3. कुश्ती का दाँव विशेष, 4. पगड़ी का लपेटा, 5. चालाकी, 6. युक्ति; **~का गंडास्सा** मशीन का

गंडासा; **~की टूम** (पैरों के) आभूषण जो पेच घुमा कर बंद हों व खुलें; **~की पागड़ी** 1. विशिष्ट प्रकार से बाँधी गई पगड़ी, 2. मारवाड़ी पगड़ी; **~की बात** 1. चालाकी की बात, 2. उलझनपूर्ण बात; **~मारणा/लड़ाणा** दाँव लगाना।

पेचक (स्त्री.) सिलाई का लिपटा हुआ धागा या गोला।

पेचकश (वि.) अग्रभाग से छितरी सलाई विशेष जिससे पेच को घुमाया जाता है।

पेचदार (वि.) 1. घुमावदार, 2. पेच का, 3. पेचीदा।

पेचिश (वि.) पेट की पीड़ा जो आँव होने के कारण होती है।

पेचीदा (वि.) मुश्किल, करने में कठिन।

पेच्चक (स्त्री.) धागे की पेचक। **पेचक** (हि.)

पेच्ची (पुं.) दे. खंडवा।

पेट (पुं.) 1. उदर, 2. किसी वस्तु का अंदरूनी भाग, 3. भूख; **~आणा** गर्भ-अवस्था के कारण पेट बढ़ना; **~का** 1. जिसे जन्म दिया हो (संतान), 2. गर्भ-अवस्था का; **~काटणा** भूखा रहकर कुछ बचाना; **~की बात** मन की बात; **~चालणा** 1. दस्त लगना, 2. घबराना; **~टूटणा** 1. तेज दस्त लगना, 2. अधिक भूख लगना; **~पड़णा** गर्भवती होना; **~पाड़ दिखाणा** मन की बात कहना, कुछ भी न छिपना; **~पाणी नाँ पचणा** मन की बात न पचना; **~भरणा** 1. उद्दंडता सूझना, 2. उकताना, भोजन से तृप्त होना, (दे. धापणा); **~मैं डाड्ढी होणा** छल-कपटपूर्ण व्यवहार करना।

पेटला (वि.) 1. मोटे पेट वाला, 2. अधिक भोजन करने वाला। तुल. झेदला। **पेटू** (हि.)

पेटी (स्त्री.) दे. पेट्टी।

पेटू/पेट्टू (वि.) दे. पेटला।

पेट्टा (पुं.) 1. लालसा, 2. उदर, 3. किसी वस्तु का भीतरी भाग; **~भरणा** 1. तसल्ली होना, 2. इच्छा-पूर्ति होना। **पेटा** (हि.)

पेट्टी[1] (स्त्री.) 1. संदूकची,2. कमरबंद। **पेटी** (हि.)

पेट्टी[2] (स्त्री.) हारमोनियम बाजा।

पेट्टी कोट (पुं.) साड़ी के नीचे पहनने का हल्का घघरा। **पेटीकोट** (हि.)

पेट्ठा (पुं.) 1. कद्दू जाति की एक सब्जी जिसकी मिठाई भी बनती है। सीताफल, काशीफल, 2. एक मिठाई। **पेठा** (हि.)

पेट्रोल (पुं.) दे. पिटरोल।

पेठा (पुं.) दे. पेट्ठा।

पेड़ (पुं.) 1. वृक्ष, 2. पेड़ का तना; **नास~** सर्वनाश करने वाला, (दे. नासखेत)। **पेड़** (हि.)

पेड़ा (पुं.) 1. खोए से बनी एक प्रसिद्ध मिठाई, 2. गुड़ का अनगढ़ टुकड़ा, 3. रोटी बनाने या गौ आदि को देने के लिए बनाया गया आटे का पेड़ा।

पेड़ी (स्त्री.) 1. मिठाई, 2. साबुन आदि का छोटा टुकड़ा या टिकिया, 3. पूड़ी, कचौरी, रोटी आदि बनाने के लिए बनाई गई आटे की पेड़ी; **~का गुड़** छोटी-छोटी डली का गुड़ (भेली का नहीं)।

पेड्डा (पुं.) पेड़ का मोटा टहना।

पेड्डी (स्त्री.) 1. छोटा पेड़, 2. पेड़ का छोटा तना।

पेड्डू (पुं.) पेट का निचला भाग।

पेमचा (पुं.) दे. पोमचा।

पेरणा (पुं.) एक खानाबदोश जाति जो मिट्टी के खिलौने बेचती है।

पेरणी (स्त्री.) 1. पेरना जाति की स्त्री, 2. चरखा, 3. चरखे के हत्थे की डंडी।

पेरना (क्रि. स.) दे. पेलणा।

पेरा (पुं.) दे. पेड़ा।

पेलणा (क्रि. स.) 1. गन्ना, सरसों आदि को कोल्हू में पेरना, 2. पेलना, जबरदस्ती भेजना, 3. झूठी बात चलाना, 4. घुमाना, 5. धकेलना, 6. निगलना। **पेरना** (हि.)

पेलना (क्रि. स.) दे. पेलणा।

पेश (क्रि. वि.) आगे, सम्मुख।

पेशकश (स्त्री.) 1. भेंट, नजर, 2. उपहार।

पेशकार (पुं.) न्यायालय का एक कर्मचारी।

पेशगी (स्त्री.) अगाऊ, अग्रिम।

पेशतर (क्रि. वि.) पहले, पूर्व।

पेशवा (पुं.) दे. पेसवा।

पेशवाई (स्त्री.) दे. पेसवाई।

पेशा (पुं.) दे. पेस्सा।

पेशाब (पुं.) दे. पिसाब।

पेशाब खाना (पुं.) पेशाब घर, मूत्रालय।

पेशी (स्त्री.) दे. पेस्सी।

पेशूरी (स्त्री.) शहरी जूती।

पेसवा (पुं.) मराठा, सरदार; (वि.) वीर, बहादुर।

पेसवाई (पुं.) छोटा नौकर–नोक्कर आग्गै चाक्कर, चाक्कर आगे पेसवाई; (स्त्री.) 1. पेशवओं की शासन कला, 2. पेशवाओं का शासन-काल, 3. अगवानी। **पेशवाई** (हि.)

पेस्सा (पुं.) पेशा, व्यवसाय।

पेस्सी (स्त्री.) उच्च अधिकारी के समक्ष दी गई हाजरी। **पेशी** (हि.)

पेहलिम (वि.) दे. पहल्याँ।

पेहवा (पुं.) कुरुक्षेत्र के निकट राजा पृथु से संबंधित तीर्थ जो सरस्वती नदी के तट पर है और जहाँ विभिन्न संप्रदायों के मंदिर हैं।

पैंजणी (स्त्री.) 1. लोहे आदि के घुंडीदार छोटे कड़े जो बच्चों के पैरों में डाल दिए जाते हैं जिससे कि नजर न लगे (शिशु जन्म के समय लुहार द्वारा प्रदत्त भेंट-वस्तु), 2. पैर का एक आभूषण, 3. बेड़ी। **पैंजनी** (हि.)

पैंजनी (स्त्री.) दे. पैंजणी।

पैठ[1] (स्त्री.) अकड़, ऐंठ; ~**चलाणा** दबदबा रखना।

पैंठ[2] (स्त्री.) 1. अस्थाई विक्रय-केंद्र, 2. सामयिक बाजार। **पैंठ** (हि.)

पैंडल (पुं.) गले का एक आभूषण।

पैंडा (पुं.) 1. दे. पैंह्ढा 2. दे. पहँढा 3. दे. पैंड्डा।

पैंड्डा (पुं.) पिंड, पीछा; ~**छूटणा** 1. पीछा छुटना, 2. छुटकारा पाना; ~(-**ड्डे**) **पड़णा** 1. पीछे लगना, 2. गले मढ़ना।

पैंताल (पुं.) दे. पंताळ।

पैंताळी (वि.) पैंतालीस की संख्या। **पैंतालीस** (हि.)

पैंती (वि.) पैंतीस की संख्या। **पैंतीस** (हि.)

पैंद (स्त्री.) (कौर.) दे. पाँत।

पैंद (स्त्री.) दे. पाँत।

पैंशन (स्त्री.) दे. पिनसल[1]।

पैंसणा (क्रि.) समाना, मिश्रित होना। उदा. –चांद की चांदनी खीर में पैंस गी।

पैंसिल (स्त्री.) दे. पिनसल[2]।

पैंह्डा (पुं.) मटका, बड़ा मटका; **~-सा पेट** बड़ा पेट।

पैंह्ढा (पुं.) दे. पैंह्डा।

पैंह्ढी (स्त्री.) 1. वह स्थान जहाँ पानी के मटके रखे जाते हैं, 2. घर के किसी भाग में गड़े बड़े मटके जिनमें अन्न भंडारित किया जाता है।

पैंह्सेर (वि.) पाँच सेर का भार।

पैंह्सेरी (स्त्री.) 1. पाँच सेर भार का बाट, 2. पाँच सेर भार की गुड़ की भेली; (वि.) पाँच सेर भार की। **पंचसेरी** (हि.)

पै (पअ) (अव्य.) 1. पर, ऊपर, 2. पर--इस पै वो न्यूँ बोल्या, 3. पास--तेरे पै कै पइसे धरे सैं, 4. निकट, धोरे, समीप--उस पैं जा अर गमीणा साध के आ, 5. पर, में--ईश्वर पै ध्यान घर, 6. से--लगन लगाओ हर पै, 7. ओर, तरफ--उस पै तेरे कितणे पइसे आवें सैं?

पै ए (अव्य.) पर ही। उदा. तेरे पै ए सै।

पैगंबर (पुं.) भगवान का दूत, जैसे--ईसा, मुहम्मद आदि।

पैंजर (पुं.) दे. पड़ोस।[2]

पैग (पु.) 1. शराब की घूँट, 2. शराब की बोतल।

पैगाम (पुं.) 1. संदेश, 2. ईश्वरीय संदेश।

पैज (स्त्री.) 1. जिद, 2. प्रतिज्ञा, 3. आन; **~करणा/पाकड़णा/लाणा** 1. ज़िद करना, 2. प्रतिज्ञा करना।

पैठ (स्त्री.) 1. गति, पहुँच, 2. प्रवेश, दखल।

पैड़[1] (स्त्री.) 1. पद-चिह्न, 2. पैर, एड़ी से पंजे तक का भाग, 3. आदत, 4. परिपाटी, 5. पत्थर आदि के बने पैरों के स्मृति-चिह्न।

पैड़[2] (स्त्री.) 1. कोल्हू, रहँट, खलियान आदि का वह भाग जहाँ जुते हुए पशु चक्कर लगाते हैं, 2. पैर, खलियान; **~खूँटणा/बैट्ठी करणा** खलियान को जेली आदि से उलटना।

पैड़[3] (स्त्री.) 1. बल्ली, बाँस आदि के तख्ते जिन पर खड़ा होकर राज दीवार चिनता है, मचान, 2. 'पट' की ध्वनि के साथ--उसके पैड़ एक थप्पड़ मार्या।

पैड़काळा (पुं.) जीना, वह सीढ़ी जो छत पर पहुँचने के लिए बनाई जाती है।

पैड़छा (पुं.) कूएँ की मुँडेर के साथ बना ढालू स्थान जहाँ चरसिया चरस का पानी उँडेलता है।

पैड़छिया (पुं.) चरसे का कुआँ जोतते समय कुएँ की मुँडेर पर खड़ा होकर चरसे के पानी को उँड़ेलने वाला व्यक्ति 1. (तुल. बारिया), 2. (तुल. चिड़सिया)।

पैड़णी (स्त्री.) 1. चरखे की हत्थी की डंडी, 2. कोल्हू, 3. पेरणा जाति की महिला।

पैड़ा (पुं.) देवी का गीत, जैसे--'गूग्गा का पैड़ा', 'देब्बी का पैड़ा' (तुल. मैड़ा); **~गाणा** आराध्य देवी-देवता की स्तुति में पद गाना।

पैड़ी[1] (स्त्री.) 1. सीमेंट आदि से बने पैरों के चिह्न जो किसी की स्मृति में बनाए गए हों, 2. पैड़काले की सीढ़ी, सीमेंट या सिला आदि की सीढ़ी, 3. ऊपर चढ़ने का मार्ग, 4. देवी-देवता की मढ़ी (तुल. मैड़ी); **~चढणा** उन्नति करना।

पैड़ी[2] (स्त्री.) गुड़ की टिक्की या पैड़ी। दे. पैड़ी।

पैडू (पुं.) वह व्यक्ति या खोजा जो पशु के

पैर की गंध सूँघ कर उसे खोज निकालता है। दे. खोज्जा।

पैणी (स्त्री.) बैल हाँकने की संटी या साँटा, 2. पशु हाँकने का औजार, 3. लंबाई विशेष, एक पैणी की लंबाई, जो लगभग डेढ़-दो हाथ होती है; **~लाणा** 1. तंग करना, 2. व्यंग्य कसना।

पैतृक (वि.) वंशानुगत, पुश्तैनी, पुरखों का, (दे. दाद्दालाही)।

पैदल (वि.) जो पाँव से चले; (पुं.) 1. पैदल सिपाही, 2. पाँव-पाँव चलना, (दे. पाह्याँ)।

पैदाइश (स्त्री.) जन्म, उत्पत्ति।

पैदाइशी (वि.) 1. जन्म का, 2. प्राकृतिक, स्वाभाविक (तुल. जामणूँ)।

पैदावार (स्त्री.) उपज, फसल।

पैना (वि.) दे, पैन्ना।

पैनी (वि.) पैन्नी।

पैन्ना (वि.) 1. तेज धार का, 2. चतुर, 3. चालाक, 4. अग्रगण्य, 5. नोकीला। **पैना** (हि.)

पैन्नी (वि.) 1. तेज़ धार की, 2. चालाक **पैनी** (हि.)

पैमाँस (स्त्री.) नाप-तोल। **पैमाइश** (हि.)

पैमाइश (स्त्री.) दे. पैमाँस।

पैमाना (पुं.) दे. पहमान्ना।

पैमाल (पुं.) पामाल, तबाह।

पैर[1] (पुं.) चरण (तुल. पाँ), (दे. पैड़[1]); **~पड़णा** प्रणाम करना, चरण छूना; **~पड़ाई** चरण छूने के बाद बधू द्वारा दी गई दक्षिणा (यह सास आदि को दी जाती है।)

पैर[2] (पुं.) अनाज के सूखे डंठलों से दाने झाड़ने के लिए बैलों से रोंदवाने का स्थान, खलियान।

पैरवी (स्त्री.) 1. पक्ष लेना, 2. मुकदमे में पक्ष के लिए किया जानेवाला प्रयत्न।

पैराशूट (पुं.) वायुयान से छलाँग लगाकर उतरने के काम आने वाला एक छाता विशेष।

पैरी (पुं.) दे. पैर, खलियान।

पैरीज (स्त्री.) पैड़ी।

पैयाँ[1] (पुं.) 1. पैर का बहुवचन रुप। 2. पैरों पर। उदा. पैयाँ पड़ना।

पैयाँ[2] (पुं.) दे. पहियाँ।

पैल (स्त्री.) दे. पाळ।

पैलो (वि.) पहला।

पैसा (पुं.) दे. पइसा।

पों (स्त्री.) 1. मोटर के हार्न की ध्वनि, 2. पों-पों की ध्वनि।

पोंछना (क्रि. स.) दे. पूँछणा; (पुं.) पोंछने का कपड़ा।

पोंठा (स्त्री.) पवन (मेवा.)।

पोंड्डा (पुं.) 1. मोटा और मीठा गन्ना, 2. गन्ने की एक जाति। **पोंडा** (हि.)

पोंधरणा (क्रि.) इठलाना।

पोंहचा (पुं.) कलाई; (क्रि. अ.) 'पहुँचणा' क्रिया का भू. का., पुं., एकव. रूप; **~पाकड़णा** 1. अधिकार में लेना, 2. आश्रय देना, 3. विवाहिता के रूप में स्वीकार करना, 4. धींगा-मस्ती करना।

पोंहचाणा (क्रि. स.) पहुँचाना।

पोंहची (स्त्री.) 1. कलाई का एक आभूषण जिसमें धागे में पिरोई हुई बीजों की चौड़ी पंक्तियाँ होती हैं, 2. (दे. पौंहची)।

पोआ (पुं.) साँप का बच्चा।

पोइम पोइया (पुं.) गोबर में कंकर मिला कर खोजने का एक खेल।

पोई (स्त्री.) 1. ईख का कल्ला, 2. गन्ने का पौर, 3. ईख का अंकुरित पौधा; (क्रि.

स.) 'पोणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिंग. रूप–1. सूई पिरोई, 2. रोटी बनाई।

पोच (वि.) तुच्छ–मेरे करम मैं बेहमात्ता नैं पोच बात लिखी सारी (लो. गी.)।

पोच्छा (पुं.) 1. सफ़ाई करने का उपवस्त्र, 2. सफ़ाई करने और पोंछने का कार्य।

पोट (स्त्री.) 1. पोटली, 2. सामर्थ्य, औक़ात।

पोटली (स्त्री.) दे. पोटळी।

पोटळी (स्त्री.) 1. छोटी गठरी, 2. साँप के विष-दंत के नीचे की ग्रंथि (जनधारणा के अनुसार वह इसे हर शनिवार को फोड़ता है); **~फोड़णा** सर्प द्वारा शनिवार के दिन अपनी विषग्रंथि का वमन करना। **पोटली** (हि.)

पोट्टी (स्त्री.) 1. पोट, सामर्थ्य, 2. समाई, सहनशीलता; **~देखणा** औक़ात समझना।

पोड़ (पुं.) ऊँट के पैर का तला।

पोड़ी (स्त्री.) दे. पैड़ी।

पोड्डर (पुं.) किसी वस्तु का चूर्ण। **पाउडर** (हि.)

पोड्ढा (वि.) पोढ़ा, पौष्टिकता, (दे. पौह्ड्डा); **~लागणा** खाने-पीने से पुष्टता आना।

पोण (वि.) तीन-चौथाई अंश, पौना; (स्त्री.) पवन।

पोणा (क्रि. स.) 1. रोटी बनाना, 2. पिरोना, सूई में धागा डालना, 3. माला गूँथना, 4. चुगली करना, (दे. चोणा); (पुं.) 1. पोना, कड़छा, कलछा, 2. पौने का पहाड़ा, 3. उप-वस्त्र, पोंछा; (वि.) 1. पौना, पूरे से चौथाई कम, 2. न्यून। **पोना** (हि.)

पोणियाँ (पुं.) फणी नाग।

पोणियाँ साँप (पुं.) एक प्रकार का साँप।

पोणी (स्त्री.) छोटी कड़छी; (वि.) 1. न्यून, 2. पौनी, पूरे से चौथाई कम।

पोत (स्त्री.) 1. छोटे-लंबे मोती, 2. पौत्र (पोते) का लघु रूप, जैसे–पोत-बहू, 3. पारी, बाजी; (क्रि. स.) 'पोतणा' क्रिया का आदे. रूप।

पोतड़ा (पुं.) 1. उप-वस्त्र जो छोटे बच्चे के कटि-वस्त्र के रूप में काम आता है, 2. (दे. पोत्ता[1]); **रपइया/रपैया-~** वह रस्म जो बालक के जन्म के समय निकट के सगे-संबंधियों द्वारा कुर्ता-टोपी, नक़दी, आभूषण आदि देकर संपन्न की जाती है।

पोतणा (क्रि. स.) 1. लीपना, 2. इधर-उधर फैलाना–याह् बात सब जघाँ पोत दी, 3. चित्रित करना; (पुं.) 1. लीपने, पोतने या सफ़ाई करने का वस्त्र, 2. (दे. पोत्ता[1]), 3. (दे. पोतड़ा)। **पोतना** (हि.)

पोतना (क्रि. स.) दे. पोतणा; (पुं.) दे. पोतणा।

पोत-बहू (स्त्री.) 1. पोते की पत्नी, 2. स्त्री के लिए प्रयुक्त निंदापरक शब्द। **पौत्र-वधू** (हि.)

पोता (पुं.) 1. दे. पोत्ता[1], 2. दे. पोत्ता[2]।

पोती (स्त्री.) दे. पोत्ती।

पोत्ता[1] (पुं.) पौत्र, पोता, पुत्र का पुत्र।

पोत्ता[2] (पुं.) अंडकोश।

पोत्ती (स्त्री.) पोती, पुत्र की पुत्री।

पोत्था (पुं.) बृहत् आकार की पुस्तक; **~खोल्हणा** 1. व्यर्थ के लड़ाई-झगड़े की बात शुरू करना, 2. पुराने समय के कहानी-किस्से सुनाना, 3. किसी की कमियों को प्रस्तुत करना; **~बाँचणा** कथा सुनाना (व्यंग्य में); **~पाड़णा**

1. कई पीढ़ियों तक की कमियाँ बताना, 2. कहानी-किस्से को ज्यों-का-त्यों सुनाना। **पोथा** (हि.)

पोत्थी[1] (स्त्री.) 1. छोटी पुस्तक, बच्चों की छोटी पुस्तक, 2. कथा की पुस्तक, धार्मिक पुस्तक; **~पढणा** 1. उल्टी सीख लेना (व्यंग्य में), 2. धर्म-ग्रंथ पढ़ना, 3. पढ़ना; **~-पतरा** धार्मिक पुस्तकें। **पोथी** (हि.)

पोत्थी[2] (स्त्री.) 1. पोटली जिसमें तंबाकू आदि नशे की वस्तु रखी जाती हैं, 2. लहसुन या पोस्त की डोडी। **पोथी** (हि.)

पोथा (पुं.) 1. भारी पुस्तक, 2. लंबी कथा।

पोथिया (पुं.) कोथली या पोटली जिसमें तंबाकू, गाँझा आदि नशे की वस्तु रखी जाती हैं, (दे. पोत्थी[2])।

पोथी (स्त्री.) दे. पोत्थी[1]।

पोदणा (वि.) दे. पिद्दी।

पोन (स्त्री.) पवन, हल्की और ठंडी वायु; **~-परीच्छा** पवन-परीक्षा, आषाढ़-पूर्णिमा या गुरु-पूर्णिमा के दिन सूर्यास्त के समय पवन की गति के आधार पर फ़सल, रोग, भाव आदि की तेज़ी-मंदी का अनुमान लगाने की क्रिया या भाव।

पोना (क्रि. स.) दे. पोणा; (पुं.) दे. पोणा; (वि.) दे. पोणा।

पोप (वि.) 1. पाखंडी, 2. भगवान का भय दिखाने वाला; (पुं.) 1. ब्राह्मण (व्यंग्य में), 2. ईसाई मतावलंबियों का धर्म-गुरु।

पोपना (वि.) 1. पोप का लघुतासूचक रूप, 2. ब्राह्मण (व्यंग्य में); **~-लील्ला** 1. पाखंड लीला, 2. झूठा दिखावा; **~-करणा** 1. छल-कपट करना, 2. धर्म का भय दिखाना।

पोमचा (पुं.) मध्यम छाप की ओढ़नी, (दे. पीळिया)।

पोया (पु.) हारी हुई बाजी।

पोर[1] (पुं.) 1. बाँस, नेजे आदि का एक पोरे से दूसरे पोरे (आँख) के बीच का भाग, 2. (दे. पोरुआ)।

पोर[2] (स्त्री.) दहलीज। दे. पोलि़या।

पोर[3] (पुं.) दे. ओरणा।

पोरवा (पुं.) दे. पोरुआ।

पोरा (पुं.) 1. बाँस आदि का छोटा टुकड़ा, 2. अंगुली का तीसरा अंश।

पोरी (स्त्री.) 1. गन्ने आदि का छोटा टुकड़ा, गन्ने आदि के पौधे के दो गाँठों के बीच का भाग, 2. जोड़–गंडे नैं पोरी पै कै (पर से) तोड़, 3. (दे. पोळी); **~पड़णा** गन्ने के पौधे में पोरी बनने लगना; **~-पोरी मटकणा** मटक-मटक कर चलना, नखरे से चलना।

पोरुआ (पुं.) 1. अंगुली का वह भाग जो दो गाँठों के बीच में हो, 2. पोर के समान लंबा या मोटा नाप। **पोर** (हि.)

पोल (स्त्री.) 1. सारहीनता, कमी, 2. खोखलापन; **~खोल्हणा** भंडाफोड़ करना; **~-पट्‌टी** रहस्य, भेद।

पोळ (स्त्री.) 1. पोल, आँगन, 2. प्रवेश-द्वार का बड़ा कमरा; (पुं.) बड़ी या भारी पूली; **~खेल्हणा** बचपन बिताना।

पोळा (वि.) दे. पोल्ला।

पोळिया (पुं.) द्वारपाल।

पोलिस (स्त्री.) 1. किसी वस्तु पर चमक लाने के लिए लेह पदार्थ लगा कर रगड़ने की क्रिया, 2. चमक लाने के लिए प्रयुक्त लेह पदार्थ। **पालिश** (हि.)

पोली (स्त्री.) दे. पोळी; (वि.) दे. पोल्ली।

पोळी (स्त्री.) 1. प्रवेश-द्वार के साथ बना बड़ा कमरा (जो दुकड़िया, चुकड़िया आदि भी होता है), 2. बहुत पतली रोटी। **पोली** (हि.)

पोल्ला (वि.) 1. पोला, खोखला, 2. पोपला, जो कठोर न हो; (पुं.) लोहे का खोल जो लाठी के नीचे या ऊपर के किनारे पर फँसा दिया जाता है; **~तारणा/फँसाणा** खोखली वस्तु या खाली स्थान में कठोर वस्तु फँसाना।

पोल्ली (वि.) पोपली, खोखली; (स्त्री.) 1. धातु का वह खोल जो लकड़ी या डंडी के किनारे पर मज़बूती के लिए फँसा दिया जाता है, (दे. स्याम जड़ाऊ), 2. धातु का खोल जो पशुओं के सींगों पर चढ़ाया जाता है; **~-पोल्ली खाणा** बिना परिश्रम की कमाई खाना। **पोली** (हि.)

पोवणा (क्रि. स.) 1. पोना, (धागा) पिरोना, 2. कान में बात डालना, 3. पोना, रोटी पकाना।

पोशाक (स्त्री.) दे. पुसाक।

पोस (पुं.) पौष का महीना; (क्रि. स.) 'पोसणा' क्रिया का आदे. रूप।

पोसणा (क्रि. स.) 1. पालन-पोषण करना, 2. पुष्ट करना। **पोसना** (हि.)

पोसना (क्रि. स.) दे. पोसणा।

पोसाणा (क्रि. स.) दे. पवसाणा।

पोस्टकार्ड (पुं.) दे. कारड़।

पोस्टमास्टर (पुं.) पोस्ट-ऑफिस का बड़ा अधिकारी।

पोस्टमैन (पुं.) दे. डाकिया।

पोस्त (पुं.) अफ़ीम के पौधे का डोडा।

पोह[1] (पुं.) दे. पोस।

पोह[2] (स्त्री.) 1. सूर्योदय से पहले की लालिमा, 2. भोर; **~पाटणा** पौ फटना, (दे. पीळी पाट्याँ)। **पौ** (हि.)

पोह[3] (स्त्री.) 1. खेल का एक दाँव, 2. चौपड़ा आदि के खेल में वह चौखटा जहाँ गिट्टी को पहुँचाना होता है; **~आणा** श्रेष्ठ दाँव आना; **~मैं पीणा** गिट्टी का सफलता या 'पुगने' के दाँव पर पहुँचना।

पोहन (पुं.) 1. गधा 2. टट्टू 3. घोड़ता।

पोह-बारा (पुं.) 1. चौपड़ का एक दाँव विशेष, 2. पूर्ण सफलता; **~-पच्चीस** 1. श्रेष्ठतम दाँव, 2. पूर्ण सफलता; **~होणा** 1. सफलता मिलना, 2. इच्छा पूर्ण होना।

पोही (वि.) पौष मास से संबंधित।

पौंच (स्त्री.) दे. पहोंच।

पौंडा (पुं.) दो पोंड्डा।

पौंहची (स्त्री.) 1. राखी, रक्षा-सूत्र, 2. कलाई; (क्रि. अ.) 'पोंहचणा' क्रिया का स्त्रीलिं., भू. का. रूप।

पौआ (पुं.) दे. पौवा।

पौड़[1] (पुं.) 1. सन, पटसन का पौधा जिसे पानी में गला कर रेशा उतार लिया जाता है, 2. सन-पटसन के पौधों की बनी पूली या बंडल, 3. झुंड; **~काढणा** 1. जोहड़ के कीचड़- मिट्टी में दबे 'पौड़ों' को निकालना, 2. सन-पटसन के डंठल का रेशा या तंतु तोड़कर दूर करना; **~तोड़णा** सन-पटसन के पौधे से उसका तंतु या रेशा अलग करना; **~दाबणा** सन-पटसन के पौधों के रेशों को कोमल करने के लिए पाँच-सात दिन के लिए कीचड़ में दबाना; **~पाटणा** भगदड़ मचना।

पौड़[2] (पुं.) 1. घोड़े के सुम से उठने वाली ध्वनि। दे. पौड़। 2. चाबुक (?) **~पाटणा**–घोड़ों की ध्वनि का तितर बितर होना।

पौढ़णा (क्रि.) बैठना। चढ़ना। लेटना।

पौत्र (पुं.) दे. पोत्ता[1]।

पौधा (पुं.) दे. प्योद्दा।

पौन (स्त्री.) दे. पोन; (वि.) दे. पोण।

पौना (पुं.) दे. पोणा; (वि.) दे. पोणा।

पौणिया (पुं.) एक सर्प विशेष।

पौळ (स्त्री.) दे. पोळ।

पौर (पुं.) समय, दौर।

पौलत्स्य (पुं.) रावण, कुंभकरण और विभीषण, पुलत्स्य की संतान।

पौलिया (पुं.) दे. पौळिया।

पौळिया (पुं.) द्वारपाल।

पौली (स्त्री.) (कौर.) दे. पावली।

पौवा (पुं.) 1. पाव-भर भार का नाप, 2. शराब की छोटी बोतल, 3. बोतल; (वि.) 1. बौना, 2. पाव-भर; **~भार्‌या होणा** सबल स्थिति में होना।

पौसणा (क्रि. अ.) दे. पावसणा।

पौहड्डा (पुं.) 1. पौष्टिकता का भाव, 2. आश्रय, सहारा; **~लागणा** 1. शक्ति मिलना, बल आना, 2. सहारा मिलना–सीत पीए तैं के पोहड्डा लाग्गैगा।

प्याऊ (स्त्री.) वह स्थान जहाँ धर्मार्थ पानी पिलाया जाए; (वि.) पिलाने वाला; **~कढवाणा** गरमी के दिनों में पशुओं को पानी पिलाने के लिए खेत, जोहड़, तालाब आदि भरवाना, (दे. खेळ-खोट्टे); **~खोल्हणा** 1. धर्म-स्थान स्थापित करना, 2. प्याऊ खोलना; **~देणा** 1. पानी पिलाने का व्यवसाय करना, 2. धर्मार्थ पानी पिलाना, 3. ज्येष्ठ मास में कर्क संक्रांति के दिन सार्वजनिक स्थान पर पानी पिलाना; **~लाणा** 1. प्याऊ खोलना या बैठाना, 2. धर्म-स्थान स्थापित करना।

प्याछवा (वि.) दे. पिछवा।

प्याज (पुं.) दे. गंठा।

प्याज्जी (स्त्री.) रबी की फ़सल का एक खरपतवार; (वि.) 1. पाजी, मूर्ख, 2. प्याजी रंग का, 3. प्याज जैसा रंग।

प्याणा (क्रि. स.) 1. पिलाना, दूध, पानी आदि पिलाना, 2. चमड़े, लाठी आदि पर तेल लगाना, 3. रिश्वत देना, 4. चुपके से मुक्का मारना–आज तै उसके कई डुक प्याए, 5. मादा पशु का अपने बच्चों को दूध पिलाना, 6. शराब पिलाना। **पिलाना** (हि.)

प्यादा (पु.) शतरंज की एक गोटी।

प्याद्दा (पुं.) प्यादा, कचहरी का हरकारा।

प्यार (पुं.) 1. प्रेम, 2. आपसी मेल-जोल, 3. परिचय–अपणे प्यार मैं तै बात कही जा सै, 4. दो मित्रों में विचारों की समता का भाव, 5. स्नेह, दुलार, 6. पति-पत्नी के प्यार करने का भाव, 7. प्रेयसी और प्रेमी का लगाव; **~-मुल्हाजा** 1. आपसी प्यार, 2. जान-पहचान।

प्यारा (वि.) 1. जो देखने में अच्छा लगता हो, सुंदर, 2. सुकोमल, 3. जिससे दिल मिलता हो, 4. जिससे प्यार हो, 5. जो मन को भाए, 6. सुपरिचित; (पुं.) 1. प्रेमी, 2. यार, 3. पति, 4. मित्र; **यारा-~** 1. मेल-मिलाप रखने वाला व्यक्ति, 2. परिचित, 3. मित्र।

प्याला (पुं.) दे. प्याल्ला।

प्याल्ला (पुं.) 1. पान करने का पात्र, कप, 2. सुरापान का पात्र।

प्यावणा (क्रि. स.) दे. प्याणा।

प्यास (स्त्री.) दे. पिस।

प्यासा (वि.) दे. पिसाया।

प्याहण (पुं.) हारे-चूल्हे के समान एक भोजन पकाने का साधन।

प्यो (स्त्री.) दे. प्याऊ।

प्योद्दा (पुं.) पौधा, छोटा पौधा।

प्योध (स्त्री.) पौध, पनीरी।

प्रकट (वि.) दे. परगट।

प्रकांड (वि.) बहुत बड़ा, महान्।

प्रकार (पुं.) 1. भाँति, तरह, 2. किस्म, (दे. तराँह)।

प्रकाश (पुं.) दे. परकास।

प्रकाशक (पुं.) पुस्तक, पत्रिका आदि छपवा कर प्रचारित करने वाला।

प्रकाशमान (वि.) 1. चमकीला, 2. प्रसिद्ध।

प्रकृति (स्त्री.) 1. कुदरत, 2. स्वभाव।

प्रकोप (पुं.) क्रोध, (दे. छोह)।

प्रगट (वि.) दे. परगट।

प्रगति (स्त्री.) उन्नति।

प्रचंड (वि.) 1. तेज़, बहुत तीव्र, 2. बड़ा, भारी।

प्रचलन (पुं.) रिवाज़, चलन।

प्रचार (पुं.) दे. परचार।

प्रचारक (पुं.) दे. परचारक।

प्रजा (स्त्री.) दे. परजा।

प्रजापति (पुं.) दे. परजापत।

प्रण (पुं.) दे. परण।

प्रणाम (पुं.) नमस्कार, अभिवादन, (दे. जयरामजी की)।

प्रणाली (स्त्री.) तरीका, ढंग, रीति।

प्रताप (पुं.) दे. परताप।

प्रतापी (वि.) दे. परताप्पी।

प्रतिज्ञा (स्त्री.) प्रण लेने का भाव, (दे. पण)।

प्रतिनिधि (पुं.) नुमाइंदा।

प्रतिपदा (स्त्री.) दे. पड़वा।

प्रतिभा (स्त्री.) 1. बुद्धि, 2. कौशल।

प्रतिष्ठा (स्त्री.) 1. मान, सम्मान, 2. स्थापना, देव-प्रतिमा की स्थापना।

प्रतिष्ठान (पुं.) देव-मूर्ति की स्थापना, 2. न्यास।

प्रतीक (पुं.) 1. चिह्न, निशान, 2. आकृति, रूप।

प्रतीक्षा (स्त्री.) इंतज़ार, (दे. बाट[1])।

प्रतीत (वि.) ज्ञात, विदित, मालूम।

प्रत्यक्ष (वि.) जो आँखों के सामने हो; (क्रि. वि.) आँखों के आगे, सामने, (दे. साहमीं)।

प्रथम (वि.) पहला, (दे. पहलड़ा)।

प्रथा (स्त्री.) दे. परथा।

प्रदर्शन (पुं.) मुज़ाहिरा, 2. दिखाने का भाव, दिखावा, आडंबर।

प्रदर्शनी (स्त्री.) नुमाइश।

प्रदेश (पुं.) परदेस।

प्रदोष (पुं.) 1. सूर्यास्त का समय, 2. त्रयोदशी का व्रत जिसमें सायंकाल शिव-पूजन के बाद उपवास खोला जाता है।

प्रद्युम्न (पुं.) श्रीकृष्ण के बड़े पुत्र का नाम।

प्रधान (पुं.) दे. परधान।

प्रपंच (पुं.) 1. आडंबर, ढोंग, 2. झगड़ा, झमेला।

प्रपौत्र (पुं.) दे. पड़पोत्ता।

प्रबंध (पुं.) दे. परबंध।

प्रभा (स्त्री.) प्रकाश, चमक, कांति।

प्रभात (पुं.) दे. परभात।

प्रभातफेरी (स्त्री.) प्रभात काल में संकीर्तन के साथ नगर आदि की परिक्रमा।

प्रभाव (पुं.) असर।

प्रभु (पुं.) दे. पिरभू।

प्रमाण (पुं.) दे. परमाण।

प्रमाण-पत्र (पुं.) आधिकारिक पत्र या लेख, सर्टीफ़िकेट।

प्रमाणित (वि.) प्रमाण द्वारा सिद्ध।

प्रमाद (पुं.) 1. आलस्य, 2. लापरवाही, 3. भ्रांति, 4. अंत:करण की दुर्बलता।

प्रमोद (पुं.) आनंद, प्रसन्नता।

प्रयत्न (पुं.) कोशिश।

प्रयाग (पुं.) एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा-यमुना के संगम पर है, इलाहाबाद, (दे. तिरबैणी)।

प्रयोग (पुं.) 1. इस्तेमाल, 2. दृष्टांत और निदर्शन।

प्रयोजन (पुं.) 1. आशय, मतलब, 2. उद्देश्य। दे. परोज्जन।

प्रलय (स्त्री.) दे. परलय।

प्रलाप (पुं.) 1. रुदन, (दे. डिडाणा), 2. व्यर्थ की बकवास, अंड-बंड।

प्रवचन (पुं.) धार्मिक व्याख्यान, शास्त्रोपदेश।

प्रवर (पुं.) किसी गोत्र के अन्तर्गत विशेष प्रवर्तक मुनि; (वि.) मुख्य, प्रधान।

प्रवर्तक (पुं.) किसी काम को आरंभ करने वाला।

प्रवास (पुं.) 1. अपना देश छोड़कर दूसरे देश में रहना, 2. विदेश।

प्रवासी (वि.) परदेशी।

प्रवाह (पुं.) 1. बहाव, 2. बहता हुआ पानी।

प्रवीण (वि.) निपुण, चतुर, (दे. बीन्ना)।

प्रवेश (पुं.) 1. दाख़िला, 2. पहुँच, 3. किसी विषय की जानकारी।

प्रशंसा (स्त्री.) बड़ाई।

प्रश्न (पुं.) 1. सवाल, 2. आशंका।

प्रसंग (पुं.) 1. संदर्भ, प्रकरण, 2. बात, वार्ता, 3. अवसर, मौक़ा।

प्रसन्न (वि.) खुश, संतुष्ट, (दे. राज्जी)।

प्रसव (पुं.) 1. बच्चा जनने की क्रिया, 2. (दे. गरभ)।

प्रसाद (पुं.) 1. देवता का भोग, 2. कृपा, अनुग्रह।

प्रसार (पुं.) फैलाव, व्याप्ति।

प्रसिद्ध (वि.) मशहूर।

प्रसिद्धि (स्त्री.) मशहूरी।

प्रस्ताव (पुं.) 1. निबंध, 2. निवेदन, प्रार्थना, 3. सभा के सामने उपस्थित मंतव्य।

प्रस्थान (पुं.) गमन, कूच।

प्रस्थाना (पु.) एक टोटका जिसमें दिशाशूल की दिशा में गमन से पूर्व चावल आदि रख दिए जाते हैं।

प्रह्लाद (पुं.) दे. पहलाद।

प्रांत (पुं.) 1. ज़िला, 2. सूबा, प्रदेश।

प्राचीन (वि.) पुराना, (दे. पुराणा)।

प्राण (पुं.) दे. पिराण।

प्राणदंड (पुं.) मृत्यु-दंड।

प्राणदान (पुं.) क्षमा-दान।

प्राणनाथ (पुं.) 1. ईश्वर, 2. स्वामी, 3. पति।

प्राणपति (पुं.) 1. स्वामी, 2. ईश्वर, 3. पति।

प्राण-प्रतिष्ठा (स्त्री.) किसी देव-मूर्ति को स्थापित करते समय मंत्रों द्वारा उसमें प्राण का आरोपण।

प्राणांत (पुं.) मृत्यु।

प्राणाधार (पुं.) जीवनाधार।

प्राणी (पुं.) दे. पिराणी।

प्रातःकाल (पुं.) सवेरे का समय (तुल. तड़का)।

प्राप्त (वि.) मिली हुई, पाया हुआ।

प्रामाणिक (वि.) प्रमाण द्वारा सिद्ध।

प्रायश्चित (पुं.) शास्त्रानुसार वह कृत्य जिसके करने से पाप छूट जाते हैं।

प्रारंभ (पुं.) शुरू।

प्रार्थना (स्त्री.) विनती।

प्रार्थना-पत्र (पुं.) 1. आवेदन-पत्र, 2. अर्ज़ी।

प्रासाद (पुं.) महल।

प्रिय (वि.) प्यारा; (पुं.) दे. पिया।

प्रीत (स्त्री.) प्यार, लगाव।

प्रीतम (पुं.) 1. प्रिय, 2. प्रेमी, 3. पति।

प्रीतिभोज (पुं.) वह भोजन जिसमें संबंधी, मित्र आदि स्नेहपूर्वक सम्मिलित हों, (दे. मेळ[1])।

प्रेत (पुं.) दे. परेत।

प्रेम (पुं.) दे. परेम।

प्रेमी (वि.) दे. परेम्मी।

प्रेरणा (स्त्री.) 1. उत्तेजना देना, 2. कार्य के प्रति प्रवृत्त या नियुक्त करना।

प्लेग (स्त्री.) 1. ताऊन, एक बीमारी जो चूहों द्वारा फैलाई जाती है, 2. महा-मारी।

प्लेथण (पुं.) दे. पलोथण।

प्लैंढा (पुं.) (कौर.) दे. पैंह्ढी।

प्लोत्थी (स्त्री.) (कौर.) दे. आलती- पालती।

प्लोहव (पु.) दे. पळहो।

फ

फ हिंदी वर्णमाला का बाईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का दूसरा वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।

फंगड़ी (स्त्री.) (कौर.) दे. फाँकड़ी।

फंढ (पुं.) 1. धोखा, छल, 2. मक्कारी, 3. राशि।

फंढी (वि.) छली, कपटी।

फंद (पुं.) 1. बाधा, रुकावट, 2. कष्ट, 3. बेड़ी, जंजीर, 4. रस्सी, 5. जाल, 6. संसार; **~कटणा** 1. बाधा दूर होना, 2. कष्ट निवारण होना; 3. बंधन मुक्त होना; **~काटणा** बंधन मुक्त करना।

फंदा (पुं.) दे. फंधा।

फंध (पुं.) दे. फंद।

फंधा (पुं.) 1. रस्सी की गाँठ, 2. जेल, 3. जाल, शिकारी का जाल, 4. षड्यंत्र; **~पैंःकणा/ बिछाणा/लाणा** 1. शिकार फँसाने के लिए जाल बिछाना, दे. लालच होना।

फँलींडू (वि.) फिजूल खर्च करने वाला।

फँसणा (क्रि. अ.) 1. बंधन में पड़ना, 2. झंझट में उलझना, 3. अटकना, उलझना, 4. मन लगना; (वि.) जो शीघ्र फँसे। **फँसना** (हि.)

फँसना (क्रि. अ.) दे. फँसणा।

फँसाणा (क्रि. स.) 1. पाशबद्ध करना, 2. उलझन में डालना।
फँसाना (हि.)

फँसाना (क्रि. स.) दे. फँसाणा।

फक (वि.) 1. सफ़ेद, रंगहीन, 2. स्वच्छ, 3. स्तंभित, 4. (दे. बुक)।

फक-फक (स्त्री.) 1. 'फक'-'फक' की ध्वनि, 2. रेल के चलने से उत्पन्न ध्वनि, 3. वेग से दौड़ते समय उत्पन्न ध्वनि, 4. दिल धड़कने से उत्पन्न ध्वनि; (क्रि. वि.) 1. बेरोक-टोक, 2. धक-धक से।

फकीर (पुं.) 1. साधु, 2. भिखारी; (वि.) निर्धन। **फ़क़ीर** (हि.)

फकीरी (स्त्री.) 1. साधु बनने का भाव, 2. मस्ती का भाव, 3. निर्धनता, 4. भिखमंगापन; **~ठाठ/मोज** 1. बिना चिंता के अमीरी या गरीबी भोगने का भाव, 2. अभाव की स्थिति में भी आनंदित रहने का भाव; **~बाणा** फ़कीरों का पहनावा, भगवाँ वस्त्र; **~लेणा** साधु बनना, घर-बार छोड़ना।

फक्कड़ (वि.) 1. मस्त, 2. मनमौजी, 3. ग़रीब किंतु मस्त, 4. जिसके आगे-पीछे कोई न हो (आगे गुरु न पीछे चेला)।

फच्चर (स्त्री.) दे. फाच्चर।

फजर (स्त्री.) दे. पीळी पाट्याँ।

फजूल (वि.) दे. फ़िजूल।

फजूलखर्च (वि.) अपव्ययी; (पुं) अपव्यय।

फट (स्त्री.) 'फट' की ध्वनि; (क्रि. वि.) तुरंत, झट से; **~दे नैं** झट से, तुरंत।

फटक (स्त्री.) 1. फटकने का भाव या क्रिया, 2. खटक (दे.), 3. साधु की सीख, 4. जादू-टोने का भाव; (क्रि. स.) 'फटकणा' क्रिया का आदे. रूप; **~लागणा** घनीभूत लगाव होना।

फटकड़ी (स्त्री.) फिटकरी।

फटकणा (क्रि. स.) 1. अन्न आदि साफ़ करने के लिए छाज आदि से फटकना, 2. डाँट-डपट देना, 3. निकट आना– वो भोत वार तैं ईंघानैं नाँ फटक्या; (वि.) जिससे सुविधापूर्वक फटका जा सके। **फटकना** (हि.)

फटकना (क्रि. स.) दे. फटकणा।

फटका[1] (पुं.) 1. वस्त्र जिससे दूल्हे-दुल्हन का गठबंधन किया जाता है, 2. चादरा, 3. साधु-फ़क़ीर की फटक या सीख लगने का भाव; (क्रि. स.) 'फटकणा' क्रिया का भू.का. रूप। **पटका** (हि.)

फटका[2] (अव्य.) क्षण भर का समय। उदा. मरत्याँ फटका भी ना लाग्या। दे. पटका।

फटकाणा (क्रि. स.) 1. धुले वस्त्र को दोनों हाथों में पकड़ कर झटकना, 2. फटकारना। **फटकाना** (हि.)

फटकाना (क्रि. स.) दे. फटकाणा।

फटकार (स्त्री.) 1. प्रेम का प्रहार, 2. डाँट-डपट, 2. साधु-संन्यासी की सीख, आदेश या बहकावा, 4. फटकारने का भाव या किया, 5. जादू-टोने का प्रभाव; (क्रि. स.) 'फटकारणा' क्रिया का आदे. रूप; **~मारणा** 1. प्रभावित करना, 2. डाँटना-डपटना, 3. घूँघट से संकेत देना; **~लागणा** 1. रूप पर मोहित होना, 2. जादू-टोने के प्रभाव में आना, 3. डाँट पड़ना।

फटकारणा (क्रि. स.) 1. डाँट-डपट लगाना, 2. छाज में डाल कर उछालना, 3. कपड़े को धोकर फटकना, 4. जादू-टोना चढ़ाना। **फटकारना** (हि.)

फटकारना (क्रि. स.) दे. फटकारणा।

फटकारा (पुं.) 1. फटकारने की क्रिया, 2. प्रेमी या प्रेमिका का एक-दूसरे के प्रति मोहित होने का भाव, 3. जादू- टोना।

फटकी (स्त्री.) 1. दे. मोगरी, 2. दे. फटकार।

फटणा (क्रि. अ.) जीर्ण होना; (वि.) जो शीघ्र फटे। **फटना** (हि.)

फटना (क्रि. अ.) दे. फटणा।

फटफटिया (स्त्री.) मोटर साईकिल।

फटफेड़ (स्त्री.) 1. पशुओं का (कुत्ता, बिल्ली आदि) उलझ कर लड़ने का भाव, 2. पशुओं की लड़ाई में किसी अन्य का बीच में अनायास आने का भाव, 3. शिकार को मुँह में पकड़ कर बार-बार झटकने का भाव, 4. जादू-टोने के स्थल में पैर आने का भाव।

फटफेड़णा (क्रि. स.) 1. शिकार को मुँह में दबा कर बार-बार झटकना, 2. वस्त्र आदि को फटकारना।
फटफेड़ना (हि.)

फटवाड़िया (पुं.) 1. वह जन समुदाय जो राजस्थान के फटिक या फाटिक गाँव से निकल कर इधर-उधर जा बसा हो, 2. फटवाड़िया नाम का अल्ल या उप-गोत्र, जैसे-कौशिक फटवाड़िया।

फटाफट (क्रि. वि.) 1. तीव्र गति से चलने का भाव, तीव्र गति से, 2. तुरंत।

फट्टी (स्त्री.) दे. पट्टी।

फड़[1] (स्त्री.) झूठी बड़ाई; **~मारणा** झूठी बड़ाई करना।

फड़[2] (स्त्री.) गाड़ी की धुरी पर रखी लंबी और भारी लड़की, गाड़ी का हरसा।

फड़क (स्त्री.) 1. किसी वस्तु को प्राप्त करने की लालसा-तूँ अपणी फड़क मिटा म्हारी तै देक्खी जागी, 2. आँख फड़कने का भाव; (क्रि. अ.) 'फड़कणा' क्रिया का प्रे. रूप; **~मेटणा/मिटाणा** इच्छा-पूर्ति करना।

फड़कणा (क्रि. अ.) 1. अंग का फड़कना, 2. आँख फड़कना (जो शकुन-अपशकुन का कारण मानी जाती है), 3. आवेश-वश उछलना, 4. फड़फड़ाना, 5. सोते-सोते घबरा कर उठना, 6. पशु का चौकन्ना होकर देखना; (क्रि. स.) दही को फेंटना; (वि.) जो अधिक फड़के। **फड़कना** (हि.)

फड़कना (क्रि. अ.) दे. फड़कणा।

फड़का[1] (पुं.) 1. आशंका, किसी ध्वनि से उत्पन्न आशंका, 2. फड़कने का भाव या क्रिया, 3. अन्न को लगने वाला एक कीड़ा।

फड़का[2] (पुं.) 1. फसल का हानिकारक कीट, 2. दे.फरड़ा।

फड़काणा (क्रि. स.) 1. हिलाना, संचालित करना, 2. फड़कने के लिए प्रेरित करना।

फड़तूस (पुं) 1. विनाश, 2. उपद्रव; **~ठाणा** 1. विनाश करना, 2. उपद्रव मचाना।
फड़काना (हि.)

फड़दंग (पुं.) खुला स्थान (मेवा.)।

फड़दी (स्त्री.) पंखुरी।

फड़फड़ाणा (क्रि. स.) 1. पशु द्वारा (विशेषकर कुत्ते द्वारा) अपने शरीर से कीचड़-मिट्टी झाड़ने के लिए शरीर हिलाना, 2. पक्षी का अपने परों को 'फड़'-'फड़' की ध्वनि के साथ हिलाना, 3. फटकारना; (क्रि. अ.) हाथ, आँख आदि अंग का स्वतः फड़कना।
फड़फड़ाना (हि.)

फड़फड़ाना (क्रि. स.) दे. फड़फड़ाणा।

फड़फड़ी (स्त्री.) 1. दही में हाथ या मथानी आदि डालकर हिलाने की क्रिया, 2. (दे. दगदगी); (वि.) अधबिलोई (दही)।

फड़बाज (वि.) बड़ाई खोर।

फड़वाणा (क्रि. स.) फाड़ने का काम अन्य से करवाना। **फड़वाना** (हि.)

फण (पुं.) 1. साँप का फन, 2. नागफनी

का पौधा; (स्त्री.) नर पशु के लिंग की गिरी या अग्र भाग; **~छेतणा** विरोधी को मिटाना; **~ठाणा** 1. सामना करना, 2. विरोधी का प्रबल होना; **~पटकणा** सिर धुनना; **~मारणा** 1. डंक मारना, 2. व्यंग्य कसना। **फन** (हि.)

फणफणाणा (क्रि. अ.) 1. साँप द्वारा क्रोध-भरी ध्वनि निकालना, फुंकारना, 2. काटने को लालायित होना, 3. क्रोधित होना। **फनफनाना** (हि.)

फतवा (पुं.) मौलवी आदि द्वारा किसी कर्म के अनुकूल या प्रतिकूल दी जाने वाली धार्मिक घोषणा।

फतह (स्त्री.) जीत, सफलता।

फतुई (स्त्री.) मुसलमान महिलाओं द्वारा आँगी के ऊपर पहना जाने वाला कुड़ता।

फतूर (पुं.) 1. उपद्रव, 2. मानसिक उथल-पुथल; **~ऊठणा** 1. शरारत सूझना, 2. मानसिक उथल-पुथल मचना; **~मचाणा** उपद्रव खड़ा करना।

फतेहाबाद (पुं.) कुरु जांगल का एक भाग।

फ़न (पुं.) 1. गुण, 2. विद्या, 3. दस्तकारी, 4. (दे. फण)।

फ़नफनाना (क्रि. अ.) दे. फणफणाणा।

फ़ना (वि.) नाशवान।

फन्ना (पुं.) 1. लकड़ी का तख़्ता, 2. खपच्ची।

फन्नेखाँ (वि.) 1. सुंदर, 2. श्रेष्ठ।

फफड़ी (स्त्री.) झूठी सहानुभूति।

फफूँदी (स्त्री.) दे. फूही।

फफेड़णा (क्रि.) कुत्ते आदि द्वारा बिल्ली आदि की गर्दन पकड़ कर लहूलुहान करना।

फफेड़े (पुं.) उठा-पटक।

फफोला (पुं.) दे. फफोल्ला।

फफोल्ला (पुं.) जलन, रगड़ आदि से उभरा छाला; **~फोड़णा/दुखाणा** जान-बूझ कर कष्ट देना। **फफोला** (हि.)

फबणा (क्रि. अ.) जँचना, अच्छा लगना। **फबना** (हि.)

फबती (स्त्री.) व्यंग्य, चुटकी।

फबन (क्रि.) दे. फबणा।

फबना (क्रि. अ.) दे. फबणा।

फरक (पुं.) 1. अंतर, फ़र्क, 2. अलग, भिन्न, 3. परायापन बरतने का भाव; **~करणा/बरतणा** समान बर्ताव न रखना। **फ़र्क** (हि.)

फरकणा (क्रि. अ.) 1. फ़हराना (ध्वजा आदि का), 2. आँख आदि फड़कना, 3. इठलाना; (वि.) जो अधिक फहरे। **फरकना** (हि.)

फरकाना (क्रि. स.) दे. फड़काणा।

फरगल (पुं.) छोटे बच्चे की चोटीनुमा टोपी जिसके पिछले भाग में नीचे तक झालर लटकती है।

फरचट (स्त्री.) दे. फाच्चर।

फरज (पुं.) कर्तव्य। **फ़र्ज** (हि.)

फरजी (वि.) 1. बनावटी, जाली, 2. काल्पनिक। **फ़र्जी** (हि.)

फरड़ा (पुं.) 1. ज्वार, बाजरे आदि का (सूखा) पौधा, 2. सेना-दल—पहल्याँ कई गाम राज्जा तैं फोज-फरड़ा माँग कै दूसरे गाम्माँ पै चढा दिया करते, 3. (दे. फाँट्टा); **फोज**~सेना-दल, सैन्य दल।

फरद (स्त्री.) 1. चद्दर, ऊनी चद्दर, 2. भूमि का पट्टे-संबंधी व्योरा लिखा काग़ज़। **फ़र्द** (हि.)

फरफराणा (क्रि.स.) फहराना; (क्रि.अ.) फर-फर की ध्वनि निकलना। **फरफराना** (हि.)

फरमाँ (पुं.) साँचा।

फरमाँबरदार (वि.) आज्ञाकारी।

फरमाइश (स्त्री.) विशेष अनुरोध।

फरमाइशी (वि.) विशेष अनुरोध-संबंधी।

फ़रमान (पुं.) राजकीय आज्ञा-पत्र।

फरमाणा (क्रि. स.) 1. आज्ञा देना, 2. कहना। **फ़रमाना** (हि.)

फरमाल्ला (क्रि. वि.) बहुतायत में।

फरराट्टा (पुं.) 'फर'-'फर' की ध्वनि जो वेग गति के कारण उत्पन्न होती है; **~ऊठणा** 1. अति तीव्र गति होना, मशीन आदि से तेज़ी के साथ काम होना शुरू होना, 2. निर्बाध काम होना।

फरराह् (पुं.) काग़ज़ का टुकड़ा, काग़ज़।

फररीह् (स्त्री.) काग़ज़ की रंग-बिरंगी धज्जियाँ।

फरल्-फरल् (स्त्री.) 'फरळ-फरळ' की ध्वनि।

फरलांग (पुं.) 220 गज की दूरी, एक नाप विशेष। **फ़र्लांग** (हि.)

फरवट (वि.) 1. कुशल, निपुण, 2. अभ्यस्त; **~होणा** 1. निपुणता आना, 2. निर्बाध गति से काम होना।

फरस (पुं.) 1. टाट-पट्टी, 2. कमरे आदि का तल। **फ़र्श** (हि.)

फरसा (पुं.) एक आयुध, पैनी कुल्हाड़ी विशेष जिसकी फाल चंद्राकार होती है।

फरसी (स्त्री.) 1. पीतल की हुकटी या छोटा हुक्का, 2. फरसा।

फरहड़ (स्त्री.) कुछ समय के लिए वर्षा रुकना।

फरहरी (पुं.) फौज का भगोड़ा। दे. फरैहरी।

फरार (वि.) भागा हुआ, भगोड़ा, (दे. फरैह्री)।

फरिया (स्त्री.) छोटी घघरी।

फ़रियाद (स्त्री.) विनती।

फरियाल्ला (वि.) 1. कुछ-कुछ गीला, 2. (वस्त्र) जो पूरी तरह सूखा न हो—फरियाल्ले लत्ते पहरण तैं दाध अर ढेरे हो ज्याँ सैं।

फरी (वि.) मुफ्त, अंग्रेजी शब्द फ्री।

फ़रिश्ता (पुं.) देवता; (वि.) दैविक गुणों वाला।

फ़रीक (पुं.) 1. टोली, एक ही विचारधारा के लोगों का समूह, 2. धड़ा।

फ़रेब (पुं.) छल, कपट।

फरैह्री (पुं.) 1. सेना का भगोड़ा व्यक्ति, 2. फ़रार, 3. लुटेरा।

फ़र्ज (पुं.) दे. फरज।

फ़र्जी (वि.) दे. फरजी।

फ़र्श (पुं.) दे. फरस।

फलंगारी (स्त्री.) दे. फल्लारी।

फल (पुं.) दे. फळ।

फळ (पुं.) 1. परिणाम, 2. पहेली का उत्तर—मेरी कहाणी का फळ बता, 3. लाभ, 4. प्रतिफल, जैसे—करे का फल भोग, 5. मूल का ब्याज, 6. फल, वृक्ष का फल; **~पाणा** अच्छे-बुरे कार्य का परिणाम भोगना; **~-पात** 1. फल-पत्ते आदि, 2. फल- फूल आदि; **~बताणा/ काढणा** पहेली का उत्तर देना; **~बूझणा** कहानी या पहेली का उत्तर पूछना; **~लिकाड़णा** पहेली का उत्तर निकालना या देना; **~साहमीं आणा** किए का परिणाम मिलना। **फल** (हि.)

फळणा (क्रि. अ.) 1. फल लगना, 2. बहुत से फुंसी-फोड़े निकलना,

3. बढ़ोतरी या वृद्धि होना; (क्रि.स.) फलाना या गिनती करना; (वि.) जो फले-फूले; ~-**फूलणा** 1. परिवार की वृद्धि होना, 2. सब प्रकार का सुख मिलना। **फलना** (हि.)

फल-फलारे (पुं.) मीठा मिले गेहूँ के आटे की छोटी-छोटी तली मिठाई विशेष।

फळवा (पुं.) 1. कपड़े या चद्दर के छोरों पर निकले धागों को गूँथने से बनी झालर, 2. बुनाई के बाद ताने से शेष रहने वाले तंतु।

फळवाणा (क्रि.) फलित करवाना।

फळस (स्त्री.) दे. फळसी।

फळसा (पुं.) 1. बस्ती से बाहर के घरों से सटा भाग, गोरा, गाँव-गोरा, 2. गाँव के बाहर का चौराहा, 3. (दे. गितवाड़ा); **~(-सै) गडवाणा** सार्वजनिक दंड देना।

फळसी (स्त्री.) 1. झाड़ियों को बाँध कर बनाई गई भारी ढेरी जिसे खलियान पर घुमाया जाता है ताकि बाली छिलने से अन्न अलग हो सके, 2. झाड़ियों को बाँधकर बनाई गई दरवाज़ेनुमा ओट जिससे पशु बाड़े या गितवाड़े में न घुस सके; **~चलाणा** 1. ख़लियान पर फलसी जोतना, 2. दिल छीलना।

फलाँ (वि.) दे. फलाणा।

फलाँग (स्त्री.) 1. लाँघने की क्रिया, 2. चौकड़ी भरने की क्रिया, 3. घोड़े आदि पर कूद कर चढ़ने की क्रिया, (दे. फल्लारी)। **प्रलंघन** (हि.)

फलाँगणा (क्रि. स.) 1. खंदक आदि को लाँघना, 2. विजय प्राप्त करना; (वि.) वह जो फलाँग सके। **फलाँगना** (हि.)

फलाँगना (क्रि. स.) दे. फलाँगणा।

फलाणा[1] (वि.) 1. अमुक, 2. बड़े व्यक्ति का नाम न लेने के स्थान पर प्रयुक्त शब्द–अरी थारा फलाणा घराँ सै के? 3. पराया, दूर का; (क्रि.स.) 1. फलन करना, हिसाब लगाना, 2. फैलाना; ~-**धिकड़ा** 1. अमुक, जैसे –फलाणा-धिकड़ा न्यूँ कहै था, 2. दूर का, पराया; ~ **~करणा** 1. बुरी-भली कहना, 2. दूर का समझना, पराया समझना; ~-**मुकड़ा** 1. दूर का व्यक्ति; 2. अनजान। **फलाँ** (हि.)

फळाणा[2] (क्रि.) 1. गिनना, फलित करना। 2. दे. फलाणा[1]।

फलारी (स्त्री.) दे. फल्लारी।

फलाहार (पुं.) दे. फळिहार।

फलाहारी (वि.) फलाहार पर रहने वाला।

फळिहार (पुं.) व्रत खोलते समय खाया जाने वाला फल आदि का भोजन। **फलाहार** (हि.)

फली (स्त्री.) दे. फळी[1]।

फळी[1] (स्त्री.) बेल, वृक्ष आदि पर लगी फली; (क्रि. अ.) 'फळणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं., एकव. रूप; **~नाँ फोड़णा** परिश्रम नहीं करना, ठाली बैठे रहना। **फली** (हि.)

फळी[2] (स्त्री.) वह लकड़ी जिसे चमार चमड़ा काटते समय नीचे रखता है।

फलेज (पुं.) सब्जी उगाने का छोटा खेत या प्लाट।

फलोसरा (पुं.) झूठी सांत्वना।

फल्गू (पुं.) कुरुक्षेत्र के निकट एक तीर्थ, फल्गूवन-तीर्थ।

फल्यार (पुं.) दे. फळिहार।

फल्लारी (स्त्री.) 1. उछल-कूद करने की क्रिया, 2. खंदक कूदने या घोड़े पर

सवारी करने से पहले ली जाने वाली उछाल, (दे. फलाँग); **~मारणा** 1. उछल कर आरोहण करना, 2. उछल कर लाँघना।

फसल (स्त्री.) 1. खेत की उपज, 2. खेती, 3. फल-फूल के पकने का समय, 4. समय, काल, ऋतु। **फ़सल** (हि.)

फ़सली (वि.) 1. ऋतु विशेष का काल, 2. ऋतु-संबंधी, 3. अवसरवादी; **~ बटेर** 1. अवसरवादी, 2. मुफ़्तख़ोरा।

फसाद (पुं.) लड़ाई-झगड़ा, दंगा, उपद्रव।/ **फ़साद** (हि.)

फहणा (क्रि. अ.) 1. उलझना, 2. लड़ाई-झगड़े में फँसना, 3. मुसीबत में पड़ना, 4. बात अटकना, 5. काम रुकना, 6. धँसना, फँसना। **फँसना** (हि.)

फहफोट्टा (पुं.) बनावटी रूप से रोने-धोने का भाव, छल-कपटपूर्ण अभिनय।

फहरना (क्रि. अ.) लहराना, वायु में उड़ना।

फहराना (क्रि. स.) लहराना, ध्वजा आदि फहराना; (क्रि. अ.) हवा में रह-रह कर उड़ना।

फही (स्त्री.) मुसीबत का समय-1. फही-अणफही मैं सब कुछ करणा पड़ै सै, 2. अपणी फही मैं सब हाथ हलावै सैं; (क्रि. अ.) 'फहणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~-अणफही मैं** आपत्ति काल में; **~-फही मैं** आपत्ति काल में।

फाँक (स्त्री.) 1. फल, सब्ज़ी आदि का टुकड़ा, 2. टुकड़ा-तेरी फाँक-फाँक कर द्यूँगा, 1. (दे. फाँकड़ी), 2. (दे. साँख); (क्रि. स.) 'फाँकणा' क्रिया का आदे. रूप; **~-सा** पतला-सा।

फाँकड़ी (स्त्री.) 1. चरखे की अरा, 2. लकड़ी का पतला टुकड़ा, 3. टुकड़ा, छोटा टुकड़ा; (वि.) दुबला-पतला; **~-सा** 1. दुर्बल, क्षीणकाय, 2. दूज के चाँद के आकार का।

फाँकणा (क्रि. स.) 1. किसी वस्तु को हथेली पर रखकर झटके से मुँह में डालना, फाँकी लेना, 2. हड़पना; (वि.) जिसे फाँका जाए चबाया नहीं जाए। **फाँकना** (हि.)

फाँकना (क्रि. स.) दे. फाँकणा।

फाँक्का (पुं.) 1. फाँकने की क्रिया, 2. अधिक मात्रा में ली गई फाँकी, फँकी; **~लाणा** 1. (बूरा आदि खाद्य-पदार्थ को) फाँकते रहना, 2. फाँकना।

फाँक्की (स्त्री.) 1. ओषधि जो फाँकी के रूप में सेवन की जाए, 2. विष की फाँकी, 3. इतनी मात्रा की वस्तु जो एक बार में फाँकी जा सके, 4. सिंचाई के लिए प्रयुक्त छोटी नाली; (क्रि. स.) 'फाँकणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

फाँगड़ी (स्त्री.) दे. फाँकड़ी।

फाँगरणा (क्रि. अ.) पनपना।

फाँट (पुं) ज्वार-बाजरे का पौधा (विशेषकर सूखा)। **फाँटा** (हि.)

फाँट्टा (पुं.) 1. लपेटा, 2. (दे. फरड़ा)। **फेंटा** (हि.)

फाँड्डा (वि.) 1. टेढ़े पैर वाला, 2. जिसके पैरों के पंजे टेढ़े पड़ते हों (तुल. बाँड्डा)। **फाँडा** (हि.)

फाँदना (क्रि. स.) दे. फाँधणा।

फाँधड़ (वि.) दे. ढाँक।

फाँधणा (क्रि. स.) खाई आदि लाँघना। **फाँदना** (हि.)

फाँस (स्त्री.) 1. डंठल, तीली, 2. खेत काटने के बाद बचा नीचे का ठूँठ, 3. फाँसी का फंदा; (क्रि. स.) 'फाँसणा' क्रिया का आदे. रूप।

फाँसणा (क्रि. स.) 1. जालसाज़ी में फँसाना, 2. पासना। **फाँसना** (हि.)

फाँसना (क्रि. स.) दे. फाँसणा।

फाँसी (स्त्री.) दे. फाँस्सी।

फाँस्सा (पुं.) 1. रस्सी में लगी गाँठ, 2. सरक पाँसे की गाँठ, फंदे की गाँठ, 3. प्रतिबंध, रुकावट; **~(-स्से) मैं फँसणा** 1. बंधन में पड़ना, 2. जालसाज़ी में आना। **फाँसा** (हि.)

फाँस्सी (स्त्री.) 1. फाँसी का फंदा, 2. गले में फंदा डालकर मरने या मारने की क्रिया, 3. भयंकर आपत्ति, 4. दम-तोड़ बंधन, 5. मृत्यु-दंड; (क्रि. स.) 'फाँसणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिंग एकवचन रूप; **~खाणा/ लाणा/लेणा** 1. गले में फंदा डाल कर मरना, 2. घोर आपत्ति मोल लेना। **फाँसी** (हि.)

फ़ाका (पुं.) दे. फाक्का।

फाक्का (पुं.) 1. व्रत, 2. ग़रीबी की अवस्था। **फ़ाका** (हि.)

फाग (पुं.) 1. दे. धुलैंह्ढी, 2. दे. फाग्गण।

फागुन (पुं.) दे. फाग्गण।

फाग्गण (पुं.) फाल्गुन का महीना, संवत् का बारहवाँ महीना। **फागुन** (हि.)

फाच्चट (स्त्री.) दे. फाच्चर।

फाच्चर (स्त्री.) लकड़ी का छोटा पतला टुकड़ा, (दे. पाच्चर); **~मारणा** काम में अवरोध उत्पन्न करना। **पच्चर** (हि.)

फाटक (पुं.) प्रवेश-द्वार, बाहर का दरवाज़ा।

फाड़णा (क्रि. स.) 1. टुकड़े करना, 2. विदीर्ण करना, 3. पौध आदि उखाड़ना, 4. दूध में लाग लगाकर छेलड़े बनाना; (वि.) 1. दे. पड़खणा, 2. (दे. पाड़णा)। **फाड़ना** (हि.)

फाड़ना (क्रि. स.) दे. फाड़णा।

फाण (पुं.) दे. उफाण।

फान्नी (स्त्री.) कुट्टी काटते समय गंडासे के दोनों ओर बचे चारे के लंबे तिनके; (वि.) नाशवान।

फापाँचर (स्त्री.) 1. दे. फाँस, 2. दे. खपच्ची।

फाबणा (क्रि. अ.) 1. शोभित होना, 2. रास आना। **फबना** (हि.)

फायदा (पुं.) लाभ। **फ़ायदा** (हि.)

फायदेमंद (वि.) लाभकारी। **फ़ायदेमंद** (हि.)

फारम[1] (पुं.) नई विधि से बोया-काटा जाने वाला खेत। **फ़ार्म** (हि.)

फारम[2] (पुं.) विशेष उद्देश्य के लिए तैयार किया गया काग़ज़ जिसमें विशेष विवरण माँगा जाता है; **~भरणा** आवेदन-पत्र देना। **फ़ॉर्म** (हि.)

फारमी (वि.) फार्म पर उत्पन्न (फ़सल), उन्नत (फ़सल)।

फारसी (स्त्री.) 1. संस्कृत से प्रभावित एक भाषा, 2. उर्दू से कठिन एक मुसलमानी भाषा, 3. वह भाषा जिसे समझा न जा सके–गूँग्गे तेरी फारसी नैं समझै तेरी माँ। **फ़ारसी** (हि.)

फाल (स्त्री.) लोहे की कुश।

फालतू (वि.) 1. अतिरिक्त, 2. अवांछित, 3. निकम्मा। **फ़ालतू** (हि.)

फालरी (स्त्री.) दे. चरी।

फालसा (पुं.) 1. एक पौधा जिस पर खट्टे-मीठे फल लगते हैं, 2. इस पौधे

का फल। **फ़ालसा** (हि.)

फाळा (पुं.) दे. फाह्ळा।

फालिज (पुं.) लकवा। **फ़ालिज** (हि.)

फाळी (स्त्री.) दे. फाह्ळी।

फाल्गुन (पुं.) दे. फाग्गण।

फाल्गुनी (स्त्री.) एक नक्षत्र।

फावड़ा (पुं.) दे. फाह्वड़ा।

फावा (पुं.) पाँव का अगला भाग। दे. लाँक। 2. पब्बा।

फासला (पुं.) दूरी, अंतर। **फ़ासला**(हि.)

फाहणा (क्रि. स.) 1. मुसीबत में डालना, 2. अटकाना, उलझाना, 3. पिंजड़े में फँसाना। **फँसाना** (हि.)

फाहफोट्टा (पुं.) दे. फहफोट्टा।

फाह्ळा (पुं.) फाहला, बड़ी कस्सी। दे. झाम।

फाह्ली (स्त्री.) फाहली, कस्सी।

फाह्वड़ा (पुं.) लंबे दस्ते वाला लकड़ी का यंत्र विशेष जिसके किनारे पर अर्ध-चंद्राकार फाल लगी होती है और जो प्राय: थान (दे. थाण) से गोबर को एक ओर खींचने के काम आता है। **फावड़ा** (हि.)

फिकर (स्त्री.) चिंता। **फ़िक्र** (हि.)

फ़िकरा (पुं.) वाक्य।

फ़िक्र (स्त्री.) दे. फिकर।

फ़िजूल (वि.) फ़िजूल, व्यर्थ; **~करणा** 1. नष्ट करना, 2. किसी काम के लायक न छोड़ना।

फ़िट[1] (अव्य.) धिक, छी:।

फ़िट[2] (वि.) 1. सही, सही नाप का, 2. हर प्रकार से आवश्यकता के अनुकूल।

फिटकरी (स्त्री.) दे. फटकड़ी।

फिटवाणा (क्रि. स.) दे. फिटाणा।

फिटाणा (क्रि. स.) फिटाना, मुलाक़ात कराना।

फिड़का (पुं.) फसल का हानिकारक कीट।

फ़ितूर (पुं.) दे. फतूर।

फितूही (स्त्री.) जाकेट। **फ़तूही** (हि.)

फ़िरंगी (पुं.) 1. अंग्रेज़–अरै बेइमान फिरंगी पाकिस्तान बणागे (लो. गी.), 2. लुटेरा।

फिर (क्रि. वि.) दे. फेर।

फिरकणी (स्त्री.) दे. फिरकी।

फिरकी (स्त्री.) 1. चक्री, 2. काग़ज़ का बना पंखेनुमा खिलौना जो हवा लगने पर घूमता है, 3. खिलौने की चक्री जो चक्राकार घूमती है; (वि.) तेज़ दौड़ने या घूमने वाला; **~-सी घूमणा** 1. मारी-मारी फिरना, 2. तेज़ घूमना; **~होणा** तेज़ दौड़ना, (दे. तीतरी होणा)।

फिर कै (अव्य.) पुन:। दे. फेर।

फिरणा (क्रि. अ.) 1. घूमना-फिरना, 2. घूम जाना, अपने स्थान से आगे टहल जाना, 3. मारा-मारा फिरना, 4. व्यर्थ में समय नष्ट करना, 5. मादा पशु का गर्भ स्थिर न होना, 6. पशु का गर्भपात होना, 7. वचन से मुकरना, 8. सिर चकराना, 9. गर्भावस्था में बच्चे का घूमते रहना, 10. मुड़ कर देखना, 11. लौटना, 12. चारों ओर समाचार घूमना, 13. घघरी, पल्ले आदि का छोर किसी वस्तु पर पड़ना; (वि.) जो शीघ्र फिरे या घूमे। **फिरना** (हि.)

फिरणी (स्त्री.) 1. (नई चकबंदी में) गाँव के चारों ओर खाली छोड़ी हुई चारण भूमि, 2. गाँव-परिक्रमा की भूमि, 3. गाँव के चारों ओर बना मार्ग, 4. नगर-परिक्रमा का पथ, 5. (दे. फेंणी);

(वि.) 1. जो शीघ्र फिर जाए, 2. दुश्चरित्रा।

फिरता जी (पुं.) (जनधारणा के अनुसार) वह 'प्राण' या 'जीव' जो हर समय शरीर में किसी न किसी स्थान पर घूमता रहता है और यदि इस जीव पर चोट लगे तो तुरंत प्राणांत हो जाता है; **~(-ते) जी पै लागणा** अचानक उस भाग पर चोट लगना जहाँ जीव का वास होता है, मरना।

फिरना (क्रि. अ.) दे. फिरणा।

फिराँस (पुं.) नुकीले पत्तों का शंकुआकार एक सघन वृक्ष (जिसमें भूत का निवास मानते हैं)।

फिराक[1] (स्त्री.) खोज, तलाश। **फ़िराक़** (हि.)

फिराक[2] (स्त्री.) फ्रॉक, बालिकाओं का वस्त्र विशेष। **फ्रॉक** (हि.)

फिराणा (क्रि. स.) 1. घुमाना, 2. (किसी को) वचन से हटाना, 3. विपरीत दिशा में करना, 4. चक्कर दिलाना, 5. लौटाना। **फिराना** (हि.)

फिराना (क्रि. स.) दे. फिराणा।

फिलकरा (पुं.) 1. बड़ा छाला, जूती के काटने के कारण पैर में पड़ा छाला, 2. (दे. फफोल्ला)।

फिसलन (स्त्री.) दे. रिपटण।

फिसलना (क्रि. अ.) दे. रिपटणा।

फींणी (पुं.) 1. दोष। उदा.–बखत फींणी। 2. दे. फेंणी।

फी (स्त्री.) कमी, गुण का अभाव–तन्नैं मेरे मैं के फी देखली, (दे. फीह)। **फ़ी** (हि.)

फीक (स्त्री.) 1. तुल. पीक, 2. कमी।

फीका (वि.) दे. फीक्का।

फीक्कल (वि.) फीके रंग का, कम गहरे रंग का। **फ़ीका** (हि.)

फीक्का (वि.) 1. जिसमें नमक, मीठे आदि का अभाव हो, 2. कम गहरे रंग का, 3. आभाहीन, 4. घटिया, (दे. फोक्का)। **फीका** (हि.)

फीच (स्त्री.) घुटने का पृष्ठ भाग।

फीटणा (क्रि. अ.) फुदकना।

फीड्डी (वि.) वह (जूती) जिसका पीछे का भाग एक ओर झुक गया हो; **~जूत्ती** वह जूती जिसका पीछे का चोटिया एक ओर दब गया हो या दबा दिया गया हो; **~ ~करणा/ मारणा** जूती का पृष्ठ भाग (चोटिया) एड़ी के नीचे दबाना।

फीणी (स्त्री.) 1. सिर का एक आभूषण, 2. एक मिठाई।

फीत्ता (पुं.) 1. जूते आदि का तसमा, 2. नाप के काम आने वाली चिह्नित रस्सी; **~गेरणा** दे. जेवड़ी गेरणा। **फ़ीता** (हि.)

फीम (स्त्री.) एक उन्मादक पदार्थ। **अफ़ीम** (हि.)

फीमची (वि.) अफ़ीम खाने वाला, (दे. नसैहड़ी)। **अफ़ीमची** (हि.)

फ़ीरोज़ी (वि.) हरापन लिए नीले रंग का।

फील (पु.) हाथी। दे. पीलवान।

फीस (स्त्री.) शुल्क, विद्यालय आदि की फीस। **फ़ीस** (हि.)

फीह (स्त्री.) दोष, कमी, (दे. फी)।

फुँकणा (क्रि. अ.) 1. जलना, 2. मन ही मन कुढ़ना; (वि.) फुँकने योग्य। **फुँकना** (हि.)

फुँकना (क्रि. अ.) दे. फुँकणा।

फुँकवाणा (क्रि. स.) 1. आग लगवाना, 2. नष्ट करवाना; **~-धमवाणा** विध्वंस कराना, नष्ट कराना।
फुँकवाना (हि.)

फुँकवाना (क्रि. स.) दे. फुँकवाणा।

फुंकाड़ (स्त्री.) 1. फुंकार, साँप द्वारा क्रोध के समय निकाली गई ध्वनि, 2. पशु द्वारा तेज़ी से निकाला गया साँस, 3. खर्राटा, 4. चैन की नींद; **~मारणा** 1. सुख की नींद सोना, 2. फूत्कार करना। **फूत्कार** (हि.)

फुँगळी (स्त्री.) (कौर.) 1. दे. कूप्पळ, 2. दे. सिखरी, 3. दे. फुँणगी।

फुँणगी (स्त्री.) दे. सिखरी।

फुँणसी (स्त्री.) दे. गूमड़ी। **फुंसी** (हि.)

फुँदना (पुं.) दे. फूँदणा।

फुँफाणा (क्रि. अ.) 1. फूँ-फाँ करना, 2. क्रोध दिखाना, 3. साँप का फुफारना; (वि.) वह जो फुफकारे।
फुँफाना (हि.)

फुंसी (स्त्री.) दे. फुँणसी।

फुट (पुं.) 1. अंग्रेज़ी नाप की चिह्नित डंडी जो बारह इंच की होती है, 2. बारह इंच का नाप; (वि.) एक फुट का।
फ़ुट (हि.)

फुटक (स्त्री.) फुटकी, दूध के फटने से उत्पन्न छोटा गल्हा या छेलड़ा (जो सतह पर तैरता है); (क्रि. अ.) 'फुटकणा' क्रिया का आदे. रूप।

फुटकड़ (स्त्री.) टूटे हुए पैसे, खुली रेजगारी।

फुटकणा (क्रि. अ.) 1. किसी विद्यार्थी का निश्चित समय से पूर्व कक्षा से भाग निकलना, 2. जाना, भाग जाना।

फुटकर (स्त्री.) दे. फुटकड़।

फुटकी (स्त्री.) सर्वविनाश। **~पड़णा**– सर्वनाश होना।

फुटास (स्त्री.) 1. पौधे या बीज में अंकुरण की स्थिति, 2. (दे. फुटक); **~आणा/ ऊठणा/होणा** बीज या पौधे में अंकुर आना।

फुड़वाणा (क्रि. स.) तुड़वाना, तोड़ने का काम अन्य से करवाना।
फुड़वाना (हि.)

फुदक (स्त्री.) 1. उछलने या कूदने की क्रिया, 2. दोनों पैरों को साथ मिला कर उछलने या कूदने की क्रिया, 3. मेंढ़क या चिड़िया आदि की उछाल; (क्रि. अ.) 'फुदकणा' क्रिया का आदे. रूप।

फुदकड़ा (पुं.) उमंगपूर्ण दौड़ने की क्रिया; **~मारणा** उछलते-कूदते फिरना।

फुदकणा (क्रि. अ.) कूदना या उछलना; (वि.) वह जो हर समय फुदके।
फुदकना (हि.)

फुदकना (क्रि. अ.) दे. फुदकणा।

फुदकी (स्त्री.) दे. फुदक।

फुद्दी (स्त्री.) भगा, योनि।

फुफाट (पुं.) फूत्कार, फुफकारने की ध्वनि, (दे. फुंकाड़); **~ठाणा** तेज़ी से 'फूँ'-'फूँ' की ध्वनि निकालना (विशेषकर साँप द्वारा)।

फुफाणा (क्रि. अ.) 1. फूँ-फूँ करना, 2. पशु का रुक-रुक कर तेज़ी से नाक से हवा निकालना, 3. साँप द्वारा फुँकारना, 4. क्रोधित होकर कहना; (वि.) वह जो फूत्कार करे। **फुफाना** (हि.)

फुफेरा (वि.) 1. फूफा से संबंधित, 2. फूफा का (पुत्र आदि)।

फुरती (स्त्री.) तेज़ी, शीघ्रता, चुस्ती।

फुरतीला (वि.) चुस्त, फुरती वाला।

फुरसत (स्त्री.) 1. फालतू समय, 2. विश्राम-वेला। **फ़ुरसत** (हि.)

फुरहरी (स्त्री.) कँपकँपी; **~ऊठणा** 1. रोंगटे खड़े होना, 2. कँपकँपी आना।

फुलका (पुं.) गेहूँ के आटे की फूली हुई हल्की रोटी, हल्की रोटी; **~सूँघणा** बहुत कम भोजन करना।

फुलकारी (स्त्री.) एक प्रकार की ओढ़नी विशेष।

फुलझड़ी (स्त्री.) आतिशबाजी की तीली जिसे जलाने पर चमकीले फूल से झड़ते हैं; (वि.) बहुत सुंदर (महिला); **~छूटणा** 1. प्रसन्न होना, 2. चमकीले दाँत दिखाकर हँसना; **~-सी** सुंदर-सी।

फुलबाड़ी (स्त्री.) वाटिका, फूलों की वाटिका। **फुलवारी** (हि.)

फुलवाणा (क्रि. स.) दे. फुलाणा।

फुलवारी (स्त्री.) दे. फुलबाड़ी।

फुळसी (स्त्री.) दे. फळसी।

फुलाणा (क्रि. स.) 1. हवा डालकर मोटा करना, 2. पानी में भिगो कर अन्न आदि को मोटा करना, 3. चापलूसी करके प्रसन्न करना; 4. उपेक्षाभाववश मुँह फुलाना, 5. रोटी को तवे या आग पर फुलाना, 6. फुलाने का काम अन्य से कराना। **फुलाना** (हि.)

फुलाना (क्रि. स.) दे. फुलाणा।

फुलालेन (स्त्री.) 1. सुगंधियुक्त तेल, 2. सुगंधयुक्त गोली या टिक्की, 3. एक प्रकार का वस्त्र। **फुलेल** (हि.)

फुलेरी (स्त्री.) 1. चमड़ी पर होने वाले सफ़ेद दाग़।

फुलेहरा-दोज (स्त्री.) फाल्गुन सुदी द्वितीया (जो विवाह-संस्कार के लिए प्रसिद्ध तिथि है)। **फाल्गुनी द्वितीया** (हि.)

फुस (स्त्री.) 1. टायर से अचानक हवा निकलने पर उत्पन्न ध्वनि, 2. अपान वायु या पाद की ध्वनि, 3. अत्यंत मंद स्वर, 4. खिचड़ी आदि के खदकने से उत्पन्न ध्वनि, (पहेली–छोटी सी छोहरी सेर नाज खा, फुस-फुस पादै उसका सत्यानास जा। उत्तर–हाँडी में खिचड़ी पकने की प्रक्रिया)।

फुसफुसाणा (क्रि. अ.) 1. कानाफूसी करना, 2. बड़बड़ाना। **फुसफुसाना** (हि.)

फुसफुसाना (क्रि. अ.) दे. फुसफुसाणा।

फुसर-फुसर (स्त्री.) फुसफुसाने की क्रिया या भाव।

फुसलाणा (क्रि. अ.) बहकाना, अनुकूल करने के लिए मीठी-मीठी बातें कहना, (दे. पटाणा)। **फुसलाना** (हि.)

फुहार (स्त्री.) 1. जल के हल्के छींटे, 2. अत्यंत मंद वृष्टि, बारिश की हल्की झड़ी; **~छूटणा/फूटणा** आनंदित होना।

फुहारा (पुं.) 1. जल-प्रपात, झरना, 2. सींचने के काम आने वाली बालटी जिसके साथ जालीदार ढक्कन लगा हो। **फौआरा** (हि.)

फूँ (स्त्री.) फुंकारने की क्रिया; **~-फाँ करणा** 1. क्रोध करना, 2. डराना।

फूँक (स्त्री.) दे. फूक।

फूँकणा (क्रि. स.) दे. फूकणा।

फूँकणी (स्त्री.) थोथी नली विशेष जिससे हवा फूँककर आग प्रज्वलित की जाती है, (दे. धोंकणी); **~-धमणी** विनाशिनी।

फूँकना (क्रि. स.) दे. फूकणा।

फूँक्की (स्त्री.) दे. फूँकणी; (क्रि. स.) 'फूँकणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

फूँदणा/फूँदा (पुं.) फुँदना, किनारे पर बँधे कोमल तंतु या वस्त्र।

फूक (स्त्री.) 1. मुँह की हवा, साँस, 2. पराई सीख, 3. प्रेतात्मा; (क्रि.स.) 'फूकणा' क्रिया का आदे. रूप; **~आणा** 1. पराई सीख चढ़ना, 2. अभिमान उत्पन्न होना; 3. प्रेतात्मा का प्रभाव होना; **~देणा/भरणा** 1. बहकाना, 2. झूठी बड़ाई करना; **~मारणा** 1. जादू-टोना करना, 2. बहकाना; **~होणा** पराई सीख होना। **फूँक** (हि.)

फूकणा (क्रि. स.) 1. जलाना, 2. मुर्दे को फूँकना, 3. फूँक मारना, 4. नष्ट करना, 5. धन नष्ट करना, 6. दाँव पर लगाकर हारना; (वि.) अपना तथा अन्य का विनाश करने वाला, (पुं.) बड़ी फूँकनी; **~-धमणा** जलाना, आग लगाना, ध्वंस करना। **फूकना** (हि.)

फूक्का (वि.) 1. अपनी संपत्ति को लुटाने वाला, 2. विनाश करने वाला; **~-धम्मी** 1. फूँकने का भाव, 2. नष्ट करने का भाव; **~ ~करणा** 1. सर्वनाश करना, 2. कठिन परिस्थिति में भोजन बनाना (व्यंग्य में प्रयुक्त)।

फूट[1] (पुं.) ग्रीष्म ऋतु का फल विशेष जो बेल पर लगता है और पकने पर स्वयं फूट या खिल जाता है (तुल. कचरा); (क्रि. अ.) 'फूटणा' क्रिया का आदे. रूप।

फूट[2] (स्त्री.) 1. वे बर्तन जो टूट-फूट गए हों, 2. बीज, पौधे आदि के अंकुरित होने की स्थिति, 3. विरोध, 4. मन-मुटाव, 5. चोट, 6. (दे. फुटकड़); **~काढणा** टूट-फूट के बर्तन बेचना; **~पड़णा** 1. आपसी भेद-भाव उत्पन्न होना, 2. विरोध प्रकट करना, 3. फूट-फूट कर रोना।

फूट[3] (स्त्री.) आभूषणों में मिलाया जाने वाला खोट।

फूटणा (क्रि. अ.) 1. टूटना, खंडित होना, 2. अंकुर निकलना, 3. अंधा होना, 4. मन की बात रो-रो कर कहना, रोना, 5. दूसरी टोली में जा मिलना, दल बदलना, 6. फल का पक कर फटना; (वि.) वह जो जल्दी फूटे। **फूटना** (हि.)

फूटना (क्रि. अ.) दे. फूटणा।

फूट्टी (वि.) फूटी या टूटी हुई (वस्तु); (क्रि. अ.) 'फूटणा' क्रिया का भू. का. , स्त्रीलिं., एकव. रूप; **~आख्याँ नाँ सुहाणा** ईर्ष्यालु भाव से देखना; **~कोड्डी नाँ होणा** खाली हाथ होना, निर्धन होना। **फूटी** (हि.)

फूट्या (वि.) फूटा हुआ, टूटा हुआ, खंडित; (क्रि. अ.) 'फूटणा' क्रिया का भू. का. , एकव., पुं. रूप; **~मुँह** 1. सदा गुम-सुम रहने वाला, 2. सदा अशुभ वचन बोलने वाला।

फूड़ (वि.) दे. फूहड़। **फूहड़** (हि.)

फूफूस (स्त्री.) पति की बूआ।

फूफसरा (पुं.) पति का फूफा।

फूफा (पुं.) दे. फूफ्फा।

फूफ्फा (पुं.) बुआ का पति। **फूफा** (हि.)

फूफ्फी (स्त्री.) 1. पति की बूआ, 2. बूआ। **फूफी** (हि.)

फूल (पुं.) 1. पुष्प, 2. एक धातु जो हल्की होती है, 3. मृतक की अस्थियाँ (जो प्रवाह के लिए एकत्रित की जाती हैं), 4. रई या मथानी की फाँक या अरा, 5. नवजात शिशु, 6. कीप, फनल, 7.

फूल गोभी की सब्जी, 8. दीप की बत्ती का अग्र भाग, 9. योनि की मणिका; (वि.) 1. कोमल, 2. सुंदर; (क्रि.अ.) 'फूलणा' क्रिया का आदे. रूप; ~**झड़णा** मधुर या मोहक वचन बोलना; ~-**सा** सुंदर, सुकुमार; ~**सूँघणा** अल्प भोजन करना।

फूलणा (क्रि. अ.) 1. प्रसन्न होना, 2. नश्तर आदि का पकना, 3. नमी के कारण अन्न का मोटा होना, 4. सूजना, घाव का सूजना, 5. फूल लगना, सरसों, चने आदि में फूल आना, 6. वंश-वृद्धि होना, 7. मोटा होना, 8. रूठना, ऐंठना, 9. खमीरा उठना, 10. प्रसारित होना; (वि.) वह जो शीघ्र फूले; ~-**फळणा** 1. वंश-वृद्धि होना, 2. प्रसन्नता से रहना, 3. पल्लवित और पुष्पित होना। **फूलना** (हि.)

फूलणी (वि.) शीघ्र पकने वाली (खाल आदि), (दे. पाकणी)।

फूलदान (पुं.) गुलदान, गुलदस्ता रखने का बर्तन।

फूलना (क्रि. अ.) दे. फूलणा।

फूलपाती (स्त्री.) घुँघरू वाली पाती, पैर का एक आभूषण।

फूल बोरड़ा (पु.) छपाई का एक वस्त्र।

फूलमंजीर (पुं.) आँगी के कंधे वाले भाग पर लटकाया जाने वाला आभूषण, धारेन।

फूलमाळा (स्त्री.) जयमाला।

फूली (स्त्री.) दे. फूल्ली।

फूल्ला (पुं.) 1. आँख का सफ़ेद दाग़ जो पुतली पर होता है, 2. वह बैल जिसके माथे पर टीका हो, 3. (दे. छाल्ला), 4. (दे. फफोल्ला); ~**झाड़णा** झाड़ा लगाकर 'फूले' को नष्ट करना; ~-**सा झड़णा** कष्ट- निवारण होना। **फूला** (हि.)

फूल्ली (स्त्री.) 1. कील विशेष, बताशा कील, 2. एक प्रकार की घास; (क्रि. अ.) 'फूलणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं., एकव. रूप। **फूली** (हि.)

फूस (पुं.) सूखी घास, घास; (वि.) 1. स्वाद-रहित (खिचड़ी आदि), 2. कच्ची।

फूहड़ (वि.) बेसऊर (स्त्री), (वह स्त्री) जिसे खाने-पीने, ओढ़ने-पहनने का सलीका न हो; ~**का चालणा नो घराँ का हालणा** फूहड़ द्वारा सभी कुप्रभावित होते हैं।

फूहड़ा (पुं.) 1. मल, गूह, भिष्टा, 2. गंदगी; ~**खाणा** 1. पशु द्वारा मल या गंदी वस्तु खाना, 2. अखाद्य वस्तु खाना।

फूहड़िया (वि.) दे. फूहड़।

फूही (स्त्री.) फफूँदी, 2. नूनी घी (नवनीत) गरम करते समय सतह पर आने वाली गंदगी या छाछ; (वि.) अवांछित (वस्तु)।

फेंकना (क्रि. स.) दे. फैंकणा।

फेंट (स्त्री.) लपेटा, घुमाव; (क्रि. स.) 'फैंटणा' क्रिया का आदे. रूप।

फेंटना (क्रि. स.) दे. फैंटणा।

फेंणी (स्त्री.) फिरनी, मैदे के लच्छों की एक प्रकार की मिठाई।

फेंसी (वि.) विलायती।

फेंट (स्त्री.) 1. भेंट-राह मैं किस-किस तैं फेट हुई, 2. जादू-टोना; (क्रि.स.) 'फेटणा' क्रिया का आदे. रूप; ~**मैं**

आणा 1. जादू-टोने की लपेट में आना, 2. लपेट में आना; **~लागणा** 1. जादू चढ़ना, 2. अचानक मिलन होना; **~होणा** 1. मुलाक़ात होना, 2. जादू-टोने का प्रभाव चढ़ना।

फेटणा (क्रि. अ.) मिलना, मार्ग में अचानक मिलना। **फेंटना** (हि.)

फेन (पुं.) 1. झाग, 2. समुद्री झाग।

फेफड़ा (पुं.) छाती के नीचे एक अंदरूनी अंग जिसकी क्रिया से साँस लिया जाता है।

फेर (पुं.) 1. अतिरिक्त चक्कर–सरड़क-सरड़क जाघा तै दो कोस का फेर पड़ैगा, 2. खेत का वह छोटा खंड जिसे एक समय में काटना शुरू किया जाता है, (दे. बाड्ढा धरणा), 3. परिधि, घुमाव, 4. भ्रम, संशय–घणा फेर मैं नाँ पड्या करैं अपणै काम लाग, 5. चालबाजी–मेरे तैं फेर करकै के काड्ढैघा, 6. अदल-बदल; (क्रि. वि.) पुनः, फिर से; **दिनाँ का~** 1. बुरा समय, 2. समय का प्रभाव; **~पड़णा** 1. गंतव्य पर पहुँचने में अतिरिक्त समय लगना, 2. कुसमय आना–दिनाँ का इसा फेर पड़ा सै काम्मैं नाँ पाँमता, 3. भ्रमित होना।

फेरणा (क्रि. स.) 1. लौटाना, 2. घुमाना, पूरी तरह घुमाना, 3. हाथ फेरना, सहलाना या पपोलना, 4. प्रचारित करना, 5. पशु को इधर-उधर घुमाना, 6. विचार परिवर्तित करना, 7. झाड़ना; **हाथ~** 1. चेला मूँडना, 2. सबको मात देना, 3. चालाकी से माल हड़पना, 4. पशु को झाड़ा देना, 5. पुचकारना। **फेरना** (हि.)

फेरना (क्रि. स.) दे. फेरणा।

फेरा[1] (पुं.) 1. विवाह-संस्कार के समय वर-वधू द्वारा अग्नि-साक्षी में लिया जाने वाला चक्कर, 2. चक्कर–अरै खेत का फेरा मार्‍या, 3. चौकीदार, 4. काल-चक्र, 5. परिधि; (क्रि.स.) 'फेरणा' क्रिया का भू. का., पुं., एकव. रूप; **~देणा** 1. चौकीदारी करना, 2. चक्कर काटना; **~मारणा** 1. कभी-कभी मिलते रहना, 2. खेत की रखवाली करने जाना; **~(-रे) ~लेणा** विवाह-सूत्र में बँधना, भाँवर लेना।

फेरा[2] (पुं.) ऊँट, घोड़े आदि को घुमाकर सिखाने वाला व्यक्ति।

फेरी (स्त्री.) 1. चक्कर लगाने का भाव, 2. घूम-घूम कर सामान बेचने का भाव; (क्रि. स.) 'फेरणा' क्रिया का भू. का. , स्त्रीलिं. रूप; **~लाणा** घूम-फिर कर सामान बेचना।

फेरीवाला (पुं.) घूम-घूम कर सौदा बेचने वाला।

फेरे (पुं.) दे. फेरा; **~-फत्ते** अग्नि के चारों ओर चक्कर लगाने की रस्म, फेरे लेने की रस्म; **~लावाँ** दे. फेरे-फत्ते।

फैंकणा (क्रि. स.) 1. झटके के साथ फेंकना, 2. अनादर के साथ पटकना, 3. अपव्यय करना। **फेंकना** (हि.)

फैंटणा (क्रि. स.) मथना, (दे. राफड़णा)। **फेंटना** (हि.)

फैंसी (स्त्री.) विलायती; (वि.) 1. सुंदर, 2. कोमल।

फैन (पुं.) दंड; (वि.) सुंदर (वस्त्र आदि), जैसे–फैन का जोड़ा। **फ़ाइन** (हि.)

फैमली (स्त्री.) फैमिली, परिवार, कुटुंब।

फैर (पुं.) फ़ायर, गोली दाग़ने का कार्य।

फैल[1] (पुं.) बनावटी व्यवहार, छल, कपट, (दे. फहफोट्टा)।

फैल[2] (वि.) अनुत्तीर्ण, असफल। **फ़ेल** (हि.)

फैलणा (क्रि. अ.) 1. व्याप्त होना, बढ़ना, 2. बिखरना, 3. प्रचारित होना, बात फैलना, 4. ज़िद करके भूमि पर लेटना, 5. कहीं-कहीं जा बसना, 6. (दे. पसरणा); (वि.) 1. संचारी रोग, 2. (सब ओर) फैलने वाला, शीघ्र फैलने वाला। **फैलना** (हि.)

फैलाना (क्रि. स.) 1. दे. पसारणा, 2. बिखेरना, 3. प्रसिद्ध करना।

फैलाव (पुं.) विस्तार।

फैशन (पुं.) दे. फैस्सन।

फैस (स्त्री.) कष्ट, कठिनाई–ले ले नैं म्हैंस, कट जागी फैस।

फैसला (पुं.) 1. निर्णय, 2. अदालती निर्णय; **~करणा** दो टूक निर्णय लेना; **~काढणा** उपाय निकालना; **~चालणा** (किसी का) निर्णय सभी द्वारा मान्य होना; **~होणा** दे. तोड़ होगा। **फ़ैसला** (हि.)

फैस्सन (पुं.) 1. ओढ़ने-पहनने का अतिरिक्त बनाव-ठनाव, 2. किसी वस्तु का विशेष चलन; **~काटणा** अधिक बन-ठन कर रहना; **~काढणा** नया चलन चलाना; **~का दिवाळा पीटणा** चलन की पूरी नक़ल न कर सकना; **~तारणा** नक़ल उतारना; **~मैं आणा** ओढ़-पहन कर इतराना; **~होणा** चलन होना। **फ़ैशन** (हि.)

फोंकाड़ (स्त्री.) दे. फुँकाड़।

फो (स्त्री.) 1. 'फोकरी' द्वारा निकाली जाने वाली ध्वनि (दे.), 2. बकरे द्वारा कामुक अवस्था में निकाली जाने वाली ध्वनि।

फोक (वि.) 1. सार-हीन, (वह वस्तु) जिसका तत्त्व निकाल लिया गया हो, 2. स्वाद-हीन, नीरस; (पुं.) 1. बूर, आटे का चोकर, 2. तत्त्व-रहित वस्तु।

फोकरी (स्त्री.) गीदड़ की नस्ल का जंगली जानवर जो चाँद को देखकर 'फो'-'फो' की ध्वनि निकालता है।

फोक्कट (वि.) जिसका कुछ मूल्य न हो, बिना मूल्य दिए प्राप्त (वस्तु); (पुं.) 1. छान, बूर, 2. (दे. फोल्लर)। **फोकट** (हि.)

फोक्का (वि.) 1. फीका, 2. हलके रंग का, 3. सार-हीन, 4. बिना मीठे का, 5. शोभा-हीन; **~पड़णा** फीका पड़ना; **~पाणी** बिना मीठा मिला पानी। **फोका** (हि.)

फोगाट (पुं.) एक जाट गोत।

फोज (स्त्री.) दे. फ़ौज।

फोटो (पुं.) दे. फोट्टू।

फोट्टू (पुं.) 1. कैमरे से खींचा या उतारा गया चित्र, 2. चित्र, 3. सुंदर स्त्री, 4. स्मृति-चिह्न; **~तारणा** 1. किसी वस्तु की हूबहू नक़ल उतारना, 2. फोटो खींचना। **फोटो** (हि.)

फोड़णा (क्रि. स.) 1. खंडित करना, तोड़ना, 2. फूट डालना, 3. अपने पक्ष में करना। **फोड़ना** (हि.)

फोड़ना (क्रि. स.) दे. फोड़णा।

फोड़ा[1] (पुं.) दे. गूमड़ा।

फोड़ा[2] (पुं.) दे. फोड़ा। दे. फरड़ा।

फोत (पुं.) मृत्यु।

फोतरा (पुं.) कण।

फोदार (पुं.) एक जाट गोत।

फोफलिए (पु.) 1. फोलर, 2. दे. छोतके, 3. दे. बूँबले।

फोफस (वि.) 1. जो देखने में मोटा किंतु निर्बल हो, 2. मोटा और सख़्त, 3. सार-हीन।

फोर (स्त्री.) झूठी बड़ाई; **~मैं आणा** झूठी बड़ाई में फँसना।

फोरणा (क्रि. अ.) 1. झूठी बड़ाई में आना, 2. अधिक आनंदित होकर उछलना-कूदना या बड़ी बातें कहना।

फोरन (क्रि. वि.) तुरंत, फौरन।

फोरा (पुं.) दे. फौरा।

फोरी (वि.) डींग हाँकने वाला; (क्रि. वि.) तुरंत।

फोलरी (स्त्री.) मछली की आकृति की अंगूठी।

फोल्लक (पुं.) दे. फोल्लर।

फोल्लर (पुं.) 1. अन्न का छिलका, बूर, 2. सारहीन वस्तु, 3. फुंसी का खुरंड, 4. छिलका, 5. (दे. राळी); **~तारणा** 1. छिलका उतारना, 2. बुरी तरह पीटना। **फोलर** (हि.)

फोल्ला (पुं.) फफोला, छाला।

फोल्ली (वि.) थोथी, हल्की; **~फोल्ली चुगणा** आराम का जीवन बिताना, बिना परिश्रम किए खाना।

फोस (पुं.) 1. गूह, मल, 2. फोक; **~करणा** 1. हगन, 2. घबराना; **~मारणा** मल-विसर्जन करना।

फोहा (पुं.) फाया, रूई का टुकड़ा; (वि.) गुदगुदा, कोमल; **~-सा** गुदगुदा, कोमल; **~सेकणा** फाहे से टकोरना। **फाहा** (हि.)

फोह्या (पुं.) दे. फोहा।

फौज (स्त्री.) सेना, सरकारी सेना; (वि.) भीड़; **~कट्ठी करणा** भीड़ जोड़ना; **~फरड़/-फरड़ा** सेना, सैन्य दल; **~~चढणा** सेना दल द्वारा आक्रमण किया जाना।

फौजदारी (स्त्री.) मुक़दमेबाजी।

फ़ौज्जी (पुं.) दे. फौज्जी।

फौज़ी (पुं.) सैनिक, सेना का जवान। **फ़ौजी** (हि.)

फौड़ा (पुं.) (कौर.) दे. फाह्वड़ा।

फौरा (पुं.) छलांग, ऊँची कूद; **~कूदणा** ऊँची छलाँग लगाना।

फौलाद (पुं.) पक्का लोहा।

फौवारा (पुं.) दे. फुहारा।

फ्रॉक (स्त्री.) दे. फिराक[2]।

फ्रेम (पुं.) दे. चोखटा।

ब

ब हिंदी वर्णमाला का तेईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का तीसरा वर्ण, यह ओष्ठ्य वर्ण है, हरियाणवी में इसका उच्चारण बै बअ (बई नहीं) के समान है।

बंक[1] (पुं.) टेढ़ापन (तुल. टेढ); **~काढणा** टेढ़ापन निकालना।

बंक[2] (पुं.) रुपया-पैसा सुरक्षित जमा कराने और ऋण आदि लेने का सरकारी या अर्ध-सरकारी ख़जाना या कार्यालय। **बैंक** (हि.)

बंकनाळ (स्त्री.) सुनार का एक उपकरण जिससे छोटी चीज़ें जोड़ने के लिए हवा

दी जाती है।

बंकी (वि.) दे. बाँक्की।

बंग (वि.) 1. टेढ़ा। 2. दे. बाँक[1,2]। 3. दे. बंक[1]।

बँगरुआ (वि.) बाँगर देश का, बाँगर से संबंधित; (स्त्री.) बाँगर प्रदेश की बोली, बाँगरू बोली।

बंगला (पुं.) 1. आलीशान कोठी, हवादार कोठी, 2. दे. बंगाल्ला।

बंगाल (पुं.) दे. बंगाल्ला।

बंगाली (स्त्री.) दे. बंगाल्ली; (वि.) दे. बंगाल्ली।

बंगाल्ला (पुं.) 1. बंगाल देश (कहानी-किस्सों के अनुसार जहाँ की औरतें जादू-टोने के लिए प्रसिद्ध हैं, जो मनुष्य को मक्खी, बकरा आदि बना सकती हैं), 2. एक प्रदेश जहाँ काली देवी की पूजा होती है, बंगाल प्रांत। **बंगाल** (हि.)

बंगाल्ली (वि.) बंगाल देश का; (स्त्री.) बंगाली भाषा; ~-**बाब्बू** नेताजी सुभाषचंद्र बोस, आज़ाद हिंद फौज के संगठनकर्ता। **बंगाली** (हि.)

बंजड़ (स्त्री.) दे. बंजर।

बंजर (वि.) ऊसर; (पुं.) बंजर भूमि।

बंजारा (पुं.) दे. बणजारा।

बँझूलड़ी (स्त्री.) 1. बाँझ, वंध्या महिला, 2. संतति उत्पन्न करने के अयोग्य मादा।

बँटणा (क्रि. अ.) 1. विभक्त होना, 2. वितरित होना, 3. (दे. बटणा[3]); (क्रि. स.) दे. बटणा[2]। **बँटना** (हि.)

बँटवाणा (क्रि. स.) दे. बँटाणा।

बँटवारा (पुं.) दे. बाँट्टा।

बंटा (पुं.) 1. टोकनी से कुछ चौड़े आकार का जलघट—मेरे सिर पै बंटा-टोकणी, 2. काँच की गोली; **~ढार होणा** विनाश होना।

बँटाई (स्त्री.) 1. बाँटने का काम, 2. खेती की उपज को भागीदारों में बाँटने का काम। बाँटणा क्रिया का भू. का. स्त्रीलिं. रूप।

बँटाणा (क्रि. स.) 1. वितरित करवाना, 2. रस्सी बँटवाना, 3. फूट डलवाना, विभक्त करवाना। **बँटवाना** (हि.)

बँडणा (क्रि. अ.) 1. दे. बँटणा, 2. दे. **बैंडणा**।

बंडल (पुं.) दे. बंडळ।

बंडळ (पुं.) वस्तुओं का समूह, जैसे—बीड़ी का बंडळ। **बंडल** (हि.)

बँडाई (स्त्री.) दे. बँटाई।

बँडाणा (क्रि. स.) 1. उल्टा-सीधा बुलवाना या कहलवाना, 2. बहकाना, 3. पागल बनाना, उल्लू बनाना, 4. बैंडने के लिए प्रेरित करना।

बंद (वि.) 1. जो खुला न हो, 2. रुका हुआ या स्थगित (कार्य आदि); (पुं) 1. दे. बंध, 2. बंधु का अनुवर्ती।

बंदगी (स्त्री.) 1. भगवान की वंदना, 2. सलामी।

बंदड़ा (पुं.) 1. वर, दूल्हा, 2. विवाह के समय के विशेष गाने जिनके विषय दूल्हे के स्वभाव, गुण, शिक्षा, रूप, कर्तव्य, नखरे आदि होते हैं; (वि.) 1. दूल्हे के समान सजा-धजा, 2. निठल्ला।

बंदड़ी (स्त्री.) 1. दुल्हिन, 2. विवाह के समय का एक गान; ~-**सी** सदा सज-धज कर रहने वाली।

बंदनवार (स्त्री.) दे. बंदरवाळ।

बंदनी (स्त्री.) दे. सिंगार पट्टी।

बंदर (पुं.) दे. बाँद्दर।

बंदरवाळ (स्त्री.) 1. शुभ अवसर पर (विशेषत: विवाह) मुख्य द्वार पर बाँधी जाने वाली गोटेदार पट्टी, 2. तोरण। **बंदनवार** (हि.)

बंदिश (स्त्री.) प्रतिबंध, रुकावट।

बंदी (पुं.) दे. कैद्दी।

बंदी छोड़ (पुं.) गुरु हरगोविन्द।

बंदूक (स्त्री.) गोली दाग़ने का लंबी नालीदार एक यंत्र, दूर से मार करने वाला एक आयुध; **दुनाळी~** दे. दुनाळी; **~लागणा** 1. घायल होना, 2. भारी आघात पहुँचना।

बंदोबस्त (पुं.) दे. बंधोबस्त।

बंध (पुं.) 1. जल-रोधक बाँध, 2. बाँधने या ग्रंथि लगाने की क्रिया; (वि.) दे. बंद। **बाँध** (हि.)

बंधणा (क्रि. अ.) 1. बाँधा जाना, 2. वचनबद्ध होना, 3. फँसना। **बँधना** (हि.)

बंधन (पुं) 1. क़ैद, 2. रुकावट, 3. मोहपाश, 4. पाश, ग्रंथि।

बँधना (क्रि. अ.) दे. बँधणा।

बँधवाणा (क्रि. स.) 1. बाँधने का काम अन्य से करवाना, 2. बाँधने में सहायता करना, 3. क़ैद या बंधन में डलवाना, 4. गठड़ी आदि बँधवाना, 5. षड्यंत्र में फँसवाना। **बँधवाना** (हि.)

बंधस (स्त्री.) पाबंदी, अंकुश। **बंदिश** (हि.)

बंधा (पुं.) 1. साँप काटने के स्थान से कुछ ऊपर रस्सी आदि कस कर बाँधने की क्रिया, 2. पेट के गुम होने या मल-मूत्र विसर्जन होने की स्थिति, 3. जल-रोधक बाँध, 4. बंदिश, 5. फंदा; **~पड़णा/लागण** मल-मूत्र विसर्जन बंद होना।

बंधु (पुं.) मित्र, सखा।

बंधेज (पुं.) 1. विशेष युक्ति से धागे से बाँध कर रंगा हुआ वस्त्र, 2. नियमित रूप से मिलने वाली राशि या द्रव्य, 3. रिवाज़, 4. बंधन, 5. मोह-माया; **~का काम** विशेष युक्ति से धागे की सहायता से वस्त्र को बाँधकर रंगने का काम।

बंधोबस्त (पुं.) 1. विशेष प्रबंध, 2. अग्रिम व्यवस्था, 3. (दे. चकबंधी)। **बंदोबस्त** (हि.)

बंब¹ (पुं.) बम, भयंकर विस्फोटक गोला; **~का गोळा** 1. विनाशकारी गोला, 2. विनाशकारी, 3. शक्तिशाली; **~~छूटणा/पड़णा** 1. बमबारी होना, 2. बड़े से बड़ा झूठ बोलना।

बंब² (पुं.) कोच (ताँगा) के आगे लगी बल्लियाँ।

बंबा (पुं.) 1. स्त्रोत, 2. बड़ा छिद्र, 3. नहर की मोरी, 4. (दे. घट्टा); **~फूटणा** 1. खून का फव्वारा बहना, 2. किसी स्थान से अचानक वेग के साथ जल-निकास होना, 3. सूर्य निकलना।

बंबी¹ (स्त्री.) समुद्र तट पर बसा बंबई या मुबई नाम का शहर जहाँ मुंबा देवी का मंदिर है (यहाँ की वर्षा सातवें दिन दिल्ली पहुँचती है)। **बंबई** (हि.)

बंबी² (स्त्री.) 1. साँप का बिल (जिसे विशेष अवसरों पर पूजा जाता है), 2. दीमक का बिल जो ढूह के आकार का होता है; **~पूजणा** 1. नाग पंचमी के दिन साँप की बाँबी कर साँपों को दूध पिलाना, 2. नाग-पूजा करना। **बाँबी** (हि.)

बंस (पुं.) 1. वंश-बेल, 2. कुल; **~चालणा/फैलणा** वंश-परंपरा में वृद्धि होना। **वंश** (हि.)

बंसरी (स्त्री.) दे. बाँसळी।

बंसल (पुं.) दे. बाँसल।

बंसी (स्त्री.) बाँसुरी, दे. बाँसळी।

बंसुली (स्त्री.) बंशावली, दे कुरसीनाम्मा।

बँहगी (स्त्री.) 1. कहार या बोझा ढोने वालों द्वारा कंधे पर रखा जाने वाला एक उपकरण जिसमें लचकदार बाँस के दोनों छोरों पर रस्सियों के साथ बँधी टोकरी आदि में भार रखा जाता है, 2. पालकी, 3. (दे. कावड़)। **बहँगी** (हि.)

ब (अव्य.) दे. बै।

बई (पुं.) दे. भई।

बईस (पुं.) वैश्य।

बकणा (क्रि. स.) बनाप-शनाप कहना, गाली देना; (वि.) जो हर समय व्यर्थ बोलता रहे। **बकना** (हि.)

बकना (क्रि. स.) दे. बकणा।

बकबका (वि.) 1. तेलिया (पानी), 2. गंधयुक्त (पानी), 3. गंधयुक्त विशेष स्वाद वाला तरल पदार्थ (जिसे पीकर उबकाई आती है), 4. मिट्टी के तेल के स्वाद का।

बकर-कसाई (वि.) निर्दयी, क्रूर, आततायी, तातारी।

बकवाद (स्त्री.) 1. अँघाई, 2. अनर्गल बात; **~करणा** 1. अनावश्यक बोलना, 2. (दे. अळबाध); **~लागणा** अँघाई सूझना; **~मारणा** बकवास करना। **बकवास** (हि.)

बकवाद्दी (वि.) बकवास करने वाला।

बकवास (स्त्री.) दे. बकवाद।

बकसणा (क्रि. स.) 1. क्षमा करना, 2. कृपापूर्वक देना, दान देना। **बख़्शना** (हि.)

बकसीस (स्त्री.) 1. आशीर्वाद–गरीब की आत्मा बकसीस देगी, 2. दान, 3. दान में दी गई वस्तु। **बख़्शिश** (हि.)

बकाया (वि.) दे. बाक्की।

बकाल (पुं.) दे. बुकाल्।

बक्कल (पुं.) 1. पेड़ की छाल, 2. छिलका, 3. चमड़ी; **~उधेड़णा/खैंचणा/तारणा** 1. पिटाई करना, 2. चमड़ी उधेड़ना। **वल्कल** (हि.)

बखत (पुं.) समय–कोड बखत हो ग्या ईब तै ऊठ ले; **~आणा** 1. अंतिम समय आना, 2. उचित समय आना, 3. समय पर आना; **~पड़णा** आपत्ति काल आना; **~-बखत की बात** समय ही बलवान है; **~सराहणा** सुअवसर आना; **~-सी** वक्त से, समय से पूर्व। **वक्त** (हि.)

बखाणणा (क्रि. स.) 1. विस्तारपूर्वक वर्णन करना, 2. गुप्त भेद खोलना, 3. अत्यधिक प्रशंसा करना, 4. भविष्य बताना। **बखानना** (हि.)

बखानना (क्रि. स.) दे. बखाणणा।

बखाळ (स्त्री.) चमड़े का एक पात्र।

बखिया (स्त्री.) सिलाई की एक विधि; **~उधेड़णा** पिटाई करना।

बखेड़ा (पुं.) 1. झंझट, झगड़ा, 2. आडंबर; **~खड्या करणा/रचणा** 1. झंझट उत्पन्न करना, 2. आडंबर करना; **~होणा** झंझट होना।

बखेड़िया (वि.) दे. बखेड़ी।

बखेड़ी (वि.) सदा उलझन या झगड़ा पैदा करने वाला (व्यक्ति)।

बखेर (स्त्री.) 1. मुक्तहस्त से दिया गया दान–के तनैं न्यारी बखेर ला राक्खी सै, 2. चढ़त के समय दूल्हे पर की गई पैसों की बौछार, 3. किसी वस्तु के बिखेरने की क्रिया, 4. अव्यवस्था, 5. लूट; (क्रि. स.) 'बखेरणा' क्रिया का आदे. रूप; **~करणा/मारणा** दूल्हे पर पैसे न्यौछावर करना; **~लाणा** दान देना; **~होणा** 1. बिन माँगे मिलना, 2. लूट मचना।

बखेरणा (क्रि. स.) 1. इधर-उधर फैलाना, 2. तितर- बितर करना, 3. फूट डालना, 4. सैन्य दल को हराना, 5. (दे. खिंढाणा)। **बिखेरना** (हि.)

बखेरना (क्रि. स.) दे. बखेरणा।

बखोरा (पुं.) पानी पीने का लंबा गिलास। **आबखोरा** (हि.)

बखोरी (स्त्री.) 1. अन्न सुरक्षित रखने का स्थान, 2. रुपया-पैसा सुरक्षित रखने का स्थान, (दे. कुठला); **~भरणा** 1. धन जोड़ना, 2. अन्न भंडारित करना।

बगड़ (पुं.) 1. आँगन, सहन, 2. घर के बीच में वह खुला स्थान जहाँ पशु बाँधे जाते हैं, 3. एक ही जाति के परिवारों के घरों के बीच का आँगन, जैसे–बाह्मणाँ का बगड़, 4. (दे. बगर); **अगड़~** पास-पड़ोस; **~ बरतणा** 1. पास-पड़ोस का लिहाज बरतना, 2. खुले स्थान का प्रयोग करना; **~बुहारणा** किसी के आगमन की खुशी में आँगन में झाड़ू लगाना।

बगड़ी (स्त्री.) एक ही जाति के लोगों के घरों का समूह (विशेषकर ब्राह्मण जाति) जिनका एक प्रवेश-मार्ग होता है और बीच में खुला आँगन होता है; **~आळा** बगड़ी का निवासी।

बगणा (क्रि. अ.) 1. तेज़ चलना, 2. दौड़ना, 3. चतुराईपूर्ण व्यवहार करना, 4. किसी मार्ग पर हर समय यातायात चलना–याह् राही तड़के तैं साँझ ताँही खूब बगै सै; (वि.) जो हर समय बगे या चले; **पट्याँ~** 1. अबाध गति से चलना, 2. चतुराईपूर्ण व्यवहार करना। **बगना** (हि.)

बगना (क्रि.) लौटना। उदा. गया सो बगा नहीं।

बगर (पुं.) 1. फल लगने से पहले आने वाला बूर या बौर, जैसे–नीम का बगर, कीकर का बगर, 2. (दे. बगड़)। **बौर** (हि.)

बगल (स्त्री.) 1. पार्श्व, 2. किनारे का भाग, 3. पास की जगह, 1. (दे. पाँस्सू), 2. (दे. काख)।

बगलबंदी (स्त्री.) तनीदार ढीला-ढाला लंबा कुर्ता, झगा।

बगवाणा (क्रि. स.) फेंकवाना, फेंकने का काम अन्य से करवाना।

बगाणा (क्रि. स.) 1. फेंकना, 2. त्यागना। **बगाना** (हि.)

बगावत (स्त्री.) 1. राजद्रोह, 2. बलवा।

बगिया (स्त्री.) दे. बगीच्ची।

बगीचा (पुं.) उद्यान, बाग।

बगीच्ची (स्त्री.) 1. छोटा बाग, बगिया, 2. पूजा-पाठ के लिए लगाई गई वाटिका। **बगीची** (हि.)

बग़ैर (अव्य.) दे. बिना।

बगोट्टा (पुं.) दे. बगीच्ची।

बगोणा (क्रि. अ.) निंदा करना, चुगली करना (कौर.)।

बगोना (क्रि.) ध्यान न देना।

बग्गी (स्त्री.) चार पहियों का आलीशान ताँगा। **बग्घी** (हि.)

बग्गी-लोट (पुं.) नहर के साथ-साथ बना समतल कच्चा मार्ग।

बग्घा (स्त्री.) बड़ी बग्घी।

बघंबर (पुं.) 1. नाथपंथियों द्वारा धारण किया जाने वाला वरण या चोगा, 2. व्याघ्र-चर्म; **~पहरणा** साधु बनना।

बघेरा (पुं.) दे. भगेरा।

बचणा (क्रि. स.) 1. चोट के भय से ओट लेना, एक ओर होना, आघात से बचना, 2. किसी वस्तु से दूर रहना, 3. अपने आपको बचा कर रखना, 4. शेष बच रहना, 5. फालतू या अतिरिक्त रहना, 6. उचित सम्मान न देना–न्योत्ता देण मैं म्हारा ए घर क्यूँ बाँच्या (बचाया)। **बचना** (हि.)

बचत (स्त्री.) 1. बचने का भाव, 2. लाभ।

बचन (पुं.) 1. प्रण, 2. कठोर शब्द–कई बै वो इसे बचन बोल दे सै अक धरे जाँ नाँ ठाए जाँ, 3. आश्वासन भरे शब्द, 4. वर, वरदान, 5. कुवचन का विलोम; **~देणा** सच्चा आश्वासन देना; **~-बचनी बाळक पराए होणा** वचन के आधार पर कार्य संपन्न होना; **~भरणा** प्रतिज्ञा करना। **वचन** (हि.)

बचनहारी (वि.) अपने वचन का पालन न करने वाली।

बचना (क्रि. अ.) दे. बचणा।

बचवाणा (क्रि. स.) 1. वाचन करवाना, पढ़वाना, 3. जान-बूझ कर अधिकार से वंचित रखवाना। **बँचवाना** (हि.)

बचा (पुं.) सुरक्षा का प्रबंध; (क्रि. स.) 'बचाणा' क्रिया का आदे. रूप, (दे. बचाणा)। **बचाव** (हि.)

बचाणा (क्रि. स.) 1. शेष रखना, अतिरिक्त रूप से बचा कर रखना, 2. आपत्ति से उबारना, 3. हानि न पहुँचने देना, 4. भविष्य के लिए सुरक्षित रखना, 5. अधिकार से वंचित रखना–सारे घराँ मैंह् कै म्हारा कुणबा क्यूँ बचाया, 6. चिट्ठी आदि अन्य से पढ़वाना, 7. कथा करवाना, 8. वाचन करवाना। **बचाना** (हि.)

बचाना (क्रि. स.) दे. बचाणा।

बचाव (पुं.) दे. बचा।

बच्चा (पुं.) 1. बालक, 2. जिसमें बुद्धि का अभाव हो या जिसकी बुद्धि का विकास नहीं हुआ हो, 3. भोला-भाला, 4. शिष्य–बच्चा बाब्बा की मान्नैघा तै सुख पावैघा, 5. पुत्र, 6. (दे. बाळक); (वि.) कम आयु का।

बच्ची (स्त्री.) 1. बालिका, छोटी लड़की, 2. शिष्या, चेली, 3. प्याज के भीतरी भाग में प्राप्त छोटी ग्रंथि (गंठी); **~-सा** 1. छोटा-सा, 2. सुकोमल।

बच्चू (पुं.) अनादर-सूचक शब्द जो किसी को चुनौती देते समय कहा जाता है–मेरे बच्चू तनैं आज देख ल्यूँगा (परख लूँगा); (वि.) तुच्छ, हेय।

बच्छस (पुं.) ब्राह्मणों का एक गोत्र। **वत्स** (हि.)

बछड़ा (पुं.) दे. बाछड़ा।

बछणा (क्रि.) भक्षण करना।

बछिया (स्त्री.) गाय का मादा बच्चा; (वि.) निरीह, दया का पात्र; **~का ताऊ** 1. निरा मूर्ख, 2. बैल (विनोद में प्रयुक्त)।

बछेरा (पुं.) बछेड़ा, घोड़े का नर बच्चा; (वि.) 1. अधिक उछल-कूद करने

वाला, 2. बेक़ाबू या बेलगाम, 3. उद्दंड।

बछेरी (स्त्री.) घोड़े का मादा बच्चा; (वि.) उच्छृंखल और उद्दंड (लड़की); **~छूटणा** 1. बेक़ाबू होना, 2. निर्लज्ज होना।

बजंठी कंठी (स्त्री.) वैजयंती माला।

बजंती माला (स्त्री.) वैजंती माला।

बजड़ी (स्त्री.) दे. बाजरा।

बजरंग (पुं.) हनुमान; (वि.) वज्र के अंग वाला।

बजरंग-बली (पुं.) 1. हनुमान, 2. पहलवानों का आराध्य देव; (वि.) शक्तिशाली।

बजर-बट्टू (पुं.) 1. बाज़ीगर का जादू का वज्र-गोला, 2. काले मोतियों की वह माला जो नजर से बचाने के लिए बच्चों को पहनाई जाती है।

बजरी (स्त्री.) पत्थर की कण; (वि.) 1. वज्र के समान, बलवान, 2. भारी-भरकम।

बजवाणा (क्रि. स.) 1. बजाने का काम अन्य से करवाना, 2. लड़ाई करवाना। **बजवाना** (हि.)

बजा (वि.) उचित; (क्रि. स.) 'बजाणा' क्रिया का आदे. रूप।

बजाज (पुं.) कपड़े का व्यापारी।

बजाजा (पुं.) वह स्थान जहाँ बजाजों की दुकानें हों।

बजाजी (स्त्री.) कपड़ा बेचने का व्यापार, बजाज का काम।

बजाणा (क्रि. स.) 1. किसी धातु या अन्य वस्तु को उँगली मार कर परखना, 2. परखना–चीज ले तै ठोक-बजा कै ले, 3. वाद्य यंत्र को बजाना या झंकारना, 4. आज्ञा-पालन करना; **टहल~** सेवा करना; **लाट्ठी~** लाठी से लड़ाई करना। **बजाना** (हि.)

बजाना (क्रि. स.) दे. बजाणा।

बजारी (वि.) 1. बाज़ार से ख़रीदी हुई, 2. वह (वस्तु) जो सुंदर बनी हो, 3. वह (वस्तु) जो टिकाऊ न हो, 4. अविश्वसनीय, 5. घटिया–कै बजारी चीज ठा ल्याया। **बाजारी** (हि.)

बजारू (वि.) 1. हेय, 2. वेश्या, 3. (दे. बजारी)। **बाजारू** (हि.)

बज्जर (पुं.) 1. पक्का पत्थर, 2. बिजली, 3. एक आयुध (तलवार), 4. हनुमान, 5. ओला; (वि.) 1. कठोर, 2. अटल, 3. भारी व मज़बूत; **~का/सा** 1. बहुत कठोर, फ़ौलादी, 2. अटल (वचन); **~पड़णा/मारणा** 1. बिजली गिरना, 2. भारी आघात पहुँचना; **~लागणा** भारी आघात लगना; **~होणा** 1. अचेत होना, मूक होना, 2. गहरी निद्रा में सोना, 3. ठिठुर कर ऐंठना, 4. टस से मस न होना, 5. अपने वचन पर अटल रहना, 6. पत्थर का होना (शापवश)। **वज्र** (हि.)

बट (पुं.) 1. भाग, हिस्सा, जैसे–मेरे बट का, 2. रस्सी की ऐंठन, 3. बंदूक का कुंदा, 4. बट्टा; (क्रि. स.) 'बँटणा' (रस्सी) क्रिया का आदे. रूप; **~देणा/लाणा** रस्सी पर बल चढ़ाना।

बटखड़े (पुं.) दे बटेहड़ा।

बटण (पुं.) 1. पहनने के कपड़ों में गोल आदि आकार की घुंडी, 2. एक आभूषण जो सामान्य बटनों के स्थान पर जंजीर के साथ लटके होते हैं; **~-सी आँख** छोटी-छोटी आँखें। **बटन** (हि.)

बटणा[1] (पुं.) बटना, उबटन; **~चढणा**

1. बान (दे.) बैठना, 2. उबटन से सौंदर्य बढ़ना; **~चढाणा** विवाह के समय दुल्हा-दुल्हन को उबटन मलना और गीत गाना, (दे. तेल चढाणा)।

बटणा2 (क्रि. स.) रस्सी आदि पर बल चढ़ाना। **बटना** (हि.)

बटणा3 (क्रि. अ.) 1. लाभ मिलना–इस सोद्दे मैं बटणा-बुटणा तै सै नाँ, 2. हानि होना–तेरा के बट्टैगा।

बटना (हि.)

बटन (पुं.) दे. बटण।

बटना (क्रि. स.) दे. बटणा2; (पुं.) दे. बटणा1।

बटळा (पुं.) बटोर, बिखरी वस्तु को इकट्ठा करने का भाव या क्रिया–छोरियाँ नैं गोब्बर बटळा करण भेज द्योघे तै पड्ढैंगी क्यूकर; **~करणा** 1. लोगों का समूह जोड़ना, 2. गोबर बटोरना।

बटलाणा (क्रि. स.) 1. मुँह झूठा कराना, 2. मीठी वस्तु खिलाना।

बटळी (वि.) 1. बटली, इकट्ठी–उन के घराँ घणीए लुगाई बटळी हो रही थी, 2. सिकुड़ने या सलवट की क्रिया–पतळी चाद्दर तावळी बटळी हो ज्या सै।

बटलोई (स्त्री.) 1. दाल-साग बनाने का पात्र, 2. गीले आटे का पिंड।

बटवा (पुं.) 1. बटुआ, 2. कोष, 3. धरोहर, 4. (दे. बटुआ), 5. (दे. न्योळी); **~करणा/राखणा** (अलग से) रुपया -पैसा बचा कर रखना, गाँठ करना; **~खोल्हणा** 1. दान-देना, 2. मुक्त हस्त से खर्च करना; **~-सा** सुंदर-सा; **~-मुँह** सुंदर मुख; **~-सी** प्यारी, सुंदर, गोल मुँह वाली (वधु)। **बटुआ** (हि.)

बटा (वि.) 1. तुच्छ, 2. अधीन, सेवक, 3. लघुताबोधक शब्द (बेटा)–मेरे बटे, के हाल सै?, 4. बाँटा हुआ; (पुं.) बँटाव, बाँटने का काम।

बटाई (स्त्री.) 1. खेती की उपज का वह अंश जो भागीदार को मिलता है, 2. हिस्सेदारी; (क्रि. स.) 'बटवाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप;) **~पै देणा** खेत आदि को भागीदारी पर देना।

बटाऊ (पुं.) दे. बटेऊ।

बटाणा1 (क्रि. स.) 1. अपना भाग प्राप्त करना, बँटवाना, 2. बाँटने मे सहायता देना, 3. लाभ करवाना। **बँटाना** (हि.)

बटाणा2 (क्रि. स.) रस्सी आदि बँटवाना।

बटाना (हि.)

बटिया1 (स्त्री.) कच्ची राही या मार्ग, (दे. बाट1)।

बटिया2 (स्त्री.) 1. आटे आदि का छोटा गोला, 2. छोटी और मोटी रोटी, 3. छोटी कटोरी।

बटिया3 (स्त्री.) खपरैल की छत।

बटुआ (पुं.) 1. कटि का आभूषण, (दे. बुरझंझन), 2. (दे. बटवा)।

बटेऊ (पुं.) 1. मेहमान, अतिथि, 2. दामाद, 3. यात्री; **~-सा जिमाणा** अधिक आतिथ्य-सत्कार करना; **~-सा रहणा** सज-धज कर रहना। **बटोही** (हि.)

बटेज (पुं.) बँटवारा।

बटेर (स्त्री.) एक पक्षी विशेष।

बटेहड़ा (पुं.) छोटे-बड़े बट्टों का समूह।

बटोड़ा (पुं.) दे. बिटोड़ा।

बटोरना (क्रि. स.) दे. बिटोळणा।

बटोळ (स्त्री.) 1. बहुत से लोगों का समूह, 2. बटोरने का कार्य; (क्रि.स.) 'बिटोलणा'

क्रिया का आदे. रूप; **~करणा** 1. लोगों का जमघट लगाना, 2. पंचायत में उपस्थिति के लिए लोगों को बुलाना, 3. वस्तुओं का संग्रह करना। **बटोर** (हि.)

बटौड़ा (पुं.) दे. बिटोड़ा।

बट्टण (पुं.) दे. बटण।

बट्टा[1] (पुं.) 1. कलंक, 2. व्यापार में होने वाली हानि; **~खात्ता** व्यापार में होने वाली हानि; **~~मैं जाणा** हानि होना, पूँजी भी न मिलना; **~तारणा** कलंक धोना; **~लागणा** 1. कलंकित होना, 2. व्यापार में हानि होना; **~लाणा** 1. कुल कलंकित करना, 2. हानि पहुँचाना; **~होणा** 1. कुल में कोई कलंक होना, 2. व्यापार में हानि होना।

बट्टा[2] (पुं.) 1. लोढी, 2. पत्थर, 3. बट्टा, तराजू का बाट।

बट्टी (स्त्री.) 1. साबुन की चकती, 2. चकती।

बठंता (क्रि.) बैठा हुआ।

बठाणा (क्रि. स.) 1. आसन देना, 2. विधवा को बिना पुनर्विवाह की रस्म के अन्य व्यक्ति की वधू बनाना, 3. सोते हुए को उठाना, 4. लेटे हुए को बैठाना, 5. पकड़ कर बैठाना, 6. पंगु करना, 7. उचित स्थान पर स्थापित करना, 8. धंसाना, फँसाना। **बैठाना** (हि.)

बठान (पुं.) दे. गोरा।[1]

बड़ (पुं.) एक विशाल वृक्ष जिसके दाढ़ी लटकती है और जिसका दूध ओषधियों में काम आता है; (क्रि. अ.) 'बड़णा' क्रिया का आदे. रूप; **~-पीप्पळ बधणा** 1. अधिक क़द बढ़ना, 2. अधिक आयु को होना; **~-पीप्पळ लगवाणा** पुण्य के कार्य करना; **~-बंटा** दे. बरबंटा।

बड़खान्ना (पुं.) गूजरों का एक गोत।

बडगर (वि.) दे. बडळा।

बड़छोट (वि.) 1. छोटा बड़ापन 2. आयु का अंतर।

बड़णा (क्रि. अ.) 1. घुसना, ज़बरदस्ती प्रवेश करना, 2. कठोर वस्तु का कोमल वस्तु में घुसना, 3. जीव-जंतु का अपने बिल में प्रवेश करना, 4. स्त्री का अन्य के घर में पत्नी के रूप में जाना, 5. चोर का घर में घुसना, 6. पैठना; **~-लीक्कड़णा** 1. सभी भेदों को जानना, 2. व्यवसाय विशेष में निपुण होना। **बड़ना** (हि.)

बड़दंगी (वि.) लज्जाहीन।

बडपण (पुं.) 1. बुजुर्गी, 2. महानता, 3. बड़ाई। **बड़प्पन** (हि.)

बड़प्पन (पुं.) दे. बडपण।

बड़बंटा (पुं.) दे. बरबंटा।

बड़बड़ाणा (क्रि. अ.) 1. मन ही मन कुछ कहना, फुसफुसाना, 2. प्रतिक्रिया-स्वरूप बोलते रहना। **बड़बड़ाना** (हि.)

बड़बड़ाना (क्रि. अ.) दे. बड़बड़ाणा।

बडबीस्सर (वि.) 1. बड़बोला 2. घमंडी।

बडबेर (स्त्री.) 30-40 हाथ ऊँचा काँटेदार पेड़ जिस पर शीतकाल में बागू, गोला आदि गुठलीदार मीठे फल (बेर) लगते हैं, यह पौधा झड़बेरी से भिन्न है, (दे. झाड़)।

बडबेरी (स्त्री.) दे. बडबेर।

बड़बोला (वि.) दे. बड़बोल्ला।

बड़बोल्ला (वि.) बड़बोला, सदा गर्व भरे वचन कहने वाला।

बड़भस (वि.) 1. बूढ़ा किंतु मूर्ख, 2. बड़ा-बूढा।

बड़भागी (वि.) दे. बड़भाग्गी।

बड़भाग्गी (वि.) अत्यंत सौभाग्यशाली, भाग्यवान। **बड़भागी** (हि.)

बड़रा (वि.) दे. बडला़।

बडळा (वि.) 1. बड़ा, 2. बडा़ (लड़का), बड़े वाला, 3. तुलना में बड़ा या अधिक।

बड़वा[1] (पुं.) कैर का पौधा, (दे. बाड़वा)।

बड़वा[2] (पुं.) दे. बाड़वा।

बड़सी (स्त्री.) 1. साझे का काम, 2. खेती-बाड़ी में पारस्परिक सहयोग से किया जाने वाला काम जो प्रतिदान के रूप में उतार दिया जाता है (जैसे–यदि आज कोई अपने बैल या हल के साथ दूसरे को सहयोग देता है तो समय पर दूसरा भी उसे उतना ही सहयोग देगा); **~आणा** 1. किए हुए काम के बदले में उतने ही प्रतिदान की माँग होना, 2. आपत्ति आना, 3. बोझा आ पड़ना; **~करणा** आपसी सहयोग पर काम करना; **~तारणा** किसी सहयोग के प्रतिदान-स्वरूप दूसरे के साथ उतना ही सहयोग देकर दायित्व निबाहना।

बड़सोई (पुं.) गूजरों का एक गोत।

बड़हाप्पा (पुं.) दे. बुढाप्पा।

बडहार (स्त्री.) दे. बढार।

बड़ा[1] (पुं.) उड़द, मूँग आदि की पिसी दाल (पीठी) से तल कर बनाया हुआ तथा प्रायः दही में डुबाया हुआ छोटा पूड़ा या गोला; **दही-~** दही और बड़ा; **~~-सा** फूला हुआ; **~~सा-होठ** मोटा ओंठ।

बड़ा[2] (वि.) दे. बड्डा।

बड़ाई (स्त्री.) 1. प्रशंसा, महिमा, 2. बड़े होने का भाव; **~आणा** यश मिलना; **~करणा/मारणा** बढ़ा-चढ़ा कर बात कहना; **~लूटणा** यश मिलना; **~होणा** वाह-वाही होना।

बड़ी (स्त्री.) उड़द, मूँग आदि की पिट्ठी की सूखी टिकिया; (वि.) 1. आयु, नाप, तोल आदि में अधिक, 2. महान्।

बडेडो (वि.) दे. बड्डा।

बडेरा (वि.) 1. वृद्ध, बड़ी आयु का, 2. समझदार (व्यंग्य में)।

बडेरी (वि.) 1. अधिक आयु की, 2. सम्मानित (महिला), 3. तुलना में अधिक, 4. (दे. बूड्ढी-ठेरी)।

बडेरू (वि.) दे. बडेरा।

बड्डळ (वि.) दे. बडळा।

बड्डा (वि.) 1. माप-तोल आदि में अधिक, 2. महान्, 3. आयु में अधिक, 4. वृद्ध; **~दीवा** धन-तेरस के दिन जलाया जाने वाला यमदीप; **~-बूड्ढा** 1. परिवार का वृद्धजन, 2. परिवार का सम्मानित व्यक्ति; **~मानणा** 1. श्रेष्ठ मानना, 2. सम्मान देना। **बड़ा** (हि.)

बड्ढा (पुं.) 1. किसी विशेष लंबाई-चौड़ाई तथा गहराई का गड्ढा जो अधिकतर गाँव के जोहड़ के तल की मिट्टी की सफ़ाई के लिए धर्मार्थ खुदवाया जाता है, 2. खेती को एक ओर से काटने का कार्य, (दे. बाड्ढा); (क्रि. स.) **'बढणा'** क्रिया भू. का., पुं. रूप **~कढवाणा/छँटवाणा** जोहड़ से धर्मार्थ मिट्टी छँटवाना; **~लाणा** खेत को किसी भाग से काटना शुरू करना।

बढई (पुं.) खाती, लकड़ी का काम करने वाला।

बढईगरी (स्त्री.) लकड़ी का काम करने का रोज़गार या धंधा।

बढका (वि.) बढ़िया–भोत बढका काम कर्‌या।

बढकी (वि.) बढ़िया, उत्तम–इसी बढकी बात कही सै बाळक नै; (स्त्री.) गर्वोक्ति।

बढणा (क्रि. अ.) 1. आगे सरकना, 2. फ़सल का बढ़ना, 3. उन्नति करना, 4. किसी को पीछे छोड़ना, 5. आवश्यकता से अधिक आगे जाना; (वि.) जो शीघ्र बढ़े; (क्रि. स.) काँट-छाँट करना, काटना–उसका सिर किसनैं बढ दिया। **बढ़ना** (हि.)

बढना (क्रि. अ.) 1. दे. बधणा, 2. दे. बढणा।

बढनार (वि.) अधिक ऊँची या लंबी बढ़ने वाली।

बढाणा (क्रि. स.) 1. (दीया) बुझाना, 2. जल आदि विसर्जन करना, 3. (दे. बधाणा)। **बढ़ाना** (हि.)

बढ़ाना (क्रि. स.) 1. दे. बधाणा, 2. दे. बढाणा।

बढार (स्त्री.) 1. वह भोज जो जनेत को विदाई के समय दिया जाता है, बड़ा खाना, बड़ा आहार, 2. दुल्हन की विदाई के समय संपन्न होने वाली एक रस्म; **ब्याह पाच्छै किसी~** उल्टी रस्म।

बढावा (पुं.) 1. प्रोत्साहन, 2. साहस या हिम्मत दिलाने वाली बात।

बढिया (वि.) 1. उत्तम, श्रेष्ठ, 2. सुंदर, अच्छी।

बढी (पुं.) दे. बढई।

बढैया (पुं.) दे. खाती चिड़ा।

बढोतरी (स्त्री.) 1. वृद्धि, उत्तरोत्तर वृद्धि, 2. 'घटोतरी' का विलोम।

बण (पुं.) 1. सुनसान जंगल, 2. सघन पेड़ वाला स्थान, 3. दुर्गम मार्ग (झाड़-झंखाड़ के कारण) 4. वृक्षों का समूह, जैसे–बण का बण। **वन** (हि.)

बणक (पुं.) सौदागर, बणिक।

बणखंड (पुं.) 1. जंगल, 2. वन का भाग; **~झोणा** वन में इधर-उधर भटकना। **वन-खंड** (हि.)

बणछठी (स्त्री.) दे. बणसटी।

बणज (पुं.) व्यापार; **~खोल्हणा** कार्य-व्यापार बढ़ाना; **~चालणा** अच्छी कमाई मिलना, व्यापार चलना। **वाणिज्य** (हि.)

बणजारा (पुं.) 1. घूम-फिर कर व्यापार करने वाला, 2. एक अनुसूचित जाति जो अपने टाँडा-टीरे के साथ घूमती रहती है; (वि.) 1. प्रेम पथिक, प्रेमी, 2. निर्मोही; **~-सा लदणा** 1. कूच करना, 2. लुप्त होना, 3. मरना। **बनजारा** (हिं.)

बणड़ा (पुं.) दे. बंदड़ा।

बणड़ी (स्त्री.) दे. बंदड़ी।

बणणा (क्रि. अ.) 1. बन-ठन कर रहना, 2. झूठा व्यवहार प्रदर्शित करना, 3. चिना जाना, 4. काम बनना, 5. किसी वस्तु का ढलना या तैयार होना; (क्रि. स.) 1. बुनना, 2. ऊन आदि से बुनाई करना, 3. मकड़ी द्वारा जाला बुना जाना। **बनना** (हि.)

बणत (स्त्री.) 1. बुनाई करने का ढंग या नमूना, 2. काशीदाकारी; **~काढणा/गेरणा/घालणा** बुनते समय कोई नमूना आदि बनाना। **बुनत** (हि.)

बणदेब्बी (पुं.) एक प्रसिद्ध साँग या स्वाँग; (स्त्री.) 1. सुंदर स्त्री, 2. वन-कन्या। **वन-देवी** (हि.)

बणबास (पुं.) 1. जंगल का निवास, 2. एक दंड जिसके अनुसार नगरी छोड़कर जंगल में निवास करना पड़ता है, 3. एकांतवास। **बनवास** (हि.)

बणबास्सी (पुं.) 1. वन में निवास करने वाला, 2. जंगली, 3. संन्यासी। **बनवासी** (हि.)

बणमाणस (पुं.) 1. बंदर, 2. रीछ; (वि.) जिसके शरीर पर लंबे बाल हों। **वनमानुष** (हि.)

बणयाणी[1] (स्त्री.) वह भू-भाग जहाँ अधिक वन हों।

बणयाणी[2] (स्त्री.) बनिये की पत्नी, (दे. बाणणी)।

बणरा[1] (पुं.) 1. वनराज, शेर, 2. दे. बंदड़ा।

बणरा (पुं.) श्रेष्ठ वन।

बणवाड़ा (पुं.) 1. वह श्रेष्ठ आहार (विशेषकर घी-बूरा) जो वर या कन्या को विवाह से पाँच-सात दिन पहले दिया जाता है जिससे कि उनका शरीर बलिष्ठ हो जाए, 2. वर या कन्या के चाचा-ताऊ या अन्य निकट के व्यक्ति द्वारा वर, कन्या तथा उसके परिवार के सदस्यों को चढ़त या मेल से पूर्व दिया जाने वाला भोजन (इस दिन वर या कन्या का वास भी 'बणवाड़ा' देने वाले के घर होता है), 3. वर की शोभा-यात्रा के समय गाया जाने वाला गीत; **~काढणा** सायंकाल के समय गीत गाते हुए वर या कन्या की शोभा-यात्रा गाँव की गलियों से निकालना; **~(-ड़े) खाणा/पाड़णा** वर या कन्या द्वारा विवाह से पूर्व पौष्टिक भोजन खाना; **~गाणा** रात्रि के समय वर या कन्या की स्तुति के गान गाना; **~न्योतणा** विवाह से पाँच-सात दिन पूर्व वर या कन्या के सगे-संबंधि यों द्वारा उन्हें श्रेष्ठ भोजन का निमंत्रण देना; **~माँगणा** पुत्र-पुत्री के विवाह के समय 'बणवाड़े' का प्रतिदान माँगना।

बणवाणा (क्रि. स.) 1. निर्माण करवाना, 2. कार्य संपूर्ण करवाना, काम बनवाना, 3. बनाने का काम अन्य से करवाना, 4. बुनवाना। **बनवाना** (हि.)

बणसटी (स्त्री.) 1. (जलाने के लिए) जंगल से एकत्रित की जाने वाली लकड़ी या यष्टि, 2. कपास आदि के पौधे के डंठल (जो कटाई के बाद खेत में खड़े रह जाते हैं)।

बणाई (स्त्री.) 1. बुनावट, 2. बुनने का पारिश्रमिक; (क्रि. स.) 'बणाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप। **बुनाई** (हि.)

बणाणा (क्रि. स.) 1. बुनना, 2. गढ़ना, 3. चिनना, 4. भोजन बनाना, 5. काम बनाना, 6. मित्रता गाँठना, 7. मूर्ख बनाना, उपहास करना, 8. 'बिगाड़णा' का विलोम, 9. उपार्जित करना। **बनाना** (हि.)

बणावट (स्त्री.) 1. बुनने का ढंग, बुनती का नमूना, 2. आकार। **बनावट** (हि.)

बणावटी (वि.) नक़ली। **बनावटी** (हि.)

बणावली (स्त्री.) हरियाणा का वह गाँव (हिसार) जहाँ हड़प्पाकालीन संस्कृति खनन के समय मिली है।

बणी[1] (स्त्री.) 1. छोटा वन, 2. बिना जुता जंगल जहाँ सघन वन न हो; (क्रि.अ.) 'बणणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप। **बनी** (हि.)

बणी² (स्त्री.) सुखी अवस्था। उदा.–बणी बणी के सब कोए साथी। दे. बणी¹।

बणोबास (पुं.) 1. दे. बणबास, 2. दे. दसोट्टा।

बतळा (स्त्री.) 1. बतलाव, बात, बातचीत करने का भाव, 2. आपसी बातचीत, 3. स्त्री-प्रसंग; **~चालणा** चर्चा चलना।

बतळाणा (क्रि. स.) 1. बताना, समझाना, 2. बातचीत करना, दुःख-सुख की कहना, 3. स्त्री-प्रसंग करना, 4. रहस्य खोलना, 5. एक का संदेश दूसरे तक पहुँचाना, 6. मज़ा चखाना, 7. गुप्त मंत्रणा करना, 8. विस्तृत जानकारी देना। **बतलाना** (हि.)

बतलाना (क्रि. स.) 1. दे. बतळाणा, 2. दे. बताणा।

बतळावा (वि.) बातून; (स्त्री.) दे. बतळा।

बता (अव्य.) 1. आपसी बातचीत के बीच-बीच में दोहराया जाने वाला शब्द, एक पूरक शब्द–बता क्यूक्कर काम चाल्लैगा?, 2. आश्चर्यद्योतक शब्द; (क्रि. स.) 'बताणा' क्रिया का आदे. रूप।

बताणा (क्रि. स.) कहना, दे. बतळाणा। **बताना** (हि.)

बताना (क्रि. स.) दे. बताणा।

बताशा (पुं.) दे. पतास्सा।

बतास्सा (पुं.) दे. पतास्सा।

बतीसी (स्त्री.) दे. बत्तीसी।

बतोरा (वि.) बातून।

बतौर (क्रि. वि.) 1. रीति से, तरीके पर, 2. सदृश्य, समान।

बत्तक (स्त्री.) एक जलचर पक्षी। **बतख** (हि.)

बत्तड़ (वि.) बातून। दे. बतोरा।

बत्ती¹ (वि.) 1. फ़ालतू, अतिरिक्त, 2. अधिक संख्या या मात्रा में, 3. श्रेष्ठ, मूर्धन्य। **बढ़ती** (हि.)

बत्ती² (स्त्री.) 1. दीये में डालने की रूई की बत्ती, (दे. बात्ता), 2. कपड़े आदि को हाथ की दाब से मरोड़ पर बनाई हुई बत्ती, 3. दीया–बत्ती चास दे, 4. बिजली का बल्ब, 5. मोमबत्ती, 6. सलेट पर लिखने के लिए प्रयुक्त पैंसिल, सलेटी। **बाती** (हि.)

बत्ती³ (वि.) बत्तीस की संख्या। **बत्तीस** (हि.)

बत्तीसी (स्त्री.) 1. दाँत (जो प्रायः बत्तीस होते हैं), 2. दंतावलि; (वि.) बत्तीस की संख्या; **~काढणा** 1. व्यर्थ में हँसना, 2. दाँत झाड़ना; **~झाड़णा** दाँत तोड़ना।

बत्तू (वि.) बातून।

बत्तो (वि.) अधिक बात करने वाली, बातूनी (दे. लबान्नी)।

बथनियाना (क्रि.) दे. घेरणा।²

बथवा (पुं.) रबी की फ़सल में उगने वाला एक खरपतवार जिसके पत्तों का रायता आदि बनता है। **बथुआ** (हि.)

बथान (पुं.) दे. गितवाड़ा।

बद (वि.) बदचलन।

बदकार (वि.) बदचलन।

बदकिस्मत (वि.) हतभाग्य।

बदगोई (स्त्री.) 1. दुर्गंध, 2. निंदा।

बदचलन (वि.) दुश्चरित्र।

बदज़बान (वि.) कटुभाषी।

बदज़ात (वि.) नीच (दे.) कमीण।

बदणा (क्रि. स.) 1. शर्त लगाना, 2. बड़ा या महत्व का मानना; (क्रि.अ.) झगड़ा करना। **बदना** (हि.)

बदतमीज़ (वि.) अशिष्ट, गँवार।

बदतर (वि.) और भी बुरा, किसी की अपेक्षा बुरा।

बदन (पुं.) देह, शरीर (तुल. देही)।

बदनसिंह (पुं.) 1. एक प्रसिद्ध पात्र जिसका वर्णन गीतों में मिलता है, 2. कामदेव।

बदनसीब (वि.) अभागा।

बदना (क्रि.)1. वचन देना। 2. शर्त लगाना।

बदनाम (वि.) 1. जिसकी निंदा फैली हो, 2. कलंकित।

बदनामी (स्त्री.) लोकनिंदा, अपकीर्ति (तुल. बदगोई)।

बदनाम्मी (स्त्रीं.) दे. बदनामी।

बदनी (स्रत्री.) 1. नीलामी की बोली देने या लगाने का भाव, 2. एक प्रकार का जुआ।

बदनीयत (वि.) 1. बेईमान, 2. बुरी नीयत वाला।

बदपरहेज (वि.) 1. कुपथ्य करने वाला, 2. परहेज़ न करने वाला।

बदबू (स्त्री.) दुर्गंध।

बदबोई (स्त्री.) दे. बदगोई।

बदमाँस (वि.) दुश्चरित्र, दुष्ट। **बदमाश** (हि.)

बदमाश (वि.) दे. बदमाँस।

बदमाशी (स्त्री.) 1. दुष्टता, 2. व्यभिचार।

बदमिज़ाज़ (वि.) 1. खोटी प्रकृति का, 2. चिड़चिड़ा, 3. (दे. छोहला)।

बदरीनारायण (पुं.) बदरिकाश्रम के प्रधान देवता।

बदरो (स्त्री.) बरसाती नदी; **~बरसणा** अतिवृष्टि होना।

बदलणा (क्रि. स.) 1. आदान-प्रदान करना, 2. परिवर्तित करना, 3. लौटाना, 4. (दे. फेरणा)। **बदलना** (हि.)

बदलवाना (क्रि. स.) दे. बदलाणा।

बदला (पुं.) प्रतिकार।

बदलाणा (क्रि. स.) 1. लौटाना, 2. एक वस्तु लौटाकर बदले में दूसरी लेना। **बदलवाना** (हि.)

बदळिया (वि.) बादल के रंग का।

बदली (स्त्री.) 1. तबादला, स्थानान्तरण, 2. छोटा बादल।

बदलू (वि.) जो अपनी बात से बदल जाए (दे.) पलटू।

बदसूरत (वि.) 1. बदशक्ल, कुरूप, 2. (दे. भूँड्डा)।

बदहजमी (स्त्री.) अपच।

बदाम (पुं.) एक सूखा मेवा। **बादाम** (हि.)

बदाम्मी (वि.) बादाम के रंग का। **बादामी** (हि.)

बदी[1] (स्त्री.) बुरा काम, निंदापरक काम।

बदी[2] (स्त्री.) 1. अंधेर पक्ष, 2. 'सुदी' का विलोम।

बधणा (क्रि. अ.) 1. पेड़-पौधों का बढ़ना, 2. माप-तोल में अधिक निकलना, 3. धीरे-धीरे किसी की भूमि पर कब्जा करते जाना, 4. किसी की ओर धीरे-धीरे बढ़ना, 5. रबड़ आदि लचीली वस्तु का लंबा होना, 6. बल लगाने के कारण पेंग का ऊपर की ओर जाना; (वि.) जो शीघ्र बढ़े; (पुं.) बिस्तर; **~-बोरिया** बोरिया-बिस्तरा; **~~बाँधणा** कूच करना। **बढ़ना** (हि.)

बधमाँ (वि.) 1. बढ़ा हुआ, 2. जिसमें लंबा बढ़ने के गुण हों, 3. श्रेष्ठ, उत्तम।

बधवाणा (क्रि. स.) बधाने या बढ़ाने का काम अन्य से करवाना। **बढ़वाना** (हि.)

बधशाला (स्त्री.) दे. हत्था[1]।

बधाण (पुं.) सन या पटसन से बना मोटा रस्सा (यह नेज्जू (रज्जू) से मोटा और लाव से कुछ पतला होता है)।

बधाणा (क्रि. स.) 1. किसी वस्तु को मात्रा या प्रमाण में बढ़ाना, 2. किसी वस्तु को आगे सरकाना, 3. लचीली वस्तु को खींच कर लंबा करना, 4. लंबायमान करना, 5. पीटना। **बढ़ाना** (हि.)

बधारणा (क्रि. स.) पूजा की शेष सामग्री का जल-विसर्जन करना।

बधावणा (क्रि. स.) दे. बधाणा।

बधावा (पुं.) 1. वंश, संतति आदि के बढ़ने का भाव, 2. वह व्यक्ति जिसके हाथ या भाग्य में वृद्धि का यश हो, 3. शुभ अवसरों (विवाह, पुत्र-जन्म आदि) पर गाया जाने वाला एक गीत, 4. बड़ा ढेर; **~गाणा** मंगलाचार गाना; **~देणा** बधाई देना।

बधिक (पुं.) 1. कसाई, 2. (दे. हेड़ी)।

बधिया (पुं.) खस्सी करने की क्रिया; (वि.) 1. खस्सी (पशु), 2. नामर्द, 3. बढ़िया; **~करणा** 1. नाकारा करना, 2. खस्सी करना; **~बैठणा** नाकारा होना; **~होणा** खस्सी होना, नपुंसक होना।

बधेरा (वि.) 1. अतिरिक्त, 2. यथेष्ट मात्रा में।

बधेवा (पुं.) दे. बधावा।

बन (पुं.) दे. बण।

बनखंड (पुं.) दे. बणखंड।

बनगोइठा (पुं.) दे. आरणा।

बनज (पुं.) दे. बणज।

बनजारा (पुं.) दे. बणजारा।

बनजोटा (पुं.) व्यापार, सूदखोरी।

बनजोट्टा (पुं.) व्यापारी का दलाल।

बनड़ा (पुं.) 1. दे. बणड़ा, 2. दे. बंदड़ा, 3. दे. बन्ना।

बनड़ी (स्त्री.) 1. दे. बणड़ी, 2. दे. बंदड़ी, 3. दे. बन्नो।

बनत (स्त्री.) दे. बणत।

बनना (क्रि. अ.) दे. बणणा।

बनफ़सा (पुं.) एक प्रकार की वनस्पति जो औषध के काम आती है।

बनबास (पुं.) दे. बणबास।

बनबासी (पुं.) दे. बणबास्सी।

बनमानुस (पुं.) दे. बणमाणस।

बनवाना (क्रि. स.) दे. बणवाणा।

बनवारी (पुं.) श्रीकृष्ण; (वि.) प्रेमी।

बनात (पुं.) बहुमूल्य वस्त्र।

बनाना (क्रि. स.) दे. बणाणा।

बनाफल (वि.) 1. दे. जंगली, 2. वन का या जंगली फल।

बनाम (अव्य.) नाम पर, नाम से, किसी के प्रति।

बनारणा (क्रि. स.) दे. बिनारणा।

बनावट (स्त्री.) 1. दे. बणावट, 2. दे. दिखावट।

बनावटी (वि.) 1. दिखावटी, 2. जाली।

बनासपति[1] (वि.) 1. वनस्पति, 2. (दे. रेल्ली घी)।

बनासपति[2] (स्त्री.) वनस्पति।

बनिया (पुं.) दे. बाणियाँ।

बनियाइन (स्त्री.) दे. बाणणी।

बनियान (स्त्री.) दे. बलियान।

बनूरी (स्त्री.) मीठी सुहाली।

बनूरा (पुं.) दे. सुहाळ[1]।

बनोरा (पुं.) 1. दे. बान, 2. दे. बनवाड़ा।

बन्ना (पुं.) दे. बणड़ा।

बन्नी/बन्नो (स्त्री.) दे. बणड़ी।

बपारी (पुं.) दे. बिपारी।

बबकारणा (क्रि. अ.) 1. मृतक की आत्मा का किसी जीवित व्यक्ति में बोलना, 2. साधु-संन्यासी द्वारा भविष्यवाणी करना, 3. मन का गुब्बार निकालना; (वि.) वह जो बबकारे। **बबकारना** (हि.)

बबर (वि.) 1. दे. बबरी, 2. दे. बब्बर, (पुं.) दे. बब्बर।

बबरी (वि.) 1. भारी, 2. शक्तिशाली।

बबाल (पुं.) दे. बबाळ।

बबाळ (पुं.) 1. व्यर्थ का विवाद, झगड़ा, 2. झंझट। **बवाल** (हि.)

बबुआ (पुं.) 1. मिट्टी आदि का छोटा सुंदर खिलौना (बालक के आकार का), 2. शिशु।

बबूल (पुं.) दे. बबूळ।

बबूळ (पुं.) थली पर उगने वाला एक झाड़ीदार पौधा जिसकी लकड़ी की मथानी बनती है (यह पौधा कीकर से भिन्न है); **~काटणा** आपत्ति में फँसना; **~बोणा** भविष्य के लिए आपत्ति मोल लेना। **बबूल** (हि.)

बबूला (पुं.) 1. दे. बबूळा, 2. दे. भभूळिया।

बबूळा (पुं.) 1. वात-चक्र, 2. हल्की आँधी, 3. आवेश, 4. क्रोध। **बबूला** (हि.)

बबेल्ला (पुं.) 1. बावेला, 2. शोर-गुल। **बवाल** (हि.)

बब्बर (पुं) बबर शेर; (वि.) 1. शक्तिशाली, 2. भारी-भरकम। **बबर** (हि.)

बभीस्सण (पुं.) रावण का भाई जो राम का भक्त था। **विभीषण** (हि.)

बभूत (पुं.) 1. साधु की धूनी की राख (जो अनेक रोगों का नाश करने वाली मानी जाती है और साधु जिसे तन पर रमाते हैं), 2. विभूति; **~रमणा** घूनी तपना; **~रमाणा** शरीर पर राख लगाना। **भभूत** (हि.)

बम (पुं.) विस्फोटक गोला; **~का गोळा** विस्फोटक गोला; **~~छूटणा** बम गिरना।

बमलहरी (पुं.) शिव-स्तुति का एक प्रसिद्ध गीत।

बया (पुं.) दे. बैया।

बयान (पुं.) दे. ब्यान।

बयाना (पुं.) दे. ब्यान्ना।

बयार (स्त्री.) वायु। दे. गोरा[1]।

बय्यर (स्त्री.) (कौर.) दे. बीरबान्नी।

बरंगा (पुं.) दे. करंजा।

बरंडी[1] (स्त्री.) एक प्रकार की विलायती सुरा। **ब्राँडी** (हि.)

बरंडी[2] (स्त्री.) जाकेट, रूई की या ऊनी जाकेट। **बंडी** (हि.)

बर[1] (पुं.) 1. भावी पति, 2. पति, दूल्हा, 3. आशीर्वाद-सूचक अटल वचन, 4. बड़े से प्राप्त इच्छा-पूर्ति का वचन; **जोड़ी का~** कन्या के लिए उचित वर; **~ढूँढणा** लड़की के लिए वर की तलाश करना; **~पाणा/ मिलणा** 1. योग्य वर मिलना, 2. वरदान मिलना; **~बरणा** वर का वरण करना, स्वयं पति का चुनाव करना। **वर** (हि.)

बर[2] (स्त्री.) बैलों को हाँकने के लिए प्रयुक्त ध्वनि।

बर[3] (स्त्री.) बार, बारी–तेरे तैं कई बर कहली; (वि.) तुल्य–नाजकी तीन बर की।

बर[4] (स्त्री.) दे. भिरड़।

बरकत[1] (स्त्री.) 1. लाभ, 2. कमी न पड़ना।

बरकत[2] (पुं.) पहला तोल।

बरकरार (वि.) क़ायम, स्थिर।

बरख़ास्त (वि.) 1. नौकरी से हटाने का भाव, 2. सभा आदि को विसर्जित करने का भाव।

बरखिलाफ़ (क्रि. वि.) विरुद्ध।

बरग (पुं.) ज्योतिष के अनुसार वर्णमाला के आधार पर रखे गए नामों के वर्ग का प्रतीक, जैसे–अ, ई, ओ, ऊ बिलाव, ऐसे ही शेर, मृग आदि, 2. श्रेणी, कोटि; **~-बैर** 1. जन्मजात शत्रुता, 2. ज्योतिष के अनुसार विभिन्न वर्णों से आरंभ होने वाले वर्गों का पारस्परिक बैर, जैसे–शेर और मृग का, बिल्ली और चूहे का; **~~साधणा** शत्रुता निकालना। **वर्ग** (हि.)

बरगद (पुं.) दे. बड़।

बरगा[1] (पुं.) छोटी कड़ी या गढ़ी हुई लकड़ी।

बरगा[2] (वि.) 1. वर्ग का, श्रेणी का, 2. जैसा, तुल्य।

बरगेड (स्त्री.) सेना की बड़ी टुकड़ी। **ब्रिगेड** (हि.)

बरगेडियर (पुं.) ब्रिगेड का बड़ा अधिकारी। **ब्रिगेडियर** (हि.)

बरछ तोता (पुं.) एक प्रकार का ओढ़ना।

बरछी (स्त्री.) 1. एक भाला, 2. एक आयुध जिसकी नोक पैनी होती है, (दे. बल्लम)।

बरजणा (क्रि. स.) निषेध करना, रोकना **बरजना** (हि.)

बरजोरी (स्त्री.) जबरदस्ती।

बरड़[1] (वि.) 1. मूर्ख, 2. बर्बर, (दे. पिरड़)।

बरड़[2] (स्त्री.) बड़ की हवाई जड़।

बरड़-बरड़ (स्त्री.) 1. किसी बात को अस्वीकार करने के लिए मन ही मन में बड़बड़ाने की क्रिया या भाव, 2. अस्पष्ट शब्द निकालने की ध्वनि; **~करणा/राखणा** बड़बड़ाना।

बरड़ाणा (क्रि. अ.) 1. बड़बड़ाना, 2. चीख-पुकार करना, 3. रोना, 4. ऊँट का अरराना, 5. प्रतिरोधात्मक बात कहना, (दे. बिरड़ाणा)।

बरड़ू (वि.) मोटी बुद्धि वाला।

बरढ़ (वि.) दे. झरड़।

बरण[1] (पुं.) 1. जाति, 2. वर्ग, श्रेणी, (दे. बरग); **~बिचार राखणा** छुआछूत का विचार रखना। **वर्ण** (हि.)

बरण[2] (पुं.) सूत्र, धागा, पवित्र धागा।

बरण[3] (पुं.) अक्षर, वर्ण।

बरणा[1] (पुं.) बेल-पत्र के समान एक वृक्ष जिस पर तीन-तीन पत्तों का समूह लगता है। **बरना** (हि.)

बरणा[2] (क्रि. स.) वर का चुनाव करना; (पुं.) वर, बन्ना। **बरना** (हि.)

बरणा[3] (वि.) जैसा, वर्ग का, तुल्य स्वभाव का–तेरे बरणा माणस मिलणा मुसकिल सै।

बरणी[1] (स्त्री.) मृत्यु के बाद किया जाने वाला एक संस्कार जिसमें गायत्री का जाप आदि सम्मिलित है; (क्रि. स.) वर्णन की, कह सुनाई।

बरणी[2] (वि.) जैसी, वर्ग की, तुलना की–तेरे बरणी सब बीरबान्नी किस तराँ हूँ; (स्त्री.) बन्नी।

बरत (पुं.) उपवास, 2. प्रतिज्ञा; **~तोड़णा** 1. उपवास पूरा न करना, 2. **प्रतिज्ञा**

भंग होना; ~**लेणा** सौगंध खाना, शपथ लेना, नियम लेना। **व्रत** (हि.)

बरतणा (क्रि. स.) 1. काम में लाना, 2. परखना, परीक्षा करना, 3. वस्तु को काम में लाकर समाप्त कर देना। **बरतना** (हि.)

बरतन (पुं.) दे. कास्सण।

बरतना (क्रि. स.) दे. बरतणा।

बरताऊ (वि.) 1. बरतने योग्य, 2. अल्प मात्रा में–घर बरताऊ दाणें होगे।

बरताव (पुं.) 1. व्यवहार, 2. बरतने का ढंग। **बर्ताव** (हि.)

बरती (वि.) जिसने व्रत या उपवास लिया हो, उपवासी; ~-**बास्सी** व्रत और उपासना करने वाला। **व्रती** (हि.)

बरतेवा (पुं.) उपयोग। दे. बरतणा।

बरदान (पुं.) वरदान।

बरन (पुं.) स्वरूप।

बरना (क्रि. स.) दे. बरणा[2]; (पुं.) 1. दे. बन्ना, 2. दे. बरणा[1]।

बरनी (वि.) दे. बरणी[2]।

बरफ़ीला (पुं.) 1. बर्फ़ से संबंधित, बर्फ़ का, 2. बर्फ़ जैसा (ठंडा)।

बरबंटा (पुं.) वट पर लगने वाला फल जो पक कर लाल हो जाता है और खाने में मीठा होता है।

बरबंटी (स्त्री.) पीपल पर लगने वाला फल; ~-**सी आँख** मोटी और गोल आँखें।

बरबाद (वि.) 1. नष्ट, विनष्ट, 2. अनुपयोगी, 3. चौपट।

बरबादी (स्त्री.) विनाश, सर्वनाश।

बरमा (पुं.) 1. लकड़ी आदि में छेद करने का यंत्र, 2. भूमि में लगा हैंडपंप, 3. भारत के पूर्व का एक देश जहाँ आजाद हिंद फ़ौज के सैनिकों ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी थी।

बररै (स्त्री.) बैलों को हाँकने के लिए प्रयुक्त संबोधन।

बरवा[1] (पुं.) 1. मिट्टी का कसोरा (तुल. सकोरा), 2. बंटे के आकार का चौड़े मुँह का मिट्टी का बना पका पात्र जो ढेंकली से पानी निकालने के काम आता है।

बरवा[2] (पुं.) तुलसी आदि का पौधा।

बरवाळा (पुं.) दे. बरवा[1]।

बरस (पुं.) वर्ष; ~-**ब्याँतड़** वह पशु (भैंस) जो हर वर्ष ब्याए।

बरसगाँठ (स्त्री.) वर्षगाँठ, सालगिरह।

बरसणा (क्रि. अ.) 1. वर्षा होना, 2. अधिक मात्रा में उपलब्ध होना, 3. कृपालु होना, 4. क्रोधित होना। **बरसना** (हि.)

बरसना (क्रि. अ.) दे. बरसणा।

बरसाई (स्त्री.) 1. बरसाने या ओसाने की क्रिया, 2. ओसाई की मज़दूरी; (क्रि. स.) 'बरसाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

बरसाणा[1] (क्रि. स.) 1. खलिहान में भूसे को ओसाना, 2. वर्षा करना, 3. रेत आदि को हवा में उड़ाना। **बरसाना** (हि.)

बरसाणा[2] (पुं.) श्री राधा जी का गाँव, (दे. भड़सोन्ना)। **बरसाना** (हि.)

बरसाती (स्त्री.) दे. बरसात्ती; (वि.) दे. बरसात्ती।

बरसात्ती (स्त्री.) 1. बरसात ओटने का वस्त्र या कोट, 2. छत पर बना कमरा जिसकी छत नीची होती है; (वि.) बरसात से संबंधित।

बरसाना (क्रि. स.) दे. बरसाणा[1]; (पुं.) दे. भड़सोन्ना।

बरसी (स्त्री.) 1. मृत्यु के एक वर्ष बाद संपन्न होने वाली एक धार्मिक रस्म, 2. मृतक की पुण्य तिथि के दिन संपन्न होने वाला श्राद्ध, 1. (दे. ख्याही), 2. (दे. बरसोद्धी)।

बरसेंत (पुं.) आषाढ़ अमावस को मनाया जाने वाला एक त्योहार जिसमें वधु सास को बायना देती है।

बरसोद (पुं.) यजमानी प्रथा का वार्षिक देय।

बरसोद्धी (स्त्री.) वार्षिक श्राद्ध; **~करणा /मनाणा** वार्षिक श्राद्ध के दिन विशेष भोज का आयोजन करना, (दे. ख्याही)।

बरसौधिया (पुं.) वर्ष भर के ठेके पर काम करने वाला मजदूर।

बरहा (पुं.) 1. सूअर, 2. वराह भगवान, वराह अवतार (इनकी जयंती श्रावण शुक्ल षष्ठी को मनाते हैं)।
वराह (हि.)

बरही (स्त्री.) दे. बर्ही।

बरहैड़ा (पुं.) जंगली सूअर, (दे. सूर-भरेड़ा)।

बराँ (स्त्री.) बारी, दफ़ा–अपणी बराँ तन्नैं बी मदत करणी चाहिए थी।

बराँड्डा (पुं.) कमरे के बाहर छतदार छावा। **बरामदा** (हि.)

बराँह् (स्त्री.) दे. बराँ।

बरा[1] (पुं.) कोहनी पर पहना जाने वाला एक गोल कड़ा, हथदंड, (दे. टाड[1])।

बरा[2] (पुं.) एक फल।

बराड़ू[1] (वि.) दे. बरान्नी।

बराड़ू[2] (स्त्री.) चाही भूमि का विलोम, बाँगर भूमि, बैरानी।

बरात (स्त्री.) 1. जनेत, 2. दूल्हे के साथ बारात में जाने वाले उसके सगे-संबंधी आदि; **~लेणा** गाँव के बाहर या चौपाल में बरात का स्वागत करना; **~-सी जीमणा** 1. किसी बड़े कार्य से निवृत्ति मिलना, 2. बहुत शोर होना।

बराती (पुं.) 1. दे. बरात्ती, 2. दे. जनेत्ती।

बरात्ती (पुं.) बराती, वर-यात्रा के समय सम्मिलित व्यक्ति, (दे. जनेत्ती); (वि.) सजा-धजा (व्यक्ति); **~-सा** सजा-धजा व्यक्ति–बरात्ती तै माए जण दे सै (सौंदर्य जन्मजात है, कपड़ों से सुंदरता नहीं आती)।

बरान (वि.) दे. बिरान।

बरान्नी (स्त्री.) बिना सिंचाई वाला भू-भाग।
बारानी (हि.)

बराबर (वि.) दे. बराब्बर।

बराब्बर (वि.) 1. समान, 2. समतल, 3. ध्वस्त–डाँगराँ नैं सारा खेत बराब्बर कर दिया; **~का** 1. समान, 2. आयु, धन, संपत्ति आदि में तुलनीय, 3. अन्न के बदले में सब्ज़ी, फल आदि का तोल। **बराबर** (हि.)

बराब्बरिया (वि.) 1. जोड़ का, मुक़ाबले का, 2. बराबर का, तुल्य; (पुं.) 1. मित्र, 2. मुक़ाबले का शत्रु।

बरामदा (पुं.) दे. बरांड्डा।

बराह (पुं.) दे. बरहा।

बराहू (स्त्री.) मिट्टी के चूल्हे के बाजू।

बरियाँ (स्त्री.) बारी, पारी, 1. (दे. बराँह्), 2. (दे. बर[3])।

बरी[1] (वि.) स्वतंत्र, मुक़दमे या जेल आदि से बंधन-मुक्त होने का भाव; **~करणा** अभियुक्त को मुक्त करना।

बरी[2] (स्त्री.) 1. विवाह के समय वर-पक्ष

द्वारा वधू के लिए दिए जाने वाले वस्त्र, 2. (दे. बड़ी)।

बरीक (वि.) महीन; **~कातणा** व्यर्थ की आलोचना करना। **बारीक** (हि.)

बरु (पुं.) दे. बरुह।

बरुआ (पुं.) दे. बरवा।

बरुह (पुं.) एक लंबी घास।

बरों बराबर (वि.) दे. बराब्बर।

बरोट्टा (पुं.) दे. भरोट्टा।

बरोट्ठी (स्त्री.) एक रस्म जिसमें दूल्हा कन्या के घर के द्वार पर लगी लकड़ी की चिड़ियों को चटखाता है (कहीं-कहीं इस समय बंदूक भी दागी जाती है जो संभवतः अपने शत्रुओं को दी जाने वाली चुनौती का प्रतीक है, यह वीर-गाथा काल की परंपरा जान पड़ती है)।

बरोब्बर (वि.) दे. बराब्बर।

बरोब्बरिया (वि.) 1. बराबरी करने वाला, 2. मुक़ाबले का।

बरोल्ला (पुं.) 1. मिट्टी का बड़ा घड़ा, 2. साग राँधने का मिट्टी का पात्र, 3. अपवित्र पात्र; **~-सा मुँह** 1. बड़ा और गोल मुँह, 2. बिना धुला या गंदा मुँह।

बरोल्ली (स्त्री.) छोटी हंडिया।

बर्‌या (क्रि.) 1. वरण किया, 2. चुना।

बर्रा (पुं.) कूएँ की खुदाई से मिलने वाला रेत।

बर्राणा (क्रि.) बौरना।

बर्री (स्त्री.) दे. बर्हीं।

बर्हिं (स्त्री.) 1. डाभ की बनी रस्सी, 2. पतली रस्सी, रस्सी।

बल (पुं.) दे. बळ[1]।

बळ[1] (पुं.) 1. सहारा, 2. शक्ति, 3. वश, क़ाबू, 4. मोड़, टेढ़ापन, 5. बट; (क्रि. अ.) 'बळणा' क्रिया का आदे. रूप; **~आणा** किसी चीज़ का टेढ़ा होना; **~पड़णा** किसी वस्तु का टेढ़ा होना, बल खाना; **~मैं आणा/होणा** 1. वश में होना, 2. काम पर क़ाबू पाना। **बल** (हि.)

बळ[2] (क्रि. वि.) ओर, तरफ़, दूसरी तरफ़–झोट्टा कींह बळ गया।

बळ[3] (स्त्री.) बलिदान। **बली** (हि.)

बलक (अव्य.) बल्कि, अन्यथा; **~नैं** बल्कि, किंतु।

बलकल (पुं.) 1. छाल के वस्त्र, 2. (दे. बक्कल)। **वल्कल** (हि.)

बलकारी (वि.) बलवान, योद्धा।

बलगम (स्त्री.) दे. खखार।

बळणा (क्रि. अ.) 1. जलना, 2. जल कर ध्वस्त होना, 3. अधिक गरम होना, 4. प्रकाशित होना, 5. बहुत क्रोधित होना (वि.) ज्वलनशील; (क्रि. स.) खेत को सींचना। **बलना** (हि.)

बळत (स्त्री.) जलन।

बलद (पुं.) दे. बळध।

बलदाई (पुं.) बलदाऊ, बलराम।

बलदेव[1] (वि.) बल देने वाला।

बलदेव[2] (पुं.) दे. बलदाई।

बलदाऊ (पुं.) दे. बलळदाई।

बळध (पुं.) बैल, बलीवर्द।

बळध मूतणा (पुं.) बैल की मूत्र आकृति के समान टेढ़ी-मेढ़ी चित्रकारी।

बलधारी (वि.) बलवान।

बळबळाणा[1] (क्रि. अ.) 1. अधिक तप्त होना, 2. तेज़ झल निकलना, 3. आशा भरी निगाह से देखना, 4. क्रोध-भरी नज़र से देखना। **बलबलाना** (हि.)

बळबळाणा[2] (क्रि. अ.) ऊँट का बोलना, ऊँट द्वारा मुँह से ध्वनि निकालना।

बलबीर (पुं.) बलराम के भाई श्रीकृष्ण; (वि.) योद्धा, बलवान।

बलभद्दर (पुं.) बलदेव जी, श्रीकृष्ण के भाई। **बलभद्र** (हि.)

बलभद्र (पुं.) दे. बलभद्दर।

बलम (पुं.) 1. प्रियतम, 2. पति, (दे. बाल्यम)।

बलराम (पुं.) दे. बलदाई।

बलवा (पुं.) विद्रोह, अराजकता।

बलवान (वि.) ताक़तवर।

बलसर (पुं.) गूजरों का एक गोत।

बला (स्त्री.) 1. आपत्ति, विपदा, 2. अखाद्य पदार्थ।

बलाड़ी (स्त्री.) एक अंग्रेजी गाली। ब्लडी।

बळाणा (क्रि. स.) 1. सिंचाई करना, एक क्यारी का पानी दूसरी में काटना, 2. (दे. बुलाणा)। **बलाना** (हि.)

बळावा (पुं.) मादा पशु को गाभिन कराते समय नर पशु के लिंग को योनि के अंदर डालने में सहायता करने की क्रिया।

बलिदान (पुं.) दे. बली[1]।

बलिदानी (वि.) बलिदान-संबंधी; (पुं.) वह जो बलिदान करता हो, बलिदान होने वाला व्यक्ति।

बलि-पशु (पुं.) यज्ञ-पशु, वह पशु जो किसी देवता की भेंट के उद्देश्य से मारा जाए।

बलियान (स्त्री.) बनियान, कमीज आदि के नीचे धारण किया जाने वाला उप-वस्त्र।

बलिहारी (स्त्री.) न्यौछावर, बलिदान।

बळी (स्त्री.) 1. पतली और लंबी लकड़ी, 2. पहला स्थान; **~लाणा** सहायता करना। **बल्ली** (हि.)

बली[1] (स्त्री.) 1. बलिदान, उत्सर्ग, न्यौछावर होने का भाव, 2. वह पशु जो किसी देवता की भेंट के उद्देश्य से मारा गया हो, 3. भूतयज्ञ।

बली[2] (वि.) बली, बलवान।

बलैया (स्त्री.) प्राय: कड़ी-छैलकड़े (दे.) के बीच में पहना जाने वाला वस्त्र का वलय।

बल्कि (अव्य.) दे. बलक।

बल्लम (स्त्री.) लाठी के अग्र भाग पर जुड़ा एक नुकीला आयुध।

बल्लव (पुं.) अज्ञातवास में भीम का नाम। दे. भीम।

बल्ला (पुं.) गेंद खेलने की लकड़ी या डंडा विशेष।

बल्हंभिया (वि.) वह अल या वंश जिनका निकास बळ्हम नामक ग्राम से हुआ है।

बवंडर (पुं.) 1. अंधड़ तूफ़ान, 2. चक्रवात, 3. लड़ाई-झगड़ा; **~खड़्या करणा** लड़ाई-झगड़ा; खड़ा करना।

बवा (स्त्री.) बोने की क्रिया; (क्रि. स.) 'बवाणा' क्रिया का आदे. रूप; **~आणा** वर्षा या सिंचाई के बाद खेत जोतने योग्य होना; **~चालणा** हल चलना, वर्षा के बाद हल चलना; **~होणा** 1. जोताई का काम आरंभ होना, 2. जोताई का काम संपन्न होना। **बोआई** (हि.)

बवाणा (क्रि. स.) बोआना, बोआई का काम अन्य से करवाना।

बवासीर (स्त्री.) दे. बासीरी।

बवेरा (पुं.) 1. बीज बोने की क्रिया, 2. हल जोतने का काम; **~चालणा** खेत की

जोताई और बोआई का काम चलना।

बवेरू (वि.) दे. बुआरू।

बसंत (पुं.) वसंत, वसंत-ऋतु।

बसंत पंचमी/पाँच्चैं (स्त्री.) माघशुक्ल पंचमी जिस दिन होली का डाँडा गाड़ा जाता है, (दे. डाँड्डा[1])। **बसंत पंचमी** (हि.)

बसंती (वि.) बसंती रंग का; (स्त्री.) पीला रंग।

बसंधर (स्त्री.) बसंदर, आग, घर में हर समय जलती रहने वाली पवित्र अग्नि; **~जिमाणा** भोजन करने से पूर्व अग्नि में भोजन का कुछ अंश डालना और फिर जल के छींटे लगाना। **वैश्वानर** (हि.)

बस[1] (स्त्री.) दे. मोट्टर।

बस[2] (पुं.) वश, क़ाबू।

बस[3] (अव्य.) पर्याप्त, बहुत।

बसकणा (क्रि. अ.) 1. अधिक भार के कारण पशु के पैर लड़खड़ा कर गिरने या बैठने की क्रिया, 2. बैल आदि का जुते-जुते बैठ जाना, 3. हार मान कर बैठ जाना; (वि.) वह जो बसके। **बसकना** (हि.)

बसणा (क्रि. अ.) 1. घर बना कर रहना, 2. निवास करना, 3. स्थायी रूप से बसना, 4. आबाद होना। **बसना** (हि.)

बसत (स्त्री.) वस्तु। उदा.–चीज बसत।

बसना (क्रि. अ.) दे. बसणा।

बसर (पुं.) गुजारा, गुजर-बसर।

बसलोंढी (स्त्री.) बर्तन रखने की जगह।

बसवाणा (क्रि. स.) बसाने में सहायता देना। **बसाना** (हि.)

बसाऊ (वि.) (घर) **बसाने वाला**, समझदार।

बसाक्खी[1] (स्त्री.) 1. गदाला, 2. लंगड़े या पंगु की लकड़ी जिसका सहारा लेकर वह चलता है, 3. घोड़े का लिंग। **बसाखी** (हि.)

बसाक्खी[2] (स्त्री.) 1. वैशाखी का त्योहार, 2. वैशाख पूर्णिमा। **वैशाखी** (हि.)

बसाख (पुं.) विक्रम संवत् का दूसरा महीना। **वैशाख** (हि.)

बसाणा (क्रि. स.) 1. निवास देना, 2. बसने में सहायता देना, 3. समृद्धशाली बनाना, 4. घर-बार का काम भली प्रकार चलाना। **बसाना** (हि.)

बसाना (क्रि. स.) दे. बसाणा।

बसीकरण (पुं.) वशीकरण मंत्र। **वशीकरण** (हि.)

बसूला (पुं.) दे. बसोल्ला।

बसेब्बा (पुं.) निवास, निवास-स्थान; **~करणा** किसी स्त्री का अन्य के घर पत्नी बनकर रहना; **~होणा** निर्जन स्थान पर बस्ती बसना। **बसेरा** (हि.)

बसेरा (पुं.) निवास, घर, 2. कुछ काल के लिए निवास, 3. विश्रामस्थल, 4. पक्षी का घोंसला।

बसोल्ला (पुं.) वह यंत्र जिससे खाती लकड़ी छीलता या गढ़ता है। **बसूला** (हि.)

बस्तर (पुं.) 1. कपड़ा, 2. सुंदर पोशाक। **वस्त्र** (हि.)

बस्ता (पुं.) 1. विद्यार्थी का थैला जिसमें वह पुस्तकें रखता है, 2. काग़ज़ों का पुलंदा, 2. पटवारी की पोथी जिसमें गाँव की भूमि का विवरण होता है; **~ठाणा** 1. टहल बजाना, 2. पिछलग्गू बनना; **~बाँधणा** कूच करना।

बस्ती (स्त्री.) 1. वह स्थान जहाँ मुनष्य निवास करते हैं, 2. गाँव; **~बसाणा**

1. परिवार बढ़ाना, 2. नया गाँव बसाना।

बस्स (वि.) दे. बस[2, 3]।

बहंतर (वि.) बहत्तर की गिनती।
बहत्तर (हि.)

बहकटा (वि.) जो जल्दी बहकावे में आ जाए।

बहकणा (क्रि. अ.) 1. बहकी-बहकी बातें कहना, 2. बहकावे में आना; (वि.) वह जो बहक जाए, (दे. बहकटा)।
बहकना (हि.)

बहकना (क्रि. अ.) दे. बहकणा।

बहकाणा (क्रि. स.) 1. फुसलाना, 2. भटकाना, 3. उपहास उड़ाना।

बहकाना (क्रि. स.) दे. बहकाणा।

बहकावा (पुं.) 1. बहकाने का भाव या क्रिया, 2. छलावा; (वि.) बहकाने में कुशल (व्यक्ति)।

बहड़का (पुं.) युवा बछड़ा, नई आयु का बैल।

बहड़की (स्त्री.) गाय की पहली बार गाभिन होने से पूर्व की अवस्था, युवा बछिया।

बहड़ा (पुं.) दे. बहड़का।

बहड़ी (स्त्री.) दे. बहड़की।

बहण (स्त्री.) बहन (तुल. भाण)।
बहन (हि.)

बहणा[1] (क्रि. अ.) 1. तरल पदार्थ का बहना, 2. कान का बहना, 3. चारित्रिक पतन होना, 4. धारा में बह जाना, 5. विचारधारा से प्रभावित होना, 6. अधिक व्यय होना; (वि.) वह जो बहता हो, जो बह निकले। **बहना** (हि.)

बहणा[2] (स्त्री.) दे. भाण।

बहणा[3] (क्रि.) हल, गाड़ी आदि में जुत कर चलना। वहन करना। उदा.–बैल तराँ बहलैगी। (लचं)

बहणेल्ली (स्त्री.) पक्की साथिन, बहिन के समान प्यार रखने वाली सखी।
बहनेली (हि.)

बहतरणी (स्त्री.) पुराणों मे वर्णित एक नदी जिसे यमलोक जाते समय पार करना पड़ता है। **वैतरणी** (हि.)

बहतेरी (वि.) दे. भतेरी।

बहन (स्त्री.) दे. भाण, 2. (तुल. जीज्जी), 2. (तुल. बेब्बे)।

बहनड़ी (स्त्री.) 1. दे. भाण। 2. दे. भाहेल्ली।

बहना (क्रि. अ.) दे. बहणा[1]; (स्त्री.) दे. भाण।

बहनाई (स्त्री.) मित्र बहन, दे. बाहेली।

बहनाप्पा (पुं.) बहिनपन का भाव।

बहनोई (पुं.) दे. भिणोई।

बहर (स्त्री.) 1. गाने की लय या टेक, 2. किसी व्यक्ति से मिलती-जुलती ध्वनि या आवाज़–तूँ बोल्ले सै तै तेरे पै तेरे बाब्बू किसी बहर आवै सै।

बहरा (वि.) सुनने में अक्षम, बधिर; **~ढूँढ** पूरी तरह से बहरा। **बहरा** (हि.)

बहरूपिया (पुं.) दे. बेहरूपिया।

बहळ (स्त्री.) रथ से कुछ छोटे आकार का एक वाहन।

बहल (स्त्री.) बुरी आदत।

बहलड़ी (स्त्री.) दे. बहल।

बहलना (क्रि. अ.) 1. प्रसन्न होना, 2. दुःख भूलकर चित्त का दूसरी ओर लगना।

बहलाँ (वि.) वह मादा पशु जिसका गर्भ नहीं ठहरता हो, (दे. पाळ्हैट); **~पड़णा/होणा** पशु का गर्भ न ठहरना।

बहलाना (क्रि. स.) 1. मन प्रसन्न करना, 2. भुलावा देना, बहकाना।

बहली (स्त्री.) दे. बहल।

बहस (स्त्री.) 1. वाद-विवाद, 2. होड़बाज़ी।

बहा[1] (स्त्री.) बाहने या जोतने की क्रिया का भाव।

बहा[2] (पुं.) तरल पदार्थ का बहाव; (क्रि. स.) 'बहाणा' क्रिया का आदे. रूप। **बहाव** (हि.)

बहाई (स्त्री.) खेत जोतने का भाव या क्रिया; (क्रि. स.) 'बहाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं., एकव. रूप।

बहाणा (क्रि. स.) 1. तरल पदार्थ को बहाना, 2. जल-विसर्जन करना। **बहाना** (हि.)

बहाना (पुं.) दे. बहना; (क्रि. स.) दे. बहाणा।

बहान्ना (पुं.) 1. मिस करना, 2. कारण, निमित्त। **बहाना** (हि.)

बहार (स्त्री.) 1. वसंत-ऋतु, 2. मौज, आनंद, 3. सुहावनापन, 4. विकास, 5. प्रफुल्लता।

बहारला (वि.) 1. बाहर का, 2. दूर का, 3. परदेशी, 4. बाहर वाला अंश आदि; **~मन** ऊपर का मन।

बहाल (वि.) 1. पूर्ववत् स्थिति, ज्यों का त्यों, 2. निलंबन के बाद पुनः पूर्ववत् नौकरी में नियुक्त होने का भाव।

बहाव (पुं.) दे. बहा[2]।

बहिन (स्त्री.) दे. भाण।

बहिलवा (स्त्री.) दे. हरर्या। तुल. हरहट, हरफल।

बहिश्त (पुं.) दे. सुरग।

बहिष्कार (पुं.) 1. सामाजिक रूप से त्यागने का भाव, (दे. जात-लिकाड़ा), 2. निष्कासित करने या होने का भाव।

बही[1] (स्त्री.) वह खाता जिसमें लेन-देन, उधार आदि का ब्योरा लिखा जाता है; (क्रि. अ.) 'बहणा' क्रिया का भू. का. स्त्रीलिं., एकव. रूप।

बही[2] (क्रि.) हुई। उदा. लकड़ी जल कोयला बही। (स्त्री.) दे. बही[1]।

बही-खात्ता (पुं.) लेन-देने का हिसाब रखने का रोजनामचा, उधारखाते की पंजिका; **~खोल्हणा** 1. पुराना चिट्ठा खोलना, 2. पुरानी बातों का बखान करना।

बहुँता (नि.) बहुत (तौलते समय तीन के अंक के स्थान पर प्रयुक्त) तीन की संख्या अशुभ होती है।)

बहु (स्त्री.) 1. पत्नी, 2. बालक की जनेंद्री; **~-भोटळी** 1. नव-वधू, 2. पुत्र-वधू। **वधू** (हि.)

बहुअड (स्त्री.) 'बहु' शब्द का प्रेम द्योतक रूप।

बहुअल (स्त्री.) दे. बहुअड़।

बहुत (वि.) दे. भोत।

बहुतेरा (वि.) दे. भतेरा।

बहुधन-यौधेय (पुं.) यौधेयों की मुद्रा पर अंकित मंत्र।

बहुधान्यक (पुं.) हरियाणा क्षेत्र के लिए एक प्रचलित नाम।

बहु-परोस्सा (पुं.) दे. लाड-कोथळी।

बहुमूत्र (पुं.) दे. चिणघवा।

बहुमूल्य (वि.) मूल्यवान।

बहुरंगा (वि.) 1. रंग-बिरंगा, 2. बहु-रूपिया।

बहुवचन (पुं.) वह शब्द जिससे एक से अधिक वस्तुओं के होने का बोध हो।

बहूडिया (स्त्री.) दे. भोड़िया।

बहोड़िया (स्त्री.) 1. वधू, 2. पुत्र-वधू, 3. बड़ों द्वारा पुत्र आदि की वधू को संबोधित किया जाने वाला शब्द, 4. बच्चे की जनेंद्री, (दे. भोड़िया)।

बहौत (वि.) बहुत, (दे. भोत)।

बाँ (स्त्री.) दे. भ्याँ।

बाँक[1] (स्त्री.) 1. टेढ़ापन, 2. चाँदी के सरिए से बना पैर का एक किश्तीनुमा आभूषण।

बाँक[2] (पुं.) बैलगाड़ी की टिकानी और धुरे के ऊपर लगाई जाने वाली एक टेढ़ी लकड़ी; (क्रि. स.) 'बाँकणा' क्रिया का आदे. रूप।

बाँकड़ा (पुं.) 1. ओढ़ना, 2. घाघरा।

बाँकड़ी (स्त्री.) 'फड़' के ऊपर लगाई जाने वाली एक लकड़ी विशेष, (दे. फड़)।

बाँकड़े (पुं.) दे. बाँक[1, 2]।

बाँकपन (पुं.) दे. टेढ़,

बाँक्का (पुं.) 1. बाँका, टेढ़ा, 2. छैला, 3. साहसी; **~बावळा** 1. जैसा-तैसा, 2. हीन अवस्था का, 3. मूर्ख, 4. पंगु, अपंग।

बाँक्खर (पुं.) दे. भाँक्खर।

बाँखर (पुं.) दे. भाँखर। भाँक्खर।

बाँग (पुं.) मुर्गे की बोली; (स्त्री.) दे. बाँक[1]।

बाँगड़ (पुं.) दे. बाँग्गड़।

बाँगड़ू (पुं.) दे. बाँगरू।

बाँगर (पुं.) दे. बाँग्गर।

बाँगरू (पुं.) बाँगर देश का निवासी; (स्त्री.) बाँगर देश की बोली जिसे 'जाट्टू', 'धियात्ती' (देहाती), 'देस्सी- बोल्ली', 'गामडू', 'हरियाणवी' आदि नाम भी दिया जाता है; (वि.) 1. सादा रहन-सहन वाला व्यक्ति, 2. निर्भीक, 3. स्पष्टवादी, 4. जो किसी की चापलूसी न कर सके, 5. बाँगर देश से संबंधित, 6. वर्षा पर आधारित (खेत्ती)।

बाँगरू बोल्ली (स्त्री.) बाँगर क्षेत्र की बोली।

बाँगरो (वि.) बाँगर की (महिला)।

बाँगा[1] (वि.) दे. बाँक्का।

बाँगा (पुं.) कमीज।

बाँग्गड़ (पुं.) 1. अनगढ़ मोटा लठ जो पशु को ताड़ने आदि के काम आता है, 2. (दे. बाँग्गर), 3. (दे. बाग्गड़)।

बाँग्गर (पुं.) 1. बाँगर प्रदेश, दिल्ली की पश्चिमी सीमांत से लगता हरियाणे का भू-भाग जो रोहतक, भिवानी, नरवाना, जींद आदि तक फैला है, 2. ऊर्ध्व भूमि, 3. शुष्क, समतल और उपजाऊ भूमि, 4. वह भाग जहाँ बाँगरू भाषा बोली जाती है। **बाँगर** (हि.)

बाँच (स्त्री.) निमंत्रण आदि में किसी परिवार को जान-बूझ कर न बुलाने का भाव; (क्रि. स.) 'बाँचणा' क्रिया का आदे. रूप; **~करणा** किसी का अपमान करने की दृष्टि से उसे किसी अवसर पर न बुलाना, बुलावा न देकर सामाजिक अपमान करना। **वंचना** (हि.)

बाँचणा[1] (क्रि. स.) 1. पढ़ना, चिट्ठी आदि पढ़ना, 2. कथा पढ़ना, 3. पंचांग देखना, 4. भविष्यफल देखना। **बाँचना** (हि.)

बाँचणा[2] (क्रि. स.) 1. बाँचना, जानबूझकर (निमंत्रण आदि के समय) न बुलाना, 2. गाली देना।

बाँचना (क्रि. स.) दे. बाँचणा[1]।

बाँज्जर (वि.) ऊसर, कल्लर। **बंजर** (हि.)

बाँझ (वि.) 1. वह स्त्री (या मादा) जो संतान उत्पन्न न कर सके, 2. वह धरती जहाँ घास तक न उगे।

बाँट[1] (स्त्री.) 1. बाँटने की क्रिया, 2. हिस्सा; (क्रि. स.) 'बाँटणा' क्रिया का आदे. रूप।

बाँट[2] (स्त्री.) चने, बिनौले, गवार आदि का उबाला हुआ अन्न जो (दुधारू) पशु को खिलाया जाता है; **~बिंदोळा** बाँट, बिनौला आदि।

बाँटणा (क्रि. स.) 1. मुफ्त में देना, 2. प्रसाद आदि को बाँटना, 3. हिस्से करना, 4. फूट डाल कर अलग करना, 5. रस्सी आदि बुनना। **बाँटना** (हि.)

बाँटना (क्रि. स.) दे. बाँटणा।

बाँटा (पुं.) दे बाँट्टा।

बाँट्टा (पुं.) 1. बाँटने की क्रिया, 2. हिस्सा; **~करणा** 1. घर, भूमि, संपत्ति आदि का भाइयों में बँटवारा होना, 2. हिस्सों में बाँटना; **~-बाँट्टी** बाँटने की क्रिया, वितरित करने की प्रक्रिया; **~(-टी) ओड़** 1. वह वस्तु जिसका बँटवारा हो गया हो, 2. बाँटी हुई (रस्सी)। **बाँटा** (हि.)

बाँड (स्त्री.) दे. बाँट[2]।

बाँडणा (क्रि. अ.) दे. बैंडणा।

बाँड्डा (वि.) टेढ़े-मेढ़े पैर वाला (व्यक्ति), (दे. फाँड्डा)।

बाँड्डू (वि.) 1. बिना सोचे-समझे कुछ-का-कुछ कहने वाला, 2. जो जल्दी बहक जाए।

बाँण[1] (स्त्री.) 1. आदत, 2. बुरी लत **~-कुबाण** बुरी आदत; **~~होणा** बुरी लत लगना; **~पड़णा** 1. अभ्यस्त होना, 2. बुरी आदत पड़ना; **~पाणा** स्वभाव का पता लगना; **~-सुबाण** अच्छी-बुरी आदत; **~होणा** 1. लत पड़ना, 2. स्वभाव पड़ना। **बान** (हि.)

बाँण[2] (स्त्री.) रस्सी, चारपाई की रस्सी; **~बाँटणा** 1. हाथ या चरखी आदि की सहायता से रस्सी बाँटना, 2. न समाप्त होने वाली कथा कहते जाना।

बान (हि.)

बाँण[3] (पुं.) तीर, नुकीला तीर।

बाण (हि.)

बाँणियाँ (पुं.) दे. बणियाँ।

बाँथ (स्त्री.) आलिंगन।

बाँदी (स्त्री.) दे. बाँद्दी।

बाँद्दर (पुं.) 1. बंदर, 2. एक खरपतवार; (वि.) 1. नकलची, 2. सदा विध्वंसक या विपरीत काम करने वाला; (स्त्री.) दे. बंदरवाळ। **बंदर** (हि.)

बाँद्दी (स्त्री.) 1. दासी, 2. रानी की सेविका; **~बणाणा** 1. तुच्छ सेविका के रूप में रखना, 2. दासी बनाना।

बाँदी (हि.)

बाँध (पुं.) 1. रुकावट, 2. पानी के बहाव को अनुकूल दिशा में रखने के लिए की गई रुकावट, 3. सीमा, हदबंदी; (स्त्री.) किसी चीज़ को कसकर जकड़ने की क्रिया; (क्रि. स.) 'बाँधणा' क्रिया का आदे. रूप; **~बाँधणा** 1. आपत्ति से पूर्व समुचित व्यवस्था करना, 2. लंबी-चौड़ी भूमिका तैयार करना, 3. भारी बाधा उत्पन्न करना, 4. नदी पर बंध लगाना; **~लाणा** 1. बंधा बाँधना, 2. प्रतिबंध लगाना, 3. कर आदि मढ़ना।

बाँधणा (क्रि. स.) 1. रस्सी से बाँधना, 2. पशु को खूंटे से बाँधना, 3. वचनबद्ध करना, 4. तर्क न चलने देना, 5. पूरी

तरह वश में रखना, 6. सभी मार्ग अवरूद्ध करना, 7. विशेष भोज के अवसर पर सौगात के रूप में मिठाई की पोटली बाँध कर देना, 8. बिखरी हुई वस्तु को एकत्रित करना, 9. खर्चा आदि नियत करना, 10. मन में बैठना, 11. जादू-टोने के प्रभाव में लाना। **बाँधना** (हि.)

बाँधना (क्रि. स.) दे. बाँधणा।

बाँबी (स्त्री.) दे. बंबी[2]।

बाँमटा (पुं.) वायु रोग के कारण हाथ, पैर आदि में कुछ समय के लिए ऐंठन या अकड़न आने का रोग; **~आणा** बाँवटे का दौरा पड़ना। **बाँवटा** (हि.)

बाँम्मा[1] (पुं.) 1. उल्टा पार्श्व, 2. स्त्री का भाग या पक्ष, 3. कष्ट-काल; (वि.) 1. बायाँ, बाईं ओर का, 2. विलोम, विपरीत; **~बोलणा (तीत्तर)** शकुन होना। **बायाँ** (हि.)

बाँम्मा[2] (स्त्री.) पत्नी। **वामा** (हि.)

बाँस[1] (स्त्री.) 1. दुर्गंध, (दे. सड़ाँध), 2. अपकीर्ति, 3. गंध; **~आणा** 1. घृणा होना, 2. गंध उठना; **~ऊठणा/मारणा/होणा** दुर्गंध होना; **~मारणा** दुर्गंध समाप्त करना। **बास** (हि.)

बाँस[2] (पुं.) 1. बाँस का वृक्ष, 2. सवा तीन गज लंबा एक नाप, 3. साढ़े बारह गज़ का नाप; **~आणा** आपत्ति पड़ना; **~पै चढाणा** झूठी बड़ाई करना; **~मारणा** अपमानित करना; **~लाणा** 1. प्रेरित करना, 2. चिता जलते समय कपाल-क्रिया करना।

बाँसल/बाँसला (पुं.) अग्रवाल वैश्यों का एक गोत्र, इनका संबंध वात्स्य मुनि, सामवेद, कौथमी शाखा और गोभिल सूत्र से है तथा प्रवर मांकील है।

बाँसली (स्त्री.) दे. बाँसळी।

बाँसळी (स्त्री.) बाँसुरी नामक वाद्य। **बाँसुरी** (हि.)

बाँसुरी (स्त्री.) दे. बाँसळी।

बाँस्सा (पुं.) 1. लंबोतरे पत्तों का चार-पाँच हाथ ऊँचा पौधा विशेष जिसकी बाड़ भी लगाई जाती है, 2. अंग्रेज़ी आक।

बाँस्सी (स्त्री.) दे. बाँसळी।

बाँह (स्त्री.) 1. भुजा, 2. कमीज़ की बाजू, 3. शक्ति; (वि.) 1. सहारा, 2. सहायक; **~काटणा** 1. आश्रय छीनना, 2. पंगु करना; **~पाकड़णा** 1. सहारा देना या लेना, 2. आश्रय लेना या देना, 3. पत्नी-रूप में स्वीकार करना। **बाहु** (हि.)

बा (पुं.) 1. वात रोग, 2. पाद, अपान वायु; (क्रि. स) 'बाणा' क्रिया का प्रे. रूप; **~आणा** वात रोग के कारण शरीर के अंग में ऐंठन उत्पन्न होना; **~ओसरणा/लीकड़णा** पाद आना। **वाय/वात** (हि.)

बाईं (वि.) दे. बाँम्मा[1]।

बाई[1] (स्त्री.) 1. वात (बादी) रोग जिससे शरीर फूल जाता है, 2. वातरोग; (क्रि. स.) 'बाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

बाई[2] (स्त्री.) 1. लड़की, छोटी लड़की (सीमित प्रयोग), 2. (दे. रंड्डी)।

बाई[3] (वि.) बाईस की संख्या। **बाईस** (हि.)

बाईस (वि.) दे. बाई[3]।

बाईस्कोप (पुं.) सिनेमा, (दे. सलीम्माँ)।

बाउकाय (पुं.) वायुकाया या शरीर।

बाक (पुं.) 1. वाक्य, 2. वचन।

बाकड़ी (स्त्री.) दे. बाँक।

बाकळा (पुं.) 1. एक मोटी दाल, 2. मोटा आटा, 3. (दे. बाकळी)।

बाकली (स्त्री.) दे. बाकळी।

बाकळी (स्त्री.) गेहूँ, चने आदि को उबाल कर बनाया गया प्रसाद (जो गीत गाने के बाद बाँटा जाता है); (वि.) अधपकी (खिचड़ी, दलिया); **~चाब कै गीत गाणा** पारिश्रमिक के अनुसार परिश्रम करना; **~चाबणा** एहसानमंद होना; **~बाँटणा** 1. बाकली का प्रसाद बाँटना, 2. प्रसन्नता व्यक्त करना; **~राँधणा** 1. गेहूँ, चना, बाजरा आदि को उबालना, 2. भोजन (दलिया आदि) को अधपका छोड़ना। **बाकली** (हि.)

बाकी (वि.) दे. बाक्की; (पुं.) दे. बाक्की।

बाक्कस (पुं.) वश, क़ाबू; **~चालणा** वश चलना।

बाक्की (वि.) शेष, अंतर; (पुं.) 1. शेष वस्तु, 2. शेष राशि। **बाकी** (हि.)

बाखट (पुं.) 1. खरगोश का बच्चा, 2. छौना।

बाखड़ (पुं.) 1. हिरन का छौना, 2. छौना।

बाखड़ा दूध (पुं.) पशु के दूध से सूखने से पूर्व का दूध (जो पौष्टिक माना जाता है और गाढ़ा होता है), पौष्टिक दूध।

बाखड़ी (वि.) वह पशु जो दूध से पूरी तरह सूखने से पूर्व अल्प-मात्रा में दूध देता हो; **~गा** जिस गाय का दूध सूखने वाला हो; **~होणा** पूरी तरह दूध से सूखने से पूर्व गाय-भैंस द्वारा कम दूध देना शुरू करना।

बाग[1] (स्त्री.) घोड़े की लगाम; **~पाकड़णा** शासन सँभालना; **~पकड़ाई** घुड़चढ़ी के समय संपन्न एक रस्म जिसमें दूल्हे का जीजा घोड़े की लगाम का स्पर्श करता है और उसे समुचित द्रव्य दिया जाता है।

बाग[2] (पुं.) बगीचा, वाटिका; **~लगाणा** पुण्य का कार्य करना। **बाग़** (हि.)

बागड़ (पुं.) दे. बाग्गड़।

बागड़ी (वि.) 1. बागड़ प्रदेश से संबंधित, मरु प्रदेश से संबंधित, 2. बागड़ देश का निवासी (जो सिर पर भारी पगड़ी, घुटने तक की धोती और नोकदार भारी जूती पहनता है), 3. राजस्थानी; (स्त्री.) बागड़ प्रदेश की बोली, बीकानेर की उप-बोली।

बागड़ू (वि.) दे. बागड़ी।

बागडोर (स्त्री.) 1. कार्य के संचालन का भार या जिम्मेदारी, 2. लगाम; **~संभाळणा** जिम्मेदारी सँभालना।

बाग़बान (पुं.) माली।

बाग़बानी (स्त्री.) बाग़वानी, माली का काम।

बागर[1] (पुं.) 1. रेतीले भू-भाग की एक घास, 2. (दे. बाग्गड़)।

बागर[2] (पुं.) 220 पूलियों का छोर।

बागळी (स्त्री.) झोली।

बागले (पुं.) नाई जाति का एक गोत।

बागी (पुं.) दे. बाग्गी।

बाग़ीचा (पुं.) दे. बगीच्ची।

बाग्गड़ (पुं.) 1. रेतीला प्रदेश, थली का प्रदेश, 2. राजस्थान का रेतीला खंड (इस शब्द का बाँगर से भ्रम न किया जाए), 3. हरियाणे के पश्चिम का प्रदेश, 4. हिसार और बीकानेर के टीबों का भू-भाग, 5. 'बागर' नामक घास का प्रदेश, 6. अधिक भेड़- बकरियों का देश। **बागड़** (हि.)

बाग्गी (पुं.) बग़ावत करने वाला। **बाग़ी** (हि.)

बाग्गू (पुं.) मोटा और दुमदार बेर; **~बेर** दे. बाग्गू।

बाग्घल (स्त्री.) चमगादड़ जैसा पक्षी जो वृक्ष की डाल पर उल्टा लटका रहता है और मुँह से ही मल-विसर्जन करता है।

बाग्घाळी (स्त्री.) वह स्थान जहाँ व्याघ्र का निवास हो।

बाघ (पुं.) शेर जाति का एक जंगली पशु। **व्याघ्र** (हि.)

बाघोत (पुं.) जिला महेंद्रगढ़ के निकट एक गाँव (जहाँ जनश्रुति के अनुसार महर्षि पिप्पलाद का आश्रम था, यहाँ हर वर्ष शिव का मेला लगता है)।

बाच्छल (स्त्री.) गूगा पीर की माता, (दे. गूग्गा)।

बाच्छा (पुं.) बछड़ा।

बाच्छी (स्त्री.) बछिया।

बाछड़ा (पुं.) बछड़ा, छोटी आयु का बैल; **~-सा** अधिक उछल-कूद करने वाला; **~कुदाणा** 1. गोबर की बनी गोवर्धन की मूर्ति को बछड़े द्वारा लँघवाना, 2. गाय का गाभिन कराना।

बाछड़ी (स्त्री.) बछिया।

बाछड़ू (पुं.) 1. गाय का बच्चा, 2. गाय के गर्भ का बच्चा; **~गेरणा/फैंकणा** गाय का गर्भपात होना।

बाज (पुं.) एक शिकारी पक्षी जो पक्षिराज माना जाता है; (वि.) दे. बाज्या; (स्त्री.) आवाज़।

बाजणा (वि.) 1. बाजने या बजने वाला, अधिक बजने वाला (घुँघरू आदि), 2. अधिक बोलने वाला (व्यक्ति), 3. ताव में आकर अनाप-शनाप कहने वाला; (क्रि. अ.) 1. लाठी आदि से कठोर स्थान पर आघात करने के कारण हाथों का झनझनाना, 2. बजना, ध्वनित होना; **ट्योंट~** लाठी से लड़ाई होना। **बजना** (हि.)

बाजना (क्रि. अ.) दे. बाजणा।

बाजरा (पुं.) ख़रीफ़ की फ़सल का एक मोटा अन्न; **~ऊठणा** खिचड़ी बनाने से पूर्व भिगोए हुए बाजरे का फूल कर तैयार होना ताकि उससे राली (बूर) उतर सके; **~कूटणा** खिचड़ी के लिए भिगोया हुआ बाजरा कूटना; **~दाबणा** कुटे हुए बाजरे को कुछ देर दबाना ताकि छाज से पछोड़ते समय उसकी राली या बूर भली प्रकार उतर सके।

बाजा (पुं.) दे. बाज्जा; (वि.) दे. बाज्या।

बाजार (पुं.) दे. बजार।

बाजारी (वि.) दे. बजारी।

बाजारू (वि.) दे. बजारी।

बाजी (स्त्री.) दे. बाज्जी[1]; (अव्य.) दे. बाज्जी[2]।

बाजीगर (पुं.) दे. बाज्जीगर।

बाजू (पुं.) दे. बाज्जू।

बाजूचौक (पुं.) दे. बाज्जूबंध।

बाजूबंद (पुं.) दे. बाज्जूबंध।

बाजे भगत (पुं) (1898-1936)– सिसाणा (रोहतक) के जनकवि।

बाज्जा (पुं.) 1. हारमोनियम, 2. विवाह शादी के अवसर पर मुँह से फूँक कर बजाया जाने वाला पीतल का बाजा, 3. वाद्य (तंतु, घन, सुषिर, वितत आदि इसके प्रकार हैं); **अंगरेज्जी~** मुँह से फूँक कर बजाया जाने वाला पीतल या धातु का घेरावदार आकृति का बाजा जिसका अंतिम छोर लाउड- स्पीकर के समान खुला होता है; **~बाजणा** 1.

मन प्रसन्न होना, 2. प्रसन्नता का अवसर आना। **बाजा** (हि.)

बाज्जी[1] (स्त्री.) 1. शर्त, 2. पारी, बारी; (क्रि. अ.) 'बाजणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं., एकव. रूप।

बाजी (हि.)

बाज्जी[2] (अव्य.) कभी; **~बै** कभी-कभी, बाजी बार; (वि.) कोई।

बाज्जीगर (पुं.) 1. गली-मोहल्ले में बंदरिया नचाने वाला, 2. जादू का खेल दिखाने वाला, 3. नट, एक जाति, 4. होली-गायन के मुख्य गायक के साथ गाने वाले मित्र। **बाज़ीगर** (हि.)

बाज्जू (पुं.) 1. भुजा, 2. भाग, जैसे–चूल्हे का 'बाजू', 3. पार्श्व, 4. निकटवर्ती स्थान। **बाजू** (हि.)

बाज्जूबंध (पुं.) हाथ या बाजू का एक आभूषण जिस पर अठन्नियाँ, रुपये, चाँदी के चौके, तारों की पट्टी आदि जुड़ी होती है, बाजूचौक।

बाज्जूफूल (पुं.) दे. बाज्जूबंध।

बाज्जू-बाँक (पुं.) दे. बाज्जूबंध।

बाज्जे भगत (पुं.) पं. लखमीचंद का समकालीन एक प्रसिद्ध साँगी।

बाज्या (वि.) कोई-कोई–बाज्या-बाज्या आदमी देस पै हँसता-हँसता ज्यान दे दे सै; (क्रि. अ.) 'बाजणा' क्रिया का भू. का., पुं., रूप। **बाज़ा** (हि.)

बाट[1] (स्त्री.) 1. मार्ग, 2. राह, 3. यात्रा, 4. प्रतीक्षा, 5. विलंब; **~चालणा** यात्रा करना; **~जोहणा** प्रतीक्षा करना; **~दिखाणा** प्रतीक्षा कराना; **~देखणा** प्रतीक्षा करना।

बाट[2] (पुं.) 1. पत्थर का लोढा या तोल, 2. निश्चित तोल का बट्टा, (दे. बटैहड़ा); **~हाड़णा** पासंग ठीक करना, 3. अन्न आदि का पशु आहार।

बाटणा (क्रि. स.) 1. तोलना, 2. (दे. बाँटणा)।

बाटिका (स्त्री.) दे. बगीच्ची।

वाटिका (हि.)

बाटी (स्त्री.) दे. बाट्टी।

बाट्टी (स्त्री.) 1. अंगारे पर सीधी सेंकी हुई छोटी और गोलाकार मोटी टिकिया या रोटी, (दे. टीकड़ा), 2. चौड़े मुँह का कटोरा। **बाटी** (हि.)

बाठणा (क्रि. अ.) दे. बैठणा।

बाड़ (स्त्री.) पशु आदि की रोक के लिए लगाई गई काँटों की आड़, आड़; (क्रि. स.) 'बाड़णा' क्रिया का आदे. रूप; **जौ की~** जौ की बाड़ (जनश्रुति के अनुसार यह आपत्ति से बचाती है); **~देणा** 1. काँटे डाल कर आग लगाना, 2. फँसाना, 3. घुसाना; **~लाणा** 1. दूरी उत्पन्न करना, 2. शत्रुता बढ़ाना; **~होणा** मार्ग में बाधा होना।

बाड़णा[1] (क्रि. स.) 1. फँसाना (तुल. घुसेड़णा), 2. पशु आदि को खेत में घुसाना, 3. मैथुन करना, 4. 'लिकाड़णा' का विलोम। **बाड़ना** (हि.)

बाड़णा[2] (क्रि.) 1. दे. बाढणा, 2. दे. बाड़णा।

बाड़वा (पुं.) 1. कैर (करील) की झाड़ी पर लगने वाला लाल रंग का फूल, कैर का बौर, 2. एक प्रकार की घास; **~-टींट बधणा** अनावृष्टि के कारण अकाल के लक्षण होना।

बाड़ा (पुं.) 1. पशुओं को रोकने के लिए बनाया गया स्थान जो कच्ची दीवार या बाड़ आदि से घेर दिया जाता है,

2. साधुओं का स्थान; (क्रि. स.) 'बाड़णा' क्रिया का भू. का., पुं., एकव. रूप; **~(-ड़े) मैं कै टूट कै पड़णा** भूख के कारण भोजन पर झपट पड़ना।

बाड़ी (स्त्री.) 1. कपास का खेत, 2. फुलवाड़ी, बगीची, 3. ककड़ी-खरबूजे की खेती, 4. संसार, 5. संतान; (क्रि. स.) 'बाड़णा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं., एकव. रूप; (पुं.) यार, मित्र (मेवा.); **~का बथुआ** महत्वहीन व्यक्ति।

बाड़ुआ (पुं.) दे. बाड़वा।

बाड्ढा (पुं.) 1. फ़सल आदि की कटाई शुरू करने की क्रिया, 2. किसी वस्तु के खाना शुरू करने का भाव, 3. कटाव आदि का चिह्न; (क्रि. स.) 'बाढणा' क्रिया का भू. का., पुं. रूप, काटा; **~करणा** बिटौड़े या खेत में पहली दराँती लगाना; **~धरणा** 1. एक किनारे से कटाई शुरू करना, 2. किसी चीज़ को खाना शुरू करना, जैसे–गुड़ पै बाड्ढा धरणा, घी पै बाड्ढा धरणा; **~पड़णा** रगड़ या दाब के कारण चिह्न पड़ना; **~लाणा** 1. कटाई शुरू करना, 2. कार्य आरंभ करना।

बाढ[1] (स्त्री.) धार, गंडासे या दराँती की तेज़ धार, पैनापन; (क्रि. स.) 'बाढणा' क्रिया का प्रे. रूप; **~आणा** गंडासे की धार पैनी होना; **~कढवाणा** खेती के औज़ारों की धार पैनी करवाना; **~लाणा** शस्त्र पैना करना, (दे. चाटणा)।

बाढ[2] (स्त्री.) 1. अतिवृष्टि के कारण आने वाला तेज़ बहाव, जलप्लावन, 2. आधिक्य; **~आणा** 1. किसी वस्तु का आधिक्य होना, 2. नदी का पानी चढ़ना।

बाढ[3] (स्त्री.) 1. अंकुरित खेती (संभवतः ज्वार)–अरै के तेरी बाढ मैं डाँगगर बड़गे, (दे. चीब्भी), 2. वह स्थान जहाँ से फ़सल काट ली गई हो; **~चरणा** 1. खेत चरना, 2. हानि पहुँचाना।

बाढणा (क्रि. स.) काटना, झाड़ आदि को ऊपर से काटना।

बाढा (पुं.) दे. बाड्ढा।

बाढ़ी (पुं.) दे. खात्ती। बढ़ई।

बाण (पुं.) दे. बाँण[1,2,3]।

बाणक (पुं.) हालात, परिस्थिति–देक्खो आग्गै के बाणक बणैगा।

बाणज (पुं.) दे. बणज।

बाणणी (स्त्री.) बनिये की पत्नी, बनियाइन।

बाणा[1] (पुं.) 1. वेश, पहनावा, 2. साधुओं जैसा पहनावा, 3. रीति; **~पहरणा** साधु बनना; **~बदलणा** 1. वेश बदलना, 2. साधु बनना; **~भरणा** 1. वेश बदलना, 2. अनुचित पहनावा पहनना। **बाना** (हि.)

बाणा[2] (क्रि. स.) बाना, फैलाना, जैसे–मुँह बाणा; **मुंह~** 1. लोभ करना, 2. सुस्ती के कारण लेटना, 3. मुँह चढ़ाना।

बाणा[3] (पुं.) 1. माता (देवी) को दी जाने वाली भेंट, 2. व्रतादि के समय सास आदि को अर्पित किया जाने वाला पदार्थ (तुल. कंडवारा) **~काढणा** 1. माता (देवी) के लिए भेंट निकालना, 2. सास, ननद आदि को देने के लिए सामग्री निकालना। **वायन** (हि.)

बाणासुर (पुं.) राजा बलि का सबसे बड़ा पुत्र जो गुणी और सहस्रबाहु था।

बाणिया (पुं.) 1. व्यापारी, 2. व्यापार करने वाली एक जाति, गुप्त या गुप्ता अल्ल के लोग; **~बाट्टू/बुकाल** दे.

बुकाल। **बनिया** (हि.)

बाणी (स्त्री.) 1. वचन, 2. जिह्वा, 3. स्तुति, 4. साधु-संतों के वचन, 5. पद्य-बद्ध रचना (धार्मिक), 6. सरस्वती; **~काढणा** कु-वचन कहना; **~बोलणा** 1. भविष्यवाणी करना, 2. कटु वचन कहना (व्यंग्य में)। **वाणी** (हि.)

बात[1] (स्त्री.) 1. बातचीत, 2. कहानी, 3. कथन, 4. संदेश, 5. बहाना, 6. वायदा, 7. इज्जत, 8. सीख, उपदेश, 9. रहस्य, 10. गूढ़ अर्थ, 11. विशेषता, 12. प्रश्न, 13. इच्छा, 14. काम; **~आणा** 1. पिछली दीन-दशा को भूलना, 2. दूसरों पर नाम रखना; **~उडाणा** झूठी बात प्रचारित करना; **~ऊठणा** विवाद खड़ा होना; **~करणा** 1. अधिक बोलना, 2. सामना करना, 3. स्त्री-प्रसंग करना, 4. किसी प्रश्न पर गंभीरता से सोच-विचार करना; **~कहणा** 1. कहानी सुनाना, 2. उलाहना देना, 3. कटूक्ति कहना, 4. संदेश भेजना; **~कहत्याँ** अविलंब, तुरंत, बात कहते-कहते; **~का जवाब देणा** 1. सामने बोलना, 2. कहानी का फल बताना; **~का बतंगड़** 1. छोटी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना, 2. व्यर्थ का विवाद; **~की बात** चालू विषय पर बीच-बीच में अपनी बात कहना; **~~मैं** तुरंत; **~खोणा** 1. मान-मर्यादा खोना, 2. विश्वास समाप्त होना, 3. मौक़ा चूकना; **~छाँटणा** 1. बातें बनाना, 2. नुक़्ता-चीनी करना; **~टालणा** 1. जान-बूझ कर एक प्रसंग की बात को टाल कर दूसरी बात करना, 2. कहना न मानना, 3. उपेक्षा करना; **~ठहरणा** (किसी कारोबार आदि की) शर्त मंजूर होना; **~तारणा** वचन पूरा करना; **~नाँ बूझणा** 1. आवभगत न करना, 2. तिरस्कार करना; **~पाणा** 1. पुरानी अड़ पकड़ना, 2. बहाना मिलना, 3. किसी की कमी का पता लगना, 4. सीख लगना; **~(-त्ते) भरणा** कहानी का हुँकारा भरना; **~मैं आणा** झाँसे में फँसना, बहकावे में आना; **~मैं जाणा** पुरानी ज़िद पर अड़ना; **~रहणा** 1. सम्मान बचना, 2. वचन पूरा होना; **~राखणा** 1. वचन पालन करना, 2. सम्मान बचाना; **~लाणा** 1. बातें बनाना, बढ़ा-चढ़ा कर बात करना, 2. इधर की बात उधर कहना; **~होणा** 1. आपसी निर्णय पर पहुँचना, 2. कहा-सुनी होना, 3. कोई रहस्य होना, 4. स्त्री-प्रसंग होना।

बात[2] (स्त्री.) 1. दीए की बाती, 2. बाती।

बाती (स्त्री.) 1. दे. बात[2], 2. दे. बत्ती[2]।

बात्ता (पुं.) 1. तिनकों या सरकंडों को रस्सी से बाँध कर बनाई गई छड़, 2. मोटी बत्ती, 3. कहानी के बीच-बीच में भरा जाने वाला हुँकारा; **~दिखाणा** 1. भूसे की छड़ में आग लगाकर खेती में हानि पहुँचाने वाले पशुओं को डराना, डराना, 2. चिढ़ाना।

बाद[1] (पुं.) 1. झगड़ा, 2. बहस, तर्क-वितर्क। **विवाद** (हि.)

बाद[2] (अव्य.) पीछे, अनंतर।

बादणा (क्रि. अ.) 1. वाद-विवाद करना, 2. उलटी-सीधी बात कहना, 3. शर्त लगाना। **बदना** (हि.)

बादल (पुं.) दे. बादद्ळ।

बादळा (पुं.) सलमे का कार्य। **बादला** (हि.)

बादळी[1] (स्त्री.) छोटा बादल। **बदली** (हि.)

बादळी[2] (स्त्री.) गुळिया गोत के जाटों का प्रमुख नगर खेड़ा जो दस बार उजड़ा और आबाद हुआ है, यहाँ से प्राचीन संस्कृतियों के अवशेष मिले हैं (यह गाँव दिल्ली सीमा पर ढाँसा (दृढ़ासन) सीमा से लगा है, (उक्ति– नौ दिल्ली दस बादळी किला वजीराबाद)।

बादशाह (पुं.) दे. बादस्या।

बादशाही (स्त्री.) 1. हुकूमत, 2. मनमाना व्यवहार, 3. राज्याधिकार; (वि.) बादशाह संबंधी।

बादस्या (पुं.) 1. बादशाह, मुसलमान राजा, 2. ताश का एक पत्ता, 3. शतरंज का एक मोहरा।

बादाम (पु.) बदाम।

बादामी (वि.) दे. बदाम्मी।

बादी (स्त्री.) दे. बाद्दी[1]।

बाद्दळ (पुं.) मेघ; (वि.) मोटा (दल); **~बरसणा** 1. कृपा-दृष्टि होना, 2. वर्षा होना; **~होणा** दे. उणमण। **बादल** (हि.)

बाद्दी[1] (स्त्री.) वायु रोग (जिसमें शरीर फूल जाता है); (क्रि. अ.) 'बादणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~फूलणा** वायु रोग के कारण मोटापा आना; **~होणा** 1. वायु रोग के कारण खट्टी अढ़कार आना, 2. बादी फूलना। **बादी** (हि.)

बाद्दी[2] (पुं.) 1. नट जाति जो बाँस पर चढ़कर अपने रोमांचकारी कौतुक दिखलाती है, 2. बादीगर, बाज़ीगर, 3. साँगी (सीमित अर्थ में); **~कूदणा** 1. बादीगर द्वारा कौतुक दिखलाना, 2. कलाबाज़ी करना। **बादी** (हि.)

बाद्धा (स्त्री.) 1. रुकावट, 2. झंझट।

बाद्धी (स्त्री.) 1. चमड़े की पट्टी या पेटी, चमड़े का डोरा, 2. साँटे की फाँट; **~लाणा** 1. चमड़े की डोरी से बाँधना, 2. जूते की मरम्मत करना। **बाधी** (हि.)

बाद्धू (वि.) 1. अधिक, आवश्यकता से अधिक, अतिरिक्त, 2. तुलना में अधिक; **~म्हीन्ना** अधिक मास या मल मास।

बाध[1] (वि.) 1. अधिक, अधिक मात्रा में, 2. बढ़ा हुआ–बेट्टा बाप तैं भी बाध लिकड़्या, (दे. च्यार चंदे); **~लीकड़णा** 1. नाप-तोल में अधिक होना, 2. आचार-व्यवहार में किसी से आगे होना। **वर्द्धित** (हि.)

बाध[2] (स्त्री.) 1. उपाधि, 2. शरारत, (दे. अळबाध)।

बाधा (स्त्री.) दे. बाद्धा।

बान (पुं.) 1. उत्सव (विवाह) के समय बाँटी जाने वाली मिठाई, (दे. बणवाड़ा), 2. (दे. बाँण[1,2,3])। **वायन**

बाना (पुं.) दे. बाणा[1]।

बानी (स्त्री.) दे. बाणी।

बान्नी (स्त्री.) 1. शोभा, 2. तरह-तरह की पोशाक।

बाप (पुं.) 1. पिता, 2. गुरु, उस्ताद (व्यंग्य में)–तूँ उसका भी बाप लिकड़्या, (दे. बाब्बू); **~बणाणा** आवश्यकता के समय (तुच्छ व्यक्ति से) अनुनय-विनय करना या महत्व देना; **~-दाद्दा** पूर्वज; **~मानणा** 1. अपने से हर प्रकार बढ़-चढ़ कर मानना, 2. समर्पण करना।

बापू (पुं.) 1. दे. बाप्पू, 2. दे. बाब्बू।

बाप्पू (पुं.) 1. पिता (इस शब्द का प्रयोग अधिकांशत; बनिया जाति के लोग करते हैं), 2. (दे. बाब्बू), 3. महात्मा गांधी। **बापू** (हि.)

बाबत (स्त्री.) दे. बाबद।

बाबद (स्त्री.) 1. बारे में–किस की बाबद बात चाल रही सै?, 2. द्वारा, माध्यम से। **बाबत** (हि.)

बाबरी (वि.) छोटे घुंघराले बाल।

बाबल/बाब्बल (पुं.) बाप, पिता के लिए प्रयुक्त संबोधन (गीतों में)। **बाबुल** (हि.)

बाबा (पुं.) दे. बाब्बा।

बाबू (पुं.) 1. लिपिक, 2. (दे. बाब्बू)।

बाब्बा (पुं.) 1. दादा, 2. साधु, 3. सम्मानित वृद्ध, 4. भिखारी। **बाबा** (हि.)

बाब्बा गनतीदास (पुं.) एक संत जिनके दोहे गुरु ग्रंथ साहब में मिलते हैं (इनकी याद में छुडाणी (झज्झर) में मेला लगता है)।

बाब्बा जी (पुं.) 1. साधु, (दे. मोड्डा), 2. दादा जी। **बाबा जी** (हि.)

बाब्बू (पुं.) बापू, पिता। **बाबू** (हि.)

बाम (?) उदा.–तेरै के बाम मिलन की ऊठी। (लचं)

बामदेव (पुं.) वामदेव।

बामन-बरही (पुं.) खाती या बढ़ई का एक गोत या उपजाति।

बायणा (पुं.) व्रत के दिन किसी पूज्य को दिया जाने वाला मिष्टान आदि, (दे. बाणा[3])।

बायाँ (वि.) दाहिने या दायाँ का विलोम।

बारंबार (क्रि. वि.) अनेकशः, बारंबार, पुनः पुनः।

बार[1] (पुं.) दिन, सोम, मंगल आदि सप्ताह के दिन; (स्त्री.) दफ़ा, जैसे–कई वार; **~कढवाणा** शुभ मुहूर्त निकलवाना। **वार** (हि.)

बार[2] (पुं) 1. दरवाज़ा, 2. छोटा छिद्र–बिटोड़े मैं बार कर ल्यो; **~करणा** चारे, बिटौड़े आदि में प्रवेश-द्वार बनाना; **~रुकाई** दुल्हन के श्वसुर-घर आने पर बहनों द्वारा द्वार पर भाई-भाभी को रोकने की रस्म जिसके अनुसार वे अपने नेग लेकर उन्हें प्रवेश करने देती हैं।

बार[3] (स्त्री.) देरी, विलंब; **~-सुध** देरी से–बार-सुध हुयाँ आया। **वार** (हि.)

बारजा (पुं.) 1. मकान के बाहर का बरामदा, 2. कोठा, अटारी; **~(-जे) चढणा** 1. सम्मान बढ़ना, 2. दिमाग़ चढ़ना।

बारणा (पुं.) 1. दरवाज़ा, 2. घर के बाहर का दरवाज़ा, 3. घर के बाहर का स्थान; **~करणा/काढणा** दीवार, बिटौड़े आदि में दरवाज़ा या छेद निकालना।

बारणै (क्रि. वि.) 1. बाहर, घर से बाहर, 2. घर से बहुत दूर, परदेश में–छोहरे का बाब्बू बारणै कमावण जा रहया सै।

बारतालाप (पुं.) 1. स्वाँग का वह भाग जहाँ साँगी गद्य के रूप में श्रोताओं से कुछ कहता है और रंगा के रूप में कहानी के आगे-पीछे के संबंध को जोड़ता है, 2. (दे. रंगा), 3. (दे. रंगाचार), 4. बातचीत, आमने-सामने की बातचीत। **वार्तालाप** (हि.)

बारतिक (पुं.) 1. सूत्रकार के ग्रंथ का प्रतिपादक ग्रंथ, 2. साँग के पात्र-परिचय के लिए रंगा द्वारा प्रयुक्त तुकांत शैली। **वार्तिक** (हि.)

बारस (स्त्री.) 1. द्वादशी तिथि, 2. (दे. बरखा)।

बारहखड़ी (स्त्री.) द्वादशाक्षरी।

बारहदरी (स्त्री.) 1. खुली तथा हवादार बैठक, 2. बारह द्वार की बैठक।

बारहबानी (वि.) दे. बाराह्बान्नी।

बारहमासा (पुं.) दे. बारामाँस्सा।

बारहमासी (स्त्री.) दे. बारामास्सी।

बारहवाँ (वि.) जो स्थान या क्रम में ग्यारह के बाद हो।

बारहसिंगा (पुं.) दे. बाराह्सींग्गा।

बारह्बान्नी (वि.) बारह बानी, भलाचंगा– बैद नैं इसी दवाई की पुड़िया दी अक छोहरा एक बार मैं बारह्बान्नी का हो ग्या; **~का होणा** 1. पूर्ण स्वस्थ होना, 2. शरीर पर द्वादश आदित्य के समान प्रकाश आना।

बारा[1] (पुं.) 1. चरसे का कूआँ जोतते समय चरसिया द्वारा ऊँची आवाज में कहा जाने वाला सांकेतिक शब्द या जकड़ी ताकि 'कीलिया' (दे.) सचेत रहे, 2. चरसा, 3. बारी, पारी; **~देणा/मारणा/लेणा** कूआँ जोतते समय चरसिये द्वारा ऊँची आवाज में सार्थक या निरर्थक शब्द कहना ताकि 'कीलिया' सचेत रहे, जैसे–राम मनाइयो, बारे नैं ल्याइयो।

बारा[2] (पुं.) मिट्टी का बड़ा घड़ा जिसमें घी रखते हैं, (दे. घीलड़ी); **~ओजणा** अधिक घी खिलाना; **~ताणा** घी को गरम करके फूही, छाछ आदि निकालना (शनिवार को घी नहीं ताया जाता)।

बारा[3] (वि.) बारह की संख्या; **~मूट्ठी का बदमाश** पक्का बदमाश। **बारह** (हि.)

बारात (स्त्री.) दे. बरात।

बारादुणी उजाड़ (स्त्री.) बीहड़ और निर्जन जंगल।

बारानी (स्त्री.) दे. बरान्नी।

बारा बाट (स्त्री.) नष्ट-भ्रष्ट स्थिति; **~होणा** नष्ट-भ्रष्ट होना।

बारामाँस्सा (पुं.) बारहमासा, ऋतु-वर्णन की एक प्रणाली जिसमें विरहिणी हर ऋतु का वर्णन करके प्रेमी को याद करती हुई अपना संदेश भेजती है; (वि.) 1. सदाबहार, 2. बारह महीने से संबंधित।

बारामाँस्सी (वि.) 1. बारहमासी, वह नहर जिसमें वर्ष भर पानी चलता रहता है, 2. 'बरसात्ती' (नहर) का विलोम; (स्त्री.) बारह माशे का आभूषण विशेष; (पुं.) वह मज़दूर जिसको वर्ष भर का वेतन मिले।

बारा मूट्ठी (पुं.) चरसे के जल का प्रमाण जिसमें 20 × 12 सेर पानी आता है।

बाराह्बान्नी (वि.) दे. बारह्बान्नी।

बाराह्सींग्गा (पुं.) हिरण जाति का एक जंगली पशु जिसके सिर पर बारह सींग होते हैं। **बारह सिंगा** (हि.)

बारिया (पुं.) चरसे का कूआँ जोतते समय 'पैड़छे' में खड़ा होकर चरसे का पानी उलटने वाला, (दे. पैड़छा)।

बारिश (स्त्री.) दे. मींह।

बारी[1] (स्त्री.) छोटी घीलड़ी, (दे. घीलड़ी)।

बारी[2] (स्त्री.) 1. पारी, क्रम, 2. (दे. आळी[1])।

बारी[3] (पुं.) द्वारपाल। दे. पोळिया।

बारीक (वि.) 1. महीन, 2. सूक्ष्म।

बारीकी (स्त्री.) 1. महीनपन, 2. सूक्ष्मता, 3. विशेषता और खूबी।

बारूँबार (क्रि. वि.) 1. बारंबार, अनेक बार, 2. (दरवाज़े के) बीचों-बीच– दरवाज्जे के बारूँबार खाट घालणा कसोण हो सै, 3. बाहर, बाहर से।

बारुँमास (वि.) वर्ष भर।

बारे में (अव्य.) विषय में, संबंध में।

बारोट्ठा (पुं.) प्रवेश-द्वार।

बारौट्ठी (स्त्री.) दे. बरोट्ठी।

बाळ[1] (पुं.) केश; **~काटणा/तारणा** 1. महँगे भाव बेचना, 2. हजामत करना; **~छाँटणा** अंग्रेज़ी ढंग के बाल काटना; **~तरवाणा** मुंडन- संस्कार करवाना; **~तोड़** बाल टूटने की स्थिति में उठने वाली फुंसी।
बाल (हि.)

बाळ[2] (स्त्री.) वायु, पवन; (क्रि. स.) 'बाळणा' क्रिया का आदे. रूप; **~लागणा** 1. रोग के समय हवा लगने से शरीर पर दुष्प्रभाव पड़ना, 2. हवा लगना, 3. जमाने की हवा लगना; **~मारणा** बीमारी के सयम वायु लगने के कारण विकलांग होना।

बाळ[1] (स्त्री.) अन्न आदि के पौधे का वह भाग जिस पर दाने लगते हैं।
बाली (हि.)

बाल[2] (पुं.) दे. बाळ[1]।

बाल[3] (पुं.) बालक, बच्चा।

बालक (पुं.) दे. बाळक।

बाळक (पुं.) 1. छोटा बच्चा, 2. संतान; (वि.) मंद बुद्धि; **~-चीळक** बालक, संतान; **~-नान्हाँ** 1. बालक (संतान), 2. पेट का बच्चा, 3. गोद का बालक।
बालक (हि.)

बाळकपण (पुं.) 1. बचपन, बाल्यावस्था, 2. अबोध अवस्था, नादान अवस्था।

बाळकराम (पुं.) 1850 के आस-पास (शेखपुरा-अलावला) करनाल क्षेत्र में जन्मे एक लोककवि।

बालकृष्ण (पुं.) कृष्ण का बाल रूप।

बाळण (पुं.) जलावन, जलाने की लकड़ी आदि।

बाळणा (क्रि. स.) 1. (अग्नि) जलाना, 2. प्रकाशित करना, दीया आदि जलाना, (दे. चासणा)। **बालना** (हि.)

बाळधी (पुं.) बैलों की देखभाल करने वाला, 'पाळी' (दे.)।

बालना (क्रि. स.) दे. बाळणा।

बाळ-बच्चे (पुं.) 1. संतान, 2. परिवार।

बालम (पुं.) दे. बाल्यम।

बालमीक्की (पुं.) भंगी जाति के लिए प्रयुक्त शब्द, 2. अनुसूचित (भंगी) जाति का व्यक्ति। **वाल्मीकि** (हि.)

बालमुकुंद (पुं.) 1. हरियाणे का एक साहित्यकार (जन्म स्थान गुडियानी (रोहतक), जीवन-काल 1865-1907 ई. कृति गुप्त निबंधावली), 2. श्रीकृष्ण का बाल-रूप।

बाललीला (स्त्री.) 1. बालकों के खेल और क्रीडाएँ, 2. श्रीकृष्ण के बचपन की लीला।

बाळवा (पुं.) (गाभिन होने से पूर्व या ब्याते समय) मादा पशु के पेट से निकलने वाला लेसदार जेरा, जेरा; **~(-वे) देणा** लेसदार जेर निकालना।

बाला (स्त्री.) बालिका, लड़की; (पुं.) दे बाळा।

बाळा (पुं.) बड़ी बाली, कान का एक आभूषण। **बाला** (पुं.)

बाळापन (पुं.) दे. बाळकपण।

बालिग (पुं.) वयस्क।

बालिश्त (स्त्री.) दे. बिल्हाँध।

बाली (पुं.) सुग्रीव का बड़ा भाई जिसका वध श्रीराम के हाथों हुआ; (स्त्री.) 1. दे. बाळी, 2. नादान अवस्था; (वि.) बलवान।

बाळी (स्त्री.) कान का वलयाकार आभूषण; (क्रि. स.) 'बाळणा' क्रिया का भू. का. स्त्रीलिं., एकव. रूप। **बाली** (हि.)

बालू (पुं.) दे. बाळू।

बाळू (पुं.) बालुका, बालू रेत, रवेदार रेत; **~रेत** 1. बालू रेती, 2. (थली की) मोटी और कुछ पीले रंग की रेती (जिससे गेहूँ में डालने से सुरसरी नहीं लगती)।

बाळू कीड़ी (स्त्री.) बालू या कुछ भूरे रंग की चींटी।

बालूशाही (स्त्री.) दे. बाल्लूस्याही।

बाल्यम (पुं.) 1. पति (नव-विवाहित), 2. प्रिय, प्रेमी। **बालम** (हि.)

बाल्याण (पुं.) एक जाट गोत।

बाल्यावस्था (स्त्री.) बचपन।

बाल्लम (पुं.) दे. बाल्यम।

बाल्ली (पुं.) सुग्रीव का बड़ा भाई। **बाली** (हि.)

बाल्लूस्याही (स्त्री.) एक स्वादिष्ट तथा मीठा पकवान। **बालूशाही** (हि.)

बावड़ी (स्त्री.) वह चौड़ा कूआँ जिसमें पैड़ी लगी हों। **बावली** (हि.)

बावणा (क्रि.) दे. बाणा[2]।

बावन (वि.) बावन की संख्या; **~हाथ का** दुर्बुद्धि।

बावन औतार (पुं.) भगवान वामन, एक अवतार (इनकी जयंती भाद्रपद शुक्ल द्वादशी के दिन मनाते हैं। **वामन** (हि.)

बावन जनक (पुं.) बावन तोले पाव रत्ती। हर प्रकार से पूर्ण ठीक। उदा.–बावन जनक हरी नै रटकै, एक दर्जन दो कौड़ी मिल गी। (लचं)

बावन बुद्धि (पुं.) श्रेष्ठ बुद्धि वाला।

बावना (वि.) ठिगने क़द का। **बौना** (हि.)

बावरिया (पुं.) 1. एक अनुसूचित जाति, 2. बहेलिया, 3. एक अल्ल; (वि.) बावला।

बावर्ची (पुं.) रसोइया।

बावर्ची खाना (पुं.) रसोई घर।

बावळ (स्त्री.) बावलापन, विक्षिप्तता; **~उघड़णा** 1. पागल होना, 2. पागलपन की स्थिति में बकना; **~-भेड़्या** 1. पागल भेड़िया, 2. पागलपन।

बावला (वि.) दे. बावळा।

बावळा (वि.) 1. पागल, पगला, 2. भोला, अबोध, 3. मूर्ख, 4. सनकी। **बावला** (हि.)

बावलापन (पुं.) पागलपन।

बावली (वि.) दे. बावळी; (स्त्री.) दे. बावड़ी।

बावळी (वि.) 1. पागल, 2. अबोध, 3. मूर्खा; (स्त्री.) दे. बावड़ी। **बावली** (हि.)

बावळी बूँच (वि.) 1. मूर्ख, वज्र मूर्ख, 2. कनकटा पागल।

बाशिंदा (पुं.) निवासी।

बास[1] (पुं.) 1. निवास, 2. ठहरने का स्थान। **वास** (हि.)

बास[2] (पुं.) 1. मित्र, जैसे–यार-बास, 2. परिचित।

बासट (वि.) बासठ की संख्या।

बासण (पुं.) 1. मिट्टी का मटका, 2. बर्तन; **कासण-~** घर के बर्तन आदि; **~-न्यारे धरणा** अलग घर बसाना,

परिवार का विभाजन होना।
बासन (हि.)

बासदेव (पुं.) वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्ण।

बासन (पुं.) दे. बासण।

बासना (स्त्री.) 1. इच्छा, 2. कामुक भाव। **वासना** (हि.)

बासमती (पुं.) श्रेष्ठ किस्म का एक चावल।

बासहड़ा (पुं.) दे. बासोहड़ा।

बासी (वि.) दे. बास्सी[1]।

बासीरी (स्त्री.) बवासीर का रोग। **बवासीर** (हि.)

बासुक (पुं.) एक प्रसिद्ध नाग; **~नाथणा** असाधारण या अलौकिक कार्य करना। **वासुकी** (हि.)

बासोहड़ा (पुं.) होलिका-दहन के बाद पहले सोमवार या शीतला सप्तमी या किसी अन्य सोमवार को मनाया जाने वाला एक त्योहार (इस दिन शीतला देवी (माता) की पूजा के बाद सारा कुटुंब बासी भोजन खाता है ताकि चेचक का प्रकोप न हो); **~करणा/पूजणा/मणाणा** 1. बासोहड़ा या बासी का त्योहार मनाना, 2. इस दिन माता का पूजन करना।

बास्योढ़ा (पुं.) दे. बासोहड़ा; (वि.) बासी हुआ।

बास्सण (पुं.) दे. बासण।

बास्सर (पुं.) 1. दिन, प्रातः, 2. ज्योतिष का मुहूर्त, 3. वार, दिन, सप्ताह का दिन। **वासर** (हि.)

बास्सी[1] (वि.) 1. बासी, 2. 'ताज़ा' का विलोम, 3. एक दिन पहले का पका (खाना), 4. वह भोजन जिसमें गंध उत्पन्न हो गई हो, 5. जिसमें नवीनता का भाव न हो (पहनावा, चलन आदि); (पुं.) दे. बासोहड़ा; **~कढी मैं उबाळ** असमय का जोश, क्षणिक आवेश; **~का बखत** नाश्ते का समय, वह समय जब प्रातःकाल बासी भोजन या अल्पाहार लिया जाता है; **~-कूस्सी** 1. बासी या बुसा हुआ भोजन, 2. जैसा-तैसा ठंडा भोजन; **~-वारा** 1. अल्पाहार, 2. वह बासी अल्पाहार जो प्रातःकाल लिया जाता है, प्रातराश।

बास्सी[2] (पुं.) निवासी। **वासी** (हि.)

बास्सी[3] (स्त्री.) उबासी।

बाह (स्त्री.) हल जोतने की क्रिया; (क्रि. स.) 'बाहणा' क्रिया का आदे. रूप; **~आणा** धरती जोतने योग्य होना; **~गिरणा** 1. रौंदना, 2. बार-बार चक्कर लगाना; **~चालणा** हल चलने शुरू होना।

बाहड़णा (क्रि. अ.) 1. लौटना, 2. पूर्व स्थिति में आना–गहण पूरा हो लिया यो ईब बाहड़ण लाग्गैगा।

बाहणा[1] (क्रि. स.) 1. खेत जोतना, 2. रौंदना, कुचलना। **बाहना** (हि.)

बाहणा[2] (क्रि. स.) 1. केश सँवारना, 2. (दे. बहाणा)। **बाहना** (हि.)

बाहन (पुं.) वाहन।

बाहना (क्रि. स.) 1. दे. बाहणा[1], 2. दे. बाहणा[2]।

बाहमण (पुं.) 1. ब्राह्मण जाति का व्यक्ति, 2. सद् गृहस्थियों के संस्कार कराने वाला व्यक्ति, 3. पूजा-पाठ कराने वाला या करने वाला, 4. यजमान, किसी परिवार, गोत या गाँव का पंडित; (वि.) 1. पूज्य, जैसे–देख्या ए नाँ तू इसा बाहमण, 2. शुचिता, पवित्रता का अतिरिक्त ध्यान बरतने वाला;

~**जिमाणा/न्योतणा** ब्रह्म भोज कराना; ~-**नाई** ब्राह्मण और नाई की जोड़ी (सामूहिक उत्सवों पर इनकी उपस्थिति आवश्यक मानी जाती है); ~-**भरड़ा** भ्रष्ट ब्राह्मण, वह ब्राह्मण जिसका आचरण हर प्रकार से भ्रष्ट हो चुका हो, (दे. भरड़ा)। **ब्राह्मण** (हि.)

बाहर (क्रि. वि.) दे. बाहरणें।

बाहरणें (क्रि. वि.) बाहर, घर से बाहर, 1. (दे. भारणा), 2. (दे. बारणै); ~**का** पराया, ओपरा।

बाहरी (वि.) 1. बाहर का, 2. पराया।

बाहळा (पुं.) 1. कूआँ खोदते समय अचानक फूट पड़ने वाला जल-स्रोत या जल-प्रवाह, 2. भूमि का वह तल जहाँ नीचे पानी एकत्रित होता है; ~**आणा/पाटणा/लीकड़णा** कूआँ खोदते समय अचानक तेजी से जल-स्रोत का फूट पड़ना।

बाहवड़णा (क्रि. अ.) दे. बाहड़णा।

बाही (स्त्री.) चारपाई में लंबाई की ओर लगने वाली लकड़ी।

बाहुबल (पुं.) भुजबल।

बाहेल्ली (स्त्री.) बहिन के समान प्रिय सखी।

बाह्मणिया (पुं.) ब्राह्मण के लिए प्रयुक्त लघुताद्योतक शब्द।

बाह्रमाँ (वि.) बारहवें क्रम पर; (पुं.) दे. बाह्राह। **बारहवाँ** (हि.)

बाह्राह (पुं.) मृत्यु के बारहवें दिन किया जाने वाला संस्कार।

बिंडळ (पुं.) 1. बीड़ी का बंडल, 2. ढेरी, गट्ठा। **बंडल** (हि.)

बिंद (पुं.) 1. पुरुष, 2. बीज, 3. वीर्य, 4. संतान।

बिंदल (पुं.) अग्रवाल बनियों का एक गोत।

बिंदायक (पुं.) विनायक।

बिंदिया (स्त्री.) 1. बिंदी, 2. माथे की बेंदी, (दे. बिंदी)।

बिंदी (स्त्री.) 1. माथे की टीकी, 2. गोलाकार चिह्न, 3. एक आभूषण जो माथे पर बिंदी की तरह लगाया या चिपकाया जाता है, 4. दाग़, 5. स्वर- रहित पंचम व्यंजन का संक्षिप्त चिह्न (ं)।

बिंदौळा (पुं.) कपास का बीज। **बिनौला** (हि.)

बिंधणा (क्रि. अ.) 1. सूई-काँटे आदि में पिरोया जाना, 2. छिद्र होना, 3. सीमित होना, 4. जादू-टोने से प्रभावित होना, 5. पेड़, पौधे, मनुष्य आदि की बढ़ोतरी रुकना, 6. रसोली (माँस- ग्रंथि) छेदी जाना ताकि वह न बढ़े, 7. प्रेम में आबद्ध होना, मोहित होना, 8. घिरना। **बिंधना** (हि.)

बिंधना (क्रि. अ.) दे. बिंधणा; (वि.) जो बींधा जा सके।

बिंधवाणा (क्रि. स.) 1. कान, नाक आदि छिदवाना, 2. फोड़े-फुंसी को सूई आदि से छिदवाना, 3. जादू-टोने के प्रभाव में लाना, 4. बींधने का काम अन्य से करवाना। **बिंधवाना** (हि.)

बिंधाणा (क्रि. स.) दे. बिंधवाणा।

बिंधास (पुं.) विध्वंस।

बिकट (वि.) विकट।

बिकणा (क्रि. अ.) बेचा जाना; (वि.) जो शीघ्र बिके; **मुफत मैं~** बे-भाव या कौड़ी के भाव बिकना। **बिकना** (हि.)

बिकना (क्रि. अ.) दे. बिकणा।

बिकरम (पुं.) 1. साहस, 2. (दे. बिकरमीं)। **विक्रम** (हि.)

बिकरमाजीत (पुं.) 1. कहानी-किस्सों में वर्णित एक पराक्रमी तथा न्यायप्रिय राजा, 2. वह राजा जिसके नाम से विक्रम संवत् प्रचलित है; (वि.) अत्यंत पराक्रमी; **बीर~** वीर विक्रमादित्य। **विक्रमादित्य** (हि.)

बिकरमीं (पुं.) 1. राजा विक्रमादित्य के नाम पर प्रचलित प्रसिद्ध संवत् जो ईसवी सन् से 57 वर्ष आगे चलता है; (वि.) विक्रमी, पराक्रमी। **विक्रमी** (हि.)

बिकराळ (वि.) 1. भयंकर रूप का, डरावना, 2. कुरूप, 3. विध्वंसक, 4. क्रूर। **विकराल** (हि.)

बिकवाणा (क्रि. स.) विक्रय करवाना। **बिकवाना** (हि.)

बिकवाना (क्रि. स.) दे. बिकवाणा।

बिकाऊ (वि.) 1. बेचने के लिए, 2. 'घर-बरताऊ' का विलोम।

बिकार (पुं.) दोष; (वि.) बेकार।

बिख (पुं.) जहर; (स्त्री.) आपत्ति, (दे. बिखा)। **विष** (हि.)

बिखम (स्त्री.) 1. आपत्ति, 2. बाधा; (वि.) 1. ऊबड़-खाबड़, जो सम न हो, 2. विकट; **~उजाड़** भीषण जंगल। **विषम** (हि.)

बिखरणा (क्रि. अ.) 1. इधर-उधर फैलना, 2. एक मत के न रहना, फूट पड़ना, 3. फूल खिलना, प्रस्फुटित होना, 4. व्याप्त होना, जैसे-चाँदणी बिखरणा, 5. नष्ट-भ्रष्ट होना; (वि.) जो शीघ्र बिखर जाए। **बिखरना** (हि.)

बिखा (स्त्री.) विपत्ति, आपत्ति-राज्जा नळ पै बिखा पड़ी थी हार निगलगी खूँट्टी (लो. गी.); **~आणा/पड़णा** विपदा आना, बुरा समय आना।

बिख्यात (वि.) दे. नाम्मी गराम्मीं।

बिगड़णा (क्रि. अ.) 1. ख़राब हो जाना, 2. कोई वस्तु ठीक न बन पाना, 3. क्रोधित होना, 4. चरित्रहीन होना, 5. बुरी आदत पड़ना, 6. उद्दंड होना, 7. पशु आदि का स्वामी के अधिकार से बाहर हो जाना, 8. अनबन होना, 9. व्यर्थ में ख़र्च हो जाना। **बिगड़ना** (हि.)

बिगड़ना (क्रि. अ.) दे. बिगड़णा।

बिगड़ी (स्त्री.) दुर्भाग्य, बुरा समय; (क्रि. अ.) 'बिगड़णा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~का मार्‌या** भाग्य का सताया; **~का यार** आपत्ति का सहायक; **~का राम हिमाँती** भगवान बिगड़े काम सुधारता है।

बिगड़ैल (वि.) 1. बिगड़ा हुआ, 2. हठी, जिद्दी, 3. जिसे अधिक लाड़-चाव द्वारा बिगाड़ दिया गया हो।

बिगदोई[1] (स्त्री.) 1. बदबू, 2. निंदा; **~ऊठणा** दुर्गंध उठना; **~फैलणा/होणा** अपकीर्ति फैलना।

बिगदोई[2] (स्त्री.) बदनामी।

बिगाड़ (पुं.) 1. बिगड़ने का भाव, 2. हानि, 3. काम न बन पाने का भाव; (क्रि. स.) 'बिगाड़णा' क्रिया का प्रे. रूप।

बिगान्ना (वि.) पराया।

बिगान्नी (वि.) बेगानी।

बिगार (स्त्री.) बिना पारिश्रमिक दिए कराई गई जबरन मज़दूरी; **~आणा** 1. (गाँव की व्यवस्था के अनुसार) किसी व्यक्ति या जाति पर बेगार का काम पड़ना, 2. मुसीबत पड़ना; **~करणा/काटणा** 1. काम को अनिच्छा से करना, 2. काम

बिगाड़ना। **बेगार** (हि.)

बिगुल (पुं.) एक प्रकार की तुरही जो प्राय: सेना के द्वारा बजाई जाती है।

बिग्गड़ (वि.) दे. बिगडैल।

बिघन (पुं.) 1. बाधा, 2. झगड़ा; **~काटणा** 1. आश्चर्यजनक काम करना, 2. बंधन से छुड़ाना, 3. पाप से मुक्त करना; **~का बीज** झगड़े की जड़; **~~बोणा** झगड़े की जड़ बोना; **~बेल** झगड़े की जड़; **~~बोणा** फूट का बीज बोना, लड़ाई-झगड़ा पैदा करना; **~मचाणा** 1. रोना-पीटना, 2. कोलाहल करना; **~होणा** 1. बाधा उत्पन्न होना, 2. आश्चर्यजनक स्थिति उत्पन्न होना। **विघ्न** (हि.)

बिघनी (वि.) 1. झगड़ालू, 2. क्रोधी, 3. कार्य में बाधा डालने वाला। **विघ्नी** (हि.)

बिचकन्नी (स्त्री.) कान के मध्य भाग में धारण की जाने वाली बाली।

बिचणा (क्रि. अ.) दे. बिकणा।

बिचत्तर (वि.) अनोखा, निराला। **विचित्र** (हि.)

बिचरणा (क्रि. अ.) 1. विचरण करना, 2. मटरगश्ती करना। **विचरना** (हि.)

बिचलग (वि.) अधबीच।

बिचळणा (क्रि. अ.) 1. विचलित होना, 2. भूलना (भय आदि के कारण), 3. हक्का-बक्का रहना, 4. अस्थिर बुद्धि होना, 5. बहकना, 6. मार्ग भूलना; (वि.) जो शीघ्र भ्रमित हो जाए। **बिचलना** (हि.)

बिचलना (क्रि. अ.) दे. बिचळणा।

बिचला (वि.) 1. बीच का, बीच वाला, जैसे–बिचला छोह्रा, छोटे तथा बड़े के बीच का, 2. मध्यस्थता करने वाला, (दे. बिचोलिया)।

बिचळाणा (क्रि. स.) 1. विचलित करना, अस्थिर बुद्धि करना, 2. घबराहट का वातावरण उपस्थित करके असमंजसता की स्थिति में डालना, 3. बहकाना। **बिचलाना** (हि.)

बिचवाणा (क्रि. स.) बेचने में सहायता करना। **बिकवाना** (हि.)

बिचार (पुं.) 1. अनुमान, 2. सोच-विचार, चिंता, 3. परीक्षा करना, जैसे–यह बात बिचार कै देख ले, 4. विश्वास, 5. भावना, 6. (दे. बिचास)। **विचार** (हि.)

बिचारणा (क्रि. स.) सोच-विचार करना। **विचारना** (हि.)

बिचारा (वि.) 1. दीन, 2. कृपा के योग्य, 3. निस्सहाय। **बेचारा** (हि.)

बिचाळा (पुं.) 1. बीच, मध्य भाग, 2. मध्यस्थता; **~(-ळै) आणा** मध्यस्थता स्वीकार करना; **~करणा** 1. मध्यस्थता करना, 2. बँटवारा करना।

बिचास (स्त्री.) परखने का भाव या क्रिया–याह बात बिचास्सी ओड़ सै अक डरैगा सो मरैगा; **~करणा** परीक्षा करके या परख कर देखना।

बिचासणा (क्रि. स.) परखना, व्यवहार की परीक्षा लेना।

बिचोलिया (पुं.) 1. (देने-लेने के व्यवहार में) मध्यस्थता करने वाला व्यक्ति, 2. दलाल।

बिचौल्ला (पुं.) दे. बिचोलिया।

बिचौहधड़ा (वि.) 1. अधेड़, बीच की आयु का, 2. मध्यम श्रेणी का।

बिच्छू (पुं.) डंक धारी जीव विशेष; (वि.) 1. डंक मारने वाला, 2. कटुवचन कहने वाला।

बिछटणा (क्रि. अ.) 1. अलग-थलग होना, 2. तितर-बितर होना, 3. किसी पशु का अपने समूह से अलग रह जाना, 4. वियोग होना, 5. दिल विक्षुब्ध होना, 6. दाने आदि का उछलकर दूर जा गिरना, 7. पीछे रह जाना। **बिछड़ना** (हि.)

बिछड़णा (क्रि. अ.) 1. पशु-पक्षी का अपने झुंड से अलग होना, 2. पिछड़ना, 3. किसी की तुलना में पीछे रह जाना। **बिछुड़ना** (हि.)

बिछवाना (क्रि. स.) दे. बिछाणा।

बिछाड़णा (क्रि. स.) विस्मृत करना।

बिछाणा/बिछावणा (क्रि. स.) 1. किसी वस्त्र आदि को दूर तक फैलाना, 2. किसी वस्तु को भूमि आदि पर अधिक मात्रा में डालना, 3. मार डालना, 4. घायल करके डालना, 5. पाँवड़े बिछाना; (पुं.) बिछौना। **बिछाना** (हि.)

बिछाना (क्रि. स.) दे. बिछाणा।

बिछुआ (पुं.) पैर की अंगुली का आभूषण विशेष।

बिछुड़ना (क्रि. अ.) दे. बिछटणा।

बिछोणा (पुं.) बिछौना, बिस्तर।

बिछोह (पुं.) विछोह, जुदाई।

बिजका (पुं.) चमक। बिजली की चमक। उदा. ओढ पहर कै सुथरी लागै, बिजळी कैसा बिजका।

बिजनखुरी (स्त्री.) 1. खुर के बीच का खाली स्थान, 2. खुरों के ऊपर पीछे की ओर लटकने वाले दो टख़ने।

बिजली (स्त्री.) दे. बीजळी।

बिजवा (पुं.) बिजली, (दे. बीजळी)।

बिजार (पुं.) साँड, वह साँड जो किसी की मृत्यु के ग्यारहवें दिन छोड़ा जाता है।

बिजिया (स्त्री.) त्रिकोणाकार गोटे का ओढ़ना।

बिजै (स्त्री.) जीत। **विजय** (हि.)

बिजोरिया (पुं.) दे. बीजोंढी।

बिज्जू (पुं.) बीजू, खरगोश के आकार का एक पशु जो मरे पशु के गोहरन (गुदा) में प्रवेश करके अंतड़ी खा जाता है।

बिटकणा (पुं.) 1. स्तन का अग्रभाग, 2. रबड़ का बिटकना जिसमें शहद भर देते हैं और बच्चा इसे चूसता रहता है।

बिटाळणा (क्रि. स.) 1. उच्छिष्ट या झूठा करना, 2. खाली पेट या उपवास के बाद मुँह में कोई खाद्य वस्तु डालना।

बिटोड़ (पुं.) 1. बिटोड़ों का समूह, (दे. बिटोड़ा), 2. गोबर की ढेरी; **~का बिटोड़** 1. गंदगी का ढेर, 2. उपलों का ढेर।

बिटोड़ा (पुं.) उपलों को क्रम से लगा कर चिना गया आयत य शंकू के आकार का ढेर (जो ऊपर से गोबर द्वारा लीप दिया जाता है ताकि वर्षा का पानी अंदर न जा सके, इसे छान से भी ढाँप दिया जाता है); **~धरणा** बिटोड़े की आधार शिला रखना; **~बकसणा** गरीबी की अवस्था में धन नष्ट करना; **~(-ड़े) मैं गोस्से लिकड़णा** दुष्ट व्यक्ति के मुख से सदा अपशब्द निकलना, बुरे से अच्छी बात की आशा न रखना; **~-सा थापणा** पिटाई करना।

बिटोळ (स्त्री.) दे. बटोळ।

बिटोळणा (क्रि स.) 1. गोबर इकट्ठा करना, 2. इकट्ठा करना, 3. जन-समुदाय को एकत्रित करना।

बिठाणा (क्रि.) दे. बठाणा।

बिड़ंग (पुं.) समूह, झुंड, एक ही प्रकार की वस्तुओं का घनीभूत पुंज; **~पाकणा** 1. गाजर, मूली आदि का बहुत स्थूल या मोटे आकार का होना, 2. भारी-भरकम होना; **~बैठणा** 1. पौधे की जड़ें बहुत मोटी होना, 2. फोड़े का अंदर ही अंदर फूलना।

बिड़ (स्त्री.) गीदड़ आदि का बिल (तुल. भिठ), (दे. घुर)।

बिड़क (स्त्री.) दे. खुड़का।

बिड़ला[1] (पुं.) 1. तुलसी आदि का पवित्र पौधा, पवित्र पौधा, 2. छोटा वृक्ष, 3. मेंड़; **~चिणाणा** पवित्र पौधे की मेंड़ चिनवाना। **बिरवा** (हि.)

बिड़ला[2] (पुं.) पान का बीड़ा, 'बीड़ा' का बहुवचन रूप; **~चाबणा** 1. शौकीनी में आना, 2. पान चबाना।

बिड़ला[3] (पुं.) चरखा।

बिड़ला[4] (वि.) 1. बहुतों में से एक, एक-आध, विरल, 2. सौभाग्यशाली। **विरळा** (हि.)

बिड़ला[5] (पुं.) दे. बेड़ा।

बिड़ला[6] (पुं.) एक धनी-मानी साहूकार जिसने अनेक मंदिर बनवाए।

बिड़वा (पुं.) दे. बिरवा।

बिड़ा[1] (पुं.) पौधा, जैसे–तुळसी का बिड़ा; **~बैठणा/पाकणा** पौधे का सघन होना। **बिरवा** (हि.)

बिड़ा[2] (पुं.) गट्ठा। उदा. चंदन का बिड़ा। दे. बेड़ा[1]।

बिडारणा (क्रि. स.) 1. बिसारना, त्यागना, 2. (दे. बिटाळणा)।

बिणजारो (पुं.) दे. बणजारा।

बिताणा (क्रि. स.) 1. व्यतीत करना, हीन-अवस्था में समय काटना, 2. समाप्त करना, चुकाना–जो किमैं था सौ बिता दिया। **बिताना** (हि.)

बितावणा (क्रि. स.) दे. बिताणा।

बित्ता (पुं.) 1. बालिश्त, चिटली अंगुली के सिरे से अँगूठे के सिरे तक लंबाई का नाप, 2. बड़ी और मोटी गिल्ली।

बित्ती (स्त्री.) गिल्ली; **~-सा** 1. छोटे क़द का, 2. बौना; **~-डंडा** 1. गिल्ली-डंडे का खेल, 2. गिल्ली और डंडा।

बिथा (स्त्री.) 1. पीड़ा, 2. (दे. बिखा)। **व्यथा** (हि.)

बिदकना (क्रि. अ.) दे. बिधकणा।

बिदकाना (क्रि. स.) दे. बिधकाणा।

बिदरो[1] (स्त्री.) दे. बदरो।

बिदरो[2] (पुं.) हरियाणा की एक प्राचीन नदी। दे. बदरो।

बिदा (स्त्री.) 1. बारात के लौटने से पूर्व वह रस्म जिसमें पंचायत या प्रमुख लोगों की उपस्थिति में वरपक्ष को दान, नक़दी आदि दी जाती है, 2. बिछुड़ने का भाव। **विदा** (हि.)

बिदुर (पुं.) कौरवों के मंत्री जो राजनीति और धर्म-नीति में निपुण थे। **विदुर** (हि.)

बिदेस (पुं.) 1. परदेश, 2. वह स्थान जहाँ भिन्न रीति-रिवाज़, बोलचाल आदि हो, 3. जीविका-यापन के लिए अपनाई गई दूर की भूमि या स्थान, 4. जन्म-भूमि से बहुत दूरी का स्थान; **~जाणा** आजीविका के लिए परदेश जाना। **विदेश** (हि.)

बिद्दत (स्त्री.) झगड़ा।

बिद्द्या (स्त्री.) 1. सरस्वती, 2. पढ़ाई-लिखाई, शिक्षा, 3. गुण, 4. हुनर, 5. चतुराई, 6. गूढ़ रहस्य को समझने की शक्ति, 7. ज्ञान, 8. (दे. बिदा); **~आणा** 1. समस्या के समाधान का उपाय ज्ञात होना, 2. शिक्षा में निपुण होना; **~करणा/पेरणा** जादू मारना; **~चलाणा** वश में करना; **~पढाणा** 1. सीख देना, 2. हुनर सिखाना; **~भूलणा** 1. सीख भूलना, 2. हुनर भूलना; **~सीखणा** गुरु से शिक्षा प्राप्त करना। **विद्या** (हि.)

बिद्या (स्त्री.) दे. बिदा।

बिध[1] (स्त्री.) बहुत मोटा मेंढ़क; **~बाड़णा** आपत्ति बुलाना।

बिध[2] (स्त्री.) उपाय; **~आणा** समस्या-समाधान का उपाय ज्ञात होना; **~बैठणा** 1. काम बनना, 2. समस्या का समाधान मिलना; **~लाणा** 1. उपाय निकालना; **~लिकाड़णा** उपाय ढूँढ़ निकालना। **विधि** (हि.)

बिध[3] (स्त्री.) पशु के खुरों में होने वाला एक रोग।

बिधकणा (वि.) वह पशु जो शीघ्र बिदके; (क्रि. अ.) 1. (पशु का) भयभीत होकर उछलना या भागना, 2. वस्तु विशेष को देखकर डरना या आवेश में आना, 3. चिढ़ना (किसी वस्तु विशेष से), 4. (दे. भड़कणा)। **बिदकना** (हि.)

बिधकाणा (क्रि. स.) 1. पशु को छाता, काला वस्त्र आदि दिखाकर भड़काना, भड़काना, 2. पशु को बार-बार सता कर क्रोधित करना, 3. किसी के विरुद्ध भड़काना या उकसाना, 1. (दे. भड़काणा), 2. (दे. चिंगराणा)। **बिदकाना** (हि.)

बिधना (पुं.) भगवान, भाग्य-विधाता। **विधना** (हि.)

बिधवा (स्त्री.) वह औरत जिसका पति मर गया हो (तुल. राँड)। **विधवा** (हि.)

बिधसिर (स्त्री.) विधि विधान अनुसार। सर्वथा उचित। दे. बिध[2]।

बिधान (पुं.) नियम। **विधान** (हि.)

बिधी (स्त्री.) 1. सरल उपाय, 2. तरीका; (पुं.) विधाता; **~सिखाणा** सीख देना। **विधि** (हि.)

बिन (अव्य.) दे. बिना

बिनकुट (स्त्री.) 1. वह गाय जो दूध पीने के लिए बछड़ू को निकट न फटकने दे, 2. बछड़ू मरने पर दूध न देने वाली गाय।

बिनगो (सर्व.) उनका (बाग.)।

बिनती (स्त्री.) प्रार्थना, निवेदन। **विनती** (हि.)

बिना (अव्य.) रहित, अभाव में।

बिनाई (स्त्री.) नेत्र-ज्योति। **बीनाई** (हि.)

बिनाक्की (स्त्री.) खलियान उठाते समय नीची जाति के लोगों को दिया जाने वाला अन्न, (दे. स्याहवड़ी)।

बिनाख (पुं.) वह उपकरण जिस पर जुलाहा-गाँठ लगती है और जिसके सरकने पर कपड़ा 'तुर' पर लिपटता है।

बिनाणणा (क्रि.) मानना। उदा.–मेरी बात बिणाण अर सुखी रह।

बिनाणी (वि.) चतुर।

बिनाय (पुं.) विनायक।

बिनारणा (क्रि. स.) 1. सरसों, बथुआ आदि का साग दराँत से काटना, साग या सब्ज़ी काटना ('छोलणा', 'काटणा' में भाव-दोष के कारण 'बिनारणा' शब्द का प्रयोग किया जाता है), 2. काटना, 3. चीरना, 4. (दे. बिनासणा)। **बिनारना** (हि.)

बिनारणी (स्त्री.) साग की वह मात्रा जो एक बार में दराँत द्वारा सुगमता से कट सके, लगभग मुट्ठी भर (साग), (दे. चीरणी)। **बिनारनी** (हि.)

बिनास (पुं.) 1. विनष्ट, 2. समूल नष्ट करने का भाव, (दे. नापैद); (क्रि.स.) 'बिनासणा' क्रिया का आदे. रूप। **विनाश** (हि.)

बिनासणा (क्रि. स.) 1. विनष्ट करना, 2. निर्दयता से काटना। **बिनासना** (हि.)

बिनासना (क्रि. स.) दे. बिनासणा।

बिनुआ (पुं.) दे. आरणा।

बिनै (स्त्री.) विनती, प्रार्थना। **विनय** (हि.)

बिनौला (पुं.) दे. बिंदौळा।

बिन्नस (क्रि. वि.) कहीं की कहीं।

बिपत (स्त्री.) आपत्ति काल। **विपत्ति** (हि.)

बिपता (स्त्री.) विपत्ति। **विपदा** (हि.)

बिपरीत (वि.) उलट। **विपरीत** (हि.)

बिपार (पुं.) व्यापार।

बिपारी (पुं.) व्यापार करने वाला। **व्यापारी** (हि.)

बिप्पर (पुं.) ब्राह्मण, पंडित। **विप्र** (हि.)

बिफळ (वि.) निष्फल। **विफल** (हि.)

बिबाक (वि.) बेबाक।

बिभचार (पुं.) बदचलनी। **व्यभिचार** (हि.)

बिभचारी (पुं.) 1. बदचलन, 2. अन्यायी। **व्यभिचारी** (हि.)

बिमाण (पुं.) 1. उड़न खटोला, 2. वायुयान, 3. वाहन, 4. वह वाहन जिस पर यमदेव पुण्य मृतक-आत्मा को लेने आता है, 5. सजी-धजी अरथी; **~चढ़णा** 1. स्वर्ग जाना, 2. मृत्यु होना। **विमान** (हि.)

बिमार (वि.) रोगी। **बीमार** (हि.)

बिमारी (स्त्री.) रोग। **बीमारी** (हि.)

बियाबान (स्त्री.) 1. बीहड़ वन, 2. निर्जन वन; **-उजाड़** सुनसान, भयंकर उजाड़, (दे. बारादुणी उजाड़)।

बिरंजी (स्त्री.) एक कील विशेष; **~चोब्भा** एक प्रकार की कील।

बिर (अव्य.) सखी के लिए प्रयुक्त संबोधन, अरी।

बिरकला (पुं.) दे. बुड़कला।

बिरख[1] (पुं.) पेड़। **वृक्ष** (हि.)

बिरख[2] (स्त्री.) 1. वृष राशि, 2. भेड़। **वृष** (हि.)

बिरखभान (पुं.) राधा जी के पिता, (दे. भड़सोन्ना)। **वृषभानु** (हि.)

बिरजण (वि.) व्रज प्रदेश की (स्त्री), (तुल. बिरजो)।

बिरजिया (वि.) 1. व्रजवासी, 2. व्रज भाषा बोलने वाला।

बिरजिस (स्त्री.) एक पहनावा।

बिरजू (वि.) दे. बिरजिया।

बिरजो (वि.) व्रज से बाहर ब्याही गई व्रज प्रदेश की लकड़ी, (दे. बिरजण)।

बिरड़ (स्त्री.) दे. भिरड़।

बिरड़-बिरड़ (स्त्री.) 1. बड़बड़ाने का भाव, 2. बच्चे का रुक-रुक कर रोने का

भाव; **~करणा/लाणा** 1. बड़बड़ाना, 2. रुक-रुक कर रोना।

बिरड़ाऊ (वि.) 1. चिड़चिड़े स्वभाव का, 2. सदा बड़बड़ाने वाला, 3. ईर्ष्यालु।

बिरड़ाणा (क्रि. अ.) 1. (बालक का) रुक-रुक कर हठवश रोना, रोना, दहाड़ मार कर रोना, 2. ईर्ष्या करना। **बड़बड़ाना** (हि.)

बिरण (स्त्री.) (वट की दाढ़ी?)–सिर के केस लगैं हड्डी जणूँ बिरण फूट री बड़ मैं (लो.गी.)।

बिरत (स्त्री.) वृत्ति, उदा. ब्राह्मण बिरत।

बिरती (स्त्री.) दे. बिरत।

बिरथ (क्रि. वि.) व्यर्थ में, वृथा।

बिरथा (वि.) निष्प्रयोजन, व्यर्थ; (क्रि.वि.) बिना मतलब के। **वृथा** (हि.)

बिरद[1] (स्त्री.) यश-वर्णन, बड़प्पन, विरुदावली–जिसी गाम-गुहाँड मैं तेरी बिरद सै मैं सब जाणूँ सूँ; **~बखाणणा** 1. प्रशंसा करना, 2. गोत्रावली का वर्णन करना, 3. झूठी प्रशंसा करना। **विरद** (हि.)

बिरद[2] (पुं.) केश; **~खोल्हणा** केश खोलना, विवाह के समय किसी सम्मानित महिला (दादी, माँ, बूआ) द्वारा केश खोलकर नियमपूर्वक रहना।

बिरध (पुं.) 1. घर का बड़ा-बूढ़ा, 2. बूढ़ा व्यक्ति। **वृद्ध** (हि.)

बिरमाणा (क्रि. स.) बहकाना, भ्रमित करना, (वि.) जो भ्रमित करे। **भरमाना** (हि.)

बिरलाप (पुं.) विलाप।

बिरवा (पुं.) 1. पवित्र पौधा, 2. छोटा पौधा।

बिरस (स्त्री.) अपनी जन्म-भूमि का भाग।

बिरहनला (पुं.) 1. बृहन्नला, 2. अज्ञातवास में अर्जुन का नाम। दे. अरजन।

बिरह्मचारी (पुं.) 1. ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करने वाला, जिसने विवाह न किया हो, 2. साधु। **ब्रह्मचारी** (हि.)

बिरह्मा (पुं.) सृष्टि का रचयिता, विधाता। **ब्रह्मा** (हि.)

बिराग (पुं.) संन्यास, संसार के प्रति उदासीनता। **वैराग्य** (हि.)

बिराग्गी (पुं.) 1. संन्यासी, 2. संसार के प्रति उदासीन व्यक्ति, 3. एक जाति जिनका पेशा भगवान का संकीर्तन करके माँगना और खाना था किन्तु ये अब अन्य व्यवसाय अपनाने लगे हैं (कुछ लोग सारंगी पर विरुदावली सुना कर विचरण करते हैं, भर्तृहरि के वैरागी होने के बाद उसके अनुयायी बैरागी कहलाए, इस जाति के लोग गृहस्थी होते हैं और भर्तृहरि का गुणगान करते हैं), 1. (दे. जोग्गी), 2. (दे. स्याम्मीं)। **वैरागी** (हि.)

बिराजणा (क्रि. अ.) 1. शोभित होना, 2. आसीन होना। **विराजना** (हि.)

बिराट (वि.) भव्य; (पुं.) मत्स्य देश का राजा जहाँ पांडवों ने अज्ञातवास बिताया था। **विराट** (हि.)

बिराणा (वि.) पराया, जो अपना न हो, दूसरे का।

बिरादरी (स्त्री.) 1. किसी विशेष जाति के लोगों का समुदाय, अल्पसंख्यक जाति के लोगों का समुदाय, 2. समान व्यवसाय के लोगों का समुदाय, 3. परिचित-जन, भाईचारा।

बिरान (वि.) 1. दुखी, 2. वीरान; **~-माट्टी** 1. अत्यंत दीन-हीन तथा उपेक्षित

अवस्था, दुर्दशा, 2. मृतक को जलाने अथवा दफ़नाने के बाद उसकी भस्म या मिट्टी को उपेक्षित रखने की अवस्था, (दे. रेह-रेह माट्टी); **~~करणा** 1. अत्यंत कष्ट देना, 2. दीन-हीन अवस्था में पहुँचाना, 3. उजाड़ना; **~होणा** तंग होना, (दे. रेह-रेह माट्टी होणा)।

बिरायणा (वि.) बेगाना।

बिरिजिया (वि.) दे. बिरजिया।

बिरोद्धण (वि.) 1. विरोध करने वाली, 2. हर काम में बाधा डालने वाली, 3. द्वेष करने वाली, 4. झगड़ालू। **विरोधिन** (हि.)

बिरोद्धी (वि.) 1. विरोध करने वाला, विपक्ष का, 2. शत्रु, 3. विघ्न डालने वाला, 4. विपरीत, विलोम। **विरोधी** (हि.)

बिरोध (पुं.) 1. ख़िलाफ़त, शत्रुता, बैर, 2. उलटी स्थिति। **विरोध** (हि.)

बिलंगणी (स्त्री.) 1. अलगनी, 2. रस्सी या बाँस जिस पर घरेलू वस्त्र लटकाए जाते हैं।

बिल (पुं.) 1. भूमि में रहने वाले जीव-जंतुओं द्वारा बनाया गया गहरा छिद्र, घर, 2. छिद्र; **~करणा/ खोदणा** 1. मार्ग में बाधा डालना, 2. कष्ट पहुँचाना, 3. हृदय छलनी करना; **~मारणा** 1. बिल बंद करना, 2. भेदभाव मिटाना।

बिलकुल (क्रि. वि.) दे. कती।

बिलखणा (क्रि. अ.) विलाप करना, (दे. कळपणा)। **बिलखना** (हि.)

बिलखना (क्रि. अ.) 1. दे. बिलखणा, 2. दे. कळपणा।

बिलखाणा (क्रि. स.) 1. सताना, 2. तरसाना, 3. रुलाना। **बिलखाना** (हि.)

बिलखाना (क्रि. स.) दे. बिलखाणा।

बिलबिलाणा (क्रि. अ.) 1. तड़पना, 2. छोटे कीड़ों का रेंगना, 3. (बच्चे का) कष्ट के कारण व्याकुल होना; (वि.) जो हर समय बिलबिलाए। **बिलबिलाना** (हि.)

बिलबिलाना (क्रि. अ.) दे. बिलबिलाणा।

बिलमणा (क्रि.) वस्तु विशेष देखकर उसे प्राप्ति के लिए हठ करना। दे. बिचरना।

बिलसणा (क्रि. अ.) 1. विलास करना, केलि करना, 2. बिलखना।

बिलहाँध (स्त्री.) 1. बालिश्त, 2. एक हाथ की लंबाई का आधा नाप।

बिलाँत (स्त्री.) दे. बिलहाँध।

बिलाँतिया (वि.) दे. बिलाँधिया।

बिलाँधिया (वि.) एक बालिश्त का (व्यक्ति), बौना; (पुं.) वे काल्पनिक व्यक्ति जो पाताल लोक में रहते हैं और जिनकी लंबाई एक बालिश्त मानी जाती है।

बिला[1] (अव्य.) 1. एक निरर्थक या पूरक संबोधन, जैसे–बिला बात न्यूँ सै, 2. रहित, बिना, जैसे–बिला बात; (स्त्री.) दे. बला।

बिला[2] (पुं.) बिल्ली का नर; (वि.) 1. चटोरा, 2. सर्वभक्षी। **बिलाव** (हि.)

बिलाई[1] (स्त्री.) बिल्ली; (वि.) कैरी आँखों वाली; **~सी आँख** कैरी आँखें।

बिलाई[2] (स्त्री.) (कुएँ में गिरी वस्तु निकालने के लिए प्रयुक्त) लोहे का काँटा।

बिलाई[3] (स्त्री.) 1. नट-नटी या भाँड द्वारा शरीर को मोड़-तोड़ कर उछल- कूद करने की क्रिया, 2. नट-विद्या; **~तोड़णा** शरीर को टेढ़ा-मेढ़ा करके उलटी-सीधी उछल-कूद करना।

बिलाणा (क्रि. स.) 1. बिलवाने या मथवाने

का कार्य अन्य से कराना, 2. कपास ओटवाना।

बिलात्ती (वि.) 1. बिलायत का, 2. परदेशी, 3. विदेश की बनी (वस्तु), 4. श्रेष्ठ वस्तु, (दे. बिल्लात)। **विलायती** (हि.)

बिलाप (पुं.) रुदन। **विलाप** (हि.)

बिलास (पुं.) विलास।

बिलूटणा (पुं.) बिलोटना, बिल्ली का बच्चा।

बिलोट्टा (पुं.) 1. कुतिया के ब्याने पर गली के बच्चों द्वारा मिट्टी के पात्र में कुतिया के लिए माँगी गई भीख, 2. (दे. बिलूटणा); **~माँगणा** भीख माँगना (कुतिया के लिए)।

बिलोड़णा (क्रि. स.) बिलोना, मथना।

बिलोणा (क्रि. स.) 1. दूध मथ कर मक्खन निकालना, 2. किसी बात को बार-बार दोहराना, 3. तत्त्व-मंथन करना, सार निकालना, 4. रौंदना; (पुं.) बड़ी बिलोवनी; **थूक~** व्यर्थ की बात कहते रहना। **बिलोना** (हि.)

बिलोणिया (पुं.) एक अहीर गोत; (वि.) (दूध आदि) बिलोने वाला।

बिलोना (क्रि. स.) दे. बिलोणा।

बिलोवणा (क्रि.स.) दे. बिलोणा; (पुं.) बड़ी बिलोवनी।

बिलोवणी (स्त्री.) दूध मथने का पात्र जिसमें रात्रि के समय दूध जमाया जाता है तथा प्रातःकाल रई या मथानी से मथा जाता है, (दे. जमावणी); **~बिलोणा** दूध बिलोना।
बिलोवनी (हि.)

बिल्टी (स्त्री.) सरकारी माध्यम से रेल द्वारा मँगवाया गया सामान; **~कटवाणा** पत्ता कटवाना। **बिलटी** (हि.)

बिल्लात (पुं.) 1. अंग्रेज़ों का देश, 2. गोरी चमड़ी के लोगों का देश, 3. दूर देश, 4. श्रेष्ठ स्थान; **~चढणा** विदेशी आक्रमण होना; **च्यार~** इंग्लैंड, फ्रांस, पुर्तगाल और जर्मनी आदि चार देश; **~जाणा** 1. परदेश जाना, 2. दूरी के स्थान पर जाना; **~जीतणा** गढ़ जीतना; **~पढणा** 1. विदेश में जाकर पढ़ना, 2. म्लेच्छ भाषा पढ़ना।
विलायत (हि.)

बिल्लात्ती (वि.) 1. विलायती, 2. परदेशी, 3. श्रेष्ठ, सुंदर और टिकाऊ (वस्तु)।
विलायती (हि.)

बिल्ली (स्त्री.) दे. बिलाई[1]; **~के मुँह तैं काटणा** किसी वस्तु को वस्त्र में लपेट कर दाँत से काटना (बच्चे इस प्रकार काटी वस्तु को उच्छिष्ट नहीं मानते)।

बिल्लोरी (वि.) बिल्लोर नामक स्थान से संबंधित (चूड़ियाँ)।

बिवस्था (स्त्री.) प्रबंध। **व्यवस्था** (हि.)

बिवहार (पुं.) व्यवहार, बर्ताव।

बिवाई (स्त्री.) अधिक पानी, ठंड आदि के कारण पैर (विशेषकर एड़ी) तथा हथेली आदि फटने का रोग; **~पाटणा** बिवाई फटना; **~-सी आँख** छोटी आँखें।

बिवाड़ (पुं.) 1. बहुत मोटी बिवाई, 2. भूमि आदि में पड़ने वाली दरार; **~पाटणा** 1. अनावृष्टि के कारण भूमि फटना, 2. बड़ी बिवाई होना; **~-सी आँख** मोटी आँखें।

बिवाण (पुं.) दे. बिमाण।

बिवाणा (क्रि. स.) 1. पशु के प्रजनन में सहायता करना, 2. हराना, 2. थकाना।
बिवाना (हि.)

बिवान (पुं.) दे. बिमाण।

बिवाहणा (क्रि. स.) विवाह कराने में सहयोग देना।

बिसंभर (पुं.) विश्व का भरण-पोषण करने वाला, भगवान। **विश्वंभर** (हि.)

बिस (पुं.) ज़हर; **~बी नाँ मिलणा** 1. मौत न मिलना, 2. भूखों मरना। **विष** (हि.)

बिसकंठा (पुं.) हाथ पर उठने वाला फोड़ा (जो धारणा के अनुसार इंद्र-धनुष की ओर अंगुली से इशारा करने के कारण होता है), हाथ का एक फोड़ा।

बिसकन्या (स्त्री.) विष-कन्या।

बिसणूँ (पुं.) 1. लक्ष्मी के पति जिनका निवास क्षीर सागर में है, 2. भगवान। **विष्णु** (हि.)

बिसधर (पुं.) दे. बिसियर।

बिसन (पुं.) दे. बिसणूँ।

बिसनपुरी (स्त्री.) 1. वैकुंठ-धाम, 2. सद् वैष्णव या विष्णु के उपासक को मृत्यु के बाद मिलने वाला स्थान। **विष्णुपुरी** (हि.)

बिसनी (वि.) किसी व्यसन में लिप्त, जैसे-बिद्या बिसनी। **व्यसनी** (हि.)

बिसमणा (क्रि. अ.) फूटना।

बिसमा (वि.) टूटा हुआ।

बिसर (अव्य.) 1. बग़ैर, बिना, 2. भरोसे पर, 3. आश्रय पर, 4. प्रतीक्षा में; **~करणा** किसी के भरोसे छोड़ना; **~बैठणा** 1. किसी की सहायता के भरोसे रहना, 2. प्रतीक्षा में बैठना; **~राखणा** समय पर अपेक्षित सहायता न करना; **~होणा** पराश्रित होना।

बिसरजन (पुं.) विसर्जन।

बिसरणा (क्रि. स.) 1. भूलना, ध्यान से उतरना, 2. मन से उतरना। **बिसरना** (हि.)

बिसरना (क्रि. स.) दे. बिसरणा।

बिसराना (क्रि. स.) दे. बिसराह्णा।

बिसराम (पुं.) आराम, चैन की घड़ी। **विश्राम** (हि.)

बिसराह्णा (क्रि. स.) 1. निंदा करना, 2. 'सराहणा' का विलोम-सराह मत, बिसराह्णा पड़ैगा, 3. उपेक्षा करना, 4. भुलाना।

बिसव करमाँ (पुं.) 1. विश्वकर्मा, (इनकी जयंती कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को मनाते हैं (बढ़ई इस दिन भवन-निर्माण का काम बंद रखते हैं)), 2. भगवान, सृष्टि को रचने वाला, 3. खाती जाति का व्यक्ति, 4. बढ़ई, (दे. जाँगड़ा)। **विश्वकर्मा** (हि.)

बिसवा (पुं.) 1. एक बीधे का बीसवाँ भाग, 2. भूमि, 3. संपत्ति। **बिस्वा** (हि.)

बिसवानसी (स्त्री.) बिस्वा का बीसवाँ भाग।

बिसवा मित्तर (पुं.) कौशिक ऋषि। **विश्वामित्र** (हि.)

बिसवास (पुं.) भरोसा। **विश्वास** (हि.)

बिसाणा (क्रि. स.) दे. बिसाहणा।

बिसात[1] (स्त्री.) हैसियत।

बिसात[2] (स्त्री.) वह फलक जिस पर शतरंज खेली जाती है।

बिसाती (पुं.) 1. छोटा व्यापारी, 2. खरीदरार।

बिसारणा (क्रि. स.) भुलना, विस्मृत करना। **बिसारना** (हि.)

बिसारद (वि.) 1. निपुण, 2. गुणी। **विशारद** (हि.)

बिसाळ (पुं.) दे. ओबरा।

बिसाला (स्त्री.) द्विशाला। दे. दुकड़िया।

बिसास (पुं.) शंका, आशंका–नंगे सिर मत जा, लोग बिसास करैंघे।

बिसासत (स्त्री.) दे. बसेब्बा, बसावट।

बिसाह (पुं.) 1. रोज़गार, 2. ख़रीदारी–अरै के बिसाह लिया?, 3. ख़रीदार; **~करणा** ख़रीदना। **व्यवसाय** (हि.)

बिसाहणा (क्रि. स.) 1. ख़रीदना, 2. व्यापार करना।

बिसाहती (पुं.) 1. व्यवसायी, 2. रंग, डोरे, नाले आदि बेचने वाला।

बिसाहना (क्रि. स.) दे. बिसाहणा।

बिसाही (स्त्री.) ख़रीदारी; (पुं.) व्यवसायी, व्यापारी।

बिसियर (पुं.) साँप। **विषधर** (हि.)

बिसूँडिया (वि.) एक साँप।

बिसैबिकार (पुं.) विषयविकार।

बिस्कुट (पुं.) खमीरी आटे की तंदूर पर पकी हुई टिकिया विशेष।

बिस्टाँक (पुं.) अंतर्मन में आगामी घटनाओं की पड़ने वाली परछाईं।

बिस्तर (पुं.) बिछौना।

बिस्तरा (पुं.) 1. बिछौना, 2. बोरिया-बिस्तर, घर का सामान; **~ठाणा** कूच करना–रै अंगरेज बिस्तरा ठाले राज तेरा डिगता आवै सै (लो.गी.)। **बिस्तर** (हि.)

बिस्सा (पुं.) 1. ज़मीन, 2. संपत्ति, 3. भूमि का एक माप (बीस बिस्वानसी का एक बिस्सा)। **बिस्वा** (हि.)

बिहाई (स्त्री.) 1. पुत्र-जन्म पर गाया जाने वाला गीत, भाग्य-गीत, 2. विवाह के गीत, 3. साधारण गीत।

बिहूणी (वि.) विहीन, शून्य–बिन बाल्लम हो नार बिहूणी (लो. गी.)।

बिहोई (स्त्री.) दसूठन के बाद गाए जाने वाले झुनझुना आदि गीत।

बींट (स्त्री.) पक्षी का विष्ठा। **बीट** (हि.)

बींट्टा (पुं.) कुल्हाड़ी, कस्सी आदि की मूठ।

बींड[1] (पुं.) रस्सी आदि को लपेट कर बनाया गया गोला।

बींड[2] (पुं.) दे. बीट्टा।

बींडळ (पुं.) किसी वस्तु को लपेट कर बनाया हुआ बंडल या गोला। **बंडल** (हि.)

बींड्डी (स्त्री.) रस्सी को लपेट कर बनाई गई बींडी, रस्सी का बंडल, रस्सी का गोला; **~गेरणा/फेरणा** चारपाई बुनते समय बींडी को विशेष विधि से डालने की क्रिया। **बींडी** (हि.)

बींद (पुं.) बन्ना (सीमित प्रयोग)।

बींदणी (स्त्री.) बन्नी, (दे. बंदड़ी)।

बींधणा (क्रि. स.) 1. सूई आदि से छेदना, 2. मार्ग अवरुद्ध करना, 3. जादू-टोना करना। **बींधना** (हि.)

बी (अव्य.) 1. भी, जरूर, अवश्य–तूँ बी आइये, 2. तक, लों–इब बी नाँ आया, 3. प्रमाण, मात्रा–इतणा सा बी साज्झा कोन्या।

बीग्गू (पुं.) कुत्ते के शरीर या बालों पर लगने वाला कलीला, 2. मोटी फुंसी; **~पाकणा** फुंसी पकना, मोटी फुंसी होना।

बीग्धा (पुं.) 1. बीस विस्वे का वर्ग मान (इसका मान 3225 वर्ग गज माना जाता है), 2. एक बीधे का खेत, 3. खेत–सै थारै कोए बीग्धा? (बीघा कच्चा और पक्का दो प्रकार का है जिनके नाप विभिन्न प्रांतों के अनुसार

भिन्न-भिन्न हैं); **~बोणा** खेती जोतना। **बीघा** (हि.)

बीघा (पुं.) दे. बीग्घा।

बीघौत्ती (स्त्री.) दे. मेवात्ती।

बीच (पुं.) 1. मध्य भाग, 2. अंतराल, अवकाश, समय–इस बीच बी वो नाँ पौंहच्या, 3. में, अंदर; **~ -बिचाळा** 1. मध्यस्थता, 2. ठीक मध्य में; **बीचम-~** बीचों-बीच; **~मैं कूदणा** व्यर्थ में टाँग अड़ाना; **~मैं गंगा देणा** गंगा की सौगंध लेना।

बीचला (वि.) बीच का, दे. बिचला।

बीच्चळणा (क्रि. अ.) दे. बिचळणा।

बीच्छू (पुं.) एक जहरीला कीड़ा। **बिच्छू** (हि.)

बीछटणा (क्रि. अ.) दे. बिछड़णा। **बिछुड़ना** (हि.)

बीछू (पुं.) दे. बीच्छू।

बीज[1] (पुं.) 1. पेड़-पौधे का वह दाना या अंश जिससे पौधा अंकुरित होता है, 2. जड़, मूल, 3. वीर्य, 4. संतान, जैसे–तूँ किस का बीज सै?; **~बोणा** 1. ऐसा कार्य करना जिससे आगे कोई जटिलता उत्पन्न हो, 2. बीजना; **~-मार मींह** दे. राप्पड़।

बीज[2] (स्त्री.) दे. बीजळी।

बीजगड़ा (पुं.) ईख को दबाकर अंकुरित करने के लिए बनाया गया गढ़ा।

बीजगणित (पुं.) गणित का वह भेद जिसमें अक्षरों को संख्याओं का द्योतक माना जाता है।

बीजणा (पुं.) हाथ से डुलाने का पंखा; (क्रि. स.) बीज बोना; **बीज्जापर का~** बीजापुर के प्रसिद्ध पंखे (गीतों में वर्णित); **~हाँकणा** विजन या पंखा डुला कर हवा करना। **विजन** (हि.)

बीजणी (स्त्री.) 1. बीज की थैली, 2. छोटा पंखा।

बीजळी (स्त्री.) 1. तड़ित, 2. जल, कोयले, ताप आदि से उत्पन्न बिजली या प्रकाश, 3. अत्यंत तेज़ प्रकाश, 4. वज्र; **~का टूक** बहुत सुंदर (स्त्री); **~झमालणा** बिजली चमकना; **~टूटणा** 1. भयंकर आपत्ति पड़ना, 2. बिजली गिरना; **~ठाणा** बिजली गिरने से मारा जाना–राम करै तनैं बीजळी ठाले; **~पड़णा** 1. कोई वस्तु अलभ्य होना–**सीमँट** पै बी के बीजळी पड़गी?, 2. **पूर्णतः** नष्ट होना, 3. एक गाली, 4. बिजली गिरना; **~मारणा** बिजली के आघात से मरना। **बिजली** (हि.)

बीजाळा (वि.) बीज के लिए सुरक्षित रखा (अन्न)।

बीजोंढी (स्त्री.) 1. बीज की थैली, 2. गन्ने को अंकुरित करने के लिए बनाया गया गड्ढा, (दे. रथोंढी)।

बीज्जक (पुं.) वह सूची जिसमें माल की मात्रा, दर आदि लिखी हो। **बीजक** (हि.)

बीज्जळ (पुं.) दे. बीजळी।

बीज्जू (पुं.) 1. नए सिरे से बीज (गंडेरी) डाल कर बोया गया ईख (मूढ़ी का नहीं), 2. (दे. बिज्जू)।

बीज्जो बाँदरी (स्त्री.) बच्चों द्वारा खेला जाने वाला एक खेल।

बीझण (स्त्री.) मन की चिंता। **~लागणा**– चिंतित होना।

बीझणा (क्रि. अ.) 1. अन्न आदि का कीड़ों द्वारा खोखला किया जाना, 2. मोटी चेचक के कारण शरीर पर दाग़ पड़ना; (वि.) वह जो जल्दी बीझ जाए। **बीझना** (हि.)

बीटरू (पुं.) 1. तुतई का छिद्र, मिट्टी के पात्र के बीच में बनाया हुआ छिद्र, छिद्र, 2. अंकुर, 3. योनि का मणिका, 4. स्तन का अंकुर, (दे. घूँडरू)।

बीट्टा (पुं.) दे. बींट्टा।

बीड़[1] (पुं.) बीहड़ जंगल, (दे. बणी)।

बीड़[2] (अव्य.) बदले में। उ. देरी बीड़ मैं मरज्याँ।

बीड़ा[1] (पुं.) 1. पान की गिलौरी, 2. नावों का समूह, 3. किसी काम के लिए उद्यत होने की स्थिति; **~ठाणा** 1. साहसपूर्ण कार्य करना, 2. कार्य करने की जिम्मेवारी लेना; **~बाँधणा** साहसपूर्ण कार्य करने की तैयारी करना।

बीड़ा[2] (पुं.) एक रोग।

बीड़ी (स्त्री.) धूम्रपान के लिए पत्ते में तंबाकू आदि लपेट कर तैयार की गई नलिका या चुर्ट।

बीड्डू (वि.) वह वस्तु जो फूल कर मोटी हो गई हो, जैसे–मोटा कीड़ा, बड़ी फुंसी आदि; **~पाकणा** फुंसी पकना।

बीणा (स्त्री.) 1. नारद जी द्वारा धारणा किया जाने वाला एक वाद्य-यंत्र, 2. सितार जैसा एक बाजा, 3. बीन। **वीणा** (हि.)

बीत (स्त्री.) ग्वाले का पारिश्रमिक, मज़दूरी (पारिश्रमिक)।

बीतणा (क्रि. अ.) 1. व्यतीत होना, 2. समाप्त होना–म्हारे तै सारे पइसे बीत लिए। **बीतना** (हि.)

बीतना (क्रि. अ.) दे. बीतणा।

बीत्ता[1] (पुं.) एक बालिश्त का नाप; (क्रि. अ.) 'बीतणा' क्रिया का भू. का., एकव., पुं. रूप।

बीत्ता[2] (पुं.) साहस–बीत्ता सै तै आज्या।

बीद (स्त्री.) दे. बिरद[2] खोल्हणा।

बीन (स्त्री.) सँपेरे की बीन जो तूंबे के फल को खोखला करके बनाई जाती है और जिसका स्वर मनमोहक होता है; **~-बाँसुरी नाँच** बाँगर प्रदेश का एक नृत्य।

बीनना (क्रि. स.) चुगना, छाँटना।

बीपर (पुं.) विप्र।

बीन्ना (वि.) 1. चतुर (स्त्री.), प्रवीण, 2. 'फूहड़' का विलोम। **प्रवीण** (हि.)

बीब्बी (स्त्री.) 1. सम्मानित महिला के लिए प्रयुक्त शब्द, 2. मालकिन, 3. पत्नी। **बीबी** (हि.)

बीमा (पुं.) दे. बीम्माँ।

बीमार (वि.) दे. बिमार।

बीमारी (स्त्री.) दे. बिमारी।

बीम्माँ (पुं.) 1. इंश्योरेंस, कुछ निश्चित धन देकर संभावित आर्थिक आदि हानि पूरा करने की जिम्मावारी लेने का कार्य, 2. पत्र या पार्सल आदि जिसका इस प्रकार बीमा हुआ हो। **बीमा** (हि.)

बीयाबान (पुं.) दे. बियाबान।

बीर (स्त्री.) 1. पत्नी, 2. स्त्री; (वि.) नामर्द; (पुं.) 1. भाई, स्त्रियों द्वारा भाई के लिए प्रयुक्त शब्द, 2. योद्धा, 3. पुत्र, 4. पति। **बीर/वीर** (हि.)

बीरण (पुं.) भाई (प्यार में प्रयुक्त)।

बीर बाँट (स्त्री.) 1. दे. चूँड्डा बाँट। 2. दे. तागड़ी-पागड़ी बाँट।

बीरबान्नी (स्त्री.) 1. औरत, स्त्री, 2. पत्नी।

बीर बिकरमाँजीत (पुं.) दे. बिकरमाँजीत। **वीर विक्रमादित्य** (हि.)

बीराँबाई (स्त्री.) राजस्थान की एक कृष्ण-भक्त कवयित्री और साध्वी जिसके

पद श्रद्धा से गाए जाते हैं। **मीराबाई** (हि.)

बीरा (पुं.) दे. बीरण।

बीस (वि.) बीस की संख्या; **~बिसवे** निश्चित रूप से, पूर्ण रूप से–ज्योतसी की बात बीस बिसवे ठीक लिकड़ी।

बीस्सा[1] (पुं.) वे शुद्ध हिंदू जातियाँ जिनमें करेवा-विवाह नहीं होता।

बीस्सा[2] (पुं.) 1. बीस वस्तुओं का समूह, 2. वह (कुत्ता) जिसके बीस पंजे हों, 3. त्यागी गोत का उप-गोत, 4. बनिया जाति का एक गोत। **बीसा** (हि.)

बीस्सी (स्त्री.) 1. बीस की गिनती, एक कौड़ी, 2. बीस-बीस करके गिनने की एक प्रणाली; **~-कीस्सी** 1. बीस पूली बनने पर एक पूली (21वीं) मज़दूरी के रूप में देना, 2. बीस पूली पूरी होने पर एक पूली अलग से डालना और फिर से एक की गिनती बीस तक गिनना; **पाँच~** बीस-बीस करके पाँच बार गिनी गई सौ तक की गिनती, सौ की संख्या, बीस-बीस की पाँच ढेरियों में सौ वस्तुओं का समूह। **बीसी** (हि.)

बुंगल (पुं.) दे. तिंगल।

बुंदा (पुं.) दे. बूँदा।

बुंदेला (वि.) दे. बुंदेल्ला।

बुंदेल्ला (वि.) 1. बुंदेल क्षेत्र का (वीर), 2. बुंदेल क्षेत्र का निवासी।

बुआ (स्त्री.) दे. भूआ।

बुआई (स्त्री.) 1. बोने की क्रिया या भाव, 2. बोने का पारिश्रमिक; (क्रि. स.) 'बुआणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

बुआण (पुं.) विमान।

बुआणा (क्रि. स.) खेत का बोआना।

बुआरु (वि.) पहली बार बोया हुआ [ईख (मूढ़ी वाला नहीं)], 1. (दे. बीज्जू), 2. (दे. मुड्ढी)।

बुक[1] (वि.) अधिक श्वेत, बेदाग़, बगुला सा सफ़ेद।

बुक[2] (स्त्री.) दे. ओक।

बुकाल (पुं.) बनिया, जैसे–बणियाँ-बुकाल, बनिया का अनुवर्त्ती शब्द।

बुक्का (पुं.) 1. अंजलिभर खाद्य पदार्थ, 2. अंजलि, (दे. बुगटा); **~मारणा** (हथेली पर रख कर) फाँकना।

बुख (पुं.) बालू रेत जो कुआँ खोदते समय निकलता है।

बुखार (पुं.) ज्वर। (दे. ताप)।

बुखारा (पुं.) 1. पानी पीने का बड़ा गिलास, 2. अन्न भंडारित करने का कोठा, अन्न रखने का स्थान, (दे. ठेक्का)। **आबखोरा** (हि.)

बुखारी (स्त्री.) 1. टाट आदि सीकर अन्न भंडारित करने के लिए बनाया गया बोरा, 2. अन्न का कोठा।

बुग (पुं.) दे. बुगला।

बुगचा[1] (पुं.) दे. बुगटा।

बुगचा[2] (पुं.) संदूक। दे. बगटा।

बुगटा (पुं.) अंजलि, अंजलि भर, (दे. बुक्का); **~भरणा** 1. मुट्ठी भर वस्तु उठाना, 2. सामर्थ्य से अधिक समेटना, 3. अधिक ज़िम्मावारी लेना; **~मारणा** हथेली पर कोई वस्तु लेकर फाँकना।

बुगताणा (क्रि. स.) 1. दे. मोरणा, 2. दे. भोरणा।

बुगला (पुं.) एक श्वेत जलचर पक्षी; **~-भगत** छली, कपटी। **बगुला** (हि.)

बुग्गी (स्त्री.) भैंसा गाड़ी।

बुचणा (क्रि. अ.) फूल आदि का बंद होना।

बुज़दिल (वि.) भीरु, डरपोक, कायर।

बुजुर्ग (पुं.) पूर्वज, पुरखा; (वि.) 1. वृद्ध, बड़ा, 2. सम्मानित।

बुझणा (क्रि. अ.) 1. आग, दीपक आदि जलना बंद होना, 2. प्रकाश-हीन होना, 3. गरम लोहे आदि का पानी में ठंडा होना, 4. किसी वस्तु का विष में डुबोया जाना, 5. मन की इच्छा समाप्त होना; (वि.) जो शीघ्र बुझ जाए। **बुझना** (हि.)

बुटका (पुं.) दे. बुगटा।

बुझना (क्रि. अ.) दे. बुझणा।

बुझवाणा (क्रि. स.) 1. पुछवाना, 2. तलाश करवाना, 3. ठंडा करवाना, आग आदि बुझवाना, 4. किसी की साक्षी दिलाना। **बुझवाना** (हि.)

बुझाणा (क्रि. स.) 1. आग बुझाना, 2. शांत करना, 3. पहेली का उत्तर देना, (दे. बूज्झा)। **बुझाना** (हि.)

बुझाना (क्रि. स.) दे. बुझाणा।

बुड़क (स्त्री.) 1. किसी खाद्य वस्तु को झटके के साथ दाँत से काटने का भाव या क्रिया, 2. मुँह से काटने की क्रिया; (क्रि. स.) 'बुड़कणा' क्रिया का आदे. रूप; **~मारणा** मुँह से काटना, मुँह से काट-काट कर खाना।

बुड़कणा (क्रि. स.) दाँत से झटके के साथ काट-काट कर खाना।

बुड़कला (पुं.) गोबर से बनाया गया कुछ चक्राकार-गोलाकार पिंड जिसे अधिकतर 'ढाल' के साथ पिरोया जाता है, (दे. ढाल); **~-सा होठ** मोटा ओष्ठ।

बुड़का (पुं.) दाँतों से काटने या काटखाने की क्रिया; **~भरणा** दाँतों से काटना, दाँत मारना; **~मारणा** मुँह से काटना, दाँत मारना।

बुड़की (स्त्री.) 1. दे. बुड़क, 2. दे. बुरकी।

बुड़बुड़ाना (क्रि. अ.) दे. बड़बड़ाणा।

बुड्ढा (वि.) दे. बूड्ढा।

बुढंगड़ (वि.) बूढ़ा।

बुढ़ापा (पुं.) दे. बुढाप्पा।

बुढाप्पा (पुं.) 1. वृद्धावस्था, 2. अकर्मण्यता की स्थिति; **~(-प्पे) की लाट्ठी** पुत्र, उक्ति–सम्मान बुढाप्पा आइया, धोळे होगे सूत, के तै धोरै धन हो, या बेट्टे हों सपूत। **बुढ़ापा** (हि.)

बुढिया (स्त्री.) बूढ़ी, बूढ़ी महिला।

बुढेरा (वि.) बूढ़ा, वृद्ध।

बुणत (स्त्री.) बुनती, बुनाई; **~गेरणा/ घालणा** बुनती में नमूना डालना।

बुणती (स्त्री.) 1. बुनते समय डाला गया नमूना, 2. बुनने का काम; **~बुणणा** बुनाई में नमूना डालना। **बुनती** (हि.)

बुणाई (स्त्री.) 1. बुनने का कार्य, 2. बुनने का पारिश्रमिक; **~-उधेड़ी** मन की उधेड़-बुन, मन में आने वाले उलटे-सीधे विचार; **~~मैं पड़णा** विचारों में डूबना, चिंतित होना। **बुनाई** (हि.)

बुत (पुं.) 1. मूर्ति, 2. बिना हिले-डुले खड़े होने की स्थिति।

बुद्धि (स्त्री.) 1. बुद्धि, 2. मन, 3. विचार, 4. सलाह–तू अपणी बुद्धि दे; **~भिस्टळ होणा** 1. बुद्धि भ्रष्ट होना, 2. अनाचार करना।

बद्धिमान (वि.) धीमान, चतुर।

बुद्धिमानी (स्त्री.) बुद्धिमत्ता, समझदारी।

बुद्धिहीन (वि.) मूर्ख।

बुध (पुं.) 1. बुधवार का दिन, 2. बुधग्रह; (स्त्री.) बुद्धि।

बुधमान (वि.) समझदार। **बुद्धिमान** (हि.)

बुधवार (पुं.) सप्ताह के सात दिनों में से एक जो मंगलवार के बाद आता है।

बुनकर (पुं.) वस्त्र आदि बुनने वाला।

बुनत (स्त्री.) दे. बुणत।

बुनना (क्रि. स.) दे. बुणणा।

बुनाई (स्त्री.) दे. बुणाई

बुनावट (स्त्री.) दे. बुणती।

बुनियाद (स्त्री.) नींव, आधारशिला।

बुनियादी (वि.) आधारभूत।

बुरक (स्त्री.) बुरकने, भुरकने या बखेरने का भाव या क्रिया; (क्रि. स.) 'बुरकणा' क्रिया का आदे. रूप; **~लाणा** बूरा या अन्या भुरभुरी वस्तु को बुरकाना।

बुरकणा (क्रि. स.) 1. भुरभुरी वस्तु को हाथ से बखेरना, 2. खीर पर बूरा या शक्कर बुरकना, 3. किसी बात को व्याप्त करना या फैलाना, 4. कान में पूरना, 5. छिड़कना। **बुरकना** (हि.)

बुरकना (क्रि. स.) दे. बुरकणा।

बुरका (पुं.) मुसलमान महिलाओं का मुँह, शरीर ढाँपने का पर्दा; (क्रि.स.) 'बुरकाणा' क्रिया का आदे. रूप।

बुरकाणा (क्रि. स.) भुरभुरी वस्तु को फैला कर या बुरक कर छिड़कना।

बुरकी (स्त्री.) 1. बुरकने का भाव, 2. छिड़कने का भाव; (क्रि. स.) 'बुरकणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिंग रूप।

बुरख (स्त्री.) अधिक पैदल चलने या भागने से उत्पन्न पैरों की थकान, पैदल चलने से उत्पन्न मांसपेशियों की अकड़न, थकान से उत्पन्न पेशियों की अकड़न; **~चढणा** अधिक चलने से मांसपेशियों में अकड़न या थकान होना; **~तारणा** थकान उतारना, गर्म पानी में पैर धोकर या पैर दबवा कर थकान दूर करना।

बुरज (पुं.) 1. कूएँ, बावड़ी, तालाब आदि का गुंबद, 2. गुंबद। **बुर्ज** (हि.)

बुरजी (स्त्री.) छोटा गुंबद। **बुर्जी** (हि.)

बुरझंझन (स्त्री.) नाड़े की तरह का कटि का एक आभूषण जो घाघरे के ऊपर सामने की ओर दोनों जाँघों के बीच घुटनों से कुछ ऊपर तक लटकता है।

बुरा (वि.) 1. ख़राब, 2. खोटे आचरण वाला।

बुरादा (पुं.) दे. बुराद्दा।

बुराद्दा (पुं.) लकड़ी आदि का चूरा, चूरा। **बुरादा** (हि.)

बुरुश (पुं.) कूँची।

बुर्ज (पुं.) दे. बुरज।

बुर्दा बिकाऊ (स्त्री.) अपहृत महिला। उदा. –बुर्दा बिकाऊ में लिखी गई थी। (लचं)

बुलंद (वि.) ऊँचा।

बुळध (पुं.) बैल, (दे. ढाँड्ढा); (वि.) 1. पशुवत्, 2. मूर्ख; **~(-धाँ) की सूँ** गोधन की सौगंध; **~ब्याणा** असाधारण घटना घटित होना; **~-सा** हृष्ट-पुष्ट।

बुलबला (पुं.) पानी आदि का बुलबुला; (वि.) क्षणिक जीवन का, क्षण भंगुर; **~आणा** अंतिम श्वास से पूर्व मुँह पर बुलबुला आना, अंतिम क्षण आना; **~(ल्याँ) आळा मींह** मोटी बूँदों की वर्षा; **~फूटणा** 1. रहस्य खुलना, 2. मरना; **~-सा** 1. अत्यंत कोमल, 2. क्षणिक जीवन। **बुलबुला** (हि.)

बुलबुल (स्त्री.) मीठा गाने वाली छोटी चिड़िया विशेष; **~पाळणा** किसी

फुंसी-फोड़े के रोग को ठीक न होने देना।

बुलबुला (पुं.) दे. बुलबला

बुलबुलाना (क्रि.स.) जुगालना (मेवा.)।

बुलवाणा (क्रि. स.) 1. बुलाने का संदेशा भेजना, 2. उलटा-सीधा बोलने के लिए बाध्य करना, 3. हार मनवाना। **बुलवाना** (हि.)

बुलवाना (क्रि. स.) दे. बुलवाणा।

बुला (स्त्री.) बुलाने का भाव या क्रिया; (क्रि. स.) 'बुलाणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पड़णा/होणा** अधिकारी द्वारा बुलाया जाना। **बुलावा** (हि.)

बुला आळा (पुं.) धांनक आदि जाति का वह व्यक्ति जो घर घर जा कर सभा में सम्मिलित होने का बुलावा देता है। 1. दे. रेळ फेरणा। 2. दे. बुला।

बुलाक (स्त्री.) 1. नासिका-छिद्रों के बीच की परत में पहना जाने वाला छोटा वलय, 2. नाक का एक गहना।

बुलाणा (क्रि. स.) 1. आवाज़ देकर बुलाना, पुकारना, 2. निकट या दूर वाले व्यक्ति को बोल कर या संकेत से आने को कहना, 3. बच्चे को बोलना सिखाना, 4. मौन भंग करवाना, 5. प्रेमी या शत्रु को निकट बुलाना, 6. किसी अधिकारी द्वारा छोटे व्यक्ति को बुलाने का आदेश देना, 7. मित्रता करवाना, टूटी मित्रता जुड़वाना, 8. हराना, हार माँनने पर बाध्य करना, 9. यौन-संबंध के लिए प्रेरित करना, 10. निमंत्रण देना। **बुलाना** (हि.)

बुलाना (क्रि. स.) दे. बुलाणा।

बुळाळाँ (पुं.) शोर।

बुलावणा (क्रि. स.) दे. बुलाणा। **बुलाना** (हि.)

बुलावा (पुं.) 1. निमंत्रण, 2. गीतों का निमंत्रण; **राम~** मृत्यु-संदेश; **~~ आणा** मृत्यु का समय आना।

बुवाई (स्त्री.) 1. बोने की क्रिया (प्रत्येक पक्ष की प्रतिपदा और चतुर्दशी को किसान बुवाई नहीं करते), 2. बोने की मज़दूरी; (क्रि. स.) 'बुआणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~-जुताई** 1. बोने-जोतने का काम, 2. बोने-जोतने का पारिश्रमिक। **बुआई** (हि.)

बुवाणा (क्रि. स.) दे. बुआणा।

बुवेरा (पुं.) दे. बवेरा।

बुहाणा (क्रि. स.) पशु को गाभिन कराना।

बुहार (पुं.) व्यवहार।

बुहारणा (क्रि. स.) 1. झाड़ू देना, 2. झाड़ना; **~झाड़णा** घर की सफ़ाई करना। **बुहारना** (हि.)

बुहारना (क्रि. स.) दे. बुहारणा।

बुहारी (स्त्री.) झाड़ू, डाभ की पकी सीकों को बाँधकर बनाई झाड़ू; (क्रि. स.) 'बुहारणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~-झाड़ू करणा** घर में सफ़ाई करना; **~देणा** 1. नष्ट-भ्रष्ट करना, 2. लूटना; **~मारणा** 1. अभ्यागत का अपमान करना, 2. झाड़ू देना।

बुहारु (वि.) दे. बुहाळ।

बुहाळ (वि.) 1. पशु की उन्मादित होने, गरमाने या गाभिन होने की इच्छा की स्थिति—भैंस बुहाळ सै, 2. गाभिन करने वाला—यो झोट्टा बुहाळ नाँ रह्या।

बूँग्गा (पुं.) चारे को सुरक्षित रखने के लिए फूस, तिनके आदि को जोड़कर बनाया गया शंकू आकार का अस्थायी ढाँचा जिसे ऊपर से फूँस से ढाँप दिया जाता है; **~बाँधणा** बूँगा बनाना।

बूँट[1] (पुं.) चने का पौधा; **~चराणा** 1. खेत चराना, 2. हानि पहुँचाना।

बूँट[2] (पुं.) अंग्रेज़ी जूता, जूता, बूट। **बूट** (हि.)

बूँटी (स्त्री.) दे. बूट्टी।

बूँट्टी (स्त्री.) दे. बूट्टी।

बूँत (पुं.) दे. ब्योंत।

बूँद[1] (स्त्री.) 1. वर्षा का कण, 2. जलकण—झोड़ मैं बूँद भी पाणी कोन्या, 3. अल्प मात्रा, 4. वीर्य, 5. नवजात शिशु, 6. रक्त का क़तरा, 7. आँख का जल, 8. वर्षा; **~बरसणा /होणा** वर्षा होना।

बूँद[2] (स्त्री.) छींट आदि की ओढ़नी।

बूँदा (पुं.) कान का लटकने वाला एक आभूषण।

बूँदा-बाँदी (स्त्री.) दे. बूँद्दा-बाँद्दी।

बूँदी (स्त्री.) दे. बूँद्दी।

बूँद्दा-बाँद्दी (स्त्री.) 1. हल्की वर्षा, 2. रुक-रुक कर होने वाली वर्षा। **बूँदा-बाँदी** (हि.)

बूँद्दी (स्त्री.) 1. एक मिठाई जो बेसन से बनती है, 2. बेसन के छोटे-छोटे पकौड़े, नुकती।

बूँब (पुं.) दे. बंबा।

बूँबळ (पुं.) दे. बूँबळा।

बूँबळा (पुं.) ज्वार, बाजरे आदि की बाल या बाली का वह भाग जिसमें दाना पकता है, 1. (दे. राळी), 2. (दे. बूर); (वि.) सार-रहित; **~(-ल्याँ) मैं लठ मारणा** व्यर्थ का परिश्रम करना।

बूआ (स्त्री.) दे. भूआ।

बूकणा (क्रि. स.) दे. फाँकणा।

बूकळी (स्त्री.) दे. बूक्कळ।

बूक्कळ (स्त्री.) 1. चद्दर या ओढ़नी की छाती या मुँह पर फेंटा मारने की मुद्रा, 2. (दे. मुरगामटा); **~-गात्ती मैं रहणा** स्त्री का लज्जा के साथ पर्दे में रहना; **~बाँधणा/मारणा** गठरी बाँधना; **~लाणा** विमुख होना।

बूक्का (पुं.) दे. बुक्का।

बूचड़ (पुं.) दे. बूच्चड़। दे. हत्था।

बूचड़खाना (पुं.) दे. बूच्चड़ खाना।

बूचनी (स्त्री.) दे. बूजनी।

बूच्चड़ (पुं.) कसाई; (वि.) निर्दयी। **बूचड़** (हि.)

बूच्चड़ खान्ना (पुं) 1. (यवनों का) पशुवध करने का स्थान, 2. कसाईवाड़ा। **बूचड़ खाना** (हि.)

बूच्चा (वि.) 1. जिसके कान कटे हों, 2. निर्धन; **नंगा-~** 1. निर्धन, 2. जिसने आभूषण न पहने हों। **बूचा** (हि.)

बूजनी (स्त्री.) कान का एक भारी आभूषण, (दे. डेड्डे)।

बूज्झा (स्त्री.) 1. ज्योतिषी या सयाने से भूतकाल की घटना के विषय में पूछने का भाव, 2. भविष्य-वाणी; (पुं.) ज्योतिष के आधार पर प्रश्नों का उत्तर देने वाला (बूज्झा जूती, हुक्के, गुड़, थप्पड़ आदि के आधार पर भी प्रश्नों के उत्तर देता है); (क्रि.स.) 'बूझणा' क्रिया का भू. का, पुं रूप; **~कढवाणा / करवाणा / दिखवाणा/पड़वाणा** ज्योतिष के आधार पर गुमशुदा वस्तु का अता-पता पूछना; **~करणा** 1. गुप्त प्रश्नों का उत्तर देने का काम करना, 2. भूत या भविष्य के विषय में बताना; **~कहणा** गुप्त या रहस्य की बातें बताना; **~पाड़णा** फलित ज्योतिष

के आधार पर गुप्त रहस्य बताना; ~-सी पाड़णा सभी घटनाओं का सही-सही वर्णन कर देना, सभी बातें सत्य-सत्य कहना।

बूझ (स्त्री.) 1. पूछ, 2. महत्त्व, 3. सत्ता, 4. बुद्धि; (क्रि. स.) 'बूझणा' क्रिया का आदे. रूप; **~आणा** समझ आना, बुद्धि आना; **~करणा** महत्त्व देना, सम्मान देना; **~पड़णा** छानबीन होना, पूछताछ होना; **~होणा** 1. महत्त्व मिलना, 2. तलाश होना।

बूझणा (क्रि. स.) 1. बात पूछना, 2. आदेश प्राप्त करना, 3. महत्त्व देना, 4. पहेली का उत्तर पूछना, 5. परखना– आज बूज्झूँगा तनैं मैं, 6. रोकना-टोकना, 7. खैर-खबर लेना। **पूछना** (हि.)

बूझना (क्रि. स.) दे. बूझणा।

बूझागर (पुं.) ज्योतिष के आधार पर चोरी आदि का संकेत देने वाला व्यक्ति।

बूट (पुं.) 1. दे. बूँट[1], 2. दे. बूँट[2]।

बूटा (पुं.) दे. बूट्टा।

बूटी (स्त्री.) दे. बूट्टी।

बूट्टा (पुं.) 1. कढ़ाई, छपाई की आकृति या नमूना, 2. बड़ा पौधा। **बूटा** (हि.)

बूट्टी (स्त्री.) 1. ओषधि की जड़ी-बूँटी, ओषधि, 2. छोटा पौधा, 3. फूल, पेड़-पौधों के चित्र जो कढ़ाई, सिलाई आदि में चित्रित किए गए हों; **~देणा** 1. मंत्र देना, 2. सीख देना; **~सुँघाणा** अपने प्रभाव में करना। **बूटी** (हि.)

बूड्ढा (वि.) वृद्ध, वृद्धावस्था का; **~-खेड़ा** 1. उजड़े हुए गाँव के अवशेष (जहाँ की भूमि को श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है), 2. खंडित या उजड़ा गाँव; **~-ठेरा** 1. घर का बड़ा-बूढ़ा, 2. घर का समझदार व्यक्ति, 3. वृद्ध और समझदार मनुष्य। **बूढ़ा** (हि.)

बूढ-कवारी (स्त्री.) आयु पर्यंत कौमार्य-व्रत धारण करने वाली।

बूढ़ळा (वि.) बूढ़ा, वृद्ध।

बूढ़ळी (वि.) 1. वृद्धा, बूढ़ी, 2. 'बूड्ढ़ी' का लघुताद्योतक रूप।

बूढ़ सुहाग्गण (स्त्री.) 1. मृत्यु-पर्यंत सुहागिन, 2. जीवन-पर्यंत सुहागिन रहने का आशीर्वाद (जो अधिकांशतः बड़ी-बूढ़ी के पैर स्पर्श करने पर मिलता है); **~होणा** सधवा मरना।

बूढ़ा (वि.) दे. बूड्ढा।

बूता (पुं.) औक़ात, शक्ति, बल।

बूर[1] (पुं.) 1. आटे का चोकर, 2. अन्न का छिलका, (दे. राळी), 3. लकड़ी का बुरादा; (क्रि. स.) 'बूरणा' क्रिया का आदे. रूप; **~के लाड्डू** स्वाद- रहित परंतु आकर्षक वस्तु–घर- घिरस्ती बूर के लाड्डू सैं।

बूर[2] (पुं.) बाजरे, ज्वार आदि की बाल पर आने वाला बौर; **~आणा** (बाल या बाली पर) बौर आना; **~झड़णा** वर्षा या तेज़ आँधी के कारण बाजरे आदि की बालों से बौर का झड़णा। **बौर** (हि.)

बूरणा[1] (क्रि. स.) दे. बुरकणा।

बूरणा[2] (क्रि.) दफनाना।

बूरा[1] (वि.) भूरे रंग का, शुभ्र, (दे. भूरा)। **भूरा** (हि.)

बूरा[2] (स्त्री.) खाँड, पिसी चीनी; **~-चावळ** 1. वार-त्योहार का प्रमुख भोजन, 2. बटेऊ को खिलाया जाने वाला प्रमुख भोजन; **~~पाड़णा** 1. रिश्तेदारियों में खाते-पीते फिरना, 2. बूरा-चावल के भोजन का आनंद लेना।

बूरा[3] (पुं.) काँटा, नाक का आभूषण जो एक या दोनों नथुनों में पहना जाता है।

बूरी (स्त्री.) 1. भूरे रंग की भैंस, 2. अधिक दूध देने वाली भैंस, **~खोह्लणा** भैंस की चोरी करना, हानि पहुँचाना; **~बाँधणा** घर पर दूध का प्रबंध रखना।

बूहणा (क्रि. स.) पशु को गाभिन करना; (वि.) बूहने में सक्षम।

बृहत्रला (स्त्री.) दे. हीजड़ा।

बृहस्पति (पुं.) दे. भिरस्पत।

बेंग (वि.) 1. दे. बंक, 2. दे. बाँक।

बेंड (स्त्री.) (कौर.) दे. झूल।

बे[1] (उप.) बिना; (स्त्री.) तिरस्कार-बोधक शब्द।

बे[2] (स्त्री.) 1. पुत्र के जन्म पर गाए जाने वाले भाग्य-गीत, 2. (दे. बेहमात्ता)।

बे[3] (सर्व.) 'वह' सर्वनाम का बहुव. रूप।

बेअंत (वि.) अनंत, बेशुमार।

बेअक़्ली (स्त्री.) मूर्खता।

बेअड़ी (स्त्री.) झड़बेरी का पौधा, बेर का पौधा।

बे-आई (वि.) 1. असमय की (मृत्यु), 2. जिसका द्विरागमन न हुआ हो; **~कहणा** बिना विचारे कहना; **~मरणा** असमय में मरना, अकाल मृत्यु होना।

बेइज़्ज़ती (स्त्री.) अपमान।

बेईमान (वि.) जिसका विश्वास न हो, ईमान-रहित; (पुं.) एक गाली, एक निंदापरक शब्द। **बेईमान** (हि.)

बेऔरा (पुं.) दे. बेरा।

बेकणा (क्रि. स.) विक्रय करना। **बेचना** (हि.)

बेक़दर (वि.) दे. बेकदर्या।

बेकदर्या (वि.) प्रतिष्ठाहीन, जिसकी क़दर न हो।

बेक़रार (वि.) व्याकुल, बेचैन, विकल।

बेकली (स्त्री.) बेचैनी, व्याकुलता।

बेक़सूर (वि.) निरपराध।

बेक़ाबू (वि.) दे. बेकाब्बू।

बेकाब्बू (वि.) जो वश में न हो। **बेक़ाबू** (हि.)

बेकाम (वि.) 1. निठल्ला, 2. व्यर्थ का, अनुपयोगी।

बेकार (वि.) 1. निठल्ला, अनुपयोगी।

बेकारथ (वि.) बिना प्रयोजन।

बेकुंठ (पुं.) स्वर्ग, विष्णु-धाम। **बैकुंठ** (हि.)

बेकुंठवास्सी (पुं.) स्वर्गीय।

बेखटके (क्रि. वि.) 1. बिना रुकावट के, 2. निस्संकोच।

बेख़बर (वि.) 1. अनजान, 2. बेहोश, बेसुध।

बे-खसमाँ (वि.) जिसका कोई मालिक न हो।

बेग (क्रि. वि.) शीघ्र। **वेग** (हि.)

बेगड़ी (पुं.) नगीने का कारीगर।

बेगत (स्त्री.) दुर्गति।

बेगम (स्त्री.) दे. बेग्गम।

बेगरज (वि.) जिसे कोई ग़रज न हों।

बेगलो (वि.) दे. छीदा।

बेगारी (पुं.) मृतक पशु की खाल उतारने वाला।

बेगुनाह (वि.) बेक़सूर।

बेगोरी (वि.) बिना गौर किए या ध्यान दिए।

बेग्गम (स्त्री.) 1. रानी, 2. पत्नी, 3. ताश के पत्ते की बेगम, (दे. बेग्गाँ)। **बेगम** (हि.)

बेग्गाँ (स्त्री.) ताश के पत्ते की बेगम जिसका स्तर गुलाम के पत्ते से ऊपर और बादशाह के नीचे का होता है।

बेचणा (क्रि. स.) विक्रय करना, (दे. बेकणा)। **बेचना** (हि.)

बेचना (क्रि. स.) दे. बेचणा।

बेचारगी (स्त्री.) विनम्रता, हलीमी, कातरता।

बेचारा (वि.) दे. बिचारा।

बेचैन (वि.) व्याकुल, विकल।

बेचैन्नी (स्त्री.) व्याकुलता। **बेचैनी** (हि.)

बेच्चू (वि.) अपनी वस्तु को बेचने का इच्छुक।

बेजंती (स्त्री.) बैजंती माला।

बेजती (स्त्री.) बेइज्जती।

बेज़बान (वि.) 1. गूँगा, मूक, 2. दीन-हीन।

बेजाणा (वि.) बिना जान पहचान का, अनजान।

बेजात (वि.) 1. बिना जाति का, 2. कमीना, 3. अजात, 4. कुजात।

बेजान (वि.) 1. निर्जीव, 2. निर्बल।

बेजोड़ (वि.) 1. अद्वितीय, 2. अखंड, जिसमें जोड़ न हो।

बेज्झड़ (स्त्री.) जौ और चने आदि का मिला हुआ अन्न।

बेट (स्त्री.) कुरुक्षेत्र की भूमि का एक नाम। तुल. ढेर, नरदक।

बेट्टा (पुं.) 1. पुत्र, 2. लड़का, (दे. छोहरा)। **बेटा** (हि.)

बेड़ (स्त्री.) 1. वृक्ष के चारों ओर का घेरा, 2. बेला, मेंड।

बेड़वाळ (पु.) एक जाट गोत।

बेड़ा[1] (पुं.) 1. लकड़ी के लट्ठों को बाँध कर नदी पार करने के लिए बनाया गया ढाँचा, 2. नावों का समूह, 3. नदी के यात्रियों का समूह, 4. आँगन, 5. जीवन-नैया, 6. बीड़ा, जिम्मावारी; **~गरक करणा** बना बनाया काम बिगाड़ना; **~ठाणा** 1. बीड़ा उठाना, 2. साहसपूर्ण कार्य शुरू करना; **~डोबणा** 1. नष्ट-भ्रष्ट करना, 2. हिम्मत हारना; **~पार करणा** 1. मोक्ष देना, 2. पार उतारना; **~बाँधणा** 1. साहसपूर्ण कार्य के लिए साधन जुटाना, 2. कमर कसना।

बेड़ा[2] (पुं.) सघन पौधा।

बेड़ी (स्त्री.) 1. कैदी को पहनाई जानी वाले जंजीर, 2. बंधन; **~काटणा** बंधन-मुक्त करना; **~घालणा** बंधन में डालना, हथकड़ी पहनाना; **~छूटणा** बंधन-मुक्त होना; **~पड़णा /लागणा** 1. बंधन में पड़ना, 2. अधीन होना।

बेडौल (वि.) भद्दा, बेढंगा।

बेढंग (वि.) 1. रूप-कुरूप होने की अवस्था, 2. बुरी अवस्था, दुर्दशा, 3. कार्य बिगड़ने की अवस्था, 4. बेतरतीब।

बेढंगा (वि.) 1. अनाड़ी--घणा ए बेढंगा आदमी सै, 2. भद्दा, 3. बिना तरीके का, 4. जिसे सलीका न हो।

बेढ[1] (पुं.) 1. पाँव की उँगली का आभूषण। 2. थानेसर भू-भाग का भाकंडा क्षेत्र।

बेढ[2] (पुं.) तालाब के पास का खेत। दे. फट्टे।

बेढब (वि.) 1. बेढंगा, 2. विचित्र व्यवहार का।

बेतहाशा (क्रि. वि.) 1. बहुत अधिक तेज़ी से, 2. बहुत घबरा कर।

बेताब (वि.) विकल, व्याकुल।

बेतुका (वि.) 1. बेमेल, अनमेल, 2. प्रसंग से परे, 3. बेसुरा, (पद) जिसकी तुक न मिले।

बेतौर (वि.) बेकाबू। उदा. मेरे दस्त लगे 'बेतौर'।

बेद (पुं.) धार्मिक ग्रंथ जो अपौरुषेय माने जाते हैं और जिनमें गूढ़ ज्ञान है,

2. गूढ़ ज्ञान की विद्या; **~आणा** दुनियाँ के गूढ़ रहस्यों का पता होना; **~घोखणा** वेद को कंठस्थ करना; **~जाणणा** 1. जीवन के रहस्य का पता होना, 2. सभी विद्याओं का ज्ञान होना; **~पढणा** 1. सभी विद्याओं का ज्ञान प्राप्त करना, 2. वेदाध्ययन करना; **~पढाणा** गूढ़ ज्ञान या रहस्य बताना। **वेद** (हि.)

बेदख़ल (वि.) भूमि, संपत्ति आदि से किसी का हक़ हटाने का भाव, 2. बिना दख़ल के।

बेदख़ली (स्त्री.) संपत्ति के कब्ज़ा हटाया जाने का भाव।

बेदगाई (स्त्री.) वैदगिरी, वैद्यक।

बेदन (स्त्री.) दे. बेद्दन।

बेदना (स्त्री.) 1. पीड़ा, तड़प, 2. उचाटी; **~छिड़णा** उचाटी लगना। **वेदना** (हि.)

बेदरद (वि.) क्रूर, निष्ठुर। **बेदर्द** (हि.)

बेदर्द (वि.) दे. बेदरद।

बेदाग़ (वि.) 1. निष्कलंक, 2. निर्दोष, 3. दाग़-रहित।

बेदीन (वि.) दीन रहित। धर्म रहित।

बेद्दन (स्त्री.) 1. वेदना, 2. तड़प (कामदेव की), जैसे–झाल उठे बेद्दन की। **वेदना** (हि.)

बेद्दाचारी (पुं.) 1. वेदों का ज्ञाता, 2. वेदानुयायी, 3. कर्मकांडी पंडित। **वेदाचार्य** (हि.)

बेद्दी (स्त्री.) 1. शुभ अवसर पर रेती का बनाया (कुछ ऊँचा) चबूतरा जिस पर आटे, रंग आदि से चौक पूरा जाता है, 2. यज्ञ-कुंड, 3. वह स्थान जहाँ यज्ञ रचा जाता है, 4. देव-मूर्ति, देवी की मूर्ति; (पुं.) वेदों का विद्वान्; **~आग्गे का** वेदी के सम्मुख दानार्थ रखा गया (भोजन), प्रसाद; **~रचणा** 1. यज्ञ की वेदी रचना, 2. धार्मिक कृत्य की व्यवस्था करना, 3. लड़की का विवाह करना। **वेदी** (हि.)

बेधड़क (वि.) 1. निडर, 2. साहसी, 3. बिना आगा-पीछा देखे काम करने वाला; (क्रि. वि.) बिना डरे।

बेधना (क्रि. स.) दे. बींधणा।

बेनसीब (वि.) अभागा।

बेनाग़ा (क्रि. वि.) लगातार, निरंतर।

बेनी (स्त्री.) चोटी। **वेणी** (हि.)

बेपरद (वि.) 1. निर्लज्ज, 2. नंगा। **बेपर्द** (हि.)

बेपरवाह (वि.) 1. बेफ़िक्र, 2. मनमौजी।

बेपीर (वि.) 1. प्रेम-रहित, 2. निर्दयी।

बेफादी (स्त्री.) बिना फायदे की।

बेफिकर (वि.) 1. बेपरवाह, 2. निश्चिंत।

बेफ़िक्र (वि.) दे. बेफिकर।

बेबस (वि.) 1. वश से परे, 2. मोटापे के कारण शरीर वश में न रहने की स्थिति, 3. लाचारी की अवस्था; **~करणा** लाचार करना; **~होणा** 1. पराए वश होना, 2. अधिक मोटा होना, 3 लाचार होना। **विवश** (हि.)

बेब्बे (स्त्री.) 1. बहिन, 2. सखी, 3. स्त्रियों द्वारा आपसी बातचीत करते समय प्रयुक्त संबोधन 1. (दे. जीज्जी), 2. (दे. भाण)।

बेभाग्गी (वि.) अभागी।

बेमात (स्त्री.) दे. बेहमाता।

बेमात्ता (स्त्री.) दे. बेहमात्ता।

बेमिजान (वि.) दे. अणमेल।

बेमोस्सम (वि.) 1. जिसका मौसम न हो, 2. असमय या कुसमय (का)। **बेमौसम** (हि.)

बेमौक़ा (क्रि. वि.) 1. कुअवसर, 2. बिना मौक़े के।

बेमौसम (वि.) दे. बेमोस्सम।

बेर[1] (स्त्री.) 1. देर, विलंब, 2. बार, बारी, दफ़ा।

बेर[2] (पुं.) झड़-बेरी तथा बड़-बेरी पर लगने वाला एक फल।

बेरड़ (पुं.) (कौर.) दे. बेज्झड़।

बेरड़ी (स्त्री.) 1. बेर का छोटा वृक्ष, 2. वह बेरी जिस पर छोटे बेर लगते हों। **बेरी** (हि.)

बेरणी (स्त्री.) छोटी बेरी या झड़बेरी।

बेरा (पुं.) ख़बर, समाचार, सूचना–छोहरा खू ग्या था (गुम हो गया था) उसका बेरा लाग्या?, 2. संदेश–वो मिल्लै तै मेरा बी एक बेरा दीये (देना), 3. पता, स्थान–उसके रहण का बेरा बता, 4. विवरण, पूरा विवरण; **~आणा** समाचार आना, संदेश मिलना; **~करणा** संदेश भेजना; **~देणा/ भेजणा** संदेश भेजना; **~पटाणा** 1. मज़ा चखाना, 2. विवरण मिलना, 3. समाचार या सूचना मिलना; **~पाटणा** 1. गुप्त समाचार का पता लगना, 2. अक्ल ठिकाने लगना–बेरा तै तनैं पाट्टैगा पर टुकेक थ्यावस राख; **~बरतणा** 1. सावधानी बरतना, 2. टोह रखना; **~बताणा** 1. अता-पता बताना, 2. मज़ा चखाना; **~राखणा** चौकसी रखना–म्हारे घर का भी बेरा राखिए; **~लाणा** किसी बात का पता लगाना; **~लेणा** ख़ैर-ख़बर रखना; **~होणा** 1. अक्ल ठिकाने होना, 2. किसी बात की पूर्व सूचना होना, 3. संदेश मिलना। **ब्योरा** (हि.)

बेराणा (वि.) दे. बिराणा।

बेराना (क्रि.) अपनी-अपनी भेड़-बकरी अलग करना।

बेरी[1] (स्त्री.) दुजाना के निकट प्रसिद्ध नगरी जहाँ भीमेश्वरी देवी (मात्ता, देब्बी) का प्रसिद्ध मंदिर है (यहाँ चैत्र और आश्विन सुदी अष्टमी को मेला लगता है, यह संस्कृत पाठशालाओं का केंद्र रहा है)।

बेरी[2] (स्त्री.) दे. बड़बेर।

बेरुआ बिरान (पुं.) विपथ होने का भाव।

बेल (स्त्री.) 1. लता जिस पर फल, फूल या सब्ज़ी आदि लगती है, 2. संतान, पुत्र, 3. वंश, 4. नासूर के समान एक रोग, 5. जंजीर, 6. कपड़े, काग़ज़ आदि को नमूने से काट कर बनाई गई बेल; **~चालणा** वंशवृद्धि होना; **~देणा/मारणा** पागल व्यक्ति को जंजीर से बाँधना; **~बधाणा** 1. पुण्य-कार्य करना, 2. वंश-परंपरा चालू रखना; **विघन~** झगड़े की जड़; **~बिछाणा** जच्चा की चारपाई के चारों ओर लोहे की मोटी बेल डालना ताकि भूत-प्रेत का प्रभाव न हो; **~मंढ पै चढणा** 1. कार्य संपन्न होना, 2. अनुकूल समय आना; **~मारणा** दे. बेल देणा।

बेलचा (पुं.) कुदाल।

बेलचूड़ी (स्त्री.) पैरों की चपटी ढली चूड़ियाँ।

बेलणा (पुं.) बेलन, (दे. बेल्लण); (क्रि. स.) 1. चकला बेलन की सहायता से पापड़, पूरी आदि के आटे को गोलाकार, लंबा आदि बधाना, 2. चकना-चूर करना, 3. बेल मारना, पागल को

जंजीर से बाँधना, 4. कपास ओटना। **बेलना** (हि.)

बेलणी (स्त्री.) 1. सरसों, ईख आदि पेरने की चरखी, 2. छोटा बेलन।

बेलदार (पुं.) मज़दूर।

बेलन (पुं.) दे. बेल्लण।

बेलना (क्रि. स.) दे. बेलणा; (पुं.) दे. बेल्लण।

बेलवा (पुं.) बेला, खुले मुँह और चौड़ी तली का गहरा कटोरा; (वि.) बेलने में कुशल; **~काढणा** दान-पुण्य के लिए कटोराभर वस्तु देना; **~पढणा** कटोरी से मंत्र का प्रभाव दिखाना; **~बजाणा** प्रसन्नता व्यक्त करना; **~बाँटणा** प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए मिठाई बाँटना; **~भरणा** दान-पात्र भरना।

बेला (पुं.) रंदा खींचने वाला।

बेलाग (वि.) 1. निर्लिप्त, 2. खरा, 3. जिसमें अन्य चीज़ की चास न हो, अमिश्रित।

बेल्लण (पुं.) 1. बेलना, गोलाकार डंडा जो आटा बेलने के काम आता है, 2. कोल्हू या अन्य कल- पुर्जों में काम आने वाला गोल डंडा। **बेलन** (हि.)

बेल्ला[1] (पुं.) 1. सिंचाई के लिए बनाई गई ऊँची नाली, 2. पानी रोकने के लिए बनाया गया बाँध, 3. पानी का किनारा। **बेला** (हि.)

बेल्ला[2] (पुं.) कटोरा। (दे. बेलवा); (क्रि. स.) 'बेलणा' क्रिया का भू का. एकवचन रूप।

बेल्ला[3] (स्त्री.) 1. पूजा-पाठ, दान-पुण्य आदि का समय, 2. महत्त्वपूर्ण काल; **इमरत~** अमृत वेला, सूर्योदय से पूर्व का काल। **वेला** (हि.)

बेल्ली[1] (स्त्री.) 1. छोटी कटोरी, 2. पैंदे में छिद्र वाली कटोरी जिससे सिंचाई का समय मापा जाता है, समय मापक कटोरी; (क्रि. स.) 'बेलणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं., एकवचन रूप; **~आणा** सिंचाई की बारी आना। **बेली** (हि.)

बेल्ली[2] (वि.) बेली, सहायक–सबका राम बेल्ली सै।

बेवफ़ा (वि.) जो वफ़ादार न हो।

बेवा (स्त्री.) विधवा।

बेवारिस (वि.) लावारिस।

बेशक (क्रि. वि.) निस्संदेह।

बेशुमार (वि.) दे. बेसुम्मार।

बेसन (पुं.) दे. बेस्सण।

बेसबरा (वि.) जिसे सब्र न हो, 2. स्वार्थी।

बेसमझ (वि.) नासमझ, अज्ञानी।

बेसर (पुं.) दे. बेस्सर।

बेसवा/बेसमाँ (स्त्री.) 1. रंडी, 2. स्त्री के लिए प्रयुक्त निंदापरक शब्द; (वि.) 1. पर-पुरुष से रमण करने वाली, 2. चरित्रहीन। **वेश्या** (हि.)

बेसुध (वि.) 1. अचेत, मूर्छित, 2. भोलेपन की अवस्था, 3. अतिनिद्रा की अवस्था; **~होणा** 1. मोहित होना, 2. आपा भूलना, 3. मूर्छित होना।

बेसुम्मार (वि.) अगणित। **बेशुमार** (हि.)

बेसुरा (वि.) 1. बेसुर का (राग), 2. जिसका स्वर साफ़ न हो, 3. असमय का।

बेसूहरा (वि.) जिसे शऊर न हो। **बेशऊर** (हि.)

बेसोद्धी (स्त्री.) दे. बेसुध।

बेसोध (वि.) 1. बिना मुहूर्त निकाले, 2.

बिना शुद्धि के; **~साहया** बिना मुहूर्त की सिद्धि का विवाह, अनबूझ साहा।

बेस्सक[1] (क्रि. वि.) 1. निस्संदेह, 2. निर्भयता के साथ। **बेशक** (हि.)

बेस्सक[2] (स्त्री.) बेसिक ट्रेनिंग, अध्यापक-व्यवसाय का बुनियादी प्रशिक्षण। **बेसिक** (हि.)

बेस्सण (पुं.) चने की दाल का आटा; **~छाणणा** चने के आटे से बेसन निकालना; **~घोळणा** कढ़ी के लिए बेसन का खट्टा घोलना। **बेसन** (हि.)

बेस्सर (पुं.) नाक का एक आभूषण–काणे खोड़े रे मेरी संझ्या का नाक बड़ा था बेस्सर क्यूं नाँ ल्याया रे (लो.गी.)। **बेसर** (हि.)

बेस्साँ (स्त्री.) वेश्या; **~होणा** 1. चरित्रभ्रष्ट होना, 2. निर्लज्जता धारण करना।

बेह[1] (स्त्री.) भाग्य की देवी, वह देवी जो अपने हाथ से सब का भाग्य लिखती है; (पुं.) भाग्य–तेरे बेह में होगा तै मिल्लैगा; **~काढणा/बणाणा/लेखणा/सारणा** दीवार पर गेरू, गोबर आदि से देवी का चित्र खींचना, देवी की मूर्ति बनाना।

बेह[2] (अव्य.) कारण। उदा.–झोट्टा किस बेह मोट्टा, नफा गिणै ना टोट्टा।

बेहतर (वि.) अपेक्षाकृत अच्छा।

बेहतरी (स्त्री.) भलाई, अच्छाई।

बेहद (वि.) निस्सीम।

बेह-मात्ता (स्त्री.) जन्म के समय भाग्य लिखने वाली देवी, भाग्य विधात्री देवी; **~का लेख** अटल लेख, भाग्य का अटल लेख।

बेहया (वि.) निर्लज्ज।

बेहवा (वि.) 1. चारित्रिक दृष्टि से भ्रष्ट (स्त्री या पुरुष), बेहया, 2. निर्लज्ज, 3. अपवित्र बर्तन–बेहवा बास्सण उतर ज्या सै, 4. 'सेहवा' का विलोम; **~-सेहवा करणा** घर के पात्रों को उच्छिष्ट करना, शुद्धता का ध्यान न बरतना; **~-सेहवा खाणा** सर्वभक्षी होना, भक्ष्य-अभक्ष्य खाना।

बेहाल (वि.) 1. विकल, व्याकुल, 2. बुरी अवस्था का।

बेहिसाब (वि.) 1. अगणित, असंख्य, बेशुमार, 2. जिसका कोई हिसाब-किताब न रखा गया हो।

बेहुनी (स्त्री.) बिना हुनर वाली महिला।

बेहू (वि.) 1. अपवित्र (पात्र), 2. आचारहीन; **~के हाथ धोणा** शौच के बाद हाथ साफ़ करना (सांकेतिक प्रयोग)।

बेहूणी (वि.) विहीन।

बेहूदगी (स्त्री.) अशिष्टता, असभ्यता।

बेहूदा (वि.) दे. बेहूद्दा।

बेहूद्दा (वि.) 1. अशिष्ट, पद-मान आदि का लिहाज़ न रखने वाला, 2. अनावश्यक। **बेहूदा** (हि.)

बेहोंस (वि.) दे. बेहोश।

बेहोशी (स्त्री.) मूर्च्छा, अचेतनता।

बैं (सर्व.) उस, वे।

बैंक (पुं.) वह निजी या सरकारी कार्यालय जहाँ बड़े स्तर पर सार्वजनिक रूप से ऋण या रुपयों का लेन-देन किया जाता है।

बैंग (वि.) अर्ध-विक्षिप्त।

बैंगड़ी-चूड़ी (स्त्री.) वलय, चूड़ा-चूड़ी आदि।

बैंगन (पुं.) दे. बैंग्गण।

बैंगनी (वि.) ललाई लिए नीले रंग का।

बैंग्गण (पुं.) एक सब्ज़ी; **~सा** गोल-मटोल, सुघड़; **~खुरी** बैंगनी खुरों वाली भैंस

(जो अच्छी मानी जाती है)
बैंगन (हि.)

बैंज्जू (पुं.) तार का एक प्रसिद्ध बाजा।

बैंडणा (क्रि. अ.) 1. सोते-सोते बोलना, बड़बड़ाना, 2. विक्षिप्त मानसिक स्थिति में अनाप-शनाप कहना, 3. कुछ का कुछ कहते फिरना, 4. दूसरे की सीख में आकर किसी को कुछ-कुछ कहना, 5. अपने आप बोलते रहना, 6. गाली देना, अपशब्द कहना; (वि.) जो बैंडे, (दे. भळोकड़ा)। **बैंडना** (हि.)

बैंडवा (स्त्री.) 1. विक्षिप्तता की स्थिति, 2. पागलपन; **~उघड़ना** 1. पागलपन की स्थिति में पहुँचना, 2. हर समय बोलते रहना; **~लागणा** दे. बैंडवा उघड़णा।?

बैंड्डू (वि.) 1. जो सदा बोलता रहे, 2. बहकावे में आने वाला, (दे. भळोकड़ा)
बैंडू (हि.)

बैंत (पुं.) 1. हाथ की छड़ी, 2. बाँस या बैंत का पौधा; **~की कुर्सी** बैंत से बनी कुर्सी।

बै[1] (अव्य.) बार–तेरे तैं कई बै कह ली।

बै[2] (स्त्री.) वायु (कौर.)।

बै[3] (पुं.) खड्ढी पर बुनाई करते समय सूत को उठाने गिराने वाला यंत्र।

बैकुंठ (पुं.) दे. बेकुंठ।

बैजंयती (स्त्री.) एक माला जिसे भगवान धारण करते हैं।

बैट्ठ्या-बैट्ठी (स्त्री.) 1. ऊठ-बैठ, 2. परिचय मात्र; **~होणा** मेल-मिलाप होना।

बैठ (स्त्री.) 1. बैठने का ढंग, 2. परिचय, जान-पहचान, 3. मेल-जोल, 4. पैठ, ज्ञान, 5. पहल–बैठ तेरी ऊठ मेरी, 6. ठहरने का भाव, जैसे–बैठ तै सई, 7. वह स्थान जहाँ प्रातःकाल गाँव के पशु बैठते हैं, 8. शर्त आदि का ठहराव, 9. एक प्रकार का लगान; (क्रि. अ.) 'बैठणा' क्रिया का आदे. रूप; **ऊठ-~** 1. किसी के साथ ऊठने-बैठने का भाव, 2. परिचय; **~करणा** शर्त लगाना; **~माँगणा** गोबर के लिए वह स्थान माँगना जहाँ गाँव के पशु प्रातःकाल बैठते हैं; **~होणा** पैठ होना।

बैठक (स्त्री.) 1. घर का वह कमरा जहाँ मेहमानों की आवभगत की जाती है, मर्दाना कमरा, 2. गाँव से बाहर वाला घर जहाँ अधिकतर पुरुष ही उठते-बैठते हैं, 3. मनोरंजन के लिए कुछ लोगों का एक स्थान पर जमाव, 4. बैठने की क्रिया या ढंग, 5. व्यायाम के समय बार-बार पंजों पर उठने-बैठने की क्रिया, एक व्यायाम; **~काढणा/ मारणा/ लाणा** 1. व्यायाम की बैठकें करना, 2. कुश्ती के लिए चुनौती देना; **~जमाणा** 1. किसी स्थान पर अधिक समय के लिए जम कर बैठना, 2. साधना करना, आसन लगाना।

बैठकी (स्त्री.) छोटी बैठक।

बैठणा (क्रि. अ.) 1. बैठने की क्रिया, 2. खड़ी हुई स्थिति से बैठने की स्थिति में आना, 3. सोकर उठना, 4. जम कर बैठना, आग्रहपूर्वक बैठना, 5. किसी स्थान पर ठीक रूप से जमना, 6. तरल पदार्थ की तली में पदार्थ का जमना, 7. बढ़ती हुई स्थिति का रुकना–कुटेब में पड़ कै चढ़ती उमर मैं बैठ ग्या, 8. ठिगना या छोटा रहना, 9. ज़मीन में धँसना, धँसना, 10. पिचकना, 11. लक्ष्य पर पड़ना,

जैसे–निशान्ना बैठणा, 12. अन्य पुरुष के यहाँ पत्नी के रूप में रहना, 13. नर पशु का मादा पशु पर बैठना या चढ़ना, संभोग करना, 14. निठल्ला होना, 15. प्रतीक्षा करना, 16. नक़ल या कटाक्ष सटीक बैठना, 17. बात चुभना–तेरे कचोद मेरे हिरदे मैं बैट्ठे सैं, 18. बीमारी आदि के कारण हिलने-डुलने की स्थिति में न होना; **दीक्खण तैं~** अंधा होना। **बैठना** (हि.)

बैठना (क्रि. अ.) दे. बैठणा।

बैठळ[1] (पुं.) भारी हल।

बैठळ[2] (पुं.) भारी हल। नाग तथा नारी हल का विलोम।

बैठाणा (क्रि. स.) दे. बठाणा।

बैड़ (स्त्री.) दे. बाड़।

बैण (पुं.) 1. वचन, 2. मीठे बोल, 3. ताना, बोली, (दे. तान्ना); **~चुभणा** वचन चुभना; **~मारणा** ताना मारना। **बैन** (हि.)

बैणू (पुं.) मनु-स्मृति के अनुसार एक पापी राजा जिसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्र पृथु ने धार्मिक राज्य स्थापित किया–एक समय राज्जा बैणू नै पाप की चास हुई थी, नेम धरम पूज्जा छुटवा दिए, परजा दास हुई थी (ल.चं.) **राजा बेन** (हि.)

बैद (पुं.) देशी दवा देने वाला, नाड़ी की परख के अनुसार उपचार करने वाला। **वैद्य** (हि.)

बैदगिरी (स्त्री.) बैद्यक। **वैद्यगिरी** (हि.)

बैय्यरबान्नी (स्त्री.) दे. बीरबान्नी।

बैया/बैय्या (पुं.) एक चतुर पक्षी जो पेड़ पर कलात्मक ढंग से गुँथा हुआ घोंसला बनाता है; **तोतक~** तोतला व्यक्ति। **बया** (हि.)

बैरंग (वि.) 1. (वह चिट्ठी) जिस पर निश्चित मूल्य से कम का डाक-टिकिट लगा हो, 2. थोथा, खाली–सारे पत्ते बैरंग आगे, 3. निर्धन; **~करणा** तुर्प के रंग के पत्तों से रहित करना; **~होणा** 1. निश्चित मूल्य से कम टिकिट होने के कारण चिट्ठी का बैरंग होना, 2. तुर्प का पत्ता न रहना।

बैर (पुं.) 1. शत्रुता, 2. ज़िद, 3. विरोध; **~बाँधणा/रोपणा** 1. शत्रुता मोल लेना, 2. द्वेष करना। **बैर** (हि.)

बैरग (स्त्री.) 1. सैनिकों का अस्थायी निवास-स्थान, 2. सैनिकों का पड़ाव, 3. अस्थायी सरकारी भवन जो टिन, खपरैल आदि का होता है। **बैरिक** (हि.)

बैरड़ा (स्त्री.) दे. बेझड़।

बैरण (वि.) 1. विरोधिन, 2. सौत, 3. उलाहना भरी गाली जो महिलाएँ आपस में देती हैं–हे बैरण! कित मरगी थी इतणे दिनाँ मैं दीक्खी। **बैरिन** (हि.)

बैराग (पुं.) वियोग।

बैराग पंथ (पुं.) भर्तृहरि द्वारा प्रवर्तित एक पंथ जिसके मानने वाले वैरागी कहलाए, (दे. बिराग्गी)। **बैराग्य पंथ** (हि.)

बैरागी (पुं.) दे. बिराग्गी।

बैराट (पुं.) दे. विराट।

बैरी (स्त्री.) शत्रु।

बैरीड़ा (वि.) 1. बैरी, 2. प्रेमी को दिया जाने वाला उलाहना भरा ताना।

बैलिस्टर (पुं.) 1. बड़ा वकील, 2. इंग्लैंड में वकालत की ऊँची शिक्षा प्राप्त बड़ा वकील। **बैरिस्टर** (हि.)

बैली (स्त्री.) दे. बहलड़ी।

बैष्णव (वि.) 1. विष्णु का भक्त, 2. एक संप्रदाय।

बैस (पुं.) 1. व्यापारी, 2. एक जाति जो प्रायः व्यापार करती है। **वैश्य** (हि.)

बैसणवी (वि.) 1. वैष्णव संप्रदाय को मानने वाले (ये भौंहों के समानांतर माथे पर चंदन का तिलक लगाते हैं), विष्णु के उपासक, 2. शाकाहारी। **वैष्णवी** (हि.)

बैसरा (पुं.) मछली पकड़ने का जाल। तुल. बरांग। तुल. छांग। तुल. जनरी।

बैसाख (पुं.) दे. बसाख।

बैसाखी (स्त्री.) दे बसाक्खी।

बोंकर (पुं.) दे. भोकरा।

बोंग्गा (वि.) मूर्ख, अज्ञानी, जड़। **बोंगा** (हि.)

बो[1] (स्त्री.) 1. गंध, 2. दुर्गन्ध, 3. बकरे द्वारा निकाली गई ध्वनि, 4. प्यास; (क्रि. स.) 'बोणा' क्रिया का आदे. रूप; **~आणा/ऊठणा/मारणा** 1. गंध आना, 2. दुर्गंध आना; **~होणा** 1. अकड़ होना, अभिमान होना, 2. दुर्गंध आने लगना।

बो[2] (क्रि. अ.) 'बागड़ी' बोली में क्रिया का पूर्वकालिक रूप बनाने के लिए प्रयुक्त परसर्ग, जैसे–खाबो (खाओ), पीबो (पीओ)।

बो[3] (सर्व.) वह।

बो[4] (पुं.) दे. बवेरा।

बोक (पुं.) बकरा, वह बकरा जो खस्सी न किया गया हो; (वि.) 1. कामुक, 2. वह (व्यक्ति) जो यौन -व्यवहार में खून का रिश्ता भी न बरते; **~-सा मुँह** मोटा या भारी मुँह।

बोकड़ा (पुं.) बारात के गमन के बाद वरपक्ष की महिलाओं द्वारा स्वाँग भर कर गाया जाने वाला एक गीत जिसमें एक महिला बोक या बकरा बन कर बकरियों पर धौंस जमाती है (बोक की तरह घो घो करती है) तथा कुछ डर कर बकरी की तरह मिमयाती है।

बोकणा (क्रि. अ.) 1. बोक के समान बो-बो की ध्वनि निकालना; 2. निरर्थक शब्द निकालना; (पुं.) दे. बोक।

बोक्की (स्त्री.) 1. नली, सिंचाई के काम आने वाली लोहे, लकड़ी आदि की नली, 2. प्यास, बार-बार लगने वाली प्यास, (दे. डुकास); **~लागणा** बार-बार प्यास लगना।

बोखी (वि.) जिसके सब दाँत गिर गए हों।

बोघणी (स्त्री.) दे. सिंडोरी।

बोचणा (क्रि. स.) 1. दबोचना, किसी वस्तु को दबाना या समेटना–सारे लत्ते बोच दिए, गुळझट पड़गी, 2. पशु द्वारा कानों को नीचे लटकाना या शरीर के अंग के साथ सटाना–कुत्ता कान बोच कै भाजग्या, 3. कान दबाना, भयभीत होना, 4. छिपाना–मेरे तैं बोच कै के लेज्या सै?, 5. शक्तिशाली द्वारा कमजोर को धर दबोचना, 6. संकोचवश किसी रहस्य को छिपाना–बोच्ची ओड़ बात कद ताहीं दब्बैगी, 7. मींचना या भींचना (आँख का)–ठाड्ढे नैं देख कै कूण आँख नाँ बोच ले; (वि.) बोचने वाला। **बोचना** (हि.)

बोच्चा बंध (पुं.) बंधा पड़णा।

बोज्झल (वि.) 1. भारी, 2. वजनी, 3. कठिन; **~काम** भारी काम, कठिन कार्य; **~बात** वज़नदार बात। **बोझिल** (हि.)

बोज्झा (पुं.) 1. भार, 2. ज़िम्मेदारी, 3. (दे. बोझ); **~करणा** खाने की

(मिठाई) सामग्री बनाना; **~पड़णा** ज़िम्मेदारी आ पड़ना; **~बाँधणा** मेहमानों के पल्ले विवाह आदि की मिठाई बाँधना; **~लादणा** अवांछित काम जिम्मे लगाना; **~सहारणा** भारी बोझ सहन कर लेना। **बोझा** (हि.)

बोझ (पुं.) 1. भार, 2. मिठाई–आवणियाँ कै दो-दो सेर बोझ बाँध दे, 3. गठरी, 4. दायित्व–याणी उमर मैं बोझ आ पड्या, 5. किसी काम में होने वाला श्रम; **~ठाणा** ज़िम्मेदारी निबाहना; **~मारणा** अधिक बोझा लादना या डालना; **~लागणा** किसी कार्य को भार-स्वरूप ग्रहण करना। **बोझ** (हि.)

बोझड़ा (पुं.) 1. (काँटेदार) भारी झाड़ी, झाड़, झाड़ी, 2. बाधा, रुकावट; **~कूदणा** बाधा पार करना; **~(-ड़्याँ) नैं तरसणा** 1. जन्म-भूमि के पेड़-पौधे स्मरण हो आना, 2. लड़की को पीहर न बुलाने के कारण गाँव की याद सताना।

बोझणा (क्रि. स.) बोझ को सह लेना।

बोट[1] (पुं.) 1. टुकड़ा, लकड़ी का बड़ा टुकड़ा, 2. माँस का टुकड़ा; **~काटणा** 1. बड़ी लकड़ी के खंड करना; 2. माँस के टुकड़े काटना; **~बोट करणा** लाश के टुकड़े-टुकड़े करना। **बोटी** (हि.)

बोट[2] (स्त्री.) 1. चुनाव के समय पक्ष या विपक्ष के प्रतिद्वंद्वी के लिए पर्ची के माध्यम से प्रकट की जाने वाली सम्मति, राय, राय-पत्र, मत-पत्र, 2. सलाह; **~गेरणा/देणा** चुनाव के समय अपना मत अभिव्यक्त करना। **वोट** (हि.)

बोट[3] (स्त्री.) 1. नाव, जैसे–अगन बोट, 2. चीनी का बना मर्तवान। **बोट** (हि.)

बोटी (स्त्री.) बोट्टी।

बोट्टा (पुं.) दे. बोट[1]।

बोट्टी (स्त्री.) 1. मांस का लोथड़ा, 2. पुट्ठा, 3. (दे. पोट्टी); **~खाणा/चाबणा** हिंसा करना, मारना; **~फड़कणा** (शरीर में) आवेश आना; **~बोट्टी करणा** टुकड़े-टुकड़े करना। **बोटी** (हि.)

बोड़म (वि.) 1. मूर्ख, 2. अपनी प्रशंसा करने वाला।

बोड़ा (वि.) जिसका दाँत टूट गया हो; (पुं.) एक जाट गोत; **~कूआ** 1. कूआँ जिसकी मुंडेर टूट गई हो, 2. बच्चों द्वारा खेला जाने वाला एक खेल जिसमें वे भूमि पर कूएँ की आकृति खींच कर पाँसों से दाँव चलते हैं और कूएँ के खंडित भाग से बचते हैं।

बोड़ी (स्त्री.) दे. बावड़ी।

बोड्डर (पुं.) 1. सीमांत स्थान, 2. साड़ी आदि का किनारा, किनारी। **बॉर्डर** (हि.)

बोणा (वि.) छोटे क़द का (तुल. बावना); (क्रि. स.) बीज बोना, उगाना; **~सो काटणा** किए का परिणाम पाना। **बौना** (हि.)

बोतड़ा (पुं.) ऊँट का बच्चा।

बोतल (स्त्री.) दे. बोत्तल।

बोत्तल (स्त्री.) 1. शीशे की बोतल, 2. शराब की बोतल, 3. शराब; **~चढाणा** शराब पीना; **~पीणा** शराब पीना। **बोतल** (हि.)

बोत्तलबाज (पुं.) शराबी।

बोत्ता[1] (पुं.) दे. बोतड़ा।

बोत्ता[2] (पुं.) सामर्थ्य, (दे. पोट्टी); **~बिचारणा** सामर्थ्य देखना। **बूता** (हि.)

बोद (स्त्री.) 1. शारीरिक कमज़ोरी, दुर्बलता, 2. हीन भावना, दब्बूपन, 3. मंदी, 4. हल्कापन, 5. दरिद्रता, 6. 'ठाढ' का विलोम; **~आणा** शारीरिक, मानसिक या आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर होना; **~काढणा** 1. कमज़ोरी दूर करना, पौष्टिक आहार खाना, 2. किसी वस्तु के कमजोर अंश को निकालना, 3. साहस भरना; **~मारणा** 1. सदा हीन भावना से ग्रस्त रहना, 2. लिहाज में दबना, 3. कमज़ोरी निकालना।

बोदला (वि.) दे. बोद्दा।

बोदा (वि.) दे. बोद्दा।

बोदुआ (पुं.) दे. सिंडोरा।

बोद्दा (वि.) 1. क्षीणकाय, 2. कमज़ोर, जैसे–बोद्दा लत्ता, 3. डरपोक, दब्बू, 4. कमज़ोर (बीज, फसल, खेत आदि), 5. हीन जाति का, 6. 'ठाड्ढा' का विलोम। **बोदा** (हि.)

बोध (पुं.) 1. समझ, 2. ज्ञान, 3. तत्त्वज्ञान।

बोना (क्रि. स.) दे. बोणा।

बोब्बद (वि.) फोफस, मोटापे के कारण कार्य करने में असमर्थ। **बोबद** (हि.)

बोब्बाँ (वि.) मोटे या भारी मुँह वाली, बोक (दे.) से मुँह वाली।

बोब्बा (पुं.) मुँह, मोटा मुँह, (दे. भोभ्भा); **~भरणा** भरण-पोषण करना। **बोबा** (हि.)

बोय्या (पुं.)दे. बोहिया।

बोर[1] (स्त्री.) 1. अहंकार का भाव, घमंड, 2. झूठी बड़ाई, 3. उन्मादन की स्थिति–भैंस बोर मार कै भाजगी; (क्रि. अ.) 'बोरणा' क्रिया का प्रे. रूप; **~आणा** अहंकारवश बड़ी बातें करने लगना; **~काढणा** अकड़ निकालना; **~मारणा** 1. झूठी बड़ाई करना; 2. भैंस का उन्मादित स्थिति में आकर भागना; **~होणा** झूठा घमंड होना।

बोर[2] (पुं.) दे. बूर।

बोरड़ (पुं.) 1. श्यामपट, तख़्ता, 2. किसी कार्य का संचालन करने वाली (सरकारी) संस्था। **बोर्ड** (हि.)

बोरड़ा (पुं.) एक प्रकार का घाघरा।

बोरणा (क्रि. अ.) बोराना।

बोरदी (स्त्री.) पहुँची के आकार का हाथ का एक आभूषण।

बोरला (पुं.) माथे का एक आभूषण।

बोरा (पुं.) 1. गधे पर रखा जाने वाला बोरा जिसमें दोनों ओर बराबर भार डाला जाता है, 2. एक बोरा भर भार, 3. बड़ी बोरी, कई बोरियों को सीकर बनाई गई बोरी, 4. बहुत मोटा व्यक्ति; **~(-रे) गिरवाणा** बोरों से मिट्टी गिरवा कर भरत करवाना; **~-सा** बोरे जैसा (मोटा)।

बोरिया[1] (वि.) बड़ाई खोरा; (पुं.) 1. बिस्तर का पूर्ववर्ती शब्द, जैसे–बोरिया-बिस्तर, 2. छोटी बोरी।

बोरिया[2] (पुं.) दे. बावरिया।

बोरी (स्त्री.) पटसन की बोरी जो प्रमाण में लगभग ढाई मन भार की होती है; (वि.) उन्मादित; (क्रि. अ.) 'बोरणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलि. रूप। **बोरी** (हि.)

बोल[1] (पुं.) 1. वचन, 2. बुलाने या पुकारने का भाव–अपणे भाई नैं बोल दिये, 3. पुकार, आर्त पुकार, 4. पशु-पक्षी को दुत्कारने के लिए उत्पन्न शब्द–अरै

बोलिए इन डाँगराँ नै कित भीत्तर बड़ते आवैं सै, 5. गाना, मीठा गाना–दाद्दा लखमी! सुणा दे दो बोल हार उतरै, 6. प्यार भरे वचन–दो बोल बोल लेत्ता तै के होत्ता, 7. व्यंग्योक्ति (तुल. कचोद)– इसनैं इसे बोल मार राक्खे सैं अक ठाए ना ऊट्ठैं, 8. स्वभाव, मिथन– हमनैं तेरे बोल का ए बेरा ना पाट्या, 9. बोलने या बातचीत करने का ढंग, 10. स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य– आज काल्ह उसका बोल ठीक सै के ना?, 11. बोली, भाषा–पार के लोग्गाँ के बोल पै हँस्सी क्यूँ नाँ आवेगी जिब वे पतले नैं 'पतरा' और कुत्याँ नैं 'कुत्तेन' कहँघे, 12. संदेश–उसनैं तेरी खात्तर (लिए) बी दो बोल भेज्जे सैं, 13. पशु-पक्षियों की बोली, 14. मैथुन-क्रिया, 15 प्राण, जीवतत्त्व, जैसे–बोल लीकड़णा (प्राणांत होना), 16. लय, स्वर–दोन्वाँ के बोल मिल्लैं तै रागनी जम्मैं, 17. कहावत या कहत–बोल मैं तै न्यूँ आवै सै अक बाँग्गर के छोहरे तगड़े हूँ सैं, 18. आज्ञा, आदेश–आच्छे मा-बाप्पाँ के बाळक सदा उनकी बोल मैं रहै सैं, 19. प्रण, वचन–बोल कर राख्या सै अक छोहरा हुया तै गुड़गाम्में आळी की जात द्यूँगी, 20. हुक्का गुड़ गुड़ाने से उत्पन्न ध्वनि–थोड़ा हुक्के नैं बुला कै देख ले; (क्रि. स.) 'बोलणा' क्रिया का आदे. रूप; **ऊँच्चा~** 1. क्रोधभरा वचन, 2. हरियाणवी बोली; **~कहणा** कटु वचन बोलना; **~चुकाणा** 1. वचन पूरा करना, 2. रुपया देकर वस्तु खरीदना, 3. नीलामी में वस्तु खरीदना; **~देणा** 1. आवाज़ देकर बुलाना, 2. सचेत करना, 3. वचन देना; **~बतळा** 1. बातचीत, 2. रज़ामंदी; **~बोलणा** 1. कटूक्ति कहना, 2. गाना सुनाना; **~मारणा** 1. ताना देना, 2. पुकारना, बुलाना; **~मिलणा** 1. दो दिलों का मिलना, मित्रता होना, 2. स्वर मिलना; **~मैं रहणा** 1. आदेश-पालन करना, 2. वश में रहना; **में राखणा** अधीन रहना **~सुहाणा** किसी का व्यवहार पसंद आना, किसी की बात अच्छी लगना; **~होणा** 1. किसी से बोल-चाल का संबंध होना, 2. लड़ाई-झगड़े के बाद फिर से समझौता होना।

बोल[2] (स्त्री.) 1. वायल का कपड़ा, 2. एक प्रकार की ओढ़नी। **वायल** (हि.)

बोलचाल (स्त्री.) 1. बातचीत, 2. आपसी स्नेह, 3. कहावत–बोलचाल मैं तै, न्यूँ आवै सै अक रखपत रखापत हो सै, 4. साधारण परिचय का भाव; **~होणा** 1. मन-मुटाव दूर होना, 2. सामान्य परिचय होना।

बोलणा (क्रि. अ.) 1. बातचीत करना, 2. विरोध प्रकट करना, 3. किसी पुर्जे से ध्वनि उत्पन्न होना, 4. पशु-पक्षी द्वारा कंठ से ध्वनि निकालना, 5. भूत-प्रेत की ध्वनि किसी अन्य व्यक्ति में सुनाई पड़ना, 6. गाली देना, बकना, बड़बड़ाना, 7. हारना, थकना, 8. पाद मारना, 9. मैथुन करना, 10. पुकारना, संकेत से बुलाना, 11. दान-पुण्य करने का प्रण लेना; (वि.) 1. जो अधिक बोले, वाचाल (तुल. कहक्कड़), 2. (घुँघरू) जो अधिक बजे, अधिक बजने वाला; (क्रि. स.) 1. आवाज़ देकर बुलाना, 2. कहना, 3. सचेत करना; **~कबूलणा** इच्छा-पूर्ति होने पर दान-पुण्य करने

का वचन देना; ~-चालणा सद्व्यवहार बनाए रखना; ~(-ण) जोग्गा सामर्थ्यवान; ~-बतलाणा 1. बातचीत करना, 2. सुख-दुःख की कहना-सुनना, 3. मैथुन करना। **बोलना** (हि.)

बोलता (पुं.) 1. चित्त, मन, 2. प्राण; (वि.) मुँह बोलता, स्वतः प्रकाशित; **~काढ़णा** 1. मनपसंद वस्तु छीनना, 2. कलेजा निकालना, 3. जान निकालना; **~ठिकाणैं आणा** चित्त पुनः प्रसन्न होना; **~ठिकाणैं ल्याणा** मन को समझाना; **~ठुकणा** मन मानना; **~दाबणा** मन मसोसना; **~दुखाणा** सताना; **~मारणा** इच्छाओं को वश में करना; **~राखणा** इच्छा पूरी करना, मन रखना।

बोलती (वि.) वह जो बोले, वह जो स्वयं भासित हो; (स्त्री.) ज़बान; **~बंद करणा** 1. वध करना, 2. बोलने तक का अधिकार न देना; **~बंद होणा** प्रभाव कम होना; **~-सी जोत** 1. स्वतः भासित, स्वतः जाग्रत, 2. प्राणवान।

बोलना (क्रि. अ.) दे. बोलणा।

बोल-बाल्ला (वि.) 1. चुपचाप, शांत, 2. निरीह, 3. भयभीत होने की अवस्था– अड़े तैं बोल बाल्ला लीक्कड़ ज्या, 4. एकच्छत्र (राज्य); **~रहणा** 1. बात को शांत भाव से सुनना, 2. जवाब न देना, 3. अपना सा मुँह लेकर रहना, 4. एकांत जीवन व्यतीत करना, 5. अपने मन की बात न कह सकना; **~होणा** 1. व्यक्ति विशेष का एकच्छत्र राज्य होना, 2. आदेश चलना। **बोलबाला** (हि.)

बोळ बेंडा (स्त्री.) दे. बावल भेढ्या। तुल. बेंडवा।

बोळा[1] (वि.) पागल। **बावला** (हि.)

बोळा[2] (स्त्री.) एक चर्मकार जाति जो छाल से रंगाई करती है।

बोल्ला (वि.) 1. वाचाल, 2. जो कुछ भी कहने में संकोच न करे, (दे. कहक्कड़)।

बोली (स्त्री.) दे. बोल्ली।

बोल्ली (स्त्री.) 1. वह भाषा जो किसी घर में बोली जाती है, 2. आस-पास, पास-पड़ोस या गाँव में बोली जाने वाली बोली, आस-पास के गाँवों की मिलती-जुलती बोली (जिसकी शब्दावली, वाक्य-विन्यास और उच्चारण सामान्यतः समान होता है और जिसे समझने में उस क्षेत्र के लोगों को कोई कठिनाई नहीं होती और जो स्वतः सीख ली जाती है), 3. किसी जाति-व्यवसाय या समुदाय के लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा जिसके सभी लक्षण पास की बोली से समान होते हुए भी अपनी कुछ विशिष्टता रखते हैं, 4. वह भाषा या बोली जो किसी क्षेत्र में दूर-दूर तक बोली जाती है और यत्र-तत्र स्थानीय विशिष्टताओं के रहते हुए भी एक ही मानी जाती है, 5. ताना, व्यंग्य वचन, 6. वचन, 7. किसी विशिष्ट वर्ग के प्राणियों की बोली, 8. नीलामी के समय दी जाने वाली बोली; (क्रि. अ.) 'बोलणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~आणा** किसी स्थान विशेष की भाषा का ज्ञान होना; **~खाणा** कटु बातें सहन करना; **~देणा** 1. पुकारना, आवाज़ देकर बुलाना, 2. नीलामी की बोली लगाना; **~बोलणा** 1. वर्ग-विशेष की बोली

बोलना, जैसे–साँप, बंदर, कौए, चिड़िया की बोली, 2. सुर में सुर मिलाना, 3. ताना देना, 4. नीलामी के समय बोली लगाना; **~भूलणा** 1. क्षेत्र का आचार-व्यवहार भूलना, 2. भ्रमित होना, 3. भयभीत होना; **~मारणा/सारणा** ताना कसना, व्यंग्य कसना; **~मिलणा** 1. खान- पान तथा बोलचाल एक होना, 2. स्वभाव मिलना, 3. एक समान बोली के होना; **~सीखणा** 1. किसी के आचार-व्यवहार का अनुसरण करना, 2. बोलना सीखना; **~हारणा** 1. वचन हारना, 2. नीलामी की बोली हारना। **बोली** (हि.)

बोवणा (क्रि.स.) दे. बोणा। **बोना** (हि.)

बोवा (पुं.) खेत की बीजाई करने वाला (बोवा नंगे सिर बीज नहीं बोता); (वि.) बीजने या बोने में कुशल।

बोवा खावा (पुं.) इतनी फसल बोने वाला कि मात्र घर का गुजर-बसर हो सके। दे. बोवा।

बोवाना (क्रि. स.) दे. बुआणा।

बोवा बाही (स्त्री.) खेत बोने-बाहने का भाव या क्रिया।

बोवारा (पुं.) दे. बुआरा।

बोस (पुं.) नेताजी सुभाष चंद्र बोस; **~बंगाल्ली** सुभाषचन्द्र बोस।

बोहटळ (स्त्री.) दे. भोटळी।

बोहड़णा (क्रि.) दे. बाहवड़णा।

बोहणा (क्रि. स.) 1. दे. बूहणा, 2. दे. बोणा।

बोहना (पुं.) 1. तिनकों से बनी डलिया जिसमें रोटी आदि रखी जाती हैं, 2. बड़ी बोहनी, (दे. बोहनी[1])।

बोहनी[1] (स्त्री.) जौ, गेहूँ के तिनकों से बनाया गया कुछ शंकु-आकार पात्र जिसमें पील (जाल का फल) तोड़-तोड कर डाली जाती हैं (तुल. सिंडोरी)।

बोहनी[2] (स्त्री.) किसी सौदे या दिन की पहली बिक्री; **~करणा** दिन की प्रथम बिक्री करना; **~-बट्टा** बोहनी का लाभ; **~~करणा** सौदे की पहली बिक्री करना; **~~मनाणा** 1. प्रथम बिक्री से प्राप्त धन को श्रद्धापूर्वक स्पर्श करना, 2. प्रथम ग्राहक की प्रतीक्षा करना; **~होणा** प्रथम बिक्री होना।

बोहर (पुं.) रोहतक के निकट एक गाँव जहाँ नाथ पंथियों की तीन गद्दियाँ हैं (दर्शनी गद्दी के नाथ सवर्ण हैं, नागानाथ और औघड़-नाथ गद्दी के नाथ असवर्ण हैं, फाल्गुन सुदी सप्तमी, अष्टमी तथा नवमी को यहाँ हर वर्ष मेला लगता है)।

बोहरा (पुं.) 1. एक जाट गोत, 2. एक ब्राह्मण अल्ल; (वि.) धनाढ्य।

बोहरी (स्त्री.) 1. धानी, जौ की धानी, 2. बोहरा जाति की स्त्री।

बोहल (पुं.) ढेर।

बोहिया (पुं.) गेहूँ, जौ आदि की तीलियों से बनाया गया एक गोलाकार गहरा पात्र (तुल. छींक्का); **मीट्ठा~** तीसरे महीने के गर्भ के समय माँ द्वारा भेजी गई मिठाई; **~करणा** दे. बोझ बाँधणा।

बौखलाना (क्रि. अ.) क्रोध के कारण आग बबूला होना।

बौछाड़ (स्त्री.) 1. हलकी वर्षा, 2. झड़ी, 3. किसी के प्रति कहे हुए प्रश्नों या वाक्यों की झड़ी, (दे. पछवाड़)। **बौछार** (हि.)

बौजी (पुं.) चरसे के ऊपर का लोहे का घेरा या मंडल।

बौद्ध (पुं.) 1. बुद्ध मत का अनुयायी, 2. गौतम बुद्ध द्वारा प्रचारित धर्म।

बौद्ध-धर्म (पुं.) एक मत जो गौतम बुद्ध ने चलाया था।

बौना (वि.) दे. बोणा।

बौराना (क्रि. अ.) 1. पागल हो जाना, 2. विवेक-रहित हो जाना; (क्रि.स.) किसी को ऐसा कर देना कि वह भला-बुरा न विचार सके।

बौळी बूच (वि.) दे. बावळी बूँच।

बौहड़ी (स्त्री.) 1. दे. भोंडरी, 2. दे. भूँडरी।

ब्याँत (पुं.) 1. पशु के बच्चा जनने के दिन, 2. प्रजनन-काल; **~काढणा** किसी पशु का अपने वर्ग के ऋतुकाल से भिन्न समय में बच्चे को जन्म देना; **~फैलणा** एक ही वर्ग या जाति के प्राणियों द्वारा ऋतु-विशेष में सामूहिक रूप से बच्चों को जन्म देना; **~मारणा** किसी पशु द्वारा नियमित ब्याँत के समय बच्चा न जनना, प्रजनन का ऋतु-काल उकाना।

ब्याँतड़ (वि.) 1. बिआने (ब्याने) वाली, जो शीघ्र ही बिआने वाली हो, 2. जो हाल ही में बिआई हो; **बरस~** जो हर वर्ष बिआए।

ब्याँतु (वि.) दे. ब्याँतड़।

ब्याज (पुं.) सूद; **~के भाड़ै** मुफ्त में; **~~जाणा** 1. लाभ न मिलना, 2. बेग़ार करना।

ब्याणा (क्रि. अ.) 1. पशु द्वारा बच्चे को जन्म देना, 2. हारना, 3. अधिक थकना। **बिआना** (हि.)

ब्याध[1] (पुं.) शिकारी। **ब्याध** (हि.)

ब्याध[2] (स्त्री.) बीमारी। **व्याधि** (हि.)

ब्यान[1] (पुं.) 1. वृत्तांत, 2. साक्षी-स्वरूप कहे गए वचन; **~देणा** हाक़िम के सम्मुख घटना का ब्योरा देना; **~बदलणा** कही हुई बात से मुकरना। **बयान** (हि.)

ब्यान[2] (स्त्री.) दे. बीयाबान।

ब्यान्ना (पुं.) खरीद के लिए दी गई अग्रिम राशि, (दे. साई)। **बयाना** (हि.)

ब्यापणा (क्रि.) फैलना, व्यापक होना।

ब्यापत (स्त्री.) दे. बिपत।

ब्यापा (पुं.) (कौर.) दे. ब्याँत।

ब्याप्पी (वि.) सब जगह फैला हुआ। **व्यापी** (हि.)

ब्यालण (पुं.) दे. ब्याळु।

ब्याळु (पुं.) 1. भोजन, 2. रात्रि का भोजन। **ब्यालू** (हि.)

ब्यालू (पुं.) दे. ब्याळु।

ब्यास (पुं.) 1. महाभारत के रचयिता (इनकी जयंती आषाढ़-पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है), 2. डकोत जाति जो अधिकतर ज्योतिष का कार्य करती है, 3. डकोत जाति का व्यक्ति; (वि.) ग्रहण के समय दान लेने वाला। **व्यास** (हि.)

ब्यास्सी (वि.) बयासी की संख्या। **बयासी** (हि.)

ब्याह (पुं.) शादी। **विवाह** (हि.)

ब्याहणा (क्रि. स.) विवाह करना। **ब्याहना** (हि.)

ब्याहता (स्त्री.) 1. पत्नी, 2. विवाहित महिला। **विवाहिता** (हि.)

ब्याहना (क्रि. स.) दे. ब्याहणा।

ब्याह बाणा (पुं.) विवाह का अवसर।

ब्याहला (पुं.) 1. दूल्हा (तुल. नौस्सा), 2. पति।

ब्याहली (स्त्री.) 1. दुलहन, नव-वधू, 2. पत्नी (तुल. ब्याहता)।

ब्याही (स्त्री.) 1. जिसके साथ विवाह हुआ हो, पत्नी, 2. जच्चा-गीत, संतान-जन्म पर गाए जाने वाले गीत; (क्रि. स.) 'ब्याहणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

ब्याह्या (पुं.) जिसके साथ विवाह हआ हो, पति; (क्रि. स.) '**ब्याहणा**' क्रिया का भू. का., पुं., एकव. रूप।

ब्यूह (पुं.) चक्र, क़िला; **~रचणा** 1. षड्यंत्र रचना, 2. सैन्य दल विशेष विधी से सजाना। **ब्यूह** (हि.)

ब्योंक (पुं.) वह उपनाम जो कुटुंब के व्यवसाय, गुण या दोष आदि के आधार पर जुड़ा हो, जैसे–गंज्जे, टाल्ले, लंगड़े, राँड्डी के, कमैरे, भूरे आदि।

ब्योंत (पुं.) 1. नाप, दर्जी द्वारा लिया जाने वाला नाप, (दे. पवाणा), 2. स्थिति, अनुकूल स्थिति–तेरा ब्योंत हो जिब पइसै फेर दिए (लौटा देना); (क्रि.स.) 'ब्योंतणा' क्रिया का आदे. रूप; **~काढणा** उचित व्यवस्था निकालना; **~बिगाड़णा** व्यवस्था भंग करना।

ब्योंतणा (क्रि. स.) 1. नाप लेना, 2. नापना, 3. पीटना (व्यंग्य में)। **ब्योंतना** (हि.)

ब्योंतना (क्रि. स.) दे. ब्योंतणा।

ब्योरा (पुं.) दे. बेरा।

ब्योहार (पुं.) बर्ताव। **व्यवहार** (हि.)

ब्होत (वि.) दे. भोत।

ब्रह्म (पुं.) ईश्वर, परमात्मा, भगवान।

ब्रह्मचर्य (पुं.) 1. चार आश्रमों में से पहला, 2. वीर्य को रक्षित रखने का प्रतिबंध।

ब्रह्मचारी (पुं.) 1. प्रथम आश्रमी, 2. ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाला।

ब्रह्मज्ञानी (वि.) ब्रह्म का ज्ञान रखने वाला।

ब्रह्मदोष (पुं.) ब्राह्मण को मारने का दोष या पाप।

ब्रह्मभोज (पुं.) ब्राह्मण-भोज।

ब्रह्ममुहूर्त (पुं.) प्रभात, तड़का।

ब्रह्मर्षि देश (पुं.) हरियाणा प्रदेश।

ब्रह्मलोक (पुं.) वह लोक जहाँ ब्रह्मा जी रहते हैं।

ब्रह्मा (पुं.) दे. बिरह्मा।

ब्राह्मण (पुं.) दे. बाहमण।

ब्राह्मणी (स्त्री.) दे. बाह्मणी।

ब्राह्मी (स्त्री.) 1. भारत की एक प्राचीन लिपि जिससे नागरी लिपि का विकास हुआ, 2. एक प्रसिद्ध बूटी जो स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाली है।

ब्लोणा (क्रि. स.) दे. बिलोणा।

भ

भ हिंदी वर्णमाला का चौबीसवाँ और पवर्ग का चौथा वर्ण, इसका उच्चारण ओष्ठ है, हरियाणवी में इसका स्वतंत्र उच्चारणा कुछ-कुछ 'भै' के समान है।

भँ (स्त्री.) दे. भैं।

भंग[1] (स्त्री.) दे. भाँग।

भंग[2] (पुं.) 1. टूटने या खंडित होने की क्रिया, 2. विनाश, 3. बाधा; **~गेरणा/डालणा** बाधा उत्पन्न करना; **~पड़णा** काम में व्यवधान उत्पन्न होना।

भंग[3] (पुं.) अकाल, अनावृष्टि; **~पड़णा** अकाल पड़ना, (दे. भड़भंक)।

भंगण (स्त्री.) भंगिन (तुल. चूहड़ी)। **भंगिन** (हि.)

भंगता (पुं.) एक हीर गोत।

भंगी (पुं.) भंगी, एक अनुसूचित जाति, (दे. चूहड़ा)।

भंगेड़ी (वि.) भांग की लत से ग्रस्त।

भंटा (पुं.) बैंगन।

भंड (पुं.) 1. टकराव, 2. किसी वस्तु के खंडित होने की क्रिया।

भंडार/भंडारा (पुं.) 1. वह स्थान या कोष्ठ जहाँ विवाह-शादी जैसे उत्सवों पर मिठाई संग्रहीत की जाती है और वहाँ घी का दीया जलाया जाता है (तुल. कुठ्यार), 2. दान-पुण्य निमित्त भोजन कराने का भाव; **~टूटणा** भोजन के लिए यथेष्ट सामग्री का न बचना; **~बोलणा** कार्य-सिद्धि के लिए भंडारा करने का प्रण लेना; **~भरपूर रहणा** किसी चीज़ की कमी न रहना।

भंडार दर्शन (वि.) वह रस्म जिसके अनुसार वर-वधु को भंडारे के दर्शन कराए जाते हैं ताकि उनके गमन के बाद मायके में बरकत रहे।

भंडारी[1] (पुं.) 1. भंडारे की व्यवस्था करने वाला, रसोइया, 2. भगवान, 3. शिव; **भोला~** शिव।

भंडारी[2] (स्त्री.) बैलगाड़ी के नीचे की अलमारी। दे. भंडारी[1]।

भंतु (पुं.) 1. बैंगन, 2. जननेंद्रिय (व्यंग्य में)।

भंभड़ाणा (क्रि. स.) बहकाना।

भंभर (पुं.) दे. भाब्भड़।

भंभा[1] (पुं.) 1. बड़ा छिद्र; 2. स्रोत (तुल. घट्टा); **~फोड़णा** सिर फोड़ना, सिर से रक्त निकालना।

भंभा[2] (स्त्री.) एक ध्वनि। दे. भंभा[1]।

भंभीरी (स्त्री.) 1. 'भिन्न'-'भिन्न' करने वाला एक जन्तु, 2. मुँह से बजाने का एक बाजा, 3. पाद, अपशब्द; **~बाजणा/बोलणा** 1. भय के कारण पाद निकलना, 2. हारना।

भंभो (स्त्री.) 1. साँझी के साथ दीवार पर गोबर से मँढ़ी या बनाई जाने वाली फूहड़ स्त्री जिसके सभी लक्षण साँझी से विपरीत होते हैं, 2. साँझी की दासी; (स्त्री.) 1. मोटी (स्त्री), 2. मूर्खा, 3. फूहड़।

भंभो-माई (स्त्री.) दे. भंभो।

भंभोळा (पुं.) एक फल जो जंगली लता पर लगता है। तुल. पिलपोटण।

भँवर[1] (पुं.) भर्ता, पति।

भँवर[2] (पुं.) काल-कोठरी; (स्त्री.) 1. पानी में उत्पन्न चक्र, 2. मझधार;

~की नाथ नाथ, गोलाकार नथ, नाक का गहना विशेष।

भंवर जाल (पुं.) दे. भँवर जाळ।

भँवर जाळ (पुं.) 1. संसार की मोह-ममता, 2. संसार का आवागमन, 3. उधेड़-बुन, 4. मध्य धारा, 5. जल-चक्र।

भँवरी (स्त्री.) दे. भोंरी।

भ (पुं.) दे. भैं।

भइयाँ (पुं.) 1. दे. भैंयाँ, 2. दे. भूमियाँ

भई (पुं.) 1. साख्य भाव में प्रयुक्त संबोधन—भई बात न्यूँ सै, 2. अनिच्छा बोधक शब्द—भई! योह काम बी मन्नैं करणा पड़ैगा, 3. भाई का लघुता बोधक शब्द।

भऊ (स्त्री.) 1. पत्नी, 2. पुत्र-वधू, 3. बालक की जननेंद्री; **~भोटळी** 1. नव-वधू, वधू, 2. पुत्र-वधू। **बहू** (हि.)

भक (स्त्री.) 1. जलते समय उत्पन्न ध्वनि; 2. 'भक'-'भक' या 'धक'-'धक' की ध्वनि; **~दणे सी** भक से; **~ ~जळणा** तुरंत जलना।

भकभकणा (क्रि. स.) 1. रुक-रुक कर जलना, 2. 'भक'-'भक' होकर जलना।

भकसणा (क्रि. स.) 1. भक्षण करना, खाना, 2. निगलना।

भका (पुं.) बहकावा; (क्रि. स.) 'भकाणा' क्रिया का प्रे. रूप।

भकाऊ (वि.) 1. जो बहकावे में आ जाए, 2. (दे. भळोकड़ा)।

भकाणा[1] (क्रि. स.) 1. छलना, 2. विपरीत मार्ग पर लगाना। **बहकाना** (हि.)

भकाणा[2] (क्रि.) बहकाना।

भक्खू (वि.) अधिक खाने वाला, खाऊ-पीऊ।

भक्ख्या (स्त्री.) दे. भख्या।

भक्त (वि.) दे. भगत।

भक्तवत्सल (पुं.) भक्तों पर कृपा करने वाले भगवान।

भक्ति (स्त्री.) दे. भगती।

भक्षत (वि.) खाने वाला, भक्षण करने वाला।

भखणा (क्रि. स.) 1. भक्षण करना, 2. कहना; (वि.) विनाश करने वाला।

भख्या (स्त्री.) 1. आह, 2. हाय, आह से निकले वचन; (क्रि. स.) 1. 'भखणा' क्रिया का भू. का., एकव. रूप, 2. कहा; **~लागणा** आह पड़ना।

भग (स्त्री.) भगा, योनि।

भगत[1] (वि.) 1. सज्जन, 2. भोला-भाला, 3. भक्ति करने वाला, 4. भक्तों का बाना धारण करने वाला, 5. ठग (व्यंग्य में)। **भक्त** (हि.)

भगत[2] (पुं.) 1. दे. साँग, 2. दे. भगत। **~बाज**—स्वांग रचने वाला।

भगताई (स्त्री.) 1. भक्ति, भक्ति का भाव, **~मैं पड़णा** 1. भक्तों के चक्कर में पड़ना, 2. भक्ति करना।

भगताणी (स्त्री.) भगतनी।

भग्गी (स्त्री.) दे. भगदड़।

भगती (स्त्री.) 1. भक्ति का भाव, 2. सेवा, 3. किसी विषय में लीन होने का भाव। **भक्ति** (हि.)

भगदड़ (स्त्री.) 1. भीड़ का अचानक भागने-दौड़ने का भाव, समूह का डर कर भागने की क्रिया, 2. तेज़ी से चलने या दौड़ने का भाव, 3. जल्दी, त्वरा, भाग-दौड़; **~पड़णा/माँचणा** 1. आतंक के कारण समूह का प्राण-रक्षा के लिए दौड़ना, 2. जल्दी में होना।

भगमाँ (वि.) 1. भगवाँ या केसरिया रंग का, 2. जोगिया; (पुं.) भगवाँ बाना; **~ध्वज** मंदिर का ध्वज; **~पहरणा**

साधु बनना; **~बाणा** साधु का बाना, जोगिया वेश; **~~करणा** घर-गृहस्थ छोड़ना, जोगी बनना। **भगवाँ** (हि.)

भगर (पुं.) 1. बाल (बाली) या पौधे पर आने वाला बौर, 2. नीम का फूल, 3. मंजरी, 4.एक मोटा अन्न। **बौर** (हि.)

भगवतगीत्ता (स्त्री.) वह पवित्र ग्रंथ जिसमें महाभारत के युद्ध के समय ज्योतिसर (कुरुक्षेत्र) नामक स्थान पर अर्जुन को दिया गया श्रीकृष्ण का संदेश अंकित है। **भगवद्गीता** (हि.)

भगवती (स्त्री.) दे. भगोती।

भगवद्गीता (स्त्री.) दे. भगवतगीत्ता।

भगवान (पुं.) 1. ईश्वर, परम शक्तिशाली, 2. सब कार्यों को संपन्न करने की शक्ति वाला, 3. दीन-दयालु, कृपालु, 4. रक्षक, 5. मूर्ति में निवास करने वाली शक्ति, 6. घट-घट वासी; **~मणाणा** 1. भगवान का स्मरण करना, 2. अपने देवी-देवता का स्मरण करना; **~रूसणा** 1. बुरा समय आना, 2. किसी देवी या देवता का कुपित होना।

भगाणा (क्रि. स.) दे. भजाणा।

भगाना (क्रि. स.) दे. भजाणा।

भगीरथ (पुं.) गंगा को भूमि पर लाने वाला एक ऋषि; (वि.) 1. बड़ा तपस्वी, 2. परिश्रमी।

भगेरा (पुं.) चीता-सीह का भाई भगेरा, वो कूद्दै नौ, तै वो कूद्दै तेरा। **व्याघ्र** (हि.)

भगोड़ा (वि.) 1. भागा हुआ (न्याय के दंड से बचकर), 2. प्राण-रक्षा के लिए भाग खड़ा होने वाला, 3. वह (व्यक्ति) जो युद्ध के समय सेना से भाग निकले, 4. कायर।

भगोड़ी (वि.) पर-पुरुष के साथ भागी हुई (स्त्री), भागी हुई।

भगोती (स्त्री.) देवी, दुर्गा। **भगवती** (हि.)

भजणा (क्रि. स.) 1. भजन करना, 2. माला जपना, 3. तपस्या करना, 4. किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करना; (क्रि.अ.) दे. भाजणा। **भजना** (हि.)

भजन (पुं.) 1. गीत, धार्मिक गीत, 2. भक्ति; **~करणा** 1. माला जपना, 2. भगवान के सम्मुख कोई इच्छा या कामना करना।

भजना (क्रि. स.) दे. भजणा।

भजनानंदी (वि.) भगवान का भजन करने वाला, भक्त, सदा भक्ति में लीन रहने वाला; (पुं) एक शिव-उपासक संप्रदाय।

भजनी (पुं.) 1. मंडली के साथ गीत गाकर लोगों का मनोरंजन करने वाला, 2. भजन गाने का व्यवसाय करने वाला, 3. उपदेशक, 4. भक्त।

भजाणा (क्रि. स.) 1. भागने को प्रोत्साहित करना, 2. पशु-पक्षी को ताड़ना, दौड़ाना, 3. स्त्री का अपहरण करना, 4. हराना, थकाना, मुक़ाबले पर न ठहरने देना। **भगाना** (हि.)

भजुंग (पुं.) चर्खे में सीधी खड़ी दो खूटियाँ जो माल को नियंत्रित करती हैं।

भचीड़णा (क्रि.) जाड़ दाँत भींचना।

भटिका (पुं.) झड़बेरी का गट्ठा। दे. खेह्ही।

भट (पुं.) दे. भाट।

भटकणा (क्रि. स.) 1. राह भूलना, 2. व्यर्थ में घूमते फिरना, 3. विस्फोट होना, 4. मृतक आत्मा का मारा-मारा फिरना, जीव को मोक्ष न मिलना, 5. मन का अशांत होना, 6. किसी की

याद में मन घूमना 7. आपत्ति काल में जान बचाते फिरना, 8. अपने समुदाय या झुंड से अलग होकर घूमना, 9. मार्ग से विचलित होना, लक्ष्य-भ्रष्ट होना; (वि.) जो भटक जाए। **भटकना** (हि.)

भटकवाणा (क्रि. स.) दे. भटकाणा।

भटकाणा (क्रि. स.) 1. व्यर्थ में परेशान करना, सताना, 2. तरसाना। **भटकाना** (हि.)

भट-चंद्दर दत (पुं.) चंद्रदत्त भट्ट जिसने तैमूर के आक्रमण के समय वीरता के गाने गाकर वीरों का साहस बढ़ाया।

भटराग्गी (वि.) अभद्र राग गाने वाला, (दे. भाट)।

भटाभट (स्त्री.) 1. पटाखे आदि के विस्फोट से उत्पन्न ध्वनि, 2. लाठी के प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।

भटियाना (पुं.) रानिया, सरसा और फ़तहबाद का इलाका जिस पर भट्टियों ने कब्ज़ा कर लिया था (जन. सा. 4. 10-11)।

भणोइया (पुं.) दे. भिणोइया।

भटोणिया (पुं.) एक जाट गोत।

भट्ट (पुं.) दे. भाट।

भट्ठा (पुं.) 1. बड़ी भट्ठी, 2. पजावा, ईंट पकाने की भट्ठी, (दे. पजावा)।

भठ (पुं.) 1. जंगली पशु का बिल, 2. बड़ी भट्ठी, 3. मन, दिल; (वि.) स्थूल तथा कठोर; **~जळणा** मन अशांत होना, मन ललचाना; **~पाकणा** 1. पत्थर की तरह कठोर होना, 2. अधिक मात्रा में संग्रहीत होना।

भठियारण (स्त्री.) दे. भठियारी।

भठियारा (पुं.) 1. सराय का प्रबंध करने वाला, भट्ठे का मज़दूर, 3. एक जाति।

भठियारी (स्त्री.) 1. कहानी-किस्सों में वर्णित सराय का प्रबंध करने वाली स्त्री जो कथानक को नया मोड़ देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है और जिसका पक्ष अधिकांशतः अन्याय की ओर होता है, 2. भठियारे की पत्नी।

भड़[1] (वि.) 1. योद्धा, वीर–देक्ख्याए नाँ इसा भड़, 2. वयस्क। **भट** (हि.)

भड़[2] (स्त्री.) कूएँ की मुँडेर।

भड़क (स्त्री.) 1. भड़कन, 2. चटक, चमक, ऊपरी चमक-दमक, 3. घनीभूत इच्छा, किसी वस्तु को प्राप्त करने की लालसा, 4. बिदकने का भाव, 5. चटखने या टूटने से उत्पन्न ध्वनि, 6. फटकार (कामदेव की); (क्रि. स.) 'भड़कणा' क्रिया का प्रे. रूप; **~काढणा** 1. चभक निकालना, 2. टीस मिटाना; **~मारणा** 1. भड़कन होना, 2. चमकना, 3. फटकार लगना; **~मेटणा** टीस मिटाना; **~लागणा/ होणा** शरीर में चभक लगना।

भड़कणा (क्रि. अ.) 1. धमाका होना, 2. बिदकना, 3. विरुद्ध होना, 4. भड़कन होना, 5. अधिक चमकना, 6. (दे. बिधकणा); (वि.) जो शीघ्र भड़क या बिदक जाए। **भड़कना** (हि.)

भड़कणी (वि.) 1. शीघ्र बिदकने वाली (गाय या भैंस आदि), 2. चमकीली, चटकीली। **भड़कनी** (हि.)

भड़कना (क्रि. अ.) दे. भड़कणा।

भड़काणा (क्रि. स.) 1. उकसाना, 2. बंदूक दाग़ना, 3. बिदकाना, 4. अधिक चमकीला बनाना, 5. 'भड़'-'भड़' की ध्वनि निकालना। **भड़काना** (हि.)

भड़काना (क्रि. स.) दे. भड़काणा।

भड़कीला (वि.) दे. भड़कील्ला।

भड़कील्ला (वि.) तड़क-भड़क वाला। **भड़कीला** (हि.)

भड़दा (पुं.) धूप या गरमी की तपन।

भड़भंक (पुं.) 1. अनावृष्टि की अवस्था, सूखा, अकाल, 2. भाड़ के समान गरमी; **~ऊठणा** 1. चारों ओर सूखा ही सूखा नज़र आना, 2. अधिक गरमी होना; **~लवणा** 1. सब ओर सूखा ही सूखा होना, 2. भूमि का भाड़ की तरह तपना।

भड़भंकी (वि.) 1. भाड़ के समान भूखा, अधिक भूखा, 2. सर्वभक्षी।

भड़भड़ाना (क्रि. अ.) 1. 'भड़'-'भड़' की ध्वनि उत्पन्न होना, 2. भड़क उठना, क्रोधित होना, 3. बड़बड़ाना, 4. प्रज्वलित हो उठना; (क्रि. स.) 1. 'भड़'-'भड़' की ध्वनि निकालना, 2. लाठियों से पीट देना।

भड़भूँजा (पुं.) दे. भड़भूज्जा।

भड़भूज्जा (पुं.) 1. भाड़ भूनने वाला, 2. भाड़ भूनने का काम करने वाली एक जाति। **भड़भूँजा** (हि.)

भड़वा (पुं.) 1. वेश्या का दलाल, 2. एक गाली; (वि.) 1. लज्जाहीन, 2. निकृष्टतम चरित्र का।

भड़स (स्त्री.) 1. कूएँ की मुँडेर पर रखी जाने वाली एक भारी लकड़ी, 2. (दे. भड़ास)।

भड़सोन्ना (पुं.) राधा जी का जन्मस्थान। **बरसाना** (हि.)

भड़ाक्का (पुं.) 1. सूखी वस्तु के टूटने पर उत्पन्न ध्वनि, 2. भड़ाक की ध्वनि।

भड़ास (स्त्री.) इच्छा, कामना, बार-बार सताने वाली इच्छा; **~काढणा/मेटणा/लिकाड़णा** 1. इच्छा पूरी करना, 2. गुस्सा निकालना।

भड्डरी (स्त्री.) 1. भड्डरी नाम की महा-ब्राह्मणों की जाति जो ज्योतिष का कार्य करती है, 2. सहदेव (सहदे, सैदा, शादी) की पत्नी; (वि.) भविष्य जानने वाली।

भणक[1] (स्त्री.) 1. उड़ती हुई ख़बर, 2. धीमा स्वर, 3. भिनभिनाने की ध्वनि; **~गेरणा** चुपके से किसी के कान में बात कहना; **~पड़णा** 1. उड़ती ख़बर सुनना, 2. भिन्न-भिनाना। **भनक** (हि.)

भणक[2] (स्त्री.) 1. गंध, 2. दुर्गंध, (दे. भिणक)। **भनक** (हि.)

भणकार (स्त्री.) दे. भणक।

भणजेट्टा (पुं.) 1. 'भाणजे' का लघुता-द्योतक शब्द, 2. बहन का पुत्र।

भणत (स्त्री.) 1. उक्ति, कहावत, 2. कहने का ढंग—लखमी की तै भणत और ए थी. **भनत** (हि.)

भणभणाट (स्त्री.) 1. मक्खियों की भिनभिनाहट, 2. दुर्गंध; (वि.) घृणा; **~ऊठणा/माचणा** गंदगी के कारण मक्खियों का भिनभिनाना। **भिनभिनाहट** (हि.)

भणेल्ली (स्त्री.) सहेली, सखी (तुल. भाहेल्ली)।

भधाई (स्त्री.) बधाई।

भणोई (पुं.) दे. भिणोई।

भणोट्टा (पुं.) दे. भिणोई।

भतीजड़ा (पुं.) दे. भतीज्जा।

भतीजड़ियाँ (स्त्री.) दे. भतीज्जी, भतीजी का बहुवचन रूप (लोक गीतों में प्रयुक्त)।

भतीज-बहू (स्त्री.) 1. भतीजे की बहू, 2. स्त्रियों के लिए प्रयुक्त एक निंदा-परक शब्द।

भतीजा (पुं.) दे. भतीज्जा।

भतीज्जा (पुं.) भाई का पुत्र। **भतीजा** (हि.)

भतेरा (वि.) 1. अधिक मात्रा में, अधिक, 2. आवश्यकता से अधिक, यथेष्ट। **बहुतेरा** (हि.)

भतेरी (वि.) 1. बहुत अधिक, सीमा से परे, 2. ज्यादा; (स्त्री) अधिकांशतः उस लड़की का नाम जिसके बाद और लड़की की इच्छा न हो (तुल. भरतो, भरपाई); **~करणा** 1. सीमा लाँघना, 2. अधिक सेवा करना; **~होणा** ज़्यादती होना। **बहुतेरी** (हि.)

भतैया (पुं.) दे. भातई।

भत्ता (पुं.) निर्धारित वेतन के अतिरिक्त मिलने वाली राशि (यह राशि यात्रा, भोजन, चिकित्सा, महँगाई के रूप में दी जाती है)।

भद (स्त्री.) दे. भद्द।

भदरंग (वि.) 1. भद्दे रंग का, जिसका रंग बिगड़ गया हो, 2. बेमेल रंग का; (पुं.) 1. ताश के खेल में तुरप का पत्ता न होने का भाव, 2. ताश के खेल में किसी रंग का एक पत्ता भी न रहने का भाव, 3. निर्धन; **~करणा** 1. तुरप के रंग के पत्ते निकलवाना, 2. रंग बिगाड़ना, 3. अपमानजनक स्थिति में डालना; **~होणा** 1. रूप-कुरूप होना, 2. ताश के किसी रंग का एक पत्ता भी न रहना। **बदरंग** (हि.)

भदरा (स्त्री.) 1. भद्रा नक्षत्र, 2. अशुभ नक्षत्र, ज्योतिष का एक योग जो बुरा माना जाता है, 3. मार्ग की बाधा, बाधा। **भद्रा** (हि.)

भदवाड़ (पुं.) गेहूँ की खेती के लिए छोड़े गए खेत।

भदवाड़ी (स्त्री.) भादों का फ़सल।

भद्द (स्त्री.) बेइज़्ज़ती होने को भाव; **~पीटणा** 1. किसी की निंदा करते फिरना, 2. अपमान करना, 3. सार्वजनिक निंदा करना। **भद** (हि.)

भद्दा (वि.) 1. कुरूप, 2. अश्लील, 3. दाग़दार, 4. बुरा।

भद्र (वि.) 1. सभ्य, 2. कल्याणकारी।

भद्रकाली (स्त्री.) 1. दुर्गा जी का एक रूप, 2. कात्यायिनी।

भद्रा (स्त्री.) दे. भदरा।

भधरा (वि.) 1. अधिक मात्रा में, 2. अतिरिक्त, फ़ालतू। **बहूतेरा** (हि.)

भधाई (स्त्री.) बधाई।

भनभनाना (क्रि. अ.) दे. भिणभिणाणा।

भनुंग (स्त्री.) चरखे की गुड्डी में लगी दो पतली डंडियाँ जो 'माल' को दाएँ-बाएँ जाने से रोकती हैं।

भप्फा (पुं.) 1. झूठा वायदा, 2. झूठा बोलने का भाव, 3. अतिशयोक्ति; **~मारणा** बहकाना।

भब्भड़ (पुं.) दे. भाब्भड़।

भब्भड़-भब्भड़ (स्त्री.) भटा-भट की ध्वनि, आघात से उत्पन्न ध्वनि; **~पीटणा** निर्दयता से पीटना।

भभक (स्त्री.) 1. तपन, 2. जलन, 3. क्रोध; (क्रि. अ.) 'भभकणा' क्रिया का प्रे. रूप; **~लिकाड़णा** गुस्सा उतारना; **~होणा** अग्नि में ज्वलनशीलता शेष रहना।

भभकणा (क्रि. अ.) 1. दहकना, जलना, 2. क्रोधित होना। **भभकना** (हि.)

भभकना (क्रि. अ.) दे. भभकणा।

भभका (पुं.) भभकने का भाव या क्रिया; (वि.) वह जो भभके; (क्रि. अ.)

'भभकणा' क्रिया का भू. का., पुं., एकव. रूप।

भभकाणा (क्रि. स.) 1. अग्नि प्रज्वलित करना, 2. क्रोध दिलाना, 3. भूत-प्रेत को जाग्रत करना या भड़काना, 4. उकसाना। **भभकाना** (हि.)

भभकी (स्त्री.) 1. घुड़की, बनावटी धमकी, 2. गरमी।

भभड़ाणा (क्रि. स.) पीटना, जूतियों से पीटना। **भभड़ाना** (हि.)

भभसाड़ा (पुं.) एक अहीर गोत।

भभूत (स्त्री.) धूनी की भस्म (जिसे पवित्र माना जाता है, साधु इसे तन पर रमाते हैं, इसका औषध रूप में भी सेवन होता है); (पुं.) 1. प्रसिद्ध हस्ती, महान् व्यक्ति, 2. महान् व्यक्तित्व का व्यक्ति। **भभूति/विभूति** (हि.)

भभूळिया (पुं.) वातचक्र; (वि.) क्षणिक आवेश, (दे. बबूळिया); **~सा ऊठणा** 1. मन में हूक उठना, 2. बबूला उठना; **~होणा** तेज़ गति से दौड़ना। **बबूला** (हि.)

भमणा (क्रि.) भ्रमित होना।

भय (पुं.) दे. भै।

भयानक (वि.) डरावना।

भर[1] (वि.) 1. मात्र, केवल, 2. कुल, पूरा; (क्रि. स.) 'भरणा' क्रिया का आदे. रूप।

भर[2] (अव्य.) भार की मात्रा। उदा. रत्ती भर, पाव भर।

भरखम (वि.) 1. भारी, 2. परिपक्व अवस्था का। **भरकम** (हि.)

भरठ (पुं.) दे. भुरठ।

भरड़ा (पुं.) 1. जाति-विरोधी आचरण के कारण जाति-च्युत (ब्राह्मण) (दे. धराकड़ा), 2. भड्डरी कुल का ब्राह्मण, डकौत; **ब्राह्मण ~** भ्रष्ट ब्राह्मण; **~ब्राह्मण** 1. दे. डकोत, 2. दे. धराकड़ा।

भरड़ाट्टा (पुं.) 'भरड़' की ध्वनि के साथ टूटने की क्रिया; **~ऊठणा** तेज़ ध्वनि के साथ किसी वस्तु का खंडित होना; **~ठाणा** किसी चीज़ को नष्ट करना।

भरण (स्त्री.) वर्षा (सीमित प्रयोग)।

भरणा (क्रि. स.) 1. रिक्त स्थान में कोई वस्तु डालना, पूर्ण करना, 2. कूएँ से पानी भरना, 3. तृप्ति होना, 4. पीटना–आज तै वो भर गर्‌या, 5. कान भरना, किसी के विरुद्ध उकसाना, 6. दंड भरना, भुगतना, 7. डसना या काटना, जैसे–साँप का डंक भरणा, 8. पेट पालना, 9. चारपाई या पिलंग भरना, 10. देना; (क्रि. अ.) 1. हर प्रकार से पूर्ण होना, 2. मन भरना, अनिच्छा होना, 3. मन भारी होना, 4. ऊबना, तंग आना, 5. अत्यंत क्रोध में होना, 6. दूषित वस्तु से कोई अंग लिप्त होना, 7. घटित होना, जैसे–मेळा भरणा; (वि.) 1. पनघट का (कूआँ), 2. वह जो भरे; **~कूआ** पनघट का कूआँ। **भरना** (हि.)

भरणी (स्त्री.) 1. किया हुआ कार्य, भाग्य–ईब अपणी भरणी नैं भोग, 2. कूएँ की चक्री (तुल. घिरणी), 3. भोगने की क्रिया–करणी सो भरणी, 4. एक नक्षत्र।

भरत[1] (पुं.) 1. गड्ढे आदि को भरने का भाव, 2. अधिक भोजन करने का भाव, 3. व्रत का विलोम; **~करणा** 1. गड्ढा पाटना, 2. अधिक भोजन करना, 3. घूस देना; **~की टूम** वह आभूषण जो खोखला न हो; **~होणा** गड्ढा आदि पाटा जाना।

भरत[2] (पुं.) काँसा मिली एक धातु।

भरत[3] (पुं.) 1. श्रीराम का भाई, चरत (शत्रुघ्न) का भाई, 2. एक प्रतापी राजा (दुष्यंत का पुत्र), 3. हरियाणे का एक प्रतापी सम्राट जिसने हरियाणे में अश्वमेध का अनुष्ठान किया था, 4. जड़ भरत।

भरत-खंड (पुं.) वह भूखंड जिसमें भारत देश स्थित है, वह भूखंड जिसमें आर्यावर्त स्थित है।

भरत-चरत (पुं.) भरत और शत्रुघ्न।

भरतरी (पुं.) कथा-कहानियों में वर्णित राजा भर्तृहरि जिसने अपनी माता के आदेश और पत्नी की दुश्चरित्रता के कारण योग धारण किया था।

भतृहरि (हि.)

भरता (पुं.) पति; (वि.) भरण-पोषण करने वाला। **भर्ता** (हि.)

भरतार (पुं.) 1. पति, 2. (दे. करतार)।

भरतारी (स्त्री.) पत्नी; (वि.) 1. व्रत (पतिव्रता) का पालन करने वाली, 2. भरण-पोषण करने वाली (माँ), (दे. मँहतारी)।

भरतिया (पुं.) दे. भरथिया।

भरती (स्त्री.) 1. सेना में भर्ती होने का भाव, 2. सरकारी कार्यालय या अस्पताल आदि में प्रविष्ट होने का भाव; (पुं.) 'व्रती' (उपवासी) का विलोम; **~खुल्हणा** समय-समय पर सेना में भर्ती होने के लिए प्रवेश खुलना; **~जाणा** सेना में भर्ती होने जाना; **~होणा** सैनिक-वृत्ति अपनाना। **भर्ती** (हि.)

भरतो (स्त्री.) अधिकांशत: उस लड़की का नाम जिसके बाद संतान के रूप में लड़कियों की इच्छा न हो (तुल. भतेरी, भरपाई)।

भरथ (पुं.) दे. भरत[1, 2, 3]।

भरथरी (पुं.) दे. भरतरी।

भरथिया (पुं.) 'भरत' धातु का बंटेनुमा पात्र जिसमें साग, खिचड़ी आदि पकाई जाती है।

भरना (क्रि. स.) दे. भरणा।

भरनी (स्त्री.) दे. भरणी।

भरपाणा (क्रि. अ.) कृतकृत्य होना, धन्य होना।

भरपाणी (स्त्री.) धन्या, कृतकृत्या। उदा. –हे भरपाणी जणूँ जल की भरी जलहरी सै, तन कर दिया डामांडोल (लचं)।

भरपूर (वि.) हर प्रकार से पूर्ण।

भरपूरी (वि.) भरी पूरी।

भरभराणा (क्रि. अ.) 1. गला भरना, 2. गला भारी होना, 3. गले में भर-भर की ध्वनि होना। **भर्राना** (हि.)

भरम[1] (पुं.) 1. शंका, आशंका, 2. डर, 3. धोखा,

4. भेद, फूट, 5. वहम; **~-भरोट्टा** संसार। **भ्रम** (हि.)

भरम[2] (पुं.) घूमने का भाव। **भ्रमण** (हि.)

भरम-जाळ (पुं.) 1. मोह-माया, 2. संसार, 3. षड्यंत्र। **भ्रम-जाल** (हि.)

भरमणा (क्रि. अ.) 1. भटकना, भटकते फिरना, 2. भ्रमित होना, 3. विचलित होना, 4. पागल होना, 5. भूत-प्रेत आत्मा का बार-बार चक्कर लगाना, 6. लालसा में भटकना, जैसे–बेट्याँ के पाच्छै भरमणा, 7. मोहित होना; (वि.) भ्रमित होने वाला। **भरमना** (हि.)

भरमाँ (वि.) 1. जो खोखला या पोपला न हो, 2. ठुका हुआ या कसा हुआ (बदन), 3. भरकर बनाए हुए (खाद्य-पदार्थ), जैसे भरमाँ टींड्डे।

भरवाँ (हि.)

भरमाणा (क्रि. स.) 1. भ्रम में डालना, 2. बहकाना। **भरमाना** (हि.)

भरमार (स्त्री.) आधिक्य।

भरवाना (क्रि. स.) दे. भराणा।

भरा (पुं.) 1. पूर, 2. पेट-पूजा; (क्रि. स.) 'भरणा' क्रिया का भू. का. पुं., रूप। **भराव** (हि.)

भराई (स्त्री.) 1. भरने, डालने, पूरित करने आदि की क्रिया, 2. पिटाई, 3. सिंचाई, 4. भूमि का लगान; (क्रि. स.) 'भरणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~पै जाणा** सिंचाई के लिए जाना।

भराणा (क्रि. स.) 1. भरने का काम अन्य से करवाना, 2. पूरित कराना। **भरवाना** (हि.)

भरियल (वि.) 1. भरा हुआ, 2. वह (भूमि) जो वर्षा में पानी से भर जाए, 3. वह (मोर) जिसके चंदे निकलते हों, 4. 'झड़ियल मोर' का विलोम, 5. जो पोला न हो, 6. पूरित।

भरिया (वि.) 1. भरा हुआ, 2. जो पोला न हो; **~रीत्ता** 1. वह फुंसी जो भर कर खाली होती रहे, 2. भरने और खाली होने की अवस्था।

भरी भरेवा (पुं.) विवाह के समय वधु के लिए भेंट किया गया साज-सिंगार का सामान।

भरूँट (पुं.) दे. भुरठ।

भरैड़ा (पुं.) वराह, जंगली सूअर; (वि.) 1. विकराल, 2. (दे. सूर-भरेड़ा)।

भरैया (वि.) 1. पानी भरने वाला, 2. सिंचाई में कुशल, 3. भरने में कुशल।

भरोट (पुं.) दे. भरोट्टा।

भरोटड़ी (स्त्री.) चारे का हल्का गट्ठा।

भरोट्टा (पुं.) 1. चारे का भारी गट्ठा, 2. भार, 3. जिम्मेदारी; **~उळगाणा** भरोटे को क्षणभर के लिए सिर से ऊपर उठाना; **~ठाणा** ज़िम्मेदारी वहन करना; **~तारणा** भार उतारना; **~बाँधणा** 1. अधिक ज़िम्मेदारी लेना, 2. चारे का गट्ठड़ बाँधना, **~लिवाणा** 1. भार को बीच-बीच में थोड़े समय के लिए अन्य के सिर पर रखवाना, 2. सहायता करना, सहयोग देना—तूँह के मेरा न्यारा ए भरोट्टा लिवाबैघा। **भरोटा** (हि.)

भरोसा (पुं.) दे. भरोस्सा।

भरोस्सा (पुं.) विश्वास। **भरोसा** (हि.)

भर्तृहरि (पुं.) दे. भरतरी।

भळ (स्त्री.) 1. जल उठने का भाव या क्रिया, 2. घनीभूत इच्छा-तृप्ति की कामना; **~ऊठणा** 1. जल उठना, 2. तेज़ लपटें निकलना, 3. इच्छा-पूर्ति की टीस उठना; **~मारणा** दे. भळ ऊठणा।

भळक (स्त्री.) 1. चमक, प्रतिबिंबित होने वाली चमक, (दे. पळक), 2. खोज, टोह—मैं तेरी ए भळक मैं था; **~लागणा** 1. मोहित होना, 2. सुराग मिलना, 3. कभी-कभी चमक दिखाई देना।

भळका (पुं.) 1. किसी वस्तु के कभी-कभी चमक जाने का भाव, (दे. पळका), 2. संदेह—चोराँ से का भळका लाग्गै सै; **~पड़णा** कभी-कभी दीख पड़ना, दिखाई देना और ओझल होना; **~मारणा** 1. तेज़ प्रकाश निकलना, 2. अधिक

चमकना, 2. संदेह होना; **~लागणा** 1. वहम होना, 2. प्रेम-पाश में फँसना।

भळके (पुं.) नगीने (मोती) उदा.–मीरा करले ने सिंगार पहर कै नौ भलकयाँ की नाथ। (लचं.)

भलभलड़ी (स्त्री.) देव-उठनी एकादशी के दिन पूजी जाने वाली एक देवी।

भळभळाणा (क्रि. अ.) 1. चमकना, 2. जल-जल उठना, 3. लपलपाना।

भळमणसी (स्त्री.) भलाई, शराफत। **भलमनसी** (हि.)

भलमनसी (स्त्री.) दे. भलमणसी।

भळसणा (क्रि. स.) 1. झुलसना, अधजला करना, 2. भस्म बनाना; (क्रि. अ.) 1. पौधे का गरमी के कारण या पानी के अभाव में मुरझाना, 2. अग्नि की झल लगना, 3. अधिक गरमी पड़ना; (वि.) वह जो झुलसे। **भलसना** (हि.)

भला (वि.) 1. अच्छा, सज्जन, भलाई का काम करने वाला, 2. सुंदर; (पुं.) 1. भलाई, 2. कहानी के बीच- बीच में भरा जाने वाला हुँकारा, 3.स्वीकारोक्ति द्योतक शब्द, 4. कल्याण–भला हो उसका, 5. संदेहास्पद स्थिति द्योतक शब्द–भला! ओ अड़ै क्यूक्कर आवैगा?

भलाई (स्त्री.) 1. पुण्य का काम, 2. परोपकार, 3. भला, 4. यश; **~मिलणा** 1. वहा-वाही मिलना, 2. यश मिलना।

भळाणा (क्रि. स.) 1. चित्त को दूसरी ओर लगाना, 2. (उल्टी-सीधी बातों से) बच्चों का मनोरंजन करना, (दे. भळोणा)। **बहलाना** (हि.)

भलार (स्त्री.) 1. भलाई, 2. सुरक्षा; **~चाहणा** भलाई चाहना।

भळावा (पुं.) 1. एक ओषधि जो मादा पशु को गरमाने या उन्मादित करने के लिए दी जाती है, 2. बहकावा, 3. छल, कपट।

भली (वि.) 1. सुंदर, अच्छी, 2. सज्जन (महिला), (दे. भला); **~-भली का हिमात्ती** केवल सुख के समय का साथी।

भलेरी (वि.) भली।

भळोकड़ा (वि.) 1. बहकावे में आने वाला, 2. भुलक्कड़।

भळो-चपळो (स्त्री.) 1. प्रसन्न करने या चापलूसी करने का भाव, 2. अनुनय-विनय करने का भाव, 3. बच्चों को बहका कर या बहला कर मनाने का भाव; **~कै** फुसला कर।

भलोणा (क्रि.स.) 1. (बच्चे को) बहलाना, 2. बहकाना, 3. चित्त को दूसरी ओर लगाना, 4. मनोरंजन कराना; (पुं.) वंचिका, छलावा; **~-चकलोणा** 1. बहलाना, 2. बच्चे की चापलूसी करना।

भल्ला (वि.) सज्जन (व्यंग्य में)। **भला** (हि.)

भवजाल (पुं.) दे. भोजाळ।

भवन (पुं.) 1. विशाल निवास, 2. मंदिर, 3. मढ़ी।

भवन-गढ़ (पुं.) 1. देवी-पूजन का स्थान, 2. राजमहल।

भवर (पुं.) 1. जल में पड़ने वाला चक्र, 2. भूमिगत काल कोठरी, 3. जीवात्मा, 4. भौंरा, 5. पति। **भँवर** (हि.)

भवसागर (पुं.) दे. भोसाग्गर।

भवानी (स्त्री.) दे. भवान्नी।

भवान्नी (स्त्री.) 1. सरस्वती (चैत्र शुक्ल अष्टमी को इनकी जयंती मनाई जाती है), 2. चंडी, 3. पार्वती, 4. पत्नी, 5. क्रोधी स्वभाव की स्त्री; **~मनाणा**

कार्य-आरंभ या समाप्ति पर देवी का स्मरण करना–आ री भवान्नी बास कर मेरे घट के पड़दे खोल, रसना पर बास्सा करो माई सुद्ध सबद मुख बोल; **~मानणा** अनुकूल समय आना।

भवानी (हि.)

भविष्यवाणी (स्त्री.) 1. होने वाली बात को पहले ही कह देना, 2. आकाश-वाणी।

भवेकी (वि.) 1. ज्ञानी, 2. छली–जिसा बुगला भगत भवेकी। **विवेकी** (हि.)

भसंड (वि.) गहरे काले रंग का (कौए के रंग का), (दे. मुराड़) **काळा~** अधिक काला। **भुशुंड** (हि.)

भसंडी (पुं.) काक भुशुंडी, राम भक्त कौआ विशेष; (वि.) काला।

भुशुंडी (हि.)

भसम (स्त्री.) 1. राख, 2. पवित्र राख, 3. मुर्दे की राख, 4. धूनी की राख, 5. किसी धातु आदि को जलाकर तैयार की गई ओषधि, 6. जलाने की क्रिया, 7. विनाश, 8. अभिशाप देकर जलाने का भाव; (वि.) 1. काली, 2. भूरे रंग की; **~चढाणा/ रमाणा** शरीर पर भस्म रमाना; **~होणा** 1. ईर्ष्यावश जलना, 2. राख होना, जलना, 3. बुरी तरह जलना। **भस्म** (हि.)

भसमाँ (पुं.) दे. भसमीं।

भसमाँसर (पुं.) एक राक्षस।

भस्मासुर (हि.)

भसमाँ (पुं.) एक प्रकार का खिज़ाब।

भसमीं (स्त्री.) 1. बाल रंगने का काग़ल या रंग, 2. राख, 3. मिट्टी, 4. चिता की राख, 5. (दे. भसम़)। **भस्मी** (हि.)

भस्म (स्त्री.) दे. भसम।

भस्मासुर (पुं.) दे. भसमाँसर।

भाँक्खर (पुं.) 1. चना, बिनौला आदि का मिला-जुला चारा, 2. छोटी डली।

भाँखड़ी (स्त्री.) गोखरू, काँटों वाली घास विशेष।

भाँग (स्त्री.) एक नशीला पदार्थ।

भंग (हि.)

भांगर (स्त्री.) तलछट मिट्टी।

भाँग्गी (वि.) भाँग का नशा करने वाला।

भाँज्जी (स्त्री.) 1. किसी काम को अनावश्यक रूप से रोकने-टोकने या बाधा डालने का भाव, 2. ताना, व्यंग्य, 3. चुगली; **~मारणा** बनते काम में बाधा डालना। **भाँजी** (हि.)

भाँड[1] (पुं.) 1. एक जाति, 2. शारीरिक भव-भंगिमाओं से मनोरंजन करने वाला, 3. बहुरूपिया, 4. साँगी, 5. नट, 6. एक जाति; (वि) 1. निर्लज्ज, बेशर्म, 2. मसखरा, विदूषक, 3. गंदा, कुरूप; **~कुदाणा/नचाणा** 1. विशेष उत्सव पर भाँड के मनोरंजक कृत्यों का आयोजन करना, 2. साँग कराना (व्यंग्य में)।

भाँड[2] (पुं.) बहुत बड़ा मटका, (दे. गोळ[2]); (क्रि. स.) 'भाँडणा' क्रिया का आदे. रूप। **भांड** (हि.)

भाँडणा (क्रि. स.) 1. बेतरतीब लकीरें खींचना, 2. गंदा लेख लिखना, 3. भांडपन का कार्य करना।

भाँडना (हि.)

भाँडणी (स्त्री.) 1. भांड की पत्नी, 2. माया।

भाँडना (क्रि. स.) दे. भाँडणा।

भाँडोत्ती (स्त्री.) भाँडपने का कार्य, (दे. साँग)।

भाँड्डा (पुं.) 1. मिट्टी का पात्र, 2. खंडित पात्र, 3. अन्न भंडारित करने का बड़ा घड़ा, घड़ा, 4. शरीर, 5. उदर, 6. सूर्य; (क्रि.स.) 'भाँडणा' क्रिया का भू. का., पुं. रूप; **~फूटणा** 1. रहस्य खुलना, 2. पाप का घड़ा फूटना, 3. सूर्य निकलना; **~भरणा** पाप का घड़ा भरना; **~होणा** 1. घड़ा अपवित्र होना, 2. पात्र खंडित होना। **भाँडा** (हि.)

भाँड्डी[1] (स्त्री.) 1. हँडिया, हाँडी, काली हँडिया, 2. अपवित्र घड़ा; (क्रि.स.) 'भाँडणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप। **भाँडी** (हि.)

भाँड्डी[2] (स्त्री.) भाँड की क्रियाएँ, शरीर को मोड़ने-तोड़ने की क्रियाएँ, **~तोड़णा** 1. अभद्र ढंग से अंग- संचालन करना, 2. अंग-संचालन द्वारा अठखेलियाँ दिखाना, 3. नट-विद्या का प्रदर्शन करना।

भाँत[1] (स्त्री.) 1. तरह, प्रकार, 2. रीति, ढंग; **~-भाँत के** 1. बेमेल वस्तुएँ, 2. तरह-तरह के। **भाँति** (हि.)

भाँत[2] (स्त्री.) दो तरह का व्यवहार, सौतेला व्यवहार, (दे. दुभाँत); **~बरतणा** सौतेला व्यवहार करना, पक्षपातपूर्ण व्यवहार करना।

भाँतला (वि.) कुरूप, जिसके शरीरिक अवयवों में अनुपात न हो, बेडौल; **आँतला-~** कुरूप, बेडौल।

भाँति (स्त्री.) दे. भाँत[1]।

भाँथ (स्त्री.) दे. कोली[2]।

भाँफणा (क्रि. स.) ताड़ना, अनुमान लगाना। **भाँपना** (हि.)

भाँभरा (वि.) 1. कही हुई बात का बुरा न मानने वाला, 2. मुँहफट, 3. 'घूँह्ना' का विलोम; **~सुभा** मुँहफट स्वभाव।

भाँवर (स्त्री.) दे. फेरे।

भाँवरा (वि.) दे. भाँभरा।

भाँस (स्त्री.) गीत की लय या टेक।

भा[1] (पुं.) 1. बिक्री की दर, 2. विचार-तूँ पहल्याँ अपणा भा बता के करैगा?, 3. मुख की आकृति, 4. स्वभाव, 5. तरह-याह बात ईंह भा तै नाँ होणी थी। **भाव** (हि.)

भा[2] (स्त्री.) जुताई में जो जगह बिना जुताई रहती है।

भाईचारा (पुं.) बंधुबांधव।

भाईपणा (वि.) भाईपन का भाव।

भाई बट (स्त्री.) भाइयों के बीच बाँटी गई भेंट आदि। उदा. ब्याह पै पागड़ियाँ की भाई बट (बाँट) दी।

भाऊ (पुं.) मराठा सदाशिव राव भाऊ जो पानीपत की लड़ाई (1761 ई.) में हार गया था; **~का माळ लुटाऊ** अंधाधुंध लूट।

भाख पाटणा (क्रि.) दे. पोह पाटणा।

भाखला (पुं.) एक बिछौना।

भाग[1] (पुं.) किस्मत। **भाग्य** (हि.)

भाग[2] (पुं.) हिस्सा; (स्त्री.) विभाजन की क्रिया।

भाग-दौड़ (स्त्री.) दौड़-धूप, (दे. भगदड़)।

भागधुक (पुं.) कर वसूलने वाला।

भागना (क्रि. अ.) दे. भाजणा।

भागवत (स्त्री.) श्रीमद्भागवत।

भागवान (वि.) भाग्यशाली; (स्त्री.) पत्नी (संबोधन या व्यंग्य में)। **भाग्यवान** (हि.)

भागीरथ (पुं.) दे. भगीरथ।

भागीरथी (स्त्री.) दे. गंगाजी।

भाग्य (पुं.) दे. भाग[1]।

भाग्यवान (वि.) दे. भागवान।

भाज (स्त्री.) 1. भागने की क्रिया, 2. भगदड़–इसी के भाज लाग रही सै घर उत्तै पावैगा; (क्रि. अ.) 'भाजणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पड़णा** भगदड़ मचना; **~मचाणा** जल्दी मचाना; **~माचणा** 1. जल्दी में होना, 2. भगदड़ मचना; **~लीकड़णा** स्त्री का किसी अन्य पुरुष के साथ भाग जाना; **~-ल्यूज** 1. त्वरा, 2. भगदड़; **~ ~कै** भाग-दौड़ कर।

भाजणा (क्रि. अ.) 1. तेज़ चलना या दौड़ना, 2. पर-पुरुष के साथ भाग निकलना, 3. डर कर भागना, 4. हारना, हार मानना, 5. जान-बूझकर बचना या टलना; (वि.) तेज़ चलने वाला पशु (बैल)। **भागना** (हि.)

भाजतड़ी (क्रि. वि.) भागते हुए, भागते-भागते (लोक-गीतों में प्रयुक्त)।

भाजी (स्त्री.) दे. भाज्जी।

भाज्जड़ (स्त्री.) भगदड़, भागने का भाव, त्वरा; **~पड़णा** 1. भगदड़ मचना, 2. जल्दी में होना; **~मारणा** डर- आशंका के मारे अधिक जल्दी में होना–अरै के भाज्जड़ मारी जा सै।

भाज्जी (स्त्री.) 1. तरकारी, 2. उत्सव आदि के समय बाँटी जाने वाली मिठाई; (क्रि. अ.) 'भाजणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं., एकव. रूप। **भाजी** (हि.)

भाट (पुं.) 1. एक जाति, एक ब्राह्मण जाति, 2. भाट जाति का व्यक्ति, 3. सारंगी पर पुराने किस्से गाते-बजाते हुए माँगने वाला, 4. किसी कुटुंब की गाथाओं का लेखा-जोखा रखने वाला; (वि.) बड़ाईखोर, झूठी बड़ाई करते फिरने वाला; **~गाणा** कोई घटना इतनी प्रसिद्ध होना कि स्थान-स्थान पर उसकी चर्चा चले–अरै के थारे ब्याह नैं भाट गावैंघे।

भाटड़ा (पुं.) 'भाट' का अल्प रूप।

भाट्टी (पुं.) गूजरों का एक गोत।

भाट्ठा (पुं.) 1. पत्थर, कठोर पत्थर, 2. बट्टा, लोढ़ा, 3. किसी खाद्य-पदार्थ (खिचड़ी) आदि का अत्यंत गाढ़ा होने का भाव; (वि.) 1. निर्जीव, निस्पंद, 2. कठोर, 3. गाढ़ा; **~करणा** खिचड़ी आदि का सख़्त बनाना; **~पड़णा** बुद्धि भ्रष्ट होना, अक्ल पर पत्थर पड़ना; **~मारणा** 1. अपमान करना, 3. कटु वचन कहना; **~-सी** पत्थर के समान कठोर; **~होणा** भाठे के समान कठोर होना। **भाठा** (हि.)

भाड़ (पुं.) 1. अन्न भूनने की भट्ठी, 2. दीवार आदि में बना बड़ा छिद्र, (दे. बंबा), 3. घाटा, घाटे का काम; (वि.) गंदा स्थान; **~खुल्हणा** 1. व्यापार में घाटा आना, 2. दीवार में बड़ा छिद्र होना; **~झोंकणा** 1. व्यर्थ में जीवन बिताना, 2. भाड़ में बालन डालना; **~भूनणा** 1. भाड़ में अन्न भूनना, 2. व्यर्थ में जीवन बिताना, 3. घाटे का व्यापार करना; **~मैं जाणा** नष्ट होना; **~-सा भूनणा** 1. किसी वस्तु को नष्ट करना, 2. अधिक व्यय करना; **~-सा मुँह** 1. गंदा मुँह, 2. चौड़ा और गंदा मुँह; **~होणा** 1. गंदा होना, 2. सर्वभक्षी होना, 3. भाड़ गर्म होना।

भाड़ा (पुं) यात्रा-किराया, किराया; **~(-ड़ै) करणा** किराए पर लेना; **~(-ड़े) का टट्टू** 1. किराए का आदमी, 2. सस्ता आदमी; **~तोड़ा** किराया आदि;

~ठहराणा किराया निश्चित करना; **~तोड़णा** किराया कम करना।

भाड़ी (पुं.) किराएदार।

भाण (स्त्री.) 1. जीजी, 2. सहेली, सखी। **बहिन** (हि.)

भाणज बहू (स्त्री.) भानजे की वधु।

भाणजा (पुं.) बहिन का पुत्र। **भानजा** (हि.)

भाणमती (स्त्री.) भानुमती, कथाओं में वर्णित एक पात्र; **~का कुणबा** 1. बेमेल परिवार, 2. बेमेल वस्तुओं का संग्रह।

भाणा (क्रि. अ.) 1. पसंद आना, 2. भोजन स्वादिष्ट लगना; (वि.) वह जो भाए या पसंद आए। **भाना** (हि.)

भात[1] (पुं.) 1. मामा द्वारा अपने भानजा-भानजी के विवाह के अवसर पर भेंट द्रव्य आदि, 2. भात के समय गाया जाने वाला गीत; **~आणा** 1. बहिन की ओर से भात का संदेश आना, भानजा-भानजी के विवाह का निमंत्रण मिलना, 2. भाती द्वारा भात लाया जाना; **~न्योतणा** भानजी- भानजे के विवाह से लगभग एक महीने पूर्व बहिन का भाई के घर आकर विवाह में सम्मिलित होने का निमंत्रण देना तथा गुड़, चावल आदि भेंट करना; **बड़-~** नाना द्वारा दिया गया भात; **~भरणा** मामा द्वारा भानजा-भानजी के विवाह में धन, द्रव्य आदि देना; **~लेणा** बहिन की ससुराल की पंचायत की उपस्थिति में भातियों द्वारा दी गई राशि, वस्त्र आदि स्वीकार करना।

भात[2] (पुं.) चावल।

भातई (पुं.) दे. भाती।

भा-ता (पुं.) दर, निर्ख। **भाव-ताव** (हि.)

भाती (पुं.) स्त्री के पीहर के वे व्यक्ति जो भात देने आए हों (भातियों की विशेष सेवा की जाती है)।

भादर का अखाड़ा (पुं.) कुरुक्षेत्र के स्वाँगी भादर की स्वाँग मंडली।

भादरी (स्त्री.) 1. कान के ऊपर के भाग में पहनी जाने वाली सोने की बाली, 2. बहादुरी।

भादवा (पुं.) 1. भादों या भाद्र का महीना, 2. विक्रम संवत् का छठा महीना। **भादों** (हि.)

भादों (पुं.) दे. भादवा।

भाद्दर (वि.) वीर; (पुं.) एक प्रसिद्ध साँगी; **~का खाड़ा** थानेसर की प्रसिद्ध साँग मंडली जिसका साँग ब्रह्म-मुहूर्त में शुरू होकर दोपहर तक चलता था। **बहादुर** (हि.)

भाद्दूड़ा (पुं.) दे. भादवा।

भान[1] (पुं.) भली प्रकार से जोता हुआ खेत; **~करणा** खेत को भली प्रकार सँवारना।

भान[2] (पुं.) भानु। सूर्य।

भानजा (पुं.) दे. भाणजा।

भानणी (स्त्री.) ताने के सूत को दो भागों में बाँटने वाला उपकरण।

भानना (क्रि. स.) कहना।

भानीवाळा (पुं.) भंगी जाति का एक गोत।

भान्नीदास (पुं.) भक्त हरिदास का गुरु।

भाप (स्त्री.) 1. पानी गरम होने पर उठने वाला धुँआ, 2. सर्दियों में मुँह से निकलने वाला धुँआ।

भाफ़ (स्त्री.) दे. भाप।

भाबी (स्त्री.) दे. भाब्भी।

भाब्भड़ (पुं.) मूँज के समान एक घास जिसकी रस्सी बाँटी जाती है। **भाभड़** (हि.)

भाब्भी (स्त्री.) 1. भाई की पत्नी, 2. स्त्रियों के लिए प्रयुक्त एक निंदापरक शब्द। **भाभी** (हि.)

भाभर (स्त्री.) मोटे कण की सरंध्र मिट्टी।

भाभो (स्त्री.) दे. भाब्भी।

भाभी (स्त्री.) दे. भाब्भी।

भामणा (क्रि. स.) समझना, महत्त्व देना–तूँ उसनैं क्याँह नैं भाम्मै सै; (स्त्री.) दे. भावना।

भाम्मर (स्त्री.) अग्नि की साक्षी में लिए जाने वाले फेरे। **भाँवर** (हि.)

भाम्मा साह (पुं.) एक दानी पुरुष; (वि.) दानी। **भामाशाह** (हि.)

भाम्मैं (अव्य.) चाहे, ओर से–तेरै भाम्मैं कुछ भी हो।

भार[1] (क्रि. स.) 'अंदर' का विलोम; **~कैड़** 1. बाहर की ओर, 2. शौच के लिए, 3. शौच; **~~जाणा** 1. शौच के लिए जाना, 2. बाहर जाना। **बाहर** (हि.)

भार[2] (पुं.) वजन, बोझ।

भारकस[1] (पुं.) बारात में सम्मिलित होने वाले, रथ, गाड़ी, बहली आदि वाहन।

भारकस[2] (पुं.) घोड़े के सीने के साथ बँधी पट्टी जो भार खींचने में सहायक होती है।

भारगो (पुं.) एक ब्राह्मण गोत्र (ये च्यवन ऋषि को अपना आदि पुरुष मानते हैं, इन्हें ढोसरे भी कहते हैं जिसका संबंध ढोसी पर्वत से है), (दे. ढोस्सी)। **भार्गव** (हि.)

भारणा (पुं.) 1. बाहर का स्थान, दरवाज़े के बाहर का स्थान, 2. द्वार, (दे. बारणा), 3. घर के बाहर का चौक, 4. शौच आदि जाने का स्थान, 5. दूरी का स्थान, परदेश; (क्रि. वि.) बाहर की ओर; **~(-णै) पाँह लीकड़णा** 1. घर में जी न लगना, 2. चरित्रहीन होना।

भारत (पुं.) दे. भारत-बरस।

भारत-बरस (पुं.) 1. भारतवासियों की जन्म-भूमि, 2. ऋषि-मुनियों का देश, 3. गंगा-यमुना का देश, 4. वह देश जहाँ भगवान जन्म लेते हैं, 5. गौ-भक्तों का देश, 6. जड़ भरत का देश (इन्हीं के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा)। **भारतवर्ष** (हि.)

भारतवास्सी (पुं.) 1. भारत में निवास करने वाला, भारतीय, 2. भारत मूल का व्यक्ति। **भारतवासी** (हि.)

भारतवासी (पुं.) दे. भारतवास्सी।

भारतीय (वि.) भारत का, भारत से संबंधित।

भारदवाज (पुं.) 1. ब्राह्मणों का एक गोत्र, 2. एक ऋषि। **भारद्वाज** (हि.)

भारद्वाज (पुं.) दे. भारदवाज।

भारला (वि.) 1. बाहर वाला, 2. 'भीतरला' का विलोम, 3. ऊपरी (मन), 4. पराया।

भारवाई (वि.) 1. बाहर की ओर का–गाम तैं घणा भारवाई घर बी किमैं नाँ, 2. बहुत परे का।

भारा (वि.) दे. भार्‌या।

भार्‌या (वि.) 1. अधिक भार का, बोझिल, स्थूल, 2. तगड़ा, वजनी, जैसे–भार्‌या आदमी, 3. बड़ा–भार्‌या मोरचा मार लिया, 4. आकार में बड़ा, 5. सम्मानित–भार्‌या आदमी की बेइज़्ज़ती कर दी। **भारी** (हि.)

भार्या (स्त्री.) पत्नी, (दे. लुगाई)।

भाल (पुं.) माथा, मस्तक।

भाळ (स्त्री.) 1. तलाश, ढूँढ़ने का भाव, टोह, 2. परख; (क्रि. स.) 'भाळणा' क्रिया का प्रे. रूप; **~पड़णा** टोह होना, तलाश होना; **~लेणा** 1. टोह लेना, 2. राज़ी-खुशी का पता लगाना, 3. किसी स्थान-विशेष की स्थिति का पता लगाना, 4. मन की बात जानने का प्रयास करना।

भाळणा (क्रि. स.) 1. परखना, जाँच करना, 2. अनुमान लगाना; **देखणा-~** जाँच-पड़ताल करना। **भालना** (हि.)

भाला (पुं.) दे. भाल्ला।

भाळिया (वि.) रक्षक, चौकसी करने वाला, (दे. रखवाळा)।

भालू (पुं.) दे. भाल्लू।

भाल्ला (पुं.) बरछा, एक नुकीला आयुध। **भाला** (हि.)

भाल्लू (पुं.) रींछ; (वि.) लंबे बालों वाला; **~-सा** जिसके शरीर पर लंबे बाल हों। **भालू** (हि.)

भावज (स्त्री.) 1. भाभी, 2. एक गाली।

भाव-ताव (पुं.) दे. भा-ता।

भावना (स्त्री.) 1. विचार, ध्यान, 2. इच्छा, चाह।

भावी (स्त्री.) 1. भाग्य, 2. होनी, 3. भविष्य।

भावें (अव्य.) भले ही। उदा.–मेरे भावें कुछ भी हो। दे. भाम्मैं।

भाषण (पुं.) व्याख्यान।

भाषा (स्त्री.) दे. भासा।

भाष्यकार (पुं.) टीकाकार।

भासणा (क्रि. स.) 1. बोलना (कविता में प्रयुक्त), 2. रटना, स्मरण करना, कंठस्थ करना; (क्रि. अ.) 1. चमकना 2. दीख पड़ना।

भासा (स्त्री.) 1. बोली, वह बोली जिसका प्रयोग किसी क्षेत्र-विशेष के लोग करते हैं, देसी बोली, 2. हिंदी भाषा या भाखा जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है और जिसकी शब्दावली संस्कृत बहुल है, 3. संस्कृत से भिन्न हिंदी भाषा, 4. वह सरल भाषा जो समझ में आ जाए, 5. विचार, भाव, 6. विद्या, 7. पढ़ाई-लिखाई; **~पढणा** हिंदी भाषा पढ़ना और लिखना (1947 ई. से पूर्व पंजाब में 'भासा' का प्रयोग उर्दू की विलोम भाषा के रूप में होता था, स्कूलों में कक्षा के 'उर्दू' और 'भासा' के अलग विभाग होते थे)। **भाषा** (हि.)

भासोंटी (स्त्री.) भैंस का चमड़ा या खाल।

भास्कर (पुं.) सूर्य।

भास्सा (स्त्री.) 1. दे. भासा, 2. दे. बोली।

भाहेल्ली (स्त्री.) बहिन के समान प्यारी सखी।

भिंजकी (स्त्री.) दे. भाँज्जी।

भिंटणा (क्रि. अ.) 1. शूद्र जाति के व्यक्ति से स्पर्श होना, 2. अस्पृश्य वस्तु से स्पर्श होना, 3. अपवित्र होना, 4. भ्रष्ट होना।

भिंडी (स्त्री.) दे. भींड्डी।

भिंदल (पुं.) दे. बिंदल।

भिक्ख्या (स्त्री.) 1. दुर्वचन, 2. भिक्षा।

भिक्षा (स्त्री.) दे. भिक्स्या।

भिक्षापात्र (पुं.) वह बर्तन जिसमें भीख ली जाती है।

भिक्षु (पुं.) 1. संन्यासी, 2. भिखारी, 3. बौद्ध संप्रदाय का साधु।

भिक्स्या (स्त्री.) 1. भीख, 2. आत्म- निवेदन; **~करण जाणा** भिक्षा माँगने जाना;

~माँगणा 1. अनुनय-विनय करना, याचना करना, 2. भीख माँगना। **भिक्षा** (हि.)

भिखम (वि.) विकट, विषम।

भिखारिन (स्त्री.) भीख माँगने वाली।

भिगोणा (क्रि. स.) दे. भेणा; (पुं.) दे. भिगोन्ना।

भिगोत (पुं.) एक अहीर गोत।

भिगोना (क्रि. स.) दे. भेणा; (पुं.) दे. भिगोन्ना।

भिगोन्ना (पुं.) पतीला। **भगूना** (हि.)

भिचणा (क्रि. अ.) 1. दो वस्तुओं के बीच में दबना, दबना, 2. भीड़ में फँसना, तंग स्थान में फँसना, 3. भार के नीचे शरीर का कोई अंग दबना, 4. आँख बंद होना, 5. मुसीबत में पड़ना, 6. कटा-कटा या दूर-दूर रहना, संकोच करना, 7. असमंजस में पड़ना, 8. समीप आना–क्यूँ भिच्च्या आवै सै? **भिचना** (हि.)

भिच्छा (स्त्री.) भीख। **भिक्षा** (हि.)

भिजकी (स्त्री.) टोक, कार्य-आंरभ में होने वाली टोक।

भिजवाणा (क्रि. स.) 1. भेजने या भिजवाने का काम अन्य से कराना, 2. पहुँचवाना। **भिजवाना** (हि.)

भिजवाना (क्रि. स.) दे. भिजवाणा।

भिजाणा (क्रि. स.) दे. भिजवाणा।

भिठ (पुं.) दे. भठ।

भिड़ंत (स्त्री.) मुठभेड़।

भिड़ (स्त्री.) दे. भिरड़; (क्रि. अ.) 'भिड़णा' क्रिया का आदे. रूप।

भिड़णा (क्रि. अ.) 1. टकराना, 2. लड़ना, 3. पशुओं का लड़ना, 4. दरवाज़े का बंद होना, सटना, 5. तुक मिलना, उपमा सटीक बैठना, 6. संयोग से भेंट होना, 7, विचार-साम्य होना; (वि.) 1. वह जो भिड़े या टकराए, 2. झगड़ालू; **किवाड़ ~** घर सूना होना; **पाँ~** चलते समय टखने टकराना। **भिड़ना** (हि.)

भिड़ना (क्रि. अ.) दे. भिड़णा।

भिड़माँ (वि.) जो भिड़े, सटे या मिले हुए हों। **भिड़वाँ** (हि.)

भिडाण[1] (स्त्री.) मादा भेड़िया।

भिडाण[2] (स्त्री.) भिड़ंत, टकराहट।

भिड़ाणा (क्रि. स.) 1. टकराना, 2. लड़ने के लिए प्रोत्साहित करना, 3. तुक मिलाना, 4. दरवाज़ा बंद करना या करवाना, 5. मेल कराना, 6. सटाना, मिलाना। **भिड़ाना** (हि.)

भिड़ावा (वि.) लड़ाई-झगड़े के लिए उकसाने वाला।

भिणक (स्त्री.) 1. मक्खियों के भिन भिनाने की ध्वनि, 2. दुर्गंध, 3. उड़ती खबर, भनक, 4. अकड़, ऐंठ; **~ऊठणा/मारणा** 1. दुर्गंध होना; 2. मक्खियों का भिनभिनाना; **~काढ़णा** अकड़ निकालना; **~पड़णा** 1. उड़ती-सी ख़बर मिलना, 2. सुध लेना। **भिनक/भनक** (हि.)

भिणकणा (क्रि. अ.) 1. भिनभिनाना, मक्खी आदि का मँडराना, 2. दुर्गंध आना; (वि.) ग़लीज़। **भिनकना** (हि.)

भिणभिणी (वि.) सूखी हुई। मुर्झाई हुई।

भिणभिणाणा (क्रि. अ.) 1. गुंजारना, 'भन'-'भन' शब्द करना, 2. बड़बड़ाना। **भिनभिनाना** (हि.)

भिणोड़या (पुं.) 1. बहन (छोटी) का पति, 2. पुरुषों के लिए प्रयुक्त एक उत्तेजनापरक शब्द। **बहनोई** (हि.)

भिणोई (पुं.) दे. भिणोइया।

भिणोण (स्त्री.) 1. सौत?, 2. सास? 3. एक गाली, स्त्री के लिए प्रयुक्त एक निंदापरक शब्द।

भिधकणा (क्रि. अ.) दे. बिधकणा।

भिन (स्त्री.) 1. ठीक, सर्वथा उचित, 2. 'भिन'-'भिन' की ध्वनि; **~की बात** उचित बात, उचित संदर्भ की बात; **~बताणा** 1. बूझा निकालना, 2. यतातथ्य वर्णन करना; **~मारणा** सही-सही बताना। **अभिन्न/भिन** (हि.)

भिनकना (क्रि. अ.) दे. भिणकणा।

भिनभिनाना (क्रि. अ.) दे. भिणभिणाणा।

भिन्नाणा (क्रि. अ.) 1. भिनभिनाना, 2. क्रोधित होना। **भिन्नाना** (हि.)

भियाणो (स्त्री.) मेवात के लोगों की एक खाप या क्षेत्र।

भिर (अव्य.) दे. बिर।

भिरकुटिया (स्त्री.) भृकुटि, भौंह।

भिरगु (पुं.) एक ऋषि। **भृगु** (हि.)

भिरड़ (स्त्री.) काला तथा मोटा ततैया; (वि.) 1. क्रोधी, 2. बदले की भावना रखने वाला; **~का छत्ता** 1. आफ़त, 2. क्रोधी; **~मैं हाथ देणा** विपत्ति बुलाना; **~-सी लड़ना** अत्यंत कष्ट होना। **भिड़** (हि.)

भिरड़ी[1] (स्त्री.) चक्री जिसके दोनों किनारे उभरे होते हैं और जो रस्सी में बल देने को काम आती है; (वि.) भिड़ के स्वभाव का।

भिरड़ी[2] (स्त्री.) दे. रई।

भिरसट (वि.) चारित्रिक रूप से पतित; **~बुद्धि** भ्रष्ट बुद्धि, मलिन बुद्धि। **भ्रष्ट** (हि.)

भिरसपत (पुं.) 1. बृहस्पतिवार, 2. देव गुरु बृहस्पति जिनका निवास हरियाणा माना जाता है। **बृहस्पति** (हि.)

भिश्ती (पुं.) दे. भिसती।

भिसटळ (वि.) 1. अपवित्र, 1. (दे. बेहू), 2. (दे भिरसट), 2. चरित्रहीन; **~करणा** 1. अपवित्र करना, 2. भोज्य-सामग्री को अपवित्र करना; **~होणा** 1. चारित्रिक दृष्टि से पतित होना, 2. खान-पान में खाद्य-अखाद्य का भेद न बरतना, 3. धर्म-भ्रष्ट होना। **भ्रष्ट** (हि.)

भिसत (पुं.) स्वर्ग। **बहिश्त** (हि.)

भिसती (पुं.) 1. एक मुसलमान जाति, 2. मशक से पानी भरने वाला, सक्का। **भिश्ती** (हि.)

भिसपत (पुं.) दे. भिरसपत।

भिस्टा (पुं.) मल, टट्टी। **विष्ठा** (हि.)

भींच (स्त्री.) भींचने, जकड़ने या कसकर पकड़ने की क्रिया; (क्रि. स.) 'भींचणा' क्रिया का आदे. रूप।

भींचणा (क्रि. स.) 1. कसकर पकड़ना, 2. दबाना, 3. दो वस्तुओं के बीच में दबाना, 4. बोझा डालना, 5. आँख बंद करना, 6. अंग-संकोचन करना, 6. कंजूसी करना; (वि.) कंजूस। **भींचना** (हि.)

भींचना (क्रि. स.) दे. भींचणा।

भींटणा (क्रि. स.) 1. शूद्र जाति के व्यक्ति का उच्च जाति के व्यक्ति से स्पर्श होना (भिंटने की अस्पृश्यता निवारण के लिए बच्चे या तो अन्य को छू देते हैं या 'नहाई-धोई सूँड्डी अकास मैं' कहते हैं और अपने को शुद्ध मान लेते हैं), 2. अपवित्र करना, 3. जूठा करना, उच्छिष्ट करना। **भींटना** (हि.)

भींड्डा (वि.) भींडा, वह (पशु) जिसके सींग नीचे की ओर झुके हों, भेड़े के समान सींगों वाला।

भींड्डी (स्त्री.) अंगुली के आकार की एक सब्जी जो अधिकतर वर्षा-ऋतु में पकती है। **भिंडी** (हि.)

भींत (स्त्री.) 1. दीवार, 2. बाधा। **भीत** (हि.)

भींतड़ा/भींतडी (स्त्री.) छोटी भीत, (दे. ओटड़ा)। **भीत** (हि.)

भी (अव्य.) बल देने वाला समेतार्थक निपात, यथा–तूँ भी अड़ै ए था, (दे. बी)।

भीख (स्त्री.) भिक्षा; (वि.) याचनापूर्वक किया गया अनुनय-विनय।

भीखम (पुं.) कार्तिक स्नान के अंतिम पाँच दिन; (वि.) दृढ़, (दे. भीस्सम); **~न्हाणा** भीष्म पंचक का स्नान करना –दिनाँ पच भीखम न्हाई, जाणूँ सारे कातिक न्हाई। **भीष्म** (हि.)

भीगना (क्रि. अ.) दे. भीजणा।

भीजणा (क्रि. अ.) 1. गीला होना, वर्षा में भीगना, 2. पसीजना, 3. हृदय-द्रवित होना, 4. जल में भिगोए गए अन्न का फूलना–देखिये रै चणे भीज गे?; (वि.) जो शीघ्र भीगे। **भीगना** (हि.)

भीजना (क्रि. अ.) दे. भीजणा।

भीड़ (स्त्री.) 1.जन-समूह, ठठ, 2. तंग स्थान, 3. संकट, 4. 'छीड़' का विलोम; **अड़ी-~** कठिनाई का समय; **~पड़णा** विपत्ति-काल आना; **~पड़ी मैं काम आणा** आड़े समय में काम आना **~-भड़ाक्का** भीड़-भड़ाका, अधिक भीड़।

भीड़-भाड़ (स्त्री.) अधिक भीड़।

भीड़ा (वि.) 1. तंग, छोटा, 2. निकट; **~राह होणा** दूरी तय होना; **~होणा** 1. निकट होना, 2. तंग या छोटा होना।

भीड़ी (वि.) तंग, संकुचित; **~धरती होणा** डूब मरने को भी स्थान न मिलना।

भीणी (वि.) 1. धीमी, 2. सुगंधि-युक्त। **भीनी** (हि.)

भीतर (क्रि. वि.) दे. भीत्तर।

भीतरी (वि.) अंदरूनी।

भीत्तर (क्रि. वि.) 1. अंदर, 2. निकट, पास–क्यूँ भीत्तर बड़्या आवै सै, 3. हृदय में, मन में–जाणूँ सूँ जो तेरै भीत्तर सै; **~आणा** 1. अंदर समाना, 2. प्रवेश करना; **~बड़णा** 1. घर में घुसे रहना, 2. भेद लेना; **~बाड़णा** 1. शत्रु को पीछे धकेलना, 2. प्रेमी को आश्रय देना; **~भरणा** 1. पेट भरना, 2. हृदय उमड़ना; **~-भार जाणा** 1. शौच जाना, 2. चिंतित अवस्था में टहलना। **भीतर** (हि.)

भीत्तरला (पुं.) अंतर्मन, हंस; (वि.) अंदरूनी, 'भारला' का विलोम; **~रोणा** हंस रोना, अंतर्मन से रोना।

भीत्तरली (वि.) अंदर की, आंतरिक; **~मार** गुम चोट; **~-भारली** 1. पिशाचिनी, 2. परी, 3. अंदर-बाहर की।

भीम (पुं.) 1. भीमसेन, एक पांडु-पुत्र, 2. एक पक्षी (वि.) बलवान, योद्धा।

भीमसैन (पुं.) दे. भीम।

भील (पुं.) एक जंगली जाति।

भील परवार (पुं.) भंगी जाति का एक गोत।

भीषण (वि.) 1. डरावना, 2. भयानक, 3. दुष्ट।

भीष्म (पुं.) दे. भीस्सम; (वि.) दे. भीस्सम।

भीष्म पितामह (पुं.) देवव्रत, गांगेय या शान्तनु के पुत्र जो आजन्म ब्रह्मचारी रहे।

भीस्सम (वि.) 1. प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, 2. दृढ़; (पुं.) भीष्म पितामह; **~परतिग्या** भीष्म प्रतिज्ञा, कठोर प्रण। **भीष्म** (हि.)

भुँकाणा (क्रि. स.) 1. भौंकने के लिए प्रेरित करना, 2. कुत्ते के 'पिलूरों' को लड़ाना, 3. उल्टा-सीधा रहने को बाध्य करना, बुलवाना, बोलने को बाध्य करना। **भौंकना** (हि.)

भुंगा (पुं.) चोरों को रुपया दिलाने वाला बिचौलिया। दलाल।

भुँचाळ (पुं.) दे. भोंचाळ।

भुखमरा (वि.) 1. कंगाल, भूखा, 2. बुरी नीयत का, 3. लालची।

भुखमरी (स्त्री.) 1. भूखा मरने की स्थिति, 2. अकाल की स्थिति।

भुखेरा (वि.) भूखा; (पुं.) भिखारी।

भुगतणा (क्रि. स.) 1. कष्ट झेलना, 2. दुष्कर्म का फल भोगना; (क्रि. अ.) 1. पूरा करना, निबटना–यो काम बी भुगत्या, 2. कर्ज़ा उतारना। **भुगतना** (हि.)

भुगतना (क्रि.स.) दे. भुगतणा; (क्रि.अ.) दे. भुगतणा।

भुगताणा (क्रि. स.) 1. निबटाना, 2. आरोपित काम को पूरा करना, 3. कर्ज़ा उतारना, 4. कष्ट देना। **भुगताना** (हि.)

भुगताना (क्रि. स.) दे. भुगताणा।

भुच्च (वि.) 1. काला और मोटा (व्यक्ति), 2. कुरूप; **काला~** काला और कुरूप।

भुच्चड़ (वि.) दे. भुच्च।

भुजंग (पुं.) साँप, सर्प।

भुज (स्त्री.) बाहु, बाँह। **भुजा** (हि.)

भुजा (स्त्री.) 1. हाथ, 2. दीवार, दीवार-खंड, 3. स्तंभ, 4. रेखा; **~बाँधणा** हाथ जोड़ना, अनुनय-विनय करना।

भुजिया (स्त्री.) साग के पत्तों को उबाल कर तथा पानी निचोड़ कर बनाई सूखी तरकारी, भूजी; **~बणाणा** नष्ट करना।

भुड़ता (पुं.) 1. बैंगन को भून कर बनी तरकारी, 2. बुरी तरह से रौंदी हुई या कचूमर निकाली हुई वस्तु; **~बणाणा** कचूमर निकालना।

भुणंग (स्त्री.) चरखे का एक उपकरण जो 'माल' (दे. माळ[1]) को उचित स्थान पर रखने में सहायता देता है।

भुणभुणाणा (क्रि. अ.) बड़बड़ाना भुन-भुन करना। **भुनभुनाना** (हि.)

भुतासणा (क्रि. अ.) 1. घबराना, 2. भौचक्का होना।

भुतेरा (वि.) दे. भतेरा।

भुनगा (पुं.) एक क्षुद्र जीव।

भुनना (क्रि. अ.) 1. अन्न के दानों का गर्म राख आदि में भली प्रकार सिकना, भूना जाना, 2. कुढ़ना, 3. दग्ध होना, 4. रुपये आदि का रेज़गारी में बदलना।

भुनभुनाना (क्रि. अ.) 1. 'भुन'-'भुन' का शब्द करना, 2. बड़बड़ाना, 3. कुढ़ना।

भुनाई (स्त्री.) 1. भुनवाने का पारिश्रमिक, 2. भूनने का कार्य; (क्रि. स.) 'भुनाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

भुनाणा (क्रि. स.) 1. भाड़ में दाने भुनवाना, 2. नोट तुड़वाना, रेज़गारी करवाना। **भुनाना** (हि.)

भुनाना (क्रि. स.) दे. भुनाणा।

भुफणणा (क्रि. अ.) दे. भुफनाणा।

भुफनाणा (क्रि. अ.) बासी होने या सड़ने के कारण फूही लगना, फूही लगना। **भुफनाना** (हि.)

भुभळाणा (क्रि. स.) 1. 'भूभळ' या गरम राख में पकाना, 2. झुलसना।

भुरंड (पुं.) दे. खुरंड; (वि.) 1. काला, 2. कुरूप।

भुरठ (पुं.) 1. एक काँटा (जो पशु के शरीर पर चिमट जाता है), (दे. दिन में तारा), 2. भुरठ का पौधा।

भुरभुरा (वि.) 1. जल्दी भुरने या किरने वाला, 2. कोमल, 3. रेतीला; **~सुभा** द्रवणशील स्वभाव।

भुरळी (स्त्री.) 1. वह मोटा चारा जो जौ-गेहूँ के पौधे की छोटी डंठल और अन्न आदि निकलने के बाद भूसे के रूप में बचा रहता है, जौ-गेहूँ के पौधे का 'गाह्या' या कुटा हुआ भूसा, 2. नाक का एक कीलनुमा आभूषण; **~-डूँडळी** जौ-गेहूँ के चारे के छोटे डंठल।

भुराड़ (वि.) दे. मुराड़।

भुलक्कड़ (वि.) जल्दी भूलने वाला।

भुलवाणा (क्रि. स.) बाधा डालकर स्मृति से निकलवाना, (दे. बिचळाणा)। **भुलवाना** (हि.)

भुलवाना (क्रि. स.) 1. दे. भुलवाणा, 2. दे. बिचळाणा।

भुळसणा (क्रि. स.) 1. झुलसना, 2. गरम राख में पकाना, 3. राख में अधपका करना; (वि.) झुलसने में सक्षम (रेत आदि)। **भुलसना** (हि.)

भुळाणा (क्रि. स.) 1. भूल जाना, 2. (लोकप्रियता के कारण) अपने पूर्वज या प्रतिद्वंद्वी को दूसरों के मन से निकाल देना, 3. बहकाना, 4. बच्चे का ध्यान दूसरी ओर करना, बहकावा देना। **भुलाना** (हि.)

भुलाना (क्रि. स.) दे. भुळाणा।

भुलामों (पुं.) दे. भभूळिया।

भुळावा (पुं.) 1. बहकाने का भाव, 2. छल, कपट, वंचिका। **भुलावा** (हि.)

भुळेक्खा (पुं.) 1. भूलने का भाव, 2. भ्रमित होने का भाव।

भुळोकड़ा (वि.) भुलक्कड़ स्वभाव का।

भुसंड (वि.) दे. भसंड।

भुस (पुं.) सूखा चारा, तूड़ा, तूड़ी; **~काढणा** पीट कर कचूमर निकालना; **~भरणा** भूसे के समान लकड़ी से पीटना, पीटना; **~भऱ्या होणा** बुद्धिहीन होना। **भूसा** (हि.)

भूँ (अव्य.) चाहे, जो चाहे, चाहे कोई (स्त्री.) भूमि; **~कोए** जो चाहे।

भूँगड़े (पुं.) दे. भूगड़े।

भूँजणा (क्रि. स.) 1. दाने आदि भूनना, 2. गोली दाग़ कर मारना। **भूनना** (हि.)

भूँड (पुं.) 1. एक उड़ने वाला काले रंग का छोटा कीड़ा, 2. बंदूक का घोड़ा; (वि.) काला, कुरूप; **गिरोळिया~** विष्ठा की गोली बनाकर उड़ने वाला भूँड; **~-मान** भूँड के आकार का, छोटा; **~-सा** काला कलूटा; **~-अँधेरा** घना अँधेरा; **~-सा भूनणा** गोली से मारना।

भूँडरी (स्त्री.) दे. भोंडरी।

भूँडरू (पुं.) 1. बीज से निकली नई कोंपल, भ्रूण कोंपल, 2. भिगोए अन्न से अंकुरित अंकुर, 3. अंकुर, (दे. घूँडरू); **~जामणा/फूटणा/लीकड़णा/होणा** पौधा अंकुरित होना।

भूँडळिया नोम्मीं (स्त्री.) दे. भडळिया नवमी।

भूँड्डा (वि.) 1. काले रंग का, 2. कुरूप, 3. बुरे स्वभाव का, 4. बुरी अवस्था का; **~मुँह बणाणा** 1. मुँह फुलाना, 2. उपेक्षा के भाव से देखना; **~सुभा** दुष्ट स्वभाव; **~-सूँड्डा** गंदा, गंदी अवस्था में। **भूँडा** (हि.)

भूँड्डी (वि.) 1.भूंडे रंग की, काले रंग की, 2. मलिन, 3. बुरी (बात), 4. बुरे स्वभाव की; **~करणा** 1. मलिन करना, 2. किसी के साथ दुष्टता का व्यवहार करना; **~कहणा** 1. बुरी-भली कहना, 2. गाली देना; **~ढाळाँ** बुरी तरह; **~ढाळाँ डकराणा** बुरी तरह रोना; **~बोलणा** उचित व्यवहार न करना; **~होणा** 1. बुरा होना, 2. बुरी अवस्था में होना; **~-सी** 1. बुरी-सी, 2. गंदी-सी, **~सुनाणा** गाली देना, न कहने वाली बात सुनाना। **भूँडी** (हि.)

भूँदणा (क्रि.) दे. भूनना।

भूआ (स्त्री.) पिता की बहिन। **बूआ** (हि.)

भूकंप (पुं.) दे. हल्लण।

भूक्खा (वि.) 1. भूखा पेट, क्षुधातुर, 2. किसी वस्तु की लालसा रखने वाला; **~(-क्खे) घराँ की** ओछे घराने की; **~-तिसाया** भूखा प्यासा; **~नंगगा** हर प्रकार से हीन। **भूखा** (हि.)

भूख (स्त्री.) 1. खाने की इच्छा, 2. कामना।

भूखनपत/भूखनपतिया (वि.) 1. सदा भूखा रहने वाला, 2. कंजूस।

भूख-हड़ताळ (स्त्री.) किसी माँग की पूर्ति हेतु किया जाने वाला अन्न-त्याग।

भूगड़ा (पुं.) 1. भुना हुआ चना, 2. चना, 3. खील, (दे. धाणी); **~-सा खिलणा** 1. भूने हुए चने के समान आभायुक्त होना, 2. बिखरना, खील-खील होकर बिखरना, 3. प्रसन्न होना; **~-सी** सुंदर-सी, आभा-युक्त (वधू); **~ ~रात** प्रकाशित रात्रि, चाँदनी रात्रि।

भूगोल (पुं.) वह विषय जिसमें भूमि के स्वरूप, प्राकृतिक विभाजन, जलवायु आदि की जानकारी होती है।

भूजड़ा (पुं.) 1. भाड़ भूनने वाला, 2. एक जाति जिसका व्यवसाय भाड़ भूनना है (तुल. भड़भूज्जा)। **भड़भूँजा** (हि.)

भूजड़ी (स्त्री.) सूखा कूड़ा-करकट जिससे सर्दी के दिनों में आग तापी जाती है; **~चुगणा** जलाने के लिए कूड़ा-करकट, तिनके आदि एकत्रित करना; **~जळाणा/बाळणा** सर्दी में तपने के लिए तिनके आदि जलाना; **~सिकणा** सर्दी के दिनों में सार्वजनिक स्थान पर तिनके आदि जला कर तपना या सिकना; **~होणा** 1. जल कर नष्ट होना, 2. कुढ़ना।

भूज्जी (स्त्री.) दे. भुजिया। **भूजी** (हि.)

भूड (स्त्री.) 1. रेतीली किंतु उपजाऊ भूमि, 2. रेत, मोटा रेत।

भूड देस (पुं.) 1. रेतीला प्रदेश, 2. हरियाणे का राजस्थान से सटा भू-भाग।

भूड्डा (वि.) रेतीला; (पुं.) एक जाट गोत; **~रेता** महीन रेत।

भूण (पुं.) भौंरा।

भूत (पुं.) 1. मृतक की आत्मा (जिसकी अकाल मृत्यु या संसार की मोहमाया में अधिक लगाव होने के कारण मुक्ति नहीं होती और वह सदा भटकती फिरती है), 2. मृतक की आत्मा जो किसी की काया में प्रवेश करके बोलती है, सताने वाली आत्मा, 3. बिना सिर,

उलटे पैर आदि की विचित्र डरावनी आकृति जिसका पीपल, जाँटी, ऊजड़ स्थान आदि में निवास माना जाता है, 4. डर; (वि.) 1. कुरूप, 2. मैला-कुचैला, 3. बीता हुआ (काल); **~आणा** शरीर में भूत-आत्मा का प्रवेश करके बोलना या सताना; **~काढणा** 1. डर दूर करना, 2. भूत भगाना, जंत्र, मंत्र, तंत्र की सहायता से किसी के शरीर से मृतक की आत्मा से छुटकारा दिलाना; **~(-ताँ) की राही** आकाश-गंगा; **~(-ताँ) बास्सा होणा** घर पर ताला पड़ना, वीरान होना, उजड़ना; **~भजाणा** डर या आशंका निकालना; **~होणा** 1. अधिक पिटाई के कारण बेहोश होना, 2. बहुरूपिया होना, कुरूप होना, 3. लापता होना, 4. मोक्ष न मिलना।

भूतणी (स्त्री.) मृतक स्त्री की आत्मा जिसे मोक्ष नहीं मिला हो; (वि.) डरावनी, कुरूपा; **~उतारणा** 1. मिर्च, कुत्ते की विष्ठा आदि की दुर्गंध से भूतनी निकालना, 2. भय दूर करना; **~चढाणा** 1. भूतनी के खेल में किसी बच्चे की पीठ बार-बार थपथपा कर भूतनी चढ़ाने का अभिनय करना, 2. पागल बनाना; **~-सी** 1. सलीके से न रहने वाली स्त्री, 2. वह जिसके बाल बुरी तरह बिखरे हों। **भूतनी** (हि.)

भूतनी/भूतिनी (स्त्री.) दे. भूतणी।

भू-देब्बी (स्त्री.) अन्नपूर्णा देवी, भूमि।

भूनणा (क्रि. स.) 1. अग्नि, रेत या कड़ाही में भूनना, पकाना आदि, 2. जलाना, 3. नष्ट करना, 4. गोली से मारना, 5. मन जलाना, 6. रह-रह कर कष्ट देना, सताना। **भूनना** (हि.)

भूनना (क्रि. स.) दे. भूनणा।

भूप (पुं.) राजा।

भूप-पुरंजन (पुं.) श्रीमद् भागवत महापुराण के चतुर्थ स्कंध पर आधारित पं. लखमीचंद का स्वांग।

भूपाल (पुं.) राजा।

भूफण (स्त्री.) फफूँदी, (दे. भुफणाणा)।

भूब (स्त्री.) रोना; **~देणा** हिचकियाँ लेकर रोना; **~मारणा** चिल्ला- चिल्लाकर रोना।

भूबणा (क्रि. अ.) रोना, चिल्लाकर जोर से रोना।

भूबल (स्त्री.) दे. भूभळ।

भूभळ (स्त्री.) 1. गरम राख, 2. अधजली या धीमे जलने वाली अग्नि, राख में दबी आग, 3. आग; (वि.) क्रोध; **~करणा** 1. जलाना, सताना—क्यूँ मेरा जी भूभळ करै सै, 2. भूभल में पकाना, कच्चा-पक्का पकाना, 3. क्रोध दिलाना, 4. नष्ट करना; **~दाबणा** राख में अंगारा दबाना ताकि आग जल्दी न बुझे; **~बाँधणा** 1. अध-पके फोड़े पर गरम राख बाँधना (जिससे वह पक जाए), 2. गरम राख से शरीर के किसी अंग को सेंकना, 3. काम-चलाऊ उपचार करना; **~मैं टीकड़ा दाबणा** जल्दी में होना; **~-सी सिलगणा** कुढ़ना, जलना; **~होणा** 1. जल-भुन जाना, 2. क्रोधित होना। **भूभल** (हि.)

भूमति माला (स्त्री.) विजयमाला।

भूमि (स्त्री.) दे. भूम्मी।

भूमियाँ (पुं.) 1. नया गाँव बसने पर प्रथम मरने वाले व्यक्ति की समाधि जिसे 'भैंयाँ' नाम से पूजा जाता है, 2. नया गाँव बसाने वाले की समाधि जिसे गाँव

के लोग श्रद्धा से पूजते हैं, (दे. भैंयाँ)।

भूमिया (पुं.) दे. भूमियाँ।

भूम्मी (स्त्री.) 1. धरती, 2. जन्म-भूमि, 3. अपना देश, 4. संसार, स्थल-मंडल; **~चालणा/हलणा** 1. भूकंप आना, 2. प्रकोप व्याप्त होना; **~ढहणा** विनाश होना; **~तारणा** जीवधारियों को मोक्ष देना, कल्याण-कार्य करना; **~पै ऊत्तरणा** अवतार धारण करना; **~पाटणा** पाप बढ़ने के कारण भूमि का फटना; **~राखणा** भूमि की रक्षा करना। **भूमि** (हि.)

भूर (स्त्री.) दे. भूड।

भूरा (वि.) 1. गोरे रंग का, साफ़ या निखरे हुए रंग का, 2. सफ़ेद, जैसे–भूरा बाजरा, 3. कुछ-कुछ लाल रंग का, जैसे–भूरी गा (गौ), 4. पीलापन लिए हुए चमकीले रंग का, जैसे–भूरा झोट्टा, 5. चाँवरा।

भूरी (वि.) 1. गोरी, 2. भूरे रंग की; (स्त्री.) भैंस, भूरे रंग की भैंस।

भूरी-तारी (स्त्री.) 1. भौर का तारा, 2. सूर्यास्त के समय दीखने वाला प्रथम तारा जो शंख-वादन और आरती के समय का द्योतक माना जाता है।

भूल (स्त्री.) 1. भूलने का भाव, 2. ग़लती, चूक, 3. दोष, 4. अशुद्धि, 5. भ्रम; (क्रि. स.) 'भूलणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पड़णा** भूलना, स्मृति से निकलना; **~-बिसर कै** भूले-भटके, कभी-कभी; **~भजाणा** भ्रम दूर करना; **~(-ल्या)- बिसर्‌या** 1. भूला हुआ, विस्मृत, 2. कभी-कभी याद आने वाला; **~ ~कनागत** अमावस के दिन होने वाला श्राद्ध जो विस्मृत पितरों के लिए है; **~~मनाणा** पितृ दोष से बचने के लिए विस्मृत पितरों का श्राद्ध अमावस के दिन करना।

भूलणा (क्रि. स.) 1. विस्मृत करना, 2. पहचान न सकना, 3. भुला देना, 4. प्रण भूलना; (क्रि. अ.) 1. अंहकार के कारण उपेक्षा करना, 2. चूकना, 3. उन्मादित होना, 4. विस्मृत होना, 5. खो जाना; (वि.) भुलक्कड़; **~चालणा** भूल-भाल जाना। **भूलना** (हि.)

भूलना (क्रि. स.) दे. भूलणा।

भूल-भलैया (स्त्री.) 1. भ्रमित करने वाला, 2. संसार, 3. चक्रव्यूह, 4. समझ न आने वाली बात। **भूल-भुलैया** (हि.)

भूल्ला (वि.) भुलक्कड़; (क्रि. स.) 'भूलणा' क्रिया का भू. का., पुं., एकव. रूप।

भूवा (स्त्री.) दे. भूआ।

भूसा (पुं.) दे. भुस।

भूह् (स्त्री.) धरती; **~-क्षेत्र** कुरुक्षेत्र का एक प्राचीन नाम। **भूमि** (हि.)

भृगु (पुं.) दे. भिरगू।

भेंट (स्त्री.) 1. भेंट, उपहार स्वरूप दी गई वस्तु, 2. मुलाकात, 3. स्वाँग की एक तर्ज या छंद। उदा.–मन की मनसा है यही, म्हारी रहै सभा में लाज। अब मंशा पूरी कीजिये, तो माई मंशा देवी आज।। (अलिबक्श) दे. निरगुन।

भेख (पुं.) 1. पहनावा, 2. बनावटी पहनावा, (दे. भेस); **~बदलणा** बहुरूपिया बनना; **~धरणा/भरणा** 1. वेश बदलना, 2. नक़ल उतारना, 3. बहुरूपिया बनना। **वेश** (हि.)

भेचना (वि.) 1. छोटा (बच्चा), 2. क्षुद्र; **~सा** 1. छोटा-सा , 2. क्षुद्र।

भेजणा (क्रि. स.) 1. प्रेषित करना, 2. विदाई करना, 3. रवाना करना, (दे.

खँधाणा)। **भेजना** (हि.)

भेजना (क्रि. स.) 1. दे. भेजणा।

भेजा (पुं.) दे. भेज्जा।

भेज्जा (पुं.) 1. खोपड़ी के भीतर का भाग, मग्ज़, 2. मस्तिष्क; (क्रि.स.) 'भेजणा' क्रिया का भू. का., पुं. एकव. रूप।

भेड़ (स्त्री.) दे. भेढ़।

भेड़णा (क्रि. स.) 1. बदं करना, दरवाजा बन्द करना, 2. टकराना या टकरवाना, टक्कर करवाना, झगड़वाना, लड़वाना, 3. भेंट करवाना, 4. थप्पड़ लगाना, 5. ज़बरदस्ती देना, (बहका कर या भोलेपन में) ग्राहक को घटिया वस्तु देना, 6. जोड़ना, मिलाना, 7. तुकबंदी करना, 8. नक़ल मारना, 9. क़ैद में डालना, बंद करना। **भेड़ना** (हि.)

भेड्ढ्या (पुं.) कुत्ते की तरह का एक मांसाहारी जंगली जानवर; (वि.) सदा भूखा रहने वाला; **~सा** 1. खूँखार, 2. निडर, 3. क्षुधातुर। **भेड़िया** (हि.)

भेढ (स्त्री.) मेढे की मादा; **~की लात** हानि-रहित प्रहार; **~-चाल** अंधानुकरण; **~-बकरी** तुच्छ प्राणी; **~~समझणा** सम्मान न देना, तुच्छ समझना। **भेड़** (हि.)

भेढ़िया (पुं.) दे. भेड्ढ्या।

भेणा (क्रि. स.) 1. गीला करना, 2. जल में निमग्न करना। **भिगोना** (हि.)

भेद (पुं.) 1. रहस्य, 2. फ़र्क, अंतर, 3. फूट, 4. मन की बात।

भेदणा (क्रि. स.) 1. तोड़ना, 2. जीतना, 3. भेद लेना। **भेदना** (हि.)

भेदभाव (पुं.) अंतर, फ़र्क।

भेदिया (पुं.) जासूस।

भेदी (वि.) दे. भेद्दी।

भेद्दी (वि.) 1. जानकार, 2. भेदिया, भेद लेने वाला, 3. जासूस।

भेना (क्रि. स.) दे. भेणा।

भेरी (स्त्री.) 1. एक बाजा, युद्ध का बाजा, 2. मुँह का एक बाजा, भँभीरी; **~बोलणा** युद्ध की घोषणा होना।

भेली (स्त्री.) दे. भेल्ली।

भेल्ला (पुं.) गुड़ का भेला जो तौल में भेली से कम भार का होता है। **भेला** (हि.)

भेल्ली (स्त्री.) गुड़ की भेली जो चार या पाँच सेर भार की होती है और गर्म अवस्था में इसके बीच में मुट्ठी धँसा कर गड्ढा कर दिया जाता है; **~आणा** भानजे के जन्म या विवाह आदि के अवसर पर मामा, नाना के घर शुभ सूचनार्थ भेली और चावल आना; **~बाँटणा** प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए गुड़ या मिठाई बाँटना **~बाँधना** भेली थापना या बनाना। **भेली** (हि.)

भेवणा (क्रि.) दे. भेणा।

भेष (पुं.) दे. भेख।

भेस (पुं.) दे. भेख। **वेश** (हि.)

भैं (स्त्री.) 1. गाय द्वारा निसृत ध्वनि, 2. हार-सूचक ध्वनि, (दे. भ्याँ); **~बुलाणा** हराना, हार मानने के लिए बाध्य करना।

भैंगा (वि.) तिरछी या रेंची आँख वाला। **भेंगा** (हि.)

भैंयाँ (पुं.) 1. गाँव बसाने वाले की समाधि, 2. पीर, 3. ग्राम-देवता, (दे. भूमियाँ)। **भूमियाँ** (हि.)

भैंस (स्त्री.) दुधारू पशु की एक प्रसिद्ध जाति (जिसका दूध शक्तिवर्धक किंतु झगड़ालू प्रवृत्ति का वर्धक माना जाता

है); **~का सिर** मूर्ख व्यक्ति; **~खोल्हणा** भारी हानि पहुँचाना; **~बाँधणा** घर पर दूध की व्यवस्था करना; **~(-साँ) मैंह का काटड़ा** निरादृत व्यक्ति; **~-सा** मोटा-ताज़ा।

भैंसकर (पुं.) दे. पाळी।

भैंसवाळ (पुं.) भैंस का मालिक।

भैंसिया (पुं.) दे. भैंसवाळ।

भै (पुं.) 1. डर, 2. आशंका, संभावना; **~करणा** आंतक फैलाना; **~खाणा/चढणा/बड़णा** भयभीत रहना; **~भजाणा/मारणा** भय दूर करना। **भय** (हि.)

भैड़ (क्रि. वि.) तुरंत; **~दे-सी** 1. झट से, 2. 'भड़' की ध्वनि के साथ।

भैण (स्त्री.) दे. भाण। **बहिन** (हि.)

भैणा (स्त्री.) दे. भैण।

भैणिया (पुं.) भौंरा।

भैतासणा (क्रि.) भय से त्रस्त होना।

भैम (पुं.) 1. भ्रम, 2. पागलपन, 3. संदेह; **~होणा** 1. पागलपन होना, 2. आशंका-ग्रस्त होना, 3. किसी काम के पीछे पड़ना; **~भजाणा** भ्रम दूर करना। **वहम** (वि.)

भैया (पुं.) 1. भाई (सीमित प्रयोग), 2. मित्र के लिए प्रयुक्त संबोधन।

भैयादूज (स्त्री.) दे. भैया-दोज।

भैया-दोज (स्त्री.) कार्तिक शुक्ल द्वितीया। **भ्रातृद्वितीया** (हि.)

भैयापंचमी (स्त्री.) श्रावण कृष्ण पंचमी।

भैरव (पुं.) दे. भैरू।

भैरवी (स्त्री.) 1. एक देवी, 2. एक राग।

भैरूँ (पुं.) दे. भैरू।

भैरू (पुं.) एक देवता (मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी को इनकी जयंती मनाई जाती है); (वि.) भयंकर; **~रूप बणाणा** भयंकर रूप धारण करना। **भैरव** (हि.)

भैरो (पुं.) बहरा; (पुं.) दे. भैरू।

भैषज (पुं.) औषध, दवा।

भों[1] (स्त्री.) भृकुटी। **भोंह** (हि.)

भों[2] (स्त्री.) कुत्ते के भौंकने का शब्द; **~-भों करणा** 1. व्यर्थ बोलते रहना, 2. भौंकना।

भों[3] (स्त्री.) भूमि, (दे. भूह्); **~पड़णा** जन्म लेना--भों पड़ी ठाई, गोद में उठाई, छाती कै लगाई; **~-भाई** गाँव के बाहर से आकर बसा व्यक्ति।

भों[4] (अव्य.) चाहे. (दे. भूँ)।

भोंकणा (क्रि. स.) 1. कुत्ते का भौंकना, 2. निरर्थक बोलना; (वि.) जो अधिक भौंके। **भौंकना** (हि.)

भोंचक्का (वि.) 1. हक्का-बक्का, 2. उचक्का; **~होणा** आशंकावश कान उठा कर देखना।

भोंचाळ (पुं) भूकंप (तुल. हल्लण); (वि.) उथल-पुथल मचाने वाला; **~ल्याणा** घर सिर पर उठाना। **भूचाल** (हि.)

भोंट्टा (वि.) दे. खूँट्ठा।

भोंडरी (स्त्री.) 1. टीब्बा, 2. ऊँची रेतीली भूमि, 3. वह भूमि जिसे जमींदार जोगी, तेली, नाई आदि सेवकों को बोने के लिए निःशुल्क देता है, दानार्थ दी गई भूमि, 4. (दे. दोहळी)।

भोंडरू (पुं.) दे. भूँडरू।

भोंडा (वि.) दे. भूँड्डा।

भौंण (स्त्री.) कुएँ की चक्री।

भोंदू (वि.) दे. भोंद्दा।

भोंद्दू (वि.) 1. बुद्धू, 2. मोटा और बुद्धू। **भोंदू** (हि.)

भोंपाल (पुं.) तुल. भैयाँ।

भोंपू (पुं.) दे. भोंप्पू।

भोंप्पू (पुं.) 1. मिल का सायरन, 2. एक प्रकार का बाजा, 3. हॉर्न, 4. ख़तरे की सीटी; (वि.) 1. मोटे और चौड़े मुँह वाला, 2. अधिक बोलने वाला। **भोंपू** (हि.)

भोंरा (पुं.) 1. भ्रमर, 2. पानी का चक्र, 3. बच्चे के सिर के बालों का वह स्थान जहाँ से रोएँ या बाल का एक केंन्द्र पर घूमे हुए हों (बालों का घुमाव सीधे हाथ की ओर हो तो भोंरा उल्टे हाथ की ओर हो तो भोंरी कहलाती है)। **भौंरा** (हि.)

भोंरी (स्त्री.) 1. भ्रमरी, 2. पानी की छोटी भँवर, 3. बच्चे के सिर के बालों का केन्द्र से बाई ओर घुमाव।

भोंसणा (क्रि. अ.) दे. भोंकणा।

भोंहरा (पुं.) 1. तहख़ाना, 2. (दे. भोंरा)।

भो (पुं.) 1. संसार, 2. डर, भय; **~पार करणा** 1. भव-सागर से तरना, मोक्ष मिलना, 2. मरना; **डर-~** डर-भय। **भव/भय** (हि.)

भोकरा (पुं.) मोटे तिनकों का झाड़ू, छोटी झाड़ी को जड़ समेत उखाड़ कर बनाया गया झाड़ू, पशुओं का कूड़ा-करकट बुहारने के काम करने वाला झाड़ू; **~फेरणा** 1. किए-कराए पर पानी फेरना, 2. बरसाई करते समय अन्न पर झाड़ू फेरते रहना ताकि मोटे तिनके अलग हो जाएँ।

भोकरी (स्त्री.) जंगली झाड़ू, (दे. माँज्जण)।

भोग (पुं.) 1. सुख, 2. देवता का भोजन, 3. मैथुन, 4. फल, परिणाम; (क्रि.स.) 'भोगणा' क्रिया का आदे. रूप; **~भोगणा** किए हुए का फल पाना; **~लाणा** 1. देव-मूर्ति को भोजन खिलाना, 2. भोजन करना।

भोगणा (क्रि. स.) 1. किए हुए को भोगना, 2. भुगतना, कष्ट झेलना, 3. भोग भोगना, जीवन का आनंद लूटना, 4. सहना। **भोगना** (हि.)

भोगना (क्रि. स.) दे. भोगणा।

भोग बिलास (पुं.) 1. जीवन का आनंद, सांसारिक सुख, 2. मैथुन; **~करणा** 1. स्त्री-प्रसंग करना, 2. जीवन के आनंद लूटना। **भोगविलास** (हि.)

भोगली (स्त्री.) सुनार के हारे की धुआँ निकलने की नलिका।

भोगविलास (पुं.) दे. भोग बिलास।

भोगी (वि.) दे. भोग्गी।

भोग्गी (वि.) 1. भोगने वाला, 2. संसारी, गृहस्थी, 2. भुक्त-भोगी; (क्रि. स.) 'भोगणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. एकव. रूप। **भोगी** (हि.)

भोज[1] (पुं.) 1. कहानी-किस्सों में वर्णित एक न्यायप्रिय राजा, 2. उज्जैन के एक संस्कृत-प्रेमी राजा। **राजा भोज** (हि.)

भोज[2] (पुं.) 1. सुंदर और स्वादिष्ट व्यंजन, 2. विशेष उत्सव पर दिया जाने वाला भोजन, सामूहिक भोज; **~देणा** सामूहिक भोजन कराना। **भोजन** (हि.)

भोजन (पुं.) 1. दे. भोज्जन, 2. दे. भोज[2]।

भोजनशाला (स्त्री.) दे. भोज्जनसाल्ला।

भोज पत्तर (पुं.) एक वृक्ष जिसकी छाल पर पुस्तकें लिखी जाती थीं। **भोजपत्र** (हि.)

भोजपत्र (पुं.) दे. भोज पत्तर।

भोजपरी (वि.) 1. भोजपुर की बनी (वस्तु), 2. भोजपुर क्षेत्र की बोली। **भोजपुरी** (हि.)

भोजराज (पुं.) दे. भोज[1]।

भोजाळ (पुं.) संसार। **भवजाल** (हि.)

भोज्जन (पुं.) 1. विशेष अवसरों पर बनाया गया स्वादिष्ट भोजन, 2. खाना (दे. भोज[2]); **~जीमणा** भोजन करना; **~धरणा** भोजन परोसना।

भोजन (हि.)

भोज्जनसाल्ला (स्त्री.) रसोई। **भोजनशाला** (हि.)

भोटळी (स्त्री.) 1. नव-वधू, 2. पुत्र-वधू **बहू~** नव-वधू। **भोटली** (हि.)

भोड़िया (स्त्री.) 1. पुत्र की वधू, 2. बेटे-पोतों की वधू, 3. नव-वधू, 4. (बच्चे की) जननेंद्रीय। **वधू** (हि.)

भोड़ी (स्त्री.) जिसने पति त्याग दिया हो और सती (असती) न हुई हो। दे. तलाक्की।

भोड्डळ (पुं.) 1. अभ्रक, 2. चमकीला काग़ज़, 3. (दे. भूड); **~-सा** पतला, जीर्ण-शीर्ण, कमजोर। **भोडल** (हि.)

भोड्डा (वि.) क्षुद्र, तुच्छ, अंश मात्र, 1. (दे. धाँस), 2. (दे. भोरा); **~नाँ देणा** उत्पादन का अंश मात्र न देना; **~-सा** क्षुद्र, बहुत छोटा, छोटे दाने के समान, रेत (भूड) के कण के समान (व्यंग्य में)।

भोण (स्त्री.) दे. चकली।

भोणी (स्त्री.) चक्री।

भोत (वि.) 1. अधिक, 2. अति, 3. अनेक, 4. काफ़ी, यथेष्ट; **~करकै** 1. अनेक बार–बेट्टा अपणी माँ नैं भोत करकै राम-राम कहिए, 2. महत्त्व देकर–इस गमीणे (संदेश) नैं भोत करकै साधिये; **~होणा** 1. अनीति की सीमा का उल्लंघन होना, 2. पर्याप्त मात्रा में होना। **बहुत** (हि.)

भोन (पुं.) 1. देवी का भवन, 2. भवन।

भोपत (पुं.) भूपाल। **भूपति** (हि.)

भोपाल (पुं.) राजा। **भूपाल** (हि.)

भोब्बा (पुं.) 1. मुँह (तिरस्कार बोधक), 2. पेट ?; **~भरणा/फूकणा** उदर-पूर्ति हेतु अनिच्छापूर्वक भोजन देना–इसका भोब्बा तै भरणा ए पड़ैगा।

भोब्भा (पुं.) दे. भोब्बा।

भोभरा (पुं.) 1. सिर, 2. बुद्धि; **~खाणा/चाटणा** सिर खाना; **~फोड़णा** सिर फोड़ना; **~मारणा** सिर खपाना, दिमाग़ खपाना।

भोभळी (वि.) भुरभुरी (मिट्टी)।

भोम (स्त्री.) दे. भोम्मी।

भोम्मी (स्त्री.) दे. भूम्मीं। **भूमि** (हि.)

भोर (पुं.) चिड़ियों के चहकने का समय प्रातःकाल, (दे. तड़का)।

भोरड़ (पुं.) 1. दीये की बत्ती के ऊपर आने वाला फूल, 2. किसी वस्तु का क्षुद्र अंश, जैसे–अन्न के दाने का छोटे से छोटा भाग; **~आणा** दीये की बत्ती के ऊपर फूल आना; **~तारणा/मोड़णा/हटाणा** दीये की बत्ती का फूल हटाना (ताकि प्रकाश तेज़ हो सके और दीया गाली न दे या अशुभ न करे); **~मारणा** उपलब्धि में बाधक होना।

भोरणा (क्रि. स.) 1. चूरा करना, छोटे टुकड़े तोड़ना, जैसे–गुड़ भोरणा, 2. चूरमा बनाना या मींडना।

भोरना (हि.)

भोरा (पुं.) क्षुद्रतम अंश, (दे. टुकसा); (क्रि.स.) 'भोरणा' क्रिया का भू. का. पुं. रूप।

भोरिया (वि.) भोर (रोहतक) के अस्तल का (साधु), (दे. बोहर); **~मोड्डा** भोर (रोहतक) के अस्तल का नाथपंथी साधु, कनफाड़ा साधु।

भोलवा (पुं.) मिट्टी का बहुत छोटा मटका, (दे. कुल्लाँह)।

भोला (वि.) दे. भोळा।

भोळा (वि.) 1. सीधा-सादा, 2. अबोध, 3. सज्जन, 4. बेवकूफ़; **~बणणा** जान-बूझ कर अज्ञानता प्रकट करना। **भोला** (हि.)

भोलानाथ (पुं.) दे. भोळेनाथ।

भोलापन (पुं.) दे. भोळापण।

भोळापण (पुं.) 1. बचपन, 2. नादानी, 3. सादगी। **भोलापन** (हि.)

भोलाभाला (वि.) दे. भोळाभाळा।

भोळाभाळा (वि.) 1. सज्जन, 2. अभिज्ञ, 3. सीधा-सादा। **भोलाभाला** (हि.)

भोळेनाथ (पुं.) 1. शिवशंकर, 2. सँपेरा, 3. साधु। **भोलानाथ** (हि.)

भोसड़ा/भोसड़ी/भोस्सा/भोस्सी (स्त्री.) भगा, योनि।

भोसाग्गर (पुं.) भवसागर **~तिरणा** 1. दुःखों से मुक्ति पाना, 2. मोक्ष मिलना। **भवसागर** (हि.)

भोह्रा (पुं.) 1. गुफा, तहख़ाना, 2. घर, 3. सुरक्षित स्थान; **~तपणा** गुफा में तपस्या करना; **~(-रे) मैं गेरणा** तहख़ाने का दंड देना; **~(-रे) मैं बड़णा** प्राण-रक्षा के लिए छिपना।

भौंरा (हि.)

भौं (स्त्री.) भूमि।

भौंकना (क्रि. अ.) दे. भौंकणा।

भौंरा (पुं.) भ्रमर, (दे. भोंरा)।

भौंह (पुं.) दे. भों[1], (तुल. सेल्ली)।

भौ (पुं.) डर। उदा.–किसी का तै डर भौ बरतो।

भौणियाँ (पुं.) दे. लट्टू।

भौन[1] (पुं.) कुएँ का बड़ा चक्र या चकला।

भौन[2] (पुं.) देवी का भवन।

भौमवार (पुं.) मंगलवार।

भ्याँ (स्त्री.) 1. दो पशुओं के लड़ते समय हारने वाले पशु के मुख से निकलने वाली ध्वनि, 2. रँभाने की ध्वनि, 3. आर्त स्वर, भयातुर ध्वनि, 4. हार; **~बोलणा/होणा** पराजित होना, हारना।

भ्याणी (स्त्री.) 1. भियानी (हरियाणे का एक शहर) छोटी काशी, 2. एक देवी। **भवानी** (हि.)

भ्रम (पुं.) दे. भरम।

भ्रमण (पुं.) दे. भरमण।

भ्रष्ट (वि.) दे. भिसटळ।

भ्रांति (स्त्री.) 1. भ्रम, धोखा, 2. संदेह, शक, 3. भूल-चूक।

भ्रामक (वि.) भ्रम में डालने वाला।

भ्रूण (पुं.) 1. स्त्री का गर्भ, 2. बालक की वह अवस्था जब वह गर्भ में रहता है, (दे. भूँडरू)।

म

म हिंदी वर्णमाला का पच्चीसवाँ व्यंजन और पवर्ग का अंतिम वर्ण, हरियाणवी में इसका उच्चारण कुछ-कुछ 'मैं' के समान है।

मंगणी (स्त्री.) सगाई। **मंगनी** (हि.)

मँगता (पुं.) भिखारी; (वि.) 1. जिसकी नीयत सदा माँगने की हो, 2. कंगाल; **~होणा** कंगाल होना।

मँगरा[1] (वि.) छोटा और टेढ़ा (खेत)।

मंगरा[2] (पुं.) ऊँचा नीचा खेत।

मंगळ[1] (पुं.) 1. मंगलवार, 2. शुभ; **~गाणा** मंगल-गान गाना।

मंगळ[2] (पुं.) अग्रवाल वैश्यों का गोत्र (इनका संबंध माढव्य मुनि, ऋग्वेद, शाकिल शाखा और आश्वलायन सूत्र से है तथा प्रवर मांकील है)।

मंगळणा (क्रि. अ.) 1. होलिका-दहन होना, 2. कार्य निर्विघ्न संपन्न होना।

मंगळवार (पुं.) सप्ताह का एक दिन जो सोमवार के बाद आता है, (दे. मंगळ[1])। **मंगलवार** (हि.)

मंगळाणा (क्रि. स.) होलिका-दहन करना।

मंगलाष्टक (पुं.) दे. मंगलास्टक।

मंगलास्टक (पुं.) फेरों के समय वर-वधू को ब्राह्मण द्वारा मंत्र पढ़कर दिया जाने वाला आशीर्वाद। **मंगलाष्टक** (हि.)

मंगली (वि.) दे. मंगळी।

मंगळी (वि.) मंगली (जिसकी जन्म- कुंडली में मंगल-ग्रह हो (मंगली लड़के, लड़की का विवाह मंगली से किया जाता है); (क्रि. अ.) 'मंगळणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप। **मंगली** (हि.)

मँगवाणा (क्रि. स.) 1. किसी से कोई वस्तु लाने को कहना, 2. बुलवाना- छोहरी नैं ईब तै मँगवाले फेर होळी का डाँड्डा गड़ ज्यागा। **मँगवाना** (हि.)

मँगवाना (क्रि. स.) दे. मँगवाणा।

मँगसर/मँगसिर (पुं.) मार्गशीर्ष, मार्गशीर्ष का महीना; **~जाड्डा ढंगसिर** मार्ग-शीर्ष में जाड़ा पड़ना शुरू होता है।

मँगाणा (क्रि. स.) 1. मँगवाना, 2. बुलवाना। **मँगाना** (हि.)

मँगाना (क्रि. स.) दे. मँगाणा।

मँग्गर (पुं.) पीठ, कमर (तुल. कड़); **~(-राँ) कान्नी** 1. पीठ की ओर, 2. पीछे (पश्चिम की ओर); **~ टिकाणा /टेकणा/लाणा** कुश्ती में हराना, चित करना; **~ठोकणा/थापणा** साहस बढ़ाना; **~मसळणा** स्नान के समय बड़ों की कमर श्रद्धा से रगड़ना; **~रोळणा** कमर खुजाना या सहलाना, (दे. कीड़ी चलाणा)।

मंजण (पुं.) मंजन, दंत-मंजन का चूर्ण।

मँजणा (क्रि. अ.) 1. साफ़ होना, चमकना, पात्र का मैल दूर होना, 2. अस्त्र पर धार आना, 3. काम करने में हाथ की सफ़ाई होना, अभ्यास होना, 4. समाप्त होना, विलुप्त होना, नष्ट होना- आजाद्दी पाच्छै झाज्झर की बीड़ ताहीं मँजगी। **मँजना** (हि.)

मँजना (क्रि. अ.) दे. मँजणा।

मंजरी (स्त्री.) दे. मंजीरी।

मंजला मंजला (वि.) धीरे धीरे।

मँजाणा (क्रि. स.) मँजाना, माँजने का काम अन्य से करवाना। **मँजवाना** (हि.)

मँजाना (क्रि. स.) दे. मँजाणा।

मंज़िल (स्त्री.) 1. मकान का तल, 2. गंतव्य, 3. सीमा, हद, 4. पड़ाव।

मंजीरा (पुं.) 1. मोटी मंजरी, 2. एक वाद्य-यंत्र।

मँजीरी (स्त्री.) 1. मंजरी, 2. तुलसी का फूल या बीज।

मंजूर (वि.) स्वीकृत।

मंजूरी (स्त्री.) स्वीकृति।

मँझधार (स्त्री.) 1. मध्यधारा, नदी का बीच, 2. आपत्तिकाल, 3. परीक्षा की घड़ी; **~बिचाळै** 1. मध्य धारा में, 2. आपत्तिकाल में, (दे. अध-बिचाळा); **~मैं होणा** भगवान-भरोसे बात होना। **मझधार** (हि.)

मंझारी (स्त्री.) मार्जरा। बिल्ली।

मँझोल्ली (स्त्री.) मंझोली, मध्य दर्जे का वाहन, ऐसा वाहन जिसमें मंच या खाटनुमा बैठने का स्थान बना हो; **~मैं बैठणा** विवाह के बाद पति के साथ वाहन में बैठना, विवाह होना।

मँटणा (पुं.) दे. बटणा।

मंड (पुं.) दे. माँड।

मँडणा (क्रि. अ.) 1. काम में तल्लीनता से लगना, 2. माँडा जाना (आटे का), 3. लीपा-पोता जाना, 4. मंडित होना, (दे. रमंडणा)।

मंडप (पुं.) दे. मंढ।

मंडमार (वि.) माँडयुक्त (चावल)।

मँडराना (क्रि. अ.) दे. मँडळाणा।

मंडल (पुं.) दे. मंडळ।

मंडळ[1] (पुं.) 1. चाँद के चारों ओर का प्रकाश, जिलहरी, 2. दायरा, गोलदायरा, 3. बड़ी टोली; (स्त्री.) चरसे का कड़ा; **~मारणा** दे. गींडळी-मींडळी। **मंडल** (हि.)

मँडळ[2] (स्त्री.) एकत्रित होने या करने का भाव, (दे. बिटोळ); **~करणा/ बुलाणा** लोगों को महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए एकत्रित करना; **~होणा** 1. पंचायत लगना, 2. किसी बात पर चर्चा के लिए समझदार लोगों को बुलाना। **मंडलाव** (हि.)

मँडलाणा (क्रि. अ.) मंडलाना, पक्षियों का सामूहिक रूप में किसी वस्तु पर मँडराना, 2. भीड़ लगना। **मंडराना** (हि.)

मँडलाना (क्रि. अ.) दे. मँ

मंडली (स्त्री.) दे. मंडळी।

मंडळी (स्त्री.) 1. टोली, 2. साँग, भजन या कीर्तन आदि की टोली; **~मैं रळणा** साँग या भजन-मंडली में सम्मिलित होना। **मंडली** (हि.)

मँडवा (पुं.) 1. तुलसी आदि का छोटा पौधा, 2. मंडप।

मँडा (पुं.) दे. माँड्डा।

मँडास (पुं.) 2. बेतरतीबी से बाँधा हुआ साफ़ा, 2. चद्दर, धोती आदि की पगड़ी की तरह लपेटी हुई अवस्था; **~बाँधणा/ मारणा** 1. सिर पर चद्दर आदि लपेटना, 2. किसी काम के लिए तैयार होना।

मंडास्सा (पुं.) दे. मँडास।

मँडिया (स्त्री.) 1. छोटी रोटी, 2. श्वान ग्रास, गऊ-ग्रास आदि के लिए बनाया गया छोटा माँडा, (दे. चँदिया); **~काढणा** श्राद्ध के दिनों में कौए आदि के लिए ग्रास निकालना; **~पोणा /बनाणा/सेकणा** जान-बूझ कर छोटी रोटी बनाना।

मंडी (स्त्री.) 1. थोक व्यापार का बाज़ार, 2. पुराने ढंग का बाज़ार; **~लाणा** 1. एक दुकान पर बहुत प्रकार की वस्तुएँ बेचना, 2. भीड़ लगाना।

मंडेर (स्त्री.) 1. छत से ऊपर की दीवार, 2. दीवार का शीर्ष (मुंड) भाग; **~चढणा** गर्व होना; **~पै काग बोलणा** अतिथि के आने का शकुन होना। **मुँडेर** (हि.)

मँडरेणा (पुं.) छोटी दीवार, (दे. ओटड़ा)।

मँडेरा (पुं.) मुँडेरा, छोटी और नीची दीवार।

मंड्डा (पुं.) दे. माँड्डा।

मंढ (पुं.) 1. देवी का मंडप, 2. मढ़ी, देवी का मंदिर, 3. विवाह-मंडप, 4. कूएँ की मुँडेर; (क्रि. स.) 'मँढणा' क्रिया का आदे. रूप; **~चढ़ाणा** 1. मंडप बनवाना, 2. वस्त्र चढ़ाना; **~मैं आणा (देवी का)** 1. देवी-देवता का अनुकूल होना, 2. अनुकूल स्थिति में होना। **मंडप** (हि.)

मँढणा (क्रि. स.) 1. थोपना, 2. कपड़ों को लपेट कर गेंद बनाना, (दे. गींड), 3. छत देना। **मढ़ना** (हि.)

मँढवाणा (क्रि. स.) 1. ढोल पर चमड़ा चढ़वाना, 2. मढ़ने का काम करवाना। **मढ़वाना** (हि.)

मँढाई (स्त्री.) 1. मढ़ने का कार्य, 2. मढ़ने का पारिश्रमिक; (क्रि. स.) 'मँढवाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप। **मढ़ाई** (हि.)

मँढाणी (स्त्री.) मढ़ वाली, मढ़ वाली देवी, माता। **मँढानी** (हि.)

मँढी (स्त्री.) मढ़ी; (क्रि. स.) 'मँढणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

मंतर (पुं.) 1. धार्मिक श्लोक, 2. जादू, 3. गुप्त सीख, सीख, 4. वेद-विद्या; **~आणा** आपत्ति से निकलने का उपाय ज्ञात होना; **~करणा/चढाणा/फेरणा/मारणा** 1. जादू करना, 2. अपने अनुसार करना। **मंत्र** (हि.)

मंतरमार (पुं.) जादूगर।

मंतरी (पुं.) 1. राजा का सलाहकार, 2. प्रधान या मुख्यमंत्री का सलाहकार, 3. सभा आदि का सचिव। **मंत्री** (हि.)

मंत्र (पुं.) दे. मंतर।

मंत्री (पुं.) दे. मंतरी।

मंथन (पुं.) मथने की क्रिया।

मंथरा (वि.) घर में कलह कराने वाली; (स्त्री.) कैकेयी की दासी।

मंद (वि.) धीमा।

मंदर (पुं.) 1. मूर्ति-पूजा में विश्वास रखने वाले श्रद्धालु नर-नारियों द्वारा निर्मित पूजा-स्थान जहाँ विभिन्न देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ होती हैं, 2. पूजा-स्थान, 3. अपनी श्रद्धा और भावना के अनुसार निर्मित पूजा-स्थान या भक्ति-स्थान 4. शिवालय, (दे.) सिवाल्ला; **~चिणवाणा/बणवाणा** पुण्य-कार्य करवाना। **मंदिर** (हि.)

मँदरसा (पुं.) पाठशाला, स्कूल। **मदरसा** (हि.)

मँदरास्सी (पुं.) 1. मद्रास का निवासी, 2. दक्षिण भारत का निवासी; (वि.) मद्रास से संबंधित। **मद्रासी** (हि.)

मंदा (वि.) 1. धीमी गति से चलने वाला, 2. सस्ते भाव का, 3. धीमी ध्वनि से बोलने का भाव, 4. धीमे प्रकाश वाला; (पुं.) भाव में गिरावट आने का भाव; **~पड़णा** 1. काम की गति कम करना, 2. भाव गिरना, 3. मन बुझना, 4. उग्र स्वभाव का न रहना, 5. सुस्त होना।

मँदारी (पुं.) 1. बंदर-भालू नचाने वाला, 2. बाज़ीगर, 3. एक जाति; (वि.) 1. चतुर, कुशल, 2. परिस्थिति को अपने अनुकूल करने वाला। **मदारी** (हि.)

मंदिर (पुं.) दे. मंदर।

मंदी (स्त्री.) भावों में गिरावट आने का भाव; **सस्ती~** जिस भाव भी मिले, महँगी-सस्ती।

मँदोहर (स्त्री.) रावण की पत्नी। **मंदोदरी** (स्त्री.)

मँधरा (वि.) दे. मधरा।

मँधाणा (क्रि. स.) दे. मुँधाणा।

मंधोई (स्त्री.) छोटी हाँडी।

मंसा (स्त्री.) 1. इच्छा, चाह, 2. सलाह; **~-पाप** किसी के प्रति बुरी भावना (कामुक भाव) जाग्रत होने का भाव; **~~होणा** किसी के प्रति मानसिक रूप से (कामुक) बुरे भाव जाग्रत होना। **मंशा** (हि.)

मंसूख (वि.) स्थगित।

मंसूब्बा (पुं.) 1. इच्छा, विचार, 2. उद्देश्य **मनसूबा** (हि.)

मँह (अव्य.) 1. में, अंदर, 2. अधिकरण कारक का चिह्न, (दे. माँह)।

मँहक (स्त्री.) 1. गंध, दुर्गंध, 2. सुगंध; (वि.) प्रशंसा, बड़ाई, यश। **महक** (हि.)

मँहकणा (क्रि. अ.) गंध व्याप्त होना; (वि.) वह जो महके। **महकना** (हि.)

मँहकमाँ (पुं.) सरकारी दफ्तर। **महकमा** (हि.)

मँहगवाई (स्त्री.) महँगाई, चीज़ों के अधिक दाम बढ़ने का भाव।

मँहगवाड़ा (पुं.) महँगाई।

मँहगा (वि.) 1. अधिक मूल्य का, 2. बड़ा, ऊँचे दिमाग़ का–कई आदमी खामखाँ मैं ए मँहगे हुये फिरैं सैं, 3. अलभ्य। **महँगा** (हि.)

मँहजत (स्त्री.) मुसलमानों का पवित्र स्थान जहाँ नमाज पढ़ी जाती है। **मस्जिद** (हि.)

मँहत (पुं.) 1. मंदिर का बड़ा पुजारी, 2. बड़ा आदमी। **महंत** (हि.)

मँहतपणा (पुं.) 1. बड़प्पन, 2. महंत का प्रभाव, 3. महंत की आय।

मँहतर (पुं.) जमादार, चूहड़ा (तुल. भंगी)। **मेहतर** (हि.)

मँहताई (स्त्री.) महंत के पद से होने वाली आय; **~चाल्ली आणा** मंदिर या गद्‌दी से निरंतर आय होते रहना।

मँहतारी (स्त्री.) 1. माता, 2. बच्चों की हिमायत लेने वाली (माता), (दे. हेजवाळ)। **महतारी** (हि.)

मँहस (स्त्री.) दे. म्हैंस।

मंहसोरा (पुं.) मशविरा।

मइया (स्त्री.) 1. माता, 2. देवी, 3. चेचक। **मैया** (हि.)

मकड़ा (पुं.) 1. मकड़ी का नर, 2. एक घास।

मकड़ी (स्त्री.) मकड़े की मादा (यह यवनी मानी जाती है); **~चढाणा** बच्चों का एक खेल जिसमें वे किसी की पीठ थपथपा कर उस पर मकड़ी चढ़ाते हैं (जिस पर मकड़ी चढ़ती है वह उन्मादित होने का अभिनय करता है और साथियों को मदमत अवस्था में पकड़ता है); **~चलाणा** पीठ पर अंगुलियों से धीरे-धीरे खुजली करना; **~तारणा** 1. मकड़ी के खेल में किसी बच्चे का अधिक उन्मादित होने की स्थिति में उस पर पानी उँडेलना, 2. उलटे-सीधे मंत्र पढ़कर मकड़ी उतारने का स्वाँग रचना।

मक्रतब (पुं.) दे. मँदरसा।

मक़बरा (पुं.) मुसलमान की क़ब्र पर बनी समाधि।

मोठड़ा (स्त्री.) लाल धरती का ओढ़ना।

मकर कसार (पुं.) मीठा कसार। दे. कसार।

मकरधज (पुं.) मकरध्वज, हनुमान का पुत्र।

मकलावा (पुं.) दे. मुकलावा।

मक़सद (पुं.) उद्देश्य।

मका[1] (स्त्री.) 1. मकई, एक मोटा अन्न, मक्का का पौधा, 2. इस पौधे का बीज। **मक्का** (हि.)

मका[2] (अव्य.) 1. ऐसे, यों, 2. मैंने कहा– 1. मका न्यूँ कर लिए, 2. मका म्हारी बी सुण लें; **~-मका लाणा** व्यर्थ की बात करते रहना।

मकान (पुं.) पक्का घर, भवन।

मकोड़ा (पुं.) 1. बड़ा चींटा, 2. लोहे की चिमटी; **~-सा** पतला और छोटा; **~~चिपटणा** तेज़ पकड़ के साथ चिपटना।

मक्कड़ (पुं.) 1. बदसूरत तथा मोटा व्यक्ति, 2. मुसलमान।

मक्कर (पुं.) 1. बहाना, 2. छल, कपट; **~करणा/भरणा** बहाना लगाना; **~-हाया** मक्करबाज, बहानेबाज।

मक्का[1] (पुं.) मुसलमानों का एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थल।

मक्का[2] (स्त्री.) 1. मकई का पौधा, 2. एक मोटा अन्न जिसके भुट्टों को भूनकर खाया जाता है; **~की कूकड़ी** मकई का भुट्टा या सिरटा।

मक्कार (वि.) दे. मक्करहाया।

मक्की (स्त्री.) दे. मक्का[2]।

मक्खन (पुं.) दे. नूणी[1]।

मक्खन-जीन (स्त्री.) एक वस्त्र विशेष।

मक्खी (स्त्री.) दे. माक्खी।

मक्खीचूस (वि.) दे. माक्खीचूस।

मखनी गज (पुं.) मदमस्त हाथी।

मखा (अव्य.) दे. मका[2]।

मखाणा (पुं.) एक मिठाई, ताल मखाना। **मखाना** (हि.)

मखाना (पुं.) दे. मखाणा।

मखेरणा (पुं.) 1. गाय-बैल के सींगों पर लटकाया जाने वाला कौड़ी आदि की झालर, झालर, 2. मुख का तोरण।

मखो (स्त्री.) दे. मिट्ठो।

मखोड़ (पुं.) मक्खियों का झुंड।

मखोल (पुं.) मज़ाक, ठट्ठा। **मख़ौल** (हि.)

मखौलिया (वि.) मख़ौलिया, ठट्ठेबाज।

मखोली (पुं.) स्वाँग का विदूषक। दे. मखोलिया।

मखौल (पुं.) दे. मखोल।

मखौलिया (वि.) दे. मखोलिया। दे. मसखरा।

मगज (पुं.) 1. दिमाग़, 2. खरबूजे, कचरे आदि के सूखे बीज; **~-पच्ची** दिमाग़-पच्ची।

मगजी (स्त्री.) घाघरे आदि के किनारे पर लगी पतली गोट; **~काढणा** 1. मगजी लगाना, 2. महीन काम करना।

मगद (पुं.) मैदे के लड्डू। दे. मगज।

मगन (वि.) मस्त। **मग्न** (हि.)

मगर (अव्य.) लेकिन, किंतु; (पुं.) मगरमच्छ।

मगरमच्छ (पुं.) दे. मगरमछ।

मगरमछ (पुं.) घड़ियाल, एक जल-जंतु। **मगरमच्छ** (हि.)

मगरा[1] (वि.) 1. कामचोर, 2. वह (बैल) जो जुते-जुते बैठ जाए।

मगरा[2] (पुं.) थली का खेत।

मग़रिब (पुं.) पश्चिम दिशा।

मगरी (स्त्री.) 1. मकरी, 2. मादा मगरमच्छ, 3. कम ऊँची पहाड़ी।

मग़रूर (वि.) घमंडी।

मग्ज़ (पुं.) दे. मगज[1]।

मग्न (वि.) दे. मगन।

मघळेस (पुं.) आलस्य (कौर.)।

मघा (पुं.) एक नक्षत्र।

मघैया (पुं.) धानक जाति का एक गोत।

मचंग (स्त्री.) 1. उमंग, 2. मस्ती, 3. कामुकता का भाव; **~ऊठणा/ मारणा** 1. कामदेव द्वारा सताया जाना, 2. उमंग उठना।

मचक (स्त्री.) 1. लचक, लचकने का भाव, 2. 'मचर'-'मचर' की ध्वनि; (क्रि. अ.) **'मचकणा'** क्रिया का आदे. रूप।

मचकणा (क्रि. अ.) 1. लचकना, 2. 'मचर'-'मचर' की ध्वनि निकलना। **मचकना** (हि.)

मचकना (क्रि. अ.) दे. मचकणा।

मचका[1] (पुं.) 1. झटका, दचका, 2. बरसात के दिनों में गरमी की उमस।

मचका[2] (वि.) गर्मी। उदा. माघ मचका ठीक नहीं, सीळक चाहिए।

मचकाणा (क्रि. स.) 1. लचकाना, 2. 'मचर'-'मचर' की ध्वनि निकालना, 3. मिचकाना, 4. शरीर के किसी अंग (आँख, गरदन आदि) को हिलाना, 5. शरीर के किसी अंग से संकेत करना। **मचकाना** (हि.)

मचक्रुक (पुं.) चार यक्षों में से एक जो कैथल के निकट माना जाता है।

मचना (क्रि. अ.) दे. माँचणा।

मचमचाणा (क्रि. अ.) मचमची उठना, (दे. मचमची)।

मचमची (स्त्री.) 1. कामुकता जिसमें अंग-संकोचन और अंग-संचालन का भाव बना रहता है, 2. उमंग; **~ऊठणा** मन में उमंग या तरंग उठना।

मचलना (क्रि. अ.) 1. लालायित हो उठना, 2. हठ करना, किसी चीज़ की प्राप्ति के लिए अड़ना।

मचळाणा (क्रि. अ.) दे. मिचळाणा।

मचलाना (क्रि. अ.) दे. मिचळाणा।

मचळी (स्त्री.) उलटी, वमन। **मतली** (हि.)

मचाण (पुं.) दे. डामचा। **मचान** (हि.)

मचाणा (क्रि. स.) 1. कोई ऐसा कार्य आरंभ करना जिसमें हुल्लड़ हो, 2. हुलसित करना। **मचाना** (हि.)

मचाना (क्रि. स.) दे. मचाणा।

मचिया (पुं.) 1. खोही, मिट्टी आदि को माची पर उठाने वाला, 2. (दे. माच्ची)।

मच्छ (पुं.) मत्स्य, बड़ी मछली, (दे. माँच्छी)।

मच्छर (पुं.) दे. माँछर।

मच्छरदानी (स्त्री.) दे. माँछरदान्नी।

मच्छी (स्त्री.) मीन, एक जल-जंतु। **मछली** (हि.)

मछंदरनाथ (पुं.) 1. गोरखनाथ के गुरु, 2. दर्शनी या कनफाड़ा साधु। **मत्स्येंद्रनाथ** (हि.)

मछला (स्त्री.) कहानी-किस्सों में वर्णित एक नारी-पात्र।

मछली (स्त्री.) 1. एक प्रसिद्ध जल-जंतु, 2. अँगूठे और तर्जनी अंगुली के बीच का मांस (जिसके कट जाने पर मनुष्य

की मृत्यु भी हो सकती है), 3. भुजा, जंघा आदि का मांसल मत्स्याकार उभार; **~चढाणा** भुजा तथा जंघा पर हल्की चोट मार कर मांस फुलाना।

मछवारा (पुं.) दे. मछुआ।

मछुआ (पुं.) 1. मछली पकड़ने वाला, 2. एक जाति।

मछोदरी (स्त्री.) एक मछुआरे की लड़की जो भीष्म के पिता शांतनु से ब्याही गई थी, सत्यवती। **मत्स्योदरी** (हि.)

मछोर (पुं.) मछली चोर।

मज़दूर (पुं.) दे. मजूर।

मज़दूरी (स्त्री.) दे. मजूरी।

मजनू (पुं.) एक प्रसिद्ध प्रेमी; (वि.) प्रेमी।

मज़बूत (वि.) 1. टिकाऊ, 2. हट्टा-कट्टा, 3. दृढ़, 4. अटल।

मज़बून (पुं.) 1. कथ्य, 2. कहानी, 3. लेख। **मज़मून** (हि.)

मज़बूर (वि.) लाचार।

मज़बूरन (क्रि. वि.) ज़बरदस्ती।

मज़बूरी (स्त्री.) लाचारी।

मजमा (पुं.) भीड़।

मज़मून (पुं.) दे. मज़बून।

मजलिस (स्त्री.) 1. भीड़, 2. सभा।

मजलीन (स्त्री.) एक प्रकार की ओढ़नी।

मज़हब (पुं.) धर्म।

मज़ा (पुं.) 1. आनंद, 2. स्वाद।

मज़ाक (पुं.) हँसी, ठिठोली।

मज़ाकिया (वि.) दे. हँसोकड़ा।

मजाणा (क्रि. स.) मैज मारना, (दे. मेजणा)।

मज़ार (पुं.) समाधि, मक़बरा।

मजाल (स्त्री.) 1. साहस, 2. हैसियत।

मजूर (पुं.) मज़दूर, श्रमिक।

मजूरी (स्त्री.) 1. मज़दूरी, 2. पारिश्रमिक।

मजूरे (पुं.) दे. मजूर।

मजेंदरा (वि.) दे. मजेजण।

मजेजण (वि.) मिज़ाज़ वाली, अहंकार करने वाली; (स्त्री.) देवी, माता, चेचक की देवी; **~-माता** चेचक माता जो निद्रा दिलाने वाली मानी जाती है। **मिज़ाज़न** (हि.)

मज़ेदार (वि.) 1. ज़ायकेदार, 2. आनंद दायक रोचक, 3. अच्छा, बढ़िया।

मज्झी (स्त्री.) दे. मुज्झ्या।

मझ (पुं.) 1. मध्य, धारा का मध्य भाग, 2. निर्णय-बिन्दु, 3. उत्सुकता के क्षण, (दे. तंत); **~मैं** 1. ख़तरे में, 2. चर्मोत्कर्ष पर , 3. निर्णय-स्थल या निर्णय-बिन्दु पर; **~~डबोणा/ डोबणा** मझधार में डुबोना, कहीं का न छोड़ना।

मझधार (स्त्री.) दे. मंझधार।

मझला (वि.) बीच का।

मझारी (स्त्री.) मार्जर। दे. बिलाई।

मझोला (वि.) 1. मझला, बीच का, 2. मध्य आकार का।

मझोली (स्त्री.) मँझोली; (वि.) मध्य दर्ज़े की।

मट (स्त्री.) 1. किसी वस्तु को तोड़ने से उत्पन्न ध्वनि, 2. खाते समय मुँह से उत्पन्न ध्वनि-रोट्टी पै नूणी धर कै मट-मट खाज्या, 3. नकारने के लिए मुँह से निकाली जाने वाली ध्वनि-मट दे नैं नाटत्याँ तनै सरम नाँ आमती, 4. मटक कर चलने का भाव; **~-मट चालणा** मटक कर चलना।

मटक (स्त्री.) 1. मटक कर या नख़रे के साथ चलने का भाव, चाल, 2. नख़रा; (क्रि. अ.) 'मटकणा' क्रिया का प्रे. रूप।

मटकणा[1] (क्रि. अ.) 1. मटक कर चलना, नख़रे के साथ शरीर को मचका कर चलना, 2. नाचना, 3. भाँड या नर्तक द्वारा मटक कर अपना कौशल दिखाना, 4. इतराना; (वि.) 1. मटकना, मटकने वाला, मटक कर चलने वाला, 2. नख़रे वाला। **मटकना** (हि.)

मटकणा[2] (पुं.) 1. छोटा मटका, मिट्टी का छोटा पात्र, 2. कसोरा, 3. मिट्टी का टूटी वाला छोटा पात्र जो अन्न आदि भर कर दान देने के काम आता है, 1. (दे. बरुआ), 2. (दे. सिकोरा)। **मटकना** (हि.)

मटकना (क्रि. अ.) दे. मटकणा[1]।

मटका (पुं.) 1. मिट्टी का बड़ा घड़ा जिससे अन्न भी मापा जाता है, 2. (दे. पैंह्ढा); ~**-तारणा** सूतक-पातक या अपवित्रता के कारण जल-घट का प्रयोग बंद करना।

मटकाणा (क्रि. स.) 1. अंग हिलाना, 2. अँगुली चटखाना, 3. सूखी लकड़ी तोड़ना, 4. मटकने के लिए प्रेरित करना। **मटकाना** (हि.)

मटकाना (क्रि. स.) दे. मटकाणा।

मटकावणा (क्रि. स.) दे. मटकाणा; (वि.) दे. मटकाणा[1]।

मटणा (पुं.) दे. बटणा।

मटमैला (वि.) दे. मटमैल्ला।

मटमैल्ला (वि.) मटमैला, मिट्टी के रंग का।

मटयाना (क्रि. अ.) मैला होना।

मटर (स्त्री.) 1. एक प्रसिद्ध दाल जिसकी गोला, देसी आदि कई नस्लें हैं, 2. मटर की फली, एक सब्जी; ~**-मटर खाणा** चबा-चबा कर खाना; ~**-मटर लखाणा** 1. अपलक देखना, 2. ललचाए भाव से देखना।

मटरगश्त (स्त्री.) टहलना, सैर-सपाटा, (दे. मटरगस्ती)।

मटरगस्ती (स्त्री.) मटरगश्ती, व्यर्थ समय नष्ट करते हुए घूमने का भाव; ~**करणा/मारणा** सैर-सपाटा करना।

मटरमाला (स्त्री.) मटर की आकृति के दानों की जटित माला, मोहनमाला।

मटरा (पुं.) एक वनस्पति, एक चारा, एक खरपतवार; **गोल~** एक चारा।

मटवाड़ (पुं.) वह स्थान जहाँ कुम्हार मिट्टी रखता है।

मटा (पुं.) बेटा (व्यंग्य में प्रयुक्त)—हाय मेरे मटे।

मटिया (वि.) 1. मिट्टी के रंग का, 2. मैला, 3. मिट्टी का, जैसे—मटिया तेल।

मटिया-तेल (पुं.) मिट्टी का तेल।

मटिया-मेट (वि.) मलियामेट, मिट्टी में मिली हुई, नष्ट-भ्रष्ट।

मटियार (वि.) दे. मटमैल्ला।

मटियाळा (वि.) दे. मटमैल्ला।

मटींड्डा (पुं.) एक जंगली सब्ज़ी।

मटींड्डी (स्त्री.) प्रजनन से पूर्व गर्भ से निकलने वाली पानी की थैली।

मटीड़ (वि.) मिट्टी का बना (हुक्का आदि); ~**हुक्का** वह हुक्का जिसकी तली मिट्टी की हो।

मटोड़ (पुं.) दे. मिटौड़।

मटोत (वि.) दे. मटीड़।

मटोळा (पुं.) हस्त मैथुन (तुल. मिठोळा)।

मट्ठा (पुं.) 1. दही, 2. छाछ; (वि.) धीमी चाल चलने वाला (पशु)।

मट्ठी (स्त्री.) 1. दे. मठड़ी, 2. दे. काँगणी।

मट्ठो (स्त्री.) चुंबन; **~लेणा** चुंबन करना, चूमा लेना।

मठ[1] (पुं.) मर्दन, मसलने, नष्ट करने, तोड़ने-फोड़ने आदि की क्रिया या भाव; **~करणा/मारणा** 1. काम बिगाड़ना, 2. नष्ट करना।

मठ[2] (पुं.) 1. साधुओं का डेरा, 2. अस्तल, 3. पूजा का स्थान।

मठड़ी (स्त्री.) मैदा से बनी सुहाली।

मठरी (स्त्री.) दे. मठड़ी।

मठल्लू (पुं.) सख्त गूँदे गए आटे के गोले जिन्हें भूनकर-कूटकर मीठा मिलाकर खाया जाता है। एक प्रकार का लड्डू विशेष।

मठा (वि.) सुस्त। उदा. मठा बुळध भी कुछ नाँ।

मठाट्ठा (पुं.) 1. मस्त, 2. जल आदि के तरंगित होने का भाव, जैसे–झोड़ मठाट्ठे मारै था; **~मारणा** 1. मदमस्त होना, 2. तरंगित होना।

मठारणा (क्रि.) दे. खखारणा। तुल. खंगारणा।

मठारना (क्रि. अ.) खाँसना।

मठोठा (पुं.) नाराजगी।

मठोळा (पुं.) दे. मटोळा।

मठ्या (वि.) दे. मटीड़।

मड़क (स्त्री.) 1. सूखी लकड़ी टूटने से उत्पन्न ध्वनि, 2. सूखी लकड़ी की टूटन, टूट, 3. अकड़।

मड़कण जूत्ती (स्त्री.) जूती विशेष जिससे चलते समय ध्वनि उत्पन्न हो।

मड़कणा (क्रि. अ.) 'मड़क' की ध्वनि के साथ टूटना या चटखना; (क्रि.स.) 'मड़क' की ध्वनि के साथ तोड़ना। **मड़कना** (हि.)

मड़काणा (क्रि. स.) 1. तोड़ना, चटखाना, 2. अंगुली चटखाना। **मड़काना** (हि.)

मड़वा (वि.) दे. मँडवा।

मड़ा (वि.) मात्र, (दे. माड़ा-सा)।

मड़ुआ (पुं.) दे. मँडवा।

मड़ूस्सी (वि.) बाप-दादा से चला आया हुआ, पैतृक (अधिकार)। **मौरूसी** (हि.)

मढ़ना (क्रि. स.) दे. मींढणा।

मढ़वाना (क्रि. स.) दे. मिंढवाणा।

मढ़ाई (स्त्री.) दे. मिंढाई।

मढ़ाना (क्रि. स.) दे. मिंढवाणा।

मढ़ी (स्त्री.) दे. मँढी।

मढ़ैया (वि.) मढ़ने में कुशल; (स्त्री.) दे. मँढी।

मण[1] (पुं.) चालीस सेर का भार; **~पक्का** 1. मन भर भार का, 2. भारी; **~-मण की झाल ऊठणा** मन उमंगित होना, मन वश में न रहना। **मन** (हि.)

मण[2] (स्त्री.) बहुमूल्य रत्न, कीमती पत्थर विशेष। **मणि** (हि.)

मण[3] (पुं.) (कौर.) दे. मनखंडा।

मणका (पुं.) मनका, मनिया; (वि.) मन भर का।

मणखंडा (पुं.) दे. मनखंडा।

मणधारी (पुं.) 1. मणि बेचने वाला। 2. जिसने मणि धारण की हो (साँप)।

मणा (पुं.) मन का बट्टा; (वि.) खेती की उपज को प्रकट करने का प्रमाण, जैसे–दस मणा, दस मन बीघे की उपज।

मणि[1] (स्त्री.) दे. मण[2]।

मणि[2] (स्त्री.) दे. गीजर।

मणियाँ (पुं.) 1. छोटी मणि, 2. एक चमकीला पत्थर, 3. लिंग का अग्र भाग।

मणियार (पुं.) दे. मणिहार।

मणियारी (स्त्री.) मनियार की पत्नी।

मणिहार (पुं.) 1. चूड़ी बेचने वाला (कहानी-किस्सों में इसका वर्णन रूप बदल कर प्रेमी की भूमिका के रूप में चित्रित होता है), 2. विवाह के समय गाए जाने वाले मनियार-संबंधी गीत, 3. व्यापारी; **~मरणा** विधवा होना। **मनियार/मनिहार** (हि.)

मणिहारा (पुं.) दे. मणिहार।

मत[1] (स्त्री.) 1. बुद्धि, 2. समझ; (पुं.) विचार, राय, मतपत्र; **~आणा** समझ आना; **~चलाणा** मूर्ख बनाना; **~मारना/हड़णा** 1. बुद्धू बनाना, 2. छल-कपट करना। **मति** (हि.)

मत[2] (वि.) मत्त, मस्त।

मत[3] (क्रि. वि.) नहीं, विशेष, निषेधात्मक शब्द।

मत तैं (सर्व.) मुझ से। उदा.–मत तैं मत बूझिये। दे. मत्तैं।

मतदान (पुं) चुनाव के समय अपनी सम्मति प्रकट करने की क्रिया या अधिकार।

मतना (क्रि. वि.) दे. मत[3]।

मतभेद (पुं.) 1. मनमुटाव, 2. विचार-साम्यता न होने का भाव।

मतलब (पुं.) 1. स्वार्थ, 2. अभिप्राय; **~गाँठणा** स्वार्थ सिद्धि करना।

मतलबी (वि.) स्वार्थी।

मतवाला (वि.) 1. उन्मत्त, 2. मदमस्त।

मता (पुं.) 1. विचार, 2. सलाह; **~उपाणा** 1. बुद्धि से उपाय निकालना, 2. सोच-विचार करना।

मताधिकार (पुं.) मत या वोट देने का अधिकार।

मतावलंबी (पुं.) किसी मत या संप्रदाय विशेष का अनुयायी।

मती (अव्य.) मत। उदा. बुरा मती मानना। दे. मत[3]।

मतीरा (पुं.) तरबूज़।

मत्त (वि.) मस्त; (क्रि. वि.) दे. मत[3]।

मत्तर (पुं.) दे. कोलकत्तर।

मत्तैं (सर्व.) मुझसे।

मत्स्येंद्रनाथ (पुं.) दे. मछंदरनाथ।

मथणा (क्रि. स.) 1. बिलोना, हाथ से रफड़ना (दही को), 2. विचार दोहन करना, 3. तत्त्व निकालना, 4. मर्दन करना, 5. कुश्ती में लताड़ना, 6. नष्ट करना; (वि.) मथने वाला। **मथना** (हि.)

मथणिया (स्त्री.) मथनिया, मथानी, (दे. रई)।

मथणी (स्त्री.) 1. रई, 2. चाँदी के मनके में सुराख करने वाला एक उपकरण।

मथना (क्रि. स.) दे. मथणा।

मथनी (स्त्री.) दे. मथणी।

मथरा (स्त्री.) मथुरा, एक धार्मिक-स्थल जहाँ कृष्ण जन्मे थे।

मथरिया (पुं) 1. कुम्हारों की एक उप-जाति, 2. बढ़ई या खाती की एक उप-जाति या गोत, 3. धानक जाति की एक उप-जाति।

मथुरा (पुं.) दे. मथरा।

मथूरिया (पुं.) दे. मथरिया।

मद (पुं.) 1. उमंग, मस्ती, 2. अभिमान; 3. मदन, काम; **~चढणा/होणा** घमंड आना, यौवन का गर्व जाग्रत होना; **~-जोब्बण** यौवन की मस्ती; **~-मात्ती** मदमस्त।

मदत (स्त्री.) 1. सहायता, 2. मज़दूर; जैसे–मदत लागण; **~लाणा** 1. मज़दूर लगाना, 2. चिनाई का काम कराना,

3. सहायता देना। **मदद** (हि.)

मदन (पुं.) कामदेव।

मदनगुपाल (पुं.) श्रीकृष्ण का एक नाम। **मदन गोपाल** (हि.)

मदनमोहन (पुं.) श्रीकृष्ण का एक नाम।

मदनावत (स्त्री.) राजा हरिश्चंद्र की पत्नी तथा रोहित की माँ। दे. मधनावत।

मदरा (स्त्री.) मदिरा, शराब।

मदान (पुं.) मैदान।

मदानी (स्त्री.) जलेबी बनाने के लिए पहले दिन घोल कर रखा हुआ मैदा।

मदारी (पुं.) 1. बाज़ीगर, 2. बंदर-भालू नचाने वाला; (वि.) नाटकबाज़।

मदिरा (स्त्री.) दे. मदरा।

मद्ध्यम (वि.) 1. मंद, 2. साधारण–इस बार तै मद्ध्यम बरसा हुई। **मध्यम** (हि.)

मधनावत (स्त्री.) रोहिताश्व कुँअर की माता, हरिश्चंद्र की पत्नी। **मदनावत** (हि.)

मधरा (वि.) छोटे क़द का।

मधाणी (स्त्री.) दे. मथणी।

मधु (पुं.) शहद; (वि.) मीठा।

मधु-कैटभ (पुं.) मधु और कैटभ नाम के दो दैत्य।

मधुपर्क (पुं.) दही, घी, जल, शहद में मीठा मिलाकर तैयार किया गया चरणामृत।

मधुबन (पुं.) मथुरा के पास यमुना के किनारे एक वन।

मधुमक्खी (स्त्री.) दे. म्हाल की माक्खी।

मधुर (वि.) 1. मीठा, 2. सुंदर, मनोरंजक, 3. जो सुनने में भला लगे, 4. जो क्लेशप्रद न हो।

मधुश्रवा (स्त्री.) हरियाणे की एक प्राचीन नदी।

मधैया (पुं.) धानक जाति की एक उप-जाति।

मध्य (पुं.) 1. किसी पदार्थ के बीच का भाग, 2. (दे. मझ); (वि.) मध्य का।

मध्यदेश (पुं.) 1. भारत का वह प्रदेश जो हिमालय के दक्षिण, विन्ध्य पर्वत के उत्तर, कुरुक्षेत्र के पूर्व और प्रयाग के पश्चिम में हैं, 2. भारत।

मध्यम (वि.) दे. मद्ध्यम।

मध्यस्थ (पुं.) दे. बिचोलिया।

मध्याह्न (पुं.) दोपहरी।

मध्वाचार्य (पुं.) एक वैष्णव आचार्य जो बारहवीं शती में हुए थे।

मन[1] (पुं.) 1. दिल, 2. चित्त, (दे. जी); **~करकै** ध्यान से, सावधानी से; **~करणा/चालणा** जी करना, मन विचलित होना; **~की कहणा** 1. मन का गुबार निकालना, 2. सुख- दुःख की कहना, 3. दूसरे के मन की बात कहना; **~के लाड्डू** काल्पनिक प्रसन्नता; ~ **~फोड़णा** मन ही मन में प्रसन्न होना; **~टोहणा** थाह लेना, खोद-खोद कर पूछना; **~तैं ऊतरणा** 1. ध्यान से हटना, 2. नज़र से गिरना; **~देणा** 1. मन की बात कहना, अपना मंतव्य बताना, 2. ध्यान देना; **~फिरणा** 1. विचार बदलना, 2. अनिच्छा होना, 3. किसी के प्रति उदासीनता होना; **~बुझणा/हारणा** 1. जीवन के प्रति उदासीनता होना, 2. हिम्मत हारना; **~भाणा** पसंद आना; **~भार्या करणा** 1. आँखों में आँसू भरना, 2. दिल भर आना; **~-मन मैं** मन ही मन में, बिना बोले; **~~बतळाणा** 1. संकेत से बात करना, 2. धीमे बात करना; **~मान्याँ** स्वेच्छानुसार; **~मार** मन को अप्रसन्न

करने वाला; **~मारणा/समझाणा** इच्छाओं का दमन करना, इच्छा के विरुद्ध काम करना; **~मैल्ला करना** उदास होना।

मन[2] (पुं.) 1. दे. मनखंडा। 2. दे. जगत।

मनकसूत्तर (स्त्री.) 1. गोपनीय–या बात मनैं तेरे तैं मनकसूत्तर कही सै कदे फला दे, 2. अनबोल, बिना बोले–मनकसूत्तर होळी पै सराईं दे आ; **~कहणा** गोपनीय बात धीमे से कहना; **~राखणा** 1. गोपनीय रखना, 2. अपने तक सीमित रखना। **मणिकसूत्र** (हि.)

मनखंडा/मनखंढा (पुं.) कूएँ के चारों ओर का चबूतरा।

मनखा (स्त्री.) मुनक्का। द्राक्षा। दे. दाख।

मनघड़ंत (वि.) दे. मनघड़त।

मनघड़त (वि.) काल्पनिक। **मनगढ़ंत** (हि.)

मनचरी (वि.) 1. केवल मनभाता खाने वाली, 2. मनचली।

मनचला (वि.) रसिक।

मनचीत्ता (वि.) मनचाहा–के सदा बैरियाँ के मनचीते हुया करें। **मनचीता** (हि.)

मनतर (पुं.) दे. मंतर।

मन भरा (वि.) 1. मनचाहा 2. जिससे मन भर जाए।

मनभाई (वि.) दे. मनभामता।

मनभाता (वि.) 1. मनपसंद, 2. यथेष्ट मात्रा में।

मनभामता (वि.) मनपसंद। **मन भाता** (हि.)

मनभाया (वि.) दे. मनभामता।

मन भौरी (पुं.) हरियाणा का वह स्थान जहाँ दुर्गा पूजा के बाद महाभारत का युद्ध आरंभ हुआ था।

मनमनिया (पुं.) गाँजा आदि का मादक पदार्थ।

मनमाना (वि.) 1. जो मन को अच्छा लगे, 2. यथेच्छ।

मनमुटाव (पुं.) वैमनस्य।

मनमेळी (स्त्री.) मनों का मेल मिलाप।

मनमोज्जी (वि.) मस्त। **मनमौजी** (हि.)

मनमोहन (पुं.) श्रीकृष्ण; (वि.) चित्ताकर्षक।

मनमौजी (वि.) दे. मनमोज्जी।

मनरा (पुं.) 1. मनियार (लोक गीतों में प्रयुक्त), 2. मन, चित (तुल. मनवा)।

मनवा (पुं.) मन, चित्त (कविता, गाने आदि में प्रयुक्त)।

मनवाना (क्रि. स.) दे. मनाणा।

मनस (पुं.) दे. माणस।

मनसादेवी (स्त्री.) मनोकामना पूर्ण करने वाली एक देवी।

मनसूबा (पुं.) दे. मनसूब्बा।

मनसूब्बा (पुं.) 1. इच्छा, 2. उद्देश्य, इरादा। **मनसूबा** (हि.)

मनहूस (वि.) 1. अशुभ, बुरा, 2. अप्रिय दर्शन वाला।

मनाणा (क्रि. स.) 1. रूठे हुए को मनाना, 2. राजी करना, अपने अनुकूल करना, 3. स्मरण करना, जैसे–राम मनाणा, 4. पूजना, जैसे–होळी मनाणा, 5. त्योहार मनाना, 6. मकर संक्रांति के दिन किसी बड़े-बूढ़े को कुछ भेंट करना, (दे. सकराँत)। **मनाना** (हि.)

मनाद्दी (स्त्री.) तुल. रेळ। **मुनादी** (हि.)

मनाना (क्रि. स.) दे. मनाणा।

मनाही (स्त्री.) 1. निषेध, 2. (दे. आण)।

मनिया (स्त्री.) दे. मणियाँ।

मनिहार (पुं.) दे. मणिहार।

मनीआड्डर (पुं.) धनादेश। **मनिआर्डर** (हि.)

मन (पुं.) दे. मनु भगवान।

मनुभगवान (पुं.) 1. समाज के नियम बनाने वाला एक देवता, 2. प्रथम पुरुष, आदि पुरुष।

मनुष्य (पुं.) दे. मनुस।

मनुस (पुं.) आदमी; ~-**जून** मनुष्य योनि। **मनुष्य** (हि.)

मनुस्मृति (स्त्री.) भगवान मनु द्वारा रचित ध र्मशास्त्र।

मनैं (सर्व.) 1. मैंने, 2. मुझे, 'मैं' का कर्म और संप्रदान कारक एकवचन का रूप; ~-**तन्नैं** मुझे-तुझे; ~~**करणा** बात टालना।

मनोकामना (स्त्री.) मन की इच्छा।

मनोत्ती (स्त्री.) दे. मानता। **मनौती** (हि.)

मनोयोग (पुं.) मन को एकाग्र करने की क्रिया।

मनोरथ (पुं.) 1. अभिलाषा, 2. उद्देश्य।

मनोहर (वि.) चित्ताकर्षक।

मनौती (स्त्री.) मन्नत।

मन्ना (अव्य.) दे. मतना, मत।

मन्नैं (सर्व.) दे. मनैं।

मन्हूस (वि.) जिसके दर्शन मात्र से अनिष्ट हो। **मनहूस** (हि.)

मन्होर (वि.) लुभावना, आकर्षक। **मनोहर** (हि.)

मपीणा (पुं.) दे. नपीणा।

मबैल (पुं.) मोबाइल फोन।

ममता (स्त्री.) 1. माँ की ममता, 2. सांसारिक प्यार।

ममीरा (पुं.) 1. एक विशेष प्रकार का (काल्पनिक) रस (जो मनुष्य को उलटा लटका कर उसकी खोपड़ी से निकाला जाता है ?), 2. कचूमर।

मयूरक (पुं.) यौधेयों का एक नाम।

मयूर-भूमि (स्त्री.) हरियाणा (कार्तिकेय के वाहन मयूर का यहाँ आधिक्य होने के कारण यौधेय भूमि हरियाणा का नाम मयूर-भूमि पड़ा)।

मयूर-सिंहासन (पुं.) तख्ते ताऊस जो (संभवत:) मुग़ल बादशाह शाहजहाँ ने कार्तिकेय के वाहन मयूर की नक़ल पर बनवाया था।

मर (स्त्री.) 1. मौत, 2. आफ़त; (क्रि. अ.) 'मरणा' क्रिया का आदे. रूप; ~**आणा** आफ़त आना।

मरकंडा (स्त्री.) दे. मारकंडे।

मरकण जूत्ती (स्त्री.) वह जूती जो चलते समय चर-चूँ की आवाज़ निकाले।

मरकली (वि.) 1. दे. मरियल। 2. दे. मरतळा।

मरकाणा (क्रि.) मटकाना।

मरकोल (वि.) 1. भली प्रकार से सुरक्षित, 2. कपड़े पहन कर सुरक्षित रहने का भाव–1. जाड्ड्याँ मैं जिसे लत्ते मिल्लैं उसे पहर कै मरकोल होज्या, 2. गूदड़िया मरकोल हरमत मरै जड़ाई।

मरखणा (वि.) ऐसा पशु जिसे पास से गुजरने वाले को सींग आदि मारने की आदत हो। **मरखना** (हि.)

मरगत (स्त्री.) मृत्यु।

मरघट (पुं.) दे. चिहाणी।

मरज (पुं.) रोग। **मर्ज़** (हि.)

मरजाद (स्त्री.) 1. लज्जा, 2. सम्मान, 3. समाज-समर्थित नियम, 4. सीमा; ~**खींचणा** सीमाबद्ध करना; ~**मैं रहणा** लज्जा-भाव से पर्दे में रहना। **मर्यादा** (हि.)

मरजी (स्त्री.) 1. इच्छा, 2. सलाह; ~**चलाणा** मनमाना व्यवहार करना। **मर्ज़ी** (हि.)

मरज्याणा (पुं.) 1. मरने योग्य (व्यंग्य में व क्रोध में प्रयुक्त), 2. लड़कों को कहा जाने वाला निंदापरक शब्द।

मरड़-मरड़ (स्त्री.) 1. बड़बड़ाने का भाव, खीझ प्रकट करने का भाव, 2. सूखी वस्तु के टूटने से उत्पन्न ध्वनि, 'मर'-'मर' की ध्वनि।

मरडाँध (स्त्री.) मुर्दे से उठने वाली सड़ाँध।

मरड़ाट्टा (पुं.) 'मरड़' की ध्वनि के साथ टूटने का भाव; **~ठाणा** भयंकर ध्वनि के साथ किसी वस्तु को तोड़ना।

मरड़ाणा (क्रि. स.) 1. तोड़ना, 2. अधटूटा करना; (क्रि. अ.) बड़बड़ाना, (दे. मिरड़ाणा)। **मरड़ाना** (हि.)

मरण (पुं.) 1. मरने का भाव, 2. भयंकर आपत्ति काल; **~आणा** आपत्ति आना; **~करणा** आफ़त खड़ी करना।

मरण घड़ी (स्त्री.) मृत्यु का समय।

मरणा (क्रि. अ.) 1. मृत्यु होना, 2. आपत्ति में फँसना, 3. पौधे का मुरझाना, 4. लज्जित होना; **~-मारणा** 1. कठिन परिश्रम करना, 2. प्राण तक लेने को उद्यत होना। **मरना** (हि.)

मरणा पचणा (क्रि.) जी जान की बाजी लगाना।

मरतला (वि.) मरियल, दुर्बल, कमज़ोर, क्षीणकाय। दे. पतळिया।

मरदंग (पुं.) दे. ढोल।

मरद (पुं.) 1. पुरुष, 2. पति; (वि.) वीर, साहसी। **मर्द** (हि.)

मरदगी (स्त्री.) वीरत्व, पुरुषत्व, मरदानगी।

मरदन (पुं.) मर्द का बहुवचन रूप।

मरद-माणस (पुं.) 1. मर्द, मनुष्य, 2. घर का बड़ा-बूढ़ा, घर का कोई छोटा-बड़ा पुरुष।

मरदान्ना (वि.) 1. मर्दों से संबंधित, 2. 'जिनान्नी' का विलोम, 3. वीर, साहसी, 4. निडर। **मर्दाना** (हि.)

मरदुआ (पुं.) मर्द का लघुताद्योतक शब्द।

मरना (क्रि. अ.) दे. मारणा।

मरम (पुं.) 1. भेद, रहस्य, 2. दिल, जैसे–मरम पै चोट, 3. गहराई, जैसे–मरम मैं पहोंचणा। **मर्म** (हि.)

मरमठड़ी (स्त्री.) दे. मठड़ी।

मरमराणा (क्रि. अ.) 1. 'मर'-'मर' की ध्वनि निकलना, 2. वाहन के कल-पुरजों का चरमराना, 3. बड़बड़ाना। **मरमराना** (हि.)

मरमराना (क्रि. अ.) दे. मरमराणा।

मरमूँड्डा (पुं.) उबले धान को सुखा कर तैयार किया गया पदार्थ।

मररा (वि.) वह पानी जिसमें स्वाभाविक मिठास न हो, कुछ-कुछ खारी (पानी); **~पाणी** खारे स्वाद का पानी।

मरवट (पुं.) 1. विवाह के समय दूल्हे और दुलहन के मुख पर हल्दी, उबटन से खींची जाने वाली आड़ी-तिरछी रेखाएँ, 2. चित्र; **~चीतणा** विवाह के समय लड़के और लड़की के मुँह पर हलदी, उबटन आदि से रेखाएँ चित्रित करना, मुखौटा चित्रित करना–मैं तनैं बूज्झूँ मेरी लाड की बंदड़ी तेरे मुँह पै मरवट कीह्नैं चीत्या (लो. गी.), (मरवट चीतने का काम बूआ, बहिन, भाभी, नाइन आदि करती हैं)।

मरवण (स्त्री.) 1. कहानी-किस्सों और लोक-गीतों में वर्णित एक स्त्री पात्र, 2. ढोलामारू साँग में वर्णित जैसलमेर के राजा बुद्धसेन की पुत्री जिसका विवाह ढोला से हुआ था, नरवरगढ़

की पटरानी, मारू, 3. बंदड़ी; (वि.) प्रेमिका, प्रेयसी।

मरवा[1] (पुं.) तुलसी के पौधे के आकार का एक सुगंधित पौधा जिसके पत्तों की चटनी भी बनती है, नियाज़बू।

मरवा[2] (पुं.) कूएँ का बुर्ज; (क्रि. स.) 'मरवाणा' क्रिया का आदे. रूप।

मरवाणा (क्रि. स.) 1. वध करवाना, 2. पिटवाना, 3. आफ़त में फँसाना, 4. मैथुन करवाना। **मरवाना** (हि.)

मरवाना (क्रि. स.) दे. मरवाणा।

मरसिया (पुं.) 1. शोक-सूचक कविता जो किसी की मृत्यु के संबंध में बनाई गई हो, 2. रोना-पीटना।

मरहटण (स्त्री.) मरहटे की पत्नी।

मरहठा (वि.) 1. महाराष्ट्र का, 2. मराठा जाति का, 3. वीर; (पुं.) छत्रपति शिवाजी।

मरहमकार (पुं.) 1. वैद्य 2. सहानुभूति रखने वाला। दे. यारा प्यारा।

मरहूम (वि.) स्वर्गवासी, मृतक।

मराड़ी (स्त्री.) जलती लकड़ी (कौर.)।

मराना (क्रि. स.) मारने के लिए प्रेरित करना, (दे. मरवाणा)।

मर् (स्त्री.) 1. मृत्यु, 2. मृत्यु समान।

मराफा (पुं.) उपद्रव।

मरियल (वि.) दे. मरतला।

मरी (वि.) मरियल।

मरीज़ (पुं.) रोगी।

मरुभूमि (स्त्री.) रेगिस्तान, (दे. थळी)।

मरुस्थल (पुं.) रेगिस्तान, बालू का निर्जन मैदान।

मरोड़ (स्त्री.) 1. अहंकार, ऐंठ, झूठी अकड़, 2. पेट का दर्द, दस्त, 3. मरोड़ने की क्रिया; (क्रि. स.) 'मरोड़णा' क्रिया का आदे. रूप।

मरोड़णा (क्रि. स.) लचीली वस्तु को बलपूर्वक मरोड़ी देकर बल चढ़ाना। **मरोड़ना** (हि.)

मरोड़ना (क्रि. स.) दे. मरोड़णा।

मरोड़ा (पुं.) 1. पेट में दर्द होना, 2. दस्त, 3. फ़सल का एक रोग, 4. किसी वस्तु पर बल चढ़ाने की क्रिया; **~लागणा** 1. दस्त लगना, 2. मरोड़ा जाना।

मरोड़ी (स्त्री.) मरोड़ने की क्रिया; (क्रि.स.) 'मरोड़णा' क्रिया का भू. का. स्त्रीलिं. रूप।

मर्तबान (पुं.) दे. इमरतबान।

मर्द (पुं.) दे. मरद।

मर्दाना (वि.) दे. मरदान्ना।

मर्दमशुमारी (स्त्री.) जनगणना।

मर्म (पुं.) दे. मरम।

मर्याद (स्त्री.) दे. मरजाद।

मर्यादा (स्त्री.) दे. मरजाद।

मलंग (वि.) 1. प्रौढ़, 2. हृष्ट-पुष्ट, 3. पहलवान (1. तुल. कूँग्गर, 2. तुल. कुलंग)।

मल (पुं.) 1. दे. मळ[2], 2. दे. मळ[3]।

मळ[1] (अव्य.) 1. मूल में–मळ बात न्यूँ सै (मूल बात ऐसे है), 2. किंतु।

मळ[2] (पुं.) 1. गंदगी, 2. फ़सल का एक रोग। **मल** (हि.)

मल[3] (पुं.) मर्दन, मलने या रगड़ने की क्रिया; (क्रि. स.) 'मलणा' क्रिया का आदे. रूप; **~-मळ कै न्हाणा** भली प्रकार स्नान करना।

मळ[4] (पुं.) अधिक-मास, लौंद का महीना। **मल-मास** (हि.)

मलखम (पुं.) 1. वह कसरत जो 'मलखम' पर की जाए, 2. लकड़ी का एक प्रकार का खंभा जिस पर कसरत की जाती है।

मलखा (पुं.) आल्हा-ऊदल के किस्से में वर्णित एक योद्धा; (वि.) योद्धा।

मलखान (वि.) 1. वीर, 2. योद्धा, 3. पहलवान।

मलट (पुं.) कापी के ऊपर का मोटा काग़ज़ (कौर.)।

मलटाणा (क्रि.) दे. निमटाणा।

मळणा (क्रि. स.) 1. रगड़ना, मसलना, 2. मर्दन करना, 3. लेप करना। **मलना** (हि.)

मलना (क्रि. स.) दे. मळणा।

मळबा (पुं.) बची-कुची अप्रयुक्त सामग्री का ढेर। **मलबा** (हि.)

मलमल (स्त्री.) एक महीन वस्त्र विशेष।

मळमळाट (पुं.) 1. अफ़सोस, 2. उचाटी। **मलमलाट** (हि.)

मलयगिरि (पुं.) एक पर्वत जहाँ चंदन के वृक्ष मिलते हैं।

मलवा[1] (पुं.) दे. मळबा।

मलवा[2] (सर्व.) छोटी रोटी। दे. रोहल्ला।

मळवाणा (क्रि. स.) मालिश करवाना, मसलवाना। **मलवाना** (हि.)

मलवाना (क्रि. स.) दे. मळवाणा।

मळहठी (स्त्री.) घुंघची नाम की लता की जड़ जो औषध के काम आती है। **मुळेठी** (हि.)

मलहार (पुं.) वर्षा-ऋतु का एक प्रसिद्ध राग। **मल्हार** (हि.)

मळाई (स्त्रीं.) 1. गरम दूध पर आने वाली पपड़ी, 2. सार, तत्त्व, 3. मलने का भाव या क्रिया; (क्रि. स.) 'मळाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप। **मलाई** (हि.)

मलान (वि.) मलिन, उदास। **म्लान** (हि.)

मलार (स्त्री.) एक जाति, एक अल्ल।

मलाल (पुं.) अफ़सोस, पछतावा।

मलाहजा[1] (पुं.) परिचय, जैसे-प्यार मलाहजा। **मुलाहजा** (हि.)

मलाहजा[2] (पुं.) दे. मुलाहजा।

मलिक (पुं.) एक जाट गोत; (वि.) न्यायकारी।

मलिन (वि.) मैला; (पुं.) मलिन वस्त्र धारण करने वाले साधु।

मळियामेट (वि.) दे. मटियामेट।

मळी (स्त्री.) 1. नयनों का मैल, 2. नाक की नोक पर लगने वाला मैल (जो भावी रोग का परिचायक है);, 3. आकाश में छाने वाला धुँधलापन; (क्रि. स.) 'मळणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

मलीद्दा (पुं.) 1. अधिक घी का चूरमा, 2. हाथी के लिए बना भोजन। **मलीदा** (हि.)

मलीन (वि.) मैला। **मलिन** (हि.)

मलीलणा (क्रि. स.) 1. कचूमर निकालना, 2. मर्दन करना। **मलीलना** (हि.)

मलूक (वि.) 1. सुंदर, मनोहर, 2. कोमल।

मलेच्छ (वि.) दे. मलेछ; (पुं.) दे. मलेछ।

मलेछ (वि.) 1. मलिन रहने वाला, 2. नीच जाति का; (पुं.) 1. मुसलमान, 2. अन्यायी। **म्लेच्छ** (हि.)

मलोट्टा[1] (पुं.) दे. बिलोट्टा।

मलोट्टा[2] (पुं.) साँड आदि पशुओं के लिए माँग कर इकट्ठा किया गया अन्न आदि। दे. बिलोट्टा।

मलेरिया (पुं.) दे. तेइया-ताप।

मल्ल-युद्ध (पुं.) दे. घुळाई।

मल्ला[1] (पुं.) मुसलमान। **मुल्ला** (हि.)

मल्ला[2] (पुं.) नाविक। **मल्लाह** (हि.)

मल्लह (पुं.) दे. मल्ला[2]।

मल्लह (पुं.) योद्धा, कुश्ती करने वाला पहलवान। **मल्ल** (हि.)

मल्हम (स्त्री.) फुंसी-फोड़े की लेह ओषधि। **मरहम** (हि.)

मल्हवा (पुं.) दे. मंडिया।

मल्हा (पुं.) मल्लाह।

मल्हाणा (क्रि. स.) 1. बच्चे को प्यार से हिलाना तथा शरीर पर हाथ फेरना, 2. आटे को घी लगाकर गर्म करना।

मल्हार (पुं.) दे. मलहार।

मल्होर (स्त्री.) नादान पति की पत्नी; (वि.) प्यारी।

मल्होर पहल्हाया (पुं.) दे कहाणी का फल़ बूझणा।

मवाद (पुं.) दे. राध।

मवेशी (पुं.) दे. मवेस्सी।

मवेस्सी (पुं.) पशु। **मवेशी** (हि.)

मशक (स्त्री.) दे. मसक[1]।

मशविरा (पुं.) सलाह।

मशहूर (वि.) प्रसिद्ध।

मशाल (स्त्री.) दे. मसाल।

मशालची (पुं.) दे. मसालची।

मशीन (स्त्री.) दे. मसीन।

मशीनगन (स्त्री.) एक मशीन विशेष जिससे गोलियों की बौछार की जा सकती है।

मशोरा (पुं.) मशविरा। सलाह।

मसंड (पुं.) दे. मसतंड।

मस (पुं.) दे. मुस।

मसक[1] (स्त्री.) 1. एक ही चमड़े से बनाया गया पानी भरने का पात्र, 2. मुश्क; (क्रि. अ.) 'मसकणा' क्रिया का आदे. रूप; **~बाँधणा** हाथ-पैर बाँधकर डालना, (दे. लाट्ठी-गोला)। **मशक** (हि.)

मसक[2] (पुं.) अभ्यास। **मश्क** (हि.)

मसकणा (क्रि. अ.) 1. थोड़ा-सा हिलना–जनक का धनस भोत आदमियाँ तैं भी नाँ मस्क्या, 2. निर्णय से विचलित होना, डिगना। **मसकना** (हि.)

मसकना (क्रि. अ.) दे. मसकणा।

मसकरा (वि.) ठट्ठेबाज। **मसखरा** (हि.)

मसकरी (स्त्री.) 1. उपहास, मज़ाक, 2. हँसोड़ महिला। **मसखरी** (हि.)

मसका (पुं.) 1. अपने स्थान से थोड़ा हिलने या डिगने का भाव, 2. बहाना, (दे. दड़), 3. चापलूसी, 4. मक्खन; **~लगाणा** चापलूसी करना।

मसकिया (पुं.) मशक ढोने वाला, भिश्ती।

मसकोड (पुं.) 1. दे. मोंच। 2. मसकोड़ा।

मसकोड़ा (पुं.) 1. करवट, करवट लेने का भाव, 2. अपने स्थान से थोड़ा हिलने का भाव; **~मारणा** 1. करवट बदलना, 2. स्नान से थोड़ा हिलना।

मसक्कत (स्त्री.) मेहनत।

मसखरा (वि.) दे. मसकरा।

मसखरी (स्त्री.) दे. मसकरी।

मसजिद (स्त्री.) दे. महजिद।

मसटंड[1] (वि.) 1. मुफ्तख़ोरा, जो मुफ्त की खाकर मोटा हो गया हो, 2. निठल्ला।

मसटंड[2] (पुं.) भारी तकिया।

मसटंडा (वि.) दे. मसटंड[1]।

मसतक (पुं.) 1. माथा, 2. भाग्य; (वि.) किसी वस्तु का उभरा हुआ ऊपरी भाग। **मस्तक** (हि.)

मसद्द (पुं.) बूरा कूटने के लिए हलवाई द्वारा प्रयुक्त एक उपकरण।

मसनवी (स्त्री.) एक प्रकार का काव्य। एक काव्य शैली।

मसरका (पुं.) स्वामी।

मसरी पिलंग (पुं.) निवाड़ का पलंग।

मसरू (पुं.) एक वस्त्र, धारीदार कपड़ा।

मसरूफ़ (वि.) कार्यशील, काम में लगा हुआ।

मसल (स्त्री.) कहावत, लोकोक्ति।

मसळ (स्त्री.) 1. मसलने का भाव या क्रिया, 2. रगड़, जैसे–मसळ लागणा; (क्रि. स.) 'मसळणा' क्रिया का आदे. रूप। **मसल** (हि.)

मसळका (पुं.) मसलने की क्रिया, रगड़।

मसळणा (क्रि. स.) 1. मालिश करना, 2. रगड़ना, 3. पीटना, 4. मर्दन करना, 5. हाथ मसलना, 6. लेप करना। **मसलना** (हि.)

मसलन (स्त्री.) उदाहरण-स्वरूप (तुल. जणू)।

मसलना (क्रि. स.) दे. मसळणा।

मसलवाणा (क्रि. स.) दे. मळवाणा।

मसला (पुं.) 1. विचारणीय विषय, 2. विवाद।

मसहरी (स्त्री.) दे. माँछरदान्नी।

मसाँ (अव्य.) मुश्किल से।

मसा (पुं.) दे. मुस।

मसाण[1] (पुं.) 1. श्मशान (भूमि), 2. बच्चों का सोकड़ा (सूखना) रोग।

मसाण[2] (पुं.) मूत्राशय। **मसाना** (हि.)

मसाणियाँ (पुं.) 1. श्मशान भूमि में रहने वाला साधु, 2. तांत्रिक, 3. सूखे के रोग के ग्रस्त बच्चा।

मसाणी (स्त्री.) 1. चेचक की देवी या माता, 2. पिशाचिनी; **~का रोग** एक रोग जिसमें बच्चा सूख जाता है; **~-माता** चेचक, चेचक का रोग। **श्मसानी** (हि.)

मसान (पुं.) दे. मसाण[1]।

मसाना (पुं.) दे. मसाण[2]।

मसानी (स्त्री.) दे. मसाणी।

मसामस (अव्य.) मुश्किल से। उदा.मसामस पांच कोस होगा।

मसाल (स्त्री.) 1. हुक्के की चिलम के आकार का पात्र जिसे दीवाली के दिन बिनौले और तेल डालकर जलाया जाता है, 2. रात्रि के समय साँगियों के तख्त पर जलाई जाने वाली मशाल; **~जळाणा/बाळणा** 1. प्रसन्नता व्यक्त करना, 2. शत्रु को चिढ़ाना। **मशाल** (हि.)

मसालची (पुं.) मशाल जलाने वाला या धारण करने वाला; (वि.) दास, अंधानुयायी। **मशालची** (हि.)

मसाला (पुं.) दे. मसाल्ला।

मसालेदार (पुं.) मसालायुक्त, चटपटा, ज़ायक़ेदार।

मसाल्ला (पुं.) 1. नमक, मिर्च, हलदी, जीरा आदि मसाला, 2. चिनाई के समय काम आने वाली सीमेंट आदि का मसाला, 3. आतिशबाजी का बारूद, 4. समाचार, 5. जलाने-भूनने वाली बात; **~लाणा** 1. अतिशयोक्ति पूर्ण कहना, 2. चिढ़ाना। **मसाला** (हि.)

मसी (स्त्री.) स्याही, रोशनाई।

मसीणा (पुं.) दे. कोरड़।

मसीन (स्त्री.) 1. कपड़ा सीने की मशीन, 2. यंत्र। **मशीन** (हि.)

मसीहा (पुं.) 1. यहूदियों के अनुसार एक देवदूत, 2. ईसा मसीह, 3. उद्धारक।

मसूड़ा (पुं.) दे. मसूड्ढा।

मसूड्ढा (पुं.) मसूड़ा; **~(-ढे) फूलणा** दूध के दाँत आना। **मसूड़ा** (हि.)

मसूर[1] (स्त्री.) एक दाल।

मसूर[2] (वि.) प्रसिद्ध। **मशहूर** (हि.)

मसूरिया (पुं.) (अंग्रेज़ी शासन काल का) ताँबे का एक पुराना पैसा; **~पइसा** मंसूरिया पैसा; **~~बी नाँ होणा** खाली हाथ होना, कंगाल अवस्था में होना।

मसूल (पुं.) 1. लगान, मालगुज़ारी, 2. चुंगी। **महसूल** (हि.)

मसोसणा (क्रि. स.) 1. कपड़े को मरोड़-तरोड़ कर रखना, मरोड़ना, 2. भावना को दबाना, मन मारना। **मसोसना** (हि.)

मसोसना (क्रि. स.) दे. मसोसणा।

मसोस्सा (पुं.) दाढ़ी के बालों पर मरोड़ी लगाने का भाव; (क्रि. स.) 'मसोसणा' क्रिया का भू. का., पुं. एकव. रूप। **मसोसा** (हि.)

मसौदा (पुं.) 1. उपाय, युक्ति, 2. किसी विषय की रूपरेखा। **मसविदा** (हि.)

मस्त (वि.) मनमौजी।

मस्तक (पुं.) दे. मात्था।

मस्तनाथ (पुं.) हरियाणे में नाथ संप्रदाय के संस्थापक [इनके बारे में जनश्रुति है कि ये किसरेटी (रोहतक) के रहबारी (ऊँटवाला) को मार्ग में पड़े मिले थे, इन्होंने 776 ई. में नरभाई का शिष्यत्व ग्रहण किया, 12 वर्ष ये औघड़ रूप में रहे और बाद में कान फड़वा कर दर्शनी सिद्ध कहलाए, एक जनश्रुति के अनुसार इनकी भेंट भतृहरि और पूरण भगत से हुई, इन्होंने बोहर (रोहतक) में 12 वर्ष तपस्या की (जन. सा. 4-10-11)]।

मस्ताणा (क्रि. अ.) मस्ती में आना; (क्रि. स.) मस्ती करना; (वि.) मस्त। **मस्ताना** (हि.)

मस्ताना (क्रि. अ.) दे. मस्ताणा; (वि.) मस्त।

मस्ती (स्त्री.) 1. बेफ़िक्री, 2. मतवालापन, 3. उन्माद की स्थिति।

मस्तूल (पुं.) नाव का शहतीर जिसमें पाल बाँधते हैं।

मस्साँ (पुं.) दे. मिस।

मस्तु (पुं.) बूरा कूटने का सोटा।

महँगा (वि.) दे. मँहगा।

महँगाई (स्त्री.) दे. मँहगाई।

महँगी (वि.) 1. अधिक मूल्य की, 2. विरल।

महक (स्त्री.) दे. महँक।

महकना (क्रि. अ.) दे. मँहकणा।

महकमा (पुं.) दे. मँहकमाँ।

महज़ (वि.) केवल, मात्र।

महजिद (स्त्री.) मुसलमानों का एकत्र होकर नमाज़ पढ़ने का स्थान विशेष। **मस्जिद** (हि.)

महड़ी (स्त्री.) दे. मँढी।

महतारी (स्त्री.) माँ।

महत्त्व (पुं.) 1. बड़ाई, 2. उत्तमता।

महफ़िल (स्त्री.) 1. सभा, जलसा, 2. गाने-नाचने वालों की सभा।

महबूब (वि.) प्रिय।

महम (पुं.) महम का क़स्बा [महाभारत (सभा पर्व) के अनुसार नकुल ने यौधेयों से यह क़िला जीता था, शहाबुद्दीन गौरी ने इस क़िले को उजाड़ा, 1226 ई. में पिशोरा सेठ ने इसे पुनः बसाया, औरंगजेब ने इसे फिर उजाड़ा (जन. सा. 4-10-11)]।

महमड़ी (स्त्री.) एक प्राचीन नदी।

महमा (स्त्री.) महिमा।

महर मळोट्टा (पुं.) मेलजोल। उदा. पिता मेरे पाच्छै दुख ओट्या, रह्या ना घर में महर मळोट्टा।

महर्षि (पुं.) ऋषिवर।

महल (पुं.) 1. राजा का निवास-स्थान, 2. बहुत बड़ा मकान; **~-अटारी** 1. धन-संपति, 2. भव्य भवन; **~~जोड़णा** सुख-सुविधा जुटाना।

महसूल (पुं.) दे. मसूल।

महसूस (वि.) जिसका ज्ञान या अनुभव हो।

महाकवि (पुं.) प्रसिद्ध कवि, कविवर।

महाकाल (पुं.) 1. शिव, 2. प्रलय-काल, 3. दुर्भिक्ष। **महाकाल** (हि.)

महाकाली (स्त्री.) दुर्गा का एक रूप।

महाजन (पुं.) 1. बनिया, 2. बनिया जाति का उप-गोत, 3. सूद का लेन-देन करने वाला व्यापारी।

महाजनी (स्त्री.) 1. बही-खाते में प्रयुक्त लिपि जिसे मुंडी भी कहते हैं, 2. बही-खाते की विद्या, (दे. मुंड्डी)।

महातुरी (स्त्री.) महा आतुर आवाज (विशेषतः मोर की)।

महात्तम (पुं.) माहात्म्य।

महात्मा (पुं.) 1. साधु, 2. धार्मिक वृत्ति का व्यक्ति, 3. सज्जन (व्यंग्य में), 4. महात्मा गांधी।

महादे (पुं.) शिव, हरियाणा-क्षेत्र का मुख्य उपास्य देव जिसके नाम पर गाँवों में शिवालय (सिवाल्ला) हैं (इनके नाम पर अनेक रोचक धार्मिक कहानी-किस्से दंत कथाओं के रूप में प्रचलित हैं), पार्वती-पति, भूत पिशाचों के अधिपति, नंदीश्वर; **~का घंटा** 1. शिवलिंग, 2. भारी-भरकम वस्तु, 3. बड़ा घंटा, घंटाला; **~की चिप्पक** दंत-कथा के अनुसार वह चिपटन जो न छूट सके; **~-पारबती** शिव-पार्वती; **~~का जोड़ा** अटूट दांपत्य प्रेम।

महादेव (हि.)

महादेव (पुं.) दे. महादे।

महादेवी (स्त्री.) 1. पटरानी, 2. दुर्गा।

महापरळो (स्त्री.) महाविनाश।

महाप्रलय (हि.)

महा परसाद (पुं.) जगन्नाथ जी पर चढ़ा हुआ भात। **महाप्रसाद** (हि.)

महापुरुष (पुं.) महान् व्यक्ति।

महाबाहमण (पुं.) मृत्यु-दान लेने वाला ब्राह्मण। **महाबाह्मण** (हि.)

महाब्राह्मण (पुं.) दे. महाबाहमण।

महाभारत (पुं.) 1. महाभारत के युद्ध से संबंधित एक धार्मिक ग्रंथ, 2. लंबी गाथा, 3. भारी लड़ाई-झगड़ा; **~छिड़णा /माचणा** 1. वाक्-युद्ध होना, 2. लड़ाई होना; **~छेड़णा** लंबा किस्सा शुरू करना; **~रोपणा** झगड़ा खड़ा करना, झगड़े का बीज बोना।

महामना (वि.) महानुभाव।

महामहोपाध्याय (पुं.) एक उपाधि जो संस्कृत के विद्वानों को सरकार की ओर से मिलती थी।

महामारी (स्त्री.) संक्रामक रोग जिसमें एक साथ बहुत व्यक्ति मर जाएँ, वबा।

महायात्रा (स्त्री.) मृत्यु, मौत।

महायुद्ध (पुं.) विश्वयुद्ध।

महारथी (वि.) योद्धा, वीर।

महाराजा (पुं.) 1. सम्राट, 2. ब्राह्मण, गुरु आदि के लिए प्रयुक्त संबोधन।

महाराजाधिराज (पुं.) बहुत बड़ा राजा, राजाओं का राजा, सम्राट।

महाराणा (पुं.) 1. महाराणा प्रताप, 2. राजपूत राजाओं की एक उपाधि।

महाराणी (स्त्री.) 1. पटरानी, 2. रानी (व्यंग्य में प्रयुक्त)। **महारानी** (हि.)

महाराष्ट्र (पुं.) शिवाजी की जन्म-भूमि, मरहठों का प्रदेश।

महाल (पुं.) 1. योद्धा, 2. पहलवान, 3. बड़ा जमींदार। **मल्ल** (हि.)

महाळ (पुं.) दे. म्हाळ।

महला (पुं.) मल्लाह।

महावट (स्त्री.) जाड़े की वर्षा (जो चने के लिए गुणकारी होती है)। **माघवृष्टि** (हि.)

महावत (पुं.) दे. पीलवान।

महावीर (पुं.) 1. हनुमान जी, 2. महावीर जैन, 3. महान् योद्धा।

महाशंख (पुं.) 1. एक बहुत बड़ी संख्या, 2. सौ शंख की गणना।

महाशय (पुं.) दे. महासय।

महासय/महासै (पुं.) 1. सज्जन, 2. सम्मानित आर्यसमाजी के लिए प्रयुक्त संबोधन, 3. छुपा रुस्तम (व्यंग्य में)। **महाशय** (हि.)

महिमा (स्त्री.) 1. बड़ाई, गौरव, 2. आठ सिद्धियों में से एक।

महिला (स्त्री.) 1. भली स्त्री, स्त्री, 2. (दे. बीरबान्नी)।

महिषासुर (पुं.) भैंस की आकृति वाला एक राक्षस जिसका वध दुर्गा जी के हाथों हुआ।

मही (स्त्री.) दे. सीत।

महीन (वि.) दे. मीह्याँ।

महीना (पुं.) दे. म्हीन्ना।

महेंदवार (पुं.) नदी के जल के निकास के लिए पुल के नीचे के द्वार–साहब्बी नद्दी के महेंदवार भरे चाल्लैं सैं। **महाद्वार** (हि.)

महोत्सव (पुं.) महान् उत्सव।

महोदय (पुं.) महाशय।

माँ[1] (स्त्री.) दे. मा[1]।

माँ[2] (अव्य.) दे. मँह।

माँक्खी (स्त्री.) दे. माक्खी।

माँग[1] (स्त्री.) बालों को विभक्त करके बनाई गई बीच की रेखा (जिसमें विवाहित सधवा स्त्रियाँ सिंदूर भरती हैं); **~धूणा** विधवा होना।

माँग[2] (स्त्री.) 1. माँगने का भाव, 2. ख़पत, 3. कर्ज़ा, 4. विवाह आदि के समय माँगी गई राशि, 5. इच्छित राशि, 6. भीख; (क्रि. स.) 'माँगणा' क्रिया का आदे. रूप; **~-खा कै** भीख माँग कर; **~माँगणा** क़र्ज़ माँगना, पूर्वजन्म का क़र्ज़ माँगना।

माँगणा (क्रि. स.) 1. उधार लेना, 2. भीख माँगना; (वि.) भिखारी। **माँगना** (हि.)

माँगना (क्रि. स.) दे. माँगणा।

मांगलिक (वि.) मंगलकारी।

मांगेराम शर्मा (पुं.) (वि.स. 1906-1947) ससाणा (रोहतक) के एक साँगी।

माँघी (स्त्री.) 1. छोटी हाँडी, 2. दूध की मटकी।

माँच (पुं.) दे. साँग; (क्रि. अ.) 'माँचणा' क्रिया का आदे. रूप।

माँचणा (क्रि. अ.) 1. आवश्यकता से अधिक प्रसन्न होना, व्यर्थ की उछल-कूद करना, 2. उन्मत्त होना (तुल. रीप्फळणा), 3. मचना, शोर मचना, 4. व्याप्त होना या छा जाना, जैसे–राम जी का माँचणा (वर्षा के समय हर ओर लाल बादल छाना)। **माँचना** (हि.)

माँच्ची (स्त्री.) 1. बाँस की लकड़ियों से बना मंच जिस पर मिट्टी आदि ढोई जाती है, 2. पलंग; (क्रि. अ.) 'माँचणा' क्रिया का भू. का. रूप। **माची** (हि.)

माँच्छी (स्त्री.) दे. मच्छी।

माँछर (पुं.) एक बरसाती फतिंगा जिससे मलेरिया फैलता है। **मच्छर** (हि.)

माँछरदान्नी (स्त्री.) मच्छरों के काटने से बचने के लिए काम में लाई जाने वाली एक विशेष प्रकार की कपड़े की जाली। **मच्छरदानी** (हि.)

माँजणा (क्रि. स.) 1. बरतन माँजना, 2. साफ़ करना, 3. तली तक का भोजन खा जाना, 4. नष्ट करना, 5. अभ्यास द्वारा हाथ के काम में सफ़ाई लाना। **माँजना** (हि.)

माँजना (क्रि. स.) दे. माँजणा।

माँज्जण (स्त्री.) झाडू, बुहारी।

माँज्जी (स्त्री.) दे. माँच्ची; (क्रि. स.) 'माँजणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

माँझ[1] (स्त्री.) स्वांग की एक तर्ज या छंद। उदा.–मैं पंडित परमेश्वर हूँ, मेरी कर करतार सहाय।

माँझ[2] (पुं.) एक प्रकार का दोहा। उदा. तोता हैरत में आ गया, सुन तेरे मुख की बात। जिसका हम सर है नहीं वह है मालिक की जात।

माँझल रात (स्त्री.) मध्य रात्रि।

माँझा (पुं.) पतंग का धागा।

माँझी (पुं.) दे. माच्ची।

माँट (पुं.) 1. मिट्टी का बड़ा मटका जो अन्न मापने, अन्न रखने या उत्सवों में पानी रखने के काम आता है, 2. वह मटका जिस पर हाथ की थपकी या कंकड़ आदि से ढोलक के समान ताल लगाई जाती है; **~-सा पेट** फूला हुआ पेट। **मटका** (हि.)

माँट्टी (स्त्री.) 1. रेत, 2. मांस, 3. मृतक शरीर, 4. स्वाद-रहित; **~कै मोल** बहुत सस्ता; **~काढणा/छाँटणा** जोहड़ से धर्मार्थ मिट्टी निकालना; **~का तेल** मिट्टी का तेल; **~खाणा** मांस खाना; **~चढणा** शरीर पर मांस चढ़ना; **चीन्नी~** चीनी मिट्टी; **~मैं मिलणा** नष्ट होना; **~राह सिर लागणा** 1. मरना, 2. मृत्यु-संस्कार विधिवत् संपन्न होना। **मिट्टी** (हि.)

माँड (पुं.) पके हुए चावलों से निकला लेसदार रस; (क्रि. स.) 'माँडणा' क्रिया का आदे. रूप; **~मार चावळ** दे. मंड मार।

माँडना (क्रि. स.) दे. ओसणणा।

माँडा (पुं.) दे. माँड्डा।

माँडी (स्त्री.) दे. माँड्डी।

माँड्डळ (स्त्री.) 1. चरसे पर लगा लोहे का घेरा, 2. मंडल।

माँड्डा (पुं.) गेहूँ की हल्की तथा फूली हुई रोटी, फुलका। **माँडा** (हि.)

माँड्डी (स्त्री.) 1. कपड़े, सूत आदि पर चढ़ाया गया कलफ़, (दे. पाण), 2. माँड का पानी, 3. पशुओं को दिया जाने वाला एक चारा; **~चढाणा/देणा/लाणा** 1. सूत में माँड लगाना, 2. कलफ़ देना। **माँडी** (हि.)

माँढणा (क्रि. स.) 1. बाँधना, तानना, जैसे–माँढा माँढणा, 2. चित्रित करना, (दे. मँढणा)। **मढ़ना** (हि.)

माँढा (पुं.) विवाह के समय ताना जाने वाला मंडप; **~गडणा** 1. उत्सव की हलचल आरंभ होना, 2. उत्सव आरंभ होना; **~गाडणा** 1. विवाह के समय मंडप तानना (माँढ़े में सराईं आदि लटका दी जाती हैं), 2. विवाह रचना, 3. उत्सव मनाना; **~(-ढे) तळे की नाण** अत्यंत व्यस्तता; **~पूजणा** मंडप के स्थान पर बनी वेदी का पूजन करना; **~-सा गडणा** 1. उत्सव की हलचल आरंभ होना, 2. ठठ रुपना। **मंडप** (हि.)

माँत (स्त्री.) 1. हार, 2. प्रत्युत्तर। **मात** (हि.)

माँद (स्त्री.) 1. ढेर, गंदगी का ढेर, (दे. कुरड़ी), 2. शेर की गुफा, जंगली पशु का भिठ या बिल; **~गेरणा** कूड़ी डालना, गोबर, कूड़ा एक स्थान पर डालना; **~मारणा** 1. शौच करना, 2. ढेरी लगाना; **~लाणा** कूड़े की ढेरी लगाना, ढेरी लगाना।

माँप (पुं.) 1. नाप, 2. तोल, 3. मापने का मटका [यह धोण (बीस सेर), मणा (मन), दोमणा (दो मन) आदि के माप का होता है], 4. बड़ा मटका; (क्रि. अ.) 'माँपणा' क्रिया का आदे. रूप; **~माँपणा/लेणा** नाप-तौल करना, दर्जी, मोची, बढ़ई आदि द्वारा नाप लिया जाना। **माप** (हि.)

माँपणा (क्रि. स.) मापना, नाप-तौल करना; (पुं.) मापक-यंत्र।

माँवसी (स्त्री.) मौसी।

माँस[1] (पुं.) मांस, गोश्त।

माँस[2] (पुं.) महीना। **मास** (हि.)

माँसल (वि.) जिसके शरीर पर अधिक मांस चढ़ा हो, पुष्ट।

मांसाहारी (पुं.) मांसभक्षी, (दे. माँस्साहारी)।

माँस्सा (पुं.) तोले का बारहवाँ भाग; (वि.) क्षुद्र (तुल. भोरा); **~तोळा होणा** क्षण-क्षण रूप बदलना। **माशा** (हि.)

माँस्साहारी (वि.) मांस खाने वाला। **मांसाहारी** (हि.)

माँह (अव्य.) 1. मध्य, बीच में, 2. अधिकरण कारक का चिह्न–तेरे माँह इतणी समाई भी कोन्या ?, 3. आधार या अवस्था-सूचक शब्द, 4. ओर, तरफ–तेरे माँह मेरे कितणे पइसै आवैं सैं ?, 5. निकट–क्यूँ माँह बड़्या आवै सै ?, (दे. मँह)। **मध्य** (हि.)

माँहे (अव्य.) दे. माँह।

माँह्ढा (पुं.) दे. माँढा।

मा[1] (स्त्री.) माता, जन्म-दात्री। **माँ** (हि.)

मा[2] (अव्य.) दे. मँह।

माइया (पुं.) बच्चों की सुरक्षा के लिए गाया जाने वाला माता-गीत, दे. गोरला।

माईं (स्त्री.) चारपाई की बाही (बाजू) पर चौड़ाई की ओर पूरी जाने वाली रस्सियाँ जिन पर चारपाई का पुराव आधारित होता है और जो बाही के साथ सुंदर तरीके से गूँथ दी जाती है; **~बाँधणा** माईं गूँथना।

माई (स्त्री.) 1. देवी, माता, जैसे–गंगा माई, काली माई, 2. चेचक, माता, 3.

माँ (सीमित प्रयोग); ~-**जाया** सहोदर (भाई), माँ-जाया; ~-**बाप** 1. माता पिता, 2. संरक्षक, आश्रय- दाता।

माउसी (स्त्री.) दे. मोंस्सी।

माऊँ (अव्य.) की ओर।

माकड़ (पुं.) दे. मकड़ी।

माकड़ा (सर्व.) मर्कट। दे. बाँदर।

माकड़ी (स्त्री.) दे. मकड़ी।

माकणा (पुं.) बेर आदि के अर्धविकसित फल।

माक़ूल (वि.) 1. सर्वथा उचित, 2. अनुकूल।

माक्खी (स्त्री.) 1. मक्षिका, पंखयुक्त एक उड़ने वाला कीड़ा, 2. मधु- मक्खी, 3. बंदूक की नाली का बिंदु जिससे निशाना साँधा जाता है; **~उडाणा** निठल्ला बैठना; **~काढणा** दोष निकालना; **~की तराँ काढ फैंकणा** तुच्छ-हीन समझ कर निकाल बाहर करना; **दूध की~** अवांछित वस्तु; **देस्सी** ~ साधारण मक्खी; **~बैठणा** घाव पर कीड़े की मक्खी बैठना; **~मारणा** निठल्ला बैठना; **साई की~** कुछ नीले रंग की चमकीली मक्खी (जिसके घाव पर बैठते ही घाव में कीड़े पड़ जाते हैं)। **मक्खी** (हि.)

माखणा (वि.) मदमस्त। (पुं.) हाथी, मदमस्त हाथी।

माघ (पुं.) माह का महीना, (दे. माह[1]), उक्ति—माघ चक्का, जेठ सियाळ साढ पड़वा बाळ, सहदे कहै सुण भाडळी बरखा गई पताल (यदि माघ में बिजली चमके, ज्येष्ठ ठंडा रहे और आषाढ़ में पूर्वी वायु चले तो वर्षा नहीं होगी)।

माच्चस (स्त्री.) दियासलाई, (दे. दिवासळाई)। **माचिश** (हि.)

माच्चा (स्त्री.) बड़ी चारपाई।

माच्ची (स्त्री.) गीली मिट्‌टी आदि उठाने के लिए लाठियों को जोड़ कर बनाया गया उपकरण, (दे. माँच्ची)।

माच्छड़ (पुं.) 1. एक जाट गोत (इस गोत को कुछ लोग माथुर भी लिखने लगे हैं); 2. (दे. माँछर)।

माछेरी सिंह (पुं.) शेर की एक जाति।

माजणा (पुं.) सम्मान। उदा.—लखमी चंद मत काम करो छल का होणी करै माजणा हलका।

माजरा (पुं.) 1. वृत्तांत, हाल, 2. घटना, 3. रहस्य, 4.बड़े गाँव के साथ बसी छोटी बस्ती, जैसे—दूबळधन के निकट माजरा को दूबळधन माजरा कहेंगे।

माजरी (स्त्री.) बड़े गाँव के साथ बसी छोटी बस्ती, जैसे—गुभाणा माजरी (गुभाणे के साथ बसी छोटी बस्ती या गाँव)।

माजा (पुं.) मौजा, कम आबादी का गाँव।

मा-जाई (स्त्री.) सगी बहन, सहोदरा; **~भाण** सगी बहन।

मा-जाया (पुं.) सहोदर, सगा भाई; **~बीर** सहोदर भाई।

माझल (पुं.) माघ स्नान।

माट (पुं.) दे. माँट।

माटी (स्त्री.) दे. माँट्‌टी।

माट्‌ठा (पुं.) मंथर या धीरे चलने वाला (पशु)।

माड़ा (वि.) 1. दुर्बल, पतला, 2. अल्प मात्रा में, जैसे—माड़ी-सी चीज़, 3. जरा-सी, हल्की, जैसे—1. माड़ी-सी चोट, 2. माड़ा-सा काम, 4. अंश, खंड—माड़ा-माड़ा करकै काम खतम कर लिया, 5. हीन, दीन; **~-माड़ा** थोड़ा-थोड़ा; **~-सा** थोड़ा-सा, स्वल्प;

~होणा 1. मात्र रह जाना, 2. कमज़ोर होना।

माड़ी (वि.) 1. कमज़ोर, दुर्बल, 2. दीन, 3. ओछी, जैसे–माड़ी बात कहणा; **~-मोट्टी** थोड़ी-बहुत; **~-सी** स्वल्प मात्रा में।

माढलड़ा (पुं.) दे. माँढा।

माणक (पुं.) 1. मणि-मुक्ता, 2. धन-दौलत। **माणिक्य** (हि.)

माणक (पुं.) 1. आदमी, 2. समझदार व्यक्ति, 3. आँख की पुतली (जिसमें मनुष्य की आकृति दिखाई देती है), 4. सुंदर स्त्री; **~खाणी** 1. डाकिनी, 2. स्त्रियों के लिए प्रयुक्त एक निंदापरक शब्द। **मनुष्य** (हि.)

माणसिया (पुं.) आँख की पुतली का काला भाग। **मानसिया** (हि.)

मात[1] (स्त्री.) माता (संबोधन में प्रयुक्त)।

मात[2] (स्त्री.) दे. माँत।

मात-पिता (पुं.) 1. माता और पिता, माँ-बाप, 2. ईश्वर।

मातम (पुं.) शोक, मरण-सूचक।

मातम-पुरसी (स्त्री.) मृतक के संबंधियों को सांत्वना देना, (दे. मुँहकाण)।

मातमी (वि.) शोक-सूचक।

मातरा (स्त्री.) 1. मिक़दार, 2. वर्ण के साथ जुड़ने वाला स्वर-खंड या स्वर-मात्रा। **मात्रा** (हि.)

मातरी भास्सा (स्त्री.) मातृ-बोली, बोली। **मातृ-भाषा** (हि.)

मातरी भोम्मीं (स्त्री.) जन्म-भूमि, जन्म-स्थान। **मातृ-भूमि** (हि.)

मातहत (वि.) अधीन।

माता (स्त्री.) दे. मात्ता।

मातृ-भाषा (स्त्री.) दे. मातरी भास्सा।

मात्ता (स्त्री.) 1. माँ, 2. देवी, 3. चेचक, मोटी चेचक; **~की धोक मारणा** 1. देवी को झुक कर प्रणाम करना, 2. माता पूजना; **खेलणी मेलणी~** दे. खेलणी-मेलणी; **~धोकणा/ पूजणा** 1. माता की पूजा करना, स्थानीय देवी के मंदिर या मढ़ी आदि पर भोग चढ़ाना तथा झुककर प्रणाम करना, 2. चेचक का रोग ठीक होने पर विशेष पकवान (पूड़ा, गुलगला) बनाकर माता (देवी) पर चढ़ाना; **~लीकड़णा** चेचक निकालना **~सिळाणा** चौराहे की माता पर जल चढ़ाना। **माता** (हि.)

मात्ता-मसाणी (स्त्री.) 1. श्मशानी माता, 2. चेचक।

मात्था (पुं.) 1. मस्तक, 2. दिमाग़, मस्तिष्क, 3. भाग्य; **~(-त्थे) की फूटणा** 1. अंधा होना, 2. विवेकपूर्ण कार्य न करना; **~ठाणा** 1. सम्मान बढ़ाना, 2. सिर ऊँचा करना, 3. साहस करना; **~मारणा** 1. कहा-सुनी करना, 2. दिमाग़ पच्ची करना। **माथा** (हि.)

मात्र (अव्य.) केवल, भर।

मात्रा (स्त्री.) दे. मातरा।

माथ (पुं.) दे. मात्था।

माथा (पुं.) दे. मात्था।

माथुर (पुं.) कायस्थों की एक उप-जाति।

मादक (वि.) नशीला।

मादरी (स्त्री.) 1. शूरसेन की पत्नी, सिंहल से ढिंगल तक के सात अग्रवाल गोत्रों की जन्म-दात्री, 2. नकुल- सहदेव की माता। **माद्री** (हि.)

मादा (स्त्री.) 1. स्त्री जाति का प्राणी, 2. 'नर' का विलोम।

माद्री (स्त्री.) दे. मादरी।

माधव मिश्र (पुं.) हरियाणवी गद्य के प्रसिद्ध लेखक तथा उच्च कोटि के निबंधकार, हिंदी के प्रथम मौलिक कहानीकार, [जन्म कूँगड़ (भिवानी) 1871-1907 ई.]।

माधो (पुं.) 1. माधव, 2. मूर्ख।

माध्यंदिनी (स्त्री.) शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा का नाम।

मान[1] (वि.) तुल्य, जितना। **समान** (हि.)

मान[2] (पुं.) 1. इज़्ज़त, बड़ों के प्रति रखा जाने वाला सम्मान का भाव, 2. बड़ाई, 3. अरमान, 4. एक जाट गोत; (क्रि. स.) 'मानणा' क्रिया का आदे. रूप; **~करणा** 1. आदर देना, 2. विशेष उत्सवों में मिलने पर कन्या-पक्ष के व्यक्ति द्वारा वर-पक्ष के स्त्री-पुरुषों को भेंट देना। **सम्मान** (हि.)

मानणा (क्रि. स.) 1. स्वीकार करना, 2. कहना मानना, 3. आदर देना, 4. पूजना; **~-गूनणा** 1. सम्मान देना, 2. सम्मानित करना; **~-तानणा** मान-सम्मान देना। **मानना** (हि.)

मानता (स्त्री.) किसी देवी-देवता को कुल-देवता के रूप में पूजने का भाव; **~बोलणा** 1. विशिष्ट इच्छा की पूर्ति के लिए दान, पूजा-पाठ आदि का संकल्प लेना, 2. इष्ट देवता की पूजा, भेंट का विशेष संकल्प लेना। **मान्यता** (हि.)

मान-तान (पुं.) 1. आदर-सम्मान, 2. मान हेतु भेंट।

मानना (क्रि. स.) दे. मानणा।

माननीय (वि.) मान या सम्मान के योग्य, सम्मानित, पूजनीय।

मान-महत (वि.) अरमान।

मानव (पुं.) मनुष्य।

मानसरोवर (पुं.) हिमालय के उत्तर में एक प्रसिद्ध तीर्थ सरोवर।

मानसिंह (पुं.) पं. लखमी चंद साँगी के अंधे गुरु।

मानसी गंगा (स्त्री.) कोटि तीर्थ से दो कोस की दूरी पर गोवर्धनपुर के निकट की नदी।

मानसून (पुं.) समुद्र से उठकर वर्षा लाने वाली पवन विशेष।

मानो (अव्य.) जैसे, (दे. जण)।

मान्नी (स्त्री.) चक्की के पाटों के बीच लगने वाली नौका-आकार लकड़ी की गिट्टी; (क्रि. स.) 'मानणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

मान्या-तान्या (वि.) 1. जाना-माना, ख्याति प्राप्त, 2. धार्मिक दृष्टि से सम्मानित या प्रतिष्ठित, 3. बोला- क़बूला।

माप (स्त्री.) दे. माँप।

मापना (क्रि. स.) दे. माँपणा।

माप्पा (वि.) जो फ़सल की उपज को मापने या कूतने में दक्ष हो।

माप्फी (स्त्री.) क्षमा। **माफी** (हि.)

माफ (वि.) क्षमा किया गया।

माफ़िक (वि.) अनुकूल। **मुआफ़िक** (हि.)

माफी (स्त्री.) दे. माप्फी।

मामला (पुं.) 1. झगड़ा, 2. विवाद की स्थिति, 3. घटना।

मामा (पुं.) दे. माम्माँ।

मामी (स्त्री.) मामा की पत्नी।

मामूली (वि.) सामान्य, साधारण।

माम्माँ (पुं.) माता का भाई। **मामा** (हि.)

मायड़/मायल (स्त्री.) माता, माँ (गीतों में प्रयुक्त)।

मायली (स्त्री.) माँ।

माया (स्त्री.) 1. संपत्ति, 2. संसार के प्रति मोह-ममता, संसार का भ्रमजाल, 3. छल, 4. भ्रम, 5. बेटी, पुत्री, (गरीबदास और नितानंद की बानियों में माया के रंगरेजनी, मारिणी, आदमखोरी, राँड, बैरण, घानी, घाल, मीठी छुरी, मिसरी, चुड़ैल, चोरटी, भाँडणी, नागण, आदि विशेषण मिलते हैं, सा. स्मा. 1969-71)।

माधो (पुं.) 1. माधव। 2. मूर्ख।

मायाधारी (वि.) मायावी।

मायूस (वि.) निराश।

मार[1] (स्त्री.) 1. मारने का भाव या क्रिया, 2. चोट, 3. मानसिक आघात, 4. हानि (व्यापार में), 5. खेल का दाँव, 6. हार, 7. चोट के बाद रहने वाली पीड़ा, जैसे–काँट्टे की मार; (क्रि. अ.) 'मारणा' क्रिया का आदे. रूप; **~दूखणा** चोट में पीड़ा होना; **भरमाँ~** अंदरूनी चोट, गुम चोट; **~मारणा** पिटाई करना।

मार[2] (अव्य.) बहुत, अधिक ? **–देब्बी** के मेले मैं मार कटक जुड़ र्‍ह्या था।

मारकंडे (पुं.) 1. कुरुक्षेत्र के निकट एक बरसाती नदी, 2. एक ऋषि। **मार्कंडेय** (हि.)

मारका (पुं.) 1. महत्त्वपूर्ण (घटना); 2. शोर या पुकार, 3. ट्रेड मार्क; **~(-के) की कहणा** महत्त्वपूर्ण बात कहना; **~पड़णा** 1. शोर मचना, तलाशी के लिए शोर मचना, 2. प्रसिद्धि होना।

मार-काट (स्त्री.) लड़ाई; **~का साल** भारत-विभाजन का वर्ष, सन् 1947 का वर्ष।

मारणा (क्रि. स.) 1. वध करना, 2. पीटना, 3. शिकार करना, 4. सींग आदि से आघात पहुँचाना, 6. मन की इच्छा दबाना, जैसे–मन मारणा, 7. गाँठ बाँधना, 8. ताड़ना, पशु को भगाना, 9. रुपया आदि न लौटाना, 10. चोट लगाना, ठोंकना, 11. मैथुन करना, 12. आँख दबाना, आँख का इशारा करना, 13. धोखा देना, कपट करना; (वि.) दे. मरखणा। **मारना** (हि.)

मारना (क्रि. स.) दे. मारणा।

मारपीट (स्त्री.) 1. मार-पिटाई, 2. झगड़ा-फ़साद।

मारफ़त (अव्य.) द्वारा, जरिये, माध्यम से।

मारवण (स्त्री.) दे. मरवण।

मारवाड़ (पुं.) मारवाड़ियों का देश, मारवाड़ प्रदेश।

मारवाड़ी (वि.) 1. मारवाड़ का निवासी (जो भारी पगड़ी और भारी जूती पहनता है), 2. मारवाड़-संबंधी, 3. मारवाड़ी (बोली) जिसमें 'सास्सू' (सासू) को 'छाच्छू' बोलते हैं; (पुं.) व्यापारी; **~पागड़ी** विशेष ढंग से बाँधी जाने वाली लंबी और पतली पगड़ी।

मारी (अव्य.) लिए, खातिर–तेरी मारी मैं आया; (क्रि. स.) 'मारणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

मारीच (पुं.) वह राक्षस जो सीताजी के सामने हिरन का रूप बनाकर आया था।

मारू[1] (स्त्री.) दे. मरवण।

मारू[2] (वि.) मारक, अधिक हानिकारक।

मारूली (स्त्री.) दे. मरवण।

मार्गशीर्ष (पुं.) दे. मँगसिर।

मार्‍या (अव्य.) लिए, ख़ातिर, जैसे–तेरा मार्‍या (तुम्हारे लिए), (दे. मारी);

(क्रि. स.) 'मारणा' क्रिया का भू. का. पुं., एकव. रूप।

मार्यूँमार (क्रि. वि.) भागम-भाग; **~करणा** जल्दी मचाना।

माल (स्त्री.) दे. माल[1]; (पुं.) दे. माळ[2]।

माळ[1] (स्त्री.) 1. चरखे पर चढ़ी रस्सी, 2. रहँट की बाल्टियाँ, 3. पंक्ति, 4. माला, लड़ी।

माळ[2] (पुं.) 1. धन, संपत्ति, 2. सामग्री, 3. पौष्टिक आहार। **माल** (हि.)

मालगाड़ी (स्त्री.) दे. माळगाड्डी।

माळगाड्डी (स्त्री.) वह रेल जिसमें सामान ढोया जाता है। **मालगाड़ी** (हि.)

माळगुजारी (स्त्री.) वह भूमि-कर जो किसान सरकार को देता है। **मालगुज़ारी** (हि.)

माळगुदाम (पुं.) मालगोदाम। **मालगोदाम** (हि.)

मालगोदाम (पुं.) दे. मालगुदाम।

मालटा (पुं.) 1. एक फल, 2. शराब।

माळ-ताळ (पुं.) 1. धन-दौलत, 2. पौष्टिक भोजन।

मालदा (पुं.) एक अधिक रसीला आम।

मालदार (वि.) दे. माळदार।

माळदार (वि.) 1. अमीर, 2. मालयुक्त।

मालपूड़ा (पुं.) मालपूआ।

माळवा[1] (पुं.) धर्मार्थ एकत्रित सामूहिक धन।

मालवा[2] (पुं.) गामशामलात धन।

माला (स्त्री.) दे. माळा।

माळा (स्त्री.) 1. सोने के गोल बीजों का बना गले का आभूषण, 2. जयमाला; **~खड़काणा** माला फेरना, जप करना; **~फेरणा** 1. पराए माल की आस लगाना, 2. जप करना। **माला** (हि.)

मालामाल (वि.) दे. माळामाळ।

माळामाळ (वि.) 1. माल से भरपूर, 2. संपत्ति-युक्त। **मालामाल** (हि.)

मालिक (पुं.) 1. दे. माल्लिक, 2. खसम, 3. (दे. धणी)।

मालिकाना (पुं.) स्वामित्व; (वि.) मालिक की तरह का।

मालिया (स्त्री.) अटारी। उदा. महल मालिया।

मालिस (स्त्री.) 1. मलने की क्रिया, 2. मर्दन। **मालिश** (हि.)

माली (पुं.) दे. माळी; (वि.) आर्थिक।

माळी (पुं.) 1. बगीचे में काम करने वाला, 2. एक जाति, 3. संरक्षक। **माली** (हि.)

मालूम (वि.) ज्ञात।

माल्लण (स्त्री.) 1. माली की पत्नी, 2. माली जाति की महिला। **मालिन** (हि.)

माल्ला (पुं.) दे. मुद्गर।

माल्लिक (पुं.) 1. स्वामी, 2. पति, 3. ईश्वर। **मालिक** (हि.)

माळ्ह (स्त्री.) दे. माळ[1]; (पुं.) योद्धा।

मावट (स्त्री.) दे. माहवट।

मावला (पुं.) (?) उदा. मावला के कोसाँ में थारा देवरा।

मावस (स्त्री.) कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि (यह पितरों का दिन माना जाता है और इस दिन किसान बैलों पर जूआ नहीं रखते)। **अमावस** (हि.)

मावसी (स्त्री.) दे. मोंस्सी।

मावा (पुं.) 1. खोया, 2. माँड, स्टार्च; **~काढणा/खींचणा/लिकाड़णा** खोया बनाना।

मावी (पुं.) गूजरों का एक गोत।

माशा (पुं.) दे. माँस्सा।

माशूक (पुं.) प्रिय, प्रेम-पात्र।

माष (स्त्री.) दे. उड़द।

मास (पुं.) दे. माँस[2]।

मासटर (पुं.) अध्यापक। **मास्टर** (हि.)

मासटरी (स्त्री.) अध्यापन-कार्य, शिक्षण-कार्य।

मासिक (वि.) 1. महीने में एक बार होने वाला, 2. महीने का।

मासूम (वि.) 1. भोला-भाला, 2. निरपराध।

मासैर (स्त्री.) महाशाला। दे. दुकड़िया।

माह[1] (पुं.) माघ का महीना। **माघ** (हि.)

माह[2] (पुं.) मास, महीना।

माहळा (पुं.) एक वृक्ष विशेष, (दे. सँभाळू)।

माहवट (स्त्री.) दे. महावट।

माहवार (वि.) मासिक, महीने का; (क्रि. वि.) प्रति मास।

माहवारी (वि.) हर महीने का; (स्त्री.) मासिक धर्म, (दे. लत्ते आणा)।

माहात्म्य (पुं.) गौरव, महिमा।

माही (वि.) माघ से संबंधित।

माहुर (पुं.) खाती या बढ़ई का एक गोत या उप-जाति।

माहोट (स्त्री.) दे. महावट।

मिंट (स्त्री.) 1. एक मिनट का काल, 2. शीघ्र। **मिनट** (हि.)

मिंढवाणा (क्रि. स.) मिढ़वाना, मिढ़ाई का काम अन्य से करवाना।

मिंढाई (स्त्री.) मींडने या मींढने की क्रिया; (क्रि. स.) 'मिंढवाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप, गेंद, ढोल आदि को मींढने की क्रिया।

मिंतर (पुं.) मित्र; (वि.) प्रेमी।

मिक़दार (स्त्री.) मात्रा, परिणाम।

मिचकणा (क्रि. अ.) आँख चुँधियाना। **मिचकना** (हि.)

मिचणा (क्रि. अ.) मिचना, बंद होना (आँख का)।

मिचना (क्रि. अ.) दे. मिचणा।

मिचळाणा (क्रि. अ.) जी मितलाना। **मितलाना** (हि.)

मिचलाना (क्रि. अ.) दे. मिचळाणा।

मिजमान (पुं.) मेहमान।

मिज़ाज़ (पुं.) 1. नख़रा, 2. स्वभाव।

मिजाजण (वि.) मिज़ाज़ वाली; (स्त्री.) घमंडी महिला; ~**-मात्ता** दे. मजेजण।

मिजान (पुं.) मीज़ान, योग, तालमेल।

मिटणा (क्रि. अ.) 1. अक्षर आदि का साफ़ होना या लुप्त होना, 2. नष्ट होना, 3. नापैद होना। **मिटना** (हि.)

मिटाणा (क्रि. स.) 1. लिखे हुए को पोंछना, 2. नष्ट करना, 3. चिह्न न रहने देना। **मिटाना** (हि.)

मिटाना (क्रि. स.) दे. मिटाणा।

मिटौड़ (पुं.) माटी का ढेर।

मिट्ठू (पुं.) 1. तोता, 2. मुसलमान; (वि.) प्यारा बोलने वाला।

मिट्ठो (स्त्री.) चुंबन।

मिठबोला (वि.) दे. मिठबोल्ला।

मिठबोल्ला (वि.) 1. मीठा बोलने वाला, 2. कपटी; ~**छात्ती छोल्ला** मीठा बोलने वाला घातक होता है। **मिठबोला** (हि.)

मिठाई (स्त्री.) मीठा पकवान।

मिठान (वि.) मिठास।

मिठारणा (क्रि. स.) 1. मीठा करना, 2. स्वाद लेना।

मिठास (स्त्री.) 1. मीठेपन का भाव, 2. वाणी की मधुरता; **~पड़णा** वनस्पति में रस बनना शुरू होना।

मिठोळा (पुं.) दे. मटोळा।

मिड़त (पुं.) राजस्थान का पुराना राज्य विशेष, मीरा का जन्म स्थान, मेड़तगढ़।

मिडलची (वि.) आठवीं कक्षा पास (व्यक्ति)।

मिणखिण (स्त्री.) ऊब, घृणा।

मिणणा (क्रि. स.) 1. दान देने से पूर्व देय वस्तु की पूजा करना, 2. किसी वस्तु को दान देने का संकल्प करना। **मिनना** (हि.)

मिणमिणाणा (क्रि. अ.) मिमियाना, भेड़, बकरी आदि का बोलना। **मिनमिनाना** (हि.)

मिणसणा (क्रि. स.) किसी वस्तु को दानार्थ देने का संकल्प करना, (दे. मिणणा)। **मिनसना** (हि.)

मितलाणा (क्रि. अ.) दे. मिचळाणा।

मिति (स्त्री.) तिथि, देसी महीने की तिथि।

मित्तर (पुं.) 1. प्रिय, 2. सखा, (दे. याड़ी)। **मित्र** (हि.)

मित्तल (पुं.) अग्रवाल वैश्यों का गोत्र, इनका संबंध मैत्रेय ऋषि, यजुर्वेद, माध्यंदिनी शाखा और कात्यायन सूत्र से है, इनका प्रबर मांकील है।

मित्ताथल (पुं.) 1. वह स्थान जहाँ थोड़ी-थोड़ी मरु भूमि होती हो, 2. भिवानी के निकट एक गाँव जहाँ सिंधु सभ्यता के अवशेष मिले हैं।

मित्र (पुं.) दे. मित्तर।

मिथन (पुं.) 1. एक राशि, 2. स्वभाव–तेरा ए मिथन नाँ पाँमता, 3. जोड़ा; **~पाणा** स्वभाव का पता लगाना; **~मारणा** प्रकृति बदलना; **~मिलणा** दो व्यक्तियों का स्वभाव मिलना। **मिथुन** (हि.)

मिथलापुरी (स्त्री.) राजा जनक की नगरी। **मिथिलापुरी** (हि.)

मिथिला (स्त्री.) दे. मिथलापुरी।

मिनमिनाना (क्रि. अ.) दे. मिणमिणाणा।

मिनसटर (पुं.) मंत्री। **मिनिस्टर** (हि.)

मिन्नत (स्त्री.) खुशामद, अनुनय-विनय।

मिमाणा (क्रि. अ.) 1. बकरी का बोलना, (दे. मिणमिणाणा), 2. गिड़गिड़ाना। **मिमियाना** (हि.)

मिमियाना (क्रि. अ.) दे. मिमाणा।

मियाँ (पुं.) दे. मीयाँ।

मियाँमिट्ठू (पुं.) दे. मीयाँमिट्ठू।

मियाद (स्त्री.) दे. म्याद।

मिरग (पुं.) हिरन। **मृग** (हि.)

मिरगछाल्ला (स्त्री.) 1. मृगछाला का आसन (जिस पर बैठने से बवासीर रोग नहीं होता), 2. मृग-चर्म। **मृगछाला** (हि.)

मिरगानैणी (वि.) मोटे या विशाल नेत्रों वाली। **मृगनयनी** (हि.)

मिरघी[1] (स्त्री.) हिरनी। **मृगी** (हि.)

मिरघी[2] (स्त्री.) मिरगी का रोग। **मिरगी** (हि.)

मिरच (स्त्री.) लाल, काली आदि मिर्च; (वि.) 1. तिक्त स्वाद का, 2. जिसका तेज़ स्वभाव हो; **~जळाणा** बच्चे की नज़र उतारने के लिए आग में मिर्च डालना (जन-धारणा के अनुसार यदि नज़र लगी हो तो मिर्च में धाँस नहीं उठती); **~बाँधणा** कुत्ते के काटने से पड़े घाव पर लाल मिर्च बाँधकर विष शमन करना; **~लाणा** भड़काना, घाव पर मिर्च छिड़कना; **~-सी लागणा** तीखी बात पर तिल-मिलाना। **मिर्च** (हि.)

मिरच-लड़ावा (वि.) लड़ाने-झगड़ाने वाला।

मिरज़ा (पुं.) 1. मुसलमानों की एक उपाधि, 2. अमीरज़ादा।

मिरड़ (स्त्री.) 1. मरोड़, 2. चिड़चिड़ा स्वभाव, ईर्ष्या-द्वेष का भाव, 3. ऐंठ; **~करणा/राखणा** ईर्ष्या-द्वेष रखना; **~लीकड़णा** ऐंठ निकलना।

मिरड़ाणा (क्रि. अ.) 1. (कमज़ोर बच्चे का) रुक-रुक कर धीरे-धीरे रोना, 2. ईर्ष्या करना, 3. खीझना। **मिरड़ाना** (हि.)

मिरड़ी (वि.) 1. ईर्ष्यालु, 2. चिड़चिड़ा।

मिरड़ू (वि.) दे. मिरड़ैल।

मिरड़ैल (वि.) मिरड़ी स्वभाव का, चिड़चिड़े या ईर्ष्यालु स्वभाव का।

मिरतु (स्त्री.) मृत्यु, (दे. मरण)। **मृत्यु** (हि.)

मिराड़ (पुं.) अखाद्य भोजन।

मिरासी (पुं.) 1. एक जाति, 2. विदूषक, भाँड, 3. डोम।

मिरी (सर्व.) मेरी।

मिर्च (स्त्री.) दे. मिरच।

मिल (पुं.) दे. मील[2]।

मिलट (स्त्री.) दे. मलट।

मिलटरी (स्त्री.) सेना। **मिलिटरी** (हि.)

मिलणसार (वि.) 1. सबसे मेल-जोल रखने वाला, 2. जान-पहचान का, परिचित, 3. मिलता-जुलता। **मिलनसार** (हि.)

मिलणा (क्रि. अ.) 1. भेंट करना, 2. सम्मिलित होना, 3. घुल जाना, 4. चिपकना, जुड़ना, 5. किसी चीज़ से मिलता-जुलता होना, 6. गले लगना, 7. लाभ होना, 8. रस्सी आदि का मेला जाना, (दे. मेळणा); **~-फेटणा** मुलाकात होना। **मिलना** (हि.)

मिळणा (क्रि. अ.) रस्सी आदि का मेला जाना।

मिलणी (स्त्री.) सगाई के समय तथा अन्य अवसरों पर वर-पक्ष के संबंधियों को दी जाने वाली मिलन-भेंट; **~बाँटणा/देणा** विवाह के समय वर-पक्ष के लोगों को नक़द राशि भेंट में देना; **~होणा** समधियों का भुजभेंट मिलना। **मिलनी** (हि.)

मिलतू (वि.) 1. मिलता-जुलता, 2. साझे का, 3. मिलनसार।

मिलनसार (वि.) दे. मिलणसार।

मिलना (क्रि. अ.) दे. मिलणा।

मिलनी (स्त्री.) दे. मिलणी।

मिलमाँ (वि.) 1. मिलता-जुलता, एक समान, 2. मिला-जुला, मिश्रित, जैसे–मिलमाँ नाज, 3. मिली भगत, 4. साझे का काम, 5. मेल खाने वाली, जैसे–मिलमाँ बुणती, 6. सटा हुआ, जैसे–मिलमाँ किवाड़ाँ की जोड़ी; **~-जुलमाँ** मिलता-जुलता। **मिलवाँ** (हि.)

मिलमाँ (वि.) मेली या बेटी हुई, जैसे–मिळमाँ रस्सी।

मिळवाणा (क्रि. स.) 1. बटी हुई रस्सी को दो या तीन मोड़ देकर मोटा करवाना या कोई विशिष्ट रूप देना, जैसे–नेज्जू मिळवाणा, मोहरी मिळवाणा, 2. कोल्हू में पिरवाना।

मिलवाणा (क्रि. स.) 1. भेंट करवाना, मैत्री करवाना, 2. मिश्रण कराना, 3. समझौता करवाना, 4. भिड़ंत कराना, 5. कुश्ती कराना, 6. आमदनी करवाना। **मिलवाना** (हि.)

मिलवाना (क्रि. स.) दे. मिलवाणा।

मिलाइया (पुं.) हाथी दाँत का चूड़ा।

मिलाई (स्त्री.) 1. मिलने की क्रिया या भाव, मुलाक़ात, 2. विवाह के समय की एक रस्म।

मिळाई (स्त्री.) बटी रस्सी को पुनः बट चढ़ाकर बाटने या बल चढ़ाने की क्रिया; (क्रि. स.) 'मिळवाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

मिलाऊ (वि.) 1. मिलनसार, 2. मिलता-जुलता, 3. समझौता कराने वाला।

मिलाणा (क्रि. स.) 1. मिलने की क्रिया करना या करवाना, 2. सामान की जाँच-पड़ताल करना, 3. तुलना करना, (दे. मिलवाणा)। **मिलाना** (हि.)

मिळाणा (क्रि. स.) दे. मिळवाणा।

मिलाना (क्रि. स.) दे. मिलाणा।

मिलाप (पुं.) 1. भेंट, मेल, 2. मित्रता।

मिलावट (स्त्री.) 1. बढ़िया चीज़ में घटिया चीज़ मिलाने का भाव, 2. मिश्रण।

मिलावटी (वि.) 1. बनावटी, 2. 'शुद्ध' या 'खरे' का विलोम; **~बात** झूठी या छल-फ़रेब वाली बात।

मिलिटरी (स्त्री.) दे. मिलटरी।

मिलीभगत (स्त्री.) 1. छल-कपट पूर्ण समझौता, 2. साँठ-गाँठ।

मिश्र (पुं.) दे. मिस्सर।

मिश्र माधव (पुं.) दे. माधव मिश्र।

मिश्रण (पुं.) 1. मिलावट, 2. कई वस्तुओं का मेल, (दे. गड्ढ-मड्ढ)।

मिष (पुं.) दे. मिस।

मिष्ठोला (पुं.) प्रसन्नता।

मिस (पुं.) 1. छल, कपट, 2. बहाना; **~करणा/भरणा/लाणा** बहाना लगाना। **मिष** (हि.)

मिसकोट (पुं.) छल-कपट पूर्ण समझौता।

मिसर (पुं.) मिस्र देश।

मिसराई (स्त्री.) 1. पंडिताई, 2. जन्म, विवाह आदि संस्कार कराने का काम; **~आणा** यजमानी से आय होना; **~करणा** 1. पंडिताई करना, 2. मिस्सरपन का काम करना।

मिसराणी (स्त्री.) 1. मिस्सर की पत्नी, 2. गाँव के पंडित की पत्नी, पंडितानी, पंडिताइन। **मिसरानी** (हि.)

मिसरी (स्त्री.) 1. मोटी दानेदार चीनी (जो गुण में शीतल मानी जाती है), 2. माया; (वि.) बहुत मीठी; **~-सी घुलणा/फूटणा** बहुत रस या आनंद मिलना—मिसरी कैस्सी डळी घुळण लाग्गी आपस की बात्ताँ मैं।

मिसल[1] (स्त्री.) सिक्खों का राजनीतिक संप्रदाय।

मिसल[2] (स्त्री.) सनद आदि की नक़ल।

मिसली (वि.) अपराधी, जिसका नाम थाने की मिसल में दर्ज हो।

मिसाल (स्त्री.) उदाहरण।

मिस्सर (पुं.) 1. गाँव का पंडित, पंडित, 2. जन्म, विवाह आदि संस्कार करवाने वाला, 3. हरियाणे के कुछ ब्राह्मणों की उपाधि, 4. सरयूपारी, कान्य-कुब्ज, शक द्वीपी और सारस्वत आदि ब्राह्मणों के एक वर्ग की उपाधि, 5. श्रेष्ठ आचार-व्यवहार वाला ब्राह्मण; (वि.) श्रेष्ठ। **मिश्र** (हि.)

मिस्सरपण (पुं.) 1. मिस्सरपन, 2. खान-पान में शुचिता या पवित्रता का भाव।

मिस्सी[1] (स्त्री.) 1. गेहूँ, चने आदि के मिश्रित आटे की (रोटी), 2. मिली-जुली, 3. मिलावटी। **मिश्रित** (हि.)

मिस्सी[2] (स्त्री.) मिसी (तुल. चोप)।

मिहीनती (पुं.) मज़ूदर; (वि.) परिश्रमी, उद्यमी। **मेहनती** (हि.)

मीं (पुं.) दे. मींह।

मींगण (स्त्री.) ऊँट, बकरी, चूहे आदि का विष्ठा; **~करणा** 1. घबराना, 2. काम बिगाड़ना, 3. कब्ज़ी की अवस्था में कठोर और अल्पमात्रा में मल त्यागना। **मेंगन** (हि.)

मींच (स्त्री.) नींद में आँख मिंचने का भाव, नींद; (क्रि. स.) 'मींचणा' क्रिया का आदे. रूप। **मीच** (हि.)

मींचणा (क्रि. स.) 1. आँख बंद करना, 2. भींचना। **मीचना** (हि.)

मींज्झी (स्त्री.) 1. सिर, सिर के बीच का भाग, मध्य-शीर्ष, 2. दिमाग; **~पाड़णा** आघात से सिर फाड़ना।

मींझा (स्त्री.) दे. मुज्झा।

मींडकी (स्त्री.) मेंढक की मादा; (वि.) क्षुद्र प्राणी; **~की लात** प्रभावहीन आघात; **~की लात का पाणी** बहुत ताज़ा पानी; **~-सी** छोटी-सी। **मेंढकी** (हि.)

मींडा (वि.) चपटी नाक वाला।

मींड्डक (पुं.) टर्राने वाला एक जल-जीव। **मेंढ़क** (हि.)

मींड्ढा (पुं.) दे. मींह्ढा।

मींढणा (क्रि. स.) 1. किसी वस्तु को वस्त्र, रस्सी आदि से मंडित करना या मढ़ना, 2. ढोल आदि पर चमड़ा चढ़ाना, 3. खुले स्थान पर पड़े गोबर पर पैर से चिह्नित करना ताकि उसे अन्य न उठाए, 4. जादू-टोना करना, 5. जल्दी में सिर पर पगड़ी लपेटना, 6. बाड़ लगाना। **मढ़ना** (हि.)

मींयाँ (पुं.) 1. मियाँ, मुसलमान, 2. मुसलमान के लिए प्रयुक्त सम्मान- बोधक शब्द, 3. पति।

मींह[1] (पुं.) मेह, वर्षा; **आँद्धा~** धूप के समय होने वाली वर्षा; **~कैस्सी बाट देखणा** अधिक प्रतीक्षा करना; **चालता~** संयोग से होने वाली क्षणिक वर्षा; **ऊँहटा~** विपरीत दिशा की वर्षा। **मेह** (हि.)

मींह[2] (पुं.) अधिक वर्षा। दे. मींह।

मींहू (पुं.) बिल्ली, चूहे आदि की जूँ।

मींह्ढा (पुं.) भेड़ का नर। **मेंढ़ा** (हि.)

मींह्ढी (पुं.) 1. सिर के बालों की गूँथी हुई लटा, 2. तीन लड़ियों से गुँथी चोटी; **~करणा/गूँथणा** सिर के बाल गूँथना, नालों की सहायता से सिर के बालों की लटें गूँथना। **मेंढ़ी** (हि.)

मींह्याँ (वि.) 1. बारीक, 2. झीना, 3. 'दरदरा' या 'मोट्टा' का विलोम; **~कातणा** 1. अधिक छानबीन करना, 2. आलोचना करना। **महीन** (हि.)

मीज़ान (पुं.) दे. मिजान।

मीज्जा (स्त्री.) दे. मीज्जा-खाँड।

मीज्जा-खाँड (स्त्री.) कच्ची-खाँड।

मीट्ठा (वि.) 1. मधुर, 2. मधुर भाषी, 3. स्वादिष्ट, 4. धीमा (बैल); (पुं.) 1. मिठाई, 2. चीनी, खाँड; **~काढणा** खाँड बनाना; **~घालणा** मेहमान को घी-बूरा देना; **~घोळणा** 1. जीवन को आनंदित करना, 2. प्यारा बोलना, 3. शरबत बनाना; **~तेल** तिल का तेल; **~पाणी** 1. कूएँ का पानी जो स्वादिष्ट हो, वह पानी जो खारा न हो, 2. शरबत। **मीठा** (हि.)

मीट्ठा-चोक्खा (पुं.) मिष्टान्न, मिठाई।

मीट्ठी (वि.) 1. मधुर, 2. स्वादिष्ट, 3. प्यारी; (स्त्री.) माया; **~छुरी** 1. जो मीठा बोल कर कपट करे, 2. मधुर भाषी। **मीठी** (हि.)

मीठा (वि.) दे. मीट्ठा।

मीठी (स्त्री.) दे. मिट्ठो।

मीड्डा (वि.) चपटे नाक वाला; (पुं.) जाट जाति का एक गोत।

मीणा (पुं.) दे. मीना।

मीत (स्त्री.) 1. मित्रता, 2. प्रेम; (पुं.) मित्र; **~निभाणा** मित्रता निभाना।

मीतल (पुं.) दे. मित्तल।

मीन (स्त्री.) 1. मीन राशि, 2. मछली; **~-मेख काढणा** नुक़्ताचीनी करना।

मीना (पुं.) 1. राजपूतों की एक जाति, 2. सोने-चाँदी पर किया जाने वाला रंग-बिरंगा काम; (वि.) चतुर।

मीनाकारी (स्त्री.) मीने का काम।

मीनाक्षी (स्त्री.) एक देवी; (वि.) मीन-सी सुंदर आँखों वाली।

मीन्ना (वि.) दे. बीन्ना; (पुं.) दे. मीना।

मीमांसा (पुं.) हिंदुओं के छः दर्शनों में से दो दर्शन (पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा)।

मीयाँमिट्ठू (पुं.) 1. तोता, 2. मधुर-भाषी।

मीर (पुं.) एक मुसलमान जाति; (वि.) अमीर।

मील[1] (पुं.) लगभग एक कोस के बराबर की दूरी, 220 गज का नाप।

मील[2] (पुं.) कारख़ाना, मिल।

मुंगी पा (पुं.) एक बौद्ध संत।

मुँछालिया (वि.) लंबी मूछों वाला। दे. मूँछल।

मुँजवाड़ (पुं.) एक अहीर गोत; (वि.) मूँज से बनी।

मुंड (पुं.) दे. मूँड।

मुँडणा (क्रि. स.) 1. मूँडा जाना, छला जाना, 2. घाटा होना, 3. शरीर के बालों का (भेड़, ऊँट आदि) काटा जाना, 4. सिर का मुंडन होना। **मुँडना** (हि.)

मुंडन (पुं.) 1. मुंडन संस्कार, 2. गूजरों का एक गोत।

मुंडना (क्रि. अ.) दे. मुँडणा।

मुंडवा (पुं.) दे. मंडास्सा।

मुँडाई (स्त्री.) 1. मूँडने की क्रिया, 2. नाई का पारिश्रमिक; **~होणा** छला जाना।

मुंडान (पुं.) हिरण।

मुँडियाण (पुं.) एक जाट गोत।

मुँडीसा (पुं.) 1. पगड़ी, 2. (दे. मँडास्सा)।

मुँडेर (स्त्री.) दे. मँडेर।

मुँड्डा (वि.) 1. वह पशु जिसके सींग नहीं उगे हों या बहुत छोटे हों, (दे. ऊन्ना), 2. एक प्रकार का पंजाबी जूता; (पुं.) दे. टाब्बर।

मुंड्डी (स्त्री.) 1. महाजनी लिपि, बनियों के बही-खाते की लिपि जिस पर शिरोरेखा नहीं होती तथा मात्रा अक्षर के ऊपर-नीचे की बजाय वर्ण के सामने लगाई जाती है, (दे. महाजनी), 2. (दे. मूँड्डी)।

मुँथरा (वि.) घुँघराला।

मुँदणा (क्रि. अ.) 1. बंद होना, आँख आदि का बंद होना, 2. छिद्र का बंद होना, 3. क़ैद होना, बंधन में पड़ना या फँसना, 4. मार्ग अवरुद्ध होना, 5. पुष्प का बंद होना; (वि.) (वह फाटक, दरवाज़ा) जो स्वयं बंद हो जाए। **मुँदना** (हि.)

मुँदना (क्रि. अ.) दे. मुँदणा।

मुँदरा (स्त्री.) 1. कनफाड़े साधुओं के कान के बड़े कुंडल, 2. योग मुद्रा, 3. धन-दौलत, रुपया-पैसा, 4. धातु का सिक्का; **~घालणा/पहरणा** कनफाड़ा साधु बनना। **मुद्रा** (हि.)

मुंदरी (स्त्री.) अंगूठी।

मुँधणा (क्रि. अ.) 1. औंधा गिरना, 2. तरल वस्तु का पात्र से बिखरना, 3. (दे. मुँदणा); (वि.) वह (लोटा आदि) जो स्वंय लुढ़क जाए।
मुँधना (हि.)

मुँधाणा (क्रि. स.) 1. तरल वस्तु को भूमि पर बिखेरना, औंधाना, 2. पात्र आदि को औंधा करना, 3. औंधा लेटाना।
मुँधाना (हि.)

मुंशी (पुं.) दे. मुंसी।

मुंसिफ़ (पुं.) दीवानी विभाग का एक न्यायाधीश।

मुंसी (स्त्री.) 1. अध्यापक, 2. न्यायालय या सरकारी दफ्तर का लिपिक, सामान्य लिखत-पढ़त करने वाला। **मुंशी** (हि.)

मुँह (पुं) मुख; (वि.) 1. साहस, 2. सम्मान; **~आई बात** 1. बिना सोचे-समझे कही गई बात, 2. स्पष्ट बात; **~आणा** 1. मनुष्य या पशु के मुँह में छाले आदि का विकार होना, 2. अधिक लाड़ला होना; **~काळा करणा** 1. अपमानित होना, 2. चरित्र भ्रष्ट होना; **~खुल्हणा** 1. दुस्साहस बढ़ना, 2. ज़बान पर क़ाबू न होना, 3. प्राण निकलना; **~चढ़ाणा** 1. उपेक्षा दिखाना, 2. घृणा करना, 3. लाड़-प्यार से बिगाड़ना; **~चलाणा** 1. चिढ़ाना, 2. जुगाली लेना, 3. बार-बार खाते रहना; **~छुटमाँ** दे. छुटमाँ-मुँह; **~तैं बात नाँ करणा** 1. अभिमानी होना, 2. निरादर करना; **~तैं लिकाड़ कै देणा** अपना अंश अन्य को देना; **~देखमाँ थप्पड़** व्यक्ति की सामर्थ्य के अनुसार व्यवहार; **~धोणा** आस लगाना; **~पाँह आणा** पशु को मुँह तथा खुर का रोग लगना; **~-पेट चालणा** कै तथा दस्त लगना; **~फुलाणा** उपेक्षा या क्रोध का भाव प्रकट करना; **~फेरणा** 1. उपेक्षा प्रकट करना, 2. अरुचि उत्पन्न होना, 3. लज्जित होना; **~बाणा** 1. रोगी बनकर चारपाई पर लेटना, 2. अधिक दाम माँगना; **~बिटाळणा** मुँह मीठा करना, व्रत-उपवास आदि के बाद प्रसाद ग्रहण करना; **~-बोलता** सजीव चित्रण; **~बोल्या** मन चाहा; **~मात्था देखणा** किसी के दर्शन होना (चाहे, अनचाहे); **~मारणा** 1. पशु द्वारा कहीं-कहीं से खेती खाना, 2. अधिक घी, मीठे आदि के कारण किसी वस्तु को खाने की इच्छा न रहना; **~मीट्ठा कराणा** मिठाई बाँटना; **~मुल्हाजा** जान-पहचान; **~राखणा** सम्मान रखना; **~लागणा** 1. लाड़-प्यार के कारण बिगड़ना, 2. बुरी लालच लगना, 3. मुँह के बल गिरना; **~लाणा** सिर चढ़ाना; **~सींमणा** 1. मुख बंद रखना या करना, 2. कुछ न कहने देना; **~होणा** 1. फुंसी में छिद्र होना, 2. बातें आना, 3. दुस्साहस बढ़ना।

मुँहकाण (स्त्री.) किसी की मृत्यु होने पर सगे-संबंधियों द्वारा शोक प्रकट करने जाने की रस्म, (दे. खेड्डे)।
मुँहकान (हि.)

मुँहकाणिया (पुं.) मृत्यु का शोक प्रकट करने आए रिश्तेदार।

मुँहजोर (वि.) बोलने में समर्थ।

मुँह-ठड्ड (वि.) 1. धृष्ट, ढीठ, 2. स्पष्ट-वक्ता।

मुँहढा (पुं.) 1. मुख, 2. निकटवर्ती भाग, पास का स्थान–मुँहढे धरी चीज बखत अँधेरे मैं बी टोहले, 3. गाँव का निकटवर्ती भाग, (दे. मोंहढा)।

मुँह-दिखाई (स्त्री.) (प्रथम बार मुँह दिखाते समय) नव-वधू को नक़दी, आभूषण आदि के रूप में दी जाने वाली भेंट; **~घालणा/देणा** नव-वधू को वर-पक्ष के सगे-संबंधियों द्वारा भेंट देना; **~(-वा)** 1. लोक-लाज के लिए किया गया काम, 2. मुँह दिखाने योग्य।

मुँह-फट (वि.) स्पष्टवादी (तुल. मुँह-ठड्ड)।

मुँह-भामता (वि.) इच्छानुसार (भोजन), रुचि-अनुसार (भोजन)।
मुँह-भाता (हि.)

मुँहमल (पुं.) आमने सामने। तुल. आहमाँसाहमीं।

मुआ (वि.) 1. हीन, मरने योग्य, 2. मृतक तुल्य, 3. मृतक। उदा.–जणै के लिखी मुए भाग में।

मुकड़ा (वि.) 'फलाणा' का अनुवर्ती, अमुक, (दे. फलाणा~धिकड़ा)।

मुकणा (क्रि.) समाप्त होना।

मुकताल (स्त्री.) एक छंद।

मुकदमाँ (पुं.) दावा, नालिश, अभियोग; **~करणा/ठोकणा** दावा करना।
मुकदमा (हि.)

मुकद्दम (पुं.) दे. लंबरदार।

मुक़द्दर (पुं.) भाग्य।

मुकलाई (स्त्री.) वह वधू जो विवाह के बाद पहली बार पति-गृह आई हो, द्विरागमन या 'चाल्ले' में आई वधू; (वि.) लज्जाशील, संकोचशील।

मुकलाणा (दे.) मुकलावा।

मुकलाया (पुं.) 1. (वह व्यक्ति) जिसका मुकलावा हो चुका हो, 2. (वह व्यक्ति) जो मुकलावे के लिए गया हो, (दे. मुकलावा)।

मुकलावली (स्त्री.) दे. मुकलाई।

मुकलावा (पुं.) वधु की द्विरागमन की रस्म, (तुल; ठीक); **~आणा** मेहमानों का मुकलावे के लिए आना।

मुक़ाबला (पुं.) 1. आमना-सामना, 2. मुठभेड; 3. प्रतिस्पर्धा।

मुक़ाम (पुं.) 1. स्थान, 2. निवास-स्थान, 3. गंतव्य, पड़ाव।

मुकुट (पुं.) राजा का शिरो भूषण विशेष।

मुक्का (पुं.) 1. घूँसा, 2. मूठी; **~-मुक्की** मुक्कों की लड़ाई, मुक्केबाज़ी।

मुक्केबाजी (स्त्री.) घूँसों की लड़ाई, घूँसेबाज़ी।

मुक्ति (स्त्री.) दे. मुक्ती।

मुक्ती (स्त्री.) 1. छुटकारा, 2. मोक्ष।
मुक्ति (हि.)

मुक्याणा (क्रि. स.) मुक्कों से पिटाई करना।

मुख (पुं.) दे. मुँह।

मुखड़ा (पुं.) मुँह। **मुख** (हि.)

मुखतार (पुं.) दे. मुखत्यार।

मुखत्यार (पुं.) स्वामी, मालिक।
मुख़तार (हि.)

मुखबिर (पुं.) 1. जासूस, 2. वह अपराधी जो अपना अपराध स्वीकार करके सरकारी गवाह बन जाए।

मुखिया (पुं.) नेता, प्रधान, (दे. ठोळेदार)।

मुखेर (स्त्री.) 1. इच्छा से। उदा.–वै तीन्नूँ अपणै मुखेरे लीकड़गे। 1. दे. मुखेरणा। 2. दे. छींक्की।

मुखेरणा (पुं.) बैल के सिर पर लगाई जाने वाली फुंदनेनुमा माला।

मुख्य (वि.) बड़ा।

मुगदर (पुं.) 1. कसरत के समय उठाया जाने वाला भार, 2. भारी मोगरी का जोड़ा। **मुद्गर** (हि.)

मुगरवाणा (क्रि. स.) 1. मोगरी से छितवाना या पिटवाना, 2. तंग जूती को मोगरी डालकर खुलवाना, 3. मोकला करवाना। **मुगरवाना** (हि.)

मुगराणा (क्रि. स.) 1. मोगरी से पीटना, 2. मूँज को मोगरी से कूटना। **मुगराना** (हि.)

मुग़ल (पुं.) मुसलमानों का एक वंश।

मुगलाणी (स्त्री.) मुगल की पत्नी।

मुग़ालता (पुं.) भ्रम, धोखा।

मुग्ध (वि.) मोहित।

मुचणा (क्रि.) दे. मिचणा।

मुछैल (वि.) लंबी मूँछों वाला।

मुजरा (पुं.) 1. सलाम। अभिवादन। 2. एक नृत्य।

मुज़रिम (पुं.) दे. मुलज़िम।

मुज्झक (स्त्री.) 1. सवारी करने की क्रिया, 2. बच्चे को कमर या पैरों पर बैठा कर दोलायमान करने की क्रिया, (दे. झुझ्या); **~खाणा/लेणा** वाहन के पीछे लटककर या उसमें बैठकर सवारी का आनंद लेना, झूले खाना।

मुज्झ्या (स्त्री.) दे. मुज्झक।

मुझ (सर्व.) 'मैं' का वह रूप जो कर्ता और संबंध कारक को छोड़कर शेष कारकों में विभक्ति लगने से पहले बनता है, जैसे–मुझको।

मुझे (सर्व.) 'मैं' का वह रूप जो कर्म और संप्रदान कारक में बनता है (तुल. मन्नैं)।

मुटाई (स्त्री.) 1. मोटापे का भाव, 2. मोटापन। **मोटाई** (हि.)

मुटाप्पा (पुं.) मोटापा; **~आणा/चढणा** मोटा होना। **मोटापा** (हि.)

मुट्ठी (स्त्री.) दे. मूट्ठी।

मुठड़ी (स्त्री.) 1. मठड़ी के चूरे में मीठा मिलाकर बनाया गया लड्डू, 2. (दे. मठड़ी)।

मुठभेड़ (स्त्री.) भिडंत।

मुठिया (पुं.) वह उपकरण जिससे सूत फैलाने से पहले ताने को बाँधते हैं।

मुड़कै (क्रि. वि.) 1. पुनः, 2. लौटकर।

मुड़णा (क्रि. अ.) 1. बल खाना, टेढ़ा होना, 2. करवट बदलना, 3. दिशा बदलना, 4. वापिस लौटना, 5. मन भरना, जैसे–खाण तैं मुँह मुड़णा; **~-तुड़णा** टेढ़ा-मेढ़ा होना। **मुड़ना** (हि.)

मुड़ना (क्रि. अ.) दे. मुड़णा।

मुड़माँ (वि.) मुड़ा हुआ, घुमावदार। **मुड़वाँ** (हि.)

मुड्ढ (पुं.) दे. जड़ाब्बा।

मुड्ढा (पुं.) 1. सरकंडे आदि का बना बैठने का ऊँचा तथा गोल आसन, 2. सिर का चूँडा, 3. फ़सल (ईख, ज्वार आदि) काटने के बाद जड़ के ऊपर बचे डंठल, 4. स्कंध, कंधा; **~धरणा** लड़कियों के बाल कटवाना बंद करना जिससे वे उन्हें बढ़ाकर 'चूँडा' कराने योग्य हो सकें; **~राखणा** अगली फ़सल के लिए ईख की मूढ़ी रखना, (दे. बिजाळा)। **मूढ़ा** (हि.)

मुड्ढी (स्त्री.) 1. आसन, 2. अगली फ़सल के लिए रखी गई ईख की मूढ़ी या झूँडी। **मूढ़ी** (हि.)

मुतरणा (क्रि.) दे. जल का छींटा देना।

मुताणा (क्रि. स.) 1. हरा कर छोड़ना, 2. मुतवाने में सहायता करना; (पुं.) वृषभ या पशु का लिंग। **मुताना** (हि.)

मुतान (पुं.) दे. मुताणा।

मुताया (वि.) मूतने का इच्छुक; **~मरणा/ होणा** पेशाब करने की घनीभूत इच्छा होना।

मुतियन (पुं.) मोती का बहुवचन रूप।

मुतोरा (वि.) 1. जो अधिक पेशाब करता हो, 2. जो बिछौने में पेशाब करता हो, 3. डरपोक।

मुत्तैं (सर्व.) दे. मत्तैं।

मुथरा (स्त्री.) दे. मथरा।

मुथापड़ा (पुं.) गुड़ के कोहूलू का एक भाग विशेष।

मुद्गर (पुं.) दे. मुगदर।

मुद्गल (पुं.) 1. ब्राह्मणों का एक गोत्र, 2. एक ऋषि, 3. अग्रवाल वैश्यों का एक गोत्र जिनका संबंध मौद्गल्य (मधुकुल मुनि), ऋग्वेद, शाकिल शाखा और आश्वलायन सूत्र से है, इनका प्रवर मांकील है। **मुद्गिल** (हि.)

मुद्गिल (पुं.) दे. मुद्गल।

मुद्दत (स्त्री.) 1. बहुत दिन, अरसा, 2. अवधि।

मुद्रा (स्त्री.) 1. रुपया-पैसा, सिक्का, 2. अँगूठी, 3. (दे. मुँदरा)।

मुनसफ (पुं.) न्यायाधीश।

मुनादी (स्त्री.) 1. दे. रेळ, 2. दे. ढिंढोरा।

मुनाफ़ा (पुं.) लाभ।

मुनासिब (वि.) उचित।

मुन्ना (पुं.) 1. शिशु, छोटा बच्चा, 2. हल के ऊपर का भाग, 3. अँगीठी, चूल्हे आदि पर बनी चोंच।

मुफत (वि.) बिना पैसे खर्च किए; **~मैं** 1. व्यर्थ में, 2. बिना मूल्य के। **मुफ्त** (हि.)

मुफतखोरा (वि.) बिना परिश्रम के खाने वाला। **मुफ्तखोर** (हि.)

मुफती (वि.) मुफ्त का, बिना पैसा खर्चे। **मुफ्ती** (हि.)

मुफलर (पुं.) ऊन का दुपट्टा जो सिर पर या गले में डाला जाता है, गुलूबंद। **मफ़लर** (हि.)

मुफ्त (वि.) दे. मुफत।

मुफ्तखोर (वि.) दे. मुफतखोरा।

मुबारक (वि.) शुभ, मंगल; (स्त्री.) बधाई।

मुबारकबाद (स्त्री.) बधाई।

मुमकिन (वि.) संभव।

मुरंडा (पुं.) भुनी मकई की खील का लड्डू।

मुरकी (स्त्री.) कान का बालीनुमा आभूषण (जिन्हें कुछ पुरुष भी धारण करते हैं)।

मुरगा (पुं.) कलगीदार पक्षी जो लंबी बाँग देता है; (वि.) कामुक; **~छुडवाणा** माता की मढ़ी पर गाँव के भंगी द्वारा बच्चे के सिर पर मुर्गा घुमवाना (यह प्रथा बलि का सुधरा हुआ रूप जान पड़ती है, भंगी इस कृत्य के लिए यजमान से टका, दो टका मूल्य लेता है); **~बोल्लण का बखत** भोर का समय; **~होणा** हाथों को पैर के नीचे से निकाल कर विशेष मुद्रा में कान पकड़ना। **मुर्गा** (हि.)

मुरगाई (स्त्री.) एक प्रसिद्ध जलपक्षी; **~-सी चाल** आकर्षक चाल। **मुर्ग़ाबी** (हि.)

मुरगाब्बी (स्त्री.) 1. पंजाबी जूती, 2. (दे. मुरगाई)। **मुरग़ाबी** (हि.)

मुरगामटा (पुं.) 1. रजाई, चद्दर या अन्य वस्त्र का मुँह पर लगाया गया फेंटा, 2. किसी वस्त्र से आधा या पूरा मुँह ढकने की अवस्था–जाड्डा लाग्गै सै तै मुरगामटा मार कै सो ज्या; **~तारणा** 1. मुँह से वस्त्र हटाना; 2. लज्जारहित होना या करना; **~मारणा** 1. वस्त्र से मुँह ढाँपना, 2. स्वार्थ-सिद्धि करना; **~मैं देणा** 1. छिपाना, 2. क़ाबू में करना।

मुरझाना (क्रि. अ.) दे. मुरझ्याणा।

मुरझ्याणा (क्रि. अ.) 1. मलिन या क्लांत होना, 2. पौधे का सूखना। **मुरझाना** (हि.)

मुरड़ (पुं.) सरसों के दीये की बाती के आगे आने वाला फूल या अधजला रूई का भाग, (दे. मुराड़)।

मुरत (स्त्री.) 1. चित्र, 2. मूर्ति (धातु, पत्थर आदि की), 3. बिना हिले-डुले बैठने की अवस्था, निस्पंद अवस्था, 4. शरीर; (वि.) सुंदर, मूर्ति के समान सुंदर; **~काढ़णा/खींचणा/तारणा** 1. चित्रित करना, चित्र बनाना, 2. नकल उतारना, हू-बहू चित्र बनाना, **~बणाणा** मूर्ति गढ़ना; **~-सी** 1. सुंदर, 2. मूर्ति के समान। **मूर्ति** (हि.)

मुरब्बा[1] (पुं.) चाशनी में तैयार किया हुआ आँवला आदि का पाक; **~खाणा** स्वादिष्ट चीज़ खाना।

मुरब्बा[2] (पुं.) 1. वर्गाकार खेत, 2. सरकार की चापलूसी या विशेष सेवा करने के उपलक्ष में मिली भूमि; **~बकसणा** ज़मीन-ज़ायदाद दान देना।

मुरब्बी (पुं.) स्वामी, मालिक; **~बणणा** ज़िम्मेदारी लेना।

मुरली (स्त्री.) 1. दे. बाँसळी, 2. (दे. पुरळी)।

मुरसल (स्त्री.) बिना मुँह का मोटा और कठोर फोड़ा (जो अधिकांशत: बगल या कनपटी पर निकलता है), (दे. चिल्होड़ी)।

मुरसा (वि.) जड़ाऊ, जटित।

मुरहटण (स्त्री.) दे. मरहटण।

मुराड़ (वि.) 1. काले रंग का, कोयले **जैसे** रंग का, 2. दीपक की बाती का जला हुआ अग्र-भाग, 3. कंजूस व्यापारी, 4. निर्दयी; **~बाणियाँ** कंजूस बनिया।

मुराद (स्त्री.) 1. अभिलाषा, कामना, 2. आशय, अभिप्राय।

मुरारी (पुं.) मुरारि, श्रीकृष्ण।

मुराळ (पुं.) हंस। मराल।

मुरीद (पुं.) 1. शिष्य, 2. अनुयायी।

मुर्दनी (स्त्री.) 1. मुख पर प्रकट होने वाले मृत्यु-चिह्न, 2. मुँह मुरझाने का भाव।

मुर्दा (पुं.) दे. ल्हास।

मुर्दार (पुं.) मुर्दा।

मुर्रा (स्त्री.) दे. कुन्ही।

मुलक (पुं.) 1. देश, 2. संसार; **~कट्ठा होणा** बहुत भीड़ जुड़ना। **मुल्क** (हि.)

मुलकणा (क्रि.) मन ही मन प्रसन्न होना।

मुलज़िम (पुं.) अपराधी। **मुज़रिम** (हि.)

मुळणा (क्रि. अ.) 1. टूटना, खंडित होना, 2. चूड़ी टूटने के लिए प्रयुक्त शब्द; **चूड़ी~** विधवा होना। **मुलना** (हि.)

मुलतान्नी (स्त्री.) 1. मुलतानी मिट्टी जो चिकनी और पीली होती है तथा तख्ती पोतने या सिर धोने आदि के काम आती है, 2. मुलतान की भाषा, 3. मुलतान देश का निवासी; (वि.) मुलतान से संबंधित; **~माट्टी** चिकनी मिट्टी विशेष। **मुलतानी** (हि.)

मुळवाणा (क्रि. स.) 1. पुरानी टूम (आभूषण) फिर से बनवाना, 2. तुड़वाना। **मुलवाना** (हि.)

मुलाकात (स्त्री.) 1. भेंट, 2. मेल-मिलाप।

मुलाकाती (पुं.) परिचित।

मुलाज़िम (पुं.) नौकर।

मुलाम (वि.) मुलायम।

मुलाम्मीं (स्त्री.) 1. नर्मी, 2. नम्रता। **मुलायमी** (हि.)

मुलायम (वि.) कोमल, नाजुक।

मुलाहज़ा (स्त्री.) 1. रियाअत, 2. लिहाज़, शर्म।

मुलेठी (स्त्री.) दे. मळहठी।

मुल्की लाट (पुं.) 1. बड़े से बड़ा अधिकारी, 2. सम्राट, लॉर्ड आफ दी वर्ल्ड।

मुल्ला (पुं.) 1. दाढ़ी वाला मुसलमान, 2. मस्ज़िद का पुजारी; (वि.) कट्टर पंथी।

मुल्हाजा (पुं.) दे. मुलाहज़ा।

मुश्किल (स्त्री.) दे. मुसकल।

मुश्ताक (वि.) अभिलाषी। इच्छुक।

मुसंड (वि.) 1. मस्त, 2. बदमाश, दुश्चरित्र, 3. गहरे काले रंग का (व्यक्ति)। **मुस्टंडा** (हि.)

मुंस (पुं.) 1. शरीर के किसी भाग पर उभरी हुई मांस की ग्रंथि (जो अशुद्धता का प्रतीक मानी जाती हैं), 2. 'तिल' का विलोम।

मुसकल (स्त्री.) 1. कठिनाई, 2. संकट; (वि.) कठिन। **मुश्किल** (हि.)

मुसकान (स्त्री.) मुस्कराहट।

मुसकाना (क्रि. अ.) मुस्कराना, मंद-मंद हास करना।

मुसकी (स्त्री.) मुस्कराहट।

मुसणा (क्रि. अ.) 1. कोमल वस्तु का टेढ़ा-मेढ़ा होना, 2. कपड़े में सलवटें पड़ना, 3. पैर में मोच आना; (वि.) जो शीघ्र मुसे, (दे. बुचणा)। **मुसना** (हि.)

मुसद्द (पुं.) दे. मसद्द।

मुसद्दी (वि.) मस्त।

मुसना (क्रि. अ.) दे. मुसणा।

मुसलमान (पुं.) मुस्लिम धर्म को मानने वाला (जो ख़तना करवाए, चोटी नहीं रखे तथा नमाज़ पढ़े); (वि.) 1. धोती की लाँग नहीं टाँगने वाला, तहमद बाँधने वाला, 2. खाद्य-अखाद्य का भेद नहीं बरतने वाला।

मुसलमान्नी (स्त्री.) 1. मुसलमान की पत्नी, 2. ख़तना; (वि.) मुसलमान से संबंधित। **मुसलमानी** (हि.)

मुसाफिर (पुं.) यात्री।

मुसाफ़िरख़ाना (पुं.) रेल या गाड़ी आदि की यात्रा करने वालों के लिए बनाया गया विश्राम-गृह, प्रतीक्षालय।

मुसीबत (स्त्री.) कठिनाई, आपत्ति।

मुसेरा (वि.) मौसेरा।

मुस्टंडा (वि.) दे. मसटंडा।

मुस्तक़िल (वि.) स्थायी।

मुहब्बत (स्त्री.) 1. प्रेम, 2. इश्क।

मुहम्मद (पुं.) मुसलमान धर्म के प्रवर्तक।

मुहर्रम (पुं.) अरबी वर्ष का पहला महीना (जिसमें इमाम हुसैन शहीद हुए थे, यह महीना शोक का माना जाता है)।

मुहारा (पुं.) 1. अभ्यास, आदत, 2. (दे. मुहावरा)। **मुहावरा** (हि.)

मुहारी (स्त्री.) इच्छा। स्वेच्छा। उदा. आप मुहारी हो रही (लचं)

मुहाल (वि.) 1. दुष्कर, 2. नामुमकिन।

मुहावरा (पुं.) लोक-प्रसिद्ध वाक्यांश जिसका अर्थ प्रत्यक्ष न होकर लाक्षणिक होता है (दे. कहबत)।

मुहूर्त (पुं.) 1. ज्योतिष के अनुसार निकाला हुआ शुभ समय, 2. दिन-रात का तीसवाँ भाग।

मूँ (पुं.) मुँह।

मूँक्का (पुं.) दे. मुक्का।

मूँग (स्त्री.) ख़रीफ की फ़सल की एक प्रसिद्ध हरे रंग की दाल जो सुपाच्य होती है; **~दळणा (छात्ती पै)** शत्रु-पक्ष को चिढ़ाना।

मूँगफली (स्त्री.) दे. मूँमफळी।

मूँगा (पुं.) समुद्र में मिलने वाले एक कृमि की ठठरी, प्रवाल, विद्रुम।

मूँगिया (वि.) मूँग के समान हरे रंग का; (पुं.) हरा रंग विशेष।

मूँछ (स्त्री.) ऊपरी ओंठ के ऊपर उगे बाल; **~नीच्ची होणा** घमंड चूर होना; **~पाड़णा** अपमानित करना, घमंड चूर करना।

मूँछणा (क्रि. स.) 1. पेड़ की टहनी, पत्ते आदि की काँट-छाँट करना, मुंचित करना, 2. चट करना—टीड्डी सारे सिमाणै नैं मूँछगी।

मूँछल (वि.) दे. मुछैल।

मूँज (स्त्री.) एक प्रकार की लंबी-ऊँची-नुकीली घास (झूँड) जो रेतीली भूमि में उगती है और जिसे कूटकर रस्सी बाँट ली जाती है।

मूँजी (वि.) दे. मूँज्जी।

मूँज्जी (वि.) कंजूस। **मूँजी** (हि.)

मूँज्जी धान (पुं.) पौध द्वारा बोया गया धान।

मूँट्ठी (स्त्री.) 1. अंगुलियों को मोड़कर बनी हाथ की मुद्रा, मुष्टि, 2. थकान दूर करने के लिए (हाथ से) पैरों को दबवाने की क्रिया, 3. एक नाप विशेष, 4. हस्त-मैथुन; (वि.) मुट्ठी-भर; **~भरणा** पैर दबाना; **~मारणा** 1. मुष्टि-प्रहार करना, 2. हस्त-मैथुन करना। **मुंट्ठी** (हि.)

मूँठ (स्त्री.) औज़ार का दस्ता।

मूँठी (स्त्री.) दे. मूँट्ठी।

मूँड (पुं.) 1. मुख, 2. सिर, 3. बुद्धि; (क्रि. स.) 'मूँडणा' क्रिया का आदे. रूप; **~मारणा** 1. सिर खपाना, 2. क्रोध में आकर कोई वस्तु लौटाना या सौंपना, 3. पशु द्वारा चारे में मुँह मारना, 4. मुंड-मर्दन करना। **मुंड** (हि.)

मूँडणा (क्रि. स.) 1. सिर पर उस्तरा फेरना, 2. घाटा पहुँचाना, 3. चेला बनाना, 4. अपने पक्ष का करना, 5. पेड़ों को झाँगना या छँटाई करना, 6. नष्ट-भ्रष्ट करना; (वि.) मूँडने में कुशल। **मूँडना** (हि.)

मूँडना (क्रि. स.) दे. मूँडणा।

मूँडा (वि.) बिना सींग वाला।

मूँड्डी (स्त्री.) 1. थूथनी, 2. मुँह; (क्रि. स.) 'मूँडणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~रगड़णा** 1. थूथनी रगड़ना, नाक रगड़ना, 2. घमंड चूर करना। **मूँडी** (हि.)

मूँढ (पुं.) झाड़ा।

मूँण (स्त्री.) 1. बहुत बड़े आकार का मटका, (दे. गोळ²), 2. कस्सी का पृष्ठ भाग।

मूँत (पुं.) मूत्र; (क्रि. अ.) 'मूतणा' क्रिया का प्रे. रूप। **मूत** (हि.)

मूँद[1] (स्त्री.) कुल्हाड़े आदि का बीटा या मूठ; (क्रि. स.) 'मूँदणा' क्रिया का आदे. रूप।

मूँद[2] (स्त्री.) छिद्र।

मूँदड़ी (स्त्री.) दे. मुंदरी।

मूँदणा (क्रि. स.) 1. बंद करना, 2. कुल्हाड़ी के बीटे से कूटना। **मूँदना** (हि.)

मूँदना (क्रि. स.) दे. मूँदणा।

मूँद्धा (वि.) औंधा, उलटा; **~करणा/मारणा**1. उलटाना, औंधा करना, 2. अपशकुन करना, 3. मुँह के बल गिराना; **~(-धै) घड़ै पाणी भरणा** 1. असाधारण कार्य करना, 2. दासता करना; **~माणस** उल्टी बुद्धि का व्यक्ति।

मूँदा (वि.) दे. मूँद्धा।

मूँमफळी (स्त्री.) 1. छिलके से निकलने वाली गिरी विशेष जिसका तेल भी निकाला जाता है, 2. मूँगफली का क्षुप। **मूँगफली** (हि.)

मूँस (स्त्री.) धातु पिघलाने की कटोरी।

मूँह (पुं.) दे. मुँह।

मूँह का छाज (पुं.) दे. घूँघट।

मूँहढा (पुं.) दे. मुँहढा।

मूकाण (स्त्री.) दे. मुँहकाण।

मूच्छल (वि.) लंबी मूँछों वाला (तुल. मुछैल)।

मूद्ठी-चाप्पी (स्त्री.) दे. लल्लो चप्पो।

मूठ (पुं.) मारण मंत्र। तुल. चौकी।

मूठया (पुं.) दे. मूठिया।

मूठिया (पुं.) कोल्हू में गन्ने लगाने वाला; **~(-याँ) माँस चढणा** मुट्ठीभर मांस चढ़ना, अधिक मांसल होना।

मूड़ (स्त्री.) जड़, जैसे–जड़ामूड़ (जड़-मूल)। **मूल** (हि.)

मूड्ढा (पुं.) 1. मूढ़ा, (दे. मुड्ढा), 2. कंधा।

मूड्ढी (स्त्री.) छोटा मूढ़ा, (दे. मुड्ढी)।

मूढ (वि.) मूर्ख।

मूतणा (क्रि. अ.) मूत्र विसर्जन करना, पेशाब करना; (वि.) जो समय- असमय अधिक मूत्र-विसर्जन करे।

मूतना (क्रि. स.) दे. मूतणा।

मूत्तर (पुं.) दे. मूत।

मूत्र (पुं.) दे. मूँत।

मूद्धा (पुं.) दे. मूँद्धा।

मूरख (वि.) जड़-बुद्धि। मूर्ख (हिं.)

मूरछा (स्त्री.) मूर्च्छा, बेहोश या अचेत होने का भाव, बेहोशी।

मूरत (स्त्री.) दे. मुरत।

मूरती (स्त्री.) 1. पत्थर की मूर्ति, 2. मंदिर की मूर्ति जिसकी आस्तिक हिंदू श्रद्धापूर्वक पूजा करते हैं; **~-पूज्जा** मूर्ति-पूजा, मूर्ति को प्राणवान समझ कर पूजने का भाव। **मूर्ति** (हि.)

मूर्ख (वि.) दे. मूरख।

मूर्च्छा (स्त्री.) दे. मूरछा।

मूर्ति (स्त्री.) दे. मूरती।

मूर्ति-पूजा (स्त्री.) मूर्ति को देववत् पूजने का भाव।

मूल (स्त्री.) दे. मूळ।

मूळ (स्त्री.) 1. मोटी मूली, 2. जड़; (पुं.) 1. एक नक्षत्र, 2. आरंभ, 3. असल धन; (क्रि. वि.) हरगिज़–वो मूळ भी नाँ जा; **~की लाट** मोटा मूसल (मूसल-लष्टिका)। **मूल** (हि.)

मूलधन (पुं.) 1. वह पूँजी जो व्यापार में लगाई जाए, पूँजी, 2. असल धन।

मूळा[1] (पुं.) मुसलमान, मेवात क्षेत्र का मुसलमान; (वि.) मोटी मूली।

मूळा[2] (वि.) दे. मूलिया।

मूळा जाट (पुं.) मुसलमान जाट (दे. मेव)।

मूळिया (वि.) मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला (बालक)।

मूली (स्त्री.) दे. मूळी।

मूळी[1] (स्त्री.) एक सब्ज़ी जिसके पत्तों की भुजिया भी बनती है; **~-गाज्जर** सामान्य वस्तु; **~~की तराँ काटणा** निर्दयता से हत्या करना; **~हल्लैं सैं, घर के सोवैं सैं** बच्चों द्वारा खेला जाने वाला खेल जिसमें वे स्वयं गाजर-मूली बनने का अभिनय करते हैं। **मूली** (हि.)

मूळी[2] (पुं.) दे. मूळा।[1,2]

मूल्य (पुं.) दे. मोल।

मूवा (वि.) भाग्यहीन। मंद भाग्य।

मूसल (पुं.) दे. मुस्सळ।

मूसला (पुं.) दे. मूसळा।

मूसळा (पुं.) 1. मूसल, 2. थकान या आघात के कारण हुआ कठोर मांस; (वि.) मूसल के समान, जैसे–मूसळा जड़; **~चढणा** थकान या आघात के कारण माँस का कठोर होना; **~जड़** भूमि के अंदर रहने वाली एक प्रकार की मोटी जड़। **मूसला** (हि.)

मूसळाणा (क्रि. स.) 1. मूसल से पीटना, 2. मूसल मारना। **मूसलाना** (हि.)

मूसळी (स्त्री.) छोटा मूसल।

मूसा[1] (पुं.) दे. मूस्सा।

मूसा[2] (पुं.) यहूदियों का एक पैगंबर।

मूसा वाहन (पुं.) गणेश।

मूस्सळ (पुं.) 1. बाजरा आदि कूटने के काम आने वाला मोटा और भारी डंडा जिसके दोनों किनारों पर लोहे के छल्ले (स्याम) जड़ दिए जाते हैं, 2. लड़ाई का एक आयुध; **~-सा** मोटा-ताज़ा; **~ ~मारणा** कठोर भाषा बोलना। **मूसल** (हि.)

मूस्सळ-कळेवा (पुं) प्रातःकाल का कलेवा, (दे. कँवर-कळेवा)।

मूस्सा (पुं.) चूहा; **जाहवा~** दे. जाहवा मूस्सा। **मूसा** (हि.)

मृग (पुं.) दे. मिरग।

मृगछाला (स्त्री.) दे. मिरगछाल्ला।

मृगी (स्त्री.) मिरघी[1]।

मृतक (पुं.) मरा हुआ प्राणी।

मृत्यु (स्त्री.) दे. मिरतू।

मृत्युलोक (पुं.) यमलोक, वह लोक जहाँ जीव मरने के बाद जाता है।

में (अव्य.) दे. मै[1]।

मेंढी (स्त्री.) दे. मींह्ढी।

मेंस्सी (वि.) दे. मिस्सी[1]।

मेंह (अव्य.) में, (दे. मैं[1]); (पुं.) दे. मींह।

मेंह्धा (पुं.) 1. अधिक रचने वाली मेंहदी, 1. विवाह का एक गीत; **~गाणा** मेंहदी का गीत विशेष गाना। **मेंहदा** (हि.)

मेंह्धी (स्त्री.) एक पौधा जिसके पत्तों का चूर्ण हाथ-पैर पर रचाने के काम आता है (यह मांगलिक वस्तु मानी जाती है); **~रचाणा** 1. विशेष उत्सवों पर हाथ-पैरों में मेंहदी लगाना, 2. खुशियाँ मनाना। **मेंहदी** (हि.)

मेक्खी चाँद (पुं.) अधिक चमकीला चाँद।

मेख (पुं.) 1. मेष। दे. मींड्ढा। 2. कील।

मेखला (स्त्री.) 1. करधनी, तगड़ी, (दे. तागड़ी), 2. नाथपंथी साधुओं द्वारा कमर में बाँधी जाने वाली रस्सी।

मेखी (स्त्री.) दे. चोप।

मेघ (पुं.) दे. बाद्दळ।

मेघनाथ (पुं.) रावण का पुत्र जिसका वध लक्ष्मण ने किया। **मेघनाद** (हि.)

मेघ मल्हार (पुं.) वर्षा-काल का विशेष गीत। **मेघ मलार** (हि.)

मेज (पुं.) पाटा, वह भारी चपटी लकड़ी जो हल जोतने के बाद मोटे ढेले फोड़ने या नमीं दबाने के लिए (बैलों की सहायता से) खेत पर फेर दी जाती है; (स्त्री.) पढ़ने-लिखने की ऊँची चौकी; (क्रि. स.) 'मेजणा' क्रिया का आदे. रूप; **~फेरणा/ मारणा** 1. खेत पर पाटा मारना, 2. किए पर पानी फेरना।

मेजड़ी (स्त्री.) छोटी मेज, (दे. मेज)।

मेजणा (क्रि. स.) खेत में मेज या पाटा मारना।

मेज़बान (पुं.) आतिथ्य-सत्कार करने वाला।

मेटणा (क्रि. स.) 1. पोंछना, 2. (दे. मिटाणा)। **मिटाना** (हि.)

मेड़तगढ़ (पुं.) दे. मिड़त।

मेड्ढा (पुं.) 1. मोटी जड़, 2. मोटा तना; **~घालणा** फुटाई के बाद ईख आदि के पौधे का भारी होना; **~बैठणा** तने का भारी होना; **~होणा** तना भारी होना।

मेड्ढी (वि.) दे. बींडिया; (स्त्री.) 1. हल्का तना, 2. हल्की जड़।

मेढ[1] (स्त्री.) 'गाहटे' (दे. गाहटा) की बीच की लकड़ी जिसके चारों ओर पशु चक्कर लगाते हैं।

मेढ[2] (पुं.) वृद्ध। दे. बूढला। तुल. मोदी।

मेढ़क (पुं.) दे. मींड्डक।

मेढ़ा (पुं.) दे. मींह्ढा।

मेढिया (स्त्री.) 1. मेढ़ के साथ जुड़ा बैल, 2. (दे. बींडिया)।

मेत्था (पुं.) 1. एक हरा चारा, एक प्रकार की घास, 2. मोटी और बड़ी मेथी। **मेथा** (हि.)

मेत्थी (स्त्री.) 1. एक हरा साग जिसके पत्ते भोजन में कई प्रकार से खाए जाते हैं, 2. मेथी का बीज (जिसके लड्डू भी बनाए जाते हैं); **कसूरी~** एक सुगंधित मेथी। **मेथी** (हि.)

मेथी (स्त्री.) दे. मेत्थी।

मेमना (पुं.) भेड़-बकरी का शावक।

मेर (स्त्री.) 1. ममता, 2. हिमायत, 3. पक्षपात; **~आणा** 1. अहम् भाव होना, 2. अपनेपन का भाव जाग्रत होना, 3. प्यार उमड़ना; **~कटाणा/ करणा** पक्ष लेना, (दे. होड कटाणा); **~होणा** स्वामित्व जतलाना।

मेर-तेर (स्त्री.) 1. पक्षपात करने का भाव, अपने पराएपन का भाव, 2. मोह-माया; **~करणा** पक्षपातपूर्ण व्यवहार करना।

मेरला (सर्व.) 1. मेरा, मेरे वाला, 2. 'तेरला' का विलोम।

मेरा (सर्व.) सर्वनाम (उ. पु.) 'मैं' सर्वनाम का संबंध कारक का रूप; **~-तेरा** 1. अपने-पराएपन का भाव, 2. सांसारिक मोह-ममता; **~ ~बरतणा** भेदभाव करना।

मेरी (सर्व.) सर्वनाम (उ. पु.) 'मेरा' का स्त्रीलिं. बोधक रूप; **~तेरी** अपनी-पराई; **~कहणा** इधर की बात उधर कहना।

मेरे (सर्व.) 1. सर्वनाम (उ. पु.) 'मैं' का संबंध कारक का रूप, 2. मेरे यहाँ; **~-तेरे** अपने पराए; **~ ~करणा** भेद उत्पन्न करना; **~लेक्खै** मेरी ओर से, मेरी बला से; **~-ताँही** मुझे, मेरे लिए,

सर्वनाम (उ. पु.) 'मैं' का संप्रदान कारक का रूप; ~-**तैं** मुझसे, सर्वनाम (उ. पु.) 'मैं' का करण और अपादान कारक एकवचन का रूप; ~-**पै** मेरे पास, (दे. मेरे मैंह); ~-**मैंह** सर्वनाम (उ. पुं.) 'मैं' का अधिकरण कारक का रूप; ~-**सेत्ती** मुझसे सर्वनाम (उ. पु.) 'मैं' का करण कारक एकवचन का रूप।

मेल (पुं.) दे. मेळ[2]।

मेळ[1] (स्त्री.) लड़के के विवाह के समय बरात चढ़ने से पूर्व दिया जाने वाला सामूहिक भोज (इसमें सारे गाँव के तथा आस-पास के गाँव के लोग भी सामर्थ्य के अनुसार सम्मिलित कर लिए जाते हैं, कच्ची मेळ में दाल-चावल तथा पक्की मेळ में मुख्य रूप से लड्डू होते हैं); ~-**माँढा** 1. मेल, 2. विवाह-शादी। **मेल** (हि.)

मेळ[2] (पुं.) 1. प्यार, 2. विचार साम्यता का भाव, 3. दोस्ती, 4. जान-पहचान, 5. प्रकार, भाँति–दुनियाँ मैं कई मेळ के आदमी सैं, 6. रस्सी मेळने या बाँटने की क्रिया, 7. बराबरी या टक्कर का व्यक्ति–अपणी मेळ के तैं भिड़, 8. सुलह, एकता, 9. संगति, 10. मिश्रण, मिलावट, 11. संयोग; मिलन का संयोग; (क्रि. अ.) 'मेळणा' क्रिया का आदे. रूप; ~**बठाणा/मिलाणा** 1. जोड़ी मिलाना, 2. संगति बैठाना; ~-**मेळ के** अनेक प्रकार के। **मेल** (हि.)

मेळ-जोळ (पुं.) मेल-जोल, मेल-मिलाप।

मेळणा (क्रि. स.) 1. रस्सी बाँटना, 2. बाँटी हुई रस्सी को मोटा करने के लिए फिर से बाँटना। **मेलना** (हि.)

मेला (पुं.) दे. मेळा।

मेळा (पुं.) 1. विशेष उत्सव मनाने के लिए लगी भीड़, 2. भीड़, 3. खेल- तमाशा; ~**भरणा** 1. मेला लगना, 2. भीड़ होना। **मेला** (हि.)

मेळा (वि.) मेल-मिलाप का; (क्रि. स.) 'मेळणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

मेव (पुं.) गुड़गाँवा जिले का मुसलमान, मूळा जाट, गुड़गाँवा जिले के वे मुसलमान जो पहले जाट थे किंतु यवन आक्रमण के समय मुसलमान बने (इनके कुछ रिवाज़ आज भी हिंदुओं से मिलते हैं, चिरकलोट और डहंगल इनकी उप-जातियाँ हैं)।

मेवणी (स्त्री.) 1. मेव की पत्नी, 2. मेव जाति की महिला।

मेवा (स्त्री.) 1. सूखे फल, जैसे–बादाम, किशमिश आदि, 2. दुर्लभ खाद्य- पदार्थ, 3. धन-दौलत; ~**लूटणा** 1. धन कमाना, 2. आनंद लूटना, सुख- समृद्धि से रहना; ~**पाणा** आनंद भोगना।

मेवाड़ (पुं.) राजस्थान का एक प्रसिद्ध क्षेत्र।

मेवाड़ी (वि.) मेवाड़ से संबंधित।

मेवात (पुं.) गुड़गाँवें का वह क्षेत्र जहाँ अधिकांशतः मेव जाति के लोग रहते हैं, 'जटात' से लगा क्षेत्र (काठैड़, आरेज आदि इनकी 16 खापें हैं)।

मेवाती (स्त्री.) मेवात क्षेत्र की बोली, बीघौती; (वि.) 1. मेवाती, 2. मेवात से संबंधित।

मेसूपाक (स्त्री.) मिस्सूपाक। एक प्रकार की मिठाई।

मेस्सान (पुं.) मिश्रण। 1. दे. मिस्सी 2. दे. मेंस्सी।

मेस्सी (स्त्री.) दांतों को चमकाने वाला अंजन।

मेहतर (पुं.) दे. चूहड़ा।

मेहनताना (पुं.) पारिश्रमिक।

मेहनती (वि.) परिश्रमी, (दे. मिहीनती)।

मेहमान (पुं.) अतिथि, (दे. बटेऊ)।

मेहर (स्त्री.) दे. म्हेर।

मेहरबान (वि.) कृपालु।

मेहेरी (स्त्री.) दे. राबड़ी।

मैं[1] (अव्य.) अधिकरण कारक का चिह्न (हरियाणवी में 'मैं' का उच्चारण 'मैं' के समान ही है)। **में** (हि.)

मैं[2] (सर्व.) स्वयं, अपने आप; **~जाणूँ मेरा राम जाणै** (अनभिज्ञता की) सौगंध।

मैं[3] (स्त्री.) 1. अहंकार, 2. बकरी की बोली; **~आणा/होणा** अहंकार होना; **~मारणा** अहंकार का दमन करना; **~-मैं करणा** अभिमान करना; **~-मैं तू-तू** कहा-सुनी; **~मैं रहणा** अहंकार में रहना, ऐंठ में रहना; **~लीकड़णा** गर्व चूर होना।

मैंग (स्त्री.) दे. मींगण।

मैंडा (पुं.) दे. माँढा।

मैंधी (स्त्री.) मेंहदी।

मैंम (स्त्री.) अंग्रेज़ की पत्नी; (वि.) गोरे रंग की (स्त्री)। **मेम** (हि.)

मैंस (स्त्री.) दे. भैंस।

मैंह (क्रि. वि.) 1. में, की ओर, जैसे–तेरे मैंह नैं मेरे पइसे आवैं सैं, 2. अंदर, मध्य–क्यूँ मैंह बड़्या आवै सै ?; (पुं.) दे. मींह।

मैंह्धा (पुं.) अधिक रचने वाली मेंहदी।

मैंह्स (स्त्री.) 1. दे. भैंस, 2. दे. म्हैंस।

मैज (पुं.) दे. मेज।

मैड़[1] (स्त्री.) मढ़ी, मृतक की समाधि पर बनी मढ़ी।

मैड़[2] (स्त्री.) ज़िद, हठ; **~लेणा** हठ पकड़ना।

मैड़[3] (स्त्री.) (सूखी लकड़ी आदि) टूटने से उत्पन्न ध्वनि; **~-मैड़ तोड़णा** भड़ाके की ध्वनि के साथ तोड़ना।

मैड़छा (पुं.) दे. पैड़छा।

मैड़ा[1] (पुं.) 1. धार्मिक पद, देवी-देवता की मढ़ी की स्तुति के गीत, 2. उभरा हुआ टीला या भूमि; **~गाणा** स्थानीय देवी-देवता की स्तुति के गीत गाना।

मैड़ा[2] (पुं.) हठ; **~लाणा** हठ पर उतारू होना।

मैड़ी (स्त्री.) 1. दे. मढी, 2. दे. पैड़ी।

मैड़िया (वि.) मेढ़ की लकड़ी के साथ जुता बैल, (दे. बींडिया)।

मैथिल (पुं.) गौड़ ब्राह्मणों को एक वर्ग, पंच गौड़ों में से एक वर्ग।

मैदा (स्त्री.) दे. मैद्दा।

मैदान (पुं.) दे. मदान।

मैदानण मात्ता (स्त्री.) खुले मैदान में स्थापित माता की मढ़ी।

मैद्दा (स्त्री.) महीन आटा; (पुं.) आमाशय। **मैदा/मेदा** (हि.)

मैना (स्त्री.) दे. मैन्ना।

मैन्ना (स्त्री.) एक प्रसिद्ध पक्षी; (वि.) चतुर। **मैना** (हि.)

मैल (पुं) 1. दूषण, गंदगी, 2. पाप, जैसे–मन का मैल, 3. शरीर से निकलने वाली गंदगी, 4. दोष; **~कटणा** 1. गदंगी दूर होना, 2. पेट की गंदगी निकलना, 3. पाप से छुटकारा मिलना, 4. वस्त्र साफ़ धुलना; **~चढणा** 1. दूषण या गंदगी चढ़ना, 2. आत्मा मैली होना; **~धोणा** पाप दूर करना; **~होणा** मन में पाप होना।

मैलखोरा (वि.) जल्दी मैला न होने वाला वस्त्र; (पुं.) मैल उतारने का एक उपकरण। दे. झाम्मा[2]।

मैलवाल़ (पुं.) कान का मैल निकालने वाला।

मैला (वि.) दे. मैल्ला।

मैल्ला (वि.) 1. मलिन, दूषित, 2. जिसका मन मलिन हो; (पुं.) विष्ठा; **~भेस** दीन-हीन अवस्था। **मैला** (हि.)

मैल्ली (वि.) गंदी, मलिन; (स्त्री.) वह गंदगी जो रस उबालते समय चाशनी से उतारी जाती है; **~काटणा** लाग डाल कर चाशनी से मैल निकालना; **~तारणा** चाशनी की गंदगी उतारना। **मैली** (हि.)

मैसी (स्त्री.) दाँतों को चमकाने के लिए प्रयुक्त एक द्रव।

मैहवट (स्त्री.) दे. माहवट।

मोंक्का (पुं.) अवसर, सुअवसर; **~(-क्के)-मोंक्के की बात** समय-समय की बात; **~लाणा** ताक लगाना; **~(क्कै) सिर** उचित समय पर; ~ **~की बात** उचित अवसर की बात। **मौक़ा** (हि.)

मोंक्खा (पुं.) 1. धुएँ तथा प्रकाश के लिए दीवार या छत में बना छोटा छिद्र, छिद्र, 2. झाँकी, रोशनदान, 3. नहर की छोटी मोरी, 4. बिल, (दे. घट्टू); **~काढणा/ छोडणा/ बणाणा** छिद्र बनाना। **मौखा** (हि.)

मोंत (स्त्री.) मृत्यु, मौत।

मोंसणा (क्रि. स.) 1. किसी वस्तु को मोड़ना-तोड़ना, 2. सलवटें डालना, 3. मन मसोसना, (दे. मुसणा); **~-तोसणा** मरोड़ना-तरोड़ना; **मन~** इच्छा का दमन करना। **मोसना** (हि.)

मोंस्सा (पुं.) 1. मौसी का पति, 2. माँ की बहिन का पति, 3. बहिन या भाई का श्वसुर। **मौसा** (हि.)

मोंस्सी (स्त्री.) 1. माँ की बहिन, 2. विमाता, 3. माँ की सहेली, 4. भाई या बहिन की सास; (वि.) 1. माँ-सा प्यार करने वाली, 2. दुर्भावना रखने वाली। **मौसी** (हि.)

मोंहकाण (स्त्री.) दे. मुँहकाण।

मोंहढा (पुं.) दे. मुँहढा।

मोंहढे (क्रि. वि.) 1. निकट, 2. सामने, आँखों के समाने, (दे. मुँहढा)। **मोहढ़े** (हि.)

मो (सर्व.) मैं, मेवाती में प्रयुक्त सर्वनाम (उ. पु.)।

मोअड़ी (स्त्री.) दे. मोरणी।

मोइया (पुं.) कच्चे सूत की लच्छी जो अधिकतर मुट्ठी पर सूत लपेट कर बनाई जाती है, सूत की छोटी लच्छी; **~बणाणा** सूत का गोल लच्छा बनाना; **~होणा** सूत का उलझना।

मोई (स्त्री.) देव-उठनी एकादशी के दिन बच्चों द्वारा घर-घर जाकर माँगी जाने वाली भिक्षा।

मोकला (वि.) दे. मोकळा।

मोकळा (वि.) 1. यथेष्ट, अधिक मात्रा में, 2. ओढ़ने-पहनने में नाप से अधिक का, ढीला, 2. स्वछंद, 4. (दे. उळगा); **~छोडणा** 1. अनुशासन न रखना, 2. नाप से अधिक बनाना; **~होणा** 1. अधिक मात्रा में होना, 2. जूते का ढीला होना। **मोकला** (हि.)

मोकळी (वि.) 1. यथेष्ट या अधिक मात्रा में, 2. वह जो नाप में बड़ी हो, ढीली। **मोकली** (हि.)

मोक्खा (पुं.) दे. मोंक्खा।

मोक्ष (पुं.) जन्म-मरण से छुटकारा, मुक्ति।

मोखा (पुं.) दे. मोंक्खा।

मोगरा (पुं.) 1. लकड़ी का मोटा और भारी डंडा (जो किसी वस्तु को कूटने के काम आता है), 2. मूसल; (वि.) सुडौल।

मोगरी (स्त्री.) कपड़े धोने या अन्न आदि कूटने की मोटी लकड़ी; **~-सा** मोटा-ताज़ा।

मोग्गर (पुं.) दे. मोगरा।

मोग्घा (पुं.) 1. नहर की मोरी, 2. बड़ा छिद्र, 3. (दे. मोंक्खा)। **मोघा** (हि.)

मोघळा[1] (पुं.) दे. मोग्घा।

मोघला[2] (पुं.) दे. मोक्खा।

मोच (स्त्री.) हाथ-पैर आदि के मुड़ने के कारण नस उछटने से होने वाला रोग; **~काढणा** मोच वाले स्थान पर मालिश करके मोच को दूर करना।

मोचड़ा (पुं.) दे. मोच्चा।

मोचड़ी (स्त्री.) दे. जूत्ती।

मोची (पुं.) दे. चमार।

मोच्चा (पुं.) जूता, कारखाने का बना जूता, फ़ैशनदार जूती। **मोचा** (हि.)

मोच्ची (पुं.) दे. चमार।

मोज (स्त्री.) आनंद की स्थिति।

मोजा (पुं.) 1. जुराब, 2. स्थान, 3. गाँव।

मोज्जी (वि.) 1. मनमानी करने वाला, 2. सदा प्रसन्न रहने वाला। **मौजी** (हि.)

मोटा (वि.) दे. मोट्टा।

मोटाई (स्त्री.) दे. मुटाई।

मोटापा (पुं.) दे. मुटाप्पा।

मोट्टर (स्त्री.) 1. सवारी बस, 2. मशीन चलाने वाला यंत्र; **~-लारी** सवारी बस। **मोटर** (हि.)

मोट्टा (वि.) 1. स्थूल शरीर वाला, 2. 'बारीक' का विलोम, 3. जिस काम में बारीकी न हो, 4. बड़ा, भारी; **~चाळा** बड़ा आश्चर्य; **~-माड़ा** जैसा-तैसा; **~हिसाब** अनुमानित हिसाब; **~होणा** 1. सुख मानना, 2. अधिक प्रसन्न होना। **मोटा** (हि.)

मोठ (स्त्री.) मूँग के समान एक दाल।

मोड़[1] (पुं.) 1. रास्ते पर पड़ने वाला घुमाव, 2. घुमाव, 3. टेढ़ापन, वक्रता, 4. फेर, अतिरिक्त दूरी, 5. 'सीध' या 'सूध' का विलोम, 6. बाधा; (क्रि. स.) **'मोड़णा'** क्रिया का आदे. रूप; **~पड़णा** अधिक मार्ग चलना पड़ना, फेर पड़ना।

मोड़[2] (पुं.) दूल्हे का मुकुट, मौर; **~देखणा** विवाह के समय कन्या के माता-पिता द्वारा दूल्हे का मौर देख कर जल ग्रहण करना; **~बाँधणा** 1. कार्य का श्रेय देना, 2. विवाह करना; **~सिळाणा** विवाह के पश्चात् (कन्या-पक्ष द्वारा) मौर को जल में प्रवाहित करना। **मौड़** (हि.)

मोड़णा (क्रि. स.) 1. तह करना, 2. टेढ़ा करना, 3. लौटाना, वस्तु को वापिस लौटाना, 4. धार खूँठी करना, 5. तोड़ना, 6. (दे. मोळणा)। **मोड़ना** (हि.)

मोड़ना (क्रि. स.) दे. मोड़णा।

मोड़ा (पुं.) दे. मैड़ा[1]।

मोडिया[1] (पुं.) 1. कम आयु का साधु, 2. 'मोड्डे' का लघुताद्योतक रूप, (दे. मोड्डा)।

मोडिया[2] (पुं.) एक प्रकार की ओढ़नी।

मोड़ी[1] (स्त्री.) 1. फेरों के समय कन्या के माथे पर मुकुट की तरह बाँधी जाने वाली छेददार पट्टी (इसे लड़की का मामा लाता है), 2. मौड़ी-संबंधी गीत। **मौड़ी** (हि.)

मोड़ी[2] (स्त्री.) दे. मरोड़ी; (क्रि. स.) 'मोड़णा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

मोड्डा (पुं.) 1. सामान्य साधु, मठ में रहने वाला साधु, 2. गेरुए वस्त्र पहनने वाला गृहस्थी। **मोडा** (वि.)

मोड्डी[1] (स्त्री.) साध्वी, संन्यासिनी।

मोड्डी[2] (स्त्री.) फ़ाख़ता, एक स्थानीय पक्षी जिसके गले में काले डोरे का चिह्न होता है और जो कुकूँकूँ की ध्वनि निकालती है।

मोड्डी[3] (वि.) वह मादा पशु (गाय, भैंस) जिसके सींग नीचे की ओर लटके हों।

मोड्ढा (वि.) मादा पशु के गरमाने की स्थिति (इस समय थन कुछ फूल से जाते हैं; **~करणा** पशु का गरमाना; **~मारणा** 1. पशु के गरमाने की स्थिति समाप्त होना, 2. पशु का दूध से सूखना)।

मोड्ढी (वि.) दे. मोड्डी[3]।

मोढ़ा (पुं.) 1. कंधा, 2. दे. मूड्ढा।

मोण[1] (पुं.) आटे या मैदा में डाली जाने वाली चिकनाहट। **मोयन** (हि.)

मोण[2] (पुं.) 1. चुप्पी, 2. बेसुधी; (वि.) मौन, शांत; **~धारणा/साधणा** अनबोल रहना; **~होणा** 1. बेसुध होना, 2. अवाक् होना। **मौन** (हि.)

मोतड़ी (स्त्री.) मृत्यु।

मोतिया बिंद (पुं.) आँख का एक रोग।

मोती (पुं.) दे. मोत्ती।

मोतीझरा (पुं.) दे. मोत्तीझारा।

मोत्ती (पुं.) 1. माला के मनके जो सच्चे तथा झूठे भी होते हैं, 2. चेचक का दाना; **~-सा** चमकदार; **~ ~दाँत** चमकीले और सुंदर दाँत। **मोती** (हि.)

मोत्तीचूर (पुं.) छोटी बूँदी का लड्डू।

मोत्तीझारा (पुं.) एक ज्वर (टाइफाइड)। **मोतीझिरा** (हि.)

मोत्ती-मात्ता (स्त्री.) मोती के समान दानेदार चेचक, चेचक।

मोत्था (पुं.) एक जंगली घास। **मोथा** (हि.)

मोत्या (पुं.) दे. मोत्था।

मोथा (पुं.) दे. मोत्था।

मोदी (पुं.) स्वामी।

मोद्दी (वि.) 1. मौजी, मस्त, 2. प्रधान।

मोद्धा (वि.) दे. मूँद्धा।

मोद्धी (वि.) औंधी; **~खाट करणा** अपशकुन करना या होना; **~टाँट** उलटी बुद्धि; **~मारणा** औंधी करना।

मोद्धू (पुं.) 1. कूएँ के चारों ओर बने स्तंभ जिन पर घिरनी लगी होती है, 2. कूएँ पर बना मंडप, 3. स्तंभ, 4. मिट्टी की छोटी ढेरी; (वि.) मूर्ख, भोंदू; **~(-ध्वाँ) आळा कूआ** वह कूआँ जिस पर स्तंभ बने हों; **~-सा** 1. मोटा-ताज़ा, 2. मूर्ख। **मोधू** (हि.)

मोधू (वि.) मूर्ख, भोंदू।

मोन्या (पुं.) वीर।

मोम (पुं.) वह चिकना द्रव्य जिससे मोमबत्ती बनती है; (वि.) 1. कोमल, 2. द्रवणशील; **~-सा** 1. कोमल, 2. चिकना।

मोमबत्ती (स्त्री.) प्रकाश के लिए जलाई जाने वाली मोम की बत्ती।

मो माक्खी (स्त्री.) मधु मक्षिका।

मोमिन (पुं.) मुसलमान जुलाहा।

मोम्मीं (वि.) मोम का।

मोय (सर्व.) मुझे। दे. मन्नैं।

मोर[1] (पुं.) राष्ट्र-पक्षी मोर जो अपने नाच और सुंदर पंखों के कारण प्रसिद्ध है (यह साँप को खा जाता है, इसकी श्रवण-शक्ति तेज़ होती है, जनधारणा के अनुसार मोरनी इसके आँसू पीकर अंडे देती है, इसका संबंध स्वामी कार्तिकेय से होने के कारण हरियाणे में इसका विशेष सम्मान है); **~झड़णा** 1. दीवाली से पहले मोर द्वारा अपने चंदे (लंबे पंख) डालना, 2. धनहीन होना, रिक्त होना; **~-पपैहिए बोलणा** सुहावना समय होना; **~-सा झड़णा** किसी वस्तु से विहीन होना; **~-सा नचाणा** इशारे पर नचाना; **~-सा नाँचणा** 1. घबराना, घबरा कर इधर-उधर घूमना, 2. अधिक व्यस्त होना।

मोर[2] (पुं.) एक जाट गोत।

मोरचा (पुं.) 1. मुक़ाबला, 2. वह गढ़ा जिसमें छिप कर शत्रु पर घात लगाई जाती है, 3. क़िले की खाई।

मोर-चाल (स्त्री.) नट, मदारी आदि द्वारा हाथों के बल चलने का भाव।

मोर-छड़ी (स्त्री.) 1. मोर के पंखों की बनी छड़ी (जिसे पवित्र माना जाता है, यह झाड़ा लगाने के काम आती है), 2. गूगा पीर की छड़ी।

मोरड़ (पुं.) 1. खूड की अवशिष्ट रेखाएँ, 2. (दे. मुरड़); **~मारणा** 1. बिना जुती ज़मीन पर पाटा मारना, 2. किए-कराए पर पानी फेरना।

मोरणा (क्रि. स.) 1. रोटी आदि के टुकड़े को छोटा करना या भुरभुरा करना, 2. चूर्ण करना या बनाना, 3. भुरभुरा करना, 4. चकनाचूर करना, कचूमर निकालना, 5. नष्ट करना, 6. चूरमा बनाना, (दे. भोरणा)। **मोरना** (हि.)

मोरणी (स्त्री.) मोर की मादा; **~-सी चाल** 1. छोटे डग रख कर चली गई चाल, 2. सुंदर चाल। **मोरनी** (हि.)

मोरनी (स्त्री.) दे. मोरणी।

मोरपंख (पुं.) दे. चंदा[1]।

मोरपंजा[1] (पुं.) एक खरपतवार।

मोर पंजा[2] (पुं.) ताकत अजमाई के लिए एक दूसरे की उँगलियों में उँगली फँसा कर खेला जाने वाला एक खेल।

मोर-पपैहिया (पुं.) 1. एक ओढ़नी जिस पर धागे की सहायता से शीशे जड़ कर मोर-पपैये (पपीहा) बनाए जाते हैं, 2. मोर और पपैये (पपीहा) जो वर्षा में अधिक बोलते हैं, 3. मिट्टी का एक खिलौना जो पपीहे के समान बजाया भी जा सकता है; **~बोलणा** प्रसन्नता का वातावरण व्याप्त होना।

मोरमुकट (पुं.) 1. मोर-पंख से बना मुकुट, 2. श्रीकृष्ण; **~-धारी** मोर- मुकुटधारी, श्रीकृष्ण।

मोरमुकुट (हि.)

मोरमुकुट (पुं.) दे. मोरमुकट।

मोरा[1] (पुं.) 1. उपले आदि का छोटा टुकड़ा, 2. बड़ी मोरी, 3. विघ्न, बाधा, जैसे—धरम में मोरा मारणा (धर्म-कार्य में विघ्न डालना), 4. दस्त, मरोड; (क्रि. स.) 'मोरणा' क्रिया का भू. का. पुं. रूप; **~मारणा** विघ्न डालना; **~लागणा** दस्त लगना; **~लाणा** अग्नि पर उपले का चूरा डालना।

मोरा[2] (सर्व.) मेरा।

मोरा[3] (पुं.) सूराख।

मोरिया (पुं.) 1. जलाने योग्य चूरा, 2. पतला मल; **~दस्त** बार-बार आने वाली पतली टट्टी।

मोरी[1] (स्त्री.) 1. जल-निकास की नाली, नाली, 2. नहर से निकलने वाली नाली।

मोरी[2] (स्त्री.) 1. जलाने योग्य चूरा, 2. मोरने की क्रिया, (दे. मोरणा); (क्रि. स.) 'मोरणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~लाणा** आग पर उपले के टुकड़े डालना।

मोरी[3] (सर्व.) मेरी।

मोल (पुं.) क़ीमत, दाम, भाव; **~आणा** घर में न निपजने के कारण मूल्य देकर ख़रीदना, ख़रीदना; **~काढणा** भाव निकालना; **~का होणा** 1. महँगा होना, 2. किसी वस्तु का घर न होने के कारण ख़रीदना; **~चुकाणा** 1. मूल्य चुका कर ख़रीदना, नकद मूल्य देना, 2. भारी क़ीमत देना, 3. क़ीमत लगाना, 4. निर्णय करना; **~देणा** बेचना; **~लेणा** 1. ख़रीदना, 2. आवश्यकता से अधिक अधिकार दिखाना, जरखरेज गुलाम समझना; **~होणा** सौदा पटना। **मूल्य** (हि.)

मोळ (पुं.) चमार जाति के लिए प्रयुक्त एक संबोधन।

मोळणा (क्रि. स.) 1. विधवा होने के कारण चूड़ी तोड़ना, 2. किसी शकुन-सूचक वस्तु को तोड़ना, (दे. मुळणा)। **मोलना** (हि.)

मोलाना (पुं.) मौलाना।

मोल्लक (पुं.) एक अहीर गोत।

मोस (स्त्री.) 1. मुसने की क्रिया, 2. मोच; (क्रि. स.) 'मोसणा' क्रिया का आदे. रूप, (दे. मुसणा)।

मोहँड (पुं.) दे. मोग्घा।

मोह (पुं.) 1. प्यार, 2. लगाव, 3. ममता।

मोहजीत (वि.) निर्मोही।

मोहट (स्त्री.) दे. माहवट। तुल. मावट।

मोहणा (क्रि. स.) 1. मोहित करना, 2. प्रेम में फँसाना; (वि.) मोहित करने वाला। **मोहना** (हि.)

मोहणी (वि.) 1. मोहित करने वाली, 2. माया, 3. सुंदरी। **मोहिनी** (हि.)

मोहताज (वि.) 1. दरिद्र, 2. परमुखा पेक्षी, 3. विशेष कामना रखने वाला।

मोहनबाड़ी (पुं.) रोहतक के निकट छोटा झाँसुवा का स्थान जहाँ व्यास द्वारा वर्णित दस दुर्गों में से एक दुर्ग के अवशेष माने जाते हैं।

मोहनमाला (स्त्री.) दे. मटरमाळा।

मोहब्बा (पुं.) आल्हा-ऊदल की नगरी। **महोबा** (पुं.)

मोहर (स्त्री.) दे. म्होर।

मोहरा[1] (पुं.) 1. विशेष प्रकार का रस्सा जिसे पशु की थूथनी पर डाला जाता है, 2. बड़ा छिद्र, 3. बंधन, 4. पाश; **~(-रे) मैं बँधणा** पाशबद्ध होना।

मोहरा[2] (पुं.) 1. शतरंज की गोटी, 2. वह व्यक्ति जिसकी आड़ में कोई काम साधा जाए; **~बणाणा** 1. किसी अन्य की आड़ लेकर काम निकालना, 2. आलोचना का केंद्र बनाना।

मोहरी (स्त्री.) 1. पशु को बाँधने की रस्सी विशेष, (दे. मोहरा[1]), 2. पाँयँचा या घेरा (सलवार, पायजामा आदि का)।

मोह्ट (स्त्री.) दे. माहवट।

मोह्ड्ढी (वि.) दे. मोड्डी[3]।

मौक्का (पुं.) दे. मोंक्का।

मौखिक (वि.) दे. ज़बानी।

मौज़ (स्त्री.) दे. मोज।

मौजूद (वि.) उपस्थित।

मौत (स्त्री.) दे. मोंत।

मौन (पुं.) चुप, शांत।

मौर (पुं.) दे. मोड़[2]।

मौरूसी (वि.) दे. मड़ूस्सी।

मौलवी (पुं.) अरबी, फ़ारसी आदि का पंडित, मुसलमान धर्म का आचार्य।

मौळस (स्त्री.) 1. पति की मामी, 2. पत्नी की मामी। **मौलस** (हि.)

मौळसरा (पुं.) पति का मामा। **मौलसरा** (हि.)

मौळसरी (स्त्री.) एक सदाबहार पेड़ जिसमें छोटे-छोटे सुगंधित फूल लगते हैं, बकुल। **मौलसिरी** (हि.)

मौला (पुं.) ईश्वर।

मौस (स्त्री.) दे. मावस।

मौसा (पुं.) दे. मोंस्सा।

मौसिम (पुं.) दे. रुत।

मौसी (स्त्री.) दे. मोंस्सी।

मौसेरा (वि.) दे. मुसेरा।

मौस्सा (पुं.) दे. मोंस्सा।

मौस्सी (स्त्री.) दे. मोंस्सी।

म्याऊँ (स्त्री.) 1. बिल्ली, 2. बिल्ली की आवाज़; (वि.) 1. डरपोक, 2. निर्दोष (व्यंग्य में प्रयुक्त); ~**बणणा** 1. अनभिज्ञता प्रकट करना, 2. भीरुता का भाव प्रकट करना; ~**होणा** 1. अपनी प्रतिक्रिया प्रकट न करना, शांत रहना, 2. निर्दोष जैसा व्यवहार दिखाना, 3. दुबक कर बैठना।

म्याद (स्त्री.) समयबद्ध सीमा। **मियाद** (हि.)

म्याद्दी (वि.) निश्चित मियाद का; ~**ताप** मलेरिया ज्वर। **मियादी** (हि.)

म्यान (पुं.) तलवार, कटार आदि रखने का खोल।

म्यान-डाभ (पुं.) हरियाणा प्रदेश का एक नाम (ह. प्र. लो., पृ. 429)।

म्लेच्छ (पुं.) दे. मलेछ।

म्हँ (अव्य.) अंदर, भीतर। उदा.–घर म्हँ कूण सै? (घर में कौन है)

म्हँत (पुं.) दे. मँहत।

म्हल्ला (पुं.) एक जाट गोत।

म्हाँका (सर्व.) हमारा।

म्हाड़ (पुं.) दे. म्हाळ।

म्हादे (पुं.) शिवजी, (दे. महादे)। **महादेव** (हि.)

म्हारड़ा (सर्व.) 'म्हारे' का लघुताद्योतक रूप, हमारा।

म्हारणी (स्त्री.) 1. गिनती-पहाड़े, 2. पुरानी लंबी गाथा; ~**छेड़णा** लंबी कथा कहना।

म्हारला (सर्व.) हमारा, (दे. म्हारा)।

म्हारा (सर्व.) सर्वनाम (उ. पु.) 'मैं' का संबंध कारक का रूप। **हमारा** (हि.)

म्हाराज (पुं.) 1. राजा के लिए प्रयुक्त संबोधन, 2. ब्राह्मण, 3. सम्मानित व्यक्ति, 4. गुरु, 5. रसोइया। **महाराज** (हि.)

म्हारी (सर्व.) सर्वनाम (उ. पु.) 'मैं' का संबंध कारक स्त्रीलिं. रूप। **हमारी** (हि.)

म्हारेंडा (सर्व.) दे. म्हारला।

म्हारे/म्हारै (सर्व.) 1. हमारे यहाँ, 2. सर्वनाम (उ. पु.) **'मैं'** का संबंध कारक बहुव. रूप; ~-**आळी** हमारे वाली; ~-**ताहीं** 1. हमारे लिए, 2. सर्वनाम (उ. पु.)

'मैं' का संप्रदान कारक बहुव. रूप; ~-तैं 1. हमारे से, हमसे, 2. सर्वनाम (उ. पु.) 'मैं' का करण और अपादान कारक बहुव. रूप; ~-पै हमारे पास; ~-माँह 1. हम में, हम में से, 2. सर्वनाम (उ. पु.) 'मैं' का अधिकरण कारक बहुव. रूप; ~-सेत्ती 1. हमारे से, हमसे, 2. सर्वनाम (उ. पु.) 'मैं' का करण कारक बहुव. रूप; ~से/सैं दे. म्हारे ~तैं। **हमारे** (हि.)

म्हारैहड़ा (सर्व.) दे. म्हारै।

म्हाल (पुं.) 1. पहलवान, 2. एक प्राचीन जाति जिसके लोग किश्ती चलाने में निपुण थे, 3. बड़ा ज़मींदार। **मल्ल** (हि.)

म्हाळ (पुं.) मधुमक्खी का छत्ता; **~की माक्खी** मधुमक्खी; **~छिड़णा** 1. आफ़त आना, 2. अधिक मक्खियों का भिनभिनाना, 3. मधुमक्खी के छत्ते पर आघात के कारण मक्खियों का क्रोधित होकर फिरना; **~छेड़णा** 1. आफ़त मोल लेना, 2. क्रोधित करना; **~तोड़णा** 1. मधुमक्खी के छत्ते से शहद निकालना, 2. जटिल समस्या सुलझाना; **देस्सी~** छोटी मक्खियों का छत्ता; **पहाड़वा~** मोटी मक्खियों का छत्ता; **~पाच्छै पड़णा** आफ़त गले लगना; **~बैठणा/लागणा** 1. मधुमक्खियों द्वारा छत्ता बनाना, 2. मक्खियों का पुंजभूत होकर किसी स्थान पर बैठना; **~सा काम** जोखिम भरा काम। **म्हाल** (हि.)

म्हास (स्त्री.) दे. भैंस।

म्हीन्ना (पुं.) 1. तीस दिन का समय, 2. चैत्र, बैसाख आदि महीने, 3. मासिक धर्म, 4. बरसी तक प्रतिमास किया जाने वाला श्राद्ध-कर्म; **~काढणा** बरसी तक प्रति मास श्राद्ध-कर्म करना; **~होणा** 1. मासिक धर्म होना (दे. लत्ते आणा), 2. महीने भर का समय होना। **महीना** (हि.)

म्हूरत (पुं.) 1. शुभ घड़ी, 2. कार्य आरंभ करने के लिए निश्चित शुभ लग्न; **~काढणा** 1. भविष्यवाणी करना, 2. कार्य को आरंभ करने के लिए शुभ लग्न बताना; **~टळणा** 1. समय निकलना, 2. बुरी घड़ी टलना; **~साधणा** 1. पंचांग की सहायता से शुभ लग्न निश्चित करना, 2. शकुन निकालना। **मुहूर्त** (हि.)

म्हे (सर्व.) हम (बाग.)

म्हेर (स्त्री.) कृपा; **~फिरणा/होणा** 1. कृपा होना, 2. समय अनुकूल होना। **मेहर** (हि.)

म्हैं (सर्व.) 1. हम, 2. (दे. मैं[2])।

म्हैंगवाड़ा (पुं.) महँगाई।

म्हैंस (स्त्री.) एक प्रसिद्ध दुधारू पशु; **~का सिर** मोटी बुद्धि वाला, मूर्ख। **भैंस** (हि.)

म्हैल्ला (पुं.) एक अहीर गोत।

म्होर (स्त्री.) 1. किसी चिह्न, अक्षर आदि से अंकित ठप्पा, स्टैंप, 2. एक सिक्का, अशरफ़ी, 3. गले का एक आभूषण जिसे पुरुष भी धारण करते हैं; **~-असरफ़ी** धन-दौलत–म्होर असरफी जोड़ कै फूल्या फिरै खुसहाल, तेरा संगी कोय नाँ होयगा सुमर गुपाल गुपाल। **मोहर** (हि.)

म्होल्ला (पुं.) मुहल्ला, (दे. पान्ना)। **मोहल्ला** (हि.)

य

य हिंदी वर्णमाला का छब्बीसवाँ अक्षर जिसका उच्चारण स्थान तालु है।

यंतर (पुं.) 1. औज़ार, 2. (दे. जंतर[1])। **यंत्र** (हि.)

यंत्र (पुं.) दे. यंतर।

यइया-यइया (स्त्री.) 1. बंदरिया, 2. बंदर की ध्वनि–सुपने मैं देक्खी यइया-यइया खिर-खिर-खिर।

यकायक (क्रि. वि.) अचानक।

यकीन (पुं.) विश्वास, भरोसा।

यक्ष (पुं.) दे. यक्स।

यक्स (पुं.) 1. कहानियों में वर्णित दानव, 2. कुबेर के सेवक, देवयोनि के प्राणी, 3. एक पर्वतीय जाति। **यक्ष** (हि.)

यग (पुं.) मख, याग; **~खोल्हणा/लाणा** दान-पुण्य करना, दीन-दुखियों को भोजन, वस्त्र बाँटना; **~लूटणा** 1. यज्ञ का फल मिलना, 2. यश मिलना। **यज्ञ** (हि.)

यजमान (पुं.) दे. जजमान।

यजमानी (स्त्री.) दे. जजमान्नी।

यजुर्वेद (पुं.) दे. जजरबेद।

यजुर्वेदी (पुं.) 1. यजुर्वेद का ज्ञाता, 2. ब्राह्मणों का एक गोत्र।

यज्ञ (पुं.) 1. दे. यग, 2. दे. जग[2]।

यज्ञकुंड (पुं.) यज्ञपात्र, हवनकुंड।

यज्ञभूमि (पुं.) 1. यज्ञ-क्षेत्र, 2. भारत, 3. हरियाणा।

यज्ञमंडप (पुं.) यज्ञ करने के लिए बनाया हुआ मंडप।

यज्ञशाला (स्त्री.) दे. जगसाल्ला।

यज्ञीय प्रदेश (पुं.) हरियाणा प्रदेश।

यज्ञोपवीत (पुं.) दे. जनेऊ।

यतन (पुं.) यत्न। दे.जतन।

यति (पुं.) दे. जती।

यतीम (पुं.) जिसके माता-पिता न हों, अनाथ।

यत्न (पुं.) दे. जतन।

यत्र (क्रि. वि.) दे. जड़ै।

यथा (अव्य.) जैसे।

यथायोग्य (अव्य.) उपयुक्त, मुनासिब।

यथाशक्ति (अव्य.) सामर्थ्य के अनुसार।

यदु (पुं.) दे. यदुराई।

यदुनंदन (पुं.) श्रीकृष्ण।

यदुपति (पुं.) श्रीकृष्ण।

यदुवंश (पुं.) राजा यदु का वंश जिसमें श्रीकृष्ण जन्मे।

यदुबंशी (पुं.) दे. याद्दव।

यद्यपि (अव्य.) अगरचे (दे. जै[3])।

यम (पुं.) दे. जम।

यमदूत (पुं.) दे. जम ~का दूत।

यमद्वितीया (स्त्री.) दे. भैयादोज।

यमना (स्त्री.) दे. जमना[2]।

यमपुर (पुं.) दे. यमलोक।

यमपुरी (स्त्री.) दे. यमलोक।

यमलोक (पुं.) दे. जमलोक।

यमुना जी (स्त्री.) दे. जमना[2]।

ययाति (पुं.) राजा नहुष के पुत्र जिनका विवाह शुक्राचार्य की कन्या देवयानी से हुआ; **~तीर्थ** पेहोवा के निकट एक तीर्थ।

यल्हे (स्त्री.) 1. विस्मयादिबोधक ध्वनि, 2. पश्चात्तापद्योतक ध्वनि; (क्रि.स.) यह लो, वह लो।

यवन (पुं.) 1. मुसलमान, 2. अनार्य, 3. यूनान देश का निवासी।

यश (पुं.) दे. जस।

यशवंत सिंह टोहानवी (पुं.) (1881-1957) सरदार टोहानवी की आर्य संगीत रामायण मुख्य कृति है।

यशस्वी (वि.) यशवान।

यशुमती (स्त्री.) यशोदा, (दे. जसोद्दा)।

यसोद्दा (स्त्री.) 1. नंद की पत्नी, 2. (दे. जसोद्दा); (वि.) 1. विमाता, 2. खोटे स्वभाव की। **यशोदा** (हि.)

यसोधर्मा (पुं.) यशोधर्मा, हरियाणा क्षेत्र के जनेंद्र (जन नेता) जिनके साथ हरियाणे के 70 हज़ार पहलवानों ने मिलकर हूण सम्राट मिहिरकुल की राजधानी शाकल (स्यालकोट) को जीता।

यह (सर्व.) 1. दे. यो, 2. दे. या।

यहाँ (क्रि. वि.) दे. अड़ै।

यही (अव्य.) दे. याहे।

यहूदी (पुं.) 1. एक जाति विशेष, 2. यहूदी जाति का व्यक्ति, 3. यहूद (यरुसलम) देश का निवासी।

याँहे तैं (क्रि. वि.) इसी कारण से, इसलिए ही।

याँह् मारी (क्रि. वि.) इस कारण से, इसलिए–याँह् मारी नाँ आई अक अड़ै उसका जेठ बैठ्या था।

या (अव्य.) अथवा, वा; (वि.) यह, इस–या में, इसमें (सर्व.)।

याचना (स्त्री.) माँगने की क्रिया; (क्रि.स.) माँगना।

याज्ञवलक्य (पुं.) एक पौराणिक ऋषि।

याड़ी (स्त्री.) मित्रता; (पुं.) 1. मित्र, 2. प्रेमी; **~करणा/जोड़णा** 1. मित्रता बनाना, 2. प्रेम करना। **यारी** (हि.)

याणा (वि.) 1. नासमझ, 2. छोटा, 3. भोला, 4. 'सयाने' (स्याणा) का विलोम, 5. अल्प वयस्क; **~-स्याणा** 1. समझदार, 2. युवावस्था प्राप्त, 3. बड़ा-बूढ़ा।

याणी (वि.) 1. नासमझ (लड़की), 2. अल्प वयस्क लड़की; **~उमर** नादान उमर।

यातना (स्त्री.) पीड़ा, कष्ट।

यातरा (स्त्री.) 1. धार्मिक भ्रमण, 2. सफ़र। **यात्रा** (हि.)

यातरी (स्त्री.) 1. तीर्थ-यात्री, 2. मुसाफ़िर। **यात्री** (हि.)

यात्रा (स्त्री.) दे. यातरा (तुल. जातरा)।

यात्री (पुं.) दे. यातरी।

याद (स्त्री.) 1. स्मरण करने की क्रिया, 2. स्मरण-शक्ति।

यादगार (स्त्री.) स्मृति-चिह्न।

याददाश्त (स्त्री.) स्मरण-शक्ति।

यादव (पुं.) दे. याद्दव।

याद्दव (पुं.) 1. अहीर जाति के लोगों के नाम के साथ जोड़ा जाने वाला उपनाम, 2. यदुवंशी, 3. श्रीकृष्ण। **यादव** (हि.)

याम (पुं.) दे. जाम[2]।

यार (पुं.) 1. मित्र, दोस्त, 2. प्यारा, प्रेमी, 3. पर-पुरुष, प्रेमी; **~-बास** 1. मित्र, परिचित, 2. संबंधी।

यारचण (स्त्री.) 1. सखी, 2. प्रेमिका।

यारची (पुं.) मित्र; (स्त्री.) मित्रता।

यारबास (पुं.) यारबाश, घनिष्ठ मित्र।

याराना (पुं.) दे. यारान्ना।

यारान्ना (पुं.) मित्रता। **याराना** (हि.)

यारी (पुं.) मित्र; (स्त्री.) 1. मित्रता, 2. स्त्री का पर-पुरुष से प्रेम, अवैध संबंध; **~के घर दूर** मित्रता निबाहना कठिन काम; **~राखणा** 1. मित्रता रखना, 2. अवैध यौन संबंध रखना **~होणा** 1. मित्र बनना, 2. मित्रता होना, 3. लगाव होना।

यावा (वि.) 1. बेशर्म, लज्जाहीन, 2. लजावा, 3. खीझा हुआ; **~करणा** 1. लज्जित करना, 2. चिढ़ाना, खिझाना; **~होणा** 1. लज्जित होना, 2. खिसियाना।

याह-ताह (अव्य.) इधर उधर। **~करणा**– इधर उधर करना। मारना। उदा.–हीणे की याह ताह करूँ, रुआ रुआ कै मारूँ। ठाढे की माळा जपूँ, सारे करज उतारूँ। (जाड़ा)

याहे (सर्व.) 1. यह ही, 2. इसने ही, 3. स्त्रीलिंग बोधक संकेत–याहे थी वा। **यही** (हि.)

युँक्कर (क्रि. वि.) दे. ज्यूँ ~कर।

युक्ति (स्त्री.) दे. जुगती[1]।

युग (पुं.) दे. जुग।

युद्ध (पुं.) दे. जुध।

युधा (स्त्री.) नृग की रानी जिसकी संतान यौधेय कहलाई।

युधिष्ठिर (पुं.) दे. युधिस्टर।

युधिस्टर (पुं.) सबसे बड़ा पांडव, धर्मराज; (वि.) अटल, बात का पक्का–देख्या ए नाँ इसा युधिस्टर। **युधिष्ठिर** (हि.)

युध्या (स्त्री.) श्रीराम की नगरी। **अयोध्या** (हि.)

युवती (स्त्री.) जवान स्त्री।

युवराज (पुं.) राजकुमार, राजा का सबसे बड़ा लड़का जो राज्य का अधिकारी होता है।

युवरानी (स्त्री.) युवराज की पत्नी।

युवा (वि.) युवक।

यू,/यूह् (सर्व.) सर्वनाम (अ. पु.) 'यह' का कर्ता कारक एक वचन का रूप। **यह** (हि.)

यूनानी (वि.) यूनान देश का; (स्त्री.) 1. यूनान देश की भाषा, 2. यूनान देश की चिकित्सा-प्रणाली।

ये/येह् (सर्व.) 1. ये सब, 2. सर्वनाम (अ. पु.) 'यह' का कर्ताकारक बहुवचन का रूप। **ये** (हि.)

येक (अव्य) एक।

यों (अव्य.) 1. दे. ज्यों, 2. दे. न्यूँ।

यों ही (अव्य.) दे. न्यूँ **~एँ।**

यो (सर्व.) यह, (दे. यू)।

योग (पुं.) दे. जोग[1]।

योगदान (पुं.) किसी काम में सहयोग देना।

योगफल (पुं.) संख्याओं का जोड़।

योगबल (पुं.) दे. जोगबल।

योगमाया (स्त्री.) वह कन्या जो यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई और जिसे कंस ने मार डाला (तुल. जोगमाया)।

योगवाशिष्ठ (पुं.) वसिष्ठ ऋषि द्वारा प्रणीत एक धार्मिक ग्रंथ।

योगशास्त्र (पुं.) पतंजलि ऋषि कृत योग का एक शास्त्र।

योगसूत्र (पुं.) पतंजलि कृत योग के सूत्रों का संग्रह-ग्रंथ।

योगासन (पुं.) योग साधने के आसन।

योगिनी (स्त्री.) दे. जोगणी।

योगी (पुं.) दे. जोग्गी।

योगेश्वर बाळकनाथ (पुं) थानेश्वर निवासी एक प्रसिद्ध साँगी जो वर्तमान साँग-

परंपरा के सूत्रधार माने जाते हैं (इनका साँग-काल 1875 से 1920 के मध्य था)।

योग्य (वि.) दे. जोग[2]।

योग्यता (स्त्री.) लियाक़त, क्षमता।

योजन (पुं.) दे. जोजन।

योजना (स्त्री.) कार्य को करने की पूर्व-निश्चित पद्धति, भावी कार्यों की व्यवस्था।

योद्धा (पुं.) वीर (तुल. भड़), (दे. माल्ह)।

योनि (स्त्री.) 1. दे. जोन्नी, 2. दे. जूण[2]।

योह् (सर्व.) सर्वनाम (अ. पुं.) 'यह' पुल्लिग का कर्ताकारक एकवचन का रूप; (वि.) संकेतवाचक एक शब्द।

यौधेय (पुं.) 1. हरियाणे का एक पुराना नाम, 2. प्राचीन काल की एक योद्धा जाति, 3. योद्धा, (दे. जोद्धा)।

यौवन (पुं.) जवानी, (दे. जोब्बन)।

य्हाँ (क्रि. वि.) इस जगह, इस स्थान पर, (दे. इत)। **यहाँ** (हि.)

य्हाळी (स्त्री.) हल का एक उपकरण।

र

र हिंदी वर्णमाला का सत्ताईसवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण जीभ के अगले भाग को मूर्द्धा के साथ स्पर्श कराने से होता है, हरियाणवी में इसका उच्चारण कुछ 'रअ', 'रै' के समान है।

रंक (पुं.) कंगाल, भिखारी।

रंग (पुं.) 1. वह चूर्ण जिससे कोई चीज रंगी जाती हो, 2. वर्ण, 3. शरीर का रंग या वर्ण, 4. जवानी, जैसे–रंग आणा (जवानी चढ़ना), 5. शोभा, जैसे–रंग बढ़ाणा, 6. प्रभाव–तेरा रंग पड़ोस्सी पै भी चढग्या, 7. धाक, गुण या महत्त्व का प्रभाव, 8. आनंदोत्सव, 9. युद्ध, 10. मौज, मन की तरंग–आज साँग्गी रंग मैं आ रह्या सै, 11. हालत, दशा–के रंग-ढंग सैं भाई?, 12. दृश्य–जमान्ने मैं नये तैं नये रंग देख ल्यो, 13. प्रेम, अनुराग, 14. भाँति, तरह, 15. बाजी, 16. ताश की तुरुप, 17. फाग, दुल्हेंडी; **~आणा** 1. रौनक आना, 2. मज़ा जमना; **~उडणा** 1. मुँह फक होना, 2. रंग फ़ीका पड़ना; **~चढणा** 1. प्रभावित होना, 2. रंगा जाना; **~जमणा** 1. युद्ध ठनना, 2. अत्यंत आनंद आना; **~निखरणा** 1. रौनक आना, 2. रंग साफ़ होना; **~बदलणा** 1. चाल-ढाल बदलना, 2. चालाकी खेलना; **~भदरंग होणा** 1. रंग उड़ना, 2. दाग़ पड़ना, 3. ताश के पत्ते की तुरुप न होना; **~रळणा** 1. रंग में रंग मिलना, 2. रंग उड़ना; **~लागणा** 1. प्रभाव पड़ना, 2. मज़ा जमना; **~लाणा** रौनक बढ़ाना; **~लेणा** मजे लूटना, आनंद लेना; **~सिर होणा** निखार पर आना, आभा होना।

रंग-ढंग (पुं.) 1. हाल-चाल, 2. चाल-चलन, आचार-व्यवहार।

रंगणा (क्रि. स.) 1. किसी वस्तु पर रंग चढ़ाना, 2. अपने अनुकूल करना, 3. 'रंगणा' क्रिया का आदे. रूप; (वि.) जिसका रंग अच्छा चढ़े। **रंगना** (हि.)

रंगत (स्त्री.) 1. मज़ा, 2. रागनी गाने का ढंग–लखमी की रंगत न्यारी थी,

3. शोभा, 4. प्रभाव; ~**चढणा** प्रभाव पड़ना।

रंगना (क्रि. स.) दे. रंगणा।

रंग-बिरंगा (वि.) 1. अनेक रंगों का, 2. तरह-तरह का।

रंग-महल (पुं.) दे. रणबास।

रंगरास (पुं.) 1. व्यवहार। उदा.—मनै इतणै जाण लिए सारे रंगरास (लचं) (स्त्री.) मोद-प्रमोद।

रंगरूट (पुं.) नया भरती हुआ सिपाही; (वि.) किसी काम को पहली बार आरंभ करने वाला, (दे. सिखदड़)।

रंगवाणा (क्रि. स.) रंग चढ़वाना। **रंगवाना** (हि.)

रंगवाना (क्रि. स.) दे. रंगवाणा।

रंगसाज़ (पुं.) दे. लीलगर।

रंगसिर (वि.) दे. ढंगसिर।

रंगा (पुं.) दे. रंगाचार।

रँगाई (स्त्री.) 1. रंगने की क्रिया, 2. रंगने की मज़दूरी; (क्रि. स.) 'रँगाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

रंगाचार (पुं.) रंगा, सूत्रधार (साँग शुरू होने से पूर्व यह पात्र, नगर, समय आदि का परिचय देता है, कई बार रंगा और मुख्य पात्र एक ही होते हैं)।

रँगाणा (क्रि. स.) दे. रंगवाणा।

रंगीन (वि.) 1. रंगीन, रंग वाला, 2. रंग-बिरंगा।

रंगीला (वि.) दे. रँगील्ला।

रँगील्ला (वि.) 1. रंगीला, रंगीन, 2. रंग-बिरंगा, 3. गहरे रंग का, 4. शौक़ीन।

रंज (पुं.) दुःख शोक; ~**-फिकर होणा** चिंता होना।

रँजणा (क्रि. अ.) 1. मन लगाना, 2. रक्त-रंजित होना। **रंजना** (हि.)

रंजना (क्रि. अ.) दे. रँजणा।

रंजिश (स्त्री.) 1. शत्रुता, 2. मन-मुटाव (दे. खुणस), 3. दुःखी होने का भाव।

रंड (पुं.) रंडुआ, विधुर; (वि.) 1. सदा अकेला रहने वाला (दे. छड़ी ~छटाँक), 2. निर्लज्ज।

रंड-मलंग (वि.) 1. रंडुआ, 2. मस्त, 3. घर में अकेला रहने वाला, एकाकी।

रंड-रोवणा (पुं.) 1. कष्ट-भरी गाथा, 2. व्यर्थ की गाथा या चर्चा; ~**रोणा** कष्ट की लंबी गाथा सुनाना।

रंडवा (पुं.) 1. विधुर, 2. विधुरपन। **रंडुआ** (हि.)

रंडसाड़ा (पुं.) विधवा के लिए दी गई धोती।

रँडाप्पा (पुं.) 1. वैधव्य, विधवापन, 2. विधुरपन, 3. बड़े-बूढ़े द्वारा व्यतीत अकेलेपन का समय; ~**काटणा** वैधव्य जीवन बिताना। **रंडापा** (हि.)

रँडेपड़ा (पुं.) दे. रँडाप्पा।

रंडेप्पा (पुं.) दे. रँडाप्पा।

रंड्डी (स्त्री.) 1. वेश्या, 2. एक अश्लील गाली जो स्त्री-जाति को दी जाती है; (वि.) 1. चरित्रहीन, 2. निर्लज्ज। **रंडी** (हि.)

रँढाणी (स्त्री.) 1. एक देवी माता, 2. रण चंडी।

रंतुक (पुं.) अरंतुक यक्ष जो पिपली (कुरुक्षेत्र) के निकट माना जाता है।

रंदणा (क्रि. स.) 1. रंदा मारना, 2. लकड़ी को रंदे से छील कर चिकना या पतला करना; (पुं.) रंदा। **रंदना** (हि.)

रंदना (क्रि. स.) दे. रंदणा।

रंद्दा (पुं.) खाती (बढ़ई) का एक औज़ार जिससे वह लकड़ी को समतल करता

है; ~**फेरणा/मारणा** 1. रंदा लगाना, छीलना 2. काम बिगाड़ना। **रंदा** (हि.)

रंधणा (क्रि. अ.) 1. अग्नि पर (खदड़के के साथ) पकना, 2. साग, सब्ज़ी आदि पक कर तैयार होना, 3. अधिक गरम होना, 4. बहुत क्रोधित होना; (वि.) जो शीघ्र रंधे।

रंधवाणा (क्रि. स.) रँधवाना, राँधने या पकाने का काम अन्य से करवाना।

रंधा (पुं.) दे. रंद्दा।

रँधाणा (क्रि. स.) दे. रंधवाणा।

रंधीण (पुं.) रंधा हुआ पदार्थ (दलिया या खिचड़ी)।

रंपी (स्त्री.) चमड़ा काटने का एक औज़ार।

रंभा (पुं.) माली की खुरपी; (स्त्री.) एक अप्सरा।

रँभाना (क्रि. अ.) दे. राँभणा।

रई (स्त्री.) मथानी ('रया' जाति की स्त्रियाँ, जाति की ध्वनि-साभयता के कारण इसे 'ढोकळी' कहती हैं, रई बहुधा कैर की लकड़ी की चार फूल वाली होती है, कम दूध होने पर कैर की लकड़ी की जड़ को चार भागों को फाड़ कर रई का काम ले लेते हैं)।

रईस (वि.) दे. रहीस।

रक़बा (पुं) 1. क्षेत्रफल, 2. विस्तृत भू-भाग, 3. बख़्शिश में मिली ज़मीन।

रकम (स्त्री.) रुपया-पैसा, पूँजी, राशि।

रकाब (पुं.) काठी का पायदान।

रकाब्बी (स्त्री.) (पतले किनारों वाली) धातु की तश्तरी। **रकाबी** (हि.)

रकेळणा (क्रि. स.) कुरेदना।

रक्त (पुं.) लहू

रक्तपात (पुं.) खूनखराबा।

रक्तबीज (पुं.) एक राक्षस जिसके शरीर से जितने रक्त-बिन्दु गिरते उतने ही नए राक्षस उत्पन्न हो जाते थे।

रक्षक (पुं.) रक्षा करने वाला।

रक्षा (स्त्री.) दे. रक्सा।

रक्षाबंधन (स्त्री.) दे. सिलोणो।

रक्सा[1] (स्त्री.) हिफ़ाज़त, रक्षण। **रक्षा** (हि.)

रक्सा[2] (स्त्री.) दे. रिक्सा।

रखड़ी उतरवाई एक रस्म जिसके अनुसार वर की दायीं टांग पर काले धागे की राखी (राई, मजीठ, सुपारी, कौड़ी, लौह का छल्ला युक्त) को मार्ग में उतार कर फेंक दिया जाता है ताकि दंपती को नजर न लगे।

रखणा (पुं.) दे. खान्ना; (क्रि. स.) दे. धरणा।

रखना (क्रि. स.) दे. धरणा; (पुं.) दे. खान्ना।

रखपत-रखापत (स्त्री.) सम्मान के बदले सम्मान का भाव।

रखवाना (क्रि. स.) दे. धरवाणा।

रखवाळ (स्त्री.) दे. रुखाळ।

रखवाला (पुं.) दे. रुखाळा।

रखवाली (स्त्री.) दे. रुखाळी।

रखात (स्त्री.) दे. चरणी।

रखाना (क्रि. स.) दे. धरवाणा।

रखेल (स्त्री.) 1. बिना विधिवत विवाह किए घर में रखी हुई महिला, 2. दासी।

रग (स्त्री.) 1. नस, 2. स्वभाव; ~**दाबणा** नस दबाना, क़ाबू में करना; ~-**रग जाणणा** स्वभाव की पूरी पहचान होना।

रगड़ (स्त्री.) रगड़ने या घिसने की क्रिया, घर्षण; (क्रि. स.) '**रगड़णा**' क्रिया का आदे. रूप।

रगड़का (पुं.) रगड़ा, घस्सा; **~मारणा** घिसना।

रगड़णा (क्रि. स.) 1. घिसना, 2. मर्दन करना, 3. मोटा पीसना। **रगड़ना** (हि.)

रगड़वाणा (क्रि. स.) दे. रगड़ाणा।

रगड़वाना (क्रि. स.) दे. रगड़ाणा।

रगड़ा (पुं.) 1. झंझट, झगड़ा, 2. रुकावट, 3. रगड़; **~देणा** 1. तंग करना, 2. धक्का देना, 3. दाँव लगाना, 4. पछाड़ना; **~पड़णा/होणा** बाधा उत्पन्न होना।

रगड़ाणा (क्रि. स.) 'रगड़णा' क्रिया का प्रे. रूप। **रगड़वाना** (हि.)

रग्गा (पुं.) काम-धंधा; **~(-गै) सिर** काम-धंधे लगने का भाव–तूँ अपणे रग्गै सिर लाग।

रघबीर (पुं.) श्री रामचंद्रजी; (वि.) भाई–वाह रै मेरे रघबीर। **रघुवीर** (हि.)

रघु (पुं.) श्री रामचंद्र जी के परदादा जिनके नाम पर वंश का नाम रघुवंश पड़ा।

रघुकुल (पुं.) राजा रघु का वंश।

रघुनाथ (पुं.) श्री रामचंद्र।

रघुवंश (पुं.) राजा रघु का वंश।

रघुवंशी (पुं.) 1. वह जो रघु के वंश में उत्पन्न हुआ हो, 2. क्षत्रियों की एक जाति।

रघुवंसी (पुं.) दे. रघुवंशी।

रघुवीर (पुं.) दे. रघबीर।

रचणा (क्रि. अ.) 1. रंजित होना, लाल होना–राम जी घणा मींह हो तै रच्या करै, 2. रंग चढ़ना; (वि.) जो अधिक रचे; (क्रि. स.) 1. बनाना, जैसे–सृष्टि रचणा, 2. हाथ से बनाना, 3. निश्चित करना, 4. विवाह आदि का आयोजन करना; (स्त्री.) बनावट। **रचना** (हि.)

रचणी (वि.) जिसका रंग अधिक चढ़े; **~मेंहधी** अधिक रचने वाली मेंहदी। **रचना** (हि.)

रचना (क्रि. अ.) दे. रचणा; (क्रि. स.) दे. रचणा।

रचवाणा (क्रि. स.) 1. रंजित करवाना, 2. मेंहदी रचवाना, 3. आयोजन करवाना। **रचवाना** (हि.)

रचवाना (क्रि. स.) दे. रचवाणा। **रचाना** (हि.)

रचाणा (क्रि. स.) दे. रचवाणा। **रचाना** (हि.)

रचाना (क्रि. स.) दे. रचाणा।

रचूँधा (पुं.) दे. राचोंधा।

रछींडा (पुं.) छोटा 'राछ', (दे. राछ)।

रज[1] (स्त्री.) 1. धूलि, 2. स्थान, भूमि–कित रज तैं आया नारियळ (लो. गी.), 3. मासिक धर्म, 4. स्त्री का वीर्य।

रज[2] (अव्य.) रोज (?)। उदा.–किस रज बाँध्या काँगणा। दे. रज।

रजक (पुं.) धोबी।

रजगुण (पुं.) रजोगुण।

रजधान्नी (स्त्री.) 1. राज-शासन का प्रमुख नगर, 2. बड़ा नगर। **राजधानी** (हि.)

रजपूतणी (स्त्री.) 1. राजपूत की पत्नी, 2. राजपूत महिला; (वि.) वीरांगना।

रजपूत्ती (स्त्री.) 1. वीरता, 2. राजपूती शान। **राजपूती** (हि.)

रजभा (पुं.) नहर का बड़ा नाला। **रजबहा** (हि.)

रजभाया (पुं.) दे. रजभा।

रजवाड़ा (पुं.) 1. छोटा राज्य, रियासत, 2. राजा, 3. राजपूत।

रजा (स्त्री.) 1. संयोग, 2. इच्छा, 3. अनुमति, स्वीकृति, 4. एक मुस्लिम गोत; **~करकै** संयोग से–रजा करकै वो आग्या तै तूँ के करले घा?।

रजाई (स्त्री.) रूई-भरा लिहाफ़, सौड़, लिहाफ़।

रजामंद (वि.) सहमत, (दे. रजू)।

रजाळा (वि.) कमीना।

रजू (स्त्री.) रजामंदी, सहमति।

रझणा (क्रि. अ.) 1. राध पड़ना, 2. पकना–गुड़, तेल का फोहा रझग्या, 3. तृप्त होना, रिझना–खा कै रझ लिया। **रझना** (हि.)

रझाणा (क्रि. स.) 1. राँधना, पकाना (खिचड़ी, दाल आदि), तवे पर ओषधि को पकाना, जैसे–तेल, हल्दी का फोहा रझाणा, 2. तृप्त करना, 3. रिझाना, आनंदित करना।

रटंत (स्त्री.) दे. रटत।

रट (स्त्री.) 1. एक ही बात को बार-बार कहे चलना, 2. ज़िद, हठ; (क्रि. स.) 'रटणा' क्रिया का प्रे. रूप; **~-बिद्द्या पच खेती** विद्या रटने से और खेती परिश्रम करने से ठीक रहती है।

रटणा (क्रि. स.) 1. बार-बार याद करना, 2. किसी बात को बार-बार कहना, (दे. घोखणा); (वि.) रटने वाला। **रटना** (हि.)

रटत (स्त्री.) रटने की क्रिया, रटाई; (वि.) रटने योग्य।

रटना (क्रि. स.) दे. रटणा।

रट्टू (वि.) रटने वाला (तुल. घोट्टू)।

रठाण (स्त्री.) दे. रिठाण।

रड़क (स्त्री.) 1. किसी कठोर वस्तु का रड़कना या चुभना, 2. शत्रुता, 3. खटक, 4. आँख की किरकिरी; (क्रि. स.) 'रड़कणा' क्रिया का प्रे रूप **~काढणा/लिकाड़णा** शत्रुता निकालना; **~मेटणा** कष्ट-निवारण करना; **~होणा** 1. ईर्ष्या होना, 2. आँख में रड़क होना, 3. किरकिरी होना।

रड़कणा (क्रि. अ.) 1. चुभे काँटे आदि से बार-बार कष्ट होना, 2. आँख में चभक पैदा होना, 3. आँख में खटकना, शत्रु के समान दिखाई देना; (वि.) वह जो रड़के। **रड़कना** (हि.)

रड़कत (क्रि.) बलबलाता हुआ। दे. बलबलाणा।

रड़कवा (पुं.) आँख की रड़क।

रड़का (पुं.) 1. मोटे तिनकों की झाड़ू, भंगी की झाड़ू, (दे. भोकरा), 2. आँख की चभक या चुभन, 3. आशंका या खटका; (क्रि. अ.) 'रड़कणा' क्रिया का भू. का., रूप; **~देणा/ मारणा/लाणा** (खुले) स्थान को बुहारना।

रण[1] (पुं.) 1. युद्ध, 2. युद्ध-भूमि; **~जीतणा** 1. बाज़ी मारना, 2. विजयी होना।

रण[2] (पुं.) 1. चेचक के कारण शरीर पर बने गड्ढे या चिह्न, जैसे–मात्ता के रण, 2. भूमि का क्षारीय खंड, 3. चक्की के पाट पर बने खुरदरे गड्ढे; (क्रि. स.) 'रणणा' क्रिया का आदे. रूप।

रणक्षेत्र (पुं.) दे. रणखेत।

रणखेत (पुं.) 1. युद्ध-भूमि, 2. पवित्र भूमि। **रणक्षेत्र** (हि.)

रणझाँझणी (वि.) लड़ाकू (स्त्री.), कलहप्रिया।

रणणा (क्रि. स.) चक्की के पाट राहना, (दे. राहणा)।

रणबास (पुं.) अंतःपुर, रनिवास (हि.)

रणभूमि (स्त्री.) दे. रणभोम्मीं।

रणभोम्मीं (स्त्री.) युद्ध-भूमि। **रणभूमि** (हि.)

रणरेही (स्त्री.) 1. क्षारीय भूमि, रेह वाली भूमि, 2. क्षार, 1. (दे. काल्लर[1]), 2. (दे. नूणी[2])।

रतजगा (पुं.) 1. (बरात चढ़ने या देवी जागरण आदि पर) रात भर जाग कर उत्सव मनाना, (दे. खोड़िया), 2. रात भर जागना; **~करवाणा** भगवती-जागरण करवाना; **~बोलणा** (देवी का) रतजगा करने का प्रण लेना।

रतन[1] (पुं.) 1. मूल्यवान वस्तु, पत्थर विशेष, 2. स्वतः प्रकाशित या चमकदार वस्तु, 3. पुत्र, 4. धन- दौलत, 5. सुंदर तन, मनुष्य-शरीर, 6. दूल्हा, 7. राजा। **रत्न** (हि.)

रतन[2] (पुं.) रंतुक यक्ष।

रतनक (पुं.) दे. रंतुक।

रतन-कटोरा (पुं.) विवाह के समय रुपयों से भर कर दिया जाने वाला कटोरा।

रतन जवानी (स्त्री.) भरा पूरा यौवन।

रतन-रजाई (स्त्री.) विवाह के समय दूल्हे को दी जाने वाली सुंदर रजाई।

रत नागर[1] (पुं.) नागर या श्रेष्ठ वर।

रतनागर[2] (पुं.) रत्नों का खजाना।

रतनाळी (स्त्री.) रत्न-जटित माला। **रत्नावली** (हि.)

रतनाळे (पुं.) लाल सुर्ख, लालिमा युक्त। उदा.–नैन कटीले रतनाळे तीजै घली हुई स्याही। (लचं.)

रतवाई-नाँच (पुं.) एक मेवाती नाँच जिसे स्त्री-पुरुष वर्षा-काल में नाँचते हैं।

रतालू (पुं.) दे. रताल्लू।

रताल्लू (पुं.) एक कंद, एक सब्जी विशेष।

रति (स्त्री.) 1. कामदेव की पत्नी, 2. प्रेम, अनुराग, 3. संभोग।

रत्तूँधा (पुं.) दे. राचोंधा।

रतौंधी (स्त्री.) दे. राचोंधा।

रत्ती (स्त्री.) 1. माशे का आठवाँ भाग, 2. चिरमिटी, घुँघची, गुंजा; **~-भर** अंश मात्र।

रत्न (पुं.) दे. रतन।

रत्नयज्ञ-तीर्थ (पुं.) कुरुक्षेत्र का एक तीर्थ जहाँ से कुरुक्षेत्र परिक्रमा आरंभ होती है।

रथ (पुं.) एक प्रकार की बैलगाड़ी जिसमें विशेष पर्दे लगे होते हैं और घंटाले, टाल, टल्ली आदि बँधे होने के कारण रुनक-झुनक की सुरीली ध्वनि निकलती है, (दे. अरथ)।

रथवान (पुं.) रथ हाँकने वाला, (दे. गड़वाळा)।

रथी (पुं.) 1. रथ में बैठ कर अनेक योद्धाओं से युद्ध करने वाला, 2. (दे. रथवान)।

रथोंढी (स्त्री.) बीज रखने का थैला।

रद (वि.) जो ख़राब या निक़म्मा हो गया हो। **रद्द** (हि.)

रदणा (क्रि. स.) 1. रंदा लगाना, 2. घर्षण करना, मर्दन करना।

रद्द (वि.) दे. रद।

रद्दा (पुं.) 1. घर्षण की क्रिया, 2. कुश्ती के समय कोहनी से दाब लगाने की क्रिया, 3. झटका, 4. ईंटों की तह; (क्रि. स.) 'रदणा' क्रिया का भू. का. पुं. रूप।

रद्दी (स्त्री.) अनुपयोगी वस्तु; (वि.) 1. घटिया, 2. फेंकने योग्य, 3. निकृष्ट व्यक्ति–अरै जा नैं रद्दी; (क्रि. स.) 'रदणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिंग. रूप।

रनवास (पुं.) दे. रणबास।

रपइया-पोतड़ा (पुं.) दे. पोतड़ा~ रपइया।

रपड़ाणा (क्रि. अ.) खेत का रापड़ होना, (दे. राप्पड़)। **रपड़ाना** (हि.)

रपैया (पुं.) धन-दौलत; **~देणा** 1. सगाई पक्की करना, 2. संबंधी को सम्मानार्थ रुपये की भेंट देना, 3. सौदा पक्का करना। **रुपया** (हि.)

रपोट (स्त्री.) पुलिस में दी जाने वाली सूचना, रपट; **~करणा** लड़ाई-झगड़े की सूचना पुलिस में देना; **~चालणा** मुक़दमेबाज़ी चलना; **~(-ट्टा)-सपोट्टी** मुक़दमेबाज़ी। **रिपोर्ट** (हि.)

रप्फढ़ (पुं.) झगड़ा, विवाद; **~पड़णा** 1. विवाद उत्पन्न होना, 2. बाधा पड़ना।

रफड़णा (क्रि. स.) दे. राफड़णा।

रफळ (स्त्री.) बंदूक। **रायफ़ल** (हि.)

रफळ-दुनाळी (स्त्री) दोनाल की बंदूक। **रायफ़ल** (हि.)

रफा-दफा (पुं.) बात को निपटाना या समाप्त करना; **~होणा** 1. झगड़ा निपटना, 2. भीड़ छँटना।

रफू[1] (पुं.) लुप्त। दे. रफूचक्कर।

रफू[2] (पुं.) ऊनी वस्त्र के कटाव की मरम्मत।

रफूगर (पुं.) रफू करने वाला।

रफ़ू-चक्कर (पुं.) 1. गायब या चंपत होना, 2. जादू; **~होणा** 1. लुप्त होना, 2. भाग खड़ा होना।

रफ्तार (स्त्री.) गति, चाल, (दे. रह्वाळ)।

रब[1] (स्त्री.) आदत। **~पड़णा**–आदत पड़ना। दे. रबत।

रब[2] (पुं.) खुदा।

रबड़ (स्त्री.) लचीला पदार्थ विशेष; (वि.) लचीला, लचकदार; **~-सा** 1. लचीला, 2. झुकने के कारण कठिनाई से टूटने वाला।

रबड़णा (क्रि. स.) दे. लबड़णा।

रबड़ी (स्त्री.) 1. औटा कर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध, 2. (दे. राबड़ी)।

रबत (स्त्री.) अभ्यास। **रब्त** (हि.)

रबद (स्त्री.) रबत, आदत। दे. बाण।

रबी (स्त्री.) गेहूँ आदि की वह फ़सल जो वसंत ऋतु में काटी जाती है।

रब्बा[1] (पुं.) 1. आदत, 2. ज़िद; **~पड़णा** आदत पड़ना, स्वभाव बनना।

रब्बा[2] (पुं.) खुदा, रब।

रमंज (पुं.) रहस्य, भेद, आशय। उदा.–कही भले की रमंज नहीं जाणी। (लचं.)

रमंडणा (क्रि. अ.) रमना, काम में तल्लीन होना, (दे. रमणा)।

रमक (स्त्री.) 1. गंध, हल्की गंध, 2. लत, 3. लालसा, 4. रमने का भाव; **~आणा/मारणा** हल्की गंध आना; **~लिकाड़णा** 1. गंध निकालना, 2. लत छुड़ाना।

रमकणा (क्रि. अ.) 1. समाना, व्याप्त होना–खीर मैं रमक रमकगी, 2. चुभना, कष्ट देना–जूत्ती मैं कितै नै कितै कील रमकै सै, 3. चसकना, 4. रह-रह कर याद आना, 5. नशा चढ़ना। **रमकना** (हि.)

रमजान (पुं.) एक अरबी महीना जिसमें मुसलमान रोजा रखते हैं।

रमझोळ (स्त्री.) 1. शैतान बाजा, 2. पैरों का आभूषण विशेष जिसमें आधा इंच चौड़ी पत्ती पर ढेर सारे घुँघरू लगे होते हैं।

रमणा (क्रि. अ.) 1. गंध, तेल आदि का अन्य वस्तु में समाना, 2. गंध का दूर-दूर तक व्याप्त होना, 3. धूना तपना, तपस्या करना, 4. काम में तल्लीन होना, 5. घूमते फिरना, 6. रचना, मेंहदी रचना, 7. रोम-रोम में समाना, 8. आनंद लूटना, (दे. रमंडणा)। **रमना** (हि.)

रमणी (स्त्री.) सुंदर स्त्री।

रमणीक (वि.) सुंदर, मनोहर।

रमत (क्रि.) रमता हुआ (साधु आदि)।

रमता (वि.) 1. घूमने फिरने वाला, 2. मस्त; **~जोग्गी** 1. रमता जोगी, घूमता फिरने वाला योगी, 2. घूमने-फिरने वाला व्यक्ति, 3. मस्त व्यक्ति; ~ **~बहता पाणी** गति ही जीवन है।

रमता-राम (पुं.) दे. रमता ~जोग्गी।

रमद्योल (स्त्री.) अस्तव्यस्तता।

रमना (क्रि. अ.) दे. रमणा।

रमल (पुं.) पाँसा फेंक कर भविष्यवाणी करने की विद्या।

रमला-फमला (पुं.) कई मेल के सगे-संबंधी।

रमाणा (क्रि. स.) 1. मालिश करके तेल को शरीर में या बालों आदि में लीन करना, 2. अदृश्य या लुप्त करना, 3. काम में तल्लीन कराना, 4. भली प्रकार जमाना या सटाना, 5. अपने अनुकूल करना, 6. ध्यान लगाना, जैसे-भगवान में ध्यान रमाणा। **रमाना** (हि.)

रमाणी (वि.) सुहावनी, रमणीय (स्थल)। **रमणीक** (हि.)

रमाना (क्रि. स.) दे. रमाणा।

रमैणी (स्त्री.) एक छंद।

रया (पुं.) 1. रया जाति, 2. रया जाति का व्यक्ति।

रळकणा (क्रि.) सरकना।

रळणा (क्रि. स.) 1. गुम होना, 2. अन्य वस्तु में मिलना, 3. रास्ता भूलना, 4. बहकना, 5. हिलना-मिलना, एक रस होना; **~(-ता)-मिलता** मिलता-जुलता। **रुलना/रलना** (हि.)

रळा (पुं.) 1. रल-मिल जाना, 2. भाग्य-रळा की होगी तै मिल ज्या गी, 3. दाना-पानी, 4. गुम होने का भाव-गंगा जी के मेळे में घणी रळा माच्ची, 5. मिलावट, मिश्रण, जैसे- रळा की टूम, 6. अनियमितता, आराजकता- जिस राज मैं रळा हो वो किसा राज? 7. वह आटा या चारा जो पशु को दूहते समय डाला जाता है, 8. भूल पड़ते का भाव-थोड़ी रळा पड़ण दे, 9. खेल में रोली करने का भाव, 10. योग, जोड़; (क्रि. स.) 'रळाणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पड़णा** भूल पड़ना; **~माचणा** अराजकता फैलना; **~होणा** 1. भाग्य में बदा होना, 2. भूल होना, 3. मिश्रण होना, मिलावट होना। **रलाव** (हि.)

रळाणा (क्रि. स.) 1. मिलाना, सम्मिलित करना, 2. जोड़ना, योग करना-दो अर दो रळा कै च्यार हुये, 3. वस्तुओं को आपस में इस प्रकार मिलाना कि पहचान में न आ सकें, 4. साझा करना, हिस्सेदार बनाना, 5. बहकाना, भुलाना-गिणत्याँ- गिणत्याँ रळा दिया,

6. घोल बनाना, मिश्रण बनाना, 7. घोलणा, खिचड़ी, दाल आदि को चलाना ताकि वह घुट जाए, 8. बीज छिटकना, 9. मिट्टी में मिलाना, नष्ट करना, 10. दर-दर की ख़ाक छानने पर बाध्य करना, 11. मार्ग भटकवाना, 12. समझौता करवाना। **रलाना** (हि.)

रलाना (क्रि. स.) दे. रळाणा।

रवन्नक (स्त्री.) छवि, शोभा। **रौनक** (हि.)

रवाँ (वि.) 1. चालू हालत की, 2. अभ्यस्त; **~पड़णा/होणा** अभ्यास होना।

रवा (पुं.) 1. गेहूँ का दरदरा या रवेदार आटा, सूजी, 2. कण, दाना; (क्रि.स.) 'रुआणा' क्रिया का आदे. रूप।

रवाना (वि.) भेजा हुआ, जो प्रस्थान कर चुका हो; (क्रि. अ.) दे. रुआणा।

रविवार (पुं.) दे. ऐंतवार।

रवैया (पुं.) 1. चलन, चाल-चालन, 2. तौर, ढंग।

रस (पुं.) 1. किसी वस्तु से निकला तरल स्राव, 2. गन्ने आदि का रस, 3. निचोड़, तत्त्व, सार, 4. शरबत, मीठा पानी, 5. प्राण, ज्ञान, 6. आनंद, मज़ा, 7. स्वाद, 8. गुण, 9. वाणी का मिठास, 10. प्रकार, जैसे-कई रस के आदमीं, 11. फुहार, जल, 12. वृक्ष का स्राव, 12 मैथुन; **~आणा** मज़ा आना; **~छोड़णा** रस-स्राव होना; **~लेणा** आनंद लूटना; **~होणा** 1. आनंद मिलना, 2. तरल होना, 3. पसीजना।

रसगुल्ला (पुं.) पनीर से बनी एक मिठाई।

रसणा (क्रि. अ.) 1. तरल पदार्थ का पात्र आदि से स्रवित होना, टपकना, 2. पेड़ से रस टपकना, 3. रिस कर खाली होना; (वि.) वह जो रसीला हो, टपकने वाला; (स्त्री.) जिह्वा।
रिसना/रसना (हि.)

रसणा-बसणा (क्रि. अ.) रहना-सहना, स्थायी रूप से रहना।

रसद (स्त्री.) भोजन की बिना पकी साम्रगी।

रसबारी (स्त्री.) गन्ने का पहली बार रस पेरने की क्रिया या भाव।

रसम (स्त्री.) रिवाज़, परिपाटी, रीति।
रस्म (हि.)

रसमसे (वि.) रसभरे, मस्ती के। उदा.-वै दिन रसमसे थे।

रसवाई (स्त्री.) 1. आधिक्य, 2. 'महँगा वाड़ा' का विलोम, 3. फैलाव, जैसे-किसी रोग की रसवाई।

रसवाड़ा (पुं.) पशुओं में घातक रोग का फैलाव; **~फैलणा/होणा** संक्रामक रोग व्याप्त होना।

रसाई (स्त्री.) 1. रसीलेपन का भाव, 2. ज़बान की मिठास, 3. किसी कल या यंत्र का निर्बाध चलने का भाव।

रसाण (स्त्री.) 1. अचूक ओषधि, ओषधि, 2. उपाय, 3. उपचार। **रसायन** (हि.)

रसाणा (क्रि. स.) 1. रसयुक्त करना, 2. आम को दबाकर पिलपिला करना, 3. टपकाना, 4. अनुकूल करना, मनाना।
रसाना (हि.)

रसातल (पुं.) भूमि के नीचे का एक लोक।

रसायन (स्त्री.) ओषधि, (दे. रसाण)।

रसिया (वि.) 1. रस लेने वाला, शौक़ीन, 2. एक श्रृंगार नृत्य, 3. रसिया गीत, 4. प्रेमी, 5. (दे. रसील्ला)।

रसीद (स्त्री.) 1. प्राप्ति-सूचना, 2. पावती, 3. ख़बर, 4. अता-पता; **~नाँ देणा** बात का भेद न देना, गुप्त रखना।

रसीला (वि.) दे. रसील्ला।

रसील्ला (वि.) 1. रस वाला, 2. रसिक, 3. मधुर भाषी। **रसीला** (हि.)

रसूक (पुं.) परिचय, रुसूख, संबंध।

रसूल (पुं.) ईश्वर का दूत, नबी।

रसें (पुं.) दे. लाग्गू-सेऊ हल्।

रसोइया (पुं.) 1. रसोई बनाने वाला, 2. पाचक।

रसोई (स्त्री.) 1. भोजन बनाने का स्थान (जिसकी शुचिता का विशेष ध्यान रखा जाता है), 2. भोजन, जैसे–रसोई जीमणा; **~करणा/पोणा/ बणाणा** भोजन बनाना; **~खवाणा/जिमाणा** भोजन कराना; **~चालणा** 1. देर तक भोजन बनते रहना, 2. अन्न-क्षेत्र चलना, भंडारा चलना; **~तपाणा** भोजन बनाना; **~बाँचणा** खाने में दुभाँत करना, घर के लोगों को समान भोजन न देना (यह पाप-कर्म माना जाता है); **~होणा** भोजन तैयार होना।

रसोत (स्त्री.) एक ओषधि विशेष।

रसोळी (स्त्री.) शरीर के किसी भाग में गिलटी (ग्रंथि) बनने का रोग; **~ऊठणा/बणणा** शरीर के किसी भाग में मांस-ग्रंथि बनना; **~खिणणा** गर्भवती महिला (विशेषतः प्रथम प्रसव) से रसौळी को सूई से छिदवाना (ताकि वह बैठ जाए)। **रसौली** (हि.)

रस्ता (पुं.) राह। **रास्ता** (हि.)

रस्सी (स्त्री.) दे. जेवड़ी।

रहँट (पुं.) वह कूआँ जिससे बेल के आकार में जुड़ी बालटियों (माल) के घुमाने से पानी निकाला जाता है।

रहड़ा (पुं.) छोटी बैलगाड़ी।

रहड़ी (स्त्री.) बोझा खींचने का छोटा वाहन विशेष।

रहड़ू (पुं.) 1. एक प्रकार की हल्की बैलगाड़ी जिसमें सवारी बैठने के स्थान का आकार लगभग चौरस होता है, 2. फिसलने वाले पहिये विशेष, 3. (दे. गड्ळणा)।

रहण[1] (स्त्री.) बच्चों का एक रोग जिसमें माता के कुपथ्य के कारण या बच्चे द्वारा अपच भोजन करने के कारण कलेजे पर भारीपन आ जाता है; **~ठाणा /दाबणा** कलेजे के स्थान को अँगूठे की दाब से दबा कर 'रहण' का रोग दूर करना; **~रहणा** 'रहण' का रोग होना।

रहण[2] (स्त्री.) गिरवी। **रेहन** (हि.)

रहण[3] (स्त्री.) रहने की क्रिया, रहने का ढंग; (पुं.) आचार-व्यवहार; **~देणा** रहने देना।

रहणा[1] (क्रि. अ.) 1. निवास करना, 2. किसी की ओर कोई वस्तु या रुपया बचा रहना, 3. बचना, शेष रहना; **~-सहणा** 1. रहना-सहना, 2. निवास करना। **रहना** (हि.)

रहणा[2] (क्रि. अ.) चक्की के पाट, सिल आदि का भली प्रकार से टाँका जाना (जिससे उसका तल खुरदरा हो जाए), रहाया जाना, (दे. रणणा)।

रहना (क्रि. अ.) दे. रहणा[1]।

रहपट (पुं.) दे. रहपटा।

रहपटा (पुं.) रहपट, थप्पड़।

रहपटाणा (क्रि. स.) थप्पड़ों से पीटना, (दे. थपड़ाणा)।

रहबारी (पुं.) ऊँट वाला–रहबारी घर बणैगा ऊँटड़ा, दस मण बोझ लदावैगा रे (लो. गी.)।

रहल (स्त्री.) पुस्तक रख कर पढ़ने की चौकी। दे. घोड़ी।

रहसी रहसी (वि.) प्रसन्न।

रहीम (पुं.) 1. एक मुलसलमान भक्त कवि, 2. ईश्वर।

रहीस (वि.) धनी। **रईस** (हि.)

रहैपटा (पुं.) दे. रहपटा।

रह्या खया (वि.) बाकी बचा खुचा।

रह्वाल (स्त्री.) 1. (पशु या मनुष्य की) तेज़ चाल, 2. ढंग, 3. व्यवहार; **~देखणा** बैल खरीदने से पूर्व उसकी चाल या वहन-शक्ति देखना।

राँग[1] (पुं.) एक धातु विशेष; **~का** खोटा, मिश्रित (सिक्का); **~का रपैया** 1. खोटा रुपया, खोटा सिक्का, 2. अनिश्चित व्यापार। **राँगा** (हि.)

राँग[2] (स्त्री.) पक्की लस्सी। दे. राँग[1]।

राँगणा (क्रि.) रंगना।

राँगा (पुं.) 1. दे. राँग, 2. दे. सीत।

राँघड़[1] (पुं.) एक यवन जाति; (वि.) 1. निर्दयी, 2. कसाई।

राँघड़[2] (स्त्री.) एक रोग जिसमें हाथ-पैर के जोड़ों पर मांस की ग्रंथि बन जाती है; (पुं.) दे. आँक्कल।

राँघण[3] (स्त्री.) दे. राँघड़।

राँचणा (क्रि. अ.) दे. रँचणा।

राँचना (क्रि. अ.) दे. रँचणा।

राँज्झा (पुं.) 1. हीर का प्रेमी, (दे. हीर), 2. (दे. झोट्टा[1])।
राँझा (हि.)

राँझ (पुं.) जाँटी की किस्म का एक वृक्ष जो गरमी में हरा-भरा होता है।

राँझण गोल् (स्त्री.) एक गज चौड़े मुँह का घड़ा।

राँझणी (स्त्री.) कलह-प्रिया, झगड़ालू स्त्री, (दे. रण झाँझणी)।

राँझा (पुं.) दे. राँज्झा।

राँड (स्त्री.) 1. विधवा, 2. स्त्रियों के लिए प्रयुक्त एक गाली; **~-नपूत्ती** 1. विधवा और पुत्रहीन, 2. अभागिनी, 3. एक गाली; **~ ~होणा** 1. गाली-गलोच होना, 2. अच्छा-बुरा अंतिम निर्णय होना।

राँड्डा (पुं.) विधुर। **रंडवा** (हि.)

राँड्डी (स्त्री.) 1. दे. राँड, 2. दे. रंड्डी।

राँड्डू (पुं.) रंडुआ; (वि.) मस्त।

राँढ (वि.) 1. मस्त, 2. बलवान।

राँद (स्त्री.) 1. बेग़ार, 2. छुटकारा; (क्रि. स.) 'राँधणा' क्रिया का आदे. रूप; **~कटणा** 1. छुटकारा मिलना, 2. अनोखा काम होना; **~काटणा** 1. बेग़ार काटना, काम बिगाड़ना, 2. विचित्र काम करना, अकरणीय काम करना, 3. छुटकारा मिलना—आज उसकी भी राँध काट्टी; **~मारणा** बेग़ार काटना।

राँध (स्त्री.) दे. राँद।

राँधणा (क्रि. स.) 1. पकाना, खिचड़ी आदि पकाना, 2. उबालना।
राँधना (हि.)

राँधना (क्रि. स.) दे. राँधणा।

राँपड़ (स्त्री.) दे. राप्पड़।

राँबा (पुं.) दे. रंभा।

रांबी (स्त्री.) दे. रंपी।

राँभणा (क्रि. अ.) 1. गाय का रँभाना या बोलना, 2. हारद्योतक ध्वनि निकालना, 3. व्यर्थ में चिल्लाना, 4. आर्त अवस्था में सहायतार्थ ध्वनि निकालना। **राँभना** (हि.)

राँभना (क्रि. अ.) दे. राँभणा।

रा[1] (स्त्री.) 1. सम्मति, 2.वोट, मत; **~होणा** 1. चुनाव होना, 2. एकमत होना, 3. सहमति होना। **राय** (हि.)

रा[2] (अव्य.) का। उदा.–रपैया रा मैल सै। बाड़ी रा बथुआ। (सीमित प्रयोग)। दे. रा[1]।

राई (स्त्री.) सरसों के समान एक अन्न जो गुण में गरम तथा स्वाद में खट्टी होती है।

राकस (पुं.) 1. असुर, 2. दुष्ट प्राणी; (वि.) राक्षसी वृत्ति का। **राक्षस** (हि.)

राक्षस (पुं.) दे. राकस।

राक्षसी नदी (स्त्री.) कुरुक्षेत्र के निकट एक बरसाती नदी।

राख[1] (स्त्री.) ख़ाक, जली हुई वस्तु का क्षार; (क्रि. स.) 'राखणा' क्रिया का आदे. रूप; **~करणा** 1. जलाना, 2. मानसिक कष्ट देकर कमज़ोर करना, जलाना-भुनाना; **~झोंकणा** आँख में धूल झोंकना; **~ठिकाणे लागणा** मरना; **~फैंकणा** अपमान करना; **~होणा** 1. जलकर नष्ट होना, 2. जल-भुन जाना।

राख[2] (स्त्री.) 1. रक्षा, 2. सम्मान, आबरू; **~राखणा** 1. सम्मान या लाज रखना या बचाना, 2. वचन-पालन करना।

राखड़ी (स्त्री.) 1. दे. पोंहची 2. दे. राक्खी 3. दे.कांगणा।

राखणा (क्रि. स.) 1. रक्षा करना, 2. बचाना, 3. छिपाना, 4. सम्मान रखना, 5. बच्चे की देखभाल करना, 6. प्रतीक्षा में रखना, 7. वंचित रखना, 8. ग्रहण करना। **रखना** (हि.)

राखीगढ़ी (पुं.) हाँसी के निकट एक खंडहर स्थान जिसे सहस्त्रवीर्य अर्जुन की राजधानी माना जाता है।

राखूँढ़ा (पुं.) दे. राखोंह्डा।

राखोंह्डा (पुं.) (घर के निकट) वह स्थान जहाँ चूल्हे आदि की राख निकाल कर डाली जाती है।

राग (पुं.) 1. गाना, 2. रागिनी, 3. अनुराग, प्रेम, 4. कहानी-किस्सा; (क्रि. स.) 'रागणा' क्रिया का आदे. रूप; **~रागणा** 1. कहानी-किस्सा छेड़ना, 2. बेसुरा गाना।

रागड़ (पुं.) बेतुका लंबा राग।

रागणा[1] (क्रि. स.) 1. राग अलापना, 2. लंबी गाथा सुनाना। **रागना** (हि.)

रागणा[2] (क्रि.) कहना, प्रचार करना, प्रशंसा करना। उदा.–तनै सेठाणी ठीक कह्या गुण किरसण के रागूँगा।

रागनी (स्त्री.) 1. साँग में गाया जाने वाला चार-छः कड़ी (कली) का गाना, 2. अश्लील गान, 3. एक राग विशेष। **रागिनी** (हि.)

रागिनी (स्त्री.) दे. रागनी।

राचणा (क्रि. अ.) प्रसन्न होना, (दे. माँचणा)। **राचना** (हि.)

राचोंधा (पुं.) रतौंधी, रात के समय नहीं दिखाई देने का एक रोग।

राछ (पुं.) 1. औज़ार, कारीगर के औज़ार, 2. जुलाहे का औज़ार जिसकी जालियों से सूत निकाला जात है, 3. बर्तन।

राछ-पोछ (पुं.) 1. घरेलू सामान, 2. बर्तन-भाँडे, 3. कारीगर के औज़ार, 4. अस्त्र-शस्त्र **~खूँट्टे पड़णा** 1. अस्त्र-शस्त्र काम न आना, 2. असफलता मिलना।

राजंद (पुं.) 1. पति (गीतों में प्रयुक्त), 2. प्रेमी।

राज[1] (पुं.) 1. राजा का शासन-काल, 2. शासन, पूर्ण स्वामित्व का भाव, पूर्ण

अधिकार, 3. ठाट-बाट से रहने की स्थिति, 4. राजा द्वारा शासित खंड या देश; **~करणा/मारणा** आनंद लूटना; **~चालणा** आदेश चलना; **~बदलणा** 1. शासन बदलना, 2. नियम बदलना, 3. अवज्ञा होना, 4. शासन-परिवर्तन के लिए विद्रोह होना, 5. सिक्का या मुद्रा बदलना; **~बैठणा** 1. नया राजा सिंहासनारूढ़ होना, 2. उचित न्याय-व्यवस्था जमना; **~भोगणा/मारणा** राजसी आनंद लूटना; **~राजणा** राजा का शासन चलना; **~होणा** देश या वस्तु पर अधिकार होना, पूर्ण स्वामित्व होना।

राज[2] (पुं.) राजगीर, चिनाईगीर।

राज[3] (पुं.) रहस्य, भेद।

राजकँवार (पुं.) राजकुमार, राजा का पुत्र।

राजकुमार (पुं.) दे. राजकँवार।

राज-कोरड़ा (पुं.) राजदंड, (दे. साहसोट्टी)।

राजतिलक (पुं.) सिंहासन पर बैठते समय राजपंडित द्वारा राजा का तिलक करने की प्रथा।

राजदंड (पुं.) दे. राजकोरड़ा।

राजधरम (पुं.) 1. राजा का कर्त्तव्य या धर्म, 2. शासन विशेष का धर्म। **राजधर्म** (हि.)

राजधानी (स्त्री.) दे. रजधान्नी।

राजनपाना (पुं.) राजगीर का नपाई गज।

राजपूत (पुं.) राजपूत जाति का व्यक्ति; (वि.) वीर, साहसी।

राजपूतणी (स्त्री.) दे. रजपूतणी।

राज-बना (पुं.) दूल्हा (राजा के समान), बन्ना।

राजबहा (पुं.) दे. रजबहा।

राजभक्ति (स्त्री.) राज्य या राजा के प्रति भक्ति या प्रेम।

राजभवन (पुं.) राजा का महल।

राज-भोग (पुं.) राजसी ठाट-बाट।

राजमहल (पुं.) राजा का महल।

राजयोग (पुं.) ग्रहों का ऐसा योग जिनके जन्म-कुंडली में पड़ने से मनुष्य राज-भोग भोगता है।

राजरीत (स्त्री.) राजा की रीति।

राजसूय (पुं.) सम्राट पद के अधिकारी राजा द्वारा किया जाने वाला एक यज्ञ।

राजस्तान (पुं.) 1. राजे-रजवाड़ों का देश, राजपूताना, 2. वर्तमान राजस्तान प्रदेश। **राजस्थान** (हि.)

राजस्थान (पुं.) दे. राजस्तान।

राजहंस (पुं.) एक पक्षी विशेष।

राजा (पुं.) दे. राज्जा।

राजा करण (पुं.) दानवीर राजा कर्ण; **~का बखत** 1. दान-पुण्य का समय, 2. प्रातःकाल का समय, 3. भजन-पूजा की बेला।

राजाधिराज (पुं.) शाहंशाह, राजाओं का राजा, सम्राट।

रा जाम्मण (स्त्री.) श्रेष्ठ प्रकार की जामुन का फल। **राय जामुन** (हि.)

राजी (स्त्री.) दे. राज्जी।

राजीड़ा (पुं.) 1. पति, 2. दूल्हा (गीतों में प्रयुक्त)।

राजीनामा (पुं.) दे. राज्जीनाम्माँ।

राज्जा (पुं.) 1. प्रजा-पालक, 2. शासक, 3. हिंदू शासक, 4. स्वामी, मालिक, 5. एक सम्मानित उपाधि, 6. एक सम्मान बोधक शब्द, 7. पति, 8. पुत्र, 9. डोम; (वि.) 1. मस्त, 2. हठी। **राजा** (हि.)

राज्जी (स्त्री.) 1. इच्छा, मरजी–तेरी के राज्जी सै ?, 2. खुश; (वि.) सुखी;

~**करणा** 1. मना लेना, 2. प्रसन्न करना; **~-खुशी** 1. प्रसन्नतापूर्वक, 2. हाल-चाल, जैसे–राज्जी-खुशी बूझणा; **~-बोल** 1. प्रसन्न चित्त, 2. मीठी वाणी–1. कदे राज्जी बोल बी राख्या कर, 2. तेरा बोल (बोलता) राज्जी सै ?; **~राखणा** मनाए रखना, अनुकूल रखना; **~होणा** 1. प्रसन्न होना, 2. स्वस्थ होना–छोहरा बिमार चाल रहया था वो राज्जी होग्या के नाँ?, 3. अनुकूल होना। **राजी** (हि.)

राज्जीनाम्माँ (पुं.) राजीनामा, आपसी समझौता।

राट्ठी (पुं.) 1. एक जाट गोत, 2. गूजरों का एक गोत। **राठी** (हि.)

राट्ठोड़/राट्ठोर (पुं.) राजपूतों का एक गोत। **राठौर** (हि.)

राठ (पुं.) धनवान, रंक का विलोम।

राठी (स्त्री.) मेवाती की एक उप-बोली; (पुं.) दे. राट्ठी।

राठौर (पुं.) दे. राट्ठोड़।

राड़ (स्त्री.) 1. तकरार, 2. मौखिक वाद-विवाद या झगड़ा, 3. दिमाग़-पच्ची; **~करणा/रोपणा** झगड़ा या तकरार करना; **~जागणा** तकरार शुरू होना; **~निभाणा** 1. झगड़ा चालू रखना, 2. प्रतिशोध निभाना; **~होणा** ज़िद-बिद होना।

राड़ा (पुं.) दे. राड़।

राढ (स्त्री.) दे. बहलाँ।

राणा (पुं) 1. एक जाट गोत, (दे. जटराणा), 2. राजा, 3. राणा प्रताप सिंह (ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को इनकी जयंती मनाई जाती है)।

राणी (स्त्री.) राजा की पत्नी; (वि.) 1. शौक़ीनी से रहने वाली, 2. स्वामिनी, 3. प्रेयसी। **रानी** (हि.)

राणी खेत (पुं.) मुर्गी को होने वाला चेचक रोग।

रात (स्त्री.) 1. रात्रि, 2. अँधेरे का समय, 3. अंधकार, 4. अन्याय; **~करणा** 1. देर करना, 2. अन्याय करना; **~(-त्यूँ) रात** रातोंरात, रात-भर; **~पड़णा** रात्रि होना; **~पाड़णा** 1. अंधकार हटाना, 2. अलौकिक कार्य करना; **~होणा** 1. अन्याय होना, 2. आँखों के सामने अंध कार छाना।

रात चीतणा (क्रि.) दीवार पर मांगलिक चिह्न बनाना।

राद्धा (स्त्री.) 1. श्रीकृष्ण की प्रेयसी, 2. श्रीकृष्ण की सखी, 3. श्रीकृष्ण की मामी–माम्मी भतीजे का नात्ता, किरसण का प्यार सुण्या होगा (लो. गी.)। **राधा** (हि.)

राध (स्त्री.) मवाद।

राधा (स्त्री.) दे. राद्धा।

राधावल्लभ (पुं.) श्रीकृष्ण।

राधिका (स्त्री.) दे. राद्धा।

रान (स्त्री.) 1. साँथल, साँथल के पट, पट, 2. जाँघ; **~दाबणा** घोड़ा दौड़ाते समय घोड़े को पटों से दाबना।

राना (पुं.) दे. राणा; (वि.) दे. रान्ना।

रानी (स्त्री.) दे. राणी।

रान्ना (स्त्री.) 1. बिना बोए उगने वाली (जंगली फसल), 2. स्वामी-हीन (पशु), (दे. सून्ना[2]) 3. उद्दंड, 4. बेलगाम, 5. बेकार; **~करणा** लगाम ढीली करना, स्वतंत्रता देना; **~छोडणा** मुक्त करना, पशु को जंगल में छोड़ देना। **राना** (हि.)

रापट रोळा (पुं.) दे. रमझोल।

रापड़ी (स्त्री.) दे. बसाक्खी[1]; (क्रि.अ.) 'रापड़णा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिंग. रूप, (दे. राप्पड़)।

राप्पड़ (वि.) बीजने के बाद वर्षा होने के कारण अंकुरित न होने वाली खेती; **~तोड़णा/मारणा** रापड़ के खेत में काँटेदार छड़ी या भेड़-बकरियाँ घुमा कर पपड़ी तोड़ना ताकि अंकुरण संभव हो सके। **रापड़** (हि.)

राप्पी (स्त्री.) दे. रंपी।

राफड़णा (क्रि. स.) 1. फेंटना, किसी द्रव-पदार्थ या दही आदि को हाथ से फेंटना, 2. धर-दबोचना, झपटना। **रफड़ना** (हि.)

राब (स्त्री.) औंटा कर गाढ़ा किया हुआ रस।

राबड़ी (स्त्री.) जौ, चने, गेहूँ आदि के आटे को खट्‌टी छाछ (सीत) में घोल कर मिट्‌टी की हंडिया में कढ़ी के समान उबाल कर बनाया गया तरल खाद्य-पदार्थ (अवलेह) जो कुछ उन्मादक भी होता है, [यह ग्रामीण जनता का ग्रीष्म-ऋतु की रात्रि का मुख्य भोजन तथा प्रातराश है, इसे टीकड़े (दे. टीकड़ा) और सीत के साथ रुचि से खाया-पीया जाता है]; **~(-ड़ियाँ) का बखत** 1. गोधूलि वेला से कुछ पहले का समय, 2. कलेवे का समय; **~-रोट्‌टी** भोजन, राबड़ी-रोटी का भोजन।

राब्बड़ (पुं.) दे. राबड़ी।

राम (पुं.) 1. ईश्वर, भगवान, 2. नियंता, 3. श्री राम चंद्र, 4. प्राण, शक्ति– खात्याँ-पीम्त्याँ क्यूँ तेरा राम लीकड़ रह्या सै ?, 5. आकाश, 6. मन, 7. आश्चर्य या प्रायश्चित बोधक शब्द; **~करणा/कहणा** प्रायश्चित करना; **~की सूँह** भगवान की सौगंध; **~खुल्हणा** आकाश खुलना; **~-चोणा** जंगली पशु; **~जागणा** अंतर्मन जगना; **~दीखणा** 1. भविष्य नज़र आना, 2. बादल छँटना; **~नाँ स्याम** 1. मुँह से कुछ न कहना, गुमसुम रहना, 2. अभिवादन न करना; **~पाटणा** 1. असाधारण घटना घटित होना, 2. बादल छँटना; **~बुलावा** मृत्यु का बुलावा, मृत्यु का समय; ~ **~आणा** मृत्यु-काल आना; **~मनाणा** 1. अपने देवी-देवता का स्मरण करना, 2. कार्य को आरंभ करने से पूर्व भगवान का स्मरण करना, 3. ईश्वर का धन्यवाद देना, 4. अशुभ घड़ी टलने पर दान- पुण्य करना, 5. राम-रमी करना; **~रूसणा** भाग्य विपरीत होना, आपत्ति पर आपत्ति आना; **~लागणा** अँघाई लगना; **~समरणा** 1. माला जपना, 2. (दे. राम मनाणा)।

राम कहाणी (स्त्री.) 1. दुःख-सुख भरी कहानी, 2. आप बीती लंबी कथा। **राम कहानी** (हि.)

रामकिशन व्यास (पुं.) (1925-2003) नारनौंद (हिसार) के साँगी।

रामचंदर (पुं.) 1. श्री रामचंद्र जो अयोध्या के राजा हुए, 2. भगवान राम।

रामचंद्र (पुं.) दे. रामचंदर।

राम चौणा (पुं.) जंगली पशुओं का झुंड। दे. चोणा।

राम जी (पुं.) राम, ईश्वर, भगवान; **~की गा** 1. हरे रंग का एक टिड्‌डा विशेष, 2. दया का पात्र, 3. भोला-भाला।

रामदासी (पुं.) एक अनुसूचित जाति।

राम-दुहाई (स्त्री.) 1. राम की साक्षी या सौगंध, 2. क्षमा-याचना करने का भाव, 3. बुरा काम न करने की प्रतिज्ञा।

रामनवमी (स्त्री.) दे. रामनोम्मीं।

राम-नाम (पुं.) 1. राम का नाम, 2. स्मरण करने योग्य नाम, 3. सत्य का प्रतीक नाम; **~का** 1. भगवान के नाम पर किया दान-पुण्य, 2. कहने मात्र को—साग मैं राम नाम का नूँण कोन्या।

रामनामी (स्त्री.) दे. रामनाम्मीं।

रामनाम्मीं (वि.) राम का नाम रटने वाला, भक्त; (स्त्री.) रामनामी, गले का दुपट्टा जिस का स्थान-स्थान पर राम-नाम छपा हो।

राम नोम्मीं (स्त्री.) 1. चैत्र शुक्ल नवमी (श्री रामचंद्र जी की जन्म-तिथि), 2. गले का एक आभूषण विशेष जो कई शृङ्खलाओं का बना होता है जिसमें तीन-तीन इंच के अंतर पर सोने की टिक्की लगी होती है। **रामनवमीं** (हि.)

रामनौमी (स्त्री.) दे. राम नोम्मीं।

रामफड़ (पुं.) छोटा सुहागा।

रामबड़ (क्रि.) बिना बाहे सुहागा फेरना।

रामबाण (पुं.) अचूक ओषधि।

रामरमीं (स्त्री.) 1. प्रणाम, नमस्कार, अभिवादनद्योतक शब्द, 2. राजी-खुशी का संदेश जो मौखिक रूप से भेजा जाता है, 3. विदाई के समय प्रयुक्त अभिवादन, जैसे—मेरी-तेरी रामरमीं, 4. सदा के लिए संबंध-विच्छेद करते समय प्रयुक्त शब्द, जैसे—मेरी, तेरी आखरी रामरमीं, 5. रामनामी (चद्दर); **~तारणा** 1. संदेश पहुँचा देना, 2. उलाहना उतारना; **~देणा** 1. संदेश भेजना, 2. राजी-खुशी का समाचार भेजना, 3. चुनौती भेजना; **~बाँचणा** रामरमीं कहना; **~होणा** 1. मुलाक़ात होना, 2. अंतिम विदाई होना।

रामरमैया (स्त्री.) दे. रामरमीं।

राम-रस (पुं.) (प्राण ?)—माळी की का राम रस लेग्या री पपैहिया (लो.गी.); **~लीकड़णा** उत्साह-हीन होना; **~लेणा** 1. आनंद लूटना, 2. मैथुन करना।

राम-रसोई (स्त्री.) 1. अनंत भंडारा, 2. वह रसोई जहाँ स्वादिष्ट से स्वादिष्ट व्यंजन बनते हों।

राम रा (पुं.) राम रा (पंडारा), कुरुक्षेत्र-पेहवा के निकट एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ भगवान परशुराम ने पृथ्वी को इक्कीस बार दुष्ट क्षत्रियों से विहीन करने के बाद अपना फरसा धोया बताते हैं (यहाँ पवित्र कुंड के तट पर परशुराम का मंदिर है)। **रामहृद** (हि.)

रामराय (पुं.) एक तीर्थ। दे. राम रा।

रामराज (पुं.) 1. ऐसा सुखद राज्य जिसमें किसी को कोई कष्ट न हो, 2. ऐसा राज्य जहाँ मनुष्य स्वेच्छा से जीवन बिता सके; **~बैठणा** प्रजा में सुख-चैन के दिन आना।

रामराज्य (पुं.) दे. रामराज।

राम-राम (स्त्री.) 1. मिलन अथवा विदाई के समय प्रयुक्त नमस्कार, प्रणाम आदि का बोधक अभिवादन शब्द, 2. आश्चर्य बोधक शब्द, 3. प्रायश्चित बोधक शब्द, 4. व्यंग्य बोधक शब्द; **नए चाँद की ~** 1. नवचंद्र दर्शन पर चंद्रमा को प्रणाम करना, 2. विचित्र घटना पर आश्चर्य प्रकट करना; **~स्याम-स्याम** राम-राम श्याम-श्याम, प्रणाम, (कार्यनिवृत्ति के समय किया गया प्रणाम)।

रामरुखाळा (पुं.) 1. राम-रूपी रक्षक, 2. भगवान-भरोसे की बात; **~(-ळै) करणा/छोडणा/होणा** भगवान-भरोसे होना।

रामरोळा (पुं.) 1. चर्चा, 2. काम-चलाऊ स्थिति–हो तै गया किमैं रामरोळा; **~होणा** चर्चा चलना।

रामलील्ला (स्त्री.) 1. दशहरे के दिनों में प्रदर्शित राम के चरित्र की झाँकी, 2. संसार, 3. मोह-माया, 4. स्वाँग, अभिनय; **~भरणा/लागणा/होणा** दशहरे का मेला लगना।
रामलीला (हि.)

राम सुमरणी (स्त्री.) माला, जपमाला; **~लेणा** माला जपना।
रामसुमरनी (हि.)

रामाँण (स्त्री.) 1. राम की कथा, 2. लंबी गाथा या चर्चा; **~बाँचणा** रामायण का पाठ करना। **रामायण** (हि.)

रामाँ-भई-रामाँ (पुं.) तौलते समय पहले तौल की संख्या के लिए प्रयुक्त शब्द (जो संभवत: तौल में सत्यता बरतने या तौल में बरकत होने का द्योतक है)।

रामानंदी (वि.) रामानंदी अखाड़े का (साधु); (पुं.) भक्त, रामभक्त।

रामायण (पुं.) गूजरों का एक गोत; (स्त्री.) दे. रामाँण।

राम्माँ-किसनी (स्त्री.) 1. अभिवादन करने का भाव, 2. संक्षिप्त मुलाक़ात, 3. संक्षिप्त परिचय; **~राखणा** मेल-मिलाप बनाए रखना; **~होणा** संक्षिप्त मिलन होना।

राय (स्त्री.) दे. रा।

रायता (पुं.) साग या बूँदी आदि पड़ी दही।

रायबहादुर (पुं.) 1. अंग्रेज़ों द्वारा दी जाने वाली एक उपाधि, 2. सम्मानित व्यक्ति।

रायसाहब (पुं.) दे. रा साहब।

राल (स्त्री.) दे. राळ।

राळ (स्त्री.) 1. पतला लेसदार थूक, 2. लेसदार चिपचिपा द्रव, 3. पीपल पर लगने वाला द्रव, 4.लाख; **~आणा/टपकणा/चालणा** 1. मुँह में पानी भर आना, 2. रोग के कारण मुँह से लार गिरना; **~गेरणा** 1. पागलपन की स्थिति में मुँह से लार टपकना, 2. जूठा करना; **~छूटणा/पड़णा/ होणा** बासी होने की स्थिति में भोजन से लंबे तार निकलना। **लार** (हि.)

राळा (पुं.) पुराना गुड़ जो तरल होकर बह निकलता है (इसे तंबाकू या अन्य ओषधि में भी काम लाया जाता है), (तुल. लाट्टा)।

राळी (स्त्री.) 1. बाजरे को भिगोने तथा कूटने के बाद उसे छड़ते या फटकारते समय निकलने वाला बूर या छिलका, 2. बूर; **~तारणा** बाजरे की खिचड़ी बनाने से पूर्व उसका छिलका उतारना ताकि खिचड़ी में कड़वाहट या तलकपन न रहे।

राळू (वि.) जिसके मुँह से लार टपकती रहे।

राव (पुं.) 1. अहीर जाति के व्यक्ति के लिए प्रयुक्त सम्मानबोधक शब्द, 2. अहीर जाति के लोग, 3. अहीर, 4. सामंत, 5. सम्मानित व्यक्ति, 6. ब्राह्मणों का एक अल्ल, 7. राजा; (वि.) श्रेष्ठ।

रावटी (स्त्री.) चौबारा।

रावटड़ी (स्त्री.) दे. रावटी।

रावड़ा (पुं.) दे. रावण।

रावण (पुं.) लंका का राजा जिसने सीताजी का हरण किया था; (वि.) दुष्ट, राक्षसी मनोवृत्ति का।

रावत (पुं.) 1. एक जाट गोत, 2. एक अहीर गोत।

रावळ (पुं.) 1. राजा 2. सामंत, 3. राज-पुत्र। **रावल** (हि.)

रावळा (वि.) दे. बाँक्का-बावळा।

रावळी (स्त्री.) राजकुमारी, राज-पुत्री।

रावसहाब (पुं.) 1. सम्मानित व्यक्ति के लिए प्रयुक्त शब्द, 2. अहीर जाति के लिए प्रयुक्त आदर-सूचक शब्द, 3. राजा, 4. सामंत, (दे. राव)। **राव साहिब** (हि.)

राशि (स्त्री.) 1. दे. रास[2], 2. दे. रास[3], 3. दे. रास्सी।

राष्ट्र (पुं.) 1. राज्य, देश, मुल्क़, 2. प्रजा, 3. एक देश में रहने वाला जन-समुदाय।

राष्ट्र-गान (पुं.) राष्ट्र द्वारा अपनाया गया गान।

राष्ट्र-ध्वज (पुं.) राष्ट्र का ध्वज।

राष्ट्रपति (पुं.) प्रजातांत्रिक शासन-प्रणाली का राज-अध्यक्ष, प्रेज़ीडेंट।

रास[1] (स्त्री.) 1. रस्सी, 2. लगाम, 3. बागडोर; **~खींचणा** कठोर अनुशासन रखना; **~छोडणा** मुक्त करना; **~ढील्ली करणा** अनुशासन में ढील देना; **~पाकड़णा** जिम्मादारी सँभालना।

रास[2] (स्त्री.) 1. ज्योतिष की राशि, जैसे–मीन, मेष आदि, 2. भविष्यफल, 3. स्वभाव; **~बताणा** भविष्यफल बताना; **~बैठणा** 1. राशि या स्वभाव मिलना, 2. अनुकूल होना, 3. काम बनना; **~मिलणा** 1. एक ही राशि के होना, 2. स्वभाव मिलना। **राशि** (हि.)

रास[3] (स्त्री.) 1. ढेरी, 2. खलियान में लगा अन्न का ढेर, 3. धन-संपत्ति; **~करणा** खलियान में भूसे से अन्न अलग करना; **~ठाणा** खलियान से अन्न उठाना; **~बरसाणा** खलियान में अन्न बरसाना ताकि वह भूसा-रहित हो जाए। **राशि** (हि.)

रास[4] (पुं.) 1. स्वाँग, 2. एकशृंगार-प्रधान नृत्य, 3. कृष्ण-लीला से संबंधित नृत्य, 4. लास्य नृत्य; **~भरणा** स्वाँग भरना; **~रचणा** 1. स्वाँग भरना, 2. कपटपूर्ण व्यवहार करना।

रास[5] (वि.) अनुकूल; (पुं.) रहस्य; **~आणा /पड़णा** अनुकूल होना।

रासणा (क्रि. अ.) अनुकूल होना; (क्रि. स.) अनुकूल करना।

रासमंडली (स्त्री.) दे. रासमँडळी।

रासमँडळी (स्त्री.) रासमंडली, रास करने वालों की टोली।

रासलीला (स्त्री.) दे. रासलील्ला।

रासलील्ला (स्त्री.) 1. कृष्ण-लीला, 2. स्वाँग, 3. ढोंग, बनावटी व्यवहार (व्यंग्य में)। **रासलीला** (हि.)

रासा (पुं.) दे. रास्सा।

रासाहब (पुं.) अंग्रेज़ों द्वारा दी जाने वाली एक मानद उपाधि। **रायसाहिब** (हि.)

रास्ता (पुं.) 1. दे. रस्ता, 2. दे. राह।

रास्सण (पुं.) 1. सरकार द्वारा सीमित मात्रा में वितरित वस्तु, जैसे–अन्न, वस्त्र, सीमेंट आदि, 2. खाद्य- सामग्री; **~कारड** राशन कार्ड, वह पुस्तिका जिसमें राशन में मिली वस्तु अंकित की जाती है; **~-पाणी** राशन-पानी, खाद्य-साम्रगी। **राशन** (हि.)

रास्सा (पुं.) 1. झगड़ा, झंझट, 2. रोने-पीटने, चीखने या चिल्लाने का भाव, 3. दुविधापूर्ण स्थिति, 4. रहस्य; **~करणा** 1. झगड़ा खड़ा करना, 2. वाद-विवाद खड़ा करना, 3. रो-रो कर मुसीबत खड़ी करना, 4. जान को झंझट खड़ा करना, 5. बनावटी स्थिति रच कर किसी को प्रभावित करना, 6. ढोंग रचना, स्वाँग भरना; **~चालणा** लंबा झगड़ा चलना; **~पड़णा** व्यवधान उत्पन्न होना; **~रचणा** 1. ढोंग रचना, स्वाँग रचना, 2. बात को बढ़ा-चढ़ा कर वर्णित करना, 3.बात को रहस्यपूर्ण या चमत्कारी ढंग से प्रस्तुत करना, 4. जान-बूझ कर झगड़ा मोल लेना; **~राखणा** सदा झगड़े की स्थिति बनाए रखना, घर में कलह रखना; **~रोपणा** 1. झगड़ा खड़ा करना, 2. साँग, नाटक, रास आदि की व्यवस्था करना; **~समझ मैं आणा** रहस्य समझ में आना, भेद खुलना; **~सुळझणा** विवाद का हल निकलना; **~होणा** 1. झंझट होना, 2. उलझनपूर्ण स्थिति उत्पन्न होना। **रासा** (हि.)

रास्सी (स्त्री.) 1. ज्योतिष की राशि, जैसे-मीन, मेष आदि, 2. (दे. रास[2, 3]); (क्रि. अ.) 'रासणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिंग रूप; **~भिड़ाणा /मिलाणा** 1. ताल-मेल बैठाना, 2. समझौता कराना। **राशि** (हि.)

रास्सो (पुं.) दे. रास्सा।

राह (पुं.) 1. मार्ग, रास्ता, 2. प्रथा, 3. नियम, 4. उपाय; 5. लीक; (क्रि. स.) 'राहणा' क्रिया का आदे. रूप; **~आणा** 1. उपाय मिलना, 2. सुमार्ग पर आना, 3. गंतव्य का पता होना। **~कढणा/गरेणा/बणाणा** 1. प्रथा पड़ना, 2. उपाय मिलना, 3. मार्ग-प्रशस्त होना; **~करणा** 1. राही डालना, आने-जाने का रास्ता बनाना, 2. अगली पीढ़ी के लिए मार्ग-प्रशस्त होना; **~-कुराह** अच्छा-बुरा मार्ग; **~~चालणा** कुमार्ग अपनाना; **~चालणा** 1. बाट चलना, यात्रा करना, 2. किसी मार्ग पर अधिक यातायात होना, 3. काम से मतलब रखना, 4. सुमार्ग अपनाना; **~रोकणा** 1. मार्ग अवरुद्ध करना, 2. बाधा उत्पन्न करना, 3. निरुत्तर करना, 4. झगड़ा मोल लेना, 5. शत्रु को घेरे में डालना, 6. सार्वजनिक मार्ग को बंद कर देना, 7. छिद्र बंद करना; **~लाणा** 1. काम-धंधे लगाना, 2. ठिकाने लगाना, 3. सुमार्ग पर लगाना; **~साधणा** मार्ग-प्रशस्त करना; **~सिर** 1. तरीके से, सलीके से, उचित मार्ग पर; **~~की बात** उचित बात, नियमानुसार बात; **~~चालणा** ठीक मार्ग अपनाना; **~होणा** 1. उपाय मिलना, 2. मार्ग खुलना, 3. फुंसी में छिद्र होना, 4. लीक पड़ना।

राह-गोंड्डा (पुं.) 1. राह-गोंडा, मार्ग, 2. उपाय; **~करणा** उचित उपाय करना; **~लीकड़णा** उपाय निकलना; **~होणा** समस्या का समाधान निकलना।

राह चालता (पुं.) 1. पथिक, 2. अपरिचित; (वि.) अपरिचित कुल का; **~(-ती) बात** उड़ती-सी बात, निराधार बात, अधसुनी बात; **~मींह** अचानक होने वाली वर्षा।

राहड़ (स्त्री.) दे. राड़।

राहणा (क्रि. स.) शिला को टाँकी से टाँकना, टाँकना।

राहत (स्त्री.) 1. आराम, सुख, 2. तसल्ली, 3. छुटकारा।

राहवा (वि.) (चक्की) राहने वाला, (दे. राहणा)।

राही (स्त्री.) 1. पगडंडी, 2. रास्ता; (पुं.) पथगामी।

राहू (पुं.) 1. एक ग्रह, 2. दुष्ट ग्रह; (वि.) 1. काला, भद्दा, 2. कुटिल।

रिं-रिंवाँट (स्त्री.) 1. बच्चे का रोना, 2. ज़िद, हठ; ~**करणा/मचाणा** रोना-धोना, रोकर ज़िद करना।

रिंवाँटणा (क्रि. अ.) 1. बच्चे द्वारा रो-रोकर किसी बात के लिए आग्रह करना, 2. बच्चे का रह-रह कर रोना, (दे. बिरचणा); (वि.) वह जो रिवाँटे।

रिआयती (वि.) दे. र्याती।

रिकाब्बी (स्त्री.) दे. रकाब्बी।

रिक्शा (पुं.) दे. रिक्सा।

रिक्सा (स्त्री.) साइकिल के तीन पहियों वाला एक वाहन जिसे आदमी खींचता है। **रिक्शा** (हि.)

रिचीक (पुं.) राखी गढ़ी से संबंधित एक ऋषि।

रिच्छा (स्त्री.) रक्षा।

रिछपाल (वि.) रक्षा करने वाला, वीर; (पुं.) श्रीकृष्ण।

रिजक (पुं.) 1. अन्न, भोजन, 2. रोज़ी; ~**हाथ नाँ लगाणा** 1. उपवास करना, 2. भूखा रहना।

रिजका (पुं.) एक हरा चारा।

रिझाणा (क्रि. स.) 1. प्रसन्न करना, 2. अनुकूल करना। **रिझाना** (हि.)

रिझाना (क्रि. स.) दे. रिझाणा।

रिठड़ा (पुं.) 1. रीठे का वृक्ष, 2. इस वृक्ष का फल। **रीठा** (हि.)

रिठाण (स्त्री.) 1. रहने का स्थान, 2. छिपे रहने का स्थान, गुप्त स्थान; ~**टोहणा** गुप्त स्थान का पता लगाना; ~**बताणा** मिलन-स्थल या संकेत- स्थल बताना। **रहठान** (हि.)

रिड़कणा (क्रि. स.) 1. छोटी रई से कम दूध बिलोना, 2. रड़के से झाड़ू लगाना; (क्रि. अ.) भैंस का अरराना या अरड़ाना; (वि.) जो रो-रवाँट करें। **रिड़कना** (हि.)

रिडकणी (स्त्री.) छोटी मथानी, (दे. रई)।

रिड़का (पुं.) 1. दे. रड़का 2. दे. भोकरा।

रिड़णा (क्रि. अ.) लुढ़कना, ऊँचे स्थान से नीचे की ओर फिसलना; (वि.) जो लुढ़क जाए। **रिढ़ना** (हि.)

रिड़ाऊ (वि.) रिड़कने योग्य (दही), वस्तु की इतनी मात्रा जो रिड़की जा सके।

रिड़ाणा (क्रि.) दे. अरड़ाणा।

रितणा (क्रि. अ.) खाली होना। **रितना** (हि.)

रिताणा (क्रि. स.) खाली करना। **रिताना** (हि.)

रिताना (क्रि. स.) दे. रिताणा।

रिपटण (स्त्री.) फिसलन। **रिपटन** (हि.)

रिपटणा (वि.) 1. चिकना (स्थान), 2. अधिक फिसलन वाला; (क्रि.अ.) 1. फिसलना, 2. चरित्र-भ्रष्ट होना, 3. मन चलायमान होना। **रिपटना** (हि.)

रिपोट (स्त्री.) दे. रपोट।

रिफ़ळणा (क्रि. अ.) दे. रीफ़ळणा।

रिफाए-आम सोसायटी (स्त्री.) झज्झर निवासी पं. दीनदयाल शर्मा द्वारा संचालित

एक संस्था जहाँ हरियाणवी, उर्दू आदि की रचनाएँ पढ़ी जाती थीं।

रिमझिम (स्त्री.) 1. जगमगाहट, 2. कपड़े, आभूषण आदि की चमक, 3. बिजली की चमक, 4. वर्षा की बौछार, 5. गहमा-गहमी; **~माचणा** 1. जगमगाहट होना, 2. बिजली की चमक के साथ वर्षा होना; **~होणा** 1. बूँदा-बाँदी होना, 2. जगमग होना।

रियासत्त (स्त्री.) रियासत, रजवाड़ा।

रिराणा (क्रि. अ.) 1. (बच्चे का) रुक-रुक कर रोना, 2. अधिक अनुनय-विनय करना।

रिवाज (पुं.) रस्म।

रिश्ता (पुं.) दे. रिसता।

रिश्तेदार (पुं.) दे. रिसतेदार।

रिश्वत (स्त्री.) दे. रिस्वत।

रिश्वतखोर (वि.) घूस लेने वाला।

रिश्वती (वि.) घूस लेने वाला।

रिस (स्त्री.) दे. रीस।

रिसकणा पिसकणा (क्रि.) दे. घिसटणा।

रिसणा (क्रि. अ.) दे. रसणा।

रिसता (पुं.) 1. संबंध, 2. वैवाहिक संबंध। **रिश्ता** (हि.)

रिसतेदार (पुं.) सगे-संबंधी।

रिसना (क्रि. अ.) दे. रसणा।

रिसलदार (पुं.) घुड़सेना का छोटा अफ़सर। **रिसालदार** (हि.)

रिसालदार (पुं.) दे. रिसलदार।

रिसाला (पुं.) दे. रिसाल्ला[1, 2]।

रिसाल्ला[1] (पुं.) 1. घोड़ों की सेना, 2. फ़ौज। **रिसाला** (हि.)

रिसाल्ला[2] (पुं.) पत्र-पत्रिका, सावधिक पत्रिका। रिसाला (हि.)

रिसाल्लू (पुं.) एक वीर गाथा जिसे जोगी गाते फिरते हैं। **रिसालु** (हि.)

रिसाल्लू-टीब्बा (पुं.) अग्रोहा के निकट रिसालु की स्मृति में बनी थेह (यहाँ सतियों का मंदिर है)।

रिसोळी (स्त्री.) दे. रसोळी।

रिस्पत (स्त्री.) रिश्वत, घूस।

रिहा (वि.) मुक्त, छूटा हुआ, (दे. बरी[1])।

रिहाई (स्त्री.) मुक्ति, छुटकारा, (दे.बरी[1])।

रीं (स्त्री.) रोने-चीखने की ध्वनि; **~-रीं करणा** 1. बच्चे द्वारा रुक-रुक कर रोना, 2. अनुनय-विनय करना।

रींक (स्त्री.) 1. भैंस की आवाज़, 2. चिल्लाहट; (क्रि. अ.) 'रींकणा' क्रिया का प्रे. रूप।

रींकणा (क्रि. अ.) 1. भैंस द्वारा आवाज़ निकालना, 2. बुरी तरह चिल्लाना। **रेंकना** (हि.)

रींगट (पुं.) दे. रींगटा।

रींगटा (पुं.) छोटा बच्चा, छाती या घुटनों के बल चलने वाला बालक।

रींछ (पुं.) भालू; (वि.) जिसके शरीर पर लंबे बाल हों।

रींछला (वि.) लंबे बालों वाला।

रींट (पुं.) नाक का तरल मल (तुल. सिणक)। **रेंट** (हि.)

रींटला (वि.) 1. रेंट वाला, जिसकी नाक से रेंट लटकता रहे, 2. गंदा।

रींट्टू (वि.) दे. रींटला।

रींड (स्त्री.) गर्ज़, ज़रूरत।

री (अव्य.) 1. अरी, स्त्रियों के लिए प्रयुक्त एक संबोधन, 2. संबंध वाचक चिह्न (बाग.); **~भिर** अरी बहन, अरी सखी।

रीजक (पुं.) दे. रिजक।

रीजणा (क्रि. अ.) बार-बार कहना।

रीझणा (क्रि. अ.) 1. प्रसन्न होना, 2. मोहित होना; (वि.) शौक़ीन। **रीझना** (हि.)

रीझना (क्रि. अ.) दे. रीझणा।

रीट्ठा (पुं.) दे. रिठड़ा।

रीठा (पुं.) दे. रिठड़ा।

रीड़ (स्त्री.) दे. सीड़[3]।

रीढ़ (स्त्री.) मेरुदंड।

रीत (स्त्री.) 1. प्रथा, 2. नियम, 3. ढंग; **~काढणा** नई प्रथा निकालना; **~निभाणा** नियम-पालन करना। **रीति** (हि.)

रीता (वि.) दे. रीत्ता।

रीति (स्त्री.) दे. रीत।

रीत्ता (वि.) खाली, विहीन। **रीता** (हि.)

रीत्ती (वि.) रीती, रिक्त; **~दोघड़** खाली दोघड़ (जिसे अपशकुन का लक्षण माना जाता है)।

रीफ्फी (स्त्री.) चारे की धूलि के समान महीन कण (ये शरीर पर खुजली उत्पन्न करते हैं); **~उडणा** 1. नष्ट होना, 2. धूलि उड़ना; **~रोळणा** चारे या सानी से रेतीले महीन कण अलग करना। **रीफी** (हि.)

रीफळणा (क्रि. अ.) प्रसन्न होना, व्यर्थ में प्रसन्न होना (तुल. माँचणा)।

रील (स्त्री.) सिलाई का लिपटा हुआ धागा। दे. पेचक।

रीले (पुं.) दे. चभक।

रीस (स्त्री.) 1. ईर्ष्या, 2. बराबरी, 3. अनुकरण, नक़ल; **~पीटणा** 1. बराबरी करना, 2. नक़ल करना, 3. परिपाटी निबाहना।

रीसमरीस (स्त्री.) ईर्ष्यावश।

रीसला (वि.) रीस करने वाला, ईर्ष्यालु।

रुंड (पुं.) 1. बिना सिर का धड़, 2. ठूँठ।

रुँधणा (क्रि. अ.) 1. छिद्र रुकना, 2. काम में फँसना, 3. अटकना, (दे. रुझणा)। **रुँधना** (हि.)

रुँधना (क्रि. अ.) दे. रुँधणा।

रुआ (पुं.) पुराना घड़ा।

रुआणा (क्रि. स.) 1. रुलाना, 2. सताना, 3. मानसिक कष्ट पहुँचाना। **रुलाना** (हि.)

रुकणा (क्रि. अ.) 1. गति में न रहना, ठहरना, 2. बहाव अवरुद्ध होना, 3. सगाई होना, 4. अँटना, 5. प्रतीक्षा करना, 6. चलता काम बंद होना, 7. जान-बूझ कर किसी कार्य में प्रवृत्त न होना। **रुकना** (हि.)

रुकना (क्रि. अ.) दे. रुकणा।

रुकमण (स्त्री.) 1. श्रीकृष्ण की पटरानी, 2. दुल्हन, बन्नी, 3. पुत्री, 4. सहेली। **रुक्मिणी** (हि.)

रुकवाणा (क्रि. स.) दे. रुकाणा।

रुकवाना (क्रि. स.) दे. रुकवाणा।

रुकाणा (क्रि. स.) 1. रोकना, 2. रोकने के लिए कहना, 3. बंद करवाना। **रुकवाना** (हि.)

रुकावट (स्त्री.) बाधा, (दे. अड़ाँस)।

रुक्का (पुं.) 1. ऊँची आवाज़ से पुकारना, पुकार, 2. संदेश, 3. (दे. ठाड्डू ~ बोलणा); **~देणा** पुकार कर बुलाना; **~पड़णा/माँचणा** 1. मशहूरी फैलना, 2. शोर मचना, 3. ललकार पड़ना, 4. हाहाकार मचना; **~भेजणा** संदेश भेजना; **~मारणा** 1. ऊँची आवाज़ से पुकारना; **~होणा** मशहूरी होना।

रुक्मिणी (स्त्री.) दे. रुकमण।

रुख (क्रि. स.) ओर, तरफ़; (पुं.) चेहरे का भाव।

रुखळवाणा (क्रि. स.) रखवाली का काम अन्य से करवाना।

रुखसत (स्त्री.) छुट्टी।

रुखसार (पुं.) गाल।

रुखाळ (स्त्री.) 1. देखभाल, 2. खेती की देखभाल, 3. रखवाली की मज़दूरी, 4. पहरा; (क्रि. स.) 'रुखाळणा' क्रिया का आदे. रूप; **~आणा** क्रमानुसार गाँव की देखभाल की जिम्मादारी आना; **~करणा** देखभाल रखना, चौकसी रखना; **~चराणा** आरक्षित या संरक्षित खेती चराना; **~मारणा** देख भाल करना–के रुखाळ मारिये सै? **रखवाली** (हि.)

रुखाळणा (क्रि. स.) रखवाली करना।

रुखाला (पुं.) 1. रखवाली करने का भाव, 2. (दे. रुखाळिया)।

रुखाळिया (पुं.) 1. रखवाला, 2. रक्षा करने वाला।

रुखाळी (स्त्री.) रखवाली करने का भाव या क्रिया; (पुं.) रखवाली करने वाला।

रुघनाथ (पुं.) रघुनाथ, रघुवंशी राम।

रुचि (स्त्री.) 1. प्रवृत्ति, लगाव, 2. चाह, 3. स्वाद, 4. खाने की इच्छा।

रुचिकर (वि.) 1. अच्छा लगने वाला, मनपसंद, 2. स्वादिष्ट।

रुजगार (पुं.) व्यवसाय। **रोज़गार** (हि.)

रुजनास (स्त्री.) रौनक।

रुझणा (क्रि. अ.) 1. नाक-कान के छिद्र बंद होना, 2. व्यस्त होना। **रुझना** (हि.)

रुझान (पुं.) झुकाव, प्रवृत्ति, लगाव।

रुटियारी (स्त्री.) 1. हाली की रोटी ले जाने वाली, 2. भिखारिन।

रुठाना (क्रि. स.) दे. रुसाणा।

रुड़णा (क्रि. अ.) 1. लुढ़कना, फ़िसलना, 2. मिट्टी में मिलना।

रुड़ना (क्रि. अ.) दे. रुड़णा।

रुत (स्त्री.) मौसम; **~पै आणा** यौवन पर आना।

रुतबा (पुं.) ओहदा, पद।

रुदरी (स्त्री.) एक धार्मिक पुस्तक जिसका पाठ किया जाता है। **रुद्री** (हि.)

रुद्दर (वि.) भयंकर (रूप); (पुं.) रुद्र देवता। **रौद्र/रुद्र** (हि.)

रुद्रदमन (पुं.) यौधेयों का एक घोर शत्रु (जिसने अपने गिरिनार के शिलालेख में यौधेयों की वीरता की चर्चा की है)।

रुद्राक्ष (पुं.) 1. एक प्रसिद्ध बड़ा वृक्ष, 2. इस वृक्ष के गोल बीज (प्राय: शैव लोग इन बीजों की माला पहनते हैं)।

रुद्री (स्त्री.) दे. रुदरी।

रुधन (पुं) रोना-पीटना; **~करणा/ मचाणा** रोना-पीटना। **रुदन** (हि.)

रुधिर (पुं.) खून, (दे. लहू)।

रुपणा[1] (क्रि. अ.) 1. पुंजिभूत होना, भीड़ लगना, 2. आयोजित होना, 3. वृक्ष लगना या रोपित होना, 4. सामना करना, 5. पशुओं का लड़ाई के लिए भिड़ना; **ठठ~** भीड़ जमना। **रुपना** (हि.)

रुपणा[2] (क्रि.) 1. दे. बूहणा। 2. रुपणा[1]।

रुपया (पुं.) दे. रपैया।

रुपैया (पुं.) दे. रपैया।

रुबा (पुं.) दे. बसाखी।

रुमाल (पुं.) 1. रूमाल, उप-वस्त्र विशेष, 2. पगड़ी (सीमित प्रयोग)।

रुमाल्ली[1] (स्त्री.) आयताकार लंगोटा (तुल. लंगोट)। **रुमाली** (हि.)

रूमाल्ली[2] (स्त्री.) एक प्रकार की हल्की पगड़ी।

रुळणा[1] (क्रि. अ.) 1. खोया जाना, 2. मिट्टी में मिलना, 3. मिट्टी ख़राब होना, 4. दर-दर की ठोकर खाना, 5. रोला जाना, मिट्टी और चारा अलग-अलग होना, 6. (दे. रेह~रेह-माट्टी)। **रुलना** (हि.)

रुळणा[2] (क्रि.) 1. मिलना, मिट्टी में मिलना, 2. नष्ट हो जाना।

रुलना (क्रि. अ.) दे. रुळणा।

रुळाणा (क्रि. स.) 1. मिट्टी में मिलाना, 2. सहलाना, धीमे-धीमे खुजली करवाना, 3. चारे से मिट्टी (रीफ्फी) अलग कराना।

रुलाना (क्रि. स.) 1. दे. रुळाणा, 2. दे. रुआणा।

रुळ्हैत (वि.) घुल-मिल जाने वाला (बच्चा)।

रुसतम (पुं.) पहलवान; (वि.) वीर। **रुस्तम** (हि.)

रुसनाई (स्त्री.) 1. प्रकाश, 2. आँखों की ज्योति, 3. स्याही। **रोशनाई** (हि.)

रुसाणा (क्रि.स.) रुठाना। **रुसाना** (हि.)

रुसावा (वि.) दूसरों को रुठाने वाला।

रुसैया (वि.) बात-बात पर रूठने वाला।

रुह (स्त्री.) 1. आकृति, 2. आत्मा, 3. भूतात्मा; **~आणा** 1. किसी की आकृति में अन्य का आभास होना, 2. भूत आना। **रूह** (हि.)

रुहणा (क्रि.) दे. रुदन।

रुहाळ (पुं.) पशु की चाल, (दे. रह्वाळ); **~पड़णा** 1. आदत पड़ना, 2. समगति पर चलना। **रौहाल** (हि.)

रुहेला (पुं.) दे. रोहेल्ला।

रूँख (पुं.) वह पेड़ जो सघन पत्तियों का न हो, पेड़। **वृक्ष** (हि.)

रूँखड़ा (पुं.) छोटा वृक्ष, कम पत्तों वाला वृक्ष।

रूँग (पुं.) 1. पशु के शरीर के बाल, 2. लोम, बाल; **~खड़े होणा** स्तब्ध होना; **~-रूँग मैं** नस-नस में; ~ **~समाणा** रोंएँ-रोंएँ में समाना। **रोम** (हि.)

रूँगटा (पुं.) रोम, लोम। **रोंगटा** (हि.)

रूँगगा (पुं.) 1. तौल के अतिरिक्त दी जाने वाली वस्तु, 2. बिना पैसे दिए प्राप्त वस्तु, 3. तौल के अतिरिक्त पलड़े को वस्तु की ओर अधिक झुकाने के लिए डाला गया अंश; **~माँगणा** तौल के अतिरिक्त (बिना पैसे दिए अधिकारपूर्वक) कुछ अधिक भाग माँगना। **रूँगा** (हि.)

रूँट (वि.) भद्दी शक्ल वाला; **~-सा** काला-कलूटा।

रूँदणा (क्रि. स.) कुचलना। **रौंदना** (हि.)

रूँधणा (क्रि. स.) 1. अवरुद्ध करना, 2. अटकाव या बाधा उपस्थित करना, 3. आयोजन करना। **रूँधना** (हि.)

रूँधना (क्रि. स.) 1. दे. रूँदणा, 2. दे. रूँधणा।

रूंबा (पुं.) मिट्टी खोदने का उपकरण।

रूँह्ढी (स्त्री.) दे. ऊँड्ढी।

रू[1] (स्त्री.) दे. रुह।

रू[2] (स्त्री.) 1. रुचि। उदा.-मेरी ना इन बात्ताँ में रू सै। (लचं.) 2. रूह।

रूअड़ (पुं.) पुरानी रूई या लोगड़।

रूख (पुं.) दे. रूँख।

रूखा (वि.) 1. नीरस, शुष्क, 3. (दे. लुक्खा)।

रूठना (क्रि. अ.) दे. रूसणा।

रूपंती (वि.) रूपवती, अत्यंत सुंदर (महिला)। **रूपवती** (हि.)

रूप[1] (पुं.) 1. सौंदर्य, 2. ढाँचा, 3. शरीर, 4. वेश, 5. दशा; **~भरणा** बहुरूपिया बनना, वेश बदलना।

रूप[2] (स्त्री.) दे. रूपा।

रूपमान (वि.) रूपवान, (दे. कपसूरत)।

रूपवंत (वि.) रूपवान।

रूपवती (वि.) दे. रूपंती।

रूपवान (वि.) दे. रूपमान।

रूपा (स्त्री.) दे. रूप्पा।

रूप्पा (स्त्री.) चाँदी; (वि.) रूपा-सा श्वेत। **रूपा** (हि.)

रूब (अव्य.) दे. रूबरु।

रूबरू (क्रि. वि.) 1. आमने-सामने, सम्मुख, 2. साक्षी में।

रूम (पुं.) दे. रूँग।

रूमाल (पुं.) दे. रुमाल।

रूल (पुं.) 1. गोल डंडा, 2. सीधी लकीर, 3. राज्य, शासन।

रूळ (स्त्री.) पीड़ा की लहर; **~ऊठणा** घनीभूत इच्छा होना।

रूळिया (पुं.) 1. चक्रवात, 2. आँधी का धूल भरा झोंका, (दे. भभूळिया)।

रूस (पुं.) रूस देश, जहाँ दूसरे विश्व युद्ध में जाट सेना ने अपने रण-कौशल दिखलाए थे; (क्रि. स.) 'रूसणा' क्रिया का प्रे. रूप।

रूसणा (क्रि. अ.) 1. नाराज़ होना, 2. उपेक्षा का भाव प्रकट करना, 3. मकर संक्रांति के दिन बनावटी विधि से रूठना और घर की वधू द्वारा भेंट चढ़ा कर मनाया जाना, (दे. सँकराँत), 4. 'मनणा' का विलोम; (वि.) जो बात-बात पर रूठे। **रूठना** (हि.)

रूसना (क्रि. अ.) दे. रूसणा।

रूस्सी (वि.) रूस देश से संबंधित; (स्त्री.) दे. प्यास।

रूह (स्त्री.) 1. आकृति, 2. आत्मा, 3. जीव, 4. मन, (दे. रुह)।

रूहाळ (स्त्री.) दे. रूह्वाळ।

रेंकणा (क्रि. अ.) दे. रींकणा।

रेंट (पुं.) दे. रींट।

रेंटा (पुं.) दे. हारा।

रें-रें (स्त्री.) बच्चे के रोने का भाव या क्रिया; **~करणा** बच्चे का रह-रह कर रोना।

रे (अव्य.) 1. अरे, 2. तुच्छतासूचक संबोधन, 3. और, तथा, जैसे–सक्कर रे, गुड़ रे, नाज रे।

रेक्खा (स्त्री.) 1. दे. रेख। 2. दे. लकीर।

रेख (स्त्री.) 1. भाग्य-रेखा, 2. हथेली की रेखा, 3. लकीर; **~काढणा** 1. रेखा खींच कर प्रण करना, 2. भविष्यवाणी करना, 3. भूमि पर रेखा खींच कर सोन निकालना, (दे. सोण); **~मेटणा** भाग्य बदलना। **रेखा** (हि.)

रेखा (स्त्री.) दे. रेख।

रेगिस्तान (पुं.) मरु भूमि, (दे. थळी)।

रेघा (पुं.) बारीक मिट्टी।

रेजगारी (स्त्री.) खरीज।

रेजा[1] (पुं.) टूम साफ करने का औजार।

रेजा[2] (पुं.) एक पात्र विशेष।

रेज्जा (पुं.) रेजा, एक वस्त्र विशेष।

रेड़ (स्त्री.) 1. विनाश, 2. टेकड़ा, भूमि का उभरा भाग; **~मारणा** 1. काम बिगाड़ना, 2. नष्ट करना, 3. खेत समतल करना।

रेड़ा (पुं.) 1. टीला, उभरा हुआ भू-भाग, 2. विनाश। दे. मगरी।

रेडियो (पुं.) दे. रेडुआ।

रेडुआ (पुं.) आकाशवाणी यंत्र। **रेडियो** (हि.)

रेड्ढी (स्त्री.) रहँट की बालटियों को जोड़ने वाली कीलें।

रेणी (स्त्री.) चारे के छोटे-छोटे धूलिकण, (दे. रीप्फी)। **रेणु** (हि.)

रेणी-रास (स्त्री.) 1. खलियान की धूली तथा अन्न की ढेरी, 2. बेमेल वस्तु।

रेणुका (स्त्री.) 1. यमुना का रेत, 2. बालू, 3. भगवान परशुराम की माता का नाम।

रेत[1] (पुं.) 1. रेता, बालू रेत, मिट्टी के कण, 2. वीर्य।

रेत[2] (पुं.) एक यंत्र जिससे औज़ारों पर धार लगाई जाती है; ~**लाणा** धार लगाना। **रेती** (हि.)

रेतड़ी (स्त्री.) दे. रेत[2]।

रेतणा (क्रि. स.) रेती की धार पैनी करना।

रेतला (वि.) रेत वाला। **रेतीला** (हि.)

रेता (पुं.) दे. रेत[1]।

रेतीला (वि.) दे. रेतला।

रेत्ता (पुं.) दे. रेत[1]।

रेत्ती[1] (स्त्री.) धार लगाने का एक यंत्र।

रेत्ती[2] (स्त्री.) 1. यमुना रेती, 2. नदी तल की मिट्टी। **रेती** (हि.)

रेबारण (स्त्री.) दे. रहबारी।

रेल (स्त्री.) रेलगाड़ी, लंबी रेलगाड़ी।

रेळ (स्त्री.) मुनादी, डोंडी; ~**फेरणा** 1. मुनादी करना, 2. स्थान-स्थान पर प्रचार करना; ~**मारणा** ऊँचे स्वर में पुकार कर मुनादी करना; ~**होणा** सार्वजनिक स्थानों पर घोषणा होना।

रेळ-ठेळ (स्त्री.) 1. धक्कम-धक्का, 2. अधिकता, प्रचुरता।

रेळणा (क्रि. स.) धीरे-धीरे कुरेदना, (दे. करेळणा)। **रेलना** (हि.)

रेळ-पेळ (स्त्री.) दे. रेल-ठेल।

रेलवाई (स्त्री.) रेलवे, रेल का महकमा।

रेळा (पुं.) 1. धूल भरी हवा का झोंका, 2. बहुलता, आधिक्य; ~**आणा** भीड़ का धक्का आना; ~**ऊठणा** धूल भरी आँध ी का क्षणिक बवंडर उठना।

रेल्ला (पुं.) रेला, धक्का।

रेल्ली (वि.) 1. मिलावटी (घी), (वनस्पति) घी, 2.बनावटी, नक़ली; ~-**घी** वनस्पति घी, 'देसी घी' का विलोम।

रेल्लू (पुं.) 1. अश्लील रागिनी, 2. अरिल्ल या रोला छंद, 3. (दे. कड़का)।

रेवड़ (पुं.) 1. भेड़-बकरियों का झुंड, 2. झुंड, 3. (दे.लेवड़ा)।

रेवड़ा (पुं.) दे. लेवड़ा।

रेवड़ी (स्त्री.) चीनी, गुड़ आदि को तिलों में मिलाकर बनी मिठाई।

रेवाली (स्त्री.) टूम घड़ने की हथौड़ी।

रेशम (स्त्री.) दे. रेस्सम।

रेशमी (वि.) दे. रेसमीं।

रेशा (पुं.) दे. रेस्सा[1]।

रेसमीं (वि.) रेशमी, रेशम का।

रेस्सम (स्त्री.) रेशमी वस्त्र। **रेशम** (हि.)

रेस्सा[1] (पुं.) तंतु। **रेशा** (हि.)

रेस्सा[2] (पुं.) सब्ज़ी, दाल आदि का तरल रस। **रसा** (हि.)

रेह (स्त्री.) 1. क्षार, खार मिली मिट्टी (इससे वस्त्र साफ़ धुलते हैं), 2. (दे. काल्लर[1]); ~-**रेह माट्टी** वीरान माटी, दुर्गति; ~~**करणा** दुर्गति करना।

रेही (स्त्री.) 1. रेह की मिट्टी, चरपरी मिट्टी, (दे. रेह), 2. (दे. रीप्फी)।

रेहड़ुआ (पुं.) दे. रहड़ू।

रेहड़ू (पुं.) दे. रहड़ू।

रै (अव्य.) पुरुष वाचक संबोधन, अरे, हे–1. रै, न्यूँ कर ले, 2. ल्याया था रै?।

रैकारा (पुं.) 'रे'-'रे' कहकर पुकारने का भाव।

रैदास (पुं.) 1. संत रविदास, चमार जाति का एक भक्त (माघ पूर्णिमा को इनकी जयंती मनाई जाती है, इनका समय 1388 ई. से 1518 ई. के आस-पास माना जाता है), 2. चमार (सम्मान बोधक)।

रैदास्सी (वि.) रैदास या रविदास के पंथ को मानने वाले; (पुं.) चमार।

रैन (स्त्री.) 1. रात, 2. अल्प काल।

रैन-बसेरा (पुं.) 1. संसार, 2. घोंसला, 3. घर, 4. क्षणिक निवास, 5. धर्म- शाला।

रैनी (स्त्री.) मादा पशु (अही.)।

रैनो (पुं.) नर पशु (अही.)।

रै-फै (स्त्री.) रेल-पेल, धक्कम-धक्का, धक्का-मुक्की; **~होणा** कहा-सुनी होना।

रै-भै (स्त्री.) वाद-विवाद।

रैयत (स्त्री.) प्रजा।

रैहड़ा (पुं.) दे. रहड़ा।

रैहड़ी (स्त्री.) दे. रहड़ी।

रैहड़ू (पुं.) दे. रहड़ू।

रैहसणा (क्रि.अ.) प्रसन्न होना (कौर.)।

रोंख (पुं.) दे. रूँख।

रोंग (पुं.) दे. रूँग।

रोंगटा (पुं.) दे. रूँगटा।

रोंझ (पुं.) मरुस्थल का काँटेदार वृक्ष। तुल. निम्बार।

रोंतड़ा (वि.) 1. बात-बात पर रोने वाला, 2. चिड़चिड़े स्वभाव का।

रोंस (पुं.) बाग के बीच में छोड़ा गया रास्ता।

रोंसली (स्त्री.) चिकनी, भुरभुरी पीली मिट्टी।

रो (स्त्री.) 1. वर्षा, भारी वर्षा, 2. बाहुल्य, 3. बहाव; **~चाळणा** प्रचलन होना; **~पड़णा** भारी वर्षा होना। **रौ** (हि.)

रोक[1] (स्त्री.) 1. रुकावट, बाधा, 2. प्रतिबंध, 3. नज़र, जादू का प्रभाव, 4. क़ैद, 5. (दे. रोक्कड़); (क्रि.स.) 'रोकणा' क्रिया का आदे. रूप।

रोक[2] (वि.) साक्षात्, प्रत्यक्ष, जैसे–दो रोक, (दो व्यक्ति जो साक्षात् या प्रत्यक्ष हैं)।

रोक[3] (पुं.) दे. रोक्कड़।

रोक-टोक (स्त्री.) 1. मनाही, 2. छेड़छाड़।

रोकड़ (स्त्री.) दे. रोक्कड़।

रोकड़-बही (स्त्री.) वह बही जिसमें नक़द रुपये-पैसे का हिसाब रखा जाता है।

रोकड़ा (पुं.) 1. नक़द रुपया, 2. रोकड़-बही, बही-खाता।

रोकड़िया (पुं.) मुनीम, खजानची।

रोकणा (क्रि. स.) 1. ठहराना, 2. मना करना, 3. लड़की के लिए वर निश्चित करना, 4. चुनौती देना, 5. छेड़छाड़ करना, 6. सार्वजनिक स्थान पर पड़े गोबर को पैर से स्पर्श करके बींधना ताकि उसे और कोई न उठाए, 7. अग्रिम सौदा करना। **रोकना** (हि.)

रोकथाँम (स्त्री.) 1. मनाही, 2. बाधा। **रोकथाम** (हि.)

रोकना (क्रि. स.) दे. रोकणा।

रोक्कड़ (स्त्री.) 1. नक़दी, 2. धन-दौलत, 3. बही, बही-खाता। **रोकड़** (हि.)

रोखोळा (पुं.) दे. रुखाळा।

रोग (पुं.) 1. बीमारी, 2. बुरी आदत;

~**काटणा** 1. पीछा छुड़ाना, 2. अनूठा काम करना।

रोगन (पुं.) दे. रोग्गन।

रोगला (वि.) रोगी, रुग्ण।

रोगी (वि.) दे. रोगला।

रोग्गन (पुं.) रंग का घोल। **रोगन** (हि.)

रोग्गी (वि.) दे. रोगला।

रोज़गार (पुं.) दे. रुजगार।

रोजन (पुं.) दे. रोझन।

रोजनदारी (स्त्री.) दे. ध्याड़ी।

रोजनामचा (पुं.) वह किताब जिस पर प्रतिदिन का हिसाब-किताब या किया हुआ काम लिखा जाता है।

रोज़मर्रा (अव्य.) प्रतिदिन, (दे. रोझ[1])।

रोज़ा (पुं.) दे. रोज्झा।

रोज़ी (स्त्री.) दे. रोज्जी।

रोज्जी (स्त्री.) आजीविका का साधन; ~-**रोट्टी** रोज़ी-रोटी, आजीविका। **रोज़ी** (हि.)

रोज्झन (पुं.) ढक्कन आदि के बारीक छिद्र, छिद्र।

रोज्झा (पुं.) 1. व्रत, उपवास, 2. आपत्ति; ~**टळणा** आपत्ति टलना। **रोज़ा**(हि.)

रोझ[1] (क्रि. वि.) प्रतिदिन। **रोज़** (हि.)

रोझ[2] (पुं.) गाय से कुछ हल्के आकार का पशु (नील गाय) ?।

रोट (पुं.) 1. मोटी रोटी, 2. हनुमान के नाम पर किया जाने वाला निश्चित तौल का दान-पुण्य, जैसे–सवा मण का रोट, 3. अधिक मास वाले महीने में दिया जाने वाला दान; (वि.) मोटे आकार का, जैसे–रोट-सी मळाई; ~**करणा** निश्चित तौल का दान करना; ~**थापणा** मोटी रोटी बनाना; ~-**सा** 1. रोटी-सा मोटा, 2. कठोर, 3. टिकाऊ।

रोटी (स्त्री.) दे. रोट्टी।

रोटीहार (स्त्री.) दे. रुटियार।

रोट्टी (स्त्री.) 1. फुलका, 2. भोजन– आज तेरी रोट्टी उनकै सही, 3. जनेत का भोजन–पहल्याँ जनेत की पाँच रोट्टी थी ईब एक बी ढंगसिर की नाँ रही; ~**का टींट** 1. अस्थायी प्रबंध , 2. अविश्वसनीय स्थिति–गोरमिंट की नोकरी जणू रोट्टी का टींट, कद लुढक ज्या; ~**काढणा** बलिग्रास निकालना; ~-**टूक्का** भोजन; **बाट चाल्ली**~ यात्रा का भोजन। **रोटी** (हि.)

रोट्टी साँट्ठे (पुं.) मात्र भोजन के लिए की जाने वाली नौकरी।

रोठान (स्त्री.) दे. रिठाण।

रोड[1] (पुं.) मोटा ओष्ठ, ओष्ठ; ~**काढणा /लटकाणा** 1. उपेक्षा का भाव प्रकट करना, 2. रोना, रुआँसा होना।

रोड[2] (पुं.) 1. एक जाति जो करनाल के आस-पास है, 2. इस जाति का गोत।

रोड़णा (क्रि. स.) 1. खिचड़ी, दलिए आदि में दबाव के साथ चमचा या कड़छा चलाना, 2. आलोड़न करना। **रोड़ना** (हि.)

रोडला (वि.) दे. रोड्डल।

रोड़ा (पुं.) 1. ईंट, पत्थर आदि का टुकड़ा, 2. बाधा; (क्रि. स.) 'रोड़णा' क्रिया का भू. का., पुं. स्त्रीलिं. रूप।

रोड़ी (स्त्री.) 1. शक्कर की मोटी डली, 2. डली, कंकर; (क्रि. स.) 'रोड़णा' क्रिया का भू. का., पुं. एकव. रूप।

रोड्डल (वि.) लंबे, मोटे ओष्ठ वाला।

रोढ (पुं.) दे. रोट।

रोढ-पंत (पुं.) **हरियाणे का एक संत संप्रदाय।**

रोण[1] (पुं.) 1. **क़ाबू (में), वश, 2. झुकाव,**

3. रोने की क्रिया, 4. (दे. रोणा); **~मैं आणा** वश में आना।

रोण[2] (वि.) 1. रौनक, शोभा, 2. झुंड।

रोणा (क्रि. स.) 1. दुःख, व्यथा प्रकट करना, 2. मृतक को रोना; (क्रि. अ.) रुदन करना; (पुं.) कष्ट खेद–इस्सै बात का तै रोणा सै; **~रोणा** कष्ट-कथा सुनाना। **रोना** (हि.)

रोना (क्रि. अ.) दे. रोणा।

रोपणा (क्रि. स.) 1. आयोजन करना, 2. गहरा बीज बीजना, 3. आच्छादित करना। **रोपना** (हि.)

रोपना (क्रि. स.) दे. रोपणा।

रोब (पुं.) दबदबा, प्रभाव; **~गाँठणा** रोब जमाना।

रोम (पुं.) दे. रूँग।

रोमतड़ा (वि.) बात-बात पर रोने वाला।

रोळ (स्त्री.) 1. खेल में दिया जाने वाला धोखा, 2. अव्यवस्था, 3. खुजली; (क्रि. स.) 'रोळणा' क्रिया का आदे. रूप; **~-खोळ** खेल में की जाने वाली धोखाधड़ी; **~चालणा** खुजली होना; **~मचाणा** 1. ईमानदारी से न खेलना, 2. अव्यवस्था फैलाना; **~माचणा** अव्यवस्था फैलना, नियम-हीनता की स्थिति होना; **~-सोळ** दे. रोळ~खोळ।

रोळणा (क्रि. स.) 1. सहलाना, 2. पुचकारना, 3. हिला-हिलाकर कर बारीक और मोटा चारा अलग-अलग करना।

रोळमंची (स्त्री.) खेल में धाँधली मचाने का भाव; (वि.) रोली करने वाला।

रोला (पुं.) दे. रोळा।

रोळा (पुं.) शोर, रव; **~मचाणा** शोर करना; **~माचणा** 1. कोलाहल होना, 2. जोर-शोर से चर्चा चलना; **~होणा** 1. दंगा-फ़साद होना, 2. शोर मचाना। **रोला** (हि.)

रोळिया (वि.) खेल में छल-कपट करने वाला।

रोली (स्त्री.) दे. रोळी[1]।

रोळी[1] (स्त्री.) एक मांगलिक लाल रंग; (क्रि. स.) 'रोळणा' क्रिया का भू. का. , स्त्रीलिं. रूप। **रोली** (हि.)

रोळी[2] (वि.) दे. रोळिया।

रोवणा (क्रि. स.) रोना; (वि.) हर समय रोते रहने वाला। **रोना** (हि.)

रोश (स्त्री.) क्यारी।

रोशन (वि.) दे. रोस्सन।

रोशनदान (पुं.) दीवार से प्रकाश आने का छिद्र, (दे. मोंक्खा)।

रोशनाई (स्त्री.) मसि, लिखने की स्याही।

रोशनी (स्त्री.) दे. रोसनी।

रोष (पुं.) 1. क्रोध, 2. जोश, 3. विरोध।

रोस (पुं.) दे. रोष।

रोसनी (स्त्री.) रोशनी, प्रकाश।

रोसळी (स्त्री.) दे. रिसोळी।

रोस्सन (वि.) 1. प्रकाशित, 2. प्रसिद्ध, 3. प्रकट।

रोस्सा[1] (पुं.) गूजरों का एक गोत।

रोस्सा[2] (पुं.) 1. दे. रोष, 2. दे. रोस्सा[1]।

रोहण (पुं.) झुंड, (दे. सात्ता-रोहण)।

रोहणी (स्त्री.) 1. एक नक्षत्र, 2. (दे. रोहिणी)। **रोहिणी** (हि.)

रोहतक (पुं.) दिल्ली से लगभग 40 मील पश्चिम में स्थित शहर [जहाँ की बोली, पहनावा, भोजन, आचार-व्यवहार, पंजाब, राजस्थान, ब्रज आदि

से बहुत सीमा तक अमिश्रित है, महाभारत के कथा-पर्व के अनुसार नकुल ने यौधेयों के दुर्ग रोहितकम (रोहतक) को जीता था, जिला गजटियर (पृ. 24) के अनुसार यौवार वंशीय राजपूत राजा रोहितास द्वारा इस नगर की नींव डाली गई थी, 1160 ई. में महाराजा पृथ्वीराज ने इसे फिर बसाया, मुहम्मद बिन कासिम ने इसे उजाड़ दिया, काज़ी सुल्तान मुहम्मद सुर्ख ने इसे पुनः बसाया (ज. सा. 4-10-11), यहाँ रोहीत- रोहीड़े या रीठे के वृक्ष होते थे]; **~वन** रीठों का वन।

रोहतकिया (वि.) 1. रोहतक से संबंधित। 2. रोहतक की भाषा या बोली।

रोहतकी (वि.) रोहतक-संबंधी; (पुं.) रोहतक का निवासी; **~सो कोतकी** रोहतक का व्यक्ति स्वभावतः उग्र स्वभाव का होता है।

रोहतास (पुं.) रोहिताश्व, राजा हरिश्चंद्र का पुत्र।

रोहद (पुं.) जिला रोहतक का एक गाँव जहाँ यौधेयकालीन शिलालेख मिले हैं।

रोह-राट्टा (पुं.) रोना-पीटना; **~माचणा** रोना-पीटना शुरू होना।

रोहली (स्त्री.) दे. रुहाल्।

रोहल्ला (पुं.) बड़ी रोटी। दे. रोट।

रोहा (पुं.) दे. रोहवा।

रोहवा (पुं.) आँख का एक रोग, रोहे, कुकरे।

रोहिणी (स्त्री.) 1. सत्ताईस नक्षत्रों में से चौथा नक्षत्र, 2. वसुदेव की पत्नी जो बलराम की माता थी।

रोहित (स्त्री.) करनाल के पास एक नदी।

रोहिताश्व (पुं.) दे. रोहतास।

रोही (स्त्री.) राज्य। उ. ददरेड़े छाया जित गूंगा की रोही।

रोहेल्ला (पुं.) 1. एक छीपी गोत, 2. एक जाट गोत (?)। **रुहेला** (हि.)

रौंदना (क्रि. स.) दे. रूँदणा।

रौ (स्त्री.) दे. रो।

रौद्र (वि.) दे. रुद्दर।

रौन (वि.) रौनक

रौनक (स्त्री.) दे. रवन्नक।

रौला (पुं.) दे. रोळा।

रौसली (स्त्री.) दोमट, उर्वर भूमि।

र्‌यात (स्त्री.) रिआयत, उदारतापूर्वक दी गई सहायता।

र्‌याती (वि.) रिआयत किया हुआ।

ल

ल व्यंजन वर्ग का अठाईसवाँ वर्ण, जिसका उच्चारण स्थान दंत है, यह अल्पप्राण है, हरियाणवी में अनेक स्थानों पर मध्य तथा अंत की स्थिति में इसका उच्चारण मूर्धन्य ल (ळ) है।

लंक[1] (पुं.) खर्च; **~लागणा** अधिक खर्च होना।

लंक/लंकी (स्त्री.) कमर (चीते सी पतली)। उदा. मालिण कहै थी वैसा ही पाया, तेरा ढंग चीता लंकी का।

लंका (स्त्री.) 1. रावण की नगरी, 2. कलंकित महिला।

लंगड़ (पुं.) दे. लंग्गर।

लंगड़ा (वि.) पैर से अपंग; (पुं.) आम की एक जाति।

लंगड़ाणा (क्रि. अ.) लंगड़ाना, लंगड़ा कर चलना।

लँगड़ाना (क्रि. अ.) दे. लँगड़ाणा।

लंग-मलंग (वि.) 1. लंबा-तगड़ा, 2. विधुर, 3. एकाकी।

लंगर (पुं.) दे. लंग्गर।

लंगड़िया (पुं.) बैलों का वह समूह जो चरने जाता है। दे. च्यौणा।

लँगरिया (पुं.) फ़ौज का रसोइया।

लंगवाड़ा (पुं.) दे. लुंगाड़ा।

लँगार (पुं.) 1. पशुओं का झुंड, झुंड, 2. अटूट पंक्ति, (दे. लारा); **~पड़णा/लागणा** 1. अटूट पंक्ति बनना, 2. भीड़ का निरंतर चलते रहना; **~बधणा** परिवार में सदस्यों की संख्या बढ़ना।

लँगारा (पुं.) 1. पशुओं का छोटा झुंड, 2. (दे. लँगार)।

लँगूर (पुं.) लंबी पूछ और काले मुँह का बंदर विशेष। **लंगूर** (हि.)

लँगोट (पुं.) 1. कौपीन, 2. पहलवान का अधो-वस्त्र। दे. रूमाल्ती।

लँगोट्टा (पुं.) दे. लँगोट।

लँगोट्टी (स्त्री.) 1. बच्चों का अधो-वस्त्र, 2. अधो-वस्त्र; **~तारणा** अपमान करना। **लंगोटी** (हि.)

लंग्गर (पुं.) 1. भोजनालय, सामूहिक भोजनालय, 2. समुद्री जहाज को प्रभंजन से बचाने के लिए रस्से में बँधी भारी कील विशेष, 3. झूल के दोनों ओर बाँधी जाने वाली रस्सी जिसके खींचने से झोटा (दे. झोट्टा[2]) लंबा आए, 4. लंगोट, 5. कच्ची सिलाई, 6. डबोटे के साथ सीया जाने वाला अतिरिक्त वस्त्र, 7. समुद्री जहाज का उपकरण विशेष; **~कसणा** कमर कसना; **~खोल्हणा/टाँकणा** पहलवाली छोड़ना; **~गेरणा** समुद्री जहाज द्वारा पड़ाव डाला जाना; **~घालणा** मोटी सुईं से घघरी में लंगर डालना; **~घुमाणा** कुश्ती के लिए चुनौती देना। **लंगर** (हि.)

लंघ (क्रि. वि.) ओर, तरफ, जैसे–उस लंघ; (क्रि. स.) 'लँघणा' क्रिया का प्रे. रूप।

लँघणा (क्रि. स.) 1. पार करना, 2. छलाँगना, 3. टालना। **लाँघना** (हि.)

लंघन (पुं.) दे. लँघणा।

लँघना (क्रि. स.) दे. लँघणा।

लंघी (स्त्री.) पेशाब, मूत्र; (क्रि. स.) 'लँघणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलि. रूप; **~टाळणा** पेशाब करना।

लंठ (वि.) मूर्ख।

लंठाचारी (पुं.) महामूर्ख।

लंडूर (वि.) 1. बिना पूँछ का, 2. पूँछ कटा पशु। **लँडूरा** (हि.)

लँडूरा (वि.) 1. पूँछ कटा (पशु), 2. वह (मोर) जिसने अपने चंदे डाल दिए हों, 3. ओछा, छोटा।

लँडूरिया (वि.) दे. लँडूरा।

लंढ (पुं.) जननेंद्री। **लिंग** (हि.)

लंप (पुं.) मिट्टी के तेल से जलने वाला प्रकाश दीप। **लैंप** (हि.)

लंबक-लंबा (वि.) लंबोतरा।

लंबर (पुं.) 1. संख्या, 2. संख्या-क्रम, 3. बारी। **नंबर** (हि.)

लंबरदार (पुं.) 1. खेतों के लगान की उगाही करने वाला व्यक्ति, 2. गाँव का मुखिया, 3. सम्मानित व्यक्ति। **नंबरदार** (हि.)

लंबरदारी (स्त्री.) नंबरदार का काम या व्यवसाय। **नंबरदारी** (हि.)

लंबरवार (क्रि. वि.) नंबर या क्रम से, बारी-बारी, क्रमशः। **नंबरवार** (हि.)

लंबरिया (वि.) 1. अपराधी, जिस पर अपराध की धारा लगी हो, 2. दस नंबरी।

लंबरी (वि.) बड़ी; **~ईंट** हाथ से थपी बड़ी और भारी कच्ची ईंट।

लंबलेट (पुं.) लंबायमान होने की क्रिया।

लंबू (वि.) लंबे कद वाला।

लंबेट (वि.) लम्बाई।

लंबो (वि.) लंबे कद की महिला।

लँहघा (पुं.) 1. टखनों तक नीचा स्त्रियों का कटिवस्त्र विशेष, 2. गोटा लगा घाघरा। **लहँगा** (हि.)

लँहढा (पुं.) 1. पशुओं का झुंड, 2. भीड़; **~हाँकणा** पशुओं को सामूहिक चारण के लिए ले जाना।

लई (प्रत्य.) लिए, (दे. लियाँ)।

लकड़ाणा (वि.) लक्कड़ की तरह कठोर होना। दे. लाक्कड़।

लकवा (पुं.) पक्षाघात।

लकीर (स्त्री.) 1. रेखा, रगड़ से बना लंबा चिह्न, 2. प्रथा, 3. भाग्य-रेखा, 4. लक्ष्मण रेखा, 5. मार्ग (तुल. लचकीर); **~काढणा** 1. रेखा खींचना, 2. प्रतिज्ञा करना, 2. बेंधना, जादू-टोना करना; **~खेंचणा** 1. प्रतिज्ञा करना, 2. बेंधना, जादू-टोना करना; **~पड़णा** 1. खरोंच आना, 2. परिपाटी चलना; **~मारणा** तख़्ती, कापी आदि पर रेखा डालना।

लकोणा (क्रि. स.) दे. ल्हकोणा।

लक्कड़ (पुं.) दे. लाक्कड़।

लक्खण (पुं.) 1. आचरण, व्यवहार, 2. भविष्य प्रकट करने वाले आसार, 3. शिक्षा, सीख, 4. शऊर, 5. बाल, केश, 6. कुलक्षण (व्यंग्य में); **~-कुलक्खण होणा** 1. आचार-व्यवहार बिगड़ना, 2. अपशकुन होना; **~खिंढाणा** बाल बखेरना; **~देणा/सिखाणा** अच्छी शिक्षा देना; **~लाणा** 1. अच्छे लक्षण सिखाना, 2. माता-पिता द्वारा लड़की को घर का कार-व्यवहार सिखाना। **लक्षण** (हि.)

लक्खणधारी बाण (पुं.) लक्ष्य भेदी बाण।

लक्खी (वि.) धनी। **लखपति** (हि.)

लक्षण (पुं.) दे. लक्खण।

लक्ष्मण (पुं.) दे. लिछमन।

लक्ष्मी (स्त्री.) दे. लिछमी।

लक्ष्य (पुं.) 1. निशाना, 2. उद्देश्य।

लख-चुरास्सी (स्त्री.) 1. 84 लाख योनियाँ–लख-चुरास्सी जीया जून पै है दिरस्टी भगवान तेरी, 2. संसार, 3. जीवन-मरण गुण वाले (प्राणी); **~चालणा** सृष्टि की निरंतरता बनी रहना; **~जूण** 84 लाख योनियाँ; **~भोगणा** जीवन-मरण को भोगना, मोक्ष न मिलना; **~मैं पड़णा** 1. बार-बार जन्म लेना, 2. कष्ट भोगना। **लख-चौरासी** (हि.)

लखण (पुं.) 1. दे. लच्छण, 2. दे. लखन।

लखणा[1] (क्रि. स.) 1. ताकना, देखना, 2. बुरी निगाह से देखना।

लखणा[2] (क्रि. अ.) रोटी का तवे पर जल कर काली तथा कड़वी होना; (क्रि. वि.) 'लक्खण' का बहुवचन रूप, लक्षणों से–इन लखणा क्यूकर काम चाल्लैगा ?।

लखबार (वि.) लाख बार।

लखमण (पुं.) दे. लिछमन।

लखमीचंद (पुं.) हरियाणे का साँग-सम्राट तथा लेक-कवि जिसके राग-रागिनी जनमानस को पुलकित करते हैं, [इनका जन्म सन् 1901 ई. जाँट्टी कलाँ गाँव (रोहतक), में हुआ, दस वर्ष की आयु में इनका संपर्क भजनानंदी नेत्र-हीन गुरु मानसिंह से हुआ, बालक की कला से प्रभावित होकर मानसिंह ने इनके माता-पिता से इन्हें माँग लिया, 7 वर्ष तक इन्होंने साँग-विद्या सीखी, चार वर्ष तक पं. नेतराम के शिष्य सोहन के अखाड़े में जनानी की भूमिका में काम किया, इन्होंने अपनी साँग मंडली बनाई सन् 1945 ई. में, 42 वर्ष की अवस्था में इनका स्वर्गवास हुआ, इनके लगभग 23 साँग हैं जिनमें मीराबाई, नोटंकी चंद्रकिरण, शाही लकड़हारा, पद्मावत, चापसिंह ज्यानी चोर, नल दमयंती, विराट पर्व आदि प्रमुख हैं, आलोचक इनकी तुलना कीट्स, जायसी आदि से करते हैं]।

लखाणा/लखावणा (क्रि. स.) 1. देखना, 2. कड़ी निगाह से देखना, 3. बुरी निगाह से देखना, 4. ताड़ना, 5. रोटी को अधिक सेंक कर कड़वी कर देना। **लखाना** (हि.)

लखीणा (वि.) 1. लाख रुपये का, बहुमूल्य–लुटण लाग रह्या बाग लखीणा माली भेजिये (लो. गी.), 2. लक्षणों से युक्त, शिष्ट, विनम्र।

लखेरा (पुं.) दे. मणिहार।

लग (अव्य.) तक, पर्यंत; (स्त्री.) कुत्ते को किसी के पीछे लगाने के लिए प्रयुक्त ध्वनि; (क्रि. अ.) 'लगणा' क्रिया का आदे. रूप।

लगत (स्त्री.) 1. लगन, रुचि, 2. कर, टैक्स; (क्रि. वि.) लगे हाथ, साथ-साथ।

लगन (स्त्री.) 1. भाव, रुचि 2. लगाव; (पुं.) 1. विवाह से पूर्व नाई द्वारा लाई गई लग्न-पत्रिका, 2. शुभ मुहूर्त, शुभ घड़ी; **~आणा** 1. कन्या-पक्ष की ओर से नाई द्वारा विवाह की लग्न-पत्रिका लाना, 2. शुभ घड़ी आना; **~बाँचणा** ब्राह्मण द्वारा लग्न-पत्रिका को वर-पक्ष के सम्मुख पढ़ कर सुनाना (इसके बाद सामर्थ्य के अनुसार शक्कर आदि बाँटी जाती है)। **लग्न** (हि.)

लगना (क्रि. अ.) दे. लागणा।

लगभग (क्रि. वि.) प्राय:, अनुमानत:।

लगमाँत (स्त्री.) दे. लगामाँत।

लगमात (स्त्री.) 1. संबंध, 2. निकटता, 3. स्वरमात्रा चिह्न।

लगर-लगर (क्रि. वि.) दे. लपर-लपर।

लगमाँ (वि.) लगे हुए, सटे हुए, पास-पास।

लगवाँ (वि.) दे. लगमाँ।

लगवाणा (क्रि. स.) 1. लगाने का काम दूसरों से करवाना, 2. नौकरी पर नियुक्ति करवाना। **लगवाना** (हि.)

लगवाना (क्रि. स.) दे. लगवाणा।

लगवाळ (स्त्री.) 1. जिसे विशेष लगाव हो, 2. प्रेमी; (पुं.) 1. ग्राहक, 2. पति।

लगा (पुं.) 1. स्नेह, 2. निकटता का भाव; (क्रि. स.) 'लगाणा' क्रिया का आदे. रूप; **~(-गे) हाथ** साथ-साथ। **लगाव** (हि.)

लगाणा (क्रि. स.) लगाना। **लगाना** (हि.)

लगातार (क्रि. वि.) निरंतर।

लगाम (स्त्री.) 1. घोड़े के मुँह की रस्सी, 2. पशु के गले की रस्सी, 3. प्रतिबंध; **~घालणा/मारणा/लाणा** प्रतिबंध लगाना।

लगामाँत (स्त्री.) व्यंजनों के साथ जोड़े जाने वाले स्वर-चिह्न या मात्रा।

लगाम्मीं (स्त्री.) 1. पशु के गले की रस्सी, 2. प्रतिबंध। **लगामी** (हि.)

लगोजा (पुं.) दे. अळगोज्जा।

लग्गा (पुं.) 1. काम को शुरू करने का भाव या क्रिया, 2. सहायता, 3. आदत; **~लाणा** कार्य शुरू करना; **~पाणा** काम-धंधा मिलना।

लघुशंका (स्त्री.) दे. लघूसंका।

लघूसंका (स्त्री.) पेशाब, मूत्र। **लघुशंका** (हि.)

लचक (स्त्री.) 1. झटका, 2. लचकने की क्रिया, (दे. मचक); (क्रि. स.) 'लचकणा' क्रिया का आदे. रूप; **~लागणा** झटका खाना।

लचकण (स्त्री.) घुटनों तक की लंबाई।

लचकणा (क्रि.अ.) लचक खाना; (वि.) जो लचके, लचीला। **लचकना** (हि.)

लचकणी[1] (स्त्री.) घुटनों तक का वस्त्र।

लचकणी[2] (वि.) पतली लचीली कमर।

लचकना (क्रि. अ.) दे. लचकणा।

लचकाणा (क्रि. स.) लचकने में प्रवृत्त करना। **लचकना** (हि.)

लचकाना (क्रि. स.) दे. लचकाणा।

लचकीर (स्त्री.) दे. लकीर।

लचकीला (वि.) दे. लचील्ला।

लचरका (पुं.) 1. झटका, 2. लचरने या लचकने की क्रिया, 3. चरमराने की ध्वनि।

लचर-लचर/लचर-पचर (स्त्री.) वाहन के ढीले कल-पुर्जों से निकलने वाली ध्वनि; (वि.) ढीला-ढाला।

लचार (वि.) लाचार।

लचारी (स्त्री.) लाचारी। **लाचारी** (हि.)

लचीला (वि.) दे. लचील्ला।

लचील्ला (वि.) लचकीला, लचकदार। **लचीला** (हि.)

लच्छण (पुं.) दे. लक्खण।

लच्छा (पुं.) 1. गुच्छा, 2. धागों का गुच्छा।

लच्छे (पुं.) पैरों की चूड़ियाँ विशेष जो एक-दूसरे से लिपटी रहती हैं अलग नहीं होतीं।

लजमार्‌या (वि.) निर्लज्ज। **लजमारा** (हि.)

लजाणा (क्रि. अ.) लज्जित होना; (क्रि. स.) लज्जित करना।

लजाना (क्रि. अ.) दे. लजाणा।

लजावा (वि.) 1. लजाने वाला, (नाम को) लज्जित करने वाला, 2. निर्लज्ज।

लज्जा[1] (स्त्री.) दे. लाज।

लज्जा[2] (स्त्री.) एक पौराणिक स्त्री पात्र। दे. लाज।

लट (स्त्री.) 1. सिर के बालों का गुच्छा, 2. साधु के बालों की लट, 3. अन्न आदि में पड़े छोटे-छोटे कीड़े विशेष (दे. पिड़ाई); **~पड़णा** 1. बालों के गुच्छे बनना, 2. खाद्यान्न में छोटे कीड़े पड़ना।

लटकण (पुं.) 1. नाड़ा, 2. फुँदना, 3. थन; 4. एक आभूषण; (वि.) वह जो लटके। **लटकन** (हि.)

लटकणा (क्रि. अ.) 1. झूलना, 2. अध बीच रहना, 3. कार्य संपन्न न होना, 4. फाँसी पर चढ़ना। **लटकना** (हि.)

लटकना (क्रि. अ.) दे. लटकणा; (वि.) वह जो लटकता है।

लटका (पुं.) 1. जादू-टोना, 2. बनावटी हाव-भाव, 3. नींद की झपकी, 4. सरल उपाय, 5. मज़ा, 6. रंजक उक्ति; (क्रि. वि.) लटकता हुआ; **~आणा** नींद की झपकी आना; **~करणा** 'टोटका' करना; **~दिखाणा** करिश्मा दिखाना।

लटकाणा (क्रि. स.) 1. अटकाना, 2. शशोपंज में डालना, 3. विलंब करना। **लटकाना** (हि.)

लटकाना (क्रि. स.) दे. लटकाणा।

लटकावणा[1] (क्रि.स.) अटकाना; (वि.) जो हर काम बीच में लटका दे। **लटकाना** (हि.)

लटकावणा[2] (क्रि. स.) दे. लटकाणा।

लटपट (वि.) 1. लथपथ, 2. उलझा हुआ, 3. गुत्थम-गुत्था होने की स्थिति, 4. मिर्च-मसाले युक्त।

लटपटा (वि.) 1. चरपरा, 2. मसाले-युक्त, स्वादिष्ट।

लटपटाणा (क्रि. स.) लथपथ करना। **लटपटाना** (हि.)

लटरका (पुं.) 1. नींद का लटका, झपकी, 2. जादू-टोना, 3. रंजक उक्ति; **~आणा** नींद की झपकी आना।

लटरम-सटरम (पुं.) 1. स्वादहीन भोजन, 2. व्यर्थ की वस्तुएँ।

लटा (स्त्री.) 1. दे. जटा, 2. दे. लट।

लटूर (पुं.) 1. छोटे बच्चे के बाल, केश, 2. बिखरे बाल।

लटूरिया (पुं.) 1. छोटा बच्चा, 2. जिसके जन्म के बाल नहीं कटे हों, 3. साधु, जटाधारी साधु।

लटूरी (स्त्री.) दे. लटूर।

लटूरो (वि.) बिखरे और अस्त-व्यस्त बालों वाली।

लटोटका (पुं.) टोटका, जादू-टोना।

लटोट्टर (पुं.) दे. लटोटका।

लटोरा (पुं.) जवार बाजरे की बाली पर लगने वाला एक हानिकारक सफेद बूर या बुरादा।

लट्टी (स्त्री.) 1. लच्छी, 2. धागे, सूत आदि की लच्छी।

लट्टू (पुं.) 1. रस्सी से घुमाया जाने वाला एक खिलौना, 2. फिरकी; (वि.) मोहित या मुग्ध; **~होणा** मुग्ध होना।

लट्ठ (पुं.) 1. मोटी लकड़ी, 2. शक्ति; (वि.) मजबूत; **~आणा** आफ़त आना; **~करणा** आफ़त करना; **~के ताण** शक्ति के बल पर; **~-सा** मज़बूत; **~~मारणा** करारी या स्पष्ट बात कहना; **~-मोग्गर** 1. अनपढ;, 2. अनगढ़ लाठी; **~होणा** 1. शक्ति होना, 2. मुसीबत होना। **लाठी** (हि.)

लट्ठबाज (पुं.) दे. लठैत।

लट्ठ मार (वि.) 1. स्पष्ट वक्ता, चुभती बात कहने वाला, 2. मज़बूत; **~बोल्ली** करारी बोली, कर्कश बोली, जाटू बोली; **~सोद्दा** 1. बिना लुकाव-छिपाव की बात, हर प्रकार से स्पष्ट कार्य, 2. शक्ति के बल पर।

लट्ठा (पुं.) 1. एक गाढ़ा मोटा कपड़ा विशेष, 2. मोटी भारी लकड़ी; (क्रि. स.) 'लट्ठाणा' क्रिया का आदे. रूप; **~-सा** मज़बूत, लट्ठे के समान मज़बूत।

लट्ठाणा (क्रि. स.) लाठियों से पीटना; (वि.) लाठी से पीटने वाला।

लठंगड़ (पुं.) लट्ठबाज, लठैत।

लठ (पुं.) दे. लट्ठ।

लठधारी (पुं.) 1. चोर, 2. (दे. लठैत)।

लठिया (स्त्री.) दे. लठोळी।

लठैत (वि.) लाठी चलाने में कुशल।

लठोरा (पुं.) दे. लठोळा।

लठोळा (पुं.) मोटी लाठी, (तुल. डोग्गा); **~फिरणा** दबदबा होना।

लठोळी (स्त्री.) छोटी लाठी, हल्का और छोटा लठ।

लड़ (स्त्री.) 1. माला, 2. रस्सी का एक तार, 3. तराजू का आधा भाग, 4. खड, 5. (दे. लट); (क्रि. स.) 'लड़णा' क्रिया का आदे. रूप।

लड़खड़ाणा (क्रि. अ.) डगमगाना। **लड़खड़ाना** (हि.)

लड़खड़ाना (क्रि. अ.) दे. लड़खड़ाणा।

लड़णा (क्रि. अ.) 1. लड़ाई करना, 2. काटना, साँप, ततैये आदि का काटना, 3. चुभना, जैसे–'घाम' लड़णा, 4. कुश्ती करना, 5. तुक्का लगना; (वि.) लड़ाकू। **लड़ना** (हि.)

लड़ धू (वि.) 1. मूर्ख, 2. मोटा-ताज़ा, (पुं.) मेहमान, अधिक काल तक टिकाने वाला मेहमान।

लड़ना (क्रि. अ.) दे. लड़णा।

लड़बोल्ला (पुं.) आधा पागल।

लड़ाक (वि.) दे. लड़ाक्का। लड़ाकू।

लड़ाका (वि.) दे. लड़ाक्का।

लड़ाक्का (वि.) लड़ने-झगड़ने के स्वभाव वाला, लड़ाकू; (पुं.) रण-कुशल, वीर।

लडाणा (क्रि. स.) 1. लाड़-प्यार करना, 2. लाड़-प्यार से बिगाड़ना। **लड़ाना** (हि.)

लड़ाणा (क्रि. स.) लड़ने के लिए प्रेरित करना; (वि.) दे. लड़ावा।

लड़ाना (क्रि. स.) दे. लड़ाणा।

लडारा (पुं.) दे. लेड्डा।

लड़ावणी (पुं.) दे. खोर।

लड़ावा (वि.) 1. लड़ाका, 2. लड़ाई को प्रोत्साहन देने वाला; **चिड़ी-~** चुगलखोर।

लड़ियल (वि.) लड़ियों का; **~हार** लड़ियों का हार।

लड़ी (स्त्री.) हार आदि की लट, (दे. लड़); (क्रि. अ.) 'लड़णा' क्रिया का भू. का, स्त्रीलिं. रूप।

लडुआ (पुं.) लड्डू, (दे. लाड्डू)।

लड़ैत[1] (वि.) 1. लाड़ला, 2. लाड़-प्यार करने वाला।

लड़ैत[2] (वि.) लड़ने में कुशल, लड़ाकू।

लड़ोकड़ा (वि.) लड़ने-झगड़ने वाला, झगड़ालू स्वभाव का।

लड्डा/लड्ढा 1. ढाँचे मात्र की गाड़ी, 2. पुरानी गाड़ी। **लढा** (हि.)

लड्डू (पुं.) दे. लाड्डू।

लढा (पुं.) दे. लड्ढा।

लण (अव्य.) लो क्रिया का तिर्यक् रूप। उदा.–आ लण द्यो–आ लेने दो।

लणिहार (पुं.) जो मेहमान के रूप में किसी को (पत्नी, बहिन) लेने आया हो।

लत (स्त्री.) 1. आदत, 2. बुरी आदत।

लता (स्त्री.) बेल।

लताड़ (स्त्री.) प्रताड़ना; (क्रि. स.) 'लताड़णा' क्रिया का आदे. रूप।

लताड़णा (क्रि. स.) प्रताड़ना करना। **लताड़ना** (हि.)

लतीप्फा (पुं.) चुटकुला; (वि.) मज़ाकिया। **लतीफ़ा** (वि.)

लतीफ़ा (पुं.) दे. लतीप्फा।

लतोड़ा (पुं.) लात मारने वाला।

लतोरा (वि.) 1. जिसे (पशु) लात मारने की आदत हो, 2. जिसे लात खाने की आदत हो।

लत्ता (पुं.) कपड़ा, वस्त्र; **~(-त्ते) आणा/होणा** रजस्वला होना; **~उढाणा** विधवा को अपनी पत्नी बनाना, (दे. ओढणा~उढाणा); **~ओढ़णा** विधवा होने पर अन्य की पत्नी बनना; **~(त्ते) चढ़णा** गर्भवती होना; **~-चाळ** वस्त्र आदि; **~(-त्ते) तारणा** 1. लूटना, 2. अधिक मूल्य लेना, 3. लाज लूटना; **~(-त्ते) दिखाणा** दहेज का प्रदर्शन करना; **~निचोड़ मींह** सामान्य वर्षा; **~(-त्ते) पाड़णा** 1. पागल होना, 2. पीछे पड़ना।

लत्ती (स्त्री.) 1. ओढ़नी, (दे. लूगड़ी), 2. दुलत्ती, 3. लात।

लथेड़णा (क्रि. स.) लथ-पथ करना, (दे. लेपणा)। **लथेड़ना** (हि.)

लथेड़ना (क्रि. स.) दे. लथेड़णा।

लदणा (क्रि. स.) 1. लादा जाना, 2. लदपद या युक्त होना, 3. सवारी करना; (वि.) लद्दू। **लदना** (हि.)

लदना (क्रि. अ.) दे. लदणा।

लद-पद (वि.) फल-फूल आदि से लदा हुआ; **~होणा** फल के भार के कारण पेड़-पौधे का झुकना, अधिक फल-फूल लगना।

लदवाणा (क्रि. स.) 1. लादने में मदद करना, 2. किसी पर ज्यादा बोझा डालना। **लदवाना** (हि.)

लदा (पुं.) भार; (क्रि. स.) 'लदाणा' क्रिया का आदे. रूप; **~की छात** वह छत जो बिना 'कड़ी' (दे.) के आधार के ईंटों को जोड़ कर डाली गई हो। **लदाव** (हि.)

लदाऊ (वि.) 1. अधिक भार से भरा वाहन, 2. (दे. लदोरा), 3. लदने में समर्थ।

लदाण (पुं.) दे. लदा।

लदाणा (क्रि. स.) लादने में सहायता देना। **लदवाना** (हि.)

लदोरा (वि.) 1. जिसे लदने की आदत हो, 2. लद्दू।

लद्दू (वि.) 1. भार ढोने वाला (पशु), 2. (दे. लदोरा)।

लधणा-बधणा (क्रि. अ.) 1. समृद्ध होना, 2. वंश-वृद्धि होना।

लपकणा (क्रि. स.) दे. गुळपणा। **लपकना** (हि.)

लपकना (क्रि. स.) दे. गुळपणा।

लपका (पुं.) 1. लपकने की क्रिया, 2. लपक कर खाने का भाव या क्रिया, 3. 'लपकणा' क्रिया का भू. का., आदे. रूप; **~मारणा** दे. सपड़का ~मारणा।

लपट (स्त्री.) 1. आग से उठने वाली लौ या धधक, 2. महक; **~आणा/ ऊठणा** 1. महक उठना, 2. लपटें निकलना; **~मारणा** गंध आना।

लपटमाँ (वि.) 1. लथपथ, जो लथपथ अवस्था में हो, जैसे–लपटमाँ सब्जी, 2. सुगंधित (मसाले आदि से)। **लपटवाँ** (हि.)

लपड़का (पुं.) दे. लपका।

लपना (वि.) दे. लबान्नी; (क्रि. स.) लपकना।

लपर-लपर (क्रि. वि.) ज़ल्दी-ज़ल्दी (स्त्री.) जीभ को ज़ल्दी-ज़ल्दी अंदर-बाहर करने का भाव; **~करणा/ बोलणा** ज़ल्दी-ज़ल्दी बोलना; **~बधणा** पेड़-पौधों का शीघ्रता से बढ़ना।

लपलपाणा (क्रि. अ.) ललचाना; (क्रि. स.) बार-बार जीभ निकालना। **लपलपाना** (हि.)

लपसी (स्त्री.) दे. लापसी।

लपसू (पुं.) हलवाई का अँगोछा।

लपेट (स्त्री.) 1. फेंटा, 2. चपेट, 3. घेराव, बंधन, 4.ऐंठन, 5. घेरा; (क्रि. स.) 'लपेटणा' क्रिया का आदे. रूप; **~मैं आणा** 1. घेराव में आना, 2. चपेट में आना।

लपेटणा (क्रि. स.) 1. समेटना, 2. कपड़े आदि में लपेट कर रखना, 3. अपराध की लपेट में लेना, 4. घेरना, 5. पगड़ी आदि को लपेटना, 6. लथपथ करना, लथेड़ना। **लपेटना** (हि.)

लपेटना (क्रि. स.) दे. लपेटणा।

लपेट्टा (पुं.) 1. लपेटने की क्रिया, 2. फंदा, 3. फेंटा, (दे. अळभेड्डा)। **लपेटा** (हि.)

लपेड़ा (पुं.) दे. लप्पड़।

लप्पड़ (पुं.) दे. थप्पड़।

लप्फण (स्त्री.) पौधे आदि का अंतिम छोर। **लफनी** (हि.)

लफणा (क्रि. स.) लपकने के लिए आगे बढ़ना; (स्त्री.) (दे. लप्फण)। **लपना** (हि.)

लबड़णा (क्रि. स.) 1. चूसना, कोमल वस्तु को मुँह में डाल कर चूसना, 2. दाँतों से काटना, 3. थन में दूध न रहने पर भी चूसते रहना; (क्रि. अ.) खिसकना, टलना (कौर.)। **लबड़ना** (हि.)

लबढीक (पुं.) लंबी टाँगों वाला एक जलचर; (वि.) लंबे क़द का। **लंबढीक** (हि.)

लबदा (पुं.) 1. थूक, 2. लोंदा।

लबाड़ (वि.) झूठा।

लबाड़ी (पुं.) कुसंगति में पड़ा व्यक्ति।

लबान्नी (वि.) दे. लावा-लूतरी।

लबारा (पुं.) दूध पीता छौना।

लमकणा (क्रि. अ.) नाचना।

लमणहार (पुं.) खेत की लाबनी या कटाई करने वाला, (दे. लामणी)।

लमणा (क्रि.) फसल काटना। दे. लामणी।

लमूरणा (क्रि.) दे. बिधकणा।

लयदारी (स्त्री.) लय छंद के साथ। उदा. –गाणा हो लयदारी का। (लचं.)

लरजना (क्रि. अ.) लचीली वस्तु का काँपना या दोलायमान होना; (वि.) जो अधिक लरजे। **लरजना** (हि.)

लरजना (क्रि. अ.) दे. लरजणा।

लरजा (पुं.) लरजने का भाव या क्रिया; (क्रि. अ.) 'लरजणा' क्रिया का भू. का., पुं., एकव. रूप; **~खाणा/लेणा** लचकना।

लरझर (क्रि.) 1. पानी का बहाव, 2. वर्षा के जल का टपकना।

ललक (स्त्री.) लालसा, प्रबल अभिलाषा; **~ऊठणा/लागणा/होणा** इच्छा पूर्ति की तीव्र लालसा होना।

ललकणा (क्रि. अ.) लालायित होना। **ललकना** (हि.)

ललकार (स्त्री.) चुनौती देने के लिए ललकारने का भाव; (क्रि. स.) 'ललकारणा' क्रिया का आदे. रूप।

ललकारणा (क्रि. स.) 1. चुनौती देना, 2. पुकारना। **ललकारना** (हि.)

ललकारना (क्रि. स.) दे. ललकारणा।

ललचाणा (क्रि. अ.) लालायित होना; (क्रि. स.) लालायित करना। **ललचाना** (हि.)

ललचाना (क्रि. अ.) दे. ललचाणा।

लल-मूँहा (पुं.) अंग्रेज़ (लाल मुँह वाला)–लल-मूह्याँ का जवाहर लाल सरताज दिखाई दे (लो. गी.); (वि.) 1. अपराधी, खूनी, 2. लाल मुँह वाला।

ललिहार (पुं.) शरीर पर चिह्न गोदने वाला। 1. दे. खिणणा। 2. दे. गोदनवाळ।

ललोरणी (स्त्री.) खुशामद, चापलूसी, लल्लो-चप्पो।

ललोरी (स्त्री.) 1. दे. ललोरणी, 2. दे. लिलोरी।

लल्ला (पुं.) 1. लड़का, 2. छोटा बच्चा।

लल्ला-लोरी (स्त्री.) 1. टालमटोल, 2. फुसलाने की क्रिया।

लल्लो-चप्पो (स्त्री.) खुशामद, चापलूसी।

लवलेस (वि.) स्वल्प। **लवलेश** (हि.)

लवाणा (क्रि. स.) 1. लगाने में सहायता करना, 2. स्पर्श करवाना। **लगवाना** (हि.)

लवै (क्रि. वि.) निकट, पास–पणघट का कूवा लवै सी सै, अक दूर ? **~-धोरै** आस पास, निकट। **~-नाँ भिड़णा** 1. अनुमान ठीक न निकलना, 2. पास न फटकना; **~लागणा** 1. मंज़िल निकट आना, 2. अनुमान आस-पास होना।

लसकणा (क्रि. अ.) चमकना (कौर.)।

लसकर (पुं.) सेना की टुकड़ी। **लशकर** (हि.)

लसकरिया (पुं.) 1. सेना का छोटा कर्मचारी, 2. पति। **लशकरी** (हि.)

लसणा (क्रि.) तलवे में खुजली उठना।

लसोड़ा (पुं.) दे. ल्हसोड़ा।

लस्सी (स्त्री.) दे. ल्हस्सी।

लहँगा (पुं.) दे. लँहघा।

लहआ (पुं.) लहँगा।

लहक (स्त्री.) 1. टेढ़ापन, जैसे–पहिये की लहक, 2. लचक, लंगड़े आदमी के चलते समय पड़ने वाली लचक, 3. प्रकाश की चमक; **~काढणा** 1. पहिये का बंक निकालना, 2. टेढ़ापन निकालना; **~पड़णा** 1. पहिया टेढ़ा होना, 2. अंग विकार के कारण चलते समय शरीर में झटका लगना।

लहकणा (क्रि. अ.) 1. चमकना, 2. प्रकाश का झपकना, 3. लहक के साथ गति होना, 4. लचक होना। **लहकना** (हि.)

लहकना (क्रि. अ.) दे. लहकणा।

लहजा (पुं.) 1. लय, तर्ज़, गाने-बजाने का ढंग, 2. तौर-तरीका।

लहणवा (पुं.) 1. भाग्य के कारण मिलने वाली वस्तु–लहणवे मैं होगी तै मिल ज्यागी, 2. भाग्य, 3. पशु-धन।

लहणा[1] (पुं.) 1. भाग्य, 2. पशु-धन, 3. श्रेय। **लहना** (हि.)

लहणा[2] (पुं.) 1. लाभ, 2. भागीदारी।

लहना (क्रि.) पहचानना। उदा. राम की शान लवकुश में लहली।

लहप्फण (स्त्री.) दे. लहफ्फण।

लहफूसड़ा (पुं.) कोमल तिनका, छोटा तिनका।

लहफ्फण (स्त्री.) 1. झुरमुट का अंश, 2. टहनी के अंतिम छोर के पत्ते। **लफनी** (हि.)

लहर (स्त्री.) 1. तरंग, 2. बहाव, 3. जोश, उमंग, 4. हवा का झोंका, 5. वक्र रेखा, 6. बीन का लहरा, 7. (दे. बहर); **~ऊठणा** उमंग उठना; **~मारणा** 1. तरंगें मारना, 2. भासित होना–इस

लत्ते मैं उस लत्ते की लहर मारै सै; **~(-रे) लेणा** तरंगित होना।

लहरा (पुं.) 1. बीन की ध्वनि, 2. तरंग; **~ठाणा/बजाणा** बीन की सुरीली ध्वनि बजाना।

लहराणा (क्रि. अ.) 1. झंडे का फहराना, 2. हवा के कारण बार-बार हिलना, 3. लहर उठना, तरंगित होना, 4. मोहित होना, 5. उमंगित होना, 6. लचक खाना; (क्रि. स.) 1. फहराना, 2. उमंगित करना। **लहराना** (हि.)

लहराना (क्रि. अ.) दे. लहराणा।

लहरिया (पुं.) 1. एक प्रकार का कपड़ा जिसमें रंग-बिरंगी रेखाएँ होती है, 2. बँधेज की चुँदड़ी, 3. लहरदार घाघरा; (वि.) 1. जिसमें लहर उठे, 2. लहराने वाला।

लहलहाना (क्रि. अ.) दे. लहलाणा।

लहलाणा (क्रि. अ.) 1. सूखी पेड़-पत्तियाँ हरी-भरी हो उठना, 2. प्रफुल्लित होना, 3. झूमना। **लहलहाना** (हि.)

लहस-पहस (वि.) लथपथ।

लहसुन (पुं.) दे. लह्स्सण।

लहा (वि.) लाभ। उदा.—सास ससुर अर पति की सेवा कर, आनंद लहा करें (लचं.)।

लहारसा (पुं.) 1. आश्रय तकने का भाव, 2. लालसा; **~करणा** 1. आश्रय तकना, 2. किसी के प्रति प्यार उमड़ते रहना, 3. याद सताना।

लही (क्रि.) ग्रहण किया।

लहू (पुं.) 1. रुधिर, रक्त, 2. वंश, ख़ानदान; **~करणा** हत्या करना; **~खाणा/पीणा** 1. अधिक सताना, 2. दुष्ट व्यक्ति; **~जलणा** मन ही मन कुढ़ना; **~बहाणा** 1. कठोर परिश्रम करना, 2. बलिदान देना; **~सुखाणा** 1. रंज में कमज़ोर होना, 2. तंग करना।

लहोड़ा (वि.) छोटा (भाई) दे. ल्होड़-बोड़।

लहोड़ी (वि.) लघु, छोटी।

लह्को (पुं.) दे. ल्हको।

लह्कोणा (क्रि. स.) 1. छिपाना, 2. किसी बात को छिपाना, गुप्त रखना। **लुकाना** (हि.)

लह्स्सण (पुं.) 1. एक पौधा जिसकी जड़ या डोडी को कुछ लोग खाते हैं, 2. शरीर पर पड़ा जन्मजात लाल, काला, श्वेत आदि रंग का चिह्न (जो सूर्य या चंद्र-ग्रहण के प्रभाव के कारण हुआ माना जाता है)। **लहसुन** (हि.)

लाँक (पुं.) दे. तल़वा।

लाँकणा (क्रि. स.) लाँघना, (दे. उलाँकणा)।

लाँग (स्त्री.) दे. लाँगड़।

लाँगड/लाँग्गड (स्त्री.) धोती की लाँग; **~खींचणा** काम में बाधा उत्पन्न करना; **~छोड धोत्ती** धोती बाँधने का ढंग जिसमें लाँग लटकी होती है। **लाँग** (हि.)

लाँगळा (पुं.) 1. हल की रस्सी विशेष, 2. रस्सी।

लाँघ (स्त्री.) दे. लंघ; (क्रि. स.) 'लाँघणा' क्रिया का आदे. रूप।

लाँघणा (क्रि. स.) दे. उलाँकणा। **लाँघना** (हि.)

लाँघना (क्रि. स.) दे. उलाँकणा।

लाँडा (स्त्री.) बिजली की चमक (कौर.); (वि.) दे. लाँड्डा; **~लसकणा** बिजली चमकना।

लाँड्डा (वि.) 1. लंडूरा, 2. बिना पूँछ का, 3. कटी पूँछ का; **~मोर** 1. बूढ़ा मोर जिसके चंदे उगने बंद हो गए हों, 2. मोर जिसके चंदे गिर गए हों। **लांडा** (हि.)

लांबा (पुं.) एक जाट गोत; (वि.) लंबा, लंबाई में अधिक; **~पड़णा** क्षमा माँगना; **~(-बी) साँस लेणा** 1. सुख की साँस लेना, 2. अंतिम साँस लेना।

ला (स्त्री.) 1. चरसे से बाँधा जाने वाला मोटा रस्सा, 2. बहुत मोटा रस्सा; (क्रि. स.) 'लाणा' क्रिया का आदे. रूप; **~की ला** लाव की लाव, लाव-सा मोटा, बहुत मोटा रस्सा; **~चालणा** लाव का कुआँ चलना। **लाव** (हि.)

लाइक (वि.) लायक।

लाई (स्त्री.) मज़दूरी के आधार पर दी जाने वाली फ़सल आदि की कटाई; (क्रि. स.) 'लाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं रूप।

लाईलंगड़ (पुं.) बच्चों का एक खेल।

लाईलग (वि.) 1. बहकावे में आ जाने वाला (कौर.), 2. (दे. भळोकड़ा)।

लाउणा (पुं.) नाड़ा। कमरबंध।

लाओ (स्त्री.) दे. ला।

लाकड़ा (पुं.) 1. एक जाट गोत, 2. (दे. लोकड़िया), 3. देवी-भक्त।

लाकड़िया (पुं.) दे. लोकड़िया।

लाकड़ी (स्त्री.) 1. जलावन, 2. लाठी; (वि.) 1. सूखी, 2. दुर्बल (महिला); **~चालणा** लठ बजना; **~देणा** मुर्दे की चिता के लिए लकड़ी देना; **~होणा** सूखना, दुर्बल होना; **~-सा** सूखा और कठोर। **लकड़ी** (हि.)

लाक्कड़ (पुं.) 1. भारी बड़ी लकड़ी, 2. भारी लाठी; (वि.) 1. सूखा हुआ, 2. ठूँठ, 3. अकड़ा हुआ, 4. कठोर। **लक्कड़** (हि.)

लाक्खा (वि.) 1. काले रंग का पशु (बैल), 2. मटमैले रंग का, 3. लाख के रंग का। **लाखा** (हि.)

लाक्खा-जोन्नी (स्त्री.) लाखों योनि, जीवन-मरण का चक्र; **~भोगणा** 1. कष्ट उठाना, 2. मोक्ष न मिलना, 3. संसार में भटकते रहना।

लाक्खा-पत्ती (वि.) लखपति, धनी।

लाख (स्त्री.) 1. एक लाख की संख्या या गिनती, 2. राख, भस्मी, 3. एक लाल पदार्थ (जिसका चूड़ा भी बनती है); (क्रि. स.) 'लाखणा' क्रिया का आदे. रूप; **~-चुरास्सी** दे. लखचुरास्सी; **~बै समझाणा** बार-बार समझाना।

लाखणा (क्रि. स.) 1. लाख से जोड़ना, 2. रोटी को अधिक सेंक कर कड़वी करना।

लाखमलाख (वि.) लाखों।

लाखा मंडप (पुं.) लाक्षागृह।

लाखा महल (पुं.) लाख पदार्थ मिश्रित महल (जो पांडवों को मारने के लिए बनवाया गया था।)

लाग (स्त्री.) 1. बिना पैसे दिए करवाई गई मज़दूरी, बेग़ार, ज़बरदस्ती करवाया जाने वाला काम, 2. व्यर्थ का दंड, 3. अतिरिक्त घोल या पदार्थ जिसके मिश्रण से कोई वस्तु प्रभावित हो, 4. शत्रुता, 5. लगान, 6. टोना, 7. प्रतिफल के रूप में निश्चित समय पर दिया जाने वाला धन (भाट, नाई, चमार आदि को), 8. मिश्रण, 9. दही का खट्टा; (क्रि. अ.) 'लागणा' क्रिया का आदे.

रूप; **~चाल्ली आणा** प्रथा चली आना; **~लागणा** 1. अतिरिक्त धन या कार्य जिम्मे पड़ना, 2. शत्रुता होना; **~लाणा** 1. व्यर्थ में अतिरिक्त धन जिम्मे डालना, 2. बनाते, गढ़ते या पकाते समय कोई मिश्रण डालना।

लागडाट (स्त्री.) शत्रुता।

लागणा (क्रि. अ.) लगना; (वि.) लगने वाला, प्रभावकारी, जैसे–लागणी दवाई। **लगना** (हि.)

लागदार (पुं.) 1. ज़िम्मावार, उत्तरदायी, 2. पति; (वि.) पीछे पड़ने वाला।

लाग-बाग (स्त्री.) 1. शत्रुता, 2. द्वेष; **~राखणा** 1. शत्रुतापूर्ण व्यवहार रखना, 2. आपसी खट-पट रखना।

लागमाँ (वि.) दे. लगवाँ।

लागा (पुं.) दे. लाण।

लाग्गड़ (वि.) 1. वह पशु जिसने हाल ही में बच्चे को जन्म दिया हो, जैसे–लाग्गड़ गा, 2. अधिक दूध देने वाला पशु; (पुं.) साँड; **~सूआ/ सूवा~** 1. वह पशु जिसने हाल ही में बच्चे को जन्म दिया हो, 2. अधिक दूध देने वाला पशु।

लाग्गू (वि.) 1. लग्नशील स्वभाव का, 2. सचेत, जागरूक, 3. गहरी जुताई करने वाला (हल), 4. चालू, जैसे–कानून लाग्गू होणा, 5. उत्तरदायी –मैं इस काम का लाग्गू नहीं हूँगा; **~तैं जाग्गू बाध** लग्नशील चेतनशील से अच्छा है; **~-सेऊ** कहीं गहरी और कहीं कम गहरी जुताई करने वाला हल; **~-हळ** नढेल को हलस के अगले छिद्र में लगाकर जोता जाने वाला हल, 1. (दे. नढेल), 2. (दे. हळस)। **लागू** (हि.)

लाचार (वि.) दे. लचार।

लाचारी (स्त्री.) दे. लचारी।

लाच्चा (पुं.) घाटा; **~लागणा** घाटा पड़ना।

लाज[1] (स्त्री.) 1. लज्जा, शर्म, 2. सम्मान; **~राखणा** सम्मान करना।

लाज[2] (पुं.) इलाज।

लाजमीं (वि.) आवश्यक।

लाजाहोम (पुं.) फेरे या भाँवर पड़ने के समय का यज्ञ।

लाजी (वि.) लज्जावान।

लाट[1] (पुं.) 1. राजा, 2. बड़ा आदमी, (दे. लाट साब)।

लाट[2] (स्त्री.) कोल्हू की मोटी पाट या लकड़ी।

लाट[3] (स्त्री.) पुराना गुड़ (जो लसलसा होकर बह निकला है), (दे. राळा) (तुल. लाट्टा)।

लाट[4] (स्त्री.) लाइट। दे. लाट[1,2,3]।

लाटसाब (पुं.) 1. बड़ा अंग्रेज अधिकारी, 2. लार्ड; **~होणा** अभिमान होना। **लाट साहिब** (हि.)

लाट्टा (पुं.) पुराना गुड़ जो चिपचिपा हो गया हो। **लाटा** (हि.)

लाट्टू (पुं.) दे. लट्टू।

लाट्ठा (पुं.) 1. मोटी और भारी लाठी, (दे. लाट्ठी) 2. बाधा; **~आणा** आपत्ति आना; **~पड़णा** बाधा उत्पन्न होना; **~फहणा** आपत्ति आना; **~बाजणा** झगड़ा होना। **लाठी** (हि.)

लाट्ठी (स्त्री.) 1. लकड़ी, प्रहार करने का एक आयुध जिसकी लंबाई मनुष्य के कान तक होती हैं, 2. लाठी के समान का नाप, जैसे–दो लाट्ठी सुरज चढ्याँ; **~उलाँड/उलाँक सोद्दा** पक्का सौदा, बिना झगड़े का सौदा; **~के ताण** शक्ति

के बल पर; **~गोळा** उकड़ू अवस्था में हाथों को पैरों के बीच से लाठी गुजार कर पाशबद्ध करने की मुद्रा विशेष; **~खड़कणा/चाळणा/बाजणा** लाठी चलना, लड़ाई होना; **~झोंकणा** लाठी से आघात करना; **~-भर** लाठी की लंबाई का; **भरमाँ~** वह लाठी जो खोखली नहीं हो। **लाठी** (हि.)

लाठ (स्त्री.) 1. मीनार, जैसे–महरोली की लाठ, 2. अरहट, कोल्हू आदि की मोटी पाट या लट्ठा; (पुं.) दे. लाट साब।

लाड[1] (पुं.) बच्चों के प्रति प्रदर्शित प्यार, दुलार; **~करणा** प्यार करना, दुलारना; **~खिंढणा** चाव बिखरना; **~मैं आणा** 1. किसी अन्य के भरोसे गलत काम कर बैठना, 2. नख़रा करना; **~लडाणा** 1. प्यार करना, 2. नई दुलहिन के प्रति प्यार प्रदर्शित करना। **लाड़** (हि.)

लाड[2] (पुं.) बड़ा कुत्ता।

लाड-कोथळी (स्त्री.) 1. सगाई के पश्चात् और विवाह से पूर्व भावी पुत्र-वधू को वर-पक्ष में संपन्न विवाह आदि के समय भेजी जाने वाली मिठाई आदि, 2. विवाह के बाद बहन के लिए भाई द्वारा ले जाई गई मिठाई आदि।

लाड-जमाई (पुं.) जमाई, छोटा जमाई।

लाडणा (पुं.) नाड़ा।

लाड-बना (पुं.) प्यारा दूल्हा।

लाड़बावळी (वि.) लाड़ या प्यार से उन्मत्त।

लाडला (वि.) प्यारा, जिससे अधिक प्यार किया जाए; **~-कोडला** अधिक प्यारा।

लाडली (स्त्री.) 1. पुत्री, 2. बन्नी; (वि.) प्यारी।

लाडवाँ का फेरा (पुं.) राई या रये जाति द्वारा मुकलावे की रस्म के लिए प्रयुक्त शब्द, 1. (दे. मुकलावा), 2. (दे. चाल्ला)।

लाड़ा (वि.) 1. विशेष चीज़ खाने का इच्छुक, जैसे–गुड़ का लाड़ा, घी का लाड़ा, 2. अभावग्रस्त–तूँ इस बात का लाड़ा क्यूक्कर रह ग्या ?।

लाड्डा (पुं.) दे. बंदड़ा; (वि.) दे. लाड़ा।

लड्डी (वि.) दे. लाडली।

लाड्डू (पुं.) 1. मोदक, 2. बेसन, बूँदी, तिल, आटे, भूनी मकई, दाल आदि के लड्डू; **~कसाँदणा** लड्डू बनाना, जैसे–लाड्डूड़ा कसाँदू थी (लो. गी.); **~बाँटणा** प्रसन्नता व्यक्त करना; **~चुंड्डीदार~** उभरी हुई चोंच के लड्डू; **सूत का~**मैदे की मुठड़ी से बनाए गए लड्डू; **~से फूटणा** मन ही मन प्रसन्न होना। **लड्डू** (हि.)

लाड्डूढ़ा (पुं.) दे. लाड्डू।

लाड्डो (वि.) लाडली, प्यारी; (स्त्री.) 1. पुत्री, 2. वधू; (स्त्री.) लड़की के विवाह पर गाए जाने वाले गीत विशेष; **~पराई होणा** 1. लड़की का विवाह होना, 2. बात हाथ से निकलना। **लाडो** (हि.)

लाण (पुं.) 1. साग, पत्तों की सब्ज़ी, सब्ज़ी, तरकारी, 2. (दे. घोळिया), 3. खलियान में पड़े गेहूँ आदि के सूखे पत्ते; **~राँधणा** साग बनाना।

लाण-कोल्हू (पुं.) सम्मिलित कोल्हू।

लाणा[1] (क्रि. स.) 1. लगाना, 2. लाना, 3. प्राप्त करना; (पुं.) मिल कर काम करने वाले व्यक्तियों का समुदाय।

लाणा[2] (पुं.) कलंक। उदा. स्याणी बेटी घराँ क्वाँरी घर कै लाणा होगा।

लाणा कोल्हू (पुं.) साझे का कोल्हू।

लाणा-ताणा (पुं.) कुटुंब-कबीला।

लात (स्त्री.) पाँव, पैर का अग्र-भाग (पंजा); **~ठाणा** पशु का दूध देना बंद करना; **~मारणा** 1. त्यागना, 2. पशु का दूध से नटना, 3. लात से प्रहार किया जाना; **~(-म) लात्ता** लातों से होने वाली लड़ाई या पिटाई; **~की लात अर बात की बात** 1. चातुर्यपूर्ण उक्ति, 2. कटूक्ति।

लात्ता (पुं.) दे. लत्ता; **~गेरणा** विधवा हुई स्त्री का गंगादि तीर्थ पर जा कर वस्त्र बदलना।

लाद[1] (स्त्री.) भार, बोझा; (क्रि. स.) 'लादणा' क्रिया का आदे. रूप।

लाद[2] (स्त्री.) (कौर.), दे. उलाद।

लादड़ा (पुं.) सिर पर लादने का हलका बोझा। दे. भरोट्टा।

लादणा (क्रि. स.) 1. भार लादना, 2. अधिक दायित्व देना।
लादना (हि.)

लादना (क्रि. स.) दे. लादणा।

लान (पुं.) दे. लाण।

लाना (क्रि. स.) 1. दे. ल्याणा, 2. दे. लाणा।

लापसी (स्त्री.) बिना घी डाले बनाया गया आटे का हलवा, (दे. गुडयाणी); **~करणा** 1. लपसी बनाना, 2. किसी पदार्थ को अधिक पतला या गिलगिला करना। **लपसी** (हि.)

लाप्पर (वि.) 1. (ज्वार का) मीठा गन्ना जिसके पत्ते की धारी सफ़ेद की बजाय कुछ पीली होती है, 2. 'धोळ' का विलोम, 3. वह फ़सल जो अधिक बढ़े तथा उपज कम दे।

लाब्बड़दा (पुं.) भीड़; **~पड़णा** 1. भीड़ के झुंड का उमड़ पड़ना, 2. भगदड़ मचना; **~लागणा** भीड़ उमड़ पड़ना– गाम मैं साँग देक्खण ताँहीं ओरे-धोरे के गाम्माँ के लोग्गाँ का लाब्बड़दा लाग ग्या।

लाभ (पुं.) फ़ायदा।

लाभकारी (वि.) 1. फ़ायदेमंद, 2. गुणकारी।

लाभदायक (वि.) दे. लाभकारी।

लाम (स्त्री.) 1. युद्ध, लड़ाई, 2. फ़ौज।

लाम-झड़ाम (वि.) 1. लंबा-तगड़ा, 2. तेजस्वी।

लामणी (स्त्री.) लुनाई, पकी फ़सल की कटाई; **~आणा/पड़णा** फ़सल पक कर कटने योग्य होना; **~-सी होणा** नष्ट होना, विध्वंस होना। **लवनी** (हि.)

लामणी-डासणी (स्त्री.) फ़सल की कटाई आदि का काम।

लामणे (क्रि. वि.) निकट, आस-पास; **~जाणा** निकट जाना।

लाम्मण (स्त्री.) 1. घघरे के निचले छोर पर लगा कपड़ा, 2. घघरी का नीचे का भाग, 3. घघरी का पल्ला, 4. किनारा, 5. लहँगा; **~फेरणा** घघरी का पल्ला फेरना (जो अपवित्र माना जाता है)। **लामन** (हि.)

लायक (वि.) योग्य।

लार (स्त्री.) 1. कतार, पंक्ति, 2. समूह, 3. झुंड, 4. पशुओं का झुंड, 5. (दे. राळ)।

लारा (पुं.) दे. लार।

लारी[1] (स्त्री.) यात्री बम। **लॉरी** (हि.)

लारी[2] (वि.) छोटी लंबाई-चौड़ाई का खेत, छोटा खेत।

लाल[1] (पुं.) 1. पुत्र, 2. क़ीमती पत्थर विशेष, 3. लाल रंग; (वि.) सुर्ख, लाल रंग का; **~करणा** तपाना; **~-पीळा** क्रोध-भरी अवस्था; **~होणा** 1. क्रोध से तमतमाना, 2. अधिक गरमी के कारण लाल रंग होना, 3. पुत्र-जन्म होना।

लाल[2] (स्त्री.) दे. राळ। **लार** (हि.)

लालटण (स्त्री.) प्रकाश के लिए प्रयुक्त लोहे का यंत्र जिसमें शीशा लगा होता है और मिट्टी के तेल से जलता है। **लालटैन** (हि.)

लालड़ी (स्त्री.) 1. गन्ने की एक नस्ल जिसका पौधा कुछ लाल, पतला और बहुत मीठा होता है, 2. एक कीड़ा, 3. लाल रंग का नगीना, 4. रत्ती।

लाल डोरा (पुं.) 1. गाँव की वह भूमि जो रिहायशी स्थान के लिए निश्चित है, 2. पटवारी के नक्शे में खींची गई लाल रेखा जो गाँव की रिहायशी भूमि को कृषि की भूमि से बाँटती हुई दिखाई जाती है, 3. पशु-पक्षी के गले की लाल धारी, 4. लाल-रंग की रस्सी।

लाल-पंथ (पुं.) एक संत संप्रदाय।

लाला (पुं.) दे. लाल्ला।

लाळा (पुं.) दे. राळा।

लाली (स्त्री.) दे. लाल्ली।

लाल्ला (पुं.) 1. बनिया, 2. व्यापारी, 3. सामान्यत: बनिया जाति के लिए प्रयुक्त एक सम्मानबोधक शब्द, 4. पुत्र, 5. शिशु। **लाला** (हि.)

लाल्ला-लीरी (स्त्री.) लाड़-चाव, दुलार; **~करणा** 1. टाल-मटोल करना, 2. लाड़-चाव दिखाना।

लाल्ली (स्त्री.) 1. लालपन, 2. बालिका; **~आणा** चेहरे पर रौनक आना। **लाली** (हि.)

लावण (स्त्री.) दे. लामण।

लावणा (क्रि. स.) 1. ऋण के बदले फ़सल, पशु आदि को लेना, 2. लगाना। **लगाना** (हि.)

लावणी[1] (स्त्री.) 1. एक छंद, 2. (दे. लामणी)।

लावणी[2] (स्त्री.) दे. लामणी।

लावनी (स्त्री.) दे. लामणी।

लाव-लसकर (पुं.) दल-बल।

लावा[1] (पुं.) 1. 'लाई' पर काम करने वाला, (दे. लाई)। 2. तप्त द्रव।

लावा[2] (वि.) चिड़ी-लड़ावा, एक की बात दूसरे के सामने बढ़ा-चढ़ा कर कहने वाला।

लावा-लूतरी (वि.) इधर की बात उधर कहने वाली; (दे. चिड़ी लड़ावा)। **लावालुतरी** (हि.)

लाहवा (पुं.) लाभ, जैसे–आप खायाँ लाहवा हो (लो. गी.)। **लाभ** (हि.)

लाहा (पुं.) लाभ।

लाही (स्त्री.) 1. दे. दाद्दा~लाही, 2. साझे का काम।

लाहोरी पंखा (पुं.) लाहौर शहर का बना सुंदर और टिकाऊ पंखा।

लिंग (पुं.) 1. शिवलिंग, 2. पुरुष और स्त्रीवाचक चिह्न, 3. जननेंद्री।

लिए (अव्य.) दे. लियाँ।

लिकड़णा (क्रि. अ.) 1. बाहर आना, 2. दिखाई देना, प्रकट होना, 3. घर छोड़ना, 4. आगे बढ़ना, स्पर्धा में पीछे छोड़ना, 5. वस्तु का अपनी मूल अवस्था से बाहर की ओर आना, 6. पछाड़ना,

पछाड़ कर आगे आना, 7. पौधे की जड़ों का सूखना, 8. कम होना, 9. प्रश्न का हल निकलना, 10. आपत्ति से निकलना, 11. आर-पार होना, 12. फुंसी आदि होना, 13. बीतना, 14. भूत आदि का भागना, 15. भय दूर होना, 16. घर से बाहर पैर निकलना, चरित्रहीन होना, 17. हाथ से निकलना, लाचार होना. 18. चोरी होना, 19. ख़तरे से बाहर होना, 20. हुनर को सीखना, 21. पुस्तक को पढ़ जाना, 22. दूध का कढ़ना, 23. दूध का उफन कर नीचे गिरना; ~-**बड़णा** 1. बाहर-भीतर आना-जाना, 2. परिस्थिति को हर ओर से समझना-सोचना। **निकलना** (हि.)

लिकड़माँ (वि.) 1. किसी की तुलना में आगे बढ़ा हुआ, 2. मूल स्थिति से बाहर निकला हुआ, 3. श्रेष्ठ। **निकलवाँ** (हि.)

लिकड़वाणा (क्रि. स.) निकालने का काम अन्य से करवाना। **निकलवाना** (हि.)

लिकड़ा (पुं.) दे. लीकड़ा।

लिकाड़ (पुं.) घर से बाहर जाने की स्थिति या भाव–घर के काम तैं छुट्टी मिल्लै तै लिकाड़ हो; (क्रि. स.) 'लिकाड़णा' क्रिया का आदे. रूप। **निकास** (हि.)

लिकाड़णा (क्रि. स.) 1. घर से बाहर निकालना, 2. देश निकला देना, 3. छुपी वस्तु को बाहर लाना, 4. कशीदाकारी करना, 5. गोली आर-पार करना, 6. उबारना, 7. औज़ार को चाटना या धार लगाना, (दे. काढणा)। **निकालना** (हि.)

लिकाड़ा[1] (पुं.) 1. वनवास, 2. गृह-त्याग, 3. नुक्स, कमी; ~**देणा** घर से निकालने का दंड देना। **निकाला** (हि.)

लिकाड़ा[2] (पुं.) शरीर का फोड़ा।

लिक्का (पुं.) दे. लीकड़ा।

लिखणा (क्रि. स.) 1. लेखबद्ध करना, 2. चिह्नित करना, 3. भविष्यवाणी करना, 4. भाग्य रेखा खींचना। **लिखना** (हि.)

लिखत (स्त्री.) लिखी हुई (बात), लिखा-पढ़ी; ~-**पढत** 1. कर्ज़ आदि को लिखने का भाव, 2. पत्र-व्यवहार।

लिखना (क्रि. स.) दे. लिखणा।

लिखाई (स्त्री.) 1. लिखने का कार्य, 2. लेख, लिखावट, 3. चित्र बनाने का काम; (क्रि. स.) 'लिखाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

लिखाणा (क्रि. स.) लिखवाना। **लिखाना** (हि.)

लिखाना (क्रि. स.) दे. लिखाणा।

लिखारी (वि.) 1. लिखने वाला, 2. लिखने में कुशल।

लिखावट (स्त्री.) 1. लेख, लिखाई, 2. लिखने का ढंग, 3. लिखने का कार्य।

लिच्छण (वि.) दे. लच्छण।

लिछमन (पुं.) 1. लक्ष्मण (इनकी जयंती चैत्र शुक्ल एकादशी को मनाई जाती है), 2. यति। **लक्ष्मण** (हि.)

लिछमीं (स्त्री.) धन की देवी; (वि.) 1. सज्जन महिला, 2. भोली-भाली। **लक्ष्मी** (हि.)

लिटाणा (क्रि. स.) 1. लेटने में सहायता करना, 2. बच्चे को सुलाना, 3. पछाड़ना, 4. हत्या करना, 5. टेढ़ा करना। **लिटाना** (हि.)

लिटाना (क्रि. स.) दे. लिटाणा।

लिट्ठा (वि.) ढीठ।

लिडार (पुं.) दे. लेड्डा।

लिणहार (पुं.) दे. लणिहार।

लिपटण-गोह (स्त्री.) चिमटने वाली गोह।

लिपटणा (क्रि. अ.) 1. कोली भर कर मिलना, भुजभेंट मिलना, 2. लथपथ होना, 3. हाथापाई करना (तुल. पिलमणा), 4. रस्सी या कपड़े में भली प्रकार लपेटा जाना, 5. लिप्त होना, 6. उलझना, 7. चिमटना, जैसे–साँप का लिपटणा। **लिपटना** (हि.)

लिपटना (क्रि. अ.) दे. लिपटणा।

लिपटाना (क्रि. स.) 1. लथपथ करना, 2. चिपकाना, 3. लिपटने के लिए प्रेरित करना, 4. आलिंगनबद्ध करना, गले लगाना। **लिपटाना** (हि.)

लिपटाना (क्रि. स.) दे. लिपटाणा।

लिपणा (क्रि. अ.) 1. लिप्त होना, 2. लीपा जाना; (वि.) जो शीघ्र लिप जाए। **लिपना** (हि.)

लिपना (क्रि. अ.) दे. लिपणा।

लिपवाणा (क्रि. स.) लिपवाना, लिपाई करवाना। **लिपवाना** (हि.)

लिपवाना (क्रि. स.) दे. लिपवाणा।

लिपाई (स्त्री.) 1. लिपवाने का काम, 2. लिपवाने की मज़दूरी; (क्रि. स.) 'लिपाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~-पुताई** लिपाई-पोताई का काम।

लिपाणा (क्रि. स.) दे. लिपवाणा।

लिपाना (क्रि. स.) दे. लिपवाणा।

लिपि (स्त्री.) अक्षर या वर्ण के अंकित चिह्न, अक्षर लिखने की प्रणाली।

लिप्त (वि.) 1. लीन, अनुरक्त, 2. लिपा हुआ, पुता हुआ।

लिबास (पुं.) पोशाक।

लियाँ (अव्य.) 1. संप्रदान कारक का चिह्न, लिए, जैसे–तेरे लियाँ, 2. (दे. ताँहीं), 3. (दे. लिहाँ)। **लिए** (हि.)

लियाक्रत (स्त्री.) दे. ल्याक्कत।

लिया-दिया (वि.) 1. दान पुण्य किया हुआ, 2. आदान-प्रदान किया हुआ।

लिलाम (पुं.) बिक्री का एक ढंग जिसमें सबसे अधिक दाम लगाने वाले को वस्तु बेची जाती है। **नीलाम** (हि.)

लिलिहारी (स्त्री.) सुई से शरीर पर फूल आदि गोदने वाली।

लिलोरी (स्त्री.) दे. ललोरणी।

लिलोवणी (स्त्री.) 1. दे. ललोरणी, 2. दे. लल्लो चप्पो।

लिवाणा (क्रि. स.) 1. बोझा ले जाने में सहायता करना, किसी अन्य का बोझा बीच-बीच में स्वयं लेते रहना, 2. खरीदवाना। **लिवाना** (हि.)

लिवाना (क्रि. स.) दे. लिवाणा।

लिवाल (पुं.) दे. लिवाळ।

लिवाळ (पुं.) 1. लेने वाला, 2. ग्राहक– बूड्ढ़ी भैंस का कूण लिवाळ। **लिवाल** (हि.)

लिसोड़ा (पुं.) दे. ल्हसोड़ा।

लिहाँ/लिह्याँ (अव्य.) दे. लियाँ।

लिहाज (स्त्री.) 1. लज्जा, शर्म, 2. तरफ़दारी, 3. सम्मान या मर्यादा का ध्यान रखना। **लेहाज** (हि.)

लिहाड़ (वि.) लंपट।

लिहाप (पुं.) 1. खोल, रजाई आदि पर चढ़ाने का वस्त्र, 3. भारी रजाई।

लिहाफ़ (पुं.) दे. लिहाप।

लींगरा (पुं.) दे. जींगड़।

लींड (पुं.) विष्ठा, सख़्त टट्टी, (दे. लीद)।

लींडरी (स्त्री.) मेंगन, विष्ठा।

लींड्डा (पुं.) दे. लींड्डू।

लींड्डी (स्त्री.) 1. विष्ठा, 2. हार की बाजी; **~आणा** हार की बाजी आना; **~ठोक** डरपोक। **लेंडी** (हि.)

लींड्डू (पुं.) 1. गिल्ली-डंडा आदि खेल का हारा हुआ दाँव, 2. खेल की बाजी या दाँव; **~चढ़ाणा** बाजी चढ़ाना।

लीक (स्त्री.) 1. पहियों से पड़े गहरे चिह्न, 2. मार्ग, 3. परिपाटी, 4. (दे. लीख[1, 2]). **~मिटाणा** 1. पुरानी प्रथा तोड़ना, 2. चिह्न समाप्त करना।

लीकड़ा (पुं.) तिनका (तुल. डीकड़ा); **~(-ड़े) तोड़णा** 1. बाधा डालना, 2. जादू फेंकना; **~-सा** जीर्ण काय, 1. (दे. करक ~-सा), 2. (दे. डीकड़ा ~-सा)।

लीख¹ (स्त्री.) बैलों को लीक में रखने के लिए गाड़ीवान द्वारा बैलों के लिए प्रयुक्त सांकेतिक ध्वनि।

लीख² (स्त्री.) जूँ का अंडा। **लीखी** (हि.)

लीच्चड़ (वि.) लीचड़, गलीज़।

लीटा (वि.) हीन वचन।

लीट्टा (वि.) 1. अविश्वसनीय, 2. बात से मुकर जाने वाला।

लीड्डर (पुं.) लीडर, नेता, अगुआ।

लीतरा (पुं.) टूटी हुई जूती, (दे. फीड्डी ~जूत्ती); **~उछाळणा/ फैंकणा** टूटी जूती उछाल कर हार-जीत का निर्णय करना, टॉस करना; **~मारणा** अपमाना करना; **~होणा** जूती पुरानी पड़ना।

लीत्तर (पुं.) दे. लीतरा।

लीद (स्त्री.) मेंगन, घोड़े, हाथी आदि का विष्ठा; **~करणा** 1. काम बिगाड़ना, 2. डरना।

लीपणा (क्रि. स.) 1. लेप करना, 2. सफ़ाई पेश करना, 3. लथेड़ना। **लीपना** (हि.)

लीपना (क्रि. स.) दे. लीपणा।

लीप्पा-पोत्ती (स्त्री.) 1. लीपने-पोतने का काम, 2. बात को छिपाने का भाव; **~करणा** वास्तविकता को छिपाना। **लीपा-पोती** (हि.)

लीप्या पोत्ती (वि.) दे. लीप्पा पोत्ती।

लीर (स्त्री.) 1. रेखा, (दे. लकीर), 2. भाग्य, 3. चिह्न, 4. चिथड़ा, धरक; **~काढणा** प्रतिज्ञा करना; **~-लीर होणा** चिथड़ा-चिथड़ा होना। **लकीर** (हि.)

लीरम-लीर (वि.) बुरी तरह फटा हुआ (वस्त्र)।

लीरा (पुं.) फटा वस्त्र।

लील (वि.) 1. चोट के कारण पड़ने वाला नीला चिह्न, 2. नीला रंग, 3. सफेद कपड़ों में दिया जाने वाला नीला चूर्ण विशेष; **~पड़णा/होणा** चोट का स्थान नीला पड़ना। **नील** (हि.)

लीलगर (पुं.) 1. रंगरेज, 2. रँगाई का काम करने वाली एक जाति, 3. एक यवन जाति। **नीलगर** (हि.)

लीलटाँच (पुं) नीलकंठ (पक्षी जिसके दर्शन शुभ माने जाते हैं)। **नीलकंठ** (हि.)

लीलणा (क्रि.) दे. निगलणा।

लील बड़ी (स्त्री.) एक जंगली बेल।

लीला (स्त्री.) दे. लील्ला²।

लीली (स्त्री.) स्त्रियों का अधोवस्त्र। दे. खारा¹।

लील्ला¹ (वि.) नीले या श्याम वर्ण का। **नीला** (हि.)

लील्ला² (स्त्री.) 1. माया, 2. सृष्टि, 3. खेल, नाटक, अभिनय। **लीला** (हि.)

लील्ला-थोत्था (पुं.) नीला थोथा।

लील्ली (वि.) नीले रंग की; (स्त्री.) चुनरी, नीले रंग की चुनरी; **~छतरी आळा** ईश्वर। **नीली** (हि.)

लिह्सलिह्स्या (वि.) लेसदार, चिपचिपा। **लसलसा** (हि.)

लुँगाड़ा (पुं.) बदमाश, लुच्चा।

लुंचन (पुं.) जैन साधुओं की केश उखाड़ने की एक प्रथा।

लुँजा (वि.) अपंग।

लुंडा (पुं.) लौंडा।

लुक (स्त्री.) 1. लौ, आग की लपट, ज्वाला, 2. दीए की लौ से उत्पन्न कालिख, 3. टीस, इच्छा; **~ऊठणा** 1. झल निकलना, 2. ऊँची लौ उठना, 3. तीव्र इच्छा को बुझाने की टीस उठना; **~लागणा** 1. झल लगना, 2. प्यास बुझाने की इच्छा होना।

लुकना (क्रि. अ.) दे. ल्हूकणा।

लुकमान (पुं.) एक प्रसिद्ध हकीम (वि.) समझदार।

लुकाना (क्रि. स.) दे. ल्हकोणा।

लुक्खा (वि.) 1. बिना चुपड़ा हुआ, 2. बिना साग, दाल, छाछ आदि का (भोजन), 3. बिना नमक का (भोजन), 4. स्वाद-रहित भोजन, 5. यथेष्ट मात्रा में, मुक्त-हस्त–घी का कित भूक्खा रहग्या चाहे लुक्खा खा; **~खाणा** बेरोक-टोक खाना; **~-सुक्खा** रूखा-सूखा (भोजन); ~ **~खाणा** 1. गरीबी में समय बिताना, 2. उन्मुक्त हस्त से खाना। **रूखा** (हि.)

लुगदी (स्त्री.) दे. लुबदी।

लुगड़ी (स्त्री.) दे. लूगड़ी।

लुगरी (स्त्री.) दे. लूगड़ी।

लुगाई (स्त्री.) 1. स्त्री, 2. पत्नी, 3. 'लोग' का स्त्रीवाचक रूप; (वि.) भीरु, कायर।

लुचपणा (पुं.) लुच्चापन।

लुच्चा (पुं.) 1. बदमाश, 2. निर्लज्ज।

लुटणा (क्रि. अ.) 1. घाटे में रहना, 2. लूटा जाना। **लुटना** (हि.)

लुटणा (क्रि. अ.) दे. लुटणा।

लुट-लुटी (स्त्री.) गधे, ऊँट, घोड़े आदि की बार-बार इधर-उधर करवट बदलने की क्रिया; **~ऊठणा** लोट-पोट होने या करवट बदलने की इच्छा होना।

लुटाणा (क्रि. स.) 1. लौटाना, वापिस करना, 2. लिटाना, 3. लुटाना, सम्पत्ति या धन-दौलत लुटाना।

लुटाना (क्रि. स.) 1. संपत्ति आदि को मुक्त-हस्त से बाँटना, 2. मुफ्त में या बिना पूरा मूल्य लिए देना।

लुटिया (स्त्री.) छोटा लोटा; **~डबोणा/डोबणा** 1. काम बिगाड़ना, 2. सम्मान खोना, 3. कलंकित करना; **~मैं गुड़ फोड़णा** 1. गुप्त काम करना, 2. न छिपने वाले भेद को छिपाना।

लुटेरा (पुं.) लूट-खसोट करने वाला; (वि.) वस्तु का अधिक मूल्य ऐंठने वाला।

लुढकणा (क्रि. अ.) 1. औंधा होकर बिखरना, 2. गिरना, फिसलना, 3. उलट-पुलट होते हुए गिरना, 4. अनुत्तीर्ण होना, 5. भ्रष्ट होना; (वि.) 1. लुढ़कने वाला, 5. बेपैंदी का (लोटा आदि)। **लुढ़कना** (हि.)

लुढ़कना (क्रि. अ.) दे. लुढकणा।

लुढकाणा (क्रि. स.) 1. धक्का देकर फिसलाना, 2. हराना, 3. गिराना, 4. औंधा करके रिताना–मात्ता पै पाणी का लोट्टा लुढका आइये। **लुढ़काना** (हि.)

लुढणा (क्रि. अ.) 1. लुढ़कना, 2. बिखरना, 2. रूई का ओटा जाना; (वि.) शीघ्र लुढ़कने वाला। **लुढ़ना** (हि.)

लुढाणा[1] (क्रि. स.) 1. औंधा करना, 2. लुढ़काना। **लुढ़ाना** (हि.)

लुढाणा[2] (क्रि.) कपास को लोढना।

लुढ़ाना (क्रि. स.) दे. लुढाणा।

लुत (स्त्री.) मुँह या ओठों पर उठने वाली छोटी फुंसियाँ, झूठ; **~ऊप्पड़णा/ लिकड़णा** झूठ उपड़ना।

लुतरा (वि.) दे. लावालूतरी।

लुपत (वि.) अदृश्य। **लुप्त** (हि.)

लुबदा (वि.) अंजलि-भर; (पुं) 1. अंजलि, 2. (दे. लोंद्दा)।

लुबदी (स्त्री.) लुगदी, गीली वस्तु का पिंड।

लुब्धक (वि.) 1. लुभाने वाला, 2. शिकारी।

लुभकणा (क्रि. अ.) दे. ल्हुकणा।

लुभाना (क्रि. अ.) 1. मोहित होना, रीझना, 2. लालच में पड़ना, 3. तन-मन की सुधि भूलना; (क्रि.स.) 1. मोहित करना, 2. ललचाना, 3. मोह में डालना।

लुल्हा (वि.) दे. लूल्ला।

लुवाणा (क्रि. स.) लगवाने का काम अन्य से करवाना। **लगवाना** (हि.)

लुहार (पुं.) 1. लोहे का काम करने वाला, 2. लोहे का काम करने वाली एक जाति। **लोहार** (हि.)

लुहारी (पुं.) 1. लोहार की पत्नी, 2. लोहार जाति की महिला। **लोहारी** (हि.)

लूँग[1] (स्त्री.) दे. लोंग।

लूंग[2] (स्त्री.) लौंग। कीकर का फूल। दे. लोंग।

लूँगड़ी (स्त्री.) दे. लूगड़ी।

लूँग मळाई (वि.) कोमल।

लूँहढी (स्त्री.) लच्छी, सन, पटसन आदि के रेशे की लच्छी या लट्टी।

लूका (स्त्री.) आग। दे. लुक।

लूखा (वि.) दे. लुक्खा।

लूगड़ी (स्त्री.) 1. ओढ़नी, 2. मोटे कपड़े की चद्दर।

लूग्गड़ (पुं.) बड़ी ओढ़नी।

लूगाई (स्त्री.) दे. लुगाई।

लूट (स्त्री.) 1. माल को ज़बरदस्ती छीनने का भाव, 2. बिना पैसा दिए वस्तु लेने का भाव, 3. अधिक पैसे ऐंठने का भाव, 4. अराजकता की स्थिति; (क्रि. स.) 'लूटणा' क्रिया का आदे. रूप; **~-पाट** लूट; **~मचाणा** 1. अधिक पैसे ऐंठना, 2. अराजकता की स्थिति उत्पन्न करना, 3. सरे आम सामान छीनना।

लूटणा (क्रि. स.) 1. डाका डालना, 2. इज़्ज़त लूटना, 3. अधिक दाम ऐंठना; (वि.) लूटने वाला। **लूटना** (हि.)

लूटना (क्रि. स.) दे. लूटणा।

लूटमार (स्त्री.) 1. लूट-खसोट, 2. अराजकता की स्थिति।

लूट्टा (वि.) लूटा, लुटेरा, लूटने वाला; **~-खसोट्टी** लूट-पाट।

लूणा (वि.) नमकीन, नमक-युक्त भोजन।

लूणी (वि.) 1. नमकीन, 2. नमकीन स्वाद की (मिट्टी), (दे. नूणी[2]), 3. छोटे और मोटे पत्तों की एक घास जिसके पत्ते नमकीन होते हैं।

लूत[1] (स्त्री.) दे. लुत।

लूत[2] (पुं.) जंगली पशु।

लूतरा (वि.) 1. झूठा, 2. चुगलख़ोर, (दे. लावा-लूतरा)।

लूम (पुं.) बाजूबंद का एक भाग जो चाँदी के घुँघरुओं का एक गुच्छा-सा होता है।

लूमणा[1] (क्रि. अ.) झुकना (मेवा.)।

लूमणा[2] (क्रि.) लट्टू होना। मुग्ध होना।

लूर नाँच (पुं.) होली नृत्य।

लूरी (स्त्री.) झुर्रियाँ, झुर्री।

लूला (वि.) दे. लूल्ला।

लूलू (वि.) दे. ल्हुल्लू।

लूल्ला (वि.) 1. जिसका हाथ कटा हो, टुंडा, 2. असमर्थ। **लूला** (हि.)

लूह्क्खा (वि.) दे. लुक्खा।

लेंडियाणा (क्रि.) दे. घेरणा।[2]

लेंहें (अव्य.) लिए, जैसे–तेरे लेंहें, तेरे लिए, (दे. लियाँ)।

ले[1] (पुं.) 1. लेप, 2. दल, परत, (दे. लेवड़ा); (क्रि. स.) 'लेणा' क्रिया का आदे. **रूप; ~चढाणा/लाणा** 1. भींत लीपना, 2. लेपन करना, 'हाँड्डी', 'बरोल्ली' की तली में मिट्टी पोतना। **लेप** (हि.)

ले[2] (अव्य.) 1. पशु-पक्षी को खाद्य-वस्तु देने के लिए प्रयुक्त संबोधन शब्द, 2. चिढ़ाने के लिए प्रयुक्त शब्द, 3. लो, विस्मयादिबोधक शब्द–ले भई! मठ मरग्या।

लेइ (स्त्री.) दे. लेही।

लेऊ (वि.) लेने वाला, लेने का इच्छुक, 1. (दे. लेवा), 2. (दे. लिवाळ)।

लेक्खा (पुं.) 1. हिसाब, 2. भाग्य के अक्षर, 3. हिसाब-किताब, 4. बही-खाता, 5. कर्ज़, 6. वृत्तांत, कहानी, 7. ब्योरा; **~करणा** हिसाब- किताब लिखना; **~खुल्हणा** 1. भाग्योदय होना, 2. सभी बातें स्पष्ट होना; **~चालणा** कमाई करना; **~चुकाणा** 1. पूर्व जन्म का कर्ज़ चुकाना, 2. ऋण उतारना; **~-जोक्खा** 1. हिसाब किताब, 2. विवरण। **लेखा** (हि.)

लेक्खै (पुं.) अनुमान, विचार, जैसे–तेरै लेक्खै तै ठीक्कै सै; (अव्य.) लिए–याह चीज तेरै लेक्खै बणी थीं; (वि.) जैसा, सरीखा।

लेख (पुं.) 1. लिखावट, 2. भाग्य, भाग्य-रेखा; **~बदलणा** भाग्य पलटना; **~मिटाणा** भाग्यहीन होना।

लेखक (पुं.) 1. लिखने वाला, 2. ग्रंथकार।

लेखणा (क्रि. स.) चित्रित करना।

लेखणी (स्त्री.) कलम, लिखने का उपकरण। **लेखनी** (हि.)

लेखन (पुं.) 1. लिखने का कार्य, 2. लिखने की विद्या।

लेखनी (स्त्री.) दे. लेखणी।

लेखा (पुं.) दे. लेक्खा।

लेघड़ा (पुं.) कच्चा और पतला हलुआ।

लेज्जू (स्त्री.) (कौर.) दे. नेज्जू।

लेट (स्त्री.) जोहड़ी, पानी का छोटा गड्ढा; (क्रि. अ.) 'लेटणा' क्रिया का आदे. रूप।

लेटड़ा (पुं.) जोहड़ी, छोटा तालाब, तलैया।

लेटड़ी (स्त्री.) छोटी जोहड़ी।

लेटणा (क्रि. अ.) 1. लेट जाना, 2. विश्राम करना, 3. सोना, 4. गिर पड़ना, 5. अचेत होकर गिरना, 6. मरना, 7. बीमार पड़ना। **लेटना**(हि.)

लेटना (क्रि. अ.) दे. लेटणा।

लेटमाँ (वि.) 1. तिरछा, 2. भूमि के बल लेटा हुआ, 3. पेट के बल लेटा हुआ। **लेटवाँ** (हि.)

लेटाना (क्रि. स.) दे. लिटाणा।

लेट्टी (स्त्री.) (कौर.) दे. लेही।

लेड्डण (स्त्री.) बनिये की पत्नी, बनियाइन, (दे. बाणणी)।

लेड्डा (वि.) भीरु; (पुं.) बनिया।

लेड्डी[1] (स्त्री.) दे. लेड्डण।

लेड्डी[2] (स्त्री.) अंग्रेज़ की पत्नी, मैंम– म्हारियाँ का दुरबल बाणा मुँह तैं लाल्ली झड़ी हुई, उनकी लेड्डी–मैंम देक्खो मूरत के ज्यूँ जड़ी हुई (लो. गी.)। **लेडी** (हि.)

लेण (पुं.) 1. व्यापार, 2. कर्ज़।

लेणदार (पुं.) 1. लेने का हक़दार, 2. कर्ज़ माँगने वाला। **लेनदार** (हि.)

लेण-देण (पुं.) 1. व्यापार, 2. आपसी व्यवहार। **लेन-देन** (हि.)

लेणहार (पुं.) 1. लेने वाला, 2. भिखारी।

लेणा (क्रि. स.) 1. प्राप्त करना, 2. माँगना, 3. पकड़ना, 4. खरीदना। **लेना** (हि.)

लेणिया (वि.) लेने वाला, ग्राहक।

लेनदार (पुं.) दे. लेणदार।

लेपना (क्रि. स.) 1. दे. लीपणा, 2. दे. ल्हेसणा।

लेप्पड़ (पुं.) दे. लेवड़ा।

लेव (पुं.) भींत का लेप, (दे. ले.[1])। **लेप** (हि.)

लेवटी (स्त्री.) पशु की छोटी ओहड़ी या आयन, (दे. ओहड़ी)।

लेवड़ा (पुं.) लेप, लेव, बार-बार लीपने से बनी मिट्टी की परत, दीवार से टूटी मिट्टी की मोटी पपड़ी; **~ऊत्तरणा/ पड़णा** दीवार का लेप गिरना।

लेवा (वि.) 1. लेने का इच्छुक, 2. ख़रीददार, (दे. लिवाळ), 3. (दे. ओहड़ी); **~- देई का ब्याह** 1. अदले-बदले में लेकर किया गया लड़की का विवाह, 2. वह विवाह जिसमें कन्यापक्ष के लोग वर-पक्ष से कन्या का मूल्य लेते हैं।

लेश (पुं.) दे. लेस[2]।

लेस[1] (पुं.) दे. ल्हेस।

लेस[2] (पुं.) अंश मात्र, अंश। **लेश** (हि.)

लेसना (क्रि. स.) दे. ल्हेसणा।

लेहदे-लेहदे. (वि.) अगणित (चोट) उदा. –लेहदे लेहदे मारपीट हो, जिब कित घर घोरा सै। (लचं)।

लेही (स्त्री.) मैदा या आटे का बना चिपचिपा घोल। **लेई** (हि.)

लैंग-थैंग (स्त्री.) जैसे-तैसे या कठिनाई के साथ कार्य पूर्ण होने का भाव; **~करणा** जैसे-तैसे काम निकालना।

लैंडा (पुं.) दे. लैंहढा।

लैंहढ़ा (पुं.) 1. पशुओं (गाय, भैंस) का झुंड, 2. झुंड 3. छोटे बच्चों का झुंड; **~चराणा** पशु चराना। दे. रेवड़।

लै (स्त्री.) स्त्रियों का अधोवस्त्र। दे. घाघरी।

लैचा (पुं.) लाल सफेद रंग का घाघरा।

लैट (स्त्री.) लाइट, प्रकाश।

लैन (स्त्री.) 1. रेखा, 2. रेल की पटरी, 3. सड़क, कच्ची सड़क। **लाइन** (हि.)

लैस (वि.) सुसज्जित, हथियार आदि

लैहणा (पुं.) दे. लहणा।

लैहबर (पुं.) रहबर।

लों (क्रि. वि.) दे. ताँहीं।

लोंकला (स्त्री.) दे. सूआ लागड़।

लोंग (स्त्री.) 1. एक मसाला, 2. लौंग के आकार का नाक-कान का एक

आभूषण, 3. कीकर का फूल। **लौंग** (हि.)

लोंज्जा (पुं.) कच्ची घास, सावन-भादों की घास।

लोंज्जी (स्त्री.) 1. इमली, दाख, छुहारे की चटनी, 2. कच्ची आमी की सब्जी। **लौंजी** (हि.)

लोंझा (पुं.) दे. लोंज्जा।

लोंडिया (स्त्री.) 1. छोटा लड़की, 2. (दे. लोंड्डी)।

लोंड्डा (पुं.) 1. फ़ैशनबाज़ लड़का, 2. दास; (वि.) गुदा-मैथुन कराने वाला। **लौंडा** (हि.)

लोंड्डी (स्त्री.) 1. दासी, 2. वेश्या, 3. लड़की (सीमित प्रयोग)। **लौंडी** (हि.)

लोंद (पुं.) अधिक मास या मल मास। **लौंद** (हि.)

लोंदा (पुं.) दे. लोंद्दा।

लोंद्दा (पुं.) 1. अंजलि भर (गीला पदार्थ), 2. गीले पदार्थ (घी, मिट्टी आदि) का डेला, जैसे–घी का लोंद्दा। **लोंदा** (हि.)

लोंहढा (पुं.) लोहे की कड़ाही।

लो (स्त्री.) 1. दीपक की ज्वाला, 2. अग्नि-ज्वाला, 3. ध्यान, 4. प्रेम; (क्रि. स.) 'लेणा' क्रिया का आदे. रूप; (अव्य.) 1. संबोधन का एक चिह्न, 2. सचेत करने के लिए प्रयुक्त ध्वनि। **लौ** (हि.)

लोई[1] (स्त्री.) एक प्रकार का हल्का कंबल, 2. गुँधे हुए आटे की पेड़ी।

लोई[2] (स्त्री.) प्रकाश, प्रभात।

लोई[3] (वि.) लाल बालों वाली भैंस।

लोक (पुं.) 1. संसार, 2. नाना लोक, जैसे–परलोक, यमलोक आदि।

लोकड़ा (पुं.) दे. लोकड़िया।

लोकड़िया (पुं.) 1. ब्राह्मण बालक जिसको (देवी का भक्त समझ कर) पहले भोजन खिलाया जाता है, 2. छोटा लड़का, 3. लागुडिक; **~जिमाणा** मुख्य भोजन शुरू होने से पूर्व ब्राह्मण-कुमारों को भोजन खिलाना।

लोग (पुं.) 1. नर जाति, मनुष्य, 2. वयस्क, बड़ी आयु का, 3. पति (दे. कूँग्गर); **~-लुगाई** 1. दंपती, युगल, 2. स्त्री-पुरुष; **~-हँसाई** जग-हँसाई; **~होणा** वयस्क होना।

लोगड़/लोग्गड़ (पुं.) लोगड़, पुरानी रूई; **~करणा** 1. रूई को दबा कर ख़राब करना, 2. काम बिगाड़ना; **~कातणा** मोटा सूत कातना।

लोच (स्त्री.) 1. आटा गूँधते समय आटे पर दिया जाने वाला दबाव, 2. लचक, लचीलापन, 3. फुर्ती; (क्रि. स.) 'लोचणा' क्रिया का आदे. रूप) **~लाणा** लोच लगाना, लोचना।

लोचणा (क्रि. स.) 1. लोच देना, आटा गूँध कर उस पर लोच लगाना, 2. लुंचन करना, 3. तड़पना।

लोबान (स्त्री.) धूप की तरह का एक सुगंधित पदार्थ।

लोट[1] (स्त्री.) 1. लेटने का भाव, 2. मार्ग, कच्ची सड़क, जैसे–बग्गी-लोट (दे.); (क्रि. अ.) 'लोटणा' क्रिया का आदे. रूप; **~मारणा** 1. विश्राम करना, 2. तालाब में स्नान करना, 3. गधे, ऊँट आदि का ज़मीन पर लुटलुटी लेना।

लोट[2] (पुं.) कागज़ का रुपया। **नोट** (हि.)

लोट[3] (स्त्री.) मिट्टी की छोटी सुराही।

लोटणा (क्रि. अ.) 1. विश्राम करना, 2. गधे, ऊँट आदि द्वारा रेत में लेटना, 3. उलटना, जैसे–गाड्डी का लोटणा, 4. पैरों में गिरना, 5. वचन से पलटना, 6. लौटना, वापस आना। **लेटना/लौटना** (हि.)

लोटणी (स्त्री.) बेचैनी, उचाटी।

लोटना (क्रि. अ.) दे. लोटणा।

लोट-पलोट (वि.) हँसते-हँसते लोट-पोट होने की स्थिति। **लोट-पोट** (हि.)

लोट-पोट (वि.) दे. लोट-पलोट।

लोटरी (स्त्री.) लाटरी।

लोटा (पुं.) दे. लोट्टा।

लोट्टा (पुं.) जलपात्र विशेष; **~-डोरी** पानी भरने का लोटा और डोरी; **~नूण गाळणा** 1. गुप्त निर्णय करना, 2. एक होने या अपना भेद प्रकट न करने का निर्णय करना। **लोटा** (हि.)

लोड़[1] (स्त्री.) 1. आवश्यकता, 2. लज्जा, शर्म; **~पड़ना** आवश्यकता पड़ना; **~मारणा** शर्म रखना–के उसनैं किसै की लोड़ मारिये सै।

लोड़[2] (पुं.) कान की वह लटकता भाग जिसमें आभूषण पहनते हैं।

लोड़ा (पुं.) जननेंद्री। **लिंग** (हि.)

लोड्ढा[1] (पुं.) 1. पत्थर, चटनी रगड़ने का पत्थर, 2. बाट, बट्टा, 3. एक जाति; **~-सा सिर** मोटा गोल सिर। **लोढ़ा** (हि.)

लोड्ढा[2] (पुं.) बिनौले निकालने की चर्खी।

लोड्ढी (स्त्री.) 1. चटनी रगड़ने का पत्थर, बट्टा, 2. छोटा पत्थर; (क्रि. स.) 'लोढणा' क्रिया का भू.का., स्त्रीलिं. रूप। **लोढ़ी** (हि.)

लोढणा (क्रि. स.) ओटना, कपास ओटना; (पुं.) कपास ओटने का यंत्र। **लोढ़ना** (हि.)

लोढ़ना (क्रि. स.) दे. लोढणा।

लोढा (पुं.) दे. लोड्ढा।[1]

लोढिया (पुं.) छोटी लोढ़ी, (दे. लोड्ढी)।

लोणीवाळ (पुं.) एक अहीर गोत।

लोथ (स्त्री.) 1. गिलगिला भारी बोझा, 2. भारी शरीर, 3. मृतक शरीर, 4. ढेरी; **~की लोथ** भारी भरकम।

लोथड़ा (पुं.) 1. मांस का बड़ा टुकड़ा, 2. गिलगिला भारी बोझा, जैसे–चून का लोथड़ा।

लोप (पुं.) 1. लुप्त, 2. अभाव, 3. नाश; **~करणा** 1. छिपाना, 2. नष्ट करना, 3. अदृश्य करना।

लोबा (स्त्री.) 1. दे. लोम्बाँ, 2. दे. लोमड़ी।

लोबिया (पुं.) दे. चोळा[1]।

लोब्बाँ (स्त्री.) दे. लोमड़ी; **~-सा मुँह** लंबा मुँह। **लोमड़ी** (हि.)

लोब्भण (वि.) लोभ करने वाली। **लोभिन** (हि.)

लोब्भी (वि.) लालची। **लोभी** (हि.)

लोभ (पुं.) लालच; **~आणा** लालच आना।

लोभिया (पुं.) दे. चोळा[1]।

लोभी (वि.) दे. लोब्भी।

लोम (पुं.) 1. लोम ऋषि। 2. दे. रूँग।

लोमड़ी (स्त्री.) कुत्ते जैसा मोटी पूँछ वाला एक समझदार जंगली जंतु (तुल. लोब्बाँ)।

लोर (स्त्री.) 1. हिलोर, 2. फुहार।

लोरी (स्त्री.) बच्चों को सुलाने या रिझाने आदि के लिए गाई जाने वाली जकड़ी, जैसे–भाई रे बलैया रे,
तूँ साळ पड्ढण जाइये रे।

मुंसी मारै कामची,
तूँ घर नैं भाज्या आइये रे।।

लोलीन (वि.) तल्लीन, भक्ति में लीन। **लवलीन** (हि.)

लोल्ला (पुं.) जननेंद्री (तुल. लोड़ा)। **लोला** (हि.)

लोवै (वि.) दे. लवै।

लोह (पुं.) लोहा; (वि.) कठोर।

लोहकाट (पुं.) एक गुठलीदार फल। **लोकाट** (हि.)

लोहड़ी (स्त्री.) मकर संक्रांति के एक दिन पहले मनाया जाने वाला एक त्योहार (यह त्योहार भारत-विभाजन के बाद पंजाब से हरियाणे में आया)।

लोहधरी (स्त्री.) 1. लोहे की मोटी छड़ी (जो बेलचे का काम देती है), 2. गाड़ी के पहिये की धुरी।

लोहरा (पुं.) छोटा लड़का (कौर.), (दे. लोकड़िया)।

लोह-लाठ (पुं.) 1. लोहे की लाट, 2. महरौली स्थित भीम-कीली; (वि.) निश्चित, ध्रुव; **~सोद्दा** पक्का सौदा।

लोहसार (पुं.) 1. पक्का लोहा, 2. तलवार।

लोहा (पुं.) एक धातु विशेष; (वि.) 1. कठोर, 2. मज़बूत, 3. कठोर धातु।

लोहार (पुं.) दे. लुहार।

लोहू (पुं.) लहू, खून।

लोह्ड़-बोड़ (स्त्री.) 1. आयु का छोटा-बड़ापन, 2. दो व्यक्तियों के बीच की आयु का अंतर।

लौंग (स्त्री.) दे. लोंग।

लौंडा (पुं.) दे. लोंड्डा।

लौंडी (स्त्री.) दे. लोंड्डी।

लौंद (पुं.) दे. लोंद।

लौ (स्त्री.) दे. लो।

लौटना (क्रि. स.) 1. वापिस आना, 2. पीछे की ओर मुड़ना, (दे. लोटणा)।

लौटाना (क्रि. स.) 1. वापिस देना, 2. पलटना, फेरना, 3. ऊपर-नीचे करना।

लौलता (स्त्री.) लौ, लगन। उदा.–लगी लौलता सच्चे दिल से, बसै भरतार काळजे मैं। (लचं.)

ल्याक्कत (स्त्री.) योग्यता। **लियाक़त** (हि.)

ल्याणा/ल्यावणा (क्रि. स.) लाना।

ल्यो (अव्य.) लो। उदा.–उसतै पूछ ल्यो।

ल्योटी (स्त्री.) 1. दे. ओहड़ी, 2. दे. लेवटी।

ल्हको (पुं.) छिपाव; (क्रि. स.) 'ल्हकोणा' क्रिया का आदे. रूप। **लुकाव** (हि.)

ल्हकोणा (क्रि. स.) 1. छिपाना, 2. लुप्त करना।

ल्हफणा (क्रि. स.) 1. पकड़ने के लिए हाथ या मुँह बढ़ाना, पकड़ने के लिए झुकना, 2. आश्रय तकना।

ल्हसोड़ा (पुं.) 1. एक वृक्ष जिस पर लसलसे फल विशेष लगते हैं, जो ओषधि के काम भी आते हैं, यह गरमी में फलता है, 2. लसोड़े के फल। **लसोड़ा** (हि.)

ल्हस्सण (पुं.) दे. लह्स्सण। **लहसुन** (हि.)

ल्हस्सी (स्त्री.) छाछ, (दे. सीत)। **लस्सी** (हि.)

ल्हारसा/ल्हाळसा (पुं.) 1. लालसा, 2. आशा।

ल्हास[1] (स्त्री.) मृतक शरीर; **~करणा** क़त्ल करना। **लाश** (हि.)

ल्हास[2] (स्त्री.) 1. प्रतिदान या प्रतिफल के रूप में की गई खेती के काम-काज की पारस्परिक सहायता, 2. चरसा खींचने के काम आने वाला मोटा रस्सा।

ल्हास्सी (स्त्री.) दे. सीत।

ल्हिसणा (क्रि. अ.) 1. चिपकना, 2. लथपथ होना।

ल्हीलड़ा (वि.) दे. मरतला।

ल्हुकणा (क्रि. अ.) 1. छिपना, 2. मेहमान के आने पर लड़की का छिपना या सामने न आना, 3. शर्माना, 4. आँख बचाते फिरना। **लुकना** (हि.)

ल्हुकमाँ (वि.) किसी से छुप कर किया गया काम; (क्रि. वि.) लुक-छिप कर।

ल्हुक्कम-ल्हुक्का (पुं.) आँख-मिचौनी का खेल।

ल्हुल्लू (वि.) 1. मूर्ख, 2. मोटा (व्यक्ति), 3. पंगु; (पुं.) 1. कीड़ा, 2. भूत।

ल्हूक (स्त्री.) टीस, तीव्र इच्छा; **~ऊठणा** टीस उठना।

ल्हूर-नाँच (पुं.) आषाढ़ की फ़सल पकने पर बागड़ से सटे क्षेत्र में महिलाओं द्वारा किया जाने वाला एक नृत्य।

ल्हेफ (पुं.) लिहाफ़।

ल्हेस (पुं.) लेस, चिपचिपापन।

ल्हेसणा (क्रि. स.) 1. किसी वस्तु को लसलसे पदार्थ में लथपथ करना, 2. चिपचिपी वस्तु में चिपकाना। **लेसना** (हि.)

ल्हेसवा (पुं.) दे. ल्हसोड़ा।

ल्होड़ बोड़ (वि.) छोटा-बड़ापन। उदा.-इन बाळकां में बरस दो बरस की ल्होड़-बोड़ (लघुता-वृद्धि) सै।

ल्होरी (वि.) लाहौर से संबंधित। **~नूण**। दे. सिंध्या नूण। दे. लाहौरी।

ल्होल्लू (वि.) दे. ल्हुल्लू।

ल्होस (पुं.) छोटे-छोटे हल्के बादल।

व

व हिंदी वर्णमाला का उनतीसवाँ व्यंजन जो अंतस्थ अर्द्ध-व्यंजन माना जाता है।

वंदना (स्त्री.) 1. स्तुति, 2. प्रणाम।

वंश (पुं.) दे. बंस।

वंशज (स्त्री.) दे. बंसज।

वंशावली (स्त्री.) वंश-बेल।

वंशी (स्त्री.) दे. बाँसळी।

वँह (सर्व.) उस।

वकालत (स्त्री.) दे. वकाल्लत।

वकाल्लत (स्त्री.) 1. वकील का व्यवसाय, 2. तर्फ़दारी। **वकालत** (हि.)

वकाल्लतनाम्माँ (पु.) वकालतनामा।

वकील (पुं.) 1. किसी के पक्ष में मंडन या खंडन करने वाला व्यक्ति, 2. कचहरी में वकालत करने वाला; (वि.) तार्किक।

वक्त (पुं.) दे. बखत।

वगैरह (अव्य.) आदि-आदि, इत्यादि।

वचन (पुं.) दे. बचन।

वजन (पुं.) भार, (दे. बोझ)।

वजह (स्त्री.) कारण, हेतु।

वजीप्फा (पुं.) वज़ीफ़ा, छात्रवृत्ति।

वज़ीफ़ा (पुं.) दे. वजीप्फा।

वज़ीर (पुं.) मंत्री।

वज्र (स्त्री.) दे. बज्जर।

वणी (स्त्री.) वृक्ष पंक्ति। दे. बणी।

वतन (पुं.) 1. देश, 2. जन्म-भूमि।

वधू (स्त्री.) दे. बहु।

वन (पुं.) दे. बण।

वनवास (पुं) 1. दे. बणबास, 2. दे. दिसोट्टा।

वनवासी (वि.) दे. बणबास्सी।

वनवासी (स्त्री.) दे. बनासपती।

वन्नैं (सर्व.) 1. उसने, 2. उसको।

वफ़ा (स्त्री.) 1. वायदा पूरा करना, बात निबाहना, 2. भक्ति, स्वामि-भक्ति।

वफ़ादार (वि.) 1. स्वामि-भक्त, 2. वायदा निभाने वाला।

वंभण (पुं.) ब्राह्मण। उदा.–वंभण तणउ ग्रेह परहरइ (कूकड़ा मंजारी चउपई)।

वर (पुं.) दे. बर[1]।

वरक (पुं.) 1. पत्र, सोने-चाँदी आदि के पतले पत्तर, 2. पुस्तक का पन्ना।

वरण (पुं.) दे. बरण[1]।

वरणा (स्त्री.) बनारस के निकट एक नदी (वरुणा)। उदा.–उस दिन तू वरणा पै नाटी थी, आज मेरा मोक्का सै। (लचं)

वरदान (पुं.) दे. बरदान।

वरदी (स्त्री.) दे. उड़दी[2]।

वरना (अव्य.) अन्यथा, नहीं तो।

वरम (स्त्री.) सूजन।

वरला (वि.) 1. इधर का, इस ओर का, 2. 'परले' का विलोम (तुल. उरला); **~(-ली) ओड़** इस ओर।

वरुण[1] (पुं.) 1. जल का देवता, 2. जल।

वरुण[2] (पुं.) दे. बरणा।

वर्ग (पुं.) दे. बरग।

वर्गमूल (पुं.) ज़ज़र।

वर्ण (पुं.) दे. बरण[1, 3]।

वर्णन (पुं.) 1. चित्रण, 2. कथन।

वर्णमाला (स्त्री.) अक्षरों की यथाक्रम लिखित सूची।

वर्तमान (पुं.) विद्यमान समय; (वि.) विद्यमान।

वर्धन वंश (पुं.) राजा हर्ष का वंश जिन्होंने स्थानेश्वर को अपनी राजधानी बनाया।

वर्मा (पुं.) क्षत्रियों, कायस्थों आदि की एक उपाधि या उपनाम।

वर्ष (पुं.) दे. बरस।

वर्षगाँठ (स्त्री.) दे. बरसगाँठ।

वर्षफल (पुं.) वर्ष-भर के ग्रहों के शुभ-शुभ फलों का विवरण।

वर्षा (स्त्री.) 1. वह ऋतु जिसमें पानी बरसता है, 2. वृष्टि। दे. बरखा।

वल्कल (पुं.) 1. वृक्ष की छाल के वस्त्र, 2. (दे. बक्कल)।

वल्द (पुं.) बेटा, पुत्र।

वल्दियत (स्त्री.) पिता के नाम का परिचय।

वल्लभ (पुं.) वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध आचार्य।

वल्ह (पुं.) नाहटा के अनुसार 'कूकड़ा मंजरी' के रचयिता (ये लौहाटू के निवासी थे)।

वश (पुं.) दे. बस[2]।

वशीकरण (पुं.) दे. बसीकरण।

वसंत (पुं.) दे. बसंत।

वसंत पंचमी (स्त्री.) दे. बसंत पंचमी।

वसिष्ठ (पुं.) 1. एक ऋषि, 2. एक ब्राह्मण गोत्र।

वसीयत (स्त्री.) 1. अपने बाद संपत्ति आदि के भावी विभाजन की कानूनी व्यवस्था, 2. धरोहर।

वसीयतनामा (पुं.) वह लेख या काग़ज़ जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपनी वसीयत करता है।

वसीला (पुं.) काम धंधा।

वसुंधरा (स्त्री.) पृथ्वी।

वसुदेव (पुं.) श्रीकृष्ण के पिता।

वसुधा (स्त्री.) पृथ्वी।

वसूल (वि.) 1. प्राप्त, 2. जो (राशि या वस्तु) चुका लिए गए हों।

वसूली (स्त्री.) 1. किसी से रुपया-पैसा या वस्तु प्राप्त करने का कार्य, 2. प्राप्ति।

वस्तु (स्त्री.) दे. चीज~**बसत।**

वस्त्र (पुं.) दे. बस्तर।

वह (सर्व.) 1. दे. वोह[3], 2. दे. वाहे।

वहम (पुं.) दे. भैम।

वहमी (वि.) वहम करने वाला।

वहशी (वि.) जंगली, असभ्य।

वहाँ (क्रि. वि.) 1. दे. उत, 2. दे. उड़ै।

वहीं (क्रि. वि.) दे. उत्तै।

वही (सर्व.) 1. दे. वाह्हे, 2. दे. वोहे।

वा (सर्व.) वह (स्त्रीलिं. रूप), जैसे–वा छोहरी (वह लड़की)।

वाक (पुं.) वचन।

वाक़ई (अव्य.) वास्तव में।

वाक़फ़ियत (स्त्री.) जान-पहचान, परिचय।

वाक़या (पुं.) घटना, 2. वृत्तांत।

वाक़िफ़ (वि.) परिचित।

वाक्य (पुं.) पद-समूह की अभिप्राय-सूचक पूर्ण इकाई। दे. बाक।

वाग्दान (पुं.) कन्या का विवाह करने का वचन देना।

वाचक (वि.) बताने वाला, सूचक; (पुं.) संकेत।

वाचन (पुं.) पठन। दे. बाँचणा।

वाचनालय (पुं.) सार्वजनिक रूप से समाचार-पत्र आदि पढ़ने का स्थान।

वाचाल (वि.) 1. बकवादी, 2. वाक्पटु। दे. कहाकड़।

वाज (स्त्रएी.) दे. अवाज।

वाज़िब (वि.) उचित, सर्वथा उचित।

वाज़िबी (वि.) उचित, ठीक।

वाटिका (स्त्री.) छोटा उद्यान।

वाड़ा (पुं.) सामूहिक वास या मुहल्ला सूचक शब्द, जैसे–जटवाड़ा, जोग्गीवाड़ा। दे. बाड़ा।

वाणिज्य (पुं.) दे. बणज।

वाणी (स्त्री.) दे. बाणी।

वात (पुं.) वायु।

वातावरण (पुं.) 1. आस-पास की परिस्थिति, 2. वायुमंडल।

वादरायण (पुं.) वेद व्यास। **बादरायण** (हि.)

वाद-विवाद (पुं.) बहस।

वाद्य (पुं.) दे. बाज्जा।

वानप्रस्थ (पुं.) आश्रम-व्यवस्था का तीसरा आश्रम, 50 से 75 वर्ष तक की आयु।

वानर (पुं.) दे. बाँद्दर।

वापस (वि.) लौटा हुआ।

वापसी (वि.) लौटा हुआ या फेरा हुआ; (स्त्री.) लौटने की क्रिया।

वामन (पुं.) दे. बावन औतार। दे. बावना।

वामन पुराण (पुं.) हरियाणा में रचित एक प्रसिद्ध पुराण।

वाम-मार्ग (पुं.) विपरीत आचरण वाला। दे. सरभंगी।

वायल[1] (पुं.) गुड़गावाँ और दिल्ली के मध्य का क्षेत्र, 2. एक वस्त्र।

वायल[2] (स्त्री.) दे. बोल[2]।

वायस (पुं.) दे. काग।

वायु (स्त्री.) हवा, पवन।

वायुकोण (पुं.) पश्चिमोत्तर दिशा।

वायु मंडल (पुं.) 1. वातावरण, 2. पृथ्वी के चारों ओर व्याप्त वायु का आवरण।

वायुयान (पुं.) हवाई जहाज (तुल. अंबर **~की चील** गाड्डी)।

वार[1] (पुं.) 1. आघात, चोट, 2. आक्रमण; **~करणा** चोट पहुँचाना, आघात करना। दे. बार[1]/दिन।

वार[2] (स्त्री.) 1. देरी, विलंब, 2. (दे. बार[1]); **~करणा/ लाणा** देरी करना।

वार[3] (स्त्री.) दे. वार-फेर; (क्रि. स.) 'वारणा' क्रिया का आदे. रूप।

वारणा (क्रि. स.) 1. न्यौछावर करना, 2. सिर पर रुपये-पैसे घुमा कर दान करना। **वारना** (हि.)

वारणी (स्त्री.) दे. वारफेर।

वारदात (स्त्री.) 1. मारपीट, दंगा-फ़साद, 2. दुर्घटना।

वारना (क्रि. स.) दे. वारणा।

वार फंड (पुं.) द्वितीय वि.यु. के समय वसूला जाने वाला फंड।

वार-फेर (स्त्री.) 1. दूल्हे पर पैसे वारने या न्यौछावर करने की प्रथा, 2. आक्रमण करने का भाव या क्रिया, 3. चोट-फेट।

वार-सबेर (स्त्री.) देर-सवेर, देरी।

वारा (पुं.) 1. बचत, 2. लाभ; (क्रि. स.) 'वारणा' क्रिया का भू. का., एकव. पुं. रूप।

वाराणसी (पुं.) बनारस, (दे. काँस्सी[2])।

वारिस (पुं.) 1. अभिभावक, 2. संरक्षक।

वारी (क्रि. वि.) देरी से, विलंब से; (क्रि. स.) 'वारणा' क्रिया का भू का., स्त्रीलिंग रूप।

वारे-न्यारे (पुं.) लाभ ही लाभ; **~होणा** पुराना घाटा भी पूरा होकर लाभ होना, पौह-बारा होना।

वार्ता (स्त्री.) बात, बातचीत।

वार्तालाप (पुं.) बातचीत।

वाला (प्रत्य.) दे. आळा[2]।

वालिद (पुं.) पिता।

वाल्मीकि (पुं.) रामायण का रचयिता एक ऋषि जिसके आश्रम में निर्वासन के समय सीता जी के गर्भ से लव, कुश जन्मे।

वाल्ली वारस (पुं.) 1. स्वामी, 2. अभिभावक, वारिस।

वावेला (पुं.) दे. बबेल्ला।

वासकट (स्त्री.) बिना बाजू का कमर तक का कोट, एक विलायती बंडी।

वासना (स्त्री.) दे. बासना।

वासी (स्त्री.) दे. बास्सी[2]।

वासुकी (पुं.) दे. बासुक।

वासुदेव (पुं.) दे. बासदेव।

वास्तव (अव्य.) असल, दरअसल।

वास्ता (पुं.) संबंध।

वास्ते (अव्य.) 1. लिए, निमित्त, 2. हेतु, सबब।

वाह[1] (स्त्री.) पशु (बैल) की भार खींचने या वहन करने की क्षमता; **~लेणा** बैल की भार खींचने की क्षमता जाँचना।

वाह[2] (अव्य.) 1. प्रसन्नता द्योतक शब्द, 2. उत्साह-वर्धक शब्द, 3. आश्चर्य-सूचक शब्द।

वाहन (पुं.) सवारी, बोझा ले जाने वाली सवारी।

वाहवाही (स्त्री.) 1. बड़ाई, प्रशंसा, 2. प्रसिद्धि; **~लूटणा** प्रशंसा लूटना।

वाहिनी (स्त्री.) 1. सेना, चतुरंगिणी सेना।

वाहियात (पुं.) 1. व्यर्थ, फ़जूल, 2. ख़राब।

वाहे (सर्व.) दे. वाह्हे। वही।

वाह्हे (सर्व.) वह ही, वही।

विंदल (पुं.) अग्रवाल वैश्यों का गोत्र।

विंध्याचल (पुं.) विंध्य पर्वत जो भारत के दक्षिण में है।

वि (उप.) शब्द के पहले लगने वाला एक उपसर्ग।

विकट (वि.) 1. कठिन, 2. भीषण।

विकटोरिया करास (पुं.) ब्रिटिश शासन काल में इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया के नाम पर दिया जाने वाला सेना में वीरता-प्रदर्शन का उच्चतम पदक। **विक्टोरिया क्रॉस** (हि.)

विकराल (वि.) दे. बिकराळ।

विकल (वि.) बेचैन, व्याकुल।

विकार (पुं.) दे. बिकार।

विकास (पुं.) 1. उन्नति, 2. उत्थान, 3. क्रमशः बढ़ने का भाव।

विकृत (वि.) 1. बिगड़ा हुआ, जिसमें विकार आ गया हो, 2. जो भद्दा या कुरूप हो गया हो। दे. बिकराळ।

विक्रम (पुं.) दे. बिकरम।

विक्रमाजीत (पुं.) दे. बिकरमाजीत।

विक्रमादित्य (पुं.) दे. बिकरमाजीत।

विक्रमी (पुं) दे बिकरमीं; (वि.) दे बिकरमीं।

विक्रेता (पुं.) बेचने वाला, विक्रय करने वाला।

विक्षिप्त (वि.) 1. पागल, 2. व्याकुल, 3. फेंका या छितराया हुआ।

विख्यात (वि.) प्रसिद्ध।

विग्रह (पुं.) 1. युद्ध, 2. अलगाव।

विघटन (पुं.) 1. नष्ट होना, 2. तोड़ना-फोड़ना।

विघ्न (पुं.) दे. बिघन।

विचरण (पुं.) विचरण करना, चलना।

विचार (पुं.) दे. बिचार।

विचारना (क्रि. स.) दे. बिचारणा।

विचित्र (वि.) दे. बिचत्तर।

विचित्रवीर्य (पुं.) हस्तिनापुर के चंद्रवंशी राजा शान्तनु के पुत्र जिनकी रानियों से धृतराष्ट्र और पाण्डु का जन्म हुआ।

विच्छेद (पुं.) अलग होने का भाव, अलगाव।

विजय (स्त्री.) जीत।

विजयलक्ष्मी (स्त्री.) विजय श्री, विजय की अधिष्ठात्री देवी।

विजयदशमी (स्त्री.) दशहरा, (दे. दसहरा)।

विजयी (वि.) दे. विजेता।

विजेता (वि.) जीतने वाला।

विज्ञान (पुं.) साइंस।

विडंबना (स्त्री.) 1. उपहास का विषय, 2. लज्जा की बात।

विड़क (स्त्री.) चौकसी। दे. टोह।

वितंडा (पुं.) व्यर्थ की दलील।

वितरण (पुं.) बँटवारा, बाँट।

विथा (स्त्री.) दे. बिथा।

विदा (स्त्री.) दे. बिदा।

विदाई (स्त्री.) 1. विदा होने की अनुमति, 2. विदा के समय दी जाने वाली रकम। दे. बिदाई।

विदित (वि.) ज्ञात, मालूम।

विदुर (पुं.) दे. बिदुर।

विदेश (पुं.) दे. बिदेस।

विदेशी (वि.) दूसरे देश का।

विदेह (पुं.) राजा जनक।

विद्यमान (वि.) उपस्थित, मौजूद।

विद्या (स्त्री.) दे. बिद्द्या।

विद्यापीठ (पुं.) शिक्षा का बड़ा केंद्र, महाविद्यालय।

विद्यार्थी (पुं.) छात्र।

विद्यालय (पुं.) स्कूल।

विद्रोह (पुं.) बग़ावत, बलवा।

विद्रोही (पुं.) 1. बागी, 2. राज्य का अनिष्ट करने वाला।

विद्वत्ता (स्त्री.) पांडित्य।

विद्वान (पुं.) 1. ज्ञानी, 2. पंडित, संस्कृत का ज्ञाता।

विधना (पुं.) भाग्य।

विधर्म (पुं.) 1. पराया धर्म, 2. धर्म-विरुद्ध आचरण।

विधर्मी (वि.) 1. अन्य धर्म को मानने वाला, 2. धर्म-भ्रष्ट।

विधवा (स्त्री.) दे. बिधवा (तुल. राँड)।

विधाता (पुं.) 1. ईश्वर, 2. भाग्य-निर्माता।

विधान (पुं.) 1. राज-नियम, राज्य-नियमावलि, 2. व्यवस्था, प्रबंध।

विधि (स्त्री.) दे. बिध[2]।

विधिवत् (क्रि. वि.) विधिपूर्वक।

विध्वंस (पुं.) विनाश।

विनती (स्त्री.) दे. बिनती।

विनम्र (वि.) विनयी।

विनय (स्त्री.) 1. प्रार्थना, विनती, 2. याचना।

विनायक (पुं.) गणेश जी।

विनाश (पुं.) दे. बिनास।

विनासना (क्रि. स.) दे. बिनासणा।

विनीत (वि.) विनम्र, विनयशील।

विनोद (पुं.) 1. हर्ष, 2. हँसी, परिहास, 3. क्रीड़ा।

विनोदी (वि.) 1. ठट्ठेबाज, 2. हँसोड़, 3. (दे. ठिठोळिया)।

विपक्षी (पुं.) 1. विपरीत पक्ष का, प्रतिद्वंद्वी, 2. विरोधी।

विपता (स्त्री.) विपदा, विपत्ति; **~ठाणा/भोगणा** कष्ट भोगना।

विपदा (स्त्री.) दे. विपता।

विपरीत (वि.) उलटा, खिलाफ़, विरुद्ध, प्रतिकूल।

विपाण (पुं.) दान, दहेज।

विप्र (पुं.) 1. ब्राह्मण, 2. पुरोहित, (दे. बिप्पर)।

विफरणा (क्रि.) 1. आपे से बाहर होना, 2. अधिक फैलना।

विफल (वि.) असफल।

विभक्त (वि.) बँटा हुआ, विभाजित।

विभक्ति (स्त्री.) कारक सूचित करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के अंत में लगाया जाने वाला प्रत्यय।

विभा (स्त्री.) आभा, चमक।

विभाग (पुं.) खंड, हिस्सा।

विभाजन (पुं.) बँटवारा।

विभिन्न (वि.) अनेक, तरह-तरह के।

विभीषण (पुं.) दे. बभीस्सण।

विभूति (स्त्री.) 1. ऐश्वर्य, 2. धन।

विभूषित (वि.) शोभित।

विभ्रम (पुं.) भ्रांति, भ्रम।

विमल (वि.) निर्मल, शुद्ध।

विमला (स्त्री.) सरस्वती।

विमान (पुं.) दे. बिमाण।

विमुख (वि.) विरुद्ध, खिलाफ़।

विमोचन (पुं.) 1. बंधन से छुड़ाना, मुक्त करना, 2. लोकार्पण।

वियोग (पुं.) विरह, जुदाई।

वियोगी (वि.) विरही, जुदा।

विरक्त (वि.) 1. विषय-वासना से दूर रहने वाला, 2. विमुख, उदासीन।

विरक्ति (स्त्री.) 1. उदासीनता, 2. अनुराग का भाव।

विरल (वि.) 1. एक आध, 2. दुर्लभ।

विरह (पुं.) वियोग, जुदाई।

विरही (वि.) वियोगी।

विराग (पुं.) दे. बिराग।

विराजमान (वि.) 1. शोभायमान, 2. उपस्थित।

विराट (पुं.) दे. बिराट; (वि.) दे. बिराट।

विराम (पुं.) 1. विश्राम, 2. रुकना या थमना।

विरुदावली (स्त्री.) 1. यश-वर्णन, 2. पुरखों का यश-वर्णन, 3. प्रशंसा।

विरुद्ध (वि.) विपरीत, खिलाफ़; (क्रि. वि.) प्रतिकूल स्थिति में।

विरोध (पुं.) दे. बिरोध।

विरोधी (वि.) दे. बिरोद्धी।

विलंब (पुं.) देरी, अतिकाल।

विलक्षण (वि.) विचित्र, अनोखा।

विलाप (पुं.) दे. बिलाप।

विलायती (वि.) दे. बिलात्ती।

विलास (पुं.) अतिशय सुख-भोग।

विलासी (पुं.) 1. भोग-विलास में लिप्त रहने वाला, कामी, 2. आराम तलब।

विलीन (वि.) लीन या लुप्त।

विलोप (पुं.) अदृश्य।

विल्वपत्र (पुं.) बेल पत्र, (दे. बरणा[1])।

विवरण (पुं.) ब्यौरा, व्याख्या।

विवश (वि.) दे. बेबस।

विवाद (पुं.) झगड़ा, कलह, वाक् युद्ध।

विवाह (पुं.) दे. ब्याह।

विवाहित (वि.) जिसका विवाह हो गया हो।

विवेक (पुं.) ज्ञान।

विवेचन (पुं.) किसी विषय पर भली प्रकार से सोच-विचार करना।

विशाखा (पुं.) सत्ताइस नक्षत्रों में से सोलहवाँ नक्षत्र।

विशारद (पुं.) 1. दक्ष, कुशल, 2. ज्ञाता; (स्त्री.) संस्कृत की एक परीक्षा।

विशाल (वि.) 1. विस्तृत, 2. लंबा-चौड़ा, 3. सुंदर, भव्य।

विशिष्ट (वि.) 1. विशेष, 2. विलक्षण।

विशुद्ध (वि.) शुद्ध, जिसमें किसी प्रकार की मिलावट न हो। तुल. निखाल्लस।

विशेष (वि.) खास।

विशेषज्ञ (पुं.) किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता।

विशेषण (पुं.) व्याकरण का वह शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताए।

विशेषता (स्त्री.) ख़ासियत, निरालापन।

विश्राम (पुं.) आराम, (दे. बिसराम)।

विश्लेषण (पुं.) किसी विषय के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट करना। 2. विच्छेद या खंड करने की क्रिया।

विश्वंभर (पुं.) दे. बिसंभर।

विश्व (पुं.) संसार।

विश्वकर्मा (पुं.) दे. बिसव करमाँ।

विश्वनाथ (पुं.) शिव, महादेव।

विश्वविद्यालय (पुं.) युनिवर्सिटी।

विश्वस्त (वि.) विश्वासपात्र, विश्वसनीय।

विश्वामित्र (पुं.) दे. बिसवामित्तर।

विश्वास (पुं.) दे. बिसवास।

विश्वासघात (पुं.) धोखा।

विश्वासपात्र (वि.) विश्वसनीय, विश्वास के योग्य।

विश्वासी (पुं.) 1. विश्वास करने वाला, 2. जिस पर विश्वास किया जा सके।

विष (पुं.) दे. बिस।

विषधर (पुं.) दे. बिसियर।

विषम (वि.) 1. भीषण, विकट, 2. असमान।

विषय (पुं.) 1. मज़मून, 2. संबंध में, बारे में, 3. सांसारिक वस्तुएँ, 4. कामोपभोग।

विष-विद्या (स्त्री.) मंत्र आदि की सहायता से ज़हर उतारने की विद्या।

विष्ठा (स्त्री.) दे. भिस्टा।

विष्णु (पुं.) 1. विष्णु भगवान, 2. विश्नोई संप्रदाय की नमन पद्धति (इसके अनुसार 'नमो नमः' या 'न्योण' के उत्तर में 'विष्णु' शब्द कहा जाता है)।

विष्णु धर्मोत्तर पुराण (पुं.) इसका निर्माण हरियाणा के कोलायत नगर में हुआ माना जाता है।

विसणोई (पुं.) 1. विश्नोई, एक संप्रदाय जिसकी स्थापना जंभदेव ने की थी, इस पंथ के अनुयायी बीस तथा नौ बातों का पालन करते हैं, इस संप्रदाय के मानने वाले हिसार के चालीसा और पैंतालीसा गाँवों की खाप में निवास करते हैं, इस संप्रदाय की स्थापना वि. सं. 1542 में हुई थी; (वि.) विष्णु की उपासना करने वाला, वैष्णव; **~पंथ** जंभदेव द्वारा वि. सं. 1542 में स्थापित एक संत संप्रदाय, 2. एक गोत या अल्ल।

विसमणा (क्रि.) कढावनी, बिलौनी, घीलड़ी आदि पवित्र बर्तनों का खंडित होना। दे. मुळणा।

विस्तार (पुं.) फैलाव।

विस्तृत (वि.) लंबा-चौड़ा, दूर-दूर तक फैला हुआ।

विस्फोट (पुं.) धमाका, किसी पदार्थ का धमाके के साथ फूट पड़ना।

विस्मय (पुं.) आश्चर्य।

विहार (पुं.) 1. बौद्ध साधुओं के रहने का मठ, 2. घूमना-फिरना।

वीणा (स्त्री.) दे. बीणा।

वीतराग (पुं.) उदासीन, वह जिसने राग आदि का परित्याग कर दिया हो।

वीपर (पुं.) विप्र।

वीर (पुं.) 1. शूरवीर, 2. (दे. बीर)।

वीरगति (स्त्री.) वीरतापूर्ण मृत्यु।

वीरता (स्त्री.) बहादुरी, साहस।

वीरभूमि (स्त्री.) 1. हरियाणा, 2. वीरों की भूमि।

वीरान (वि.) 1. उजड़ा हुआ, 2. सुनसान।

वीर्य (पुं.) 1. बल, पराक्रम, 2. शुक्र, बीज (तुल. गीज्जर)।

वृंदा (स्त्री.) दे. तुळसी।

वृंदावन (पुं.) मथुरा के निकट एक तीर्थ जो श्रीकृष्ण की लीलाओं का क्षेत्र रहा है।

वृक्ष (पुं.) पेड़।

वृत्त (पुं.) दायरा।

वृत्तांत (पुं.) 1. समाचार, घटना का विवरण, 2. कथा, कथानक।

वृत्ति (स्त्री.) 1. जीविका, रोज़ी, 2. स्वभाव, प्रकृति।

वृथा (वि.) दे. बिरथा।

वृद्ध (पुं.) दे. बूड्ढा।

वृश्चिक (पुं.) 1. बिच्छू, 2. एक राशि।

वृष (पुं.) 1. दे. बिजार (तुल. आँक्कल), 2. एक राशि।

वृषभ (पुं.) बैल, (दे. बुळध)।

वृषभमानु (पुं.) श्रीराधा जी के पिता।

वृष्टि (स्त्री.) वर्षा।

वृहन्नला (स्त्री.) हिजड़ा।

वे (सर्व.) 'वह' का बहुवचन रूप (तुल. वो)।

वेग (पुं.) 1. तेज़, गति, 2. आवेश।

वेण (पुं.) दे. बैणू।

वेणी (स्त्री.) 1. चोटी, 2. स्त्रियों के बालों की गूँथी हुई चोटी।

वेणु (स्त्री.) दे. बाँसळी।

वेतन (पुं.) तनख्वाह।

वेताल (पुं.) पुराणों के अनुसार भूतों की एक योनि।

वेद (पुं.) दे. बेद।

वेदना (स्त्री.) पीड़ा, 1. (दे. बेदना), 2. (दे. बेद्‌दन)।

वेदव्यास (पुं.) दे. ब्यास।

वेदांग (पुं.) वेदों के छः अंग।

वेदांत (पुं.) उपनिषद्, आरण्यक आदि ग्रंथ।

वेदांती (पुं.) वेदांतों का ज्ञाता।

वेदी (स्त्री.) दे. बेद्‌दी।

वेधशाला (स्त्री.) वह स्थान जहाँ ग्रहों और नक्षत्र आदि की गतियों का अध्ययन होता है (दे. जंतर-मंतर)।

वेला (स्त्री.) समय, (दे. बेल्ला[3])।

वेश (पुं.) 1. दे. भेस, 2. दे. भेख।

वेश्या (स्त्री.) दे. बेसवा।

वेष्टन (पुं.) 1. वह वस्त्र जिसमें धार्मिक ग्रंथ को लपेटा जाता है, 2. पगड़ी।

वेह नै (अव्य.) उसने।

वैं ए (अव्य.) वही। असली।

वैकुंठ (पुं.) दे. बेकुंठ।

वैजयंती (स्त्री.) वह माला जिसे भगवान अपने गले में धारण करते हैं।

वैज्ञानिक (पुं.) विज्ञान का ज्ञाता; (वि.) विज्ञान-संबंधी।

वैतरणी (स्त्री.) 1. एक नदी जो यम के द्वार पर मानी जाती है (जन-विश्वास के अनुसार इसे गाय की पूँछ पकड़ कर पार किया जाता है), 2. हरियाणे की एक प्राचीन नदी।

वैद (पुं.) वैद्य, (दे. बैद)।

वैदिक (पुं.) 1. वेद के कहे अनुसार कृत्य करने वाला, 2. वेदों का पंडित; (वि.) वेद-संबंधी।

वैदेही (स्त्री.) सीता जी।

वैद्य (पुं.) दे. बैद।

वैद्यक (पुं.) दे. बैदगिरी।

वैध (वि.) क़ानून सम्मत।

वैभव (पुं.) ऐश्वर्य, धन-दौलत।

वैयाकरण (पुं.) व्याकरण का ज्ञाता।

वैर (पुं.) दे. बैर।

वैरागी (पुं.) दे. बिराग्गी।

वैराग्य (पुं.) दे. बिराग।

वैरी (पुं.) 1. दे. बैरी, 2. दे. बैरीड़ा।

वैशंपायन (पुं.) एक ऋषि जो वेद व्यास के शिष्य थे।

वैशाख (पुं.) दे. बसाख।

वैशाखी (स्त्री.) दे. बसाक्खी[2]।

वैश्य (पुं.) 1. हिंदुओं के चार वर्णों में से एक वर्ण, 2. बनिया, (दे. बाणियाँ)।

वैष्णव (पुं.) 1. विष्णु की उपासना करने वाला, 2. हिंदुओं का एक धार्मिक संप्रदाय जो विष्णु की उपासना करता है, (दे. विष्णु)।

वैसा (वि.) दे. उसा।

वैसे (क्रि. वि.) उस तरह; (वि.) उस तरह के।

वैह (सर्व.) वे।

वोकड़ (पुं.) दे. बोक।

वोट (पुं.) मत, (दे. बोट[2])।

वोटर (पुं.) मतदाता।

वोड (वि.) उतना (तुल. ओड)।

वोह (सर्व.) वह, वह व्यक्ति, 'उस' सर्वनाम का कर्तृकारक प्रथम पुरुष एकवचन रूप।

वोहे (सर्व.) 1. वही, 2. वैसे ही।

व्यंग्य (पुं.) ताना, बोली, कटाक्ष, (दे. तान्ना)

व्यंजन (पुं.) 1. पका हुआ भोजन, 2. हिंदी वर्णमाला में 'क' से 'ह' तक के सभी वर्ण।

व्यक्ति (पुं.) आदमी, (दे. माणस)।

व्यग्र (वि.) 1. व्याकुल, 2. डरा हुआ।

व्यजन (पुं.) पंखा (तुल. बीजणा)।

व्यतीत (वि.) बीता हुआ, गत।

व्यथा (स्त्री.) पीड़ा (तुल. बिथा)।

व्यभिचार (पुं.) बदचलनी।

व्यभिचारी (पुं.) बदचलन (तुल. बिभचारी)।

व्यय (पुं.) 1. खर्च, 2. खपत।

व्यर्थ (वि.) फ़ज़ूल (तुल. बिरथा)।

व्यवधान (पुं.) बाधा, अड़चन, रुकावट।

व्यवसाय (पुं.) 1. रोज़गार, 2. जीविका, काम-धंधा (तुल. रुजगार)।

व्यवस्था (स्त्री.) प्रबंध।

व्यवहार (पुं.) 1. बरताव, 2. लोक-चलन, 3. लेन-देन, (दे. बिवहार)।

व्यसन (पुं.) 1. बुरी आदत, 2. किसी प्रकार का शौक।

व्यसनी (पुं.) वह जिसे कोई लत पड़ गई हो (तुल. बिसनी)।

व्यस्त (वि.) कार्यरत।

व्याकरण (पुं.) वह शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के शुद्ध रूपों और वाक्यों के प्रयोग के नियम आदि का निरूपण होता है।

व्याकुल (वि.) घबराया हुआ।

व्याख्या (स्त्री.) टीका, जटिल भाव को विस्तार से स्पष्ट करने का भाव।

व्याख्यान (पुं.) भाषण।

व्याघ्र (पुं.) 1. दे. बाघ, 2. दे. बघेरा।

व्याधि (स्त्री.) रोग, बीमारी।

व्यापक (वि.) विस्तृत।

व्यापना (क्रि. अ.) फैलना।

व्यापार (पुं.) क्रय-विक्रय का कार्य (तुल. बिपार)।

व्यापारी (पुं.) सौदागर, (दे. बिपारी)।

व्याप्त (वि.) चारों ओर फैला हुआ।

व्यायाम (पुं.) कसरत।

व्यालु (पुं.) दे. ब्याळु।

व्यावहारिक (वि.) व्यवहार-संबंधी, (दे. बिवहार)।

व्यास (पुं.) दे. ब्यास।

व्यूह (पुं.) युद्ध के समय की जाने वाली सेना की स्थापना, (दे. ब्यूह)।

व्योम (पुं.) आकाश।

व्योमकेश (पुं.) महादेव, शिव।

व्रज (पुं.) मथुरा और वृंदावन के आस-पास का स्थान, (दे. बिरज[1])।

व्रज-भाषा (स्त्री.) व्रज प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा।

व्रज-मंडल (पुं.) व्रज और उसके आस-पास का प्रदेश या क्षेत्र।

व्रत (पुं.) दे. बरत।

व्रती (पुं.) उपवासी (तुल. बरती)।

व्हँकी (सर्व.) उसकी।

व्हाई झाज (पुं.) वायुयान (तुल. अंबर~की चीलगाड्डी)। **हवाई जहाज** (हि.)

श

श हिंदी वर्णमाला का तीसवाँ व्यंजन, हरियाणवी में इसका उच्चारण 'स' के समान है।

शंकर (पुं.) दे. संकर[1]।

शंकराचार्य (पुं.) दे. संकराचारिय।

शंकरी (स्त्री.) दे. संकरी।

शंख (पुं.) दे. संख।

शंभु (पुं.) दे. सिंभू।

शऊर (पुं.) 1. दे. सहूर, 2. दे. सुहूर।

शक (पुं.) दे. सक[1]।

शकरकंद (पुं.) दे. सिकरगंदी।

शकरपारा (पुं.) दे. सक्करपारा।

शकल (स्त्री.) दे. सिकल।

शकुंतला (स्त्री.) दे. सकुंतला।

शकुन (पुं.) दे. सगुण।

शकुनि (पुं.) कौरवों का मामा, दुर्योधन का मंत्री।

शक्कर (स्त्री.) दे. सक्कर।

शक्की (वि.) संदेह करने वाला।

शक्ती (स्त्री.) दे. सकती।

शक्तिशाली (वि.) बलवान।

शख़्स (पुं.) व्यक्ति, (दे. आदमी)।

शगुन (पुं.) 1. दे. सोण, 2. दे. सुगण।

शगुनिया (पुं.) साधारण कोटि का ज्योतिषी (तुल. सोणी)।

शगूफ़ा (पुं.) 1. नई और विचित्र घटना, 2. कली।

शजरा (पुं.) दे. सजरा।

शठ (पुं.) 1. धूर्त, 2. बदमाश।

शतपथ (पुं.) दे. सतपत।

शतभिषा (पुं.) एक नक्षत्र।

शतरंज (स्त्री.) चौपड़ पर खेला जाने वाला एक खेल।

शतानंद (पुं.) राजा जनक के पुरोहित।

शतानीक (पुं.) 1. जनमेजय के पुत्र एक चंद्रवंशी राजा, 2. सौ सैनिकों का अधिकारी।

शताब्दी (स्त्री.) दे. सो~की साल।

शती (स्त्री.) दे. सदी।

शत्रु (पुं.) दे. सतरू।

शत्रुता (स्त्री.) वैर, विरोध, दुश्मनी।

शनाख़्त (स्त्री.) पहचानने की क्रिया (तुल. पिछाण)।

शनि (पुं.) 1. दे. थावर, 2. दे. सनीच्चर।

शनिवार (पुं.) 1. दे. थावर, 2. दे. सनीच्चर।

शनैश्चर (पुं.) दे. सनीच्चर।

शपथ (पुं.) 1. दे. सपत, 2. दे. सूँह।

शब्द (पुं.) दे. सबद।

शब्द-प्रमाण (पुं.) कथन पर आधारित प्रमाण।

शब्द-भेदी (पुं.) दे. सबद भेद्दी बाण।

शब्द-भंडार (पुं.) शब्द-समूह।

शब्दातीत (वि.) जिसका शब्दों में वर्णन न हो सके।

शमन (पुं.) 1. दमन, 2. शांति।

शमा (स्त्री.) 1. मोमबत्ती, दीपक, 2. एक कीट।

शयन (पुं.) सोना, सोने की क्रिया, (दे. सोणा)।

शय्या (स्त्री.) दे. सेज।

शय्यादान (पुं.) दे. सज्जादान।

शरण (स्त्री.) आश्रय, (दे. सरण)।

शरणागत (वि.) शरण या आश्रय में आया हुआ।

शरणार्थी (पुं.) 1. शरणागत, 2. (दे. पाकिस्तान्नी)।

शरद (स्त्री.) 1. सरदी, 2. एक ऋतु।

शरद पूर्णिमा (स्त्री.) दे. सरदपुन्नयों।

शरबत (पुं.) दे. सरबत।
शरबती (वि.) दे. सरबती।
शरम (स्त्री.) दे. सरम।
शरमाऊ (वि.) दे. सरमाऊ।
शरमाना (क्रि. अ.) दे. सरमाणा।
शरमिंदा (वि.) लज्जित।
शरमीला (वि.) दे. सरमाऊ।
शराफ़त (स्त्री.) सज्जनता, भलमनसी।
शराब (स्त्री.) दे. सराब।
शराबख़ोर (पुं.) दे. सराब्बी।
शराबी (पुं.) दे. सराब्बी।
शराबोर (वि.) दे. सड़ासोड़।
शरारत (स्त्री.) 1. अठखेली, 2. दुष्टता, 1. (दे. उधमस), 2. (दे. ऊध)।
शरारती (वि.) दे. सरारती।
शरावती (स्त्री.) कुरुक्षेत्र की एक नदी।
शरीअत (स्त्री.) मुसलमानों का धर्मशास्त्र।
शरीक़ (वि.) सम्मिलित, शामिल।
शरीफ़ (वि.) दे. सरीप।
शरीफ़ा (पुं.) 1. एक फल, 2. इस फल का वृक्ष।
शरीर (पुं.) 1. दे. सरीर, 2. दे. देही।
शरीर-त्याग (पुं.) मृत्यु।
शरीरांत (पुं.) मृत्यु।
शर्करा (स्त्री.) दे. सक्कर।
शर्त (स्त्री.) दे. सरत।
शर्तिया (क्रि. वि.) दे. सरतिया।
शर्म (स्त्री.) दे. सरम।
शर्मा (पुं.) दे. सरमाँ।
शलगम (पुं.) दे. सिलगम।
शलजम (पुं.) दे. सिलगम।
शलाका (स्त्री.) दे. सळाई।
शल्य-क्रिया (स्त्री.) चीर-फाड़ का काम।
शव (पुं.) लाश, मृत्तक शरीर, (दे. ल्हास[1])।
शबरी (स्त्री.) दे. सबरी।
शश (पुं.) दे. सुस्सा।
शशक (पुं.) दे. सुस्सा।
शशि (पुं.) चंद्रमा।
शसा (पुं.) दे. सुस्सा।
शस्त्र (पुं.) हथियार, (दे. ससतर)।
शस्त्र-विद्या (स्त्री.) हथियार चलाने की विद्या।
शस्त्रागार (पुं.) शस्त्र-भंडार।
शह (स्त्री.) दे. सह[2]।
शहजादा (पुं.) राजकुमार।
शहतीर (पुं.) दे. सँहतीर।
शहतूत (पुं.) दे. सहतूत।
शहद (पुं.) दे. सहत।
शहनाई (पुं.) नफ़ीरी नामक बाजा।
शहर (पुं.) दे. सहर।
शहरी (वि.) दे. सहरी।
शहादत (स्त्री.) शहीद होने का भाव।
शहीद (पुं.) दे. सहीद।
शांडिल्य (पुं.) दे. साँडिल
शांत (वि.) 1. चुप, मौन, 2. जिसमें वेग, क्षोभ या क्रिया न हो, स्थिर।
शांतनु (पुं.) भीष्म के पिता।
शांति (स्त्री.) दे. स्यांती।
शाक (पुं.) तरकारी, (दे. साग)।
शाकाहार (पुं.) निरामिष भोजन।
शाक्त (पुं.) शक्ति का उपासक।
शाख (स्त्री.) टहनी (तुल. साख)।
शाखा (स्त्री.) 1. दे. साक्खा, 2. टहनी।
शाखोच्चार (पुं.) दे. साखाचार।
शागिर्द (पुं.) शिष्य, चेला।
शाण (पुं.) दे. साण।
शादी (स्त्री.) दे. स्याद्दी।
शान-शौक़त (स्त्री.) ठाठ-बाट।
शाप (पुं.) दे. सराप।
शापित (वि.) शापग्रस्त।

शाबाश (स्त्री.) दे. स्याबास।

शाम (स्त्री.) 1. दे. स्याम[1], 2. दे. साँझ; (पुं.) दे. स्याम[2]।

शामत (स्त्री.) दे. स्याम्मत।

शामियाना (पुं.) तंबू।

शामिल (वि.) दे. साम्मिल।

शायद (अव्य.) 1. दे. स्यात[1], 2. दे. स्याद।

शायर (पुं.) कवि।

शारदा (स्त्री.) दे. सारदा।

शारदीय नवरात्र (पुं.) दे. नोरते।

शारीरिक (वि.) शरीर-संबंधी।

शाल[1] (स्त्री.) दे. साळ[3]।

शाल[2] (पुं.) दे. साळ[2]।

शाल[3] (स्त्री.) दे. साळ[1]।

शालगराम (पुं.) दे. सालिगराम।

शाला (स्त्री.) दे. साळ[1]।

शालिवाहन (पुं.) दे. सालभान।

शालीन (वि.) 1. विनीत, 2. शिष्ट, 3. धनवान।

शासक (पुं.) हाक़िम, राज्य करने वाला।

शासन (पुं.) 1. हुक़ूमत, सरकार, 2. अधिकार या वश में रखना।

शास्त्र (पुं.) दे. सासतर।

शास्त्री (पुं.) दे. सासतरी।

शाहंशाह (पुं.) बादशाह, सम्राट।

शाह (पुं.) दे. साह[1]।

शिकंजा (पुं.) दे. सिकंजा।

शिकन (स्त्री.) सिलवट, बल।

शिकवा (पुं.) शिकायत, गिला।

शिकस्त (स्त्री.) हार, पराजय।

शिकायत (स्त्री.) दे. सिकात।

शिकार (पुं.) दे. सिकार।

शिकारी (पुं.) दे. सिकारी।

शिक्षक (पुं.) अध्यापक।

शिक्षा (स्त्री.) दे. सिकसा।

शिक्षित (वि.) 1. पढ़ा-लिखा, विद्वान्, 2. सिखाया हुआ।

शिखंडी (स्त्री.) दे. सिखंडी।

शिखर (पुं.) दे. सिखर।

शिखा (स्त्री.) 1. चोटी, 2. पक्षी की कलगी, 3. दीपक की लौ।

शिथिल (वि.) 1. सुस्त, 2. ढीला, 3. थका हुआ।

शिया (पुं.) दे. सीया[1]।

शिरकत (स्त्री.) किसी काम या व्यवसाय में शामिल होना।

शिरमौर (पुं.) 1. मुकुट, 2. सिरताज।

शिरीष (पुं.) दे. सिरस।

शिरोमणि (पुं.) श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिला (स्त्री.) दे. सिल[1]।

शिलाजीत (स्त्री.) एक ओषधि जो शिलाओं का रस है।

शिलान्यास (पुं.) भवन आदि की नींव का पत्थर रखना।

शिलालेख (पुं.) पत्थर पर लिखा लेख।

शिल्प (पुं.) दस्तकारी।

शिल्पकला (स्त्री.) दस्तकारी।

शिल्पकार (पुं.) दस्तकार, शिल्पी, कारीगर।

शिल्प-विद्या (स्त्री.) दस्तकारी।

शिव (पुं.) दे. सिबजी।

शिव पुराण (पुं.) अठारह पुराणों में से एक।

शिवरात्रि (स्त्री.) दे. सिबरातरी।

शिवलिंग (पुं.) दे. सिवलिंग।

शिवालय (पुं.) दे. सिवाल्ला।

शिविर (पुं.) 1. छावनी, 2. कोट, क़िला।

शिशिर (पुं.) 1. सर्दी की एक ऋतु, 2. जाड़ा।

शिशु (पुं.) छोटा बच्चा।

शिशुपाल (पुं.) दे. सीसपाल।

शिष्टाचार (पुं.) 1. आवभगत, 2. अच्छा व्यवहार।
शिष्य (पुं.) चेला।
शिष्या (स्त्री.) चेली।
शीघ्र (क्रि. वि.) तुरंत, जल्दी।
शीतकाल (पुं.) दे. जाड्डा।
शीतल (वि.) दे. सीळा।
शीतलता (स्त्री.) ठंडापन, ठंढक।
शीतला (स्त्री.) चेचक, चेचक की देवी।
शीरा (पुं.) दे. सीरा।
शील (पुं.) दे. सीळ।
शीलवान (वि.) सुशील।
शीश (पुं.) दे. सीस[1]।
शीशम (पुं.) दे. सीस्सम।
शीशमहल (पुं.) वह भवन जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों।
शीशा (पुं.) दे. सीस्सा।
शुक (पुं.) दे. सूआ[1]।
शुकदेव (पुं.) दे. सुखदे।
शुक्र (पुं.) 1. दे. सुकर, 2. दे. सुक्कर।
शुक्राचार्य (पुं.) दैत्यों के गुरु।
शुक्रिया (पुं.) धन्यवाद।
शुक्ल (पुं.) दे. सुकल।
शुगन (पुं.) शकुन।
शुतुरमुर्ग (पुं.) एक पक्षी जिसकी गर्दन बहुत लंबी होती है।
शुदि (स्त्री.) दे. सुदी।
शुद्ध (वि.) दे. सुध[2]।
शुद्धि (स्त्री.) दे. सुद्धी।
शुभ (वि.) दे. सुभ।
शुभचिंतक (वि.) हितैषी।
शुरू (पुं.) दे. सरू।
शुल्क (पुं.) फीस।
शुष्क (वि.) दे. सूक्का।
शू (क्रि. अ.) भविष्य का लिक् प्रत्यय 'गा'।
शूकर (पुं.) दे. सूर[1]।
शूद्र (पुं.) दे. सूद्दर।
शून्य (पुं.) 1. सिफ़र, 2. रहित।
शूर (पुं.) दे. सूरबीर।
शूरवीर (पुं.) दे. सूरबीर।
शूरसेन (पुं.) श्रीकृष्ण के पितामह।
शूर्पनखा (स्त्री.) दे. सूपणखाँ।
शूल (पुं.) दे. सूळ; (स्त्री.) दे. सूळ।
शृंग (पुं.) दे. सींग।
शृंगार (पुं.) दे. सिंगार।
शृंगारना (क्रि. स.) दे. सिंगारणा।
शृंगी (पुं.) एक ऋषि जिनके शाप से परीक्षित को तक्षक नाग ने डँसा था।
शेख (पुं.) दे. सेख।
शेखचिल्ली (पुं.) निठल्ले बैठे बड़े मंसूबे बनाने वाला व्यक्ति।
शेखी (स्त्री.) डींग।
शेखीबाज (वि.) डींग हाँकने वाला।
शेर (पुं.) दे. सेर[1]।
शेर-पंजा (पुं.) शेर के पंजे के आकार का एक शस्त्र। दे. सेर पंजा करणा।
शेरबबर (पुं.) दे. बब्बर।
शेरवानी (स्त्री.) अचकन।
शेष (पुं.) 1. बाकी, 2. सर्पराज; (वि.) बाकी, बचा हुआ।
शेषनाग (पुं.) दे. सेसनाग।
शैतान (पुं.) 1. दुष्ट, 2. कुमार्ग पर ले जाने वाली शक्ति।
शैतान बाज्जा (पुं.) दे. रमझोळ।
शैतानी (स्त्री.) शरारत।
शैल (पुं.) दे. सैल[1]।
शैव्या (स्त्री.) राजा हरिश्चंद्र की पत्नी।
शोक (पुं.) दे. सोग।
शोधक (पुं.) दे. सोद्धा।
शोधना (क्रि. स.) दे. सोधणा।
शोभा (स्त्री.) दे. सोभ्या।
शोर (पुं.) दे. स्योर[1]।

शोरबा (पुं.) 1. रसा, 2. सार।
शोरा (पुं.) दे. स्योरा।
शोरागर (पुं.) शोरा बनाने वाला।
शोला (पुं.) आग की लपट।
शोशा (पुं.) अनोखी बात।
शोषण (पुं.) 1. चूसना, 2. सोखना, (दे. सोकणा)।
शोहरत (स्त्री.) प्रसिद्धि।
शौक (पुं.) चाव, (दे. चा[2])।
शौक़िया (वि.) शौक़ वाला; (क्रि. वि.) शौक़ से।
शौक़ीन (पुं.) चाव रखने वाला।
शाक़ीनी (स्त्री.) शौक़ीन होने का भाव।
शौच (पुं.) पवित्रता।
शौहर (पुं.) पति।
श्मशान (पुं.) दे. समसाण।
श्याम (पुं.) दे. स्याम[1,2]; (स्त्री.) दे. साँझ।
श्यामल (वि.) काला, साँवला।
श्यामसुंदर (पुं.) श्रीकृष्ण।
श्रद्धा (स्त्री.) दे. सरधा।
श्रद्धालु (वि.) श्रद्धा रखने वाला, आस्थावान।
श्रद्धावान (पुं.) श्रद्धालु।
श्रद्धेय (वि.) श्रद्धा के योग्य।
श्रवण (पुं.) 1. दे. सरवण, 2. कान, 3. सुनना।
श्राद्ध (पुं.) दे. कनागत।
श्रावण (पुं.) दे. साम्मण।
श्रावणी (स्त्री.) दे. सलोणो।
श्री (स्त्री.) दे. सिरी।
श्रीकंठ (पुं.) स्थानेश्वर जनपद।
श्रीकृष्ण (पुं.) दे. किरसन।
श्रीदामा (पुं.) श्रीकृष्ण के एक बालसखा का नाम।
श्रीमती (स्त्री.) 1. श्रीमान का स्त्रीलिं. रूप, 2. पत्नी।
श्रीमान (पुं.) आदर-सूचक शब्द जो नाम से पूर्व लगाया जाता है।
श्रुति (स्त्री.) वेद।
श्रेणी (स्त्री.) 1. कक्षा, 2. विभाग, 3. पंक्ति, 4. क्रम,शृंखला।
श्रेष्ठ (वि.) उत्तम।
श्वसुर (पुं.) दे. सुसरा।
श्वास (पुं.) दे. साँस।
श्वेत (वि.) दे. सफ़ेद।

ष

ष हिंदी वर्णमाला का इकतीसवाँ व्यंजन, हरियाणवी में इसका उच्चारण 'स' के समान है, कहीं-कहीं इसका उच्चारण 'ख' भी मिलता है।
षट् (वि.) दे. खट[2]।
षट्कोण (विं.) छः कोनों वाला।
षट्तिला (स्त्री.) माघ कृष्ण एकादशी।
षट्राग (पुं.) छः प्रकार के राग।
षट्शास्त्र (पुं.) दे. खटसास्तर।
षट्शास्त्री (पुं.) दे. खटसास्तरी।
षड्दर्शन (पुं.) छः दर्शन।
षड्यंत्र (पुं.) दे. खड़यंतर।
षड्रस (पुं.) दे. खट रस।
षपरा (पुं.) दे. खप्पर।
षोडशी (वि.) सोलह वर्ष की।
षष्ठी (स्त्री.) दे. छठ।

स

स हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन, इसका उच्चारण स्थान दंत है (व्यक्तिगत भिन्नता के कारण कभी-कभी इसका उच्चारण 'श' के समान भी किया जाता है)।

संक्रट (पुं.) विपत्ति; **~आणा/छ्याणा** हर ओर से विपत्ति आना।

संकटा (स्त्री.) एक देवी, एक योगिनी।

संकर[1] (पुं.) शिवजी, महादेव, पार्वती-पति। **शंकर** (हि.)

संकर[2] (वि.) 1. वर्ण शंकर, 2. मिश्रित, 3. दोगली नसल का।

संकर चूड़ा (पुं.) शंकर द्वारा भस्मासुर को भस्म वरदान स्वरूप दिया गया कंगन।

संकरदास (पुं.) (1833-1912) प्रसिद्ध भजनीक मानसिंह, पं. लखमीचंद इसी शिष्य-गुरु परंपरा के हुए।

संकर-पारबती (पुं.) शिव-पार्वती का जोड़ा। **शंकर-पार्वती** (हि.)

संकर भोळा (पुं.) 1. शिव शंकर, 2. नादिया।

सँकराँत (स्त्री.) मकर संक्रांति (इस दिन गाँव के हर परिवार में मनभाता घी खाने को दिया जाता है, लोग 'गजरा' (आग) तपते हैं, पशुओं को सार्वजनिक रूप से चारा खिलाया जाता है, बहुएँ अपने सास, ससुर, ननद, देवर आदि को उपहार देकर 'मनाती' हैं, भाई बहनों के घर 'सीद्धा' भेजते हैं, (दे. सीद्धा)। **संक्रांति** (हि.)

संकराचारिय (पुं.) 1. हिंदुओं के धर्म-गुरु, 2. आदि शंकराचार्य, 3. शंकराचार्य-पीठ। **शंकराचार्य** (हि.)

संकरी (स्त्री.) पार्वती (गीतों में प्रयुक्त)।

संकलप (पुं.) 1. धार्मिक कृत्य के समय हाथ में जल लेकर पढ़ा जाने वाला मंत्र, 2. प्रतिज्ञा। **संकल्प** (हि.)

संकल्प (पुं.) दे. संकलप।

संकारणा (क्रि. स.) उकसाना।

संकेत (पुं.) इशारा।

संकोच (पुं.) 1. लज्जा, शर्म, 2. हिचकिचाहट।

संकोची (वि.) संकोच करने वाला।

संक्रांति (स्त्री.) 1. दे. सँकराँत, 2. सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश।

संक्षेप (पुं.) अधिक को थोड़े शब्दों में कहना।

संख (पुं.) 1. एक जल-जीव का आवरण या हड्डी जिसे बजाया जाता है और पवित्र माना जाता है, 2. दो मित्रों की किन्हीं दो वस्तुओं में समानता होने पर उच्चरित किया जाने वाला शब्द; (वि.) 1. असंख्य, 2. संख्या विशेष; **~करणा** दो चीज़ों में समानता होने पर दो मित्रों द्वारा आपस में घूँसा लगा कर समानता की बात घोषित करना; **~बजाणा** 1. चुनौती देना, 2. युद्ध के लिए ललकारना। **शंख** (हि.)

संखपति (पुं.) नपुंसक पति।

संखिया (पुं.) ज़हर।

संख्या (स्त्री.) गिनती, (दे. गिणती)।

संग (पुं.) 1. साथ, 2. साथियों की टोली, 3. सोहबत; **~की सुहेल्ली** समवयस्क सहेलियाँ।

संगठन (पुं.) 1. संस्था, 2. एकता, मेल।

संगत (पुं.) 1. भजन-मंडली, 2. साधु-समाज, 3. सोहबत।

संगतराश (पुं.) 1. पत्थर काटने या गढ़ने वाला, 2. मज़दूर।

संगति (स्त्री.) दे. संगत।

संगम (पुं.) 1. दो नदियों का मिलन-स्थान, 2. प्रयाग में गंगा और यमुना के मिलने का स्थान, 3. साथ, 4. मेल।

संगमरमर (पुं.) एक प्रकार का सफ़ेद पत्थर।

संगमूसा (पुं.) काला पत्थर।

संगळ (स्त्री.) दे. साँक्कळ।

संगलदीप (पुं.) कहानी-किस्सों में वर्णित एक द्वीप (जो संभवतः लंका है)।

संगवाणा (क्रि. स.) दे. सँघवाणा।

संगाती (पुं.) 1. साँगी, 2. साथी गायक।

संगी (पुं.) दे. संगी-साथी।

संगीत[1] (पुं.) 1. गाना-बजाना, 2. गीत।

संगीत[2] (पुं.) दे. सांग।

संगीतशास्त्र (पुं.) संगीत-विद्या।

संगीन (पुं.) बंदूक जिसके अगले किनारे पर नुकीली फाल लगी होती है; (वि.) विकट।

संगी-साथी (पुं.) समान आयु के मित्र।

संगोड़णा (क्रि.) दे. संघवाणा।

संग्रह (पुं.) संचय।

संग्रहणी (स्त्री.) एक रोग जिसमें भोजन बिना पचे पाख़ाने के रास्ते निकल जाता है।

संग्रहालय (पुं.) वह स्थान जहाँ विचित्र या दर्शनीय वस्तुओं का संग्रह हो।

संग्राम (पुं.) युद्ध।

संघ (पुं.) 1. समूह, दल, 2. सभा, समाज, 3. संगत।

संघणा (क्रि.) 1. गहरा होना, 2. सघन होना।

संघर्ष (पुं.) 1. स्पर्धा, 2. तनाव, 3. प्रयत्न।

सँघवाणा (क्रि. स.) 1. इकट्ठा करना, बटोरना, 2. बिगड़ी बात बनाना, 3. समेटना, जैसे-पल्ला सँघवाणा, 4. संभालना।

संघार (पुं.) 1. मारना, 2. नाश। **संहार** (हि.)

संचय (पुं.) ढेर, समूह।

संचार (पुं.) 1. फैलना, 2. चलना।

संजय (पुं.) दे. संजा।

संजा (पुं.) धृतराष्ट्र को महाभारत-युद्ध का वर्णन सुनाने वाला एक ऋषि। **संजय** (हि.)

संजीदा (वि.) 1. गंभीर, 2. बुद्धिमान।

संजीवण (स्त्री.) दे. संजीवणी।

संजीवणी (स्त्री.) मरे को जीवित करने वाली ओषधि। **संजीवनी** (हि.)

संजीवणी बूट्टी (स्त्री.) 1. वह बूटी जो हनुमान लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर करने के लिए लाए थे, 2. जीवन देने वाली बूटी, सर्वाषधि। **संजीवनी** (हि.)

संजीवनी (स्त्री.) दे. संजीवणी।

संजोग (पुं.) 1. विवाह-संबंध, 2. जोड़ी, 3. भाग्य, 4. इत्तफ़ाक़, 5. उचित अवसर; **~मिळणा** 1. जोड़ी मिलना, 2. उचित अवसर मिलना। **संयोग** (हि.)

सँजोणा (क्रि. स.) 1. सामान जुटाना, 2. हार आदि पिरोना, 3. दीपक जलाना। **संजोना** (हि.)

संजोना (क्रि. स.) दे. सँजोणा।

सँजोवा (पुं.) वर-पक्ष की ओर से वधु के लिए फेरों से पूर्व दिए जाने वाले वस्त्र, आभूषण आदि; (वि.) संयोग कराने वाला।

संज्ञा (स्त्री.) 1. वह शब्द जिससे किसी वस्तु के नाम का बोध हो, 2. चेतना, होश।

संझा (स्त्री.) दे. संझया।

संझया (स्त्री.) 1. साँझ, सूर्यास्त का समय। **संध्या** (हि.)

संझया-बात्ती (स्त्री.) 1. सायंकाल की पूजा, 2. रात्रि का दीया, 3. नित्यकर्म; **~करणा** 1. सूर्यास्त के समय दीया जलाना, 2. आरती उतारना, 3. पूजा करना।

संटी (स्त्री.) 1. पतली कमची, लचकदार डंडी, 2. (दे. सूँटकी); **~जूआ खेल्हणा** दे. सूँटकी खेल्हाणा।

सँट्याणा[1] (क्रि. स.) हुक्के की घूँट मारना। दे. सुट्याणा।

संट्याणा[2] (क्रि.) सांटों से पीटना।

संडा (वि.) दे. मसटंड। दे. भड़वा।

संडास (पुं.) बड़ी संडासी, (दे. सँडास्सी)।

सँडासी (स्त्री.) दे. सँडास्सी।

सँडास्सी (स्त्री.) 1. झाड़ आदि काटने के काम आने वाला एक औज़ार जिसमें एक डंडे के नीचे तिरछा फाल लगा होता है, 2. जंबूर। **संडासी** (हि.)

संडी (स्त्री.) ऊँटनी; (वि.) मोटीताज़ी।

संत (पुं.) साधु, महात्मा।

संतर (पुं.) नहर के साथ बना कच्चा समतल मार्ग, मार्ग।

संतरी[1] (पुं.) 1. पहरेदार, 2. सिपाही।

संतरी[2] (वि.) 1. संतरे के रंग का, 2. संतरी (रंग)।

संतल[1] (पुं.) दे. संतर; (वि.) समतल।

संतल[2] (पुं.) दे. संतर।

संत सिपाही (पुं.) उदयभानु हंस द्वारा रचित गुरु गोविंद सिंह के जीवन और दर्शन पर आधारित महाकाव्य।

संत हिरदेदास (पुं.) 'हृदय प्रकाश' के रचयिता एक संत जिनका जन्म वि. सं. 1932 में गुळिया वाली बादली (रोहतक) में हुआ था।

संतान (स्त्री.) संतति, पुत्र-पौत्र आदि।

संताप (पुं.) 1. दुःख, 2. जलन।

संतुलन (पुं.) दो पक्षों का बल बराबर रखने का भाव।

संतुष्ट (वि.) 1. तृप्त, 2. संतोषी।

संतोख सिंह (पुं.) निर्मले साधु जिनकी 'नामकोश', 'गुरु नानक प्रकाश', 'गरब गंजनी' आदि रचनाएँ हैं, इन्होंने वैष्णव, राम-भक्त, कृष्ण-भक्त और सिक्खों के बीच समन्वय करने का प्रयास किया (जीवन-काल वि. सं. 1844–1900)।

संतोष (पुं.) दे. संतोस।

संतोषी (पुं.) सब्र रखने वाला।

संतोस (पुं.) 1. सब्र, 2. शांति, तृप्ति। **संतोष** (हि.)

संदक (क्रि. वि.) प्रत्यक्ष।

संदल (पुं.) दे. चंदन।

संदा (पुं.) एक रोग।

संदीपन (पुं.) श्रीकृष्ण के गुरु का नाम।

संदूक (स्त्री.) लकड़ी, लोहे आदि की पेटी।

संदूकड़ी (स्त्री.) छोटा संदूक।

संदेश (पुं.) दे. संदेस्सा।

संदेसड़ा (पुं.) दे. संदेस्सा।

संदेस्सा (पुं.) 1. समाचार, 2. हाल-चाल, खै़र-ख़बर। **संदेश** (हि.)

संदेह (पुं.) शंका, भ्रम।

संदेहो (क्रि. वि.) सवेरे ही (कौर.)।

संद्यक (क्रि. वि.) दे. संदक।

सँधकणा (क्रि. अ.) 1. धीरे-धीरे जलना, 2. तड़पना।

संधणा (क्रि.) दे. सधणा।

संधि (स्त्री.) 1. समझौता, 2. मेल, संयोग।

संध्या (स्त्री.) संझा, सायंकाल।

संन्यास (पुं.) 1. गृह-त्याग, 2. चार आश्रमों में से चौथा आश्रम।

संन्यास्सी (पुं.) संन्यास धारण करने वाला, साधु। **संन्यासी** (हि.)

संपत (पुं.) 1. पुत्र, संतान, 2. (दे. संपत्ति)।

संपत्ति (स्त्री.) धन-दौलत।

संपन्न (वि.) 1. धनी, दौलतमंद, 2. पूरा किया हुआ।

संपर्क (पुं.) वास्ता, लगाव।

सँपलोटिया (पुं.) 1. छोटा साँप, 2. साँप का बच्चा।

संपात (पुं.) एक रोग। **सन्निपात** (हि.)

संपाती (पुं.) एक गिद्ध जो जटायु का छोटा भाई था।

संपादक (पुं) किसी समाचार-पत्र या पुस्तक आदि का संपादन करने वाला।

संपादन (पुं.) प्रकाशन से पूर्व किसी लेख आदि में आवश्यक काट-छाँट करने का कार्य।

संपूर्ण (वि.) दे. सपूरण।

सँपेरा (पुं.) दे. सपेल्ला।

सँपेल्ला (पुं.) दे. सपेल्ला।

सँपोळिया (पुं.) दे. सँपलोटिया।

संप्रदाय (पुं.) किसी मत के अनुयायी की मंडली, फिरक़ा।

संबंध (पुं.) 1. रिश्ता, 2. विवाह, 3. मेल-मिलाप, संपर्क, 4. अवैध संबंध।

संबंधी (स्त्री.) 1. रिश्तेदार, 2. समधी; (वि.) संबंध रखने वाला।

संबल (पुं.) 1. आश्रय, 2. सहायता।

संबाद (पुं.) 1. कहा-सुनी, 2. कथोपकथन, 3. कहानी-किस्सा। **संवाद** (हि.)

संबोधन (पुं.) पुकारने का भाव।

संभळ (पुं.) दे. सेंवर।

सँभळणा (क्रि. अ.) 1. होश में आना, 2. उचित व्यवहार करना, 3. सजग या सचेत होना, 4. कुमार्ग से सुमार्ग पर आना, 5. बिगड़ा काम बनना, 6. बचपन से युवावस्था में आना, 7. भार, वस्त्र आदि का सँभाला जाना।

संभलना (हि.)

सँभलना (क्रि. अ.) दे. सँभळणा।

सँभळवाणा (क्रि. स.) सौंपना, जाँच-पड़ताल के बाद सौंपना।

सँभलवाना (हि.)

संभव (वि.) जो संपन्न हो सके, मुमकिन।

सँभाल (स्त्री.) दे. सँभाळ।

सँभाळ (स्त्री.) 1. भली प्रकार की गई देखभाल, 2. जाँच-पड़ताल; (क्रि.स.) 'सँभालणा' क्रिया का आदे. रूप; **~पड़णा/होणा** टोह होना।

सँभाळणा (क्रि. स.) 1. जाँच-पड़ताल करना, 2. देखभाल करना, 3. किसी भार को भली प्रकार वहन करना, 4. सौंपना। **संभालना** (हि.)

सँभालना (क्रि. स.) दे. सँभाळणा।

सँभाळा (पुं.) 1. सामर्थ्य, 2. मरने से पूर्व रोग में प्राप्त शांति; (क्रि. स.) 'सँभाळणा' क्रिया का भू. का., पुं., एकव. रूप।

सँभाळू (पुं.) कैंदू जैसा एक वृक्ष जिसकी टहनी से झाड़ा लगाया जाता है।

संभावना (स्त्री.) 1. अनुमान, 2. आशंका।

संभू (पुं.) 1. शिव, 2. नादिया।

संभोग (पुं.) 1. सुखपूर्वक व्यवहार, 2. रति क्रीड़ा।

संयत (वि.) 1. निग्रही, 2. वशीभूत, दमन किया हुआ।

संयम (पुं.) 1. इन्द्रिय-निग्रह, 2. परहेज।

संयमी (वि.) आत्म-निग्रही।

संयुक्त (वि.) जुड़ा हुआ।

संयोग (पुं.) दे. संजोग।

संयोजक (पुं.) सभा, सम्मेलन आदि का आयोजन करने वाला।

संरक्षक (पुं.) 1. देख-रेख या पालन-पोषण करने वाला, 2. आश्रय देने वाला।

संरक्षण (पुं.) 1. देख-रेख निगरानी, 2. आश्रय।

संवत् (पुं.) दे. सम्मत[2]।

संवत्सर (पुं.) दे. सम्मत[2]।

सँवरना (क्रि. अ.) सजना-धजना, बनाव-ठनाव करना।

संवाद (पुं.) दे. संबाद।

सँवार (पुं.) हजामत।

सँवारना (क्रि. स.) दे. समारणा।

संविधान (पुं) राज्य-नियम, वे नियम जिनके अनुसार किसी राष्ट्र का नियमन होता है।

संवेदना (स्त्री.) सहानुभूति।

संशय (पुं.) दे. संसै।

संशोधन (पुं.) 1. सुधार, 2. अशुद्धि-शोधन।

संसकार (पुं.) 1. अच्छे लक्षण, 2. संयोग, जैसे—संस्कार की बात, 3. धार्मिक कृत्य, 4. पिछले जन्म का प्रभाव, 5. जातिगत या पीढ़ीगत प्रभाव; **~करणा** 1. माँजना, पवित्र करना, 2. दाह-संस्कार करना, 3. धार्मिक कृत्य करना। **संस्कार** (हि.)

संसकिरत (स्त्री.) 1. संस्कृत भाषा, 2. हिंदुओं के धर्म-ग्रंथों की भाषा, 3. वह भाषा जिसमें हिंदुओं के संस्कार, विवाह, यज्ञ आदि संपन्न होते हैं, 4. 'पाठशालाओं' में पढ़ाई जाने वाली भाषा, 5. पवित्र भाषा, 6. संस्कृत-विद्या। **संस्कृत** (हि.)

संसद (स्त्री.) राज्यसभा-लोक सभा, पार्लियामेंट।

संभल (पुं.) दे. सेंवर।

संसर (वि.) दे. सहंसर।

संसार (पुं.) दुनिया, जग, जगत्।

संसै (पुं.) 1. शंका, संदेह, आशंका, 2. कष्ट, (दे. साँस्सा); **~मेटणा** 1. संदेह दूर करना, 2. कष्ट निवारण करना। **संशय** (हि.)

संस्कार (पुं.) दे. संसकार।

संस्कृत (पुं.) दे. संसकिरत।

संस्कृति (स्त्री.) सभ्यता, किसी जाति या देश का जीवन-दर्शन।

संस्था (स्त्री.) संगठित समाज, संगठन, मंडल, सभा।

संस्थापक (पुं.) स्थापना करने वाला।

संस्मरण (पुं.) किसी व्यक्ति से संबंधित स्मरणीय घटना।

सँहतीर (पुं.) छत आदि में लगाया जाने वाला मोटा लट्ठा। **शहतीर** (हि.)

संहार (पुं.) दे. संघार।

संहिता (स्त्री.) 1. आचार आदि से संबंधित पुस्तक, आचार-निर्देशिका, 2. मूल पाठ या पद्यों का क्रमिक संग्रह।

सई-साँझ (क्रि. वि.) साँझ हुए, साँझ होने पर; **~के फेरे** गोधूलिक विवाह; **~पड़्याँ/हुयाँ** शाम को अँधेरा होते-होते, देर सायं का समय।

सक[1] (पुं.) शक, संदेह (तुल. संसै)।

सक[2] (पुं.) शक **संवत्।**

सकट-चोथ (स्त्री.) संकट चतुर्थी।

सकड़ा (वि.) तंग। **सँकरा** (हि.)

सकड़ा (वि.) दे. भीड़ा।

सकणा (क्रि. अ.) करने योग्य होना। **सकना** (हि.)

सकती (स्त्री.) 1. ताक़त, 2. शक्तिबाण, एक आयुध (जो लक्ष्मण को लगा था), 3. शक्ति की देवी, दुर्गा। **शक्ति** (हि.)

सकना (क्रि. अ.) दे. सकणा।

सकपकाना (क्रि. अ.) हक्का-बक्का रह जाना।

सकराँत (स्त्री.) दे. सँकराँत।

सकरा (पुं.) बाज।

सकल (वि.) समस्त, कुल।

सकलीगर (पुं.) दे. सिकलीगर।

सकारथ (वि.) सार्थक।

सकाळ[1] (पुं.) 1. सुभिक्ष, 2. अकाल का विलोम।

सकाल[2] (स्त्री.) प्रातःकाल।

सकाळी (क्रि. वि.) 1. प्रातः 2. अबेर।

सकुंतला (स्त्री.) शकुंतला, राजा दुष्यंत की पत्नी और भरत की माता।

सकुचाना (क्रि. अ.) संकोच करना।

सकेरणा (क्रि. स.) 1. बुहारना, झाड़ू देना, 2. कुरेदना। **सकेरना** (हि.)

सकेरना (क्रि. स.) दे. सकेरणा।

सकेल (स्त्री.) सेल, बैलगाड़ी के बाँक में बाहर की ओर लगने वाली कीली।

सकोड़णा (क्रि. स.) 1. अंग-संकोचन करना, 2. अपनी ओर खींचना। **सिकोड़ना** (हि.)

सकोरा (पुं.) दे. कसोरा।

सक्कर (स्त्री.) कुछ पीले रंग की देसी बूरा विशेष। **शक्कर** (हि.)

सक्कर-चावळ (पुं.) शक्कर-चावल का भोजन जो मुख्य उत्सवों पर और मेहमानों के लिए बनाया जाता है।

सक्कर पारा (पुं.) 1. मैदा या आटे को तल कर बने चौकोर छोटे टुकड़े जो खाने के काम आते हैं, 2. शक्कर पारे के आकार का चित्र या कढ़ाई, कशीदा आदि।

सक्कर भीज्जी (पुं.) बच्चों का एक खेल।

सक्का (पुं.) 1. भिश्ती, मशक ढोने वाला, 2. एक यवन जाति।

सक्का-पाणी (पुं.) 1. मशक का पानी, 2. बच्चों का एक खेल जिसमें वे एक बच्चे को पीठ पर मशक की तरह लाद लेते हैं, और पानी पिलाने का अभिनय करते हैं।

सखती (स्त्री.) कठोरता। **सख़्ती** (हि.)

सखथ (वि.) 1. कठोर, कड़ा, 2. कठिन, पेचीदा, 3. व्यवहार में कठोर। **सख़्त** (हि.)

सखा (पुं.) मित्र।

सखी (स्त्री.) सहेली।

सखी गूजरी (स्त्री.) एक प्रकार की ओढ़नी।

सख़्त (वि.) दे. सखथ।

सख़्ती (स्त्री.) दे. सखती।

सगत (स्त्री) सद्गति।

सगर (पुं.) एक सूर्यवंशी राजा जिनके साठ हजार पुत्र ऋषि कपिल के शाप के कारण भस्म हो गए थे, जिनका भगीरथ ने गंगा लाकर उद्धार किया था।

सगरी (वि.) दे. सगळी।

सगळा (वि.) समस्त, सारा, संपूर्ण; **~(-ळे) के सगळे** सब के सब।

सगळी (वि.) 1. समस्त (महिलाएँ), 2. सब, सारी की सारी, जैसे–सगळी बात।

सगा (वि.) 1. एक माता से उत्पन्न, सहोदर, 2. अपने कुल का, अपने पक्ष का, अपना, 3. संबंधी, निकट का संबंधी (तुल. सग्या)।

सगाई (स्त्री.) विवाह-संबंधी निश्चय जिसमें लड़के को रुपया देकर रोका जाता है, मंगनी।

सगार[1] (स्त्री.) रिश्तेदारी।

सगार[2] (पुं.) सगुन स्वरुप भेंट की गई वस्तु।

सगी (स्त्री.) 1. संबंधी, रिश्तेदारी में लगने वाली। 2. सहोदरा (बहिन)।

सगुण (पुं.) 1. साकार भगवान, 2. शकुन।

सगुरा (पुं.) निगुरे का विलोम।

सगोत्र (वि.) अपने ही गोत्र का, सजातीय।

सग्गड़ (स्त्री.) छोटी गाड़ी।

सग्या (वि.) दे. सगा।

सच (पुं.) 1. सत्य, 2. सच्ची बात; (वि.) यथार्थ, सत्य।

सचभा (पुं.) 1. सत्य भाव, सच्चाई, 2. सौगंधपूर्ण कथन।

सचमुच (अव्य.) दे. साँच-माँच।

सच-सच (अव्य.) दे. साच्चीसाच।

सचाई (स्त्री.) 1. सत्यता, 2. यथार्थता, वास्तविकता। **सच्चाई** (हि.)

सचेत (वि.) 1. सावधान, 2. चेतनायुक्त।

सचेष्ट (वि.) चेष्टा-सहित।

सच्चा (वि.) 1. दे. साँचला, 2. दे. साच्चा।

सच्चाई (स्त्री.) दे. सचाई।

सच्चिदानंद (पुं.) ईश्वर, परमात्मा।

सजग (वि.) सावधान, सचेत।

सजणा (क्रि. अ.) 1. ओढ़-पहिन कर तैयार होना, 2. जँचना, फबना। **सजना** (हि.)

सजन (पुं.) दे. साज्जन।

सजना (क्रि. अ.) दे. सजणा; (पुं.) दे. साज्जन।

सजरा (पुं.) पटवारी द्वारा तैयार किया हुआ खेतों का नक्शा। **शजरा** (हि.)

सजवाणा (क्रि. स.) सजाने में सहायता देना, सिंगरवाना। **सजवाना** (हि.)

सजवाना (क्रि. स.) दे. सजवाणा।

सजा (स्त्री.) 1. दंड, 2. कारावास का दंड; (क्रि. स.) 'सजाणा' क्रिया का आदे. रूप। **सज़ा** (हि.)

सजाणा (क्रि. स.) 1. सिंगार करना, 2. अच्छे वस्त्र पहनाना, 3. सजावट करना, विशेष उत्सव पर सजावट करना। **सजाना** (हि.)

सजाना (क्रि. स.) दे. सजाणा।

सजावट (स्त्री.) सजाने का भाव।

सज्जन (वि.) भला, शरीफ़।

सज्जादान (पुं.) मृतक के निमित्त महाब्राह्मण को दिया जाने वाला शय्या आदि का दान।

सझला (वि.) दे. साझला।

सटकण (वि.) बिना चबाए निगलने वाला, जैसे–सटकण नाग।

सटकणा (क्रि. स.) 1. निगलना, 2. चुपके से खिसकना, 3. काम से बचना; (वि.) सटकने वाला। **सटकना** (हि.)

सटकणो (पुं.) गधा (अही.)।

सटकन (पुं.) 1. सिलाई का टांका, 2. दे. सटकणा।

सटकना (क्रि. स.) दे. सटकणा।

सटकळ (स्त्री.) 'अटकळ' का अनुवर्ती शब्द।

सटका (पुं.) कमर पर लटका गुच्छा।

सटणा (क्रि. अ.) 1. सट कर बैठना, अधिक निकट आना, 2. चिपटना।
सटना (हि.)

सटना (क्रि. अ.) दे. सटणा।

सटरका (पुं.) 1. सोते समय नथुने या कंठ से निकलने वाली ध्वनि, खर्राटा, 2. अल्प समय की गहरी नींद; **~मारणा/लेणा** 1. खर्राटे भरना, 2. थोड़ी देर सोना।

सटसट (वि.) सड़सठ की संख्या।
सड़सठ (हि.)

सटाणा (क्रि. स.) साथ-साथ मिलाना या निकट लाना। **सटाना** (हि.)

सटाना (क्रि. स.) दे. सटाणा।

सटीक (वि.) 1. बिल्कुल ठीक, ठीक वैसा ही, 2. मूल के साथ टीका या व्याख्या सहित।

सट्टक (स्त्री.) दो मुखों वाली सर्पिणी, (दे. दमूही)।

सट्टा (पुं.) एक प्रकार का जूआ।

सट्टेबाज (पुं.) सट्टा (दे.) खेलने वाला।

सठणा (क्रि. अ.) 1. सौदा ठहरना या निश्चित होना, जैसे–सोद्दा सठ्या अक नाँ, 2. सौदे में लाभ होना, 3. दोस्ती गठना, दोस्ती होना, 4. गाँठ का पक्की तरह बँधना और न खुलना।
सठना (हि.)

सठवा (पुं.) सोंठ की उपज का प्रसिद्ध स्थान (वि.) सोंठ का बना।

सठ साल्ला (पुं.) 1. साठ वर्ष की आयु का, 2. साठ वर्ष की आयु।

सठावरी सूँठ (स्त्री.) एक प्रकार की सोंठ जो जच्चा को दी जाती है, सोंठारा।
शतावरी सोंठ (हि.)

सठियाना (क्रि. अ.) 1. बूढ़ा होना, 2. जीवन के साठ वर्ष पूरे करना।

सड़क (स्त्री.) दे. सरड़क।

सड़ना (क्रि. अ.) दे. सिड़णा।

सड़पड़-सड़पड़ (क्रि. वि.) 1. सरपट, 2. ऐड़ी खिसका कर धीरे-धीरे चलना।

सड़ाँध (स्त्री.) दुर्गंध, सड़ी वस्तु से उठने वाली गंध।

सड़ान (स्त्री.) दे. सड़ाँध।

सड़ाना (क्रि. स.) दे. सिड़ाणा।

सड़ाव (पुं.) दे. सड़ाँध; (वि.) सड़ाया हुआ।

सड़ासड़ (क्रि. वि.) 1. कूएँ की रस्सी को तेज़ी से खींचना, 2. तड़ातड़ की ध्वनि के साथ, 3. सरपट, 4. (दे. सैड़)।

सड़ासोड़ (वि.) पूरी तरह भीगा हुआ (वर्षा, पसीने आदि से); **~करणा** पूरी तरह भिगोना; **~मींह** इतना मेंह कि कपड़े भीग जाएँ; **~होणा/ भीजणा** पूरी तरह भीगना, सराबोर होना।

सड़ियल (वि.) दे. सिड़ियल।

सढोरा (पुं.) 1. साधू राह से व्युत्पन्न। 2. एक धाम जहाँ कनिष्क कालीन सिक्के मिले हैं। 3. सदन कसाई का गाँव।

सण (पुं.) सनई के पौधे का तंतु जिससे रस्सी बाँटी जाती है, (दे. पौड़); (वि.) 1. श्वेत (बाल), 2. उलझी हुई (वस्तु या तंतु); **~करणा** किसी वस्तु को उलझाना; **~काढणा/ तोड़णा** सनई के पौधे से तंतु उतारना।
सन/सनई (हि.)

सणकणा (क्रि.) सनक सवार होना।

सण कतरा (पुं.) दे. तळसंडा।

सणसोधन (पुं.) अशुभ व्यवहार या कार्य। उदा. सनीचर नैं लोह खरीदणा सण सोधन सै।

सणकी (वि.) सनकी।

सणी (स्त्री.) 1. सनई का पौधा (यह ख़रीफ की फसल में बोई जाती है और इस पर सुंदर फूल लगते हैं), 2. सनई का बीज (इसे घर में रखना अशुभ माना जाता है); **~बोणा** घिनका या सघन बीज बोना; **~सड़ाणा** दे. पौड़~दाबणा। **सनई** (हि.)

सत[1] (पुं.) 1. सार, 2. निचोड़; **~काढणा/निचोड़णा** सार निकालना, सत्त्व निकालना। **सत्त्व** (हि.)

सत[2] (पुं.) सच्चाई। **सत्य** (हि.)

सत[3] (पुं.) 1. साहस, जान, 2. ताक़त; **~टूटणा** 1. हिम्मत हारना, 2. प्रतिज्ञा भंग होना, 3. चारित्रिक पतन होना; **~छोड़णा** 1. हिम्मत हारना, 2. सत्य का पथ छोड़ना। **शक्ति** (हि.)

सत[4] (वि.) सात का अल्प रूप।

सतकार (पुं.) सत्कार, आदर, सम्मान।

सतकुंभा (पुं.) सोनीपत के निकट एक पवित्र स्थान।

सत गड्डा (पुं.) सात वस्तुओं का समूह, सात का समूह।

सतगुण (पुं.) सतोगण, सत्व गुण।

सतगुर (पुं.) 1. सच्चा गुरु, गुरु, 2. भगवान।

सतगुरु (पुं.) दे. सतगुर।

सतजुग (पुं.) 1. चार युगों में से पहला युग, 2. श्रेष्ठ काल, 3. वह राज्य जिसमें किसी प्रकार का कष्ट न हो; **~आणा/चालणा/बैठणा** श्रेष्ट काल या समय आना। **सत्ययुग** (हि.)

सतजुगी (वि.) 1. सत्ययुग से संबंधित, 2. श्रेष्ठ व्यवहार का। **सत्ययुगीन** (हि.)

सतधारी (वि.) 1. सत्य को धारण करने वाला, 2. श्रेष्ठ व्यवहार का।

सतनाज्जा (पुं.) सात प्रकार के अन्न का मिश्रण।

सतनाम-पंथ (पुं.) एक संप्रदाय विशेष।

सतनारायण (पुं.) सत्यनारायण; **~की कथा** सत्यनारायण भगवान की कथा। **सत्यनारायण** (हि.)

सतनाळा (पुं.) 1. सात नालों का गुच्छा, 2. विवाह की एक रस्म।

सतपकवान (पुं.) दे. सतपकवान्नी।

सतपकवान्नी (स्त्री.) 1. सात प्रकार का भोजन या मिठाई, विवाह आदि के समय दी जाने वाली सात प्रकार की मिठाइयाँ, 2. श्रेष्ठ और उत्तम भोजन।

सतपड़ा (पुं.) दे. हीड़ो।

सतपत (पुं.) यजुर्वेद का एक ब्राह्मण ग्रंथ। **शतपथ** (हि.)

सतपुड़ा[1] (पुं.) दे. खाँड~पुड़ा।

सतपुड़ा[2] (पुं.) दे. मसाल, 2. दे. गिरड़ी।

सतपुरस (पुं.) सत्य पुरुष; (वि.) सत्यवादी। **सत्य पुरुष** (हि.)

सतबीघिया (वि.) सात बीघे का (खेत)।

सतभा (पुं.) दे. सच भा।

सतमासा (वि.) दे. सतमासिया।

सतमासिया (वि.) सतमासा, नौ की बजाय सातवें महीने में पैदा हुआ (बालक)।

सतमास्सा (वि.) दे. सतमासिया।

सतर (पुं.) दे. सत्तर[1]।

सतरा (वि.) सत्रह की संख्या; **~(-रे) का काळ** विक्रम संवत् 1917 का दुर्भिक्ष। **सत्रह** (हि.)

सतराह् (पुं.) मृतक का सत्रहवें दिन होने वाला कृत्य, (दे. तेहराम्मीं)।

सतरु (वि.) बैरी, दुश्मन। **शत्रु** (हि.)

सतलड़ी (वि.) सात लड़ियों की।

सतलुज (स्त्री.) पंजाब की एक नदी।

सतलोक (पुं.) सत्यलोक।

सतवंती (वि.) दे. सतवती।

सतवती (वि.) 1. सत्यव्रत का पालन करने वाली, 2. पतिव्रता; (स्त्री.) कृष्ण द्वैपायन व्यास जी की माता। **सत्यवती** (हि.)

सतवाद्दी (पुं.) 1. वचन का पालन करने वाला व्यक्ति, 2. हरिश्चंद्र। **सत्यवादी** (हि.)

सतवान (पुं.) 1. सत्य के सहारे जीने वाला व्यक्ति, 2. ब्रह्मचारी, 3. सावित्री का पति। **सत्यवान** (हि.)

सतवाळिया (वि.) खेती में सातवें हिस्से का भागीदार; (पुं.) बच्चों का एक खेल।

सतसंग (पुं.) 1. साधु-महात्माओं का साथ, 2. भजन-कीर्तन, 3. भली संगत। **सत्संग** (हि.)

सतसंगी (वि.) सत्संग में भाग लेने वाला, भक्त।

सत साहेब पंथ (पुं.) एक संत संप्रदाय।

सतह (स्त्री.) तल, किसी वस्तु का ऊपरी भाग।

सताई (वि.) सत्ताईस की संख्या। **सत्ताईस** (हि.)

सताणा (क्रि. स.) 1. कष्ट पहुँचाना, तंग करना, 2. तरसाना। **सताना** (हि.)

सतान (पुं.) शैतान; (वि.) शरारती।

सताना (क्रि. स.) दे. सताणा।

सतावणियाँ (वि.) सताने वाला।

सतावन (वि.) सत्तावन की संख्या। **सत्तावन** (हि.)

सतावर (स्त्री.) एक बेल जिसकी जड़ ओषधि के काम आती है।

सतास्सी (वि.) सतासी की संख्या। **सतासी** (हि.)

सतियाँ (स्त्री.) 1. वे पूज्य नारियाँ जो पति के साथ सती हो गईं, 2. सती स्त्री; **~की** परिवार में हुई सती महिलाओं के निमित्त धर्मार्थ निकाली वस्तु (तीयल आदि); **~~तीळ** सती के नाम पर निकाली जाने वाली तीयल; **~मावस** भादों की अमावस्या।

सती (स्त्री.) 1. पतिव्रता, 2. पति की चिता में जलने वाली महिला।

सतुद्दा (वि.) कोमल, मुलायम।

सतेंतर (वि.) सतत्तर की संख्या। **सतत्तर** (हि.)

सतेम्मण (वि.) जुल्मी।

सतोंच्चा (पुं.) 1. साढ़े सात का पहाड़ा, 2. साढ़े सात गुणा।

सतोगुणी (पुं.) सात्त्विक।

सत्कर्म (पुं.) पुण्य।

सत्तर[1] (पुं.) रेखा, तख़्ती पर डाली जाने वाली रेखा; **~खेंचणा/मारणा/लाणा** तख़्ती पर रेखा डालना।

सत्तर[2] (वि.) सत्तर की गिनती।

सत्ता[1] (स्त्री.) 1. शासन, 2. अस्तित्व।

सत्ता[2] (पुं.) सात का पहाड़ा या गुणन।

सत्ताधारी (पुं.) हाक़िम।

सत्तावन का गदर (पुं.) ई. सन् 1857 का अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह।

सत्ती देब्बी (स्त्री.) 1. सत्य की देवी, 2. सती।

सत्तु (पुं.) भुने जौ का आटा (जो गुण में शीतल होता है)। **सत्तू** (हि.)

सत्पुरुष (पुं.) दे. सतपुरस।

सत्य (पुं.) दे. सच।

सत्यनारायण (पुं.) दे. सतनारायण।

सत्ययुग (पुं.) दे. सतजुग।

सत्यवती (स्त्री.) दे. सतवती।

सत्यवादी (पुं.) दे. सतवाद्दी।

सत्यवान (पुं.) दे. सतवान।

सत्यव्रत (पुं.) सत्य बोलने वाला।

सत्याग्रह (पुं.) किसी सत्य या न्याय की स्थापना के लिए किया जाने वाला शांतिपूर्ण संघर्ष।

सत्याग्रही (पुं.) वह जो सत्याग्रह (दे.) करे।

सत्यानाश (पुं.) दे. सत्यानास।

सत्यनाशी (वि.) दे. सत्यानास्सी।

सत्यानास (पुं.) मटियामेट या विनाश; **~करणा** 1. काम बिगाड़ना, 2. विनाश करना; **~होणा** 1. काम बिगड़ना, 2. भारी हानि होना, 3. विनाश होना। **सत्यानाश** (हि.)

सत्यनास्सी (वि.) 1. सत्ता का विनाश करने वाला, 2. बना काम बिगाड़ने वाला (तुल. खोवा~खेड़ी); (पुं.) एक कँटीला पौधा जिसके फूल के चावल खाँसी को हरने वाले होते हैं, स्वर्णपुष्णी, (दे. कटहळी); **~की जड़** 1. सत्यानाशी के पौधे की जड़ जो ओषधि रूप में प्रयुक्त होती है, 2. विनाश का मूल कारण। **सत्यानाशी** (हि.)

सत्रह (वि.) दे. सतरा।

सत्संग (पुं.) दे. सतसंग।

सत्संगति (स्त्री.) अच्छ संगति, साधु व्यक्तियों की संगति।

सत्संगी (वि.) दे. सतसंगी।

सथिया (पुं.) दे. साथिया; **~धराई** 1. बच्चे के जन्म के छठे दिन ननद द्वारा सथिया धरने की एक रस्स, 2. सथिया धराई नेग।

सद (वि.) 1. ताज़ा, हाल का, सद्य, 2. शुद्ध; **~पाणी** ताज़ा पानी। **सद्य** (हि.)

सदमा (पुं.) आघात, धक्का।

सदर (पुं.) 1. सड़क के किनारे या जंगल में पड़ा वह खंडहर जहाँ नवाबी या रजवाड़े राज्य में किसी अधिकारी का कार्यालय था, 2. केंद्रीय स्थान, मुख्य स्थान। **सद्र** (हि.)

सदर बाजार (पुं.) 1. बड़ा बाज़ार, 2. छावनी का बाज़ार।

सदरी (स्त्री.) जवाहरबंडी, बिना आस्तीन का कमर तक का कोट।

सदस्य (पुं.) 1. सभासद्, 2. मेम्बर।

सदा[1] (अव्य.) नित्य; प्रतिदिन; **~रहणा** अमर होना।

सदा[2] (स्त्री.) भिखारी की आवाज।

सदाचारी (पुं.) अच्छे आचरण वाला व्यक्ति।

सदाबरत (पुं.) 1. भूखों को दिया जाने वाला भोजन, 2. निरंतर दिया जाने वाला दान-पुण्य; **~खोल्हणा/लाणा** हर समय दान-पुण्य करना। **सदाव्रत** (हि.)

सदाबहार (वि.) सदा हरा हरने वाला (पौधा, फूल आदि)।

सदारत (स्त्री.) सभापतित्व।

सदावर्त (पुं.) दे. सदाबरत।

सदा शिवराव भाऊ (पुं.) मराठा सेनापति जो साधु बनकर हरियाणे में प्रचार करता रहा, मस्तनाथ ने इन्हें अपना शिक्ष्य बनाकर इनके कान फाड़े और

मुद्रा पहनाई, इनकी समाधि सांघी गाँव में है, (दे. भाऊ)।

सदा सुहागिन (स्त्री.) दे. सदा सुहाग्गण।

सदा सुहाग्गण (स्त्री.) 1. मृत्यु-पर्यंत सुहागिन रहने वाली, 2. स्त्रियों को दिया जाने वाला आशीर्वाद।
सदा सुहागिन (हि.)

सदी (स्त्री.) शती, शताब्दी।

सद्‌गति (स्त्री.) मोक्ष।

सद्‌भाव (पुं.) 1. अच्छी नीयत, 2. प्रेम व हित का भाव।

सधणा (क्रि. अ.) 1. पशु का सधना, पशु का इशारे के अनुसार काम करना, 2. दक्षता आना, सिद्धहस्त होना, 3. काम निकलना, पूरा पड़ना, 4. निशाना ठीक बैठना, 5. प्रयोजन सिद्ध होना, 6. सीधा होना। **सधना** (हि.)

सधना (क्रि. अ.) दे. सधणा।

सधाना (क्रि. स.) दे. सधारणा।

सधारणा (क्रि. स.) 1. सधाणा, 2. पशु को सधाना; (क्रि. अ.) 1. सिधारना, मरना, 2. विसर्जित होना, 3. विदा होना।

सन[1] (स्त्री.) सनसनाहट की ध्वनि।

सन[2] (पुं.) दे. सण।

सन[3] (पुं.) ईसवी वर्ष।

सन[4] (अव्य.) 1. सो, 2. से।

सनई (स्त्री.) दे. सणी।

सनक (स्त्री.) वहम, जुनून; (पुं.) ब्रह्मा के चार पुत्रों में से एक।

सनकारणा (क्रि. स.) 1. उकसाना, 2. ससकारना।

सनकी (वि.) वहमी।

सनणा (क्रि. अ.) 1. लिप्त होना, 2. गीली वस्तु से लथपथ होना, 3. आटे का गूँधा जाना, 4. गंदी वस्तु का स्पर्श होना। **सनना** (हि.)

सनतोरिया (पुं.) एक अहीर गोत।

सनत्कुमार (पुं.) ब्रह्मा के चार पुत्रों में से एक।

सनद (स्त्री.) दे. सनध।

सनध (स्त्री.) 1. विश्वास, 2. प्रमाणपत्र।
सनद (हि.)

सनना (क्रि. अ.) दे. सनणा।

सनमान (पुं.) 1. आदर, 2. आदर-भाव।
सम्मान (हि.)

सनमुख (क्रि. वि.) सामने, (दे. साहमीं)।
सम्मुख (हि.)

सनसनाट (स्त्री.) 1. सनसनाहट की ध्वनि, 2. हाथ-पैर आदि में कंपन होने की क्रिया। **सनसनाहट** (हि.)

सनसनाना (क्रि. अ.) 'सन'-'सन' शब्द करते हुए बहना।

सनसनाहट (स्त्री.) दे. सनसनाट।

सनसनी (स्त्री.) 1. झनझनाहट, 2. भय आदि के कारण उत्पन्न स्तब्धता।

सनाक्का (पुं.) स्तब्धता का भाव; **~खाणा** स्तब्ध रहना।

सनाढ्य (पुं.) गौड़ ब्राह्मणों की एक शाखा।

सनातन (वि.) 1. पुराना, 2. प्राचीन काल से संबंधित।

सनातन धरम (पुं.) 1. ईश्वर, अवतार, पुनर्जन्म, कर्म के अनुसार फल तथा मूर्ति-पूजा में विश्वास रखने वालों का धर्म, 2. हिंदू धर्म, 3. सबसे प्राचीन धर्म, 4. सदाचार में विश्वास रखने वालों का धर्म, 5. पूजा-पाठ, जप-तप, योग, ध्यान आदि करने वालों का धर्म, 6. वैदिक धर्म। **सनातन धर्म** (हि.)

सनातन धरमी (वि.) 1. मूर्ति-पूजक, 2. सनातन धर्म में विश्वास रखने वाला। **सनातन धर्मी** (हि.)

सनातन धर्म (पुं.) दे. सनातन धरम।

सनातनी (पुं.) 1. मूर्ति-पूजक, 2. सनातन धर्म में विश्वास रखने वाला व्यक्ति।

सनीचर (पुं.) दे. सनीच्चर।

सनीच्चर (पुं.) शनिवार (तुल. थावर,) 2. लोहे की वह मूर्ति जो शनिवार को तेल माँगने वाला किसी पात्र में स्थापित करता है, 3. एक ग्रह, शनि ग्रह; (वि.) दुष्ट, हानिकारक। **शनिवार** (हि.)

सनीपी (वि.) 1. निकट का संबंधी, 2. सहायक।

सनीम्मा (पुं.) दे. सलीम्मा।

सनेरू (पुं.) चाक का डंडा।

सन् (पुं.) अंग्रेज़ी संवत्, ईसवी सन्।

सन्नाट्टा (पुं.) 1. घनीभूत शांति, 2. निस्तब्धता, 3. (दे. सरणाट्टा); **~मारणा** साँय-साँय की ध्वनि निकलना। **सन्नाटा** (हि.)

सन्नायटा (पुं.) दे. सरणाट्टा।

सन्नी[1] (स्त्री.) संडासी।

सन्नी[2] (स्त्री.) छोटा साँटा, उदा.-उड़ै हाली का लेस नहीं था, सन्नी साँटा नाड़ी देखी। (लचं मीराबाई)

सपड़का (पुं.) 1. तरल पदार्थ को अंगुलियों पर रखकर मुँह में डालने की क्रिया, 2. 'सड़'-'सड़' की ध्वनि से सपड़ने या खाने का भाव; **~(-क्याँ) खाणा/मारणा** खीर, राबड़ी आदि तरल भोज्य पदार्थ को हथेली और अंगुलियों पर रखकर खाना।

सपड़णा (क्रि. स.) 1. तरल खाद्य-पदार्थ को हथेली की अंगुलियों पर रखकर मुँह में डालना, सपड़का मारना, 2. बिना चबाए खाना, (दे. सफळणा); (क्रि. अ.) दे. साप्पड़णा। **सपड़ना** (हि.)

सपत (स्त्री.) दे. सूँह। **शपथ** (हि.)

सपना (पुं.) दे. सुपना।

सपरना (क्रि. अ.) दे. सपड़णा।

सपरा (पुं.) आश्चर्य।

सपाट (वि.) 1. समतल, 2. सीधा (मार्ग), 3. साफ़-साफ़, बिना छिपाव के, 4. स्वतः स्पष्ट।

सपाटा (पुं.) दे. सपाट्टा।

सपाट्टा (पुं.) सैर-सपाटा। **सपाटा** (हि.)

सपुर्द (वि.) दे. सुपरद; (स्त्री.) भेंट, धरोहर।

सपूत (पुं.) 1. आज्ञाकारी पुत्र, 2. पुत्र।

सपूतड़ी (स्त्री.) 1. सत्पुत्री (व्यंग्य में),

सपूत्ता (वि.) पुत्र वाला।

सपूरण (वि.) पूरा, भरा-पूरा, समस्त। **संपूर्ण** (हि.)

सपेल्ला (पुं.) 1. बीन बजाकर जीविका-यापन करने वाला, 2. एक जाति जो बीन बजाने और साँप नचाने का काम करती है (यह जाति नाथ संप्रदाय से संबंधित है); (वि.) प्रेमी। **सँपेरा** (हि.)

सप्तमी (स्त्री.) दे. सात्तैं।

सप्तर्षि (पुं.) आकाश के सात तारे (जिसे खटोला भी कहते हैं) जो ध्रुव की परिक्रमा करते हैं, 2. सात ऋषियों का समूह या मंडल।

सप्तसिंधु (स्त्री.) हरियाणा से संबंधित सात नदियाँ।

सप्ताह (पुं.) हफ्ता, सात दिनों का समय; (स्त्री.) भागवत की कथा जो सात दिनों में पढ़ी या सुनी जाए।

सफड़ा (पुं.) (कौर.) सफ़ या रूई का आसन।

सफ़र (पुं.) यात्रा।

सफल (वि.) दे. सुफळ।

सफळणा (क्रि. स.) 1. निगलना, 2. बिना चबाए भोजन करना, 3. (दे. सटकणा)।

सफलता (स्त्री.) कामयाबी।

सफा (वि.) 1. स्पष्ट, स्पष्ट रूप से, जैसे–सफा जवाब देणा, 2. साफ़, स्वच्छ, 3. सफ़ाई करने की क्रिया; (पुं.) पृष्ठ।

सफ़ाई (स्त्री.) 1. स्वच्छता, 2. मन में मैल न रहना।

सफाखान्ना (पुं.) अस्पताल। **सफ़ाखाना** (हि.)

सफाचट्ट (वि.) 1. साफ़, स्वच्छ, 2. समतल; (पुं.) बाल उड़ाने का साबुन या चूरा; **~करणा** 1. पूरी तरह समाप्त करना, 2. साफ़ करना। **सफ़ाचट** (हि.)

सफेत (वि.) दे. सफैद।

सफ़ेद (वि.) 1. सफ़ेद रंग का, धवल, 2. कोरा; **~बुक** बिल्कुल सफ़ेद, बगुले के समान श्वेत। **श्वेत** (हि.)

सफ़ेद पोश (पुं.) दे. सफ़ेद पोस।

सफ़ेद पोस (पुं.) 1. सफ़ेद पोशाक पहनने वाला, 2. एक उपाधि, 3. सम्मानित व्यक्ति (तुल. धोळपोस)।

सफ़ेदा (पुं.) दे. सफेद्दा।

सफ़ेदी (स्त्री.) दे. सफेद्दी।

सफेद्दा (पुं.) 1. जस्ते का चूर्ण या भस्म जो काज़ल में डलता है, 2. एक पतले तने वाला लंबा पौधा, यूक-लिप्टस। **सुफ़ेदा** (हि.)

सफेद्दी (स्त्री.) 1. दीवार पर पोता जाने वाला चूना, 2. सफ़ेद होने का भाव, जैसे–बालाँ पै सफेद्दी, 3. चाँदनी। **सफ़ेदी** (हि.)

सब (वि.) दे. सभ।

सबक (पुं.) 1. पाठ, 2. सीख।

सबकणा (क्रि.) चुभना। दुखना। दे. सुबकणा।

सबत्तर (अव्य.) दुनियाभर में। **सर्वत्र** (हि.)

सबद (पुं.) 1. फ़कीर-साधुओं के भजन, 2. शब्द, वाक्य-खंड, 3. कुवचन (व्यंग्य में), 4. ध्वनि, आवाज़। **शब्द** (हि.)

सबद भेद्दी बाण (पुं.) शब्द-बेधी बाण, शब्द या ध्वनि को लक्ष्य करके चलाया जाने वाला बाण।

सबब (पुं.) कारण।

सबर (पुं.) संतोष; **~आणा** 1. तसल्ली मिलना, 2. मन भरना, संतोष मिलना; **~करणा/धरणा** 1. संतोष रखना, 2. धैर्यपूर्वक सहना; **~का मुक्का मारणा** मन को समझा लेना; **~की घूँट भरणा** कष्ट रहते हुए भी मन को समझाना। **सब्र** (हि.)

सबरा (वि.) दे. सगळा।

सबरी (स्त्री.) शबरी, शबरी जाति की एक महिला जिसके हाथ से श्री रामचंद्र जी ने बेर खाए थे।

सबल (वि.) बलवान।

सबादळी (वि.) बादल वाली।

सबाब (वि.) अतिवाद। घमंड।

सबील (स्त्री.) दे. छबील।

सबूत (पुं.) प्रमाण।

सबेरा (पुं.) प्रातःकाल (तुल. तड़का)।

सबेरी (वि.) 1. शीघ्र, 2. सुबह सुबह।

सब्ज (वि.) 1. हरा, हरा-भरा, 2. हरे रंग का।

सब्जी (स्त्री.) तरकारी, 1. (दे. साग), 2. (दे. लाण)।

सब्बा[1] (वि.) 1. दाएँ हाथ से काम करने वाला, 2. दायाँ।

सब्बा[2] (पुं.) खब्बा का विलोम। दे. सोळा।

सब्र (पुं.) दे. सबर।

सभ (वि.) सभी। **सब** (हि.)

सभा (स्त्री.) 1. सुनियोजित मंडली, 2. मजलिस, 3. भीड़; **~जोड़णा/लाणा** 1. भीड़ इकट्ठी करना, 2. मजलिस लगाना, 3. पंचायत बुलाना।

सभापति (पुं.) 1. अध्यक्ष, 2. सभा का मुखिया का प्रधान।

सभा सहिता (अव्य.) सर्वमान्य। उदा.सभा सहिता करिये काज, हारत जीतत ना आवै लाज।

सभ्य (पुं.) भला आदमी।

सभ्यता (स्त्री.) 1. सभ्य होने का भाव, 2. सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था, 3. भलमनसाहत।

समंत पंचक (पुं.) 1. कुरुक्षेत्र का एक पवित्र तीर्थ, 2. कुरु द्वारा पाँच योजन चौकोर भूमि तोड़ने पर बसा प्रदेश।

समंद (पुं.) दे. समंदर।

समंदर (पुं.) समुद्र।

सम (वि.) 1. समान, तुल्य, 2. जिसका तल समान हो।

समइए (पुं.) गूगा-पीर के गीत गाने वाले। दे. समैये।

समझ (स्त्री.) 1. समझने की शक्ति, 2. सूझ-बूझ; **~लागणा** 1. बुद्धि आना, 2. होश में आना।

समझणा (क्रि. स.) 1. बात को जानना, 2. समझना या महत्त्व देना, 3. चुनौती देना—तन्नैं बी बखत पै समझ ल्यूँगा, 4. परखना; (वि.) समझदार। **समझना** (हि.)

समझणियाँ (वि.) 1. समझने वाला, 2. अक्लमंद, 3. पारखी, 4. मुक़ाबले का—मेरे समझणियाँ तै कात्तिक आळी मैं मरगे।

समझदार (वि.) अक्लमंद, बुद्धिमान।

समझना (क्रि. स.) दे. समझणा।

समझाणा (क्रि. स.) 1. बात को स्पष्ट करके कहना, 2. सभी ऊँच-नीच समझाना, 3. सचेत करना, सतर्क करना, 4. मनाना, अपने मत का करना। **समझाना** (हि.)

समझाना (क्रि. स.) दे. समझाणा।

समझावा (वि.) समझाने वाला—मेरे-सा समझावा और नाँ मिल्लैगा।

समझोत्ता (पुं.) सुलह। **समझौता** (हि.)

समझौता (पुं.) दे. समझोत्ता।

समड़क (वि.) सीधा पसर कर लेटना।

समतल (वि.) 1. जो ऊबड़-खाबड़ न हो, 2. हमवार।

समताई (स्त्री.) बराबरी।

समदन (स्त्री.) दे. समधण।

समदर्शी (वि.) सबको समान भाव से देखने वाला।

समदी (पुं.) दे. समधी।

समध (पुं.) दे. समधी।

समधण (स्त्री.) 1. पुत्र की सास, 2. पुत्री की सास। **समधिन** (हि.)

समधाणा (पुं.) 1. पुत्र की ससुराल, 2. समधी का घर। **समधाना** (हि.)

समधियाना (पुं.) दे. समधाणा।

समधी (पुं.) पुत्र या पुत्री का ससुर।

समधेट्टा (पुं.) (कन्या-पक्ष का) समधी का पुत्र।

समय (पुं.) काल, वक्त, (दे. समैं)।

समय सधणा (क्रि.) उचित समय आना।

समर (पुं.) युद्ध।

समरजीत (पुं.) युद्धजित।

समरणा[1] (क्रि. स.) 1. स्मरण करना, भगवान का जाप करना, 2. कंठस्थ करना।

समरणा[2] (क्रि. अ.) 1. समरना, भली प्रकार गढ़ा जाना, 2. चारपाई आदि की मरम्मत होना, 3. गलत मार्ग से ठीक मार्ग अपनाना, 4. सुधार होना, 5. हजामत बनना, 6. बिगड़ा काम बनना, 7. सजना-धजना। **सँवरना** (हि.)

समेप (वि.) दे. समीप। तुल. नीड़ै।

समरफल्ला (पुं.) नंदवंशी अहीर गोत।

समर-भूमि (स्त्री.) दे. समर-भोम्मीं।

समर-भोम्मीं (स्त्री.) युद्ध-क्षेत्र। **समर-भूमि** (हि.)

समर्थ (वि.) 1. सक्षम, 2. (दे. सामरथ)।

समर्थन (पुं.) पुष्टि करने का भाव।

समर्पण (पुं.) 1. भेंट करना, 2. स्वयं को पेश या उपस्थित करने का भाव।

समसाण (पुं.) श्मशान, (दे. चिंहाणी)।

समस्त (वि.) दे. सगळा।

समस्या (स्त्री.) पेचीदगी, कठिनाई। दे. अडाँस।

समाँ (पुं.) 1. सुभिक्ष काल, 2. 'काळ[2]' का विलोम, 3. समय, वक्त; **~होणा** सुभिक्ष होना।

समाई (स्त्री.) सहनशीलता; **~करणा** 1. मन को समझा-बुझा कर रखना, सहनशीलतापूर्वक रहना, 2. क्षमा करना; **~खाणा/राखणा** सहनशीलता बरतना; **~देखणा** सहनशीलता की परख करना।

समागम (पुं.) 1. साधु-मंडली के एकत्रित होने का भाव, 2. भेंट, मिलना, 3. आगमन।

समाचार (पुं.) ख़बर, हाल।

समाचार-पत्र (पुं.) अख़बार।

समाज (पुं.) 1. एक ही स्थान पर रहने वाले लोगों का समूह, 2. समुदाय, 3. सभा।

समाणा (क्रि. अ.) 1. भूमि-समाधि लेना, स्वतः भूमि में धँस जाना, 2. धँसना, 3. किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु में पूरी तरह आ जाना। **समाना** (हि.)

समाध (स्त्री.) 1. मृतक की मढ़ी, 2. समाधि की अवस्था। **समाधि** (हि.)

समाधान (पुं.) संदेह-निवारण।

समाधि (स्त्री.) दे. समाध।

समान (वि.) दे. समान्नी; (पुं.) सामान, चीज़-बस्त।

समानता (स्त्री.) बराबरी।

समाना (क्रि. अ.) दे. समाणा।

समान्नी (वि.) बराबर, जैसे-सिर-समान्नी पाणी (सिर तक आने वाला पानी)। **समान** (हि.)

समाप्त (वि.) 1. ख़त्म, 2. संपन्न।

समाप्ति (स्त्री.) संपन्न या पूरा होने का भाव।

समारणा (क्रि. स.) 1. साफ़ करना, 2. मरम्मत करना, 3. पिटाई करना (व्यंग्य में), 4. सन्मार्ग पर लाना। **सँवारना** (हि.)

समारना (क्रि. स.) दे. समारणा।

समारोह (पुं.) आयोजन, उत्सव।

समावेश (पुं.) एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में मिलना या समाना।

समिति (स्त्री.) समाज, सभा।

समीप (वि.) निकट, (दे. नीड़ै)।

समुदाय (पुं.) 1. समूह, समाज, 2. झुंड, 3. ढेर।

समुद्र (पुं.) 1. दे. समंद, 2. दे. समंदर।

समूच्चा (वि.) संपूर्ण।

समूल (क्रि. वि.) जड़ से, मूल सहित, (तुल. जड़मूड़)।

समूह (पुं.) 1. समुदाय, झुंड, 2. ढेरी, राशि।

समेटणा (क्रि. स.) 1. कूएँ की रस्सी की तह लगाना, 2. बिगड़ी बात सँभालना, 3. भोजन आदि को समाप्त करना, 4. (दे. सँघवाणा)। **समेटना** (हि.)

समेटना (क्रि. स.) दे. समेटणा।

समेत (अव्य.) सहित, साथ।

समैं (पुं.) 1. समय, काल, 2. फ़ुरसत, 3. सुभिक्ष, 4. अंतिम काल, 5. (दे. समाँ)।

समैये (पुं.) गोगा कथा गाने वालों की टोली, जो सामान्यत: जुलाहे होते हैं।

समो (पुं.) समय, अवसर। उदा. नळ पांडो हरिचंद नै भोगी, समो हाथ जिसी आई (लचं.) दे. समां।

समोखणा (क्रि.) भोजन जिमाना।

समोणा (क्रि. स.) ठंडे या गर्म पानी को एक-दूसरे में मिलाकर समान ताप का करना। **समोना** (हि.)

समोना (क्रि. स.) दे. समोणा।

समोल्ला (वि.) सम्मिलित।

समोसा (पुं.) दे. समोस्सा।

समोस्सा (पुं.) एक नमकीन पकवान जो मैदा की आधी पूरी में आलूमसाला आदि डाल कर तिकोनाकार बनाकर तला जाता है।

सम्मक (वि.) 1. समस्त, पूर्ण–चीस की मारी सम्मक रात नाँ सोया, 2. भली प्रकार। **सम्यक्** (हि.)

सम्मत[1] (पुं.) सुभिक्ष; **~होणा** सुभिक्ष होना।

सम्मत[2] (पुं.) विक्रमी संवत् जो चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होता है (एक धारणा के अनुसार ब्रह्मा ने इसी दिन सृष्टि रची थी, सतयुग में इसी दिन विष्णु ने मत्स्य अवतार धारण किया था); **~पलटणा/लागणा** नया वर्ष आरंभ होना। **संवत्** (हि.)

सम्मत[3] (स्त्री.) 1. दिशा, 2. सम्मति, सलाह।

सम्मती (स्त्री.) सम्मति, सलाह, राय।

सम्मन[1] (पुं.) अदालत का आज्ञा-पत्र जिसमें अदालत या हाक़िम के सामने उपस्थित होने का आदेश दिया जाता है। **समन** (हि.)

सम्मन[2] (पुं.) एक जन-कवि जिसके नाम पर अनेक कहावतें प्रचलित हैं-- 1. कच्चे बड़े सुहावणें गाद्दर हुयाँ सवाद, सम्मन वै फळ कोण से पाक्याँ पै कड़वास? (मनुष्य बचपन में सुंदर, युवावस्था में महत्त्वपूर्ण और बुढ़ापे में घृणित होता है), 2. सम्मन बुढाप्पा आइयाँ, धोळे हो गए केस, सतरू भै मान्नैं नहीं, आद्दर दे नाँ नरेस।

सम्मान (पुं.) आदर।

सम्मानित (वि.) 1. प्रतिष्ठित, 2. जिसका सम्मान हुआ हो।

सम्मुख (क्रि. वि.) सामने, समक्ष (तुल. साहमीं)

सम्मेलन (पुं.) किसी विशेष उद्देश्य से एकत्रित हुआ समाज, सभा।

सम्मोहन (पुं.) 1. सम्मोहित या आकृष्ट करने का भाव, 2. एक अस्त्र जिससे शत्रु आदि को मोहित करते हैं।

सयानपत (स्त्री.) दे. स्याणपत।

सरंगी (स्त्री.) दे. सारंगी।

सर[1] (पुं.) 1. सरकंडा, सरवा, 2. कुशा की जाति की एक घास जो छप्पर आदि छाने के काम आती है, इसके पत्तों से मूँज बनाई जाती है।

सर[2] (पुं.) अंग्रेज़ों द्वारा दी जाने वाली मानद उपाधि, 2. तुरप का पत्ता, 3. ताश के खेल मे जीते हुए पत्ते, 4. श्रीमान, श्रीमन्।

सर[3] (पुं.) तीर।

सरकंडा (पुं.) सर का तना जिसकी कलम बनाई जाती है।

सरक (स्त्री.) कलम के लेख।

सरकड़ (वि.) दो की तुलना में कुछ अधिक, दे. लिकड़माँ।

सरकणा (क्रि. अ.) 1. अपने स्थान से हिलना या टहलना, 2. धीरे-धीरे चलना, 3. बैठे-बैठे घिसटना, घिसटना, 4. खिसकना, 5. ग्रंथि का पाश आगे-पीछे होना; (वि.) जो सरके।

सरकना (हि.)

सरकना (क्रि. अ.) दे. सरकणा।

सरकपाँस्सा (पुं.) 1. वह पाश या गाँठ जो आगे-पीछे सरकाई जा सके या जिसे कसा और ढीला किया जा सके, 2. फाँसी की ग्रंथि या फंदा; **~(-से) की गाँठ** वह गाँठ जिसे कसा तथा ढीला किया जा सके या सरकाया जा सके; **~खाणा** फाँसी खाना, फाँसी लेकर मरना।

सरकस (स्त्री.) पशु तथा कलाबाज़ी आदि कौतुक दिखाने वालों का दल।

सरकाणा (क्रि. स.) हिलाना या टहलाना, खिसकाना, धीरे-धीरे खिसकाना।

सरकाना (हि.)

सरकार (स्त्री.) दे. सिरकार।

सरकारी (वि.) दे. सिरकारी।

सरकी (स्त्री.) 1. सरकंडे की बनी टट्टी जो दीवार या गाड़ी पर धूप और वर्षा आदि से बचाव के लिए डाली जाती है, 2. सरकंडों की झोंपड़ी।

सिरकी (हि.)

सरगम (पुं.) संगीत में सात स्वरों के चढ़ाव-उतार का क्रम।

सरगर्म (वि.) उत्साही (कार्यकर्त्ता)।

सरगुणी (पुं.) दे. सगुण।

सरजणहार (पुं.) दे. सिरजणहार।

सरजीवण (वि.) दे. संजीवण।

सरजीवणी (स्त्री.) दे. संजीवणी।

सरजू (स्त्री.) सरयू नदी।

सरटा (पुं.) दे. सिरटा।

सरड़क (स्त्री.) 1. तारकोल और रोड़ी आदि से बना पक्का रास्ता, 2. चौड़ा मार्ग, 3. सीधा मार्ग। **सड़क** (हि.)

सरड़का (पुं.) 1. कूएँ से रस्सी खींचने का भाव या क्रिया, रस्सी को झटके के साथ अपनी ओर खींचने का भाव, 2. काम को शीघ्र और निरंतरता से करने का भाव–यो काम एक सरड़के मैं कर लिए, 3. एक आवेश में किया गया काम, 4. रस्सी की मार, 5. रस्सी, 6. लगभग एक पुरुष (साढ़े तीन हाथ) रस्सी की लंबाई का नाप, कूएँ से पानी निकालते समय एक झटके में खींची गई रस्सी का नाप–दुलाए कूए मैं चार सरड़के नीच्चै पाणी सै; **~मारणा** 1. झटके के साथ कूएँ से पानी खींचना, 2. रस्सी से पीटना, 3. (दे. सुरड़का)।

सरड़णा (क्रि. स.) 1. रस्सी आदि को अपनी ओर खींचना, 2. (दे., सुरड़णा)।

सरड़ा (पुं.) दे. सरड़का; (वि.) दे. सुरड़ा।

सरड़ाट्टा (पुं.) 1. (दौड़ते समय पैरों से उत्पन्न) सड़-सड़ की ध्वनि, 2. खर्राटा, 3. (दे. सुरड़ाट्टा); **~ऊठणा** 1. तेज़ दौड़ते समय 'सड़'-'सड़' की ध्वनि उत्पन्न होना, 2. तेज़ी से भाग निकलना।

सरड़ी (वि.) दे. सिरड़ी; (क्रि. स.) 'सरड़णा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिंग.एकव. रूप।

सरण (स्त्री.) 1. आश्रय, 2. रक्षा, 3. अधीनता, 4. 'सरण' की ध्वनि, 5. साँप की ध्वनि, 6. पैर का एक रोग जिसमें पैर मुड़ने से रह जाता है; **~-सरण होणा** सनसनाहट होना। **शरण/सरन** (हि.)

सरणा (क्रि. अ.) 1. काम चलना, पूरा पड़ना, 2. अन्य की सहायता के बिना काम पूरा होना; (स्त्री.) शरण। **सरना** (हि.)

सरणाई (स्त्री.) शरण।

सरणाट्टा (पुं.) 1. बहुत खट्टी दही से बनाया गया बूँदी का रायता (तुल. सन्नायटा), 2. 'सरण'-'सरण' की ध्वनि, 3. पैर या हाथ में उठने वाली झनझनाहट-युक्त पीड़ा, 4. साँप द्वारा की जाने वाली ध्वनि, 5. चक्की पीसते समय उत्पन्न ध्वनि, 6. काम को निर्विघ्न भाव से संपन्न करने का भाव; **~ठाणा** 1. काम को निर्विघ्न रूप से शीघ्रतापूर्वक करना, 2. 'सरण'-'सरण' की ध्वनि करना।

सरणैल (वि.) 1. वह व्यक्ति या पशु जिसका पैर न मुड़ सकने के कारण झटके के साथ उठे या घिसट कर उठे, 2. शरणागत।

सरत (स्त्री.) दाँव बदने का भाव। **शर्त** (हि.)

सरतिया (क्रि. वि.) निश्चित रूप से। **शर्तिया** (हि.)

सरदपुन्नयों (स्त्री.) आश्विन पूर्णिमा (इस रात चंद्रमा के प्रकाश में खीर बनाई जाती है)। **शरद-पूर्णिमा** (हि.)

सरदर (पुं.) मोटा तथा भारी तख़्ता जो चौखट पर लगाया जाता है।

सरदल (पुं.) चौखट की ऊपर की लकड़ी।

सरदा[1] (पुं.) एक प्रकार का खरबूजा।

सरदा[2] (स्त्री.) 1. श्रद्धा, 2. सामर्थ्य।

सरदाई (स्त्री.) ठंडाई, गर्मी में प्रयुक्त एक शीतल पेय पदार्थ।

सरदार (पुं.) दे. सिरदार।

सरदारी[1] (स्त्री.) 1. कलायत (हरियाणा) की एक महिला साँगी, 2. सरदारी करने का भाव, सरदारगिरी।

सरदारी[2] (स्त्री.) हुकूमत।

सरदी (स्त्री.) दे. जाड्डा।

सरधा (स्त्री.) 1. विश्वास, 2. सामर्थ्य–अपणी सरधा हो उतणा खरचै, 3. बल, शारीरिक शक्ति–इस बिमारी पाच्छे तै सरीर में उट्ठणा ताँहीं की सरधा नाँ रही। **श्रद्धा** (हि.)

सरन (स्त्री.) दे. सरण।

सरना (क्रि. अ.) दे. सरणा।

सरनाम (वि.) मशहूर, प्रसिद्ध; **~कमाणा** 1. प्रसिद्धि कमाना, 2. 'सर' की उपाधि अर्जित करना।

सरनामी (पुं.) प्रसिद्धि।

सरनाळी (स्त्री.) पानी के निकट उगने वाली लंबी नाल की एक घास।

सरपरस्त (पुं.) अभिभावक, संरक्षक।

सरब (वि.) सारा, समस्त। **सर्व** (हि.)

सरबखाप (स्त्री.) 1. वह पंचायत जिसके कहने पर अकबर ने हिंदुओं पर लगाया जज़िया हटाया था, 2. अनेक खापों का मंडल, (दे. खाप)।

सरब गहण (पुं.) संपूर्ण ग्रहण, खग्रास। **सर्व ग्रहण** (हि.)

सरबत (पुं.) मीठा पानी; (वि.) अधिक मीठा। **शरबत** (हि.)

सरबती (पुं.) 1. हलका पीला रंग, 2. शरबती रंग; (वि.) 1. हल्के पीले रंग का, 2. सरस। **शरबती** (हि.)

सरबत्तर (अव्य.) सब जगह। **सर्वत्र** (हि.)

सरबस (पुं.) सब कुछ; **~लुटाणा** सब कुछ न्योछावर करना। **सर्वस्व** (हि.)

सरभंगी (वि.) 1. खान-पान में शुचिता का भाव न बरतने वाला, 2. सर्वाहारी, 3. नीच, पतित। **सर्वभक्षी** (हि.)

सरम (स्त्री.) लज्जा, हया; **~खाणा** शर्म बरतना। **शर्म** (हि.)

सरम समाई (स्त्री.) शर्म और सहनशीलता। दे. समाई।

सरमाँ (पुं.) शर्मा।

सरमाऊ (वि.) शर्म करने वाला, लज्जाशील, शर्मीला।

सरमाणा (क्रि. अ.) 1. संकोच करना, 2. लज्जित होना। **शर्माना** (हि.)

सरयू (स्त्री.) आयोध्या के निकट बहने वाली एक नदी।

सरल (वि.) 1. सीधा-सादा, 2. आसान, (तुल. सुखाळा)।

सरलता (स्त्री.) 1. आसानी, 2. सीधापन।

सरळ-सरळ (स्त्री.) 1. साँप के चलते समय उत्पन्न ध्वनि, 2. हलकी खुजलाहट, 3. हाथ-पैरों में उत्पन्न सनसनाहट या 'सरण'-'सरण'।

सरळी (स्त्री.) दे. रेल़।

सरलीन (वि.) 1. तल्लीन, 2. मस्त।

सरवण (पुं.) एक पितृ-भक्त बालक; (वि.) एक मात्र सहारा। **श्रवण** (हि.)

सरवर (पुं.) 1. तालाब, सरोवर, 2. प्रसिद्ध लोक-कथा का एक पात्र।

सरवर-नीर (पुं.) एक प्रसिद्ध लोक-कथा के दो पात्र, सरवर और नीर।

सरवरिया (पुं.) 1. एक जाति, सरयूपारी, 2. सरयू के पंडे जो गा-गाकर भिक्षा माँगते हैं, (दे. हर-गंगे)।

सरवा (पुं.) 1. सरकंडा, 2. एक नुकीला आयुध।

सरवाई[1] (स्त्री.) 1. अधिकता, 2. सरसता।

सरवाई[2] (स्त्री.) 1. सुखारी पौधा, 2. इस पौधे के बीज।

सरसंधान्नी (पुं.) 1. तीर चलाने में कुशल व्यक्ति, 2. अर्जुन। **शरसंधानी** (हि.)

सरसब्ज (वि.) हरा-भरा, लहलहाता हुआ।

सरसम (पुं.) 1. सरसों, 2. सरसों का साग।

सरसम-पात्ता (पुं.) सरसों के पत्तों का चारा।

सरस मलीद्दा (पुं.) चूरमा, हनुमान का प्रिय भोजन। **सरस मलीदा** (हि.)

सरसराट (पुं.) 1. 'सर'-'सर' की ध्वनि, 2. हलकी- हलकी खुजली, 3. दबी जबान से कही गई बात, कानाफूसी। **सरसराहट** (हि.)

सरसाई (स्त्री.) 1. बहुलता, अधिकता, 2. फैलाव।

सरसाणा (क्रि.) सरसब्ज होना। दे. सरसाई।

सरसाम (पुं.) सन्निपात।

सरसूँ (स्त्री.) 1. दे. सिरसम, 2. दे. सरसम।

सरसों (स्त्री.) दे. सिरसम।

सरस्वती (स्त्री.) 1. विद्या की देवी, 2. विद्या, 3. एक पवित्र नदी जो अब लुप्तप्राय है, 1. (दे. सुरस्ती), 2. (दे. साहब्बी); **~-पूजा** सरस्वती की पूजा का उत्सव जो वसंत पंचमी को होता है।

सरहद (स्त्री.) सीमा, दे. सीमसद्धा।

सरां (स्त्री.) दे. सरा।

सरा (स्त्री.) 1. यात्रियों के ठहरने या अस्थायी निवास का स्थान, 2. वह स्थान जहाँ किसी भी समय बेरोकटोक आया-जाया जा सके, 3. सार्वजनिक स्थान, 4. संसार। **सराय** (हि.)

सराईं (स्त्री.) प्लेटनुमा मिट्टी का पात्र विशेष; **~काढणा/देणा/लिकाड़णा** होली-दिवाली के दिन सराई में भोजन आदि रखकर चौराहे पर रखना। **सराई** (हि.)

सरात्ती (पुं.) विवाह के समय वर-पक्ष के यहाँ आए हुए अतिथि।

सराप (पुं.) शाप; (स्त्री) दे. सराब।

सराफ़ (पुं.) सोने-चाँदी का व्यापारी।

सराफ़ा (पुं.) वह बाज़ार जिसमें सोने-चाँदी का व्यापार होता है।

सराफ़ी (स्त्री.) 1. मुंडा या महाजनी लिपि, 2. चाँदी-सोने या रुपये के लेन-देन का बाजार।

सराब (स्त्री.) शराब, सुरा।

सराबोर (वि.) तरबतर, (दे. सड़ासोड़)।

सराब्बी (वि.) शराबी, शराब पीने वाला।

सरामीं (स्त्री.) (कौर.) दे. सराईं।

सराय (स्त्री.) दे. सरा।

सरारत (स्त्री.) दे. अळबाध।

सरावगी (पुं.) 1. जैनी, 2. ऋण पर रुपये देने वाला, सूदखोर।

सरासर (अव्य.) पूर्णतया।

सराहणा (क्रि. स.) बड़ाई करना, प्रशंसा करना। **सराहना** (हि.)

सराहना (क्रि. स.) दे. सराहणा।

सरिअल (स्त्री.) गूगा पीर की धर्मपत्नी (जनश्रुति के अनुसार गूगा पीर मृत्यु के बाद भी अपनी पत्नी से मिलता था किंतु जिस दिन सरिअल ने यह रहस्य अपनी सास को बताया तो वह अदृश्य हो गया)।

सरी (अव्य.) सही, जैसे-सुण तै सरी; (क्रि. अ.) 'सरणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; (वि.) तुल्य, जैसी, सरीखी।

सरीक्का (वि.) सदृश, तुल्य। **सरीखा** (हि.)

सरीखा (वि.) दे. सरीक्का।

सरीप (वि.) 1. सज्जन, 2. कुलीन। **शरीफ़** (हि.)

सरीर (पुं.) शरीर (तुल. देही); **~छूटणा** मरना; **~चालणा** स्वस्थ शरीर रहना, हाथ-पैर चलना। **शरीर** (हि.)

सरू (पुं.) आरंभ। **शुरू** (हि.)

सरूप (पुं.) 1. सौंदर्य, 2. चेहरा, 3. आकार, शक्ल; **~चढ़णा** सौंदर्य-वृद्धि होना। **स्वरूप** (हि.)

सरूपचंद (पुं.) (1890-1931) दिसौर खेड़ी (रोहतक) निवासी लोककवि।

सरूप्पी (स्त्री.) चाँद की एक कला। **सरूपी** (हि.)

सरेस (स्त्री.) एक लेसदार वस्तु विशेष जो वस्तुओं को जोड़ने या चिपकाने के काम आती है। **सरेश** (हि.)

सरोकार (पुं.) 1. वास्ता, 2. परस्पर व्यवहार या संबंध।

सरोज (पुं.) कमल।

सरोड़णा (क्रि.) दे. झरूड़णा।

सरोत्ता (पुं.) दे. सरौता।

सरोद (पुं.) बीन की तरह का एक प्रकार का बाजा।

सरोदा (पुं.) स्वर या आवाज सुनकर पशु-पक्षी के भाव को बताने की विद्या। शकुन-अपशकुन बताना।

सरोबती (स्त्री.) सरस्वती, (दे. साहब्बी)।

सरोवर (पुं.) 1. तालाब, 2. झील।

सरोही[1] (पुं.) भंगी जाति का एक गोत।

सरोही[2] (स्त्री.) तलवार। (?)

सरौता (पुं.) 1. सुपारी आदि काटने की लोहे की कैंची विशेष, 2. नींबू आदि का रस निकालने का औज़ार विशेष।

सर्ग (पुं.) पुस्तक का अध्याय।

सर्ज (पुं.) एक प्रकार का बढ़िया मोटा ऊनी कपड़ा।

सर्द (वि.) 1. ठंडा और शीतल, 2. नामर्द।

सर्दी (स्त्री.) जाड़ा।

सर्प (पुं.) साँप।

सर्पिणी (स्त्री.) साँपिन, (दे. साप्पण)।

सर्राटा (पुं.) 'सर'-'सर' की ध्वनि।

सर्वखाप (पुं.) 1. अनेक खापों का समूह, (दे. सरब खाप)।

सर्वत्र (अव्य.) हर जगह (तुल. सरबत्तर)।

सर्वदा (अव्य.) हमेशा, सदा।

सर्वनाम (पुं.) वह शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो।

सर्वनाश (पुं.) विध्वंस, (तुल. सत्यानास)।

सर्वव्यापक (पुं.) सबमें रहने वाला, भगवान।

सर्वश्रेष्ठ (वि.) सर्वोत्तम।

सर्वसाधारण (पुं.) जनता, सामान्य लोग।

सर्वस्व (पुं.) दे. सरबस।

सर्वहारा (पुं.) श्रमिक और मज़दूर वर्ग।

सलमशाही (स्त्री.) मोटी मजबूत जूती।

सलमा (पुं.) धातु का तार जो कशीदाकारी के काम आता है, (दे. सिलमाँ-सितारा)।

सला (स्त्री.) सलाह।

सलाई (स्त्री.) दे. सळाई।

सळाई (स्त्री.) 1. पतली शलाका, 2. स्वेटर बुनने की शलाका, 3. 'कानसळाई' (दे.) नामक कीड़ा; (वि.) पतला। **सलाई** (हि.)

सलाख (स्त्री.) शलाका, धातु की छड़।

सलाद (स्त्री.) 1. चौड़े पत्तों का एक प्रकार का पौधा विशेष, 2. मूली, टमाटर आदि की चाट का मिश्रण।

सलाब (स्त्री.) बाढ़। **सैलाब** (हि.)

सलाम (पुं.) दे. सिलाम।

सलामत (क्रि. वि.) कुशलपूर्वक; (वि.) 1. बरकरार, क़ायम, 2. जीवित और स्वस्थ।

सलामी (स्त्री.) दे. सिलाम्मीं।

सलाह (स्त्री.) 1. राय, मशविरा, 2. विचार।

सलाहकार (पुं.) दे. सलाहिया।

सलाहिया (पुं.) सलाहकार, सलाह-मशविरा देने वाला।

सळी (स्त्री.) 1. बाँस की लकड़ी आदि का छोटा अंश (जो अंगुली आदि में चुभ जाती है), 2. गेहूँ, जौ आदि के बीज के अंकुर, अंकुर (तुल. धाँस[1], चट, चर); **~चालणा** 1. सली चुभना, 2. बीज अंकुरित होना, 3. हलकी खुजली होना। **शलाका** (हि.)

सलीका (पुं.) दे. सलीक्खा।

सलीक्खा (पुं.) काम करने का ढंग। **सलीका** (हि.)

सलीता (पुं.) दे. सलीत्ता।

सलीत्ता (पुं.) 1. बैलगाड़ी में डाला जाने वाला एक बहुत मोटा कपड़ा, 2. बाँस की खपच्चियों का ढाँचा या मोटा टाट, (दे. खरड़)। **सलीता** (हि.)

सलीम्माँ (पुं.) 1. चलचित्र, 2. ड्रामा। **सिनेमा** (हि.)

सलू (पुं.) छाज गाँठने का सूत।

सलूक (पुं.) बरताव, आचरण।

सलूका (पुं.) महिलाओं की कुरती जिससे वक्ष का अधिक भाग ढक सके, कमरी।

सलूट (स्त्री.) दे. सल्लूट।

सलूणा (वि.) 1. नमकीन भोजन, 2. 'अलूणा' का विलोम; (स्त्री.) (दे. सिलोणो)। **सलूना** (हि.)

सलूमण (पुं.) दे. सिलोणो।

सलेभान (पुं.) भक्त पूरणमल के पिता, स्यालकोट के राजा।

सलोणो (स्त्री.) दे. सिलोणो।

सलोना (वि.) 1. सुहावना, आकर्षक, 2. (दे. सलूणा)।

सलोनी (वि.) दे. सिलोणी।

सलौख (पुं.) दे. सुलाँक्खा।

सल्लू (पुं.) चमड़े की पतली डोरी।

सल्लूट (स्त्री.) सैनिक द्वारा दी गई सलामी; **~मारणा** सैल्यूट करना। **सैल्यूट** (हि.)

सल्वंती (स्त्री.) दे. सीळ सती।

सवा (वि.) 1. मात्रा में चौथाई भाग अधिक, 2. तुलना में अधिक। **सवाया** (हि.)

सवाई (वि.) सवा गुणा; **~जोत** 1. अधिक कीर्ति, 2. अधिक प्रकाश।

सवामणी (स्त्री.) 50 सेर का बोझ।

सवाया (वि.) 1. सवा गुणा, 2. तुलना में अधिक ठहरने वाला।

सवार (पुं.) घुड़सवार।

सवारी (स्त्री.) 1. वाहन, 2. वाहन पर यात्रा करने वाला, 3. गमन हेतु किसी चीज़ पर चढ़ने की क्रिया, 4. जुलूस।

सवाल (पुं.) 1. प्रश्न, 2. समस्या।

सवाल-जवाब (पुं.) उत्तर-प्रत्युत्तर, वाद-विवाद, तक़रार।

सवाळी (स्त्री.) दे. सुहाळी।

सवेरा (पुं.) दे. सबेरा।

सवैया (पुं.) 1. सवा का पहाड़ा, 2. एक छंद।

सव्यसाची (पुं.) अर्जुन का एक नाम।

ससकणा (क्रि. स.) 1. तड़पना, 2. मृत्यु से पहले तड़पना, अंतिम साँस चलना, 2. हिचकी लेकर रोना। **सिसकना** (हि.)

ससकारणा (क्रि. स.) 1. सीटी बजा कर छोटे जीव-जंतु को टहलाना, 2. सीटी बजा कर उत्तेजित करना, 3. बच्चे को टट्टी बैठाना। **सिसकारना** (हि.)

ससत मोल्या (वि.) सस्ते मूल्य का।

ससतर (पुं.) औज़ार, हथियार। **शस्त्र** (हि.)

ससुर (पुं.) श्वसुर, (दे. सुसरा)।

ससुराल (स्त्री.) 1. दे. सुसराड़, 2. दे. सासरा।

ससुरी (स्त्री.) 1. दे. सुसरी, 2. दे. सास्सू।

ससोड़ना (क्रि. स.) (मेवा.) सहलाना।

सस्ता (वि.) 1. जो महँगा न हो, 2. जिसका भाव उतर गया हो, 3. हेय।

सहंसर (वि.) हजार। **सहस्त्र** (हि.)

सह[1] (वि.) 1. सौ की संख्या, 2. सैंकड़े या सौ के लिए प्रयुक्त शब्द, जैसे–दो सह, तीन सह आदि।

सह[2] (स्त्री.) 1. गुप्त रूप से भड़काने का भाव, 2. गुप्त संरक्षण देने का भाव, 3. शतरंज की एक चाल। **शह** (हि.)

सहकटा (वि.) सहनशील।

सहकारी (पुं.) 1. सहयोगी, साथी, 2. सहायक, मददगार।

सहगर (पुं.) सगर।

सहगान (पुं.) समूह गान।

सहज (वि.) सरल; **~मैं** 1. सरलता से, 2. बिना परिश्रम किए।

सहजधारी (पुं.) केश न धारण करने वाला सिख वर्ग।

सहजोबाई (स्त्री.) एक साध्वी कवयित्री (1683-1763 ई.)।

सहणा (क्रि. स.) 1. भार सहन कर लेना, 2. बात सहन कर लेना, 3. परिणाम भोगना; (क्रि. अ.) 'रहणा' के साथ जुड़ने वाला ध्वनिपूरक शब्द, जैसे–रहणा-सहणा; (वि.) सहनशील। **सहना** (हि.)

सहत (पुं.) मधु-मक्खियों द्वारा तैयार किया रस; (वि.) अधिक मीठा; **~तोड़णा** मधु-मक्खियों के छत्ते से शहद निकालना। **शहद** (हि.)

सहतूत (पुं.) 1. शहतूत के पौधे का फल, 2. शहतूत का पौधा। **शहतूत** (हि.)

सहदे (स्त्री.) 1. भड्डळी या भड्डरी का साथी जिनके नाम पर कृषि-संबंधी तथा अन्य सीख भरी सूक्तियाँ प्रचलित हैं, 2. महाभारत के एक पात्र जो ज्योतिष विद्या में भी पारंगत थे, 3. पाँच पांडवों में से एक। **सहदेव** (हि.)

सहन (पुं.) 1. सहने की क्रिया या भाव, 2. आँगन।

सहनक (स्त्री.) जादू-टोना, सराई में चावल, रोली आदि रखकर चौराहे पर रखा गया टोना; **~काढणा/देणा (माता के)** चौराहे पर मिट्टी के पात्र में चावल आदि रख कर टोटका करना।

सहनशील (वि.) सहिष्णु।

सहना (क्रि. स.) दे. सहणा।

सहपाठी (पुं.) एक साथ पढ़ने वाला।

सहभोज (पुं.) एक साथ बैठ कर किया गया समूह भोज।

सहम[1] (क्रि. वि.) व्यर्थ, जैसे–सहम मैं तंग होणा; **~बावळा होणा** पागलपन या अनजानेपन का अभिनय करना; **~सिर** बिना बात।

सहम[2] (पुं.) भय या डर का भाव।

सहमची (स्त्री.) मुख्य दरवाज़े के दोनों ओर बना ऊँचा दासा जो प्रवेश-द्वार की शोभा बढ़ाता है, दरवाज़े के बाहर बैठने के लिए बनी ऊँची चौकी या बैठक। **सहनची** (हि.)

सहमणा (क्रि. अ.) 1. भयभीत होना, भय के मारे आवाज़ न निकलना, भय से काँपना, 2. स्तब्ध होना; (वि.) वह जो सहम जाए। **सहमना** (हि.)

सहमत (वि.) समान सम्मति या एक मत का।

सहमना (क्रि. अ.) दे. सहमणा।

सहयोग (पुं.) 1. सहायता, मदद, 2. साथ, संग।

सहयोगी (पुं.) 1. सहायता देने वाला, 2. सहायक, साथी।

सहर (पुं.) नगर, पुर। **शहर** (हि.)

सहरा (पुं.) 1. मैदान, 2. उजाड़।

सहरी (वि.) 1. शहर का निवासी, 2. चालाक, 3. स्वार्थी, 4. फैशनबाज़, 5. बेप्रीत, 6. तड़क-भड़क वाली, 7.

शहर से संबंधित (वस्तु)।
शहरी (हि.)

सहरो (वि.) शहर की रहने वाली।

सहल (वि.) दे. सहळा।

सहळा (वि.) आसान, सुगम; (क्रि.स.) 'सहलाणा' क्रिया का प्रे. रूप।

सहलाणा (क्रि. स.) दे. पपोळणा।

सहलाना (क्रि. स.) दे. पपोळणा।

सहवास (पुं.) 1. साथ-साथ रहने का भाव, 2. मैथुन।

सहवासी (पुं.) मित्र, साथी।

सहसणा (क्रि.) हर्ष प्रकट करना। प्रसन्न होना।

सहसा (क्रि. वि.) अचानक। दे. चाणचक।

सहस्त्र (वि.) दे. सहंसर।

सहस्त्र बाहु (पुं.) कृतवीर्य का पुत्र जिसने कपिला गौ छीन कर परशुराम के पिता जमदग्नि का वध कर दिया था और जो प्रतिकारस्वरूप परशुराम के हाथों मारा गया, (दे. सहस्त्र वीर्य अर्जुन)।

सहस्त्र वीर्य अर्जुन (पुं.) एक पराक्रमी राजा (जनधारणा के अनुसार राखीगढ़ी (हाँसी के निकट) इनकी राजधानी थी, इन्होंने परशुराम के पिता जमदग्नि का वध किया था, परशुराम ने कुपित होकर इनका तथा इनके सहयोगी दुष्ट क्षत्रियों का विध्वंस किया था)।

सहाई (वि.) सहायक, मददगार, सहयोगी।

सहाणा[1] (क्रि. स.) 1. पशु गाभिन कराना, 2. मादा पशु को गाभिन कराना।

सहाणा[2] (क्रि. स.) सहाना, बिसाहना, खरीदना।

सहानुभूति (स्त्री.) हमदर्दी।

सहाब (पुं.) 1. बड़ा अधिकारी, 2. बड़ा आदमी; (वि.) अभिमानी।
साहब (हि.)

सहाब्बी (स्त्री.) दे. साहब्बी।

सहायक (वि.) 1. सहायता करने वाला, 2. अधीनस्थ कर्मचारी, 3. सहयोगी, साथी।

सहायता (स्त्री.) मदद, सहयोग।

सहारणा (क्रि. स.) 1. अपनी ओर खींचना–जेवड़ी नैं अपणे कान्नी सहार ले, 2. साँस को अंदर की ओर ले जाना, 3. घूँट भर कर पीना–सारा दूध तूँ हे सहार ग्या, 4. समा जाना– धरती सारे पानी नैं सहारगी, 5. सहारा देना या लगाना, 6. सहन करना, सहना, 7. बुहारना, सकेरना, 8. उबारना, 9. लाठी आदि तानना, 10. तान कर मारना।
सहारना (हि.)

सहारना (क्रि. स.) दे. सहारणा।

सहारा (पुं.) दे. आसरा।

सही (वि.) 1. ठीक, वास्तविक–सही-सही बात के थी, 2. सत्य, 3. शुद्ध, जैसे–गल्ती सही करणा; (स्त्री.) 1. हाँ में हाँ मिलाने का भाव, 2. हुँकारा।

सहीद (वि.) शहीद, बलिदानी, क़ुर्बानी देने वाला। **शहीद** (हि.)

सहीपणा (वि.) सीधापन।

सहीसलामत (वि.) 1. भला-चंगा, तंदरुस्त, 2. ठीक-ठाक।

सहूर (पुं.) दे. सुहूर।

सहूलियत (स्त्री.) आसानी, सुगमता।

सहेल्ला[1] (वि.) 1. सुगम, सरल, 2. 'दुहेल्ला' का विलोम।

सहेल्ला[2] (पुं.) 1. पुरुष मित्र (व्यंग्य में प्रयुक्त), 2. पति। **सहेला** (हि.)

सहेल्ली (स्त्री.) सखी (तुल. बाहेल्ली)।
सहेली (हि.)

सहोदर (पुं.) दे. मा जाया।

साँ (क्रि. अ.) 1. सर्वनाम, उ. पु., बहुव. (हम) के साथ वर्तमान काल में प्रयुक्त सहायक क्रिया–हम पड्ढण जाँ साँ (हम पढ़ने जा रहे हैं), 2. 'सूँ' का बहुव. रूप, (दे. सूँ[1]), 3. 'होणा' क्रिया का उ. पु., बहुव. का वर्तमान कालिक रूप। **हैं** (हि.)

साँई (पुं.) 1. ईश्वर, 2. डोम जाति द्वारा अपने यजमानों के लिए प्रयुक्त आदर सूचक शब्द, 3. स्वामी, 4. पति, 5. प्रेमी।

साँक (पुं.) दे. साँख; (वि.) दुर्बल।

साँकळ (स्त्री.) 1. जंजीर की शृंखला, 2. दरवाज़े की अर्गला, लोहे की कुंदेदार चटखनी; **~मैं बंद करणा** सुरक्षा से रखना। **साँकल** (हि.)

साँकळ दीप (पुं.) कहानी-किस्सों में वर्णित एक नगरी (संभवत: सिंहल- द्वीप)।

साँकळ नगरी (पुं.) सियालकोट नगर जो अब पाकिस्तान में है।

साँकली (स्त्री.) एक प्रकार का व्रत।

साँक्का (पुं.) 1. झंझट, झगड़ा, 2. रो-रो कर खड़ा किया गया बवाल, 3. रोने-धोने की क्रिया या भाव; **~करणा/तारणा** 1. रोते-धोते हुए ज़िद करना, रोना-धोना, 2. हठ करना; **~खड़्या करणा** व्यर्थ का विवाद खड़ा करना; **~माचणा** रोवाराट या रोना-धोना होना; **~रुपणा** 1. अनोखा या विचित्र कार्य होना, 2. झगड़ा बढ़ना; **~रोपणा** 1. रो-धो कर विवाद खड़ा करना, 2. जान को झंझट खड़ा करना।

साँक्खा (पुं.) चारपाई बुनते समय बनाया जाने वाला प्राय: नौ रस्सियों का समूह जो बाही (बाहू) के साथ-साथ बनता चलता है; **~पाड़णा** चारपाई बुनते समय प्राय: नौ रस्सियों को दबा कर नया 'साँक्खा' शुरू करना।

साँख (पुं.) 1. जलेबी का टुकड़ा, 2. छोटा टुकड़ा; (वि.) क्षीण काय।

साँख योग (पुं.) महर्षि कपिल का एक दर्शन। **सांख्य योग** (हि.)

सांख्य (पुं.) दे. साँख योग।

साँग[1] (स्त्री.) 1. एक प्रकार की बर्छी, तलवार, 2. लोहे की लंबी नुकीली कील–के तेरै न्यारी ए साँग लाग गी जो न्यूँ अरड़ावै सै?।

साँग[2] (पुं.) 1. लोक नाट्य जिसमें नाच, संगीत और कवित्व की धारा प्रवाहित होती है (नकल, भगत, नौटंकी, तमाशा, माँच, भवाई, भाँड पाथेर, जात्रा, विदेशिया, भंडौती, छाऊ, नृत्य, कीर्तनिया, यक्षगान आदि साँग के अन्य पर्यायवाची शब्द भारत के विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित हैं), 2. भेस, रूप, बनावटी रूप, 3. तमाशा; **~कथा- वस्तु** साँग की कथा-वस्तु ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक, सामाजिक, लौकिक-ऐतिहासिक, राजनैतिक, काल्पनिक या आधुनिक किसी कथा-किस्से पर आधारित होती है, इसका कथानक कुछ उपदेशात्मक तथा आदर्शोन्मुख होता है; **~करणा** 1. धोखा देने के लिए छल-कपट का रूप धारण करना, 2. साँग-मंडली के साथ नाच, संगीत और कवित्व के माध्यम से जनता का मनोरंजन करना; **~-क्षेत्र** हरियाणा, उत्तर प्रदेश के सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, शाहपुर, हाथरस, इटावा, एटा, कानपुर, लखनऊ, मैनपुरी, कन्नौज,

आगरा एवं मथुरा आदि साँग क्षेत्र हैं, मालवा तथा राजस्थान, कश्मीर, गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, बिहार, अवध आदि में इसे क्रमशः माँच, भाँडपाथेर, भवाई, तमाशा, जात्रा, विदेशिया, नकल आदि कहते हैं; **~-चौकी** साँग की चौकी (पहले मुख्य नर्तक एक चौकी पर खड़ा होकर नाचता था। इस चौकी को चार व्यक्ति अपने कंधों पर उठाए रहते थे, साजिंदे नीचे खड़े रहकर साज बजाते थे, आजकल एक-दो बड़े तख़्त या तीन-चार छोटे तख़्तों को घड़ौंची पर खड़ा करके लगभग चार-छः फुट ऊँचा मंच बना लिया जाता है, नर्तक और साँगी इस पर बैठते हैं); **~भरणा** 1. छल-कपटपूर्ण व्यवहार करना, 2. वेष बदलकर छलना, 3. व्यर्थ का आडंबर रचना, 4. साँग का तमाशा होना; **~मंडळी** साँग करने वाली मंडली, साँगी, (साँग-मंडली के पात्र अधिकतर पुरुष होते हैं जो जनाने वस्त्र पहनकर नाचते हैं, इनकी संख्या दस से पच्चीस तक होती है, बिना जाति, धर्म-भेद के सभी पात्र सभी प्रकार का अभिनय कर सकते हैं, स्त्रियों की साँग-मंडली में लड़कियाँ मरदाने वस्त्र पहनती हैं, गंगेरू की नटनियों की साँग-मंडली प्रसिद्ध रही है, करनाल जिले में स्थित इंद्री की गायिका बाली ने अपनी साँग-मंडली बनाई थी); **~रचणा** स्वाँग भरणा; **~विकास** वर्तमान साँग शैली का मूल स्रोत ऋग्वेद के यम-यमी संवाद, इंद्र की वृत्र को मारने की कथा, सामवेद के नृत्य और संगीत आदि हैं, लोक-रंजन के लिए नट-विद्या भारत में बहुत प्राचीन काल से है, हरियाणे में नक्कालों, बहुरूपियों, भाट-मंडलियों, भजन-मंडलियों की परम्परा भी पुरानी है, ब्याह-शादियों में स्त्रियाँ भी साँग भरती हैं, मौलाना गनीमत की मसनवी नौरंगे (रचना-काल 1865 ई.) में साँग-प्रथा का वर्णन है, वर्तमान साँग परंपरा 1875 ई. के आस-पास योगेश्वर बालकराम ने थानेश्वर में शुरू की मानी जाती है (स.सि. 15-10-11); **~होणा** 1. साँगी द्वारा साँग किया जाना, 2. गंभीर बात को साधारण भाव से लेना। **स्वाँग** (हि.)

साँगड़ा (पुं.) 1. 'जेळी' की नुकीली कील, 2. बरछी के समान एक आयुध।

साँगरी (स्त्री.) बेसन की सेवियाँ (कौर.)।

साँग रूपक (पुं.) दे. साँग।

साँगळ (स्त्री.) दे. साँकळ।

साँगळी (स्त्री.) भर्तृहरि की माता।

साँगवान (पुं.) 1.एक जाट गोत, 2. (दे. सागवान)।

साँगी (पुं.) दे. साँग्गी।

साँगीत (पुं.) दे. साँग[2]।

साँग्गड़ (पुं.) 1. जेळी (दे.) के आगे लगी लोहे की नुकीली कील, 2. नुकीली लकड़ी, 3. नुकीला आयुध विशेष।

साँग्गर (पुं.) 1. साँगर का पेड़, 2. साँगर के पेड़ की लंबी फली जो जेठ में पकती है (इसे खाने से हैजे का भय रहता है), (दे. झींझ), उक्ति–

चार चीज अस्तए, तोफ़ा बाँगर,
पील, पीच्चू, टींट और साँगर।

साँगर (हि.)

साँग्गी (पुं.) 1. साँग करने वाला, 2. नाचने वाला; (वि.) बहुरूपिया; **~-बेड़ा** साँग मंडली। **स्वाँगी** (हि.)

साँघणा (क्रि.) लहराना। उदा.–पींड्डी ऊपर बाल् साँघणे।

साँच-माँच (अव्य.) सचमुच; **~का** असली, शुद्ध। **सचमुच** (हि.)

साँचला (वि.) 1. सही मार्ग पर चलने वाला, 2. सत्य। **सच्चा** (हि.)

साँचा (पुं.) दे. साँच्चा[1]।

साँच्चा[1] (पुं.) 1. मादा पशु की मूत्रेंद्रिय, 2. वह उपकरण जिसमें कोई चीज ढाली जाती है, जैसे– ईंट, खिलौने आदि का साँचा।

साँच्चा[2] (वि.) दे. साच्चा।

साँच्चू (वि.) 1. सच-सच, 2. असली या वास्तविक रूप में; **~-साँच** सत्य-सत्य रूप में।

साँज्झा (वि.) दे. साज्झला।

साँज्झी (स्त्री.) 1. दे. साँझी।

साँझ (स्त्री.) संध्या, सायंकाल का समय; **~पड़्या/ हुयाँ** 1. सायंकाल होने पर, 2. देरी से; **~वाई** शाम सी।

साँझी (स्त्री.) संध्या की देवी जिसे आश्विन के प्रथम नवरात्र के दिन गोबर तथा मिट्टी के सितारों की सहायता से स्त्री के रूप में दीवार पर चीता जाता है तथा मिट्टी के रंगीन आभूषणों से सजाया जाता है, (संध्या या रात के समय लड़कियाँ इसकी स्तुति में गीत गाती हैं तथा भोग लगाकर पूजती हैं, इसके साथ इसकी दासी 'भंभो' को भी चीता जाता है), (दशहरे के तीन दिन पूर्व 'काणा खोड़ा' इसे लेने आता है, दशहरे की रात्रि को बंगाल की दुर्गा के समान इसे जल में विसर्जित कर दिया जाता है, गाँव के ग्वाले इसके विसर्जन में बाधा डालते हैं, क्योंकि उनकी धारणा है कि इसका निर्विघ्न पार उतरना अकाल और आपत्ति का कारण बनेगा, इसे रावण की साँझी भी कहा जाता है); **~गाणा** साँझी के गीत गाना; **~घालणा** दीवार पर साँझी चीतना; **~जिमाणा** रात्रि के समय साँझी को भोग लगाना; **~बिसारणा/बहाणा** दशहरे की रात साँझी का जल-विसर्जन करना।

साँझोड़ी (पुं.) सायंकाल गाये जाने वाले गीत।

साँट (स्त्री.) 1. चमड़े का बारीक और लंबा टुकड़ा जो साँटे पर बाँधा जाता है, 2. कमची, संटी, 3. कोड़ा, 4. कोड़े आदि का आघात।

साँटणा (क्रि. स.) 1. साँटों से पीटना, 2. (दे. साँठणा)।

साँटा (पुं.) दे. साँट्टा।

साँटी (स्त्री.) दे. साँट।

साँट्ठा (पुं.) कोड़ा, लगभग एक हाथ लंबा पतला डंडा जिसके एक छोर पर चमड़े की पतली रस्सियाँ बँधी होती हैं। **साँटा** (हि.)

साँट्टा (पुं.) कारज, काम; (क्रि. स.) 'साँठणा' क्रिया का भू. का., पुं. रूप; **~सँठणा** 1. जैसे-तैसे काम पूरा होना, 2. कार्य-सिद्धि होना।

साँट्ठी[1] (स्त्री.) कुछ चौड़े और मोटे पत्तों की एक घास; (क्रि. स.) 'साँठणा' क्रिया का भू. का., स्त्री लिं. रूप।

साँट्ठी[2] (पुं.) एक प्रकार का श्रेष्ठ चावल।

साँठ[1] (स्त्री.) तारों से बनी पैरों की चूड़ियाँ विशेष।

साँठ[2] (स्त्री.) 1. साँठने की क्रिया, 2. गठबंधन, संधि, 3. षड्यंत्र; (क्रि. स.) 'साँठणा' क्रिया का आदे. रूप।

साँठ-गाँठ (स्त्री.) 1. गुप्त और अनुचित संबंध, 2. षड्यंत्र, 3. परिचय बढ़ाने की क्रिया; **~करणा/ भेड़णा/ लाणा** उपाय निकालना; **~होणा** 1. मिली-भगत होना, 2. षड्यंत्र होना।

साँठणा (क्रि. स.) 1. चमड़े से सिलाई करना, 2. मित्रता बढ़ाना, 3. बल या घूस आदि देकर इकट्ठा करना। **साँठना** (हि.)

साँठना (क्रि. स.) दे. साँठणा।

साँड (वि.) 1. बलवान, 2. मस्त, 3. स्वच्छंद; (पुं.) बिना बधिया किया बैल, (दे. आँक्कल) (तुल. बिजार)।

साँडणी (वि.) 1. स्वच्छंद (महिला), 2. मस्त और हृष्ट-पुष्ट (स्त्री.); (स्त्री.) 1. ऊँटनी, 2. बलिष्ठ गाय।

साँडनी (स्त्री.) दे. साँडणी; (वि.) दे. साँडणी।

सांडळी (स्त्री.) दे. साँडणी।

साँडिया (पुं.) ऊँट का सवार।

साँडिल (पुं.) 1. ब्राह्मणों का एक गोत्र, 2. एक ऋषि। **शांडिल्य** (हि.)

साँड्डा (पुं.) गोह की जाति का एक जंगली जीव जिसका तेल ओषधि के काम आता है। **साँडा** (हि.)

साँथरी (स्त्री.) 1. घास-फूस की हलकी ढेरी–एक साँथरी घास खोद्या ए था के मींह आग्या, 2. कई 'गैरों' की ढेरी, (दे. गैरा)।

साँथळ (पुं.) जंघा; **~ठोकणा** जंघा पर ताल देना; **~पीटणा/बजाणा** 1. मृत्यु पर रोना-धोना, 2. अपशकुन करना। **साँथल** (हि.)

सांदणा (क्रि.) दे. सानणा।

साँद्दा (पुं.) दे. गूँद।

साँध (स्त्री.) दे. पाड़। **सेंध** (हि.)

साधण (स्त्री.) 1. दोहद इच्छा, 2. साध्वी।

साँधणा (क्रि. स.) 1. निशाना साँधना, शर-संधान करना, 2. मिलाना, 3. (दे. साधणा)। **साधना** (हि.)

साँधना (क्रि. स.) दे. साँधणा।

साँप (पुं.) सर्प; (वि.) 1. विषैला, 2. बदले की भावना रखने वाला।

साँपिन (स्त्री.) दे. साँप्पण।

साँपिया (वि.) साँप के रंग का; (पुं.) दे. सँपलोटिया।

साँप्पण (स्त्री.) मादा साँप; (वि.) बदले की भावना रखने वाली। **साँपिन/सर्पिणी** (हि.)

साँप्पळ (वि.) सर्प के समान बार-बार जीभ निकालने वाला पशु (विशेषतः भैंस)। **साँपल** (हि.)

साँभर (पुं.) मृग की एक जाति; (स्त्री.) (दे. साँम्भर झील); (क्रि. स.) 'साँभरणा' क्रिया का आदे. रूप।

साँभरणा (क्रि. स.) 1. झाड़ू लगाना, 2. बिखरी हुई वस्तु को इकट्ठा करना, 1. (दे. हूँसणा), 2. (दे. सँधवाणा)। **साँभरना** (हि.)

साँमळा (वि.) श्यामल या हलके काले रंग का। **साँवला/श्यामल** (हि.)

साँम्भर झील (स्त्री.) साँभर, राजस्थान की नमकीन झील जिसके जल से नमक बनता है।

साँम्मक (पुं.) 1. एक अन्न (चावल) जिसे व्रत खोलते समय खाया जाता है, 2. एक प्रकार की घास। **सावाँ** (हि.)

साँवळा (वि.) दे. साँमळा।

साँवळिया (वि.) 1. साँवले रंग का, 2. प्रेमी; (पुं.) श्रीकृष्ण।

साँस (पुं.) 1. श्वास, 2. प्राण, 3. वायु, 4. अवकाश, फुरसत, 5. दम फूलने का रोग; **~ऊप्पर-नीच्चै रहणा** हक्का-बक्का रहना; **~घालणा** पुनर्जीवित करना; **~घोटणा** साँस घोंट कर मारना, गला घोंटना; **~टूटणा** 1. कबड्डी के खेल के समय पाला निकलने से पूर्व साँस टूटना, 2. मरना; **~मारणा** अन्य की वस्तु पर ललचाना; **~रहत्याँ** जीते जी; **~होणा** 1. पूरी तरह दम न तोड़ना, 2. आयु का समय शेष होना, 3. श्वास रोग से पीड़ित होना।

साँसा (स्त्री.) दे. साँस्सा।

साँस्सा/साँस्सै (स्त्री.) 1. चिंता, 2. भय, 3. आशंका; **~पड़णा/लागणा/होणा** चिंताग्रस्त होना। **संशय** (हि.)

साँहमीं (क्रि. वि.) 1. सामने, 2. आँखों के सामने, 3. सामने, निकटवर्ती स्थान में, 4. सीध में, 5. विरोध या प्रतिवाद करने की स्थिति (तुल. सोंहीं); **~आणा** 1. गुप्त बात प्रकट होना, 2. किए का फल भोगना, 3. सामना करना, मुक़ाबले पर आना; **आहमीं-~** आमने-सामने; **~करणा** मुक़दमे आदि के समय प्रस्तुत करना; **~का** 1. सामने वाला, 2. प्रतिद्वंद्वी; **~बोलणा** सामना करना; **~होणा** प्रतिवाद करना। **सम्मुख** (हि.)

साँहसी (पुं.) सैंसी, एक अनुसूचित जाति, एक घुमंतु जाति। दे. काँजर।

सा[1] (अव्य.) 1. सदृश, समान, किसी वस्तु के समान या तुल्य, 2. एक मान या प्रमाण सूचक या शब्द, जैसे–माड़ा-सा, 3. हुए, जैसे–सरमात्ता सा बोल्या कोन्याँ नाड़ तळै नैं गो ली।

सा[2] (सर्व.) वह। उदा. सा मंजर तब बिलखी। (कूकड़ी मंजारी चउपई)

साइकिल (स्त्री.) दो पहियों का एक विशेष प्रकार का यंत्र, वाहन, द्विचक्रिका।

साइकिल-रिक्शा (स्त्री.) तीन पहियों का एक यात्री तथा भारवाहक यंत्र।

साइत (स्त्री.) 1. दे. स्यात[2], 2. दे. साह्या।

साई[1] (स्त्री.) पेशगी, सौदा पक्का करने के लिए दी गई राशि या वचन; **~देणा** सौदे की पेशगी देना।

साई[2] (स्त्री.) एक हरे रंग की मक्खी; **~बैठणा** साई की मक्खी बैठने से कीड़े पड़ना।

साईबंध (वि.) 1. पेशगी देकर तैयार करवाई गई (वस्तु), 2. खरी (वस्तु)।

साईस (पुं.) घोड़े की देखभाल करने वाला नौकर।

साक (स्त्री.) विवाह के कारण बने **संबंध**।

साका (पुं) 1. चरितकाव्य, 2. (दे. साँक्का)।

साकार (वि.) 1. जिसका कोई आकार या स्वरूप हो, 2. साक्षात्, 3. ईश्वर का साकार रूप, 4. सफल।

साक्का (पुं.) दे. साँक्का।

साक्की (पुं.) साकी, शराब पिलाने वाला।

साक्खा (स्त्री.) 1. वंशावली, 2. टहनी, 3. अंश, 4. ग्रंथ का उप-विभाग, 5. एक छंद, 6. छंद का एक अंश, (दे. मैड़ा); **~कहणा** विवाह के समय कुल-पुरोहित द्वारा शाखा या वंशावली का वर्णन करना; **~(-खे) जोग्गी** सारंगी पर प्रसिद्ध लोक-कथा गाने वाले जोगी। **शाखा** (हि.)

साक्खी[1] (स्त्री.) 1. भक्ति-पद, संतों द्वारा रचे गए पद, 2. साक्षी, गवाही; (पुं.) गवाह। **साखी** (हि.)

साक्षर (वि.) पढ़ा-लिखा।

साक्षात् (पुं.) मुलाक़ात; (वि.) 1. साकार, मूर्तिमान, 2. सामने, प्रत्यक्ष।

साक्षात्कार (पुं.) 1. मुलाक़ात, भेंट, 2. नौकरी में लेने से पूर्व किसी व्यक्ति से की जाने वाली आमने-सामने की बातचीत या मौखिक परीक्षा, इंटरव्यू।

साक्षी (स्त्री.) गवाही; (पुं.) गवाह, (दे. घवा)।

साख[1] (स्त्री.) 1. टहनी, 2. विश्वास, भरोसा–बिपारी नैं अपणी साख नहीं खोणी चाहिए, 3. कार्यालय आदि का उप-विभाग, ब्रांच, 4. वंश-परंपरा, 5. वंशावली। **शाखा** (हि.)

साख[2] (स्त्री.) फसल, दे. साख[1]।

साखाचार (पुं.) विवाह के समय कुलपुरोहित द्वारा गोत्रावली तथा वंशावली का वर्णन; **~करणा** गोत्र तथा वंशावली का वर्णन करना। **शाखोच्चार** (हि.)

साखी[1] (स्त्री.) संतों द्वारा रचे गए भक्तिपद, (दे. साक्खी)।

साखी[2] (स्त्री.) साख, दे. साक्खी[1]।

साग (पुं.) 1. हरे पत्तों की सब्ज़ी, 2. सब्ज़ी, तरकारी, 3. चने के पौधे की कच्ची पत्तियाँ; **~तोड़णा** साग बनाने के लिए चने की पत्तियाँ चूँटना; **~-पात** 1. हरा चारा, 2. तरकारी, सब्ज़ी; **~बणाणा** आलन आदि डाल कर हरी पत्तियों का साग बनाना; **~-भाज्जी** 1. पत्तों की सब्जी, 2. तरकारी, 3. फल आदि, 4. फल-मिठाई।

सागर (पुं.) दे. साग्गर।

सागवान (पुं.) 1. जाटों का एक गोत, 2. भिवानी के निकट महाभारतकालीन ध्वस्त दुर्ग जिस पर सागवान गाँव बसा है, 3. इमारती लकड़ी का एक प्रसिद्ध वृक्ष, (दे. साँगवान)।

सागूदाना (पुं.) दे. साब्बूदाणा।

साग्गण (वि.) हूबहू वही।

साग्गर (पुं.) 1. सागर, समुद्र, 2. टोंटीदार छोटा कलश। **सागर** (हि.)

साग्गी (वि.) वही, वही (वस्तु)।

साच (वि.) 1. सत्य, 2. असली, वास्तविक; (स्त्री.) सच्ची बात।

साच्चा (वि.) 1. सत्य बोलने वाला, 2. असली, शुद्ध, जैसे–साच्चा मोत्ती, (दे. सच्चा); **~(-ची)-साच** सच- सच, सत्यभावेन, एकमात्र सत्य; **~~बताणा** सत्य रूपे से बताना। **सच्चा** (हि.)

साजंदा (पुं.) साज बजाने वाला। **साजिंदा** (हि.)

साज (पुं.) 1. सजावट का सामान, 2. बाजा, 3. उपकरण, साधन।

साजणा (क्रि. अ.) शोभित होना–जिसका काम उस्सै नैं साज्जै।

साजन (पुं.) दे. साज्जन।

साज-सामान (पुं.) 1. उपकरण, सामग्री, 2. ठाठ-बाट।

साज़िश (स्त्री.) षड्यंत्र।

साजी (वि.) सजी हुई, उदा. देह साजी भली।

साज्जन (पुं.) 1. पति, 2. प्रेमी। **साजन** (हि.)

साज्झा (पुं.) 1. हिस्सेदारी, भागीदारी, 2. हक़;, 3. परिवार में संयुक्त रूप से रहने का भाव; **~ऊठणा** हक़ समाप्त होना; **~होणा** 1. हक़ होना, 2. भागीदारी होना। **साझा** (हि.)

साज्झी (पुं.) खेती या व्यापार आदि में भागीदार; (वि.) साझे की; **~रळणा** 1. परिवार में सम्मिलित होना, 2. काम-काज में साझा करना। **साझी** (हि.)

साझण (स्त्री.) हिस्सेदार। दे. साज्झी।

साझला (वि.) 1. साझे का, 2. सम्मिलित, सार्वजनिक।

साझा (पुं.) दे. साज्झा।

साझा सीर (पुं.) खेती आदि का मिला जुला कार्य।

साझेदार (पुं.) हिस्सेदार, साझी।

साटन (स्त्री.) दे. साट्ठण।

साटी (पुं.) दे. सांट्ठी[2]।

साट्ठण (स्त्री.) एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा। **साटिन** (हि.)

साट्ठा (वि.) साठा, साठ वर्ष की आयु का; (पुं.) कार्य; **~सठणा** जैसे-तैसे कार्य संपन्न होना।

साठा (वि.) दे. साट्ठा।

साड़ (पुं.) 1. दे. साढ, 2. कोठा, आमाशय, 3. (दे. साडा)।

साड़सात्ती (स्त्री.) दे. साढसात्ती।

साड़ा (वि.) 1. सड़ाया हुआ, 2. सड़ा हुआ; (पुं.) सड़ा हुआ पदार्थ **~सिड़ाण** किसी वस्तु को सड़ाना।

साड़ी (स्त्री.) जनानी धोती; (क्रि. स.) 'सड़ाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

साड्ढा (वि.) 1. आधा अधिक, 2. ड्योढ़ा, 3. तुलना में अधकि (बलवान), जैसे–साड्ढा बैठणा। **साढ़ा** (हि.)

साड्ढी (स्त्री.) आषाढ़ी फ़सल; (वि.) तुलना में अधिक।

साड्ढू[1] (पुं.) साली का पति; **~का नात्ता** बेतुका नाता।

साड्ढू[2] (स्त्री.) दे. साड्ढी।

साड्ढे (वि.) साढ़े; **~तिहेंतर** साढ़े तिहत्तर की संख्या, चिट्ठी पर लिखा जाने वाला 7311 का अंक जो पत्र को अन्य द्वारा न पढ़ने की शपथ है,
सत्ता सत ना छोडिये, तीन जुगाँ की बात!
आद्धा तै मिलणा हुया! आग्गै हर कै हाथ !!!। **साढ़े** (हि.)

साढ (पुं.) विक्रम संवत् का चौथा महीना, आषाढ़ का महीना; (वि.) 1. सार्द्ध, 2. आधिक्य; **~सोहळी** साढ़े सोलह अंगुल लंबी (जूतियाँ)। **आषाढ़** (हि.)

साढज (वि.) आषाढ़ मास का।

साढ़ा (वि.) दे. साड्ढा।

साढ़े साती (स्त्री.) शनि-ग्रह की साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात महीने या साढ़े सात दिन की गति (जो अशुभ मानी जाती है)।

साण (पुं.) 1. सान, शाण का पत्थर, 2. कसौटी; **~पै चढाणा** 1. पीड़ा देना, 2. छुरी आदि पर धार लगाना। **शाण** (हि.)

सात (वि.) 1. सात की संख्या, 2. एक विशिष्ट महत्त्व की संख्या; **~-छिणाळ** अत्यंत भ्रष्ट स्त्री; **~समंदर पार** 1. समुद्र पार, बहुत दूरी का स्थान, 2. इंग्लैंड; **~सुहाग्गण** सात सुहागिन, विशेष उत्सवों में भाग लेने वाली सात सुहागिनें।

सातमाँ (वि.) सातवें क्रम पर। **सातवाँ** (हि.)

सातिर (पुं.) पक्का या मंजा खिलाड़ी।

सात्तम (वि.) दे. सात्तैं।

सात्ताँ-रोहण (स्त्री.) 1. सात भेड़ियों का समूह, 2. माँ जाई सात बहनें।

सात्तूँ-टूम (स्त्री.) पैरों की सातों टूमों का समूह (कड़ी, छैलकड़े, नेवरी, आत्ती, पात्ती, तात्ती, 'घूँघरू आळी' आदि)।

सात्तेक (वि.) लगभग सात।

सात्तैं/सात्तैंह (स्त्री.) सप्तमी तिथि। **सप्तमी** (हि.)

सात्थण (स्त्री.) साथिन, सहेली।

सात्थी (पुं.) 1. मित्र, 2. समान आयु का, जोड़ीदार, 3. हमदर्द। **साथी** (हि.)

साथ (पुं.) 1. साथी, संगी, 2. संग; (क्रि. वि.) समीप, निकट; **~करणा** 1. पीछा करना, 2. किसी के साथ भेजना, बिना विवाह के पत्नी के रूप में देना; **~का** 1. समान आयु का, 2. मुक़ाबले का, 3. साथी, यात्रां का साथी।

साथिया (पुं) स्वस्तिक चिह्न जो मंगलकारक माना जाता है, (एक धारणा के अनुसार सूर्य-पिंड का गठन स्वस्तिक आकार का है); **~काढणा /चीतणा** स्वस्तिक का चिह्न बनाना। **सथिया** (हि.)

साथी (पुं.) दे. सात्थी।

साथीड़ा (पुं.) दे. सात्थी।

सादगी (स्त्री.) 1. सरलता, 2. सीधापन, निष्कपटता।

सादा (वि.) दे. साद्दा।

साद्दा (वि.) 1. भोला-भाला, 2. मूर्ख, 3. बिना दिखावट का; **~-भोळा** सादा और भोला, सज्जन। **सादा** (हि.)

साद्धू (पुं.) दे. मोड्डा; (वि.) सज्जन। **साधु** (हि.)

साध[1] (स्त्री.) 1. साधना, 2. इच्छा, घनीभूत इच्छा।

साध[2] (पुं.) 1. एक जाति, 2. साधु 3. गृहस्थी साधु, 4. एक संप्रदाय, (इसके मानने वाले मद्य-पान नहीं करते); (क्रि. स.) 'साधणा' क्रिया का आदे. रूप।

साधक (पुं.) 1. साधना करने वाला, 2. तपस्वी।

साधणा (क्रि. स.) 1. काम साधना, काम निकालना, 2. निशाना साधना, 3. पक्का करना या ठहराना, 4. सिद्ध करना या शोधना–दाद्दा छोहरी का साह्या साधि ये, 5. ठहराना या पक्का करना–1. छोहरे नैं नाड़ साध ली, 2. सिर के बोझ नैं साधिये, 3. (पशु को) कौशल सिखाना, 7. सहन करना; (स्त्री.) तप, तपस्या। **साधना** (हि.)

साधणी (स्त्री.) 1. महिला जो साधु बन गई हो, 2. गृहस्थी साधु की पत्नी, 3. जोगिन, 4. काषाय वस्त्र धारण करने वाली। **साध्वी** (हि.)

साधन (पुं.) 1. सामान, सामग्री, 2. उपाय, युक्ति, 3. कारण, हेतु।

साधना (क्रि. स.) दे. साधणा; (स्त्री.) दे. साध[1]।

साधारण (वि.) सामान्य।

साधु (पुं.) 1. दे. साध[2], 2. दे. साद्धू।

सानंद (क्रि. वि.) 1. आनंद सहित, 2. कुशलपूर्वक।

सान (पुं.) दे. साण; (स्त्री.) शान।

सानणा (क्रि. स.) 1. आटा गूँधना, 2. लथपथ करना, लिप्त करना। **सानना** (हि.)

सानना (क्रि. स.) दे. सानणा।

साना (पुं.) प्यार (?) ना मौसी का प्यार सही, ना साली का साना।

सानी (वि.) दे. सान्नी[2]; (स्त्री.) दे. सान्नी[1]।

सान्नी[1] (स्त्री.) 1. गंडासे से काटा हुआ चारा (प्रायः सूखा), 2. पशु का चारा; **~काटणा** हाथ या पेंच के गंडासे से कुट्टी काटना; **~भेवण का बखत**

चार-पाँच बजे (प्रातः व सायं) के बीच का समय। **सानी** (हि.)

सान्नी[2] (वि.) समान या बराबरी का। **सानी** (हि.)

साप (पुं.) शाप, श्राप।

साप्ताहिक (वि.) सप्ताह का, हफ़्तावार; (पुं.) सप्ताह में एक बार छपने वाली पत्रिका।

साप्पड़णा (क्रि. अ.) 1. समाप्त होना, 2. संपूर्ण होना; (क्रि. स.) दे. सपड़ना।

साप्पा[1] (पुं.) सफलता; **~लागणा** सफलता मिलना।

साप्पा[2] (पुं.) रुदन।

साप्फा (पुं.) पगड़ी 1. (दे. खंडवा), 2. (दे. पागड़ी); **~तारणा** सम्मान उतारना; **~बाँधणा** सम्मान बढ़ाना। **साफ़ा** (हि.)

साप्फी (स्त्री.) 1. सुलफ़ी या चिलम के साथ लगाया जाने वाला वस्त्र, 2. छोटी सुलफ़ी, 3. उप-वस्त्र, छानना, छलना। **साफ़ी** (हि.)

साफ़ (वि.) 1. स्वच्छ, 2. स्पष्ट, 3. दाग़-रहित, 4. कतई, बिल्कुल, 5. श्वेत, 6. निर्दोष, 7. निष्कपट, 8. समतल, 9. कोरा, 10. झंझट-रहित। **साफ़** (हि.)

साफ़ा (पुं.) दे. साप्फा।

साफी (स्त्री.) दे. साप्फी।

साबुत (वि.) दे. साब्बत।

साबता (वि.) दे. साब्बत।

साबुन (पुं.) दे. साब्बण।

साब्बण (पुं.) 1. शरीर या वस्त्र को साफ़ करने के लिए तेल, सोडा आदि से बनी पेड़ी विशेष, 2. (दे. छाब्बळ)। **साबुन** (हि.)

साब्बत (वि.) 1. अखंडित या आवभिाजित, संपूर्ण, 2. बिना दला हुआ या बिना पिसा हुआ, 3. सर्वत्र। **साबुत** (हि.)

साब्बर (पुं) साँभर जाति का हिरन (जिसका सींग ओषधि के काम आता है)। **शंबर** (हि.)

साब्बी (स्त्री.) सरस्वती नदी, (दे. साहब्बी)।

साब्बूदाणा (पुं.) साबुदाना, सागूदाना।

साब्भा (पुं.) दे. साहब्बा।

सामकिया (पुं.) 1. एक प्रकार की घास, 2. एक प्रकार का चावल, (दे. साँम्मक)।

सामग्री (स्त्री.) 1. आवश्यक सामान, वस्तु, 2. साधन।

सामठा[1] (वि.) सामर्थ्यवान, तगड़ा।

सामठा[2] (वि.) सुंदर। दे. सुथरा।

सामड़ (स्त्री.) 1. साँव, एक घास विशेष, 2. (दे. साम्मड़)।

सामणू (स्त्री.) सावनी फ़सल; (वि.) सावन मास से संबंधित।

सामना (पुं.) 1. भेंट, मुलाक़ात, 2. किसी के समक्ष होने की क्रिया या भाव, 3. मुठभेड़, भिड़ंत।

सामने (क्रि. वि.) दे. साँहमीं।

सामरथ (पुं.) जवान; (स्त्री.) 1. योग्यता, 2. हिम्मत; (वि.) समर्थ। **सामर्थ्य** (हि.)

सामर्थ्य (पुं.) 1. योग्यता, 2. हिम्मत (तुल. सामरथ)।

सामलात (स्त्री.) शामलात भूमि। गांव (देह) की वह भूमि जिस पर सामूहिक रूप से सभी का अधिकार हो।

सामवेद (पुं.) दे. स्यामबेद।

सामवेदी (पुं.) दे. स्यामबेद्दी।

सामान (पुं.) असबाब, वस्तु: सामग्री (तुल. समान)।

सामान्य (वि.) साधारण।

सामोंड्ढै (क्रि. वि.) सम्मुख; मुख के सामने, (दे. साँहमीं)।

साम्मक (पुं.) दे. साँम्मक।

साम्मड़ (स्त्री.) 1. चामुंडा देवी, 2. चामुंडा देवी की मढ़ी।

साम्मण (पुं.) 1. श्रावण, विक्रमी संवत् का पाँचवाँ महीना, 2. वर्षा-काल; **~बरसणा** श्रावण में वर्षा होना; **~-भादवा** 1. श्रावण तथा भादों के महीने, 2. वर्षा-काल। **सावन** (हि.)

साम्माँ (पुं) 1. सामान, सामग्री, 2. व्यवस्था। **सामाँ** (हि.)

साम्मिल (वि.) सम्मिलित। **शामिल** (हि.)

साम्मीं (वि.) समता का, तुल्यता का–किसकै ऊप्पर रंग गेरूँ कोई नेग नहीं साम्मीं (लो. गी.); (स्त्री.) आसामी।

साम्राज्य (पुं.) 1. वह राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हों, सल्तनत, 2. आधिपत्य, पूर्ण अधिकार।

साम्हीं (क्रि. वि.) दे. साँहमीं।

सायंकाल (पुं.) दे. साँझ।

सायत (स्त्री.) 1. दे. स्यात्[2], 2. दे. साह्या।

साया (पुं.) 1. दे. छाँ, 2. छाँह, 3. (दे. छाह्ळी)।

सायाबान (पुं.) छज्जा, उदा. एक वृक्ष नाना पक्षी रहते सायाबान करके। चूँदेसी परभात उडगे, रात भर गुजरान करके। (लचं)

सायुजपुर (पुं.) सायुज्य लोक।

सारंग दे (स्त्री.) सारंगा देवी जिसका वर्णन कथा-किस्सों में मिलता है।

सारंगिया (वि.) सारंगी बजाने वाला, (दे. जोग्गी)।

सारंगी (स्त्री.) तार वाला एक बाजा।

सार (पुं.) 1. महत्त्व–तूँ इस बात की के सार जाणैं, 2. आँख का अंजन–के सार सारण लाग र्‌ही सै?, 3. पक्का लोहा, जैसे–सार की सूईं, 4. तत्त्व, गूदा, रस, 5. जूआ खेलने का पाँसा, 6. चिनाई करते समय रखी जाने वाली ईंटों की एक परत, 7. सिर का आभूषण; (स्त्री.) 1. तलवार–के तेरै सार लाग गी?, 2. सेवा, सुश्रूषा–भैंस की चोक्खी सार कर दी, 3. दूध–भैंस कै नीच्चै सार नाँ रही, 4. भरोसा; (क्रि. स.) 'सारणा' क्रिया का आदे. रूप; **~आणा** पशु का ठीक-ठीक दूध देते रहना; **~करणा** सेवा करना; **~जाणणा** महत्त्व समझना; **~सारणा** कार्य-सिद्धि करना; **~होणा** सम्मान मिलना।

सारके (वि.) बराबरी के। समान।

सारणा (क्रि. स.) 1. आँखों में काजल डालना, 2. पूरा पाड़ना, पूरा करना, 3. अल्प मात्रा की वस्तु से काम निकालना, 4. आँखों की मार मारना, मोहित करना, 5. कूएँ आदि से रस्सी खींचना, 6. चित्रित करना, 7. 'पासणा' का विलोम। **सारना** (हि.)

सारणी (वि.) 1. मितव्ययी (स्त्री.), 2. कंजूस; (स्त्री.) तालिका, सारिणी।

सारथी (पुं.) रथ आदि वाहन चलाने वाला (तुल. गडवाळा)।

सारदा (स्त्री.) विद्या की एक देवी। **शारदा** (हि.)

सारना (क्रि. स.) दे. सारणा।

सार-पास्सा (पुं.) 1. चौसर खेलने का दाँव, 2. (दे. सरकपास्सा); **~खेल्हणा** चौसर का खेल खेलना।
सार-पाँसा (हि.)

सारबन (पुं.) दक्षिण दिल्ली में स्थित वह गाँव जहाँ से प्राप्त शिलालेख में हरियाणे का नाम मिला है।

सार-बोरला (पुं.) सिर और माथे का आभूषण विशेष।

सार-लोहा (पुं.) एक प्रकार का लोहा।

सार संभाळ (स्त्री.) देखभाल।

सारस (स्त्री.) एक जलचर (जो अधिकतर जोड़े के साथ रहता है); **~बरगी जोट** सुंदर जोड़ी (पति-पत्नी की)।

सारसवत (पुं.) 1. दिल्ली के उत्तर-पश्चिम का वह भाग जो सरस्वती नदी के तट पर है, 2. सारस्वत ब्राह्मण, पंच गौड़ों में से एक वर्ग। **सारस्वत** (हि.)

सारस्वत (पुं.) दे. सारसवत।

साराँ (स्त्री.) 1. सेवा-सुश्रूषा, 2. पशु द्वारा भली प्रकार दूध देने का भाव, 3. महत्त्व; (वि.) कंजूस (महिला,) मितव्ययी; **~आणा** पशु द्वारा उचित मात्रा में दूध देते रहना; **~सारणा** 1. आँखों-आँखों में बात करना, 2. मोहित करना।

सारांश (पुं.) सार, संक्षेप।

सारा (वि.) समस्त, संपूर्ण; **~(-रे) का सारा** समग्र।

सारू (स्त्री.) काम-चलाऊ मात्रा, जैसे-घरसारू; (वि.) कम खर्च करने वाली, (दे. साराँ)।

सारेंह् (स्त्री.) 1. सेवा, 2. महत्त्व।

सारो (वि.) 1. मितव्ययी, 2. सार की बनी, 3. समग्र।

साल[1] (पुं.) वर्ष, बरस।

साल[2] (पुं.) 1. छिद्र, 2. चारपाई के पावे का छिद्र; (क्रि. स.) 'साळणा' क्रिया का आदे. रूप।

साल[3] (पुं.) ऊनी ओढ़नी विशेष।
शाल (हि.)

साल[4] (पुं.) शृंगाल। सियार दे. साळ।

साळ[1] (स्त्री.) 1. घर का बहु-उद्देशीय मुख्य कमरा, 2. पाठशाला।

साळ[2] (पुं.) साल वृक्ष (जिसकी लकड़ी मज़बूत होती है)।

सालन (पुं.) दे. साल्लण।

सालणा (क्रि. स.) दे. साळणा।

साळणा (क्रि. स.) 1. छिद्र करना, चारपाई के पावे में छिद्र करना, 2. पीड़ा पहुँचाना।
सालना (हि.)

सालभान (पुं.) एक पराक्रमी राजा जिसके नाम पर अनेक कहानी-किस्से प्रचलित हैं (संभवतः शक संवत् का चलाने वाला)। **शालिवाहन** (हि.)

साला (पुं.) दे. साळा।

साळा (पुं.) 1. पत्नी का भाई, 2. पुरुष जाति के लिए प्रयुक्त एक निंदापरक शब्द; **~-सपटा** साला, उक्ति–
गंडे तैं गंडीरी मीट्ठी, गुड़ तैं मीट्ठा राळा!
भाई तैं भतीज्जा प्यारा, सब तैं प्यारा साळा!। **साला** (हि.)

सालाना (वि.) वार्षिक।

सालाहेली (स्त्री.) सलहज।

सालिम (वि.) दे. साल्लिम।

सालू (पुं.) दे. सोपळी।

सालूत (पुं.) दे. साळा।

सालेह (स्त्री.) सलहज।

साल्लण (पुं.) 1. साग-सब्जी में मिलाया जाने वाला मसाला, (दे. आल्लण), 2. साग। **सालन** (हि.)

साल्लस (पुं.) निष्पक्ष, मध्यस्थ।

साल्लिगराम (पुं.) 1. बालकृष्ण, 2. साला, 3. विष्णु की एक प्रकार की काले पत्थर की मूर्ति। **शाला ग्राम** (हि.)

साल्लिम (वि.) पूर्ण, संपूर्ण, पूरा। **सालिम** (हि.)

साल्हड़ा (पुं.) काटी हुई गेहूँ की फ़सल का ढेर।

साळ्है (स्त्री.) साले की पत्नी, सलहज।

सावणू (स्त्री.) दे. सामणू।

सावतरी (स्त्री.) एक पतिव्रता नारी; (वि.) पतिव्रता। **सावित्री** (हि.)

सावधान (वि.) 1. सचेत, 2. सतर्क।

सावधानी (स्त्री.) सतर्कता, होशियारी।

सावन (पुं.) दे. साम्मण।

सावनी (स्त्री.) दे. सामणू।

सावा (पुं.) दे. साहा।

सावित्री (स्त्री.) दे. सावतरी।

साष्टांग (पुं.) आठों अंगों सहित प्रणाम करने की क्रिया (मस्तक, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन और मन ये आठ अंग हैं)।

सास[1] (स्त्री.) दे. सास्सू।

सास[2] (पुं.) भेड़ का कुछ बड़ा बच्चा। दे. उरणिया।

सासतर (पुं.) धार्मिक ग्रंथ। **शास्त्र** (हि.)

सासतरी (पुं.) 1. शास्त्र का ज्ञाता, 2. संस्कृत परीक्षा की एक उपाधि। **शास्त्री** (हि.)

सासरा (पुं.) 1. श्वसुर का घर, 2. लड़की की ससुराल, (दे. सुसराड़)। **ससुराल** (हि.)

सासा (स्त्री.) संदेह, संशय, (दे. साँस्सा)।

सास्सड़ (स्त्री.) दे. सास्सू।

सास्सन (पुं.) 1. शासन, 2. उप-गोत्र।

सास्सू (स्त्री.) पति या पत्नी की माता। **सास** (हि.)

साह[1] (पुं.) 1. बड़ा आदमी, शाह–देक्खा ए नाँ इसा साह, 2. सत्यवादी।

साह[2] (पुं.) ग्राहक; (क्रि. स.) 'साहणा' क्रिया का प्रे. रूप।

साहणा[1] (क्रि. स.) बिसाहना, खरीदना।

साहणा[2] (क्रि. स.) पशु का गाभिन होना; (क्रि. स.) 1. पशु को गाभिन करना, 2. (दे. बूहणा)।

साहब (पुं.) दे. सहाब।

साहबजादा (पुं.) 1. भले आदमी का लड़का, 2. पुत्र।

साहब्बा (पुं.) भूतों की जनेत (जो प्रकाशपुंज के समान चलती मानी जाती है)।

साहब्बी (स्त्री.) सरस्वती नदी, साहबी नदी जो अलवर की ओर से बहती हुई कोट, जहाँगीरपुर के डहर में से होकर नजफ़गढ़ झील में गिरती है, यह बरसाती नदी है, उक्ति–

अलवर बाँधी नाँ रहूँ, नाँ रिवाड़ी जाँ।

कोट तळे कै लीकडूँ, साहब्बी मेरा नाँ।।

साहमी (क्रि. वि.) सम्मुख। सामने। दे. स्याहमी।

साहरै (अव्य.) साथ। पास। उदा. तेरै साहरै।

साहस (पुं.) हिम्मत।

साहसी (वि.) हिम्मती, दिलेर।

साह-सोट्टी (स्त्री.) राजा द्वारा धारण किया जाने वाला दंड (तुल. राजकोरड़ा)।

साहल्णा (क्रि. स.) संकल्प करना।

साहा (पुं.) दे. साह्या।

साहित्य (पुं.) 1. गद्य और पद्य की उच्च कोटि की रचनाएँ, 2. काव्यशास्त्र।

साहित्यकार (पुं.) वह जो साहित्य की रचना करे, रचनाकार।

साहुल (पुं.) राजगीरों का वह लट्टूनुमा लोहे का यंत्र जिसे रस्सी में बाँधकर दीवार की सीध साधी जाती है।

साहू (स्त्री.) अहोई; (पुं.) 1. अहोई के बच्चे, 2. व्यापारी, 3. ख़रीददार, 4. धनी, 5. साधु।

साहूकार (पुं.) बड़ा महाजन, धनी।

साहूकारा (पुं.) रुपये का लेन-देन, महाजनी।

साहूकारी (स्त्री.) 1. महाजनी, 2. साहूकारपने का भाव।

साह्या (पुं.) 1. विवाह के लिए निश्चित लग्न या मुहूर्त, 2. शुभ लग्न; (क्रि.स.) 'साहणा' क्रिया का भू. का., रूप।

सिंगरणा (क्रि. अ.) बनाव-सिंगार करना। **सिंगरना** (हि.)

सिंगर सेटणा (क्रि.) दे. सिंगरणा।

सिंगल[1] (पुं.) अग्रवाल वैश्यों का गोत्र, इनका संबंध शांडिल्य (शैंगल) मुनि, साम वेद, कौथमी शाखा, गोभिल सूत्र और मांकील प्रवर से है।

सिंगल[2] (पुं.) 1. रेल का सिगनल, 2. संकेत; **~देणा** संकेत देना। **सिगनल** (हि.)

सिंगार (पुं.) सजने-सँवरने का भाव। **शृंगार** (हि.)

सिंगारणा (क्रि. स.) 1. सिंगार करना, 2. सजाना। **सिंगारना** (हि.)

सिंगारदान (पुं.) शृंगार के साधन रखने का पात्र।

सिंगारना (क्रि. स.) दे. सिंगारणा।

सिंगार-पट्टी (स्त्री.) मस्तक का एक आभूषण (कौड़ी, जूड़ा, वीरलता, बंदनी इसके अन्य नाम हैं)।

सिंगाळिया (वि.) लंबे सींगों वाला।

सिंगाहा (पुं.) गांवों के बीच का मार्ग।

सिंगी (स्त्री.) दे. सींग्गी।

सिंगैल (वि.) लंबे सींग वाला (पशु)।

सिंगोट्टा (पुं.) सींग पर चढ़ाया जाने वाला धातु का खोल।

सिंगौटा (पुं.) दे. सिंगोट्टा।

सिंगौटी (स्त्री.) सिंगारदानी, (दे. सिंगारदान)।

सिंघणी (स्त्री.) शेरनी, मादा शेर। **सिंहनी** (हि.)

सिंघाड़ा (पुं.) 1. सिंघाड़ा नामक फल, 2. कमीज, कुर्ते आदि में बटनों के कुछ नीचे बनाया जाने वाला चीरा।

सिंघास्सण (पुं.) राजगद्दी। **सिंहासन** (हि.)

सिंचणा (क्रि. अ.) 1. सींचा जाना, 2. गीला होना। **सिंचना** (हि.)

सिंचना (क्रि. अ.) दे. सिंचणा।

सिंचाई (स्त्री.) दे. सिचाई।

सिंडास्सी (स्त्री.) दे. संडास्सी।

सिंडोरी (स्त्री.) तुली या सींखचों आदि से बना कुछ शंकु-गोलाकार पात्र (इसमें पील (जाळ का फल), सूई धागा आदि रखा जाता है)।

सिंदूर (पुं.) 1. सुहागिन द्वारा माँग में भरा जाने वाला लाल रंग का चूर्ण विशेष, 2. सुहाग-चिह्न, 3. फ़सल का एक रोग जिसमें पत्तों पर सिंदूर-सा रंग छा जाता है।

सिंदूरदानी (स्त्री.) सिंदूर रखने की डिबिया।

सिंदूरिया (वि.) सिंदूर के रंग का।

सिंदूरी (वि.) सिंदूरी रंग का।

सिंध (स्त्री.) पंजाब की एक बड़ी नदी; (पुं.) भारत के पश्चिम का एक प्रदेश।

सिंधारा (पुं.) तीजों पर लड़की को पिता की ओर से और बहु को श्वसुर की ओर से दी गई सुहाग के शृंगार और वस्त्र आदि की भेंट।

सिंधी (स्त्री.) सिंध देश की भाषा; (पुं) 1. सिंध देश का घोड़ा; (वि.) सिंध देश से सम्बंधित।

सिंधु (पुं.) 1. एक नद जो मानसरोवर से निकल कर कश्मीर और पंजाब होता हुआ अरब सागर में गिरता है, 2. सागर।

सिंध्या नूण (पुं.) सेंधा नमक, पहाड़ी नमक, लाहौरी नमक।

सिंभाळणा (क्रि.) दे. संभाळणा।

सिंभू (पुं.) महादेव। **शंभू** (हि.)

सिंह (पुं.) शेर, (दे. सिंघ)।

सिंहणी (स्त्री.) दे. सिंघणी।

सिंहनाद (पुं) सिंह की गरज (तुल. दहाड़)।

सिंहलद्वीप (पुं.) दे. संगलदीप।

सिंहासन (पुं.) दे. सिंघास्सण।

सिकंजा (पुं.) 1. पकड़, 2. दबाने-पकड़ने आदि का यंत्र। **शिकंजा** (हि.)

सिकणा (क्रि. अ.) 1. आग तापना, 2. फुलके आदि का भली प्रकार पकना, 3. धूप या आग के कारण अधिक गरम होना। **सिकना** (हि.)

सिकरगंदी (स्त्री.) एक कंद जिसे भून कर या उबाल कर खाते हैं। **शकरकंद** (हि.)

सिकरम (स्त्री.) ऊँट गाड़ी। दे. किराँची।

सिकरा (पुं.) बाज पक्षी।

सिकल (स्त्री.) 1. मुख की बनावट, 2. आकृति। **शक्ल** (हि.)

सिकलीगर (पुं.) 1. तालों की चाबी लगाने वाला, 2. मुसलमानों की एक जाति। **सिकीलगर** (हि.)

सिकात (स्त्री.) चुगली, बुराई। **शिकायत** (हि.)

सिकार (पुं.) शिकार, आखेट।

सिकारी (पुं.) शिकार करने वाला, अखेटक। **शिकारी** (हि.)

सिकुड़न (स्त्री.) दे. सुकड़न।

सिकुड़ना (क्रि. अ.) दे. सुकड़णा।

सिकोड़ना (क्रि. स.) दे. सकोड़णा।

सिकोरा (पुं.) मिट्टी का प्याला विशेष (जिसमें हलवाई दूध आदि देता है)। **कसोरा** (हि.)

सिक्का (पुं.) 1. रुपये, पैसे आदि का धातु में ढला सिक्का, 2. ठप्पा, 3. धाक, 4. पेंसिल का सुरमा।

सिक्सा (स्त्री.) 1. तालीम, पढ़ाई, 2. सीख, 3. उपदेश, 4. दंड, 5. सबक। **शिक्षा** (हि.)

सिखंडी (स्त्री.) 1. हिजड़ा, 2. द्रुपद पुत्र शिखंडिनी। **शिखंडी** (हि.)

सिखंत (स्त्री.) दे. सिखरी।

सिखंदड़ा (वि.) दे. सिखदड़।

सिख (पुं.) 1. सरदार, नानक पंथी (जो सिर और दाढी-मूँछ के केश नहीं मुँडाते तथा कड़ा, कृपाण, कच्छा, कंघा धारण करते हैं), 2. सिख धर्म को मानने वाला।

सिखदड़ (वि.) नवसिखिया।

सिख-बुध (स्त्री.) 1. सीख, 2. श्रेष्ठ बुद्धि।

सिखर (पुं.) 1. आकाश, 2. बहुत ऊँची चोटी; **~दोप्फाहरी** मध्याह्न-काल। **शिखर** (हि.)

सिखरी (स्त्री.) 1. पेड़ की सबसे ऊँची चोटी, 2. बहुत ऊँची चोटी, चोटी।

सिखा (स्त्री.) 1. सीख, 2. शिखा, चोटी।

सिखलाना (क्रि. स.) दे. सिखाणा।

सिखाणा (क्रि. स.) 1. शिक्षा देना, अभ्यास कराना, 2. उपदेश देना, 3. कान भरना, 4. उलटी शिक्षा देना, भड़काना। **सिखाना** (हि.)

सिखाना (क्रि. स.) दे. सिखाणा।

सिगनी (स्त्री.) हनुमान की माता का नाम।

सिगरट (स्त्री.) चुरट। **सिगरेट** (हि.)

सिचाई (स्त्री.) सींचने का काम। **सिंचाई** (हि.)

सिचाणा (क्रि. स.) सिंचाई करवाना। **सिंचाना** (हि.)

सिज्दा (पुं.) मुसलमानी ढंग से किया जाने वाला प्रणाम।

सिझाणा (क्रि. स.) 1. आँच पर रख कर हल्के-हल्के पिघालना या पकाना, 2. नमदार करना, 3. चावल का माँड निकालना। **सिझाना** (हि.)

सिट (स्त्री.) (रंच मात्र?); **~भी नाँ करणा** 1. थोड़ा भी काम न करना, 2. निठल्ला रहना।

सिटकुण (स्त्री.) 1. दे. कामड़ी, 2. दे. साँट्टा।

सिटको (स्त्री.) तीव्र गति से बहने वाली नहर।

सिटोळिया (पुं.) नंदवंशी अहीर गोत।

सिटोळी (स्त्री.) हल्की लाठी, छड़ी।

सिट्टा (पुं.) दे. सिरटा।

सिठनी (स्त्री.) दे. सीठणा।

सिठाणी (स्त्री.) सेठ की पत्नी; (वि.) मोटी-ताज़ी (महिला)। **सेठानी** (हि.)

सिड़ (स्त्री.) 1. सनक, 2. पागलपन; **~ऊठणा** सनक होना।

सिड़णा (क्रि. अ.) 1. दुर्गंध आना, 2. पौधे आदि का गलना। **सड़ना** (हि.)

सिड़यल (वि.) मैला-कुचैला रहने वाला, ग़लीज़।

सिड़ाँध (स्त्री.) दुर्गंध, बदबू; **~आणा** 1. दुर्गंध फैलना, 2. घृणा होना; **~ऊठणा** 1. बुरी तरह सड़ना, 2. दुर्गंध व्याप्त होना। **सड़ाँध** (हि.)

सिड़ाणा (क्रि. स.) 1. ऐसी अवस्था में रखना कि दुर्गंध आए, 2. गलाना, पानी में डाल कर गलाना, 3. पाद मारना। **सड़ाना** (हि.)

सिड़ासोड़ (वि.) दे. सड़ासोड़।

सिड़ियल (वि.) दे. सिड़यल।

सिणक (पुं.) नाक से निकलने वाला लसलसा द्रव, रेंट (तुल. रींट)। **सिनक** (हि.)

सिणकणा (क्रि. स.) नाक से सिनक निकालना। **सिनकना** (हि.)

सिणकला (वि.) दे. सिणकू।

सिणकू (वि.) जिसकी नाक से हर समय सिनक बहे।

सितम (पुं.) 1. ग़जब, अनर्थ, 2. अत्याचार।

सिताब्बी (वि.) क्रूर, निर्दयी, आफ़त ढाने वाला। **सिताबी** (हि.)

सितार (पुं.) 1. साधुओं द्वारा बजाया जाने वाला एक बाजा, 2. एकतारा, 3. एक वाद्य यंत्र विशेष।

सितारा (पुं.) 1. नक्षत्र, 2. ओढ़नी आदि पर लगाया जाने वाला लोहे का सुंदर सितारा, 3. भाग्य।

सिद्ध (पुं.) दे. सिध; (वि.) दे. सिध।

सिद्धांत (पुं.) नियम, उसूल, मत।

सिद्धांती (वि.) 1. शास्त्रों आदि के सिद्धांत मानने वाला, 2. अपने सिद्धांत का पक्का।

सिद्धि (स्त्री.) 1. सफलता, क़ामयाबी, 2. योग की आठ सिद्धियाँ, 3. कौशल, निपुणता।

सिध (वि.) पहुँचा हुआ, सिद्धि प्राप्तः (पुं.) साधु; (क्रि. अ.) 'सिधाणा' क्रिया का प्रे. रूप। **सिद्ध** (हि.)

सिधणा (क्रि. अ.) दे. सधणा।

सिधाई (स्त्री.) 1. सीधेपन का भाव, सीध, 2. भोलेपन का भाव; (क्रि. स.) 'सिधाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. एकव. रूप।

सिधाणा (क्रि. स.) 1. पशु आदि को कोई कौशल सिखाना, 2. आदत डालना, 3. पीट कर सीधा करना, 4. नर पशु को निर्बीज करवाना। **सिधाना** (हि.)

सिधाना (क्रि. स.) दे. सिधाणा।

सिधारणा (क्रि. स.) 1. सीधा करना, 2. मार-पीट कर मार्ग पर लाना; (क्रि. अ.) पधारना, गमन करना। **सिधारना** (हि.)

सिधारना (क्रि. स.) दे. सिधारणा; (क्रि. अ.) दे. सिधारणा।

सिनक (पुं.) दे. सिणक।

सिनकना (क्रि. स.) दे. सिणकणा।

सिनेमा (पुं.) दे. सलीम्माँ।

सिन्या (स्त्री.) 1. सेना, 2. वानर सेना।

सिपहसालार (पुं.) एक सैनिक अफसर।

सिपाहिड़ा (पुं.) सिपाही का लघुता द्योतक रूप, सिपाही।

सिपाही (पुं.) 1. पुलिस का एक छोटा कर्मचारी, 2. सैनिक, 3. सामान्य कार्यकर्त्ता।

सिफत (स्त्री.) विशेषता।

सिफ़र (स्त्री.) शून्य।

सिफ़ारिश (स्त्री.) 1. संस्तुति, 2. किसी के पक्ष में हिमायत लेना, 3. किसी के गुणों पर की गई व्यक्तिगत टिप्पणी।

सिफ़ारिशी (वि.) जिसकी सिफ़ारिशि की गई हो, सिफ़ारिश वाला।

सिब (वि.) दे. सभ; (पुं.) दे. सिबजी।

सिबजी (पुं.) 1. महादेव, शंकर, भोला, 2. शिवलिंग, 3. हरियाणे का मुख्य आराध्य देव (शिव)। **शिवजी** (हि.)

सिबरातरी (स्त्री.) फाल्गुन बदी चतुर्दशी, शिव चतुर्दशी। **शिवरात्रि** (हि.)

सिमँट (स्त्री.) सीमेंट; (क्रि. अ.) 'सिमँटणा' क्रिया का आदे. रूप।

सिमँटणा (क्रि. अ.) 1. सिमट कर इकट्ठा होना, 2. कुंडली लगा कर बैठना, 3. लज्जित होना, 4. काम क़ाबू में आना या निपटना; (वि.) जो शीघ्र सिमट जाए। **सिमटना** (हि.)

सिमटना (क्रि. अ.) दे. सिमँटणा।

सिमधी (पुं.) दे. समधी।

सिमबल (पुं.) सेंवर का वृक्ष।

सिमरण (पुं.) 1. भगवान को याद करने का भाव, 2. याद। **स्मरण** (हि.)

सिमरणा (क्रि. स.) दे. सुमरणा।

सिमल (स्त्री.) दे. सिलम।

सिमवाणा (क्रि. स.) सिलाई करवाना; **मुँह~** ज़बान पर ताला लगवाना। **सिलवाना** (हि.)

सिमाई (स्त्री.) 1. सीने का काम, 2. सीने की मज़दूरी; (क्रि. स.) 'सिमवाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिंग, एकव. रूप। **सिलाई** (हि.)

सिमाणा[1] (क्रि. स.) दे. सिमवाणा।

सिमाणा[2] (पुं.) 1. गाँव का क्षेत्र विशेष, 2. गाँव की सीमा। **सिमाना** (हि.)

सिमाना (पुं.) दे. सिमाणा[2]; (क्रि. स.) दे. सिमवाणा।

सिमाल (स्त्री.) उत्तर दिशा।

सिमाळू (वि.) 1. सीमा पर स्थित, 2. (दे. सीम-सिमाळू)।

सिया (स्त्री.) श्री सीताजी।

सियाड़ (पुं.) दे. खूड।

सियार (पुं.) 1. दे. स्यार[2], 2. दे. गाद्दड़।

सियाळ (स्त्री.) सरदी, शीतल वायु; (पुं.) शृगाल, गीदड़।

सियासत (स्त्री.) दे. स्यासत।

सियासी (वि.) राजनीतिक।

सिरंधरी (स्त्री.) सैरंध्री। अज्ञातवास में द्रोपदी का नाम। दे. दरोपती।

सिर[1] (पुं.) 1. मनुष्य या पशु आदि का सिर, 2. चोटी, शिखर, 3. सिरा, किनारा, 4. मूर्धन्य स्थान, 5. बुद्धि; **~आणा** 1. सिर चढ़ना, 2. सिर पर फुंसियाँ होना; **~उभारणा/ठाणा** 1. साहस बढ़ना, 2. विरोध में खड़ा होना; **~करणा** 1. सिर गूँथना, 2. सिर धोना, 3. दोष मढ़ना; **~कै ताण** 1. ज़ोर-ज़बरदस्ती से, 2. विपरीत अवस्था में; **~~आणा** 1. सिर के बल गिरना, 2. बहुत आदरपूर्वक किसी के पास आना; **~~करणा** दुर्दशा करना; **~~चलाणा** मनमाना व्यवहार करना; **~~चालणा** विवशतावश कार्य करना; **~देणा** 1. जानबूझ कर मुसीबत में फँसना, 2. आश्रय लेना, 3. घुसना, 4. बलिदान देना; **~पीटणा** 1. सिर धुनना, 2. पछताना, 3. हार मानना; **~पै करड़ाई आणा** आपत्ति आना; **~पै चढणा** 1. दिमाग़ चढ़ना, 2. तंग करना; **~पै चढाणा** 1. अधिक लाड़-चाव के कारण बिगाड़ना, 2. अकरणीय व्यवहार से भी न रोकना; **~पै पड़णा** 1. जिम्में पड़ना, 2. सिर पड़ना; **~फिरणा** 1. अभिमान होना, 2. बुद्धि भ्रष्ट होना; **~मारणा** 1. सिर पटकना, 2. माथापच्ची करना, 3. टक्कर मारना; **~लाणा** दोष मढ़ना; **~साँट्टे का सोद्दा** खरा सौदा; **~होणा** 1. अधिक अनुनय-विनय करना, 2. पीछे पड़ना, 3. दोष मढ़ा जाना।

सिर[2] (प्रत्य.) से, यथा–ढंगसिर (ढंग से)।

सिरका[1] (पुं.) एक प्रकार का सड़ाया हुआ खट्टा रस जिसका ओषधि के रूप में भी सेवन किया जाता है।

सिरका[2] (स्त्री.) ओढ़नी।

सिरकार (स्त्री.) 1. हुकूमत, 2. बड़ा अधि कारी, 3. पत्नी। **सरकार** (हि.)

सिरकारी (वि.) 1. सरकार संबंधी, सरकार का, 2. स्वच्छंद भाव से काम करने वाला, उच्छृंखल। **सरकारी** (हि.)

सिरकी (स्त्री.) दे. सरकी।

सिरकी बंध (स्त्री.) एक जाति जो टोकरी आदि बनाती है।

सिरगूँद्दी (स्त्री.) विवाह से पूर्व सगाई, विवाह अथवा अन्य विशेष अवसरों पर नववधू का सिर गूँथने की रस्म (बहुधा इस समय गीत भी गाए जाते हैं)। **सिरगूँदी** (हि.)

सिरजणहार (पुं.) 1. ईश्वर, सृष्ट रचने वाला, 2. माता-पिता, 3. मूर्तिकार। **सृजनहार** (हि.)

सिरजनहार (पुं.) दे. सिरजणहार।

सिरटा (पुं.) 1. ज्वार का भुट्टा, 2. बाजरे का भुट्टा या बाली।

सिरटी (स्त्री.) ज्वार, बाजरे आदि का भुट्टा या बाली।

सिरड़ (स्त्री.) 1. आवेश, 2. पागलपान का भाव; **~ऊठणा** आवेश में आना।

सिरड़ी[1] (वि.) 1. आवेश-वश काम करने वाला, 2. सनकी।

सिरड़ी[2] (स्त्री.) दे. सिरटी।

सिरड़ैल (वि.) दे. सिरड़ी।

सिरताज (पुं.) 1. मुकुट, 2. सिरमौर।

सिरदार (पुं.) 1. सेना का अधिकारी, 2. स्वामी, मालिक, 3. शीर्षस्थ स्थान का अधिकारी, 4. सिख। **सरदार** (हि.)

सिरदारी (स्त्री.) हुक्रूमत, छोटी हुक्रूमत; **~चाल्ली आणा** हुक्रूमत या विशाल सम्पत्ति से आय होना। **सरदारी** (हि.)

सिर फिर्‌या (वि.) 1. मनमाने तरीके से व्यवहार करने वाला, 2. निडर, 3. मूर्ख। **सिरफ़िरा** (हि.)

सिरफूल्ली (वि.) नंगे सिर, बेपर्दा।

सिरवा[1] (पुं.) दे. सरवा।

सिरवा[2] (पुं.) सिर दर्द।

सिरवाई (स्त्री.) 1. एक छोटा पौधा जिसके बालीनुमा सुंदर फूल में काले रंग का तिल से भी छोटा और हल्का बीज होता है (इसका फल या बीज फूल से पहले गिरता है), **पहेली**–फूल पहल्याँ फळ झड़ै बताओ उसका के नाँ? 2. सिरदर्द।

सिरस (पुं.) एक विशाल वृक्ष विशेष जिस पर चौड़ी फली लगती है और सुंदर फूल भी आता है (इसकी सूखी फली की कंपन बहुत तेज होती है)। **शिरीष** (हि.)

सिरस गढ (पुं.) नरसी भगत का गाँव।

सिरसम (स्त्री.) सरसों का पौधा (इसके पत्तों का साग बनता है), (दे. डाक्कळ); **~का तेल** सरसों का तेल। **सरसों** (हि.)

सिरसमान्नी (वि.) 1. वह वस्तु जो लंबाई में सिर तक पहुँचे, सिर की लंबाई तक पहुँचने वाली, 2. लगभग साढ़े तीन हाथ लंबी।

सिरसा (पुं.) वर्तमान सिरसा नगर, (महाभारत के सभा-पर्व के अनुसार नकुल ने यौधेयों के लिए शैरीषकम (सिरसा) को जीता था)।

सिरसावळ (पुं.) भंगी जाति का एक गोत।

सिरसूँ (स्त्री.) दे. सिरसम।

सिरस्टी (स्त्री.) 1. संसार, जगत, 2. निर्माण, 3. उत्पत्ति। **सृष्टि** (हि.)

सिरहाणा (पुं.) 1. चारपाई के सिर की ओर का भाग, 2. 'पाँत' का विलोम, 3. सम्मानित स्थान जो बुजुर्गों और अपने से ऊँची जाति के व्यक्ति के लिए छोड़ दिया जाता है, 4. तकिया; **~देणा** सम्मान देना। **सिरहाना** (हि.)

सिरा (पुं.) 1. किनारा, 2. छोर, (दे. ठोड़)।

सिराहणा (पुं.) दे. तकिया।

सिरियार (पुं.) भंगी जाति का एक गोत।

सिरी (स्त्री.) एक सम्मानबोधक शब्द। **श्री** (हि.)

सिरोळ (पुं.) दे. सर[1]।

सिरोळी (स्त्री.) 1. सरकंडों की पूली, 2. (दे. सर[1])।

सिर्फ़ (वि.) केवल।

सिल[1] (स्त्री.) 1. पत्थर, 2. चटनी रगड़ने का पत्थर, 3. भार, जैसे–छात्ती पै सिल। **शिला** (हि.)

सिल[2] (स्त्री.) 1. बरसाने या ओसाने के

लिए इकट्ठी की गई पैड़ (खलियान), 2. भूसा मिश्रित अन्न की ढेरी।

सिल[3] (स्त्री.) भौं के बाल।

सिल[4] (स्त्री.) कुएं की मुंडेर पर रखा वह भारी पत्थर जिस पर चरसा उंड़ेला जाता है। दे. सिल।

सिलक (स्त्री.) दे. रेस्सम। **सिल्क** (हि.)

सिलखड़ी (स्त्री.) दे. सेलखड़ी।

सिलगम (स्त्री.) एक जड़, एक सब्ज़ी। **शलगम** (हि.)

सिलगणा (क्रि.अ.) जलना, बलना; (वि.) सुलगने में सक्षम। **सुलगना** (हि.)

सिलगाणा (क्रि. अ.) 1. अग्नि प्रज्वलित करना, 2. भड़काना, उभारना। **सुलगाना** (हि.)

सिल-बट्टा (पुं.) सिल और बट्टा, चटनी आदि रगड़ने के काम आने वाला पत्थर और लोढ़ा।

सिलम (स्त्री.) जूए पर लगी दो खूँटियाँ।

सिलमाँ-सितारा (पुं.) 1. सलमे-सितारे का काम, 2. बादला।

सिलवट (स्त्री.) दे. गुळझट।

सिलवाना (क्रि. स.) दे. सिमवाणा।

सिलवार (स्त्री.) सलवार, पायजामे के समान एक कलीदार ढीला अधोकटिवस्त्र (मुसलमानी पहनावा)। **शल्वार** (हि.)

सिलसिला (पुं.) 1. क्रम, 2. तरतीब।

सिलहारा (पुं.) दे. सेल्लाहारी।

सिला[1] (स्त्री.) दे. सिल[1]।

सिला[2] (पुं.) 1. दे. सेल्ला, 2. दे. सिल।

सिळाई (स्त्री.) दे. सिमाई।

सिळाई (स्त्री.) 1. दे. कान सिळाई, 2. दे. सळाई, 3. दे. सळी।

सिळाणा (क्रि. स.) 1. शीतल करना, भोजन को ठंडा होने देना, 2. मूर्ति पर जल चढ़ाना, 3. मूर्ति आदि का जल-विसर्जन करना, 4. कार्य-सिद्धि करना, 5. काम द्वारा मन प्रसन्न करना—यो किसनैं सिळा कै दे सै, (दे. सेळ)। **सिलाना** (हि.)

सिलाना (क्रि. स.) 1. दे. सिमवाणा, 2. दे. सिळाणा।

सिलाम (स्त्री.) बंदगी, प्रणाम। **सलाम** (हि.)

सिलामी (स्त्री.) प्रणाम करने का भाव, बंदगी। **सलामी** (हि.)

सिळास (स्त्री.) दे. सीळक।

सिलोणी (वि.) सुंदर। **सलोनी** (हि.)

सिलोणो (स्त्री.) श्रावणी, रक्षाबंधन का दिन; **~पूजणा** रक्षाबंधन के दिन दरवाजे के बाहर लिखे गए राम-राम आदि चिह्नों को पूजना। **सलोनो** (हि.)

सिल्क (स्त्री.) दे. सिलक।

सिल्ला (पुं.) दे. सेल्ला[1,2]।

सिल्लामी (पुं.) मुसलमान का।

सिल्ली (स्त्री.) 1. शिला, 2. उस्तरा पैना करने का छोटा पत्थर, शाण, 3. आँख का पपोटा, 2. (दे. सिल[1]), 2. (दे. सिल[3]))।

सिल्हाणा (क्रि. स.) गीला करना, भिगोना।

सिव (पुं.) शिवजी, हरियाणे का प्रमुख आराध्य देव। **शिव** (हि.)

सिवलिंग (पुं.) शिव की अनगढ़ पिंडाकार लंबोतरी मूर्ति। **शिवलिंग** (हि.)

सिव-परदेस (पुं.) हरियाणा, हरियाणा प्रदेश। **शिव-प्रदेश** (हि.)

सिवा (अव्य.) अतिरिक्त, छोड़कर, जैसे—सिवा उसके। **सिवाय** (हि.)

सिवाजी (पुं.) शिवाजी मराठा (बैशाख शुक्ल द्वितीया को इनकी जयंती मनाई जाती है)। **शिवाजी** (हि.)

सिवाय (अव्य.) दे. सिवा।

सिवार/सिवाल (स्त्री.) दे. सिवाळ।

सिवाळ[1] (स्त्री.) काई, (**पहली**–आधी कीच तिहाय जल, दसमाँ हिस्सा सिवाळ, बावन गज ऊँची खड़ी सिला किता बिस्तार?), **उत्तर**–780 गज। **शैवाल** (हि.)

सिवाल[2] (पुं.) शृगाल। दे. गादड़।

सिवाल्ला (पुं.) 1. शिव मंदिर, मंदिर जहाँ शिवलिंग तथा नंदीगण की पूजा होती है, 2. मंदिर। **शिवालय** (हि.)

सिवास्सण (स्त्री.) 1. वयस्क महिला, यौवन प्राप्त लड़की (जिसे अपने अंगों के प्रति जागरूकता आ गई हो), 2. युवा अवस्था में भी अपने पिता के घर रहने वाली।

सिसकणा (क्रि. अ.) दे. ससकणा।

सिसकना (क्रि. अ.) दे. ससकणा।

सिसकारणा (क्रि. स.) दे. ससकारणा।

सिसकारी (स्त्री.) सिसकारने या सीटी जैसी ध्वनि, (दे. ससकारणा)।

सिसकी (स्त्री.) 1. रोते समय आने वाली हिचकी, 2. रोते समय ली जाने वाली उलटी साँस, (दे. सुबकी)।

सिसन[1] (पुं.) जननेंद्री। **शिश्न** (हि.)

सिसन[2] (पुं.) बड़ा जज, मुख्य न्यायाधीश; **~जज** सैशन जज। **सैशन जज** (हि.)

सिसिंडी (स्त्री.) मुँह से सीटी बजाना।

सिसोटिया (पुं.) एक अहीर गोत।

सिहारी (स्त्री.) 1. डायन, 2. एक गाली।

सींक (स्त्री.) दे. सींख।

सींकिया (वि.) दुबला-पतला, क्षीणकाय।

सींख (स्त्री.) 1. झाड़ू की तीली, 2. पतला-लंबा तिनका, 3. माचिश की तीली, 4. नाक का एक गहना विशेष, लौंग; **~-सी** दुर्बल-काय। **सींक** (हि.)

सींग (पुं.) 1. पशु का सींग, 2. सींगी; **~की काँघी** सींग से बनी कंघी; **~जामणा/होणा** सामना करने का दुस्साहस होना; **~तुड़ाणा** 1. आपत्ति मोल लेना, 2. लड़ते-झगड़ते फिरना; **~तुड़ा कै बाछड़ाँ मैं नाम लिखाणा** कम आयु बताना; **~देणा** 1. जानबूझ कर अनावश्यक रूप से बाधा पहुँचाना, 2. किसी से व्यर्थ में उलझना; **~(-गाँ) माट्टी ठाणा** उत्पात मचाना। **शृंग** (हि.)

सींगड़ा (पुं.) 1. जेली की लंबी कील, 2. छोटा सींग।

सींगरा (पुं.) मूली की फली; **~-सी** दुर्बल-काय।

सींगरी (स्त्री.) मूली की फली; (वि.) सिंगरी हुई।

सींगल (वि.) दे. सींगला।

सींगला (वि.) लंबे सींग वाला (पशु)।

सींगी (स्त्री.) दे. सींग्गी।

सींग्गड़ (पुं.) जेली का मोटा सींग।

सींग्गर (पुं.) 1. एक पौधा जिस पर ज्येष्ठ मास में लोभिया जैसी फली लगती है, 2. इस पौधे की फली। **सेंगर** (हि.)

सींग्गी (स्त्री.) 1. नाथपंथी साधुओं द्वारा धारण की जाने वाली सींगी, 2. गंदा खून खींचने के लिए जर्राह द्वारा प्रयुक्त सींग; (पुं.) दे. शृंगी। **सींगी** (हि.)

सींघणी (स्त्री.) दे. सिंघणी।

सींचणा (क्रि. स.) 1. सिंचाई करना,

2. सेवा करना, 3. भिगोना।
सींचना (हि.)

सींचना (क्रि. स.) दे. सींचणा।

सींजणा (क्रि.) तुल. सींचणा।

सींत-मींत (अव्य.) दे. सैंत-मैंत।

सींध (स्त्री.) सेंध (तुल. पाड़)।
सेंध (हि.)

सींरी अदा (स्त्री.) मनोहारी अदाएँ।

सींसवाळ (पुं.) जाटों की एक उपजाति।
सिंसवर (हि.)

सी (वि.) सम, तुल्य, जैसी; (क्रि. वि.) काल या समय बोधक शब्द, जैसे–कद सी (किस समय), ईब सी (इन दिनों या अभी); (अव्य.) (?)–नाँ आया तै नाँ सी (सही); (स्त्री.) तिरस्कार, घृणा, कष्ट, आदि बोधक ध्वनि; (प्रत्य.) भविष्यकालिक एक प्रत्यय, जैसे–लड़सी (लड़ेगा)।

सीक (प्रत्यय.) निकट या आस-पास द्योतक प्रत्यय, जैसे–थोड़ी सीक, साँझ सीक।
सी (हि.)

सीक्ख्या-पाँड्डा (वि.) चतुर, जिसे किसी की सीख की आवश्यकता न हो।

सीख (स्त्री.) 1. शिक्षा, 2. उपदेश, 3. उलटी पट्टी (व्यंग्य में); (क्रि. स.) 'सीखणा' क्रिया का आदे. रूप; **~लागणा** पराई सीख का प्रभाव होना।

सीखचा (पुं.) लोहे की छड़।

सीखणा (क्रि. स.) 1. जानना, 2. हुनर सीखना। **सीखना** (हि.)

सीखतड़ (वि.) दे. सिखदड़।

सीखना (क्रि. स.) दे. सीखणा।

सीख्या पांड्या (पुं.) चतुर, कुशल।

सीझणा (क्रि. अ.) 1. धीरे-धीरे पकना या गलना, 2. पसीजना। **सीझना** (हि.)

सीटी (स्त्री.) दे. सीट्टी।

सीट्टी (स्त्री.) 1. मुँह से बजाने का एक बाजा, 2. मुँह से सीटी जैसी ध्वनि निकालने की क्रिया, 3. रेल की सीटी, 4. जिसकी एक आँख हो (काना); **~देणा/मारणा** 1. सीटी बजाना, 2. संकेत करना, कामुक संकेत करना, 3. उत्तेजित करना। **सीटी** (हि.)

सीठणा (पुं.) 1. ताना, 2. विवाह आदि के समय दामाद, समधी या वर-पक्ष के अन्य संबंधियों को गीतों के माध्यम से दी जाने वाली प्रेम-भरी गाली; अशिष्ट गायन **~देणा** 1. ताना देना, 2. कटूक्ति कहना। **सीठना** (हि.)

सीठना (पुं.) दे. सीठणा।

सीड़[1] (स्त्री.) शीत, जैसे–सीड़ लागणा।

सीड़[2] (स्त्री.) 1. उछीड़, 2. 'भीड़' का विलोम, (दे. छीद)। **उछीड़** (हि.)

सीड़[3] (स्त्री.) 1. ज़िद, 2. रीस; **~पीटणा** रीति-रिवाज़ निभाना।

सीड़ी (वि.) दे. सिरड़ी।

सीड्ढी (स्त्री.) 1. ज़ीना, लकड़ी का ज़ीना, 2. झूल की पाटी, 3. उन्नतिमार्ग, 4. पैड़ी। **सीढ़ी** (हि.)

सीढवा (पुं.) छोटी सीढी, (दे. सीड्ढी)।

सीढ़ी (स्त्री.) दे. सीड्ढी।

सीत (स्त्री.) 1. छाछ, मक्खन निकाली हुई दही की लस्सी (यह मादक, शीतल, वायु-वर्धक तथा उदर कृमिनाशक होती है), 2. शीत; **~दे फूहड़ कुहावै** उपकार का बदला अपकार से; **~पाच्छै मूँछ कटाणा** सस्ते भाव इज़्ज़त बेचना।

सीत-राबड़ी (स्त्री.) सीत और राबड़ी, सीत-राबड़ी का भोजन, (दे. राबड़ी); **~(-ड़ियाँ) का बखत** प्रातःकालीन

कलेवे का समय, सूर्योदय से लगभग एक पहरा बाद तक का समय।

सीतलपाटी (स्त्री.) दे. आस्सण**~पाट्टी**।

सीता (स्त्री.) दे. सीत्ता।

सीत्ता (स्त्री.) सीताजी, जनक की पुत्री, श्री रामचंद्र जी की भार्या; **~-सतवंती** सीता के समान पतिव्रता, पतिव्रता।

सीत्ताफळ (पुं.) पेठे या कोहले की एक जाति, बेल पर लगने वाली एक तरकारी। **सीताफल** (हि.)

सीद्धा[1] (पुं.) दाल, आटा, गुड़ आदि, बिना पका भोजन जो विशेष अवसरों पर ब्राह्मण को दिया जाता है; **~काढणा** बिना पकी भोजन-सामग्री ब्राह्मण को देना; **सूक्का~** दाल, आटे आदि का दान। **सिद्धान्न/सीधा** (हि.)

सीद्धा[2] (वि.) सीधा, (दे. सूद्धा)।

सीध (स्त्री.) दे. सूध[1]।

सीधा (वि.) दे. सूद्धा।

सीधापन (पुं.) सीधे होने का भाव।

सीधे (क्रि. वि.) 1. सम्मुख, ठीक सामने, 2. बिना मुड़े, 3. शिष्ट व्यवहार से।

सीना (क्रि. स.) दे. सीमणा; (पुं.) वक्षस्थल, छाती।

सीप (स्त्री.) दे. सीप्पी।

सीप्पी (स्त्री.) 1. सीप का खोल जिसे बच्चों के गले में भी लटकाया जाता है, 2. सीपी के आकार की लोहे की खुरचनी जिससे खुरचन खुरची जाती है। **सीपी** (हि.)

सीम (स्त्री.) 1. गाँव की सीमा का छोर या किनारा (श्रद्धालु माता-पिता पुत्री की ससुराल की सीमा का पानी तक स्पर्श नहीं करते), 2. मर्यादा; (क्रि. स.) 'सीमणा' क्रिया का आदे. रूप; **~तोड़णा** मर्यादा भंग करना।

सीमणा (क्रि. स.) 1. सिलाई करना, 2. सीमाबद्ध करना। **सीना** (हि.)

सीम-सद्धा (पुं.) सरकारी सीमांत पत्थर या चिह्न जो दो गाँवों की सीमा के मिलान-स्थान पर गाड़ा जाता है (इसका आकार गाँवों की संख्या के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है)।

सीम-सिमाळू (वि.) 1. सीमा से लगते हुए गाँव का रहने वाला, 2. आस-पास के गाँवों का, 3. एक क्षेत्र के निवासी।

सीमा (स्त्री.) दे. सीम।

सीमीं (स्त्री.) दे. सेंमीं।

सीम्मण (स्त्री.) सिलाई। **सीवन** (हि.)

सीया[1] (पुं.) 1. एक मुसलमान संप्रदाय, 2. शिया संप्रदाय का व्यक्ति। **शिया** (हि.)

सीया[2] (स्त्री.) सीता जी।

सीर (स्त्री.) साझा।

सीर का मूस्सळ (पुं.) 1. सीर मुशल, हलस, 2. मोटा मूसल।

सीरणी (स्त्री.) (सफलता प्राप्त होने अथवा गुम चीज़ मिलने आदि पर) प्रसन्नतावश बाँटी गई मिठाई; **~बोलणा** मनोकामना पूरी होने के बाद मिठाई बाँटने का प्रण करना। **शीरनी** (हि.)

सीरा (स्त्री.) 1. बिना घी डाले बनाया गया हलुआ, 2. गन्ने के रस से तैयार करवाई गई रवेदार गाढ़ी शीरा; **~-सी** 1. अधिक मीठी, 2. तरल और गाढ़ी। **शीरा** (हि.)

सीरिया (पुं.) खेतिहर मज़दूर।

सीरी (स्त्री.) सम्मिलित खेती।

सीळ (वि.) शीलवान–सीळ सुखी हो, बूढ सुहाग्गण हो; (स्त्री.) दे. सील्ह।

सीळक (स्त्री.) 1. ठंडक, ठंड, 2. सुख, चैन, 3. मन की प्रसन्नता; **~पड़णा/होणा** 1. मन की तसल्ली होना (किसी की हानि के कारण), 2. ठंड पड़ना।

सीळ-सती (वि.) पतिव्रता, शीलवान।

सीळ-सुहाग्गण (वि.) शीलवान तथा सौभाग्यवती, शीलवान तथा सुहागिन; (पुं.) बड़ी स्त्रियों के पैर दबाते या पड़ते समय बहुओं को दिया जाने वाला आशीर्वाद।

सीळा (वि.) गीला (तुल. सीहल्ला)।

सीला (वि.) 1. शीतल, ठंड़ा, 2. गीला, 3. शांत स्वभाव का, 4. 'तात्ता' का विलोम; **~चूल्हा/तवा** 1. अकर्मण्यता की स्थिति, ठाली बैठे रहने का भाव, 2. अभावग्रस्त स्थिति; **~-तात्ता** 1. जैसा-तैसा भोजन, 2. फुंसी-फोड़े पर बाँधने के लिए तैयार पुलिटस; **~बखत** प्रातःकाल का समय (जो यात्रा के लिए उपयुक्त माना जाता है); **~सुभा** 1. शांत स्वभाव, 2. प्रतिकार न लेने वाला।

सीळी-सात्तैं (स्त्री.) शीतला सप्तमी, (दे. बासोहड़ा)।

सील्ह (स्त्री.) सीलन, गीलापन।
सील (हि.)

सील्हणा (क्रि. अ.) नम होना; (वि.) जिसमें शीघ्र नमी आ जाए।
सीलना (हि.)

सीवन (स्त्री.) दे. सीम्मण।

सीस[1] (पुं.) 1. सिर, 2. माथा। **शीश** (हि.)

सीस[2] (स्त्री.) आशिष, आशीर्वाद, जैसे–गरीब की आत्माँ सीस देंघी।
आशिष (हि.)

सीसपाल (पुं.) महाभारत का एक पात्र जिसका वध श्रीकृष्ण ने किया।
शिशुपाल (हि.)

सीस्सम (स्त्री.) एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी भवन-निर्माण में प्रयुक्त होती है। **शीशम** (हि.)

सीस्सा (पुं.) 1. काँच, 2. दर्पण; **~-दिखाई** विवाह के समय संपन्न एक रस्म जिसमें नाई दूल्हे को दर्पण दिखाता है। **शीशा** (हि.)

सीस्सी (स्त्री.) बोतल। **शीशी** (हि.)

सीह (पुं.) शेर। **सिंह** (हि.)

सीही (स्त्री.) 1. गुड़गावाँ के निकट ऊँचे ढूह पर बसा एक गाँव जिसे सूरदास की जन्म-भूमि माना जाता है (एक अन्य जनधारणा के अनुसार यहाँ जनमेजय का नाग-यज्ञ हुआ था), 2. शेर के निवास की भूमि, 3. शेरनी।

सीहल्ला (वि.) गीला, (दे. आल्ला)।

सुँगड़णा (क्रि. अ.) दे. सुकड़णा।

सुँघाणा (क्रि. स.) 1. गंधयुक्त वस्तु को नाक के पास लाना, 2. मादा पशु को नर पशु के पास ले जाकर गरमाने की अवस्था की जाँच करवाना।
सुँघाना (हि.)

सुँघाना (क्रि. स.) दे. सुँघाणा।

सुंडी (स्त्री.) दे. सूँड्डी।

सुंदर (वि.) आकर्षक, मनोहर (तुल. सोहणा)।

सुंदरी (स्त्री.) सुंदर महिला।

सुंदारा (पुं.) दे. सिंधारा।

सु (उप.) एक उपसर्ग जो संज्ञा के साथ लगकर श्रेष्ठ, सुंदर आदि का अर्थ देता है।

सुआणा (क्रि. स.) सुलाना।

सुआया (वि.) दे. सवाया।

सुआर (पुं.) 1. आरोही, 2. अश्वारोही। **सवार** (हि.)

सुआल्ला (पुं.) (कौर.) दे. सिवाल्ला।

सुआसण (स्त्री.) दे. सिवासण।

सुकड़ण (स्त्री.) 1. सलवट, 2. चुन्नट। **सिकुड़न** (हि.)

सुकड़णा (क्रि. अ.) 1. अंग-संकोचन करना, अंग-संकोच होना, 2. कपड़ा आदि ओछा होना, 3. संकोच करना; (वि.) जो सिकुड़ जाए, जैसे–सुकड़णा लत्ता। **सिकुड़ना** (हि.)

सुकड़माँ (वि.) 1. सिकुड़ हुआ, 2. अंदर की ओर धँसा हुआ, 3. ओछा। **सिकुड़वाँ** (हि.)

सुकनी[1] (वि.) भविष्यवक्ता। **शकुनी** (हि.)

सुकनी[2] (पुं.) दुर्योधन का मामा।

सुकर (पुं.) धन्यवाद। **शुक्र** (हि.)

सुकल (वि.) सफ़ेद; (पुं.) 1. ब्राह्मणों का एक गोत्र, 2. शुक्ल पक्ष। **शुक्ल** (हि.)

सुकलाई (स्त्री.) 1. ईंख के पास उगने वाली एक लता, इस पर पीले फूल उगते हैं। 2. गुड़ बनाने में काम आने वाला एक जैव रसायन।

सुकाणा (क्रि. स.) 1. गीलापन दूर करना, 2. कमज़ोर करना। **सुखाना** (हि.)

सुकीन (वि.) 1. दे. सोकीन, 2. फ़ैशनपरस्त। **शौक़ीन** (हि.)

सुक्कर (पुं.) शुक्रवार, सप्ताह का पाँचवाँ दिन। **शुक्र** (हि.)

सुक्करवारी (वि.) शुक्रवार से संबंधित।

सुख (पुं.) 1. आराम, 2. साँसारिक उपलब्धियों से तृप्ति की अवस्था, (सुख चार प्रकार का कहा गया है–पहला सुख निरोग्गी काया, दूज्जा सुख पास हो माया। तीज्जा सुख सुखवंती नारी, चोत्था सुख सुत आज्ञाकारी।।); **~का टुकड़ा** चैन की रोटी।

सुखद (वि.) सुख देने वाला, सुखदायी।

सुख दे (पुं.) एक ऋषि। **शुकदेव** (हि.)

सुखनी (वि.) दे. सुखिया।

सुखमाँ (स्त्री.) सुंदरता। **सुषमा** (हि.)

सुखवासी (वि.) गांव का वह निवासी जिसकी कोई जमीन जायदाद तक न हो।

सुखाणा (क्रि. स.) दे. सुकाणा।

सुखाना (क्रि. स.) दे. सुकाणा।

सुखाला (वि.) दे. सुखाळा।

सुखाळा (वि.) 1. सरल, 2. सहज, सुगम, 3. निष्कंटक। **सुखाला** (हि.)

सुखिया (वि.) 1. सुखी, 2. 'दुखिया' का विलोम।

सुखी (वि.) 1. आनंददायक अवस्था का, 2. जिसे हर प्रकार का सुख हो।

सुखीराम गुणी (पुं.) (1857-1905) जिला महेन्द्रगढ़ गाँव स्याणा का एक लोक कवि जिसने महाभारत की अनेक कथाओं पर स्वाँग लिखे।

सुगंध (स्त्री.) दे. सुगंधी।

सुगंधी (स्त्री.) अच्छी गंध; (वि.) प्रसिद्धि। **सुगंधि** (हि.)

सुगढ़ (वि.) चतुर। **सुघड़** (हि.)

सुगण (पुं.) शकुन।

सुगणी[1] (स्त्री.) जुए के आगे की ओर निकली हुई छोटी कील।

सुगणी[2] (पुं.) भविष्य वक्ता।

सुगम (वि.) सरल, सहज, आसान।

सुगात (स्त्री.) भेंट, उपहार। **सौगात** (हि.)

सुगरा (पुं.) निगुरा का विलोम।

सुग्रीव (पुं.) बाली का भाई जिसकी सेना ने सीता की खोज और लंका विजय में श्रीराम की सहायता की थी।

सुचारु (वि.) अत्यंत सुंदर।

सुच्चा (वि.) 1. जो उच्छिष्ट न हो, जो जूठा न हो, 2. पवित्र, शुद्ध, 3. (दे. साच्चा)। **सच्चा** (हि.)

सुजनी (स्त्री.) दे. सूजणी।

सुजान (वि.) चतुर, अक्मलंद।

सुझा (पुं.) 1. सूचना, 2. वह बात जो सुझाई जाए। **सुझाव** (हि.)

सुझाणा (क्रि. स.) 1. दूसरे के ध्यान या दृष्टि में लाना, 2. सुझाव देना। **सुझाना** (हि.)

सुझाना (क्रि. स.) दे. सुझाणा।

सुझाव (पुं.) दे. सुझा।

सुट (स्त्री.) हुक्के या बीड़ी आदि की घूँट।

सुटकणा (क्रि. अ.) खिसकना, काम से बच निकलना; (क्रि. स.) दे. सटकणा।

सुट्याणा (क्रि. स.) हुक्का पीना।

सुड़सुड़ाणा (क्रि. स.) नाक से 'सुड़'-'सुड़' की ध्वनि निकालना।

सुडौल (वि.) 1. अच्छे डील-डौल का, हृष्ट-पुष्ट, 2. सुंदर।

सुढाळ (वि.) कुढ़ाल का विलोम।

सुणणा (क्रि. स.) 1. ध्यान से बात सुनना, 2. असह्य बात सुनना, 3. किसी की बात सहन करना; (क्रि. अ.) सुनाई देना, सुनाई पड़ना। **सुनना** (हि.)

सुणसुणिया (पुं.) छछूँदर, लंबी चोंच और भूरे रंग वाला चूहे जैसा एक जीव।

सुणाई (स्त्री.) 1. सुनवाई, 2. मुकदमे या शिकायत आदि की सुनवाई; (क्रि. स.) 'सुणाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~होणा** 1. हाक़िम या अधिकारी द्वारा कष्ट को सुनना, 2. न्याय मिलना। **सुनाई** (हि.)

सुणाणा (क्रि. स.) 1. खरी-खोटी कहना, 2. बताना, कहना, 3. कथा आदि सुनाना या बाँचना, 4. हाल-चाल कहना। **सुनाना** (हि.)

सुणी-मिणी (वि.) दे. सुणी-सुणाई।

सुणी-सुणाई (वि.) 1. अन्य से सुनी हुई, 2. प्रचलित दंत-कथा, 3. अविश्वसनीय (बात)। **सुनी-सुनाई** (हि.)

सुतंतर (वि.) आज़ाद। **स्वतंत्र** (हि.)

सुत (पुं.) पुत्र, बेटा।

सुतणा (क्रि. अ.) 1. कमज़ोर होना, 2. इकहरा शरीर होना, 3. सूता जाना। **सुतना** (हि.)

सुतना (पुं.) दे. सुथना; (क्रि. अ.) दे. सुतणा।

सुतमाँ (वि.) 1. सुता हुआ, इकहरा (गात), 2. कृश (अंग), जैसे-सुतमाँ गात उभरमाँ छात्ती। **सुतवाँ** (हि.)

सुतर (पुं.) ऊँट।

सुतरी (स्त्री.) दे. सूँतळी।

सुतर-सवार (पुं.) दे. ऊँटवाळ[2]।

सुतली (स्त्री.) दे. सूँतळी।

सुतारी (स्त्री.) मोची की सूई।

सुतावण (पुं.) मेख संक्राति का दिन। उ. म्हारे घोरी के तीन नहाण, संकरांत, फगुआ अर सुतवाण।

सुत्थन (पुं.) दे. सुथना।

सुथन (पुं.) दे. सुथना।

सुथना (पुं.) पायजामा, कलीदार पायजामा।

सुथनी (स्त्री.) 1. सलवार (ऊनता- द्योतक), 2. दे. तिगनी।

सुदर्शन (पुं.) 1. भगवान श्रीकृष्ण के चक्र का नाम, 2. एक पौधा जो ओषधि के काम आता है।

सुदामा (पुं.) दे. सुदाम्मा।

सुदाम्मा (पुं.) श्री कृष्ण का मित्र; (वि.) निर्धन (ब्राह्मण)। **सुदामा** (हि.)

सुदिन (पुं.) 1. अनुकूल समय, 2. शुभ दिवस, 3. 'कुदिन' का विलोम; **~लागणा** अनुकूल समय आना।

सुदी (स्त्री.) शुक्ल पक्ष।

सुदेषणा (स्त्री.) राजा विराट की पत्नी।

सुदेस (पुं.) मातृभूमि, वतन। **स्वदेश** (हि.)

सुदेस्सी (वि.) अपने देश का बना हुआ। **स्वदेशी** (हि.)

सुद्धी (स्त्री.) 1. स्वच्छता, 2. एक संस्कार जिसके द्वारा किसी की शुद्धि की जाती है। **शुद्धि** (हि.)

सुध[1] (स्त्री.) 1. सुध, होश, चेत, 2. याद, ख़बर पता; **~आणा** 1. याद आना, स्मरण हो आना, 2. होश में आना; **~खोणा** 1. प्यार में पागल होना, 2. अचेत होना; **~लेणा** ख़ैर-ख़बर लेना। **सुधि** (हि.)

सुध[2] (वि.) 1. पवित्र, जो उच्छिष्ट न हो, 2. जिसमें कोई मिलावट न हो, 3. पूरा (तौल)। **शुद्ध** (हि.)

सुध[3] (पुं.) जगाधरी के निकट शत्रुघ्न नाम का स्थान जहाँ की खुदाई से वहाँ ब्राह्मी लिपि के विकास के प्रमाण मिले हैं।

सुध[4] (वि.) समेत। उदा.–सुध रही थी सुध लत्ते चाळ। (अव्य.) दे. सुधां।

सुधमाँ (वि.) सधा हुआ (शरीर), (दे. सुतमाँ)।

सुधरणा (क्रि. अ.) 1. चाल-चलन में सुधार होना, 2. 'बिगड़णा' का विलोम। **सुधरना** (हि.)

सुधरना (क्रि. अ.) दे. सुधरणा।

सुधाँ (अव्य.) समेत, सहित–तेरे सुधाँ तीन आदमी थे।

सुधाई (स्त्री.) सीध; **~बाँधणा** सीध बाँधना। **सिधाई** (हि.)

सुधार (पुं.) 1. सुधरने की क्रिया या भाव, शोधन, 2. 'बिगाड़' का विलोम।

सुधारक (पुं.) 1. सुधार करने वाला, संशोधक, 2. वह जो धार्मिक या सामाजिक सुधार करता हो।

सुधारणा (क्रि. स.) 1. मरम्मत करना, 2. बिगड़ी बात बनाना, 3. (दे. सिधारणा)। **सुधारना** (हि.)

सुधारना (क्रि. स.) दे. सुधारणा।

सुधि (स्त्री.) दे. सुध[1]।

सुणणा (क्रि.) सुनी बात को व्यवहार में लाना।

सुनना (क्रि. स.) दे. सुणणा।

सुनपत (पुं.) श्रोणीपथ, सोनीपत के आस-पास का भाग जिसकी माँग पांडवों ने कलह उप-शांति के लिए की थी, (ह. लो. सा. सप्त. 52–53)। **सोनीपत** (हि.)

सुनरा (पुं.) दे. सुनार।

सुनवाई (स्त्री.) दे. सुणाई।

सुनसान (वि.) 1. निर्जन, 2. हलचलरहित; (पुं.) जंगल।

सुनहरा[1] (वि.) स्वर्णिम। **सुनहला** (हि.)

सुनहरा[2] (पुं.) दे. सिंधारा।

सुनहला (वि.) दे. सुनहरा।

सुनाई (स्त्री.) दे. सुणाई।

सुनाना (क्रि. स.) दे. सुणाणा।

सुनार (पुं.) 1. सोने-चाँदी का काम करने वाला कारीगर, 2. एक जाति। **स्वर्णकार** (हि.)

सुनारण/सुनारी (स्त्री.) 1. सुनार की पत्नी, 2. सुनार जाति की महिला।

सुनाहरा (पुं.) दे. सिंधारा, 2. दे. कोथळी।

सुनीति (स्त्री.) 1. उत्तम नीति, 2. ध्रुव भक्त की माता।

सुनेग (वि.) 1. उचित क्रम 2. उचित व्यवहार, 3. सुप्रथा। **~लाणा** 1. सदुपयोग करना, 2. उचित निवेश करना।

सुन्न (वि.) शरीर के अंग का स्पंदनहीन होने का भाव।

सुन्नत (स्त्री.) ख़तना, मुसलमानी।

सुन्नी (पुं.) 1. मुसलमानों का एक संप्रदाय, 2. सुन्नी संप्रदाय का व्यक्ति।

सुपना (पुं.) स्वप्न। **सपना** (हि.)

सुपरद (वि.) सौंपा हुआ। **सुपुर्द** (हि.)

सुपात्तर (वि.) 1. योग्य, 2. आज्ञाकारी (संतान), 3. जिसमें पात्रता हो। **सुपात्र** (हि.)

सुपात्र (वि.) दे. सुपात्तर।

सुपात्रा (स्त्री.) 1. शूरसेन की पत्नी, 2. गर्ग, गावल, गोयल गोत्रों की जन्मदात्री।

सुपारा (पुं.) (?) पढे जै सुपारे याद मेरे सैं।

सुपारी (स्त्री.) 1. पूग, छालिया, नारियल की जाति का एक पेड़ जिसके फल के टुकड़े पान में रखे जाते हैं, 2. लिंग का अग्र भाग।

सुपुत्र (पुं.) दे. सपूत।

सुफळ (पुं.) 1. क़ामयाब, 2. अच्छा फल, 3. क़ामयाबी, जैसे–तेरा हरा ए पीप्पळ सुफळ फळिये करहे सुहाग्गण आरता (लो. गी.)। **सफल** (हि.)

सुफेत (वि.) दे. सफैद।

सुबक (वि.) सुंदर। **सुभग** (हि.)

सुबकणा (क्रि. अ.) 1. हिचकी लेकर रोना, 2. (नहाते समय) ठंड के कारण फुरफुरी अनुभव करना; (वि.) सुबक-सुबक कर रोने वाला। **सुबकना** (हि.)

सुबकी (स्त्री.) 1. रोते समय ली गई हिचकी, 2. ठंड के कारण आने वाली फुरफुरी।

सुबरण (पुं.) स्वर्ण।

सुबस (वि.) सुयश।

सुबाण (स्त्री.) 1. अच्छी आदत, 2. 'कुबाण' का विलोम। **सुबान** (हि.)

सुबेरी (स्त्री.) सवेरा।

सुबोध (वि.) सरल, जो आसानी से समझ में आ जाए।

सुभ (वि.) कल्याणकारी; (पुं.) कल्याण, भलाई। **शुभ** (हि.)

सुभग (वि.) 1. सुंदर, मनोहर, 2. सुखद।

सुभद्रा (स्त्री.) दे. सोहदरा।

सुभा[1] (पुं.) 1. मिज़ाज़, 2. आदत। **स्वभाव** (हि.)

सुभा[2] (पुं.) आशंका। **शुबा** (हि.)

सुमंतरा (स्त्री.) दे. सुमित्रा।

सुमत (स्त्री.) 1. सुबुद्धि, 2. 'कुमत' का विलोम। **सुमति** (हि.)

सुमति (स्त्री.) दे. सुमत।

सुमन (पुं.) पुष्प।

सुमरणा (क्रि. स.) 1. माला जपना, 2. स्मरण करना, भगवान को याद करना। **सुमरना** (हि.)

सुमरणी (स्त्री.) पूजा की माला। **सुमरनी** (हि.)

सुमार (स्त्री.) शुमार। गिनती।

सुमित्रा (स्त्री.) दशरथ की पत्नी जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता थी।

सुमेरु (पुं.) 1. पर्वत शिखर, 2. माला का शीर्ष मनका (सुमेरु)।

सुम्मार (पुं.) 1. दे. सोम्मार, 2. शुमार, गिनती।

सुरंग (वि.) दे. सुरख।

सुर[1] (पुं.) लय। **स्वर** (हि.)

सुर[2] (पुं.) देवता।

सुरक्षा (स्त्री.) हिफ़ाजत, रखवाली।

सुरक्षित (वि.) भली प्रकार से रक्षित।

सुरख (वि.) लाल, गहरा लाल। **सुर्ख़** (हि.)

सुरखी (स्त्री.) 1. लाली, 2. खून की लाली, 3. समाचार-पत्र के मुख्य शीर्षक। **सुर्खी** (हि.)

सुरग (पुं.) सत्कर्म करने वालों को मृत्यु के बाद मिलने वाला लोक; **~-लोक** स्वर्गलोक, लोक जहाँ देवता वास करते हैं। **स्वर्ग** (हि.)

सुरगबास (पुं.) 1. स्वर्ग में वास, 2. मृत्यु के बाद स्वर्ग मिलने का भाव, 3. मृत्यु। **स्वर्गवास** (हि.)

सुरज (पुं.) 1. सूर्य, 2. पुत्र; (वि.) रूपवान। **सूरज** (हि.)

सुरजमुखी (पुं.) एक फूल जिसका मुख सूर्य की ओर रहता है, (दे. सूरजमुखी)। **सूर्यमुखी** (हि.)

सुरड़ (स्त्री.) तरल भोजन करते समय या नाक के रुकने पर उत्पन्न ध्वनि; (क्रि. स.) 'सुरड़'-'सुरड़' की ध्वनि के साथ राबड़ी या खिचड़ी आदि को पीना, 2. बिना चबाए खिचड़ी आदि खाना, 3. साँस को ऊपर की ओर सहारना (नाक बंद होने की स्थिति में)।

सुरड़ा (वि.) 1. गलीज़, 2. नाक से 'सुरड़'-'सुरड़' करते रहने वाला, 3. भोजन में शुद्धता न बरतने वाला। दे. सपड़का।

सुरड़ाट्टा (पुं.) 1. 'सुरड़'-'सुरड़' की ध्वनि, 2. नाक रुकने के कारण नाक से उत्पन्न ध्वनि।

सुरत[1] (स्त्री.) 1. चेहरा, मुखाकृति, 2. झलक, किसी से रूह मिलने का भाव, 3. होश, 4. अक्ल समझ; **~आणा** होश आना। **सूरत** (हि.)

सुरत[2] (स्त्री.) ध्यान (कुछ कवियों ने इसे 'अगर पंथ' कहा है, इसका रंग श्वेत और स्थान दक्षिण दिशा कहा है); **~लाणा** समाधि लगाना। **सुरति** (हि.)

सुरती[1] (स्त्री) समाधि की एक अवस्था। **सुरति** (हि.)

सुरती[2] (स्त्री.) एक प्रकार का तंबाकू।

सुरमा (पुं.) 1. पेंसिल का सिक्का, 2. आँखों का काजल; **~सारणा** काजल डालना।

सुरमादानी (स्त्री.) काजल रखने का पात्र।

सुरसा (वि.) एक नागमाता जिसने हुनमान को लंका जाते समय समुद्र पार करने से रोका था।

सुरसाज (पुं.) स्वर तथा वाद्य यंत्र।

सुरस्ती (स्त्री.) विद्या की देवी, (पौष शुक्ल द्वितीया को इनकी जयंती मनाई जाती है), (दे. भवान्नी)। **सरस्वती** (हि.)

सुरही (स्त्री.) देवलोक की गाय। **सुरभि** (हि.)

सुरा (स्त्री.) शराब।

सुराख (पुं.) 1. छिद्र, 2. (दे. सुराग)।

सुराग (पुं.) टोह, पता, अता-पता।

सुराज (पुं.) 1. सुराज, अच्छा राज्य, 2. स्वराज्य, अपना राज्य।

सुराड़ा (पुं.) सूअर रोकने का बाड़ा, (दे. सूरखड्डी)।

सुरातिया (पुं.) दिन-रात निरंतर सामूहिक चर्खा कातने का प्रक्रम।

सुराही (स्त्री.) दे. झारी।

सुरीला (वि.) दे. सुरील्ला।

सुरील्ला (वि.) मीठे सुर वाला।
सुरीला (हि.)

सुरुचि (स्त्री.) 1. ध्रुव भक्त की विमाता, राजा उत्तानपाद की पत्नी, 2. अच्छी रुचि; (वि.) अच्छी या उत्तम रुचि वाला।

सुरेणु (स्त्री.) सरस्वती नदी का प्राचीन नाम।

सुर्ख़ (वि.) दे. सुरख।

सुर्रा (पुं) 1. गप (तुल. गड़ंग), 2. चिनगारी, आग का पतंगा, 3. (दे. छुररा)।

सुर्राट्टा (पुं) (नाक से उत्पन्न) 'सुर'-'सुर' की ध्वनि।

सुलक्खण (पुं.) शुभ लक्षण; (स्त्री.) जाटों की एक उप-जाति। **सुलक्षण** (हि.)

सुलक्षण (पुं.) दे. सुलक्खण।

सुलखणी (वि.) 1. अच्छे आचार वाली, सुलक्षणा, 2. 'कुलखणी' का विलोम।
सुलखनी (हि.)

सुलगना (क्रि. अ.) दे. सिलगणा।

सुलगाना (क्रि. स.) दे. सिलगाणा।

सुलछणी (वि.) दे. सुलखणी।

सुलझणा (क्रि. अ.) उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर होना या खुलना।
सुलझना (हि.)

सुलझना (क्रि. अ.) दे. सुलझणा।

सुळझाणा (क्रि. स.) 1. उलझी चीज़ को सुलझाना, 2. झगड़ा निपटाना, 3. लड़ते हुओं को दूर-दूर करना।
सुलझाना (हि.)

सुलझाना (क्रि. स.) दे. सुळझाणा।

सुळझेड़ा (पुं.) 1. समझौता, 2. निपटारा, 3. सुलझने का भाव या क्रिया।

सुलटा (वि.) 1. सीधा, 2. सरल स्वभाव का, 3. 'उलटा' का विलोम।

सुलतान (पुं.) बादशाह।

सुलफ़ा (पुं.) दे. सुल्फा।

सुलभ (वि.) 1. सहज में मिलने वाला, 2. आसान।

सुळसाँ (स्त्री.) 1. दे. सुळसी, 2. सुरसा, (दे. सुरसा), 2. (दे. सुरस्ती)।

सुळसुळाट (स्त्री.) 1. जूँ रेंगने का भाव, 2. रेंगते समय उत्पन्न ध्वनि, 3. अफ़वाह।
सरसराहट (हि.)

सुळसी (स्त्री) एक अन्न कीट।
सुरसी (हि.)

सुलह-सफाई (स्त्री.) समझौता।

सुलाँकणा (क्रि. स.) 1. सीधी ओर लाँघना, उस ओर से पुनः लाँघना जहाँ से छलाँग लगाकर पहुँचा गया हो, 2. 'उलाँकणा' का विलोम।

सुलाँक्खा (वि.) 1. दोनों आँखों वाला, 2. 'निरंद-आँद्धा' का विलोम।

सुलांखणी (स्त्री.) 1. दे. सुलखणी, 2. दे. सुलछणी।

सुलाना (क्रि. स.) दे. सुआणा।

सुलेमान (पुं.) 1. यहूदियों का एक प्रसिद्ध

बादशाह जो पैगबंर माना जाता है, 2. पंजाब के निकट एक पहाड़।

सुलोचना (स्त्री.) मेघनाद की पत्नी; (वि.) सुंदर नेत्र वाली।

सुल्फा (पुं.) एक नशीला पदार्थ जिसे सुल्फ़ी आदि में पीया जाता है। **सुलफ़ा** (हि.)

सुल्फ़ी (स्त्री.) लंबी चिलम जिसके नीचे कपड़ा लगाकर उसे पीया जाता है।

सुवाणा (क्रि. स.) 1. पशु को गाभिन करवाना, 2. सुलाना, 3. धराशायी करना। **सुआना** (हि.)

सुवाद (पुं.) दे. स्वाद।

सुशील (वि.) 1. शील स्वभाव का, 2. विनीत, विनम्र।

सुषमा (स्त्री.) परम शोभा (तुल. सुखमाँ)।

सुषैण (पुं.) लंका का एक वैद्य जिसने लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर की थी।

सुसकणा (क्रि. अ.) 1. तड़पना, 2. मरणासन्न होना, 3. थोड़ा-थोड़ा साँस बाकी रहना, 4. सिसकी भरना। **सिसकना** (हि.)

सुसकाणा (क्रि. स.) दे. सुसकारणा।

सुसकारणा (क्रि. स.) 1. सीटी बजाना, 2. बच्चे को शौच बैठना, 3. छोटे जीव-जंतु को सीटी बजाकर या ध्वनि से टहलाना। **सिसकारना** (हि.)

सुसताणा (क्रि. अ.) थोड़ा विश्राम करना, थकान उतारना। **सुस्ताना** (हि.)

सुसताना (क्रि. अ.) दे. सुसताणा।

सुसरा (पुं.) 1. श्वसुर, 2. एक गाली। **ससुर** (हि.)

सुसराड़ (स्त्री.) 1. श्वसुर का घर, 2. लड़की या लड़के की ससुराल–सुपने मैं सुसराड़ डिगर ग्या, मन की चाही होगी। **ससुराल** (हि.)

सुसराल (स्त्री.) दे. सुसराड़।

सुसरी (स्त्री.) 1. औरत को दी जाने वाली एक गाली, 2. (दे. सास्सू)।

सुसर्मा (पुं.) त्रिगर्तों के प्रधान सेनापति जिसने दुर्योधन का पक्ष लिया और पांडवों का विरोध किया, (दे. तिगाळा)। **सुशर्मा** (हि.)

सुसाणा (क्रि. अ.) 1. तेज़ी से नाक से साँस लेना, 2. सीटी बजाकर बच्चे को शौच बैठाना। **सुसाना** (हि.)

सुसायटी (स्त्री.) सोसायटी।

सुस्त (वि.) 1. आलसी, 2. मंद, 3. धीमी चाल वाला।

सुस्ताणा (क्रि. अ.) 1. विश्राम करना, 2. पड़ाव डालना। **सुस्ताना** (हि.)

सुस्ती (स्त्री.) आलस्य।

सुस्सा (पुं.) शशक, ख़रगोश।

सुहा (पुं.) स्वाह।

सुहाग (पुं.) 1. सधवापन, 2. पति; **~की चूड़ी** वह सुहाग-चूड़ी जिसे मनिआर बिना पैसे लिए पहनाता है। **सौभाग्य** (हि.)

सुहागतरी (स्त्री.) वह प्याली जिसमें सुनार सुहाग और टाँका मिलाकर रखते हैं।

सुहागा (पुं.) एक प्रकार का क्षार (तुल. सुहाग्गा)।

सुहागिन (स्त्री.) दे. सुहाग्गण।

सुहाग्गण (स्त्री.) सधवा, सौभाग्यवती। **सुहागिन** (हि.)

सुहाग्गा (पुं.) 1. एक प्रकार का क्षार, 2. पाटा, (दे. मैज)। **सुहागा** (हि.)

सुहाड़ा (पुं.) पिघली चाँदी बनाने का यंत्र।

सुहाड़ी (स्त्री.) एक प्रकार का जंबूर।

सुहाण (स्त्री.) सहन करने का भाव; **~नाँ होणा** 1. ईर्ष्या करना, 2. किसी को सह न सकना। **सुहान** (हि.)

सुहाणा[1] (क्रि. अ.) 1. कोई गरम वस्तु या वस्त्र आदि शरीर के अनुकूल लगना, 2. अच्छा लगना; (क्रि.स.) पशु को गाभिन कराना; (वि.) सुहावना, मन को लुभाने वाला। **सुहाना** (हि.)

सुहाणा[2] (पुं.) सुनार का कणी जड़ने का औजार।

सुहाणी (स्त्री.) छोटी चिमटी; (वि.) सुहावनी।

सुहाता (वि.) दे. सुहामता।

सुहाना (क्रि. अ.) दे. सुहाणा; (वि.) दे. सुहाणा।

सुहामता (वि.) 1. सहने योग्य, 2. ऐसी वस्तु जो शरीर को न अधिक गरम और न अधिक ठंडी लगे। **सह्य/सुहाता** (हि.)

सुहाल (पुं.) दे. सुहाळ[1]।

सुहाळ[1] (पुं.) सख्त आटे या मैदे की पूरी विशेष।

सुहाळ[2] (वि.) पुरुष-मैथुन की अभ्यस्त मादा पशु।

सुहाळी (स्त्री.) सुहारी, सख्त आटे की छोटी पूरी–हाळी का पेट सुहाळी तैं नाँ भरै। **सुहाली** (हि.)

सुहावना (वि.) दे. सुहाणा।

सुहेल्ला (वि.) 1. सुखद, सरल, 2. 'दुहेल्ला' का विलोम, 3. (दे. सहेल्ला[1])। **सुहेला** (हि.)

सुहेल्ली (स्त्री.) दे. सहेल्ली।

सूँ[1] (क्रि. अ.) वर्तमानकालिक 'होना' क्रिया का उत्तम पुरुष एकवचन का रूप, जैसे–करूँ सूँ (कर रहा हूँ)। **हूँ** (हि.)

सूँ[2] (स्त्री.) 1. साँस लेते समय नाक से निकलने वाली ध्वनि, सूँ-सूँ की ध्वनि, 2. (दे. सूँह)।

सूँ[3] (अव्य.) से (उससे)।

सूँघणा (क्रि. स.) गंध परखना; (वि.) अल्पाहारी। **सूँघना** (हि.)

सूँघणी (स्त्री.) 1. हुलास, 2. बच्चे की जननेंद्री। **सूँघनी** (हि.)

सूँघना (क्रि. स.) दे. सूँघणा।

सूँटकी (स्त्री.) कमची, पतली लचीली टहनी (तुल. कामची); **~खेल्हणा** विवाह के बाद संपन्न एक रस्म जिसमें दूल्हा-दुलहन एक-दूसरे को कमची मारते हैं और स्त्रियाँ गीत गाती हैं (यह खेल संभवतः एक-दूसरे के स्वभाव को परखने के लिए है)।

सूठँ (स्त्री.) सूखी अदरक। **सोंठ** (हि.)

सूँड (पुं) 1. नाभि पर उभरा हुआ मांस-पिंड, 2. नाभि, 3. नर पशु की मुतान, 4. हाथी का सूँड, 5. उदर नाल (दे. ओरनाळ)।

सूंडवा (पुं.) हाथी सूंड जैसी टेढे आकार की साइफन टाइप नली जो खड्ढ़े या नहर के पानी को खेत में निकालने के लिए काम लाई जाती है।

सूँडी (स्त्री.) दे. सूँड्डी।

सूँड्डा (पुं.) एक जाट गोत।

सूँड्डी (पुं.) 1. नाभि, 2. एक कीड़ा, 3. एक घास; **~ब्याणा** नाभि में काला मैल आना।

सूँड्डू (वि.) 1. वह व्यक्ति जिसकी नाभि पर उभरा हुआ मांस-पिंड हो, 2. ऐसे व्यक्ति को दिया गया उपनाम।

सूँतणा (क्रि. स.) 1. गीली वस्तु को चुटकी की दाब से दबाकर पानी निकालना, 2. पतला करना, 3. दुर्बल करना, 4. धार पैनी करना, जैसे–लई नंगी सूँत कटारी (लो. गी.), 5. तलवार खींचना। **सूतना** (हि.)

सूँतळी (स्त्री.) पटसन की बनी पतली डोरी। **सुतली** (हि.)

सूँबी (स्त्री.) लोहे में सूराख करने का यंत्र।

सूँस (पुं.) थुलथुल शरीर वाला जलजंतु विशेष; (वि.) मोटा और मूर्ख; **~-सा** मोटा और सुस्त।

सूँ-साँ (स्त्री.) 1. क्रोधित होने का भाव, 2. सूँघने का भाव या क्रिया–सूँ-साँ माणस की गँध आवै सै, 3. सूँ-सूँ की ध्वनि।

सूँह (स्त्री.) शपथ; **~खाण नैं** नाम लेने मात्र को, अल्प मात्रा में; **~खाणा/ठाणा** 1. वर्जित कार्य को न करने की शपथ लेना, 2. शपथ लेना; **~लागणा** पाप लगना (शपथ भंग की स्थिति में)। **सौगंध/सौंह** (हि.)

सूँही (क्रि. वि.) दे. साँहमीं।

सू (परसर्ग.) मेवाती में प्रयुक्त 'से' (पृथकता) तिर्यक रचना में अपादान का चिह्न, यथा–गाम सू (गाँव से)। **से** (हि.)

सूअड़ी (स्त्री.) दे. सूरी।

सूअर (पुं.) दे. सूर[1]।

सूआ[1] (पुं.) तोता; **~-सा नाँक** लंबा और नुकीला नाक। **शुक** (हि.)

सूआ[2] (पुं.) बड़ी और मोटी सूई।

सूआ[3] (पुं.) लाल रंग, गहरा लाल; (वि.) लाल रंग का; **~दामण** लाल रंग या कंद का दामन।

सूआ[4] (पुं.) ज्वार, बाजरे की फ़सल की चुटाई करते समय पाँच-दस पूलियों को शंकू आकार में खड़ा करके बनाया गया छायादार आश्रय, शंकू आकार में खड़ी की गई पूलियों का समूह।

सूआ[5] (पुं.) इंजेक्शन। 1. दे. सूआ [1,2,3]। 2. दे. सूई।

सूआ-लाग्गड़ (स्त्री.) वह पशु जिसने हाल ही में बच्चे को जन्म दिया हो, नवप्रसूता पशु।

सूई (स्त्री.) 1. वस्त्र सीने की सूई, 2. इंजेक्शन की सूई।

सूक (पुं.) शुक्र तारा; **~डूबणा** शुक्र तारा अस्त होना (इस तारे के अस्तकाल में आस्तिक हिंदू विवाह नहीं करते क्योंकि यह शुक्र या वीर्य का प्रतीक है, यह समय ढाई महीने तक रहता है); **~बळाणा** शुक्रास्त काल में कारणवश पति या पितृ-गृह गमन करने पर महिला का इसी काल में पुनः वापिस लौटना। **शुक्र** (हि.)

सूकड़ा (वि.) 1. दे. सूक्कू।

सूकणा (क्रि. अ.) 1. शुष्क होना, 2. दुर्बल होना, 3. पशु का दूध से सूखना; (वि.) जो शीघ्र सूखे; (पुं.) एक रोग जिसमें बच्चा कृशकाय हो जाता है। **सूखना** (हि.)

सूक्का (वि.) 1. जल-रहित, 2. दुर्बल, 3. निरा; (पुं.) 1. पशु के थान में डाला जाने वाला कूड़ा-कर्कट, 2. अनावृष्टि; **~बहम होणा** व्यर्थ का वहम होना; **~सीद्धा** दे. सीद्धा। **सूखा** (हि.)

सूक्कू (वि.) कृशकाय, दुर्बल।

सूक्ष्म (वि.) 1. बहुत छोटा, 2. बारीक।

सूखणा (क्रि. अ.) दे. सूकणा; (पुं.) दे. सूकणा।

सूखा (वि.) दे. सूक्का।

सूग (स्त्री.) 1. दुर्गंधयुक्त वस्तु से घृणा का भाव, 2. दुर्गंध, 3. जूठन के कारण ओठों के किनारे होने वाली फुंसियाँ, 4. वह गड्ढा जिसमें सूअर लेटता है।

सूगला (वि.) ग़लीज, मैला-कुचैला रहने वाला।

सूचना (स्त्री.) 1. संदेश, 2. ख़बर।

सूच्चा (वि.) 1. वह भोजन जो उच्छिष्ट या जूठा न हो, पवित्र (भोजन), 2. सीधा या दायाँ (हाथ), 3. असली (मोती आदि), 4. (दे. साच्चा)। **शुचि** (हि.)

सूजणा (क्रि. अ.) 1. सूजन आना, 2. क्रोध में मुँह फूलना; (वि.) जो शीघ्र सूज आए। **सूजना** (हि.)

सूजणी (स्त्री.) 1. कशीदाकारी की हुई ओढ़नी, 2. चद्दर विशेष; (वि.) जिस पर शीघ्र सोजिश आए। **सूजनी** (हि.)

सूजन (स्त्री.) 1. सूजने की क्रिया या भाव, 2. शोथ।

सूजना (क्रि. अ.) दे. सूजणा।

सूजी (स्त्री.) दे. रवा।

सूझ (स्त्री.) 1. अक्ल, समझ, 2. अद्‌भुत कल्पना, 3. दृष्टि।

सूझणा (क्रि. अ.) 1. दिखाई देना, 2. ध्यान में आना। **सूझना** (हि.)

सूझना (क्रि. अ.) दे. सूझणा।

सूट[1] (पुं) 1. सलवार-कमीज़, 2. कोट-पैंट, 3. समान जोड़े के उर्ध्व और अधो-वस्त्र।

सूट[2] (पुं.) गोली दागने का भाव या क्रिया।

सूट्टर (पुं.) ऊनी बनियान विशेष। **स्वैटर** (हि.)

सूड़ (पुं.) 1. खेत से झाड़-झंखाड़ उखाड़ने की क्रिया, 2. पीटने की क्रिया; (स्त्री.) छोटी झाड़ी; (क्रि. स.) 'सूड़णा' क्रिया का आदे. रूप; **~करणा** 1. जुताई से पहले खेत से झाड़-झंखाड़ काटना, 2. पीटना।

सूड़णा (क्रि. स.) 1. खेत के झाड़-झंखाड़ निकालना, (दे. झरूड़णा), 2. अधिक पिटाई करना। **सूड़ना** (हि.)

सूण[1] (पुं.) दे. सोण।

सूण[2] (पुं.) सोना।

सूणा (क्रि. स.) 1. (पशु द्वारा) बच्चे को जन्म देना, 2. गाभिन करना।

सूत (पुं.) 1. धागा, डोरा, 2. रूई, 3. एक नाप विशेष, 4. कारीगर द्वारा पत्थर या लकड़ी पर निशान डालने की डोरी, 5. श्वेत केश; (क्रि. स.) '**सूतणा**' क्रिया आ आदे. रूप; **~पक्का करणा** पक्का प्रबंध करना; **~बठाणा** उचित व्यवस्था करना; **~बैठणा** काम बनना, स्थिति अनुकूल होना; **~मैं आणा** 1. काम वश में आना, 2. स्थिति क़ाबू में होना; **~लागणा** काम बनना, उपाय निकलना। **सूत्र** (हि.)

सूतक (पुं.) दे. सूत्यक।

सूतणा (क्रि. स.) दे. सूँतणा।

सूती (वि.) दे. सूत्ती।

सूत्तक (पुं.) दे. सूत्यक।

सूत्तग (पुं.) (कौर.) दे. सूत्यक।

सूत्ती (वि.) सूती, सूत का बुना (कपड़ा)।

सूत्यक (पुं.) 1. शिशु-जन्म पर लगभग दस दिन तक रहने वाला अशौच, 2. ग्रहण-काल में रहने वाला आशौच, (दे. पात्तक); **~लागणा** 1. ग्रहण से पूर्व वायु-मंडल में अपवित्रता आना, 2. कष्ट-काल आरंभ होना। **सूतक** (हि.)

सूत्या (वि.) सोया हुआ।

सूत्र (पुं.) 1. धागा, डोरा, 2. जनेऊ, 3. करघनी, कटि-भूषण, 4. नियम, व्यवस्था, 5. थोड़े अक्षरों में कहा गया ऐसा कथन जो बहुत अर्थ प्रकट करे, फार्मूला, 6. सुराग।

सूत्रपात (पुं.) प्रारंभ, शुरू।

सूथन (पुं.) दे. सुत्थन।

सूथनी (स्त्री.) दे. सुथनी।

सूद (पुं.) 1. ब्याज, 2. रसोइया, पाचक।

सूदखोर (वि.) बहुत ब्याज लेने वाला।

सूद्दर (पुं.) 1. शूद्र जाति, 2. शूद्र जाति का व्यक्ति, 3. अस्पृश्य जाति का व्यक्ति; (वि.) 1. खान-पान में शुचिता न बरतने वाला, 2. आचारहीन, 3. अधम। **शूद्र** (हि.)

सूद्धा (वि.) 1. बिना मोड़ खाए, 2. सीध ा या दायाँ (भाग), 3. भोला- भाला, 4. सरल व्यवहार का, 5. (वह पशु) जो मरखना न हो, 6. खस्सी, बधिया; **~करणा** 1. सही मार्ग पर लाना, 2. खस्सी करना; **~कहणा** स्पष्ट कहना; **~चालणा** अपने काम से काम रखना; **~होणा** 1. बुरा मार्ग छोड़ कर ठीक मार्ग पर आना, 2. कथनानुसार आचरण करना। **सीधा** (हि.)

सूध[1] (स्त्री.) सीध; **~बाँधणा** 1. सीध लेना, 2. सीध में नापना, 3. नाक की सीध लेना। **सीध** (हि.)

सूध[2] (स्त्री.) 1. स्मृति, 2. ख़ैर-ख़बर, हालचाल; **~आणा/होणा** स्मरण होना; **~लेणा** हालचाल पूछना। **सुधि** (हि.)

सूना (वि.) दे. सून्ना[2]। तुल. कुंदन। तुल. सोरण।

सूनापन (पुं.) 1. सन्नाटा, 2. सूना होने का भाव।

सून्ना[1] (पुं.) सोना, स्वर्ण।

सून्ना[2] (वि.) 1. वह वस्तु (विशेषतः पशु) जिसका कोई स्वामी न हो, 2. स्वच्छंद विचरण करने वाला, 3. यतीम, 4. निर्जन, शून्य, 5. अकेला-किस तराँ सून्ना-सून्ना बैठ्या सै?, 6. ऊजड़ (स्थान); **~करणा** 1. स्वच्छंद छोड़ना, 2. निस्सहाय करना; **~चरणा** निर्बाध विचरण करना; **~छोडना** 1. रक्षण के बिना छोड़ना, जैसे-सून्ना घर छोड़ना, 2. पशु को स्वच्छंद घूमने देना; **~होणा** स्वच्छंद होना। **सूना** (हि.)

सून्नी (वि) 1. स्वामी-रहित, 2. स्वच्छंद, 3. अकेली, 4. रहित, खाली। **सूनी** (हि.)

सूप[1] (पुं.) दाल या तरकारी आदि का रसा।

सूप[2] (पुं.) दे. छाज।

सूपड़ा (पुं.) दे. सूप[2]।

सूपणखाँ (स्त्री.) 1. एक राक्षसी, रावण की बहिन, 2. स्त्रियों के लिए प्रयुक्त एक निंदापरक शब्द। **शूर्पनखा** (हि.)

सूफ़ा (पुं.) (कौर.) लंबा-अँधेरा कमरा।

सूफ़ी (पुं.) 1. मुसलमानों का एक धार्मिक संप्रदाय जो एकेश्वरवाद को मानता है, 2. इस मत का अनुयायी; (वि.) खाद्य-अखाद्य में भेद बरतने वाला।

सूबा (पुं.) दे. सूब्बा।

सूबेदार (पुं.) दे. सूब्बेदार।

सूब्बा (पुं.) 1. दिल्ली प्रदेश के लिए आस-पास के क्षेत्र (हरियाणा, उत्तर प्रदेश) के लोगों द्वारा प्रयुक्त शब्द, 2. प्रदेश। **सूबा** (हि.)

सूब्बेदार (पुं.) 1. किसी सूबे या प्रांत का शासक, 2. एक छोटा फ़ौजी अधिकारी। **सूबेदार** (हि.)

सूम (वि.) 1. जिसके दर्शन मात्र से अनिष्ट होता है, मनहूस, 2. सदा उदास चेहरा रखने वाला, 3. कंजूस; (स्त्री.) एक जाति।

सूमड़ा (वि.) 1. गुम-सुम रहने वाला, 2. सूम जाति का।

सूम्मड़ (वि.) दे. सूम।

सूम्मी (स्त्री.) लोहा काटने की कतरनी। **सूमी** (हि.)

सूर[1] (पुं.) 1. गंदगी खाने वाला एक पशु, 2. एक गाली; (वि.) 1. ग़लीज़, 2. नीच; **~-सा** 1. गंदा, ग़लीज़, 2. मोटा-ताज़ा किंतु मूर्ख। **सूअर** (हि.)

सूर[2] (पुं.) दे. सूरबीर।

सूर-खड्डी (स्त्री.) 1. गड्ढा जिसमें सूअर लोटता है (इस गड्ढे की मिट्टी छूत के फुंसी-फोड़ों पर लगाई जाती है), 2. सूअरों का बाड़ा।

सूरज-कुंड (पुं.) सोहना ग्राम स्थित गरम पानी का कुंड। **सूर्य-कुंड** (हि.)

सूरज बंसी (पुं.) श्री रामचंद्र जी; (वि.) सूर्य वंश का। **सूर्यवंशी** (हि.)

सूरजमुखी (पुं.) 1. एक प्रकार का पौधा जिसके फूल का मुख सूर्य की दिशा में रहता है (आजकल इसकी खेती भी होती है, इसके बीज का तेल भी निकाला जाता है), 2. इस पौधे का फूल जो पीले रंग का होता है, 3. एक प्रकार के छत्र का पंखा; (वि.) चाँवरे या लाल चर्म वाला व्यक्ति जो सूरज की ओर नहीं देख सकता।

सूरत (स्त्री.) 1. उपाय, ढंग, 2. अवस्था, दशा, 3. (दे. सुरत[1,2])

सूरदास (पुं.) 1. एक अंधा भक्त-कवि जिसकी जन्म-भूमि सीही (गुड़गावाँ) मानी जाती है, (दे. सीही), 2. अंधे व्यक्ति के लिए प्रयुक्त सम्मान बोधक शब्द; (वि.) अंधा, नेत्रहीन।

सूरबीर (वि.) 1. बलवान, 2. यौद्धा; (पुं.) क्षत्रिय। **शूरवीर** (हि.)

सूर-भरेड़ा (पुं.) वराह, शूकर, जंगली सूअर।

सूरमा (वि.) 1. वीर, बलवान, 2. रणबाँकुरा।

सूरवाड़ा (पुं.) दे. सुराड़ा

सूरा (वि.) दे. सूरमा।

सूरी (स्त्री.) सूअर की मादा।

सूर्य (पुं.) दे. सुरज।

सूर्यग्रहण (पुं.) सूर्य का ग्रहण, सूर्य का चंद्रमा की ओट में आना, (इस समय कुरुक्षेत्र में बहुत भारी मेला लगता है और देश भर के श्रद्धालु व्यक्ति कुंड में स्नान करते है)।

सूर्यवंश (पुं.) क्षत्रियों का एक वंश जिसमें श्री रामचंद्र जी जन्मे।

सूर्यवंशी (पुं.) 1. सूर्य वंश के राजा, 2. सूर्य वंश में उत्पन्न व्यक्ति।

सूर्यास्त (पुं.) 1. सूर्य का छिपना, 2. सायंकाल।

सूर्योदय (पुं.) 1. सूर्य का उदय होना, 2. प्रातःकाल।

सूल (पुं.) दे. सूळ।

सूळ (स्त्री.) 1. काँटा कीकर का काँटा, 2. दर्द, पीड़ा, जैसे–कटसूळ (कटिसूल); (पुं.) लोहे का एक अस्त्र। **शूल** (हि.)

सूली (स्त्री.) दे. सूळी।

सूळी (स्त्री.) फाँसी; **~चढाणा/तोड़णा/ लागणा/ होणा** फाँसी की सजा होना। **सूली** (हि.)

सूळी डंका (पुं.) दे. काँ डंका।

सूवटा (पुं.) शुक, तोता, सूआ, (दे. सूआ[1,4])।

सूवा (पुं.) दे. सूआ[1,2]।

सूस (पुं.) दे. सुस्सा।

सूसवा (पुं.) 1. ज्वार, बाजरे आदि की पूलियों को खड़ा करके बनाया गया छायादार आश्रय, तुल. सूआ[4]। 2. एक पशु (?); **~बणाणा** अधिक मारना-पीटना।

सूस्सा (पुं.) दे. सुस्सा।

सूही (वि.) लाल रंग का।

सूहूर (पुं.) सलीक़ा, क़रीना, काम-धंधा करके की अक्ल या समझ। **शऊर** (हि.)

सृष्टि (स्त्री.) दे. सिस्टी।

सेंकना (क्रि. स.) दे. सेकणा।

सेंगर (पुं.) 1. क्षत्रियों की एक जाति, 2. (दे. सींगर)।

सेंतमेंत (क्रि. वि.) 1. दे. सैंतमैंत, 2. दे. स्यातमाँत।

सेंधकचरी (स्त्री.) (कौर.) दे. कचरी।

सेंमीं (पुं.) मैदा के बने लंबे लच्छे, (दे. जोए)। **सेवईं** (हि.)

सेंवर (पुं.) संभल का वृक्ष।

से (प्रत्य.) 1. समान, जैसे, जैसे–एक से, 2. करण और अपादान कारक का चिह्न, 1. (दे. तैं), 2. (दे. सेत्ती)।

सेक[1] (निपात.) लगभग, मेवाती का एक निपात।

सेक[2] (स्त्री.) तपन, गर्मी; (क्रि. स.) 'सेकणा' क्रिया का आदे. रूप; **~-ताड़** पीड़ा के स्थान को सेकने. टकोरने का काम। **सेंक** (हि.)

सेकणा (क्रि. स.) 1. आग पर गरम करना या तपाना, 2. पीड़ा के स्थान को टकोरना, 3. थप्पड़ लगाना, प्रहार करना। **सेंकना** (हि.)

सेक्खी (स्त्री.) शेख़ी, बड़ाई।

सेख (पुं.) 1. एक मुसलमान जाति, 2. मुसलमानों की एक उपाधि। **शेख़** (हि.)

सेज (स्त्री.) 1. शय्या, 2. अभिसार-शय्या, 3. आरामदेह बिस्तर।

सेजवाळ (पुं.) एक जाट गोत।

सेट-फेट (स्त्री.) 1. अचानक होने वाली मुलाक़ात, 2. भिड़ंत, 3. जादू-टोने की चपेट; **~मैं आणा** जादू की चपेट में आना; **~होणा** 1. टोने का प्रभाव होना, 2. मुलाक़ात होना।

सेढ-मसाणी (स्त्री.) 1. सेढ़-मसानी, चेचक-माता, 2. सेढ़-मसानी के गीत, 3. श्मशान की देवी।

सेढळ (स्त्री.) दे. सेढ मसाणी।

सेणा (क्रि. स.) 1. पक्षी का अंडों पर बैठना, 2. सेवा करना, 3. रक्षा करना। **सेना** (हि.)

सेतरा तोड़णा (क्रि.) मकर संक्रांति के दिन घर में रखे मोड़ और सेहरे को लड़कियों द्वारा नाच कर बाँधना और फिर तोड़ना।

सेतु (पुं.) पुल।

सेतुबंध (पुं.) रामेश्वरम् और श्री लंका के बीच समुद्र-लंघन के लिए नल-नील द्वारा बनाया गया पुल।

सेत्ती (प्रत्य.) से, करण और अपादान कारक का चिह्न (सीमित प्रयोग), (दे. से)।

सेध (स्त्री.) तकलीफ़, कष्ट; **~होणा** (खाया-पीया भोजन) अपच रहना।

सेधणा (क्रि. स.) कष्ट पहुँचाना, पीड़ा देते रहना; (क्रि. अ.) 1. जूती का सख्त होने के कारण पीड़ा देना, 2. अपच रहना, 3. भूत-प्रेत द्वारा सताया जाना; (वि.) 1. वह (भोजन) जो सेधता रहे, 2. वह जो अपच करे।
सेधना (हि.)

सेन बोट (पुं.) साइन बोर्ड, नामपट।

सेना (स्त्री.) दे. सैन्ना; (क्रि. स.) दे. सेणा।

सेनानी (पुं.) सैनिक, सेनापति।

सेनापति (पुं.) सेना-नायक।

सेब (पुं.) नाशपाती की जाति का एक फल जो अधिकांशतः कश्मीर, हिमाचल प्रदेश आदि के ठंडे क्षेत्रों में होता है।

सेम (स्त्री.) 1. सेम की फली, 2. नमी।

सेया हळ/सेवा हळ (पुं.) 1. कम गहरी जुताई करने वाला हल, 2. 'लाग्गू हळ' का विलोम।

सेर[1] (पुं.) एक मांसाहारी पशु, बाघ, नाहर; (वि.) वीर; **~पंजा** दे. पंजा करणा; **~होणा** 1. शक्ति का प्रदर्शन करना, 2. भभकी देना। **शेर** (हि.)

सेर[2] (पुं.) सोलह छटाँक का एक बट्टा जो दो प्रकार का होता है—कच्चा (स्थानीय) और पक्का (मानक), (अब इसका प्रचलन बंद है); **~पक्का** एक सेर वजन का।

सेर थाप (स्त्री.) शेर थाप। कुश्ती का एक दाँव।

सेरू (पुं.) चारपाई के सिरहाने की ओर की लकड़ी; (वि.) शेर, बलवान (व्यंग्य में)।

सेल (स्त्री.) 1. पतली और नुकीली कील—आज काल्ह के लंगड़े-लूल्ले रेल वण्या चाहवैं सैं। काँट्टे जितणे बी पैन्ने कोन्या सेल बण्या चाह वैं सैं।। (ल. चं.), 2. बरछी, 3. कटु वचन; (क्रि. स.) 'सेळणा' क्रिया का आदे. रूप।

सेळ[1] (स्त्री.) 1. पानी डालकर शीतल करने का भाव,
2. एक रस्म जिसके अनुसार खरीदे गए पशु का घर आने पर खुरों पर पानी डाल कर स्वागत किया जाता है, 3. एक प्रथा जिसके अनुसार नव-वधू के आने पर दरवाजे के दोनों ओर पानी डालकर अलाबला दूर की जाती है, 4. एक प्रथा जिसके अनुसार प्रस्थान के समय वाहन के पहियों पर पानी डाला जाता है, 5. स्वागत करने का भाव या क्रिया; **~करणा** 1. प्रस्थान के समय वाहन के पहिये पर जल डालना, 2. स्वागत करना, 3. रात्रि के समय चारपाई के सिरहाने रखे जल-पात्र को प्रातः चौराहे पर उँडेलना; **~तारणा** 1. आगमन पर चरण प्रक्षालन करना, 2. दरवाजे या पैरों पर जल डालकर स्वागत करना।

सेळ[2] (पुं.) 1. गुड़ के सेव, 2. जवे (सेवईं) तोड़ते समय बनाई गई मैदा की बत्ती।

सेलखड़ी (स्त्री.) दे. घीया-भाट्ठा।

सेळणा (क्रि. स.) 1. छिद्र करना, 2. कटु वचन कहना।

सेळाँ (वि.) दे. सीळा; (स्त्री.) (कौर.) बेसन की सेवियाँ।

सेल्ला[1] (पुं.) एक प्रकार का चावल।

सेल्ला[2] (पुं.) 1. फ़सल कटने के बाद खेत में बिखरा रहने वाला अन्न (जिसे गरीब लोग चुनते हैं), 2. उंछ; **~चुगणा** जीवन-निर्वाह के लिए फ़सल कटने के बाद खेत में बिखरे हुए बाली, दानों आदि को चुगना। **सीला** (हि.)

सेल्ला[3] (पुं.) आँख का पपोटा।

सेल्ला चाद्दर (स्त्री.) पतली चद्दर।

सेल्लाहारी (पुं.) सीला चुग कर भोजन करने वाला, उंछवृत्ति वाला। **सीलाहारी** (हि.)

सेल्ली[1] (स्त्री.) नाथपंथियों की थैली। **सेली** (हि.)

सेल्ली[2] (स्त्री.) भौंह।

सेल्ली-पट्टी (स्त्री.) स्त्रियों के माथे का एक आभूषण।

सेवक (पुं.) 1. नौकर, 2. भक्त, 3. सेवा करने वाला।

सेवटी (स्त्री.) मुलायम ज़मीन।

सेवड़ा (पुं.) 1. मृतक की आत्मा को वश में करने वाला, 2. भूत-विद्या जानने वाला (जन धारणा के अनुसार सेवड़े का वंश नहीं चलता), 3. श्मशानी साधु।

सेवा (स्त्री.) 1. टहल, 2. नौकरी, 3. पूजा; (पुं.) वह सुराख़ जिसे हल को ज़मीन में कम गहरा रखने के लिए काम में लाया जाता है; **~ठाणा** टहल बजाना।

सेसनाग (पुं.) सर्पराज जिसके फणों पर पृथ्वी ठहरी मानी जाती है। **शेषनाग** (हि.)

सेह (स्त्री.) शरीर पर लंबे काँटों वाला एक जंगली जंतु। **साही** (हि.)

सेहत (स्त्री.) स्वास्थ्य।

सेहर (पुं.) दे. रेवड़।

सेहरा (पुं.) 1. दूल्हे के माथे का चमकीला मुकुट, 2. जीत का श्रेय; 3. गीत विशेष। **~पढणा** 'बारोट्ठी' के समय जीजा द्वारा वर-वधू की वंशावली का गुण-गान करना; **~-बंधी** सेहरा बाँधने की रस्म।

सेहू (वि.) 1. शुद्ध (पात्र), 2. धुला या पवित्र (हाथ), 3. 'बेहू' का विलोम। **शुद्ध** (हि.)

सैं (क्रि. अ.) 'सै' सहायक क्रिया का बहुवचन रूप, सत्तार्थक क्रिया 'होना' के वर्तमानकालिक रूप 'है' (सै) का बहुवचन रूप; (स्त्री.) साँय-साँय की ध्वनि। **हैं/साँय** (हि.)

सैंकड़ा (पुं.) सौ का समूह।

सैंत-मैंत (क्रि. वि.) 1. बिना पैसा खर्चे, 2. अविलम्ब, तुरंत।

सैंताळी (वि.) सेंतालीस की संख्या। **सेंतालीस** (हि.)

सैंती (वि.) सेंतीस की संख्या। **सेंतीस** (हि.)

सैंयाँ (पुं.) 1. पति, 2. स्वामी, 3. प्रेमी।

सै[1] (क्रि. अ.) है, (दे. सैं); **~तो सई है** तो।

सै[2] (स्त्री.) चौपड़ के खेल की एक बाजी। **~देणा**। उत्तेजित या उत्साहित करना।

सै क (अव्य.) है क्या, उदा. वो सै (है) क (कि) नहीं।

सैड़ (क्रि. वि.) जल्दी; (स्त्री.) सैड़ की ध्वनि; **~देनैं** जल्दी से, अविलंब; **~-सैड़** 1. तुरंत, 2. सैड़-सैड़ की ध्वनि के साथ।

सैणी (वि.) सोने के।

सैद्दा (पुं.) दे. सहदे।

सैन (स्त्री.) 1. आँख का इशारा, 2. आँख के इशारे से दिया गया कामुक संकेत, 3. आँख; (पुं.) एक कृष्ण भक्त नाई। **~चलाणा/मटकाणा/ मारणा** आँख मारना, आँख से संकेत करना।

सैन्ना (स्त्री.) 1. फ़ौज, 2. भीड़।
सेना (हि.)

सैया (स्त्री.) दे. सेज। **शय्या** (हि.)

सैयादान (पुं.) दे. सज्जादान।
शय्यादान (हि.)

सैय्यद (पुं.) 1. पीर, 2. मुसलमानों की एक जाति, 3. पीर की मढ़ी; (वि.) समझदार। **सैयद** (हि.)

सैर (स्त्री.) दे. सैल[2]।

सैल[1] (पुं.) पहाड़, पर्वत। **शैल** (हि.)

सैल[2] (स्त्री.) चहलक़दमी। **सैर** (हि.)

सैल-खड़ी (स्त्री.) चिकने पहाड़ की डली या पत्थर विशेष। दे. घीया माट्ठा।

सैलड़ (पुं.) छैलड, (दे. छैलड़)।

सैलानी (वि.) 1. स्वच्छंद घूमने वाला, 2. मनमौजी।

सैलाब (पुं.) बाढ़, जलप्लावन।

सों (स्त्री.) दे. सूँह; (प्रत्य.) दे. से।

सोंग (स्त्री.) दे. लांगड़।

सोंझणा (पुं.) एक वृक्ष जिसकी कड़वी फली वात औषधि के काम आती है।

सौंठ (स्त्री.) दे. सूँठ।

सोंड्डा (पुं.) दे. सूँड्डा।

सोंप (स्त्री.) 1. एक छोटा पौधा जिसके बीज छोटे होते हैं तथा यह मसाले और ओषधि में काम आती है, 2. स्याही की दवात का कपड़ा। **सौंफ** (हि.)

सोंहीं (क्रि. वि.) दे. साँहमीं।

सो[1] (वि.) एक सौ की संख्या; **~की साल** शताब्दी वर्ष–सो की साल चैत मैं लाग्गी भाई नए पुवाड़े होगे (लो. गी.)।
सौ (हि.)

सो[2] (अव्य.) अतः, इसलिए–सो न्यूँ बात थी।

सो[3] (क्रि. अ.) हो, 'होना' (होणा) क्रिया का मध्यम पुरुष, बहुवचन, वर्तमान काल का रूप–सारे के सारे कित जाओ सो? (जा रहे हो)।

सोआ साई (स्त्री.) दे. जाग्गा मीच्ची।

सोई[1] (स्त्री.) सूजन; (क्रि. अ.) 'सोणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप; **~आणा** सूजन आना।
सोजिश (हि.)

सोई[2] (अव्य.) वही। 1. दे. सोए 2. दे. सोई।

सोऊ (वि.) 1. निद्रालू, अधिक सोने वाला, 2. जो सोने को हो।

सोए (सर्व.) वही–1. मैं कहूँ था सोए हो कै रही, 2. जिसनैं गेरा सोए ठावै; (क्रि. स.) 'सोणा' क्रिया का भू. का. , पुं., बहुव. रूप।

सोकंदा (पुं.) एक जाट गोत।

सोक[1] (पुं.) 1. चाव, 2. दुःख। **शौक/ शोक** (हि.)

सोक[2] (स्त्री.) 1. पति की प्रेमिका, 2. स्त्रियों के लिए प्रयुक्त एक निंदापरक शब्द। **सौत** (हि.)

सोकड़ा (पुं.) एक रोग जिसमें बच्चे सूख जाते हैं; (वि.) सूखे रोग से ग्रस्त।

सोकणा (क्रि. स.) समाना, पानी आदि का जज़्ब होना; (वि.) वह जो जल्दी सोख ले, सोखने वाला। **सोखना** (हि.)

सोकीन (पुं.) दे. सोक्कड़[1]; (वि.) 1. फ़ैशनपरस्त, 2. विशेष चाव रखने वाला।
शौक़ीन (हि.)

सोक्कड़[1] (पुं.) एक जाट गोत (आज-कल इस गोत के लोग सोक्कड़ के स्थान पर 'शौक़ीन' शब्द का प्रयोग करने लगे हैं)।

सोक्कड़[2] (स्त्री.) दे. सोक[2]।

सोक्कण (स्त्री.) दे. सोक[2]।

सोक्का (पुं.) दुर्भिक्ष। दे. सूक्का, उदा. जिब तक इंदर ना बरसै तो धरती पै सोक्का सै। (लचं.) दे. काळ[2]।

सोखंदा (पुं.) दे. सोकंदा।

सोखना (क्रि. स.) दे. सोकणा।

सोग (पुं.) दुःख, खेद। **शोक** (हि.)

सोगी (वि.) शोकाकुल।

सोग्गण (स्त्री.) दे. सोक[2]।

सोच (स्त्री.) 1. चिंता, 2. सोचने की क्रिया का भाव, 3. अफ़सोस, 4. निर्णय न लेने की स्थिति; **~करणा** चिंतित होना; **~चढणा** फ़िक्र होना; **~मैं पड़णा** 1. असमंजस में पड़ना, 2. चिंताग्रस्त होना।

सोचणा (क्रि. स.) 1. सोच-विचार करना, 2. स्मृति में लाना, 3. मलाल करना, अफ़सोस में पड़ना, 4. आगे-पीछे की बात विचारना, 5. निर्णय लेने की पूर्व स्थिति में होना। **सोचना** (हि.)

सोजस (स्त्री.) सूजन, (दे. सोई)।

सोजा (पुं.) 1. मोटापा। शरीर का फूलना, 2. सूजन।

सोट (पुं.) 1. मोटा सोटा, अनगढ़ मोटी लकड़ी, 2. सोटे पर घुँघरू बँधा एक बाजा। **सोटा** (हि.)

सोटा (पुं.) दे. सोट्टा।

सोट्टा (पुं.) 1. चटनी या भाँग आदि घोटने का मोटा और छोटा गोल डंडा, 2. मोटी लाठी, 3. मूसल, (दे. कूँड्डी-सोट्टा)। **सोटा** (हि.)

सोट्टी (स्त्री.) 1. पतली और लचीली लकड़ी, 2. कमची, 3. दो अंगुलियों (तर्जनी और दीर्घा) से मारी गई चोट, (दे. चंटी)। **सोंटी** (हि.)

सोड़ (स्त्री.) रजाई, रूई-भरा लिहाफ़; **~देख पाँह फलाणा** अपनी सीमा में रहना। **सौड़** (हि.)

सोड़िया (पुं.) 1. छोटी सौड़, बच्चे की सौड़, 2. कम रूई डली रजाई, हल्की रजाई।

सोण (पुं.) 1. शकुन, शुभ-अशुभ विचार, 2. लक्षण, 3. रक्षाबंधन के दिन दरवाज़े के आस-पास चीते जाने वाले 'राम-राम' के अक्षर, 4. उत्सवों पर दीवार पर चीते जाने वाले अक्षर या चित्र, 5. कार्य-सिद्धि की जाँच के लिए भूमि पर खींचीं गई खड़ी रेखाएँ, 6. भाग्य, 7. प्रथा, 8. 'कसोण' का विलोम, (दे. कसौण); **~-कसोण होणा** अपशकुन होना; **~काढणा** 1. दीवार पर चित्र आदि चीतना, 2. भविष्यवाणी करना, 3. शुभ मुहूर्त निकालना; **~मणाणा** 1. दीवार पर चित्रित चित्र पूजना, 2. शुभ कामना करना, 3. भगवान का धन्यवाद करना; **~लिखाणा** दे. थाळी ~कढवाणा; **~साधणा** शुभ मुहूर्त निकालना; **~होणा** 1. शकुन होना, 2., किसी प्रथा का प्रचलन होना, 3. प्रथा निबाहने मात्र के लिए कोई आवश्यक कृत्य करना।

सोणचिड़ी (स्त्री.) पालतू चिड़िया जिससे शकुन निकलवाते हैं; (वि.) भविष्य वक्ता। **सोनचिड़ी** (हि.)

सोणा (क्रि. अ.) 1. नींद लेना, 2. हवा के कारण फ़सल का गिरना, 3. मरना, 4.

सावधानी न बरतना; (वि.) दे. सोऊ; (पुं.) निद्रा। **सोना** (हि.)

सोणिया (वि.) 1. दे. सोणी, 2. सोने वाला।

सोणी (वि.) 1. शकुन बताने वाला, 2. सोने वाली।

सोत[1] (स्त्री.) दे. सोक[2]।

सोत[2] (स्त्री.) 1. कूआँ खोदते समय स्तर विशेष पर निकलने वाला जल, 2. जल का उद्‌गम स्थान, 3. कुचा, कुचा की वे नसें जिनमें दूध बहता है, 4. स्नायु-मंडल, 5. उद्‌गम स्थान; **~मरणा** 1. नसें सक्रिय न रहना, 2. शरीर के किसी अंग का नाकारा होना, 3. कुचा में दूध न आना, 4. मासिक-धर्म बंद होना, 5. जल का उद्‌गम स्थान रुकना; **~सूखणा** (दे.) सोत~मरणा; **~से चालणा** कुटुंब या रिश्तेदारी बढ़ना। **स्त्रोत** (हि.)

सोत्तण (स्त्री.) दे. सोक[2]।

सोत्ता (पुं.) सोने का समय, रात का समय; (वि.) सोता हुआ; **~करणा** रात देरे से आना; **~पड़णा/ होणा** सोने का समय होना, रात्रि-काल आना।

सोत्ती (स्त्री.) जुलाहे के पूर के धागों को अलग-अलग रखने वाला धागा; (वि.) सोती हुई।

सोद्दा (पुं.) ख़रीद। **सौदा** (हि.)

सोद्दागर (पुं.) व्यापारी। **सौदागर** (हि.)

सोद्‌धा (पुं.) प्रूफ़-रीडर; (वि.) शुद्धि बरतने वाला।

सोद्‌धी[1] (स्त्री.) शुचिता-संबंधी सोच-विचार; (वि.) शुचिता का भाव बरतने वाला; (क्रि. स.) 'सोधणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप। **शुद्धि/शोधी** (हि.)

सोद्‌धी[2] (स्त्री.) 1. होश, चेतना, 2. बुद्धि। **सुधि** (हि.)

सोध (स्त्री.) दे. सोद्‌धी[1,2]; (क्रि. स.) 'सोधणा' क्रिया का आदे. रूप।

सोधणा (क्रि. स.) 1. मुहूर्त निकालना, 2. साफ़ करना, सोने, चाँदी आदि को साफ़ या शुद्ध करना, खोट निकालना, 3. धातु की परख करना, परखना; (वि.) शोधन करने वाला।
शोधना (हि.)

सोना (क्रि. अ.) दे. सोणा; (पुं.) 1. दे. सोन्ना, 2. दे. सून्ना[1]।

सोना पारसी (स्त्री.) स्वर्णकारों की गुप्त भाषा।

सोन्ना (पुं.) स्वर्ण (तुल. सून्ना[1])।
सोना (हि.)

सोपळी (स्त्री.) 1. ओढ़नी, 2. मांगलिक लाल ओढ़नी।

सोप्पा (पुं.) दे. ओबरा।

सोफता (पुं.) 1. आसानी, 2. फ़ुरसत।
सुभीता (हि.)

सोबता (पुं.) दे. सोफता।

सोब्बा (स्त्री.) दे. सोभ्या।

सोभ्या (स्त्री.) 1. सुंदरता, 2. सम्मान, इज़्ज़त। **शोभा** (हि.)

सोम (पुं.) 1. सोमवार, 2. चंद्रमा।

सोमनाथ (पुं.) द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक।

सोमरस (पुं.) देवताओं द्वारा पीया जाने वाला एक अमृत, (दे. इमरत)।

सोमवती अमावस्या (स्त्री.) दे. सोमोत्ती।

सोमवार (पुं.) दे. सोम्मार।

सोमोत्ती (स्त्री.) सोमवती अमावस्या, सोमवार के दिन पड़ने वाली अमावस्या (जो पुण्य तिथि मानी जाती है)।
सोमवती (हि.)

सोम्मा (वि.) सौवाँ।

सोम्मार (पुं.) सोमवार का दिन, सप्ताह का पहला दिन। **सोमवार** (हि.)

सोम्मारी (वि.) सोमवार के दिन घटित होने वाली। **सोमवारी** (हि.)

सोयंबर (पुं.) स्वयंवर।

सोरंग (वि.) सुनहरी।

सोरठा (पुं.) अड़तालीस मात्राओं का एक छंद विशेष।

सोरण (पुं.) सोना, 1. (तुल. सून्ना[1]), 2. (तुल. सोन्ना); **~की काया** सुंदर शरीर, कुंदन-शरीर। **स्वर्ण** (हि.)

सोर्‌याण (पुं.) एक जाट गोत।

सोलंकी (पुं.) 1. एक जाट-गोत, 2. एक राजपूत वंश।

सोळ (स्त्री.) 1. सुगमता, 2. वह मार्ग जिससे कम दूरी चलनी पड़े, 3. बिना गड़बड़ी किए खेलने का भाव, 4. 'रोळ' का विलोम, 5. सीधा अंग, दायाँ भाग; **~पड़णा** 1. सुविधापूर्वक काम होना, 2. कम मार्ग तय करना पड़ना।

सोळ रासी (पुं.) सुंदर।

सोळा (वि.) 1. सीधा, 2. दायाँ, 3. सुगम, सुविधाजनक, 4. भला, सरल व्यवहार वाला, 5. अनुकूल (समय), 6. 'ओळा[2]' का विलोम, 7. वस्त्र आदि का सीधा पासा या भाग; **~बोलणा** 1. सीधे मुँह बात करना, 2. शकुन होना; **~होणा** 1. ठीक मार्ग पर आना, 2. अक्ल ठिकाने आना। **सोला** (हि.)

सोळांह् (वि.) सोलह की संख्या या गिनती; **~कला पूरण** 1. जिसमें कोई कमी न हो, सर्वकला संपन्न, 2. श्री कृष्ण। **सोलह** (हि.)

सोळी (वि.) 1. सीधी, 2. वस्तु का सीधा भाग, (दे. सोळा); **ओळी-~**उलटी-सीधी; **~बात** 1. हित की बात, 2. उचित सलाह।

सोल्हड़ा (वि.) सोलहवाँ।

सोवणा (क्रि. अ.) दे. सोणा; (वि.) दे. सोऊ।

सोसड़/सोस्सड़ (वि.) पूरी तरह भीगा हुआ, सराबोर; **~भीजणा** पूरी तरह भीगना; **~मींह** इतनी वर्षा जिसमें कपड़े भीग जाएँ, कपड़े निचोड़ वर्षा; **~होणा** पानी या पसीने आदि से सराबोर होना।

सोसायटी (स्त्री.) 1. समाज, सुसंगठित समाज, 2. किसी विशेष उद्देश्य से संगठित सभा।

सोहणा (वि.) सुंदर; (क्रि. अ.) 1. शोभित होना, 2. सुंदर लगना।
सोहना/सुहावना (हि.)

सोहदरा (स्त्री.) श्री कृष्ण की बहन।
सुभद्रा (हि.)

सोहन (पुं.) लकड़ी रगड़ाई का एक यंत्र।

सोहन माळा (स्त्री.) गले का एक आभूषण विशेष।

सोहन हलवा (पुं.) एक मिठाई जो गरिष्ठ और कठोर होती है।

सोहबत (स्त्री.) संगत, साथ।

सोहरणा (क्रि.स.) झाड़ू लगाना, (दे.) साँभरणा; (पुं.) झाड़ू।

सोहरणी (स्त्री.) झाड़ू।

सोहरा (पुं.) दे. सुसरा।

सोहाग (पुं.) दे. सुहाग।

सोहाग्गा (पुं.) दे. सुहाग्गा।

सोहिले (पुं.) जन्म के गीत, जच्चा गीत।

सौंपना (क्रि. स.) 1. लौटाना, 2. भेंट करना।

सौंफ (स्त्री.) दे. सोप।

सौंह (स्त्री.) शपथ (तुल. सूँह)। **सौगंध** (हि.)

सौंहटा (पुं.) 1. तेज़ बौछार की वर्षा, अचानक होने वाली तेज़ वर्षा, 2. वायु प्रभंजन; (विं.) 1. सीधा, 2. 'औंहटा' का विलोम; **~(-टे) का मींह** तेज़ बौछार के साथ अचानक आने वाली वर्षा।

सौंहणी (स्त्री.) झाड़ू, (दे. माँजण); (वि.) सुंदर, आकर्षक।

सौ (वि.) दे. सो[1]।

सौ का तोड़ (पुं.) अंतिम निर्णय।

सौगंध (स्त्री.) 1. दे. सौंह, 2. दे. सूँह।

सौगात (स्त्री.) दे. सुगात।

सौगी (स्त्री.) सवारी बैलगाड़ी।

सौण (पुं.) 1. (कौर.) दे. साम्मण, 2. दे. सोण।

सौत (स्त्री.) दे. सोक[2]।

सौतेला (वि.) विमाता का, 2. विमाता का सा।

सौदा (पुं.) दे. सौद्‌दा।

सौदागर (पुं.) दे. सोद्‌दागर।

सौभाग्य (पुं.) 1. अच्छा भाग्य, 2. सुहाग, 3. कल्याण, कुशल।

सौभाग्यवती (वि.) 1. सधवा, सुहागिन, 2. एक आदर सूचक उपाधि जो सधवा स्त्रियों के नाम से पहले जोड़ी जाती है (तुल. सुहाग्गण)।

सौर मास (पुं.) एक संक्रांति से दूसरी संक्रांति तक का समय।

सौर वर्ष (पुं.) एक मेष संक्रांति से दूसरी मेष संक्रांति तक का समय।

सौराष्ट्र (पुं.) गुजरात, काठियावाड़ का पुराना नाम, सोरठ देश।

सौहरणा (क्रि. स.) 1. झाड़ू लगाना, 2. बिखरा कूड़ा इकट्ठा करना, 3. अपनी ओर खींचना, 4. साँस के साथ खींचना; (पुं.) बड़ा झाड़ू।

स्कूल (पुं.) विद्यालय।

स्केळ (स्त्री.) पहिये को बाहर निकलने से रोकने के लिए लगाई जाने वाली कील, (दे. सकेल)।

स्टूल (पुं.) तिपाई (तुल. तिपाया)।

स्टेज (स्त्री.) 1. मंच, 2. रंगमंच।

स्टेटण (पुं.) स्टेशन।

स्टेशन (पुं.) तुल. टेस्सन।

स्णाक्खा (वि.) दे. सुलाँक्खा।

स्तंभ (पुं.) दे. थाँभ।

स्तन (पुं.) 1. कुचा, 2. (दे. थण)।

स्तर (पुं.) 1. परत, 2. कोटि, 3. ऊँचाई।

स्तुति (स्त्री.) प्रशंसा।

स्त्री (स्त्री.) दे. लुगाई।

स्त्रीलिंग (स्त्री.) स्त्रीवाचक शब्द या चिह्न।

स्थगित (वि.) आगे टहलाया या सरकाया हुआ।

स्थल (पुं.) जगह, (दे. थळ)।

स्थान (पुं.) जगह।

स्थानीय (वि.) 1. उसी स्थान का, स्थानिक, 2. खापों और द्रौणमुखों का समूह।

स्थापक (वि.) स्थापना करने वाला।

स्थापना (स्त्री.) 1. स्थापित करना, प्रतिष्ठित करना, 2. सिद्ध करना।

स्थायी (वि.) 1. टिकाऊ, 2. जो स्थिर रहे।

स्थावर (पुं.) जड़ वस्तु।

स्थिति (स्त्री.) 1. दशा, हालत, 2. निवास-स्थान।

स्थिर (वि.) 1. टिकाऊ, 2. अटल, 3. निश्चल। दे. थिर।

स्थूल (वि.) मोटा; (पुं) गोचर। दे. थुल-थुल।

स्नान (पुं.) दे. न्हाण।

स्नायु (स्त्री.) नस।

स्निग्ध (वि.) चिकना, (दे. चीकणा)।

स्नेह (पुं.) प्रेम (तुल. नेह[2])।

स्नेही (पुं.) प्रेमी, मित्र। तुल. यारा प्यारा।

स्पंदन (पुं.) 1. कंपन, 2. हलचल।

स्पर्धा (स्त्री.) होड़।

स्पर्श (पुं.) छूने का भाव।

स्पष्ट (वि.) साफ़ दीख पड़ने वाला।

स्प्रिट (स्त्री.) एक तरल पदार्थ जो जलाने और दवा आदि के काम आता है।

स्फूर्ति (स्त्री.) फुर्ती, तेज़ी।

स्मरण (पुं.) दे. सिमरण।

स्मरण-शक्ति (स्त्री.) याददाश्त।

स्मारक (पुं.) स्मृति-चिह्न, यादगार।

स्मार्त (पुं) स्मृति-अनुसार कृत्य करने वाला।

स्मृति (स्त्री.) 1. स्मरण, याद, 2. हिंदुओं के धर्मशास्त्र।

स्यांति (स्त्री.) 1. चुप्पी, 2. सन्नाटा, 3. स्तब्धता। **शांति** (हि.)

स्याँप (पुं.) दे. साँप।

स्याई (पुं.) गन्ने के रस में पके चावल। दे. गुड़भत्ता।

स्याऊ (पुं.) दे. साहू।

स्याड़ (पुं.) दे. गाद्दड़। दे. स्याल।

स्याणपत (स्त्री.) सयानापन; **~काटणा/छाँटणा/दिखाणा** 1. चतुराई का प्रदर्शन करना, 2. चतुराईपूर्ण व्यवहार करना। **सयानापन** (हि.)

स्याणा (वि.) 1. समझदार, 2. चालाक, 3. वयस्क, गबरू, गाभरू; (पुं.) भूतप्रेत की विद्या जानने वाला, (दे. घाल ~घालणा); **~होणा** 1. वयस्क होना, 2. समझ आना, 3. भूत-विद्या का ज्ञान होना। **सयाना** (हि.)

स्यात[1] (अव्य.) शायद।

स्यात[2] (स्त्री.) 1. समय का एक प्रमाण, एक घंटे या ढाई घड़ी की समय, 2. बुरा समय–स्यात नैं अकल हड़ी थी, 3. अधिक समय–एक स्यात लगा दी, 4. मुहूर्त; **~-घड़ी का** 1. थोड़े समय का, 2. मरणासन्न; **~-घड़ी मैं** कुछ ही समय में।

स्यातमाँत (अव्य.) 1. झूठ-मूठ, 2. सच-मुच, 3. सेंत-मेत।

स्यातेक (क्रि. वि.) 1. थोड़ी देर में, थोड़ी देर का, 2. एक स्यात का।

स्याद (अव्य.) संभवतः। **शायद** (हि.)

स्याद्दी (स्त्री.) विवाह। **शादी** (हि.)

स्यान[1] (स्त्री.) 1. गर्वीली चेष्टा, 2. इज़्ज़त। **शान** (हि.)

स्यान[2] (पुं.) अहसान। **~करणा/ टेकणा**– अहसान करना। दे. स्यान।

स्याना (वि.) समझदार, (दे. स्याणा)।

स्यापण (स्त्री.) दे. साँप्पण।

स्यापुरस (पुं.) 1. शाही पुरुष, धनी मानी। 2. विश्वसनीय व्यक्ति।

स्याब (पुं.) दे. हिंसाब।

स्याब्बास (अव्य.) शाबाश।

स्याम[1] (पुं.) धातु का एक छल्ला जो मूसल या लाठी के छोर पर फँसाया जाता है; **~जड़ाऊ** जिसमें 'स्याम' जड़ा हो (लाठी आदि)।

स्याम[2] (पुं.) श्री कृष्ण।

स्याम[3] (स्त्री.) दे. साँझ।

स्यामक (पुं.) तिन्नी के चावल। दे. साम्मक।

स्याम करण (पुं.) श्यामकर्ण। सफेद रंग का घोड़ा जिसका एक कान काला हो।

स्याम चिड़ी (स्त्री.) 1. एक छोटी चिड़िया

(जिसे सायंकाल से दिखाई देने लगता है), 2. सोण चिड़ी (दे.)।

स्याम जी (पुं.) खाटू (रींगस राजस्थान) का श्याम बाबा जिसकी व्यापक मान्यता (मानता) है और जिसका मुख्य मेला फाल्गुन शुक्ल द्वादशी को लगता है, शीश का दानी देवता विशेष, बभ्रुवाहन।

स्यामबेद (पुं.) चार वेदों में से एक। **सामवेद** (हि.)

स्यामबेद्दी (पुं.) सामवेद को मानने वाला। **सामवेदी** (हि.)

स्यामलात (वि.) सामूहिक हिस्सेदारी, सारे गाँव से संबंधित; **~देह/जेह** सारे गाँव से संबंधित जिम्मेदारी।

स्याम्मत (स्त्री.) विपत्ति। **शामत** (हि.)

स्याम्मी (पुं.) 1. वैरागियों की एक जाति, 2. गृहस्थी साधु, 3. कुलपुरोहित, 4. ब्राह्मणों की एक उपाधि, 5. आचार्य, 6. मालिक, 7. परमेश्वर। **स्वामी** (हि.)

स्यार[1] (वि.) जैसे, समान, तुलना के–तेरे स्यार के भोत देक्खे; (अव्य.) तक–हाथ स्यार के जोड़ लिए पर नाँ माँन्या। **सार** (हि.)

स्यार[2] (पुं.) गीदड़, शृंगाल; (वि.) भीरु, कायर। **सियार** (हि.)

स्यारकमाणी (स्त्री.) 1. (गाड़ी की) धुरी, 2. लोहे की कमानी– स्यारकमाणी टूट लिए सैं ल्हीक बिचाळै ठेल्ला रह ग्या (लो. गी.)।

स्यारखा (वि.) दे. स्यार[1]। **सरीखा** (हि.)

स्यारणा (क्रि. स.) 1. भूत-प्रेत की विद्या जानने वाली स्त्री द्वारा किसी मृतक की आत्मा को वश में करना, 2. अपनी ओर आकर्षित करना, 3. (दे. सारणा)।

स्यारा (स्त्री.) नई कुस, हल की फाल।

स्याल (पुं.) दे. गाद्दड़।

स्याळू (पुं.) 1. दुलहिन की लाल रंग की चुन्नी, 2. गेहूँ या जौ आदि की बाली के ऊपरी नुकीले तिनके। **शालू** (हि.)

स्यासत (स्त्री.) राजनीति। **सियासत** (हि.)

स्याह (वि.) 1. गहरे काले रंग का, 2. काला।

स्याहमी (क्रि.) दे. साहमी।

स्याहवड़ (स्त्री.) सोहर, शिशु-जन्म से लगभग दस दिन तक रहने वाली अशुद्धता; **~काढणा** 1. शिशु-जन्म के दसवें दिन हवन आदि कराना, सूतिका की अपवित्रता दूर करना, 2. नई फ़सल का अन्न दानार्थ निकालना, 3. (दे. स्याहवड़ी)। **सूतिका** (हि.)

स्याहवड़ी (स्त्री.) 1. नई फ़सल की उपज का वह अंश जो अधिकतर ब्राह्मण को दानार्थ दिया जाता है, 2. यजमान द्वारा दानार्थ दिया फ़सल का अंश, 3. (दे.) स्याहवड़।

स्याही[1] (स्त्री.) 1. काजल, 2. रोशनाई, 3. काली झाईं; **~घलाई** 1. विवाह के समय की एक रस्म जिसमें भाभी दूल्हे की आँख में काजल डालती है, 2. इस रस्म के समय पर दिया जाने वाला पैसा।

स्याही[2] (वि.) राजपाट से संबंधित। **शाही** (हि.)

स्यूँ (क्रि. अ.) दे. सूँ[1]।

स्यूवास्सण (स्त्री.) दे. सिवासण।

स्यों (अव्य.) ठीक–स्यों ब्याह के दिन (ठीक विवाह के दिन)।

स्योंही (क्रि. वि.) दे. साँहमीं।

स्वायु-साविज (पुं.) सायुज्य प्राप्ति।

स्योज्जी (पुं.) दे. सिवजी।

स्योड़ (स्त्री.) दे. सोड़।

स्यो (पुं.) दे. सोत[2]।

स्योड़ा (पुं.) दे. सेवड़ा।

स्योढी (स्त्री.) दे. स्याहवड़ी।

स्योर (पुं.) 1. कोलाहल, 2. (दे. छ्योर[3])। **शोर** (हि.)

स्योरा (पुं.) एक प्रकार का क्षार। **शोरा** (हि.)

स्त्रोत (पुं.) दे. सोत[2]।

स्वच्छंद (वि.) 1. स्वतंत्र, आज़ाद, 2. निरंकुश, (दे. छैलड़)।

स्वच्छ (वि.) साफ़-सुथरा।

स्वतंत्र (वि.) आज़ाद।

स्वतंत्रता (स्त्री.) आजादी।

स्वदेश (पुं.) दे. सुदेस।

स्वदेशी (वि.) दे. सुदेस्सी।

स्वप्न (पुं.) दे. सुपना।

स्वभाव (पुं.) दे. सुभा[1]।

स्वयं (अव्य.) खुद, अपने आप।

स्वयंपाकी (पुं.) स्वयं भोजन पका कर खाने वाला।

स्वयंभू (पुं.) 1. ब्रह्मा, 2. विष्णु। तुल. सिंभू।

स्वयंवर (पुं.) अपना वर स्वयं चुनने की प्रथा।

स्वयंसेवक (पुं.) बिना किसी पुरस्कार के स्वेच्छा से कार्य करने वाला।

स्वर (पुं.) आवाज़, (दे. सुर[1])।

स्वराज्य (पुं.) अपना राज्य (तुल. सुराज)।

स्वरूप (पुं.) दे. सरूप।

स्वर्ग (पुं.) दे. सुरग।

स्वर्गलोक (पुं.) दे. सुरगलोक। तुल. सुरगवास।

स्वर्गवास (पुं.) मृत्यु, मरना।

स्वर्गवासी (वि.) मृत, जिसकी मृत्यु हो गई हो।

स्वर्गीय (वि.) 1. स्वर्ग का, स्वर्ग जैसा, 2. मृत।

स्वर्ण (पुं.) 1. दे. सूना[1], 2. दे. सोरण।

स्वर्णयुग (पुं.) सुख-स्मृद्धि का युग। तुल. सतयुग।

स्वस्तिक (पुं.) एक मंगल चिह्न, (दे. साथिया)।

स्वस्तिवाचन (पुं.) मंगल-सूचक मंत्रों का पाठ। दे. मंगलास्टक।

स्वस्थ (वि.) नीरोग।

स्वाँग (पुं.) दे. साँग।

स्वाँगी (पुं.) दे. साँग्गी।

स्वाँस (पुं.) दे. साँस।

स्वागत (पुं.) किसी के आगमन पर सादर अभिनंदन करना।

स्वाति (स्त्री.) एक नक्षत्र।

स्वाद (पुं.) 1. जायक़ा, 2. आनंद, 3. स्वादिष्ट, 4. उर्दू वर्ण माला का एक व्यंजन; **~चाखणा** 1. किए का फल भोगना, 2. स्वाद का आभास लेना।

स्वादला (वि.) स्वादिष्ट।

स्वादिष्ट (वि.) सुस्वादु, जायक़ेदार।

स्वादु (वि.) दे. लाड़ा।

स्वाधीन (वि.) आज़ाद।

स्वाधीनता (स्त्री.) आज़ादी।

स्वामी (पुं.) 1. मालिक, 2. पति, 3. (दे. स्याम्मीं)।

स्वारथी (वि.) मतलबी। **स्वार्थी** (हि.)

स्वार्थ (पुं.) अपना हित।

स्वार्थी (वि.) अपना हित या मतलब साधने वाला।

स्वावलंबी (वि.) अपने ही सहारे पर रहने वाला।

स्वास्थ्य (पुं.) सेहत।

स्वाह (स्त्री.) 1. राख, 2. नष्ट होने का भाव या क्रिया, 3. मन ही मन जलने-भुनने का भाव। दे. सुहा। **स्वाहा** (हि.)

स्वाहा (अव्य.) एक शब्द जिसका प्रयोग अग्नि में हवि देने के समय किया जाता है; (स्त्री.) दे.स्वाह।

स्वीकार (पुं.) 1. अंगीकार, क़बूल, 2. लेना।

स्वीकृति (स्त्री.) 1. मंजूरी, 2. सहमति।

स्वेच्छा (स्त्री.) अपनी इच्छा। मनमर्जी।

स्वेच्छाचारी (वि.) 1. स्वच्छंद, 2. निरंकुश। दे. मनमोज्जी।

स्वेद (पुं.) पसीना।

स्वेदज (वि.) पसीने से उत्पन्न (जूँ, खटमल आदि)। दे. जून्नी।

स्योन्ना (पुं.) दे. सोन्ना।

ह

ह हिंदी वर्णमाला का तेतीसवाँ व्यंजन ऊष्म वर्ण है, इसका उच्चारण स्थान कंठ है, हरियाणवी में इसका उच्चारण 'है' (हअ) के समान है।

हँकवाणा (क्रि. स.) 1. हाँकने में सहायता करना, 2. वाहन को चलवाना, 3. पशु चोरी करवाना। **हँकवाना** (हि.)

हँकवाना (क्रि. स.) दे. हँकवाण।

हँकाणा (क्रि. स.) दे. हँकवाणा।

हंकार (पुं.) अभिमान, जैसे–रावण सा हंकार। **अहंकार** (हि.)

हँकारणा (क्रि. अ.) 1. अपने बछड़े, बछिया या स्वामी को देखकर गाय द्वारा अपनत्व-भरी ध्वनि निकालना, 2. प्यार उमड़ना, (दे. अहँकारा ~ऊठणा)।

हँकारा (पुं.) हाँ-हूँ करने का भाव।

हँकावळ (स्त्री.) दे. हाँक।

हंगा (पुं.) दे. हंघा।

हँगाई (स्त्री.) दे. अंघाई।

हंगे (अव्य.) कठिनाई से, उदा.–हंगे सिर काम काढ्या।

हंग्घा (पुं.) ताक़त, बल; **~काढणा** गर्व चूर करना; **~लाणा** पूरी शक्ति लगाना; **~होणा** जन-बल, धन-बल, आदि होना।

हँघाई (स्त्री.) दे. अँघाई।

हंघ्याँ (क्रि. वि.) 1. ताक़त के साथ, 2. ज़बरदस्ती से, बड़ी कठिनाई से–हंघ्याँ सी काढ्या सै।

हंटर (पुं.) कोड़ा।

हंट्टू (वि.) काना।

हंडा (पुं.) 1. बिजली का बल्ब, 2. बड़ा प्रकाश-दीप, 3. मोटर आदि के सामने लगा बल्ब; **~चसणा/ बळणा** बल्ब जलना।

हँडाना (क्रि. स.) दे. हँढाणा।

हँडिया (स्त्री.) छोटी हाँडी; **~(-याँ) का मुँह काळा** बुरी संगति का बुरा फल।

हँडेर (वि.) 1. घुमक्कड़, 2. (दे. हँडेरवा)।

हँडेरवा (वि.) फेरी वाला, फेरी लगा कर वस्तु (विशेषत: जूती, छाज आदि) बेचने वाला।

हँडेरू (वि.) 1. दे. हँडेर, 2. दे. हँडेरवा।

हँडोक्कड (वि.) दे. हँडेर।

हँढाणा (क्रि. स.) 1. घुमाना-फिराना, 2. व्यर्थ में चक्कर लगवाना, 3. किसी

काम के लिए चक्कर कटवाना, 4. पशुओं को खलियान में घुमाना। **हँडाना** (हि.)

हँढेर (वि.) दे. हँडेर।

हँढेसरी (वि.) दे. हँडेर।

हंदा (पुं.) दे. हतकार।

हंबै (स्त्री.) दे. हमबै।

हंभाख (पुं.) दे. होंसणा।

हंमाणा (पुं.) दे. रांभणा।

हंस (पुं.) 1. सुंदर जल-पक्षी विशेष (जो जोड़ा बना कर रहता है), 2. न्याय-प्रिय (नीर-क्षीर विवेचक), 3. प्राण-वायु, 4. माया से निर्लिप्त व्यक्ति, 5. जीव, जो शरीर के किसी न किसी भाग में रमण करता है, 6. आत्मा; **~उडणा** मरना; **~रोणा** अंतर्रात्मा को ठेस पहुँचना।

हंस-जाप (पुं.) वह जाप जिसमें 'हकार' के द्वारा वायु बाहर जाती है और 'सकार' के साथ भीतर (इस प्रकार मनुष्य सहज की हंस-मंत्र का जाप करता है, यह 'सोऽहम्' का जाप है)।

हँसणा (क्रि. अ.) 1. प्रसन्नता व्यक्त करना, 2. उपहास उड़ाना, 3. प्रेम अभिव्यक्त करना, 4. बात टालना, 5. मूर्ख बनाना; (वि.) हँसमुख; **~-बोलणा** 1. निस्संकोच बातचीत करना, 2. आनंद-भरी बातचीत करना, 3. मैथुन करना। **हँसना** (हि.)

हँसना (क्रि. अ.) दे. हँसणा।

हँसमुख (वि.) विनोद-प्रिय, जिसके मुँह पर सदा हँसी रहे।

हँसला (पुं.) गले का आभूषण विशेष (यह हँसली से भारी होता है)।

हँसली (स्त्री.) 1. गले का एक आभूषण विशेष, 2. गर्दन के नीचे हँसली के आकार की हड्डी; **~ऊत्तरणा/डिगणा** बच्चे के गले की हड्डी अपने स्थान से हटना।

हंसवाहिनी (स्त्री.) सरस्वती।

हंसा (पुं.) दे. हंस।

हँसाई (स्त्री.) 1. हँसने का भाव या क्रिया, 2. उपहास, 3. निंदा, बदनामी; (क्रि. अ.) 'हँसाणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप।

हँसाणा (क्रि. स.) हँसने के लिए प्रेरित करना। **हँसाना** (हि.)

हँसाना (क्रि. स.) दे. हँसाणा।

हँसिया (स्त्री.) फ़सल काटने का एक औज़ार।

हँसी (स्त्री.) दे. हाँस्सी[2]।

हँसोकड़ा/हँसोड़ (वि.) 1. मज़ाक़िया, विनोद-प्रिय, 2. विदूषक।

हँस्सी (स्त्री.) दे. हाँस्सी[2]; (क्रि. अ.) 'हँसणा' या 'हाँसणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. रूप। **हँसी** (हि.)

हँ-हँ-हँ (स्त्री.) 1. हँसने का भाव या क्रिया, 2. खिसियाने का भाव।

हः-हः (स्त्री.) ठहाका मार कर हँसते समय उत्पन्न ध्वनि।

हक़ (पुं.) स्वामित्व।

हक़दार (पुं.) अधिकार रखने वाला।

हकला (वि.) दे. हाकळा।

हकळाणा (क्रि. अ.) अटक कर बोलना। **हकलाना** (हि.)

हकलाना (क्रि. अ.) दे. हकळाणा।

हक़सफ़ा (पुं.) किसी ज़मीन को खरीदने का वह हक़ जो गाँव के हिस्सेदारों या पड़ोसियों की ओर से पहले प्राप्त होता है।

हकारा (पुं.) 'हूँ'-'हूँ' करने का भाव।

हक़ीक़त (पुं.) दे. हकीक्कत; (स्त्री.) दे. हकीक्कत।

हकीक्कत (पुं.) धर्म-पालक बालक हक़ीक़तराय; (स्त्री.) वास्तविकता। **हक़ीक़त** (हि.)

हकीक्की (पुं.) 1. सगा, 2. मृत्यु के बाद संपत्ति का स्वामी। **हक़ीक़ी** (हि.)

हक़ीम (पुं.) यूनानी रीति से इलाज़ करने वाला।

हकीम्मी (स्त्री.) हिक़मत।

हक्का-बक्का (वि.) भौंचक्का, घबराया हुआ, आश्चर्य-चकित रह जाने का भाव।

हगणा (क्रि. अ.) 1. मल त्यागना, टट्टी बैठना, 2. हार मानना। **हगना** (हि.)

हगना (क्रि. अ.) दे. हगणा।

हगाणा (क्रि. स.) 1. बच्चे का मल विसर्जन कराना, 2. हार मनवाना, पछाड़ना। **हगाना** (हि.)

हगाना (क्रि. स.) दे. हगाणा।

हगाया (वि.) मल-त्याग की इच्छा वाला; **~मरणा/होणा** मल-विसर्जन की तीव्र इच्छा होना।

हगास (स्त्री.) मल त्यागने की इच्छा। दे. हगाया।

हगोरी (वि.) जिसको बार-बार दस्त आए।

हचकोळा (पुं.) हिचकोला।

हज (पुं.) मुसलमानों का काबे के दर्शन के लिए जाना।

हजम (वि.) 1. पेट में पचा हुआ, 2. हड़पा हुआ, अधिकार किया हुआ; **~करणा** 1. हड़पना, 2. बात को पचाना।

हज़रत (पुं.) 1. महात्मा, महापुरुष, 2. खोटा व्यक्ति (व्यंग्य में)।

हजामत (स्त्री.) 1. क्षौर-क्रिया, 2. बाल काटने का काम।

हजार (वि.) 1. एक हजार की संख्या, 2. अनेक, असंख्य।

हजारा (पुं.) सहस्त्र-दल पुष्प विशेष।

हजारी (वि.) 1. अमीर, 2. बड़ा सरदार, बड़ा आदमी; **~उमर** दीर्घ आयु।

हजारी चीर (पुं.) एक विशेष प्रकार का ओढ़ना।

हजूम (पुं.) भीड़, जन-समूह।

हजूरी (स्त्री.) 1. चापलूसी, 2. सेवा। **जी हुजूरी** (हि.)

हज्जाम (पुं.) नाई, हजामत बनाने वाला।

हट[1] (स्त्री.) 1. निषेधात्मकता का भाव– पहला व्यक्ति-एक बात बूज्झूँ?, दूसरा व्यक्ति–हट, 2. पशु को हटाने के लिए प्रयुक्त शब्द; (क्रि. अ.) 'हटणा' क्रिया का आदे. रूप; **~कै** 1. हटकर, दूर, 2. पुनः, घटना का पुनः घटित होना–हटकै काळ पड़्या, 3. ताना कसने के लिए प्रयुक्त शब्द; **~-हट कै** पुनः-पुनः।

हट[2] (स्त्री.) ज़िद, आग्रह। **हठ** (हि.)

हटकणा (क्रि. स.) 1. काम में बाधा डालना, 2. मना करना। **हटकना** (हि.)

हटकना (क्रि. स.) दे. हटकणा।

हटकै (क्रि. वि.) 1. पुनः, दोबारा, 2. थोड़ी दूर पर, 3. कुछ अंतर के साथ, 4. हट कर, बच कर।

हटड़ी (स्त्री.) 1. दीवाली के समय पूजा के लिए बनाया गया मंदिर जैसा खिलौना विशेष, 2. ताक़, छुट-पुट चीज़ें रखने की टाँड, 3. छोटी हाट।

हटणा (क्रि. अ.) 1. स्थान छोड़ना, एक ओर बचना, 2. वचन से मुकरना, 3. शर्त से बचना, 4. मार्ग छोड़ना,

5. लौटना, 6. छोटे बच्चे का मरना, 7. एक ओर हटने के लिए दिया गया आदेश। **हटना** (हि.)

हटना (क्रि. अ.) दे. हटणा।

हटवाणा (क्रि. स.) दे. हटाणा।

हटवाना (क्रि. स.) दे. हटाणा।

हट हट कर (अव्य.) पुनः पुनः। तुल. हटकै।

हटाणा (क्रि. स.) 1. दूर करना, 2. पशु को खदेड़ना, 3. झगड़ते हुओं को दूर-दूर करना, 4. हराना, पछाड़ना, पीछे करना। **हटाना** (हि.)

हटान (वि.) हट कर या बचकर रहने का भाव।

हटाना (क्रि. स.) दे. हटाणा।

हटावणा (क्रि. स.) दे. हटाणा।

हटेट्टा/हटैट्टा (पुं.) 1. व्यर्थ का आडंबर, 2. कष्ट-साध्य, अवांछित व्यवस्था; **~करणा/रोपणा** कष्ट-साध्य आडंबर करना।

हटोड़ी (वि.) ज़िद्दी, हठी।

हट्टा-कट्टा (वि.) मोटा-ताज़ा, हृष्ट-पुष्ट।

हठ (स्त्री.) ज़िद।

हठखेल (वि.) नीतिज्ञ।

हठधर्म (पुं.) दुराग्रह, कट्टरपन।

हठधर्मी (स्त्री.) कट्टरपन, हठ करने का भाव, दुराग्रह; (वि.) दुराग्रही, हठी।

हठयोग (पुं.) शरीर साधने के लिए कठिन आसनों और मुद्राओं आदि की विद्या।

हठी (वि.) दे. हठील्ला।

हठील्ला (वि.) 1. ज़िद्दी, 2. अड़ने वाला, 3. बात का पक्का। **हठीला** (हि.)

हठूर (पुं.) काला जादू।

हड़ंपा (वि.) 1. राक्षसी वृत्ति की, 2. कुरूप तथा स्थूलकाय (महिला); (स्त्री.) हिडिंबा राक्षसी। **हिडिंबा** (हि.)

हड़ंबा (स्त्री.) दे. हड़ंपा।

हड़काना (क्रि. अ.) दे. हड़खाणा।

हड़काया (वि.) दे. हड़खाया।

हड़खाई (वि.) 1. (भूख के कारण) हड्डियाँ तक खा जाने वाली, 2. (भूख के कारण) आक्रमण करने वाली (मादा पशु), 3. भूखी, 4. आक्रामक व्यवहार करने वाली (बहुधा इच्छा की पूर्ति के लिए)।

हड़खाणा (वि.) 1. भूखा, 2. आक्रामक व्यवहार वाला; (क्रि. अ.) आक्रमण करना (किसी वस्तु को पाने के लिए)।

हड़खाया (वि.) दे. हड़खाणा।

हडजुर (स्त्री.) हड्डियों का ज्वर, हर समय रहने वाला हलका ज्वर; **~टूटणा** अस्थि-ज्वर आना बंद होना।

अस्थि-ज्वर (हि.)

हड़णा[1] (क्रि. स.) तराजू, बट्टे आदि का पासंग निकालना।

हड़णा[2] (क्रि. स.) 1. चुराना, 2. धोखे से छीनना, 3. नष्ट करना, 4. (बुद्धि) भ्रष्ट करना—तेरी बुद्धी किसनैं हड़ली?; (वि.) धोखेबाज़। **हरना** (हि.)

हड़ताळ (स्त्री.) असंतोष प्रकट करने के लिए काम बंद करने की विधि।

हड़ताल (स्त्री.) दे. हरताल।

हड़पणा (क्रि. स.) 1. अन्य का हिस्सा (संपत्ति आदि) हड़पना, 2. निगलना, ज़ल्दी-ज़ल्दी खाना। **हड़पना** (हि.)

हड़पना (क्रि. स.) दे. हड़पणा।

हड़बड़ (स्त्री.) 1. ज़ल्दबाजी, 2. भगदड़।

हड़बड़ाणा (क्रि. अ.) 1. घबराना, 2. हक्का-बक्का होना, 3. आतुर होना।

हड़बड़ाना (हि.)

हड़बड़ाना (क्रि. अ.) दे. हड़बड़ाणा।

हड़बड़िया (वि.) उतावला।

हडरोळी (स्त्री.) दे. हडवारी।

हडवारी (स्त्री.) 1. मृतक पशुओं को गाड़ने का स्थान, 2. वह स्थान जहाँ चर्मकार पशुओं का चाम कमाते हैं, (दे. खल्हड़े)।

हड़-हड़ (क्रि. वि.) 1. उद्दंडतापूर्ण हँसने का भाव—हड़-हड़ हँस्सै कुम्हार की माळी की के खाज्जें बूँट, 2. काँपने या हिलने का भाव, जैसे—हड़-हड़ ताप चढ़ना (कँपकँपी के साथ बुख़ार चढ़ना)।

हड़हड़ाणा (क्रि. अ.) 1. आक्रमण करना, भूख के कारण झपटना, 2. तीव्र इच्छा-पूर्ति के लिए लालायित होना।

हड़हड़ाया (वि.) 1. आक्रमण करने की अवस्था वाला (पशु), 2. भूख के कारण निडरतापूर्ण झपटने वाला; (क्रि. अ.) 'हड़हड़ाणा' क्रिया का भू. का, पुं., एकव. रूप।

हडील्ला (वि.) 1. कृशकाय, 2. कठोर हड्डियों वाला, 3. (दे. हठील्ला)।

हडूस्सा (पुं.) रूई पीनने के काम आने वाला एक औजार।

हड़ै (क्रि. वि.) यहाँ, इसी स्थान पर (तुल. अड़ै)।

हड्डी[1] (स्त्री.) अस्थि (तुल. हाड)।

हड्डी[2] (पुं.) एक जाट गोत।

हड्डो (वि.) कृशकाय (महिला)।

हड़ू याँध (स्त्री.) हलदी की गंध।

हणिआर (वि.) दे. उणिहार।

हतक (स्त्री.) अपमान। हत्क (हि.)

हतकार (पुं.) 1. अतिथि के निमित्त निकाला गया आहार, भोजन का वह अंश जो आगंतुक के लिए निकाला जाता है, 2. दानार्थ दिया गया भोजन; **~काढणा/ लिकाड़णा** भोजन करने से पूर्व पुण्यार्थ कुछ भोजन निकालना।

हताश (वि.) निराश।

हताहत (वि.) मारे गए और घायल।

हतोड़ी (स्त्री.) हथौड़ी।

हत्त (स्त्री.) 1. धत्, 2. डराने, झिझकाने, झिड़कने या नकारने के लिए प्रयुक्त शब्द; **~-तेरे की** 1. आश्चर्य-बोधक शब्द, 2. तिरस्कार-बोधक शब्द।

हत्था[1] (पुं.) कसाईख़ाना, बूचड़ख़ाना।

हत्था[2] (पुं.) मूठ, दस्ता।

हत्थी (स्त्री.) 1. छोटी मूठ, मूठ, 2. बूचड़ख़ाना।

हत्या (स्त्री.) 1. निहत्थे की हत्या, 2. हत्या का भाव या क्रिया; **जी-~** जीव-हत्या, हिंसा; **~होणा**1. जान को बवाल खड़ा होना, 2. वध होना।

हत्याकांड (पुं.) दे. कतल।

हत्यारा (वि.) हत्या करने वाला।

हत्यारी (वि.) निर्दयी (महिला)।

हत्यारिन (हि.)

हथ-कंगणा (पुं.) वर-वधू के हाथ पर बाँधा जाने वाला नाला या कंगना।

हथकंडा (पुं.) दे. हथकंढा।

हथकंढा (पुं.) 1. चालाकी का ढंग, 2. हाथ की सफ़ाई। **हथकंडा** (हि.)

हथकड़ी (स्त्री.) क़ैदी के हाथ में पहनाई जाने वाली लोहे की भारी जंजीर।

हथगोळा (पुं.) 1. हाथ से फेंक कर मारा जाने वाला गोला, 2. हाथ से यथा-शक्ति दूर तक फेंका जाने वाला गोला।

हथणी (स्त्री.) हाथी की मादा; (वि.)

भारी-भरकम(महिला)। **हथिनी** (हि.)

हथदंड (पुं.) टड्डा, बरा, (दे. टाड[1])।

हथनापुर (पुं.) दिल्ली से 57 मील उत्तर-पूर्व में खंडहर रूप में प्राप्त कौरवों की राजधानी–हथनापुर के निरफ धरम के पुत्र कहावैं। मन भर भोजन देंह कनक के पात्र जिमावैं।। (धर्म संवाद)। **हस्तिनापुर** (हि.)

हथफूल (पुं.) कर-पृष्ठ पर पहना जाने वाला एक आभूषण (इसके अगले भाग पर अंगुलियों में पहनी जाने वाली अँगूठियाँ होती हैं)।

हथफेरी (स्त्री.) 1. चालबाज़ी, 2. हस्त-कौशल।

हथयार (पुं.) हथियार।

हथ-रहड़ी (स्त्री.) हथ ठेला।

हथ-लाड्डो (स्त्री.) अति लाडली (बंदड़ी)।

हथळी (स्त्री.) 1. मूठ, 2. (दे. हत्थी)।

हथलेवा (पुं.) 1. हस्त-ग्राभ, पति, 2. फेरों के समय गाया जाने वाला गीत विशेष, 3. विवाह की एक रस्म।

हथियाना (क्रि. स.) दे. हिथाणा।

हथियार (पुं.) तलवार, भाला आदि शस्त्र, अस्त्र-शस्त्र।

हथेली (स्त्री.) दे. हथेळी।

हथेळी (स्त्री.) 1. हथेली, 2. मूठ, 3. हत्था, हल का हत्था; **~खुज्याणा** धन-प्राप्ति का शकुन होना; **~दिखाणा** भाग्य-रेखा पढ़वाना।

हथैहळी (स्त्री.) हल की मूठ।

हथौड़ा (पुं.) दे. हिथोड़ा।

हथौड़ी (स्त्री.) छोटा हथौड़ा।

हद (स्त्री.) 1. सीमा, 2. अंत; **~करणा** 1. सीमा लाँघना, 2. विचित्र कार्य करना; **~होणा** शिष्टाचार की सभी सीमा लाँघना।

हद छात्ती (अव्य.) हिम्मत। साहस। दे. हद।

हनमान (पुं.) हनुमान जी जो शक्ति के देवता हैं (इनका दिन मंगलवार है, पहलवान इस दिन मालिश नहीं करते)।

हनुमान (पुं.) दे. हनमान।

हपता (पुं.) हफ्ता, सप्ताह, सात दिन का काल।

हपतावार (क्रि. वि.) हफ्तेवार, हर सप्ताह।

हप्प (स्त्री.) हप, डराने, धमकाने के लिए प्रयुक्त ध्वनि या शब्द।

हफता (पुं.) सप्ताह (तुल. हपता)। **हफ्ता** (हि.)

हाफिज (पुं.) हफीज, संरक्षक।

हब-कब (पुं.) हवन-सामग्री; **~बिगाड़णा** शुभ काम में रोड़ा अटकाना। **हव्य-कव्य** (हि.)

हबशी (पुं.) 1. अफ्रीका देश का निवासी, 2. काला व्यक्ति; (वि.) घने काले रंग का (व्यक्ति)।

हबेल्ली (स्त्री.) पक्का और बड़ा मकान। **हवेली** (हि.)

हम (सर्व.) 1. 'मैं' का बहुवचन रूप, 2. गर्व प्रकट करने के लिए 'मैं' के स्थान पर प्रयुक्त शब्द।

हम का (सर्व.) दे. म्हारा।

हमदर्द (पुं.) वह जो दुःख में सहानुभूति रखे।

हमदर्दी (स्त्री.) सहानुभूति।

हमबै (स्त्री.) 1. हामी, हाँ, 2. स्वीकार-बोधक शब्द, सम्मति-सूचक शब्द, 3. उपेक्षा बोधक शब्द, 4. प्रश्न बोधक शब्द, (ये अर्थ-भेद अनुतान के कारण हैं); **~करणा/भरणा** हाँ करना, हामी भरना; **~होणा** 1. बात पक्की होना, 2. स्वीकृति मिलना।

हमल (पुं.) गर्भ, स्त्री के पेट में बच्चे का होना।

हमला (पुं.) आक्रमण (तुल. धावा)।

हमलावर (पुं.) आक्रमणकारी।

हमारा (सर्व.) 1. दे. म्हारा, 2. दे. हुमारा।

हमीं (सर्व.) दे. हम्मैं।

हमें (सर्व.) हमको, 'मैं' सर्वनाम का कर्म और संप्रदान कारक का बहुवचन रूप।

हमेंस (क्रि.वि.) प्रतिदिन। **हमेशा** (हि.)

हमेल (पुं.) रुपये या सोने का मोहर-जटित कठला विशेष, झालरा, टिकावर।

हमेशा (क्रि. वि.) सदैव, नित्य-प्रति (तुल. हमेस)।

हम्मैं (सर्व.) हम ही।

हय (क्रि.) है। दे. सै।

हया (स्त्री.) लज्जा, शर्म।

हर[1] (पुं.) शिव, महादेव; **~की पौड़ी** हरद्वार में गंगा-तट पर स्थित पवित्र-स्थान।

हर[2] (वि.) प्रत्येक; (क्रि. स.) 'हरणा' क्रिया का प्रे. रूप।

हर[3] (प्रत्य.) संबंध-सूचक एक प्रत्यय, जैसे–भीम हर कै चलाज्या।

हरक़त (स्त्री.) 1. सुस्ती, 2. गति, 3. शरारत।

हरकारा (पुं.) 1. डाकिया, 2. संदेशवाहक।

हरख (पुं.) 1. दे. हिलकी, 2. हर्ष..

हर-गंगे (पुं.) गंगा के पंडे जो 'हर-गंगे' की जकड़ी गाकर वस्त्र, अन्न आदि माँगते हैं–तेरी पड़ोसण नैं कर दिया दान। तूँ क्यूँ बैट्ठी सै जुजमान, हर गंगे।। हर गंगे, (दे. कबीस्सर), (ये भैरव के भोंपों की तरह विचित्र पोशाक धारण करते हैं)।

हरगिज़ (अव्य.) कदापि, कभी भी।

हरज (पुं.) हानि। **हर्ज** (हि.)

हरजणा (क्रि.) बाधा डालना।

हरजस (पुं.) 1. ईश्वर की स्तुति में गाए जाने वाले प्रातःकालीन गीत, ईश-स्तुति, 2. फेरी लगा कर ईश-स्तुति करने वाला।

हरजाई (वि.) व्यभिचारिणी; (स्त्री.) एक महिला जिसने श्री कृष्ण को भातई बनाया था–हरजाई कै भात भर्‌या था दे दिया भात घणेरा (लो. गी.)।

हरजान्ना (पुं.) हर्जाना, क्षति-पूर्ति।

हरजी (पुं.) दे. हरजस।

हरट (पुं.) दे. रहँट।

हरट टैक (पुं.) हर्ट अटैक।

हरड़[1] (स्त्री.) अरहर की दाल।

हरड़[2] (स्त्री.) हड़ का सूखा फल (जिसे रगड़ कर बच्चे को घुट्टी दी जाती है), हर्र, हरीतकी। **हड़** (हि.)

हरड़ै (स्त्री.) दे. हरड़[2]।

हरण (पुं.) चोरी-छिपे उठा ले जाने का भाव।

हरणखुरी (स्त्री.) दे. हिरणखुरी।

हरणा (क्रि. स.) 1. निवारण करना, 2. (दे. हड़णा)। **हरना** (हि.)

हरणाकुस (पुं.) एक क्रूर राजा, प्रह्लाद के पिता। **हिरण्यकशिपु** (हि.)

हरणी (स्त्री.) ज्योतिष के अनुसार एक चिह्न जिसका अदृश्य होना अकाल का सूचक माना जाता है। उदा.चांद नै छोड्डी हरणी मरद नै छोड्डी परणी।

हरताल (स्त्री.) एक विशेष प्रकार की स्याही जो अशुद्ध शब्द को मिटाने के काम में लाई जाती थी (तुल. हड़ताळ)।

हरदवार (पुं.) गंगा-तट पर स्थित प्रसिद्ध तीर्थ (पूर्व-उत्तर में हरियाणे की सीमा यहीं से आरंभ मानी जाती है)। **हरद्वार** (हि.)

हरदेदास (पुं.) एक संत कवि।

हरदेवा बिराग्गी (पुं.) गोरड़ निवासी (वि. सं. 1938-1983) एक प्रसिद्ध साँगी (जो रागिनी को पहली बार मंच पर लाया)।

हरनंद (पुं.) बलख़-बुख़ारे का एक प्रतापी राजा।

हरनंदी (स्त्री.) नरसिंह (नरसी भगत) की इकलौती पुत्री; (पुं.) नाई, श्री कृष्ण; **~का भात** अनंत भात।

हरना (क्रि. स.) दे. हड़णा^{2}।

हर-नाई (पुं.) श्री कृष्ण (जो स्वयं नाई बन कर हरनंदी का भात भरने गए थे)।

हरनाराण (पुं.) दे. दे-ऊठणी ग्यास।

हरप (पुं.) अक्षर; **~आणा** 1. दोष लगना, 2. साक्षर होना; **~दरोग्गी मैं आणा** क़ानून की पकड़ में आना।

हरफ़ (हि.)

हरफ़ (पुं.) दे. हरप।

हरफवा (वि.) दे. हर्रया।

हरयाणवी (वि.) हरियाणा-संबंधी, हरियाणे का; (स्त्री.) हरियाणे में बोली जाने वाली भाषा, 1. (तुल. देसवाळी), 2. (तुल. देसड़ी), 3. (तुल. जाट्टू~ बोल्ली); **~भासा** हरियाणे में बोली जाने वाली भाषा या बोली—बाँगरू, जाट्टू, देस्सी, अहीरी, मेवात्ती, कौरवी आदि इसकी उप-भाषाएँ या उप-बोलियाँ हैं (लेखक की धारणा है कि वर्तमान हिंदी का विकास हरियाणवी से हुआ है, हिंदी हरियाणवी का शहरी संस्करण है, यवनकाल में इसका सम्मान कम हुआ); ~ **~काल** अगरचंद नाहटा के अनुसार हरियाणवी भाषा सोलहवीं शताब्दी के आस-पास साहित्य में प्रयुक्त होती थी, हरियाणे के लौहाटू ग्राम के कवि वल्ह ने कूकड़ा मंजारी चउपई इसी भाषा में लिखी थी (लेखक की ध ारणा है कि इसका सीधा संबंध वैदिक भाषा, संस्कृत, पाली, प्राकृत तथा अपभ्रंश से है, विस्तार के लिए देखिए भूमिका); **~संग्रहालय** एक सग्रहालय जो गुरुकुल झज्झर में स्थित है, इसमें अनेक महत्त्वपूर्ण शिला-लेख, पात्र-लेख, मुद्राएँ, सिक्के, मूर्तियाँ, बर्तन आदि हैं, (ज.सा. 4-10-11)।

हरियाणवी (हि.)

हरयाणा (पुं.) 1. हरियाणा प्रदेश जिसके पूर्व में उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली, उत्तर में हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब और दक्षिण-पश्चिम में राजस्थान की सीमाएँ हैं, 2. हर का प्रदेश (क्योंकि यहाँ का उपास्य देव हर है और गाँव-गाँव में शिवालय (सिवाल्ला) है, (यान या याण शब्द धर्म वाचक है, जैसे—महायाण, हीनयाण, हरयाण आदि), 3. आरण्यक प्रदेश, 4. हरियाना नाम के राजा के नाम पर बसा प्रदेश, 5. ब्रह्मावर्त प्रदेश, 6. मयूर-भूमि, 7. यज्ञीय प्रदेश, 8. हरिधान्यक (हरित एवं धन-धान्यपूर्ण भूमि), 9. हरि (परशुराम) के द्वारा क्षत्रियों के बलिदान की भूमि, 10. हरिया वन का प्रदेश (एक अनुमान के अनुसार यहाँ 360 नदियाँ थीं जो राजस्थान के मरुस्थल के प्रभाव से लुप्त हो गईं), 11. हरि (कृष्ण) का युद्ध के लिए आने का स्थान, 12. सबके आकर्षण की केंद्रभूमि, 13. सब दुखों को हरण करने वाला स्थान, 14. अभिरायण प्रदेश, 15. दिल्ली मंडल, 16. परंपरानुसार ब्राह्मण धर्म का पवित्र

देश, 17. मध्यदेश, 18. सरस्वती और दृशद्वती नदियों के बीच का प्रदेश; **~सीमा** 1. भाषा के आधार पर फ़रीदाबाद, बल्लभगढ़, रोहतक, दादरी, भिवानी, हाँस्सी, हिसार, सिरसा, अमरोहा टुहाना, कैथल, करनाल, पानीपत और दिल्ली का क्षेत्र, 2. शतद्रू से चंबल की घाटी तक, गंगानगर से ऐटा, बरेली और देहरादून तक, 3. सिरसा से पालम तक (पृथ्वी मेहता– हमारा राजस्थान), 4. पूर्व में झज्झर व बहादुरगढ़, पश्चिम में अग्रोहा व भूमा (हिसार), उत्तर में जींद राज्य व कोहन का क्षेत्र, पटियाला राज्य और दक्षिण में दादरी प्रांत, (बंदोबस्त रिपोर्ट हिसार–1863 ई.), 5. हरद्वार से हिसार तक का प्रदेश जहाँ के मूल निवासी निरामिष हैं। **हरियाणा** (हि.)

हरयाल्ला (वि.) 1. हरा-भरा, 2. प्रसन्न-चित्त; **~बन्ना** प्रसन्न-चित दूल्हा। **हरियाला** (हि.)

हरयाल्ली (स्त्री.) 1. हरा-भरापन, 2. प्रसन्न-चित्त अवस्था; **~जच्चा** प्रसन्नमना जच्चा; **~बन्नी** प्रसन्न-चित्त बन्नी या बंदड़ी। **हरियाली** (हि.)

हरर्‌या (वि.) 1. जंगली (पशु), 2. बेक़ाबू (पशु), 3. हरियाली से प्यार करने वाला पशु (विशेषत: गाय), 4. उच्छृंखल स्वभाव का; **~होणा** 1. क़ाबू से बाहर निकलना, 2. पशु में हर्रापन के गुण आना।

हरवी (अव्य.) कदापि।

हरसणा (क्रि. अ.) हर्षित होना, आनंदित होना।

हरसा (पुं.) 1. वह पत्थर जिस पर चंदन घिसा जाता है, 2. गाड़ी की फड़।

हरहट (वि.) दे. हर्‌र्या।

हरहर महा दे (पुं.) 1. भगवान शिव, 2. एक उद्‌घोष जिससे प्रेरित होकर सेनाएँ शत्रु पर टूट पड़ती हैं, 3. शिवालय का घंटा बजाते समय उच्चरित शब्द।

हरा (वि.) दे. हर्‌या।

हराणा (क्रि. स.) 1. पराजित करना, 2. थकाना। **हराना** (हि.)

हराना (क्रि. स.) दे. हराणा।

हरान्नी (स्त्री.) आश्चर्य। **हैरानी** (हि.)

हराम (वि.) अनुचित, निषिद्ध; (पुं.) 1. अधर्म, पाप, 2. एक गाली; **~का** 1. मुफ्त का, 2. जिसका पिता अज्ञात हो; ~ **~खाणा** बिना परिश्रम किए खाना।

हरामखोर (पुं.) 1. बिना परिश्रम किए या पाप की कमाई खाने वाला, 2. आलसी।

हरामजाद्‌दा (वि.) दे. हराम्मी।

हरामी (वि.) दे. हराम्मी।

हराम्मड़ (वि.) 1. कुलटा, चरित्रहीन, 2. मुफ्तख़ोरी; (स्त्री.) स्त्री के लिए प्रयुक्त एक निंदापरक शब्द।

हराम्मी (वि.) 1. मुफ्तख़ोर, 2. जिसका पिता अज्ञात हो; (पुं.) एक गाली। **हरामी** (हि.)

हराया (क्रि.) हरा किया।

हरारत (स्त्री.) दे. निवाई।

हरावळ (पुं.) सेना का वह दस्ता जो युद्ध में सबसे आगे रहता है।

हरिचंद (पुं.) राजा हरिश्चंद्र; (वि.) सत्यवादी, सत्य पर अटल रहने वाला। **हरिश्चंद्र** (हि.)

हरिजन (पुं.) 1. तथाकथित नीच और अछूत समझी जाने वाली जातियों को महात्मा गांधी द्वारा दिया गया सम्मान बोधक और प्यार-भरा शब्द, 2.

अनुसूचित जाति का व्यक्ति, 3. भगवान का भक्त।

हरित वसना (स्त्री.) हरियाणा की एक पौराणिक नदी।

हरिद्वार (पुं.) दे. हरदवार।

हरिन (पुं.) दे. हिरण।

हरिनी (स्त्री.) दे. हिरणी।

हरिबण (पुं.) दे. हरयाणा।

हरिया (पुं.) राजा हरिश्चंद्र।

हरियाणक (पुं.) दे. हरियाणा।

हरियाणवी (वि.) दे. हरयाणवी।

हरियाणा (पुं.) दे. हरयाणा।

हरियाना (पुं.) दे. हरयाणा।

हरियानी (स्त्री.) दे. हरयाणवी; (वि.) दे. हरयाणवी।

हरियाली (स्त्री.) दे. हरयाल्ली।

हरियाली तीज (स्त्री.) दे. तीज।

हरियाल्ला (वि.) दे. हरयाल्ला।

हरिवन (पुं.) दे. हरयाणा।

हरिवाणक (पुं.) दे. हरियाणा।

हरिश्चंद्र (पुं.) दे. हरिचंद।

हरिहर (पुं.) 1. शिव, 2. शुभ कार्य करने से पूर्व उच्चरित शब्द, जैसे–करो हरिहर; **~करणा** 1. भगवान का स्मरण करके कार्य आरंभ करना, 2. भोजन आरंभ करना, 3. भगवान का जप करना।

हरी (पुं.) भगवान; (वि.) 1. हरी-भरी, 2. प्रसन्न, 3. गाभिन (पशु), 4. सब्ज़; **~होणा** पशु का गाभिन होना। **हरि/हरी** (हि.)

हरीदास (पुं.) एक संत जिसकी स्मृति में झाड़ोद्धा (झज्झर) में चैत्र बदी चतुर्थी को मेला लगता है।

हरे-राम (पुं.) 1. एक जाप, 2. विस्मयादि बोधक शब्द, 3. प्रणाम करने की एक विधि।

हर्क (पुं.) (?) उदा.–और कोई तम बतळाइयो मेरे दिल में हर्क नहीं सै। (लचं)

हर्ज (पुं.) दे. हरज।

हर्‌या (पुं.) 1. हरा चारा, 2. चारा, 3. हरा रंग; (वि.) हरे रंग का; **~काटणा** हरा चारा काटना। **हरा** (हि.)

हर्ष (पुं.) दे. हरख।

हल (पुं.) 1. उपाय, 2. (दे. हळ)।

हळ (पुं.) हल, खेती जोतने का एक यंत्र; **~करणा** हल किराए पर लेना; **~चलाणा/जोतणा/बाहणा** हल जोतना; **~मैं जोड़णा** 1. दंड देना, पशु की जगह हल में जुतने का दंड मिलना, 2. कठिन परिश्रम का काम कराना।

हलक (पुं.) 1. गला, कंठ, 2. मुँह; **~मैं ठोकणा** ज़ोर-ज़बरदस्ती करना; **~मैं तैं काढणा** मुँह से छुड़ाना, ज़बरदस्ती छीनना। **हलक़** (हि.)

हळकम्मा (पुं.) शोर।

हलका (वि.) दे. हळवा।

हलचल (स्त्री.) 1. चहल-पहल, 2. खलबली।

हळ-जोतिया (पुं) 1. पारस्परिक या सहकारी खेती का एक ढंग जिसमें एक या एक से अधिक हल किसान के खेत जोतने के लिए बिना पारिश्रमिक लिए काम करते हैं, 2. शीरा आदि का भोजन जो हल-जोतिया में सम्मिलित हालियों को दिया जाता है; **~करणा** हल-जोतिया विधि से खेत जोतना, मिल-जुल कर हल जोतना।

हळद (स्त्री.) 1. विवाह की एक रस्म जिसमें दूल्हे तथा दुल्हिन को हल्दी चढ़ाई जाती है, 2. इस रस्म पर गाया जाने वाला गीत, 3. बान, (दे. तेल

~चढाणा)।

हळदहात (पुं.) दे. हळदात।

हळदात (पुं.) विवाह के समय हल्दी चढ़ाने की रस्म।

हलदी (स्त्री.) दे. हळदी।

हळदी (स्त्री.) एक पीला मसाला जो चोट हरने के काम भी आता है; **आंबिया-~** एक विशेष प्रकार की हलदी। **हल्दी** (हि.)

हळदुआ (पुं.) गेहूँ का एक रोग जिसमें पत्ते पीले पड़ जाते हैं।

हलफ़ (पुं.) पवित्र वस्तु की शपथ, सौगंध।

हलफ़नामा (पुं.) शपथ-पत्र।

हळवा (वि.) 1. जो तौल में भारी न हो, 2. कम गाढ़ा, 3. कम गहरे रंग का, 4. कम, 5. जीर्णकाय, 6. तुलना में कम, 7. सरल। **हलका** (हि.)

हलवा (पुं.) 1. रवे, घी आदि से बना प्रसिद्ध मीठा भोज्य पदार्थ, 2. वह तरल और गाढ़ा पदार्थ जिसे अधिक मथ दिया गया हो; (वि.) 1. गिलगिला, 2. सरल (कार्य); **~-पूरी** हलवा-पूरी का भोजना।

हलवाई (पुं.) मिठाई बनाने वाला।

हलवाही (स्त्री.) हल जोतने का काम।

हळवाह्या (पुं.) दे. हाळी।

हळव्याँ (क्रि. वि.) 1. हलकी चाल से, 2. आहिस्ता से, धीमे।

हळसंड्डी (स्त्री.) दे. गंडस्या।

हळस (स्त्री.) 'हल' की मोटी और लंबी पाट।

हळसिया (पुं.) 1. छोटा हल, 2. हाली।

हळसोट (पुं.) 1. गंडस्या (दे.) के अभाव में हल को उल्टा करके जूए पर टाँगने की क्रिया, 2. (दे. हळ- जोतिया)।

हळसोटिया (पुं.) दे. हळ-जोतिया।

हळाई (स्त्री.) 1. लगभग 30-40 खूडों के बराबर का खेत का खंड, 2. खेत का वह छोटा खंड जिसे हाली एक बारी में जोतने के लिए निश्चित करता है और फिर उसी रेखा के बीच हल चलाता है, 3. जुताई करते समय बैलों को दिया जाने वाला संकेत ताकि वे सीधी रेखा में हल खींचें, 4. हल-भर का खेत–थारै सै कोए हळाई?; **~काढणा /धरणा/भरणा** हल जोतते समय खेत के एक खंड में रेखा खींचना ताकि खेत को खंडशः जोता जा सके।

हलाक़ (वि.) मारा हुआ।

हलाणा (क्रि. स.) दे. हिलाणा।

हलाल (पुं.) वह जिसे तड़पा-तड़पा कर मारा जाए; (वि.) जायज़ (धार्मिक दृष्टि से उचित)।

हली (वि.) हल्की। उदा.–काका हाथ कुहाड़ी हली चालती दीखै सै।

हलीम (वि.) विनम्र।

हलुवा (पुं.) दे. हलवा।

हळोटिया (पुं.) ऋतु में पहली बार हल जोतने का भाव।

हलोतिया (पुं.) दे. हल् जोतिया।

हलोर (स्त्री.) तरंग; (क्रि. स.) 'हलोरणा' क्रिया का आदे. रूप; **~ऊठणा** 1. मन तरंगित होना, 2. कामुक भाव उत्पन्न होना। **हिलोर** (हि.)

हलोरणा (क्रि. स.) दे. हिलोरणा।

हळ्दी-चून्ना (स्त्री.) इंगला-पिंगला नामक नाड़ियाँ।

हल्लण (पुं.) भूकंप; (वि.) वह (व्यक्ति) जिसके सभी अंग हिलते हों; **~आणा** भूकंप आना; **~होणा** शरीर पूरी तरह हिलना। **हल्लन** (हि.)

हल्ला (पुं.) 1. धावा, 2. शोर-गुल; **~बोलणा** धावा करना।

हल्सन (स्त्री.) दे. हळस।

हवन (पुं.) दे. होम।

हवलदार (पुं.) दे. होलदार।

हवस (स्त्री.) उत्कट तृष्णा, लालसा, कामना।

हवा (स्त्री.) 1. पवन, 2. भूत, 3. चलन, फ़ैशन, 4. प्रसिद्धि; **~आणा** भूत-आत्मा का प्रवेश होना; **~खाणा** 1. मज़े लूटना, 2. हानि में रहना, खाली हाथ रहना; **~होणा** 1. लापता होना, 2. तीव्र गति से दौड़ना, 3. बात पुरानी होना, 4. पराई सीख में होना, 5. किसी में भूत-प्रेत का प्रवेश होना।

हवाई जहाज (पुं.) वायुयान (तुल. अंबर ~की चील गाड्डी)।

हवादार (वि.) जिसमें वायु के आने जाने का यथेष्ट प्रबंध हो।

हवाबाज़ (पुं.) वायुयान चलाने वाला।

हवाबाज़ी (स्त्री.) हवाई जहाज़ चलाने का काम।

हवाल (पुं.) 1. दशा, हाल, 2. परिणाम, 3. समाचार।

हवाला (पुं.) 1. प्रमाण, उल्लेख, 2. उदाहरण, दृष्टांत, 3. सुपुर्दगी, ज़िम्मेदारी।

हवालात (स्त्री.) पुलिस की देख-रेख में नज़रबंद रहने की क्रिया, जेलख़ाना।

हवेली (स्त्री.) दे. हेल्ली।

हवेल्ली (स्त्री.) दे. हेल्ली।

हसीन (वि.) सुंदर।

हस्त (पुं.) 1. हाथ, 2. एक नक्षत्र।

हस्तक्षेप (पुं.) दखल।

हस्तरेखा (स्त्री.) हथेली की रेखाएँ।

हस्त-लिपि (स्त्री.) हाथ का लिखा लेख।

हस्ताक्षर (पुं.) दस्तख़त।

हस्तिनापुर (पुं.) दे. हथनापुर।

हस्ती (स्त्री.) 1. ताक़त, 2. सत्ता।

हस्पताल (पुं.) अस्पताल, चिकित्सालय।

हाँ (स्त्री.) स्वीकृति-सूचक शब्द; **~भरणा** 1. स्वीकृति देना, 2. वचन देना, 3. कहानी का हुँकारा भरना; **~मैं हाँ** एक मत; ~ **~मिलाणा** जी हुजूरी करना; **~-हंबै** आंशिक स्वीकृति; ~ **~करणा** आंशिक स्वीकृति देना; ~-हूँ 1. आंशिक स्वीकृति, 2. टालने का भाव।

हां ए (अव्य.) दे. आँ हे।

हाँक (स्त्री.) पशुओं को हाँकने का भाव या क्रिया; (क्रि. स.) 'हाँकणा' क्रिया का आदे. रूप।

हाँकणा (क्रि. स.) 1. (डंडे की सहायता या ऊँची ध्वनि से) पशु को चलने के लिए प्रेरित करना, 2. बैलगाड़ी आदि को चलाना, 3. मनमाने ढंग से चलाना, 4. पशुओं का-सा व्यवहार बरतना, 5. हाथ के पंखे से हवा करना; **एक लाट्ठी तैं~** छोटे-बड़े सभी के साथ एक-सा (अशिष्टता का) व्यवहार करना। **हाँकना** (हि.)

हाँकना (क्रि. स.) दे. हाँकणा।

हांड (स्त्री.) घूमने फिरने, ढूंढ़ने का भाव।

हाँडणा (क्रि. अ.) दे. हाँढणा।

हाँडी (स्त्री.) दे. हाँड्डी।

हांडीवार (पुं.) दे. हांडियां का बखत।

हाँड्डा (पुं.) 1. बड़ा मटका, 2. गंदा या अपवित्र मटका, 3. बिजली का बड़ा बल्ब।

हाँड्डी (स्त्री.) 1. छोटा मटका, 2. अपवित्र या उच्छिष्ट पात्र, 3. आग पर रखते-रखते काला पड़ा मटका; **~का छोह बरोल्ली पै** सबल का क्रोध निर्बल पर उतारना;

~(-डियाँ) **का बखत** सायं चार-पाँच बजे का समय; ~-**बरोल्ली** 1. घर के छोटे-बड़े पात्र, 2. अपवित्र पात्र; ~ ~**करणा** 1. दूध-दही के पात्र धोना; 2. बर्तन साफ़ करना; ~-**सा मुँह** गंदा मुँह। **हाँडी** (हि.)

हाँढणा (क्रि. अ.) 1. व्यर्थ में घूमना-फिरना, 2. टहलना, 3. मारा-मारा फिरना, 4. खोज करते फिरना; (वि.) घुमक्कड़ (तुल. हँडर)। **हाँडना** (हि.)

हाँढणी (वि.) 1. घुमक्कड़ (महिला), 2. दुष्टा, चरित्रहीन; **घर-घर**~ 1. मृत्यु, 2. दर-दर ठोकर खाने वाली।

हाँपना/हाँफना (क्रि. अ.) 1. थकावट या रोगादि के कारण जल्दी-जल्दी साँस लेना, 2. भय के कारण काँपना।

हाँसणा (क्रि. अ.) हँसना।

हांसळी (स्त्री.) दे. हंसली।

हाँसा (पुं.) गले का एक आभूषण।

हाँसिल[1] (पुं.) एक जलचर जिसका तेल हड्डी की चोट में लाभदायक होता है।

हाँसिल[2] (वि.) प्राप्त, मिला हुआ; (पुं.) 1. प्राप्ति, 2. नफ़ा, 3. गणित की क्रिया का फल।

हाँसी ठल्ला (पुं.) दे. ठिठोळी।

हाँस्सी[1] (पुं.) हरियाणे का एक शहर, (एक अनुमान के अनुसार महाभारत में वर्णित दस दुर्गों में से एक दुर्ग इसी स्थान पर था)। **हाँसी** (हि.)

हाँस्सी[2] (स्त्री.) 1. हँसना, 2. हँसी- मज़ाक, उपहास; (क्रि. अ.) 'हँसणा' या 'हाँसणा' क्रिया का भू. का., स्त्रीलिं. एकव. रूप; ~**मैं खाँस्सी** मज़ाक करते-करते लड़ाई-झगड़ा होना। **हँसी** (हि.)

हा (स्त्री.) 1. भय-सूचक शब्द, 2. शोक-सूचक शब्द, 3. आश्चर्य-सूचक शब्द; (क्रि.अ.) था; (सर्व.) मेवा.) उ. पु. बहुव. का रूप।

हाई (प्रत्य.) वाली। उदा.—मक्कर हाई। (मक्कर भरने वाली।)

हाऊ (पुं.) 1. एक (काल्पनिक) दैत्य जिसका नाम लेकर बच्चों को डराया जाता है, 2. 'कोको' का पति या साथी, 3. भय, (दे. हौवा); ~-**सा** भयंकर रंग-रूप का।

हाए (स्त्री.) 1. कष्ट-बोधक ध्वनि, 2. प्रशंसा-बोधक ध्वनि—हाए मेरे बेटे! यो कुड़ता कित तैं मार्‌या?।

हाकळा (वि.) हकलाने वाला। **हाकला** (हि.)

हाक़िम[1] (पुं.) बड़ा अधिकारी, शासक।

हाकिम[2] (पुं.) पति।

हाजमा (पुं.) पाचन-क्रिया।

हाजिर (वि.) उपस्थित।

हाज़िर जवाब (वि.) तुरंत उत्तर देने में कुशल, प्रत्युत्पन्नमति।

हाजी (पुं.) वह मुसलमान जिसने हज कर लिया हो।

हाज्जत (स्त्री.) 1. आंतरिक इच्छा-पूर्ति की तीव्र लालसा, 2. मल-मूत्र त्याग का वेग। **हाज़त** (हि.)

हाट (स्त्री.) 1. दूकान, 2. ठाठ-बाट, 3. व्यवस्था; ~**करणा/रोपणा** बड़ा आयोजन करना; ~-**बजार** दूकान आदि।

हाड (पुं.) हड्डी; (वि.) 1. हड्डी के समान कठोर (वस्तु), 2. जीर्ण-काय, जिसके शरीर की हड्डी-हड्डी दिखाई देती हो।

हाड-गोड्डा (पुं.) शरीर; **~चालणा** शरीर काम करने योग्य बने रहना; **~तोड़णा** चोट पहुँचाना; **~हलणा** शरीर काम करने योग्य न रहना।

हाड़णा (क्रि. स.) 1. तराजू का पासंग ठीक करना, 2. तौल के बट्टों का प्रमाण जाँचना।

हाड-हडील्ला (वि.) 1. जीर्ण-काय, 2. कठोर हड्डी का (व्यक्ति), 3. जिसके अस्थि-पंजर दिखाई दें। **हाड-हडीला** (हि.)

हाड़ा[1] (पुं.) पासंग, पसंघा; **~करणा** पासंग ठीक करना।

हाड़ा[2] (पुं.) अनुनय-विनय करने का भाव या क्रिया; **~(-ड़े) खाणा** अनुनय-विनय करना, गिड़गिड़ा कर प्रार्थना करना।

हाड़ा[3] (पुं.) अन्न का वह भाग जो चक्की पीसते समय मुट्ठी भर कर चक्की के मुंह में डाला जाता है। तुल. गल्ला, तुल. पस्सो। 1. दे. हाड़ा[1]। 2. दे. हाड़ा[2]।

हाड़ा[4] (पुं.) दे. भेड्या।

हाडिल (वि.) 1. जिसकी हड्डी-हड्डी दिखाई देती हों, कमज़ोर, 2. कठोर हड्डियों वाला।

हाड़ी (स्त्री.) दे. साड्ढी।

हाड़े (पुं.) दे. हाड़ा[2]।

हाड़ै (क्रि. वि.) यहाँ, यहीं, यहीं पर (तुल. अड़ै)।

हाण[1] (स्त्री.) 1. समय, 2. देर, देरी–घणी हाण मैं आया (हाणाँ–हाण का रूपांतर, जैसे–जात्ती हाणाँ); **एक~** काफ़ी देरी का समय; **~ ~लाणा** विलंब करना; **~करणा/लाणा** देरी लगाना; **~की हाण मैं** तुरंत; **~-हाण मैं** बार-बार।

हाण[2] (वि.) समवयस्क, तुल्य का, समान, बराबर का–तेरी हाण का छोहरा सै।

हाण[3] (स्त्री.) हानि–जो गुणवंता घर रहै, तीन चीज की हाण/ गुण भूल्लै, विद्या धहै ओरे घटावै काण।।। **हानि** (हि.)

हाण-दुण (वि.) लगभग सम वयस्क, हम उम्र।

हाण दुमाणी (स्त्री.) बेवफ़ा स्त्री।

हाणी (स्त्री.) 1. घाटा, 2. टोटा, (दे. हाण[3]); (वि.) दे. हाण[2]। **हानि/हानी** (हि.)

हात (पुं.) दे. हाथ।

हात्थळ (वि.) एक ही व्यक्ति से दूध निकलवाने का अभ्यस्त पशु (विशेषतः भैंस); **~पड़णा** हाथल होना। **हाथल** (हि.)

हात्था (पुं.) 1. पशु-वध करने का स्थान, (दे. हत्था[1]), 2. (दे. हात्था[2]), 3. बुनने का उपकरण विशेष।

हात्था-चीट्टी (स्त्री.) 1. बच्चों का एक खेल जिसमें वे हथेली पर हाथ मार कर दौड़ते हैं, 2. धोखेबाज़ी।

हात्थापाई (स्त्री.) हाथापाई, लड़ाई।

हात्थी (पुं.) हाथी, लंबी सूँड व बड़े कानों वाला एक शाकाहारी जंगली पशु; (वि.) मोटा-ताज़ा।

हाथ (पुं.) 1. भुजा, हस्त, 2. सहारा, 3. हत्था, 4. एक नाप, जैसे–ढाई हाथ का एक गज़, 5. दाँव; **~उधारा** थोड़े समय के लिए उधार माँगी वस्तु; **~का साच्चा** बर्ताव का खरा; **~खुज्याणा** धन मिलने का शकुन होना; **~गेरणा** 1. अन्य की वस्तु पर हाथ डालना, 2. काम में साझेदारी करना; **~घालणा** चोरी करना; **~छाँह करना** हर प्रकार से सुरक्षित करना; **~जोड़णा** 1. पीछा

छुड़ाना, 2. अनुनय-विनय करना, 3. देवता या देव-मूर्ति के सम्मुख झुकना, 4. हार मानना; **~टूटणा** आश्रय या सहारा छिनना; **~ठाणा** 1. हार मानना, 2. पीटना, 3. उपस्थिति का संकेत देना; **~दिखाणा** 1. समय पर मुकरना, 2. कौशल दिखलाना, 3. भविष्य पूछना, 4. पानी की थाह लेना, 5. चिढ़ाना; **~-पल्लै पड़णा** 1. प्राप्त होना, 2. समझ में आना, 3. हिस्से आना; **~-पाँह चालत्याँ** हाथ-पाँव चलते- चलते, उमर ढलने पर भी स्वास्थ्य बने रहने की स्थिति; **~-पाँह ताँहीं के जोड़णा** अत्यंत अनुनय- विनय करना; **~पीळे करणा** लड़की का विवाह करना; **~फेरणा** 1. बढ़-चढ़ कर काम दिखाना, 2. पालतू बनाना, 3. हाथ फेर कर रोग दूर करना, 4. सहायता बंद करना, 5. चेला मूँडना, अपने प्रभाव में करना; **~बणाणा** ताश आदि के खेल में दाँव बनाना; **~लाणा** 1. पसंद की वस्तु को छाँटना, 2. छेड़खानी करना, 3. काम शुरू करना, 4. पाप करना, 5. पीटना; **~सकोड़णा** 1. सहायता बंद करना, 2. कंजूसी करना; **~-सा टूटणा** आश्रय छिनना; **~हलाणा** 1. परिश्रम करना, 2. समय पर इनकार करना, 3. चिढ़ाना, 4. संकेत देना।

हाथम-हाथ (क्रि. वि.) 1. हाथों-हाथ, 2. शीघ्रता से।

हाथ रई (स्त्री.) दे. रई।

हाथळ (वि.) दे. हात्थळ।

हाथळी (स्त्री.) मूठ, हत्था।

हाथी (पुं.) दे. हात्थी।

हाथीख़ाना (पुं.) वह स्थान जहाँ पर हाथी बाँधा जाता है।

हाथी-दाँत (पुं.) हाथी के मुँह के दो लंबे दाँत (जिनसे अनेक प्रकार के उपकरण बनाए जाते हैं)।

हाथीवान (पुं.) पीलवान, फीलवान।

हानि (स्त्री.) 1. दे. हाण[3], 2. दे. हाणी।

हाफळा (पुं.) छीना-झपटी।

हाफिज (पुं.) जिसे कुरान कंठस्थ हो।

हाबका (पुं.) सदमा। उदा.–बेटे का हाबका खाग्या।

हाम (सर्व.) हम। उदा. हाम नैं के मतलब।

हामला (पुं.) गर्भवती महिला।

हामी (वि.) दे. हाम्मी[1]; (स्त्री.) दे. हाम्मी[2]।

हाम्मी[1] (वि.) हिमायती, पक्षपाती। **हामी** (हि.)

हाम्मी[2] (स्त्री.) स्वीकृति देने का भाव; **~भरणा** स्वीकृति देना। **हामी** (हि.)

हाय (स्त्री.) दे. हा।

हाय-हाय (स्त्री.) 1. दुःख, कष्ट, शोक-सूचक शब्द, 2. घबराहट, परेशानी।

हार[1] (स्त्री.) 1. पराजय, 2. थकान; (क्रि. अ.) 'हारणा' क्रिया का आदे. रूप; **~(-री)-नीरी** थकी-माँदी।

हार[2] (पुं.) गले का एक आभूषण विशेष (जिसके बीच में ताबीज़ भी होता है)।

हारणा (क्रि. अ.) 1. पराजित होना, 2. थकना; (वि.) जो शीघ्र थके। **हारना** (हि.)

हारना (क्रि. अ.) दे. हारणा।

हारा (पुं.) उपले आदि की आग जलाने की अंगारधानी विशेष, (दे. हारी); (वि.) सभी वस्तुओं को भस्म करने वाला; (क्रि. अ.) 'हारणा' क्रिया का भू. का. पुं., एकव. रूप; **~लाणा/ सिलगाणा** 1. हारे में उपले चिनारना, 2. हारे की अग्नि जलाना।

हारिया (पुं.) गले का एक हार विशेष।

हारी (स्त्री.) टूटे हुए मटके के मुख की ठेकरी के आधार पर बनी गोलाकार अंगारधानी; (क्रि. अ.) 'हारणा' क्रिया का भू.,का., स्त्रीलिं., एकव. रूप; ~-**नीरी** थकी-माँदी; ~-**बिमारी** 1. रोग आदि के कारण निस्सहाय अवस्था, 2. कठिनाई का समय।

हारीत (पुं.) ब्राह्मणों का एक गोत्र।

हारे (प्रत्य.) वाले। उदा.—तुम क्या जानो राजनीति को गऊचरावण हारे।

हार्दिक (वि.) 1. हृदय से, 2. हृदय-संबंधी।

हाल[1] (स्त्री.) 1. हिलने का भाव या क्रिया, 2. गाड़ी आदि में यात्रा करते समय हिलने का भाव, (दे. हिचकोळा); (क्रि. अ.) 'हालणा' क्रिया का आदे. रूप; ~**लागणा** 1. छलकना, 2. हिलना-डुलना, हिचकोले लगना।

हाल[2] (अव्य.) 1. वर्तमान, अविलंब, 2. अव्वल तो, जैसे—हाल मैं तै वो आवै नाँ; (पुं.) 1. दशा, अवस्था, 2. विस्तृत वर्णन, समाचार।

हाल[3] (पुं.) सभागार, सभा-भवन।

हाळड़ा (पुं.) दे. हाळी।

हालणा (क्रि. अ.) गति में आना, (दे. हिलणा); (वि.) हिलने वाला, (दे. हिलणा)। **हिलना** (हि.)

हाळणा (क्रि. स.) ईख, धान या कपास आदि की फ़सल को नलाने की बजाय हल से निराना।

हालत (स्त्री.) दशा, अवस्था।

हालाँकि (अव्य.) यद्यपि।

हाळा (पुं.) प्रत्येक हल पर वसूल किया जाने वाला लगान, हल-कर; ~**लाणा** हल की संख्या के आधार पर कर-वसूली करना।

हाळी (पुं.) 1. हल जोतने वाला, 2. कृषक; (वि.) 1. अनपढ़, 2. गँवार; ~**जाणा** हल जोतने के लिए जाना।

हाळीड़ा (पुं.) दे. हाळी।

हाळी-पाळी (पुं.) खेती-बाड़ी करने वाला, कृषक; (वि.) 1. अनपढ़, 2. ग्रामीण, 3. भोला-भाला।

हाल्लण (पुं.) दे. हल्लण।

हाव-भाव (पुं.) 1. मनोहर चेष्टा, 2. अंग-संचालन।

हावळ-तावळ (स्त्री.) जल्दी मचाने का भाव या क्रिया; ~**करणा/मचाणा** जल्दी मचाना।

हासिल (वि.) दे. हाँसिल[2]; (पुं) दे. हाँसिल[2]।

हास्य (पुं.) 1. हँसी, 2. उपहास, मज़ाक।

हा-हा (स्त्री.) 1. हँसने का शब्द, 2. रुदन का शब्द।

हाहाकार (पुं.) कुहराम।

हा-हू (स्त्री.) 1. रोने-पीटने का भाव, 2. शोर, 3. जल्दी मचाने का भाव।

हिंगूल (पुं.) सुहागिन के माथे का लाल टीका।

हिंगो (स्त्री.) गोहल का पेड़।

हिंगोरा (पुं.) जंगली फल।

हिंडोला (पुं.) दे. हिंडोळा।

हिंडोळा (पुं.) 1. झूल, पैंग, 2. ऊपर-नीचे घूमने वाला झूला जिसमें बैठने के लिए मंच होते हैं, चक्राकार झूला, 3. पालना, 4. डोली; ~**झुलाणा** 1. झूला झुलाना, 2. आनंद की स्थिति में रखना। **हिंडोला** (हि.)

हिंद (पुं.) भारतवर्ष, हिंदुस्तान।

हिंदवाणी (स्त्री.) हिन्दू महिला।

हिंदी (स्त्री.) 1. संस्कृत बहुल शब्दावली की देवनागरी लिपि में लिखी जाने

वाली भाषा जिसका विकास रोहतक, दिल्ली, मेरठ के आस-पास की बोलियों से हुआ है, हरियाणवी के शहरी संस्करण की भाषा, 2. हिंदुओं की भाषा (तुल. भासा), 3. भारत की राष्ट्रभाषा।

हिंदुवाना (वि.) हिन्दुओं का।

हिंदुस्तान (पुं.) भारत देश, (दे. भारत-बरस)।

हिंदुस्तान्नी (पुं.) 1. भारत का निवासी, 2. मध्य-देश का निवासी, दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश के मैदानी भाग के निवासी जिनका रहन-सहन, पहनावा, खान-पान, रीति-रिवाज़ तथा भाषा आदि लगभग समान विशिष्टता रखते हैं, 3. भारत- विभाजन के बाद पाकिस्तान से आने वाले शरणार्थियों या नागरिकों द्वारा दिल्ली, हरियाणा आदि के आस-पास के रहने वालों को दिया गया नाम; (वि.) भारत से संबंधित; (स्त्री.) हिंदुस्तानी, हिंदी, साधारण बोलचाल की भाषा। **हिंदुस्तानी** (हि.)

हिंदू (पुं.) 1. हिंदू धर्म में विश्वास रखने वाला, पुनर्जन्म, कर्म के अनुसार फलभोग में विश्वास रखने वाला, 2. हिंदू धर्म का अनुयायी जिसकी प्रमुख पहचान सिर की चोटी है, 3. गोपालक, गऊ की पूजा करने वाला, 4. शरणागत की रक्षा करने वाला, 5. भारत का निवासी।

हिंदूपण (पुं.) 1. हिंदू जीवन-पद्धति के अनुसार व्यवहार (खान-पान की शुचिता आदि), 2. क्षत्रियत्व, वीरता का भाव। **हिंदूपन** (हि.)

हिंदो (पुं.) दे. हिंडोला।

हिंदोस्तान (पुं) हिंदुस्तान, (दे. भारत बरस)।

हिंसक (वि.) हिंसा करने वाला, मारने वाला।

हिंसा (स्त्री.) 1. प्राण लेने का भाव, 2. कष्ट पहुँचाने का भाव, 3. हानि पहुँचाने का भाव।

हिंसाब (पुं.) 1. गणित, 2. व्यवहार, 3. खाता, आय-व्यय का ब्योरा, 4. समझ। **हिसाब** (हि.)

हिंसारी (पुं.) शांतिप्रिय राजा।

हिंस्र (वि.) हिंसक, मारने वाला।

हिक़मत (स्त्री.) 1. हक़ीमी, वैद्यक, 2. युक्ति, 3. तीमारदारी।

हिक्का (स्त्री.) दे. हुँचकी।

हिचक (स्त्री.) 1. हिचकने या डरने का भाव, झिझक, 2. डर, 3. लज्जा, संकोच, 4. अटकाव; (क्रि. अ.) 'हिचकणा' क्रिया का आदे. रूप।

हिचकणा (क्रि. अ.) 1. झिझकना, 2. संकोच करना; (वि.) जो हिचके। **हिचकना** (हि.)

हिचकना (क्रि. अ.) दे. हिचकणा।

हिचकिचाट (स्त्री.) हिचकने या झिझकने का भाव। **हिचकिचाहट** (हि.)

हिचकिचाणा (क्रि. अ.) दे. हिचकणा।

हिचकिचाना (क्रि. अ.) दे. हिचकणा।

हिचकिचाहट (स्त्री.) दे. हिचकिचाट।

हिचकी (स्त्री.) दे. हुचकी।

हिचकोळा (पुं.) झटका देकर हिलाने का भाव या क्रिया, 2. वाहन में यात्रा करते समय लगने वाला झटका, झटका। **हचकोला** (हि.)

हिजड़ा (पुं.) दे. हीजड़ा।

हिजरी (पुं.) मुसलमानी सन् जो मोहम्मद साहब के मक्के से मदीना भागने की

तारीख से (15 जुलाई सन् 752 ई.) आरंभ होता है। **हिज्री** (हि.)

हिज्जे (पुं.) वर्तनी।

हिटरल/हिटलर (पुं.) जर्मन का एक शासक; (वि.) तानाशाह। **हिटलर** (हि.)

हिटलरी (स्त्री.) तानाशाही।

हिड़का (स्त्री.) दे. हुँचकी।

हिडिंबा (स्त्री.) हिडिंब राक्षस की बहन जिसके गर्भ से भीमसेन का पुत्र घटोत्कच उत्पन्न हुआ; (वि.) दे. हडंपा।

हिणहिणाणा (क्रि. अ.) 1. घोड़े का बोलना, 2. ज़ोर से हँसना (व्यंग्य में)। **हिनहिनाना** (हि.)

हित (पुं.) 1. भलाई, 2. लाभ, 3. प्यार।

हितकारी (वि.) 1. भलाई करने वाला, 2. गुणकारी।

हित-चिंतक (वि.) भला चाहने वाला।

हितैषी (वि.) हित चाहने वाला।

हित्या (स्त्री.) दे. हत्या।

हिथाणा (क्रि. स.) 1. कब्ज़े में लेना, 2. पकड़ना। **हथियाना** (हि.)

हिथोड़ा (पुं.) कारीगर द्वारा किसी कठोर वस्तु को ठोकने-पीटने के लिए काम में लाया जाने वाला यंत्र विशेष। **हथौड़ा** (हि.)

हिथ्यागी (क्रि.) प्राप्त हो गई। हाथ आ गई।

हिदायत (स्त्री.) 1. निर्देश, 2. आज्ञा, 3. चेतावनी।

हिनहिनाना (क्रि. अ.) दे. हिणहिणाणा।

हिफ़ाज़त (स्त्री.) 1. सुरक्षा, 2. देख-रेख।

हिम (पुं.) बर्फ़।

हिमाँत (स्त्री.) तरफ़दारी। **हिमायत** (हि.)

हिमाँती (वि.) 1. मददगार, 2. पक्ष लेने वाला। **हिमायती** (हि.)

हिमाचल (पुं.) 1. हिमालय पर्वत, 2. हरियाणे के उत्तर में स्थित एक पर्वतीय प्रदेश।

हिमामदस्ता (पुं.) दे. इमामजस्ता।

हिमायत (स्त्री.) दे. हिमाँत।

हिमायती (वि.) दे. हिमाँती।

हिमालय (पुं.) भारत के उत्तर में स्थित विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत; (वि.) अटल, अचल।

हिम्मत (स्त्री.) 1. साहस, 2. बहादुरी; **~का राम हिमाँती** भगवान पुरुषार्थी का सहायक होता है।

हिम्मती (वि.) साहसी, बहादुर।

हिया (पुं.) 1. हृदय, 2. मन; **~उमड़णा** हृदय भर आना।

हिरंजी (स्त्री.) एक लाल रंग या मिट्टी जो तख़्ती पर भी पोता जाता है। **हिरमजी** (हि.)

हिरड़ो (स्त्री.) दे. मसाल।

हिरण (पुं.) हिरन, मृग; **~(-णाँ) कैस्सी डार** हिरनों के समान मिल-जुलकर रहने वाले, संगठित रूप से रहने का भाव। **हिरन** (हि.)

हिरणखुरी (स्त्री.) 1. हिरन के खुर के चिह्न, 2. एक खरपतवार।

हिरणी (स्त्री.) 1. मादा हिरन, 2. पारधी (अहेड़ी) तारे से कुछ दूरी पर तीन तारे जो कार्तिक में सूर्यास्त के समय निकलते हैं और सूर्योदय के समय अस्त होते हैं, (ये ज्येष्ठ महीने में आकाश में दिखाई नहीं देते); (वि.) चंचल; **~-सी आँख** मोटी आँखें। **हिरनी** (हि.)

हिरण्यकशिपु (पुं.) दे. हरणाकुस।

हिरण्यवती (स्त्री.) हरियाणे की एक प्राचीन नदी।

हिरती फिरती (क्रि.) घूमती फिरती। आती जाती।

हिरदा/हिरदै (पुं.) दिल, हृदय।

हिरदेदास (पुं.) दे. संत हिरदेदास।

हिरन (पुं.) दे. हिरण।

हिरना-फिरणा (क्रि. अ.) बार-बार एक ही स्थान पर चक्कर काटना।

हिरमजी (स्त्री.) दे. हिरंजी।

हिरस (स्त्री.) नकल, राशि।

हिलकना (क्रि.) दहलना, धड़कना।

हिरासत (स्त्री.) क़ैद, नज़रबंदी।

हिलकी (स्त्री.) सुबकी लेकर रोने की क्रिया–हिलकी ले-ले रोवै बालमा (लो. गी.)। **हिचकी** (हि.)

हिलणा (क्रि. अ.) 1. (पशु, पक्षी आदि का) किसी स्थान विशेष से लगाव होना, 2. मन लगना, अनुरक्त होना, 3. (दे. हालणा); (वि.) 1. वह जिसका मन ज़ल्दी लगे, 2. हिला हुआ; ~-**मिलणा** 1. मेल-जोल रखना, 2. हिल-मिल जाना। **हिलना** (हि.)

हिलना (क्रि. अ.) दे. हिलणा।

हिलाऊ (वि.) 1. नवसिखिया, 2. वह पशु जिसे वाहन में जुतने आदि की आदत डाली जा रही हो, वह पशु जिसे हिलाया जा रहा हो, (दे. नटूर); ~**नारा** नया (नटूर) बैल।

हिलाणा (क्रि. स.) 1. आदत डालना, 2. हिलगाना, परिचित और अभ्यस्त करना, 3. पशु-पक्षी को पालना, 4. दे. हलाणा। **हिलाना** (हि.)

हिलाना (क्रि. स.) दे. हिलाणा।

हिलू (स्त्री.) दे. हिलोर।

हिलोड़ा (पुं.) 1. लहर, तरंग, 2. झटका। **हिलोर** (हि.)

हिलोर (स्त्री.) दे. हिलोड़ा।

हिलोरणा (क्रि. स.) 1. झकझोरना, 2. लोरी देना, 3. खुशामद करना।

हिलोळ (स्त्री.) दे. हिलोड़ा।

हिल्ला (पुं.) 1. रोज़गार–वो भी हिल्लैसिर लाग ग्या, 2. बहाने से–इस हिल्लै यो भी काम हो ज्यागा। **हीला** (हि.)

हिवड़ा (पुं.) 1. हृदय, 2. मन।

हिसाब (पुं.) दे. हिंसाब।

हिसाब-किताब (पुं.) 1. आय-व्यय का लेखा-जोखा, 2. चाल, रीति।

हिसार (पुं.) हरियाणे का एक नगर जिसे 1356 ई. में फिरोजशाह ने बसाया, 1410 ई. में शेरशाह के वंशज खिजर ने इसे जीता लेकिन अकबर के समय में यह दिल्ली का प्रांत बन गया (ज. सा. 4-11-12)।

हिस्त (स्त्री.) 1. विस्मयादिबोधक शब्द, 2. छोटे जीव-जंतु को सिसकारने के लिए प्रयुक्त शब्द, 3. तिरस्कारबोधक शब्द।

हिस्सा (पुं.) भाग, खंड; ~-**पत्ती** 1. साझेदारी, भागीदारी, 2. नाजायज़ साझेदारी।

हिस्सा सारू (अव्य.) दे. हिस्सा पत्ती।

हिस्सेदार (पुं.) भागी, साझीदार।

हींग (पुं.) 1. हींग के पौधे का जमाया हुआ दूध, 2. हींग का पौधा; ~**लागगै नाँ फटकड़ी चोक्खा आवै रंग** कम ख़र्च अधिक लाभ।

हींस (पुं.) सघन तथा काँटेदार झाड़ी जिस पर चिरमठी लगती हैं; (वि.) जटिल कार्य; ~**मैं फँसणा** कठिनाई में पड़ना।

हीं-हीं (स्त्री.) खिसिया कर हँसते समय निकलने वाली ध्वनि; **~करणा** व्यर्थ में हँसना।

ही (अव्य.) दे. ए।

हीओ (स्त्री.) 1. गाय को रोकते या पुचकारते समय उच्चरित ध्वनि, 2. पशु को बुलाते समय प्रयुक्त ध्वनि, 3. पशु को पानी पिलाते समय उच्चरित ध्वनि।

हीक (स्त्री.) 1. किसी वस्तु को अधिक मात्रा में खा लेने के कारण उत्पन्न उबकाई, 2. किसी अखाद्य वस्तु के प्रति उत्पन्न घृणा।

हीजड़ा (पुं.) 1. नपुंसक, 2. नामर्द; (वि.) डरपोक, भीरु। **हिजड़ा** (हि.)

हीजड़ी (वि.) हिजड़ा जाति की; (स्त्री.) वंध्या, बाँझ। **हिजड़ी** (हि.)

हीट्ठा (पुं.) नवाबी राज का पहरेदार जो फ़सल, अन्न आदि को वसूली की चोरी पर निगाह रखता था।

हीड़ो (स्त्री.) 1. चिलमनुमा मशाल जो दीवाली के अवसर पर डंडे पर फंसा कर बिनौले-तेल आदि डाल कर जलाई जाती है। दे. हिरड़ो। 2. अधिक वर्षा के कारण कीकर के तने पर निकलने वाला एक रिसाव जो सूख कर रुमाल सा बन जाता है और जिस पर तेल डाल कर दीवाली पर मशाल की तरह जलाया जाता है।

हीड़ो-माँढा (पुं.) गोवर्धन–हीड़ो-माँढा तू बड़ा, तत्तै बड़ा न कोय।

हीण (वि.) 1. तुच्छ, हेय, 2.कमज़ोर, दुर्बल, 3. छोटी जाति का। **हीन** (हि.)

हीणा (वि.) 1. दुर्बल, 2. हेय, तुच्छ, 3. छोटी जाति का, 4. भाग्यहीन, 5. ग़रीब। **हीना** (हि.)

हीणी (स्त्री.) अपमानजनक स्थिति; (वि.) 1. दुर्बल, 2. छोटी जाति की, 3. निस्सहाय, 4. अनुचित; **~करणा** 1. अपमान करना, 2. तुच्छ काम करना; **~होणा** अपमान होना। **हीनी** (हि.)

हीन[1] (वि.) दे. हीण।

हीन[2] (क्रि. वि.) (मेवा.) यहीं, यहाँ।

हीर[1] (पुं.) 1. अहीर जाति जिसका हुक्का-पानी जाट-गूजर जाति के साथ चलता है, 2. ब्राह्मण पिता तथा वैश्य जाति की स्त्री (अंबष्ठ) से उत्पन्न जाति, (विलसंज्ञ संस्कृत डिक्शनरी), 3. ब्रह्मपुराण के अनुसार क्षत्रिय पिता तथा वैश्य जाति की महिला से उत्पन्न संतान, 4. पौराणिक भूगोल के अनुसार पश्चिमी भारत तथा ताप्ती तथा देवगढ़ के बीच निवास करने वाली आभी जाति, 5. नेपाल तथा पालवंश (बंगाल) से संबंधित राजवंश की जाति, 6. नंदवंश, जदुवंश, ग्वालवंश आदि के लोग, नंदवंश के मुख्य गोत हैं– समरफल्ला, किशनौत, भगता, बिलेणिया, दिसवाड़ा, नागवा, कनौंढा, दून्नड़, रावत, टंगोरिया, कोर, कमारिया, बड़ौसिया, मुजवा, ढीम्मा, निरबाण, खरकड़ी, बिराहोड़, सिटोलिया, जड़वाड़िया, बरोथी, गोंड्डा, फाटक आदि 84 गोत हैं।

[भिघोत गोत में उपर्युक्त गोतों के अतिरिक्त मोल्लक, सनतोरिया, खोसिया, खळिया, लोणीवाल, अफरिया, मैल्ला, म्हैला, खोड़ो, सिसोटिया, गंडवाल, गिरड़, भमसाड़ा, जंगाड़िया, कानहोरिया, नगाँणिया भी हैं, कानहोरिया और नगाँणिया रांघड़ (मुसलमान) हो गए, (मेमाइरसइन दी रेसिस ऑफ नॉरदर्न वेस्टर्न प्रोवेनसिस ऑफ़ इंडिया वाल्यूम 1, ईलियट, पृ. 2-6), (नोट–स्थानीय

उच्चारण भेद के कारण गोतों के उच्चारण में भेद संभव है)]। **अहीर** (हि.)

हीर[2] (स्त्री.) राँझे की प्रियतमा।

हीरणी (स्त्री.) दे. हीरी।

हीर-रांज्झा (पुं.) एक प्रेम आख्यान जिस पर साँग खेला जाता है।

हीर-राँझा (हि.)

हीरवाट्टी[1] (स्त्री.) हीरवाटी, अहीरपट्टी, अभिरायण (अहीरों का घर या वास), झज्झर, रेवाड़ी के आस-पास का क्षेत्र जहाँ अधिक संख्या में अहीर जाति के लोग हैं (यहाँ की बोली और पहनावे में निकट के क्षेत्रों से कुछ भिन्नता है)। (कुछ विद्वानों के अनुसार हीरवाटी में कोसली, महेंद्रगढ़, नारनौल, बहरोड़, मुँडावर, बावल, रेवाड़ी, पाटोपी आदि मुख्य क्षेत्र सम्मिलित हैं)। **अहीरवाटी** (हि.)

हीरवाट्टी[2] (स्त्री.) अहीरों की बोली, अहीर बहुल क्षेत्रों की बोली, [जिसकी भूतकालिक क्रिया, सहायक क्रिया तथा अधिकांश शब्द ओकारांत हैं– गयो–गया था, चणो--चणा, ओच्छो लहँगो–ओछा लहँगा आदि, इसके बहुवचन के रूप एक वचन के समान होते हैं, जैसे–बेटा (बेटे), जाँघा (जाएँगे), इसकी शब्दावली हरियाणवी, बाँगरू के ही समान है]।

हीरा (पुं.) एक बहुमूल्य पत्थर; (वि.) 1. स्वच्छ, 2. खोट-रहित, 3. निर्दोष–आदमीं तै हीरा सै।

हीराबंध (वि.) हीरों से जटित (चुनरी)।

हीराबंध-चूँदड़ी (स्त्री.) हीरों से जटित ओढ़नी जिसका वर्णन गीतों में मिलता है।

हीरी (स्त्री.) अहीर (हीर) की पत्नी (जिसका ग्रामीण पहनावा टखनों तक का हल्का लहँगा, कानों में डाँडे, हाथ में टाड, चूड़ा आदि है, पिंडली, छाती, भुजा, गाल, आँख के कोर पर मोर आदि के चित्र गुदाना इन्हें प्रिय है)। **अहीरन** (हि.)

हीरो-दिवाळी (स्त्री.) 1. दीवाली और गोवर्धन के दिन, 2. दीवाली को जलाई जाने वाली मशाल।

हीया (पुं.) 1. हृदय, 2. मन; **~भरणा** मन उमड़ना।

हील्ला (पुं.) दे. हिल्ला।

हीवड़ा (पुं.) दे. हीया।

हुंकारना (क्रि. अ.) 1. गुर्राना, 2. डाँटना।

हुँकारा[1] (पुं.) 1. कहानी सुनते समय बीच-बीच में 'हाँ'-'हाँ' या 'हूँ'-'हूँ' कहते रहने की ध्वनि, 2. स्वीकृति-बोधक शब्द, 3. बच्चे का बोलना सीखने से पूर्व हूँ, हाँ आदि की ध्वनि उत्पन्न करने का भाव, 4. अपने बच्चे को देखकर गाय का प्यार से हुँकारने की ध्वनि; **~भरणा** 1. कहानी के बीच-बीच में हाँ, हूँ आदि शब्द कहते जाना, 2. स्वीकृति देना।

हुंकारा[2] (पुं.) युद्ध के समय की ललकार।

हुँचकी (स्त्री.) दे. हुचकी।

हुंड्डी (स्त्री.) 1. नक़दी, धन-दौलत, 2. वह काग़ज़ जिसे देखकर एक महाजन दूसरे महाजन को नक़द रुपये देता है; **~चाल्ली आणा** कमाई या नक़दी मिलते रहना; **दरसनी-~** नक़दी-पत्र जिसे देखते ही दूसरे महाजन को अनिवार्य रूप से रुपये का भुगतान करना पड़ता है।

हुँस्यार (वि.) 1. चतुर, 2. वह जो पढ़ाई-लिखाई में चतुर हो, 3. स्वस्थ–पहल्याँ तैं तै हुँस्यार लाग्गै सै। **होशियार** (हि.)

हुँस्यारी (स्त्री.) चतुराई; **~बरतणा** चतुराई से काम लेना। **होशियारी** (हि.)

हुँह् (स्त्री.) 1. तिरस्कार या उपेक्षाबोधक ध्वनि, 2. भैंस को हाँकते समय उच्चरित ध्वनि, 3. कराहते समय निकलने वाली ध्वनि।

हुई (स्त्री.) किसी को चिढ़ाने के लिए प्रयुक्त ध्वनि, (दे. उई)।

हुक (स्त्री.) दे. हूक।

हुकटा (पुं.) दे. हुक्का।

हुकटी (स्त्री.) 1. छोटा हुक्का, 2. नारियल की तली वाला छोटा हुक्का, (दे. नारियळ)।

हुकहुकाणा (क्रि. अ.) 1. नर पशु का उन्मादित होना, 2. टीस उठना, हूक उठना; (वि.) वह जो हुकहुकाए। **हुकहुकाना** (हि.)

हुकहुकी (स्त्री.) 1. टीस, हूक, 2. गीदड़ की ध्वनि, 3. हुक्का पीने की तीव्र इच्छा, 4. तीव्र इच्छा।

हुकूमत (स्त्री.) 1. शासन, 2. राज्य।

हुक्क (पुं.) दे. हुक्का।

हुक्का (पुं.) मिट्टी या धातु की तली का एक नल-यंत्र जिसकी एक नली पर चिलम रखी जाती है और दूसरी से साँस खींचा जाता है, तंबाकू पीने का एक नल-यंत्र विशेष; **~(-के) का पाणी** ओषधि में काम आने वाला हुक्के का पानी; **~~अर जूत** कठोर दंड; **~खुलणा** जात-बिरादरी में पुनः सम्मिलित होना; **~गुड़गुड़ाणा** 1. हुक्का पीना, 2. हुक्के की फूँक खींच कर उसके पानी की मात्रा परखना, 3. निठल्ला बैठना; **~-पाणी** आवभगत; **~~करणा** आवभगत करना; **~~बंद होणा** जातीय वहिष्कार होना; **~बजाणा** व्यर्थ में समय नष्ट करना; **~भरणा** गुलामी करना।

हुक्म (पुं.) आदेश।

हुक्मनामा (पुं.) आज्ञा-पत्र।

हुचकी (स्त्री.) हिचकी (जनधारणा के अनुसार किसी प्रियजन द्वारा याद करने के कारण हिचकी आती है); **~आणा** प्रियजन के द्वारा याद किया जाना। **हिचकी** (हि.)

हुजूर (पुं.) 1. श्रीमान, 2. कचहरी, दरबार।

हुजूरी (स्त्री.) 1. खुशामद, 2. सेवा।

हुड (पुं.) दे. हूड।

हुड़क (स्त्री.) हूक, टीस, इच्छा।

हुड़दंग (पुं.) उत्पात, उपद्रव।

हुड़हुड़ (स्त्री.) 1. साँडों को लड़ाने हेतु उत्तेजित करने के लिए प्रयुक्त ध्वनि, 2. निडरता के साथ घुसने का भाव, (दे. दगदगी)।

हुड़हुड़िया (वि.) 1. निडरतापूर्वक घुसने वाला, 2. बहन के घर में निस्संकोच आने-जाने वाला (साला)।

हुड़हुड़ी (स्त्री.) निडरतापूर्वक घुसने का भाव, (दे. दगदगी)।

हुड़ै (अव्य.) दे. उड़ै।

हुणियार (वि.) मिलता-जुलता, किसी की आकृति जैसा। **अनुहार** (हि.)

हुदहुद (पुं.) गरमी में चहकने वाला एक पक्षी।

हुनर (पुं.) 1. ज्ञान, 2. कौशल।

हुनरमंद (वि.) 1. निपुण, कुशल, 2. किसी कारीगरी में निपुण।

हुबक (स्त्री.) दे. हुबकी।

हुबकी (स्त्री.) पानी में डूबते समय ऊपर-नीचे होने का भाव, डुबकी।

हुमस (स्त्री.) वर्षा से पूर्व की गर्मी, (दे. उमस)। **उमस** (हि.)

हुमाणा (क्रि.) दे. उमाहणा।

हुमारा (सर्व.) हमारा–हुमारा चीर दो गिरधारी (लो.गी.)। **हमारा** (हि.)

हुरमत (वि.) सम्मान। हुर्मत।

हुरळाणा (क्रि. स.) मज़ाक उड़ाना।

हुरियारे (पुं.) होली खेलने वालों की टोली।

हुलड़वा (पुं.) दे. होल्लर।

हुलहुल (पुं.) गले का एक आभूषण।

हुलाँस (स्त्री.) सुँघनी। **हुलास** (हि.)

हुलाणा (पुं.) दे. उलाहणा।

हुलास (स्त्री.) दे. हुलाँस।

हुलिया (पुं.) किसी वस्तु के रंग-रूप, आकार-प्रकार आदि का वस्तुतः विवरण।

हुळियार (पुं.) होली के गीत गाने वाला।

हुल्ली (स्त्री.) 1. पाला, खेल के लिए निर्धारित क्षेत्र-सीमा, 2. गेंद का एक खेल, 3. गेंद-खुली की बाज़ी, बाज़ी; **~करणा/चढाणा** गेंद की बाज़ी हराना या चढ़ाना; **~तारणा** गेंद की बाज़ी उतारना; **~बाँधणा** 1. खेलते समय टोली द्वारा सीमा को चिह्नित करना, 2. दलबंदी करना; **~माँगणा** खेल की बाज़ी माँगना; **~होणा** गेंद की बाज़ी चढ़ना।

हुसैन (पुं.) मोहम्मद साहब के दामाद अली के बेटे जो करबला के मैदान में मारे गए थे (इन्हीं के शोक में मोहर्रम मनाया जाता है)।

हुस्न (पुं.) सुंदरता।

हूँ[1] (स्त्री.) 1. स्वीकृति, प्रश्न, अस्वीकृति-सूचक शब्द (यह अर्थ-भेद अनुतान के कारण है), 2. कबूतर की ध्वनि, 3. अकड़; (क्रि. अ.) 'होणा' क्रिया का रूप।

हूँ[2] (क्रि. वि.) (मेवा.) वहाँ; (सर्व.) (बाग.) में।

हूँ[3] (अव्य.) 1. दे. हुंकारा, 2. दे. हूँ[2]।

हूँचणा (क्रि. स.) दे. हूँसणा।

हूँछणा (क्रि. स.) दे. हूँसणा।

हूँजणा (क्रि. स.) दे. हूँसणा।

हूँणी (स्त्री.) दे. होणी।

हूँन (क्रि. वि.) (मेवा.) वहाँ, वहाँ को, उधर।

हूँनी (क्रि. वि.) (मेवा.) वहाँ।

हूँसणा (क्रि. स.) 1. झाड़ू लगाना, 2. बिखरे हुए पानी को उलीचना, 3. सफ़ाया करना; (पुं.) झाड़ू; (वि.) जिससे भली प्रकार हूँसा जा सके। **हूँसना** (हि.)

हूँसुआ (पुं.) हल में लगने वाला एक यंत्र।

हू (स्त्री.) 1. कुत्ते के रोते समय उत्पन्न ध्वनि, 2. गीदड़ द्वारा निकाली जाने वाली ध्वनि, 3. बच्चों को डराने के लिए निकाली गई ध्वनि।

हू-आ/हू-हा (स्त्री.) 1. रोने-पीटने की ध्वनि, 2. शोर मचाने की ध्वनि; **~करणा/मचाणा** 1. रोना-पीटना, 2. शोर मचाना।

हूक (स्त्री.) टीस, इच्छा-तृप्ति के लिए उठने वाली टीस।

हूकणा (क्रि. अ.) 1. ज़ोर से चिल्लाना, 2. **'हू'-'हू'** की ध्वनि करके रोना। **हूकना** (हि.)

हूकना (क्रि. अ.) दे. हूकणा।

हूक्कळ (स्त्री.) दे डूक।

हूड (पुं.) 1. मुँह, 2. पशु का मुँह, 3. सूअर की थूथनी, 4. मुख का शीर्ष भाग, 5. (दे. थोबड़ा); (वि.) गँवार, उजड्ड।

हूड्डा (पुं.) एक जाट गोत।

हूणी (स्त्री.) दे. होणी।

हूम[1] (पुं.) दे. होम।

हूम[2] (स्त्री.) मस्ती, उदा. हाथी कैसी हूम। दे. होम।

हूमणा (क्रि. स.) होमना।

हूल (स्त्री.) 1. हूक, शूल, पीड़ा, कसक, 2. (दे. हुल्ली)।

हूर (स्त्री.) 1. स्वर्ग की अप्सरा, 2. सुंदर स्त्री, 3. पत्नी; **~की परी** आकाश की परी।

हूरा (पुं.) मुक्का, (दे. डुक)।

हूलणा (क्रि.) प्रसन्न होना। उदा. फौज सारी हूली थी।

हृदय (पुं.) दे. हिरदा।

हृषीकेश (पुं.) श्री कृष्ण।

हृष्ट-पुष्ट (वि.) मोटा-ताज़ा।

हें (क्रि.) 1. है क्रिया का संभाव्य भूतकालिक रूप, उदा. तम आमते तै हम साथ चाल्लां हें, 2. हैं क्रिया का एक वचन रूप, उदा.–वा कै आवै हे, हम चाल पड़े।

हे (अव्य.) 1. स्त्रीबोधक संबोधन, 2. ही, जैसे–यो हे (यह ही), 3. विस्मयादि-बोधक शब्द, जैसे–हे! इसा हुया?; **~बिर** अरी; **~री** अरी।

हेओ (स्त्री.) भैंस को पानी पीने हेतु प्रेरित करने के लिए प्रयुक्त ध्वनि।

हेकड़ (वि.) अक्खड़, उजड्ड।

हेकड़ी (स्त्री.) ऐंठ।

हेगड़ा (पुं.) कब्रगाह? उदा.–हेगड़ा में किसी बात।

हेज/हेझ (पुं.) 1. बच्चे के प्रति प्रदर्शित दुलार, लाड, स्नेह, दुलार, 2. बच्चे की अनुपस्थिति में उमड़ने वाला प्यार; **~पाटणा** 1. अत्यंत प्यार उमड़ना, 2. लाड़ जताना।

हेजणा (क्रि. स.) 1. प्रेम प्रकट करना, 2. प्रेम से अपनाना।

हेजली (वि.) अधिक हेज प्रदर्शित करने वाली–हेजली का बालक नाँ खिल्हाइये।

हेजवाळ (वि.) वह जो अधिक हेज प्रदर्शित करे।

हे जी (अव्य.) राग-रागिनी के आरंभ या अंत में प्रयुक्त पूरक ध्वनि।

हेज्जा (पुं.) विषूचिका। **हैजा** (हि.)

हेट (स्त्री.) अवसर।

हेट्ठा (वि.) 1. ज़िद्दी, 2. हीन।

हेट्ठी (स्त्री.) 1. अनादर, अपमान, 2. हानि, 3. अकड़।

हेठ (क्रि. वि.) नीचे।

हेड़[1] (पुं.) भेड़ों का झुंड; **~भरणा** एकत्रित करना, बेसब्री से इकट्ठा करना।

हेड़[2] (पुं.) बैलों का समूह।

हेडमास्टर (पुं.) प्रधानाध्यापक। **हैडमास्टर** (हि.)

हेड़ा (पुं.) अहेड़, आखेट।

हेड़ी (पुं.) अहेरी, शिकारी, 2. पारधी तारा जो पौष मास में सूर्यास्त के समय उदय और सूर्योदय के समय अस्त होता है, [इसकी स्थिति तीन हिरणियों के निकट होती है, (दे. हिरणी)], 3. एक जाति। **अहेड़ी** (हि.)

हेड़ी तारा (पुं.) दे. पारधी।

हेड्डै (क्रि. वि.) निकट, आस-पास, यथा–फाग्गण हेड्डै आइये।

हेत[1] (पुं.) लगाव, प्रेम-संबंध, 2. प्रीति, अनुराग, 3. ध्यान, जैसे–सुण ले हेत लगा कैं, 4. भला, भलाई।

हेत[2] (पुं.) कारण, उद्देश्य, जैसे–अड़ै आवण का अपणा हेत बता?। **हेतु** (हि.)

हेतु (पुं.) कारण, लिए।

हेब (अव्य.) दे. डे डे।

हेमंत (स्त्री.) शीत काल, मार्गशीर्ष और पौष के महीने का काल या ऋतु।

हेम (पुं.) 1.21 से 40 तक के पहाड़े, 2. सोना।

हेमचंद्र विक्रमादित्य (पुं.) रेवाड़ी के वीर नायक जिसने बैरमखाँ को मात दी।

हेमड़ा (पुं.) हेमू के लिए प्रयुक्त ऊनताद्योतक शब्द।

हेमला (पुं.) हेमचंद विक्रमादित्य।

हेमू (पुं.) महर्षि भृगु-वंश में उत्पन्न हरियाणे का एक वीर पुरुष।

हेर (क्रि. वि.) ओर, तरफ़; (पुं.) गाँव का एक मंडल।

हेर-टेहेर (स्त्री.) सेवा-सुश्रूषा, टहल।

हेरणा (क्रि.) निहारना, देखना।

हेर-फेर (स्त्री.) 1. अदल-बदल, 2. चाल।

हेर मुहार (पुं.) सामान्यत: आते जाते रहने (खेत आदि की ओर) का भाव।

हेरवा (पुं.) 1. हेज, 2. किसी पशु द्वारा (विशेषकर भैंस) अपने झुंड के पशु से अलग होने पर या अपने बच्चे से बिछुड़ने पर रेंक-रेंक कर प्रकट किया जाने वाला स्नेह, 3. उन्मादित स्थिति में भैंस द्वारा रेंकने का भाव।

हेरवाळ (वि.) दे. हेजवाळ।

हेरा/हेरे (पुं.) बरात जीमते समय बरातियों तथा सीठने देने वाली स्त्रियों के बीच होने वाला कवितामय संवाद।

हेरा-फेरी (स्त्री.) 1. अदल-बदल, 2. घोटाला, 3. चाल।

हेल (स्त्री.) 1. गोबर, उपले आदि की ढेरी, 2. गोबर आदि की ढेरी या बोझ का एक प्रमाण जो लगभग तसला या टोकरी भर होता है, 3. टोकरी; **~गेरणा /मारणा/लाणा** गोबर आदि की ढेरी लगाना; **~भरणा** धन-दौलत समेटना (व्यंग्य में)।

हेला (स्त्री.) जाटों की एक उप-जाति।

हेलावल (क्रि.) तैर कर जोहड़ के आर-पार जाना। दे. झोड़

हेल्ला (पुं.) 1. धक्का, ठेलने का भाव, 2. किसी को पुकारने के लिए दी जाने वाली आवाज़, 3. हाँक।

हेल्ली (स्त्री.) भव्य मकान, शाही मकान। **हवेली** (हि.)

हेवड़ा (पुं.) दे. हिवड़ा।

हैं (स्त्री.) 1. आश्चर्य बोधक ध्वनि–ओ डूबग्या, हैं!, 2. प्रश्नद्योतक ध्वनि–यो काम कर लिया, हैं? (यह अर्थ-भेद अनुतान के कारण हैं); (क्रि. अ.) 'है' क्रिया का बहुवचन रूप; **~-हैं लाणा** बात को ध्यान से न सुनना।

हैंडवा (पुं.) हिडंब राक्षस।

है (क्रि. अ.) दे. सै।

हैगा (अव्य.) दे. सै।

हैजा (पुं.) दे. हेज्जा।

हैरत (स्त्री.) हैरानी, आश्चर्य।

हैरान (वि.) 1. चकित, 2. परेशान।

हैवान (पुं.) 1. पशु, 2. बेवकूफ़ आदमी।

हैसियत (स्त्री.) 1. योग्यता, 2. श्रेणी, दर्जा।

हों (क्रि. अ.) सत्तार्थक 'होना' (होणा) क्रिया का बहुवचन संभाव्य काल का रूप–वै घराँ सैं?, हों तैं हों; (स्त्री.) भैंस को हुँकारने के लिए प्रयुक्त ध्वनि; (सर्व.) उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप (मेवा.)।

होंक (स्त्री.) 1. अधिक प्यास का भाव, 2. हाँफने का भाव या क्रिया 3. थकान के कारण हाँफने का भाव, **~लागणा** 1. बार-बार प्यास लगना, 2. हाँफना।

होंकणा (क्रि. अ.) 1. गर्मी के कारण जल्दी-जल्दी साँस निकलना, 2. हाँफना, 3. प्यास के कारण अधिक जल पीना; (वि.) वह जो होंके। **हौंकना** (हि.)

होंकणी (स्त्री.) 1. जल्दी-जल्दी साँस लेने की क्रिया, 2. हाँफने का भाव; **~चढणा** 1. साँस चढ़ना, 2. साँस उखड़ना, 3. हाँफना।

होंक्का (पुं.) 1. दे. हुक्का, 2. दे. होंकणी।

होंची-होंची (स्त्री.) गधे के रेंकने से उत्पन्न ध्वनि।

होंट्टा (वि.) साढ़े तीन गुणा; (पुं.) साढ़े तीन का पहाड़ा। **अहुँट** (हि.)

होंठ (पुं.) दे. होठ।

होंद (स्त्री.) 1. होने वाली संभाव्य पैदावार। 2. संभाव्य घटना 3. उपज।

होंस (पुं.) चेतना। **होश** (हि.)

होंसरणा (क्रि. अ.) बछड़े को देखकर गाय द्वारा कंठ से धीरे-धीरे ध्वनि निकालना, पशु द्वारा अपने छौने के प्रति स्नेह प्रदर्शित करना।

होंसला (पुं.) 1. उत्साह, हिम्मत, 2. उमंग। **हौसला** (हि.)

होंस्यार (वि.) दे. हुँस्यार।

हो (अव्य.) स्त्री द्वारा पुरुष को संबोधित करते समय प्रयुक्त शब्द (विशेषत: देवर को); (क्रि. अ.) 1. होवे, हो, (दे. सो[3]), 2. था, थे, थी क्रिया के लिए बागड़ी में प्रयुक्त शब्द; (सर्व.) उत्तम पुरुष बहुव. का रूप (मेवा.)।

होआ (क्रि.) दे. होया।

होई (स्त्री.) 1. एक मातृका जिसे कार्तिक कृष्ण अष्टमी के दिन दीवार पर गेरू या रंग आदि से चित्रित किया जाता है (विवाह या पुत्र-जन्म वाले वर्ष में दो मुँह की अहोई चीती जाती है, यह संतान को देने वाली मानी जाती है, स्त्रियाँ इस दिन तारे देखकर व्रत खोलती हैं), 2. एक पर्व विशेष। **अहोई** (हि.)

होए (अव्य.) हुए।

होकम (पुं.) हुकुम।

होक्का (पुं.) दे. हुक्का।

होक्की (स्त्री.) दे. हुकटी।

होक्टी (स्त्री.) हुक्के का निचला भाग जो मिट्टी का होता है।

होठ (पुं.) ओंठ, (दे. रोड[1])।

होठला (वि.) जिसके ओठ मोटे हों (तुल. रोडला)।

होड़[1] (स्त्री.) 1. शर्त, 2. ज़िद, 3. स्पर्धा, 4. बराबरी, समान होने का प्रयास, 5. तरफ़दारी; (क्रि. अ.) 'होणा' क्रिया का रूप, हुआ–जात्ता होड़ (जाता हुआ); **~कटाणा** तरफ़दारी करना, पक्ष लेना; **~करणा** 1. स्पर्धा करना, 2. मुक़ाबला करना; **~मारणा /लाणा** 1. शर्त बदना, 2. स्पर्धा करना; **~लेणा** 1. मुक़ाबला करना, समान होने का

दावा करना; 2. पक्ष लेना; **~होणा** मुक़ाबला होना। (अव्य.) हुर-पढ़ते होड़।

होड़/होड2 (पुं.) दे. होठ।

होड़ (अव्य.) हुए। उदा.–पड्ढे होड़, बाळक। दे. होड़1,2।

होड़ा (पुं.) अहोड़ाचक्र। ज्योतिष का प्रथम सरल ग्रंथ। उदा.–मेरे मां अर बाप मरे थे, ब्याह में न्यू निमत्त देगया होड़ा। सोण कसोण हुए राह में न्यूं डाट लिया था घोड़ा। (लचं.)

होड्डमहोड (क्रि. वि.) मुक़ाबले से, प्रतिस्पर्धा के साथ।

होण (स्त्री.) 1. दे. हूणी, 2. दे. होणी।

होणहार1 (स्त्री.) दे. होणी; (वि.) 1. अच्छे लक्षणों वाला, 2. भावी। **होनहार** (हि.)

होणहार2 (वि.) दे. उणिहार।

होणा (क्रि. अ.) 1. अस्तित्व रखना, 2. बनना, निर्मित होना, 3. घटित होना, 4. जन्म होना, 5. बीतना, 6. कार्य-सिद्धि होना; (वि.) वह जो होकर रहे। **होना** (हि.)

होणी (स्त्री.) 1. संभाव्य घटना, 2. भाग्य, 3. दुर्भाग्य, 4. विघ्न, बाधा (तुल. हूणी); **~का चक्कर** भाग्य का फेर। **होनी** (हि.)

होत (स्त्री.) 1. होने का भाव, 2. संपन्नता का भाव–होत की भाण, नाँ होत की मा (बहन संपन्नता में भाई से प्यार करती है और माँ कष्ट के समय भी)।

होतबता (स्त्री.) होनी, भवितव्यता, (दे. होणी)।

होत्तू (वि.) होने वाला, कार्य संपन्न या घटित होने की समीपावस्था–बहू कै बाळक होतू सै।

होद (पुं.) 1. पानी जमा करने का गड्ढा, चहबच्चा, 2. कुंड। **हौज** (हि.)

होद्दा (पुं.) पद, रुतबा, पदवी। **ओहदा** (हि.)

होद्दी (स्त्री.) 1. पानी एकत्रित करने का गड्ढा, 2. छोटा कुंड। **हौदी** (हि.)

होनहार (वि.) दे. होणहार।

होना (क्रि. अ.) दे. होणा।

होनी (स्त्री.) दे. होणी।

होम (पुं.) 1. यज्ञ, 2. शिशु-जन्म से दसवें दिन किया जाने वाला संस्कार, सूतक दूर करने के लिए क्रिया जाने वाला हवन या यज्ञ, 3. स्वाहा। (सर्व.) हम। **हवन** (हि.)

होमकुंड (पुं.) हवनकुंड।

होमना (क्रि. स.) दे. हूमणा।

होया (क्रि.) दे. हुया।

होर1 (अव्य.) और, (दे. ओर)।

होर2 (अव्य.) दे. डेडे।

होरसा (पुं.) दे. हरसा।

होल1 (स्त्री.) 1. डर, 2. दिल की धड़कन, 3. कलेजा; **~चालणा** कलेजा बैठना और जल्दी-जल्दी धड़कन होना; **~पड़णा** कलेजे में गड्ढा पड़ना; **~बैठणा** डर समाना। **हौल** (हि.)

होल2 (पुं.) दे. हाल2।

होळका (स्त्री.) 1. हिरण्यकशिपु की बहिन, 2. स्त्रियों के लिए प्रयुक्त एक निंदापरक शब्द। **होलिका** (हि.)

होलडर (पुं.) पैन-होलडर, आधुनिक प्रकार की लेखनी।

होलदली (पुं.) हृदय रोग।

होलदार (पुं.) पुलिस या सेना का सबसे छोटा अफ़सर। **हवलदार** (हि.)

होळा[1] (पुं.) 1. आग में भूनी हुई हरे चने की टाट, 2. धुलेंडी, (दे. धुलैंह्ढी)। **होला** (हि.)

होळा[2] (क्रि. वि.) आहिस्ता, धीमा। **हौले** (हि.)

होलाष्टक (पुं.) होली के पहले के आठ दिन (इन दिनों में विवाह, विवाहिता लड़की का पिता के घर आगमन आदि का निषेध है)।

होलिका (स्त्री.) 1. दे. होळी, 2. दे. होळका।

होली (स्त्री.) दे. होळी।

होळी (स्त्री.) 1. होली का त्योहार जो फाल्गुन पूर्णिमा के दिन (वसंत-पंचमी के दिन से एकत्रित की गई कैर आदि की लकड़ियों को निश्चित स्थान पर जला कर) गाजे-बाजे के साथ मनाया जाता है, इसकी राख पवित्र मानी जाती है, इससे निकलने वाली ज्वाला की दिशा देखकर वर्ष का फल आँका जाता है, इसकी ज्वाला में गेहूँ, जौ आदि की बालों को भूनकर खाना उत्तम माना जाता है, (दे. धुलैंह्ढी), 2. वह स्थान जहाँ प्रतिवर्ष होलिका-दहन होता है, होलिका-दहन का चौराहा, 3. मौज-मस्ती का दिन, 4. हिरण्यकशिपु की बहन, 5. पापिन स्त्री; (क्रि.वि.) धीमी गति से; **~का डांड्ढा** वसंत-पंचमी के दिन होलिका-दहन के स्थान पर गाड़ा जाने वाला मुख्य छड़ा, होलिका-दंड; **~की झळ** होलिका-दहन के समय उत्पन्न ज्वाला; **~पाच्छै** होली के त्योहार के बाद; **~पूजणा** 1. दहन से पूर्व कच्चे धागों को छड़ों के चारों ओर लपेट कर होली-पूजन करना, 2. होलिका- दहन के स्थान पर प्रतिदिन प्रातः बासी पानी डालना, (दे. (सिळाणा); **~मंगळणा** होलिका-दहन होना। **होली** (हि.)

होळे (पुं.) दे. होळा[1]।

होलै (क्रि. वि.) हौले, धीमे-धीमे।

होल्लर (पुं.) 1. पुत्र, नवजात शिशु, 2. शिशु-जन्म के गीत। **होरिल** (हि.)

होवण हाण (अव्य.) होने वाला।

होवणा (क्रि. अ.) दे. होणा।

होश (पुं.) दे. होंस।

होशियार (वि.) दे. हुँस्यार।

होशियारी (स्त्री.) दे. हुँस्यारी।

होसोळा (पुं.) दे. गींड खुळी।

हौंकना (क्रि. अ.) दे. होंकणा।

हौआ (पुं.) दे. हौवा।

हौज (पुं.) दे. होद।

हौदा (पुं.) दे. होद्दा।

हौदी (स्त्री.) दे. होद्दी।

हौल (स्त्री.) दे. होल[1,2]।

हौले (क्रि. वि.) दे. होळा[2]।

हौवा (पुं.) 1. (बच्चों को डराने के लिए) एक डरावना काल्पनिक चरित्र, 2. (संभवतः) अफ़गानिस्तान के आस-पास का एक क्रूर शासक, 3. कोक्को (दे.) का पति, 4. बनावटी डर, 5. (दे. हाऊ)। **हौआ** (हि.)

हौसला (पुं.) दे. होंसला।

ह्याँ (क्रि. वि.) यहाँ।

ह्रस्व (वि.) 1. छोटा, 2. 'दीर्घ' का विलोम।

ह्रास (पुं.) 1. क्षीणता, अवनति, 2. हानि।

परिशिष्ट–एक

हरियाणवी लोकोक्तियाँ और मुहावरे

अ

अँगड़ाई तोड़णा–1. आलस्य का भाव प्रकट करना, 2. कामुकता का भाव प्रकट करना।

अँगरेज्जी काटणा/छाँटणा–1. क़ायदे-कानून निकालना, 2. अबे-तबे करना, 3. मातृ-बोली में न बोलना।

अँघाई करणा/लागणा–मस्ती में आना।

अंटा चित होणा–पराजित होना।

अंटा तारणा–बाजी उतारना।

अंटी करणा–परिवार से छिपा कर अलग से पैसा जोड़ना।

अंटी मारणा–कुश्ती में हराना।

अंटी में आणा–1. दाँव पर चढ़ना, 2. क़ाबू में आना।

अंतर गाज्जै तै मंतर बाज्जै–आंतरिक उत्साह के बिना कार्य-सिद्धि नहीं होती।

अंबर के तारे गिणणा–1. प्रतीक्षा में रात काटना, 2. असंभव कार्य में समय नष्ट करना।

अंबर के तारे तोड़णा–अलौकिक या असाधारण कार्य करना।

अंबर मैं थूक्या मुँह पै पड़ै–अभिमान का सिर नीचा।

अंबर मैं थेगळी लाणा–असाधारण कार्य करना।

अंबर राँच्चै मींह माच्चै–वर्षा के समय रक्त-अंबर अधिक वर्षा का द्योतक है।

अक्कल कै पाच्छै लट्ठ ले कै पड़णा–मूर्खतापूर्ण कार्य करना।

अक्कल पै पात्थर पड़णा–बुद्धि भ्रष्ट होना।

अक्कल बड्डी अक भैंस–शक्ति से बुद्धि बलवान है।

अक्कल बिना ऊँट उभाणा–बुद्धि से काम न लेने से कष्ट भोगना पड़ता है।

अगेत्ता बूँट (दे. बूँट[1]) **चोक्खा पछेत्ती साँथरी** (दे.) **कुछ नाँ**–अगेती फ़सल बोना अधिक लाभकर है।

अड़ा-बड़ा खेल्हणा–1. सामान्य मनोरंजन करना, 2. बहकाना।

अड़ी-भीड़ का राम हिमाँत्ती–निर्बल के बल राम।

अड़ी–भीड़ का सात्थी–मुसीबत का सहारा।

अड़ोस्सी-पड़ोस्सी बरतणा–स्वजनों के प्रति आत्मीयता प्रकट न करना।

अणहोत की माँ होत की भाण–विपत्ति में माँ सहायक होती है, बहन नहीं।

अत करणा/तारणा–1. बदी करना, 2. आचार का सीमोल्लंघन करना।

अधम विचाळै डोबणा–कहीं का न छोड़ना।

अन-जल-पाणी ऊठणा–मृत्यु होना।

अन-जल-पाणी त्यागणा–1. घोर प्रतिज्ञा करना, 2. मृत्यु आसन्न होना।

अपणा तेल भों पै गेर मन्नैं कूप्पी दे–अन्य को भारी हानि पहुँचा कर अपनी क्षुद्र स्वार्थ-सिद्धि करना।

अपणा मरण जगत की हाँस्सी—कष्ट में कौन किसका सहायक है?

अपणा मारै छाँह मैं गेरै—अपना-अपना है, पराया-पराया।

अपणा हाथ जगन्नाथ—1. अवसर मिलते ही स्वार्थ-सिद्धि करना, 2. स्वयं के परिश्रम से निर्मल कीर्ति मिलती है।

अपणी-अपणी तूंबड़ी अपणा-अपणा राग—अपना राग अलापना, दूसरे की न सुनना।

अपणी घुर पैं सब सेर—अपने निवास पर सभी शक्तिशाली होने का दंभ भरते हैं।

अपणी नींद सोणा अपणी नींद ऊठणा—समाज से अधिक सरोकार न रखना।

अपणी मा नैं कूण डैण (दे.) बतावै—अपने कुटुंबी की कौन भला पुरुष निंदा करता है।

अपणी माट्टी आप पीटणा—अपने हाथों अपना अपमान कराना।

अपणी सीत नैं कूण खाट्टी बतावै—अपनी वस्तु में कोई खोट नहीं निकालता।

अपणे आळी पै आणा—अंततोगत्वा अपने मूल स्वभाव के अनुसार आचरण करना।

अपणे मुरगामटे (दे.) मैं सब मस्त—अपनी जीवन- पद्धति से संतुष्ट रहना।

अपणे सिर ओटणा—जिम्मावारी स्वीकार करना।

अफलातून्नी छाँटणा—1. नुकर-चुकर करना, 2. अपने आप को अधिक चतुर सिद्ध करना।

अफसर की अगाड़ी घोड़े की पछाड़ी—अफ़सर के सम्मुख और घोड़े के पीछे खड़ा होना विपत्ति बुलाना है।

अरंड (दे.) के पेड़ पै चढाणा—झूठी बड़ाई करके हानि पहुँचाना, (अरंड का तना कमज़ोर होता है)।

अलख जगात्ता हाँडणा—पैर से पैर मारते फिरना।

अल्ला-अल्ला खैर सल्ला—हर प्रकार से सुख-शांति होना।

अवाज पै बोलणा—आज्ञा में रहना।

अहरा-पहरा बोलणा—1. तू-तड़ाक से बात करना, 2. गुस्ताख़ी करना।

आ

आँक्खे मेटणा—भाग्य धोना।

आँक्खे लिखणा—भाग्य-लेख लिखना।

आँख काढणा—1. डराना, 2. आँख निकालने का दंड देना।

आँख गई जग ग़या—नेत्रहीन का जीवन व्यर्थ है।

आखँ तैं लहू बरसणा—अत्यंत क्रोधित होना।

आँख पै चरबी छ्याणा—अभिमानवश भला-बुरा न सोच पाना।

आँख फूटणा—1. मति भ्रष्ट होना, 2. अंधा होना।

आँख बिगड़णा—मन-मुटाव होना।

आँख मटकाणा—इतराना।

आँख मारणा—1. संकेत से बात कहना, 2. सैन चलाना।

आँख मैं मिरच झोंकणा—दिन-दहाड़े धोखा देना।

आँख सेकणा—सैन चलाना।

आँक्खाँ देक्खी बात–प्रत्यक्षदर्शी बात।

आँख्याँ पै ठेकरी धरणा–अनदेखी करना।

आँख्याँ साहमीं आणा–किया कर्म सामने आना, किए का फल मिलना।

आँगळी तोड़णा–बाधा डालना।

आँगळी धरणा–कोई वस्तु पसंद करना, 2. वश में करना।

आँगळी नाँ धरण देणा–1. क़ाबू में न आना, 2. आलोचना न सुन सकना।

आँगळी पाक्कड़ कै पोंहचा पाक्कड़णा–शनैःशनैः अधिकार जमाना।

आँट काटणा–1. जेब काटना, 2. मूर्ख बनाना।

आँट लागणा–1. बाधा उत्पन्न होना, 2. कार्य में देरी होना।

आँट लाणा–1. हठ करना, 2. बाधा डालना।

आँट्टे-साँट्टे का ब्याह–1. वस्तु-विनिमय का सौदा, 2. हेर-फेर का व्यवहार।

आँत कुळमुळाणा–1. क्षुधातुर होना, 2. घबराना।

आँद्धा दीवा–प्रभावहीन व्यक्तित्व।

आँद्धा न्यौत्तै दो बुलावै–जान-बूझ कर कठिनाई में फँसना।

आँद्धा बणाणा–1. वंचिका देना, 2. मूर्ख बनाना।

आँद्धा बाँट्टै सीरणी मुड़-मुड़ अपण्याँ नैं दे–तरफदारी करना।

आँद्धा होणा–1. जान-बूझ कर आपत्ति में फँसणा, 2. (दे. जाण बावळा होणा), 3. मदांध होना।

आँद्धी के आम–मुफ्त की चीज़।

आँद्धे की माक्खी राम उड़ावै–निर्बल का भगवान ही सहायक है।

आँद्धे की लाकड़ी–एकमात्र सहारा।

आँद्धे कै आग्गै रोवै अपणे नयणा खोवै–अरण्य रोदन।

आँवळे का खाया अर बुड्ढे का कह्या देर मैं फळ दे–आँवले के खाने और बूढ़े के वचन का लाभ बाद में पता चलता है।

आई तीज बखेरगी बीज–1. हरियाली तीज के बाद त्योहार शुरू हो जाते हैं, 2. हरियाली तीज पर सभी खेत बीज दिए जाते हैं।

आई थी आँच लेण घरआळी बण बैट्ठी–बहाने से अधिकार में लेना।

आई-बाई भूलणा–हक्का-बक्का रह जाना।

आई सीत लेण घरआळी बण बैट्ठी–अंगुली पकड़ कर पोंहचा पकड़ना।

आई होळी भर लेगी झोळी–1. होली के बाद कई महीने तक प्रमुख त्योहार नहीं आता, 2. होली के बाद फसलें कट जाती हैं।

आए-गए होणा–विस्मृत होना।

आए होणा–1. आनंदित होना, 2. कर्ज़ वापिस मिला मान लेना।

आग ताँही का साज्झा नाँ होणा–1. अनबन होना, 2. आपस में सामान्य व्यवहार तक न रहना।

आग-धूम्माँ खाणा–भक्ष्य-अभक्ष्य खाना।

आग मैं घी गेरणा–1. लड़ाई भड़काना, 2. हवन करना।

आग्गा लेणा–1. सामना करना, 2. बुरी-भली स्वयं स्वीकार करना, 3. अगवानी करना।

आग्गै एक नाँ पाच्छै दो–1. अनुयायी का अभाव, 2. निर्वंश व्यक्ति।

आग्गै गुरु ना पाच्छै चेला–अकेला दम।

आग्गै दौड़ पाच्छै चौड़–पहला पाठ याद किए बिना आगे बढ़ना।

आग्गै-पाच्छै बूड्ढे नींम तळै–1. मियाँ की दौड़ मस्ज़िद तक, 2. निश्चित ठौर-ठिकाना।

आज तैं काल्ह होणा–1. बहुत विलंब होना, 2. टाल-मटोल करना।

आज मेरी मँगणी काल्ह मेरा ब्याह–उतावलेपन की स्थिति।

आट्टे का सेर बणणा–अनहोनी या अलौकिक घटना घटित होना।

आट्टे मैं नूण वारा–1. नगण्य मात्रा, 2. अल्प प्रभाव।

आठ फिरंगी नो गोरे, लड़ैं जाट के दो छोहरे–जाट जाति के जवान अंग्रेज़ सैनिक से कई गुना लड़ाके होते हैं।

आड़ की पड़छाड़ दाद्दा की सुसराड़–असंबद्ध या कहीं दूर की रिश्तेदारी।

आड्डै चढणा–क़ाबू में आना।

आड्डै राम्मैं–बिना किसी सामयिक महत्त्व के।

आण तोड़णा–1. प्रतिज्ञा भंग करना, 2. बंद रस्म फिर से चालू करना।

आण होणा–1. प्रतिज्ञा होना, 2. मनाही होना, 3. आगमन होना।

आतमाँ सीळी होणा–1. आत्मा को शांति मिलना, 2. शांति मिलना, 3. तुष्टि होना।

आत्माँ सो परमात्माँ–1. पिंड में ब्रह्मांड का वास है, 2. सभी भूत प्राणियों में ईश्वर के दर्शन करो।

आदमी की माया रूँख की छाया साथ में चली जा सै–जीते जी व्यक्ति का प्रभाव रहता है।

आद्धा तीत्तर आद्धा बटेर–अधकचरा व्यक्तित्व।

आद्ध्यूँ सूध करणा–1. बराबर का बँटवारा करना, 2. अधमरा करना।

आप काज सो महाकाज–अपने आप किया काम श्रेष्ठ होता है।

आप मर्‌याँ जग परळै हो–1. जान है जहान है, 2. दूसरे का अनुभव अपना अनुभव नहीं हो सकता।

आप मर्‌याँ सुरग दीक्खै–अनुभव के बिना ज्ञान अधूरा है।

आप्पा खाणी जात–आत्महंता जाति।

आप्पा मारणा–1. इंद्रियों को वश में करना, 2. अहंकार का दमन करना, 3. मन मसोसना।

आ बुळध मन्नैं मार–स्वयं आपत्ति को निमंत्रण देना।

आमते का मुँह जात्ते की पीठ देखणा–दर्शन-मात्र से मन प्रसन्न रखना।

आर्‌याँ मैं पाँह तुड़ाणा–व्यर्थ के झगड़ों में फँसते फिरना।

आळ-जँजाळ आणा–बेमेल स्वप्न आना।

आलस-नींद किसाण नैं खोवै,
चोर नैं खोवै खाँस्सी।
महँगा ब्याज मूल नैं खोवै,
राँड नैं खोवै हाँस्सी।–
किसान के लिए आलस्य, चोर के लिए खाँसी वाणिज्य में अधिक ब्याज और विधवा के लिए लोगों से परिहास हानिकारक है।

आल्हा गाणा–1. लंबी गाथा सुनाना, 2. दुख-भरी व्यथा कहना।

आवा सा पाकणा–बहुत गरमी पड़ना।

आवे का आवा बाँक्का होणा–सारा कुटुंब पथ-भ्रष्ट होना।

आस्सण-कास्सण ठाणा–कूच करना।

आस्सण-पाट्टी लेणा–1. मन चाही बात मनवाने के लिए कोप-भवन में जाकर पड़ना, 2. क्रोध प्रकट करने या बात मनवाने के लिए घर के किसी कोने में मलिन वस्त्र आदि पहन कर लेट रहना।

आहमाँ-साहमीं होणा–आमना-सामना होना, मुलाक़ात होना।

आह्त्याँ-पाह्त्याँ बैठत्याँ हाँढणा–चापलूसी करते फिरना।

इ

इंदर के खाड़े की परी–अत्यंत सुंदर महिला।

इक्कीस बैठणा–तुलना में श्रेष्ठ निकलना।

इतणैं काणी का सिंगार हो इतणैं मेळा बिछड़ ले–व्यर्थ के कार्य में मूल्यवान अवसर से हाथ धो बैठना।

इतणैं मोड्डा मूँड मुंडावै, इतणैं मैं पड़गे ओले–मूँड मुँड़ाते ही ओले पड़ना।

इब्बै दिल्ली दूर सै–कार्य-सिद्धि या लक्ष्य दूर होना।

इमरत की घूँट घूँटणा–जीवन में सभी प्रकार के आनंद उपलब्ध होना।

इमली के पत्ते पै डंड पेलणा–अप्राप्य की आशा रखना।

इमली के पत्ते पै समाणा–प्रगाढ़ मित्रता होना।

इमली बोणा–मृत्यु को शीघ्र बुलाने का निमंत्रण देना, (जन-धारणा के अनुसार इमली बीजने वाले की मृत्यु के बाद उस पर फल आता है)।

इसवर की चाही बड्डी–1. ईश-इच्छा महान् है, 2. जो भगवान करता है ठीक करता है।

इस हाथ दे उस हाथ ले–अदले का बदला।

इसा मीयाँ घर रह्या इसा रह्या परदेस–1. अविवाहित तथा विधुर के लिए घर और बाहर समान है। 2. नामर्दगी।

इसी-तिसी होणा–भद पिटना।

इसे कबूत्तर क्यूँ पालै जो जवार खाँ अर पैंजणी लेकै उड़ ज्याँ–स्वार्थी मित्र बनाने का क्या लाभ?

ई

ईंग्घाँ-ऊँग्घाँ होणा–छिप जाना।

ईंग्घाँ कूवा ऊँग्घाँ झेरा–दुविधापूर्ण स्थिति।

ईंग्घा की ऊँग्घा नै लाणा–लावा-लूतरी करना।

ईंग्घै नाँच्चूँ ऊँच्चै नाँच्चूँ, नाच्चण के बर मुँह लटकाऊँ–स्वेच्छा से कार्य करना किन्तु अनुरोध पर मुकरना।

ईंट तै ईंट भिड़ाणा–नष्ट-भ्रष्ट करना।

ईंट सी मारणा–1. कटूक्ति कहना, 2. कर्कश उत्तर देना।

उ

उकात (दे.) देखणा–सामर्थ्य पहचानना।

उघाड़ा देणा–रहस्य प्रकट करना।

उघाड़ी करणा–1. रहस्य प्रकट करना, 2. लज्जित करना।

उजळ्या-उजळ्या सब दूध नाँ होत्ता–1. हर चमकने वाली वस्तु सोना नहीं होती, 2. हर श्वेत वस्त्रधारी चरित्रवान नहीं होता।

उजाड़ देणा–विध्वंस करना।

उठाऊ चूल्हा–1. अनिश्चितता की स्थिति, 2. अस्थायी निवास।

उड़ती चिड़िया के पर पिछाणणा–बात को तुरंत भाँप लेना।

उड़द पै सफेद्दी–नगण्य सत्ता (तुल. नूँह पर की सफेद्दी)।

उड़दी (दे. उड़दी[2]) **तरवाणा**–सैनिक या सिपाही को पदच्युत करना।

उत्तम खेत्ती मद्धम बाण।
निखद चाकरी भीख निदान।।

सर्वश्रेष्ठ खेती करना, दूसरे स्तर पर व्यापार, नौकरी निकृष्ट तथा भीख माँगना निकृष्टतम है।

उन्नींस बीस का फरक–दो वस्तुओं या स्थितियों में सामान्य अंतर।

उन्नींस बैठणा–तुलना में कम रहना।

उमर ताँही का पट्टा–जीवन-भर का अधिकार।

उमर पाणा–दीर्घायु प्राप्त करना।

उमर बेल बधणा–दीर्घायु होना।

उलट पाह्याँ आणा–अविलंब लौटना।

उल्टी खाट खड़ी करणा–अपशकुन करना (क्योंकि मृतक की चारपाई उलटी खड़ी की जाती है)।

उल्टी गंगा बहाणा–विपरीत आचरण करना।

उल्टे खूँट्टे गाडणा–1. अपशकुन करना, 2. अनुचित कार्य करना।

उल्लू बोलणा–स्थान का निर्जन होना।

उस्तरा फेरणा–1. चेला मूँडना, 2. वंचिका देकर हानि पहुँचाना।

ऊ

ऊँक्खळ मैं सिर दिया तै मूसळाँ तैं के डर–आगे पैर बढ़ाने के बाद सर्वस्व बलिदान करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

ऊँट का ऊँट बधणा–1. अधिक क़द बढ़ना, 2. बड़ा होकर भी बुद्धि न आना।

ऊँट के गळ मैं बूँट–1. बेमेल संबंध या विवाह।

ऊँट जा घड़े मैं ढूँढ्ढै–खोई हुई वस्तु व्यर्थ के स्थान पर खोजना।

ऊँट झिंवास्सा आगरी,
रहबारी गाड्डीवान।
ज्यूँ-ज्यूँ चिमकै बीजळी,
त्यूँ-त्यूँ लिकड़ैं प्राण।।

ऊँट, झिवासे के पौधे, नमकगीर, ऊँटवान तथा गाड़ीवान के लिए बिजली की चमक विनाश का संकेत देती है।

ऊँट-मटील्ला करणा/ठाणा–1. सर्वथा नष्ट करना, 2. बस्ती उजाड़ना।

ऊँणी री माँ ऊँणी (दे.) **तनैं रात परूँद्धी पूणी**–असमय या विलंब से किया गया कार्य संपन्न नहीं होता।

ऊगमाँ सो आथमाँ–उन्नति के साथ पतन निश्चित है (उदय के बाद अस्त निश्चित है)।

ऊजळे मुँह का–निष्कलंक व्यक्तित्व।

ऊज्जड़ देख गूज्जर कूद्दै,
दाळ देख बिराग्गी।
खीर देख बाहमण कूद्दै,
तीन्नूँ हो ज्याँ राज्जी।।

गूजर गोचारण भूमि देख कर, बैरागी दाल-भात से तथा ब्राह्मण खीर से प्रसन्न होता है।

ऊट्ठक-बैट्ठक करणा–1. व्यायाम करना, 2. जी हुजूरी करना।

ऊट्ठण-बैट्ठण तैं जाणा–1. अपंग होना, 2. बुढ़ापा आना, 3. मेल-मिलाप न रहना।

ऊट्ठा-बैट्ठी होणा–1. परिवार में आने-जाने का सामान्य व्यवहार होना, 2. प्रजनन से पूर्व पशु का उठना-बैठना।

ऊठती कूप्पळ तोड़णा–1. पाप-कर्म करना, 2. बाल-हत्या करना।

ऊठ तेरी बैठ मेरी–1. पहले दाँव का अवसर अन्य को देना, 2. हार का दायित्व स्वयं पर तथा जीत का श्रेय अन्य को देना।

ऊठ देणा–दाँव की पहली बाज़ी विरोधी को देना।

ऊत का ऊत होणा–1. जैसा पिता वैसी संतान, 2. अव्वल नंबर का बदमाश।

ऊत का ऊत जाणा–निस्संतान मरना।

ऊत की दवाई जूत–नष्ट-देव की भ्रष्ट-पूजा।

ऊत नपूत जाणा/होणा–1. वंश नष्ट होना, 2. निस्संतान मरना।

ऊत नपूत्ती होणा–वाक युद्ध होना।

ऊल्है (दे. ओल्हा) **गाऊँ चूल्है गाऊँ।**
गावण की बरियाँ मुँह लटकाऊँ।।

समय पड़े पर मुकरना या काम न आना।

ए

एक अकेल्ला, दूज्जा भला, तीज्जा रोवै, चोत्था खोवै–दो व्यक्तियों की संगति संगति है, अधिक की भीड़ विनाशक है।

एक इमरत मात्ता की कही,
एक इमरत दूध अर दही।
एक इमरत भाइयाँ का साथ,
एक इमरत सखियाँ का साथ।।

माता का आदेश, दूध-दही का भोजन, भाई और मित्रों का संग अमृत-तुल्य है।

एक कन्या सहंसर बर–हजार वर देख कर एक वर पसंद किया जाता है।

एक चळू पाणी मैं डूब मरणा–अत्यंत लज्जित होना।

एक चुप सो नैं हरावै–मौनी सुखी रहता है।

एक टंगी खड़्या होणा–1. क्षमा-याचना करना, 2. सेवा के लिए प्रस्तुत रहना, 3. घोर तपस्या करना।

एक तै बेट्टी राज्जा की, दूज्जै रूप दिया करतार–भगवान की विशेष अनुकंपा होना।

एक नाँक दो छींक काम बणैगा ठीक—निरंतर दो छींके शुभ मानी जाती हैं।

एक पाई नाँ ऊठणा—1. अल्प लाभ भी न होना, 2. थोड़ा भी खर्च न होना।

एक पेट के—1. सहोदर, 2. समान व्यवहार वाले।

एक बेल के तंबू—1. सहोदर, 2. समान आचरण या स्वभाव के।

एक भैंस सोवाँ कै माट्टी लाव—एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है।

एक राँड के जाए—एक थैली के चट्टे-बट्टे।

एक लाट्ठी तैं हाँकणा—सभी के साथ बिना छोटे-बड़े का विचार किए दुर्व्यवहार करना।

एक सर खोस्सर, दो सर पणमेस्सर—एक बार जोती भूमि खुजली करने के समान तथा दो बार जोती भूमि परमेश्वर के समान सुखदायी होती है।

एक सुर मैं बोलणा—1. हाँ में हाँ मिलाना, 2. एक मत होना।

एक हाँड्डी मैं दो पेट करणा— पक्षपातपूर्ण व्यवहार करना।

एड देणा/मारणा—1. लताड़ना, प्रताड़ना करना, 2. अपमानित करना।

एडियाँ कै तेल ला कै रिपटणा—रफ़ूचक्कर होना।

एड़ियाँ ताँही का जोर लाणा—पूरी ताक़त लगाना, भरसक प्रयत्न करना।

एड्डी घसणा—1. पीड़ा से कराहना, 2. निठल्ला या बेरोज़गार घूमते फिरना।

एड्डी चटकामत्याँ हाँढणा—व्यर्थ में समय व्यतीत करते फिरना।

एड्डी-चोट्टी का पसीन्ना एक करणा—भरसक प्रयत्न करना।

ऐ

ऐंठ काढणा/लिकाड़णा—मान-मर्दन करना।

ऐंड होणा—1. शारीरिक शिथिलता के कारण निष्क्रिय होना, 2. अकड़ होना।

ऐंड्डी तपणा—रौब-दाब के कारण प्रसिद्ध होना।

ऐंड्डी-बैंड्डी कहणा—उलटा-सीधा जवाब देना।

ऐन-मैन—हू-बहू।

ऐरा गैरा नत्थू खैरा—सामान्य से भी सामान्य व्यक्ति।

ऐल-फैल मचाणा—नाटकीय या बनावटी ढंग से रोना-पीटना या व्यवहार करना।

ओ

ओच्छा माणस—दुष्ट या हीन स्वभाव का व्यक्ति।

ओच्छी पूँज्जी खसम नैं खा—1. दुर्बलता मनुष्य के लिए हानिकारक है, 2. धनाभाव में व्यापार घातक है।

ओच्छे की परीत, बाळू की भीत—ओछा व्यक्ति कभी भी विश्वासघात कर सकता है।

ओजणे करणा—1. दोहद इच्छा प्रकट करना, 2. जिह्वा के स्वाद लेना।

ओटड़े पै झोट्टा (दे.) बठाणा—असंभव बात करना।

ओड्डा लेणा/मारणा–बहाना करना।

ओढणा ओढणा–1. विधवा होने पर या अपनी इच्छा से अन्य की पत्नी बनना, 2. जनानिया बनना।

ओढत-पहरत धीयड़ आई, खावत-पीवत बहुअड़– 1. पुत्री के पैदा होने से पूर्व ओढ़ने-पहनने का चाव पूरा कर लिया, पुत्र-वधू के आने से पहले खाने-पीने का चाव पूरा कर लिया, 2. गृहस्थ बढ़ने पर मन की इच्छाओं का दमन करना पड़ता है।

ओणैं-पोणैं भा–महँगा-सस्ता।

ओतारी आदमी–1. भद्र जन, 2. उपद्रवी (व्यंग्य में)।

ओळी कहणा–अशुभ वचन कहना।

ओस चाट्याँ तिस नाँ बुज्झे–छोटे से बड़े कार्य की सिद्धि की अपेक्षा करना व्यर्थ है।

ओस्साँ घड़े भरणा–1. व्यर्थ के कार्य में शक्ति क्षय करना, 2. असंभव कार्य में जुटना।

ओहड़ी (दे.) **पाटणा**–अधिक स्नेह उमगना।

ओहे लाँड्डा तीन का–अपरिवर्तित स्थिति, पूर्ववत् स्थिति।

क

कंचन बरसणा–1. धन ही धन मिलना, 2. लाभ होना।

कंचन की काया–स्वर्ण के समान सुंदर शरीर।

कंटक-देस कठोर नर,
भैंस मूत का नीर।
करमाँ का मार्‌या फिरै,
बाँग्गर बीच फकीर।।

दुर्भाग्यवश कुस्थान, निर्मम लोग तथा खारी पानी पीने को मिलता है, (यह उक्ति एक फ़क़ीर की है जो बाँगर क्षेत्र में ग्रीष्म-ऋतु में आ फँसा)।

कंठी तोड़णा–संकल्प भंग करना।

कंठी बाँधणा–1. चेला मूँडना, 2. प्रतिज्ञा करना।

कक्का नाँ आणा–निरक्षर होना।

कटती करणा–काट करना या निंदा करना।

कटिया तारणा–1. स्वार्थ-पूर्ति के लिए बारबार चक्कर लगाना, 2. उच्छृंखलता का व्यवहार करना।

कड़-थेपड़णा–1. पीठ थपथपाना, 2. उत्साहित करना।

कड़के पै कड़का मारणा–बात पर बात कहना।

कड़वै त्योर लखाणा–क्रोध-भरी निगाह से देखना।

कड़ियाँ मैं साँप बताणा–दूसरी ओर ध्यान बँटवाने के लिए अघटित घटना की ओर ध्यान दिलाना, ध्यान बँटवाना।

कड्ढी का सा उफाण–क्षणिक आवेश।

कड्ढी बिगाड़–रंग में भंग करने वाला।

कतर ब्योंत करणा–उधेड़-बुन में पड़ना।

कद मरी सास्सू, कद आवैं आँस्सू–स्वार्थसिद्धि के लिए दूसरे का अहित सोचना।

कमाई मैं समाई सै–1. संतोष बड़ा धन है, 2. परिश्रम से कमाया धन फलीभूत होता है।

कमावै धोत्ती आळा, खाज्या टोप्पी आळा–किसान के परिश्रम का लाभ

अधिकारी हड़प लेते हैं, (यह मुहावरा अंग्रेजी शासन-काल का है)।

करणियाँ का राम हिमाँती–भगवान परिश्रमी की सहायता करता है।

करणियाँ की चवन्नी, बतावणियाँ का रपैइया–श्रम करने वाले से सीख देने वाला बड़ा है।

करणी करै तै क्यूँ करै, क्यूँ करकै पछता। बोवै पेड़ बबूळ के, आम कड़े तै खा।।–जैसा करोगे वैसा भरोगे।

करणी पार उतरणी–किए का फल मिलना।

करणी सो भरणी–करेगा सो भरेगा।

करम का खारा (दे. खारा[1]) **जळणा**–विवाह के चोले में विधवा होना।

करम का ताळा लागणा–भाग्य फूटना।

करम का लेक्खा कित्तै नाँ जा–जो भाग्य में बदा है वह मिलता है।

करम का सुनार मरणा–विधवा होना।

करम के लेख–भाग्य-रेखा।

करम ठोक–भाग्य-हीन।

करम हीण खेत्ती करै, बुळध मरै के सूक्का पड़ै–भाग्य-हीन को हर काम में हानि होती है।

करले सो काम, भजले सो राम–समय के सदुपयोग में ही कल्याण है।

करी धरी का नाम मुकंदा–करे कोई भरे कोई, (यहाँ मुकंदा कहानी का एक पात्र है जिसके सर हर दोष मढ़ा जाता है)।

कला खेह्लणा–चालबाज़ी बरतना।

कसतूरिया हिरण–बेचैन या व्यग्र व्यक्ति।

कसाई का माळ अर काटड़ा खाज्या–निर्बल व्यक्ति बलवान का हक़ नहीं दबा सकता।

कहण पुगाणा–1. वचन का पालन करना, 2. आज्ञा मानना।

कहण सुणण नैं–नाम मात्र को।

काँञ्जर (दे.) **के डेरे मैं टूक्काँ का न्या**–छोटे लोग छोटी-छोटी बातों पर झगड़ते हैं।

काँट्टाँ मैं हाथ जाणा–आफ़त में फँसना।

काँट्टो (दे.) **की भाज बिटोड़े ताँहीं**–मियाँ की दोड़ मस्जिद तक।

काँद्धा देणा–1. मृतक की अरथी में लगना, 2. सहारा देना।

काँद्धै बठाणा–सम्मान देना।

काँस्सी पड्ढण जाणा–ज्ञान-प्राप्ति के लिए परदेश जाना।

काँस्सी मैं करोंत लेणा–कठिनतम कार्य करने का भार लेना, (काशी-करवट लेना)।

काई पर की लाट्ठी–क्षणिक बैर।

काक्का कह्याँ काकड़ी नाँ मिलती– 1. चापलूसी न चलना, 2. परिश्रम से फल मिलता है, बातों से नहीं।

काक्का कै हाथ कुहाड़ी अच्छी लाग्गै सै–दूसरे के द्वारा किया कठिन कार्य सरल लगता है।

काग पढाया पींजरै, पढ ग्या च्यारूँ बेद।

समझाया समझ्या नहीं, रह्या ढेढ का ढेढ।।–

हर व्यक्ति ज्ञान को व्यवहार में नहीं ला सकता।

काग बणणा–1. लालची होना, 2. चतुर होना।

काग हंस नाँ, गधा जती–दुष्ट अपने व्यवहार को नहीं बदलता।

काग्गाँ के कोस्से तैं ढोर नाँ मरते–शत्रु के सोचने से किसी का अहित नहीं होता।

काच्चा चिट्ठा खोल्हणा–भंडाफोड़ करना।

काच्चे घड़ूयाँ पाणी भरणा–1. असंभव कार्य करना, 2. कठोर दंड भोगना।

काच्चे-पाक्के दिन–प्रजनन-काल के आस-पास के दिन, गर्भावस्था।

काज्जी का काळ–बेग़ार टालना।

काट के साथ लोह तिरणा–पुण्यात्मा के साथ अधर्मी का बेड़ा भी पार होना।

काटड़ा अर कसाई का माळ खाज्या–असंभव बात।

काटड़े की मा कद ताँहीं खैर मनावैगी–होनी होकर रहेगी।

काटड़े की मा तळै धोण दूध काटड़े का के–अधिकार होते हुए भी लाभ से वंचित रहना।

काटड़े ताँही के बाहणा–अच्छे-बुरे सब काम कर छोड़ना।

काणी के ब्याह मैं सो जोक्खम–दुर्बल या हीन व्यक्ति के मार्ग में अनेक बाधाएँ आती हैं।

काणी के सिंगार मैं मेळा बिछटणा–व्यर्थ के कार्य में वास्तविक कार्य-सिद्धि से वंचित रह जाना।

काणे की आँख का घी–1. अनावश्यक या अवांछित सहायता, 2. कृतघ्नता प्रकट करना।

काणे कै एक रग फालतू–एक-नेत्री अधिक चतुर होता है।

कात्या जिसका सूत, जाया जिसका पूत–किए हुए कार्य का लाभ मिलना।

कान गए अहंकार गया–न सुनेगा न अहंकार होगा।

कान तात्ता नाँ होणा–काम न चलना।

कान्नाँ पर कै तारणा–अनसुनी करना।

कान्नाँ मैं आग सी देणा–1. कटु वचन कहना, 2. बुरा समाचार सुनाना।

कान्नी काटणा–1. संकोचवश बच निकलना, 2. शत्रुता बरतना।

कान्याँ ताँही भरणा–1. परिपूर्ण करना, 2. धापना।

काब्बू साच्चा झगड़ा झूट्ठा–किसी वस्तु को कब्ज़े में रखना अच्छा है, बाद में लड़ाई-झगड़े से क्या लाभ।

काम का नाँ काज का, ढाई सेर नाज का–व्यर्थ का बोझ बनना।

काम प्यारा सै चाम नहीं–व्यक्ति का महत्त्व कार्य से है सौंदर्य से नहीं।

कायत कलम कसाई–कायस्थ कलम से हानि पहुँचाता है जबान से नहीं।

काया-माया का के भरोस्सा–धन-यौवन क्षणिक है।

काळ काकड़ा समय पील्ह–अधिक बेर लगना अकाल की और अधिक पीलू लगना सुभिक्ष की निशानी है।

काळजा छोलणा–हृदय विदीर्ण करना।

काळजा सीळा करणा–मनोवांछित कार्य करना।

काळजे की कोर–बहुत प्यारी वस्तु।

काळ बाग्गड़ तैं ऊपजै–1. कुदेश से बुरे की आशंका रहती है, 2. बुरे से बुरे कार्य की संभावना रहती है।

काळा आक्खर भैंस बरोब्बर–निरक्षर के लिए पुस्तक का क्या महत्व।

काळी गा–क्षमा या दया का पात्र।

काळी घटा डरपावणी–जो गरजता है वह बरसता नहीं।

काळी जाळ–द्वेष रखने वाली।

काळे-काळे सारे मेरे बाप के साळे–भ्रम वश सभी को समान समझ बैठना।

काळे तिल चाबणा–1. पाप कमाना, 2. अगत बिगाड़ना।

काळै रै तूँ मळमळ नहा, तेरी काळस कदे नाँ जा–स्वभाव या प्रकृति नहीं बदलती।

काल्लर (दे. काल्लर[1]) **कोरै डबोणा**–विश्वासघात करना।

कित राज्जा भोज कित गंगवा तेल्ली–बेमेल संबंध।

कित राँ-राँ कित टैं-टैं–1. तनिक भी समानता न होना, 2. मुक़ाबले में न टिकना।

कित्तै जा ले, भाग नैं आग्गै पाले–भाग्य आगे चलता है।

कितै ढोर सून्ने, कितै चोर सून्ने–कहीं किसी चीज़ का अभाव, कहीं किसी चीज़ की बहुलता।

किमैं काणी के मन मैं थी किमैं आगे लणिहार–मन की इच्छा पूरी होना।

किमैं काणी थी किमैं कुणक पड़ग्या–बाधा पर बाधा आना, आपत्ति पर आपत्ति पड़ना।

किमैं जाण के मन मैं थी किमैं आगे लणिहार–मन के अनुकूल लक्षण बनना।

किमैं लोह खोट्टा, किमैं लुहार खोट्टा–दोनों पक्षों में कोई न कोई कमी होना।

किमैं सुथरी थी किमैं बारजे मैं आ कै खड़ी होगी–आनंद लूटने की अनुकूल स्थिति।

किरळकाँट की ढाळ रंग पलटणा–गिरगिट की तरह रंग बदलना।

किस बिध बैट्ठै ऊँट–भाग्य के विषय में भविष्यवाणी नहीं हो सकती।

किसै का तै आवा बाँक्का, किसै का खदान्ना खराब–महापतन होना।

किसै नैं बैंगण पच किसै नैं कुपच–हर एक को हर वस्तु रास नहीं आती।

कीक्कर फूल्ली भादवै, फळ लाग्या बैसाख–कार्य का फल शनैःशनैः किंतु देर से मिलता है।

कीड़ी की तराँ मसळणा–बिना कठिनाई के शत्रु-शमन करना।

कीड़े पड़णा–रौरव नरक भोगना।

कीड़्याँ की कूँड़ मिलणा–रौरव नरक भोगना।

कुँआर करेल्ला चैत गुड़,
साम्मण साग नाँ खा।
कोड़ी खरचै गिरह तैं,
रोग बिसाहवण जा॥

क्वार में करेला, चैत्र में गुड़ का सेवन तथा सावन में पत्ते का साग रोगवर्धक है।

कुणबा घाणी होणा–1. सर्वनाश होना, 2. भयंकर दंड भोगना।

कुत्ता, बिल्ली, बाँद्दर नाँ हों तैं खुले किवाड़ाँ सो–कुत्ते, बिल्ली और बंदर से चीजों को हानि पहुँचने की सदा आशंका रहती है।

कुत्ता बी पूँछ मार कै बैट्ठै सै–स्वच्छता बड़ी चीज़ है।

कुत्ते आळी मोंत मरणा–निकृष्ट मौत मिलना।

कुत्ते का अँगड़ाई तोड़णा–अपशकुन होना।

कुत्ते की नींद सोणा–सोते समय भी सचेत रहना।

कुत्ते कै घी नाँ पच्या करै–लाभकारी वस्तु का लाभ अपात्र नहीं उठा सकता।

कुत्ते कै ताण गाड्डी चालणा–किसी कार्य का स्वयं द्वारा संचालित होने का भ्रम होना।

कुत्ते कै ताण गाड्डी नाँ चालणा–अशक्त के सहारे कार्य संचालन न होना।

कुत्ते-बिल्ली का बैर–वर्गगत या जन्मजात बैर।

कुम्हार कहे तैं गधी पै नाँ चड्ढै–निवेदन अस्वीकार करना और बिना कहे काम करना।

कुम्हारण का छोह गधे पै–अनावश्यक रूप से अपना क्रोध गरीब पर उतारना।

कुरड़ी के दिन बदलणा–भाग्य का पाँसा पलटना।

कुआ-झेरा देखणा–आत्म-हत्या का स्थान ढूँढ़ना।

कूए की माट्टी कूए मैं–जितनी आमद उतना खर्च।

कूए-झेरे मैं ज्यान झोकणा–आत्म-हत्या करना।

कूए मैं गेरणा–1. नष्ट करना, 2. बात भुलाना।

कूल्हड़ी मैं गुड़ फोड़णा–1. गुप्त निर्णय लेना, 2. असंभव काम करना।

के खा घी तैं, के जा जी तैं–अतिवादी व्यवहार।

के तै तनैं गया पा, के तेरा आग्या जाणगेड़ा–उपलब्धि होने या विनाशकाल आने पर व्यवहार में अंतर आना।

के तै बाब्बा रेल मैं, के बाबा जेल मैं–अतिवादी व्यवहार।

के तै मोड्डा बाँद्धै पागड़ी, नाँ रहै उघाड़ै सिर–अतिवादी व्यवहार।

के पाट्टे तिगने आळी लाग्गूँ सूँ।
लंबरदार की काक्की लाग्गूँ सूँ।।–1. हीनता की अवस्था में बड़ों से संबंध जताना, 2. समृद्ध होते हुए भी सरल जीवन बिताना।

के मारै भाद्दों का घाम।
के मारै साज्झे का काम।।
भादों की धूप और साझे की खेती किसान के लिए घातक होती है।

केस्सर तैं प्याज बणणा–1. चारित्रिक पतन होना, 2. अध:पतन होना।

कोए अन मस्त, कोए तन मस्त, कोए धन मस्त–संतुष्टि के अपने-अपने मार्ग हैं।

कोए गावै होळी के, कोए गावै दिवाळी के–अवसर या समय के अनुसार बात न करना।

कोडियाँ के भा–1. सस्ते दर पर, 2. अवमानना की स्थिति।

कोड्डी-कोड्डी जोड़णा–परिश्रम और कंजूसी से धन संग्रह करना।

कोड्डी खे:लणा–जुआ खेलना।

कोळी भरणा–1. माया बटोरना, 2. आवेशवश आलिंगन करना।

कोली मारणा–1. फ़तह होना या मिलना, मोर्चा जीतना, 2. कुश्ती जीतना।

कोस बी नाँ चाल्ली बाब्बा तिसाई–बिना कष्ट के चीख-पुकार करना।

क्यारी मैं बसणा–अधीनस्थ होना।

क्यूँ आँद्धा न्योत्तै, क्यूँ दो बुलावै–नासमझी के कारण अनावश्यक कष्ट भोगना।

क्यूँ एक कहै, क्यूँ दस सुणैं–1. अनावश्यक छेड़छाड़ से कष्ट भोगना पड़ता है, 2. चुप रहना लाभदायक है।

क्यूँ गार्या मैं ईंट मारै, अर क्यूँ छीट्टमछीट हो–दुष्ट को छेड़ने से स्वयं की हानि ही होती है।

ख

खड़ी बुहारी देणा–बेगार टालना।

खड़्ढा खोद्दै ओर तैं, पड़ै आपणै आप–अपने जाल में स्वयं फँसना।

खड़्या गाडणा–भयंकर दंड देना।

खरबूज्जे नैं देख कै खरबूज्जा रंग बदलै–संगति का प्रभाव पड़ता है।

खळ (दे.) खाई अर झळ आई–चोरी छिप नहीं सकती।

खवे पर कै लखाणा–1. जवान होना, 2. धन-दौलत पर गर्व होना, 3. किसी की जान-बूझ कर उपेक्षा करना।

खाँड का पाणी होणा–1. काम बिगड़ना, 2. भारी हानि होना।

खाइये घर देख कमाइये पड़ोस्सी देख–परिश्रम के लिए पड़ोसी से प्रेरणा लेना और खर्च घर देखकर करना चाहिए।

खाइये देस, कमाइये परदेस–दूसरे स्थान पर जाकर किसी प्रकार पैसा कमाओ और घर आकर सम्मानपूर्वक उसे खर्च करो।

खाइये मन भात्ता, पहरिये जग भात्ता–इच्छानुसार भोजन और समाज को अच्छा लगने वाला वस्त्र पहनना चाहिए।

खाइये बार, चालिये बिवहार–त्योहार के दिन अच्छा भोजन खाओ और व्यवहार-अनुकूल आचरण करो।

खा उतणी भूख, सोवै उतणी नींद–

1. भूख और नींद इच्छानुसार घटाई-बढ़ाई जा सकती हैं, 2. आदतें प्रयत्नपूर्वक बदली जा सकती हैं।

खा कै पछतावै, नहा कै नाँ पछतावै–भोजन हानिकारक हो सकता है स्नान नहीं।

खा कै सो ज्या, मार कै भाज ज्या–खा कर सो रहना और मार कर भाग निकलना एक नीति है।

खाट खड़ी करणा–1. वध करना, 2. पराजित करना।

खात्ती (दे.) देख्याँ खोटुआ (दे.), नाई देक्खाँ बाळ–1. बढ़ई को देख कर छुटपुट मरम्मत और नाई को देख कर बाल कटाने की इच्छा हो आती है, 2. विस्मृत कार्य संदर्भ से ध्यान आता है।

खाल पाट्टी जाणा–1. गर्व से चूर रहना, 2. मोटा होना, 3. अपने आपे में न समाना।

खाल्ली खोर तैं फरड़े (दे. फरड़ा) **आच्छे**–भागते चोर की लंगोटी सही।

खाल्ली दोघड़ आग्गै आणा–अपशकुन होना।

खाल्ली राँड ठिकाणे ढूँड्ढे।
खाल्ली डूम काटड़े मूँड्डै।।–
खाली दिमाग़ शैतान कर घर है।

खा सेर कमा सवा सेर–भर पेट खाओ और परिश्रम से कमाओ।

खिंड-मिंड होणा–1. फूट पड़ना, 2. तितर-बितर होना।

खिल्हाए का नाम नाँ हो, रुवाए का हो ज्या–अच्छे काम का यश नहीं मिलता जबकि सामान्य भूल का अपशय भोगना पड़ता है।

खुले किवाड़ाँ सोणा–1. सुख की नींद सोना, 2. निडर होना, 3. कार्य-भार से मुक्त होना।

खूँट्टा बळणा–स्थान काट खाने को आना।

खूँट्टा भार्या होणा–किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का समर्थन मिलना।

खूट्ठे उस्तरे तैं मूँडणा–खुली लूट मचाना।

खूड चराणा–हानि पहुँचाना।

खेड़ा उजड़णा–बस्ती ध्वंसित होना।

खेड़ा-सा ब्रसणा–जंगल में मंगल होना।

खेड्डे (दे.) **खोदणा**–1. आचरण-विरुद्ध कार्य करना, 2. विनाश को निमंत्रण देना।

खेत का डरावा, खावै नाँ खाण दे– 1. खुरली का कुत्ता, 2. व्यर्थ का डरावा।

खेत्ती खसम सेत्ती, नाँ तै रेत्ती की रेत्ती– खेती में निरंतर परिश्रम और निगरानी आवश्यक है अन्यथा वह नष्ट हो जाती है।

खेत्ती, बात्ती, चाकरी, अर घोड़े का तंग।
ये तै करिये आप तैं चाहे लाख लोग हों संग।।

खेती, दीये की बात्ती, आदेश का निर्वाह तथा घोड़े का तंग बाँधना किसी अन्य के भरोसे नहीं छोड़ने चाहिएँ अन्यथा हानि की संभावना रहती है।

खे:लणी-मेलणी देक्खी सै, हाड फोड़ खसरा नाँ देख्या–सामान्य दु:ख का भोक्ता दारूण कष्ट को नहीं समझ सकता।

खे:लण-खाण की उमर–1. बाल्यकाल, 2. मौज-मस्ती के दिन।

खोज मिटाणा–1. समूल नष्ट करना, 2. पहचान के चिह्न सर्वथा नष्ट कर देना।

खोट्टा बेट्टा, खोट्टा दाम।
बखत पड़ै पै, आवै काम।।

आपत्ति-काल में उपेक्षित या अवांछित वस्तु भी सहायक हो जाती है।

खोल्ह करणा–व्यापार में स्पष्टवादिता बरतना, खुलासा करना।

ग

गंगा का आणा, भगीरथ नैं जस– संयोगवश किसी कार्य का पुण्य या यश मिलना।

गंगा गया तै गंगादास, जमना गया तै जमनादास–अवसरवादी व्यक्ति।

गंगा जी के राह मैं, चाक्की राहवा का के काम–अवांछित व्यक्ति उपेक्षा का पात्र बनता है (गंगा-स्नान जाने वालों को चक्की टाँकने वालों की क्या आवश्यकता)।

गंगाजी-सा नहाणा/गंगा नहाणा–1. भारी कार्य-भार से मुक्त होना, 2. मन को अति शांति मिलना, 3. नीरोग होना।

गंगा न्हाई नाँ गोमती, रही रोमती की रोमती– 1. शुभ अवसर हाथ से निकलना, 2. पश्चात्ताप करते रहना।

गंगा बीच मैं देणा–गंगा की सौगंध खाना।

गंगा मैं जो बोणा–1. पुण्य कार्य करना, 2. अगत सुधारना।

गंजी अर गोखरू (दे. भाँखड़ी) **की ईंढी**–1. कोढ़ में खाज, 2. परिस्थिति के प्रतिकूल आचरण।

गंजी अर रोड़्याँ मैं कुल्लाबात्ती– परिस्थिति के प्रतिकूल व्यवहार।

गंजी के जाणै नाळ्याँ का भा–क़द्रदान ही वस्तु का मूल्य समझता है।

गंडा नाँ दे, भेल्ली दे दे—अशर्फियाँ लुटें कोयलों पर मोहर।

गंडे तैं गँडीरी मीट्ठी—मूल से ब्याज प्यारा है।

गंडै तैं गँडीरी मीट्ठी,
गुड़ तैं मीट्ठा राळा।
भाई तैं भतीज्जा प्यारा,
सब तैं प्यारा साळा॥—

ससुराल-पक्ष के लोगों में सबसे अधिक रुचि होती है।

गऊ का जाया—1. निरीह प्राणी, 2. भोला-भाला।

गऊ होणा—भोलेपन का व्यवहार करना।

गग्गड़ (दे. घग्घड़) **गाणा**—व्यर्थ की लंबी कथा या बात कहना।

गधी गई तै गई, पलाण (दे.) नैं बी साथ लेगी— दुगनी हानि होना।

गट्ट्याँ लहू उतरणा—1. खड़े होकर घोर प्रतीक्षा करना, 2. चलते-चलते थकना।

गड़ंग पेलणा—बहुत बड़ा झूठ बोलना।

गधा तै कुरड़ी पै रंज्जै सै—1. गुण, प्रकृति तथा स्वभावानुसार स्थान चुनना, 2. नीच व्यक्ति को कुसंगति प्रिय है।

गधे आळे तीन दिन—1. क्षणिक सौंदर्य, 2. बचपन की चंचलता, कोमलता और सुंदरता प्यारी लगती है।

गया घेट्टी अर हुया माट्टी—जिह्वा का स्वाद क्षणिक है।

गरीब की लुगाई सबकी भाब्भी।
अमीर की लुगाई सबकी दाद्दी॥

मान-अपमान अमीरी-ग़रीबी से जुड़ा है।

गस्सा-खाणा—भोजन करना।

गा का भैंस तळै करणा—गुजर-बसर के लिए एक मद की आमदनी दूसरे मद पर खर्च करना।

गाज्जर-मूळी—1. सामान्य से सामान्य व्यक्ति, 2. निरादृत व्यक्ति।

गाज्जर-मूळी सी काटणा—नरसंहार करना।

गाज्जर-सी बिनारणा—क़त्ले आम करना।

गाड्डी अपणै राह, गाड्डा अपणै राह—1. अपनी-अपनी राह लेना, 2. किसी को किसी की चिंता न होना, 3. लाग-लपेट न रखना।

गाड्डी-सी ऊँगणा—धर पटकना।

गात की घिरणी बँधणा—सूख कर काँटा होना।

गाद्दड़ आळा झेरा—विवशता की स्थिति (गीदड़ की कूएँ में पड़ने की मन:स्थिति) में सुख की अनुभूति।

गाद्दड़ आळी मोंत—1. आत्मघाती कार्य, 2. निकृष्ट मृत्यु।

गाद्दड़ का गाँम कान्नी भाजणा—अपनी मौत स्वयं बुलाना।

गाद्दड़ की तावळ तैं बेर नाँ पाकता—हर कार्य समय आने पर ही संपन्न होता है, पहले नहीं।

गाद्दड़ कै ऊट्ठी हुकहुकी, ऊँट कै ऊट्ठी लुटलुटी—1. प्रकृति के अनुसार आचरण से थकान उतारना या चित्त शांत करना, 2. एक-दूसरे को हानि पहुँचाने के लिए बदले की भावना से काम करना।

गाद्दड़-गादड़ी का ब्याह—1. अनोखा कार्य, 2. धूप रहते वर्षा होना।

गाद्दड़ बिना नाड़ी (दे.) **नाँ कट्टै**—1. अपने क्षेत्र में कुशल व्यक्ति ही कुशल काम कर सकता है, 2. धूर्त से ही धूर्ततापूर्ण कार्य की संभावना है।

गा नाँ बाच्छी, नींद आवै आच्छी–1. परिश्रम से बच कर आराम करना, 2. भूख मरनी ऐश करनी।

गा न्याणें की बहू ठिकाणे की–1. गाय की टाँगों में रस्सी बाँध कर दूध निकालने तथा वधू के परिवार की जाँच करके विवाह करने से कष्ट नहीं उठाना पड़ता, 2. साख की जाँच किए बिना व्यवहार करने से कष्ट भोगना पड़ता है।

गाम की रामरमीं सहर की असनाई बराब्बर हो सै–शहर की अपेक्षा गाँव के लोगों में अधिक आत्मीयता होती है।

गाम बस्स्या नाँ मोड्डे फिरगे–1. कार्य संपन्न होने से पूर्व बाधा उत्पन्न शुरू होना, 2. कार्य-सिद्धि से पूर्व अनावश्यक आशा रखना।

गास तै दे पर बास नाँ दीज्जै–अज्ञातकुल व्यक्ति को भोजन दे दो किंतु रात्रि-निवास नहीं देना चाहिए।

गीहूँ पुराणे, घी नया, घर सतवंती नार। चौत्थे पीठ तुरंग की, सुरग निसान्नी च्यार।।

पुराना गेहूँ, ताजा घी, पतिव्रता नारी और घोड़े की सवारी स्वर्ग-तुल्य सुखदायी हैं।

गुंडे नैं गुंडा गंगाजी के मेळे मैं बी टोह ले–दुष्ट दुष्ट की संगति करता है।

गुड़ खा अर गुलगुल्याँ/गुडियाणी तैं परहेज–बिना तर्क या आधार के आध ी बात मानना और आधी न मानना।

गुड़ गोब्बर करणा–1. ज़ायका खराब करना, 2. काम बिगाड़ना।

गुड़ डळियाँ, घी आँगळियाँ–गुड़ डली-डली खाने और घी अंगुली-अंगुली भर खाने से समाप्त हो जाता है, थोड़ा-थोड़ा उपयोग करने से बड़ा भंडार भी समाप्त हो जाता है।

गुड़ नाँ दे तै गुड़-सी बात तै कह दे–मीठी वाणी पर कुछ खर्च नहीं होता।

गुद्दी पाच्छै मत होणा–1. बुद्धि भ्रष्ट होना, 2. बुद्धि से काम न लेना।

गुद्दी पाच्छे लखाणा–दंभी होना।

गुर सिखाणा–दाँव-पेंच सिखाना।

गुहेरे कै गुहेरे जाम्मैं–1. दुर्जन व्यक्ति की संतान भी वैसी ही होती है, 2. जैसा बाप, वैसा बेटा।

गूँगे तेरी फारसी नैं समझै तेरी मा–1. गुप्त रहस्य को हर कोई नहीं समझ सकता, 2. भेदिया ही भेद की बात समझ सकता है।

गूँट्ठा दिखाणा–1. समय पर मुकरना, 2. चिढ़ाना।

गूँट्ठा देणा–1. गला घोंट कर हत्या करना, 2. अधिक तंग रखना।

गूँट्ठा धोणा–अत्यधिक आतिथ्य सत्कार करना।

गूँट्ठा मरोड़णा–अनुनय-विनय करना।

गूँट्ठे-दस्तक कराणा–लिखित प्रमाण लेना।

गूँट्ठे पै धर कै मारणा–पटकी देना।

गूगळी गा–1. व्यर्थ का व्यक्ति, 2. निस्सहाय गाय।

गूद्दड़िया मरकोल, हरमत मरै जडाई–मोटे वस्त्र पहनने वाला जाड़े से बचता है और शौक़ीन व्यक्ति सरदी से ठिठुरता है।

गूमड़ा सा मुँह करणा–मुँह फुलाना।

गोड्ड्याँ आँस्सू गेरणा–जी भरकर रोना।

गोत मारणा–1. बहुत दिनों तक दिखाई न देना, 2. चुप्पी साधना।

गोत्ती भाई, बाक्की सब असनाई–समगोत्र या अपने गोत्र को छोड़ कर अन्य कहीं भी विवाह-संबंध स्थापित किया जा सकता है।

गोद के नैं छोड कै, पेट के की आस–सम्मुख वस्तु का लाभ न उठाकर संभावित लाभ की अपेक्षा रखना।

गोद में छोह्रा, अर गाँम मैं ढिंढोरा–निकट रखी वस्तु को न पहचान कर इधर-उधर ढूँढ़ना।

गोब्बर गणेस–जड़ बुद्धि।

गोळा पड़णा–आफ़त ढहना।

गोळा-लाट्ठी देणा–1. बहुत दुख देना, 2. आपत्ति में फँसाना।

घ

घड़ी मैं घड़ावळ बाजणा–हर क्षण मृत्यु का समय है।

घणी स्याणी दो बै चून ओसणै–आवश्यकता से अधिक चतुराई से अधिक कष्ट उठाना पड़ता है।

घर आया नाग न पूजिये, बंबी पूज्जण जाँ–1. अवसर का लाभ न उठाना, 2. अवसर चूकना।

घर आळ्याँ नैं उडाई, भार आळ्याँ नैं भून-भून खाई–परिवार के सदस्य ही यदि स्वजन का निरादर करेंगे तो समाज वाले उसे नष्ट कर देंगे।

घर का जोग्गी जोगड़ा, आन देस का सिध–विद्वान् या सिद्ध पुरुष की विद्या का अपने जन्म-स्थान में सम्मान नहीं होता।

घर का बसाणा, आँद्धी मैं दीवा लाणा–गृहस्थ चलाना सुगम नहीं है।

घर का भेद्दी लंका ढाहवै–घर की फूट विनाश का कारण बनती है।

घर का मोड्डा मोडिया ओर गाँम का सिध–सिद्ध पुरुष की विद्या का सम्मान जन्म-स्थान में नहीं होता।

घर की खाँड किरकरी लाग्गै, चोरी का गुड़ मीट्ठा–सहज सुलभ वस्तु का महत्त्व नहीं आँका जाता।

घर की चीज की के होड–स्व-निर्मित या स्वयं उत्पादित वस्तु अधिक टिकाऊ या गुणकरी होती है।

घर की ठोड़ (दे.) **बिटोड़ा** (दे.) **होणा**–घर उजड़ना।

घर के खीर खाँ, देवता भला मान्नैं–एक पंथ दो काज।

घर के दूर पड़ोस्सी नीड़ै–1. विपत्तिकाल में स्वजन नहीं पड़ोसी ही काम आता है, 2. स्वजन से अधिक पड़ोसी को महत्त्व देना।

घर-घर माट्टी के चूल्हे–1. हर घर का अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार खर्च है, 2. सभी लोग जैसे-तैसे करके गृहस्थ चलाते हैं।

घर घालणा–लांछित कार्य करना।

घर तैं लाण दे फूहड़ कुहावै–परोपकार के बदले निंदा मिलना।

घर तैं सीत दे अर फूहड़ कुहावै–उपकार के बदले अपकार मिलना।

घर फूक तमास्सा देखणा–भारी हानि उठा कर आनंद लूटना।

घर मैं पीप्पे सीट्टी मारैं, बाहर साहूकार बणै–व्यर्थ का दिखावा, बाहरी दिखावा।

घर मैं मूस्से का कलाबात्ती खाणा–अधिक कंगाली होना।

घर मैं सूत नाँ कपास, जुलाहे तैं लट्ठम लट्ठा–व्यर्थ का विवाद खड़ा करना।

घर हीणा हो, पर बर हीणा नाँ हो–बेटी का विवाह भले ही निर्धन परिवार में करें पर लड़का स्वस्थ होना चाहिए।

घाघरी का नाड़ा टूटणा–पतिव्रत-धर्म से विचलित होना।

घाघरी की लाम्मण मुड़णा–यात्रा का शकुन होना।

घाघरी तळे का–दब्बू पति।

घाघरी पहरणा–चूड़ी पहनना।

घाघरी-लूगड़ी (दे.) **जोग्गी होणा**–युवती होना।

घाम्मड़ (दे.) **गा का बाछड़ा,**
कळिहारी का पूत।
ये तैं हों नाँ ऊजले,
अर लोग्गड़ का सूत॥–मूल-प्रकृति बदलना कठिन है।

घाल्लै तै रोवण पीट्टण लाग्गूँ।
नाँ तै गोब्बर कूड़ै लाग्गूँ॥–आवश्यकता या समय के अनुसार दिन के कार्य की योजना बनाना।

घी घूँटणा–ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताना।

घी-बूरा पाड़णा–श्रेष्ठ भोजन करते फिरना।

घीलड़ी (दे.)-**सा मुहँ**–भारी और तेलिया मुँह।

घुर (दे.) **पै गाद्दड़ भी सेर**–अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है।

घेट्टी नाँ मुड़णा–दंभ होना।

घेट्टी पै सवार होणा–1. काम करने के लिए भय दिखा कर बाध्य करना, 2. मारने पर उतारू होना।

घोड़े की सवारी करकै गधे की सवारी करणा– 1. अपने को अपमानजनक स्थिति में डालना, 2. उच्च आसन के बाद निम्न आसन ग्रहण करना।

घेरणी (दे.) **घड़णी आवै नाँ, बड़े काम्माँ की साई ले**–अकुशल व्यक्ति द्वारा कलात्मक कार्य करने का दुस्साहस करना।

घोड़ा घास तैं यारी करै, तै खा कै?– 1. व्यापार का आधार लाभ है, 2. जीव का जीव बैरी है।

घोड़ियाँ के मोल–महँगे भाव।

घोड़ी दूब्भर भादवा, भैंस्साँ दूब्भर जेठ।
रॉड्डाँ (दे.) **दूब्भर रंडेपड़ा** (दे.), **बिधवा दूब्भर पेट।।**–हर व्यक्ति की जीवन-संबंधी अपनी-अपनी कठिनाइयाँ हैं।

घोड़े का तंग, अर आदमी का अड़बंध–घोड़े का तंग और मनुष्य का कटिवस्त्र कस कर बँधा होना चाहिए।

घोड़े की अगाड़ी अर अफसर की पछाड़ी नाँ जाया करैं–समय देख कर अपना बचाव करते रहना चाहिए।

घोड़े कै तहनाळ जड़ी, मींडकी नैं पाँह ठाए– 1. व्यर्थ में बड़ों की रीस पीटना, 2. अनधिकार चेष्टा करना।

घोड़ूयाँ राज, बुळधाँ नाज–घर में घोड़े समृद्धि के और बैल अन्न के आधिक्य के द्योतक हैं।

च

चंदन तैं कैर (दे.) **होणा**–पतन होना।

चढते तवे पै दो रोट्टी फालतू सेकणा–लगे हाथ लक्ष्य से कुछ अतिरिक्त कार्य भी कर डालना।

चणा चिरोंज्जी, गीहूँ दाख–1. वस्तु अलभ्य होना, 2. महँगाई बढ़ना।

चणा गेर कै रास बटाणा–किसी सौदे में अल्प राशि डाल कर लाभ का बड़ा अंश माँगना।

चणे के साथ घुण पिसणा–कुसंगति के कारण कष्ट भोगना।

चलणा भला नाँ कोस का,
बेट्टी भली नाँ एक।
करजा भला नाँ साग्गे बाप का,
साहब राक्खै टेक॥–थोड़ा-सा भी पैदल चलना, एक भी पुत्री, पिता से भी लिया क़र्ज कष्टदायक होते हैं।

चवे मैं नींम (दे. नींम[2]) **होणा**–1. गहरी जान-पहचान होना, 2. सुदृढ़ स्थिति होना।

चाँदणा-सा होणा–1. हृदय में नया प्रकाश उदित होना, 2. रहस्य का उद्घाटन होना, 3. आँख खुलना।

चाक्की-चूल्हे कै हाथ मत लाइए, घर-बार तेरा–बिना अधिकार दिए बनावटी पद देना।

चाच्चा की नाँ ताऊ की नाँ–निकट या दूर का भी संबंध न होना।

चाद्दर ताण कै सोणा–निश्चिंतता का जीवन व्यतीत करना।

चाम-गुलाम चोपड़े तैं चाल्लैं–चर्म तेल लगाने से और गुलाम लालच से अधिक समय तक काम देता है।

चाम प्यारा कोन्याँ, काम प्यारा सै–सौंदर्य नहीं, काम करने वाला व्यक्ति ही आदर का पात्र होता है।

चार चीज अस्तए तोफा बाँग्गर।
पील्ह (दे.), **पीच्चू** (दे.), **टींट** (दे.), **अर साँग्गर॥** –बाँग्गर-भूमि में पीलू, पीचू, टेंट और साँगर का बाहुल्य है।

चार चीज अस्तए तोफा रोहतक।
लड़ाई, झगड़ा, फिसाद अर कोतक॥–रोहतक के लोग स्वभावत: क्रोधी और झगड़ालू होते हैं।

चार्यूँ खान्ने खराब होणा–सर्वथा बुरा आचरण होना।

चार्यूँ पास्स्याँ चित होणा–बुरी तरह हारना।

चालती का नाम गाड्डी–1. प्रभावशाली व्यक्ति की सब सराहना करते हैं, 2. गति ही जीवन है।

चालते बुलध कै आर (दे. आर[2]) **मारणा**–कार्यशील व्यक्ति में दोष निकालना।

चालते हाथ पाह्याँ–शरीर में सामर्थ्य रहते-रहते।

चालते हाड-गोड्ड्याँ–शरीर के अंग कारगर रहते-रहते।

चिड़ियाँ मैं डळा सा फैंकणा–1. पूर्ण शांति होना, 2. भय से आतंकित होना।

चिड़िया-सी तिस–हर समय की प्यास।

चिड़ी का बंदा बी नाँ होणा–सुनसान स्थान होना।

चिड़ी की चूँच–1. हर समय बोलते रहने वाला, 2. छोटा मुँह।

चिड़ी-चाँचड़े का दिया आग्गै आणा–पशु-पक्षियों के निमित्त किए दान-पुण्य का मुसीबत में सहायक होना।

चिड़ी नाँ चिड़ी की जात–निर्जन स्थान।

चिलम भरणा–दासता स्वीकार करना।

चीज्जाँ मैं आग लग्गणा–बहुत महँगाई होना।

चील्ह का मूँत–1. अलभ्य और महँगी वस्तु, 2. महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व।

चुराहे आळी भूतणी–व्यर्थ का डर।

चूड़ी पहरणा–1. दासता स्वीकार करना, 2. अन्य की पत्नी बनना।

चैत मास मैं सब बण फूल्लैं–समय आने पर हर चीज़ पर रौनक आती है।

चोंच के साथ चुग्गा–भगवान सबकी उदर-पूर्ति करता है।

चोट्टी कटाणा–1. धर्म-विरोधी कार्य करना, 2. धर्म बदलना।

चोटी काटणा–1. छलना, 2. जघन्य पाप करना।

चोड़ै चुगान आणा–प्रत्यक्ष रूप से आमना-सामना होना।

चोथ-सा मुँह–कुरूप मुँह।

चोपड़ी अर दो-दो–अधिकार से अधिक की आशा रखना।

चोर-उचक्का चोधरी, राँड्डी राँड परधान–निकृष्ट व्यक्ति को उच्च पदवी मिलना, कुपात्र का शासन।

चोर कै पाँ नाँ होत्ते–चोर बड़ा डरपोक और आशंकित होता है।

चोर तैं कहै लाग, साह तैं कहै जाग– 1. दुतरफ़ी चाल, 2. गहरी कूटनीति।

चोस्सर पणमेस्सर–चार बार जोती गई भूमि अमित धन देती है।

च्यार जरब होणा–चार चंदे आगे होना।

च्यार दिसा अर आठ कूँट– सर्वव्यापकता, सब ओर।

च्यार म्हीनैं आल का,

च्यार म्हीनैं ताल का,

च्यार म्हीनैं मींडकी की लात का–चार महीने घड़े का, चार महीने तालाब का और चार महीने कूएँ से तुरंत का निकाला पानी अच्छा होता है।

छ

छण मैं रत्ती, छण मैं तोळा–असंतुलित स्वभाव।

छाज तै बोल्लै सो बोल्लै, छालणी बी के बोल्लै जिसमैं सो छेक–चरित्रवान को आलोचना का अधिकार है, चरित्रहीन को नहीं।

छाज्जाँ उडाणा–धन का अपव्यय करना।

छात्ती करड़ी करणा–साहस बटोरना।

छात्ती छोलणा–भारी ठेस पहुँचाना।

छात्ती ठुकणा–मन मानना

छात्ती पाड़ कै दिखाणा–अन्तर्मन की कहना।

छात्ती पै डाभ (दे.) जामणा–वचन चुभना।

छात्ती पै धर कै ले ज्याणा–इहलोक के साधन परलोक ले जाने की सोचना।

छात्ती पै मूँग दळणा–शत्रु के सम्मुख दुस्साहसपूर्ण कार्य करना।

छात्ती भार्‌या होणा–प्यार उमड़ना।

छात्ती सीळी करणा–1. मनोकामना पूरी करना, 2. शांति मिलना।

छींकत खाइये, छींकत पीइये,
छींकत जाइये सो।
छींकत पराए घर मत जाइये,
चाहे सून्ना बँटता हो।।–खाने, पीने और सोने से पूर्व की छींक शुभ है किंतु गमन में अशुभ।

छींक्का लाणा–1. खाने-पीने पर प्रतिबंध लगाना, 2. प्रतिबंध लगाना।

छुट्टी बोलणा–कुश्ती के लिए चुनौती देना।

छूट का होणा–विपुल मात्रा में उपलब्ध होना।

छेड़ छेड़ना–1. काँटों में हाथ देना, 2. कठिन काम आरंभ कर बैठना।

छैल्लड़ छूटणा–स्वच्छंद आचरण करना।

छोत मानणा–1. अपवित्र वस्तु का पवित्र वस्तु पर प्रभाव पड़ना, 2. छुआछूत का भेद बरतना।

छोत छोलणा–1. घाव ताज़ा करना, 2. मर्म पर चोट करना।

छोलिया-सा मुँह–सुंदर और कोमल मुख।

छोह आप्पे नैं खा–क्रोध आत्मघाती है।

छोह्री का खाणा–पाप की कमाई खाना।

छोह्री की जात–गरीब धन।

छोह्री मरै भागवान की–संभावित खर्च टलना।

छोह्रे अर मींह रोज-रोज नाँ हुया करैं–हर दिन प्रसन्नता का नहीं होता।

छ्यावा राखणा–1. रक्षा करना।

छ्योंक लाणा–बात को बीच में काट कर अपनी चलाना।

छ्योर चालणा–कीट-पतंगों का बाहुल्य होना।

छ्योर-सा पाड़णा–सैन्य-दल को विदीर्ण करना।

ज

जग हँसाई होणा–लोकनिंदा होना।

जड़ तैं खोणा–समूल नष्ट करना।

जनम-करम का सात्थी–हर समय का सहायक, सुख-दुःख का साथी।

जम-जमाई बराब्बर–दामाद यम-तुल्य कष्टदायी होते हैं।

जमींदार कातिक मैं स्याणाँ हुया करै–समय निकलने पर सावधान होना।

जहर नैं जहर मारै–दुष्ट ही दुष्ट का विनाशक है।

जाग्गू तैं लाग्गू बाध–लग्नशील व्यक्ति चेतन व्यक्ति से श्रेष्ठ है।

जाड़ हुई जिब चणे नाँ, चणे हुये जिब जाड़ नाँ– एक दूसरे के लिए तरसना।

जाण कै माक्खी निगळणा–जान-बूझ कर पाप करना।

जाण बावळा होणा–1. जान-बूझ कर नासमझी का व्यवहार करना, 2. पागल होने का अभिनय करना।

जाणी-बूज्झी डूमणीं, गावै आळ-पताळ–1. परिचित व्यक्ति द्वारा जान-बूझ कर गलत परिचय देना, 2. जान-बूझ कर बेसुरा अलापना।

जात का नाँ गोत का–दूर का संबंध भी न होना।

जात का लेवा–सार्वजनिक रूप से अपमानजनक स्थिति में डालने वाला।

जात कुजात होणा–धर्म भ्रष्ट होना।

जात छोड कै कित जाघा।
नाज छोड कै के खाघा।।–जाति-त्याग और अन्न-त्याग कष्टदायी सिद्ध होता है।

जात तैं गेरणा–जाति-च्युत या बहिष्कृत करना।

जात बिचासणा–जातीय गुण या स्वभाव की परख करना।

जात राखणा–सम्मान या लज्जा रखना।

जात्त्याँ के पाँ दीखणा–कूच करने का समय आना।

जा दीवे घर आपणै तेरी बहुअड़ देक्खै बाट–दीपक को सम्मानपूर्वक विदाई देना, दीप-विसर्जन करना।

जिंजाळ-जाळ मैं फँसणा–भवसागर में फँसना।

जितणी करले ताँग्गा-तुळसी।
उतणी खाज्याँ ढोरा-सुळसी।।–व्यर्थ की कंजूसी से क्या लाभ।

जितणी गोड्डी उतणी डोड्ढी (दे.)–1. हर प्राणी का कोई न कोई निवास स्थान है, 2. हर आदमी अपना अलग निवास बना रहा है, परिवार खंडित होते जा रहे हैं।

जित देक्खै तवा पराँत, उत गावै सारी रात–1. भोजन के लिए सम्मान बेचना, 2. लाभवश झूठी प्रशंसा करना।

जितणा छाणै उतणा गाधळा–ज्यादा छानबीन भी हानिकारक है।

जितणी सोड़ उतणैं पाँ पसारै–आमदनी के अनुसार खर्च करना चाहिए।

जितणे मुँह उतणी बात–मुंडे-मुंडे मतिर्भिन्ना, हर व्यक्ति का मत भिन्न होता है।

जिसका जोरा उसका गोरा–1. शक्ति से राज्य का विस्तार होता है, 2. जिसकी लाठी उसकी भैंस, 3. शक्तिशाली को ही जीने का हक़ है।

जिसका पेट माँ की चूँचियाँ तैं नाँ भर्‌या, उसका बाप की चूँचियाँ तै के भरैगा–असंतुष्ट व्यक्ति जीवन-भर अशांत रहता है।

जिसकी लाट्‌ठी उसकी भैंस–शक्तिशाली व्यक्ति ही वस्तु को हथिया लेता है।

जिसकै काळी, उसकै सदा दिवाळी–जिसके घर में दूध (भैंस) है, वहाँ हर दिन त्योहार है।

जिसकै नाँ पाट्‌टी बिवाई, वो के जाणैं पीर पराई–दुखिया ही दुखिया के कष्ट को समझता है।

जिसनैं खड़्‌या नाँ दीक्खै, उसनैं पड़्‌या के दीक्खै– प्रत्यक्ष की उपेक्षा करने वाले को भला अनुपस्थित की क्या चिंता।

जिसनैं चालणा बाट, उसनैं किसी सुहावै खाट–यात्रा की कल्पना कष्ट-साध्य है।

जिसनैं नाँ देक्खी दिल्ली, वो कुत्ता नाँ बिल्ली–1. जिसने दिल्ली नगरी नहीं देखी उसका जीवन व्यर्थ है, 2. दिल्ली की छवि निराली है।

जिसनैं पाद्‌याँ सर ज्या, वो जंगल-झोड़ क्यूँ जा–मनुष्य परिश्रम से बचता है।

जिसनैं राम दे, छात पाड़ कै दे–भगवान के कृपालु होने के अनेक ढंग हैं।

जिसा करै, उसा भरै–करनी का फल मिलता है।

जिसा कात्तैघा उसा पहरैघा–करना सो भोगना।

जिसी नीत, उसी बरकत–नीयत के अनुसार फल मिलता है।

जींह गाँम नाँ जा, उसकी कोस के गिणै–असंबंधित बात में समय नष्ट करना व्यर्थ है।

जी का जी बैरी–जीव जीवस्य भोजनम्, बड़ी मछली छोटी मछली को निगलती है।

जी का झाड़–भारी बाधा या विघ्न।

जी का झोड़ा होणा–कष्ट के कारण शरीर दुर्बल होना।

जी की कहणा–1. मन का गुब्बार निकालना, 2. मन का भेद बताना।

जी नैं खाड़ा होणा–जान जोखिम में होना।

जीभ का लाड़ा–चटोरा।

जीमती माक्खी निगळणा–जान-बूझ कर गलत बात करना।

ज़ीम्माँ-झूट्ठी करणा–1. स्वल्प भोजन करना, 2. भोजन करना।

जीम्याँ-झूट्ठ्या, मार्या-कूट्या, सब बराब्बर– भोजन और मारपीट को भुला देना चाहिए (इन पर चर्चा से क्या लाभ?)।

जूतियाँ के खोसड़े बणणा–कन्या के लिए वर ढूँढ़ते-ढूँढ़ते तंग आना।

जूतियाँ मैं दाळ बँटणा–आपस में लड़ाई-झगड़ा होना।

जूम (दे:) **कहै मैं बाँद्धी बाळ, खात्ती-खात्ती जाँ कपाळ**–शत्रु को कभी आश्रय न दो।

जेठ जेट्ठी, साढ हेट्ठी।

साम्मण बोई नाँ बोइ॥–अगेती फ़सल बोना लाभकर होता है।

जेवड़ी गेरणा–भूमि का बँटवारा करना।

जेवड़ी जळ ज्या पर बळ नाँ जा–प्रकृति नहीं बदलती।

जेवड़ी बाँटणा–व्यर्थ की लंबी बात छेड़ना।

जै गुणवंता घर रहै, तीन चीज की हाण।

गुण भूल्लै, बिद्द्या घटै, ओर घटावै काण॥–विद्वान् के लिए जन्म-स्थान छोड़ना ही श्रेयस्कर है।

जो की बाड़ लाणा–1. अगत सुधारना, 2. पुण्य कमाना।

जोग्गम-जोग जोड़ी–1. विशिष्ट का विशिष्ट से संबंध होना, 2. वर के अनुकूल वधू मिलना।

जोट्टा मारणा–मनोयोगपूर्वक कुछ समय के लिए काम करना।

जो देक्खै बाप घर, वो करै आप घर–पितृ-गृह के संस्कार के अनुसार श्वसुर-गृह में आचरण होता है।

जो पजाम्माँ सिमवावैगा, वो मूत्तण का राह भी छोड्डैगा–भावी कष्ट का अनुमान करके अग्रिम व्यवस्था करना।

जो बोवैगा, सो काट्टैगा–करना सो भोगना।

जोब्बण के हाड खिंढणा–यौवन व्यर्थ जाना।

ज्यान का गाळा होणा–जान आफ़त में फँसना।

ज्यान की ढेरी करणा–1. आत्म-हत्या करना, 2. अथक् परिश्रम करना।

झ

झंडा खड़्या करणा—1. सामना करना, 2. विरोध-स्वरूप खड़ा होना।

झखंत खेत्ती, रटंत बिद्या—खेती परिश्रम से और विद्या रटने से फलदायी होती है।

झड़ लाणा—1. देरी लगाना, 2. झड़ी लगाना।

झड़ियल मोर—कंगाल, निर्धन।

झळ ऊठणा—1. लालसा या कामना होना, 2. क्रोधित होना।

झाड़-झाड़ बैरी होणा—व्यापक शत्रुता होना, भारी विरोध होना।

झाड़ मैं पाँ फाहणा—आपत्ति मोल लेना।

झाड़ाँ जाणा—शौच के लिए जाना।

झाड़ू मारणा—अपमान करना।

झाब-झबोल्ली करणा—घरेलू काम-धंधा करना।

झाल ऊठणा—मन उमंगित होना।

झाल डाटणा—मन को समझा कर वश में रखना।

झावा-सा मुँह—कुरूप मुख।

झूँझ मेटणा—इच्छा-पूर्ति करना।

झूट्ठी घवाई भरै, अर लटक्या-लटक्या फिरै—झूठी गवाही विपत्ति का कारण बनती है।

झूठ कै पाँ नाँ होत्ते—असत्य भाषण अधिक समय तक नहीं टिक सकता।

झेरे मैं पड़णा—आफ़त में फँसना।

झोक डाटणा—मन के आवेग को रोकना।

झोट्टी खो:लणा—भारी हानि पहुँचाना।

झोट्टे आळी गस काढणा—पुरानी शत्रुता निकालना।

झोट्टे लड़ैं झाड़ाँ का खो—दो सबलों के झगड़े में निर्बलों की हानि।

झोळ-भोळा होणा—उषाकाल होना।

झोळी खो:लणा—मुक्तहस्त से दान देना।

झोल्ली देणा—संकेत से निमंत्रण देना।

ट

टंच (दे.) **होणा**—1. सजधज कर तैयार होना, 2. भरपेट भोजन करना।

टका-सा जुबाब देणा—स्पष्ट या नकारात्मक उत्तर देना।

टका-सी जान जाणा—प्राण-हानि होना।

टके की हाँड्डी गई, कुत्ते की जात पाई—कम हानि उठा कर दुष्ट की प्रकृति की परीक्षा होना।

टटकारी का भूक्खा होणा—कार्यरत होने के लिए किसी से प्रोत्साहन की आशा रखना।

टाँग तळै कै लीकड़णा—1. दासता स्वीकार करना, 2. हार मानना।

टाँट मुंडा कै लापसी खाणा—कष्ट के बाद सुख की आशा बाँधना या रखना।

टाँड्डा-टेरा ठाणा—कूच करना।

टाट्टी की आड़ मैं सिकार खे:लणा—छिप कर चाल चलना।

टाड्डूँ अक लपकूँ—दुविधा की स्थिति (रँभाना और लपकना एक साथ संभव नहीं होता)।

टाडूडै क्यूँ सै? घुळूँगा। छेरै क्यूँ सै? भाज्जूँगा।।—एक ही समय में वीरता

और डरपोकपन का भाव, डरपोक की गर्वोक्ति।

टिकाणी पै टेकणा–1. उठा कर धर पटकना, 2. साहस तोड़ना।

टींट-बाड़वा खाणा–गरीबी का जीवन बिताना।

टीक्का करणा–1. सम्मान देना, 2. सगाई करना।

टीब्बा ठाणा–ध्वंसित करना।

टीरीखाँ बणणा–दंभी बनना।

टूट्टी कै बूँट्टी लाणा–1. ढाढ़स बँधाना, 2. दोष छिपाना।

टूट्टे मंदिर, गंजे पुजारी।
जिसी सरकार, उसे करमचारी॥–1. दुर्व्यवस्था दुर्व्यवस्था को जन्म देती है, 2. यथा राजा तथा प्रजा।

टूणा करणा–1. जादू-मंत्र करना, 2. अपशकुन करना।

टूणा-टुणमण करणा–1. जादू-टोना करना, 2. दोष निकालना।

टोकसी-सा अंबर दीखणा–भ्रमवश कठिन बात सरल दीखना।

टोक होणा–1. नज़र लगना, 2. कमी या कलंक होना, 3. आन होना।

टोट्टे का नाम गांद्धी–गरीबी को बड़प्पन का रूप देना।

टोट्टे तेरे तीन नाम।
लुच्चा, गुंडा, बेईमान॥–1. गरीबी अभिशाप है, 2. गरीब ही सदा लांछित होता है।

टोरा मारणा–1. झूठी बात पेलना, 2. बाधा उत्पन्न करना।

टोहळक (दे.) **लाणा**–परिचय निकालना।

टोह मैं रहणा–1. प्रतीक्षा में रहना, 2. प्रतिकार लेने की खोज में रहना।

ठ

ठई-ठिकाणा ढूँढणा–गंतव्य की खोज करना।

ठक-ठक चोट सुनार की, एक्कै चोट लुहार की–सहस्र अनुनय-विनय की अपेक्षा एक प्रभावकारी आघात कार्य-सिद्धि करता है।

ठठ रोपणा–भीड़ इकट्ठी करना।

ठप्पा मारणा–1. स्वीकृति प्रदान करना, 2. विशेष चिह्न अंकित करना।

ठसके का माणस–स्वाभिमानी व्यक्ति।

ठाड्ढा मारै रोवण दे नाँ।
खाट खोस ले सोवण दे नाँ॥–1. बलवान व्यक्ति हर तरह के प्रतिबंध लगा सकता है, 2. बलवान के समक्ष निर्बल की कुछ भी नहीं चलती।

ठाड्ढी छात्ती करणा–हिम्मत से काम लेना।

ठाड्ढी पाड़णा–1. हानिकारक सिद्ध होना, 2. हिम्मत बाँधना, 3. तुलना में अधिक बैठना।

ठाड्ढू बोलणा–1. क्रोध से बोलना, 2. ऊँचे स्वर से पुकारना।

ठाड्ढे का सिर पर कै राह–अत्याचारी व्यक्ति स्वेच्छाचारी होता है।

ठाड्ढे की गधी भी लात भारै, बोद्दे का घोड़ा भी लात नाँ ठावै–1. गरीब की मौत है, 2. सबल व्यक्ति का पलड़ा हर प्रकार से भारी रहता है।

ठाढ (दे.) **दिखाणा**–शक्ति का प्रदर्शन करना।

ठाण पै रँजणा–मनचाहा स्थान मिलने के कारण प्रसन्न रहना।

ठाल्याँ का बखत–विश्रांति-काल।

ठाल्ली राँड ठिकाणे ढूँड्ढै।

ठाल्ली डूम काटड़े मूँड्डै।–खाली दिमाग़ शैतान का घर है।

ठाल्ली राम्मैं बैठणा–निठल्ला बैठना।

ठिकाणे सिर लाणा–1. मार डालना, 2. सद्गति करना, 3. यथोचित स्थान पर पहुँचाना।

ठीक करणा–1. द्विरागमन की तिथि निश्चित करना, 2. कार्य आरंभ करने के लिए समय निश्चित करना, 3. पिटाई करना।

ठीया-ठिकाणा–1. अता-पता, 2. आश्रय स्थल।

ठूँठ का ठूँठ–जड़ बुद्धि।

ठूस मारणा–1. अड़चन डालना, 2. अपशब्द करना।

ठेक्कर फोड़ पहलवान–बनावटी पहलवान।

ठेक्का लेणा–उत्तरदायित्व सँभालना।

ठोक-बजा कै लेणा–जाँच-पड़ताल के बाद सौदा खरीदना।

ठोड़ पड़्या पात्थर पुजणा–एक स्थान पर पड़ी वस्तु का कालांतर में महत्त्व बढ़ना।

ठोड़ पड़्या पात्थर भार्या होणा–बहुत समय तक एक स्थान पर रहने के कारण अनावश्यक रूप से महत्त्व बढ़ना।

ठोळा पुजणा–शक्ति के कारण सम्मान मिलना।

ठोस्सा दिखाणा–1. वक्त पर मुकरना, 2. चिढ़ाना, 3. अपमान करना।

ठोस्से की लड़ाई–1. व्यर्थ का विवाद, 2. वाक्-युद्ध।

ड

डंक चभोणा–चुभने वाली बात कहना।

डंगवारा (दे.) चढाणा–अहसान चढ़ाना।

डर कै आग्गै भूत नाँच्चै–भय के सम्मुख सभी झुकते हैं।

डरती हर-हर करती–कष्ट के समय भगवान याद आना।

डरपोक लींड्डी ठोक–डरेगा सो मरेगा।

डरावा खड़्या करणा–बनावटी आतंक फैलाना।

डोळा-सा बुझणा–मरना।

डाँड्डा गडणा–1. स्थान विशेष पर अधिकार होना, 2. वसंत-पंचमी के दिन होलिका-दंड स्थापित होना।

डाक्कळ-सा–गदराया हुआ।

डार पाटणा–विछोह होना।

डिठोरे (दे. डठोरा) तैं रहणा–1. मिथ्याभिमान में रहना, 2. ठाठबाट से जीवन बिताना।

डीक (दे.) बळणा–प्रतिशोध की ज्वाला में जलना।

डीकड़े तोड़णा–1. काम में बाधा उत्पन्न करना, 2. मुर्दे को जलाने के बाद अंतिम यात्रा में सम्मिलित व्यक्तियों द्वारा तिनका तोड़ कर पीछे फेंकना।

डूँग्घा माणस–गंभीर व्यक्तित्व व्यक्ति।

डूँड्डा ठाणा–विनष्ट करना।

डूब्बा-ढेळी होणा–1. अतिवृष्टि के कारण नष्ट-भ्रष्ट होना, 2. ध्वंसित होना।

डूमणी रोवैगी तै सुर मैं रोवैगी–वंश परंपरागत संस्कार नहीं मिटते।

डूम्माँ के घर बड़ाइयाँ मैं जाँ–दंभी का पतन होता है।

डेवा (दे.) **लाणा**–मदद करना।

डोक्के लागणा–1. याद सताना, 2. बार-बार प्यास लगना।

डोक्के लेणा–आनंद लूटना।

डोळा (दे. डोळा[2]) **नाक्का टूटणा**–1. सभी प्रतिबंध छिन्न-भिन्न होना, 2. जल-थल एक होना।

डोल्ली मारणा–(?)–उ. लखमीचंद जिब डोल्ली मारै खुस हों हाळी-पाळी।

ढ

ढँढेस्सा (दे.) **मारणा**–ताँक-झाँक करते फिरना।

ढई (दे.) **लाणा**–सहायता करना।

ढक्कया ढोल उघाड़ना–पोल खोलना।

ढम्माँ-ढेळी होणा–नष्ट-भ्रष्ट होना।

ढळती-फिरती छाँह–समय बदलता रहता है।

ढाई चावळ की खीचड़ी–बहुमत से अलग व्यवहार।

ढाक के तीन पात–अपरिवर्तनशील स्थिति।

ढाक पै चढाणा–झूठी बड़ाई करके षड्यंत्र में फँसाना (ढाक की लकड़ी कमज़ोर होने के कारण शीघ्र टूट जाती है)।

ढाळ कुढाळ होणा–कुमार्गगामी होना।

ढाळ-ढाळ कै कहणा–बातें गढ़ना।

ढिबरी टैट होणा–1. मृत्यु होना, 2. कठिनाई में पड़ना।

ढींक्खर (दे.) **होणा**–सूख कर काँटा होना।

ढीम-सा सिर–जड़ बुद्धि व्यक्ति।

ढील्ली धोत्ती बाणिया, उल्टी मूँछ सुनार। बाँड्डे पैर कुम्हार के, तीन्नूँ अदल पिछाण।।–व्यवसाय का प्रभाव वेश-भूषा और अंगों पर पड़ता है।

ढूँगै धरणा–1. पटकी लगाना, 2. गोद में लेना।

ढूँढ जळा कै मूस्याँ कै आँख करणा–स्वयं हानि उठा कर भी अन्य को हानि पहुँचाना।

ढेठ पड़णा–1. साहस बँधना, 2. उत्साह होना।

ढेठ बाँधणा–साहस बटोरना।

ढेरी होणा–1. शरीर सूख कर काँटा हो जाना, 2. मरना।

ढोल की पोल खुल्हणा–वास्तविकता सामने आना, पोल खुलना।

ढोल-ढमाक्का–उल्लासपूर्ण वातावरण।

ढोल बाजणा–प्रसिद्धि होना।

ढोल बाजता आणा–विजय-पताका घर आना।

त

तंग लाणा–प्रतिबंध लगाना।

तंत की बात–तत्त्व की बात।

तड़के का राह् भूल्या साँझ घराँ आणा–मार्ग-भ्रष्ट व्यक्ति का शीघ्र सुमार्ग पर आना।

तड़के की साँझ होणा–1. अधिक विलंब होना, 2. अधिक समय लगना।

तणे तुड़ाणा–1. भरसक प्रयत्न करना, 2. बंधन-मुक्त होने के लिए छटपटाना।

ततैइये से लड़णा–बात चुभना।

तलवार का घा भरज्या, जीभ का नाँ भरै–वचन की मार तलवार से पैनी होती है।

तळवे रोळणा–खुशामद करना।

तळी के मटके पै चोट मारणा–1. शत्रु को समूल नष्ट करना, 2. मर्म पर चोट करना।

तवा-पराँत करणा–भोजन की व्यवस्था करना।

ताँग्गा-तुळसी करणा–मितव्ययता बरतना।

तागड़ी अर पागड़ी बाँटणा–विवाह आदि के समय छोटे-बड़े सभी व्यक्तियों को कोई उपहार आदि बाँटना।

तागड़ी टूटणा–चरित्र-भ्रष्ट होना।

ताग्गा टूटणा–1. कौमार्य भंग होना, 2. प्रतिज्ञा भंग होना।

ताड़ मैं रहणा–खोज या टोह में रहना।

ताण मारणा/तुड़ाणा–मुक्ति के लिए छटपटाना।

तात्ता नहा, सीळा खा, छ्यावा सोवै।
उसका बैद, पिछोकड़ै रोवै।।–गरम जल से स्नान करने वाला, ठंडा करके खाने वाला, छाया में सोने वाला नीरोग रहता है।

तात्ता-सीळा करणा–जैसे-तैसे भोजन की व्यवस्था करना।

तात्ते पाणियाँ तैं घर नहीं जळते– 1. थोड़े दान से धन नहीं घटता, 2. काग के कोसने से पशु नहीं मरते।

तान बजाणा–1. कार्य-सिद्धि होना, 2. काम साधना।

तान मैं तान मिलाणा–हाँ में हाँ मिलाना।

तान्याँ तैं सारणा–व्यंग्य कसना।

तार कुतार होणा–व्यवस्था डगमगाना।

तार्‌याँ की छाँह आणा-जाणा–परिश्रम से रोज़ी कमाना।

तावळ मैं हावळ होणा–उतावला सो बावला।

तिथ कढवाणा/पड़ाणा–मुहूर्त निकलवाना।

तिरिया हठ–स्त्री हठ, प्रसिद्ध हठ।

तिल्लाँ मैं तेल नाँ होणा–1. सारहीन व्यक्तित्व, 2. द्रवीभूत न होना।

तिवाळा खाणा–1. बेसुध होना, 2. चकराना।

तीत्तर बोलणा–लाभ का संकेत मिलना।

तीत्तर बोल्लै तीन बाणी।
खीर, चूरमा, तात्ता पाणी।।–कथन से अपने स्वार्थ-सिद्धि की बात निकाल लेना।

तीन काणें, दो सुलाँक्खे–मंत्रणा में दो शुभ हैं तीन अशुभ।

तीन काणे पड़णा–सफलता न मिलना।

तीन तिगाड़ा काम बिगाड़ा–शुभ काम में तीन व्यक्ति अशुभ माने जाते हैं।

तीन-तेराह् होणा–1. नष्ट-भ्रष्ट होना, 2. तितर-बितर होना।

तीन दिनाँ तक तिरिया रोवै,
अड़ी-भीड़ मैं भाई।
बार-त्युहाराँ बहणा रोवै,
अंतकाल तक माई।।–माँ पुत्र-शोक को जीवन-भर भुगतती है, अन्य संबंध स्वार्थपूर्ण हैं।

तीन मैं नाँ तेराह् मैं–नगण्य व्यक्ति।

तीया-पाँच्चा करणा–जैसे-तैसे टाल-मटोल करना।

तीसरा तेल्ली—अवांछित व्यक्ति।

तुड़ाइया करणा—1. किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए लालायित होना, 2. बंधन-मुक्त होने के लिए तड़पना।

तुणके तोड़णा—नुक़्ता-चीनी करना।

तू-तू मैंमैं होणा—वाक्-युद्ध होना।

तुरत का लीप्या नाँ दीखणा—वस्तु-स्थिति की अनदेखी करना।

तेरा ताळी—चालाक महिला, स्वच्छंद आचरण वाली महिला।

तेरी बात, कुत्त्या चढी बरात—हर समय सारहीन बात करना।

तेरी-मेरी बणै नाँ, तेरे बिनाँ सरै नाँ—मत-भेद के होते स्वार्थवश साथ रहना।

तेल्ली का बुळध—अल्प बुद्धि, कूपमंडूक।

तेल्ली तैं के धोब्बी घाट।
उसका मोग्गर उसकी पाट।।—1. एक-दूसरे से बढ़-चढ़ कर होना, 2. तुलना में कोई भी किसी से कम न होना।

तै-थै थैया करणा—तू-तड़ाक से बात करना।

तोड़ करणा—अंतिम निर्णय करना।

तोत्तक बैया बणणा—1. तुतला कर बात करना, 2. बच्चों की खीझ निकालना।

तोरण चटकाणा—विधिवत विवाह का अवसर प्राप्त होना।

तोल पाटणा—स्वभाव का भेद ज्ञात होना।

थ

थपकी देणा—1. उत्साहित करना, 2. उत्तेजित करना।

थाण बदलणा—एक धड़े से दूसरे धड़े में जाना।

थाण बैठना—1. अपंग होना, 2. पशु का अनुपयोगी होना।

थारा ए चून, थारा ए पुन—दूसरों का खर्च करवा कर वाहवाही लूटना।

थाळी काढणा—1. दानार्थ भोजन देना, 2. प्रसव-पीड़ा निवारण हेतु चक्रव्यूह तथा अर्जुन के दस नाम थाळी पर अंकित करना।

थाळी बाजणा—1. पुत्र-जन्म होना, 2. हर्षोल्लास होना।

थूक्का-पुजारी होणा—गाली-गलौज होना।

थूक कै चाटणा—1. अपमान सहन करना, 2. शब्द वापिस लेना।

थूक बिलोणा—1. व्यर्थ का विवाद करना, 2. बातचीत में समय नष्ट करना।

थूक लाणा—1. धोखा देना, 2. हानि पहुँचाना।

थू-थू होणा—हर जगह निंदा होना।

थेपड़ी-सी पाथणा—थप्पड़ों से पीटना।

थेल्ली सोंपणा—किसी को अपना सर्वस्व दे देना।

थोक पूरणा—कमी पूरी करना।

थोड़ा खा अंग लगा।
घणा खा कुरड़ बधा।।—अल्प भोजन पचता है तथा अधिक भोजन मल- वृद्धि करता है।

थोत्था चणा बाज्जै घणा—अधजलगगरी छलकत जाए।

थोबड़ा सुजाणा—मुँह फुलाना।

थ्यावस राखणा—1. धीरज धरना, 2. प्रतीक्षा करना।

द

दई-देवते मनाणा—देवी-देवता का स्मरण करना।

दबड़के मारणा—भाग-भाग कर प्रसन्नता पूर्वक कार्य करना।

दमड़ी के तीन—बहुत सस्ते भाव।

दया-धरम हारणा—मानवता से गिरना।

दसकत-गूँट्ठा करवाणा—1. लिखित प्रमाण माँगना, 2. वचन लेना।

दस लक्खण खोणा—धर्म के विरुद्ध आचरण करना, धर्म के दसों लक्षणों की उपेक्षा करना।

दाँतवा खसम—ऐसा पुरुष जिसके मुख से हँसी तथा दुःख का भाव न जाना जा सके (निकले दाँत होने के कारण)।

दाँतवे खसम का नाँ हँसते का बेरा नाँ रोमते का— दे. दाँतवा खसम।

दाँत्ताँ धरणा—हर समय कोसते रहना।

दाहवैं निस्तरणा—निर्लज्ज होना।

दाई तैं पेट ल्हकोणा—जानने वाले से बात या रहस्य छिपाना।

दाई, नाई, बैद, कसाई।

इनका सूत्तक कदे नाँ जाई॥—दाई, नाई, वैद्य और वधिक हर समय अशौच की अवस्था में रहते हैं।

दात्ता तैं सूम भला, जो झट कह दे नाँ—स्पष्टवादिता अच्छा गुण है।

दादका के नानका—गुण, स्वभाव या स्वरूप आनुवंशिक होते हैं (नाना या दादा के वंश के)।

दाद्दा के पतरे मैं, मेरे हिरदे मैं—मन की बात अनुमान से जान लेना।

दाद्दा मोल ले, पोत्ता बरतै—टिकाऊ वस्तु।

दाद्दा लाही चालणा—पुश्तैनी अधिकार चलना।

दाद्दी आक्खर नैं हाड्डै, पोत्ते नैं बेद चाहिए—व्यर्थ का दिखावा।

दाद्दी मरी पोत्ती आई, वै हे तीन के तीन—घर के व्यक्ति के बदले मेहमान का खर्च बढ़ना।

दान की बछिया के दाँत नहीं गिणा करते—दान में जो मिले उसे स्वीकार कर लेना चाहिए।

दाळ-दळिया होणा—भोजन की काम-चलाऊ व्यवस्था होना।

दाळ मैं काळा—1. छिपा रहस्य, 2. षड्यंत्र की आशंका।

दा लागणा—अवसर मिलना।

दिन आणा—सुदिन या शुभ घड़ी आना।

दिन चढणा—गर्भवती होना।

दिन जाणा बात रहणा—समय निकलने पर बात रह जाना।

दिन दीखणा—उज्ज्वल भविष्य की आशा होना।

दिन मैं तारे दिखाणा—मज़ा चखाना।

दिल डरपोक तै ज्यान नैं के जोक्खम—डरपोक दुस्साहस नहीं करता।

दिल्ली के दिलवाल्ली, मुँह चीकणा पेट खाल्ली—ऊपरी दिखावा।

दिल्ली सै जल्लादाँ की, नाँ चाल्लै पहलाद्दाँ—दिल्ली के शासक क्रूर होते हैं यहाँ सज्जन पुरुषों (प्रह्लाद भक्त जैसे) की नहीं चलती, (यह उक्ति यवन शासन-काल की है)।

दिसा बोलणा—कुसमय आना।

दिसा सवार होणा–ग्रह चढ़ना।

दिसोट्टा देणा–वनवास का दंड देना।

दीवे तैं दीवा जोड़णा–पाप कर्म करना।

दुगाड़ा मारणा–वध करना।

दुभाँत बाँचणा–भेदभाव बरतना।

दूँद छूटणा–मोटा होना।

दूखती पै लागणा–चोट पर चोट लगना।

दूण मार कै मरणा–आत्मघात करना।

दूद्धाँ नहाणा पूत्ताँ फळणा–जीवन के सभी भोग भोगना।

दूध आळी को दो लात बी आच्छी–लाभकारी व्यक्ति की सब सहनी पड़ती है।

दूध का धोया/नहाया–1. निर्दोष व्यक्ति, 2. पवित्र।

दूध की नाँ मूँत की–व्यर्थ की वस्तु।

दूध-पूत कोसणा–विनाश की कामना करना।

दूध बाँचणा–गोत-नोत में विवाह-संबंध न करना।

दूध मैंह् की माक्खी–निरादृत व्यक्ति।

दूब जिसे नाळ–मिली-जुली रिश्तेदारी।

दूबळी नैं दो साढ–आफ़त पर आफ़त आना।

दूसरे की पाँत तोड़ै अर पद्दू कुहावै–खुशामद के बदले अपमान मिलना।

देक्खैंघी बाप घर, बरतैंघी आप पर–माता की सीख श्वसुराल में काम आती है।

देख बिराणी चोपड़ी क्यूँ ललचावै जी।
लुक्खा-सूक्खा खाय कै, सीळा पाणी पी॥–पराए ऐश्वर्य से ईर्ष्या व्यर्थ है, वर्तमान से संतुष्ट रहो।

दे दाळ मैं पाणी–1. अधिक मेहमान आने पर भोजन का स्तर गिरा कर काज सारना, 2. जैसे-तैसे कार्य संपन्न करना।

देब्बी मंढ मैं आणा–1. ज़िद छोड़ना, 2. अनुकूल समय आना।

देस्सी माणस–1. भद्रजन, 2. अपने क्षेत्र का व्यक्ति, 3. सरल स्वभाव का व्यक्ति।

देही धरे का डंड–मनुष्य-योनि में कष्ट ही कष्ट है।

देही हरी होणा–चित्त प्रसन्न होना।

दो कोड्डी का आदमी–1. महत्त्वहीन व्यक्ति, 2. थोड़े लाभ के लिए ईमान बेचने वाला।

दो घर बत्ती माँगणा।
पर चाहिये मसाल का चाँदणा॥–दूसरों के भरोसे आनंद लूटना।

दो तै चून के बी बुरे–एक से दो सदा श्रेष्ठ रहते हैं।

दो-दो अर चोपड़ी–अधिक लाभ की आशा रखना।

दो धेल्ले का–1. बहुत सस्ता, 2. असम्मानित व्यक्ति।

दोन्नूँ घराँ दीवे बळणा–हर एक के सुख की कामना करना।

दोलड़े का राछ–टिकाऊ और बहुउपयोगी वस्तु।

दो साम्मण दो भादवे,
दो कातिक दो माह।
सून्ना-चाँद्दी बेच कै,
नाज बिसाहवण जा॥–वर्ष में श्रावण, भादों, कार्तिक और माघ मास की वृद्धि हानिकारक है।

ध

धन-धन करणा–1. प्रशंसनीय कार्य करना, 2. चरितार्थ करना। धन्य करना।

धन धणियाँ का, सोब्भा नगरी की–राहगीर को भी नगर की शोभा का लाभ होता है।

धन्नकधारी–नाच-कूद कर जीवन-यापन करने वाला।

धरती काटणा–1. क्रोध प्रदर्शित करना, 2. अकड़ कर चलना।

धरती चुचकारणा–1. भाग्य सराहना, 2. भूमि-नमन करना।

धरती धोकणा–भूमि पूजना।

धरती भीड़ी होणा–डूब मरने को जगह न मिलना।

धरम की जड़ सदा हरी–1. धर्म कभी नष्ट नहीं होता, 2. पुण्य के बदले पुण्य।

धरम के थाम्भ हालणा–1. घोर अधर्म फैलाना, 2. भूमि काँपना।

धरम-बेल सदा हरी–धर्म अक्षय है।

धरम भिस्टळ करणा–धर्म डिगाना।

धरमाद्दा खोल्हणा–दान-पुण्य करना।

धान सा झाड़णा–शत्रु को सुगमता से पछाड़ना।

धी जमाई ले गए, बहुवाँ लेगे पूत। राग्घो-चेत्तन न्यूँ कहैं, रहे ऊत के ऊत॥–परिवार की वृद्धि होने पर भी बुढ़ापे में मनुष्य अकेला रह जाता है।

धूप-छाँह् नाँ देखणा–दिन-रात कठोर परिश्रम करना।

धूळ मैं टट्टू छोडणा–1. असमय की बात करना, 2. झूठी बात प्रचारित करना।

धूळ मैं लट्ठ लागणा–संयोग से कार्यसिद्धि होना।

धेळ पुजणा–परिवार को सम्मान मिलना।

धेल्ला नाँ ऊठणा–कोई खर्च न होना।

धोरी (दे.) **बणणा**–भारी उत्तरदायित्व लेना।

धोळी धरती करणा–रुपयों की बौछार करना।

धोळ्याँ की लाज राखणा–आयु का सम्मान रखना।

न

नंगी के नहागी के निचौड़ैगी–निर्धनता अभिशाप है।

नंगी-बूच्ची करणा–1. नाक-कान काटना, 2. निर्धनता की स्थिति में रखना।

नई-नई मुसलमाँन्नी अल्ला-अल्ला पुकारै–1. व्यर्थ का दिखावा करना, 2. थोड़े समय का मोह या लगाव।

नई नो दिन, पुराणी सो दिन–पुरानी वस्तु अधिक टिकाऊ होती है।

नई होणा–पशु का गाभिन होना।

नकेल ढील्ली छोडणा–अंकुश ढीला करना।

नकसा झाड़णा–मान-मर्दन करना।

नटूर सूद्धा करणा–बछड़े को निर्बीज करना।

नदीद्दी नैं मिली कटोरी। पाणी पी-पी हुई पदोरी॥–अपात्र को किसी वस्तु के मिलने पर उसका अपने ही अहित के लिए प्रयोग करना।

नाँक का बाल–प्रतिष्ठा की वस्तु।

नाँक-चोट्‌टी काटणा–1. अपमान करना, 2. कड़ा दंड देना।

नाँ का सिर फोड़णा–अनमने भाव से काम आरंभ करना।

नाँग्गी के घर आँग्गी।
छींक्के ऊप्पर टाँग्गी॥–निर्धन द्वारा थोड़े धन का भी प्रदर्शन।

नाँ कुत्ता देक्खै, नाँ भोंक्कै–आँख से दूर, मन से दूर।

नाँ जामती नाँ ढोल बाजते–1. अपने किए के कारण अप्रसिद्धि होना, 2. किए काम का अपयश मिलना।

नाँ बाळे की मा मरै, नाँ बूड्ढे की बीर–बच्चे को माँ की और बूढ़े को पत्नी की बहुत आवश्यकता होती है।

नाइयाँ के ब्याह मैं सब ठाक्कर–सभी का समान दर्जा हो तो काम कौन करेगा।

नाई कै असनाई नाँ–नाई हर रिश्तेदारी में ठहर सकता है।

नाई तैं ना नाई ले।
धोब्बी नाँ धुआई ले॥–एक पेशे के लोग एक दूसरे से पारिश्रमिक नहीं लेते।

नाई-नाई बाळ कितणें, जजमान आग्गै आ ज्याँघे– किया कर्म सामने आना।

नाचणियाँ का बाज्जे पै पाँ ऊट्‌ठ्या करै–वातावरण से ही उत्तेजना मिलती है।

नाच्चण लाग्गी तै घूँग्घट के?–व्यवसाय के अनुसार आचरण।

नाज का बैरी–बहु-भोजी।

नाज कुन्याज करणा–अन्न का अनादर करना, अन्न का दुरुपयोग करना।

नाड़ तळे नैं गोणा–लज्जा अनुभव करना।

नाड़ तुड़ाणा–1. आत्मघाती कार्य करना, 2. सामर्थ्य से अधिक काम करना।

नाड़ नाँ मुड़णा–1. दंभ प्रकट करना, 2. काम करने की स्वीकृति न देना।

नाड़ा टूटणा–चरित्र-भ्रष्ट होना।

नाड़े तैं नाड़ा घसणा–गृहस्थ-जीवन बिताना।

नात्ते (दे.) **ढील्ले पड़णा**–संबंध शिथिल होना।

नाथ की काण करणा–बंधन स्वीकार करना।

नाथ-गळाम्मीं खोल्हणा–स्वच्छंद करना।

नाथ घालणा–कड़ा अंकुश लगाना।

नाथ-सिरोंद्‌धी काटणा–खुली छूट देना।

नान्नी कुवारी मरी, धेवती के सात बान–लांछित कुल द्वारा मिथ्या अभिमान प्रदर्शन।

नान्नी बुरा करै धेवता डंड भरै–किसी का अपराध किसी के गले मढ़ना।

नाम लेवा पाणी देवा–पितृ-तर्पण का अधिकारी, वंश-परंपरा चलाने वाला।

नाम-स्याम का–1. नाम मात्र का, रंच-मात्र, 2. बिना परिश्रम की मज़दूरी।

नाम्माँ उछलणा–अधिक धन होना।

नाळ गडणा–जन्म-सिद्ध अधिकार होना।

निचोड़ करणा–अंतिम निर्णय देना।

निरभाग बाळक त्युहार के दिन रूस्सै–हतभाग्य व्यक्ति समय का लाभ नहीं उठाता।

नींम-सा कड़वा लागणा–मन न मिलना, घृणा होना।

नूँह पर की सफेद्दी–अल्प मात्रा में, नगण्य, (तुल. उड़द पै सफेद्दी)।

नूण, तेल, लाकड़ी का चक्कर–गृहस्थी का दैनिक जीवन-व्यवहार।

नूण मैं गळणा–निर्मम अंत होना।

नूण-राई करणा–नज़र उतारना।

नूण वारा–अल्प मात्रा में।

नेक्की नो कोस, बद्दी सौ कोस–अपकीर्ति प्रसिद्धि से आगे चलती है।

नेग-जोग माँगणा–विवाह आदि रस्मों के समय अपना हक़ माँगना।

नोक्कर आग्गै चाक्कर, चाक्कर आग्गै पेसवाई–प्राप्त आदेश को अपने अधीन व्यक्तियों द्वारा पालन करने के लिए आगे से आगे टहलाना।

नो हाथ की सोड़ मैं सोणा–पूर्ण रूप से चिंता-मुक्त होना।

न्याऊ होणा–किसी निर्दोष व्यक्ति पर बुरी बीतना।

न्याणा (दे.) **लगाणा**–कठोर प्रतिबंध लगाना।

न्योळी बकसणा–1. धन लुटाना, 2. विपुल मात्रा में दान देना।

प

पंच पणमेस्सर–1. पंच में परमेश्वर का वास है, 2. पंचायत का निर्णय सर्वमान्य है।

पंचाँ का कहणा सिर मात्थै, पतराळा अड़ै ए पड़ैगा–विनम्रतापूर्वक अपनी हठ पर अड़े रहना।

पटाकड़ा पड़णा–वज्राघात होना।

पड़ोस्सी देक्ख्याँ कमाइये।
घर देक्याँ खाइये।।–पड़ोसी से कमाने की प्रेरणा लें और घर की परिस्थिति के अनुसार खर्च करें।

पड़ोस्सी नैं मारी बूक्कळ, मेरै ऊट्ठी हूक्कळ–पड़ोसी की समृद्धि को देख कर जलना।

परवा परवाई, राँड गरणाई, आच्छी नाँ हुया करैं–पूर्वी हवा का चलना और विधवा का मस्ताना हानिकारक है।

परोस्सा-सा-परोसणा–भोजन की थाली सजाना।

पळकाँ नूण ठाणा–अपने कुकृत्य को स्वयं भोगना।

पल्ला पसारणा–1. भीख माँगना, 2. अनुनय-विनय करना।

पल्ला फेरणा–1. कुप्रभाव डालना, 2. भोजन आदि को पल्ला फेर कर दूषित करना।

पल्ले तळे का लेण-देण–छिप कर किया गया दुष्कर्म।

पल्लै पड़णा–ज़बरदस्ती गले मढ़ा जाना।

पल्लै बाँधणा–आस्था के साथ ग्रहण करना।

पल्लै रजक नाँ बाँधते, पंछी अर दरवेस–पक्षी और साधु भोजन का संग्रह नहीं करते या भोजन की अग्रिम व्यवस्था की चिंता नहीं करते।

पहला सुख निरोग्घी काया।
दूजा सुख पास हो माया।।–माया से काया प्यारी है।

पहले दिन का आवणा।
दूज्जै दिन का पाहुणा।
तीज्जै दिन बाप का माँधावणा।।–अधिक समय तक ठहरने वाले मेहमान का सम्मान नहीं होता।

पहल्याँ पेट पूज्जा, पाच्छै काम दूज्जा–शरीर-पोषण को प्राथमिकता देना।

पहल्याँ मारै, सो जीत्तै–प्रथम प्रहार करने वाला लाभ में रहता है।

पाँ कै पाँ मारता हाँढणा–निठल्ला घूमना।

पाँख-सी पाटणा–बहुत थकना।

पाँगळी कुतिया माँड की रुखाळी– अपात्र को उत्तरदायित्व सौंपना।

पाँच जणे पणमेस्सर–पंचायत में परमेश्वर का वास है।

पाँच जण्याँ की लाकड़ी, एक जणें का बोझ–बाँट कर काम करने से वह सरल हो जाता है।

पाँच पंच मिल कीज्जे काज।

हार-जीत नाँ आवै लाज॥–सामूहिक कार्य में हार-जीत के सब साझेदार हैं।

पाँच्चूँ घी मैं होणा–लाभ ही लाभ होना।

पाँ जारी होणा–गर्भपात होना।

पाँ-पाँ पाँगळी।

पहल्याँ चूत्तड़, पाच्छै आँगळी॥–खुजली का रोग पहले नितंब से आरंभ होता है फिर उँगली आदि पर फैलता है।

पाँ भार्‌या होणा–गर्भवती होना।

पाँ मारणा–1. रोड़ा अटकाना, 2. पैर से संकेत करना।

पाहूँ पसारणा–1. सुख की साँस लेना, 2. मरना, 3. अधिक लालच करना।

पाँह् मैं कुहाड़ी मारणा–अपनी हानि स्वयं करना।

पाह्याँ तळे की माट्टी–निरादृत वस्तु।

पाँह्याँ तळे की माट्टी लिकंड़णा–अवाक् रह जाना।

पाँह्याँ-पाँह्याँ चालणा–अपने भरोसे पर काम करना।

पाट पार पड़णा–बेड़ा पार लगना।

पाट्टे नैं सीम्मैं नाँ, रूस्से नैं मनावै नाँ, तै काम क्यूक्कर चाल्लै–फटे वस्त्र को तुरंत सी लेने और रूठे को तुरंत मना लेने में भलाई है।

पाड़-तिवाड़े करणा–उल्टे-सीधे काम करते फिरना।

पाड़ा पाटणा–1. कारज सधना, 2. भगदड़ मचना।

पाणी झील मैं मर्‌या करै–दोषी व्यक्ति पकड़ा ही जाता है।

पाणी तैं पतळा के सै?–1. जल-दान महा दान है, 2. निश्छलता।

पाणीपत मैं जाणा–विनष्ट होना (यह कहावत महाराष्ट्र में प्रचलित है, पानीपत की तीसरी लड़ाई में सदाशिवराव भाऊ की सेना नष्ट होने के समाचार से यह कहावत चली, मूल मराठी कहावत है–'पानीपतम मध्य झाले')।

पाणीपत होणा–दे. पाणीपत मैं जाणा।

पाणी पहल्याँ पाळ बाँधणा–भावी ख़तरे से निपटने के लिए अग्रिम व्यवस्था करना।

पाणी-पैंह्डा करणा–घर का छुट-छुट काम करना।

पाणी भरणा–1. दासता स्वीकार करना, 2. सौंदर्य आदि की तुलना में हीन बैठना।

पाणी सा इकस्यार–अपरिवर्तनशील स्वभाव।

पात्थर चीकणें हों तै कुत्ते चाटज्याँ– 1. उपयोगी वस्तु कों सार्वजनिक रूप से खुला नहीं छोड़ना चाहिए, 2. तिलों में तेल न होना, 3. लालची व्यक्ति थोड़े उपयोग वाली वस्तु को भी हथियाना चाहता है।

पात्थर मैं जोख नाँ लागणा–अच्छे-बुरे प्रभाव से प्रभावित न होना।

पान का बीड़ा चाबणा/ठाणा–चुनौती स्वीकारना।

पाप्पी तैं भगवान भी डरै–दुष्ट से सभी डरते हैं।

पाळी की जात कुचाळी–ग्वाले का चलन कुचक्री होता है।

पाल्ला (दे.)-सा झड़णा–चेचक आदि की फुंसियाँ समाप्त होना।

पिंड मैं सो बिरमाँड मैं–आत्मा सो परमात्मा।

पीठ फेर कै लड़णा–बड़े-बूढ़े से परिस्थितिवश लज्जा भाव से लड़ना।

पीत्तळिया लिकड़णा–धन या भंडार समाप्त होना।

पीप्पळ के पात-सा हालणा–1. भयभीत होना, 2. नृत्य आदि के समय सुचारु अंग-संचालन करना।

पीप्पल पात झड़ पड़ै,
हँस्सैं पीपसियाँ।
एक दिन ऐस्सा होयगा,
हम तम एकसियाँ॥–1. बच्चों को भी एक दिन बूढ़ा होना है, 2. बूढ़ों का उपहास नहीं करना चाहिए, 3. मृत्यु अवश्यंभावी है।

पीप्पळ फळणा–1. दान-पुण्य का फल मिलना, सुफल मिलना, 2. वंश-वृद्धि होना।

पीप्पळ बास्सा होणा–प्रेत या भूत बनना।

पीप्पळ मैं पड़चंदा बोलणा–भविष्यवाणी होना।

पीपल सींचणा–1. पुण्य कमाना, 2. अगत सुधारना, 3. पितृ-तर्पण करना।

पीरी चालणा–1. आदेश चलना, 2. स्वामित्व चलना।

पुआड़ा रोपणा–झंझट खड़ा करना।

पुआड़े पोणा–विघ्न का बीज बोना।

पुराणा घाघ–1. अनुभवी व्यक्ति, 2. कुटिल व्यक्ति।

पूँच्छड़ पाड़णा–हानि पहुँचाना।

पूछड़ा ठा कै भाजणा–बिना बुलाए उत्सुकता से जाना।

पूड़ा नाँ पापड़ी।

पटाक तैं बहू आ पड़ी॥–1. बिना खर्च का विवाह, 2. सरलता से काम सधना।

पूत के पाँ पालणै पिछणैं–होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

पेच भिड़ाणा–दाँव-पेंच खेलना।

पेट-खड्डा आँटणा–क्षुधा मिटाना।

पेट पाड़ कै दिखाणा–अंतर्मन प्रकट करना।

पेट पै लात मारणा–रोज़ी छीनना।

पेट मैं डाड्ढी होणा–1. अवस्था से अधिक समझदारी होना, 2. कपट होना।

पेट मैं पाणी नाँ पचणा–गुप्त-भेद न छिपा पाना।

पेट मैं मुक्का मार कै बैठणा–विवशता के कारण मन मसोसना।

पेट्टा भरणा–1. अभाव-पूर्ति करना, 2. तसल्ली या सांत्वना देना, 3. भरण पोषण करना।

पैसा गाँठ का, बिद्द्या कंठ की–गाँठ की पूँजी और कंठाग्र विद्या फलदायी होती है।

पैसा पास का, हथियार हाथ का–पास में पैसा और हाथ में हथियार अवसर पड़ने पर काम आते हैं।

पोट्टी नाँ होणा–सामर्थ्य न होना।

पोतड़ूयाँ तैं जाणणा–1. बचपन से जानना, 2. नस-नस तक समझना।

पोन चाल्लै उत्तरा। नाज खा कूतरा॥–उत्तर की पवन अन्नवर्धक होती है।

पोह (दे.) मैं पीणा–सफलता मिलना।

पोह मैं सीह के बी कान हल्लैं–पौष महीना अधिक सरदी का है।

पौड़ (दे.) पाटणा–1. भगदड़ मचना, 2. घुड़सवार सेना में भगदड़ पड़ना।

(पौड़–घोड़ों की टाप की ध्वनि)

पौड़ (दे.) सा पाटणा–1. भगदड़ मचना, 2. भीड़ का छिन्न-भिन्न होना।

फ

फंधे मैं फाहणा–1. पाशबद्ध करना, 2. प्रेम-पाश में डालना।

फकीरी मोज–अमीरी-गरीबी में भेद न समझना।

फळ फळणा–पुण्य फलना।

फळी बी नाँ फोड़णा–निठल्ला बैठना।

फाग्गण की रात चाँदणी, भादवे की काळी–दो तथ्यों में स्पष्ट अंतर भासित होना।

फाप्फड़ मचाणा–पाखंड रचना।

फारसी काटणा–1. समझ में न आने वाली बात कहना, 2. मातृबोली से इतर भाषा में बोलना।

फिरते जी पै मारणा–मर्म पर चोट करना।

फूट्टी कोड्डी नाँ होणा–खाली हाथ होना।

फूल-से झड़णा–मधुर या मोहक वचन बोलना।

फूस मैं आग गेरणा–1. लड़ाई भड़काना, 2. उत्तेजित करना।

फूहड़ चाल्लै नो घर हाल्लैं–फूहड़ द्वारा सभी कुप्रभावित होते हैं।

फेट मैं आणा–1. जादू-टोने के प्रभाव में आना, 2. प्रेमपाश में आबद्ध होना।

फेरे फेरणा–पुत्री का विवाह करना।

फेर्याँ का गुणहगार–विवाहित व्यक्ति, वचन वद्धता।

फैस्सन का दिवाळा पीटणा–फ़ैशन या चलन का पूरा अनुकरण न कर सकना।

फोज मैं डंकारा, कहाणी मैं हुंकारा–युद्ध में ढोल तथा कहानी में हुँकारे का अपना महत्त्व है।

फोज लड़ै, सरदार का नाम–परिश्रम का श्रेय बड़ों को मिलता है।

फोल्ली-फोल्ली चुगणा–बिना परिश्रम के खाना।

फोहे चढाणा–झूठी बड़ाई करना।

ब

बँधी बुहारी लाख की।
खुल्ल्याँ पाच्छै खाक की॥–एकता में बल है।

बँधी मूट्ठी लाख की।
खोल्ल्याँ पाच्छै खाख की॥–रहस्य का भेद खुलने से वह महत्वहीन हो जाता है।

बकर कसाई बणणा–निर्दयी होना।

बकरी दूध दे, पर मींग्गण गेर कै दे–अनमने भाव से काम करना।

बकरी नैं छोड्ड्या आक।
ऊँट नैं छोड्ड्या ढाक॥–1. बकरी और ऊँट सभी वनस्पति खाते हैं किंतु क्रमशः आक और ढाक नहीं खाते, 2. पशु भी

खाद्य-अखाद्य में भेद बरतते हैं।

बखत चाल्या जा पर बात नाँ जा–कटु वचन समय बीतने पर भी नहीं भूले जाते।

बखत-बखत का मोल–समय प्रबल है।

बखत बिचारणा/बिचासणा–आगे-पीछे की सोचना।

बखत बही नाँ धरती,
पसर चराई नाँ साँझ।
अवाणी बिद्दया नाँ लई,
तीन्नू बिगड़ैं काम॥–समय पर काम न होने से बाद में पछताना पड़ता है।

बखिया उधेड़णा–1. बुरी तरह पिटाई करना, 2. रहस्य खोलना।

बचना-बचनी बाळक पराए होणा– वचन लिखित प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

बचाया सो कमाया–बचत ही वास्तविक कमाई है।

बछिया छोट्टी हत्या मोट्टी–छोटे अपराध का बड़ा दंड।

बटेऊ-सा जिमाणा–तसल्ली से श्रेष्ठ भोजन कराना।

बटेऊ-सी बाट देखणा–उत्सुकता से प्रतीक्षा करना।

बट्टा लाणा–कलंकित करना।

बट्टे-खात्तै लाणा–सारी पूँजी फूँकना।

बट्टे भेड़ता हाँढणा–लड़ते-झगड़ते फिरना।

बट्टे हाड़णा–बदला लेना।

बड़-पीप्पळ बधणा–दीर्घायु होना।

बड़े डळे पै पहल्याँ चोट पड़्या करै–1. आपतकाल में पहले मुखिया की धर-पकड़ होती है, 2. पहले धनिकों से ही दान लेना शुरू किया जाता है।

बणज करैगा बाणिया, ओर करैंघे रीस–व्यापार के लिए जन्मजात व्यापारिक गुण आवश्यक है।

बणज करै सो बाणिया, चोरी करै सो चोर–व्यक्ति का नाम व्यवसाय के अनुसार पड़ता है जाति के अनुसार नहीं।

बणी मैं मोर नाच्या किसनैं देख्या–शोभा या प्रशंसा आँखों देखी बात की है।

बत्तीसी झाड़णा–1. दाँत तोड़ना, 2. दर्प चूर-चूर करना।

बरसै चैत, नाँ घर नाँ खेत–असमय का कार्य लाभदायक नहीं होता।

बरात्ती तै मा ए जण दे सै–शृंगार से सौंदर्य नहीं बढ़ता, वह जन्मजात है।

बरात्ती-सा सजणा–सज-धज कर रहना।

बळती आग कसेरणा–ख़तरा मोल लेना।

बसकी गा ठाणा–1. पुण्य का कार्य करना, 2. मुसीबत में फँसे आदमी को उबारना।

बसतरहीण सभा का चोर–फटे या मैले वस्त्र पहनने वाले व्यक्ति को सभा में संकोच बना रहता है।

बहती गंगा मैं हाथ धोणा–समय का लाभ उठाना।

बहम की दवाई, लुकमान नैं भी नाँ पाई–वहम की कोई औषधि नहीं।

बहुआँ हाथ चोर मरवाणा–1. अपात्र से कार्य-सिद्धि की आशा रखना, 2. साहसिक कार्य से स्वयं जान बचा कर निर्बल से आशा रखना।

बहू नैं काज्जळ की।
सुसरे नैं भाज्जड़ की॥–1. सभी को अपनी-अपनी पड़ना, 2. एक-दूसरे की सुविधा का ध्यान न रखना।

बाँग्गड़ ठाणा—लड़ाई के लिए तैयार रहना।

बाँग्गर का डाँग्गर—अशिष्ट व्यक्ति।

बाँझ के जाणै जाप्पे की पीड़—दुखी ही दूसरे के दुख को समझ सकता है।

बाण आळे की नाँ बाण जा।,
कुत्ता मूत्तै टाँग ठा।।—स्वभाव नहीं बदलता।

बाँदराँ मैं भेल्ली गेरणा—1. लालच देकर लड़ने के लिए प्रेरित करना, 2. फूट डालना।

बाँद्दर आळी घुरकी—गीदड़-भभकी।

बाँद्दर के हाथ मैं अळगोज्जा देणा—वस्तु का दुरुपयोग कराना।

बाँस तेल मैं भेणा—हथियार बंदी करना।

बाँस्साँ कूदणा/उछळणा—अत्यधिक प्रसन्नता व्यक्त करना।

बाँह पाकड़णा—1. हृदय से स्वीकारना, 2. पत्नी के रूप में स्वीकार करना।

बाज्जा बाजणा—1. प्रसन्नता ही प्रसन्नता होना, 2. गुजर-बसर होना।

बाड़ खेत नैं खाणा—रक्षक द्वारा रक्षितों को हानि पहुँचाना।

बाड़ी का बथुआ—महत्वहीन व्यक्ति या वस्तु।

बाण बाँटणा—लंबी कथा कहना।

बात का पेट्टा भरणा—1. संतुष्ट करना, 2. वचन पूरा करना।

बात का बतंगड़ बणाणा—छोटी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना।

बात की बात अर लात की लात—व्यंग्योक्ति।

बात्ते भरणा—1. बच्चे द्वारा अस्पष्ट बोलना आरंभ करना, 2. हुँकारा भरना।

बाप दाद्दा नाँ चाब्या पान।
साँस्सा करत्याँ त्यागगे पराण।।—1. कंजूसी या चिंता में उमर गुजारना, 2. जीवन पर्यंत लालसा पूरी न होना।

बाप-बेट्टे की सभा—मर्यादित व्यवहार।

बारा दूणी उजाड़—भयंकर जंगल, निर्जन स्थान।

बारा बरस मैं कुरड़ी के बी दिन बाहवड़्या करैं—हतभाग्य के भी सुदिन आते हैं।

बारा मूट्ठी का बदमाँस—कुख्यात व्यक्ति।

बावन तोळे, पाव रत्ती—1. शुद्ध, 2. खरा व्यवहार।

बावन हाथ का—दुर्बुद्धि व्यक्ति।

बावळे गाँम मैं ऊँट आणा—रही-सही कसर निकलना।

बासुक (दे.) नाथणा—असाधारण काम करना।

बास्सी कढ़ी का उफाण—क्षणिक आवेश।

बाह तै कर्‌या नाँ खेत।
नाज के होगा, होगा रेत।।—परिश्रम के बिना खेती कैसी?

बाहमण-नाई हारणा—जोड़ी का वर न मिलना।

बाहमण हो कै आँट्टै झोड़,
बाणियाँ हो कै करै मरोड़।
अफसर हो कै ले ले कोड़,
इन सबका आया समझो ओड़।।—ब्राह्मण द्वारा अधर्म कार्य, व्यापारी की अकड़, अफ़सर का रिश्वत लेना इनके विनाश का कारण बनते हैं।

बिंधग्या जो मोत्ती, रह ग्या सो पात्थर—नज़र चढ़े का मूल्य है।

बिगड़ी का राम हिमाँत्ती—भगवान बिगड़े काम सुधारता है।

बिज्जू (दे.) की ढाळाँ लखाणा—घूर कर देखना।

बिटोड़ा-सा थापणा–पिटाई करना।

बिटोड़े मैं तै गोस्से ए लिकड़्या करैं–बुरे से अच्छाई की आशा रखना व्यर्थ है।

बिन झोली का फकीर–श्वान-वृत्ति।

बिन माँग्या मोत्ती मिलैं, माँग्याँ मिलै नाँ भीख–1. समय प्रबल है, 2. याचना हर समय फलित नहीं होती।

बिना किनारी बाँद्धै पाग।
बिना नूण का राँद्धै साग॥
बिना कंठ का गावै राग।
वो पाग नाँ साग, नाँ राग॥–बिना शऊर के किया गया काम व्यर्थ है।

बिना भूख भोज्जन नहीं चाहे खा देक्खो।
बिना बुलायाँ आद्दर नहीं चाहे जा देक्खो॥–बिना भूख का भोजन और बिना निमंत्रण के आतिथ्य का कोई औचित्य नहीं है।

बिराणा घर, थूक्कण का बी डर–अपना घर अपना है और पराया पराया।

बिराणी राळ चाटणा–1. चाटुकारिता करना, 2. जूठन खाना।

बिल्ली आळा दा–अंतिम और सफल हथियार।

बिल्ली के भाग्गाँ छींक्का टूटणा–संयोगवश कार्य-सिद्धि होना।

बिसर होणा–पराश्रयी होना।

बीजळी का टूक–अनुपम सौंदर्य।

बीर नैं खोवै हाँस्सी, चोर नैं खोवै खाँस्सी–स्त्री की पर-पुरुष के साथ हँसी और चोर की चोरी के समय खाँसी कष्ट का कारण बनती है।

बीर पै हाथ ठाणा–जघन्य अपराध करना।

बीस-बीस्से–निश्चित रूप से।

बुक्की की जात–कंजूस व्यक्ति।

बुगला तै अपणी आई मर्या, तूँ क्यूँ मरी बटेर–दूसरे के प्रेम में अपनी आहुति दे देना।

बुध बाहवणी सुक्कर लामणी–बुधवार को हल की जुताई और शुक्रमार को फ़सल की कटाई श्रेष्ठ है।

बुळध नाँ ब्यावैगा, तै के बूड्ढा बी नाँ होगा–अवस्था के प्रभाव से कोई बच नहीं सकता।

बुळध ब्याणा–1. असाधारणा घटना घटित होना, 2. कंजूस व्यक्ति का कृपालु होना।

बुलध-सा मरखणा–क्रोधी स्वभाव का।

बुस्ता राक्खै आपणा चोराँ गाळी दे–अपनी वस्तुं को सँभाल कर रखें तो वह चोरी क्यों जाए।

बूँबळ्याँ (दे. बूँबळा) **मैं गाहटा** (दे.) **जोड़णा**–व्यर्थ के कार्य में शक्ति नष्ट करना, छाछ बिलोना।

बूँबळ्याँ मैं लठ मारणा–व्यर्थ के कार्य में शक्ति नष्ट करना।

बूड्ढा बुळध सिरोंद्धा बाँध्या।
भरी जिवान्नी न्यूँ एँ हाँड्ढ्या॥–उमर बीतने पर साज-श्रृंगार करना।

बूज्झा सी पाड़णा–हू-बहू सत्य बात बताना।

बेट्टे हुये स्याणें।
दलिद्दर हुये पुराणें॥–1. बच्चे जवान होने पर बड़ों को अपनी बात नहीं थोपनी चाहिए, 2. नई पीढ़ी के साथ दरिद्रता समाप्त होना।

बे लगाम घोड़े की सवारी करणा–दुस्साहस करना।

बैट्ठी गा ठाणा–पाप-कर्म करना, पाप कमाना।

बैठणा तै भाइयाँ का चाहे बैर क्यूँ नाँ हो,
चालणा तै सरड़क का चाहे फेर क्यूँ नाँ हो,
पीवणा तै दूध का चाहे सेर क्यूँ नाँ हो।।–भ्रातृ-प्रेम, सड़क का गमन तथा दुग्ध-पान का अपना ही महत्त्व है।

बैल का आग्गा, धीणू का पाच्छा–भारी अग्रभाग का बैल और भारी पृष्ठ भाग की गाय श्रेष्ठ होती है।

बैल बिसाहवण चाल्या कंत।
बूड्ढे के मत गिणिये दंत।।
लाक्खा लीज्जो लाख जतन कै।
लील्ला लीज्जो किरोड़ खरच कै।।–श्याम और नीलवर्ण बैल क्रमशः श्रेष्ठ होते हैं।

बोलता मरणा–आंतरिक इच्छा शांत होना।

बोल्लै सो कुंदा खोल्है–पहल करने वाले के सिर कार्य की जिम्मावारी मढ़ी जाती है।

बोवै पेड़ बबूळ के आम कड़ै तैं खा–जो बोओगे सो काटोगे।

ब्यवहार अर अहार मैं सरम किसी–व्यवहार और भोजन में संकोच नहीं करें।

ब्याज कै भाड़ै जाणा–1. मुफ़्त में काम करना, 2. बंधुआगीरी करना।

ब्याज, भाड़ा, दिछणा।
बाक्की रह ज्या कुछ नाँ।।–ब्याज, किराया और दक्षिणा समय बीतने के बाद नहीं माँगे जाते अथवा इनके माँगने का कोई औचित्य नहीं रहता।

ब्याह पाच्छै किसी बढार–1. अवसर निकलने पर किया गया कार्य व्यर्थ होता है, 2. समय निकलने के बाद फल की आशा नहीं करनी चाहिए।

ब्याह मैं बीज का लेक्खा माँगणा– असमय की बात करना।

ब्याही दगा दे दे, पर बाही नाँ दे–भली प्रकार जोती भूमि दग़ा नहीं देती, (विवाहिता भले ही दे दे)।

भ

भगताँ का राम रूखाळा–भगवान ही भक्तों के सहायक हैं।

भठयारण घर तैं पलोत्थण लावैगी, तै के कमावैगी अर के खागी–स्वयं को हानि पहुँचाने वाले को परोपकार का क्या लाभ?

भड़ास (दे.) **काढणा/मेटणा**– मनोकामना पूरी करना।

भरम-बुहारी–भ्रम यदा-कदा लाभदायक होता है।

भरम-भरोट्टा ठाणा–भवजाल में फँसना।

भली करैंघे राम–भगवान में भरोसा रखकर कार्य आरंभ करना।

भली-भली का हिमाँती–केवल सुख के समय का साथी।

भले की पाँत आच्छी, बुरे का सिराहणा किमैं नाँ–सज्जन द्वारा किया गया अपमान सहना दुष्ट द्वारा आदर देने की अपेक्षाकृत हितकर है।

भाँज्जी मारणा–1. व्यंग्य कसना, 2. बाधा उत्पन्न करना।

भाइयाँ का बैर काई पर की लाट्ठी–भाइयों का लड़ाई-झगड़ा क्षणिक है।

भाई दूर पड़ोस्सी नीड़ै–1. पड़ोसी भाई से भी अधिक सहायक है, 2. पड़ोसी को निकट का तथा संबंधी को दूर का समझना।

भाई नैं भेड्ड्या मन्नैं लूगड़ी (दे.)–घिनौना और स्वार्थपूर्ण व्यवहार।

भाऊ का माळ लुटाऊ–अंधा-धुंध लूट (यह कहावत सदाशिवरात भाऊ के पानीपत के तीसरे युद्ध में हारने के समय शुरू हुई, (दे. पाणीपत मैं जाणा)।

भाग का बली–भाग्य का सिकंदर।

भाज-ल्यूज माचणा–1. भगदड़ मचना, 2. सबको अपनी-अपनी पड़ना।

भाज्जूँ कै लाज्जूँ–दुविधापूर्ण स्थिति।

भाट गाणा–लोक-प्रसिद्धि मिलना।

भाड़ फोड़णा–1. रहस्य-उद्घाटन करना, 2. असाधारणा कार्य करना।

भाड़ भूनणा–व्यर्थ में जीवन बिताना।

भाड़-सा भुनणा–1. महँगाई के कारण अधिक खर्च होना, 2. अधिक गर्मी पड़ना।

भाड़े का टट्टू–1. बिना सिद्धांत का व्यक्ति, 2. पैसा लेकर कोई भी सिद्धांतहीन काम करने वाला।

भाब्भी नैं बेट्टा, मन्नैं लाड्डू–दोनों घर की खैर मनाना।

भाऱ्या पाच्छा होणा–भारी पहुँच होना।

भिन्न की भिन्न मारणा–सत्य भविष्यवाणी करना।

भिरड़-सी लड़णा–बात चुभना।

भिरड़ाँ के छत्ते मैं हाथ देणा–जान-बूझ कर आपत्ति मोल लेना।

भींत कै बी कान हूँ सैं–1. हर बात को हर समय कोई न कोई देखता या सुनता है, 2. हर जगह चुगलखोर हैं।

भींत मैं आळा, घर मैं साळा।
खेत मैं जाड़ा, करैंघे एक दिन घाळा॥–दीवार में झरोखा, घर में साले का निवास, खेत में दूर्वा एक न एक दिन कष्ट का कारण बनते हैं।

भुरली (दे.) **रोळणा**–1. व्यर्थ का परिश्रम करना, 2. छाछ बिलोना।

भूँड अंधेरा छ्याणा–1. गहन तमस् छाना, 2. अन्याय का राज होना।

भूख नैं जात नाँ। नींद नैं खाट नाँ॥–मरता क्या न करता।

भूगड़ा सी बहू–सुंदर-श्वेत वर्ण वाली वधु।

भूगड़ा सी रात–चाँदनी रात।

भूत काढणा/भजाणा–भय दूर करना।

भूत्ताँ बास्सा होणा–स्थान का निर्जन होना।

भूब्भळ मैं टीकड़ा दाबणा–जल्दी में होना।

भूल गए तान मान, भूल गए जकड़ी।
तीन चीज याद रही, नूण तेल लकड़ी॥–1. गृहस्थ में भ्रमित होना, 2. आई-बाई भूलना।

भेड़ की लात गोड्डे तैं तळै-तळै–प्रभावहीन शत्रु।

भेड़ के जाणैं बिंदोळ्याँ का भा–व्यवसाय से संबंधित व्यक्ति या भोक्ता ही वस्तु का महत्त्व समझता है।

भेड के/गधे के सिर तैं सींग की तराँ जाणा–सदा-सदा के लिए लुप्त होना।

भेड भिड़ाणा–व्यर्थ का झगड़ा कराना।

भैंस उसका गोरा। गोरा जिसका जोरा॥–शक्तिशाली ही शासन करता है।

भैंस का बुळध के लाग्या–बेमेल संबंध।

भैंस का सिर–जड़ मूर्ख।

भैंस नैं देख कै काटड़ा रींक्या ए करै–अपनत्व का भाव जागना।

भैंस ले ताक्खी।

चूल्हा छोड्डै नाँ चाक्की।।–सफ़ेद डोरे की आँख वाली भैंस हानिकारक होती है।

भैंस्स्याँ मैंह का काटड़ा–महत्त्वहीन व्यक्ति।

भै का भूत चढणा–अत्यंत आतंकित होना।

भैरु का भोप्पा बणणा–धार्मिक कथागायन के सहारे जीवन बिताना।

भों पड़ी पाई, गोद मैं ठाई, छात्ती कै लाई–कन्या-जन्म के समय पहले उदासीनता होती है और फिर ममता का भाव जाग्रत होता है।

म

मंगसिर जाड्डा ढंगसिर।

पोह जाड्डे का छोह।

माह जाड्डे नैं खा।।–मार्गशीर्ष में जाड़ा होश सँभालने लगता है, पौष में यौवन पर और माघ में बूढ़ा होने लगता है।

मँडेर पै काग बोलणा–अतिथि के आने का संकेत मिलना।

मठ मरणा/होणा–काम बिगड़ना।

मत कह बात पराई।

अपणै आग्गै आई।।–पराए दुर्गुणों पर चर्चा न करें, ऐसा न हो कि वे तुम्हारे अंदर भी आ जाएँ।

मत मारणा/फेरणा/हड़णा–बुद्धि फेरना।

मथरा तैं काँस्सी न्यारी–हर तीर्थ-स्थल का अपना-अपना महत्त्व है।

मनकसूत्तर राखणा–भेद को अपने तक छिपाए रखना।

मन का चोर–मन का पाप।

मन के लाड्डू छोट्टे क्यूँ?

छोट्टे बी तै फीक्के क्यूँ?–कल्पना का आनंद लेना, कल्पना में सुख का संसार बसाना।

मन के लाड्डू फोड़णा–मन ही मन कार्य-सिद्धि की कल्पना का आनंद लेना।

मन के हार्याँ हार सै, मन के जीत्याँ जीत–1. पराजय पहले मन में उत्पन्न होती है, 2. दृढ़-संकल्पी को सफलता मिलती है अन्य को नहीं।

मन चंगा तै कठोत्ती मैं गंगा–पवित्र हृदय व्यक्ति के लिए घर ही तीर्थ स्थान है।

मन चंचल गोड्डे गार मैं–अशक्तता की स्थिति में बड़ी आशा बाँधना।

मनचरा बणणा–हर भोजन में मीनमेख निकालना।

मन मन मैं लाड्डू फूटणा–मन ही मन आनंद लूटना।

मरता मरै जीमता जीवै–किसी से किसी प्रकार का सरोकार न रखना।

मरते कै दो लात बत्ती लाग्या करैं–मरते को सभी मारते हैं।

मरद नैं मारै खटाई।

बीर नैं मारै मिठाई।।–पुरुष के लिए खटाई और स्त्री के लिए मिठाई का सेवन हानिकारक है।

मरी-पड़ी का राम हिमाँती–विपत्ति में भगवान ही सहायक है।

मरी राँड खटाई बिना–अभाव की स्थिति में भोग की लालसा।

मरोड़ काढणा–अकड़ निकालना जैसे–तड़के जाँगी बाप कै मेरा भाई आ रह्या सै। काड्ढूँ तेरी मरोड़ नैं तूँ घणा मस्ता रूह्या सै।।

मर्द जबान का, बुळध काँध (दे.) **का**–पुरुष का महत्त्व वचन-पालन में और बैल का शक्तिशाली स्कंध में है।

मसालची का तेळ जळै, अर कंजूस का दिल बळै–व्यर्थ की ईर्ष्या करना।

माँट्टी कूटणा/पीटणा–1. अपमानित करना, 2. बदनाम करना।

माँट्टी खाणा–मांस-भक्षण करना।

माँट्टी गेरणा–1. लज्जित करना, 2. मुर्दे को गाड़ना।

माँट्टी का बाट, जिब तोल्लै घाट्टै घाट–कभी भी खरा न उतरने वाला।

माँट्टी सा डळा पिंघळणा–जीवन क्षणभंगुर है।

माँढे तळे की नाण (दे.)–अत्यंत व्यस्त महिला।

माँ पै पूत पिता पै घोड़ा।

घणा नहीं तै थोड़ा-थोड़ा।।–पुत्र का स्वभाव माँ पर तथा घोड़े का स्वभाव स्वामी के अनुकूल किंचित रूप में अवश्य होता है।

माँ हाँड्ढै चोत्थी-चोत्थी नैं, पूत बिटोड़े बकसै–1. कंजूसी से एकत्रित किए धन को संतान द्वारा व्यर्थ में खर्च करना, 2. अन्य के परिश्रम का मूल्य नहीं समझना।

माड़ा माणस माड़ी सोच्चै–नीच नीचता की बात सोचता है।

मान-गून करणा–यथोचित नेग आदि देकर सम्मान करना।

मान डबोणा–1. मन विचलित करना, 2. धर्म-भ्रष्ट करना।

मान-तान करणा–विवाह आदि उत्सवों पर संबंधियों को भेंट आदि देना, सम्मान प्रदर्शित करना।

मानिये नाँ गूनिये, मैं लाड्डो की भूवा–असंबंधित या अवांछित रिश्तेदारी जितलाना।

माया तेरे तीन नाँम।

परसु, परसा, परसराम।।–धनी हो जाने पर निर्धन भी सम्मान का पात्र बन जाता है।

मार्‌या-कूट्ट्या, जीम्याँ-झूट्ठ्या सब बराब्बर– मारपीट और भोजन के बाद उन्हें भुलाना ही हितकर है, हुआ सो हुआ।

माळ पराया सै तै के, पेट तै अपणा ए सै–लूट के समय भी अपना हित-अहित सोच लेना चाहिए।

माह कांबळ बाह–माघ मास में कंबल मात्र ओढ़ने की सरदी रह जाती है।

माह जाड्डा नाँ पोह जाड्डा नाँ।

जाड्डा सीळी बाळ का।।–सरदी का प्रभाव महीने विशेष से न होकर पवन के प्रवाह से अधिक है।

मिठ बोल्ला, छात्ती छोल्ला–1. मीठा बोलने वाला घातक सिद्ध हो सकता है, 2. मीठी छुरी।

मिथन मिलणा–स्वभाव-साम्यता होना।

मिरच लड़ावा–झगड़ा कराने में कुशल।

मिरच सी लागणा–बात चुभना।

मींडकी की लात–प्रभावहीन आघात।

मींडकी की लात का पाणी—ताज़ा-तरीन पानी।

मींह जिसी बाट देखणा—उत्सुकता से लालायित होकर प्रतीक्षा करना।

मुँह आई कहणा—जबान पर क़ाबू न रहना।

मुँह का थूक बिलोणा—व्यर्थ की बात बार-बार दोहराना।

मुँहकाण करणा/जाणा—मृत्यु पर शोक प्रकट करने जाना।

मुँह काळा करणा—1. चरित्र भ्रष्ट होना, 2. कलंकित करना।

मुँह खा, आँख लजा—घूसख़ोर सदा लज्जित रहता है, प्रलोभन से स्वाभिमान नष्ट होता है।

मुँह देखमाँ टीक्का करणा—सामाजिक स्तर के अनुसार मान-सम्मान देना या करना।

मुँह देखमाँ थप्पड़ मारणा—व्यक्तित्व के अनुसार व्यवहार करना।

मुँह धोणा—आस लगाना।

मुँह बाणा—1. बीमारी का बहाना करना, 2. अधिक मूल्य माँगना।

मुँह मारता फिरणा—1. लड़ाई-झगड़ा करते फिरना, 2. इधर-उधर खाते फिरना।

मुँह मीट्ठी पेट झूट्ठी—प्रकट और प्रच्छन्न व्यवहार में अन्तर, (तुल. मिठ बोल्ला छात्ती छोल्ला)।

मुर्गी नैं तकवे का दाग भोत—दुर्बल के लिए थोड़ी हानि असहनीय है।

मूँज-बगड़ का सोद्दा अर दरसन देब्बी के—एक पंथ दो काज (देवी-दर्शन से लौटते समय मूँज आदि भी काट लाना)।

मूँट्ठी भरणा—पद-सेवा करना।

मूँठियाँ माँस चढणा—मोटापा छाना।

मूँड मारणा—1. गले मढ़ना, 2. लड़ना-झगड़ना।

मूँड्डी रगड़णा—मान मर्दित करना।

मूँद्धै घड़ै पाणी भरणा—1. दासता स्वीकार करना, 2. असाधारण कार्य करना।

मूँस्से कैस्सी खाल—क्षीण-काय व्यक्ति।

मूँस्से नैं पागी हळदी की गाँठ, पंसारी बण बैठ्या—थोड़ा पाकर बौराना।

मूँस्याँ के जाए तै बिल खोद्दैंघे—वंश परंपरा का प्रभाव अक्षुण्ण है।

मूरख का गुर सोट्टा—मूर्ख प्रताड़ना से मानता है।

मूल तैं ब्याज प्यारा—पौत्र पुत्र से अधिक प्यारा लगता है।

मूळी-गाज्जर समझणा—व्यक्ति-समूह को महत्वहीन समझना।

मूँस्सळ का मींह मैं के भीज्जै—1. मोटी चमड़ी का आदमी, 2. अप्रभावित व्यक्तित्व, 3. किसी सबल व्यक्ति का बिगड़ न सकना।

मेर-तेर बरतणा—भेद-भाव बरतना।

मेरी-तेरी कहणा—इधर की बात उधर लगाना, चुगली करना।

मेरे-तेरे करणा—फूट डालना।

मेळ-माँढा बरतणा—विवाह-शादी में आमंत्रित करना।

मेळा मेळ का, धक्का पेल का, पइसे-धेल का—मेला देखने का आनंद तभी है जब मित्र साथ हों, शरीर में शक्ति हो और जेब पैसों से भरी हो।

मेवा लूटणा—हर प्रकार के आनंद लेना।

मैं आई तेरै। तूँ चढ बैट्ठी मँडेरै।।—घर आए मेहमान की उपेक्षा करना।

मैं जाणूँ मेरा राम जाणै–1. कोई रहस्य न छिपाना, 2. ईश्वर-साक्षी देकर बात कहना।

मैंधी रचाणा–उल्लसित होना।

मैं में आणा–अहंकारी होना।

मैं में रहणा–अकड़ में रहना।

मैंहनत कर्‌याँ दलिद्दर नाँस्सै–परिश्रम से निर्धनता दूर होती है।

मैड़ा लाणा–ज़िद पर उतारू होना।

मोंठ (दे.) **उजाड़णा**–हानि पहुँचाना।

मोंठ-मोंठ सब एक–समता का व्यवहार।

मोट्टा-झोट्टा खागा–सादा जीवन बिताना।

मोट्टी खाल का माणस–1. अप्रभावित व्यक्तित्व, 2. जड़ बुद्धि।

मोड्ड्याँ कैस्सा डेरा–उजड़ा स्थान या घर।

मोत, मुकदमाँ, मंदगी,
ममता और मकान।
ये पाँच्चों मम्में बुरे,
पत राक्खै भगवान॥–मृत्यु, मुक़दमा, व्यापार में मंदी, प्रीति और मकान बनाने के खर्च में भगवान ही लाज रखता है।

मोरणी-सी चाल–मनमोहक चाल।

मोर-सा झड़णा–निर्धन होना, पैसा समाप्त होना।

मोर-सा नाचणा–भयभीत होना।

मोरी की ईंट चुबारे पै–अपात्र को उच्च पद मिलने के कारण घमंड होना।

मोरी मैं सिर देणा–आपत्ति में फँसना।

मोल के भा–बहुत महँगे भाव।

मोह्‌रा बणणा–1. अगुआ बनना, 2. अन्य को साधन बना कर अपना काम साधना।

मोह्‌रे मैं बँधणा–पाशबद्ध होना।

म्हाळ छिड़णा–1. आपत्ति खड़ी होना, 2. स्थिति बेक़ाबू होना।

म्हाळ पाच्छै पड़णा–भयंकर आपत्ति गळे पड़ना।

म्हैंस का सिर–जड़ मूर्ख।

य

याणा-स्याणा आदमी–1. प्रौढ़, वयस्क, 2. समझदार व्यक्ति, 3. प्रेत-विद्या जानने वाला।

यार की नाँ बास की–अपरिचित महिला।

यारचण बणाणा–1. अवैध संबंध स्थापित करना, 2. मित्रता गाँठना।

यार पटाणा–1. फुसलाना, 2. मित्रता गाँठना।

यारी अरसा राँज्झी निभाणा–मित्रता का निर्वाह करना।

यारी के घर दूर–मित्रता निबाहना सरल काम नहीं है।

यारी गाँठणा–मित्रता करना।

यावा करणा–1. चिढ़ाना, 2. लज्जित करना।

याह्‌-वाह्‌ करणा–टाल-मटोल करना।

र

रंग चढणा–1. प्रभावित होना, 2. नशे में होना।

रंड रोवणा रोणा–1. व्यथा सुनाना, 2. चुगली करना।

रंदा मारणा–1. किए कराए पर पानी फेरना, 2. विचार बदलना।

रखपत-रखापत—अपना सम्मान बनाए रखने के लिए दूसरों को सम्मान देना।

रगड़ा मारणा—1. जान-बूझ कर हानि पहुँचाना, 2. झगड़ा निबटाना।

रग पिछाणणा—1. मूल रहस्य समझना, 2. स्वभाव का पता लगाना।

रटंत बिद्द्या, पचंत खेत्ती—विद्या अभ्यास से और खेती परिश्रम से सफल होती है।

रड़क काढणा—पुरानी शत्रुता निकालना।

रड़क मेटणा—कष्ट निवारण करना।

रमता जोग्गी बहता पाणी आच्छ्या रहै सै—चलायमान साधु और बहते पानी में विकार नहीं आता।

रळा मैं होणा—भाग्य में बदा होना।

रह्वाल देखणा—वहन-शक्ति या कार्य-कुशलता की पड़ताल करना।

राँड तैं ऊप्पर गाळ नाँ—1. भयंकर से भयंकर वचन कहना, 2. कथन में अति करना।

राँड, साँड, सीड्ढी, संन्यास्सी।
इनतैं बचकै सेहये काँस्सी।।—स्थानीय बाधाओं से बचकर ही तपस्या संभव है (काशी में विधवा, साँड और सीढ़ी की ठोकरों से बचना कठिन है)।

राँध काटणा—1. बेग़ार टालना, 2. मुसीबत टालना, 3. असाधारण कार्य करना।

राख ठिकाणै लाणा—विधि-विधान से दाह-संस्कार संबंधी रस्म पूरी करना।

राछ-पोछ खूँट्ठे पड़णा—1. एक न चलना, 2. सभी हथियार बेकार होना।

राज राजणा—1. राज-सुख भोगना, 2. सुराज्य आना।

राज्जा राज अर परजा सुखी—1. सभी ओर प्रसन्नता ही प्रसन्नता, 2. किसी कार्य का निर्विघ्न समाप्त होना।

राज्जा करण का बखत—1. प्रातःकाल का समय, 2. दान-पुण्य का समय।

राड़ (दे.) **अर सीत नैं कितणा बधा ले**—झगड़े और छाछ को कितना ही बढ़ाया जा सकता है।

राड़ जागणा—शत्रुता ठनना।

राड़ तैं बाड़ भली—आपसी झगड़े से सम्पत्ति हाथ से निकल जाती है और थोड़ी सुरक्षा से वह बच सकती है।

राड़याँ चली जा बाड़याँ रह ज्या—दे. राड़ तैं बाड़ भली।

रात-बिरात होणा—1. विलंब होना, 2. असमय होना।

रात्याँ बोल्लै कागला,
दिन मैं बोल्लै स्याळ।
छोड सखी इस देस नै,
बिपत पड़ैगी हाल।।—रात के समय कौओं का और दिन के समय शृंगाल का बोलना अनिष्ट का द्योतक है।

रान्ना छोडणा—अंकुश न रखना।

राम कै घर देर सै अँधेर नहीं—देर है अंधेर नहीं, अंततोगत्वा न्याय मिलता ही है।

रामजी सिर पै ठाणा—1. अनैतिकता पर उतारू होना, 2. बहुत शोर मचाना।

राम तळे नैं आणा—1. कृपा-दृष्टि होना, 2. अवतार धारण करना, 3. अनिष्ट होना।

राम दीखणा—कोई काम सरल नजर आना।

राम नाँम का—1. नाम मात्र का, 2. भगवान के नाम पर, देवार्पित।

राम नाँम सत होणा—मरना।

राम नाँ स्याम—1. प्रणाम तक न करना, 2. अस्तित्व तक न होना।

राम बुलावा आणा—मृत्यु-काल आना।

राम मनाणा–1. भगवान का धन्यवाद ज्ञापन करना, 2. देवी-देवता स्मरण करना।

रामरमीं देणा–1. विदाई देना, 2. संदेश भेजना।

रामरमीं होणा–1. आपस में बोलचाल का संबंध होना, 2. संक्षिप्त मुलाक़ात होना।

राम रोळा होणा–तान सधना।

राम लागणा–उच्छृंखलता का व्यवहार करना।

राम लीकड़णा–शक्तिहीन होना।

राळ टपकणा–ललचाना।

रास खींचणा–अंकुश कड़ा करना।

रास (दे. रास[1]) **बैठणा**–अनुकूल होना।

रास्सा होणा–जान को जंजाल उत्पन्न होना।

राह-गोंड्डै सिर चालणा–समाज- समर्थित मार्ग अपनाना।

राह बाँधणा–अग्रिम व्यवस्था करना।

राह सिर चालणा–सुमार्ग अपनाना।

राही काढणा–नई प्रथा चलाना।

रीत्ती दोघड़ आग्गै आणा–अपशकुन होना।

रुक्का पड़णा–1. प्रसिद्धि होना, 2. शोर मचाना।

रुत आयाँ फळ हो–हर काम समय आने पर ही होता है।

रूँग्गे का बताऊँ–मुफ़्त की वस्तु।

रूप का फटकारा लागणा–मोहित होना।

रूप की रोवै करम की खा–रूप से भाग्य श्रेष्ठ है।

रेख मैं मेख लागणा–सौभाग्य दुर्भाग्य में बदलना।

रेळ फेरणा–प्रचारित करना।

रेह-रेह माँट्टी करणा–वीरान मिट्टी करना।

रै-रै नाँ खै-खै–हर प्रकार से सुख-शांति, लड़ाई-झगड़े का शमन।

रो कै बूझ ले अर हँस कै उडा दे–भेद लेकर बदनामी करना।

रोट्टी तोड़त्याँ हाँढणा–परिचित स्थानों पर व्यर्थ में घूमते फिरना।

रोट्टी पर का टींट–अस्थायी, अस्थिर या अनिश्चितता की स्थिति।

रोट्टी-बेट्टी का नाँत्ता–विवाह और भोजन का संबंध होना।

रोमता सा जा, अर मर्याँ की खबर ल्यावै–रुआँसे भाव से किए गए कार्य का परिणाम भी अशुभ निकलता है।

रोहतकी सो कोतकी–रोहतक क्षेत्र के लोग स्वभावतः झगड़ालू होते हैं।

ल

लंका मैं आवै सो ए बावन हाथ का–वातावरण का दुष्प्रभाव पड़ता है।

लँगोट कसणा–कटिबद्ध होना।

लँगोट का काच्चा–दुश्चरित्र व्यक्ति।

लँगोट खूँट्टी पै टाँगणा–पहलवानी करना छोड़ना।

लँगोट फेरणा–कुश्ती की चुनौती देना।

लँगोटिया यार–बचपन का मित्र।

लंबरदारी मैं पात्थर पड़णा–सम्मानित व्यक्ति का अपमान होना।

लगाम्मीं काढणा–स्वच्छंद करना।

लठ गाडणा–विचित्र कार्य कर दिखाना।

लठ-सा मारणा–अशिष्ट भाषा का प्रयोग करना।

लड़की नैं खुआवै प्यावै अर तात्ते भात की ढाळ दाब दे–लड़की को लाड़-चाव के साथ-साथ अंकुश में भी रखना चाहिए।

लड़ाई मैं नगाड़ा, कहाणी मैं हुँकारा– 1. युद्ध में नगारे और कहानी सुनने में हुँकारे का महत्त्वपूर्ण स्थान है, 2. उत्तेजित करने या रखने के लिए किसी साधन की आवश्यकता होती है।

लल्लो-चप्पो करणा–खुशामद करना।

लहस-पहस होणा–कार्यरत होना।

लहू पसीन्ना एक करणा–बहुत परिश्रम करना।

लाँड्डा ठावै पूँछड़ी, चलै सताईस कोस–मनमर्जी का आचरण।

लाँड्डा तै टचकारी का भूक्खा था– 1. भाग या बच निकलने के लिए संकेत की प्रतीक्षा करना, 2. काम न करने के लिए बहाने की खोज करना, 3. प्रशंसा की प्रतीक्षा करना।

लाँड्डा लसकणा–बिजली चमकना।

लाग्गै तै तीर नाँ तुक्का–संयोग से सफलता मिलना।

लागदार नाँ होणा–अपने पर दायित्व न लेना।

लाग लागणा–बेगार गले पड़ना।

लाग्गी हळद हुई बळध–विवाह के बाद स्त्री के शरीर में वृद्धि हो जाती है।

लाचारी परबत तैं भारी–असमर्थता अभिशाप है।

लाट बणणा–1. पद का दुरभिमान होना, 2. बड़ा हाक़िम बनना।

लाट्ठी उलाँड सोद्दा–पक्का सौदा।

लाट्ठी उसकी भैंस–शक्तिशाली राज्य करैता है।

लाड्डू से फूटणा–मन आनंदित होना।

लात की लात अर बात की बात–व्यंग्य या व्यंजना में चुभने वाली बात कहना।

लात्ताँ के भूत बात्ताँ नाँ मान्नैं–दुष्ट अनुनय-विनय नहीं मानता।

लापसी का के पकवान–कम महत्त्व की वस्तु को व्यर्थ का महत्व देना।

लाम पै जाणा–रण के लिए जाना।

लाल्ला लीरी का यार।
कदे नाँ उतरै पार।।–बेमेल या असमर्थ व्यक्ति की मित्रता सफल नहीं होती, (यहाँ लाला और लीरी कहानी के दो पात्र हैं)।

लावा-लूतरी करणा–चुगली करते फिरना।

लिलोरणी करणा–चापलूसी करना।

लीकड़ा बी नाँ तोड़णा–अकर्मण्य होकर बैठना।

लीकड़े तोड़णा–1. नुक्ताचीनी करना, 2. कार्य में बाधा उत्पन्न करना।

लीख कहै मैं बाँद्धी बाळ।
खात्ती-खात्ती जाँ कपाळ।।–दुष्ट को कभी भी प्रश्रय नहीं देना चाहिए।

लीत्तर (दे.) **उछाळणा**–टॉस द्वारा सिक्का उछाल कर निर्णय करना।

लीत्तर घुमाणा–बूझा पाड़ना।

लील्ली छतरी आळे की राज्जी होणा–ईश-कृपा होना।

लुगाई कै गुद्दी पाच्छै मत हो सै–स्त्री अपनी बुद्धि का प्रयोग कम करती है।

लुढ़कणी गड़ी–सिद्धांत-रहित व्यक्ति।

लेख मैं मेख मारणा–भाग्य धोना।

लेणा एक नाँ देणा दो–1. तटस्थ रहना, 2. ऋण मुक्त होना।

लोट्टै नूण गाळणा–1. पूरी तरह एक मत होना, 2. गुप्त निर्णय करना।

लोह नैं लोह काट्टै–सजातीय व्यक्ति जाति के लिए घातक होता है।

व

वार-फेर करणा–1. घात लगा कर आक्रमण करना, 2. रुपया-पैसा आदि वार कर दान में देना।

वारे न्यारे होणा–पौह-बारह होना।

वाह लेणा–कार्य-वहन करने की क्षमता का परीक्षण करना।

वाहवाही लूटणा–बड़ाई या यश लूटना।

वो दिन अर आज दिन–लंबा अंतराल।

वो हे लांड्डा तीन का–अपरिवर्तनशील स्थिति।

स

संत चलते भले, नगरी बसती भली–संतों का चलते रहना और बस्ती का एक स्थान पर बसा रहना हितकर है।

सत का सात्थी करतार–भगवान सत्यवादियों का सहायक है।

सत का सात्थी राम हिमाँती–भगवान सत्य का पक्ष लेता है।

सत की रजाई ओढणा–सत्य का आश्रय लेना।

सत के बेड़े पार उतरणा–सत्य-पक्ष की जीत होती है।

सब गुड़ सतरा सेर–1. अच्छे-बुरे में भेद न करना, 2. सबको एक लाठी से हाँकना।

सबर का साँस घूँटणा–मन मारकर रह जाना।

सबर का साँस लेणा–1. तृप्त होना, 2. मन को समझा कर रखना।

समझणियाँ की मर हो सै–समझदार व्यक्ति संवेदनशील स्वभाव के कारण चिंतित रहता है।

समझदार काग गंदगी मैं चोंच मारै–अधिक चतुर व्यक्ति भी हास्य या अपमान का पात्र बनता है।

समय आवणी जाणी–सभी दिन बराबर नहीं होते।

समाई करणा/राखणा–धीरज धरना, सहनशीलता रखना।

समाई का धन मिलणा–सहनशीलता या शांति का लाभ मिलना।

सराहवै मत बिसराह्णा पड़ैगा–1. लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति का भी पतन संभव है, 2. अधिक प्रशंसा गर्व को जन्म देती है।

साँझ पाच्छै वार नाँ, राँड पाच्छै गाळ नाँ–कार्य में अति विलंब तथा कटु वचन का कोई निराकरण नहीं है।

साँट्ठा सठणा–1. काम बनना, काम चलना, 2. सामयिक निर्वाह होना।

साँप नैं के मारै साँप की माँ नैं मारै–मूल कारण को नष्ट करना।

साँप नैं दूध प्याणा–शत्रु पालना या पुष्ट करना।

साख बाँधणा–1. पैठ जमाना, 2. अगत सुधारना।

साच्ची कह दी जिसी आँख मैं आँगळी दे दी–सत्य कटु होता है।

साट्ठी, माट्टी, कापड़े,
सणी, मूँज अर टाट।

ये छैहों कूट्टे भले,
करणा चाहो ठाठ॥–धान, मिट्टी, कपड़ा, सनी, मूँज तथा चने की टाट को कूटने से लाभ होता है।

साड्ढू-साड्ढू का रिस्ता–बेमेल संबंध, भैंस-बैल का रिश्ता।

साड्ढे सत्यानास्सी–सर्वनाश करने वाला।

सात खून माँफ होणा–1. बड़े से बड़ा अपराध भी माफ़ होना, 2. क्षमा-दान देना।

सात घराँ का भाणजा न्योंत्या-न्योंत्या फिरै–कई घरों के बीच का मेहमान भूखा रहता है।

सात्ताँ ताळी–सात भुवनों की ख़बर रखने वाली, चतुर महिला।

साद्धाँ की सधगी।
आद्धी रोट्टी बधगी॥–1. लाज रहना, 2. सामूहिक भोज के समय भंडारा भरपूर रहना या कोर-कसर न रहना, 3. धर्म-कर्म के विश्वासी लोगों की कार्य-सिद्धि होती है।

साम्मण पहली पंचमीं,
जै धड़कै ठाड्ढी बाळ।
तू जाइये कंत मालवा,
मैं जाँगी प्योसाल॥–श्रावण पंचमी को अधिक पवन चलने से अकाल पड़ता है जिससे पति-पत्नी का विछोह हो जाएगा (वह निर्वाह के लिए पिता-गृह जाएगी)।

साम्मण पहली पंचमीं,
बाद्दळ हो नाँ बीज।
बेच्चो गाड्डी-बुळध नैं,
निपजै कुछ नाँ चीज॥–श्रावण-पंचमी को न बादल हों न बिजली चमके तो भारी अकाल के लक्षण हैं।

साम्मण-भादों की धूप मैं, जोग्गी बणज्या जाट–1. सावन-भादों की खेती के समय किसान का रूप कुरूप हो जाता है, 2. कठिन परिश्रम से बच निकलना या व्यवसाय बदलना।

साम्मण मैं चाल्ली पुरी, वाह बी बुरी।
बाहमण नैं ठाई छुरी, वाह बी बुरी॥–श्रावण में पूर्वी हवा चलना, ब्राह्मण का हथियार धारण करना घातक है।

सास आँगळी, बहू पाँगळी।
घर की कूण करैगी धाँधळी॥–यदि घर में किसी न किसी बहाने सब व्यक्ति निष्क्रिय हो जाएँ तो घर का धंधा कौन करेगा।

साह नाँट्टै पर बाह नाँ नाँट्टे–साहूकार भले ही किसान को दगा दे किंतु जोती हुई भूमि उसे लाभ पहुँचाती है।

सिंघणी तै एक्कै जाया करै–एक वीर पुत्र कुल को तार देता है।

सिर कै ताण चालणा–1. पूर्ण समर्पण करना, 2. भय के कारण आदेश का पालन करना।

सिर पै तैं पाणी फिरणा–अति होना, सीमोल्लंघन होना।

सिर पै नूण की डली होणा–ऐसा व्यक्ति जो नेक काम कराए लेकिन शुभ परिणाम न निकले (जिसके द्वारा कूएँ खुदवाने पर हर कूएँ का पानी खारी निकले)।

सिर फोड़णा अर खाणा–धींगामस्ती से जीवन बिताना, छीन-झपट कर खाना।

सिराहणै बैठ पाँहत्याँ नाँ बैठ्या जा–ऊँचे पद पर काम करने के बाद छोटे पद पर काम करने को मन नहीं करता।

सींग तुड़ा कै बाछड़ूयाँ मैं नाम लिखाणा–बनाव-शृंगार के आधार पर कम आयु का दावा करना।

सींग तुड़ामता फिरणा–लड़ाई-झगड़ा मोल लेते फिरना।

सींग फँसाणा–जान-बूझ कर आफ़त मोल लेना।

सींग मारणा–व्यर्थ की बाधा उत्पन्न करना।

सींग्गाँ माट्टी ठाणा–उत्पात मचाते फिरना।

सीक्खै नाई का, कट्टें जजमान के–1. दूसरे पर परीक्षण करके अनुभव प्राप्त करना, 2. प्रसंगवश एक-दूसरे का हित-साधन होना।

सीक्ख्या-पाँड्या–अनुभवी व्यक्ति।

सीठणें सीठणा–1. उलाहना देना, 2. व्यंग्य कसना।

सीत दे अर फूहड़ कुहावै–कृतज्ञता का बदला कृतघ्नता से मिलना।

सीत पाच्छै मूँछ कटाणा–सस्ते भाव इज़्ज़त बेचना।

सीत-पाणी करणा–घर का काम-धंधा निबटाना।

सीत्ता सतवंती–पतिव्रता नारी।

सीत्ता सी नार–पति अनुगामिनी पत्नी।

सीळक होणा–कलेजा ठंडा होना।

सीळा-तात्ता करणा–घर का भोजन आदि निबटाना।

सीस्से मैं मुँह देखणा–आत्मनिरीक्षण या आत्मालोचन करना, पात्रता-अपात्रता की स्वयं जाँच करना।

सीह का भाई भगेरा–समतुल्य क्षमता के व्यक्ति।

सीह का भाई भगेरा।
वो कूद्दै नो तै वो कूद्दै तेराह्॥–उच्छृंखलता में एक दूसरे से बढ़-चढ़ कर होना।

सुक्कर आळी बादळी,
रहै सनीच्चर छाय।
सहदे कह सुण भड्डळी,
बिन बरस्याँ नाँ जाय॥–शुक्रवार को छाने वाली बदली यदि शनिवार तक नहीं छँटे तो अवश्य वर्षा करेगी।

सुत, दारा अर लिच्छमीं, बैरी कै बी हो–शत्रु के हित की भी कामना करना।

सुनाराँ आग्गै सूई बेचणा–नादानगी प्रकट करना।

सुरग मैं डळे ढोणा–1. अच्छे स्थान पर भी छोटा काम करना, 2. जीवन नष्ट करना।

सुरग मैं पैड़ी लाणा–1. पुण्य-कार्य करना, 2. असाधारण कार्य करना।

सुसरम-सुसरा होणा–गाली-गलौच पर उतारू होना।

सुसरे नैं भाज्जड़ की बहू नैं काज्जळ की–1. एक-दूसरे की सुविधा का ध्यान न होना, 2. अपनी-अपनी पड़ना।

सूत्याँ के काटड़े, जागत्याँ की कटिया–सोए हुए का भाग्य भी सोता है, सचेत व्यक्ति लाभ उठाता है।

सूद्धी आँगळी तैं घी नाँ लीकड़ता– सरलता से कार्य-सिद्धि नहीं होती।

सूरज कुंडळ, चाँद जलैहरी।
भरदे झोड़ अर डहरी॥–यदि दिन में सूर्य के चारों ओर तथा रात्रि के समय चाँद के चारों ओर प्रकाश-मंडल हो तो भारी वर्षा होगी।

सूळी टूटणा–1. फ़ाँसी चढ़ना, 2. आफ़त में फ़ँसना।

सू-सू करै इतणै सुसरी ए नाँ कह दे–स्पष्ट बात कहने मे संकोच व्यर्थ है, साफ़ कहना सुखी रहना।

सेर नैं सवा सेर–संसार में एक से बढ़कर एक है।

सेराँ के मुँह किसनैं धोए–शक्तिशाली अपनी देखभाल स्वयं करता है।

सेळ करणा–आगमन पर स्वागत करना।

सो का तोड़–अंतिम निर्णय, निष्कर्ष रूप में।

सो काम छोड़ कै नहा।
हजार काम छोड़ कै खा।।–1. जीवन के लिए खाना स्नान से अधिक आवश्यक है, 2. खाना और नहाना क्रमश: आवश्यक हैं।

सो के लाड्डू बाँटणा–अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त करना।

सो कोतकी एक रोहतकी–रोहतक क्षेत्र का निवासी स्वभावत: क्रोधी होता है।

सो डंड, एक मसटंड–एक कुश्ती सौ दंड पेलने के बराबर है।

सोड़ देख कै पाँ पसारणा–आमद के अनुसार ख़र्च करना।

सो दिन चोर के, एक दिन साह का–चोर किसी न किसी दिन पकड़ा जाता है।

सोढ्ढी सँभाळणा–1. वयस्क होना, 2. सचेत होना।

सोन्नै कै काई नाँ लागती–श्रेष्ठ व्यक्ति पर दुष्प्रभाव नहीं पड़ता।

सो बात की एक बात–सूत्र में बात कहना निष्कर्षत: कहना।

सोळाह् रास्सी का–1. अलौकिक सौंदर्य का, 2. असाधारण व्यक्ति।

स्यांती का फळ मीट्ठा–शांतचित व्यक्ति का सम्मान होता है।

ह

हड़कंप माँचणा–भगदड़ मचना।

हथफेरी करणा–हस्त-लाघव दिखाना।

हनुमान बणणा–अन्य की लड़ाई में कूदना।

हब-कब खराब करणा–जीवन का रस समाप्त करना (हव्य-कव्य)।

हरड़ की टाट्टी, गुजरात्ती ताळा– सामान्य वस्तु की सुरक्षा पर अधिक व्यय करना।

हरी खेत्ती, धीणू (दे.) डाँग्गर, मुँह पड़ले जिब की आस–किसान फ़सल को घर पहुँचने पर ही अपनी समझता है।

हर्याई गा–लालची स्वभाव की।

हलक मैं लट्ठ देणा–जोर-ज़बरदस्ती करना।

हळ लाग्या पंताळ। फूट ग्या काळ।।–गहरी जुताई से अधिक अन्न उपजता है।

हाँड्डी का छोह् बरोल्ली पै–सबल का क्रोध निर्बल पर।

हाँस्सी मैं खाँस्सी होणा–मज़ाक-मज़ाक में लड़ाई-झगड़ा होना।

हाड-मूँड मैं धोळे आणा–बुढ़ापा आना।

हाड्डाँ की ढेरी करणा–1. सूख कर काँटा होना, 2. जान खपाना।

हात्था-चीट्टी करणा/मारणा–1. शर्त लगाना, 2. हाथ पर हाथ मार कर दौड़ना।

हात्थी के पाँ मैं सब का पाँ–अगुआ की बात सर्वमान्य होती है।

हात्थी देख कै कुत्ते भोंकते आए–मस्त व्यक्ति अपनी चाल चलता है, बड़े लोग अलोचना की चिंता नहीं करते।

हात्थी लेणा सहळा, राखणा मुसकल– उसी चीज़ को खरीदो जिसका स्थायी निर्वाह कर सको।

हाथ चोड़े करणा–1. समय पर सहायता देने से मुकरना, 2. निर्धनता प्रकट करना।

हाथ तळै का राखणा–पूर्ण रूप से अपने अधिकार या वश में रखना।

हाथ-पाँ चालत्याँ–सामर्थ्य रहते-रहते।

हाथ पीळे करणा–कन्या का विवाह करना।

हाथ फेरणा–1. वश में करना, 2. तुलना में पीछे छोड़ना।

हाथ मिलाणा–1. चुनौती स्वीकार करना, 2. मित्र बनना।

हाथ मैं डोर होणा–अधिकार मिलना।

हाथळ पड़णा–1. पशु आदि का अपने स्वामी के अनुकूल होना, 2. व्यक्ति विशेष की सहायता की ही अपेक्षा होना।

हारी-बिमारी/-नीरी का सात्थी– सुख-दुःख का साथी।

हाळी का पेट सुहाळियाँ तैं नाँ भरै– 1. ऊँट के मुँह में जीरा, 2. बहुभोजी को अल्पहार देकर टालना।

हिंम्मत का राम हिमाँती–भगवान पुरुषार्थी का सहायक होता है।

हिरणाकुस होळी रची,
नळ राज्जा दिवाळी,
पहलाद भगत नै मँगाळी।– किसी चीज का आरंभ कोई करता है और उसे मंगलमय कोई करता है।

हिरणी-फिरणी होणा–1. आई-गई होना, 2. अस्थिर स्थिति में होना, 3. चलने-फिरने की स्थिति में होना।

हिल्ली-हिल्ली गादड़ी नींम तळे कै जा– जहाँ किसी की इच्छा-पूर्ति होती है वहाँ वह खतरा होते हुए भी जाता है।

हुक्का अर बेट्टा एक अवाज पै बोल्लै नाँ तै नाड़ तोड़ दे–प्रथम आदेश पर तुरंत न किया गया कार्य कोई कार्य नहीं है।

हुक्का-पाणी बंद करणा–जाति या समाज-बहिष्कृत होने का दंड देना।

हेज करणा–मोह ममता रखना।

हेजवाळ का बाळक खिलाहिये नाँ–चतुर व्यक्ति की सहायता करने पर कभी प्रशंसा या यश नहीं मिलता।

होड कटाणा–तरफ़दारी करना।

होणी बणी होण की खात्तर–भाग्य में लिखा टाला नहीं जा सकता।

होत की भाण, नाँ होत की माँ–बहिन भाई का सम्मान उसके धनाढ्य होने पर करती है और माँ हर अवस्था में सहायक होती है।

होम करत्याँ हाथ जळणा–1. पुण्य के बदले अपकार मिलना, 2. परोपकार के बदले हानि उठाना।

होळी के पाँ पाणी मैं–होली के आस-पास वर्षा होकर रहती है।

होळी पाच्छै बुड़कल्याँ (दे. बुड़कला) **का के काम**– बिना अवसर की बात शोभा नहीं देती।

होळी सी मँगळणा–देखते-देखते भस्मसात् होना।

परिशिष्ट–दो

हरियाणवी भाषा की बानगी

कहानी–1

महादे-पारबती

(महादेव-पार्वती)

एक बर की बात सै। पारबती महादे तैं बोल्ली–महाराज, धरती पै लोग्गाँ का क्यूक्कर गुजारा हो र्‌हया सै? हमनैं दिखा कै ल्याओ।

एक समय की बात है। पार्वती महादेव से बोली–महाराज, धरती पर लोगों का कैसे गुजारा हो रहा है? हमें दिखा कर लाओ।

महादे बोल्ले–पारबती, इन बात्ताँ मैं के धर्‌या सै? अड़ै सुरग मैं रह् अर मोज लूट। धरती पै आदमी घणे दुखी सैं। तू किस-किस का दुख बाँट्टैघी।

महादेव बोले–पार्वती, इन बातों में क्या रखा है? यहाँ स्वर्ग में रहो और मज़े लूटो। धरती पर आदमी बहुत दुखी हैं। तुम किस-किस का दुख बाँटोगी।

पारबती बोल्ली–महाराज, मैं नाँ मान्नूँ। मैं तै अपणी आँख्याँ तैं देक्खूँगी। संद्‌यक देक्खे बिना पेट्टा क्यूक्कर भरै?

पार्वती बोली–महाराज, मैं नहीं मानती। मैं तो अपनी आँखों से देखूँगी। साक्षात् देखे बिना पेटा कैसे भरे?

महादे बोल्ले–तै चाल पारबती। देख धरती की दुनियाँदारी। न्यूँ कह कै वे दोन्नूँ अपणे नाधिया पै बैठ, थोड़ी हाण मैं आ पोंहचे धरती पै। उन दिनाँ गंगाजी का न्हाण था। पारबती बोल्ली–महाराज, मैं बी गंगाजी न्हाँगी। गंगा न्हाण का बड़ा फळ हो सै। जो गंगा न्हाले उननैं थम मुकती दे द्‌यो सो। मर्‌याँ पाच्छै वो आदमीं सूद्‌धा सुरग मैं जा सै। अड़ै आए-ऊए दो गोत्ते बी मार ल्याँ गंगा जी मैं।

महादेव बोले–तो चलो पार्वती। धरती की दुनियादारी देखो। यों कहकर वे दोनों अपने नादिया पर बैठे और थोड़ी देर में धरती पर आ पहुँचे। उन दिनों गंगा-स्नान था। पार्वती बोली–महाराज, मैं भी गंगाजी नहाऊँगी। गंगा-स्नान से बड़ा फल मिलता है। जो गंगा-स्नान कर लेता है उसे आप मुक्ति दे देते हो। मरने के बाद वह आदमी सीधा स्वर्ग में जाता है। हम यहाँ आए हुए हैं, हम भी गंगा जी में दो गोते लगा लें।

महादे बोल्ले–पारबती, लोग हमनैं पिछाण लेंघे। अक न्यूँ कराँ, दोन्नूँ

अपणा-अपणा भेस बदल ल्याँ। न्यूँ कह कै दोनुवाँ नैं मरद-बीर का भेस भर लिया। भेस बदल कै दोन्नूँ न्हाण चाल पड़े, गंगाजी कैड़।

महादेव बोले—पार्वती, लोग हमें पहचान लेंगे। ऐसा करें कि दोनों अपना-अपना वेश बदल लेते हैं। ऐसा कहकर दोनों ने स्त्री-पुरुष का वेश धारण कर लिया। वेश बदल कर दोनों गंगा जी की ओर नहाने चल पड़े।

राह मैं पारबती नैं देख्या दुनियाँ ए गंगाजी न्हाण जा सै। कोए गाड्डी जोड़ र्‌हे, तै कोए मँझोल्ली, कोए रहडू, तै कोए पाह्‌याँ ए पाह्‌याँ चाल्ले जाँ सैं। लुगाई गंगाजी के गीत गामती जाँ सैं। अक जड़ बात या थी, सारी ए खलखत पाट्टी पड़ै थी गंगाजी के राह मैं।

रास्ते में पार्वती ने देखा कि सभी लोग गंगा जी नहाने जा रहे हैं। कोई गाड़ी जोते हैं तो कोई मंझोली, कोई रहडू जोते हैं तो कोई पैदल-पैदल चले जा रहे हैं। महिलाएँ गंगा जी के गीत गाती जा रही हैं। वास्तव में जैसे सारी ही जनता गंगा-स्नान के लिए उमड़ पड़ी हो।

पारबती बोल्ली—महाराज, धरती पै तै घणा ए धरम-करम बध र्‌हया सै। देक्खो नाँ, टोळ के टोळ आदमीं गंगाजी न्हाण जाण लाग र्‌हे। मेरै तै एक साँस्सै सै। थम कहो थे—जो गंगा न्हागा वो सूद्‌धा सुरग मैं जागा। जै ये सारे न्हाणियाँ सुरग मैं आगे तै सुरग मैं तै तिल धरण की जघाँ बी नाँ र्‌हैगी। सुरग मैं तै खड़दू रुप ज्यागा।

पार्वती बोली—महाराज, धरती पर तो बहुत धर्म-कर्म बढ़ रहा है। देखो तो, मनुष्यों की टोली की टोली गंगा जी नहाने जा रही हैं। मुझे तो एक संशय है। आप कहा करते हैं कि जो व्यक्ति गंगा-स्नान करेगा वह सीधा स्वर्ग में जाएगा। यदि ये सभी स्नानार्थी स्वर्ग पहुँच गए तो स्वर्ग में तो तिल रखने की भी जगह नहीं रहेगी। स्वर्ग में तो उत्पात मच जाएगा।

महादे हँस्से अर बोल्ले—पारबती, तूँ तै भोळी की भोळी ए रही। ये सारे आदमीं गंगाजी न्हाण कोन्या आए। कोए तै मेळा-ठेळा देक्खण आया सै कोए खेतक्यार के काम तैं बच कै आया सै। कोए-कोए अपणा बड्डापण जितावण ताँहीं आया सै, कोए कोए अपणा मेल काट्टण आया सै, तै कोए बेट्टे-पोत्ते माँगण ताँहीं। कोए बेट्टी नैं परणा कै सुख की साँस लेण आया सै। कोए अँधाई ए करण ताँही आया सै। गंगाजी न्हाणियाँ तै इनमैं उड्द पै सफेद्‌दी जितणा कोए-कोए ढूँढ्या पावगा।

महादेव हँसे और बोले—पार्वती, तुम तो भोली ही रहीं। ये सभी आदमी गंगा-स्नान को नहीं आए हैं। कोई व्यक्ति मेला देखने आया है। कोई खेती-क्यारी के काम से बचकर आया है। कोई-कोई अपना बड़प्पन जितलाने के लिए आया है। कोई अपना मैल धोने आया है। कोई बेटे माँगने के लिए आया है तो कोई पोते

माँगने के लिए। कोई बेटी का विवाह करके सुख की साँस लेने आया है। कोई मस्ती मारने ही आया है। गंगा-स्नान करने वाला तो इनमें उड़द पर सफ़ेदी जितना कोई-कोई ही ढूँढ़ने पर मिलेगा।

महादे की बात सुण कै पारबती बोल्ली–महाराज, थम तै मेरी बात नैं न्यूँ एँ टाळो सो। कदे न्यूँ बी हुया करै?

महादेव की बात सुन कर पार्वती बोली–महाराज, तुम तो मेरी बात को यूँ ही टाल रहे हो। कभी ऐसा भी होता है?

महादे बोल्ले–तूँ मेरी बात नैं बिचास कै देख ले, जै मेरी बात न्यूँ की न्यूँ साच्ची नाँ लिकड़ै तै।

महादेव बोले–तुम मेरी बात को परख कर देख लो यदि मेरी बात ज्यों की त्यों सच्ची नहीं निकले तो।

पारबती बोल्ली–महाराज, बात नैं बिचास्सो। महादे बोल्ले–बिचास ले।

पार्वती बोली–महाराज, तथ्य की परख करो। महादेव ने कहा–परख कर लो।

इतणी कह कै महादे नैं कोड्ढी का रूप धारण कर लिया अर पारबती रूपमती लुगाई बण गी। राह चालते न्हाणियाँ नैं वो कोड्ढी अर लुगाई देक्खी। बीरबान्नी तै हाथ मळ-मळ कै रहगी। देख दुनियाँ मैं कितणा कुन्या सै? मुरत सी बीरबान्नी कोड्ढी कै पल्लै ला दी। डूबगे इसके माई-बाप। के सारी धरती पाणी तैं भरी सै जो इसनैं जोड़ी का बर नाँ मिल्या?

इतना कह कर महादेव ने कोढ़ी का रूप धारण कर लिया और पार्वती रूपवती महिला बन गई। राह चलते स्नानार्थियों ने कोढ़ी और महिला को देखा। महिलाएँ तो हाथ मलती रह गईं। देखो! दुनिया में कितना अन्याय है? इतनी सुंदर औरत कोढ़ी के पल्ले बाँध दी। इसके माता-पिता कहाँ डूब गए? क्या सारी धरती जलमग्न है जो इसे योग्य वर नहीं मिला?

कोए उनतैं अँघाई करकै लिकड़ै। कोए कहै छोड्दै नैं इस कोड्ढी नैं। मेरै साथ चाल, राज उडाइये।

कोई उनसे छेड़छाड़ करने लगे। कोई कहने लगा–इस कोढ़ी को छोड़ दो। मेरे साथ चलो और मौज उड़ाओ।

वा लुगाई सब आवणियाँ-जाणियाँ ताँहीं एक्कै बात कहै–सै कोए इसा धरमातमाँ जो इसनैं कोड्ढी की जूण तैं छुटवादे। इसका हाथ पकड़ कै गंगाजी मैं झिकोळा लवा दे? जै कोए इसनैं गंगाजी मैं नुहादे उसका राम भला करैघा। वो दूद्धाँ न्हागा अर पूत्ताँ फळैगा। गंगाजी मैं न्हात्याँ हे इस की काया पलट हो ज्यागी। सै कोए धरमातमाँ जो इसका कस्ट मेट्टै? सब पारबती की बात सुणैं अर मन मन मैं हँस्सैं।

वह महिला सभी आने-जाने वालों से एक ही बात कहती-क्या कोई ऐसा धर्मात्मा है जो इसे कोढ़ी की योनि से मुक्ति दिला दे? इसका हाथ पकड़ कर इसे गंगा जी में निमज्जित करा दे? यदि कोई इसे गंगा-स्नान करवा दे तो उसका भगवान भला करेगा। वह दूधों नहाएगा और पूतों फलेगा। गंगा-स्नान करते ही इसका काया-कल्प हो जाएगा। क्या कोई ऐसा धर्मात्मा है जो इसके कष्ट का निवारण करे? सब पार्वती की बात सुनते और मन ही मन हँसते।

उस लुगाई की बात दुनियाँ सुणैं पर मुँह फेर कै लीक्कड़ ज्या। जिसके हाड-हाड मैं कोढ चूवै उसनैं कूण छूह्वै।

उस औरत की बात सभी सुनते लेकिन मुँह फेर कर निकल जाते। भला जिसकी हड्डी-हड्डी से कोढ़ चू रहा हो उसे कौन छूता?

अक जड़ बात या थी अक कोए बी उसकै हाथ लावण नैं त्यार नाँ हुया। लाक्खाँ न्हाणियाँ डिगरगे अर वा लुगाई न्यूँ की न्यूँ खड़ी डिडावै।

वास्तव में मूल बात यह रही कि कोई भी उसे स्पर्श करने को तैयार नहीं हुआ। लाखों स्नानार्थी वहाँ से निकले और वह महिला ज्यों की त्यों रोती रह गई।

जिब भोत्तै होली जिब एक धरमातमाँ उत आया। उस बिचारे नैं बी उस बीरबान्नी की गुहार सुणी। कोड्ढी नैं देख कै उसका मन पसीज गया। उसनैं सोच्या-हे परमेस्सर, इसे कूण से पाप करे अक यो कोड्ढी बण्या? अर कूण से आच्छे करम करे थे अक इतणी सुथरी बहू मिल्ली। उस आदमी नैं जिनान्नी की सारी बात सुणी अर बोल्या-जै इसका कोढ गंगा मैं न्हवाए तैं मिट् ज्यागा तै मैं इसका झिकोळा लगवा द्यूँगा। थारा दोनुवाँ का अगत सुधर ज्यागा। तूँ न्यूँकर, एक कान्नी तैं तै तू इसकी बाँह पाकड़ और दूसरी कान्नी तैं मैं थांभूँगा।

जब बहुत समय हो चुका तो एक धर्मात्मा व्यक्ति वहाँ आया। उस बेचारे ने भी उस महिला की गुहार सुनी। कोढ़ी को देख कर उसका मन पिघल गया। उसने सोचा-हे परमेश्वर, ऐसे कौन पाप इसने किए कि यह कोढ़ी बना? और इसने कौन से सत्कर्म किए थे कि इतनी सुंदर वधु मिली? उस व्यक्ति ने महिला की सारी बात सुनी और बोला-यदि इसका कोढ़ गंगा-स्नान कराने से मिट जाएगा तो मैं इसका निमज्जन करवा दूँगा। तुम दोनों का भविष्य सुधर जाएगा। तुम ऐसे करो, एक ओर से तो तुम इसकी बाँह पकड़ो और दूसरी ओर से मैं इसे पकड़ता हूँ।

उस आदमी का तै उस कोड्ढी कै हाथ लावणा था अर वो तें साँच माँच का सिबजी भोळा बणकै खड़्या हो ग्या, अर बोल्या-देक्ख्या पारबती! मैं तत्तैं कहूँ था नाँ, अक सारे माणस गंगाजी न्हाण नहीं आमते। लाक्खाँ मैं कोए कोए पवित्तर भा तैं गंगा न्हाण आवै से जिसा यो आदमी लिकड़्या।

उस व्यक्ति ने उस कोढ़ी के हाथ लगाया ही था कि वे तो साक्षात् शिवजी

बन कर खड़े हो गए और बोले–पार्वती, तुमने देख लिया। मैं तुमसे कह रहा था कि सभी मनुष्य गंगा-स्नान करने नहीं आते। लाखों में कोई-कोई ही पवित्र भाव से गंगा-स्नान के लिए आता है–जैसे कि यह व्यक्ति।

सिबजी भोळे नैं उस आदमी ताँहीं आसीरबाद दिया अर वै दोन्नूँ अन्तरध्यान होगे।

शिवजी ने उस आदमी को आशीर्वाद दिया और वे दोनों अन्तर्धान हो गए।

काहनी–2

लिछमीं बड्डी अक टोट्टा

(लक्ष्मी बड़ी या टोटा)

एक बर की बात सै अक लिछमीं अर टोट्टे मैं लड़ाई हो पड़ी। लिछमीं बोल्ली–मैं बड्डी। टोट्टा बोल्या–मैं बड्डा। वै लड़ते-लड़ते जाँ थे। उननैं राह् मैं एक आदमी मिल ग्या।

एक बार की बात है कि लक्ष्मी और टोटे में लड़ाई हो गई। लक्ष्मी बोली–मैं बड़ी और टोटा बोला–मैं बड़ा। वे लड़ते-लड़ते जा रहे थे। उन्हें मार्ग में एक आदमी मिला।

आदमी बोल्या–भाई तम कूँण सो? तम क्याँ बात पै लड़ो सो? मन्नै बताओ। मैं थारा न्या चुकाऊँगा।

आदमी बोला–तुम कौन हो? तुम किस बात पर लड़ रहे हो? मुझे बताओ। मैं तुम्हारा न्याय करूँगा।

लिछमीं बोल्ली–यो भी चोक्खा हुया। बिन्याँ माँग्याँ मोत्ती मिलगे। सुण तूँ म्हारी बात कान धर कै।

लक्ष्मी बोली–यह भी अच्छा हुआ। बिन माँगे मोती मिल गए। तू हमारी बात कान धर के सुन।

मैं तै सूँ लिछमीं। अर यो सै टोट्टा। म्हारी लड़ाई इँह बात पै सै अक यो कहै सै–मैं बड्डा। अर मैं कहूँ सूँ–मैं बड्डी। ईब तूँ हे इस बात का न्या चुका।

मैं तो हूँ लक्ष्मी और यह है टोटा। हमारी लड़ाई इस बात पर है कि यह कह रहा है–मैं बड़ा और मैं कहती हूँ–मैं बड़ी। अब तुम ही इस विवाद का न्याय करो।

आदमी उन की बात सुण कै डर ग्या। उसनैं सोच्ची–आच्छ्या फंस्या। जै मैं लिछमीं नैं बड्डा बताऊँ तै टोट्टा मेरै पाच्छै पड़ ज्यागा। मन्नैं कितै का नाँ छोड्डैगा। अर जै मैं टोट्टे नैं बड्डा बता द्यूँ तै लिछमीं रूस ज्यागी। लिछमीं ए मेरे तैं रूस गी तै मैं कंगाल हो ज्याँगा। सोचत्याँ-सोचत्याँ उस आदमी का सिर चकरा ग्या।

आदमी उनकी बात सुन कर डर गया। उसने सोचा–बुरा फँसा। यदि मैं लक्ष्मी को बड़ा बताता हूँ तो टोटा मेरे पीछे पड़ जाएगा। मुझे कहीं का भी नहीं रहने देगा और यदि मैं टोटे को बड़ा बता देता हूँ तो लक्ष्मी रूठ जाएगी। यदि लक्ष्मी ही मुझसे रूठ गई तो मैं कंगाल हो जाऊँगा। सोचते-सोचते उस आदमी का सिर चकरा गया।

उस आदमी नैं थोड़ी हाण ओर सोच्या अर बोल्या–पहल्याँ तम अपणी-अपणी चाल दिखाओ। थारी चाल देख कै छोट्टे-बड्डेपण का फैसला द्यूँगा। उस पीप्पळ ताँहीं चाल कै जाओ अर आओ।

उस आदमी ने थोड़े समय तक और सोचा और बोला–पहले तुम अपनी-अपनी चाल दिखाओ। तुम्हारी चाल देख कर मैं छोटे या बड़े होने का फैसला दूँगा। उस पीपल तक चल कर जाओ और आओ।

लिछमीं अर टोट्टा उस आदमीं की बात सुण कै राज्जी होगे। दोनुवाँ नैं उसकी बात मान ली। दोन्नूँ पीप्पळ कै हाथ ला कै आदमी धोरै उल्टे आ गे। दोन्नूँ बोल्लै–म्हारी चाल तै तनैं देख ली, ईब चुका न्या।

लक्ष्मी और टोटा उस आदमी की बात सुन कर प्रसन्न हो गए। दोनों ने उसकी बात मान ली। दोनों पीपल को हाथ लगा कर वापिस उस आदमी के पास आ गए। दोनों बोले–हमारी चाल तो तुमने देख ली, अब फैसला दो।

आदमीं बोल्या–ईब जरूर न्या चुकाऊँगा। सुणों–जात्ती हाणाँ तै टोट्टे की चाल आच्छी लाग्गी। इस लिहाँ जात्ती हाणाँ तै टोट्टा बड्डा लाग्या। आमती हाणाँ लिछमीं की चाल आच्छी लाग्गी। इस लिहाँ आमती हाणाँ लिछमीं बड्डी लाग्गी। जड़ बात याह् सै अक जात्ती हाणाँ टोट्टा बड्डा अर आमती हाणाँ लिछमीं बड्डी।

आदमी बोला–अब ज़रूर फ़ैसला दूँगा। सुनो–जाते समय तो टोटे की चाल अच्छी लगी। इसलिए जाते समय तो टोटा बड़ा लगा। आते समय लक्ष्मी की चाल अच्छी लगी। इसलिए आते समय लक्ष्मी बड़ी लगी। मूल बात यह है कि जाते समय टोटा बड़ा और आते समय लक्ष्मी बड़ी।

उस आदमीं का न्या सुण कै टोट्टा अर लिछमीं राज्जी हो कै चले गे।

उस आदमी का फ़ैसला सुन कर टोटा और लक्ष्मी प्रसन्न होकर चले गए।

याह् बात ईब ताहीं बी न्यूँ की न्यूँ चाल्ली आवै सै अक जात्ती हाणाँ टोट्टा आच्छ्या, अर आमती हाणाँ लिछमीं आच्छी लाग्गै सै।

यह बात अब तक भी ज्यों की त्यों चली आ रही है कि जाते समय टोटा अच्छा और आते समय लक्ष्मी अच्छी लगती है।

परिशिष्ट–तीन

मेवाती शब्दावली

अ

अंतरा कुमार (पुं.) विराट राजा का पुत्र उत्तर।

अकीका (पुं.) पुत्र के जन्म पर किया जाने वाला संस्कार। तुल. दसूठण। दे. छूछक।

अट्टा (पुं.) 1. दे. अटारी, 2. दे. चुबारा।

अठारह गोटा (पुं.) गोटियों से शतरंज की तरह खेला जाने वाला एक खेल।

अरस (पुं.) आकाश।

इ

इत लू (अव्य.) इधर को।

इयेक (वि.) एक।

ई

ई (सर्व.) यह।

उ

उन्नीस/गुन्नीस (वि.) उन्नीस।

उपाड़ना (क्रि.) उखाड़ना। उदा.–

कौंता माता महल में खड़ी उपाड़े केस।
तोय बिन अरजन भारती सूनो है सब देश।।

ऊ

ऊ (सर्व.) वह। तुल. वाई/वाय।

ऐ

ऐमनाकुमार (पुं.) अभिमन्यु।

क

कचेड़ी (स्त्री.) कचहरी।

कड़ा अरजन का (पुं.) विराट की रक्षा के लिए की गई लड़ाई की कथा जिसमें अर्जुन अग्रणी थे।

कन रस (पुं.) बत रस। श्रवण रस।

कितलू (सर्व.) किधर।

किराल (पुं.) दे. किराड़।

कुड़का (स्त्री.) मुर्गों को लगने वाली घातक बीमारी।

कुम्हेर (पुं.) कच्छप देव, उदा. करवट ली कुम्हेर।

कूक (स्त्री.) कोख। उदा.–

गूलर रोवे फूल कू, फल को रोये फिरांस।
तिरिया रोवे कूक कू, ये ना है झूंठी बात।।

कौंता (स्त्री.) कुंती।

ख

खिजूरा (पुं.) लड़के के ससुराल जाने या पुत्रबधू के पीहर जाने पर दिया जाने वाला भोजन विशेष।

खूशनी (स्त्री.) 1. दे. खुसना। 2. दे. सुथना।

खेम (स्त्री.) क्षेम, उदा.–खेम सुखद चाहे घणी, तू बृहन्नला ले ले संग।

ग

गंग (पुं.) अज्ञातवास के समय युधिष्ठिर

(दुहिटल) का नाम।

गंजी (स्त्री.) मीठा पुलाव। दे. गुड़ भत्ता। यह फातिहा के समय का भोजन है।

गंधारण (स्त्री.) गांधारी।

गिदोड़ा (पुं.) चिथड़ों की गेंद का एक खेल। दे. गींड।

गीत लंडयायी/सींगलवाटी 1. दे. लंडयायी, 2. दे. सींगलवाटी, 3. हमद दे. हमद, 4. नात दे. नात, 5. रतवाई दे. रतवा रतवाई।

गुन्नीस (वि.) उन्नीस।

घ

घरन/घराँ (संज्ञा) घर शब्द का बहुवचन रूप।

च

चंगा पौ (पुं.) एक खेल। दे. पोह[3]।

चंद्रावल गूजरी (स्त्री) राधा का स्थानापन्न नाम जिसके चरित्र का वर्णन मेवाती लोकगाथा "चंद्रावल गूजरी की बात" में है।

चकाबोई (पुं.) चक्रव्यूह।

चाला (पुं.) 1. दे. चाल्ला, 2. दे. मुकलावा।

चावड़ (पु.) चावल।

चितरावल माई (संज्ञा) पार्वती की माता।

चिलक हाडरी (पुं.) चाँदनी रात में खेला जाने वाला एक खेल।

चिल्ला (पुं.) वह धार्मिक स्थल जहाँ मन्नत माँगी जाती है।

चूहड़ सिद्ध (पुं.) एक मेवाती पीर।

चौखा शाह (पुं.) एक सिद्धपीर।

छ

छन्नड़ (पुं.) 1. दे. छान, 2. दे. छप्पर।

छौरीन (सं.) छोरी (लड़की) का बहुवचन रूप। दे. छोहरी।

ज

जकात (पुं.) इस्लाम धर्म के अनुसार आमदनी का अढ़ाई प्रतिशत अंश जो खैरात के रूप में अपंग-निस्सहायों को बाँटा जाता है।

जज्झ (पुं.) युद्ध।

जमावड़ा (पुं.) घी, खांड, गेहूँ, भुने आटे तथा विभिन्न प्रकार के मेवों को मिला कर बनाया जाने वाला पकवान जो गर्भवती स्त्री तथा शादी से पहले वर एवं वधु को खिलाया जाता है।

जरजोधन (पुं.) दुर्योधन।

जामिनी (पु.) जमानत देने वाला।

जामुद राक्षस (पुं.) राजा विराट को सताने वाला एक राक्षस।

जुड़ली (सं.) पुत्री। दे. झडूल्ला।

जेघड़ (सं.) दोघड़। 1. दे. दोघड़, 2. जेघड़।

जेसरतन (पुं.) 1. एक दानव जिसका सिर काट कर लाने की शर्त पर दुर्योधन ने उनका राजपाट लौटाने का वचन दिया था। 2. जयद्रथ।

जैतखंभ (पुं.) वह स्तंभ जिस पर अर्जुन ने वभ्रूवाहन का शीश काट कर रखा। उदा.–

बड़ा बड़ाई ना करे, बड़ा ना मारे बोल।
तेरा शीश हूंन चढ़ाऊँगो हो मेरो जैतखंभ को कोल।।

झ

झगड़ा देना (पुं.) एक रस्म जिसके अनुसार तलाक दिए बगैर और महर न अदा करने पर भी दूसरी शादी करली जाती है। इसके अनुसार स्त्री का नया पति पुराने पति को रुपया देता है। कई बार पीहर वाले भी रुपया देते हैं।

ट

टें टें (पुं.) बच्चों का एक खेल जो चाँदनी रात में खेला जाता है।

ठ

ठड्डा (पुं.) मेवाती क्षेत्र में अहीर स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला गीत। दे. ठट्ठा।

ठौंडा (पुं.) चौधरी।

ड

डैहला (पुं.) उठने-बैठने के काम आने वाला एक घरेलू उपकरण।

ढ

ढमला (पुं.) खीर आदि खाने का मिट्टी का एक डूँघा पात्र।

ढाई-ढूकला (पुं.) लुका-छिपी का खेल। दे. आँख मिंचाई।

ढूमरी (स्त्री.) 1. एक मेवाती रस्म जिसके अनुसार बरात आने पर मिट्टी के बर्तनों की व्यवस्था कुम्हार करता है। 2. चावल खाने का मिट्टी का बर्तन। दे. ढोबरा।

त

तबाक (त्री.) मिट्टी का प्लेटनुमा बर्तन।

तमन (सर्व.) तुम्हें।

तहमद (पुं.) लुंगी से बड़ा अधोवस्त्र जो भूमि पर फिसलता चलता है। उदा. बीरा और भी घिसड़वा तहमद बांध, मरेगी दुनिया अल-झल् कै।

ताखा (पुं.) तक्षक ('राजा बासक की बात' में इसकी बुराई की गई है।)

तोकू (सर्व.) तुझे।

तोय/तोह (सर्व.) तुझे।

तोलू (सर्व.) तुम्हें, तुम को।

थ

थड़ी (पुं.) न्याय तथा पंचायत आदि के लिए बनाया गया सार्वजनिक स्थान।

थांबा (पुं.) मेव जाति की उप पाल जो उस पाल के चौधरी के गोत्र नाम से प्रसिद्ध है।

थेटर (पुं.) तोता। उदा.
थेटर कस का पालतू, कस को यार किराल।

द

दरूद फतेहा (पुं.) मेवाती रस्म जिसके अनुसार मरहूम बुजुर्गों की आत्मा की शांति के लिए जुमेरात को खीर बना कर फकीर और उसके कुनबे को खिलाई जाती है।

दालमोड़ (पुं.) भीख माँगने वाली एक बुजदिल मेव जाति। उदा.–जिनके दादा बुजरग ना मारी मूसी उनका नाम धरो दलमोड़।

दहा (पुं.) दे. हबदा।

दिनन/दिनाँ (सं.) दिन का बहुवचन रूप।

दिवाड़ी (सं.) दे. दिवाली।

दुहिटल (पुं.) युधिष्ठिर।

ध

धेर-धेरै (सं.) सुबह-सुबह, अंधेर मुँह।

न

नहाण-पंसेरी (पुं.) वह स्नान जो जच्चा को पंसेरी पर बैठाकर कराया जाता है। मेवाती मान्यता के अनुसार फिर पाँच साल बाद ही जच्चा गर्भवती होगी।

नात (पुं.) हज़रत मुहम्मद साहब की छंदोबद्ध स्तुति। दे. हमद।

निवालिया (पुं.) मूल मेव पाल में बाहर से आ कर बसा व्यक्ति। मूल पाल के बाहर के गोत्र का व्यक्ति।

नौहा (पुं.) दे. हबदा।

प

पंडवानी (स्त्री.) पंडून कौ कड़ा (दे.)। यह कथा सादल्ला द्वारा रचित है।

पंडून कौ कड़ा (पुं.) महाभारत में वर्णित पांडवों की कथा को लोक कथा के रूप में ढाला गया एक लंबा कथानक।

पता (पुं.) पताका। उदा.–याकी पता पै हनुमान।

पाम (पुं.) पाँव।

पायट (पुं.) दे. पैंक।

पारख (पुं.) राजा परीक्षित जिसका वर्णन "राजा बासक की बात" में है।

पिणहारी (स्त्री.) द्रौपदी का अज्ञातवास का नाम (पनिहारी)। दासी।

पीयरो (पुं.) दे. पीळिया।

पेटलो (पुं.) भीम (बहु भोजी)। उदा. –मरियो तेरा पेटलो।

पैंक (पुं.) वे लड़के जो मन्नत द्वारा पैदा होते हैं और ताजिया के अवसर पर बदन में काली रस्सी बाँध, कूल्हों पर हरे कपड़े लटका, नंगे पाँव दुलकी चाल चलते हैं। लोकमान्यता के अनुसार ये हजरत इमाम हुसैन के रक्षक हैं। तुल. पायट।

फ

फकीर (पुं.) एक मेव जाति जो कब्र खोदती है और तीन दिन उसकी रखवाली करती है। दे. फकीर।

फैंटा (पुं.) पगड़ी।

फैड़ा (पुं.) दे. फरड़ा।

ब

बनैती (पुं.) एक खेल।

बब्बरा बाण (पुं.) पंडवानी कथा में वर्णित वभ्रूवाहन चरित्र। ~ **को कड़ा**– कुरुक्षेत्र युद्ध की लड़ाई में वभ्रूवाहन के कौशल की कथा।

बल्लू (पुं.) अज्ञातवास में भीम का नाम।

बाखली (स्त्री.) दे. बाकळी।

बात (पुं.) 1. लोकगाथा। उदा. घुरचड़ी मेवखां की बात, रुस्तम जोधिया की बात, बासक की बात, पूरणमल जोगी की बात। 2. पहेली। उदा.–कैर में कैर, कैर में खूंटा। गाय मरखणी दूद्धू मीठा। उत्तर–मधुमक्खियों का छत्ता।

बासक (पुं.) वासुकी नाग।

बिड़ाव राव (पुं.) विराट राज।

बिरत (स्त्री.) 1. वृत्ति। 2. यजमानी। उदा. कुम्हार मेव परिवारों की बिरत करता है। ~**करणा**–विवाह के अवसर पर मेव परिवार के द्वारा एक दो दिन पूर्व घड़िया, मटके आदि लेने जाना। दे. चाक पूजणा।

बिरहड़ा (पुं.) 1. मेव जाति द्वारा गाया जाने वाला विरह गान। यह नीतिपरक, ज्ञान-ध्यान तथा उपदेशात्मक होता है। 2. एक छंद। तुल. दोहा। उदा. धरती थेपी हमन ने, हम धरती का देव। सुणियो मिंतर बावला, अब जात हमारी मेव।। मेवाती में बात (वीरगाथा) बिरहड़ों में गाई जाती है। ये प्रश्नोत्तर शैली में भी होते हैं। यह पुरुषों द्वारा गाया जाता है।

बिरहा (पुं.) जाति विशेष (अहीर) का गान।

बिलंदी (पुं.) मेवों का एक त्योहार।

बृहनलता (पुं.) बृहन्नला, अज्ञातवास में अर्जुन का नाम।

बैराठ (पुं.) विराट नगर।

भ

भपंगा (पुं.) मेवात का एक बाजा यंत्र जिसे जोगी बजाते हैं।

भररनी (पुं.) "राजा बासक (वासुकी) की बात" जिसकी कथा महाभारत से काफी भिन्न लौकिक रूप लिए हुए है।

भरिया (स्त्री.) बाढ़। दे. भरिया।

भीमड़ो (पुं.) भीम।

भीवज (पुं.) भीम। दे. पेटला।

भुम्म चाकणा (क्रि.स.) भूमि के निवासियों के गुण, स्वभाव को परख कर उसे चिह्नित करना जैसे महाभारत के युद्ध में प्रीतिविहीन भूमि (कुरुक्षेत्र) को चुना क्योंकि बाप ने बेटे को मार, मेंढ़ पर गाड़ दिया। उदा.–

हीन अचंबो देख, बाप ने बेटा मारो।
तनक करी ना काण, पकड़ धोरा में डालो।
ऊपर सू माटी धरी, नक्के दियो जमाय।
अजरन यह भुम्म चाक लै, हीन पिता पूत को खाय।।

भूम्म (स्त्री.) भूमि।

म

मुंडकल्लो (पुं.) नंगे सिर।

मरसिया (पुं.) एक प्रकार का शोक गीत। उदा.–

फातिमा की पैंक हो तुम करबला कू जाइयो।
करबला की हाल हकीकत फातमा कू लाइयो।
जा मोहम्मद करबला में लूटा बेचारा गया।
आप का प्यारा नवाँसा सिजदे में मारा गया।

माको (सर्व.) मुझे।

मिनख (सं.) मनुष्य।

मिमयाई घोड़ी (पुं.) चाँदनी रात में खेला जाने वाला एक खेल।

मीरासी (पुं.) एक मेव जाति जो गा-बजा कर मेवों का यशोगान करती है।

मेड़ी (स्त्री.) कच्ची कोठड़ी जिसे शीशे-फूल आदि लगा कर सजाया जाता है। स्त्रियों का निवास स्थान।

मेव (पुं.) एक मुसलमान धर्मावलम्बी जाति। ये लोग अपने को सूर्य, चंद्र, अग्नि

कुल के राजपूत मानते हैं। इनका संबंध तोमर यादव (जादू) चौहान, राठौड़ और कछवाहा वंश से मानते हैं। ये 12 पालों और 52 गोतों में बँटे हैं जिसे बारह बावन पाल कहा जाता है। ये अपने को अर्जुनवंशी मानते हैं।

मेवात (पुं.) मेव जाति बहुल क्षेत्र। एक बिरहड़गीत (लोकगीत) में इसकी सीमा इस प्रकार गाई जाती है–

इत दिल्ली उत आगरा, मुथरा सू बैराठ। काला पहाड़ की वाल में बसे मेरी मेवात।

मेवाती (स्त्री.) मेव जाति की बोली जो हरियाणा में तहसील नूँह, फिरोजपुर झिरका, हथीन में बोली जाती है। यह मथुरा तथा राजस्थान के कुछ भागों में बोली जाती है। भयाना मेवाती, आरेज मेवाती, नहेड़ मेवाती इसकी उप बोलियां हैं। खड़ी मेवाती मेवात की •केंद्रीय बोली है जो तहसील फीरोजपुर झिरका आदि में बोली जाती है। इस बोली में राजस्थानी, ब्रज, अहीरवाटी तथा बाँगरू का प्रभाव है।

मैंमता हाती (पुं.) मदमस्त हाथी।

मैहेरी (स्त्री.) मेवात में गरीब लोगों का एक प्रकार का भोजन। यह जौ तथा छाछ के मिश्रण से बनाया जाता है। दे. घाट[1]।

मोकू (सर्व.) मुझे।

मोय (सर्व.) मुझे।

मोसू (सर्व.) मुझसे।

य

येक (वि.) एक।

याने (सर्व.) इसने।

र

रतवाई (पुं.) मेवात में गाया जाने वाला स्त्री-पुरुष संबंधी गीत। यह उर्दू गजल की तरह गाया जाता है। औरतें इसे मिलकर और पुरुष अकेला गाता है। उदा.–औंडी रोटी घी घणो खाले खाले मेरे नणद का बीर ते में तो मेरो जी ए घणो।

ल

लंडयायी (पुं.) भूत-प्रेत आत्मा को गाली देकर निकालने का एक गीत। देवी प्रसन्न होकर प्रभावित आत्मा को त्राण दिलाती है। देवी की प्रशंसा में गीत गाए जाते हैं। उदा.–

भूत कबूतर होय तो, बाज बण जाइयो। काबू में आते ही याह लेर पंजे में उड़ जाइयो।।

लखसंधाणी बाण (पुं.) लक्ष्य को बेंधने वाला बाण।

लाखा मंदिर (पुं.) लाक्षा गृह

लू (अव्य.) को। उदा.–इत लू-इधर को।

व

वाई (सर्व.) वह। तुल. वाय। ऊ।

वाको (सर्व.) उसका।

वाने (सर्व.) उसने।

वाय (सर्व.) तुल. वाई। ऊ।

वैंह/वै/वो (सर्व.) वह का बहुवचन रूप।

श

शनीचर बाण (पुं.) कथा के अनुसार वह बाण जो राजा वासुकी ने वभ्रू- वाहन को दिया था।

स

सकराना (पुं.) शक्कर तथा घी मिला भात (चावल)

सट्‌टेटो (वि.) सारा।

सदे (क्रि.) सिद्ध हुए। उदा.–

तो सू सदे हमारे काज।

सलाम (स्त्री.) चढ़त से पूर्व मेव द्वारा सम्पन्न एक रस्म जिसमें सेहराबंदी, काजल डालने आदि क्रियाकलाप सम्पन्न होते हैं। दे. चढ़त।

सायबा (पुं.) पतिदेव। उदा.–सत मत छोड़े सायबा, सत तोड़े पत जाय।

सिलंदरा (स्त्री.) अज्ञातवास में द्रौपदी का नाम, सैरन्ध्री।

सींगलवाटी (पुं.) केवल मेवाड़ में गाया जाने वाला एक गीत। यह गेय मुक्तक है जिसकी लय अवसर के अनुसार बदल जाती है। इस गीत में अश्लीलता भी आती है। उदा.–लंबा चौड़ा सू कुचे दूं तेरी आँख, लखावै मत ललतोरा।

सुक (पुं.) सुख।

सोहड़ (स्त्री.) दे. स्याहवड़।

ह

हतनापुर (पुं.) हस्तिनापुर।

हबदा (पुं.) मेवात में मातम मनाने का एक तरीका जिसमें स्त्रियाँ छाती पीटती हैं, घूमती हैं तथा ताजिया के गीत गाती हैं। मर्दों का मरसिया खत्म होने पर औरतें हबदा या नौहा शुरू करती हैं। उदा.–हाय हसन तुम सो गए के निंदरा भये के, दुश्मन खड़ा है तोसू लड़न कू...। तुल. दहा। तुल. नौहा।

हमद/हम्द (पुं.) खुदा या पैगम्बर की तारीफ में गाया जाने वाला एक गीत। इन्हें अधिकतर कुरैशी स्त्रियां गाती हैं। उदा.–फूल खिलाए री असमानी हवा सू। अल्ला के लिए हमने खाणें पकाए।। चबा गयो री अल्ला अपणी रजा सू। फूल खिले री असमानी हवा सू।।

हमन/हमां/म्हाने (सर्व.) हमें।

हातन/हाताँ (सं.) हाथ का बहुवचन रूप।

हाबड़ दूस (पुं.) हाकी की तरह का एक खेल। दे. गींड खुळी।

हीं/हूँ (क्रि.वि.) यहाँ। यहीं।

हीज (पुं.) हिजड़ा। उदा.–

देखत है हीज, रोस याके तन।

हूँ/हूँन (क्रि.वि.) वहाँ।

हैसीत (स्त्री.) हैसियत।

हो (क्रि.) था। उदा.–

जो आदमी कल आयो हो।

परिशिष्ट–चार

देशी नाप-तोल

1. बटखरे-बट्टे

धातु के सिक्के बनने से पूर्व वस्तु के बदले वस्तु का आदान-प्रदान, वस्तु विनियम, आवर्तन आदि पद्धति प्रचलन में थीं। गोधन मान्य था। गाय का दान किया जाता था। स्वर्ण के प्रयोग के बाद गाय के सींग, खुर आदि सोने-चाँदी से मंडित करके दिए जाने लगे।

तोल का प्रमाण प्राकृतिक वस्तुओं के आधार पर होने लगा। तोल का मानकीकरण किया गया। यथा–

8 खसखस का एक चावल

8 चावल की एक रत्ती

8 रत्ती/चिरमठी का एक मासा

12 मासे का एक तोला

5 तोले की एक छटाँक

आवश्यकता के अनुसार कच्चे ढेले/पत्थर 'कच्चे तोल' का स्थान लोहे के मानक बटखरे, बाट-बट्टों ने लिया। अन्न तोलने की पद्धति का आधार पाद बना जो पाव, अध पाव आदि शब्दों में सुरक्षित है। तोल में 'भर' (भार) शब्द का प्रयोग होता है। (पाव भर)

अधपी – दो छटाँक का बट्टा, आधा पाव

पाव – चार छटाँक का बट्टा (सेर का चौथाई भाग)

अधसेरा – आधा सेर का बट्टा

सेर – 16 छटाँक या मन के चालीसवें भाग का बट्टा

दो सेरी/दुसेरी – दो सेर का बट्टा

ढैया – अढ़ाई सेर का बट्टा।

पेंहसेरी/पँचसेरी – पाँच सेर का बट्टा

दस सेरा/सेरी – दस सेर का बट्टा

अधौना – आधाा मन या 20 सेर का बट्टा

मणा – चालीस सेर का बट्टा

चार मणा – 160 सेर का बट्टा

बोहनी-बट्टा–सतभा (सत्य भाव) तोलने के लिए पहले पहल बोहनी-बट्टा किया जाता है अर्थात् जल छिड़क कर और उन्हें प्रणाम करके लक्ष्मी का उद्बोधन (बोहनी) किया जाता है। प्रथम तोल भी बोहनी कहलाती है।

नोट 1. अन्न की ढेरी या रास (राशि) को तोलने की बजाय कूता भी जाता था। कूतना अर्थात् पूर्व अनुभव के आधार पर ढेर का भार बताना।

2. चुटकी, पस्सो (पसा, एक हाथ की अंजुरी) आँदळा (दोनों हाथों की अंजुरी) भी अनुमानित तोल हैं।

2. तोल के बर्तन

यजमानी प्रथा में फसल काटने और अन्न निकालने पर खलियान में ही खाती, कुम्हार, नाई, धोबी आदि को उनकी 'लाग', हक आदि चुका दिया जाता था। इसके माप या तोल कुम्हार द्वारा बनाए गए विभिन्न आकार के बर्तन होते थे। बरोला-सा मुँह, झाकरा-सा पेट मुहावरे बन चुके हैं।

बरोली	–	एक सेर
बरौला	–	2 सेर
झबोली	–	अढ़ाई सेर
हाँडी	–	2 सेर, 2.5 सेर, 5 सेर, 7 सेर, 10 सेर, 12 सेर, 15 सेर, 20 सेर
घड़वा/घड़िया/ घड़ा/माट/झाला	–	एक मन
नाँद	–	एक मन
नंदौला	–	15 सेर
झाकरा	–	30 सेर
राँझण गोळ	–	एक मन

3. चारा-भूसा

फसल काटने तथा पूलियों की चूँटनी (तने से सिरटा, सिरटी, बाल आदि को अलग करना) करने के बाद इन्हें वर्गाकार ढालू छत के रूप में लगाया जाता है। इन्हें चिनने या सटाने में संख्या का भी ध्यान रखा जाता है ताकि घरेलू खपत या बेचने में उचित दाम माँगने में सुविधा रहे। इस प्रकार सजाई या लगाई गई आकृति को छ्योर, छ्योरी, गरा, बागर या पौड़ कहते हैं। चारे के भार को खारी, खरोले, टोकरे आदि से कूता जाता है।

छ्योरी	–	1000 पूली का ढेर
छ्योर	–	1500 पूली का ढेर
बागर	–	2200 पूली का ढेर
गरा	–	4000 पूली का ढेर

पात्र

खरोला

खारी

टोकरा

टोकरी

डालड़ी

डलिया

4. जमीन का नाप

महाभारत की कथा में सुई की नोक के बराबर जमीन पांडवों को न देने का संदर्भ आता है। भगवान वामन ने अढ़ाई डग में जमीन-आसमान नाप लिया था। जमीन की लंबाई-चौड़ाई हाथ की उँगली, मुट्ठी, बालिश्त (बित्ता), हाथ, पुरुष (साढ़े तीन हाथ), पद, डग, कदम आदि से नापी जाती थीं। मानक गज तथा मीटर बाद की देन हैं। पहले पक्का, कच्चा गज काम में लाया जाता था। डंडूक, जेवड़ी, जरीब भी भूमि की पैमाइश में काम आते हैं। भूमि का माप ब्योंत (ब्याम) भी कहलाता है।

14 अग – 1 उँगल (आँगळ)

10 उँगल – एक छुद्रपाद (छोटा डंग)

15 उँगल – 1 पाद (डंग)

12 उँगल – बितस्ति (बित्ता) बिलाँध (बित्ता 9 इंच का होता है।)

(दो बालिश्त – एक हाथ। दो हाथ – एक कच्चा गज)

8 उँगल – 1 धनुर्मुष्टि (मुट्ठी)

दो बालिश्त– 1 हाथ

(अरंति) – 18 इंच

16 उँगल – 1 बाण

1 बाण – 1/1000 वाँ भाग, एक कोस (क्रोस)

(ध्वनि तरंग के आधार पर चाँद, सूरज आदि नक्षत्रों की दूरी नापी जाती है। क्रोश वह दूरी है जो गाय के रंभाने की आवाज आरंभ बिन्दु से अंतिम दूरी पर सुनी जा सके।)

4000 वर्ग हस्त (हाथ) भूमि को निवर्तन कहते हैं। यह एक बीघे के बराबर है।

अन्य नाप

10 बिसबाँसी – एक बिसवा

10 बिसवे – एक घुमाव

10 घुमाव – एक कनाल

10 कनाल – एक मरला

8 मरले	–	एक बीघा
220 गज	–	एक जरीब
8 जरीब	–	एक एकड़

5. दूरी के माप

3 जौ/यव	–	एक इंच
2.25 इंच	–	एक गिरह
9 इंच	–	एक बित्ता (बालिश्त)
12 इंच	–	एक फुट
3 फुट	–	एक गज
220 गज	–	एक फर्लांग
8 फर्लांग	–	एक मील

6. सिक्के

सिक्कों का प्रयोग पीतल, तांबा, चाँदी तथा सोने आदि को विशेष मात्रा में गला कर, ढाल कर या घड़ कर होता रहा है। रुप्यक रुपये को कहते हैं जो रूप्पा या चाँदी का होता था। किसी वस्तु के मोल को दाम कहते हैं।

धनी लोग अपने बच्चों का नामकरण हजारी लाल, लखीराम, क्रोड़ीमल, धनपति, अशर्फी, गिन्नी आदि रखते हैं।

दाम, दमड़ी, अधेला, छदाम, रुपया-पावला, टका, गिन्नी, असर्फी आदि पर अनेक मुहावरे प्रचलित हैं।

दाम – चाम जाए पर दाम न जाए, दाम दाम चुकाना, दाम खड़ा करना, दाम भरना, चाम के दाम चलाना, दाम नीति अपनाना, छदाम के बराबर भी न होना।

दमड़ी – चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए, दमड़ी के तीन, दमड़ी का पूत (बहुत तुच्छ), दाम-दमड़ी हाथ में होना।

धेला-अधेला – धेला-अधेला गाँठ में होना, धेला भी न देना, धेल्ली- पावला।

टका – टका सा जवाब देना, टका पास न होना, टका सा मुँह लेकर रह जाना, टके गज की चाल (मोटी चाल), टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

अशरफी – अशरफी लुटाना, अशरफी लुटी कोयलों पर मोहर।

दाम – ताँबे का सिक्का जिसका मूल्य रुपये का चालीसवाँ भाग है।

रुपया – एक रुपया। पहले इसका मूल्य 64 पैसे होता था।

अठन्नी – आधा रुपया।
चवन्नी – रुपये का चौथाई भाग (इसका चलन बंद हो चुका है)।
आना (पाव) – चवन्नी का चौथा भाग।
पाद – पाई (चार पाई का एक पैसा)।
चार पैसे – एक आना।
दाम – दमड़ी का तृतीय अंश।
दमड़ी – दाम का आठवाँ भाग।
अधेला – दाम का आधा भाग (20 दाम का)।
पावला – दाम का चौथाई भाग।
टका – आठ पाई (इसे मसूरिया भी कहते हैं।)
गिन्नी – आठ मासे की (अठमासी, अशरफी)

7. काल के प्रमाप

काल के माप के देसी हिसाब से दो आधार हैं। एक मनुष्य के शरीर से संबंधित पल, प्राण और दूसरे सूर्यदेव द्वारा बनाए गए रात, दिन, ऋतु, वर्ष आदि। सूर्य के अतिरिक्त चंद्रमा भी काल का मापक है।

निमेष (पलक झपकना)

क्षण – 3 पलक की झपकी
काष्ठा – 25 क्षण
लघु – 15 काष्ठा
15 लघु – एक घड़ी

प्राण (10 बार गुरु अक्षर उच्चारण करने में जितना समय लगता है उसे एक प्राण (असु) कहते हैं।

1 प्राण = 10 विपल = 4 सैकिंड
60 विपल (या 6 प्राण) = 1 पल = 24 सैकिंड
60 (60 × 24 सैकिंड) 1 घड़ी (घटी) = 24 मिनट
2 घड़ी = एक मुहूर्त = 48 मिनट
15 मुहूर्त या 60 घड़ी = एक दिन रात = 24 घंटे
8 पहर = एक दिन रात
1 पहर = 3 घंटे
2.5 घड़ी = 60 मिनट
30 दिन = एक मास
2 मास = एक ऋतु

6 मास = एक अयन

1 वर्ष = दो अयन (1. उत्तरायण, 2. दक्षिणायन)

सत्ययुग (सतजुग) = 17 लाख 20 हजार वर्ष

त्रेतायुग (तरेता जुग) = 12 लाख 96 हजार वर्ष

द्वापर = 8 लाख 64 हजार वर्ष

कलियुग (कळजुग) = 4 लाख 32 हजार वर्ष

महायुग = 43 लाख 28 हजार वर्ष

71 महायुग = 1 मन्वंतर

1000 महायुग = 1 कल्प (ब्रह्मा का एक दिन)

360 कल्प = ब्रह्मा का एक वर्ष।

(आजकल कलयुग का प्रथम प्रहर चल रहा है।)
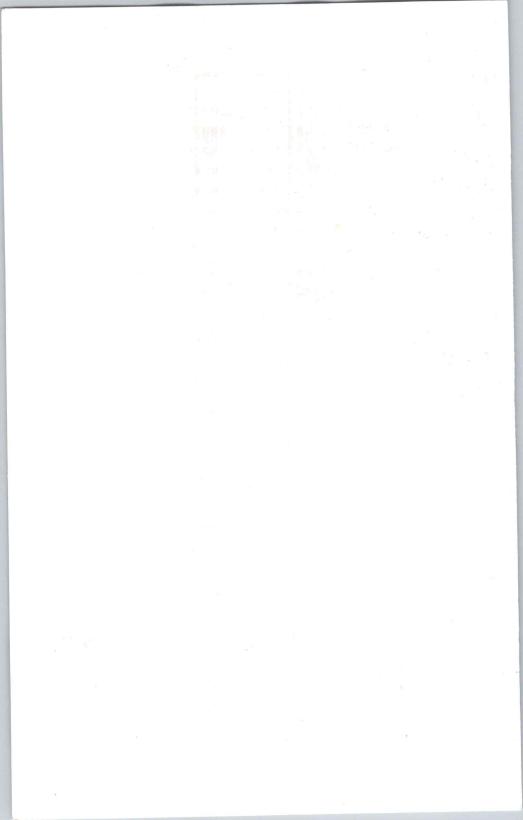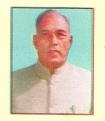
डॉ. जयनारायण कौशिक

पूर्व निदेशक, हरियाणा साहित्य अकादमी

जन्म : 4 नवम्बर, 1935

जन्मस्थान : जहाँगीरपुर, झज्जर (हरियाणा)

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी, अंग्रेजी); एम. एड.; जे.डी.; पी-एच.डी.

वरिष्ठ साहित्यकार, शिक्षाविद्, पत्रकार तथा चिंतक डॉ. कौशिक का लेखन क्षेत्र खेत-खलिहान से लेकर देश-विदेश तक व्यापक है। इनकी रुचि का क्षेत्र संस्कृति विशेषकर लोक-संस्कृति है। भाषाविद् होने के नाते इन्होंने वैदिक-हरियाणवी कोश, लोकनाट्य-कथा कोश आदि अनेक कोशों का निर्माण किया है। डॉ. कौशिक ने प्रसिद्ध वेदमंत्रों, महात्मा बुद्ध के धम्मपद तथा भर्तृहरि शतकों का हरियाणवीं में पद्यबद्ध अनुवाद किया है। इन्होंने हरियाणा को केन्द्र बनाकर साहित्य की विभिन्न विधाओं में रचनाएँ की हैं। इनकी अस्सी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

डॉ. कौशिक ने देश के अतिरिक्त विदेशों कैलाश मानसरोवर, इंगलैण्ड, जर्मनी, फ्रांस, इटली, स्विटजरलैण्ड, ट्रिनीडाड, टौबेगो आदि की सांस्कृतिक-साहित्यिक यात्राएँ की हैं और यात्रा-वृतांत लिखे हैं।

साहित्यकार और शिक्षाविद् होने के नाते इन्हें हरियाणा साहित्य अकादमी (हरियाणा गौरव) दिल्ली हिन्दी अकादमी, दिल्ली राज्य, शिक्षा मंत्रालय, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय (राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार), एन. सी.ई.आर.टी. तथा राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में योगदान के लिए इन्हें वर्ल्ड स्पिरिच्वल पार्लियामेंट (2011) ने नेशनल अवार्ड से सम्मानित किया।

सम्पर्क : सी-605, सरस्वती विहार,
दिल्ली-110034

हरियाणा ग्रन्थ अकादमी के लोकप्रिय प्रकाशन
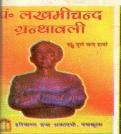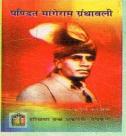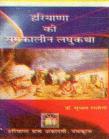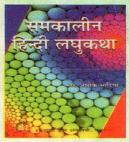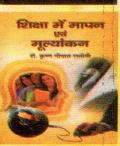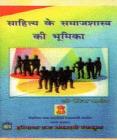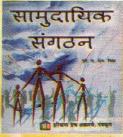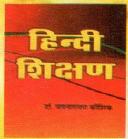
हरियाणा ग्रन्थ अकादमी
अकादमी भवन, आई.पी.-15, सेक्टर-14, पंचकूला-134 113
फोन : 0172-2566521, 2585521